# हिन्दी शब्द संग्रह

जिसमें

प्राचीन हिन्दी कवियोंद्वारा प्रयुक्त ब्रजभाषा, अवधी, बुन्देलखण्डी इत्यादिके शब्दोंके अतिरिक्त आधुनिक हिन्दी साहित्यमें प्रचलित हिन्दी, संस्कृत, फारसी, इत्यादि भाषाओंके शब्द भी दिये गये हैं और अर्थ स्पष्ट करनेके लिए बहुसंख्यक उदाहरणोंका भी समावेश किया गया है।

---

शब्द-संख्या—४१६७२


सम्पादक—

श्रीमुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

श्रीराजवल्लभ सहाय


---


प्रकाशक—

प्रकाशक—
ज्ञानमण्डल ( पुस्तक-भण्डार ) लिमिटेड,
बनारस ।

मुद्रक—
मधुसूदनराय,
ज्ञानमण्डल ( यन्त्रालय ), लिमिटेड, काशी ।

# हिन्दी-शब्द-संग्रह

## अ



अ—देवनागरी वर्णमालाका पहिला अक्षर। शब्दोंके पूर्व जोड़ देनेसे निषेध-सूचक या उलटा अर्थ प्रकट करता है, (असफल, अचूक इ०)। स्वरसे शुरू होनेवाले शब्दोंके पहिले 'अ' के बदले प्रायः 'अन्' जोड़ा जाता है।

अंक—पु० संख्याका चिह्न; जैसे १, २, ३। निशान, धब्बा। गोद (अँकवार) 'तउ पुनि जतन करै अरु पोलै निकसे अंक भरै' सू० ८। अंग, हृदय (—लगाना)। अक्षर 'तुम सन मिटहिं कि विधिके अंका।' रामा० ५९। छाप। शरीर। नाटकका भाग। बार (सू० २२)।

अंकक—पु० हिसाब लिखनेवाला, चिह्न करनेवाला।

अंकगणित—पु० सख्याओंका हिसाब, संख्याओंके गुणा भाग इ० की विद्या, अंकविद्या।

अँकटा—पु० छोटा कंकड़।

अँकड़ी—स्त्री० टेढ़ी कँटिया, हुक। लग्गी। टेढ़ी गाँसी।

अंकन—पु० चित्रण, लेखन, चिह्न करनेकी क्रिया।

अंकनीय—वि० चिह्न करनेके योग्य, लेखनीय।

अंकपालिका—स्त्री० देखो 'अंकपाली'।

अंकपाली—स्त्री० दाई, धाय, आलिंगन, अँकवार।

अंकमाल,-लिका—स्त्री० अँकवार। आलिंगन, भेंट 'अंक-माल दै कुसल बूझि कै अर्धासन बैठारे।' सू० २७०, (कबीर ५३)। छोटी माला।

अँकरोरी, अँकरौरी—स्त्री० कंकड़ी 'काँट धसै न गड़ै अँकरौरी।' प० ६१

अँकवाना—सक्रि० अंकित कराना।

अँकवार—स्त्री० गोद, कोख, भेंट। —भरना = गोदमें भरना; बच्चा होना।

अँकवारना—सक्रि० आलिंगन करना, भेंटना 'घोर निशाचर बाँहबली दुहुँ भैयनको भरिकै अँकवार्यो।' राम० भू० ७४

अँकवारी—स्त्री० गोद, 'कनियाँ'—तात कहि तब श्याम दौरे महर लियो अँकवारी।' सूबे० ७१ (११५)।

अँकाई—स्त्री० अटकल, अन्दाजा, 'आँकने' की क्रिया।

अँकाना—सक्रि० मोल ठहराना, जाँचना। लोहेकी सलाई इ० से चिह्न कराना।

अँकाव—पु० आँकनेकी क्रिया, अँकाई।

अंकित—वि० लिखित, वर्णित, चिह्नित, खचित।

अँकुड़ा—पु० लोहेका टेढ़ा काँटा। पशुओंके पेटकी पीड़ा।

अँकुड़ी—स्त्री० लोहेकी टेढ़ी कँटिया।

अंकुर—पु० नया उगा हुआ तृण आदि, कोंपल, प्ररोह। भरते हुए घावमें दिखायी देनेवाले घावके छोटे छोटे नये [दाने।

अंकुरक—पु० घोंसला।

अंकुरना,-राना—अक्रि० उगना, पैदा होना। 'अँकुरित तरु पात उकठि रहे जे गात बन बेलि प्रफुलित ललित लहरके।' सूबे० ४६।

अंकुरित—वि० निकला हुआ, प्रस्फुटित, उत्पन्न।

अंकुश, अंकुस—पु० लोहेका काँटा जिससे हाथी चलाया जाता है। हिचक। —ग्रह = महावत।

अँकुसी—स्त्री० कँटिया, हुक। लग्गी।

अंकूर—पु० अंकुर, प्ररोह।

अँकोड़ा—पु० बड़ी कँटिया। एक तरहका लंगर।

अँकोर—पु० गोद। आलिंगन, भेंट। घूस, टका लाख दस दीन्ह अँकोरा।' प० ३१६, (अ० ५६)। निछावर (सू० १७५)। कलेवा, छाक। दुपहरिया।

अँकोरी—स्त्री० देखो 'अँकोर'।

अंकोल—पु० एक जंगली पेड़।

अँखड़ी—स्त्री० आँख 'मेरी इन दुखिया अँखड़ियोंके सामने।' लहर ७९।

अँखमीचनी—स्त्री०—मूदनो—पु० आँख-मिचौनी '...अँखमूदनो साथ तिहारे न खेलिहैं।' कको० ४१५

अँखिया—स्त्री० आँख। नकाशी करनेकी क़लम।

अँखुआ—पु० अंकुर, कोंपल।

अँग, अंग—पु० देह, अवयव, भेद, भाग, पक्ष 'अपने अँगके जानिके जोबन नृपति प्रवीन ।' वि० ४ । एक प्रदेश । एक राजाका नाम । तरफ 'धरिय तुला एक अंग' रामा० ४१७ । सेनाके ४ अंग—हाथी, घोडे, रथ, पैदल, वेदके ६ अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द; राजनीतिके ७ अंग—स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, सेना, योगके ८ अंग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि ।—छूना=कसम खाना ।—टूटना=अँगड़ाई आना ।—तोड़ना=अँगड़ाई लेना ।—धरना=पहिनना, व्यवहार करना । फूले—न समाना=बहुत खुश होना ।—मोड़ना=लज्जासे देह सिकोड़ना, अँगड़ाई लेना, पीछे हटना ।—लगना=लिपटना, शरीरको पुष्ट करना, पचना ।—लगाना=आलिंगन करना, विवाह देना ।—करना=अंगीकार करना 'जाको मनमोहन अंग करै । सूवि० १५

अंगज—पु० लड़का, केश, काम-क्रोध इ०, पसीना, रोग, कामदेव, मद । 'हाव-भाव-हेला' ये तीन सात्विक विकार ।

अंगजा, जाई—स्त्री० लड़की, पुत्री ।

अंगजात—देखो 'अंगज' ।

अंगड़खंगड़—पु० टूटा-फूटा सामान । वि० टूटाफूटा ।

अँगड़ाई—स्त्री० जम्हाईके साथ अंगोंको फैलाना । बदन

अँगड़ाना—अक्रि० अँगड़ाई लेना, बदन तोड़ना । [टूटना

अंगण—पु० आँगन, अजिर, सहन ।

अंगद—पु० बाजूबन्द । बालि-पुत्र । लक्ष्मणके एक पुत्रका

अंगधारी—पु० प्राणी । [ नाम ।

अंगन, अंगना—पु० देखो 'अंगण' ।

अंगना—स्त्री० ( सुन्दर अंगवाली ) स्त्री, सुन्दरी ।

अंगनाई—स्त्री० देखो 'अंगण' ।

अँगनैया—पु० देखो 'आँगन' ।

अंगन्यास—पु० मंत्रोच्चारण सहित अंग-स्पर्श ।

अंगपाक—पु० अंग पकनेका रोग ।

अंगभंग—पु० किसी अंगका खंडन या हानि । वि० लँगड़ा-लूला 'अंगभंग करि पठवहु बन्दर ।' रामा० ४२०

अंगभंगी—स्त्री० मुग्ध करनेकी (स्त्रियोंकी) चेष्टा, विशेष प्रकारसे अंग-संचालनकी क्रिया, हावभाव ।

अंगरखा—पु० पुरुषोंके नीचेतकका पहिनावा, चपकन ।

अँगरा—पु० जलता हुआ कोयला । बैलोंका एक रोग ।

अँगराई—स्त्री० अँगड़ाई ।

अंगराग—पु० चन्दन, केसर आदिका लेप या उबटन,

अंगराज—पु० राजा लोमपाद या राजा कर्ण । [ महावर ।

अँगराना—अक्रि० अँगड़ाई लेना 'सुनि मुनि-वचन उठे रघुनायक अलसाने अँगराने ।' रघु० ७४

अँगरी—स्त्री० जिरह-बख्तर, कवच 'अँगरी पहिरि कूँडि सिर धरहीं ।' रामा० २९०

अंगरेज—पु०—इंग्लैण्डका निवासी ।

अंगरेजी—स्त्री० 'अंग्रेजों' की भाषा । वि० अंग्रेजोंका ।

अँगवना—सक्रि० सिरपर लेना, सहना 'सूल कुलिस असि अँगवनि हारे ।'—रामा० २१०

अंगविकृति—स्त्री० अपस्मार या मृगी रोग ।

अंगविक्षेप—पु० अंगोंका हिलाना डुलाना, नाच ।

अंगविद्या—स्त्री० सामुद्रिक विद्या ।

अंगशोष—पु० सुखण्डी रोग ।

अंग-संग—पु० सम्भोग ।

अंग-संस्कार—पु० देहकी सजावट ।

अंग-सिहरी—स्त्री० कँप-कँपी ।

अंगहार—पु० अंग-विक्षेप या नृत्य ।

अंगहीन—वि० जिसके कोई अंग न हो, अनंग, कामदेव ।

अंगांगीभाव—पु० एक अंग या अंशका सम्पूर्णके साथ ऐसा सम्बन्ध जिसमें अंशके बिना सम्पूर्ण व्यर्थ हो । मुख्य-अमुख्य या आश्रय-आश्रयीका सम्बन्ध । उन अलंकारोंका पारस्परिक सम्बन्ध जिनमें एक दो मुख्य हों और उन्हींके आश्रित अन्य गौण अलंकार हों ।

अंगा—पु० अँगरखा । [ † है, लिट्टी ।

अंगाकड़ी—स्त्री० मोटी रोटी जो अंगारोंपर सेंकी जाती

अंगार, अंगारा—पु० जलता हुआ कोयला । आग, सख्त गर्मी ( अंगार बरसना ), कड़वी बात ( अंगार उगलना ।

अंगारक—पु० अंगार, मंगल ग्रह, भँगरैया । वि० अंगारका, अंगारसे बना हुआ ।

अंगारमणि—पु० मूँगा ।

अंगारिणी—स्त्री० गोरसी, अंगेठी, बरोसी ।

अंगारी—स्त्री० गोरसी । जलते हुए कोयलेका टुकड़ा ।

अँगार—पु० अंगार ।

अँगारी—स्त्री० ईखके सिरपरका पत्तीवाला भाग, ईखका

अँगिका, अँगिया—स्त्री० चोली, कञ्चुकी । [ टुकड़ा ।

अंगिरस—पु० एक प्रजापति ऋषिका नाम । एक संवत्सरका नाम । कटीला गोंद ।
अंगिराना—देखो 'अंगड़ाना' (रस ३०) ।
अंगी—पु० प्राणी, शरीरी । प्रधान या मुखिया । नाटकमें प्रधान नायक या प्रधान रस ( शृंगार या वीर ) ।
अंगीकार—पु० स्वीकार, ग्रहण ।
अंगीकृत—वि० स्वीकृत, अपनाया हुआ ।
अँगीठा—पु०;ठी-स्त्री० गोरसी या बरोसी ।
अँगुठा—पु० देखो 'अँगूठा' ( सू० ४९ ) ।
अँगुठी—स्त्री० पैरके अँगूठेका एक गहना ।
अंगुर—देखो 'अंगुल' ।
अंगुरिया,-री—स्त्री० हाथ या पैरका अंग, उँगली ।
अंगुल—पु० आठ जौके बराबर नाप ।
अंगुलित्राण—पु० अंगुलियोंके रक्षार्थ गोहके चमड़ेका बना दस्ताना ।
अंगुलिपर्व—पु० उँगलीकी पोर या जोड़ ।
अँगुली—स्त्री० 'अंगुरी' देखो ।
अंगुश्तरी—स्त्री० मुँदरी, अँगूठी ।
अंगुश्ताना—पु० उँगलीपर पहिननेकी पीतलकी टोपी । अँगूठेकी मुँदरी, आरसी ।
अंगुष्ठ—पु० अँगूठा ।
अँगूठा—पु० तर्जनीके पासकी मोटी उँगली ।—चूमना, खुशामद करना ।—दिखाना, अँगूठा दिखाकर या तिरस्कारपूर्वक नाहीं करना ।—ठे पर मारना, तुच्छ समझना ।
अँगूठी—स्त्री० मुँदरी, छल्ला ।
अंगूर—पु० एक मेवा,द्राक्षा । देखो "अंकुर"।—बँधना या भरना=घाव भरना ।
अंगूरी—वि० अंगूरके रंगका, अंगूरका बना । पु० हरा रंग जो बहुत चटकीला न हो ।
अँगेजना—सक्रि० अँगवना, सहना । स्वीकार करना । ( रतन० ८ )
अँगेठा—पु०,-ठी-स्त्री० 'अँगीठी', गोरसी ।
अँगेरना—सक्रि० देखो 'अंगेजना' ।
अँगोछना—अक्रि० कपड़ेसे वदन पोंछना 'कहा अँगोछति मुगुध तिय पुनि पुनि चन्दन जानि ।' ललित ५०
अँगोछा—पु० वदन पोंछनेका वस्त्र, गमछा ।
अँगोछी—स्त्री० छोटी धोती या गमछा ।
अँगोजना—सक्रि० अँगेजना, सहना, स्वीकार करना ।
अँगोरा—पु० मच्छर, मसा ।
अंग्रेज—पु० इंग्लिस्तानका निवासी ।
अंघस—पु० पाप ।
अँघिया—स्त्री० चलनी, 'अँगिया' ।
अंघ्रि—पु० पाँव, चरण ।
अंघ्रिप—पु० पेड, वृक्ष ।
अँचरा—पु० अञ्चल, साड़ीका वह छोर जो सामने छाती या पेटपर रहता है, पल्ला ( सू० ५५ ) ।
अंचल—पु० 'अँचरा' देखो । दिक्प्रदेश । किनारा ।
अँचवना—अक्रि० आचमन करना, पीना, अष्टदस घट नीर अँचवै, तृषा तउ न बुझाइ ।' सू० ४
अंछर—पु० अक्षर, मंत्र । एक मुखरोग ।
अंज—पु० कमल ।
अंजन—पु० काजल इ० जो आँखमें लगाया जाता है । लेप । रात्रि । एक पेड़ ।
अंजनकेश—पु० दीपक ( विन० २४६ ) ।
अंजनसार—वि० अँजा हुआ, अंजन सहित [ 'एक तो नैना मद भरे दूजे अंजन सार' ]
अंजनहारी—स्त्री० बरौनीके पासकी फुंसी, गुहेरी । भृंगी कीड़ा ।
अंजना—स्त्री० हनुमानजीकी माता । गुहाई, बिलनी । सक्रि०-आँजना 'जथा सुअंजन अंजि दग साधक सिद्ध सुजान ।' रामा० ४
अंजनी—स्त्री०, गुहाई, गुहेरी । माया । हनुमानजीकी माता ।
अंजरपंजर—पु० शरीरका जोड़, ठठरी ।
अंजरि—स्त्री० देखो 'अंजलि' 'गुनमंजरि अंजरि कुसुमनकी''''' गुणमंजरीदास ।
अंजल, अंजला—पु० देखो 'अंजलि' । अन्नजल ।
अंजलि,-ली,अँजली—स्त्री० दोनों हथेलियोंके मिलानेसे बना हुआ गड्ढा,या उतनी वस्तु जो उक्त गड्ढेमें आवे ।
अंजलिबद्ध—वि० अंजलि बनाये हुए, हाथ जोड़े हुए ।
अँजवाना, अँजाना—सक्रि० अंजन लगवाना ।
अंजसा—क्रिवि० जल्दीसे, शीघ्रतापूर्वक ।
अंजाम—पु० नतीजा, अन्त ।
अंजित—वि० अंजन लगाये हुए ।
अंजीर—पु० एक वृक्ष या उसका फल 'नारँग, नीबू, सुरङ्ग, जंभीरा । औ बदाम बहुभेद अंजीरा ।' प० १४
अंजुमन—पु० सभा, मण्डली । [ उदे० सू० ११२ )

अँजुरी, अंजुली, अँजुली—स्त्री० 'अंजलि' ( अँजुरी,†

अँजोर—पु० उजेला रोशनी, प्रकाश, 'मारगहुत अँधियार जो सूझा। भा अँजोर, सब जाना बूझा।' प० ८

अँजोरना—सक्रि० दे० 'अजोरना' ( विन० ३७९ )।

अँजोरा—वि० उजेला या रोशनीवाला। पु० अँजोर।

अँजोरी—वि० स्त्री० उजेली, उज्वल। स्त्री० चाँदनी रोशनी 'रवि सन्मुख खद्योत अँजोरी।' रामा० ३६५

अंझा—स्त्री० अनध्याय, तातील। लोप 'अंझासी दिनकी भई संझासी सकल दिसि' भू० १३७

अँटना—अक्रि० समाना या भर जाना। काफी होना। खप जाना।

अंटा—पु० बड़ी गोली, ढेला। 'बिलियर्ड' खेल।

अंटाघर—पु० गोली खेलनेका घर।

अंटाचित—क्रिवि० पीठके बल। स्तम्भित।

अँटिया—स्त्री० घास इत्यादिका गट्ठा या पूला।

अँटियाना—सक्रि० गायब करना। अँगुलियोंके बीच छिपाना। लपेटना या गट्ठा बाँधना।

अंटी—स्त्री० अँगुलियोंके बीचका गड्ढा या घाई। गाँठ। सूत लपेटनेकी वस्तु जो प्रायः लकड़ीकी बनी रहती है। सूतकी लच्छी। शरारत, बेईमानी।

अंठी—स्त्री०, गुठली, गिल्टी।

अंड—पु० अंडा। ब्रह्माण्ड या विश्व, लोक (सू० ३३,८०)। अंडकोश, वीर्य, एरण्ड वृक्ष, कस्तूरी।

अंडकटाह—पु० ब्रह्माण्ड, जगत्।

अंडकोश, अंडकोष—पु० फोता। ब्रह्माण्ड।

अंडज—पु० अण्डेसे पैदा होनेवाले जीव, पक्षी, साँप, इ०।

अंडबंड—स्त्री० बेसिर-पैरकी बात। वि० असम्बद्ध, शृंखलाहीन।

अंडस—स्त्री० असुविधा, कठिनाई।

अंडा—पु० वह गोला जिसमेंसे पक्षियोंके बच्चे निकलते हैं। देह।

अंडी—स्त्री० रेंडीका पेड़ या बीज। एक रेशमी कपड़ा।

अंडुवा—पु० वह पशु जो बधिया न किया गया हो। वि० 'आँड़ू'।

अँडुआना—सक्रि० ( पशुको ) नपुंसक करना।

अंडैल—वि० जिसके पेटमें अंडे हों।

अँडोरना—सक्रि० उँडेलना, उछालकर देना (ग्राम२६३)

अंतःसंज्ञ—वि० जिसमें भीतरसे सुख दुःखका अनुभव करनेकी क्षमता हो पर जो उसे प्रकट न कर सके।

अंतःसलिला—स्त्री० वह नदी जो पृथ्वीके भीतर भीतर ही प्रवाहित होती है 'क्या हो सूने मरु अचलमें, अंतः-सलिलाकी धारा-सी' कामायनी ६७।

अंत—पु० अवसान, समाप्ति, मृत्यु। हद। नतीजा। भेद 'उवरे अंत न होहि निबाहू। रामा० ८। अन्तःकरण पिछला भाग। क्रिवि० अन्यत्र 'मेरी तौ गति पति तुम अतहि दुख पाऊँ।' सू० १२। अन्तमें 'नल बल जल ऊँचौ चढ़ै, अन्त नीचको नीच।' बि० १४२।

अंतक—पु० नष्ट करनेवाला, यमराज, मृत्यु, शंकर।

अंतकर,-कारक,-कारी,—पु० नाश करनेवाला।

अंतकाल—पु० मृत्यु, देहावसान, इन्तकाल।

अंतक्रिया—स्त्री० मृतककर्म, अन्त्येष्ठिक्रिया।

अंतग—पु० पूरा जानकार, निपुण।

अंतगति—स्त्री० मृत्यु।

अंतघाई—वि० 'अन्तघाती', अन्तमें विश्वासघात करनेवाला।

अंतच्छद—पु० भीतरी आच्छादन, भीतरी तल।

अंतज—पु० 'अन्त्यज'।

अँतड़ी—स्त्री० आँत।

अंतपाल—पु० पहरेदार, द्वाररक्षक।

अंतरंग, रंगी—वि० बहुत समीपका, दिली, भीतरी। पु० सुहृद।

अंतर—पु० भेद, फर्क, बीचकी दूरी या समय। हृदय ( रामा० १३७ )। अवसर। ओट, छिद्र। वि० अंत-र्धान। भीतरी 'अन्तर प्रेम तासु पहिचाना।' रामा० ३७९। बीचका (अंतर्दशा, अन्तर्दिशा)। क्रिवि० भीतर 'जे पद कमल सभु चतुरानन हृदय कमल अंतर राखे।' सू० ८०। दूर, पृथक् 'सूरदास प्रभुको हियरेतें अंतर करौं नहिं छिनहीं।' सू०

अंतरजामी—पु० दिलकी जाननेवाला। ईश्वर।

अंतरदिशा—स्त्री० विदिशा, कोण।

अंतरधान—दे० 'अंतरध्यान' ( के० ९८ )।

अंतरपट—पु० परदा या ओट, कपड़ौरी। दुराव (प० १५०)।

अंतरस्थ—वि० अन्दर रहनेवाला, भीतरका।

अंतरा—पु० मध्यका पद। क्रिवि० पृथक्, निकट, मध्य।

अँतरा—पु० नागा, बीच, रुकावट (उदे० 'पिचाल')। वि० एक छोड़कर दूसरा ( अँतरे दिन ), नागा देकर आने-वाला ( अँतरा ज्वर )।

अंतरात्मा—स्त्री० अन्तःकरण, जीवात्मा।

अंतराना—सक्रि० भीतर करना, पृथक् करना।
अंतराय—पु० रुकावट, विघ्न।
अंतराल—पु० मण्डल, घेरा, बीच। [गुप्त।
अंतरिक्ष, रिख,-रिच्छ—पु० आकाश शून्यस्थान। वि०
अंतरित—वि० छिपा हुआ, ढँका हुआ।
अंतरीप—पु० भूमिका वह पतला टुकड़ा जो समुद्रमें दूरतक चला गया हो।
अंतरीय—वि० भीतरका। पु० अधोवस्त्र।
अँतरौटा—पु० साड़ीके नीचे पहिननेका कपड़ा (सूवि० २०)। अस्तर। [हृदय।
अंतर्गत—वि० भीतर आया हुआ, शामिल, गुप्त। पु०
अंतर्गति—स्त्री० हृदयका भाव।
अंतर्घट—पु० अन्तःकरण, हृदय।
अंतर्चितवन—पु० अन्तर्दृष्टि।
अंतर्जानु—क्रि० वि० हाथोंको घुटनोंके बीच किये हुए।
अंतर्जामी—पु० 'अन्तर्यामी'।
अंतर्ज्ञान—पु० मनकी बात जानना। अपने मनका अनुभव, 'अन्तर्बोध'।
अंतर्दशा—स्त्री० महादशाके भीतरकी दशा।
अंतर्दिशा—स्त्री० विदिशा, कोण।
अंतर्दृष्टि—स्त्री० 'अन्तर्ज्ञान', प्रज्ञा, आत्मचिन्तन।
अंतर्धान,-अंतर्द्धान,-ध्यान—वि० लुप्त, अदृष्ट, छिपा हुआ। पु० लोप, तिरोधान।
अंतर्द्वार—पु० गुप्त द्वार, खिड़की।
अंतर्निविष्ट—वि० हृदयमें रखा हुआ, भीतर बैठा हुआ।
अंतर्निहित—वि० भीतर रखा हुआ, डूबा हुआ, लीन।
अंतर्पट—पु० आड़, पर्दा।
अंतर्बोध—पु० अन्तर्ज्ञान, भीतरी अनुभव।
अंतर्भाव—पु० भीतर रहना, तिरोभाव, भीतरी इच्छा।
अंतर्भावना—स्त्री० मनन, चिन्तन, ध्यान।
अंतर्भूत—वि० शामिल, अन्तर्गत।
अंतर्मना—वि० व्याकुल, उदास।
अंतर्मल—पु० भीतरका मैल। हृदयका दोष।
अंतर्मुख—वि० जिसका मुख या छिद्र भीतरकी ओर हो।
अंतर्यामी—पु० हृदयकी बात जाननेवाला। ईश्वर।
अंतर्लापिका—स्त्री० वह पहेली जिसका उत्तर उसीके अक्षरोंमें हो।
अंतर्लीन—वि० भीतर छिपा हुआ, निमग्न।
अंतर्वृत्ति—स्त्री० हृदयका झुकाव (प्रभू० १६४)।
अंतर्वेद—पु० गङ्गा यमुनाके बीचका देश, दोआब।
अंतर्हित—वि० अन्तर्द्धान, अदृश्य 'असकहि अंतर्हित प्रभु भयऊ' रामा० ७७
अंतशय्या—स्त्री० मृत्युशय्या, मृत्यु।
अंतश्छद—पु० 'अंतश्छद' देखो।
अंतस्, अंतस—पु० हृदय, अन्तःकरण, कलेजा 'कौंचि कौंचि बाँकी अनियन सों मेरो अन्तस चलनी कीनो।' (ललित कि०)
अंतस्ताप—पु० भीतरी दुःख, मानसिक व्यथा।
अंतस्थ—वि० भीतर या बीचमें स्थित, मध्यवर्त्ती। स्पर्श और ऊष्म वर्णोंके बीचवाले वर्ण—य, र, ल, व।
अंतस्सलिला—वि० स्त्री० गुप्त जलप्रवाहवाली। स्त्री० सरस्वती या फलगू नदी।
अंतहपुर—पु० घरका वह भाग जहाँ स्त्रियाँ रहती हों, जनानखाना (रघु० ३२)।
अंतहीनता—स्त्री० निस्सीमता।
अंतावरी—स्त्री० आँतोंका समूह 'अन्तावरी गहि उड़त गीध पिसाच कर गहि धावहीं।' रामा० ३७४
अंतावशायी—वि० बस्तीके बाहर ग्राम-सीमापर बसनेवाला पु० चाण्डाल।
अंतावसायी—पु० चाण्डाल, नापित, नाई।
अंतिम—वि० सबसे बादका, पिछला। सबसे बढ़कर।
अंतेउर,-वर—पु० अन्तःपुर; जनानखाना।
अंतःकरण—पु० सुख-दुख इत्यादिका अनुमान या भले-बुरेका निर्णय करनेवाली भीतरी इन्द्रिय। सदसद्-विवेचनी शक्ति, हृदय।
अंतःपटी—स्त्री० परदेपर चित्रित पर्वतादिका दृश्य, नाटकका परदा।
अंतःपुर—पु० रनिवास, जनानखाना।
अंतःपुरिक—पु० कचुकी।
अंत्य—वि० अतका, सबसे पिछला, अधम।
अंत्यज—पु० शूद्र, अछूत।
अंत्यवर्ण—पु० शूद्र। देखो "अन्त्याक्षर"।
अंत्याक्षर—पु० वर्णमालाका अन्तिम अक्षर 'ह'। पदान्तमें आनेवाला अक्षर।
अंत्यानुप्रास—पु० पद्यमें चरणके अन्तिम अक्षरोंका मेल, तुक, तुकान्त।

अंत्येष्टि—स्त्री० मृतकका क्रियाकर्म ।

अंत्र-पु० अँत्री—स्त्री० अँतड़ी ।

अंथऊ, अँथऊ—पु० स्त्री० जैनियोंका सन्ध्याकालीन भोजन ।

अंदर—क्रिवि० भीतर ।

अंदरसा—पु० एक तरहकी मिठाई ।

अंदरी, अंदरूनी—वि० भीतरी ।

अंदाज—पु० अनुमान, अटकल, नाप-जोख । ढँग, तर्ज ।

अंदाजन—क्रिवि० लगभग, अटकलसे ।

अंदाजा—पु० तखमीना, अटकल ।

अँदाना—सक्रि० बरकाना ।

अंदु, अंदुक—पु० हाथीके पैरका बन्धन, अलाना । पायजेब ।

अंदेश,-शा, अँदेस—पु० चिन्ता । संशय, खटका । दुविधा 'मिलतहु महँ जनु अहौ निनारे । तुम्ह सौं अहै अँदेस, पियारे ।' प० ४०

अंदोर—पु० शोर,कोलाहल 'बाजन बाजहि होइ अंदोरा ।' प० २०७ ( सू० ८१ ) ।

अंदोह—पु० दुःख, शोक (कबीर ३५ ) चिन्ता, सन्देह ।

अंध—वि० अन्धा, अज्ञानी, बावला, काला 'शून्य डाल, रही अन्ध रात ।' गीतिका २३

अंधक—पु० अन्धा मनुष्य । युधाजित्के पुत्रका नाम । एक दैत्य ।--रिपु, पु० शिव । अँधेरा मिटानेवाले, सूर्य या चन्द्र ।

अंधकार—पु० अँधेरा, मोह, निराशाका भाव ।

अंधकाल—पु० अँधेरा । 'जानिए गोपाललाल प्रगट भई हंसमाल मिट्यो अंधकाल उठौ जननी मुख दिखाई ।' सूबे, ९४ ।

अंधकूप—पु० अँधेरा या सूखा कुआँ ।

अंधखोपड़ी—वि० बुद्धू, मूर्ख, जड़बुद्धि ।

अंधड़—देखो 'अधर' ।

अंधतामिस्र—पु० एक अँधेरा नरक। मृत्युभय (योग)।

अंधधुंध—पु० अन्याय । अँधेरा ( सूबे० ५२ ) वि० विचारहीन, अन्यायपूर्ण 'सूर श्याम कैसे निबहैगी, अंधधुंध सरकार ।' भ्र० १४२

अंधपरंपरा—स्त्री० आँखें बन्दकर पुरानी चालोंका अनुसरण, भेड़ियाधँसान ।

अँधवाई—स्त्री० आँधी 'धावहु नन्दगोहारी लागौ किनि तेरो सुत अँधवाइ उड़ायो ।' सूबे० ५३

अंधर—पु० आँधी । अन्धेरा । 'नखत चहूँदिसि रोवहिं अन्धर धरति अकास ।' प० ११५

अंधरा—पु० अन्धा मनुष्य । वि० अन्धा ।

अंधविश्वास—पु० विवेक-रहित धारणा, भ्रान्तिमूलक विचार ।

अंधस—पु० भात ।

अंधा—वि० नेत्रविहीन, मूर्ख, विवेकहीन । जिसमें कुछ दिखायी न दे ( अन्धा शीशा ) । अन्धेकी लाठी = एकमात्र सहारा ।

अंधाकार—पु० अँधेरा । 'चल चपलाके दीप जलाकर किसे ढूँढ़ता अन्धकार ।' नीहार २६

अंधाधुंध—वि० विचारहीन । क्रि०वि० सीमासे अधिक, बेरोकटोक । स्त्री० अन्धेर, अन्याय, अन्धेरा ।

अँधार—पु० अँधेरा ।

अँधारी—स्त्री०आँधी । अँधेरा । वि०स्त्री० अन्धकारमय ।

अँधियार,-यारा—पु०अँधेरा । वि० अन्धकारयुक्त, सूना।

अँधियाली—स्त्री० अन्धकार ।

अंधेर—पु० अनाचार, अन्याय, गड़बड़ । स्त्री० हलचल 'तुहिन कणों, फेनिल लहरोंमें मच जावेगी फिर अंधेर ।' कामायनी ३९ ।

अंधेरी—देखो 'अँधेरिया' । आँधी ।

अंधेरखाता—पु० गड़बड़ हिसाब, मनमाना व्यवहार, अन्याय ।

अँधेरना—सक्रि० अन्धकारयुक्त करना ।

अँधेरा—पु० अन्धकार, उदासी । वि० अन्धकारमय ।

अँधेरिया—स्त्री० अँधेरी रात । अन्धकार ।

अँधौटी—स्त्री० आँख बन्द करनेकी पट्टी ।

अँध्यार,-पु०,-री—स्त्री० अँधेरा,अँधियारी(ललित१९८)

अंध्र—पु० शिकारी, व्याधा । एक वंश, एक प्रान्त ।

अंब—स्त्री० अम्बा, माता । पु० आमका वृक्ष या फल 'बसै मीन जल धरती, अंबा बसै अकास ।' प० ८५

अंबक—पु० आँख ( त्र्यंबक' = शिव ) । पिता । ताँबा ।

अंबर—पु० आकाश या मेघ । वस्त्र । कपास । एक पुराना नगर ।

अंबर डंबर—पु० सन्ध्याके समयकी लालिमा 'अम्बर-डम्बर साँझके, वालूकी-सी भीत ।'

अंबराई—स्त्री० आमके पेड़ोंका झुण्ड या बागीचा ।

अँबराव—पु० आमका बागीचा ।

अंवरीष—पु० शिव, विष्णु, सूर्य। भूननेका बर्तन, पाश्चात्ताप, छोटा बच्चा, युद्ध, एक नरक, एक सूर्यवंशी राजा।
अंवल—पु० 'अमल', नशेकी वस्तु। खट्टा रस।
अंबष्ठ—पु० एक जातिका नाम, महावत।
अंबा—स्त्री० माता। दुर्गा या गौरी। काशीके राजाकी बड़ी कन्या जो बादमें शिखण्डी हुई थी। आम 'अम्बा फल छाँड़ि कहा सेवरको धाऊँ।' ( सू० व्रजमा० ५ )
अंबापोली—स्त्री० अमरस, अमावट।
अंवार—पु० ढेर या समूह।
अंवारी—स्त्री० मण्डपयुक्त हौदा या छज्जा।
अंबिका—स्त्री० मा, देवी, पार्वती जी। पाण्डुकी जननी।
अंविया,-अँबिया—स्त्री० छोटा आम। आमका टिकारा।
अँबिरथा—वि० व्यर्थ 'जेइ अवतरि उन्ह कहँ नहिं चीन्हा। तेइ यह जनम अबिरथा कीन्हा।'अख० ३४९
अंवु—पु० पानी। चारकी सख्या। —कण्टक = मगर।
अंवुज,-जात—पु० कमल, वज्र, वेंत, शंख, ब्रह्मा।
अंवुद,-धर—पु० मेघ।
अंवुधि,-निधि,-पति—पु० समुद्र या वरुण।
अंवुभृत,-वाह—पु० बादल।
अंवुरुह—पु० कमल। [ भूले।' सूबे० २४५
अंवुवा—पु० आम 'मौरे अंवुवा औ द्रुमबेली परिमल
अंवुशायी—पु० नारायण।
अंबोह—पु० भीड़ या समूह ( दीन १०२ )।
अंभ—पु० पानी। देव। पितृलोक। चारकी संख्या।
अंभसार—पु० मोती।
अंभोज—पु० कमल, मोती, चन्द्र इ०।
अंभोद,-धर—पु० बादल।
अंभोनिधि,-राशि—पु० समुद्र।
अंभोरुह—पु० कमल।
अँवरा, अँवला—पु० 'आँवला'।
अँवली—स्त्री० छोटा आँवला।
अँवदा—वि० 'औंधा'।
अंश—पु० भाग। चौथा या सोलहवाँ हिस्सा, कला। वृत्त-परिधिका ३६० वाँ हिस्सा। कन्धा।
अंशक—पु० बाँटनेवाला, अंशधारी। पु० हिस्सेदार।
अंशसुता—स्त्री० यमुना नदी। [भाग। दिन।
अंशी—पु० हिस्सेदार। वि० अंशधारी, अवतारी।
अंशु—पु० किरण, सूत, लेश। सूर्य।
अंशुक—पु० वस्त्र, उपरना या ओढ़नी। तेजपात।
अंशुमान्—पु० सूर्य। एक राजा।
अंशुमाली—पु० सूर्य।
अंस, अंसु—पु० अंश, भाग। कन्धा 'वाम अंस लसत चाप'-गीता० ३३७, 'कवहुँक बैठि अंसु भुज धरिकै'-सू० ७५। आँसू 'सुमिरि सुमिरि गरजत जल छाँड़त अंसु सलिलके धारे।' ( सू० २०० )
अंसुआ,-वा—पु० आँसू 'रहिमन अँसुआ वाहरे विथा जनावत हेय।' रहीम
अंसुवाना—अक्रि० अश्रुसहित होना।
अंह, अंहस—पु० पाप, अपराध। विघ्न।
अइल—पु० मुँह, छेद, 'सात अइलकेरि चुल्हिया। ( ग्राम ४३७ )
अउ, अउर—अ० और।
अऊत—वि० पुत्रहीन ( कबीर ५३ )।
अऊलना—अक्रि० तप्त होना, जलना, चुभना।
अएरना—सक्रि० अंगीकार करना ग्रहण करना 'दिया सो सीस चढ़ाइ ले आछी भांति अएरि।' बि० ३९
अकंटक—वि० कंटकहीन, बिना खटकेका। बाधारहित।
अकंपन—वि० जो काँपे नहीं, दृढ़, स्थिर। एक राक्षस।
अक—पु० पाप या पीड़ा।
अकच—वि० बालोंसे रहित। पु० 'केतु' नामक ग्रह।
अकच्छ—वि० नंगा, लम्पट।
अकड़—स्त्री० ऐंठ, शेखी, ढिठाई। हठ।
अकड़ना—अक्रि० ऐंठना, सूखकर कड़ा हो जाना। घमंड करना। हठ करना।
अकड़ाव—पु० ऐंठ, तनाव, खिचाव।
अकड़वाज़-अकड़ैत—वि० ऐंठवाला। घमण्डी।
अकत—वि० समूचा, कुल। क्रिवि० सम्पूर्णतया।
अकरथ, अकथ्य—वि० देखो 'अकथ'।
अकथ,-नीय—वि० अवर्णनीय, न कहने योग्य, कहनेकी शक्तिके बाहर।
अकधक—पु० आगापीछा, आशंका।
अकनना—सक्रि० कान देना, सुनना। 'नगर शोर अकनत सुनत अति रुचि उपजावत।' सूबे० २७७ अकनि = आकर्ण्य, सुनकर, 'तुरँग नचावहिं कुँवरवर अकनि मृदंग निसान।' रामा० ७२;

अकना—अक्रि० घबराना।
अकबक—पु० अंडबंड। घबराहट। सुधबुध।
अकबकाना—अक्रि० घबराना या चकित होना।
अकबाल—पु० 'इकबाल', प्रताप, भाग्य। स्वीकार।
अकर—वि० करहीन। दुष्कर या न करने योग्य। बिना महसूलका। पु० आकर, खान 'हिमकर सोहै तेरे जसके अकर सो।' ( भू० २० )
अकरकरा—पु० एक पौधा।
अकरखना—सक्रि० आकर्षित करना, खींचना।
अकरण, अकरन—वि० कारणरहित। जिसका करना अनुचित या कठिन हो। पु० इंद्रियोंसे रहित, ईश्वर।
अकरणीय,-नीय—वि० न करने योग्य।
अकराथ—वि० 'अक्रय्य', महँगा, अमूल्य। खरा,चोखा। 'नफा जानि कै त्यों लै आये सबै वस्तु अकरी।' अ० ४५। 'नाम प्रताप महामहिमा, अकरे किये खोटेउ, छोटेउ बाढ़े।'
अकराथ—वि० 'अकारथ', व्यर्थ। [ कविता० २३४
अकराल—वि० जो भयकर न हो, सुन्दर। भयावह।
अकरास—पु० सुस्ती, अँगड़ाई।
अकरुण—वि० करुणारहित, कठोर।
अकर्ण—वि० जिसको कान न हो, कर्णहीन।
अकर्त्तव्य—वि० अकरणीय, न करने योग्य।
अकर्त्ता—वि० काम न करनेवाला, कर्मसे अलग रहनेवाला, 'पुरुष'।
अकर्त्तृक—वि० जो किसीके द्वारा रचा न गया हो।
अकर्म—पु० बुरा कर्म। कर्मका अभाव।
अकर्मक क्रिया—स्त्री० क्रियाका एक भेद।
अकर्मण्य—वि० निकम्मा, निठल्ला, सुस्त।
अकर्मा—वि० बेकाम, 'अकर्मण्य', काम न करनेवाला।
अकर्मी—वि० पापी, खोटा काम करनेवाला।
अकर्षण,-न—पु० आकर्षण, खिंचाव।
अकलंक—पु० कलंक, दोष। वि० निर्दोष।
अकलंकता—स्त्री० कलंकहीनता 'अकलंकता कि कामी लहई।' रामा० १४५
अकलंकित—वि० कलंकरहित, निर्दोष शुद्ध।
अकल—वि० अवयवरहित, निराकार, अखंड। बेचैन। स्त्री० अंश, बुद्धि।
अकलुष—वि० स्वच्छ, मलहीन।
अकवन—पु० आकया अकौएका पेड़।
अकवाम—स्त्री० 'कौमका बहुवचन।
अकस—पु० वैर, डाह, विरोध 'काम कोह लाइ कै देखाइयत आँखि मोहिं एते मान अकस कीबेकी आपु आहिको।' कविता० २२६ ( उद्० 'जैतवार' )
अकसना—सक्रि० वैर करना, झगड़ना, बराबरी करना। 'साहनिसों अकसिबो, हाथिनको बकसिबो राव भावसिंह जूको सहज सुभाव है।' ललित० १९२
अकसर—क्रिवि० बहुधा, विशेष करके। अकेले ही 'कवन हेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयहु तात।' रामा० ३७७। वि० अकेला।
अकसी—पु० शत्रु, कलस ३६६
अकसीर—स्त्री० सब रोगोंपर चलनेवाली ओषधि। वि० अचूक।
अकस्मात्—क्रिवि० अचानक, संयोगसे, बिना किसी खास वजहके।
अकह—वि० जो कहा न जा सके। अवर्णनीय, अकथ्य। 'कत्ताकी कराकन चकत्ताको कटक काटि कीन्ही सिवराज वीर अकह कहानियाँ।' भू० १५२। अनुचित।
अकहुवा—वि० अकथनीय, अवर्णनीय।
अकांड—वि० शाखारहित। क्रिवि० अचानक, अकारण।
अकांडतांडव—पु० व्यर्थकी बकझक, निरर्थक उछलकूद।
अकाज—पु० दुष्कर्म, बिगाड़, हानि। क्रिवि० व्यर्थ ही।
अकाजना—सक्रि० हानि करना। अक्रि० खो जाना, नष्ट होना, न रहना " मानहुँ राज अकाजेउ आजू।"
अकाजि—वि० हानि या विघ्न करनेवाला। [रामा०२१७
अकाट्य—वि० न काटने योग्य, दृढ़।
अकाथ—क्रिवि० अकारथ, वृथा 'भयो है सुगम तोको अमर-अगम तन समुझि धौं कत खोवत अकाथ।' विन० २२३। वि० 'अकथ'।
अकाम, अकामी—वि० कामनाविहीन, बिना इच्छाका। जितेन्द्रिय।
अकार्य—वि० जो कि मान पा सके। जो सम्पन्न या पूर्ण न हो सके।
अकाय—वि० बिना कायाके। शरीररहित। निराकार।
अकार—पु० 'आकार', 'अ' अक्षर।
अकारज—पु० अकाज, हानि, हर्ज।
अकारण,-रन—वि०कारणरहित,हेतुरहित।क्रिवि०व्यर्थ।

अकारथ—क्रिवि० अर्थ (साखी ८५)।
अकार्य—वि० जो कि मान जा सके जो संपन्न या पूर्ण न हो सके।
अकाल—पु० दुर्भिक्ष। अनवसर 'बिन ही ऊगे ससि समुझि देहै अरघ अकाल।' वि० ११३
अकालिक—वि० असामयिक, बेमौकेका।
अकाली—पु० नानकपन्थी साधु।
अकाव—पु० आक, मदार।
अकास—पु० आकाश, गगन।—बाँधना = अनहोनी बातके लिए प्रयत्न करना। 'सूधे बात कहौ सुख पावैं बाँधन कहत अकास।' सूबे० १३३
अकासदीया-पु० बाँसके ऊपर लटकाया जानेवाला दीपक।
अकासबानी—स्त्री० देखो 'आकाशवाणी'।
अकासबेल—पु० अमरबेल।
अकासी—स्त्री० एक पक्षी 'बाएँ अकासी धौरी आई। लोवा दरस आइ दिखराई।' प० ६१
अकिंचन—वि० जिसके पास कुछ न हो, दरिद्र, दीन। कर्मशून्य। पु० दरिद्र मनुष्य।
अकिंचनता—स्त्री० दीनता, दरिद्रता।
अकिंचित्कर—वि० जिससे कुछ करते न बने, असमर्थ।
अकिल—स्त्री० 'अक्ल', बुद्धि।
अकिलदाढ़—पु० पूर्ण वय प्राप्त होनेपर निकलनेवाला दाँत।
अकिल्विष—वि० पापशून्य, निर्मल।
अकीरति, अकीर्त्ति—स्त्री० अपयश, बदनामी।
अकीर्त्तिकर—वि० अपयश देनेवाला।
अकुंठ—वि० जो कुंठित न हो, तीक्ष्ण, खरा। खुला हुआ 'जीवतहि विधिलोक जीवतहि सिवलोक जीवत बैकुंठ लोक जो अकुंठ गायो है।' सुन्द० १६२
अकुटिल—वि० जो कुटिल न हो,सीधा,भोलाभाला,सरल
अकुताना—अक्रि० उकताना, अकुलाना या ऊबना, तंग आना ( कक्रौ० ५१८ )।
अकुल—वि० कुलविहीन। अकुलीन। पु० नीच कुल।
अकुलाना—अक्रि० व्याकुल या बेचैन होना। मग्न होना।
अकुलिनी—स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री। वि० स्त्री० व्यभिचारिणी।
अकुलीन—वि० जो कुलीन न हो, निम्नकुलोत्पन्न,क्षुद्र।
अकूत—वि० जो कूता न जा सके, अपरिमित, अपार 'सुनिकै दूत अकूत मोद लहि चले तुरत तिरहूता।' रघु० १३३। 'सूर नारिनर देखन धाए घर घर शोर अकूत।' सूबे २५७ ( प० ६३ )। क्रिवि० अकस्मात् 'सबद अकूत मँडप मँह आवा।' प० ७६
अकूहल—वि० बहुत, असंख्य।
अकृच्छ्र—वि० सरल या आसान। पु० आसानी।
अकृत—वि० बिना किया हुआ या नष्ट किया हुआ। स्वयंभू। कर्महीन, निकम्मा 'हौं असोच, अकृत अपराधी, सम्मुख होत लजाउँ।' सूबे० १४
अकृतकाल—वि० जिसके लिए कोई काल न नियत किया गया हो।
अकृतज्ञ—वि० कृतघ्न, किये हुए उपकारको न माननेवाला।
अकृतार्थ—वि० जिसका कार्य सफल न हुआ हो फलरहित।
अकृती—वि० जो कुछ करने योग्य न हो, निकम्मा।
अकृपा—स्त्री० क्रोध, निर्दय व्यवहार।
अकृश—वि० पीन, अधिक।
अकेतन—वि० जिसके घर-द्वार न हो, गृह-विहीन।
अकेल, अकेला—वि० एकाकी, अद्वितीय। पु० निर्जन स्थान (अकेलेमें)
अकेले—क्रिवि० एकाकी। सिर्फ।
अकैया—पु० एक तरहकी थैली, खुरजी, गोन।
अकोट—वि० करोड़ों।
अकोतर सौ—वि० एक सौ एक।
अकोप—पु० क्रोधाभाव, प्रसन्नता।
अकोर, अकोरी—देखो, 'अँकोर'। अँकवार या गोद। घूस (रतन० १३)
अकोला—पु० 'अंकोल' वृक्ष।
अकोविद—वि० मूर्ख, अदक्ष। पु० ऊखका सिरा या गँड़ा।
अकोसना—सक्रि० 'कोसना', भला-बुरा कहना।
अकौआ—पु० मदार या आकका पेड़।
अक्खड़—वि० उजड्ड, मूर्ख, खरीखरी बात कहनेवाला।
अक्खर—पु० देखो 'अक्षर'।
अक्खा—स्त्री० दोनो ओर लटकनेवाली थैली, खुरजी।
अक्रता—स्त्री० अक्रियता, ढिलाई (रत्ना० ४९९)।
अक्रम—वि० क्रमरहित, उलटा-पुलटा पु० व्यतिक्रम, बेतरतीबी।
अक्रमातिशयोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार 'जहाँ काज कारन दोऊ प्रकट होयँ इक संग।'
अक्रिय—वि० क्रियाविहीन, निश्चेष्ट, सुस्त।
अक्रूर—वि० दयालु,कोमल स्वभावका। श्रीकृष्णकेचाचा।
अक्ल—स्त्री० बुद्धि या समझ।—का पूरा = कम अक्ल,

चनचक्कर ।—के पीछे लट्ठ लिये फिरना = हमेशा मूर्खताका काम करना ।—का चरने जाना=बुद्धि खो देना, बुद्धिका अभाव होना ।
अक्स—पु० प्रतिबिम्ब ।
अक्लम—वि० न थकनेवाला ।
अक्लमंद—वि० बुद्धिमान्, समझदार ।
अक्लमंदी—स्त्री० बुद्धिमानी, होशियारी, समझदारी ।
अक्लिष्ट—वि० जो क्लिष्ट न हो, सरल । क्लेश-रहित ।
अक्लेद—पु० सूखापन ।
अक्ष—पु० पहिया या धुरी । गाड़ीका जुआँ या गाड़ी । चौसरका पाँसा, रुद्राक्ष, 'अक्षिस' ( आँख ) । सोलह माशेकी तोल । आत्मा । सर्प । गरुड़ ।
अक्षकूट—पु० आँखकी पुतली ।
अक्षत—पु० बिना टूटे चावल, धानका लावा । वि० बिना टूटा हुआ । समूचा ।
अक्षतयोनि—वि० स्त्री० पुरुषसे जिसका समागम न [हुआ हो ।
अक्षम—वि० असमर्थ, असहिष्णु ।
अक्षमता—स्त्री० असमर्थता, असहिष्णुता ।
अक्षय, अक्षय्य—वि० जो नश्वर न हो, अविनाशी ।
अक्षर—पु० वर्ण, हरफ । ब्रह्म । गगन । आत्मा । मोक्ष। धर्म । वि० अविनाशी ।
अक्रिय—वि० क्रियारहित, व्यापाररहित, निश्चेष्ट ।
अक्लिष्ट—वि० जो कठिन न हो, सीधा, सरल, कष्टरहित ।
अक्षरशः—क्रिवि० एक एक अक्षर । पूर्णतया ।
अक्षांश—पु० भूगोलके ३६० कल्पित अंशोंपरसे भूमध्य रेखाके समानान्तर होती हुई रेखा ।
अक्षि—स्त्री० नेत्र, नयन ।
अक्षीव—वि० धीर, शान्त । पु० सहिजनका वृक्ष ।
अक्षुण्ण—वि० बिना टूटा हुआ, अविकृत, समूचा ।
अक्षौनि—स्त्री० अक्षौहिणी' ।
अक्षोभ—पु० क्षोभका उलटा, शान्ति । वि० जो क्षुब्ध या भयभीत न हो ।
अक्षौहिणी—स्त्री० वह सेना जिसमें १०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ, २१८७० हाथी हों ।
अक्सर—क्रिवि० दे० 'अकसर', प्राय., बहुधा । एकाकी ।
अखंग—वि० समाप्त न होनेवाला, अविनाशी ।
अखंड—वि० सम्पूर्ण, जिसका सिलसिला न टूटे। बाधारहित। [लगातार ।
अखंडनीय—वि० जिसका खंडन न हो सके । सुदृढ़ ।
अखंडल—वि० अखंड, सम्पूर्ण ।
अखंडित—वि० जिसका खण्ड न हो, समूचा निर्विघ्न ।
अखज—वि० अखाद्य, अभक्ष्य 'विहरत पंख फुलाय; नहीं खज अखज विचारत ।' दीन० २०९
अखती,-तीज—स्त्री० अक्षय तृतीया नामक तेवहार ।
अखबार—पु० समाचारपत्र ।
अखय—वि० 'अक्षय', अविनाशी ।
अखर—पु० अक्षर ।
अखरना—सक्रि० अनुचित या कष्टदायी मालूम होना ।
अखरा—वि० खरा नहीं, बनावटी ।
अखरावट,-रावटी-स्त्री० वर्णमाला, वे पद्य-समूह जिनका आरम्भ वर्ण-क्रमके अनुसार हुआ हो ।
अखरोट—पु० एक पेड़ तथा उसका फल ।
अखर्व—वि० बड़ा या लम्बा । ( राम० चौथा प्रकाश )
अखाड़ा,-रा-पु० कुश्ती लड़नेकी जगह । साधुओंकी मंडली या सभा । 'सूरदास स्वामी ए लरिका इन कब देखे मल्ल अखारे ।' सूबे० २६१
अखात—पु० झील, खाड़ी प्राकृतिक जलाशय ।
अखिन्न—वि० प्रसन्न ।
अखिल—वि० सम्पूर्ण, अखंड ।
अखिला—वि० अविकसित, अप्रसन्न ।
अखीन—वि० अक्षीण, अविनाशी ।
अखीरमें—क्रिवि० अंतमें ।
अखूट—वि० अखंड या अधिक ।
अखेट—पु० 'आखेट' ।
अखेद—पु० दुखका उल्टा, प्रसन्नता । वि० प्रसन्न । क्रिवि०— प्रसन्नतापूर्वक 'सखि सुचारि प्रकारकी बरनहिं सुकवि अखेद' गुलाब २५६ ।
अखै—वि० देखो 'अक्षय' ।
अखैवट,-वर—पु० अक्षयवट ।
अखोर—वि० साधु प्रकृतिका, अच्छा, सुन्दर । पु० तुच्छ वस्तु, कूड़ा कचड़ा या मुरझाई हुई घास ।
अखोह—पु० विषम भूमि ।
अखौट, अखौटा—पु० जाँतेके बीचकी खूँटी ।
अख्तियार—पु० इख्तियार, अधिकार ।
अख्यात—वि० जो प्रसिद्ध न हो, अविदित ।
अख्यान—पु०, अख्यायिका—स्त्री० दे० 'आख्यान' [आख्यायिका' ।
अगंड—पु० कर-पद-विहीन रुण्ड ।

अग—वि० न चलनेवाला । पु० पहाड़, पेड़, सर्प । 'अज्ञ' या मूर्ख ।

अगज—वि० पहाड़से उत्पन्न । पु० हाथी । शिलाजीत ।

अग-जग—पु० चराचर ।

अगटना—अक्रि० इकट्ठा होना ।

अगड़—स्त्री० 'अकड़',अभिमान या ऐंठ 'साहिन सो बिनु डर अगड़, बिनु गुमानको दान ।' भू० ६०

अगड़धत्ता—वि० ऊँचा-पूरा । बढ़ा-चढ़ा ।

अगण—पु० जगण, तगण, रगण सगण, ये चार गण जो छन्दके आदिमें रखनेसे अशुभ समझे जाते हैं ।

अगणन—वि० अगणनीय, असंख्य 'ऊपर मध्याह्न तपन, तपाक्रिया, सन्-सन्-सन् हिलाझुला तरु अवलत वही वह हवा' अनामिका १४ ।

अगणनीय—वि० जो गिना न जा सके, असंख्य । न

अगणित—वि० असंख्य, अनेक । [ गिनने योग्य ।

अगण्य—वि० देखो 'अगणनीय' ।

अगत्त, अगति—स्त्री० दुर्गति, बुरी दशा 'अफजलकी अगत्ति सासताकी अपगति बहलोल विपत्तिसों डरे उमराव हैं । भू० ३७ । 'गति' अर्थात मोक्षका न मिलना । देखो 'अगती' । [आश्रयहीन ।

अगतिक—वि० जिसकी कहीं गति या ठिकाना न हो,

अगती—वि० जिसकी गति अच्छी न हो, दुराचारी । पु० पापी मनुष्य 'अगतिनको गति देनी'-सू० २९ वि० पेशगी । क्रिवि० पहिलेसे ।

अगत्या—क्रिवि० आगे चलकर, अन्तमें । सहसा ।

अगद—पु० ओषधि । वि० स्वस्थ, नीरोग ।

अगन—स्त्री० अग्नि । पु० अगण या दुष्टगण (पिंगलमें)। वि०अगणित, बहुत 'पम्पा मानसर आदि अगन तलाब लागे जेहिके परनमें अकथ युत गथके ।' भू० ११४

अगनत, अगनित—वि० अगणित ।

अगनी—स्त्री० अग्नि । वि० स्त्री० अगणित, असंख्य । "...रघुनायककी अगनी गुनगाहैं" कविता० २०४

अगनू—स्त्री० आग्नेय कोण ।

अगनेउ, अगनेत—पु० आग्नेय दिशा ( प० १८५ ) ।

अगम—वि० जहाँ कोई पहुँच न सके, गहन । कठिन, सुदृढ़ 'लंका बसत दैत्य अरु दानव, उनके अगम सरीरा।' सू० रा० ३९ । अपार, बहुत । दुर्लभ । 'आगम' ।

अगमन—क्रिवि० पहिले, आगेसे 'हस्ति पाँच जो अगमन धाए । तिन्ह अङ्गद धरि सूँड़ फिराए ।' प० १२६ 'उठि अकुलाइ अगमने लीने मिलत नैन भरि आये नीर ।' [सूबे०४३२

अगमानी—पु० अग्रणी, नायक । देखो 'अगवानी' ।

अगम्य—वि० देखो 'अगम' ।

अगर—पु० एक सुगन्धित पेड़ । अ० यदि ।

अगरना—अक्रि० आगे जाना या बढ़ना ।

अगरपार—पु० क्षत्रियोंका एक भेद ।

अगर बगर—क्रिवि० अगल बगल 'अगर बगर हाथी घोरनको सोर है ।' सुदामा० १५

अगरी—स्त्री० अर्गल या ब्योंड़ा । एक तरहकी घास ।

अगरू—पु० 'अगर' चन्दन । [ अनुचित बात ।

अगरो—वि० अगला, श्रेष्ठ, ज़्यादा । निपुण (व्रज० ५०६)।

अगल बगल—क्रिवि० आसपास, इधर उधर ।

अगला—वि० आगे या सामनेका । पुराना, पहिलेका । बादका, आनेवाला । अगुआ, पूर्वज ।

अगवना—सक्रि० सँभालना, सहना 'अगवै कौन सिंहकी झपटैं ।' छत्र० १४ । अग्रसर होना ।

अगवाई—पु० अगुआ 'सफदरजंग भये अगवाई ।' सुजा० १३६ । स्त्री० अगवानी 'मुनि आगमन सुनत दोउ भूपति चले लेन अगवाई ।' रघु० १४७

अगवार—पु० घरके सामनेका हिस्सा ।

अगवारी—स्त्री०हलकी फालमें लगा हुआ लकड़ी का टुकड़ा।

अगवाड़ा—पु०घरके सामनेका भाग, पिछवाड़े' का उलटा ।

अगवान—पु० अगवानी करनेवाला 'अगवानन्ह जब दीख बराता ।' रामा० १६४ । अगवानी ।

अगवानी—स्त्री० आगे जाकर स्वागत करना । स्वागत । पु० अग्रणी, नेता ['याही तें अनुमान होत है, पट-पदसे अगवानी ।' सू० ]

अगसारी—क्रिवि० आगे, सामने 'हस्तिक जूह आय अँगसारी ।' प० १२६ । [एक पेड़ ।

अगस्त, अगस्त्य—पु० एक ऋषि या एक तारेका नाम।

अगह—वि० 'अग्राह्य', जो पकड़ने योग्य न हो, चंचल 'निसि बासर यह भरमति इत उत, अगह गही नहिं जाय ।' सू० ४

अगहन—पु० अग्रहायण मास,कार्त्तिकके बादका महीना ।

अगहनिया—वि० अगहनमें होनेवाला ।

अगहनी—स्त्री० अगहनमें काटी जानेवाली फ़सल ।

अगहर—क्रिवि० पहिले ।

अगहुड़—क्रिवि० आगे 'भयवस अगहुड परै न पाऊ ।' [ रामा० २१०

अगाउनी—क्रिवि० आगे ।

अगाऊँ, अगाऊ—वि० पेशगी, आगेका । क्रिवि० पहिले ही, आगेसे 'कौन कौनको उत्तर दीजे वातें भग्यो अगाऊँ ।' सू० २६१

अगाड़ी—क्रिवि० आगे, सामने, पहिले । स्त्री० घोड़ेकी गरदनकी रस्सी । आगेका हिस्सा ।

अगाडू—क्रिवि० आगे, पहिले ।

अगाध—वि० अधिक गहरा, अथाह, अपार । अधिक । दुर्बोध पु० छेद ।

अगान—वि० अज्ञानी, नासमझ ।

अगामै—क्रिवि० आगे ।

अगार—पु० घर । राशि । क्रिवि० आगे 'ईसुर कही कि कुँवर जी हूजे आप अगार ।' सुजा० ३२ ( ३६ भी)

अगारी—क्रिवि० 'अगाड़ी' ।

अगाव—पु० ऊखके ऊपरका नीरस अंश, अगौरा ।

अगास—पु० 'आकाश' । दरवाजेके सामनेका चबूतरा ।

अगाह—वि० अथाह, 'भवसागर भारी महा गहिरा अगम अगाह ।' साखी १०७ । बहुत (प० ३६) । चिन्ताग्रस्त । 'अगाह', विदित ।

अगिन—स्त्री० अग्नि 'अह अगिन निसि दिन जरै, गुरुसे चाहै मान ।' साखी ४ । एक तरहकी घास । एक चिड़िया । वि० 'अगणित', बहुत ।

अगिनित—वि० जिसकी गणना न हो सके, असंख्य ।

अगियाना—अक्रि० तापयुक्त होना, जल उठना, मिजाज गरम हो उठना । सक्रि० बर्तनको आगमें डालकर शुद्ध करना ।

अगिया बैताल—पु० एक बैताल, ब्रह्मराक्षस', घूमती हुई सी ज्योति ।

अगियारी—स्त्री० धूपकी तरह अग्निमें डालनेकी वस्तु ।

अगिरी—स्त्री० घरका सामनेवाला हिस्सा ।

अगीटा—पु० सामनेका हिस्सा ।

अगीत—वि० स्वरहीन, गानके गुणोंसे रहित 'एक अस्फुट अस्पष्ट, अगीत, सुप्तिकी ये स्वप्निल-मुसुकान ।'पल्लव२

अगीत पछीत—पु० मकानके सामनेवाला और पिछला हिस्सा । ( ग्राम० ४८९ ) ।

अगुआ—पु० अग्रणी, नेता, मार्गदर्शक, आगेका हिस्सा ।

अगुआई—स्त्री० नेतृत्व, मार्गप्रदर्शन 'कियेउ निषादनाथ अगुआई ।' रामा० २९६ । दे० 'अगवानी' 'केन चले मुनिकी अगुवाई ।' रघु० ५६

अगुआना—सक्रि० अगुआ बनाना । अक्रि० आगे जाना 'संगक सखी अगुआइलि रे हम एकसरि नारी ।'

अगुआनी—स्त्री० आगे जाकर स्वागत करना । [विद्या० ८१

अगुण—वि० गुणरहित, मूर्ख । पु० अवगुण ।

अगुताना—अक्रि० उकताना, अधीर होना ।

अगुन, अगुनी—वि० 'अगुन' देखिये । 'खल अघ अगुन साधु गुनगाहा ।' रामा० ७

अगुमन—क्रिवि० पहिले आगे ।

अगुरु—पु० अगरका पेड़ । 'ऊद ।' शीशमका वृक्ष ।

अगुवा—देखो 'अगुआ' ।

अगुवानी—स्त्री० अगवानी, अभ्यर्थना ।

अगुसरना—अक्रि० आगे बढ़ना ।

अगुसारना—सक्रि० आगे बढ़ाना, 'वामचरण अगुसारल रे, दाहिन तेजइत लाज ।' विद्या० ४७

अगूठना—सक्रि० अगोटना, घेरना 'जेहि कारण गढ़ कीन्ह अगूठी । कित छाँड़े जो आवै मूठी ।' प० २८८

अगूढ़—वि० जो गूढ़ न हो, प्रकट, स्पष्ट ।

अगूता—क्रिवि० सम्मुख, आगे 'बाजन बाजहिं होइ अगूता' [ प० ३३०

अगेह—वि० गृहरहित, बेठिकानेका ।

अगोचर—वि० जो इन्द्रियोंद्वारा ग्राह्य न हो । इन्द्रियोंकी गतिसे परे, अप्रकट ।

अगोट—पु० ओट, रोक । आश्रय, सहारा ( बि० १६२ ) वि०...अकेला, गुट रहित ( रहि० वि० ३९ ) । 'रहिमन यहि संसारमें सब सुख मिलत अगोट ।' रहीम २१ वि० पहरे इत्यादिसे सुरक्षित रसखोः भयेते अगोट आगरेमें सातौ चौकी डाँकि आनि घर कीन्ही हद रेवा है ।' भू० ३१

अगोटना—सक्रि० रोकना, छेंकना, घेरना 'सत्रु कोट जो आइ अगोटी ।' प० २७८ । छिपा रखना या रोक रखना 'जौ गुन ही तौ राखिये आँखिन माँहि अगोट ।' वि० १०४ , अक्रि० रुकना, फँसना ।

अगोता—स्त्री० अगवानी । क्रिवि० सम्मुख ( देखो 'अगूता' ) ।

अगोरदार—पु० पहरा देनेवाला ।

अगोरना—सक्रि० प्रतीक्षा करना, राह देखना, पहरा देना, रोकना, अगोटना ।

अगोरिया—पु० खेत रखानेवाला, रखवाला।

अगौनी—स्त्री० अगवानी। क्रिवि० पहिले, आगे 'इन्दिरा अगौनी इन्दु इन्दीवर औनी महा सुन्दर सलौनी गजगौनी गुजरातकी।' रवि० ६१

अगौरा—पु० गन्नेका ऊपरकी ओरका हिस्सा।

अगौहैं—क्रिवि० आगेकी ओर, आगे।

अग्नि—स्त्री० आग, गर्मी, जठराग्नि।

अग्निकर्म—पु० हवन। दाहक्रिया।

अग्निकुमार—पु० कार्त्तिकेय।

अग्निजिह्व—पु० देवता।

अग्निदाह—पु० आगमें जलाना, शवका अग्निसंस्कार।

अग्निदीपक—वि० जठराग्निको प्रदीप्त करनेवाला, भूख बढ़ानेवाला।

अग्निपरीक्षा—स्त्री० अग्नि-शुद्धि, किसीको आगपर बैठाकर, आग हाथपर रखकर या खौलते हुए तैलादि-का स्पर्श कराकर यह देखना कि वह दोषी है या निर्दोष। आगमें डालकर सोने-चाँदीकी परख करना।

अग्निबीज—पु० सुवर्ण, सोना।

अग्निभू—पु० षडानन, कार्त्तिकेय।

अग्निमणि—पु० सूर्यकान्त मणि। आतशी शीशा।

अग्निमुख—पु० देवता। प्रेत। ब्राह्मण। चीते या भिलावेका वृक्ष।

अग्निवल्लभ—पु० साखूका पेड़ या उसकी गोंद।

अग्निशिखा—स्त्री० आगकी ज्वाला।

अग्निशुद्धि—स्त्री० देखो 'अग्निपरीक्षा'।

अग्निसंस्कार—पु० जलाने या अग्निस्पर्श करानेकी क्रिया, दाहक्रिया।

अग्निहोत्र—पु० वेदोक्त मन्त्रोच्चारण-सहित सायं प्रातः हवन करनेका कार्य।

अग्य—वि० देखो 'अज्ञ'।

अग्या—स्त्री० आज्ञा 'अग्या सिरपर नाथ तुम्हारी।' [रामा० ४७

अग्यारी—स्त्री० धूप इ० जलाना। धूप देनेका पात्र।

अग्र—वि० अगला, उत्तम। पु० अगला हिस्सा, सिरा। क्रिवि० सामने या आगे।

अग्रगण्य—वि० प्रथम गणनीय, श्रेष्ठ।

अग्रज—पु० बड़ा भाई। नेता, अग्रणी। वि० श्रेष्ठ।

अग्रजन्मा, अग्रजाति—पु० ब्राह्मण।

अग्रणी—पु० नेता, नायक।

अग्रदूत—पु० पहला सन्देश-वाहक, पहला नेता, नेता।

अग्रशोची—पु० पहलेसे विचार करनेवाला, दूरदर्शी।

अग्रसर—वि० प्रधान। पु० जो आगे जावे, नेता।

अग्रहायण—पु० अगहन या मार्गशीर्षका महीना।

अग्राशन—पु० देवादिके निमित्त पहलेसे निकालकर रखा हुआ भोजनका भाग।

अग्राह्य—वि० अग्रहणीय, त्याज्य, न लेने योग्य।

अग्रिम—वि० अगला, श्रेष्ठ। पेशगी।

अग्र्य—वि० श्रेष्ठ। पु० ज्येष्ठ भ्राता।

अघ—पु० पातक, दुःख, अधर्म।

अघट—वि० न होने योग्य, कठिन। जो कम न हो, जो न चुके 'दीपक दीन्हा तेल भरि बाती दई अघट्ट।' साखी ६। स्थिर।

अघटित—वि० जो न हुआ हो। अमिट 'काल करम गति अघटित जानी।' रामा० २७८। न घटने योग्य, जो कम न हो, प्रचुर। असम्भव, अयोग्य।

अघवाना—सक्रि० (भोजन इ० से) सन्तुष्ट करना।

अघाउ—पु० तृप्ति,सन्तोष 'ता मिसि राजकुमार विलोकति होत अघात न चित्त पुनीता।' रघु० १०५

अघात—पु० 'आघात', चोट, प्रहार 'बुंद अघात सहैंगिरि कैसे।' रामा ४०२। वि० मन भर, बहुत।

अघाना—अक्रि० अफरना, तृप्त होना 'जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।' रामा० २१। पूर्णतः सन्तुष्ट होना, थकना'प्रभु बचनामृत सुनि न अघाऊँ।' रामा०५८४। अघाइ = अघाकर (पूर्णतः)।

अघी—वि० पातकी, पापी, कुकर्मी।

अघोर—पु० शिवजी। सम्प्रदाय विशेष। वि० घोर नहीं, सुहावना। 'घोर', अत्यन्त विकराल।

अघोरनाथ—पु० महादेवजी।

अघोरी—पु० अघोरपन्थी। घृणित मनुष्य। वि० घृणित, गन्दा 'एते पर नहिं तजत अघोड़ी-कपटी कंस कुचाली।' सूबे० २८०

अघोष—वि० निःशब्द, नीरव। ग्वालोंसे रहित। कवर्गादि पाँच वर्गोंके प्रथम दो अक्षर तथा श, ष, और स।

अघौघ—पु० अघ + ओघ=पापोंका समूह।

अघ्रानना—सक्रि० गन्ध लेना।

अचंचल—वि० जो चञ्चल न हो, स्थिर, गम्भीर, शान्त।

अचंभव—पु० अचम्भा, आश्चर्य 'एक अचम्भव होत बड़ो

तिन औंठ गहैं अरि जात न जारे ।' भू० ७१

अचंभा,-भो,-भौ—पु० आश्चर्य, विस्मय, ताज्जुबकी बात ।

अचक—वि० अचूक, अटूट, बहुत, भरपूर । घबराहट ।

अचकन—पु० लम्बा अङ्गा ( दीन २३ ) ।

अचकाँ—क्रिवि० अचानक 'जानत हौं तुम हौ बल पूरे । पै अचकँ आये नहिं सूरे ।' सुजा० १२८

अचक्का—वि० अपरिचित, अनजान ।

अचकेमें—क्रिवि० धोखेमें, अचानक ।

अचगरा—वि० उत्पाती, छेड़छाड़ करनेवाला 'जो तेरो सुत खरोई अचगरो तऊ कोखको जायो ।' सूबे० ६८

अचगरी—स्त्री० छेड़छाड़ 'लरिकाई तें करत अचगरी मै जाने गुन तबहीं ।' सू० ११२ । ज्यादती 'जो लरिका कछु अचगरि करहीं ।' रामा० १५०

अचना, अचवना—सक्रि० आचमन करना, पीना ।

अचपल—वि० जो चपल न हो, स्थिर, धीर, शान्त ।

अचपली—स्त्री० किलोल, अठखेली ।

अचभौना—पु० अचम्भा, ताज्जुबकी बात ।

अचमन—पु० देखो 'आचमन' ।

अचर—वि० न चलनेवाला, जड़ । पु० जड़ पदार्थ ।

अचरज—पु० 'आश्चर्य' तअज्जुब 'पछिले पहर भूपु नित जागा । आजु हमहिं बड़ अचरजु लागा ।' रामा० २१७

अचल—वि० स्थिर, दृढ़, चिरस्थायी । पु० पहाड़ ।

अचलता—स्त्री० स्थिरता ।

अचला—स्त्री० पृथ्वी ।

अचवना—सक्रि० आचमन करना, पीना । 'दावानल अचयो ब्रजराज ब्रजजन जरत बचायो ।' सू० ९४

अचवाई—वि० प्रक्षालित, स्वच्छ ।

अचवाना—सक्रि० आचमन कराना ।

अचाक, अचाका—क्रिवि० अचानक, एकाएक 'दिनहिं राति अस परी अचाका । भा रवि अस्त चन्द्र रथ हाँका ।' प० २५

अचान, अचानक—क्रिवि० सहसा, एकाएक ।

अचार—पु० आचार । अथाना । एक फल ।

अचारज—पु० 'आचार्य' ।

अचारी—पु० आचार-विचारका पालन करनेवाला । एक तरहका आमका अचार ।

अचाह—स्त्री० अरुचि अनिच्छा । वि० निःस्पृह, इच्छा-रहित ( दीन १३० ) ।

अचाहा—वि० जिसकी इच्छा या चाह न हो । जिसपर प्रीति न हो । पु० वह मनुष्य जिसपर प्रेम न हो या जो प्रेम न करे ।

अचाही—पु० जिसे किसी बातकी इच्छा न हो ।

अचिंत—वि० निश्चिन्त ।

अचिंतनीय—वि० जिसका चिन्तन न किया जा सके, कल्पनातीत । जो चिन्ता करने योग्य न हो । तुच्छ ( परिमल १८४ )

अचिंत्य—वि० देखो 'अचिन्तनीय' । जिसका पहले भान न रहा हो, आकस्मिक ।

अचितवन—वि० कटाक्षहीन, एकटक 'अनिमेष' अचितवन कालनमन ? युगवाणी १९

अचिर—क्रिवि० जल्द वि० अनित्य ।

अचिरता—स्त्री० क्षणिकता ।

अचीता—वि० जिसका विचार या अनुमान पहले न किया गया हो, असम्भावित । अनुमानसे [illegible] ( छत्र० १४२ ) । चिन्तारहित ।

अचीर—वि० वस्त्रहीन ।

अचूक—वि० जो न चूके, अमोघ । पक्का, निश्चित । क्रिवि० चतुरतासे, सफाईसे । अवश्य ।

अचेत—वि० संज्ञारहित, बेसुध । अज्ञान या मूर्ख । जड़ । पु० जड़ता, माया ।

अचेतन—वि० जिसमें चेतना न हो, जड़ । संज्ञाहीन, बेसुध । पु० जड़ वस्तु ।

अचैतन्य—पु० चेतनाका अभाव, अबोध, अज्ञात । वि० अचेतन, जड़ ।

अचैन—पु० बेचैनी, विकलता । वि० व्याकुल ।

अचोना—पु० आचमन करने या पीनेका बर्तन ।

अच्युत—वि० जो गिर न सके, जो मार्गभ्रष्ट न हो पु० रामचन्द्रजी, ( अनामिका १५१ )

अच्छ—वि० अच्छा, स्वच्छ । 'मानहु विधि तन छवि स्वच्छ राखिबे काज ।' बि० १६० । पु० अक्षि, आँख । रावणपुत्र अक्षयकुमार ।

अच्छत—पु० बिना टूटा हुआ चावल । वि०

अच्छर—पु० अक्षर, वर्ण । ब्रह्मा ईश्वर 'बालरूप जब कीनौ ।' छत्र० १५९

अच्छरा, अच्छरी—स्त्री० अप्सरा ।

अच्छा—वि० ठीक, भला, चोखा । नीरोग ।

अच्छी तरह, ठीक मौकेपर 'आप अच्छे आये।' पु० शुभ कर्म, भला, बड़ा आदमी। बहुव० बापदादा। अ० खैर, हाँ।

अच्छाई—स्त्री० उत्तमता, सीधापन, सुन्दरता, भलाई।

अच्छापन—पु० अच्छा होनेका भाव, उत्तमता, सुन्दरता।

अच्छोत—वि० बहुत।

अच्छौहिनी—स्त्री० देखो 'अक्षोहिणी'।

अच्युत—वि० जो गिरा न हो; अविनाशी। पु० विष्णु।

अछक—वि० जिसकी तृप्ति न हुई हो, भूखा 'तेग या तिहारी मतवारी है अछक तौ लौं जौ लौं गजराजनकी गजक करै नहीं।' भू० १८१

अछकना—अक्रि० तृप्त न होना।

अछत—क्रिवि० रहते हुए, सामने 'तोर अछत दसकन्धर मोर कि अस गति होइ।' रामा० ३७५। न रहते हुए 'गनती गनिबे तें रहे छतहूँ अछत समान। वि० ११६

अछताना पछताना—अक्रि० बार बार खेद प्रकट करना।

अछन—पु० दीर्घकाल। क्रिवि० धीरे धीरे।

अछना—अक्रि० विद्यमान रहना।

अछप—वि० न छिपने योग्य, प्रकट।

अछय—देखो 'अक्षय'।

अछरा,-री—स्त्री० अप्सरा 'बरनौं राजमन्दिर रनिवासू। जनु अछरीन्ह भरा कैलासू।' प० २०

अछवाई—स्त्री० सफाई 'भोजन बहुत, बहुत रति चाऊ। अछवाई नहिं, थोर बनाऊ।' प० २२९

अछवाना—सक्रि० अच्छा करना, सँवारना।

अछाम—वि० पतला नहीं, मोटा, हृष्टपुष्ट।

अछिद्र—वि० छिद्रहीन।

अछूत—वि० जो छुआ न गया हो। कोरा, पवित्र। न छूने योग्य। अस्पृश्य। पु० अन्त्यज, 'हरिजन'।

[अ]छूता—वि० अस्पृष्ट, अप्रयुक्त, कोरा, नया, पवित्र।

[अ]छेद—वि० अछेद्य, अभेद्य। पु० अभिन्नता, निष्कपटता 'चेला सिद्धि सो पावै गुरुसों करै अछेद।' प० ११८

[अ]छेद्य—वि० अखण्ड्य, अविनाशी।

[अ]छेव—वि० छिद्ररहित, निर्दोष 'रामानन्द सुखानन्द कहिए अनन्तानन्द सुरसुरानन्दहुके आनन्द अछेव जू।' सुंद.९

[अ]छेह—वि० लगातार 'ज्यौं बिजुरी जनु मेह, आनि इहाँ बिरहा धरेउ। आठो जाम अछेह, दग जु बरत बरसत रहत।' वि० १८३। बहुत ज्यादा।

अछोप—वि० नङ्गा, लुच्छ।

अछोभ—वि० क्षोभरहित, स्थिर, निर्भीक। मोहरहित।

अछोर—वि० अन्तहीन।

अछोह—पु० क्षोभहीनता, शान्ति, निर्दयता।

अछोही—वि० निर्दय, निष्ठुर।

अजंभ—वि० दन्त-विहीन। पु० मेंढक।

अज—वि० जो जन्म न ले। पु० ब्रह्मा, विष्णु या महेश। बकरा, कामदेव, दशरथ-पिता।

अजगर—पु० बहुत मोटा साँप।

अजगरी—वि० अजगर जैसी। जिसमें मेहनत न करना पड़े। स्त्री० बिना परिश्रमकी वृत्ति।

अजगव—पु० शिवधनुष।

अजगुत—पु० अद्भुत या असाधारण घटना। तर्कहीन या अयुक्त बात 'कुन्दनपुर एक होत अजगुत बाघ घेरी गाइ।' सूबे० ४१९। वि० आश्चर्यजनक।

अज़ग़ैब—पु० अदृष्ट स्थान।

अजड़—वि० जो जड़ न हो, चेतन। पु० चेतन वस्तु।

अजदहा—पु० खूब मोटा और बड़ा साँप।

अजन—वि० अजन्मा, जिसका जन्म न हो।

अजनवी—वि० अपरिचित, परदेसी।

अजन्म, अजन्मा—वि० जन्म रहित, अनादि।

अजपा—पु० गड़रिया। एक मन्त्र। वि० जिसका उच्चारण न किया जाय। 'अब तो अजपा जपु मन मेरे।' [मलूक०।

अजब—वि० विचित्र, अनूठा।

अज़मत—पु० क़द्र, महत्व, प्रताप, बुज़ुर्गी, चमत्कार।

अजमाना—सक्रि० जाँचना, परखना।

अजय—वि० 'अजेय', जो जीता न जा सके। पु० पराजय।

अजया—स्त्री० विजया, भाँग। बकरी 'अजया गजमस्तक चढ़ी, निर्भय कोंपल खाय।' साखी ८१ (दे० 'खटीक')

अजर—वि० जो वृद्ध न हो। जो न पचे।

अजरायल—वि० जो जीर्ण न हो, स्थायी, टिकाऊ।

अजवाइन,-वायन—स्त्री० एक पौधा या उसके बीज।

अजस—पु० अयश, अपकीर्त्ति।

अजसी—वि० अपकीर्तिभाजन, निन्द्य।

अजस्र—क्रिवि० निरन्तर, सर्वदा।

अजहत्स्वार्था—स्त्री० जिसने अपना अर्थ न छोड़ा हो, ऐसी लक्षणा, उपादान लक्षणा।

अजहद—क्रिवि० बहुत ज्यादा, अपार।

अजहुँ,-हूँ—क्रिवि० अभीतक ।
अजा—वि० स्त्री०जन्मरहित । स्त्री० बकरी । दुर्गा ।
अजाच—वि० न माँगनेवाला ( रत्ना० ११२ ) ।
अजाचक, अजाची—पु० न माँगनेवाला 'जाचक सकल अजाचक कीन्हे ।' रामा० ५४२
अजात—वि० जो पैदा न हुआ हो, अजन्मा, अनुत्पन्न ।
अजातशत्रु—वि० जिसका कोई शत्रु न हो - पु० युधिष्ठिर । शिवजी । एक राजा ।
अजान—वि० नासमझ । पु० एक वृक्ष ।
अज़ान—पु० नमाजकी सूचना देनेके लिए मसजिदसे की गयी पुकार ।
अजानता—स्त्री०अबोधता,अज्ञानता ।
अजाय—वि० अनुचित ।
अजायबघर—पु० कौतुकालय, संग्रहालय ।
अजाया—वि० मृत 'गोलिन वृथा अजाये हैं हौ।' छत्र०९५
अजार—पु० बीमारी ।
अजिऔरा—पु० आजीका घर ।
अजित—वि० जो जीता न जा सके ।
अजिन—पु० चर्म ।
अजिर—पु० आँगन । वायु । मेंढक ।
अज़ीज—वि० प्यारा । पु० मित्र या रिश्तेदार ।
अजीत—वि० अजित, अपराजित ।
अजीब—वि० आश्चर्यमय, अद्भुत ।
अजीरन, अजीर्ण—पु० कुपच, बदहजमी, बहुलता वि० जो पुराना न हो ।
अजीव—वि० जीव रहित, मृत । पु० अचेतन ।
अजुगत, अजुगुत—पु० अजगुत, अनुचित या अनहोनी बात 'स्याम सङ्ग मिहिनि रति अजुगुत, वेद विरुद्ध असुर करैं आइ ।' सू० २६४ । वि०अयुक्त,असम्भव। 'हरिजी अजुगत जुगत करैंगे ।' नागरी०
अजूजा—पु० एक शव-भक्षक जन्तु ।
अजूबा—वि० अजीब 'प्रेमरूप दरपन अहो रचै अजूबो खेल । यामें अपनो रूप कछु लखि परिहै अनमेल ।' रसनिधि
अजूरा—वि० बिना जुड़ा हुआ, अलग । पु० मजदूरी ।
अजूह—पु० युद्ध ।
अजेय—पु० शिव, विष्णु, या बुद्धका एक नाम ।
अजेय, अजेय—वि० न जीतने योग्य ।
अजोग—वि० अयोग्य, बेजोड़ ।
अजोरना—सक्रि० बटोरना, हरण करना, 'टोनासी पढ़ि नावत शिरपर जो भावत सो,लेत अजोरी ।' सूबे०६५।
अजौं—क्रिवि० अब भी । अबतक । [ जलाना ।
अज्ञ—वि० अज्ञानी, नासमझ । पु० नासमझ मनुष्य ।
अज्ञता—स्त्री० अज्ञान, नासमझी, मूर्खता ।
अज्ञा—स्त्री० आज्ञा, हुक्म ।
अज्ञात—वि० अविदित, अपरिचित ।
अज्ञातनामा—वि० जिसका नाम ज्ञात न हो, अप्रसिद्ध ।
अज्ञातयौवना—स्त्री० मुग्धानायिकाका एक भेद ।
अज्ञाता—स्त्री० अज्ञातयौवना नायिका 'अज्ञाताकी केश राशिमें इन्हे न कस-कस बँधवाओ' वीर ११२
अज्ञान—पु० मूर्खता । वि० मूर्ख, नासमझ ।
अज्ञानता—स्त्री० नासमझी, मूर्खता, जड़त्व ।
अज्ञानी—वि० नासमझ, अनाड़ी ।
अज्ञेय—वि० जो जाना न जा सके, जो ज्ञानसे परे हो ।
अज्यौं—क्रिवि० 'अजौं ।'
अझर—वि० जो न झरे, जो न बरसे ।
अझोरी—स्त्री० कन्धेसे लटकनेवाली थैली ।
अटंबर—पु० बड़ा ढेर ।
अटक, अटकन—स्त्री० बाधा, सङ्कोच, उलझन,अकाज। 'ताते यह अटक परी दुहुनकाज सौंह करी उठि आवहु क्यों न हरी बोलत बलभाई।' सूबे०९५,'अबलौ सकुच अटक रही अब प्रगट करौ अनुरागरी।' सूबे० ११६-७
अटकना—अक्रि० ठहरना, रुकना, उलझना, फँसना (सू० १३१), 'फवि फहरै अति उच्च निसाना । जिन महँ अटकत विबुध-विमाना ।' पद्माभ० १०
अटकर, अटकल—स्त्री० अन्दाज, अनुमान ।
अटकरना, अटकलना—सक्रि० अनुमान करना ।
अटकलपच्चू—क्रिवि० अन्दाजसे । पु० मोटा अनुमान कोरी कल्पना । वि० केवल अन्दाजसे किया गया, जिसपर पहिलेसे विचार न किया गया हो, मनमाना ।
अटका—स्त्री० अटक रुकावट, ( बुन्देल० 'बिबूच' ) ज़रूरत । पु० जगन्नाथजीको चढ़ाया हुआ भात ।
अटकाना—अक्रि० अटकना, उलझना 'युवती गईं घरन सब अपने गृहकारज जननी अटकाई ।' सूबे० ६९ । सक्रि० रोकना, फँसाना 'भौंहनि मरोरि मुरि मोरि गोरे गात देखो बातनहिं सगरी कटक अटकायो है ।' रवि० ३
अटकाव—पु० उलझन, बाधा ।

अटखट—वि० अंड-बंड, गड़बड़ ( वि० ४३८ )।
अटखेली—दे० 'अठखेली'।
अटना—अक्रि० काफी होना। आड़ करना या छेंकना। चलना, यात्रा करना ( विन० ३०७ )
अटपट—वि० विकट, कठिन, जटिल, अंडबंड, 'सूरप्रेमकी बात अटपटी मन तरङ्ग उपजावति।' सू० १४१। 'जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी।' रामा० ७७। विचित्र 'राखो यह सब योग अटपटो, ऊधो पाइ परौं।' सू० २२४। स्त्री० कठिनाई ( कवि प्रि० १६६ )। लड़खड़ाता हुआ 'वाहीकी चित चटपटी, धरत अटपटे पाय।' बि० २०
अटपटाना—अक्रि० आकुल होना, हिचकना, लड़खड़ाना 'अटपटात अलसात पलक पट, मूँदत कबहूँ करत उघारे।' सू० १६९
अटपटी—वि० स्त्री० देखो 'अटपट'। स्त्री० शरारत।
अटम्बर—पु० आडम्बर। कुटुम्ब, समूह।
अटल—वि० निश्चल, अडोल, दृढ़।
अटवाटी खटवाटी—स्त्री० खाट खटोला लेकर पड़ना = रुष्ट होकर अलग जा पड़ना।
अटवी—स्त्री० जंगल।
अटहर—पु० 'अटाला', राशि। पगड़ी। अड़चन।
अटा—स्त्री० अटारी, ऊपरकी कोठरी या छत 'चढ़ी अटा देखति घटा, बिज्जु छटासी नारि। बि० १५८।
अटाउ—पु० शरारत। [ पु० ढेर।
अटाटूट—वि० बिलकुल। अपरिमित, बेशुमार।
अटारी—स्त्री० देखो 'अटा'।
अटाला—पु० ढेर। सामान।
अटूट—वि० अखंड्य, मजबूत, अजेय। बहुत। लगातार।
अटेरन—पु० सूतकी आँटी बनानेका यन्त्र। कुश्तीका एक
अटेरना—सक्रि० सूतकी आँटी बनाना। [ पेंच।
अटोक—वि० जिसमें रोक-टोक न हो 'अरु अटोक ड्योढ़ी करी, पैठत बखत तमाम।' राव गुलाबसिंह
अट्टसट्ट—वि० मनमाना, अंडबंड। पु० निरर्थक बात।
अट्टहास—पु० उच्च हास्य, ठठाकर हँसना।
अट्टा—पु० अटा, मचान।
अट्टालिका—स्त्री० अटारी।
अट्ठा—पु० आठ बूटियोंवाला ताशका पत्ता।
अट्ठाइस—वि० बीस और आठ।
अट्ठानबे—वि० नब्बे और आठ।
अट्ठावन—वि० पचास और आठ।
अट्ठासी—वि० अठासी, आठ और अस्सी।
अठकोसल—पु० राय, सलाह, पंचायत (रत्ना० ४५७)।
अठंग—पु० अष्टांग योगी।
अठखेली—स्त्री० चपलता, क्रीड़ा, विनोद।
अठत्तर—वि० सत्तर और आठ।
अठन्नी—स्त्री० आठ आनेके मूल्यका चाँदीका सिक्का।
अठपहला—वि० जिसमें आठ पहल या पार्श्व हों।
अठपाव—पु० ऊधम, शरारत, 'भूषण क्यों अफजल्ल बचै अठापव कै सिंहको पाँव उमैठो।' भू० १००
अठमासा—पु० देखो 'अठवाँसा'।
अठलाना—अक्रि० ऐंठ दिखलाना, इतराना, मस्ती दिखाना 'सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँट न लैहैं कोय।' रहीम १८
अठवना—अक्रि० जमना।
अठवाँसा—वि० आठ ही महीने गर्भमें रहकर उत्पन्न होनेवाला। पु० आषाढ़से माघतक समय समयपर जोता जानेवाला खेत। गर्भस्थितिके बाद आठवें मासका
अठवारा—पु० आठ दिन, एक सप्ताह। [संस्कार-विशेष।
अठसिल्या—पु० 'अष्टशिला', सिंहासन।
अठहत्तर—वि० सत्तर और आठ।
अठाई—वि० आततायी, उपद्रवी।
अठान—पु० न ठानने योग्य काम। पु० विरोध।
अठाना—सक्रि० सताना। ठानना, छेड़ना, जमाना।
अठारह—वि० दो कम बीस।
अठासी—वि० अस्सी और आठ।
अठिलाना—अक्रि० 'अठलाना' 'बात कहत अठिलात जाति सब हँसत देति करतारि।' सू० १२६। 'साँवरे अंग सरोजसे नैन उरोज उठे अठिलाति कपोलैं।' रवि० ३४
अठोठ—पु० आडम्बर, ढोंग।
अठोतर सौ—वि० एक सौ आठ।
अठोतरी—स्त्री० एक सौ आठ गुरियोंकी माला।
अडंगा—पु० बाधा, अड़चन, व्यर्थका हस्तक्षेप।
अडंड—वि० अदण्ड्य, निर्भय।
अडंबर—पु० 'आडम्बर'। 'सुन्दर एक अज्ञान गये बिनु ये सब दीसत आहिं अडंबर।' सुन्द० ६८
अड़—स्त्री० टेक, हठ।
अड़काना—सक्रि० टिकाना; उलझाना।

अड़कड़ा—पु० बैलगाड़ियोंके ठहरनेकी जगह, वह स्थान जहाँ बैल या घोड़े बिकते हों। 'सामने कुछ औरतें भरती थीं पानी, सिटपिटाईं देखकर ज्यों अड़गड़ेमें नर्तकी।' कुकुरमुत्ता १८

अड़गोड़ा—पु० ठेंगुर, पशुओंके गलेमें बाँधी गयी लकड़ी।

अड़चन,-चल—स्त्री० कठिनाई, बाधा।

अड़तालीस—वि० चालीस और आठ।

अड़तीस—वि० तीस और आठ।

अड़दार—वि० अड़नेवाला, 'अड़ियल' ज्यों मतंग अड़दार को, लिये जात गड़दार।' रस० ३५। मतवाला (हाथी) 'अड़दार बड़े गड़दारनके हाँके सुनि अड़े गैर गैर माहिं रोस रस अक्कें।' भू०१२९ [ 'अड्डदार')।

अड़ना—अक्रि० अटकना, रुकना, हठ करना ( उद्दे०

अड़पना—सक्रि० डाँटना, डपटना ( ग्राम० ३१ )।

अड़बंग—वि० अटपट, टेढ़ामेढ़ा। अनोखा।

अडर—वि० निडर, निर्भय।

अड़सठ—वि० साठ और आठ।

अड़हुल—पु० एक लाल फूल।

अड़ान—पु० ठहरने या रुकनेका स्थान, पड़ाव।

अड़ाना—सक्रि० रोकना, उलझाना। टेकना।

अड़ानी—पु० बड़ा पंखा। अड़गा।

अड़ायती—वि० आड़ करनेवाला।

अड़ार—पु० ढेर, लकड़ी बेचनेकी दुकान। वि० नुकीला, तिरछा 'जग डोले डोलत नैनाहीं। उलटि अड़ार जाहिं पल माहीं।' प० ४६

अडिग—वि० जो डिगे नहीं, स्थिर।

अड़ियल—वि० अड़नेवाला, सुस्त। हठ करनेवाला।

अड़ी—स्त्री० हठ, ज़िद, टेक।

अडीठ—वि० जो देख न पड़े, छिपा हुआ, गुप्त।

अडूलना—सक्रि० डालना, गिराना।

अडूसा—पु० एक दवा, वासक।

अडोर—पु० अंदोर, शोर-गुल।

अडोल—वि० अटल, न डिगनेवाला। स्तब्ध।

अड़ोस पड़ोस—पु० आसपास।

अड्डा—पु० ठहरने व मिलनेकी जगह। केन्द्र, डेरा। कबूतर आदि चिड़ियोंके बैठनेकी छड़।

अढ़उल—पु० अड़हुलका फूल ( ग्राम० २४२ )।

अढ़तिया—पु० आढ़त करनेवाला।

अढ़न—स्त्री० मर्यादा, आज्ञा।

अढ़वना—सक्रि० आज्ञा देना।

अढुकना—अक्रि० चोट खाना, ठोकर लगना। 'अढुकि परहिं फिर हेरहिं पीछे।' रामा० २६७

अढ़ैया—पु० ढाई गुनेका पहाड़ा। ढाई सेरकी तौल।

अणि—स्त्री० नोक, धार। सीमा या किनारा।

अणिमा—स्त्री० अत्यन्त छोटा रूप धारण करनेकी सिद्धि।

अणी—स्त्री० 'अणि'। अरी ( सम्बोधन )

अणु अणुक—पु० कण, छोटा टुकड़ा, रजकण। वि० अत्यन्त [ छोटा।

अणुवीक्षण यंत्र—पु० सूक्ष्मदर्शक यन्त्र।

अतंक—पु० आतंक। * व्याकुल।

अतंद्र, अतंद्रित—वि० आलस्यरहित, चुस्त। जाग्रत् *

अत—क्रिवि० इसलिए।

अतएव—क्रिवि० इसलिए, इस कारण।

अतथ्य—वि० असत्य, झूठ। असमान।

अतद्गुण—पु० एक काव्यालंकार। 'सु अतद्गुण संगति किये, जब गुण लागे नाहिं।' भा० भू०

अतनु—पु० कामदेव। वि० बिना शरीरका।

अतर—पु० इत्र, पुष्पसार।

अतरदान—पु० इत्र रखनेका पात्र।

अतरसों—क्रिवि० परसोंके बादका, या पूर्वका, दिन।

अतरिख—पु० देखो 'अंतरिक्ष'।

अतर्कित—वि० जो पहले न सोचा गया हो, आकस्मिक।

अतर्क्य—वि० जिसके सम्बन्धमें तर्क-वितर्क न हो सके, अनिर्वचनीय। [ साअतल, अपार' वीणा ४१

अतल—पु० एक लोकका नाम। वि० गहरा 'उमड़ उदधि-

अतलस—पु० एक मुलायम रेशमी कपड़ा।

अतवान—वि० अधिक, खूब।

अतसी—स्त्री० अलसी, 'अतसी कुसुम बरन मुरलीमुख सूरज प्रभु किन लाए।' सूबे० ३५५

अताई—वि० चतुर, चालाक ( अ० १४१ )। अनाड़ी, अर्द्धशिक्षित, गँवार ( ग़बन २२८ )।

अति—वि० अधिक। स्त्री० अधिकता।

अतिकाय—वि० मोटा। पु० एक राक्षसका नाम।

अतिकाल—पु० विलम्ब, अबेर।

अतिक्रम—पु० उल्लंघन, उलटा व्यवहार।

अतिक्रमण—पु० आगे बढ़ जाना, सीमोल्लंघन।

अतिक्रांत—वि० सीमाके बाहर गया हुआ, व्यतीत।

अतिगत—वि० 'अति' को पहुँचा हुआ, अत्यधिक ।

अतिगति—स्त्री० उत्तम गति, मोक्ष ।

अतिमान—पु० करणीयसे अधिक आचरण करना ।

अतिथि—पु० पाहुना, अभ्यागत ।

अतिपतन, अतिपात—पु० अतिक्रम, गड़बड़ी, बाधा । ( समयका ) बीतना 'विद्यार्जनके लिए प्राण-पणसे • अतिपात अर्द्ध आयु कालिमा' अनामिका १६७

अतिबल—वि० प्रबल 'नारी अतिबलके भये कुलकर होत बिनास ।' गिरिधर राय

अतिबला—स्त्री० ओषधि-विशेष, एक युद्ध विद्या ।

अतिमुक्त—वि० मुक्तिप्राप्त,विषय-विरक्त। पु० एक लता।

अतिरंजन—पु० देखो अतिरंजना ।

अतिरंजना—स्त्री० किसी बातको बढ़ाकर कहना,अत्युक्ति।

अतिरिक्त—वि० अलग, शेष । क्रिवि० सिवाय ।

अतिरेक—पु० आधिक्य, बाहुल्य ।

अतिवात—पु० तूफान, आँधी, वायुका आधिक्य ।

अतिवाद—पु० डींग, खरी बात चरमसीमा ।

अतिवेल—वि० असीम, अत्यन्त ।

अतिव्याप्ति—स्त्री० लक्षणका वह दोष जिसमें लक्ष्यके बाहरकी भी वस्तुएँ आ जाती हों ।

अतिशय—वि० बहुत ।

अतिशयता—स्त्री० अधिकता, बहुलता ।

अतिशयोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार, जिसमें किसी वस्तुका अतिरंजित वर्णन किया जाता है ।

अतिसार—पु० दस्तों या आँवकी बीमारी ।

अतींद्रिय—वि० इन्द्रियोंसे परे, अगोचर ।

अतीत—वि० बीता हुआ, भूत, मृत । विरक्त या न्यारा। क्रिवि० परे, बाहर । पु० अतिथि, विरक्त, संन्यासी । 'कबीर भेष अतीतका करै अधिक अपराध । बाहर देखे साध गति माहीं बड़ा असाध । साखी १३८

अतीतना—अक्रि० बीतना । ठंढा होना, छूटना, 'पुत्र सिख लीन तन जौं लगि अतीतही ।' राम० १९८

अतीथ—पु० अतिथि ।

अतीव—वि० बहुत, अतिशय, अत्यधिक । [ देती है ।

अतीस—पु० एक पौधा जिसकी जड़ ओषधिका काम

अतुराई—स्त्री० शीघ्रता, चलौ सखी हमहूँ मिलि जैये बेगि करौ अतुराई । सूबे० ४६ । चंचलता ।

अतुराना—अक्रि० आतुर होना, घबड़ाना, जल्दी करना।

'जो कछु हमको कहन बूझिये सो तुम कहि आगे अतुराने ।' सूबे० १४९, 'एक इक पल जुग सबनको, मिलनको अतुरात ।' सू० २१६

अतुल, अतुलित—वि० जिसकी तौल या तुलना न हो सके । बहुत ज्यादा । अद्वितीय ।

अतुलनीय—वि० जिसकी तुलना न की जा सके, अद्वितीय, बेअन्दाज, असीम । [अतूथ ।' सू० ४९

अतूथ—वि० अपूर्व, अतुल्य 'देखो सखि अद्भुत रूप

अतूल—वि० 'अतुल' ( ललित० ११३ ) ।

अतृप्त—वि० जिसे सन्तोष न हुआ हो ।

अतोर—वि० जो न टूटे, मजबूत । [ ( विद्या० १२५ )

अतोल, अतौल—वि० देखो 'अतुल' । अनन्त

अत्त, अत्ति—स्त्री० अति, ज्यादती, ऊधम 'रहिमन अत्ति न कीजिए गहि रहिये निज कानि ।' रहीम १२

अत्तार—पु० अतरफरोश । हकीमी दवा रखनेवाला ।

अत्यन्त—वि० अत्यधिक, बहुत ज्यादा । [ वाला ।

अत्यन्तिक—वि० बहुत पास । निकटका । बहुत चलने-

अत्यय—पु० अतिक्रमण, मृत्यु; दण्ड; दुःख; दोष ।

अत्याचार—पु० अनीति, दुराचार ।

अत्याज्य—वि० जो त्याज्य या छोडने योग्य न हो ।

अत्युक्ति—स्त्री० बढ़ाचढ़ाकर वर्णन करना ।

अत्र—पु० अस्त्र 'चढ़े अत्र ले कृस्न मुरारी ।' प० १२३ क्रिवि० यहाँ । [ जाते हैं ।

अत्रि—पु० सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि जो ब्रह्माके पुत्र कहे

अथ—अ० एक शब्द जो प्राचीन कालमें किसी ग्रन्थ या लेखके आरम्भमें रखा जाता था ।

अथक—वि० जो न थके । घोर ।

अर्थकर—वि० जिससे धन कमानेमें सहायता मिले,

अथच—अव्य० और । और भी । [ लाभदायक ।

अथयना—अक्रि० अस्त होना 'उदित सदा अथइहि कबहूँना ।' रामा० २९९ । तिरोहित होना, नष्ट होना ।

अथरी—स्त्री० दही जमानेका मिट्टीका पात्र ।

अथर्वनी—पु० पुरोधा, यज्ञादि करानेवाला ।

अथवना—दे० "अथयना" 'पूरब उगै पश्चिम अथवै, भखै पवनका फूल ।' साखी ७२, ( रहीम १२ ) ।

अथवा—अ० या, किंवा या फिर ।

अथाई—स्त्री०लोगोंके एकत्र होनेकी जगह 'हाट बाट बर गली अथाई । कहहिं परस्पर लोग लुगाई ।' रामा० २०४ ।

बैठनेका स्थान, चौपारा। सभा, मंडली 'जनु उडुगण मंडल वारिचर नवग्रह रची अथाई। विन० १९५,
अथान, अथाना—पु० अचार। [(अ०५५)।
अथाना—अक्रि० अथवना, डूबना। सक्रि० थाह लेना, [ ढूँढ़ना
अथावन—वि० डूबा हुआ।
अथाह—वि० जिसकी थाह न हो, अगाध, गूढ़। पु० गहराई। समुद्र।
अथिर—वि० अस्थिर, चंचल। क्षणस्थायी।
अथोर—वि० थोड़ा नहीं। बहुत। ( मुद्रा० १ )
अदंक—पु० आतंक, डर।
अदंड—वि० अदण्ड्य; स्वेच्छाचारी, कर-रहित।
अदंडनीय—देखो 'अदंड्य'।
अदंडमान—वि० अदंड्य ( राम० ५० )।
अदंड्य—वि० जिसे दण्ड न दिया जा सके, दण्ड न पाने [ योग्य।
अदंत—वि० बे-दाँतका, अल्पवयस्क।
अदग—वि० बेदाग, निरपराध। अछूता या साफ।
अदत्त—वि० न देनेवाला, कृपण 'मंगन बैर अदत्त सों।' कवी० २१२। जो दिया न गया हो।
अदत्ता—वि० स्त्री० जो विवाहमें न दी गयी हो।
अदद—पु० संख्या।
अदन—पु० यहूदी आदि मतोंके अनुसार, स्वर्गका उपवन
अदना—वि० छोटा, मामूली, हीन।
अदब—पु० गुरुजनोंका सम्मान, लिहाज़। [ (कर्म ८)।
अदबदाकर—क्रिवि० हठपूर्वक, निश्चय ही। अवश्य
अदभ्र—वि० अत्यधिक, अपार, प्रचुर ( विन० २८० )।
अदमनीय, अदम्य—वि० जिसका दमन न किया जा सके, जिसको वशमें रखना कठिन हो, प्रबल।
अदय—वि० निर्दय, निष्ठुर, दया रहित।
अदरक—पु० एक पौधा जिसकी गाँठ दवा, चटनी इ० [ के काम आती है।
अदरा—स्त्री० आर्द्रा नक्षत्र।
अदर्शन—पु० लोप, अविद्यमानता।
अदर्शित—वि० लुप्त।
अदर्शनीय—वि० न देखने योग्य, भद्दा, बेडौल।
अदल—पु० न्याय 'अदल जो कीन्ह उमरकै नाईं। भई अहा जगत दुनियाईं।' प० ६। वि० दल-रहित, सेना विहीन, पत्र-विहीन।
अदल-बदल—पु० परिवर्तन।
अदली—पु० न्यायी (सू० ९८)। बिना पत्तेका।

अदवाइन, अदवान—स्त्री० पैतानेकी रस्सी, ओनचन।
अदहन—पु० दाल आदि पकानेके लिए आगपर चढ़ाया गया पानी।
अदाँत—वि० दन्तविहीन। जिसके दाँत न जमे हों।
अदा—वि० चुकता। स्त्री० चेष्टा, हावभाव।
अदाई—वि० चालाक, होशियार 'सो तजि कहत और की औरै तुम अलि बड़े अदाई।' सूबे० ३७६
अदाग, अदागी—वि० निष्कलंक। पवित्र।
अदात, अदाता—वि० न देनेवाला, कृपण 'पूरब जन्म अदात जिनके तातें कछू मँगायो।' सूबे० ४३३
अदाता—पु० कंजूस आदमी, कृपण।
अदान—पु० कंजूस। वि० नासमझ।
अदाना—वि० कंजूस।
अदायाँ—वि० वाम, प्रतिकूल।
अदालत—स्त्री० न्यायालय, कचहरी।
अदालती—वि० अदालत सम्बन्धी। मुकदमा लड़नेवाला।
अदावँ—पु० बुरा दाँव, कठिनाई।
अदावत—स्त्री० वैर, दुश्मनी।
अदावती—वि० शत्रुतावश किया गया या द्वेषसे उत्पन्न। [ अदावत रखनेवाला।
अदाह—स्त्री० हावभाव।
अदित—पु० आदित्य, रवि। रविवार 'अदित सूक पच्छिउँ दिसि राहू। बीफै दखिन लंक दिसि दाहू।' प० १८४
अदिति—पु० देवताओंकी माता। पृथ्वी। प्रकृति, माता, [ वाणी।
अदिन—पु० बुरा दिन, दुर्भाग्य।
अदिव्य—वि० दिव्य नहीं, लौकिक।
अदिष्ट—पु० अदृष्ट, विपत्ति, दुर्भाग्य।
अदिष्टी—वि० अदूरदर्शी, अविचारी।
अदीठ—वि० अदृष्ट, छिपा हुआ।
अदीन—वि० अनम्र, उग्र। उदार।
अदीयमान—वि० जो न दिया जाय।
अदीह—वि० दीर्घ नहीं, छोटा।
अदुंद—वि० द्वंद्वरहित, बाधारहित। अद्वितीय।
अदुतिय—वि० अद्वितीय, बेजोड़।
अदूजा—वि० अद्वितीय। 'देव अब आस पूजी तू जीमैं अदूजी बसी दूजी तिय भूलै हूँ न देखत गुपाल हैं।' रवि० ६५
अदूरदर्शी—वि० जो दूरतक न सोचे, अविचारी। नासमझ।
अदूषित—वि० जो दूषित न हो, दोषरहित, शुद्ध।

अदृश्य—वि० जो देख न पड़े, लुप्त, अगोचर ।
अदृष्ट—वि० अलक्षित, लुप्त, । पु० भाग्य । जल इ० से उत्पन्न विपत्ति ।
अदृष्टपूर्व—वि० जो पहले देखा न गया हो, असामान्य, [ विलक्षण ।
अदेख—वि० जो न देखा गया हो, जो न देखा जाय ।
अदेखी—वि० जो न देख सके । द्वेष करनेवाला ।
अदेय—वि० न देने योग्य । जो न दिया जा सके ।
अदेव—पु० असुर, राक्षस ।
अदेस—पु० 'आदेश', आज्ञा । प्रणाम 'औ महेश कहँ करौ अदेसू । जेहि यहि पन्थ दीन्ह उपदेसू ।' प० १२१ देखो 'अंदेस' ।
अदेह—वि० विदेह, शरीर रहित । पु० कामदेव ।
अदोख, अदोखिल—वि० निर्दोष, 'दुनिहाई सब टोलमें, रही जु सौति कहाय । सु तैं ऐंचि पिय आप त्यों, करी अदोखिल आय ।' बि० १४५
अदोष, अदोस—वि० निर्दोष, निरपराध ।
अद्ध—वि० अर्द्ध, आधा ।
अद्धा—पु० बोतली, जो बोतलकी आधी हो । आधा मान ।
अद्भुत—वि० विचित्र, विलक्षण ।
अद्भुतोपमा—स्त्री० उपमालंकारका एक भेद ।
अद्य—क्रिवि० आज, अभी ।
अद्यापि—क्रिवि० आज भी, इस समय भी, अबतक ।
अद्रव्य—पु० अवस्तु, अभाव, शून्य ।
अद्रा—स्त्री० आर्द्रा नक्षत्र ।
अद्रि—पु० पहाड़ ।—तनया, स्त्री० पार्वतीजी, गंगाजी ।
अद्वितीय—वि० बेजोड़, अकेला । विचित्र ।
अद्वैत—वि० एकाकी, अद्वितीय । पु० ब्रह्म ।
अद्वैतवाद—पु० ब्रह्मको ही विश्वका उपादान कारण मानने अथवा ब्रह्म और जीवको पृथक् न माननेका [ सिद्धान्त ।
अधः—क्रिवि० नीचे ।
अधःपतन,-पात—पु० अवनति, दुर्गति ।
अध—क्रिवि० 'अधः', नीचे । वि० आधा ।
अधकचरा—वि० अधकुटा, अपूर्ण, अदक्ष ।
अधकपारी—स्त्री० आधे सिरमें होनेवाला सिर-दर्द ।
अधखिला—वि० अर्द्धविकसित ।
अधखुला—वि० आधा खुला हुआ, अंशतः अनावृत ।
अधगति—स्त्री० 'अधोगति', पतन ।
अधघट—वि० जिसका आशय स्पष्ट न हो, कठिन ।
अधचरा—वि० आधा खाया हुआ ।
अधड़ी—वि० स्त्री० अधर, आधार-रहित, बेसिलसिले ।
अधन—वि० धनहीन, दरिद्र ।
अधन्ना—पु० आध आनेका सिक्का, दो पैसेके बराबर पैसा ।
अधन्य—वि० अभागा, निन्द्य ।
अधपई—स्त्री० आध पावका बँटखरा ।
अधफर—पु० अधर, अन्तरिक्ष, बीच (कबीर १९२) । क्रिवि० बीचमें ।
अधबर—पु० आधा मार्ग, बीच ।
अधबुध—वि० अर्द्धशिक्षित ।
अधबैसू—वि० स्त्री० मध्यम अवस्थाकी ।
अधम—वि० नीच, पामर, दुष्ट ।
अधमई—स्त्री० 'अधमाई', नीचता ।
अधमता—स्त्री० नीचता, क्षुद्रता, दुष्टता ।
अधमरा—वि० मृतप्राय, मरणासन्न ।
अधमर्ण—पु० ऋण लेनेवाला, ऋणी ।
अधमाई—स्त्री० नीचता, दुष्टता ।
अधमुआ—वि० अधमरा, मृतप्राय ।
अधमुख—वि० मुँहके बल, औंधा या उलटा ।
अधर—पु० नीचेका ओंठ, ओंठ । पु० अन्तरिक्ष, नीचेका स्थान । क्रिवि० अन्तरिक्षमें, न नीचे न ऊपर । वि० चंचल । तुच्छ 'गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि नीच अधर बुधि रानि ।' रामा० २०६
अधरज—पु० ओठोंकी सुर्खी या पानकी लकीर ।
अधरपान—पु० ओष्ठ-चुम्बन ।
अधरबुद्धि—वि० क्षुद्र या नीच बुद्धिवाला (उदे०'अधर')।
अधरम—पु० अधर्म ।
अधरात—स्त्री० आधीरात ( रवि० ६६ ) ।
अधराधर—पु० नीचेका ओंठ । [ क्रिवि० ऊँचे-नीचे ।
अधरोत्तर—वि० ऊँचा-नीचा, अच्छा-बुरा, कम-ज़्यादा ।
अधर्म—पु० पाप या कुकर्म, अन्याय ।
अधर्मी—वि० अधर्म करनेवाला, कुकर्मी, पापी ।
अधवा—स्त्री० विधवा ।
अधार—पु० देखो 'आधार' ।
अधारी—स्त्री० आधार, सहारा । साधुओंकी लकड़ी ( सू० २३६ ) । मुसाफिरी थैला । वि० स्त्री० जिससे सहारा मिले, प्रिय ।
अधार्मिक—वि० अधर्मी, दुराचारी ।

अधिक—वि० ज्यादा, बहुत । एक काव्यालङ्कार 'जहाँ बड़े आधार तें हू अधेय बढ़ि जात । लघु अधारमें या जहाँ बड़ आधेय समात ।'

अधिकमास—पु० लौंदका महीना, या पुरुषोत्तम मास जो चान्द्रगणनाके अनुसार प्रति तीसरे वर्ष पड़ता है ।

अधिकरण—पु० सहारा, आधार, प्रकरण । सातवाँ कारक ।

अधिकांश—पु० अधिक भाग । वि० बहुत । क्रिवि० प्रायः, विशेषकर, अधिकांशमें ।

अधिकाई—स्त्री० अधिकता, बढ़ती । बड़प्पन 'उमा न कछु कपिकी अधिकाई ।' रामा ४१६

अधिकाना—अक्रि० अधिक होना, बढ़ना 'देखत सूर अग्नि अधिकानी नभलौं पहुँची झार ।' सूबे० ९२

अधिकार—पु० हक, दावा, प्रभुत्व, सामर्थ्य ।

अधिकारी—पु० जिसे अधिकार हो, स्वत्वधारी, स्वामी, उपयुक्त पात्र ।

अधिकृत—वि० जिसपर अधिकार किया गया हो, अधिकारमें आया हुआ, उपलब्ध ।

अधिक्रम—पु० चढ़ाई, आरोहण ।

अधिक्षेप—पु० फेंकनेकी क्रिया, अपमान, निन्दा, कटाक्ष ।

अधिगत—वि० प्राप्त, ज्ञात, पढ़ा हुआ ।

अधित्यका—स्त्री० पर्वतके ऊपरकी सम भूमि ।

अधिदेव—पु० कुलदेवता, इष्टदेव ।

अधिदैव—वि० दैव सम्बन्धी, दैविक । आकस्मिक ।

अधिनायक—पु०—प्रधाननेता, सर्वेसर्वा ।

अधिप, अधिपति—पु० स्वामी, मुखिया, राजा ।

अधिभौतिक—वि० आधिभौतिक ।

अधिमास—पु० अधिक मास, मलमास ।

अधिया—स्त्री० आधा हिस्सा । उपजको आधा आधा बाँट लेनेकी रीति ।

अधियान—पु० गोमुखी, जपनी ।

अधियाना—सक्रि० आधा करना ।

अधियार—पु० आधा हिस्सा । आधेका हिस्सेदार ।

अधिरथ—पु० रथपर चढ़ा हुआ व्यक्ति (सारथी) । उत्तम रथ ।

अधिराज—पु० सम्राट्, महाराज ।

अधिरोहण—पु० चढ़ना, सवार होना ।

अधिवास—पु० निवासस्थान । सुगन्धि, उबटन । विलम्बतक ठहरना ।

अधिवासी—पु० जा बसनेवाला, निवासी ।

अधिवेशन—पु० ( सभाकी ) बैठक, जल्सा ।

अधिष्ठाता—पु० नियन्ता, अध्यक्ष, व्यवस्थापक । ईश्वर ।

अधिष्ठान—पु० रहनेकी जगह; नगर, पड़ाव । अधिकार या शासन ।

अधीत—वि० पढ़ा हुआ ।

अधीन—वि० परवश, आश्रित, लाचार ।

अधीनता—स्त्री० परतन्त्रता, परवशता, विवशता, दीनता ।

अधीर—वि० घबड़ाया हुआ । उतावला । असन्तोषी ।

अधीरा—स्त्री० नायकपर प्रकटरूपसे कोप करनेवाली नायिका ।

अधीश, अधीश्वर—पु० स्वामी, अध्यक्ष, राजा ।

अधुना—क्रिवि० अब, सम्प्रति ।

अधूत—वि० अकम्पित, निडर । पु० ढीठ व्यक्ति ।

अधूरा—वि० असमाप्त, आधा, अस्फुट, अस्पष्ट ।

अधेड़—वि० उतरती उम्रका ।

अधेला—पु० आधा पैसा ।

अधेली—स्त्री० अठन्नी 'जामें द्वै अधेली, चार पावली, दुअन्नी आठ तामें पुनि आना सखि सोरह समात हैं ।' ककौ० ५०८ ।

अधैर्य—वि० व्याकुलता, चञ्चलता, उतावली ।

अधोगति—स्त्री० पतन, दुर्गति ।

अधोगमन—पु० अवनति, पतन, ह्रास ।

अधोगामी—वि० नीचे या अवनतिकी ओर जानेवाला ।

अधोमुख—वि० नीचेकी ओर मुँह किये हुए, औंधा । क्रिवि० मुँहके बल, औंधा ।

अधोमूल—वि० जिसका मूल नीचे हो ।

अधोरध, अधोर्द्ध—क्रिवि० ऊपर-नीचे ।

अधोवायु—पु० अपान वायु, नीचेकी हवा ।

अध्मान— ० पेटका फूलना, अफरा ।

अध्यक्ष, अध्यच्छ—पु० नायक, अधिपति, अधिकारी ।

अध्ययन—पु० पढ़ाई, अभ्यास, पठन-पाठन ।

अध्यवसाय—पु० लगातार परिश्रम, उत्साह । निश्चय ।

अध्यवसायी—वि० परिश्रमी, उद्यमी ।

अध्यातम—पु० आत्मज्ञान, ब्रह्मविचार ।

अध्यात्मिक—वि० आध्यात्मिक, आत्मासम्बन्धी ।

अध्यापक—पु० पढ़ानेवाला, शिक्षक ।

अध्यापकी—स्त्री० अध्यापन—पु० पढ़ानेका काम ।

अध्याय—पु० परिच्छेद, प्रकरण ।

अध्यारोप—पु० लाञ्छना, दोष । मिथ्या कल्पना ।

अध्यास—पु० अध्यारोप, मिथ्या ज्ञान ( पभू० १७९ ) ।

अध्याहार—पु० वाक्यका स्पष्टीकरण, वाक्य पूरणार्थ कुछ और शब्दोंका रखा जाना । विचार, तर्क-वितर्क ।
अध्यूढ़ा—स्त्री० वह पत्नी जिसके पतिने अन्य स्त्रीसे विवाह कर लिया हो ।
अध्येता—पु० अध्ययन करनेवाला, विद्यार्थी ।
अध्रुव—वि० चञ्चल, अस्थिर, डाँवाडोल, अनिश्चित ।
अध्वग—पु० पथिक, मुसाफिर ।
अध्वर—पु० यज्ञ ।
अध्वर्यु—पु० यज्ञ करनेवाला, पुरोहित ।
अनंग—पु० कामदेव । वि० बिना देहका, विदेह ।
अनंगना—अक्रि० विदेह होना, देहकी सुध भुलाना ।
अनंगी—वि० देहरहित । पु० कामदेव ।
अनंत—वि० जिसका अन्त न हो, अपार, अत्यधिक । अविनाशी । पु० विष्णु, शेषनाग, लक्ष्मण । आकाश । क्रिवि० पश्चात् 'आया पहले पञ्जाब-प्रान्त, कोशल-विहार तदनन्त क्रांत ।' तुलसीदास ४ ।
अनंतर—क्रिवि० बाद, लगातार । वि० जिसमें कोई अन्तर न हो, समीपी ।
अनंता—स्त्री० पार्वती । पृथ्वी । दूब । पीपर ।
अनंद—पु० आनन्द, प्रसन्नता ( रामा० ६० ) ।
अनंदना—अक्रि० आनन्दित होना, प्रसन्न होना 'तब मैना हिमवन्त अनन्दे ।' ( रामा० ६० )
अनंभ—वि० बिना पानीका, विघ्न-रहित ।
अन—क्रिवि० बिना 'कहिं जु चली अनहीं चितै, ओठनि हीमें बात ।' बि० ८६
अनअहिवात—पु० वैधव्य ( रामा० २११ ) ।
अनइस—वि० अनैस, बुरा ।
अनऋतु—पु० विरुद्ध ऋतु, अकाल ।
अनक—पु० 'आनक', डंका, नगाड़ा ।
अनकना—सक्रि० लुक छिपकर सुनना ।
अनकरीब—क्रिवि० क़रीब-क़रीब, प्रायः, लगभग ।
अनकहा—वि० बिना कहा हुआ, अकथित । अनकही देना = कुछ न कहना, चुपचाप होना ।
अनख—पु० क्रोध 'भाव कुभाव अनख आलस हूँ ।' रामा० २१ । कुढ़न (भ्र० ७७) । दुःख, ईर्षा 'सब जग चम्पतिके जस गावै । सुनि सुनि अनख भूप उर आवै ।' छत्र० ३४ । झंझट । ढिठौना । वि० बिना नखका ।
अनखना,-खाना—अक्रि० क्रोध करना । अप्रसन्न होना ।
अनखाये रहना—अक्रि० बिना भोजनके रहना 'जो तू अनखाये रहै कब कोऊ अनखाय ।' रहीम
अनखाहट—स्त्री० अप्रसन्नता, नाराजगी, चिढ़ ।
अनखी—वि० क्रोधी ।
अनखौंहा—वि० क्रोधित । जल्द चिढ़ जानेवाला । अनुचित ( सूबे० १७४ ) क्रोधोद्दीपक ( कविता १६२ ) ।
अनगढ़—वि० बिना गढ़ा हुआ । निराकार (भ्र०१४५) । कुडौल, अनाड़ी ।
अनगन, अनगना, अनगनिया—वि० अगणित, बेशुमार, बहुत 'बरी बरा बेसन बहु भाँतिन, व्यञ्जन विविध अनगनियाँ ।' सू० ६३, अनगन भाँति करी बहुलीला जसुदानन्द निबाही ।' भ्र० ८८
अनगवना, अनगाना—अक्रि० आगे न बढ़ना, देर करना 'मुँह धोवति, एँड़ी घँसति, हँसति, अनगवति तीर ।' बि० २८८
अनगाना—सक्रि० सुरझाना, झारना, अलग करना ( रता० ३१८ ) ।
अनगिन,-गिनत,-गिना,-अनगिनित—वि० अगणित, असंख्य ।
अनगैरी—वि० अपरिचित, बिना जान पहिचानका ।
अनघ—पु० पापका उलटा, पुण्य । वि० निष्पाप, पवित्र ।
अनघरी—स्त्री० कुसमय ।
अनघैरी—वि० अनिमन्त्रित ।
अनघोर—पु० अन्धेर, अन्याय ।
अनघोरी—क्रिवि० चुपचाप, अचानक 'जीति पाइ अनघोरी आये ।' छत्र० ५२
अनचहा—वि० अवाञ्छित ।
अनचाहत—वि० जो प्रेम न करे, निर्मोही । पु० प्रेम न करनेवाला मनुष्य ।
अनचीन्हा—वि० अपरिचित, अज्ञात ।
अनचैन—स्त्री० चित्तकी अशान्ति, बेचैनी (भू० १३७) ।
अनछता—वि० बिना इच्छाका ( सुन्दर० १२२ ) ।
अनजान—वि० अज्ञानी । अपरिचित ।
अनजानना—अक्रि० न जानना 'छमहु चूक अनजानत केरी ।' रामा० १५२ ।
अनट—पु० अन्याय, अनाचार 'सो सिर धरि धरि करिहिं सब मिटिहि अनट अवरेब ।' रामा० ३२८ ।
अनडीठ—वि० बिना देखा ।
अनत—क्रिवि० अन्यत्र, 'मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै ।'

सू० १२ । वि० अनम्र, सीधा ।
अनति—वि० 'अति' का उलटा, थोड़ा । स्त्री० नम्रताका न
अनदेखा—वि० बिना देखा हुआ । [ होना, अहंकार ।
अनधिकार—पु० अधिकारका न होना, विवशता, अक्ष
मता । वि० अधिकार-रहित ।
अनधिकारी—वि० जिसे अधिकार न हो । कुपात्र ।
अनधिगत—वि० अज्ञात, जो जाना समझा न गया हो ।
अनध्याय—पु० वह दिन जिसमें पठन-पाठन निषिद्ध हो,
छुट्टीका दिन । [ रखनेवाला ।
अनन्य—वि० एकमें ही लीन या एकसे ही सम्बन्ध
अनन्वय—पु० एक काव्यालङ्कार—'उपमेयहि उपमान
जहँ होत अनन्वय सोय ।' वि० अन्वयहीन, बिखरा
हुआ, असम्बद्ध 'है अनादिके वृत्त अनन्वय' पल्लव २२
अनपच—पु० कुपच, अजीर्ण ।
अनपढ़—वि० मूर्ख, बेपढ़ा, अशिक्षित ।
अनपत्य—वि० जिसके कोई सन्तान न हो ।
अनपराध, अनपराधी—वि० निर्दोष, निरपराध ।
अनपायिनी—वि० स्त्री० अचल, स्थिर । दुर्लभ ।
अनपेक्षित—वि० जिसकी उपेक्षा न हो, जिसकी चाह न हो।
अनबन—स्त्री० बिगाड़, झगड़ा, वैमनस्य । वि० विविध,
कई, 'पुनि अभरन बहु काढ़ा अनबन भाँति जराव ।'
प० १५८ ( १२,१६ भी )
अनबिध, अनबेधा—वि० जिसमें छेद न किया गया हो ।
अनबोल, -ता -बोला—वि० न बोलनेवाला, गूँगा
'जो तुम हमैं जियायो चाहत अनबोले होइ रहिए ।'
अनभल—पु० अहित, हानि । [ सूर० २५३
अनभला—वि० बुरा, कुत्सित, निन्द्य ।
अनभाय, अनभावता—वि० अरुचिकर, अप्रिय ।
अनभिज्ञ—वि० अनजान, मूर्ख, अपरिचित ।
अनभिमत—वि० मन-विरुद्ध, नापसन्द ।
अनभिव्यक्त—वि० अस्पष्ट, अप्रकट, गुप्त ।
अनभीष्ट—वि० जो अभीष्ट न हो, अवाञ्छित ।
अनभेदी—वि० भेद न जाननेवाला ( साखी ११८ ) ।
अनभो—पु० असम्भव बात, आश्चर्य । वि० अद्भुत ।
अनभोरी—स्त्री० भुलावा, धोखा ।
अनभ्यस्त—वि० जिसका अभ्यास न किया गया हो,
या जिसने अभ्यास न किया हो ।
अनभ्यास—पु० अभ्यासका न करना ।

अनभ्र—वि० बादलहीन ।
अनमद—वि० जिसे अहंकार न हो, गर्वरहित ।
अनमन, अनमना—वि० उदास, सुस्त, (साखी० २२) ।
अनमाँगी—वि० स्त्री० अयाचित, जो न माँगी गयी हो ।
अनमारग—पु० कुमार्ग, अधर्म । [ देवता, मछली ।
अनमिख—वि० निमेष रहित । क्रिवि० एकटक । पु०
अनमिल,-मिलत—वि० बेमेल, बेतुका । अलग या
अनमिलता—वि० जो न मिले, अप्राप्य । [ निर्लिप्त ।
अनमीलना—सक्रि० नेत्र उन्मीलन करना, आँखें खोलना ।
अनमेल—वि० बेजोड़ । जिसमें मिलावट न हो, शुद्ध ।
अनमोल—वि० अमूल्य, बेशक़ीमत, सुन्दर ।
अनय—पु० अनीति । अमंगल ।
अनयन—वि० नेत्ररहित, अन्धा ।
अनयस—वि० अनैस, बुरा ।
अनयास—क्रिवि० अनायास, बिना परिश्रम, सहसा ।
अनरथ—पु० अनर्थ, उलटा अर्थ, बिगाड़, उपद्रव
'जोरैं सिवा करता अरनरथ भली भई हत्थ हथ्यार न
आया ।' भू० ८२
अनरना—सक्रि० अनादर करना 'क्यों तू कोकनद बनहिं
सरै, औ और सबै अनरै ।' भ्र० १४६ [ उदासी ।
अनरस—पु० विरसता, रुखाई या क्रोध, अनबन । दुःख
अनरसना—अक्रि० उदास होना 'हँसै हँसत अनरसे
अनरसत प्रतिबिम्बति ज्यों झाँई' ।' गीता० २८२
अनरसा—वि० अनमना, उदास, अस्वस्थ । पु० एक
अनराता—वि० अरक्त, रँगा हुआ नहीं । [ पकवान ।
अनरीति—स्त्री० कुरीति, अन्धेर ।
अनरुचि—स्त्री० अरुचि, अनिच्छा, मन्दाग्नि ।
अनरूप—वि० असमान, कुरूप ।
अनर्गल—वि० बेरोक, अडबड । व्यर्थ ।
अनर्घ—वि० बहुमूल्य । कम मूल्यका ।
अनर्घ्य—वि० अपूजनीय । बहुमूल्य ।
अनर्थ—पु० उलटा अर्थ । अकाज, बुराई, बिगाड़ ।
अनर्थक—वि० निरर्थक, बेफायदा, व्यर्थ ।
अनर्थकारी—वि० हानिकारक, अनिष्ट करनेवाला जो
अनर्ह—वि० अयोग्य, अपात्र । [ उलटा अर्थ करे ।
अनल—पु० आग । चीता । भिलावाँ । तीनकी संख्या ।
अनलसित—वि० आलस्य हीन ।
अनलायक—वि० अयोग्य ।

अनलेख—वि० अलख, अगोचर 'आदि पुरुष अनलेख है, सहजै रहा समाय।' दादू
अनल्प—वि० बहुत।
अनवकाश—पु० अवकाश या फुरसतका न होना।
अनवगत—वि० अनजाना, अज्ञात।
अनवच्छिन्न—वि० अटूट, लगा हुआ, जुड़ा हुआ।
अनवट—पु० पैरके अँगूठेका छल्ला 'अनवट बिछिया नखत तराई। पहुँचि सकै को पायँन ताई।' प० ५२
अनवद्य—वि० निर्दोष, अनिन्द्य।
अनवधान—पु० लापरवाही, ध्यान न रहना।
अनवय—पु० देखो 'अन्वय'। वंश, कुल।
अनवरत—क्रिवि० लगातार, निरन्तर।
अनवरोध—वि० बिना रोकटोकके, मुक्त।
अनवसर—पु० कुसमय, निरवकाश।
अनवस्था—स्त्री० अव्यवस्था, गड़बड़ी, अधीरता।
अनवाँसना—सक्रि० बरतन इ० को प्रथम बार काममें [लाना।
अनवाद—पु० कुवचन, कुबोल।
अनशन—पु० अन्नत्याग, उपवास।
अनश्वर—वि० अमर।
अनसखरी—स्त्री० 'सखरी' का उलटा, निखरी, 'पक्की'।
अनसत्त—वि० असत्य।
अनसमझ, अनसमझा—वि० बेसमझ, अज्ञान।
अनसहत—वि० असहनीय।
अनसाना—अक्रि० अनखाना, क्रोधित होना।
अनसुनी—वि० स्त्री० बिना सुनी हुई।
अनसूया—स्त्री० अत्रि-पत्नी। दूसरेके गुणमें दोष न देखना।
अनस्तित्व—पु० न होनेका भाव, अविद्यमानता।
अनस्थिर—देखो, 'अस्थिर'।
अनहदनाद—पु० हाथके अँगूठोंसे दोनों श्रवणरन्ध्रोंको बन्द करनेपर सुनायी देनेवाली आवाज़।
अनहित—पु० अहित, बुराई। हानि करनेवाला, शत्रु।
अनहितू—वि० अशुभ चाहनेवाला, अपकारी।
अनहिलवाड़ा—पु० गुजरातका एक प्रदेश।
अनहोता—वि० दरिद्र। 'अनहोना', असम्भव। अलौकिक।
अनहोनी—वि० स्त्री० अलौकिक, असम्भव। स्त्री० न होनेवाली बात।
अनाकनी, अनाकानी—स्त्री० सुनी अनसुनी करना, टालमटोल। 'सुनि दोउनके मृदु बचन दै अनाकनी राम।' रघु० १९८

अनागत—वि० न आया हुआ। भावी, अपरिचित। अनादि। अपूर्व विलक्षण 'नीके करि सबको हम जानति बातै कहत अनागत।' सूबे० १३३। क्रिवि० [अचानक।
अनागम—पु० न आना।
अनाघात—पु० एक ताल 'उपजावत गावत गति सुन्दर अनाघातके ताल।' सू० १८३
अनाचार—पु० दुराचार, अन्धेर, कुरीति।
अनाज—पु० अन्न, धान्य।
अनाड़ी—वि० नासमझ, गँवार, अनिपुण।
अनातप—पु० आतपका अभाव, छाया।
अनातुर—वि० अव्यग्र, अनुद्विग्न, शान्त, धीर, स्वस्थ।
अनाथ—वि० प्रभुहीन, असहाय, लावारिस, दीन या दुखी।
अनाथालय—पु० दीनदुखियोंका आश्रयस्थान, यतीमखाना।
अनादर—पु० निरादर, अपमान।
अनादि—वि० जिसका आदि न हो।
अनादृत—वि० जिसका अपमान हुआ हो, अपमानित।
अनाधार—वि० आश्रयहीन, बे-आधार, निरवलम्ब।
अनाना—सक्रि० मँगाना।
अनापशनाप—पु० अण्डबण्ड, व्यर्थकी बकवाद।
अनापा—वि० बिना नापा हुआ। सीमारहित।
अनाम—वि० नामहीन, जिसका कोई नाम न हो।
अनामय—वि० नीरोग, निर्दोष। पु० नीरोगता।
अनामा—वि० अप्रसिद्ध, वि० स्त्री० बिना नामवाली। स्त्री०। दे० 'अनामिका'।
अनामिका—स्त्री० कनिष्ठा और मध्यमाके बीचकी उँगली। वि० बिना नामवाली 'मेरी अनामिका संगिनि! सुन्दर कठोर कोमलते!' आँसू० ६५
अनायत्त—वि० अनधीन, स्वतन्त्र।
अनायास—क्रिवि० बिना परिश्रम, अचानक।
अनार—पु० दाडिम। अन्याय। ऊधम (बुन्देल०)।
अनारी—वि० लाल। 'अनाड़ी'।
अनार्तव—पु० मासिक-धर्मकी रुकावट। वि० बेमौसिम।
अनार्यता—स्त्री०, अनार्यत्व—पु० आर्यधर्मका अभाव, क्षुद्रता, नीचता।
अनावर्षण—पु० अवर्षण, वृष्टिका अभाव, सूखा।
अनावश्यक—वि० ग़ैर-ज़रूरी, अनुपयोगी।
अनावृत—वि० जो ढँका न हो, खुला हुआ।
अनावृष्टि—स्त्री० अवर्षण, सूखा।

अनाशा—स्त्री० निराशा ( प्रिय० ५२ )।
अनाश्रित—वि० आश्रयहीन, अवलम्बरहित।
अनासक्त—पु० आसक्तिहीन, जो किसीपर मोहित न हो।
अनास्था—स्त्री० अश्रद्धा, अविश्वास, अनादर।
अनाहक—क्रिवि० बेनाहक। नाहक।
अनाहत—वि० जिसे चोट न लगी हो, जिसपर प्रहार न हुआ हो। पु० हठ-योगियोंके अनुसार शरीरके भीतरका चौथा चक्र।
अनाहार—वि० निराहार। पु० भोजन-त्याग।
अनाहूत—वि० बिना बुलाया हुआ, अनिमन्त्रित।
अनिकेत—वि० गृहहीन, स्थानरहित। परिव्राजक।
अनिग्रह—वि० बन्धनरहित, असीम। अदण्डित। नीरोग। पु० बन्धनहीनता, दण्ड या पीड़ाका अभाव।
अनिच्छा—स्त्री० इच्छाका न होना, अरुचि।
अनिच्छित—वि० जो इच्छित न हो, अनचाहा।
अनित, अनित्य—वि० जो सदा न रहे, अस्थायी, नाशवान्। असत्य।
अनिद्र—वि० जिसे निद्रा न आवे। निद्रारहित।
अनिंद, अनिंद्य—वि० निर्दोष, उत्तम। जिसकी निन्दा न की जा सके।
अनिआई—वि० अन्यायी 'अरे मधुप लम्पट अनिआई। यह सँदेस कत कहैं कन्हाई।' सूने० ३८२
अनिप—पु० सेनानायक, सेनापति।
अनिपुण—वि० जो प्रवीण न हो, अकुशल।
अनिमा—स्त्री० देखो 'अणिमा'।
अनामिका—स्त्री० बिना नामवाली।
अनिमिष—वि० निमेषरहित, स्थिरदृष्टि। क्रिवि० एकटक, 'निरन्तर'। पु० देवता, मछली।
अनिमेष—वि० क्रिवि० देखो 'अनिमिष'।
अनियन्त्रित—वि० जिसपर कोई नियन्त्रण न हो, प्रतिबन्धरहित, मनमाना।
अनियम—पु० नियमका अभाव, अनिश्चितता, मनमानी।
अनियमित—वि० अव्यवस्थित, नियमविरुद्ध, अनिश्चित।
अनियाउ—पु० अन्याय, अनीति।
अनियार—वि० नुकीला। तीखा 'वेधक अनियारे नयन बेधत करि न निषेध।' वि० १०, 'जाहि लगैं सोई पै जानै, प्रेम बान अनियारो।' सू० २०८। बाँका, बहादुर 'चम्पतिराय बड़े अनियारे। हजरतके बहु काज सँवारे।' छत्र० १६१
अनिर्दिष्ट—वि० जिसका निर्देश न किया गया हो, अनिश्चित, अनिर्धारित असीम।
अनिर्बंध—वि० बन्धनरहित, अनियन्त्रित, स्वच्छन्द।
अनिर्वचनीय—वि० अवर्णनीय।
अनिर्वात—वि० निर्वात, वायुहीन।
अनिर्वाप्य—वि० जो बुझ न सके, जो समाप्त न हो सके।
अनिल—पु० वायु, हवा।
अनिवार, अनिवार्य—वि० न टलनेवाला, अवश्यम्भावी। 'आपपर जगजीवनका चक्र, दिशागति बदल चुका अनिवार'। ग्राम्या ९३
अनिश्चित—वि० जो निश्चित न हो, अनिर्दिष्ट।
अनिष्ट—वि० अवाञ्छित पु० अहित, हानि।
अनिष्टकर, कारी—वि० अनिष्ट करनेवाला, हानिकारक।
अनी—स्त्री० नोक (सू०१४१), सिरा। समूह, सेना।
अनीक—पु० समूह, सेना, लड़ाई। वि० बुरा।
अनीठ—वि० "अनिष्ट", अप्रिय, बुरा।
अनीठी—स्त्री० बुराई, क्रोध, ( रत्ना० ३५९ )।
अनीत, अनीति—स्त्री० अन्याय, अन्धेर।
अनीप्सित—वि० न चाहा हुआ, अनभिलषित।
अनीश,-स—वि० असहाय, अनाथ, असमर्थ (विन.३५४) जिसका कोई स्वामी न हो या जिसके ऊपर कोई न हो, श्रेष्ठ। पु० जीव या माया 'ईस अनीसहिं अन्तर तैसे।' रामा० ४३
अनीश्वरवादी—वि० नास्तिक।
अनीह—वि० इच्छाविहीन।
अनु—उप० एक उपसर्ग जो प्रायः इन अर्थोंमें प्रयुक्त होता है—१. पीछे (अनुगामी अनुयायी), २. समा (अनुकरण, अनुरूप), ३. प्रत्येक (अनुदिन), ४. सा (अनुकम्पा, अनुपान)। क्रिवि० अब, आगे 'अनु रा तुम्ह गुरु वह चेला। मोहि बूझहु कै सिद्ध नवेला प० ११८। हाँ, 'अनु, पाँडे पुरुषहिं का हानी। ज पावौं पदमावति रानी।' प० २००
अनुकंपा—स्त्री० दया, सहानुभूति।
अनुकरण—पु० देखादेखी, नक़ल।
अनुकारी—पु० अनुकरणकर्ता 'नया कंठ कमनीय वाणी वीणा अनुकारी' कानन कुसुम।
अनुकूल—वि० सहायक, समर्थक, प्रसन्न। क्रिवि० पक्षमें

तरफ 'चली विपति वारिधि अनुकूला।' रामा० २१५

अनुकूलना—अक्रि० पक्षमें होना, प्रसन्न होना। (दीन० २१७), 'मध्य बरात विराजत अति अनुकूल्यौ।'

अनुकृति—स्त्री० अनुकरण, नकल। [ जाम ५७।

अनुक्रम—पु० सिलसिला।

अनुक्रमणिका—स्त्री० सिलसिला। विषय या शब्दोंकी वर्णानुक्रम सूची, 'इण्डेक्स', सूची।

अनुक्रोश—पु० दया, अनुकम्पा।

अनुक्षण—क्रिवि० प्रतिक्षण, निरन्तर।

अनुग—पु० सेवक ( दीन० २०० )। वि० अनुगामी।

अनुगत—वि० अनुगामी, अनुकूल। पु० सेवक। खुशामद 'कृत अनुनय अनुगत अनुबोधि।' विद्या० १०५

अनुगमन—पु० अनुसरण, सदृश आचरण, पतिकी मृत्युपर पत्नीका भी प्राणत्याग।

अनुगामी—पु० अनुयायी, आज्ञाकारी। सहवास करनेवाला।

अनुगृहीत—वि० उपकृत, आभारी, कृतज्ञ।

अनुग्रह—पु० कृपा, अनिष्ट-निवारण।

अनुग्राहक, अनुग्राही—वि० अनुग्रह करनेवाला।

अनुचर—पु० अनुयायी, नौकर, साथी।

अनुचित—वि० बेजा, अन्यायपूर्ण, नीतिविरुद्ध।

अनुछन—देखो 'अनुक्षण'।

अनुज—पु० छोटा भाई।

अनुजीवी—पु० दास, किंकर। वि० सहारेपर जीनेवाला।

अनुज्ञा—स्त्री० अनुमति, आज्ञा। एक काव्यालंकार—'करत दोषकी चाह जहँ ताहीमें गुन देखि।' ललित०

अनुतप्त—वि० तपा हुआ, रंजीदा, खिन्न।

अनुताप—पु० जलन, दुःख, पश्चात्ताप।

अनुत्तर—वि० निरुत्तर, लाजवाब।

अनुदात्त—वि० लघु, तुच्छ, क्षुद्र।

अनुदिन—क्रिवि० प्रति दिन ( राम० ४ )।

अनुधावन—पु० अनुसरण, अनुसन्धान, चिन्तन।

अनुनय—पु० विनय, अनुरोध, प्रार्थना।

अनुनाद—पु० प्रतिध्वनि, आवाज।

अनुनादित—वि० प्रतिध्वनित।

अनुनासिक—वि० जिसका उच्चारण मुख और नाकसे हो।

अनुपकारी—वि० अहितू, हानि करनेवाला। निकम्मा।

अनुपद—वि० पीछे चलनेवाला ( साकेत ८४ )।

अनुपम—वि० जिसकी उपमा न हो, अद्वितीय।

अनुपयुक्त—वि० अयोग्य, अनुचित।

अनुपयोगी—वि० व्यर्थका, बेकाम।

अनुपस्थित—वि० गैरहाज़िर, अविद्यमान।

अनुपस्थिति—स्त्री० गैरहाजिरी, अविद्यमानता।

अनुपात—पु० सापेक्षिक सम्बन्ध। गणितकी त्रैराशिक क्रिया।

अनुपान—पु० वह वस्तु जिसके साथ ओषधि खायी जाय।

अनुप्राणित—वि० प्राण-युक्त।

अनुप्राशन—पु० खानेका कार्य।

अनुप्रास—पु० वर्णसाम्य, वर्णमैत्री। एक शब्दालंकार।

अनुबंध—पु० बन्धन, पूर्वापर स्थिति। [प्राप्त ज्ञान।

अनुभव—पु० तजुर्बा; स्वयं देखने, सुनने जाँचने इ० से

अनुभवना—सक्रि० अनुभव करना 'पुण्य फल अनुभवत सुतहिं विलोकि कै नँदघरनि।' सू० ५३

अनुभाव—पु० महिमा, प्रभाव। रसबोधक गुण व क्रियाएँ।

अनुभूत—वि० जिसका स्वयं अनुभव किया हो, आजमाया हुआ, परीक्षित।

अनुभूति—स्त्री० अनुभव।

अनुमति—स्त्री० सम्मति, सलाह (रघु० २१७), अनुज्ञा, आज्ञा।

अनुमान—पु० अटकल, कल्पना, अन्दाज़ा।

अनुमानना—सक्रि० अनुमान करना, समझना 'जाके जितनी बुद्धि हृदयमें सो तितनी अनुमानति।' सूवे० १३५, ( के० ८८ )

अनुमिति—स्त्री० अटकल, अनुमान, विचार।

अनुमेय—वि० अनुमान करने योग्य।

अनुमोदन—पु० समर्थन, प्रसन्नता दिखानेकी क्रिया।

अनुयायी—वि० अनुसरण करनेवाला। पु० सेवक, शिष्य।

अनुयोग—पु० जिज्ञासा, प्रश्न।

अनुरक्त, अनुरत—वि० प्रेमाभिभूत, आसक्त।

अनुरंजन—पु० अनुराग, प्रसन्न रखनेका कार्य।

अनुरंजित—वि० अनुरागयुक्त, लालिमायुक्त।

अनुराग—पु० प्रेम, प्रीति।

अनुरागी—वि० प्रेम करनेवाला, स्नेही।

अनुरागना—अक्रि० प्रेम करना, प्रेममें मग्न हो जाना ( सू० ७५ ), 'वचन सुनत पुरजन अनुरागे।' रामा० २११

अनुराधा—पु० अनुरोध, प्रार्थना, याचना।

अनुराधना—सक्रि० प्रार्थना करना।

अनुराधा—स्त्री० एक नक्षत्र।

अनुरूप—वि० समान, अनुकूल, योग्य।

अनुरूपक—पु० सदृश वस्तु, प्रतिमूर्त्ति ( रामा० १३५ )।

अनुरूपना—सक्रि० सदृश बनाना, 'अङ्ग अङ्ग अनुरूपियत जहँ रूपकको रूर।' पद्माभ० ६

अनुरोध—पु० आग्रह, प्रार्थना, प्रेरणा। बाधा।

अनुलेप—पु० लेप, उबटन, मरहम संसृतिके विक्षत पग रे! यह चलती है डगमग रे!' अनुलेप सदृश तू लग रे! मृदुदल बिखरे इस मग रे! —लहर० ५६

अनुलेपन—पु० लेप या उबटन चढ़ाना, लीपना।

अनुलोम विवाद—पु० ऊँची जातिके पुरुषका अपनेसे नीची जातिकी स्त्रीके साथ विवाह।

अनुवर्त्तन—पु० अनुकरण, अनुसरण, पालन, सम्मति, [ परिणाम।

अनुवर्त्ती—वि० अनुगामी, अनुयायी।

अनुवाद—पु० तर्जुमा, उल्था। पुनरुक्ति।

अनुवादक—पु० तर्जुमा करनेवाला।

अनुवादित—वि० अनुवाद किया गया। शिक्षक।

अनुशय—पु० पश्चात्ताप, चिन्ता, दुःख, घृणा।

अनुशयाना—स्त्री० मिलन-स्थानके नष्ट होनेसे दुःखित परकीया नायिका।

अनुशासक—पु० आज्ञा देनेवाला, नियन्त्रण करनेवाला।

अनुशासन—पु० उपदेश, आज्ञा, नियन्त्रण, नियमन।

अनुशीलन—पु० मनन, विशेष चिन्तन।

अनुषंग—पु० लगाव, सम्बन्ध, दया।

अनुष्ठान—पु० कार्यका किया जाना, उपक्रम, प्रयोग।

अनुष्ठित—वि० जिसका अनुष्ठान किया गया हो।

अनुसंधान—पु० खोज, जाँच-पड़ताल। प्रयत्न।

अनुसंधानना—सक्रि० ढूँढ़ना, विचारना (रामा० ८८)

अनुसंधि—स्त्री० षड्यन्त्र, गुप्त योजना।

अनुसयाना—स्त्री० देखो 'अनुशयाना'।

अनुसर—वि० देखो 'अनुसार'। समान।

अनुसरण,-न—पु० अनुगमन, पीछे चलना, अनुकरण।

अनुसरना—सक्रि० अनुगमन करना, किसीके अनुकूल कार्य करना, 'सिर धरि गुरु आयसु अनुसरहू।' रामा० २८३। नकल करना।

अनुसार—वि० अनुरूप, समान।

अनुसारना—सक्रि० अनुगमन करना, कोई कार्य करना, पालना 'कुलिस तनु अस्तुति अनुसारी।' रामा० ५५६ 'तौं कछुक बात अनुसारी। छमिय देवि बड़ चूक हमारी।' रामा० ५०६

अनुसारी—वि० अनुसरण करनेवाला (रामा० ५८३।)

अनुसाल—पु० पीड़ा, दुःख। [ देखो 'अनुशासन'।

अनुसासन—पु० आज्ञा, अनुमति (रामा० ५४२)।

अनुस्वार—पु० वह अनुनासिक वर्ण जो स्वरके बाद उच्चरित होता है और वर्णके ऊपर बिन्दीके रूपमें लिखा जाता है।

अनुहरत—वि० समान, अनुरूप, योग्य 'मोहि अनुहरत सिखावन देहू।' रामा० २८४

अनुहरना—सक्रि० देखासीखी करना, समानता करना।

अनुहरिया—स्त्री० अनुहारि, आकृति। वि० सदृश, तुल्य।

अनुहार—वि० समान (दे० 'अनुहारि') स्त्री० रूप, प्रकार।

अनुहारना—सक्रि० समान करना, उपमा देना, खञ्जन हू न जात अनुहारे।' सू० १२०

अनुहारि—वि० सदृश, 'चुनरी स्याम सतार नभ, मुख ससिकी अनुहारि।' वि० १३६ (बगवासी) उपयुक्त या अनुसार 'वर अनुहारि बरात न भाई।' रामा० ५५। स्त्री० रूप, आकृति, वेष 'सकल मलिन मन दीन दुखारी। देखी सासु आन अनुहारी।' रामा० ३०७

अनूअर—क्रिवि० अनुत्तर, निरन्तर, लगातार, (उदे०

अनूजरा—वि० अनुज्वल, मैला। [ 'विदरना')।

अनूठा—वि० अनोखा, अद्भुत, बढ़िया।

अनूढ़ा—स्त्री० अविवाहिता स्त्री।

अनूतर—वि० निरुत्तर, मौन।

अनूदित—वि० अनुवादित। भाषान्तरित।

अनून—वि० पूर्ण, बहुत (भाव० १३)

अनूप—वि० निरुपम, अद्वितीय, सुन्दर।

अनूह—वि० विचारहीन, अतर्कनीय, जो समझमें न आ सके। (रत्ना० ४९३)

अनृत—पु० झूठ। वि० झूठ या उलटा।

अनेक, अनेग—वि० बहुत, अगनित, कई।

अनेड़—वि० निकम्मा, खराब, टेढ़ा पियका मारग सुगम है तेरा चलन अनेड़।' साखी० ५१

अनेरा—वि० झूठा। बेमतलब, निकम्मा, व्यर्थका टेढ़ा, ऊधमी 'छोटे औ बड़ेरे मेरे पूतउ अनेरे सब ......' कविता० १७६। 'रे रे चपल स्वरूप ढीठ तू बोलत वचन अनेरे।' सू० ३८। 'अजहूँ जियजानि मानि कान्ह है अनेरो।' सू० ६४। क्रिवि० व्यर्थ ही 'चरन सरोज बिसारि तिहारे निसिदिन फिरत अनेरो।' विन० ३५।

अनेस—वि० अप्रिय, बुरा, (कलस १५४)। पु० अँदेशा, चिन्ता, (कलस २७१)

अनेह—पु० प्रेमका उलटा, विरक्ति।
अनै—पु० 'अनय', अनीति।
अनैसना—अक्रि० रूठना, बुरा मानना।
अनैसा—वि० अप्रिय, बुरा 'सुनु मातु भई यह बात अनैसी।' राम० २१९; तरुनिनकी यह प्रकृति अनैसी थोरेहि बात खिसावैं।' सूबे० १५४। द्वेषपूर्ण।
अनैसे—क्रिवि० बुरे भावसे, 'अजहुँ अनुज तव चितव अनैसे।' रामा० १५१
अनैहा—पु० उत्पात, मचलना, 'जा कारन सुन सुत सुन्दर वर कीन्हों इतो अनैहो।' सू० ५९
अनोकह—पु० अपना स्थान न छोड़नेवाला, पेड़।
अनोखा—वि० विचित्र, निराला, सुन्दर, नया।
अनोसर—पु० ठाकुरजीको शयन कराना, अष्ट० २, २६, ३१, ६५।
अनौचित्य—पु० उचित न होनेका भाव, अनुपयुक्तता।
अनौट—पु० देखो 'अनवट'।
अन्न—पु० खाद्य वस्तु, अनाज, धान्य, भात। वि०अन्य।
अन्नजल—पु० दानापानी, जीविका।
अन्नद,-दाता—पु० अन्न देनेवाला, परवरिश करने वाला।
अन्नदोष—पु० अन्न खानेसे उत्पन्न विकार। निषिद्ध व्यक्तिका अन्न खानेसे उत्पन्न दोष।
अन्नपूर्णा—स्त्री० अन्नकी अधिष्ठात्री देवी।
अन्नप्राशन—पु० बच्चोंको पहले पहल अन्न चखानेकी रस्म, पसनी, चटावन।
अन्नसत्र—पु० वह स्थान जहाँ सदावर्त्त मिलता है, छेत्र।
अन्य—वि० दूसरा, पराया, भिन्न।
अन्यतम—वि० अनेकोंमें एक।
अन्यत्र—क्रिवि० दूसरी जगह।
अन्यथा—वि० उलटा, असत्य, मिथ्या। अ० नहीं तो।
अन्यमनस्क—वि० उदास, जिसका चित्त ठिकाने न हो।
अन्याय—पु० अनीति, अन्धेर।
अन्यारा—वि० जो न्यारा न हो। निराला। वीर, बाँका 'त्यौं पंचम के भट अन्यारे' छत्र० १३३। अनियारा, नुकीला ( नन्द० २० )।
अन्यास—क्रिवि० बिना प्रयत्न किये, अकस्मात् 'मोको तुम अपराध लगावत कृपा भई अन्यास।' सूबे० ३४१
अन्यून—वि० बहुत, पर्याप्त।
अन्योक्ति—स्त्री० 'अप्रस्तुत-प्रशंसा' नामक अलंकारका एक भेद, वह उक्ति जिसका अर्थ सादृश्यके कारण कथित वस्तुके सिवाय अन्यपर भी घट सके।
अन्योन्य—सर्व० आपसमें, परस्पर। पु० एक काव्यालंकार।
अन्योन्याश्रित—वि० एक दूसरेपर अवलम्बित एक दूसरे पर टिका हुआ।
अन्वय—पु० परस्पर सम्बन्ध, मेल। वंश।
अन्वित—वि० शामिल, संयुक्त, सहित।
अन्वीक्षण—पु० ध्यानपूर्वक देखना, जाँच, खोज।
अन्वेषक, अन्वेषी—वि० खोजनेवाला।
अन्वेषण, अन्वेषन—पु० खोज, अनुसन्धान।
अन्हवाना—सक्रि० नहलाना, स्नान कराना।
अन्हाना—अक्रि० नहाना।
अपंग—वि० अंगहीन, लँगड़ा, असमर्थ।
अप—पु० पानी। उपसर्ग = दूषित ( अपयश ), रहित ( अपमान ), विकृत ( अपांग )।
अपकर्त्ता—पु० अपकार करनेवाला, हानि पहुँचानेवाला।
अपकर्म—पु० बुरा काम, दुष्कर्म, पाप। [ कुकर्मी।
अपकर्ष—पु० पतन, अवनति, उतार, निरादर।
अपकाजी—वि० मतलबी, स्वार्थी ( सू० १९० )।
अपकार—पु० बुराई, हानि, निरादर या बुरा व्यवहार।
अपकारी—वि० अपकार करनेवाला, हानि पहुँचानेवाला। विरोधी।
अपकारीचार—वि० हानिकर्त्ता, विघ्नकर्त्ता 'जे अपकारीचार, तिन्ह कहँ गौरव मान्य बहु।' रामा० ५९१।
अपकीरति,-कीर्त्ति—स्त्री० अयश, बदनामी।
अपकृति—स्त्री० हानि, अयश।
अपकृष्ट—वि० हटाया हुआ, गिरा हुआ, नीच, निकृष्ट।
अपक्व—वि० पका हुआ नहीं, कच्चा, अनुभवहीन।
अपगत—वि० भागा हुआ, दूरीभूत, नष्ट।
अपगा—स्त्री० नदी, सरिता।
अपघन—पु० शरीर ( के० १८९ )। वि० मेघरहित।
अपघात—पु० हिंसा, धोखा। आत्मघात। हत्या, आत्म-हत्या, छल।
अपच—पु० कुपच, बदहजमी।
अपचय—पु० हानि, कमी, नाश। पूजा। गल-पचेकर धन एकत्र करना।
अपचार—पु० बुरा व्यवहार, अनिष्ट, निन्दा। भ्रम। कुपथ्य।
अपचाल—स्त्री० कुचाल, खोटाई।
अपचित—वि० पूजित, आदृत।

अपच्छी—पु० विपक्षी, विरोधी। वि० पक्षहीन।
अपछरा—स्त्री० अप्सरा 'बरषि प्रसून अपछरा गाईं।' [रामा० १३५
अपजय—स्त्री० हार, पराजय।
अपजस—पु० अपयश।
अपटन—पु० देखो 'उबटन'।
अपठमान—वि० अपठ्यमान, जो न पढ़ा जाय।
अपठ—वि० अपढ़, अशिक्षित।
अपठित—वि० जिसने नहीं पढ़ा है, अपढ़, जो नहीं [पढ़ा गया है
अपडर—पु० शंका (रामा० २१५)। डर।
अपडरना—अक्रि० शंकित होना, भयभीत होना।
अपड़ाना—अक्रि० खींचातानी करना। झगड़ना।
अपड़ाव—पु० झगड़ा, तकरार, टंटा 'जन्महिते अपडाव करत हैं गुणि गुणि हृदय कहै।' सूरे० २४८
अपढ़—वि० मूर्ख, अज्ञानी।
अपत—वि० बिना पत्तों का 'अब अलि रही गुलाबमें अपत कँटीली डार।' बि० १०७। नंगा, निर्लज्ज, नीच, प्रतिष्ठाहीन (विन० २०८, कविता० २१७)।
अपतई—स्त्री० निर्लज्जता, धृष्टता चंचलता।
अपताना—पु० जंजाल, झंझट।
अपति—वि० स्त्री० विधवा। स्त्री० बुरी हालत, अप्रतिष्ठा, (दास० ९०)। वि० दुष्ट, पातकी।
अपतोस—पु० अफसोस 'ए सखि काहि करय अपतोस, हमर अभागि पिया नहिं दोस।' विद्या०
अपत्य—पु० पुत्र या पुत्री, सन्तान।
अपथ—पु० कुमार्ग, विकट रास्ता। देखो 'अपथ्य'।
अपथ्य—वि० स्वास्थ्यको हानि पहुँचानेवाला, हानिकारी। पु० अहितकर आहार-विहार।
अपद—पु० बिना पाँववाले जीव, साँप इ०। क्रिवि० अनुचित रूपसे 'भगनी अपद न मोहिं परबोध।'
अपद्रव्य—पु० कुवस्तु, खराब द्रव्य। [विद्या० १९७
अपध्वंस—पु० पराजय। अधःपतन। निरादर। नाश।
अपन—सर्व० हमलोग। अपना।
अपनपो, अपनपौ—पु० ज्ञान या सुध। अपनापन, (भ्र० ४८)। आत्मभाव, आत्मगौरव। गर्व।
अपना—सर्व० निजका, स्वीय।
अपनाना—सक्रि० अपने पक्षमें करना, वशमें करना। ग्रहण करना, अपना बना लेना, सहारा देना।
अपनाम—पु० बदनामी, अपयश, शिकायत।
अपनाव—पु० ऐक्य, अपनानेका भाव, अपनानेकी क्रिया।
अपनोद—पु० दूर करने या हटानेकी क्रिया (उत्तर० ७५)।
अपभय—पु० भयका न रहना, निडरता। व्यर्थका डर, भय 'अपभय कुटिल महीप डराने।' रामा० १५४ वि० निडर।
अपभ्रंश—पु० पतन या बिगाड़, विकृत रूप। वि० [बिगड़ा हुआ।
अपमान—पु० निरादर, तिरस्कार।
अपमानना—सक्रि० अपमान करना, निन्दा करना 'बोले परसुधरहिं अपमाने। रामा० १४७
अपमानी—वि० निन्दक, तिरस्कार करनेवाला।
अपमार्ग—पु० कुमार्ग, कुपथ।
अपमुख—वि० टेढ़े मुँहवाला, विकृतानन।
अपमृत्यु—स्त्री० कुमृत्यु, सर्पके काटने, विष खाने इत्यादिसे हुई मृत्यु।
अपयश—पु० अकीर्ति, कलंक, बदनामी।
अपयोग—पु० कुयोग, कुसमय। कुचाल 'सबै खोटे मधुवनके लोग। जिनके संग श्यामसुंदर सखि सीखे सब अपयोग।' सूबे० ३६१
अपरंच—अ० और भी, पुनः।
अपरंपार—वि० जिसका पार न हो, अनन्त।
अपर—वि० दूसरा। पूर्वका। जिससे कोई परे न हो, पिछला।
अपरछन—वि० अप्रच्छन्न, जो ढँका न हो। छिपा या गुप्त।
अपरता—स्त्री० परायापन। 'परता' नहीं = अपनापन।
अपरती—स्त्री० स्वार्थ। [वि० स्त्री० स्वार्थी।
अपरदिशा—स्त्री० पश्चिम। [रामा० ४६
अपरना—स्त्री० पार्वती 'उमा नाम तब भयेउ अपरना।'
अपरबल—वि० बलवान्, उद्धत, प्रचंड 'दसो दिसाते क्रोधकी उठी अपरबल आगि।' साखी १४४
अपरस—वि० न छूने योग्य, अलग 'अपरस रहत सनेह तगातें नाहिंन मन अनुरागी।' सू० २५३। पु० एक चर्मरोग।
अपरा—स्त्री० पश्चिम दिशा। ब्रह्मविद्याको छोड़ अन्य विद्या।
अपराजेय—वि० जो जीता न जा सके।
अपराध—पु० कसूर, दोष, गलती, भूल।
अपराधी—वि० अपराध करनेवाला, दोषी, मुलज़िम।
अपराह्न—पु० तीसरा पहर, दोपहरके बादका समय।
अपरिचिता—स्त्री० न पहचाननेका भाव।
अपरिचित—वि० अज्ञात, बेजाना हुआ।

अपरिच्छिन्न—वि० अभेद्य, मिला हुआ, जुड़ा हुआ, सटा हुआ। असीम।
अपरिणत—वि० विकारशून्य, अविकृत। अपरिपक्व।
अमरिमित—वि० सीमारहित, असंख्य।
अपरिमेय—वि० अपरिमित, बे अन्दाज, असंख्य।
अपरिवर्त्तनीय—वि० जो बदला न जा सके, जो बदलेमें न दिया जा सके।
अपरिवर्तित—वि० न बदलनेवाला जो सदैव समान रहे।
अपरिष्कृत—वि० जिसका परिष्कार न हुआ हो, †असंस्कृत, भद्दा।
अपरिहार्य—वि० अनिवार्य, अत्याज्य। आदरणीय।
अपरूप—वि० अपूर्व। कुरूप, भद्दा
अपर्णा—स्त्री० पार्वती। दुर्गा।
अपल—वि० अपलक, एकटक।
अपलक—वि० जिसमें पलक न गिरे, निर्निमेष। (अपलक नेत्रों देखता रहा)। क्रिवि० एकटक।
अपलक्षण—पु० बुरा लक्षण, कुचिह्न।
अपलाप—पु० बकवाद, बात बनाना, मिथ्यावाद।
अपलोक—पु० बदनामी, अपवाद 'लोकमें लोक बड़ी अवलोक सु केशवदास जु होउ सु होऊ।' राम० १६३
अपवर्ग—पु० मोक्ष। दान, त्याग।
अपवर्जित—वि० त्यागा हुआ, मुक्त।
अपवश—वि० अपने वश, स्वाधीन (ब्रज ४९)।
अपवाद—पु० दोष, बदनामी; खण्डन, वह नियम या उदाहरण जो मुख्य नियमके विरुद्ध हो; आज्ञा।
अपवित्र—वि० नापाक, अशुद्ध।
अपव्यय—पु० निरर्थक व्यय, फजूलखर्ची।
अपशकुन,-सगुन—पु० असगुन, बुरा सगुन।
अपशब्द—पु० बुरा शब्द, गाली। निरर्थक शब्द।
अपसना, अपसवना—अक्रि० सरकना, चला जाना, भागना, जाना 'पौन बाँधि अपसवहि अकासा।' प० १४६
अपसव्य—वि० जनेऊ दाहिने कंधेपर किये हुए। उलटा।
अपसारना—सक्रि० हटाना।
अपसारित—वि० हटाया गया, दूरीकृत।
अपसोस—पु० दुःख, चिन्ता 'काहेको अपसोस मरतिहौ नैन तुम्हारे नाहीं।' सू० १४५
अपसोसना—अक्रि० सोच करना।
अपसौन—पु० अपशकुन।
अपस्मार—पु० मिर्गी रोग।
अपस्वर—वि० बुरा स्वर, कुस्वर।
अपहत—वि० अलग किया हुआ मारा हुआ; ध्वस्त।
अपहरण—पु० छीनने या ले लेनेकी क्रिया। चोरी।
अपहरना—सक्रि० लूटना, छीन लेना, चुराना (रामा० १६१)
अपहर्त्ता, अपहारी—पु० छीननेवाला, चोर '···भाजि पताल गयो अपहारी।' सू० ५७
अपहृत—वि० हरण किया हुआ हटाया हुआ।
अपह्नव—पु० बहाना, छिपाव।
अपह्नुति—स्त्री० छिपाव, मिस, बहाना। एक अर्थालंकार। 'आन बात कछु प्रगटिके साँची बात छिपाय।'
अपांग—वि० लूला-लङ्गड़ा, अंगहीन, असमर्थ। पु० कटाक्ष।
अपा—स्त्री० गर्व, अहंभाव।
अपान—पु० आत्मज्ञान, सुध-बुध 'देखि भानुकुल भूषनहिं बिसरा सखिन अपान।' रामा० १२८। अभिमान, आत्मगौरव। अधोवायु। सर्व० अपना।
अपाप—वि० पापरहित। पु० पुण्य, सत्कर्म।
अपामार्ग—पु० चिंचड़ा नामक पौधा, लटजीरा।
अपाय—पु० हानि, पीछे हटना, अलगाव। अनरीति या उत्पात। वि० अपाहिज, असमर्थ।
अपार—वि० जिसका पार न हो, अछोर, अनन्त, अत्यधिक, असंख्य।
अपार्थिव—वि० स्वर्गीय, अलौकिक।
अपाव—पु० अनरीति, उपद्रव।
अपावन—वि० अपवित्र, गन्दा।
अपाहज अपाहिज—वि० लूला लँगड़ा, असमर्थ, सुस्त।
अपिंडी—वि० अशरीरी।
अपिधान—पु० ढक्कन।
अपीच—वि० अच्छा लगनेवाला, अति सुन्दर।
अपुत्र—वि० पुत्रहीन, निस्सन्तान।
अपुनपो, अपुनपौ—पु० अपनापन, सुधबुध। आत्मभाव।
अपूठना—सक्रि० विदीर्ण करना, नष्ट करना, चौपट करना उलटना 'रावण हति लै चलौं साथ ही लङ्का धरौं अपूठी।' सूबे० ३९
अपूठा—वि० अपुष्ट, अस्फुट, पक्का नहीं, अजानकार निकट रहत पुनि दूर बतावत हौ रसमाहिं अपूठे।' सू०
अपूत—वि० पुत्रहीन। अपवित्र। पु० बुरा लड़का।
अपूर—वि० पूरा, खूब।

अपूरना—सक्रि० भरना, हवा भरकर बजाना।
अपूरब—वि० अपूर्व, अनोखा, उत्तम।
अपूरा—वि० देखो 'अपूर'। व्याप्त।
अपूर्ण—वि० जो पूरा न हो, असमाप्त, अधूरा।
अपूर्व—वि० जो पहले न रहा हो, अद्भुत, अद्वितीय।
अपेक्षा, अपेच्छा—स्त्री० आकांक्षा। आवश्यकता।
अपेक्षित—वि० वांछित, आवश्यक। [आशा। तुलना।
अपेय—वि० न पीने योग्य।
अपेल—वि० दृढ़, अटल।
अपैठ—वि० जहाँ पैठ (प्रवेश) न हो, अगम।
अपोगंड—वि० जिसकी उम्र सोलह वर्षसे अधिक हो।
अप्रकाशित—वि० जो प्रकाशित या प्रकट न हुआ हो, गुप्त, अन्धकारमय।
अप्रकृत—वि० अस्वाभाविक, कृत्रिम, दिखाऊ।
अप्रति—वि० अद्वितीय 'तारा कुमारकी वही महाबल श्वेतधीर, अप्रति भट वही, एक अर्बुद-सम, महावीर, ('अनामिका १५६)
अप्रतिभ—वि० प्रतिभारहित, निर्बुद्धि। सुस्त, मन्द।
अप्रतिम—वि० अनुपम, अद्वितीय अमूर्त (तुलसीदास२०
अप्रतिष्ठा—स्त्री० अनादर, बेइज्जती, अकीर्ति।
अप्रतिहत—वि० जिसका विघात न हुआ हो, अविजित
अप्रत्यक्ष—वि० प्रत्यक्षका उलटा, परोक्ष, अदृश्य, गुप्त।
अप्रमेय—वि० जो नापा न जा सके, अनन्त, अपार।
अप्रसन्न—वि० नाखुश, असन्तुष्ट, उदास।
अप्रस्तुत—वि० जो प्रस्तुत न हो, अनुपस्थित, तैयार नहीं। पु० अवर्ण्य, उपमान।
अप्रस्तुतप्रशंसा—स्त्री० एक काव्यालङ्कार।
अप्रयुक्त—वि० जो प्रयोगमें न लाया गया हो।
अप्राप्य—वि० जो प्राप्त न हो सके, दुर्लभ।
अप्रामाणिक—वि० जो प्रामाणिक न हो, अविश्वसनीय।
अप्रासंगिक—वि० प्रसंगसे जिसका सम्बन्ध न हो, प्रसंगके बाहरका।
अप्रिय—वि० अरुचिकर, जिसकी चाह न हो, कटु।
अप्सर, अप्सरा—स्त्री० परी। देवांगनाओंका एक भेद।
अप्सरसि—स्त्री० अप्सरा। (सम्बोधन)
अफसार्ना—पु० यात्रामें पहलेसे जाकर आरामका प्रबन्ध करनेवाला कर्मचारी (कवि० प्रि० ६६)।
अफनाना—अक्रि० अफनाना, उबलना, क्रुद्ध होना, (रत्ना० ४३५)।
अफरना, अफराना—अक्रि० पेटभर भोजन करना,, अघाना, पेट फूलना।
अफरा—पु० अजीर्ण या वायु-विकारके कारण पेट भरा हुआ-सा मालूम होना।
अफवाह—स्त्री० गप्प, उड़ती खबर।
अफसोस—पु० खेद, दुःख, रञ्ज।
अफीम—स्त्री० एक मादक वस्तु।
अफीमची, अफीमी—वि० अफीम खानेवाला।
अबंध—वि० मुक्त।
अब—क्रिवि० इस समय।
अबधू—वि० अबोध, मूर्ख। पु० अवधूत, संन्यासी।
अबर—वि० अबल, कमज़ोर।
अबरा—वि० निर्बल, कमजोर, अशक्त।
अबरक, अबरख—पु० एक धातु। 'भोडर'।
अबरन—वि० अवर्णनीय। वि० अवर्ण, बिना रूप-रङ्गका। भिन्न प्रकारका (साखी १३८)।
अबरू—पु० भौंह।
अबल—वि० निर्बल।
अबलक अबलख—वि० चितकबरा। पु० चितकबरा घोड़ा (या बैल)।
अबला—स्त्री० स्त्री, नारी।
अबाँह—वि० अनाथ 'चाह आलबाल और अबाँहके कलप-तरु, कीरतिमयङ्क प्रेमसागर अपार हैं।' आनन्दघन
अबाती—वि० वात अर्थात् वायुसे रहित, भीतर जलने-वाला।
अबाद—वि० निर्विवाद।
अबाध, अबाधा—वि० बाधाहीन, बेरोक, निर्विघ्न। अपार सँग खेलत दोउ झगरन लागे शोभा बढ़ी अबाध।'
अबाधता—स्त्री० बाधाहीनता, निस्सीमता।
अबान—वि० शस्त्रहीन, निहत्था। [ सूबे० ८२
अबाबील—पु० एक प्रकारका पक्षी। स्त्री० एक काली चिड़िया।
अबार—स्त्री० बेर, देर (सू० ७१), 'आई छाक अबार भई है नैसुक धैया पियहु सबेरे।' सूबे० ७३। क्रिवि० शीघ्र 'तुमको देखावहिं जहँ स्वयवर होनहार अबार।'
अबास—पु० आवास, भवन (रामा० २२८) [रघु० ९१
अबिरल—वि० अविरल, घना।
अबीर—पु० स्त्री० गुलाल, एक तरहकी रङ्गीन बुकनी।

अबुझ, अबुध, अबूझ—वि० अज्ञानी, नासमझ ।

अबुहाना-अक्रि०प्रेतादिसे आविष्ट होकर हाथपाँव पटकना, बक उठना, 'एक होय तेहि उत्तर दीजै सूर उठी अबुहानी ।' भ्र० ६७

अबूत—क्रिवि० वृथा 'धन्य सो माता सुन्दरी जिन जाया साधू पूत । नाम सुमिरि निर्भय भया अरु सब गया अबूत ।' साखी १३५

अबे—अ० निम्न कोटिके व्यक्तियोंके लिए एक सम्बोधन, अपमानबोधक एक सम्बोधन ।

अबेध—वि० अनबिधा, जो छिदा न हो ।

अबेर—स्त्री० अबार, देर पु० वरुण, (कवि प्रि० २७७)।

अबेरा—वि० बहुत ।

अबैन—वि० मौन, मूक 'लिये सुचाल बिसालबर समद सुरङ्ग अबैन ।' ( नैन ) पद्माभ० १८

अबोध—वि० अज्ञानी । पु० अज्ञान ।

अबोल—वि०चुप । अवर्णनीय । पु० कटु वाणी । क्रि०वि० बिना बोले हुए, चुपचाप 'ललितमाधुरी अरे निरदई, कत अबोल द्रुम ओटन जात ।' (चन्द्रसे) ल० माधुरी।

अबोला—पु० दुःख इत्यादिके कारण चुप रहना, मौन ।

अब्ज—पु० कमल । चन्द्रमा । शङ्ख । अरब ।

अब्जा—स्त्री० लक्ष्मी ।

अब्द—पु० वर्ष । बादल ।

अब्धि—पु० समुद, सरोवर । सातकी संख्या ।

अब्बर—वि० अबल, शक्तिहीन ( रत्ना० ५१३ ) ।

अभ्र—पु० अभ्र, बादल ।

अभंग—वि० अखण्ड ।

अभंगी—वि० अभङ्ग, अखण्ड । जिसका कोई कुछ ले न सके ।

अभक्ष, अभक्ष्य—वि० अखाद्य ।

अभगत—वि० अभक्त । भक्तिरहित । समूचा ।

अभद्र—वि० अशिष्ट, गँवार, अशुभ ।

अभद्रता—स्त्री० अशिष्टता, बुराई, अशुभ ।

अभयंकर—वि० भयहीन करनेवाला, अभयप्रद ।

अभय—वि० निडर । पु० अभय बचन, शरण ।

अभर—वि० दुर्वह, जिसका वहन करना कठिन हो ।

अभरन—पु० आभरण, गहना । वि० अपमानित ।

अभरम—वि० भ्रमरहित, निःशंक, अचूक । क्रिवि० निःसन्देह ।

अभल—वि० बुरा, खराब ।

अभाऊ—वि० अरुचिकर, अशोभित, अशिष्ट, अभद्र 'भइ अज्ञा को भाँट अभाऊ । बाएँ हाथ देइ बरम्हाऊ ।' प० १२३

अभाग, अभाग्य—पु० दुर्भाग्य, बदकिस्मती ।

अभागा—वि० अभागा, बदकिस्मत । जिसे भाग ( जायदादका हिस्सा ) न मिले ।

अभागी—वि० हतभाग्य, बदनसीब ।

अभाव—पु० अविद्यमानता, त्रुटि, कमी । कुभाव ।

अभावना—वि० अरुचिकर, अप्रिय ( सुन्दर० ३४ ) ।

अभास—पु० देखो 'आभास' ।

अभिघात—पु० ताड़न, प्रहार ।

अभिचार—पु० मन्त्रादिद्वारा मारण, उच्चाटन, इ०, तन्त्र प्रयोग ।

अभिजन—पु० कुल । जन्मभूमि ।

अभिजात—वि० उच्च वंशका, पूज्य, सुन्दर, योग्य ।

अभिज्ञ—वि० जानकार, परिचित, निपुण ।

अभिज्ञान—पु० लक्षण, निशानी । खयाल ।

अभिधा—स्त्री० वह शक्ति जिससे शब्दोंका वाच्यार्थ प्रकट हो । नाम ( प्रिय० २०९ ) ।

अभिधान—पु० नाम । शब्दकोष ।

अभिधेय—पु० नाम । वि० नाम लेने योग्य, प्रतिपाद्य ।

अभिनंदन—पु० प्रशंसा,आनन्द, प्रोत्साहन, नम्र प्रार्थना ।

अभिनंदनीय—वि० प्रशंसा या बधाईके योग्य, वन्दनीय ।

अभिनंदित—वि० प्रशंसित ।

अभिनय—पु० नाटकका खेल, नाट्यक्रिया, स्वाँग ।

अभिनव—वि० नूतन, नया, ताज़ा ।

अभिनेता—पु० अभिनय करनेवाला, नाटकका पात्र ।

अभिन्न—वि० जो भिन्न न हो, सम्बद्ध, मिला हुआ ।

अभिप्राय—पु० आशय, प्रयोजन, मतलब ।

अभिप्रेत—वि० अभीष्ट, इच्छित ।

अभिभव—पु० पराजय, हार ।

अभिभावक—वि० अभिभूत करनेवाला, वशमें करनेवाला, रक्षक ।

अभिभूत—वि० वशीकृत, पराजित । व्याकुल ।

अभिमंत्रित—वि० मंत्रसे पवित्र किया हुआ । आवाहन किया हुआ ।

अभिमत—वि० मनोवाञ्छित, अभीष्ट । पु० मत, राय । अभिलषित वस्तु ।

अभिमान—पु० घमंड, गर्व ।

अभिमुख—क्रिवि० सम्मुख, सामनेकी तरफ़ ।

अभियुक्त—वि० जिसपर अभियोग चलाया गया हो, प्रतिवादी । युक्त, सहित, लगा हुआ, उन्मुख, 'कहाँ आज वह चितवन चेतन श्याम-मोह-कज्जल-अभियुक्त' परिमल २७

अभियोक्ता—पु० अभियोग चलानेवाला, वादी ।

अभियोग—पु० अपराधकी योजना, मुकद्दमा, नालिश । आरम्भ । लगन ।

अभियोगी—वि० अभियोग लगानेवाला, फरियादी ।

अभिरत—वि० अनुरक्त, सहित ।

अभिरना—स०क्रि० भिड़ना किसीपर अवलम्बित होना । अक्रि० टकराना 'भीतिनसों अभिरैं महराइ गिरैं फिरि धाइ भिरैं मुख फाड़े ।' भाव० ३०

अभिराम—वि० आनन्दप्रद, सुहावना । पु० आनन्द ।

अभिरुचि—स्त्री० विशेष रुचि, प्रवृत्ति ।

अभिलषित—वि० अभीष्ट, वाञ्छित ।

अभिलाख, अभिलाखा—स्त्री० अभिलाषा 'सबके हृदय मदन अभिलाखा ।' रामा० ५१

अभिलाषना—सक्रि० अभिलाषा करना, चाहना ।

अभिलाष-पु० अभिलाषा—स्त्री० इच्छा, वाञ्छा, चाह ।

अभिलास, अभिलासा—स्त्री० अभिलाषा, इच्छा ।

अभिवदन—पु० वन्दना, स्तुति, प्रणाम ।

अभिवदनीय,-वन्द्य—वि० वन्दना या स्तुतिके योग्य ।

अभिवचन—पु० प्रतिज्ञा, वादा ।

अभिवादन—पु० स्तुति प्रणाम, नमन ।

अभिव्यंजक—वि० सूचित करनेवाला, बोधक ।

अभिव्यंजन—पु० ना- स्त्री० अभिव्यक्ति, प्रकटीकरण ।

अभिव्यक्ति—स्त्री० प्रकटीकरण, स्पष्टीकरण ।

अभिशप्त—वि० जिसको अभिशाप दिया गया हो ।

अभिशाप—पु० बददुआ । झूठा आरोप ।

अभिशापित—वि० अभिशप्त, जिसको अभिशाप दिया गया हो, पीड़ित ।

अभिषंग—पु० सम्पर्क, सम्बन्ध, आलिंगन, पराजय, आकस्मिक विपत्ति, प्रेतावेश, शाप, अपशब्द ।

अभिषिक्त—वि० जिसपर मंत्र पढ़कर जल छिड़का गया हो, जिसका अभिषेक हुआ हो ।

अभिषेक—पु० जलसे सींचना, स्नान । विधिपूर्वक अधिकार प्रदान ।

अभिसन्धि—स्त्री० साजिश षड्यन्त्र । धोखा ।

अभिसरण—पु० किसीकी तरफ जाना, प्रियसे मिलनेके लिए पूर्व निर्दिष्ट स्थानपर जाना ।

अभिसरन—पु० अभिसरण । अभिसरण, अवलम्ब, सहारा ।

अभिसरना, अभिसारना—अक्रि० जाना, प्रियसे भेंट करनेके लिए निश्चित स्थानपर जाना ।

अभिसार—पु० सहारा । संकेत-स्थानको जाना, मिलना, मिलाप 'स्वरलयका होता अभिसार' कामायनी ११

अभिसारिका—स्त्री० निर्दिष्ट स्थानपर प्रियसे मिलने के लिए जानेवाली नायिका ।

अभिसारी—वि० सहायक । जो निश्चित स्थानपर प्रियासे मिलने जाय ।

अभिसेख—पु० देखो 'अभिषेक' ।

अभिहारिणी—स्त्री० चुरा लेनेवाली, चोट्टिन, 'राधासी न और अभिहारिणी लखाई है ।' राना० ५८०

अभिहारी—वि० हरण करनेवाला ।

अभिहित—वि० कहा हुआ, कथित ।

अभी—क्रिवि० इसी समय ।

अभीत—वि० निडर ।

अभीप्सित—वि० अभीष्ट । पु० अभिप्राय इच्छा ।

अभीर—पु० अहीर । एक छन्द ।

अभीष्ट—वि० अभिलषित ।

अभुआना—दे० 'अबुहाना' ।

अभुक्त—वि० जिसका भोग न किया गया हो, अछूता, न खाया हुआ ।

अभुक्तमूल—पु० ज्येष्ठा नक्षत्रके अन्तकी तथा मूलके आदिकी दो घड़ियाँ ।

अभूखन—पु० आभूषण, अलंकार, गहना ।

अभूत—वि० जा न हुआ हो, अभूतपूर्व, अनोखा ।

अभूतपूर्व—वि० जो पहले न हुआ हो, विलक्षण, अद्भुत ।

अभेद—वि० अभेद्य, जिसका विभाग न हो सके । सदृश एकरूप । पु० अभिन्नता, एकता, सादृश्य ।

अभेदनीय, अभेद्य—वि० जिसका भेदन न हो सके, अच्छेद्य । अभिन्न 'मूर्त प्रेम मानव मानव हों जिसके लिये अभेद्य समान ।'

अभेय, अभेव—पु० अभेद, एकता । वि० अभिन्न, एक ।

अभेरा—पु० मुठभेड़, रगड़, धक्का (विन० ४३८) । 'उठै आगि दौउ डार अभेरा ।' प० २१४

अभोग—वि० जिसका भोग न किया गया हो ।

अभोगी—वि० अविषयी, विरक्त ( रामा० ५४ ) ।

अभोज—वि० अभक्षणीय, अखाद्य ।

अभ्यंतर—पु० मध्य, हृदय । क्रिवि० भीतर ।

अभ्यर्थन—पु०-अभ्यर्थना—स्त्री० स्वागत, प्रार्थना ।

अभ्यस्त—वि० जिसका अभ्यास किया गया हो । निपुण, कुशल ।

अभ्यागत—वि० आया हुआ। पु० अतिथि, मेहमान।
अभ्यास—पु० किसी कार्यको पुनः पुनः करना, आदत, [आवृत्ति।
अभ्युत्थान—पु० उठान, उदय, उन्नति।
अभ्युदय—पु० उन्नति, उदय, आरम्भ, उत्पत्ति।
अभ्र—पु० बादल, आकाश। सोना।
अभ्रक—पु० एक धातु, आकाश ( कविप्रि० ७६ )
अभ्रभेदी—वि० गगनचुम्बी।
अमंगल—पु० अशुभ।
अमचुर, अमचूर—पु० सुखाये हुए कच्चे आमकी बुकनी।
अमड़ा—पु० देखो 'आमड़ा'।
अमन—पु० शान्ति, रक्षा।
अमनैक—पु० सरदार, दावेदार, अधिकारी। वि० ढीठ [(नव० १३)
अमर—वि० मृत्युरहित। पु० देवता।
अमरख—पु० क्रोध, अमर्ष।
अमरण—त्रि० अमर 'अमरण मर वरण गान वन-वन उपवन उपवन जागी छबि, खुले प्राण' गीतिका ७
अमरता—स्त्री०, अमरत्व—पु० अमर होनेका भाव, चिरजीवन, देवत्व।
अमरतावाद—पु० अमरत्वका सिद्धान्त।
अमरपख—पु० पितृपक्ष।
अमरपति—पु० इन्द्र।
अमरबेल, अमरवल्ली, अमरबेलि—स्त्री० एक लता, [आकाशबौर।
अमरराज—पु० इन्द्र।
अमरलोक—पु० देवलोक, अमरावती।
अमरस—पु० सुखाया हुआ आमका रस, अमावट।
अमराई—स्त्री०, अमराउ—पु० आमका बागीचा। 'वनु अमराउ लागि चहुँ पासा।' प० १२
अमर्ष—पु० क्रोध, कुढ़न। असहिष्णुता, अधीरता।
अमल—पु० वक्त, समय। नशा (साखी ५०)। व्यसन या टेव 'हरि दरसन अमल पर्‍यो लाजन लजानी।' सूबे० १८६। प्रभाव। प्रभुत्व, शासन (छत्र० ९०)। 'अमरु चलायो आपनी मुरली गरजि गुमान।' नागरीदास वि० स्वच्छ, निष्कलंक, दोषरहित।
अमलतास—पु० एक प्रकारका वृक्ष, वनवहेड़ा, सुन्दर पीले फूलोंवाला एक पेड़।
अमलदारी—स्त्री० अधिकार।
अमला—पु० कर्मचारी, आँवला। स्त्री० लक्ष्मी।
अमली—वि० शासन करनेवाला। व्यावहारिक। नशेबाज़। स्त्री० इमली।
अमहर—स्त्री० कच्चे आमकी सुखायी हुई फाँक।
अमहल—वि० बिना घर द्वारका। व्यापक।
अमा—स्त्री० अमावस्याकी रात्रि, चन्द्रमाकी सोलहवीं [कला, घर।
अमातना—सक्रि० आमंत्रित करना।
अमात्य—पु० मंत्री, दीवान।
अमान—वि० जिसका मान ( परिमाण ) न हो, अपार, बहुत, बहुसंख्यक 'आसपास भूपतिनुके बैठे तनय अमान।' सुजा० ८; 'दुहुँ दिसि दीसत दीप-अमान।' के० १६१। 'कविगनको दारिद द्विरद याही दल्यो अमान॥ भू० १२५। जिसे मान (घमण्ड) न हो, सीधा। जिसका मान (आदर) न हो (रामा० ४६६)।
अमानत—स्त्री० धरोहर, धरती।
अमाना—अक्रि० समाना, पूरा पूरा अँटना। आनन्दपूर्ण होना, इतराना।
अमानिशा—स्त्री० अमावस्याकी रात, अँधेरी रात।
अमानी—वि० अभिमानरहित, साधुप्रकृतिका 'मोरे प्रौढ़तनय सम ज्ञानी। बालक सुत सम दास अमानी।' रामा० ३९०
अमानुष—वि० मनुष्यकी शक्तिके बाहर, अलौकिक। पैशाचिक।
अमानुषी—वि० पाशविक, बर्बर, असंस्कृत।
अमाप—वि० अपरिमित, अमित, अमान (रत्ना० ३७४)।
अमाय, अमाया—वि० निष्कपट 'मन-वच-क्रम मम भगति अमाया।' रामा० ५५८
अमारी—स्त्री० हाथीका मडप युक्त हौदा।
अमार्ज्य—वि० जो साफ न हो सके, जो दूर न हो सके।
अमाल—पु० अधिकार रखनेवाला, आमिल। शासक। 'लुट्यो खानदौरा जरावर सफजंग अरु लुट्यो मार तलब खा मनहुँ अमाल है।' भू० ४१ (भू० २९)
अमावट—स्त्री० आमका सुखाया हुआ रस, अमरस।
अमावना—अक्रि० अमाना भीतर आ सकना।
अमावस,-वस्या—स्त्री० अंधेरे पाखकी अन्तिम तिथि।
अमिख—पु० आमिष, मांस ( दीन० ९६, २१७ )।
अमिट—वि० जो मिट न सके, अटल, स्थायी।
अमित—वि० अत्यधिक, सीमारहित।
अमिताभ—पु० बुद्ध भगवान्। वि० अमित तेजवाला।
अमित्र—वि० जिसका कोई मित्र न हो। शत्रु।

अमिय—पु० अमृत, सुधा।
अमियमूरि—स्त्री० संजीवनी बूटी, अमृत बूटी 'अमिय-मूरिमय चूरन चारू।' रामा० ४
अमिल—वि० अप्राप्य। बेमेल, ऊँचा-नीचा, जिससे मेल-मुलाक़ात न हो 'हरषि न बोली लखि ललन, निरखि अमिल सँग साधु।' वि० ६६
अमिली—स्त्री० वैमनस्य, विद्रोह। इमली।
अमी—पु० अमिय, अमृत 'अमी हलाहल मद भरे स्वेत स्याम रतनार।' रसलीन
अमीत—पु० जो मित्र न हो, शत्रु 'पावक तुल्य अमी-तनको भयो'—भू० १३
अमीन—पु० जमीन नापनेका काम करनेवाला।
अमीर—पु० धनवान् व्यक्ति, सरदार। वि० धनवान्।
अमीराना—वि० अमीरों जैसा, अमीरोंके ढङ्गका।
अमीरी—वि० अमीराना, अमीरोंके योग्य। स्त्री० धना-
अमुक—वि० फलाँ। [ ढ्यता। औदार्य।
अमूर्त—वि० निराकार, निरवयव।
अमूल—वि० जड़हीन।
अमूलक—वि० असत्य, बेजड़का। अनमोल 'पाइ अमूलक देह यहै नर क्यू न विचार करै दिल अंदर।' सुन्द० १७
अमूल्य—वि० बहुमूल्य, अनमोल।
अमृत—पु० सुधा; दूध, जल, स्वादिष्ट पदार्थ। वि० अमर 'अमृत है यह पुलकोंका गान' पल्लव ८७
अमृतबान—पु० रोगन किया हुआ पात्र।
अमृतमूरि—स्त्री० संजीवनी बूटी।
अमृतोपम—वि० अमृतके समान।
अमेजना—अक्रि० मिलना, मिलावट होना (जग० ११)।
अमेठना, अमैठना—सक्रि० मरोड़ना, उमेठना (रवि० १६, १९, २२)।
अमेय—वि० जो मापा न जा सके, असीम, बेहद। अज्ञेय।
अमेली—वि० अण्डबण्ड। अनाप-शनाप।
अमेव—वि० अमेय, असीम। जो जाना न जाय।
अमोघ—वि० अचूक, व्यर्थ न जानेवाला, अव्यर्थ।
अमोचन—वि० जो छूटे नहीं।
अमोद—पु० आमोद, आनन्द (भू० १२९)।
अमोरी—स्त्री० छोटा आम, आमड़ा।
अमोल—वि० अमूल्य, ज्यादा क़ीमतका।
अमोलक—वि० क़ीमती, अमूल्य 'लछिमन राम मिलें अब मोकों दोउ अमोलक मोती।' सू० ४३,
अमोही—वि० निर्मोही। ( वि० १८१ )
अमौआ,—वा—पु० अमरस जैसा रंग या उस रंगका कपड़ा ( पूर्ण २, १५ )।
अम्मारी—दे० 'अमारी'।
अम्रीयमाण—वि० जीवित सा, सजीवसा।
अम्ल—वि० खट्टा। [ स्वच्छ।
अम्लान—वि० जो उदास न हो, प्रसन्न, खिला हुआ।
अम्हौरी—स्त्री० ग्रीष्म ऋतुकी छोटी छोटी फुंसियाँ।
अय—पु० लोहा। [ घमौरी।
*अयथा—वि० असत्य, झूठा। पु० अवैध या अनुचित कार्य।*
अयन—पु० घर, गति, मार्ग, समय, थनका वह भाग जो दूधसे भरा रहता है।
अयश—पु० अकीर्त्ति, निन्दा, बदनामी।
अयस—पु० लोहा।
अयस्कांत—पु० चुम्बक।
अयान—वि० अज्ञानी। पैदल। पु० स्वभाव, स्थिरता।
अयानता—स्त्री० अज्ञान 'नहिं अयानता छूटी।' नागरी०
अयानप, अयानपन—पु० अज्ञानता, भोलापन, सिधाई।
अयाल—पु० घोड़े या सिंहकी गर्दनके बड़े बड़े बाल।
अयास—वि० चंचल, फुर्तीला 'औ' युगवाणी बहती
अयि—अ० हे, अरे, अरी। [ अभास।' युगवाणी १५
अयुक्त—वि० अनुचित।
अयुत—पु० दस हज़ारकी संख्या।
अये—अ० सम्बोधन-सूचक एक शब्द।
अयोग—पु० योगका अभाव, अप्राप्ति, कुसमय। वि०
अयोग्य—वि० अक्षम, नालायक। [ अयोग्य, बुरा।
अरंग—पु० सुगन्ध।
अरंड—पु० एरंड वृक्ष।
अरंभना—सक्रि० आरम्भ करना। अक्रि० आरम्भ होना, 'अनरथ अवध अरंभेउ जबतें।' रामा० २७४। बोलना, आवाज़ करना।
अर—स्त्री० अड़, हठ, ज़िद। पहियेकी तीली 'नवरसभरी अराएँ अविरल चक्रवालको चकित चूमतीं।
अरइल—वि० अड़नेवाला। [ कामायनी २६४
अरई—स्त्री० बैल हाँकनेकी लकड़ी।
अरक—पु० रस, आसव, प्रस्वेद। अर्क, आक (पूर्ण ११६)
अरकना—अक्रि० टकराना 'कहै बनवारी बादसाहिके

तखत पास फरकि फरकि लोथ लोथनिसों अरकी ।'
—बनवारी । दरकना या फटना ।
अरकनाना—पु० सिरकेसे बनाया हुआ अरक़ ।
अरकना बरकना—अक्रि० इधर उधर करना ।
अरकला—पु० मर्यादा ।
अरकान—पु० प्रमुख राजकर्मचारी, सरदार, 'नेगी गये, मिले अरकाना । पुँवरिहि बाजे घहरि निसाना ।' प० २०९
अरगजा—पु० एक सुगन्धित पदार्थ 'खरको कहा अरगजा लेपन'—सू० १७ [ सुगन्धवाला ।
अरगजी—वि० अरगजी रंगका या अरगजेके समान
अरगट—वि० अलग, निराला 'अरगट ही फानूससी, परगट होति लखाय ।' बि० २४
अरगनी—स्त्री० कपड़े टाँगनेका बाँस या रस्सी ।
अरगल—पु० ब्योंड़ा, किवाड बन्द करनेकी लकड़ी, गज ।
अरगाना—अक्रि० अलग होना, चुप रहना (सूबे० ४०९) 'सूने सदन मथनियाँके ढिग बैठि रहे अरगाई ।' सूबे० ६२, 'झुकी रानि अब रहु अरगानी ।' रामा० २०५ । सक्रि० अलग करना ( सूबे० ६ ) । प्राण अरगाना = चकित होना 'देस देसके नृपति देखि यह प्राण रहे अरगाई ।' सूबे० ४४४
अरघ—पु० हाथ धोनेके लिए जल; पूजाका एक उपचार, वह जल जो सम्मान प्रकट करनेके लिए गिराया [ जाता है ।
अरघट्ट, अरघट्टक—पु० रहट ।
अरघा—पु० अर्घ देनेका पात्र । शिवलिङ्ग स्थापित करनेका पात्र, जलहरी ।
अरघान, अरघानि—स्त्री० वास, गन्ध 'तेहि अरघानि भौंर सब,लुबुधे तजहिं न बंध ।' प० ५२ ( ४४,८३ )
अरचना—सक्रि० अर्चा करना, पूजा करना ।
अरचल—स्त्री० अड़चन, रुकावट ।
अरचा—स्त्री० पूजा ( भू० ११६ ) ।
अरचि—स्त्री० 'अर्चि', ज्योति, प्रकाश ।
अरज—स्त्री० विनती, विनय । ( कपड़ेकी ) चौड़ाई ।
अरजना—सक्रि० अर्ज करना ( भू० १६९ ) ।
अरजी—स्त्री० दरख्वास्त, प्रार्थनापत्र । पु० प्रार्थी, [ निवेदक ।
अरझना—अक्रि० अरुझना ।
अरणि-णी—स्त्री० अनलोत्पादक यंत्र । एक पेड़ या लकड़ी ।
अरण्य—पु० जङ्गल, बन । कायफल । [ सूर्य ।
अरण्यरोदन—पु० वह बात जिसपर कोई ध्यान न दे ।
अरत—वि० विरक्त ।
अरथ—पु० अर्थ, धन । अभिप्राय, हेतु ।
अरथाना—सक्रि० आशय स्पष्ट करना, बताना ( साखी १०५ ), समझाना 'दशरथ बचन राम बन गवने यह कहियो अरथाई ।' सूरा० १६
अरथी—स्त्री० नसेनीके ढङ्गका ढाँचा जिसपर सुलाकर मुर्दा ले जाते हैं । वि० गरजी, धनी ।
अरदन—पु० कष्ट पहुँचाना । विनाश । माँगना ।
अ-रदन—वि० बिना दाँतका ।
अरदना—सक्रि० कुचलना, ध्वस्त करना । दे० 'अर्दना' ।
अरदली—पु० चपरासी, नौकर ।
अरदावा—पु० कुचला हुआ अन्न । भरता, चोखा 'कुहुँकुहुँ परा कपूर बसावा । नखतें बघारि कीन्ह अरदावा ।' प० २७२
अरदास—स्त्री० भेंट,प्रार्थनापत्र (अर्जदाश्त) 'सुना साह अरदासैं पढ़ीं ।' प० २६४ । बिनती 'यह अरदास दासकी सुनिये, तनकी तपनि बुझाई ।' कबीर० १९२
अरधंग—पु० आधा अङ्ग । शिवजी ।
अरधंगी, अरधांगी—पु० शिवजी ।
अरध—वि० आधा ।
अरना—अक्रि० अड़ना, रुकना 'नवरँग विमल जलदपन मानो है ससि आनि अरे ।' सू० ५४ । पु० जङ्गली भैंसा ( प्रिय० १०४ ) ।
अरनी—स्त्री० देखो 'अरणि' । जलन 'कहा कहौं कपि कहत न आवै, सुमिरत प्रीति होइ उर अरनी ।' सू० २६
अरपना—सक्रि० भेंट देना, अर्पण करना । आरोपित करना ( ब्रज० ४८ ) । [ वि० सौ करोड़ ।
अरब—पु० एक देश । घोड़ा । सौ करोड़की संख्या ।
अरबर, बरी—स्त्री० घबराहट, शीघ्रता 'जानि प्रियाकी आरति हरि अरबर सों धाए ।' रुक्मिणी मं० (नंददास)
अरबर—वि० ऊटपटाँग, विकट, कठिन ।
अरबराना—अक्रि० घबराना ।
अरबी—स्त्री० एक भाषाका नाम । पु० अरब देशका ।
अरब्बी—पु० एक बाजा ( हिम्मत० ६ ) । घोड़ा । वि० अरब देशीय ।
अरबीला—वि० ऊटपटाँग, निरर्थक, भोलाभाला ।
अरभक—पु० बच्चा 'गरभनके अरभक दलन, परशु मोर

अति घोर।' रामा० १९८

अरमान—पु० साध, लालसा।

अररान—अक्रि० 'अरर' शब्द करके गिरना, गिरते समय शब्द करना 'घरत घन पात भहरात छहरात अरात तरु महा धरनी गिरायो।' सू० ८१

अरवा—पु० ताखा, आला। बिना उबाले धानका चावल।

अरवाती—स्त्री० छप्परका किनारा जहाँसे वर्षाके समय पानी नीचे गिरता है, ओरौनी ('डरिया, ओरवाती' [बुन्देल०)।

अरविंद—पु० कमल।

अरवी—स्त्री० एक कन्द, अरुई, घुइँयाँ

अरस—पु० आलस्य। वि० रसहीन। फीका। असभ्य। पु० आकाश 'जाकी तेग अरसमें झूलै।' छत्र० १७। महल 'अकिल अरसमे ऊतरी विधिना दीन्ही बाँटि।' साखी १५९

अरस-परस, अरसन परसन—पु० आँख मिचौनी, छुआ छुई। स्पर्श (सू० १८२)। 'सूरदास प्रभुकी बरसगाँठि जोरति यह छबिपर तृन तोरति अरस परसनि।' सूव० ५५

अरसना—अक्रि० ढीला पड़ना, शिथिल या लस्त हो जाना (फलम २२३)।

अरसना परसना—सक्रि० छूना, भेंटना।

अरसा—पु० देर, समय।

अरसाना—अक्रि० आलस्य करना 'आरस गात भरे अरसात हैं लागि सो ल गि गरे गिरि जात हैं।' [दास २०५

अरसी—स्त्री० अलसी, तीसी।

अरसीला, अरसौहा—वि० आलस्यपूर्ण, (ललित०१९२)

अरहंत—दे० 'अर्हंत'।

अरहट—पु० कुएँसे पानी निकालनेका एक यन्त्र, अरघट्ट, [रहँट।

अरहन—पु० 'रेहन', बेसन (प० २७२)।

अरहना—स्त्री० अर्चना, पूजा।

अरहर—स्त्री० एक दाल। तुअर।

अरा—पु० लकड़ी चीरनेका औज़ार, 'आरा'। झगड़ा

अराअरी—स्त्री० अड़ाअड़ी, होड़। [(उत्र० १०७)।

अराक—पु० एक देश। अराक देशका घोड़ा।

अराज—वि० बिना राजाका, क्षत्रियविहीन। पु० राज्यका अभाव।

अराजकता—स्त्री० राजा या शासनका अभाव, हलचल, अशान्ति।

अरात, अराति—पु० वैरी, '⋯मृदुको कोउ न अरात।' काम, क्रोधादि मनोविकार छःकी संख्या।

अराधना—सक्रि० पूजा करना, ध्यान करना।

अराधी—पु० पूजा करनेवाला।

अराना—सक्रि० अड़ाना।

अराबा—पु० रथ; तोप लादनेकी गाड़ी 'चामिलबार अराबो रोप्यो।' छत्र० ४३, (सुजा० १०, ५९)।

अराम—पु० बाग 'बिनु घनस्याम अराममैं लागी दुसह दवार।' पद्माभ० ७

अरारूट, अरारोट—पु० एक पौधा। अरारूटका आटा।

अराल—वि० टेढ़ा 'जाल दन्त नख नैन तन प्रथु कुच केस अराल।' रवि० ७६

अरावली—पु० एक पर्वत।

अरिंद—पु० शत्रु 'दावि यों बैठ्यो नरिन्द अरिन्दहिं मानो मयन्द गयन्द पछार्‍यो।' भू० ३९

अरि—पु० शत्रु। काम क्रोधादि। छःकी संख्या।

अरियाना—सक्रि० 'अरे' कहना, अपमान करना।

अरिल्ल—पु० एक छन्द जिसमें सोलह मात्राएँ होती हैं।

अरिवन—पु० गगरा इ० फँसानेका रस्सीका फंदा, उबका।

अरिष्ट—पु० विपत्ति, दु:ख, अमंगल, हानि, दुष्ट ग्रहोंका संयोग। दवाओंको सड़ाकर बनाया गया अर्क।

अरिहन, अरिहा—पु० शत्रुघ्न।

अरी—अ० स्त्रियोंके लिए सम्बोधन।

अरुंतुद—वि० दु:खदायी, कर्कश वचनोंद्वारा चोट पहुँचानेवाला।

अरुंधती—स्त्री० वसिष्ठपत्नी। एक तारा। दक्षकी एक [लड़की।

अरु—अ० और।

अरुई—स्त्री० 'अरवी' नामक कन्द।

अरुचि—स्त्री० अनिच्छा, घृणा।

अरुचिकर—वि० जो अच्छा न लगे।

अरुज—वि० रोगहीन, नीरोग, स्वस्थ।

अरुझना—अक्रि० फँसना, रुकना, खसि मुद्रावलि चरन अरुझी, गिरि धरनि बलहीन।' सू० (व्रज० २७)। युद्धमें व्यस्त होना (राम० २२५)।

अरुझाना—सक्रि० फँसाना, रोकना (सूत्रे० १३८)। अक्रि० उलझना, मुग्ध होना (सू० १३४), 'श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई।' रामा० ६०६

अरुण, अरुन—पु० सूर्यका सारथी, सूर्य (गी० २९४)। संध्या समयकी लालिमा, लाल रंग, सिंदूर। वि० लाल।
अरुणचूड़-शिखा—पु० मुर्गा, कुक्कुट (रामा० १२५)।
अरुणा—स्त्री० ऊषा 'अरुणाने यह सीमतमभरी, संध्या ने दी पदमें लाली' सांध्यगीत ७८।
अरुणाई—स्त्री० ललाई, लालिमा।
अरुणिमा—स्त्री० लालिमा।
अरुणोदय—पु० "पौफटका" समय, उषाकाल।
अरुनई—स्त्री० देखो 'अरुणाई'।
अरुनचूड़-सिखा—पु० मुर्गा (रामा० १९४)।
अरुनाना—अक्रि० लाल होना। सक्रि० लाल करना।
अरुनारा—वि० लाल, 'उड़इ अबीर मनहु अरुनारी।'
अरुनोदय—पु० उषाकाल, भोर। [रामा० १०८
अरुरना—अक्रि० सिकुड़ना, बल खाना।
अरूझना—अक्रि० भिड़ना, झगड़ना, 'रण राजकुमार अरूझहिगे जू०।' राम० २२५, 'लै लै नाम सुनावहु तुमहीं मोसों कहा अरूझति।' सूत्रे० १३९
अरूप—वि० जिसका कोई रूप न हो, आकारहीन।
अरूरना—अक्रि० व्यथित होना।
अरूलना—अक्रि० छिल जाना, चुभना।
अरे—अ० सम्बोधनसूचक शब्द।
अरेरना—अक्रि० रगड़ना।
अरोक—वि० जो रोका न जा सके, प्रबल।
अरोगना—सक्रि० खाना।
अरोच—पु० अरुचि, अनिच्छा।
अरोर—वि० शान्त।
अरोहना—अक्रि० आरूढ़ होना, सवार होना।
अरोही—पु० सवार।
अर्क—पु० सूर्य। बारहकी संख्या। इन्द्र, विष्णु। पंडित। आक (मंदार), (अर्कफल रामा० ४८७)। देखो, 'अरक' स्फटिक (कविप्रि० ७९)
अर्कजा—स्त्री० रविपुत्री, यमुना, ताप्ती।
अर्गजा—पु० देखो 'अरगजा'।
अर्गल—पु० ब्योंड़ा, किवाड़। रंग-बिरंगे बादल। तरंग।
अर्गला—स्त्री० ब्योंड़ा, हाथी बाँधनेकी जंजीर। अवरोधक।
अर्गलित—वि० जिसमें अर्गला लगा दी गयी हो, बन्द।
अर्घ—पु० सोलह उपचारोंमेंसे एक। जलदान। मूल्य।
अर्घा—पु० अर्घ देनेका पात्र, जलहरी। [भेंट।
अर्चन—पु० अर्चना—स्त्री० पूजा, सम्मान, सत्कार।
अर्चनीय—वि० पूज्य, सम्मानार्थ।
अर्चमान—वि० पूजनीय।
अर्चा—स्त्री० पूजा। मूर्ति, प्रतिमा।
अर्चि—स्त्री० लौ 'शुष्क डालियोंसे वृक्षोंकी अग्नि अर्चियों हुईं समिद्ध' कामायनी ३२।
अर्चित—वि० पूजित।
अर्चिमान—वि० प्रकाशमान। पु० अग्नि। सूर्य।
अर्ज़—पु० प्रार्थना। कपड़ेकी चौड़ाई।
अर्जमा—पु० 'अर्यमा', सूर्य।
अर्जित—वि० प्राप्त, संगृहीत।
अर्ज़ी—स्त्री० प्रार्थनापत्र, प्रार्थना।
अर्जुन—पु० युधिष्ठिरके भाई। एक वृक्ष। मोर। सफेद रंगका कनैल। अपनी माताका एक मात्र पुत्र। कृतवीर्यके पुत्र इन्द्र। वि० शुभ्र, उज्ज्वल।
अर्णव—पु० समुद्र, चारकी संख्या। इन्द्र। सूर्य।
अर्थ—पु० मतलब, अभिप्राय। धन। हेतु। इन्द्रियोंके विषय।
अर्थकर—वि० जिससे धन कमानेमें सहायता मिले।
अर्थवाद—पु० सम्पत्तिवाद।
अर्थविज्ञ—पु० अर्थशास्त्रका जानकार।
अर्थशास्त्र—पु० सम्पत्ति शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें सम्पत्तिके ग्रहण, व्यय उसकी वृद्धि आदिकी विवेचना हो।
अर्थना—सक्रि० माँगना।
अर्थांतरन्यास—पु० एक काव्यालंकार—'दृढ़ कीजत सामान्य जहँ, कहि विशेष कछु बात। या विशेष सामान्य ते, जहँ दृढ़ कीन्हो जात।'
अर्थात्—अ० याने अन्य शब्दोंमें, आशय यह कि।
अर्थाना—सक्रि० देखो 'अरथाना' 'कबीर गुरुने गम कही भेद दिया अर्थाय।' साखी० १०
अर्थापत्ति—पु० 'काव्यार्थापत्ति'। एक तरहका प्रमाण।
अर्थी—वि० इच्छा या प्रयोजन रखनेवाला याचक। धनी। स्त्री० 'अरथी।'
अर्दना—सक्रि० कष्ट पहुँचाना।
अर्द्दित—वि० पीड़ित। [से एक।
अर्द्ध, अर्ध—वि० आधा, समूची वस्तुके दो सम भागोंमें
अर्द्धचंद्र—पु० आधा चन्द्रमा। मारपंखकी आँख। एक तरहका त्रिपुण्ड। नखक्षत। गरदनिया (—देना)।
अर्द्धजल—पु० शवको स्नान कराना (अ० ४३)।

अर्द्धनारीश्वर—पु० शिवजी जिन्होंने शरीरके आधे भागमें पार्वतीजीको स्थान दिया था।
अर्द्धांग—पु० आधा अंग। शिव। लकवा।
अर्द्धांगिनी—स्त्री० पत्नी, स्त्री।
अर्द्धाली—स्त्री० चौपाईके दो चरण।
अर्पण—पु० देने या सौंपनेकी क्रिया, दान, भेंट। रखना।
अर्पना—सक्रि० भेंट करना, अर्पण करना। (राम० ३६)।
अर्थद्रव्य—पु० धन दौलत।
अर्बुद—पु० दस करोड़। एक असुर या पहाड़का नाम।
अर्भ—पु० बालक, शिष्य। शिशिर। साग-पात।
अर्भक—पु० बालक। वि० छोटा, नासमझ।
अर्य्यमा—पु० सूर्य। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र। पितरोंका मुखिया। अतरंग-मित्र।
अर्रबर्र—पु० व्यर्थकी बात, बकवाद।
अर्वाचीन—वि० वर्तमान समयका। आधुनिक, नया।
अर्हंत—पु० बुद्धदेव, जिन देव, पूज्य या समर्थ व्यक्ति 'नमो नमो अर्हतको'—मुद्रा० ७५
अर्हणा—स्त्री० पूजा।
अर्ह्य—वि० पूजनीय।
अलंकार—पु० आभूषण। शब्दों और अर्थोंका ऐसा प्रयोग जिससे वर्णनमें कुछ चमत्कार आ जाय।
अलंकित,-कृत—वि० विभूषित, सजाया हुआ।
अलंग—पु० तरफ, दिशा '… लेन आयो कान्ह कोऊ मथुरा अलंगतें।' दास ९९। स्त्री० बाजू सेनाका पक्ष ( प० २५८ )।
अलंघनीय, अलंघ्य—वि० जो लाँघने योग्य न हो, जो पार न किया जा सके, जो टाला न जा सके।
अलंब—पु० आलम्ब, आधार।
अलंबुषा—स्त्री० छुई-मुईका पौदा 'नव अलंबुषाकी व्रीड़ा सी खुल जाती है, फिर जा मुँदती' कामायनी २६२
अल—पु० बिच्छूका डंक। विष।
अलक—स्त्री० लटकते हुए बाल। केश, लट। पु० महावर 'प्रथमहिं अलक तिलक लेब साजि।' विद्या० ८९
अलकतरा—पु० एक काला द्रव पदार्थ ( 'डामर'—मध्य प्रान्त )।
अलक लड़ैता, अलक सलोरा—वि० लाडला 'अब मेरे अलक लड़ैते लालन ह्वै हैं करत सँकोच।' भ्र० ६२
अलका—स्त्री० कुबेर नगरी। आठ-दस वर्षकी बालिका।
अलकापति—पु० कुबेर।
अलक्त, अलक्तक—पु० लाख या चपरा, महावर।
अलक्षण—पु० लक्षणका अभाव। कुलक्षण, अशुभ चिह्न।
अलक्षित—वि० अप्रकट, गुप्त, अदृश्य, अचिह्नित।
अलक्षता—स्त्री० उद्देश्यहीनता।
अलख—वि० अदृष्ट, अगोचर, गुप्त ( जग० ६ )। अलख जगाना=पुकारकर ईश्वरका स्मरण करना या कराना।
अलखधारी,-नामी—पु० 'अलख अलख' पुकारनेवाला [साधु।
अलखित—वि० अदृश्य,अज्ञात,गुप्त।
अलग—वि० जुदा। भिन्न, बेलाग। दूर। न्यारा,विचित्र विशिष्ट 'थी एक लकीर हृदयमें जो अलग रही [लाखोंमें' आँसू १६
अलगनी—दे० 'अरगनी'।
अलगरजी—वि० लापरवाह। स्त्री० लापरवाही (रतन०६)
अलगाना—सक्रि० पृथक् करना, हटाना। अक्रि० अलग [होना।
अलगौझा—पु० बँटवारा (गबन ३४७)।
अलच्छ—वि० अलक्ष्य।
अलज,अलज्ज—वि० लज्जारहित।
अलप—वि० अल्प, थोड़ा, छोटा, ओछा, 'तू अति चपल अलपको सगी।' भ्र० १०३
अलपाका—पु० ऊँट जैसा एक प्राणी। एक कपड़ा।
अलबत्ता—अ० लेकिन, निस्सन्देह, बहुत ठीक।
अलबम—पु० चित्र रखनेकी पुस्तक, चित्राधार।
अलबेला—वि० बाँका, अनूठा। बेपरवाह। सुन्दर।
अलभ, अलभ्य—वि० अप्राप्य, दुर्लभ, बहुमूल्य।
अलम्—अ० काफ़ी, पर्याप्त, यथेष्ट।
अलमस्त—वि० मतवाला, बेफिक्र।
अलर्क—पु० मदार या आक। पागल कुत्ता।
अललटप्पू—पु० 'अटकलपच्चू', अडबंड।
अललाना—अक्रि० गला फाड़ फाड़कर बोलना, बकना।
अलवाँती—वि० स्त्री० जच्चा, प्रसूता।
अलवान—पु० एक तरहकी ऊनी चादर।
अलस—पु० आलस्य। 'सजनि ! अलसके कायाकी शिशु खेल रहे कैसा अभिनय' पल्लव ५४
अलसान, अलसानि—स्त्री० आलस्य।
अलसता अलसाना—अक्रि० सुस्ती करना, थकावट मालूम होना। आलस्य या निद्रायुक्त होना 'सयन करब अब उचित लाल इत मम आँखी अलसानी।'
अलसित—वि० आलस्ययुक्त। [रघु० ६०

अलसी—दे० 'आलसी' (कविता २०३)। स्त्री० तीसी।
अलसेट—स्त्री० अड़चन। ढिलाई, टालमटूल।
अलसेटिया—वि० टालमटूल करनेवाला। बाधक।
अलसौंहाँ—वि० आलस्यपूर्ण, शिथिल।
अलहदा—वि० अलग, पृथक्।
अलाई—वि० आलसी, सुस्त।
अलात—पु० आग, अंगार (छत्र० ३०, सुजा० ९५)। दोनों ओर जलनेवाली लकड़ी (बनेठी) (कविप्रि०८३)
अलान—पु० हाथी बाँधनेका खूँटा। बंधन, बेड़ी 'नव गयन्द रघुवीर मन, राज अलान समान।' रामा० २२३
अलाप—पु० आलाप, बातचीत। तान।
अलापना—अक्रि० बातचीत करना, तान लगाना।
अलापी—वि० बातचीत करनेवाला। तान लगानेवाला।
अलाम—वि० बात गढ़नेवाला।
अलार—पु० अलाव, आगका पुञ्ज। किवाड़।
अलाल—वि० आलसी, उद्यमहीन, निकम्मा।
अलाव—पु० आगका ढेर, भट्ठी।
अलावा—क्रिवि० सिवाय, अतिरिक्त।
अलाहदा—वि० देखो 'अलहदा'।
अलिंद—पु० भ्रमर, मधुप। घरके दरवाजेसे सटा चबूतरा
अलि—पु०भौंरा कोयल,कौआ। वृश्चिक। स्त्री०सखी 'गाथा माधव झूलिबो अलिको अलि प्रति बैन।' दीन० ४। पंक्ति।
अलिक—पु० ललाट 'लटके अलिक अलक चीकनी।' (के० २२६)
अलिन्द—पु० द्वारके सामनेका चबूतरा या छज्जा।
अलिनि, अलिनी—स्त्री० भ्रमरी।
अलित—वि० विमुख।
अली—स्त्री० सखी। पंक्ति। पु० भौंरा।
अलीक—स्त्री० अमर्यादा 'कैसो नरलोक, परलोक वर लोकनिमें, लीन्हों मैं अलीक, लोक-लीकनितें न्यारी हौं।' भवा० (व्रज० ३०१)। वि० मिथ्या 'वचन तुम्हार न होइ अलीका।' रामा० ११९। अप्रतिष्ठित।
अलीजा—वि० बहुत, प्रचुर।
अलीन—वि० अनुचित। पु० बाजू।
अलीपित—वि० अलिप्त 'रहत अलीपित तोय त जैसे पंकज पात।' दीन० ८५
अलील—वि० बीमार, सुस्त। [रामा० २२२
अलीह—वि० अलीक,झूठ 'एकु कहहि यह बात अलीहा।'
अलुझना—अक्रि० अरुझना। फँसना। भिड़ना।
अलुटना—अक्रि० लोटना, लड़खड़ाना।
अलूप—वि० लुप्त।
अलूला—पु० लपट, बुलबुला, उद्गार।
अलेख—वि० जिसका लेखा न लगाया जा सके, बेहिसाब, अज्ञेय।
अलेखा—वि० बेहिसाब, अगणित, 'उपजावत ब्रह्माण्ड अलेखे।' छत्र० ५। निष्फल।
अलेखी—वि० अंधाधुंधी मचानेवाला, अन्यायी (विन० ३५९)।
अलोक—वि० निर्जन। पुण्य-रहित। पु० परलोक। कलङ्क, अपयश 'लोक लोकनमें अलोक न लीजिये रघुराय।' के० २८६
अलोकना—सक्रि० अवलोकन करना, देखना।
अलोना—वि० जिसमें नमक न डाला गया हो, फीका।
अलोप—वि० लुप्त, अदृश्य 'भा अलोप पुनि दिस्टि न आवा।' प०१८०
अलोल—वि० अचञ्चल, स्थिर।
अलोलिक—पु० स्थिरता।
अलौकिक—वि० विलक्षण, अपूर्व, लोकोत्तर, असामान्य।
अल्प—वि० थोड़ा। छोटा। एक अर्थालङ्कार 'जहँ अल्पहु आधेयते अति सूच्छम आधार।'
अल्पजीवी—वि० कम जीनेवाला, अल्पायु।
अल्पज्ञ—वि० जिसे कम बातोंका ज्ञान हो, नादान, नासमझ।
अल्पता—स्त्री०, अल्पत्व-पु० छोटाई, न्यूनता, कमी।
अल्पधी—वि० कम बुद्धिवाला, नासमझ, अज्ञान।
अल्पप्राण—पु० कवर्गादिके प्रथम, तृतीय तथा पंचमाक्षर और अन्तस्थ वर्ण।
अल्पवयस्क—वि० छोटी उम्रवाला।
अल्पायु—वि० अल्पजीवी, छोटी आयुवाला।
अल्ल—पु० उपगोत्र, कुलनाम।
अल्लाना—अक्रि० ज़ोरसे चिल्लाना। गला फाड़कर बोलना।
अल्लहजा—पु० इधर उधरकी बात, गप्प।
अल्हड़—वि० उजड्ड, असावधान, भोला।
अल्हर—देखो 'अल्हड़' (ग्राम० ५७)।
अव—अ० और। निश्चय, कमी, आदि सूचक एक उपसर्ग।
अवकलन—पु० देखने या जाननेकी क्रिया, बटोरकर मिला देना, पाना।
अवकलना—अक्रि० समक्षमें आना, सूझना 'मोहि अव-

कम्न उपाठ न पूरू ।' रामा० २७०

अवकाश—पु० शून्यस्थान,अवसर । फुर्सत । दूरी । जगह 'कोट अवकास कि नभ बिनु पाये ।' रामा० ५८५

अवकीर्ण—वि० छितराया हुआ,मोटा पिसा हुआ, ध्वस्त।

अवकलन—पु० अन्वेषण, देखना ।

अवगणित—वि० अनादृत,तिरस्कृत,पराजित,गिना हुआ।

अवगत—वि० जाना हुआ, विदित, गिरा हुआ, पतित ।

अवगतना—सक्रि० सोचना, विचारना ।

अवगति—स्त्री० ज्ञान, बुद्धि, समझ ।

अवगाढ़—वि० गाढ़ा, घना 'प्रविष्ट ।

अवगारना—सक्रि० समझाना ।

अवगाह—वि० अथाह 'तिमि रघुपति महिमा अवगाहा। तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा ।' रामा० ५८६ कठिन 'तोरेहु धनुष ब्याह अवगाहा । बिनु तोरे को कुँअरि बियाहा ।' रामा० १३४ । पु० प्रवेश, जल-प्रवेश । गहरी जगह, कष्ट ।

अवगाहन—पु० जल प्रवेशकी क्रिया ।

अवगाहना—अक्रि० स्नान करना । जलमें घुसना,सक्रि० हिलाना, हलचल मचाना, 'दिसि विदिसन अवगाहिकै सुख ही केशवदास । बालमीकिके आश्रमहिं गयो तुरग प्रकास ।' के० ३२६ । मथना, छानबीन करना । देखना ( सूसु० ६७ ) । विचारना ( सूसु० ४७ ) ।

अवगाहित—वि० स्नात, नहाया हुआ।

अवगुंठन—पु० छिपानेकी क्रिया । घूँघट । गोंठना ।

अवगुंठित—वि० जिसपर घूँघट पड़ा हो, छिपा हुआ ।

अवगुंफित—वि० गुहा हुआ ग्रथित ।

अवगुण,-गुन—पु० दोष, ऐब, बुराई, अपराध ।

अवग्रह—पु० बाधा, रुकावट, बाँध । अवर्षण ।

अवघट—वि० विकट,दुर्गम 'अवघट घाट बाट गिरि कन्दर। मायाबल कीन्हेसि सरपञ्जर ।' रामा० ४६२

अवचट—क्रिवि० अचानक ( रामा० १३५ )।

अवचनीय—वि० अवर्णनीय ।

अवचय—पु० तोड़कर या चुनकर एकत्र करना ।

अवच्छिन्न—वि० पृथक् किया हुआ, जिसकी विशेषता बताई गयी हो ।

अवच्छेदक—क्रि०वि० अन्तर्गत । [ सीमा । विभाग ।

अवच्छेद—पु० पृथक् करनेकी क्रिया, अवधारण,निश्चय ।

अवडंग—पु० उछंग, गोद 'सो लीन्हों अवडंग यसोदा, अपने भरि भुजदण्ड ।' सू० ७३ ।

अवज्ञा—स्त्री० निरादर,अवहेलना,हार । एक अर्थालंकार । 'जहँ इकके गुन दोसते दूजो रहत अछूत ।'

अवटना—सक्रि० 'औंटना', आगपर रखकर गाढ़ा करना 'धौरी धेनु दुहाइ छानि पय मधुर आँचमें अवटि सिरायो ।' सूबे० १६२, ( रामा० ६०६ ) मथना । अवटि मरना=मारे मारे फिरना 'जो आचरण विचारहु मेरो कल्प कोटि लगि अवटि मरौं ।' विन० ५३५ ( ना० प्र० स० )

अवडेरा—वि० जिसमें झंझट हो, चक्करदार, भद्दा ।

अवडेरना—सक्रि० बसने न देना, त्याग करना, झंझटमें डालना, दुःख देना 'पच कहे सिव सती विवाही । पुनि अवडेरि मरायेन्हि ताही ।' ( रामा० ४८ ) । 'पोपि तोपि थापि आपने न अवडेरिये ।' कवि० २६१

अवतंस—पु० भूषण, श्रेष्ठ । कर्णफूल । दूल्हा ।

अवतरण,-तरन—पु० उतार,अवतार,अनुकृति । सीढ़ी ।

अवतरणी—स्त्री०उपोद्घात, भूमिका । रीति, विधि ।

अवतरना—अक्रि० अवतार लेना, प्रकट होना 'धर्म हेतु अवतरेउ गुसाँई ।' रामा० ३९९ ।

अवतार—पु० शरीर धारण, जन्म ग्रहण ।

अवतारण—पु० उतारनेकी क्रिया, उद्धरण ।

अवतारना—सक्रि० उत्पन्न करना, जन्म देना 'धन्य कोप जिन तुमको राख्यो धन्य घरी जेहि तू अवतारो ।' सूबे ८२ ।

अवतारी—वि० उतरनेवाला, जिसने अवतार लिया हो ।

अवदात—वि० निर्मल, शुद्ध, शुभ्र । [ अलौकिक ।

अवदान्य—वि० जो वदान्य न हो, कृपण । पराक्रमी ।

अवदारण—पु० तोड़ने या विदीर्ण करनेकी क्रिया । खोदनेका औज़ार ।

अवद्य—वि० निन्द्य, त्याज्य, पापी ।

अवध—वि० न मारने योग्य । स्त्री० अवधि, सीमा ।

अवधान—पु० मनका लगाव, सावधानी ।

अवधारना—सक्रि० धारण करना । मानना 'उपजै जहँ जिय दुष्टता सु असूया अवधारु ।' भाव० १९ ।

अवधारित—वि० निर्णीत, निश्चित । [ अ० तक ।

अवधि—स्त्री० सीमा, निर्दिष्टकाल, अन्तिम समय ।

अवधी—स्त्री० देखो 'अवधि', अवधकी बोली । वि० अवध सम्बन्धी ।

अवधू ,-धूत—पु० सन्यासी, यती योगी (बीजक १४१)
अवन—पु० रक्षण, प्रसन्न करनेका कार्य। स्त्री० अवनि, [भूमि। मार्ग।
अवनत—वि० झुका हुआ।
अवनति—स्त्री० हानि, झुका, अधःपतन।
अवनम्र—वि० विशेष झुकाव हुआ।
अवना—अक्रि० आना।
अवनि, अवनी—स्त्री० पृथ्वी, भूमि।
अवपात—पु० पतन,उतरना, हाथियोंको फँसानेका गड्ढा।
अवबोध—पु० ज्ञान, जागृति।
अवबोधक—पु० रातमें पहरा देनेवाला। सूर्य। चारण।
अवबोधन—पु० जगाने या जतानेकी क्रिया, चेतावनी, ज्ञापन।
अवभृथ—पु० प्रधान यज्ञके पश्चात् शुद्धिके लिए स्नान 'पावक सरोवरमें अवभृथ स्नान या' लहर ६९।
अवम—पु० मलमास। वि० अधम, क्षुद्र।
अवमतिथि—स्त्री० वह तिथि जिसकी हानि हो गयी हो।
अवमर्दन—पु० दुःख देनेकी क्रिया, दलन।
अवमान—पु० अपमान, तिरस्कार ( रामा० २१९ )।
अवयव—पु० अंग, भाग।
अवयवी—वि० अंगी, समग्र, समूचा। पु० बहुतसे अवयवोंवाली वस्तु, शरीर, देश।
अवर—वि० और दूसरा। नीच। निर्बल।
अवरत—वि० विरत, अलग। पु० पानीका भँवर।
अवराधना—सक्रि० पूजा करना, सेवा करना 'ऊधो मन न भये दस बीस। एक हुतो सो गयो श्याम संग को अवराधै ईस।' सूबे० ३७०।
अवरुद्ध—वि० रुका हुआ, गुप्त।
अवरेखना—सक्रि० लिखना, चित्रित करना 'चंपक पुहुप वरन तन सुंदर मनो-चित्र अवरेखौ। सूरा० १५, ( रामा० १४३ )। देखना 'अपनी दिसि प्राननाथ, प्यारे, अवरेखौ' हरि० ( व्रज० ५४१ )। अनुमान करना, विचारना, जानना।
अवरेब—पु० तिरछी चाल। झगडा। उलझन, ( उदे० अनट ) कठिनाई। 'कुलगुरु सचिव निपुन नेवनि अवरेब न समुझि सुधारी।' गीता ३२६।
अवरोध—पु० अड़चन, रुकावट। घेरा। अनुरोध। अन्तःपुर, रनिवास।
अवरोधक—पु० अवरोध करनेवाला, रोकनेवाला।
अवरोधना—सक्रि० मना करना, रोकना।
अवरोपण—पु० उन्मूलन, उत्पाटन।
अवरोह—पु० उतार, अवनति, पतन।
अवरोहण—पु० उतरना, उतार, पतन।
अवरोहना—अक्रि० उतरना। आरोहण करना, चढ़ना 'तुलसी गलिन भीर दर्शन लगि लोग अटनि अवरोहैं।' गीता० ३०५ (पाठां)। सक्रि० रोकना, चित्रित करना।
अवर्ण्य—वि० अवर्णनीय। पु० अप्रस्तुत, उपमान।
अवर्त्त—पु० भँवर, चक्कर। नाँद।
अवर्षण—पु० वर्षाका अभाव, अनावृष्टि, सूखा।
अवलंघना—सक्रि० लाँघना ( सू० ३५ )।
अवलंब, अवलंबन—पु० सहारा आधार। धारण।
अवलंबी—वि० अवलम्बन या सहारा लेनेवाला। दूसरेके आधारपर रहनेवाला।
अवलंबना—सक्रि० आश्रय लेना 'परम अनाथ देखियत तुम बिनु केहि अवलम्बिये प्रात।' सूबे० ३१२
अवलंबित—वि० आश्रित, किसीके आधारपर रखा हुआ।
अवलिप्त—वि० पोता हुआ। सना हुआ, लीन। घमण्डी।
अवली—स्त्री० पंक्ति, समूह 'कबरी भारनि रचैं आनि अवली गुंजनकी।' दीन० २६८
अवलीक—वि० दोषरहित, शुद्ध, निष्कलंक।
अवलेखना—सक्रि० खुरचना, लकीर खींचना।
अवलेप—पु० उबटन। घमण्ड। [लेप। गर्व।
अवलेपन—पु० पोतने या लगानेकी क्रिया। उबटन,
अवलेह—पु० वह ओषधि जो चाटी जाय, चटनी।
अवलेहन—पु० चाटनेकी क्रिया, चटनी।
अवलोकन—पु० देखनेका काम. निरीक्षण, जाँच।
अवलोकना—सक्रि० देखना (कें० २८)। जाँच करना।
अवलोकनि—स्त्री० चितवन, दृष्टि।
अवलोकनीय—वि० देखने लायक, दर्शनीय।
अवलोचना—सक्रि० दूर करना, हटाना (जग० ४८)।
अवश—वि० वशके बाहर, स्वतन्त्र
अवशता—स्त्री० लाचारी।
अवशिष्ट—वि० बचा हुआ, बाक़ी, शेष।
अवशेष—वि० बचा हुआ। समाप्त। पु० शेष वस्तु।
अवश्यंभावी—वि० अवश्य होनेवाला, अटल। [समाप्ति
अवश्य—क्रिवि० ज़रूर, निश्चय ही।
अवश्यमेव—क्रिवि० अवश्य ही, निस्सन्देह।

अवस—क्रिवि० अवश्य। वि० लाचार।
अवसन—वि० वस्त्रहीन।
अवसन्न—वि० उदास, सुस्त, नाशोन्मुख।
अवसर—पु० समय, मौका।
अवसाद—पु० विषाद, नाश, शिथिलता, थकान।
अवसान—पु० अन्त, सीमा। विराम। सायकाल।
अवसि—क्रिवि० अवश्य।
अवसित—वि० सीमित, जिसका अन्त हो गया हो।
अवसेख—वि० अवशेष, बचा हुआ 'यहि विधि अनुदिनु जुरति जतन करि गनत गए अंगुरिन अवसेखा।' सूवे० ३१७
अवसेर—स्त्री० उलझन, देर 'गईं रही दधि बेचन मथुरा तहाँ आजु अवसेर लगाई।' सूवे० १९९। क्लेश 'गाइनके अवसेर मिटावहु, लेहु आपने ग्वाल।' सू० २६०। चिन्ता, व्याकुलता 'भये बहुत दिन अति अवसेरी। सगुन प्रतीत भेंट प्रिय केरी।' रामा० २०२ (सूवे० १९१)। पु० प्रतीक्षा 'खेत बनाय किसान यों करत मेह अवसेर।' पूर्ण १११
अवसेरना—सक्रि० कष्ट देना। परेशान करना।
अवसेष—देखो 'अवशेष'। वि० बहुत 'जेहि नभमर पजर किए रहिमन बल अवसेष।' रहि० वि० २६
अवसेषित—वि० अवशिष्ट (रामा० ९५)।
अवस्था—स्त्री० दशा, उम्र, गति, काल।
अवस्थान—पु० स्थान, वास, स्थिति।
अवस्थिति—स्त्री० स्थिति, विद्यमानता।
अवहित्था—स्त्री० एक सञ्चारी भाव, दुःखादि छिपाना।
अवहेलना—स्त्री० तिरस्कार। सक्रि० तिरस्कार करना।
अवहेला—स्त्री० तिरस्कार।
अवांतर—पु० बीच, भीतर। वि० बीचका, अन्तर्गत।
अवाँ,-अवा—पु० भट्ठी। आँवाँ 'तपइ अवाँ इव उर अधिकाई।' रामा० ३८
अवाई—स्त्री० आना। गहरी जोताई।
अवाक्—वि० चुप, स्तब्ध, जड़ीभूत।
अवागी—वि० जो न बोले, चुप।
अवाच्य—वि० न कहने योग्य, निन्दित। पु० न कहने
अवाज—पु० आवाज, ध्वनि। [ योग्य बात, अपशब्द।
अवाय—वि० अनिवार्य। उद्धत। ( सूवि ४१ )
अवारजा, अवारिजा—पु० जमाखर्च, बही, संक्षिप्त लेखा।
'करि अवारजा प्रेम प्रीतिको असल तहाँ खतियावे।'
अवारना—सक्रि० निवारण करना, मना करना। स्त्री० किनारा, मुख, छिद्र।
अवास—पु० वासस्थान, भवन (प० ७३)। [ सू० ११
अविकच—वि० अविकसित।
अविकथ—वि० अकथनीय। [ शान्त।
अविकल—वि० ज्योंका त्यों, पूर्ण। जो व्याकुल न हो,
अविकार,अविकारी—वि०जिसमें विकार न हो,निर्विकार।
अविकृत—वि० जो विकृत न हो, जो बिगड़ा न हो।
अविगत—वि० जो जाना न जाय। अनिर्वचनीय। जिसका नाश न हो।
अविचर—वि० स्थिर, अटल 'देति असीस सकल ब्रज युवती युग युग अविचर जोरी।' सूवे २४६,
अविचल—वि० सुस्थिर, अटल, दृढ़।
अविचार—पु० अज्ञान, भोलापन।
अविचारी—वि० विचारहीन, नासमझ। अन्यायी।
अविच्छिन्न—वि० अटूट, बराबर।
अविछीन—वि० लगातार, अटूट, 'अउरउ ग्यान भगति कर भेद सुनहु सुप्रवीन। जो सुनि होइ रामपद प्रीति सदा अविछीन। रामा० ६०६
अविजित—वि० अजेय।
अविज्ञता—स्त्री० अज्ञान, अनभिज्ञता।
अविदित—वि० न जाना हुआ, अज्ञात, अप्रकट।
अविद्य—वि० अविद्यमान, नष्ट। [ स्तुत। मिथ्या।
अविद्यमान—वि० जो मौजूद न हो, अनुपस्थित, अप्र
अविद्या—स्त्री० अज्ञान, मोह। माया।
अविधान—वि० विधानसे हीन, विधानसे परे।
अविनय—स्त्री० ढिठाई, धृष्टता 'स्वामिन अविनय छमब हमारी।' रामा० २५४
अविनश्वर—वि० नष्ट न होनेवाला, स्थायी।
अविनश्वर अविनाशी, अविनासी—वि० जिसका नाश न हो, नित्य। पु० ईश्वर।
अविनीत—वि० उद्धत, धृष्ट, उच्छृङ्खल।
अविभक्त—वि० जो बाँटा न गया हो, अखंड, एक मिला हुआ।
अविरत—वि० विराम शून्य। लगा हुआ। क्रिवि० निरन्तर, हमेशा।
अविरथा—क्रिवि० वृथा, नाहक।

अविरल—वि० मिला हुआ। घना, गाढ़ा 'अविरल भगति माँगि वर, गीध गयेउ हरिधाम।' रामा० ३८३
अविराम—वि० लगातार, बराबर। अविश्रान्त।
अविरोध—पु० अनुकूलता, समानता। मेल।
अविलोकना—सक्रि० देखो 'अवलोकना'।
अविवाद—वि० विवादहीन।
अविवाहित—वि० जो विवाहित न हो, कुँआरा।
अविवेक—पु० अविचार। नासमझी (रामा० ४८)। अन्याय। [नासमझ, मूर्ख।
अविवेकी—वि० जिसमें विवेक न हो, अविचारी,
अविश्रांत—वि० जो थके नहीं, विरामरहित, लगातार।
अविश्वस्त—वि० जिसपर विश्वास न किया जा सके, अविश्वसनीय।
अविश्वसनीय—वि० जो विश्वासके योग्य न हो, जिसपर विश्वास न किया जा सके।
अविश्वास—पु० विश्वासका अभाव, अप्रतीति।
अविश्वासी—वि० जो किसीपर विश्वास न करे, जो विश्वासके योग्य न हो।
अविषय—पु० जो मन या इन्द्रियोंसे परे हो, अवर्णनीय।
अविहड़—वि० अनश्वर। बीहड़, ऊँचा-नीचा।
अविहित—वि० विधिविरुद्ध, अनुचित (रामा० ७०)।
अवेक्षण—पु० देखना, निरीक्षण, अवलोकन।
अवेज—पु० बदला।
अवेश—पु० आवेश, जोश। चैतन्यता। भूत लगना।
अवैतनिक—वि० जो वेतन न ले, बिना वेतनके काम करनेवाला।
अवैदिक—वि० जो वेदानुकूल न हो, वेदविरुद्ध।
अव्यक्त—वि० जो स्पष्ट न हो। अज्ञात। पु० विष्णु, ब्रह्म, ईश्वर, शिव, कामदेव। प्रकृति।
अव्यय—वि० अनश्वर, अविकारी। पु० ईश्वर। लिंग वचनादिके कारण न बदलनेवाला शब्द।
अव्ययीभाव—पु० वह समास जिसमें पूर्वपद अव्यय हो और समूचा शब्द क्रियाविशेषण हो।
अव्यर्थ—वि० व्यर्थ न होनेवाला, अचूक, अमोघ।
अव्यवस्था—स्त्री० गड़बड़ी, नियमाभाव। अवधि।
अव्यवस्थित—वि० बेतरतीब, गड़बड़, अस्थिर।
अव्यवहार्य—वि० व्यवहारमें लाये जाने योग्य नहीं, कठिन, पतित।
अव्यवहित—वि० अबाधित, सीधा (सम्बन्ध इ०) (गुलाब २५)
अव्याहत—वि० बेरोक (रामा० ६००)
अव्याप्ति—स्त्री० समूचे लक्ष्यपर लक्षणका न बैठना।
अव्युत्पन्न—वि० अचतुर, अनभिज्ञ।
अव्वल—वि० प्रथम, उत्तम, मुख्य।
अर्श—पु० बवासीर नामक व्याधि।
अशंक, अशंकित—वि० शंकारहित, निर्भय, निडर।
अशंभु—पु० अमंगल, अहित।
अशकुन—पु० बुरा शकुन। अशुभ लक्षण।
अशक्त—वि० कमज़ोर, दुर्बल, असमर्थ।
अशक्य—वि० न होने योग्य, शक्तिसे परे, असाध्य।
अशन—पु० भोजन, खानेका कार्य। चित्रक, भिलाँवा।
अशनि—पु० वज्र।
अशब्द—वि० मूक, मौन।
अशरफी—स्त्री० एक सुवर्ण-मुद्रा मोहर।
अशरण—वि० आश्रयहीन, अनाथ।
अशरीर—वि० शरीरहीन, निराकार।
अशांत—वि० शान्तिरहित, अस्थिर, उद्विग्न।
अशांति—स्त्री० क्षोभ, खलबली, असन्तोष।
अशिक्षित—वि० बे पढ़ा लिखा।
अशिव—वि० अमंगलकारी अशुभ। पु० अशुभ।
अशिष्ट—वि० असभ्य, गँवार, उजड्ड, बेशऊर।
अशिष्टता—स्त्री० बदतमीज़ी, उद्दण्डता, बेहूदगी।
अशुचि—वि० अपवित्र, गन्दा।
अशुद्ध—वि० ग़लत। अपवित्र, अपरिष्कृत।
अशुद्धता, अशुद्ध—स्त्री० अपवित्र। गलती, दोष।
अशुन—पु० अश्विनी नक्षत्र।
अशुभ—वि० अमंगलकारी। पु० अमंगल, पाप।
अशेष—वि० शेषरहित। समूचा। कुल। समास। अपार, बहुत, अनेक।
अशोक—वि० शोक-रहित। पु० एक वृक्ष जिसका फूल रेशमी लाल डोरेके गुच्छेके समान होता है। सुख।
अशौच—पु० अशुद्धता, मृत्युजन्मादिके कारण मानी [जानेवाली छूत।
अश्म—पु० पत्थर। पहाड़। बादल।
अश्रद्धा—स्त्री० श्रद्धाका अभाव, अविश्वास, अभक्ति।
अश्रांत—वि० जो थका न हो, स्वस्थ। विश्राम-रहित, [निरन्तर।
अश्रु—पु० आँसू।

अश्रुत—वि० जो सुनाई न पड़ता हो नि:शङ्क ।
अश्रुतपूर्व—वि० जिसे पहले न सुना हो, अनोखा, विचित्र ।
अश्रुपात—पु० आँसू गिराना, रुदन ।
अश्रुमती—वि० स्त्री० आँसू भरी, अश्रुपूर्ण ।
अश्लथ—वि० कसा हुआ ।
अश्लिष्ट—वि० श्लेषरहित, असंगत, असम्बद्ध ।
अश्लील—वि० फूहड़, लज्जास्पद, गन्दा ।
अश्लेष—वि० जिसमें दुहरा अर्थ न हो, व्यंग्यहीन ।
अश्व—पु० घोड़ा ।
अश्वगंधा—स्त्री० 'असगन्ध नामक ओषधि ।'
अश्वत्थ—पु० पीपलका पेड़ ।
अश्वपति—पु० घोड़ोंका स्वामी, रिसालदार । अश्वारोही ।
अश्वपाल—पु० अश्वरक्षक, साईस । [छोड़ा जाता था ।
अश्वमेध—पु० एक यज्ञ जिसमें जयपत्र बाँधकर घोड़ा
अश्वारोही—पु० घुड़सवार । वि० घोड़ेपर चढ़ा हुआ ।
अश्विनी—स्त्री० एक नक्षत्र । घोड़ी । [जाते हैं ।
अश्विनीकुमार—पु० सूर्यके युग्मज पुत्र जो सुरवैद्य कहे
अषाढ़—पु० आषाढ़ मास ।
अष्टंगी—वि० आठ अङ्गोंवाला ।
अष्टक—पु० आठ पद्यों या आठ वस्तुओंका संग्रह ।
अष्टधातु—स्त्री० सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, राँगा, जस्ता, सीसा, पारा, ये आठ धातुएँ ।
अष्टभुजा,-भुजी—स्त्री० दुर्गाका एक नाम ।
अष्टमी—स्त्री० पक्षकी आठवीं तिथि ।
अष्टांग—पु० योगक्रियाके आठ भेद-यम, नियम, इ० । आयुर्वेदके आठ अङ्ग-शल्य, शालाक्य इ० । वे आठ अङ्ग जिनसे प्रणाम किया जाता है-जानु, पाँव, हाथ, उर, शिर, वचन, दृष्टि, बुद्धि । वि० आठ अवयवोंवाला ।
अष्टादश—वि० अठारह ।
अष्टापद—पु० सोना । मकड़ी । धतूरा । कृमि । कैलाश । सिंह 'पर विचारी आनन्ददानि । सुत अष्टापद शिवा [मानि ।'
असंक—वि० अशङ्क, निडर ।
असंका—स्त्री० शंका 'अस विचारि सुत तजहु असंका ।' रामा० ८५ [अधिक ।
असंख, असंख्य, असंख्यक—वि० अनगिनत । बहुत ।
असंग—वि० संगरहित अकेला । न्यारा । मायारहित ।
असंगत—वि० अयुक्त, बेठिकाने, बेमेल, अनुचित ।
असंगति—स्त्री० अनुपयुक्तता, बेमेल होनेका भाव । एक काव्यालंकार—"कारज कारनकी न जहँ संगति ठीक [लखाय ।"
असंत—वि० असाधु, दुष्ट, खल ।
असंतुष्टि—स्त्री०, असन्तोष—पु० सन्तोषका अभाव, अतृप्ति, अशान्ति, अप्रसन्नता । [हीन, पृथक् ।
असंबद्ध—वि० जो मिला हुआ न हो, बेमेल, शृंखला-
असंभव—वि० नामुमकिन । एक अर्थालङ्कार—"जहँ अनहोनी बात कछु, प्रगट बखानी जाय ।"
असंभार—वि० जो सँभाला न जा सके । विशाल ।
असंभावित—वि० जिसकी सम्भावना न रही हो । अप्रतिष्ठित ।
असंभाव्य—वि० न घटित हो सकने योग्य ।
असंभाष, असंभाष्य—वि० न कहे जाने योग्य । बुरा । जिससे बात करना ठीक न हो । पु० बुरी बात, न कहने योग्य शब्द ।
असंयत—वि० संयमरहित, उच्छृङ्खल, बन्धनहीन ।
असंस्कृत—वि० अपरिष्कृत, अपरिमार्जित । असभ्य ।
अस—वि० ऐसा, सदृश । [बासर...' सू० १०८
असक्त—वि० आसक्त, लीन 'विषय असक्त रहत निसि
असगंध—पु० एक ओषधि, अश्वगन्ध ।
असगुन—पु० अशकुन । अनिष्टसूचक चिह्न ।
असज्जन—वि० असाधु, दुष्ट ।
असत, असत् असद्—वि० असाधु, बुरा, झूठ, सत्ताहीन
असती—स्त्री० कुलटा, व्यभिचारिणी ।
असत्कार—पु० निरादर, अपमान ।
असत्य—वि० झूठ, मिथ्या । पु० झूठी बात ।
असत्यता—स्त्री० अयथार्थता, मिथ्यात्व ।
असन—पु० अशन, भोजन, 'मुदित सु असन पाइ जिमि भूखा ।' रामा० २५२ । (देखो 'आरि') ।
असम्बद्ध—वि० अनुचित, अप्रस्तुत । जुड़ा हुआ नहीं
असनान—पु० स्नान । नहाना । [घमण्डी
असफलता—स्त्री० निष्फलता, नाकामयाबी ।
असबाब—पु० सामान ।
असभ्य—वि० उजड्ड, अशिष्ट, गँवार ।
असमंजस—पु० दुविधा । कठिनाई 'जदपि अहै असमंजस भारी ।' रामा० ५।
असमंत—पु० चूल्हा ।
असम—वि० अतुल्य, विषम ।
असमत—पु० सतीत्व, पवित्रता । —फरोशी = सतीत्व बेचना, व्यभिचार ( सेवास० १८५ ) ।

**असमबाण, असमसर**—पु० कामदेव ।

**असमय**—पु० बुरा समय, विपत्तिकाल 'आपन अति असमय अनुमानी ।' रामा० ८९ । क्रिवि० समयके पहले ।

**असमर्थ**—वि० अशक्त, दीन, अयोग्य ।

**असमान**—वि० समान नहीं, अतुल्य, अनुपम, असाधारण । पु० आकाश ।

**असमानता**—स्त्री० विषमता, विरोध ।

**असमाप्त**—वि० जो पूरा न हुआ हो, अधूरा ।

**असम्मत**—वि० राज़ी नहीं, विरुद्ध । जो किसीको स्वीकार न हो ।

**असम्मति**—स्त्री० सम्मतिका उलटा, विरुद्ध मत ।

**असयानी**—पु० सीधा-सादा । मूर्ख । अज्ञान ।

**असर**—पु० प्रभाव ।

**असरार**—क्रिवि० बराबर, लगातार ( सूबे० ३०७ ) ।

**असल**—वि० सच्चा, शुद्ध । उच्च । पु० मूल । मूलधन ।

**असलियत**—स्त्री० यथार्थता, सभ्यता, जड़ ।

**असली**—वि० सच्चा, चोखा, बिना मिलावटका, मूल ।

**असलेउ, असह**—वि० असहनीय 'एक न चलै अब प्रान सूर प्रभु, असलेउ साल सले ।' सू० १९७

**असवार**—पु० सवार ।

**असहन**—वि० असहिष्णु । असह्य 'असहन निन्दा करत पराई, कबौ न मानी संका ।' चाचा हित० । पु० बैरी ।

**असहनशील**—वि०जो सहन न करे,असहिष्णु,चिड़चिड़ा ।

**असहनीय**—वि० जो सहा न जा सके, असह्य ।

**असहयोग**—पु० साथ न देनेकी क्रिया या भाव ।

**असहाय**—वि० निराश्रय, अशरण, दीन ।

**असहिष्णु**—वि० न सहनेवाला, असहनशील ।

**असही**—वि० किसीकी उन्नति न देख सकनेवाला 'असही दुसही मरहु मनहिं मन, बैरिन, बढ़हु विषाद ।' गीता० २७१

**असह्य**—वि० जो सहा न जा सके ।

**असा**—पु० चाँदी-सोनेके पत्रसे ढँका हुआ डण्डा, सोंटा ।

**असाँच**—वि० झूठा 'हँसेउ जान विधि गिरा असाँची । रामा० ४६५

**असाढ़**—पु० 'आषाढ़' ।

**असाध**—वि० असाधु, असज्जन, बुरा (उदे० 'अतीत') ।

**असाध, असाध्य**—वि० दुष्कर, कठिन, 'देखी ब्याधि असाधि नृप ..।' रामा० २१५

**असाधारण**—वि० असामान्य, विशेष ।

**असाधु**—वि० बुरा, दुष्ट, अभद्र, अशिष्ट ।

**असामर्थ्य**—स्त्री० अक्षमता, शक्तिहीनता, दीनता ।

**असामयिक**—वि० जो समयपर न हो, उचित समयके पहले या पीछे हो । जो समयके अनुसार न हो ।

**असामी**—पु० काश्तकार । अपराधी । व्यक्ति । देनदार, मित्र ।

**असार**—वि० निस्सार, शून्य, तुच्छ ।

**असावधानता,-धानी**—स्त्री० लापरवाही, बेखबरी ।

**असावरी**—स्त्री० एक रागिनी ।

**असि**—स्त्री० तलवार ।

**असित**—वि० सफेद नहीं, काला । पु० दुष्ट, शनि ।

**असिद्ध**—वि० अप्रमाणित । अपूर्ण, निष्फल, कच्चा ।

**असिव**—वि० अशुभ, भयावह "असिव वेष सिवधाम कृपाला ।' रामा० ५५

**असीम, असीमित**—वि० जिसकी सीमा न हो, अपरिमित, अपार ।

**असील**—वि० असल ।

**असीस**—स्त्री० आशीर्वाद 'सुन सिय सत्य असीस हमारी ।' रामा० १२९

**असीसना**—सक्रि० आशीर्वाद देना ।

**असु**—पु० प्राणवायु, प्राण 'मो असु दै बरु अश्व न दीजै ।' के० ३४१ । अश्व । चित्त । क्रिवि० शीघ्र (के० १८३)

**असुग**—वि० शीघ्रगामी । पु० वायु, तीर ।

**असुचि**—वि० अशुचि । अपवित्र । मैला ।

**असुभ**—देखो 'अशुभ' ।

**असुर**—पु० राक्षस, नीच स्वभावका मनुष्य ।

**असुराई**—स्त्री० नीच कर्म, खोटापन ।

**असुरारि**—पु० दैत्योंके शत्रु, देवता या विष्णु ।

**असुविधा**—स्त्री० अड़चन, तकलीफ, कष्ट ।

**असुहाती**—वि० स्त्री० अच्छी नहीं, बुरी, 'नागरिदास बिसरिये नाहीं, यह गति अति असुहाती ।' नागरी०

**असूझ**—स्त्री० अदूरदर्शिता, भूल । वि० अंधकारपूर्ण । अपार, विकट कठिन 'ढुवो अनो सनमुख भई लोहा भयेउ असूझ ।' प० ३८८ ।

**असूया**—स्त्री० ईर्ष्या, जलन, दूसरेके गुणोंमें दोष निकालनेकी प्रवृत्ति ।

**असूर्यंपश्या**—वि० स्त्री० जिसे सूर्य भी न देखे, कठिन परदेमें रहनेवाली ।

**असृक**—पु० रुधिर, शोणित, रक्त ।

**असैला**—वि० कुमार्गगामी । रीतिविरुद्ध, अनुचित, 'मैं सुनी बातें असैली कही जे निशचर नीच ।' गीता० ३७९

**असोक**—पु० देखो 'अशोक' । सुख, '…फूलै असोक कि सोक समूरो ।' रामा० १६३ ।

असोक, असोकी—वि० शोक रहित।
असोच—वि० सोच-रहित। निश्चिन्त। अपवित्र, पापीष्ठ
असोज—पु० आश्विन मास। [ (उर्दू० 'अकृत')।
असोस—वि० न सूखनेवाला, 'गोपिनके अँसुवन भरी सदा असोस अपार।' बि० १२३।
असौंध—पु० दुर्गंधि।
असौच—वि० अशुद्धता, अपवित्रता।
अस्तंगत—वि० नष्ट, जिसका ह्रास हो गया हो, अवनत।
अस्त—वि० डूबा हुआ, अदृष्ट, तिरोहित। पु० तिरोभाव,
अस्तन—पु० स्तन। [ लोप।
अस्तबल—पु० तबेला, अश्वशाला।
अस्तमित—वि० जो डूब गया हो। [ अँतरौटा।
अस्तर—पु० दोहरे कपड़ेमें भीतरका हिस्सा, भितली,
अस्तव्यस्त—वि० ध्वस्त विध्वस्त, तितर-बितर।
अस्ताचल—पु० कवि-सम्प्रदायद्वारा मान्य एक पहाड़, सन्ध्या समय जिसकी आड़में आकर सूर्य छिप जाता है।
अस्ति अस्ति—अ० हाँ हाँ, वाह वाह, 'देखि कुँवर वर कंचन जोगू। 'अस्ति अस्ति' बोला सब लोगू।' प० १२९।
अस्तित्व—पु० होनेका भाव, सत्ता, हस्ती, विद्यमानता।
अस्तु—अ० जो हो, अच्छा, खैर।
अस्तुति—स्त्री० अप्रशंसा, निन्दा। स्तुति, प्रशंसा'...... अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनन्ता।' रामा० १०७
अस्तुरा—पु० उस्तुरा, छुरा।
अस्तेय—पु० चोरी न करना।
अस्त्र—पु० फेंककर चलाया जानेवाला हथियार, आयुध। चीरफाड़ करनेका औजार। [ शल्य-चिकित्सा।
अस्त्रचिकित्सा—स्त्री० चीरफाड़द्वारा रोग अच्छा करना।
अस्त्रशाला—स्त्री० अस्त्रागार, पु० अस्त्र-शस्त्र रखनेका स्थान।
अस्त्री—वि० हथियार धारण करनेवाला। पु० अस्त्रधारी
अस्थल—पु० स्थल। [ मनुष्य।
अस्थाई—देखो 'अस्थायी'।
अस्थान—पु० स्थान।
अस्थायी—वि० जो स्थायी न हो। स्थायी, टिकाऊ।
अस्थावर—वि० स्थावर ( कबीर २६८ )।
अस्थि—स्त्री० हड्डी।
अस्थिर—वि० डाँवाडोल, चंचल। अनिश्चित। स्थिर, 'अस्थिर रहै न कतहूँ जाई।' कबीर० ३२२।
अस्थिसार—पु० मज्जा।
अस्थूल—वि० सूक्ष्म। स्थूल 'सूच्छममें अस्थूल, बीच वृच्छ विस्तार ज्यों।' साखी० १०६।
अस्थैर्य—पु० अस्थिरता।
अस्नान—पु० देखो 'स्नान'।
अस्पृश्य—वि० जो छूने योग्य न हो, अछूत।
अस्फुट—वि० अस्पष्ट, अविकसित, अप्रकट, गूढ़।
अस्फुटता—स्त्री० अस्पष्टता, अव्यक्तता।
अस्मत—देखो 'असमत'।
अस्र—पु० रुधिर, पानी, अश्रु। कोना।
अस्वस्थ—वि० रोगग्रस्त, बीमार।
अस्वाभाविक—वि० स्वाभाविकका उलटा, अप्राकृतिक,
अस्वीकृत—वि० नामंजूर। [ बनावटी।
अस्सी—वि० साठ और बीस।
अहंकारु—वि० अहंकी कामना करनेवाला।
अहंकार—पु० घमण्ड, ममता।
अहंकारी—वि० घमण्डी, अभिमानी।
अहंकृति—स्त्री० अहंकार। [जो दमिये।' के० ७०
अहंता—स्त्री०, अहंपद—पु० गर्व, 'जिय माँझ अहंपद
अहमन्य—वि० अपनेको ही माननेवाला, घमण्डी।
अहंवाद—पु० डींग मारना।
अह—अ० आश्चर्य, पीड़ा आदिका बोधक शब्द।
अहक—पु० घमण्ड, लालसा, इच्छा।
अहकना—अक्रि०अत्यधिक इच्छा करना,लालायित होना।
अहटाना—अक्रि० आहट लगना, पता लगना 'मरम गये उर फोरि पिछौंहैं, पाछे पै अहटाने।' अ० ११२ 'चलत न पग पैजनियाँ मग अहटाय।' रहीम ३४। दुखना ( सुजा० १५ ), तनिक किरकिटीके परे पक पलमें अहटाय।' रतन० २७। सक्रि० पता लगाना।
अहथिर—वि० स्थिर, जो पै नाहीं अहथिर दसा। जग उजार का कीजिय बसा।' प० ५५ ( २२१ भी० )
अहदनामा—पु० प्रतिज्ञापत्र, सुलहनामा।
अहना—अक्रि० होना ( अहहीं, अहैं, अहा इ० )।
अहनिसि—क्रिवि० दिनरात।
अहबाब—पु० दोस्त ( 'हबीब' का बहु० )।
अहमक—वि० मूर्ख, भोंदू, नादान, उल्लू।
अहमिति—स्त्री० घमण्ड, 'तब नारद गवने सिव पाहीं

जिता काम अहमिति मन माहीं।' रामा० ७४

**अहमेव**—पु० घमण्ड,'कहत धरेस सब धराधर सेस ऐसो और धराधरनको मेट्यो अहमेव है।' भू० २८

**अहरन,-रनि**—स्त्री० निहाई, 'धीरा होइ धमक सहौं, ज्यों अहरन सिर घाव।' साखी १५२

**अहरह**—क्रिवि० प्रतिदिन।

**अहरी**—स्त्री० हौज, पौशाला।

**अहर्निश**—क्रिवि० दिनरात, नित्य।

**अहलकार**—पु० कर्मचारी, अफसर।

**अहलना**—अक्रि० हिलना। दहलना।

**अहलमद**—पु० सदर मुहर्रिर।

**अहलाद**—पु० आह्लाद, आनन्द।

**अहल्या**—स्त्री० गौतम ऋषिकी पत्नी।

**अहवान**—पु० आह्वान, बुलानेका कार्य।

**अहसान**—पु० भलाई, कृपा। कृतज्ञता।

**अहह**—अ० खेद, आश्चर्यादि-सूचक शब्द।

**अहा**—अ० प्रशंसा या प्रसन्नता-सूचक शब्द। स्त्री० प्रशंसा, 'अदल जो कीन्ह उमरकै नाईं। भई अहा सगरी दुनियाई।' प० ६। अक्रि० था, 'खेलति अही सहेली सेंती।' प० १९४।

**अहाता**—पु० घेरा, मण्डल। सूबा। चहारदीवारी।

**अहान**—पु० स्त्री० बुलावा, पुकार, चिल्लाहट।

**अहार**—पु० आहार। भोजन, खाद्य वस्तु।

**अहारना**—सक्रि० आहार करना, खाना। चपकाना।

**अहिंसक**—वि० हिंसा न करनेवाला।

**अहिंस्र**—वि० हिंसा न करनेवाला, अहिंसक।

**अहिंसा**—स्त्री० प्राण न लेना, किसीको क्लेश न देना।

**अहि**—पु० साँप। राहु। खल।

**अहित**—पु० बुराई, हानि। वि० हानिकारी, शत्रु।

**अहिनाथ,-पति**—पु० शेषनाग।

**अहिफेन**—पु०साँपके मुँहका फेन। अफीम। [१५५)।

**अहिबेल**—स्त्री०अहिवल्ली लता, नाग-बेलि, पान। (रामा०

**अहिवल्ली**—स्त्री० नागबेलि, पान, 'अहिवल्ली रिपुकी सुता ताके पतिको हार। ता अरि पतिकी भामिनी सदा बसै तुव द्वार।' [ रामा० ४२

**अहिवात**—पु० सौभाग्य 'सदा अचल यहिकर अहिवाता।'

**अहिवाती**—वि० स्त्री० सौभाग्यवती, सधवा।

**अहिसाव**—पु० अहिशावक, साँपका बच्चा।

**अहीर**—पु० ग्वाला।

**अहीश**—पु० शेषनाग, लक्ष्मण।

**अहुटना**—अक्रि० दूर होना, हटना।

**अहुटाना**—सक्रि० हटाना, अलग करना।

**अहुठ**—वि० साढ़े तीन, 'अहुट हाथ तन जैस सुमेरू। [ प०-५१

**अहे**—अ० सम्बोधनसूचक एक शब्द।

**अहेतु**—वि० बिना कारणका। व्यर्थ।

**अहेर**—पु० शिकार 'जहँ तहँ तुमहिं अहेर खेलाउब।' रामा० २६४। शिकारका पशु।

**अहेरी**—पु० शिकार खेलनेवाला,आखेटक। वि० शिकारी

**अहोरात्र**—पु० दिनरात्र। [ एक रीति

**अहोरा बहोरा**—क्रिवि० बार बार। पु० विवाहकी

---

# आ

**आँक**—पु० अङ्क, निशान, संख्यासूचक चिह्न, ( बि० १३७ )। अक्षर, 'आँक बिहूनीयौ सुचित, सूनैं बाँचत जाइ।' ( पाती ) बि० २१७। निश्चित मत। गोद। अंश, 'आस नहिं एकहु आँक निरबानकी।' विन० ४८३। एक आँक-क्रिवि० निश्चय ही, 'जदपि लौंग ललितौ तऊ तू न पहिर इक आँक।' बि० २८२

**आँकड़ा**—पु० संख्याका चिह्न, अंक। पशुओंका एक रोग। हुक। [ अन्दाज़ा लगाना।

**आँकना**—सक्रि० निशान लगाना। जाँचना, ठहराना।

**आँकर**—वि० बहुत अधिक, '…बिसारि बेद लोकलाज आँकरो अचेतु है।' कविता० २२२। महँगा।

**आँकुस**—पु० अंकुश ( भू० २४ )।

**आँख**—स्त्री० नेत्र, नयन, अम्बक, ईक्षण, चक्षु, लोचन, अक्षि। आँखकी तरहका छेद या चिह्न। मोरपंख। ध्यान। विचार, परख। कृपादृष्टि। दृष्टि।—आना,—उठना= आँख लाल होना और दर्द करना।—की पुतली= प्रिय व्यक्ति,'जो अभिषेक रास कहँ काली। करहुँ तोहि चखपूतरि आली।' रामा०।—खटकना=आँख किर-

फिराना।—खोलना=आँख ठीक करना, सतर्क होना, सावधान करना। आँखें चार होना=सामना होना, दर्शन होना।—चुराना—लज्जासे मुँह छिपाना। आँखें डबडबाना=आँखोंका अश्रुयुक्त होना।—तरेरना=क्रोधकी दृष्टिसे देखना 'सुनि लछिमन बिहँसे बहुरि, नयन तरेरे राम।' रामा० १५१।—दिखाना=क्रोध दिखलाना, धमकाना, 'सुनि सरोष भृगुनायक आये। बहुत भांति तिन आँखि दिखाये।' रामा० १५८ (५११ भी)।—निकालना = क्रोध प्रकट करना।—पथराना = पलक न गिरना। आँखोंपर परदा पड़ना = भ्रम होना।—बन्द होना = मृत्यु होना। आँखें बिछाना = अत्यन्त प्रेम और आवभगतसे स्वागत करना।—मारना = आँखोंसे संकेत करना।—भर देखना=इच्छा भर देखना।—में गड़ना=मनमें बसना, पसन्द आना। बुरा लगना। आँखोंमें धूर डालना या देना = देखते २ धोखा देना। आँखोंमें रखना = प्रेमपूर्वक रखना 'आँखिनमें सखि राखिये जोग इन्हें कसिके बनबास दियो है।' कविता०।—लगना = नींद लगना। प्रेम होना 'आँखन आँख लगी रहै, आँखें लागत नाहिं। बि० ३२।—लगाना=प्रेम जोड़ना। नजर डालना 'देस देसके बर मोहिं आवहिं। पिता हमार न आँख लगावहिं। प० २४।—लड़ना = लगन लगना। आँखें होना = परख होना, पहिचान होना।

आँखमिचौनी,-मिचौली,-मीचली—स्त्री० एक खेल।

आँख मुचाई, आँख मुँदाई—स्त्री० आँखमिचौनी 'इहाँ हरि खेलत आँख मुचाई।' सूबे० ३८७

आँखा—पु० एक तरहकी चलनी। सुरजी।

आँग—पु० अंग, शरीर 'लखि लखि अँखियनु अधखुलिनु, आँग मोर अँगराइ। बि० २६०। स्तन।

आँगन—पु० चौक, अजिर।

आँगिक—वि० शरीर सम्बन्धी। पु० भावसूचक चेष्टा, [ कायिक अनुभाव।

आँगी—स्त्री० चोली, अँगिया।

आँगुर, आँगुल—पु० अँगुली '' काहू उठायो न आँगुर है।' राम० ६४

आँगुरिया, आँगुरी—स्त्री० अँगुली।

आँधी—स्त्री० मैदा इत्यादि चालनेकी चलनी।

आँच—स्त्री० गरमी, ताप, आग। ज्वाला। 'अजहूँ हृदय जरत तेहि आँचा।' रामा० २१४। प्रताप। चोट। विपत्ति। काम-व्यथा।

आँचना—सक्रि० जलाना, गरम करना (कविता० २११)।

आँचर, आँचल—पु० अञ्चल। साड़ी आदिका छोर [ ( रषि० २८ )।

आँजन—पु० अञ्जन।

आँजना—सक्रि० अञ्जन लगाना ( सू० ७४ )।

आँजनेय—पु० अंजनी-पुत्र हनुमान जी।

आँट—पु० अँगूठे और तर्जनीके बीचकी जगह। दाँव, गाँठ। लाग-डाँट, दुश्मनी। पूला।

आँटना—अक्रि० अँटना, समाना, पूरा पड़ना, छर कीजे बर जहाँ न आँटा।' प० २८६। पार पाना 'पुरुष तहाँ पर करै छर, जहँ बर किये न आँट।' प० ३१५। मिलना, पहुँचना। बराबरी कर सकना' जिनके उपासी, रिधि सिधि हूँको करैं दासी, निधि हैं कलासी, विधि हू न तेहि आंटिहै।' दीन० १२३। सक्रि० अँटाना, प्राप्त करना, ( साकेत ३२८ )।

आँटसाँट—स्त्री० साजिश, गुप्त आयोजन, मेलजोल।

आँटी—स्त्री० पूला, सूतका लच्छा, खेलनेकी गुल्ली। गाँठ 'विषके तंतू पसार उरझाई आँटी मार, सब नर वृक्षपर लपेटे ही लेखिए। सुन्दर० ५१

आँठी—स्त्री० गाँठ, गुठली, लच्छा।

आँड़ी—स्त्री० गाँठ, कन्द, सिरा।

आंतरिक—वि० भीतरी, हृदय-सम्बन्धी।

आँत—स्त्री० पेटके भीतरकी लम्बी नली।

आँदू—पु० बेड़ी, बन्धन ( रतन० ३३, मति० १९१ )।

आंदोलन—पु० धूम, हलचल, ज़ोरोंका प्रयत्न।

आंदोलित—वि० हलचल पूर्ण।

आँध—स्त्री० अँधेरा; रतौंधी। क्लेश।

आँधना—अक्रि० ज़ोरसे झपटना या टूट पड़ना।

आँधरा—वि० अन्धा। पु० अन्धा मनुष्य।

आँधारम्भ—पु० अन्धेर, मनमाना कार्य।

आँधी, आँधै—स्त्री० ज़ोरकी हवा, अन्धड़। वि० तेज़।

आँब—पु० आम।

आँय बाँय—पु० अण्डवण्ड बात, निरर्थक प्रलाप, बकबक

आँव—स्त्री० एक तरहका चिकना सफेद मल।

आँवड़ना—अक्रि० उमड़ना, बह निकलना।

आँवड़ा—वि० गहरा 'भरे गुन भार सुकुमार सरसिज सार सोभा रूप सागर अपार गुन आँवड़े।' रवि० १

आँवल—स्त्री० गर्भस्थ शिशुके चारो ओरकी झिल्ली, खेंड़ी।
आँवला—पु० एक वृक्ष या उसका फल, जिसका अचार या मुरब्बा रखा जाता है।
आँवाँ—पु० मिट्टीके बरतन पकानेका गड्ढा।
आंशिक—वि० अंश सम्बन्धी। कुछ (आंशिक सफलता)।
आँस—स्त्री० आँसू, वेदना, कष्ट। [† बैना।
आँसी—स्त्री० वह मिष्टान्न जो मित्रादिकोंमें बाँटा जाता है,†
आँसू—पु० अश्रु, नेत्रजल। **पीकर रह जाना** = मन मसोसकर रह जाना। —**पोंछना** = तसल्ली देना।
आँहाँ—अ० नहीं।
आइंदा—क्रिवि० फिर, आगे, वि० भविष्य, आनेवाला।
आइ—स्त्री० आयु, जीवन 'सो जानइ जनु आइ खुटानी।'
आइस, आइसु—देखो 'आयसु'। [रामा० १४६
आई—स्त्री० आयु, जीवन 'सत संवत मनुष्यकी आई।'
आईन—पु० क़ानून, विधि, नियम। [सूबे ३१
आईना—पु० दर्पण, शीशा।
आईनासाज—पु० दर्पण बनानेवाला।
आउ, आऊ—स्त्री०आयु, जीवन 'एहि बन रहत गई हम आऊ।' प० ३०, 'दादुर कांकोदर दसन परे मसन मति भ्याउ। कहा लहैगो स्वादुको एक स्वासकी आउ।' दीन० २०९ [२७१, १८५)।
आउज, आउझ—पु० ताशा नामका बाजा (गीता०
आउबाउ—पु० आँय बाँय, निरर्थक प्रलाप 'जीहहू न जाप्यो नाम बक्यो आउबाउ मैं। विन० ५९२
आक—पु० मन्दार (रामा० ६०४)।
आकटि—क्रिवि० कमरतक।
आकबत—स्त्री० परलोक।
आकबाक—पु० अण्ड बण्ड बात 'ताहि तें सुबचन बिवेक करि बोलिये जू यूँहि आकबाक बकि तोरिये न पौन फूँ।' सुन्द ७५
आकर—पु० भाण्डार (रत्नाकर, कुसुमाकर), खानि। भेद 'आकर चारि लाख चौरासी।' रामा० ८। वि० श्रेष्ठ, अधिक। गुणित। दक्ष।
आकरखना—सक्रि० आकर्षत करना, खींचना।
आकरी—स्त्री० आकली, व्याकुलता। खान खोदनेका काम (कविता० २१७)।
आकर्ष—पु० खींचने या बलपूर्वक हटानेका कार्य। चौपड़। चुम्बक। बाण चलानेका अभ्यास। कसौटी।
आकर्षक—वि० लुभानेवाला, खींचनेवाला।
आकर्षण, आकर्षन—पु० खिंचाव। एक तांत्रिक विधि।
आकर्षना—सक्रि० तानना, खींचना। [* जाँच।
आकलन—पु० संग्रह,ग्रहण (रामा०५१६)। सम्पादन,*
आकलित—वि० परिगणित, संगृहीत,सम्पादित, संग्रथित परीक्षित।
आकली—स्त्री० व्याकुलता, उग्रता, अशान्ति।
आकस्मात्—क्रिवि० अकस्मात्, अचानक।
आकस्मिक—वि० अचानक होनेवाला, जो बिना किसी
आकांक्षा—स्त्री० इच्छा,वान्छा। अपेक्षा। [कारणके हो।
आकांक्षित—वि० इच्छित।
आकांक्षी—वि० चाहनेवाला, इच्छुक।
आकार—पु० रूप, आकृति, बनावट, डीलडौल। चिह्न।
आकारी—पु० बुलानेवाला।
आकाश—पु० गगन, व्योम, अन्तरिक्ष, शून्य स्थान।
आकाश-कुसुम—पु० गगनपुष्प। कोई असम्भव बात।
आकाशगंगा—स्त्री० मन्दाकिनी। आकाशमें उत्तर दक्षिण फैला हुआ छोटे छोटे तारोंका समूह, छायापथ।
आकाशजल—पु० वर्षाका जल। ओस।
आकाशदीप,—दीया—पु० बाँस इ० के सिरेपर बाँधकर जलाया गया दीया।
आकाशपुष्प—देखो 'आकाशकुसुम'
आकाशभाषित—पु० नाटकके किसी पात्रका आकाशकी ओर देखकर कोई प्रश्न इस तरह कहना मानो वह उससे किया गया हो और फिर उसका उत्तर देना।
आकाशवाणी—स्त्री० आकाशसे देवताओंद्वारा कही गयी बात, आकाशमें कहा गया शब्द।
आकाशवृत्ति—स्त्री० अनिश्चित आय।
आकाशी—स्त्री० धूप इ० में बचनेके निमित्त ताना गया
आकीर्ण—वि० भरा हुआ, व्याप्त। [चँदोवा।
आकुंठित—वि० जड़, कुन्द। शर्मिन्दा।
आकुंचित—वि० सिकुड़ा हुआ, तिरछा, टेढ़ा।
आकुल, आकुलित—वि० व्याकुल, क्षुब्ध। व्याप्त।
आकुलता—स्त्री० व्याकुलता।
आकूत—पु० आशय, मतलब।
आकूति—स्त्री० आशय। शुभ आचरण। उत्साह।
आकृति—स्त्री० मूर्त्ति, बनावट। मुख या मुखका भाव।
आकृष्ट—वि० खींचा हुआ।

आक्रंदन—पु० चीख़ना या रोना, चिल्लाना।
आक्रमण—पु० हमला। आक्षेप।
आक्रांत—वि० जिसपर हमला किया गया हो। विवश।
आक्रांति—स्त्री० व्यापक विप्लव, विवशता 'चतुर्दिक् प्रखर प्रखर आक्रांति, ग्रस्त करती सुख-शांति।' [पल्लव १२३
आक्रीड़—पु० क्रीड़ा
आक्रोश—पु० कोसना, वक्रोक्ति। [काव्यालङ्कार।
आक्षेप—पु० आरोप, दोष लगाना, निन्दा। व्यंग्य। एक
आक्षेपक—वि० आक्षेप करनेवाला, आरोपक, निन्दक, फेंकनेवाला।
आखंडल—पु० इन्द्र ( नियन्ध० २-१४० )
आखन—पु० खननेका एक औज़ार, खन्ती।
आखत—पु० अक्षत ( विन० ७५ )। शुभ अवसरपर नेगियोंको दिया जानेवाला अन्न।
आख़ता—वि० बधिया ( घोड़ा )।
आखन—क्रिवि० प्रति-क्षण।
आखना—सक्रि० कहना 'जो अबके सतगुरु मिलैं सब दुख आखौं रोय।' साखी १०६। उल्लंघन करना। देखना। इच्छा करना (प० २५)। चलनीसे छानना।
आखर—पु० अक्षर, हरफ 'आखर मधुर मनोहर दोऊ।' रामा० १७
आखा—वि० 'अक्षय'। मारा'लावा मेलि दये हैं तुमको अक्षत रहो दिन आखो।' अ० ३३
आख़िर—क्रिवि० अन्तमें, अवश्य। ख़ैर। वि० अन्तिम, पिछला। समाप्त। पु० अन्त।
आख़िरकार—क्रिवि० अन्तमें, निदान।
आख़िरी—वि० अन्तका।
आखु—पु० चूहा।
आखेट—पु० मृगया, शिकार।
आखेटक—वि० शिकारी। पु० शिकार।
आखोट—पु० अखरोट।
आख्या—स्त्री० यश, नाम। व्याख्या।
आख्यात—वि० प्रसिद्ध।
आख्यान—पु० कथा, वर्णन। एक तरहका उपन्यास।
आख्यानक—पु० कथा, कथानक वृत्तान्त।
आख्यायिका—स्त्री० कथा, कहानी।
आगंतुक—पु० अभ्यागत, अतिथि। वि० आनेवाला।
आग—स्त्री० अग्नि, जलन, दाह। पु० ऊखका अगौरा। 'सूरदास प्रभु ऊखछांड़िके चतुर चिचोरत आग।' भ्र० ४३।—देना=चितामें आग छुआना, फूँकना।—फूक-देना=गरमी उत्पन्न करना।—बबूलाहोना=अत्यधिक क्रुद्ध होना।—बरसना=बहुत गरमी पड़ना। गोला गोलियोंकी वर्षा होना। लगना=प्रज्वलित होना, ईर्ष्या या क्रोध होना, नष्ट होना, महँगा होना।—लगाना=जलाना, ईर्ष्या या क्रोध उत्पन्न करना। झगड़ा उत्पन्न करना, भड़काना। पेटकी—क्षुधा, भूख।
आगत—पु० अतिथि। वि० आया हुआ।
आगतपतिका—स्त्री० वह नायिका जिसका स्वामी विदेशसे वापस आया हो।
आगत-स्वागत—पु० आदर सत्कार।
आगम—पु० आगमन 'रोमपाद सुनि दसरथ आगम पायो परम हुलासा।' रघु० १०। होनहार, आनेवाला समय। सगम। आमदनी। वेद, शास्त्र। उत्पत्ति। उपक्रम '''बहुरि मिलनको आगम कीन्हों।' सूर० ३५। वि० आगामी।
आगमजानी,-ज्ञानी—वि० भावी जाननेवाला।
आगमन—पु० आना।
आगमसोची—वि० अग्रसोची।
आगमापायी—वि० नश्वर। अनित्य।
आगमी—पु० दैवज्ञ, ज्योतिषी 'अवध आज आगमी एक आयो।' गीता० २८२
आगर—पु० आकर, खान, कोष। समूह। घर, स्थान। 'पानिपके आगर सराहैं सब नागर ..' दास १८१। पु० व्योंड़ा। घर, छप्पर। वि० बढ़कर 'भलेहि पदमिनी रूप अनूपा। हमते कोउ न आगरि रूपा।' प० ५९। चतुर ( उदे० 'मिहरी' )। अधिक 'संवत् सत्रहसे लिखे आठ आगरे वीस।' छत्र ८९
आगल—पु० व्योंड़ा। वि० आगेका, अगला। क्रिवि० [सामने।
आगला—वि० अगला।
आगवान—पु० आना ( रामा० ३१५ )।
आगा—पु० आगेका हिस्सा, छाती, सामना, आँचल। [परिणाम। भविष्य।
आगान—पु० प्रसंग, हाल।
आगापीछा—पु० हिचकिचाहट, दुविधा। परिणाम।
आगामि,-मी—वि० आनेवाला, भविष्य।
आगार—पु० घर, धाम, स्थान। खजाना। (रामा०१६)
आगाह—वि० वाक़िफ़, जिसे खबर मिली हो, जो जानता

हो। पु० होनहार।—करना=सूचित करना, जताना
आगाही—स्त्री० वाकफियत।
आगि—स्त्री० अग्नि।
आगिल,-ला—वि० आगेका होनेवाला। 'कहि अस ब्रह्म भवन मुनि गयऊ। आगिल चरित सुनहु जस भयऊ।' [ रामा० ४४
आगिवर्त्त—पु० सेवका एक भेद।
आगी—स्त्री० अग्नि।
आगू—क्रिवि० आगे ( रघु० १६ ), 'बासर चौथे जाम, सतानन्द आगू दिये। दशरथ नृपके धाम, आये सकल विदेह बनि।' रामा० ११२। पु० परिणाम 'तू रिसभरी न देखेसि आगू।' प० ४०, (२८०)।
आगे—क्रिवि० सामने। भविष्यमें। और बढ़कर। बाद। पहिले। अतिरिक्त।
आगौन—पु० आगमन, आना।
आग्नेय—वि० अग्नि सम्बन्धी। जलानेवाला। पु० सुवर्ण। अग्निपुत्र कार्तिकेय। ब्राह्मण।
आग्रह—पु० हठ, अनुग्रह, तत्परता।
आग्रहायण—पु० कार्तिकके बादका महीना, अगहन।
आग्रही—वि० आग्रह करनेवाला, हठी।
आघ, आघु—पु० मूल्य ( वि० १२२), दाम।
आघात—पु० चोट, ठोकर, प्रहार, हमला।
आघूर्ण, आघूर्णित—वि० घूमता हुआ, हिलता हुआ।
आघ्राण—पु० गन्ध लेना, तृप्त होना।
आचमन—पु० जल पीना, मुख धोना।
आचमनी—स्त्री० आचमन करनेका छोटा चम्मच।
आचरज—पु० आश्चर्य, अचरज ( रामा० ५ )।
आचरण, आचरन—पु० व्यवहार, अनुष्ठान। लक्षण, शुद्धि। रथ।
आचरना—अक्रि० व्यवहार करना, के अनुसार चलना 'तुम्ह तउ देहु सरल सिख सोई। जो आचरत मोर भल होई।' रामा० २८३
आचान, आचानक—क्रिवि० अचानक।
आचार—पु० व्यवहार। रहनसहन। शील, चरित्र। शुद्धि।
आचारज, आचार्य—पु० पुरोहित। अध्यापक, गुरु।
आचारजी—स्त्री० पौरोहित्य।
आचारवान्—वि० शुद्ध आचारवाला, नेमसे रहनेवाला।
आचारी—वि० चरित्रवान्। पु० आचार्य।
आचिंत्य—वि० जो चिन्तनमें न आ सके, ईश्वर।
आच्छन्न—वि० छिपा हुआ।
आच्छादन—पु० आवरण, ढँकना।
आच्छादित—वि० ढका हुआ।
आछत—क्रिवि० रहते हुए, विद्यमानतामें।
आछना—अक्रि० रहना, होना। 'दादुर बास न पावई भलहि जो आछै पास।' प० १०
आछा—वि० अच्छा ( भू० १२५ )।
आछी—वि० अच्छी। वि० खानेवाला।
आछे—क्रिवि० अच्छी तरह।
आछेप—पु० देखो 'आक्षेप'।
आज, आजु—क्रिवि० अद्य, वर्तमान दिनमें। आज दिन, इस समय।
आजकल—क्रिवि० वर्तमान समयमें, इस समय।
आजगव—पु० शिवका धनुष।
आजन्म—क्रिवि० जीवनभर।
आज़माइश—स्त्री० जाँच, परख।
आज़माना—सक्रि० जाँच करना, परीक्षा करना।
आज़मूदा—वि० आज़माया हुआ।
आजा—पु० पिताका पिता।
आज़ाद—वि० स्वतंत्र, निर्भय, निश्चिन्त।
आज़ादी—स्त्री० स्वतंत्रता, बेपरवाही, बन्धन-मुक्ति।
आजानु—वि० घुटनोंतक लम्बा।
आजार—पु० रोग, बीमारी, कष्ट।
आजि—पु० लड़ाई, समर ( रामा० ३५ )।
आजिज़—वि० तंग, दिक। नम्र।
आजिज़ी—स्त्री० दैन्य, विनम्रता।
आजीवन—क्रिवि० आजन्म, जीवनभर।
आजीविका—स्त्री० जीवन-निर्वाहका साधन, रोज़ी।
आज्ञा—स्त्री० हुक्म, आदेश, अनुमति।
आज्ञाकारी—वि० आदेश माननेवाला, आज्ञा-पालक।
आज्ञापक—पु० आज्ञा देनेवाला, स्वामी।
आज्ञापत्र—पु० हुक्मनामा।
आटना—सक्रि० दबाना, नीचे ढँकना।
आटा—पु० पिसान, चूर्ण।
आटोप—पु० फैलाव, विस्तार, आडम्बर।
आठ—वि० पाँच और तीन। पु० आठकी संख्या।
आठें, आठों—स्त्री० अष्टमी।
आडंबर—पु० टीमटाम, दिखाऊ आयोजन, गम्भीर ध्वनि

तम्बू। आनन्द, आवरण, आच्छादन (सुसु० १८८)।

आड़—स्त्री० परदा, ओट। रक्षा। रोक। एक भूषण। स्त्रियोंके माथेकी लम्बी टिकुली, आड़ा तिलक 'गदराने तन गोरटी ऐपन आड़ लिलार।' बि० ५९८ (नू० ११०)

आड़ना—सक्रि० रोकना, बाँधना। गिरवी रखना।

आड़ा—वि० बाईं ओरसे दाहिनीको, या दाहिनीसे बाईं-को गया हुआ, बेंड़ा। पु० शहतीर। एक धारीदार कपड़ा। आड़े आना = संकटमें काम आना, बीचमें आना, जिससे बाधा पड़े। आड़ा पड़ना = विघ्न डालना। आड़ा होना = रुकावट डालना 'प्रीतम मुख अवलोक तन होत जु आड़े आन।' रतन० २९। बीच विचार करना 'तुरत आनि आड़ा भयो हाड़ा श्री छत्रसाल।' छत्र० ४०। आड़े हाथों लेना = व्यंग्य बाण छोड़कर लज्जित करना, 'बनाना'।

आड़ि—स्त्री० हठ 'मन नाहीं छाड़े विषय, विषय न मनको छाड़ि। इनका यही सुभाव है पूरी लागी आड़ि।' साखी १६६

आड़ू—पु० एक खटमिट्ठा फल।

आढ़—स्त्री० सहारा, ओट (विन० ९६)। अन्तर, नागा। आढ़ आढ़ करना = टालमटूल करना 'जारि मोहिनी आढ़ आढ़ कियो तब नगसिरतें रोयो।' सूवि० १८। वि० कुशल, होशियार। स्त्री० माथेका भूषण।

आढ़त—स्त्री० कमीशन लेकर बिक्री करानेका काम। आढ़तका माल रखनेकी जगह।

आढ़तिया—पु० आढ़तका रोज़गार करनेवाला।

आढ्य—वि० सम्पन्न, युक्त।

आत—पु० सीताफलका पेड़ (प्रिय० ९६)।

आतंक—पु० भय, रोब। रोग।

आतताई,-तायी—पु० अत्याचारी, आग लगानेवाला, लुटेरा।

आतप—पु० धूप, गरमी, ज्वर।

आतपत्र—पु० धूपसे बचानेका साधन, छाता।

आतम—वि० अपना।—हन-दे० आत्महन्'।

आतमभून—पु० पुत्र, कामदेव (कविप्रि० २९)।

आत[illegible]—स्त्री० आत्मा।

आतर—पु० उतराई।

आतश—पु० अग्नि।

आतशक—पु० उपदंश या गर्मीका रोग।

आतशदान—पु० आग रखनेका बरतन, गोरसी।

आतशबाज़—पु० महताबी, चकरी इ० बनानेवाला।

आतशबाजी—स्त्री० बारूदके खिलौनोंका जलना।

आतशी—वि० आग उत्पन्न करनेवाला। अग्नि सम्बन्धी।

आतार—देखो आतर'।

आतिथेय—पु० आदर-सत्कारकी वस्तुएँ। वि० अतिथि-का सत्कार करनेवाला (साकेत २०७)।

आतिथ्य—पु० पहुनाई। अतिथिका आदर-सत्कार।

आतिश, आतिशदान—देखो, 'आतश', 'आतशदान'।

आतिशबाज,-बाजी—देखो 'आतशबाज', 'आतशबाजी।

आतिशय्य—पु० बाहुल्य, अधिकता, प्राचुर्य।

आतीपाती—स्त्री० लड़कोंका एक खेल।

आतुर—वि०व्याकुल। अधीर। उत्सुक। रोगी, दुःखी। क्रिवि० शीघ्र 'मोर कहा तुम ताहि सुनावहु। तासु वचन सुनि आतुर आवहु।' रामा० ३७२

आतुरता,-ताई—स्त्री० उतावलापन, उत्सुकता।

आतुराना—अक्रि० उतावला होना, उत्सुक होना 'रच है विचित्र काय चक्र पापपुण्य चाय इंद्रीगन आतुराय ज्यों तुरग धायो है।' दीन० १४२

आतुरी—स्त्री० घबड़ाहट, जल्दबाजी 'हारिबे को मूल एक आतुरी है रन माँझ।' कवौ० ५१४

आत्म-कथा—स्त्री० किसी व्यक्तिद्वारा लिखित अपना जीवन-वृत्त

आत्मगौरव—पु० अपने बड़प्पनका ख्याल, आत्मप्रतिष्ठा।

आत्मघात—पु० आत्महत्या, खुदकुशी।

आत्मघातक,-घाती—वि० आत्महत्या करनेवाला।

आत्मज,-जात—पु० पुत्र, कामदेव। रुधिर।

आत्मज्ञान—पु० जीवात्मा-परमात्मा विषयक ज्ञान।

आत्मत्याग—पु० दूसरोंके लिए अपने हितका त्याग।

आत्मप्रशंसा—स्त्री० अपने मुँह अपनी तारीफ।

आत्मबोध—पु० आत्मज्ञान, अपने समान ही दूस[illegible]को समझनेकी शक्ति 'जीवोंके प्रति आत्मबोध मनुष्यत्वकी परिणति' युग वाणी ३०।

आत्मभू,-भूत—पु० पुत्र, कामदेव।

आत्मरति—स्त्री० आत्मज्ञान।

आत्मवाद—पु० आध्यात्मिकता।

आत्मविद्या—स्त्री० ब्रह्मविद्या।

आत्मविस्मृत—वि० अपनेको भूला हुआ।

आत्मश्लाघा—स्त्री० आत्म-प्रशंसा ।
आत्मसिद्धि—स्त्री० मुक्ति ।
आत्महत्या,-हिंसा—स्त्री० अपने आपको मार डालना ।
आत्महन आत्महन्—वि० आत्मघात करनेवाला (रामा० ५६१)। [कार । देह ।
आत्मा—स्त्री० जीव, मन, चित्त, ब्रह्म, बुद्धि, अहं-
आत्माभिमान—पु० मानापमानका विचार ।
आत्माराम—पु० जीव, ब्रह्म, आत्मज्ञानी । तोता ।
आत्मिक—वि० आत्मा सम्बन्धी, मानसिक । अपना ।
आत्मीय—पु० बन्धु, मित्र, सम्बन्धी । वि० अपना ।
आत्मीयता—स्त्री० अपना, मतका भाव ।
आत्मोत्कर्ष—पु० आत्मोन्नति ।
आत्मोत्सर्ग—पु० दूसरेके हितार्थ अपने आपको न्यौछावर करना । [आत्माकी मुक्ति ।
आत्मोद्धार—पु० अपना छुटकारा, सांसारिक बन्धनोंसे
आत्मोन्नति—स्त्री० अपनी उन्नति, आत्माकी उन्नति ।
आत्यंतिक—वि० बहुत अधिक ।
आथना—अक्रि० 'आछना', होना ।
आथी—स्त्री० पूँजी 'औ जत हस्ति घोर औ आथी ।' प० २०४ । [तन आद ।' रतन० ७
आद—देखो 'आदि' । 'यों सब जीवनकी लखौ ब्रह्म सना-
आदत—स्त्री० टेव, स्वभाव ।
आदमखोर—पु० मनुष्य-भक्षी ।
आदमियत—स्त्री० मनुष्यता, शिष्टता, ।
आदमी—पु० मनुष्य । पति । नौकर ।
आदर—पु० सम्मान, प्रतिष्ठा ।
आदरणीय—वि० सम्मान करने योग्य ।
आदरना—सक्रि० सम्मान करना 'तजि ऋतुपतिकी माधवी आयो इह सारंग । आक आदरै ताहि किन दुर्लभ याको संग ।' दीन० २१८
आदर-भाव—पु० सम्मान ।
आदरस—पु० आदर्श 'गोर स्याम रूप आदरस है दरस जाको, गुपुत प्रगट भावना विसेखिवेई है ।' श्री आनन्दघन । दर्पण ( ललित २०० ) ।
आदर्श—पु० नमूना । दर्पण । मानदंड । साधन ।
आदान-प्रदान—पु० लेना देना ।
आदाब—पु० नमस्कार । क़ायदा ।
आदि—पु० आरम्भ, मूलकारण । वि० आरम्भका, प्रथम ।
आदिकवि—पु० बाल्मीकि या शुक्राचार्य ।
आदित, आदित्य—पु० अदितिके पुत्र । देवता, सूर्य । इन्द्र या वामन । मदार ।
आदिम—वि० पहिलेका । प्रथम ।
आदिल—वि० न्यायी ।
आदिष्ट—वि० आदेश पाया हुआ ।
आदी—वि० अभ्यस्त । नितान्त, बिलकुल, 'मातु न जानसि बालक आदी । हौं बादला सिंह रनवादी ।' प० ३१ स्त्री० अदरक ।
आदृत—वि० जिसका आदर किया गया हो ।
आदेश, आदेस—पु० आज्ञा । उपदेश । प्रणाम । एक अक्षरकी जगह दूसरे अक्षरका रखा जाना ।
आदौ—क्रिवि० आरम्भमें ( प्रिय० ११९ ) ।
आद्यंत, आद्योपांत—क्रिवि० शुरूसे अन्ततक ।
आद्य—वि० आरम्भका । वि० खाने योग्य ।
आद्रा—स्त्री० नक्षत्र-विशेष ।
आध, आधा—वि०अर्द्ध । समूचेके दो बराबर हिस्सोंमेंसे एक जितना हो उतना ।
आधाझारा—पु० चिचड़ा' नामक पौधा, अपामार्ग ।
आधान—पु० जन्मकी स्थिति । [आलबाल ।
आधार—पु० अवलम्ब, सहारा । नींव, आश्रयदाता ।
आधारी—वि० सहारेपर रहनेवाला । स्त्री० साधुओंकी टेकनेकी लकडी, 'कानन मुद्रा पहिरि मेखली धरे जटा आधारी' । भ्र० २५
आधासीसी—स्त्री० आधे सिरका दर्द । अधकपारी ।
आधी—स्त्री० मानसिक पीड़ा, चिन्ता । बन्धक ।
आधिक—वि० आधा या आधेके लगभग । क्रिवि० लगभग आधा, किञ्चित् ।
आधिक्य—पु० अधिकता, बाहुल्य ।
आधिदैविक—वि० दैवकृत, दैवप्रेरित ।
आधिपत्य—पु० प्रभुत्व, हुकूमत ।
आधिभौतिक—वि० सर्प, व्याघ्र आदि जीवोंकृत जिसका सम्बन्ध जीवधारियोंसे हो ।
आधीन—वि० अधीन, आश्रित । दीन ।
आधुनिक—वि० आजकलका ।
आधेक—वि०, क्रिवि० 'आधिक', लगभग आधा, थोड़ा
आधेय—पु० आधारपर स्थित वस्तु । वि० रखने योग्य ।
आध्यात्मिक—वि० आत्मासम्बन्धी ।

आध्यात्मिकता—स्त्री० आत्मवाद ।

आनंद—पु० खुशी, आह्लाद, सुख ।

आनंदना—अक्रि० आनन्दित या प्रसन्न होना 'खरभर परी हैत आनन्दे जीयो पहिली राति ।' सूरा० ४९

आनंदवन—पु० काशीका एक नाम ।

आनंद सम्मोहिता—स्त्री० प्रौढ़ा नायिकाका एक भेद ।

आनंदित—वि० प्रसन्न, प्रमुदित ।

आनंदी—वि० प्रसन्न, सुखी ।

आन—स्त्री० सौगन्ध, मर्यादा, घोषणा 'फिरी आन ऋतु बाजन बाजे ।' प० ८६ । बहुत थोड़ा समय । शान, दबाव, शर्म, भय, दुहाई 'दैहौं मिलाइ तुमैं हौं तिहारिये आन करौं वृषभानु ललीसौं ।' रवि० ९, 'सुन्दर कहत जब चेतन सकति गयी उहै देह ताकी कोउ मानत न आन है ।' सुन्द० ३४ । हठ । वि० दूसरा 'अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु राम न देखेउँ आन । रामा० ५८१

आनक—पु० दुन्दुभी, नगाड़ा । गड़गड़ाता हुआ बादल ।

आनकदुंदुभी—पु० वसुदेव, 'बालक आनकदुदुभीके भयो दुंदुभी बाजत आनके द्वारे ।' बड़ा डंका ।

आनत—वि० नम्र । झुका हुआ ।

आनतान—स्त्री० असम्बद्ध बात । टेक । मर्यादा ।

आनन—पु० मुख ( रामा० ४९१ ) ।

आनन फानन—क्रिवि० तुरन्त, झटपट, जल्द ।

आनना—सक्रि० लाना 'आनहु चर्म कहति वैदही ।' रामा० २७८, ( कें० २८१, रामा० ४२१ ) ।

आनबान—स्त्री० शान, सजधज, ठसक ।

आनयन—पु० लाना । उपनयन-संस्कार ।

आनर्त—पु० नाचघर । युद्ध । एक देश ।

आना—अक्रि० पहुँचना, (क्रोधादि) उत्पन्न होना, जिम्मे निकलना, ठीक होना, समाना, दामपर मिलना । आगत होना, उपस्थित होना ( पभृ० २ ), ज्ञान या अभ्यास होना । पु० रुपयेका सोलहवाँ भाग । आये दिन = प्रतिदिन । बातोंमें— = भुलावेमें पड़ना, बातोंमें प्रभावित होना । [ या इशारेकी बात ।

आनाकानी—स्त्री० आगापीछा, टालमटूल । कानाफूसी

आनि—स्त्री० आन, सौगन्ध । मर्यादा ।

आनी जानी—वि० स्त्री० आने जानेवाली, अस्थिर ।

आनुगत्य—पु० अनुसरण ( साकेत २०१ ) ।

आनुमानिक—वि० अनुमान सम्बन्धी या अनुमानसे प्राप्त, अनुमानसिद्ध ।

आनुषंगिक—वि० प्रासंगिक, किसीके साथ होनेवाला ।

आप—सर्व० स्वयं । तुम, वे । पु० पानी । परमात्मा । —ही आप—क्रिवि० स्वगत, मन ही मन । अपने मनसे, अन्य किसीकी प्रेरणासे नहीं ।

आपगा—स्त्री० नदी ( ललित ७० ) ।

आपण—पु० बाजार ।

आपत—स्त्री० आपत्ति, दुःख ।

आपत्ति—स्त्री० दुःख, विघ्न । एतराज । दोष लगाना ।

आपद,-दा—स्त्री० आपत्ति । दुःख, क्लेश ।

आपद्धर्म—पु० संकट कालके लिए बताया गया धर्म ।

आपन,-ना,-नो—सर्व० अपना 'एहिते जानहु मोर हित, कै आपन बड़ काज ।' रामा० २८४ सक्रि० अर्पना, देना 'बछरान च पै औ न गाय पै आपै है ।' रत्ना० ५८१ । आरोपित करना, मढ़ना (रत्ना० ४१४) ।

आपन—पु० आत्मा 'तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम सो आपन पहिचानै ।' विन० २७६

आपनपो,-पौ—पु० आत्मभाव, अहंकार (राम४४)। सुध।

आपन्न—वि० विपद्ग्रस्त ।

आपनिधि—पु० समुद्र (कविप्रि० ११२, ११५) ।

आपस—पु० सम्बन्ध, नाता । आपसमें = परस्पर ।

आपा—पु० अपना अस्तित्व, सुधबुध । अहंकार 'आपा मेटे गुरु भजे, तब पावे करतार ।' साखी ३, ( १६० ) आपेसे बाहर होना = अत्यन्त उत्तेजित होना, क्रो या आनन्दकी प्रबलतामें अपने आपको भूल जाना ।

आपात—पु० पतन, घटनाका होना । आरम्भ । अन्त

आपाततः—क्रिवि० अकस्मात् । निदान, अन्ततः, सम्प्र काम चलानेके लिए ।

आपादमस्तक—क्रिवि० पैरसे सिरतक ।

आपाधापी—स्त्री० अपनी अपनी फिक्र, खींचतान ।

आपान आपानक—पु० सुरापान करनेकी जगह, मदिर सेवियोंका समूह ।

आपापंथी—वि० यथेच्छाचारी, कुमार्गी ।

आपी—पु० पूर्वाषाढ़ नामक नक्षत्र ।

आपु—सर्व० आप, खुद ।

आपुन, आपुनो—सर्व० अपना ।

आपुस—पु० आपस ।

आपूरना—अक्रि० भरना ।

आपेक्षिक—वि० सापेक्ष, आश्रित रहनेवाला ।
आप्त—वि० प्राप्त । कुशल, पूर्णतया विश्वसनीय या प्रामाणिक । पु० ऋषि, यथार्थवक्ता, सम्बन्धी ।
आप्तकाम—वि० जिसकी कामना पूरी हो गयी हो ।
आप्ति—स्त्री० प्राप्ति, लब्धि । [ पुष्टिकारक वस्तु ।
आप्यायन—पु० वर्धन तृप्त करना, सन्तोष, मोटा होना,
आप्यायित—वि० बढ़ा हुआ । सन्तुष्ट । रूपान्तरित ।
आप्लावन—पु० भिगोने या डुबानेकी क्रिया ।
आप्लुत—वि० डूबा हुआ, तराबोर ।
आफत—स्त्री० विपत्ति, मुसीबत, ऊधम । आफतका परकाला = विकट मनुष्य, घोर प्रयत्न करनेवाला ।
आफताब—पु० सूर्य ( भू० १७९ ) ।
आफताबी—वि० सूर्य सम्बन्धी । गोल । स्त्री० एक तरहका पंखा जिसपर सूर्यका चिह्न बना रहता है। एक आतशबाजी, द्वारके सामनेका सायबान ।
आफू—स्त्री० अफीम । [†(बि०१८०),प्रतिष्ठा,उत्कर्ष ।
आब—पु० पानी । स्त्री० चमक, आभा, शोभा †
आबकार—पु० शराब बेचनेवाला, कलवार ।
आबकारी—स्त्री० शराबकी भट्ठी । मादकद्रव्य सम्बन्धी❀
आबखोरा—पु० गिलास, कटोरा । [❀सरकारी मुहकमा ।
आबताब—स्त्री० चमक-दमक । शोभा ।
आबदस्त—पु० पानी छूना, सौचना ।
आबदाना—पु० अन्नजल । रोज़ी ।
आबदार—वि० चमकवाला ।
आबद्ध—वि० बँधा हुआ, जकड़ा हुआ ।
आबनूस—पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ीका हीर काला
आबपाशी—स्त्री० सिंचाई । [ होता है ।
आबरवाँ—पु० बारीक मलमल ।
आबरू—स्त्री० इज़्ज़त, मान, प्रतिष्ठा ।
आबहवा—स्त्री० जलवायु ।
आबाद—वि० बसा हुआ । प्रसन्न । चासोपयोगी ।
आबादी—स्त्री० जनसंख्या । खेतोकी भूमि ।
आबी—वि० पानी सम्बन्धी या पानीका । फीका ।
आब्दिक—वि० सालाना ।
आभ—स्त्री० कान्ति, शोभा । पु० पानी ।
आभरण,-न—पु० भूषण, गहना । पालन-पोषण ।
आभा—स्त्री० कान्ति, चमक । झलक, प्रकाश-रेखा ।
आभार—पु० बोझ । गृहस्थीका बोझ । अहसान ।
आभारी—वि० कृतज्ञ ।
आभास—पु० प्रतिबिम्ब, झलक । संकेत । झूठा ज्ञान ।
आभीर—पु० ग्वाल, अहीर । एक छन्द ।
आभूषण, आभूषन—पु० गहना, अलंकार ।
आभोग—पु० सुखादिका पूर्ण अनुभव । वरुणका छत्र । सर्पका फण 'धरापुत्र ज्यौं स्वर्णमाला प्रकासै । किधौं ज्योति सी तक्षकाभोग भासै ।' राम० ५०२
आभ्यंतर, आभ्यंतरिक—वि० भीतरी ।
आमंत्रण—पु० न्योता, बुलावा ।
आमंत्रित—वि० निमन्त्रित ।
आम—पु० एक फल या पेड़, रसाल, सहकार । वि० प्रसिद्ध । साधारण । कच्चा 'बिगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम घरो सो ।' विन० ४०७ । पु०आँव।
आमखास—पु० राजसभा ( हमीर हठ १६ ) ।
आमड़ा—पु० आमकी तरहका एक फल ।
आमद—स्त्री० आगमन । आमदनी ।
आमदनी—स्त्री० प्राप्ति । आय ।
आमन—स्त्री०अगहनी धानकी फसल।एक फसलका खेत।
आमना—अक्रि० आना ।
आमना सामना—पु० भेंट, मिलन, मुक़ाबला ।
आमनी—देखो 'आमन' ।
आमने सामने—क्रिवि० एक दूसरेके सम्मुख ।
आमय—पु० रोग, बीमारी ( विन० २९६ ) ।
आमरख—पु० क्रोध ( दीन० २२५ ) ।
आमरखना—अक्रि० क्रोध करना ।
आमरण—क्रिवि० मरनेके समयतक, मृत्यु पर्यन्त ।
आमर्ष—पु० क्रोध । एक सञ्चारी भाव ।
आमलक—पु० आँवला ।
आमातिसार—पु० आँवके दस्तोंकी बीमारी ।
आमात्य—पु० अमात्य, मन्त्री ।
आमादगी—स्त्री० आमादा होनेकी क्रिया या भाव,
आमादा—वि० तैयार, उद्यत । [ मुस्तैदी ।
आमाशय—पु० पेटके भीतर भोजन पचनेका स्थान ।
आमिख—पु० आमिष, मांस ( साखी १७७ ) ।
आमिर, आमिल—पु० काम करनेवाला, हाकिम 'नव नागरि तन मुलक लहि ,जोबन आमिल जोर । घटि बढ़िते बढ़ि घटि रकम करी और की ओर ।' बि० ९२। ओझा, सिद्ध । वि० अम्ल, खट्टा ।

आमिष—पु० मांस। लोभ। भोग्य वस्तु।
आमी—स्त्री० अँबिया, छोटा आम ( सूवे० ३६५ )।
आमुख—पु० नाटकका अङ्ग-विशेष, प्रस्तावना।
आमूल—वि०आरम्भसे क्रिवि० जड़से,मूलपर्यन्त,पूर्णतः।
आमेजना—सक्रि० मिलाना।
आम्रेडना—पु० पाठकी आवृत्ति।
आमोद—पु० आनन्द, दिलबहलाव। सुगन्धि 'कमल तजि तनु रचत नाहीं आकको आमोद।' सू० २५१
आमोदित—वि० सुगन्धित।
आमोदी—वि० प्रसन्न रहनेवाला।
आम्र—पु० आमका पेड़ या फल।
आय—स्त्री० आमदनी। अक्रि० है 'आहि'।
आयत—वि० लम्बा चौड़ा। विशाल 'पाथोदगात सरोज मुख राजीव आयत लोचन।' रामा० २८३। स्त्री० कुरानका वाक्य।
आयतन—पु० भवन, मन्दिर। ठहरनेका स्थान। लम्बाई [चौड़ाई।
आयत्त—वि० अधीन।
आयद—वि० आरोपित।
आयस—पु० लोहा, लोहेका कवच।
आयसी—वि० लौह निर्मित। [हरि०, गीता २००
आयसु—पु०स्त्री० आदेश। '...दई आयसु उठि धाओ।'
आया—स्त्री० धाय। अ० क्या, या।
आयात—वि० आया हुआ। पु० बाहरसे आया हुआ माल।
आयास—पु० परिश्रम।
आयु—स्त्री० उम्र, जीवनकाल।
आयुध—पु० हथियार, शस्त्र।
आयुर्बल—पु० आयु।
आयुर्वेद—पु० वैद्यविद्या, चिकित्साशास्त्र।
आयुष्मान्—वि० दीर्घायु। राजकुमार इत्यादिका [सम्बोधन।
आयुष्य—पु० आयु।
आयोजन—पु० प्रबन्ध,उद्योग,तैयारी, नियुक्ति। सामान।
आरंभ—पु० शुरू। अनुष्ठान। उत्थान। शुरूका हिस्सा।
आरंभना—सक्रि० शुरू करना। अक्रि० शुरु होना।
आर—स्त्री० अरि, अड़, हठ 'अँखियाँ करति हैं अति आर।' सू० २००। पु० किनारा, या कोना, निकृष्ट लोहा। पीतल। स्त्री० सूआ, अनी, डंक 'जा दिन ते मोहन गये हैं तजि गोकुलको ता दिनते गोकुलकी गली लगे आर हैं।' दीन० ५०। घृणा।
आरक्त—वि० लाल।
आरक्ति—स्त्री० लालिमा।
आरज—वि० श्रेष्ठ, पूज्य 'टूटि गयो घरको सब बन्धन छूटिगो आरज लाज बड़ाई।' रसखान
आरजा—पु० व्याधि, पीड़ा, बीमारी।
आरजू—स्त्री० इच्छा। विनय, प्रार्थना।
आरण्य,-ण्यक—वि० जंगली। पु० वेदोंकी शाखाका वह भाग जिसमें वानप्रस्थोंके कर्मोंका वर्णन और उनके लिए आवश्यक आदेश है।
आरत—वि० दुःखित, कातर, अस्वस्थ, दुःखपूर्ण 'सुनि कृपाल अति आरत बानी। एक नयन करि तजा भवानी।' रामा० ३५९
आरति—स्त्री० विरक्ति, दुःख 'मो समान आरत नहिं, आरतिहर तोसो।' विन० २२६। हठ 'साँझहि ते अति ही विरुझान्यो चन्दहि देखि करी अति आरति।' सूसु० ८३ (६४)
आरति, आरती—स्त्री० मंगलदीप। वह बर्त्तन जिसमें घी, कपूर इत्यादि रखकर आरती करते हैं। वह स्तोत्र जो आरतीके समय पढ़ा जाय। [प० ९०
आरन—पु० अरण्य,जंगल 'वे पिंगला गये कजरी आरन।'
आरपार—क्रिवि० एक किनारेसे दूसरे किनारेतक, एक ओरसे दूसरी ओरतक। पु० दोनों छोर।
आरबल—पु० आयुर्बल, उम्र।
आरभटी—स्त्री० नाटककी एकवृत्ति जिसमें यमकका प्रचुर प्रयोग होता है। क्रोध इत्यादिकी चेष्टा 'झूठो मन झूठी यह काया झूठी आरभटी।' सू० ५
आरव—पु० आवाज, आहट 'घुरघुरात हय आरव पाये।
आरषी—वि० ऋषियोंकी। [रामा० ८८
आरस—पु० आलस्य 'अति ही नींदर मैन उनींदे, आरस रङ्ग भर्यो है।' अलबेली अलि ( उदे० 'अरसाना', दास० ७९ )। स्त्री० आईना।
आरसी—स्त्री०आईना। अँगूठेमें पहिननेका एक गहना।
आरा—पु० लकड़ी चीरनेका औज़ार। सूजा। पु० आला, ताक 'आरे मणिखचित खरे, बासन बहु बास भरे, राखित गृह गृह अनेक, मनहु मैन साजे।' के १६५, 'जाइ लेहु आरेपर राखो कालिह मोल ले राखे कोरी।' सूवे० ७५
आराइश—स्त्री० सजावट। कागजके फूल-पत्ते इ०

आराकश—पु० आरा खींचनेवाला।
आराजी—स्त्री० जमीन, खेत।
आराति,-ती—पु० शत्रु 'करसि पान सोवसि दिनराती। सुधि नहिं तव सिरपर आराती।' रामा० ३७५
आराधक—वि० उपासना करनेवाला।
आराधन—पु० उपासना, सेवा।
आराधना—स्त्री० पूजा। सक्रि० पूजा करना। सन्तुष्ट करना।
आराधित—वि० पूजित।
आराध्य—वि० उपास्य, पूज्य।
आराम—पु० बग़ीचा। सुख। चैन, सुविधा, विश्राम।
आरामगाह—पु० शयन-गृह। विश्रामगृह।
आरामतलब—वि० आलसी। सुकुमार।
आरास्ता—वि० सुसज्जित।
आरि—स्त्री० हठ, जिद 'कान्ह बलि जाऊँ ऐसी आरि न कीजै।' सूसु० ७७, 'त्रिदसपतिपति असनकों अति जननिसों करै आरि।' सू० ५७। मर्यादा 'उनइ आये साँवरे ते सजनी देखि रूपकी आरि।' सू० २०५
आरी—स्त्री० लकड़ी चीरनेका औजार। सूआ। किनारा, कोर। ओर। वि० हैरान।
आरूढ़—वि० चढ़ा हुआ। दृढ़।
आरेस—पु० ईर्ष्या 'कबहुँ न कियहु सवति आरेसू। प्रीति प्रतीति जान सब देसू।' रामा० २२२
आरो—पु० आरव, आवाज़।
आरोग—वि० आरोग्य, स्वस्थ।
आरोगना—सक्रि० भक्षण करना, खाना।
आरोधना—सक्रि० रोकना।
आरोप,-पण—पु० लगाना, मढना, एक वस्तुमें दूसरी वस्तुके धर्मकी कल्पना। भ्रम।
आरोपना—सक्रि० बैठाना, स्थापित करना, लगाना।
आरोपित—वि० रोपा हुआ, जमाया या लगाया हुआ।
आरोह—पु० चढ़ाव, आक्रमण। आविर्भाव।
आरोहण—पु० चढ़नेका कार्य, सीढ़ी। अंकुरका निकलना।
आरोही—पु० सवार। वि० चढ़नेवाला, बढ़नेवाला।
आर्जव—पु० सरलता, सीधापन।
आर्त्त—वि० दुःखी, विपद्ग्रस्त। अस्वस्थ।
आर्त्तनाद,-स्वर—पु० संकट या दुःखज्ञापक शब्द।
आर्त्तव—वि० ऋतु सम्बन्धी। पु० स्त्रियोंका मासिक रज।
आर्त्ति—स्त्री० दुःख।
आर्थिक—वि० धन सम्बन्धी।
आर्द्र—वि० गीला, तर।
आर्द्रा—स्त्री० एक नक्षत्र। एक छन्द।
आर्य—वि० श्रेष्ठ, पूज्य। पु० श्रेष्ठ या पूज्य पुरुष।
आर्यपुत्र—पु० पति इ० के लिए सम्बोधनका शब्द।
आर्या—स्त्री० पार्वती। सास, श्रेष्ठ या पूज्य स्त्री। पितामही। एक छन्द।
आर्यावर्त्त—पु० उत्तर भारत।
आर्ष—वि० ऋषि सम्बन्धी। ऋषिकृत। वैदिक।
आर्षप्रयोग—पु० बड़े लेखकों या कवियोंका वह विशेष शब्द-प्रयोग जो व्याकरणके विरुद्ध हो।
आलंकारिक—वि० अलंकारमय या अलंकार सम्बन्धी।
आलंब,आलंबन—पु० सहारा, अवलम्बन। जिसके सहारे रसकी उत्पत्ति होती है, वह। साधन।
आलंबित—वि० आश्रित।
आलंभ, आलंभन—पु० स्पर्श, वध।
आल—पु० झंझट। गीलापन। आँसू 'सिसक्यो जल किन लेत हग, भर पलकनमें आल।' रतन० ३३। हरताल। स्त्री० एक पौधा या उससे बना हुआ रंग (भाव० ७), 'आल मजीठ लाख सेंदुर कहुँ ऐसेहि बुधि अवरेखत।' सूबे० १३९। बेटीकी औलाद। वंश या जाति। एक कीड़ा। कद्दू, घीया।
आलकस—पु० आलस्य।
आलजाल—वि० ऊल जलूल ( कबीर ३०७ )।
आलन—पु० दीवारकी मिट्टीमें मिलायी जानेवाली घासइ०।
आलबाल—पु० थाला 'खल बढ़ई बल करि थके, कटै न कुबत कुठार। आलबाल उर झालरी, खरीप्रेम-तरु डार।' बि० १८२। मेघ 'चाह आलबाल और प्रवाहके कलप-तरु, कीरति मयङ्क प्रेम-सागर अपार हैं।' आनन्दघन
आलम—पु० दुनिया। जन-समूह, भीड़। दशा। एक तरहका नाच।
आलमारी—स्त्री० एक तरहका खानेदार खड़ा सन्दूक।
आलय—पु० घर, स्थान।
आलवाल—पु० थाला।
आलस—पु० सुस्ती। वि० सुस्त।
आलस्य—पु० सुस्ती०। अनुत्साह।
आलसी—वि० सुस्त।
आला—पु० ताक, ताखा। हथियार। कुम्हारका आँवाँ। वि० श्रेष्ठ। गीला। हरा, ताज़ा। ( रतन० ९९ )

आलात—पु० जलती हुई लकड़ी।
आलान—पु० हाथी बाँधनेका खूँटा। बन्धन, झंझट।
आलाप—पु० बातचीत, तान।
आलापना—देखो 'अलापना'।
आलापिनी—स्त्री० बाँसुरी।
आलापी—वि० बोलनेवाला, गानेवाला।
आलारासी—वि० लापरवाह, जहाँ किसी बातकी परवाह [न हो।
आलिंगन—पु० अंक लगाने या भेंटनेकी क्रिया परिरम्भण।
आलिंगना—सक्रि० भेंटना, हृदयसे लगाना '(राजलक्ष्मी) गुनगंननि आलिंगति नहीं।' के० ५२
आलिंगित—वि० आलिंगन किया जाना।
आलि—स्त्री० सखी। पंक्ति, कतार। रेखा, बाँध। [† बिच्छू। भ्रमरी।
आलिम—वि० विद्वान्।
आली—स्त्री० सखी 'पुनि आउब एहि बिरियाँ काली। अस कहि मन बिहँसी इक आली।' रामा० १२८। पंक्ति 'बरनै दीनदयाल बैठि हंसन की आली। मंद मंद पग देत अहो यह छलकी चाली।' दीन० २०२। वि० श्रेष्ठ। वि० स्त्री० गीली।
आलीजाह—वि० ऊँचे पदवाला, ऊँचे दर्जेका, शानवाला।
आलीशान—वि० विशाल। शानदार।
आलू—पु० एक तरकारी।
आलूचा—पु० एक पेड़ या उसका फल।
आलूबुखारा—पु० एक खट-मिट्ठा फल।
आलेख—पु० लिखावट।
आलेख्य—वि० लिखने योग्य। पु० चित्र, तस्वीर।
आलेप—पु० लेप, पलस्तर।
आलेपन—पु० लेपनेकी क्रिया।
आलोक—पु० प्रकाश, ज्योति। दर्शन।
आलोकन—पु० दर्शन।
आलोचक—वि० आलोचना करनेवाला।
आलोचन—पु० जाँच, समीक्षा, दर्शन, गुणदोष विवेचन।
आलोचना—स्त्री० देखो 'आलोचन'।
आलोड़न—पु० हिलोरने या मथनेकी क्रिया। मनन।
आलोड़ना—सक्रि० मथना। भलीभाँति सोचना-विचारना।
आल्हर—वि० ताजा, अच्छे दरजेका। ग्राम० ३९
आल्हा—पु० 'वीर' छन्द जिसमें ३१ मात्राएँ होती हैं। महोबाके प्रसिद्ध वीरका नाम। प्रधानतः महोबेके प्रसिद्ध वीरों आल्हा, ऊदल आदिकी कथाको लेकर [लिखा गया गीतिकाव्य।
आव—वि० देखो 'आउ'।
आवज, आवझ—पु० एक बाजा, ताशा 'मंद मंद धुनि सों घन गाजैं। तूर तार जनु आवझ बाजैं।' राम० २९८
आवटना—पु० उथल पुथल। अस्थिरता। सक्रि० औटना, गरम करना (बि० १०२)।
आवन—पु०, आवनि—स्त्री० आगमन।
आवभगत—स्त्री०,-भाव—पु० आदर सत्कार।
आवरण—पु० ढकन। परदा। अज्ञान।
आवरित—वि० आवृत्त, ढँकाहुआ (कलस ३६०)।
आवर्जना—वि० स्त्री० झुकी हुई 'बनआवर्जना मूर्ति दीना अपनी अतृप्ति सी सचित हो' कामायनी १०२।
आवर्जित—वि० परित्यक्त।
आवर्त्त—पु० पानीका भँवर। चिन्ता। संसार। पानी न बरसनेवाला बादल।
आवर्त्तन—पु० फिराव, मथन। छायाका फिरना। तीसरा [पहर
आवलि,-ली—स्त्री० पंक्ति, श्रेणी, कतार।
आवश्यक—वि० ज़रूरी।
आवश्यकता—स्त्री० ज़रूरत, प्रयोजन।
आवश्यकीय—वि० आवश्यक, जरूरी।
आवाँ—पु० देखो 'अवाँ'।
आवागमन,-गवन,-गौन-पु० आमदरफ्त। जन्ममरण।
आवागमनी—वि० आने जानेवाला, जीने मरनेवाला।
आवाज—स्त्री० शब्द, ध्वनि। बोली। शोर।
आवाजा—पु० व्यंग्य, ताना।
आवाजानी—स्त्री० जन्ममरण 'धर्मदास कबीर पिय पाये मिट गई आवाजानी।' धर्मदास
आवारगी—स्त्री० शुहदापन, व्यर्थ इधर ऊधर घूमनेकी [क्रिया।
आवारजा—पु० अवारजा, जमाखर्च, वही।
आवारा—वि० निकम्मा। बदमाश।
अवारागर्द—वि० बेकार घूमनेवाला।
आवाल—स्त्री० पंक्ति, कतार, श्रेणी।
आवास—पु० वासस्थान, मकान।
आवाहन—पु० मन्त्र द्वारा देवताको बुलाना।
आवाहना—सक्रि० आमन्त्रित करना।
आविद्ध—वि० भिदा हुआ।
आविर्भाव—पु० उत्पत्ति, जन्म, प्रकट होनेका कार्य 'ताके गृह कियो आविर्भाव।' सू०। आवेश। प्रकाश।
आविर्भूत—वि० उत्पन्न, प्रकटित।

आविल—वि० गन्दा, खराब, काला-सा।
आविलता—स्त्री० गन्दगी, खराबी ( प्रिय० २१८ ।
आविष्कर्त्ता—पु० ईज़ाद करनेवाला।
आविष्कार—पु० प्रकटीकरण, ईज़ाद।
आविष्कारक—वि० आविष्कर्त्ता।
आविष्कृत—वि० जिसका आविष्कार हुआ है।
आवृत—वि० छिपा हुआ। घिरा हुआ।
आवृत्ति—स्त्री० दुहराना, किसी बातका बार बार होना।
आवेग—पु० जोश। एक सञ्चारी भाव।
आवेदन—पु० निवेदन, विनती।
आवेदनपत्र—पु० निवेदनपत्र, अर्ज़ी।
आवेश—पु० वेग, जोश, व्याप्ति; दौरा।
आवेष्टन—पु० छिपाना। ढाँकनेकी चीज़।
आशंका—स्त्री० डर; सन्देह।
आश—स्त्री० आशा।
आशना—पु०, स्त्री० प्रेमपात्र। प्रेमी।
आशनाई—स्त्री० प्रेम, लगन, आसक्ति।
आशय—पु० मतलब। रहस्य, इच्छा। आधार। गड्ढा।
आशर—पु० देखो 'आसर', राक्षस। अग्नि।
आशा—स्त्री० सफलताका थोड़ा बहुत निश्चय व तदुत्पन्न सन्तोष, उम्मीद। दिशा।
आशिक—वि० अनुरक्त। पु० प्रेम करनेवाला व्यक्ति।
आशिक़ाना—वि० आशिकों जैसा।
आशियाँ, आशियाना—पु० बसेरा। घोंसला। रहनेका [ स्थान।
आशिष्—स्त्री० आशीर्वाद, दुआ।
आशी—वि० इच्छुक।
आशीर्वाद—पु० दुआ। स्वस्तिवचन।
आशीविष—पु० साँप 'आशीविष दोषनकी दरी। गुरु सतपुरुष न कारन घरी।' के० ५४
आशु—क्रिवि० शीघ्र।
आशुकवि—पु० शीघ्र कविता करनेवाला कवि।
आशुग—पु० वायु।
आशुतोष—वि० शीघ्र प्रसन्न होनेवाला। पु० शिव।
आश्चर्य—पु० अचम्भा, विस्मय। [ चार अवस्थाएँ।
आश्रम—पु० तपोवन, कुटी। जीवनकी ब्रह्मचर्य आदि
आश्रय—पु० सहारा, शरण। भरोसा। घर। आधार-
आश्रयण—पु० आश्रय लेनेका कार्य। [ वस्तु।
आश्रित—वि० सहारेपर स्थित। अधीन, शरणागत।

आश्लेष—पु० आलिंगन, भेंट, लगाव।
आश्लेषण—पु० मेल। [ धैर्य धारण किया हो।
आश्वस्त—वि० जिसे आश्वासन हो गया हो, जिसने
आश्वास,-सन—पु० सान्त्वना, दिलासा।
आश्विन—पु० भाद्रपदके बादका मास।
आषाढ़—पु० जेठके बादका महीना।
आसंग—क्रिवि० लगातार। पु० सम्बन्ध, साथ, अनुरक्ति।
आस—स्त्री० आशा 'ग्रीसम भीखम सो सबै नहिं लाली-की आस।' दीन० २१६। कामना 'होत उजागर बन बगर सगुप मलिन तब आस। तजि माधवी सुप्रीति-को, बिहरत पास पलास।' दीन० २०५। भरोसा, सहारा। दिशा 'आई बहुरि बसंत ऋतु विमल भई दस आस। रघु० २६। पु० धनुष।
आसकत—स्त्री० आलस्य, काहिली, सुस्ती।
आसक्त—वि० मुग्ध, लिप्त। अनुरक्त।
आसक्ति—स्त्री० लगन, प्रेम, अनुरक्ति।
आसति—स्त्री० सत्य। आसक्ति, समीपता, मुक्ति 'सूर तुरत यह जाय कहौ तुम ब्रह्म बिना नहीं आसति। [ भ्र० ३
आसते—क्रिवि० धीरे धीरे।
आसतोष—वि० जल्द प्रसन्न होनेवाला। पु० शिवजी।
आसत्ति—स्त्री० समीपता। सम्बद्ध। शब्दोंका बिना व्यव-धानके पास रखा जाना।
आसथान—पु० आस्थान, बैठनेका स्थान, सभा।
आसन—पु० बैठनेकी विधि। स्थिति। बैठकी, पीढ़ा या बिछौना 'बातैं बनाइ बनाइ कहा कहै छोड़ि दे आसन बासनको।' राम० ७४। निवास।
आसना—अक्रि० होना 'कोटि मनोज लजावन हारे। सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे।' राम० २५४
आसनी—स्त्री० बैठनेभरका बिछावन।
आसन्न—वि० सन्निकट, पास आया हुआ। समीपका।
आसपास—क्रिवि० इधर उधर, निकट।
आस्फालन—पु० रगड़, झटका ( प्रिय० १७२)। गर्व।
आसमां-आसमान—पु० आकाश, स्वर्गलोक।—ताकना=गर्वसे तनना।—टूट पड़ना=सहसा विपत्तिका आ पड़ना—पर चढ़ना=इतराना।—सिर-पर उठाना=हुल्लड़ मचाना, आन्दोलन करना।
आसमानी—वि० आसमानकेरंगका। ईश्वरीय। आकाश सम्बन्धी। स्त्री० ताड़ी।

आसमुद्र—क्रिवि० समुद्र पर्यन्त ।
आसय—पु० आशय । इच्छा । आधार ।
आसर—पु० राक्षस 'काहु कहूँ सर आसर मारेउ । आरत सद् अकास पुकारेउ ।' राम० ७९
आसरना—सक्रि० आश्रय लेना ।
आसरा—पु० अवलम्ब, भरोसा, सहारा । शरण । प्रतीक्षा । आशा ।
आसव—पु० मद्य 'प्रेम रसासव छकि दोऊ करत विलास विनोद ।' सूरदास । अर्क । औषधिका भेद-विशेष ।
आसवी—वि० शराब पीनेवाला ।
आसा—पु० देखो 'आशा' । सोने चाँदीका डंडा (सुजा०८)
आसाइश—स्त्री० आराम ।
आसाढ़—पु० आषाढ़ मास ।
आसान—वि० सरल, सहज ।
आसानी—स्त्री० सरलता ।
आसार—पु० लक्षण, चिह्न । स्त्री० मूसलधार वृष्टि ।
आसावरी—स्त्री० एक रागिनी । असावरी ।
आसिख, आसिखा—स्त्री० आशीर्वाद ।
आसिन—पु० कुआँर मास ।
आसिरवचन—पु० आशीर्वादके शब्द, 'वन्दि वन्दि पद सिय सबहीके । आसिरवचन लहे प्रिय जीके ।'
आसीन—वि० विराजमान, बैठा हुआ । [ रामा०३१६
आसीस—स्त्री० आशीर्वाद ।
आसीसा—पु० उसीसा, तकिया ।
आसु—क्रिवि० आशु, शीघ्र । सर्व० इसका ।
आसुग—वि० वायु ।
आसुतोष—देखो 'आशुतोष' ।
आसुन—पु० आश्विन मास 'निधिमुनिवसु ससि सालमें आसुन मास प्रकास ।' दीन० ९०
आसुर—वि० असुर सम्बन्धी । पु० असुर ।
आसुरी—वि० राक्षसी । स्त्री० राक्षसकी स्त्री ।
आसूदा—वि० सन्तुष्ट, तृप्त । सम्पन्न ।
आसेब—पु० प्रेतबाधा ।
आसोज—पु० कुआँर मास 'आसोजाका मेह ज्यों बहुत'।
आसों—क्रिवि० इस वर्ष । [ करै उपकार ।' साखी १२२
आस्तर—पु० हाथीकी झूल । बिछौना ।
आस्तिक—वि० ईश्वर(वेद,परलोक इ०) को माननेवाला । पु० ईश्वर, वेद इत्यादिको माननेवाला पुरुष ।
आस्तीन—स्त्री० बाँहीं ।
आस्था—स्त्री० श्रद्धा ।
आस्पद—पु० स्थान, कार्य । प्रतिष्ठा । वंश ।
आस्य—पु० मुख, चेहरा ।
आस्रव—पु० उबलते हुए चावलका फेन । पनाला ।*
आस्वाद—पु० स्वाद, मज़ा । [ * इन्द्रियद्वार।
आस्वादन—पु० चखना ।
आश्वासन—पु० सान्त्वना ।
आह—अ० दुःख, ग्लानि इ० सूचक शब्द । पु० साहस, उलदत मद अनुमद ज्यों जलधिजल,बल हद भीम कद, काहुके न आहके (हाथी) ।' भू० १८२ । क्रोध,ललकार 'गह्यो राहु, अति आहु करि, मनु ससि सूर-समेत । वि० १४७। बल । स्त्री० वेदनासूचक शब्द, ठंढी साँस।
आहट—स्त्री० चलनेका शब्द । आवाज़ । पता, टोह ।
आहत—वि० घायल, गलित, जीर्ण । कम्पित ।
आहति—स्त्री० चोट ।
आहन—पु० लोहा ।
आहर—पु० समय, दिन, युद्ध ।
आहरण—पु० ग्रहण करना, छीन लेना ।
आहरन—पु० निहाई ।
आहव—पु० युद्ध । यज्ञ ।
आहाँ—स्त्री० दुहाई । पुकार या बुलावा अ० 'नहीं'।
आहा—स्त्री० 'धन्य धन्य' 'मैं आहा पदमावति चली ।'
आहार—पु० भोजन, खुराक । [ प० ८६,
आहारविहार—पु० खान-पान इत्यादि ।
आहार्य—पु० नायक-नायिकाका एक दूसरेका वेश ग्रह करना। वि०खाने योग्य । ग्रहण किया हुआ । बनावः
आहित—वि० बन्धक रखा हुआ ।
आहिस्ता—क्रिवि० धीरे धीरे । धीरेसे ।
आहुति,-ती—स्त्री० हवन । हवनमें छोड़नेकी सामग्री
आहूत—वि० निमन्त्रित, बुलाया हुआ ।
आहृत—वि० हरण किया हुआ, लाया हुआ ।
आह्निक—वि० दैनिक पु० अध्यापक । एक दिनक [ काम या मजदूरी
आह्लाद—पु० खुशी । आनन्द ।
आह्वय—पु० नाम ।
आह्वान—पु० बुलावा, पुकार। यज्ञमें देवताओंका बुलाना

# इ

इंग—पु० हिलना । चिह्न, संकेत । हाथी-दाँत ।
इंगन—पु० संकेत करना । हिलना ।
इंगला—स्त्री० इड़ा नामकी नाड़ी ।
इंगैव—पु० शकरदन्त ( कविप्रि० ८५ ) ।
इंगित—पु० संकेत । चेष्टा । वि० हिलता हुआ ।
इंगुद—पु०, इंगुदी—स्त्री० हिंगोट वृक्ष ।
इंगुर—पु० ईंगुर ।
इंचना—अक्रि० खिंचना ।
इंजील—स्त्री० ईसाइयोंका धर्मग्रंथ, बाइबिल ।
इंडहर—पु० उर्दकी दालसे बना खाद्य विशेष ।
इंडुरी,-स्त्री० इंडुवा—पु० गेंडुरी, बिड़ई ।
इंतकाल—पु० अन्तसमय, मृत्यु ।
इंतखाब—पु० खुलासा, सारांश, निचोड़, इत्र ।
इंतज़ाम—पु० व्यवस्था, प्रबन्ध ।
इंतज़ार—पु० रास्ता देखना, प्रतीक्षा ।
इंतहा—पु० अन्त ।
इंद, इंदर—पु० इन्द्र । ( इन्द, सूसु० १८३ ) ।
इंदव—पु० एक छन्द ( मत्तगयन्द ) ।
इंदारा—पु० कूप ।
इंदारुन—पु० इन्द्रायन ( विन० ४१३ ) ।
इंदिया—पु० मशा, राय ।
इंदिरा—स्त्री० लक्ष्मी । शोभा, छबि ।
इंदीवर—पु० नीला कमल । कमल ।
इंदु—पु० चन्द्रमा । कपूर ।
इंदुआ—पु० देखो 'इंडुरी' ।
इंदुदह—पु० चन्द्रमाका कुण्ड 'चलित कुण्डल गण्ड-मण्डल, झलक ललित कपोल । सुधासर जनु मकर क्रीडत, इन्दुदह दह डोल ।' सू० ८६
इंदुमणि,-मनि—पु० चन्द्रमणि ।
इंदुर—पु० चूहा 'कीन्हेसि लोवा इंदुर चाँटी ।' प० २
इंद्र—पु० देवराज, पुरन्दर । सूर्य । राजा । स्वामी । ज्येष्ठा नक्षत्र । बिजली । चौदहकी संख्या ( एक मन्वन्तरमें १४ इन्द्र होते हैं ) । कुटज पेड़ । रात्रि । जीव ।
इंद्रगोप—पु० वीरबहूटी ( कविप्रि० ७३ ) ।
इंद्रचाए—०पु इन्द्रधनुष ।
इंद्रजाल—पु० जादूगरी, माया ।
इंद्रजालिक,-जाली—वि० बाजीगर, मायावी ।
इंद्रजित,-जीत—पु० मेघनाद ।
इंद्रधनुष—पु० सात वर्णोंसे युक्त धनुषके ढंगका वह अर्द्ध वृत्त जो प्रायः वर्षाऋतुमें आकाशमें दृष्टिगोचर होता है ।
इंद्रधनुषधर—पु० इन्द्र-धनुष धारण करनेवाला,बादल ।
इंद्रनील—पु० नीलम ।
इंद्रप्रस्थ—पु० पाण्डवोंद्वारा बसाया गया एक नगर ।
इंद्रफल—पु० इन्द्रजव ।
इंद्रयव—पु० कोरैयाका बीज ।
इंद्रलोक—पु० स्वर्ग ।
इंद्रवंशा—स्त्री० एक वर्णवृत्त ।
इंद्रवज्रा—स्त्री० एक वृत्त, 'स्यादिन्द्र वज्रा यदि तौ जगौ गः ।',
इंद्रवधू—स्त्री० वीरबहूटी ।
इंद्रा—स्त्री० इन्द्राणी, इन्द्रायन ।
इंद्राणी,-नी—स्त्री० इन्द्रकी स्त्री, शची । इन्द्रायन । बड़ी इलायची । दुर्गा । वाम नेत्रकी पुतली ।
इंद्रानुज—पु० वामन, विष्णु ।
इंद्रायन—पु० एक लता जिसका फल कडुवा तथा नारंगी के बराबर होता है ।
इंद्रायुध—पु० इन्द्रधनुष । वज्र ।
इंद्राशन—पु० घुँघची । भाँग ।
इंद्रासन—पु० इन्द्रका या राजाका आसन ।
इंद्रिय,-इंद्री—स्त्री० वह शक्ति या वह अवयव जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है । पाँचकी संख्या ।
इंद्रियजित—वि० इन्द्रियोंको वशमें रखनेवाला ।
इंद्रिय-निग्रह—पु० इन्द्रियोंका दमन, इन्द्रियोंको वशमें रखना ।
इंधन—पु० जलानेकी लकड़ी ।
इँनारुन—पु० इन्द्रायन ( विन० ४१३ )
इंसाफ—पु० न्याय, निर्णय, फैसला ।
इकंक—क्रिवि० निश्चय ही 'बाल बरन सम है नहीं रंक मयंक इकंक ।' दास ८६ (५३)
इकंग—वि० एकतरफा । पु० शिवजी । स्थान ।
इकंत—वि० एकान्त । अकेला । नितान्त । पु० निर्जन

इक—वि० एक।

इकइस—वि० इक्कीस। पु० इक्कीसकी संख्या।

इकजोर—क्रिवि० एक साथ।

इकट्ठा—वि० एकत्र किया हुआ। जमा।

इकतर—वि० एकत्र।

इकतरा—पु० अँतरिया बुखार ( छत्र० ६३ )।

इकता,-ताई—स्त्री० ऐक्य।

इकताना—वि० एक सदृश।

इकतार—वि० एक रस। समान। क्रिवि० लगातार।

इकतारा—पु० एक बाजा।

इकतीस—वि० तीस और एक। पु० इकतीसकी संख्या।

इकत्र—क्रिवि० एकत्र।

इकबारगी—क्रिवि० सहसा, एकदमसे।

इकबाल—पु० एकबाल भाग्य, स्वीकार।

इकरस—वि० एकरंग, बराबर।

इकराम—पु० इज्जत। इनाम।

इकरार—पु० स्वीकृति। वादा, प्रतिज्ञा।

इकला—वि० अकेला।

इकलाई—स्त्री० अकेलापन। वह महीन दुपट्टा जो एक [ ही पाटका बना हो।

इकलौता—पु० अकेला पुत्र।

इकल्ला—वि० अकेला। एकहरा।

इकसठ—वि० साठसे एक अधिक। पु० इकसठकी संख्या।

इकसर—वि० अकेला ( देखो 'अकसर' )

इकसूत—वि० एक साथ। इकट्ठा।

इकहरा—वि० एक परतका।

इकहाई—क्रिवि० एक साथ, अचानक, तुरन्त।

इकांत—वि० एकान्त। अलग या अकेला, बिलकुल।

इकेला—वि० अकेला।

इकैठ—वि० इकट्ठा।

इकोतर—वि० एकोत्तर, एक अधिक।

इकौंज—स्त्री० एक प्रसवके बाद बन्ध्या हो जानेवाली स्त्री।

इकौनी—वि० स्त्री० एक, बेजोड़ 'छितकी सी छौनी नूर रासि सी इकौनी विधि चायसों रचौनी गोरी कुन्दनसे गातकी।' रवि० ६०

इकौसो—वि० बिलकुल अलग, एकान्त।

इक्का—पु० ताशका एक पत्ता। वह वीर जो अकेले ही युद्ध करे। एक घोड़ावाली हलकी गाड़ी। वि० अकेला, अद्वितीय।

इक्का दुक्का—वि० एक-दो, एकाध, अकेला-दुकेला।

इक्कावन—वि० पचास और एक। पु० इक्कावनकी संख्या।

इक्कासी—वि० अस्सी और एक।

इक्कीस—वि० बीस और एक।

इक्यावन, इक्यासी—दे० 'इक्कावन', 'इक्कासी'।

इक्षु—पु० ईख, गन्ना।

इक्षुगंधा—स्त्री० इक्षुर—पु० तालमखाना, गोखरू।

इक्ष्वाकु—पु० एक विख्यात सूर्यवंशी राजा। कडुई लौकी।

इखद—वि० ईषद्, थोड़ा, कम।

इखराज—पु० निकास, व्यय।

इखलास—पु० मित्रता, प्रेम, सम्बन्ध ( सुजा० ५७ )।

इखु—पु० बाण।

इख्तियार—पु० अधिकार, सामर्थ्य।

इख्तिलाफ—पु० बिगाड़, विरोध। अन्तर।

इगारह, इग्यारह—वि० दस और एक।

इच्छना—सक्रि० इच्छा करना।

इच्छा—स्त्री० अभिलाषा। लालसा, तृष्णा। रुचि।

इच्छाचारी—वि० अपनी इच्छाके अनुसार चलनेवाला।

इच्छित—वि० चाहा हुआ।

इच्छु—पु० ईख। वि० चाहनेवाला, अभिलाषी।

इच्छुक—वि० अभिलाषी।

इजमाल—पु० साझा, सम्मिलित स्वत्व, समष्टि।

इजराय—पु० जारी करने या काममें लानेकी क्रिया

इजलास—पु० न्यायालय। बैठक।

इजहार—पु० गवाही। प्रकट करना।

इजाज़त—स्त्री० स्वीकृति, अनुमति।

इज़ाफा—पु० वृद्धि, तरक्की ( रतन० १३ )।

इज़ार—स्त्री० पायजामा ( उदे० 'ऊजरा' )।

इजारबंद—पु० नारा कमरबन्द।

इजारा—पु० किरायेपर देना, ठेका। अधिकार।

इज्ज़त—स्त्री० प्रतिष्ठा, मर्यादा, आदर।

इज्ज़तदार—वि० सम्मानित, प्रतिष्ठित।

इज्या—स्त्री० यज्ञ।

इठलाना—अक्रि० घमण्ड करना, इतराना। न करना। अनजान बनना या काममें विलम्ब कर

इठलाहट—स्त्री० ऐंठ, ठसक।

इठाई—स्त्री० रुचि, प्रीति। प्रेम, मित्रता 'भूखे कौ भोजन न भूलत सवाद कवौं नेकहूँ उमेठै गये तै

इठाई सी।' रवि० ४९

इड़ा—स्त्री० पृथिवी। गाय। वाणी। दुर्गा, बुद्धि। अन्न। बाईं ओरकी एक नाड़ी।

इत—क्रिवि० यहाँ, इस तरफ।

इतक़ाद—पु० विश्वास (सुजा० १५)।

इतना, इतनो—वि० इस प्रमाण या मात्राका।

इतनेमें—क्रिवि० इसी बीचमें।

इतमाम—पु० प्रबन्ध, व्यवस्था।

इतमीनान—पु० दिलजमई, विश्वास।

इतर—वि० दूसरा। नीच, साधारण। पु० इत्र, पुष्पसार।

इतराजी—स्त्री० एतराज़, विरोधी, नाराज़ी।

इतराना—अक्रि० घमण्ड करना, इठलाना 'बात कहति ग्वालिनि इतराति।' सूबे० १३३

इतराहट—स्त्री० घमण्ड (रवि० २२)।

इतरेतर—क्रिवि० परस्पर।

इतरौहाँ—वि० जिससे इतराना सूचित हो।

इतवार—पु० रविवार।

इतस्ततः—क्रिवि० इधर उधर।

इताअत, इताति—स्त्री० अनुशासन (दोहा ११७), आज्ञा मानना, ताबेदारी।

इति—स्त्री० समाप्ति। अ० समाप्तिसूचक अव्यय।

इतिवृत्त—पु० कथा, कहानी।

इतिहास—पु० घटनाओंका सिलसिलेवार वर्णन, तवारीख़।

इतेक—वि० इतना।

इतो, इत्तो—वि० इतना, इस मात्राका।

इत्तफ़ाक़—पु० मौक़ा, संयोग। मेल, एकता।

इत्तफ़ाक़न—क्रिवि० संयोगसे।

इत्तफ़ाकिया—वि० आकस्मिक।

इत्तला, इत्तिला—स्त्री० खबर, सूचना।

इत्तहाद—पु० दोस्ती, मुहब्बत, एका।

इत्तहाम—पु० दोष।

इत्थं—क्रिवि० ऐसा, इस प्रकारसे।

इत्यादि—अ० इसी प्रकार और।

इत्र—पु० इतर, पुष्पसार।

इद्ध—वि० चमकता हुआ, प्रज्वलित, ज्वलन्त, आश्चर्यमय, साफ। पु० प्रकाश, धूप, चमक, आश्चर्य।

इधर—क्रिवि० इस ओर। इधर उधर=यहाँ वहाँ, आस पास। चारों ओर। इधर उधर करना=टालमटूल करना। उलट पुलट करना।

इनकलाब—पु० क्रान्ति, उलट पुलट।

इनकार—पु० अस्वीकार। नामन्जूरी।

इनसान—पु० आदमी, मनुष्य।

इनसानियत—स्त्री० मनुष्यता, शिष्टता, भलमनसी।

इनाम—पु० पुरस्कार, बख्शीश।

इनायत—स्त्री० कृपा। एहसान।

इनारा—पु० कुआँ।

इनारुन—पु० इन्द्रायणका फल जो कडुवा होता है 'अमृत खाइ अब देखि इनारुन, को मूरख जो भूलै। हरीचन्द्र ब्रजको कदलीबन, काटौ तौ फिर फूलै।' [ हरि०

इनेगिने—वि० कुछ, कई। गिने गिनाये।

इफ़रात—स्त्री० बहुतायत, अधिकता।

इबरानी, इब्रानी—स्त्री० फिलस्तीनकी पुरानी भाषा। [ वि० यहूदी।

इबादत—स्त्री० उपासना, पूजा।

इबारत—स्त्री० लेख, लिखी हुई बात।

इभ—पु० हाथी।

इमकान—पु० सामर्थ्य, वश (सेवा० १८९)।

इमन—पु० ईमन, ऐमन, एक रागिनी।

इमरती—स्त्री० एक तरहकी मिठाई।

इमली—स्त्री० एक बड़ा पेड़ या उसका फल।

इमाम—पु० अगुआ, पुरोहित।

इमामा—पु० बड़ी पगड़ी (सेवा० १८६)।

इमामवाड़ा—पु० शिया लोगोंके ताजिया दफन करनेका [ हाता।

इमारत—स्त्री० पक्का मकान।

इमि—क्रिवि० इस प्रकार।

इम्तहान—पु० परीक्षा।

इयत्ता—स्त्री० सीमा।

इरषा, इरिषा—स्त्री० डाह, जलन 'पर सम्पदा सकहु नहिं देखी। तुम्हरे इरिषा कपट विशेखी।' रामा० ७८

इरषित—वि० जिससे डाह की गयी हो।

इरा—स्त्री० कश्यपकी स्त्री। पृथिवी, वाणी, जल या अन्न।

इराक़ी—पु० एक तरहका घोड़ा। वि० इराक़ देशका।

इरादा—पु० विचार, इच्छा, संकल्प।

इर्दगिर्द—क्रिवि० चारों ओर। आसपास।

इर्शाद—पु० हुक्म, आज्ञा।

इर्षना—स्त्री० एषणा, बलवती इच्छा।

इलज़ाम—पु० दोष। अभियोग।

इलहाम—पु० देववाणी दिव्य संकेत।
इला—स्त्री० पृथिवी, गौ, सरस्वती। पार्वती। बुद्धिमती स्त्री। इक्ष्वाकुकी पुत्री। वैवस्वत मनुकी कन्या।
इलाक़ा—पु० जमींदारी। राज्य। सम्बन्ध।
इलाज—पु० दवा, तदबीर। चिकित्सा।
इलाम—पु० ऐलान, सूचना, हुक्म 'ठान्यो न सलाम मान्यो साहिको इलाम।' भू० ७७
इलायची—स्त्री० एक वृक्ष या उसका फल।
इलायचीदाना—पु० एक तरहकी मिठाई।
इलावर्त्त,इलावृत्त—पु० जम्बू द्वीपके एक खण्डका नाम।
इलाही—पु० ईश्वर, परमात्मा। वि० ईश्वरीय।
इल्तमास—पु० अर्ज़, निवेदन।
इल्म—पु० विद्या। हुनर, जानकारी।
इल्लत—स्त्री० रोग। दोष। बाधा, झंझट।
इव—अ० समान, नाईं। उपमा-बोधक शब्द।
इशारा—पु० संकेत। सूक्ष्म आधार। संक्षिप्त कथन। गुप्त प्रेरणा।
इश्क़—पु० मुहब्बत, आसक्ति। लगन।
इश्तहार—पु० विज्ञापन, ऐलान। जाहिरात।
इशिका, इशीका इषीका—स्त्री० बाण।
इषण—स्त्री० कामना, प्रबल इच्छा।
इषु—पु० बाण।
इषुधी—पु० तूणीर, तरकस।
इषुमान—वि० तीर चलानेवाला, तीरन्दाज़।
इष्ट—वि० अभिप्रेत, वाञ्छित। पूजित। पु० अभिलषित वस्तु। शुभ कर्म। इष्टदेव। अधिकार। अनुग्रह ('उसे देवीजीका इष्ट है')। मित्र। ईंट।
इष्टता—स्त्री० मित्रता।
इष्टदेव—पु० पूज्य देवता। कुल-देवता।
इष्टि—स्त्री० यज्ञ। इच्छा।
इसपंज—पु० समुद्रमें एक तरहके छोटे कीड़ोंद्वारा बनाया हुआ रुईके समान कोमल सजीव पिण्ड जिसमें बहुतसे छिद्र होते हैं।
इसपात—पु० एक तरहका लोहा।
इसपार—पु० इस ओर, इस संसारमें।
इसबगोल—पु० ओषधि विशेष।
इसरार—पु० हठ, अनुरोध।
इसलाम—पु० मुसलमानी धर्म।
इसलाह—पु० संशोधन।
इसाई—वि० ईसाको माननेवाला।
इसारत—स्त्री० इशारा, इंगित, संकेत।
इस्तमरारी—वि० नित्य, स्थायी।
इस्तरी, इस्त्री—स्त्री० स्त्री 'घरमें साकट इस्तरी आप कहावै दास।' सखी १४१
इस्तिरी—स्त्री० कपड़ेकी शिकन दूर करनेका एक औज़ार।
इस्तीफा—पु० त्यागपत्र।
इस्तेमाल—पु० प्रयोग।
इस्म—पु० नाम।
इस्लामी—वि० इस्लाम धर्म सम्बन्धी, मुसलमानी 'बढ़ता ही चला राष्ट्र इस्लामी' अणिमा ४१
इहतियात—स्त्री० बचाव। सावधानी।
इहसान—पु० एहसान, कृतज्ञता।

---

# ई

ईंगुर—पु० लाल रंगका एक खनिज पदार्थ जिसकी बिन्दी आर्य ललनाएँ ललाटपर लगाती हैं।
ईंचना—सक्रि० खींचना, ऐंचना।
ईंट—स्त्री०, ईंटा—पु० पकाया हुआ मिट्टीका चौखूँटा लम्बा टुकड़ा जिसका प्रयोग दीवार आदि बनानेमें होता है। धातुका चौखूँटा ढला हुआ टुकड़ा। -से-बजाना=मकान नष्ट करना, जमींदोज करना। डेढ़ (ढाई) ईंटकी मसजिद अलग बनाना = अपनी ही हाँकना, अपनी ही बातपर चलना।
ईंडरी, ईंडुरी—स्त्री० कुण्डली, गेंडुरी, बिढ़ई।
ईंधन—पु० जलानेकी लकड़ी, जलावन (राम० ३९)।
ई—स्त्री० लक्ष्मी। सर्व० यह। अ० ही 'नितप्रति पूनौं रहै आनन ओप उजास।' बि० ३६
ईक्षण—पु० देखना, दर्शन। नेत्र। जाँच।
ईख—स्त्री० इक्षु, ऊख, गन्ना।
ईखना—सक्रि० देखना। स्त्री० इच्छा 'त्रिवि

बार बार बहै ईखनाकी झालरैं चहूँघा लता लालसा विशाल हैं ।' दीन १५८
ईछन—पु० ईक्षण, आँख ( उदे० 'तीछन' ) ।
ईछना—सक्रि० इच्छा करना ।
ईछा—स्त्री० इच्छा ।
ईजति—स्त्री० इज्ज़त, मर्यादा ( भू० १२२ ) ।
ईजाद—पु० आविष्कार ।
ईजान—वि० यजमान ।
ईठ—पु०, स्त्री० इष्ट, प्रियजन सखा या सखी । वि० इष्ट, प्यारा 'माखन सो मन दूध सो जोबन है दधिते अधिकै उर ईठी ।' देव० ( व्रज० २८७ )
ईठना—अक्रि० इच्छा करना 'लोने मुह डीठि न लगे, यों कहि दीनों ईठि । दूनी ह्वै लागन लगी दिये डिठौना डीठि ।' बि० १७
ईठि—स्त्री० प्रीति, मित्रता 'बोलिये न झूठ, ईठि मूढ़ पै न कीजिये ।' के ३८५ । यत्न, चाह ।
ईठी—स्त्री० भाला । वि० स्त्री० प्यारी । देखो 'ईठ' ।
ईड़ा—स्त्री० स्तुति ।
ईढ़—स्त्री० हठ 'बोलिये न झूठ ईढ़ मूढ़ पै न कीजिये ।' के० ३८५ ( पाठान्तर-ईठि ) ।
ईतर—वि० इतरानेवाला, नीच ।
ईति—स्त्री० कृषि बिगाड़नेवाले उपद्रव, विघ्न, इत्यादि । विघ्न, बाधा, दुःख ।
ईद—स्त्री० एक मुसलमानी त्योहार ।
ईदृश—वि० ऐसा । क्रिवि० इस तरह ।
ईप्सा—स्त्री० अभिलाषा, इच्छा ।
ईप्सित—वि० वाञ्छित ।
ईबीसीबी—स्त्री० सिसकारकी आवाज़ ।
ईमान—पु० विश्वास । सत्य । सद्वृत्ति ।
ईमानदार—वि० सच्चा । विश्वासपात्र ।
ईरखा—स्त्री० ईर्षा । डाह, जलन ।
ईरमद—पु० 'इरम्मद' । वज्राग्नि, बिजली ।
ईरान—पु० फारस ।
ईर्षणा—स्त्री० ईर्षा, डाह ।
ईर्षा, ईर्ष्या—स्त्री० डाह, जलन ।
ईर्षालु—वि० ईर्ष्या करनेवाला ।
ईश—पु० स्वामी । ईश्वर । शिव । राजा । ग्यारहकी संख्या
ईशता—स्त्री० स्वामित्व, ईश्वरत्व ।
ईशान—पु० स्वामी । शिव । ग्यारहकी संख्या । पूर्वोत्तर [कोण ।
ईशिता—स्त्री० एक सिद्धि जिसकी साधनासे सबपर प्रभुत्व किया जा सकता है ।
ईश्वर—पु० स्वामी, भगवान् । महादेव ।
ईषत्, ईषद—वि० थोड़ा, कम, कुछ ( सू० १२७ ) ।
ईषना—स्त्री० एषणा, बलवती इच्छा ।
ईषिका—स्त्री० तूलिका ।
ईषु—पु० इषु; बाण 'बली बिक्रमी धीर सोभा प्रकासी । नस्यौ हर्ष ह्वौ ईषु वर्षै बिनासी ।' के० ३१७
ईस—पु० 'ईश', स्वामी । महादेव ।
ईसर—पु० महादेव 'पुनि आगे का देखै राजा । ईसर केर घंट रन बाजा ।' प० १२६
ईसवी—वि० ईसाका, ईसा सम्बन्धी ।
ईसाई—वि० ईसाद्वारा प्रवर्तित । पु० ईसाका अनुयायी ।
ईसान—देखो 'ईशान' ।
ईसार—पु० नम्रता ( सेवा० २११ ) ।
ईसवगोल, ईसरगोल—पु० ओषधि-विशेष ।
ईहा—स्त्री० इच्छा, चेष्टा । उद्योग । लोभ ।
ईहित—वि० इच्छित, अभिलषित ।
ईसा—पु० ईसामसीह, क्राइस्ट ।

# उ

उँगली उँगुली—स्त्री० अंगुली । हथेलीसे जुड़े हुए फलियोंके सदृश पाँच अवयव ।—पकड़ते पहुँचा पकड़ना=कुछ सहारा पाकर और पानेका प्रयत्न करना ।—या उँगलियोंपर नचाना=मनमाना काम कराना, दिक करना । पाँचो उँगली घीमें होना=हर तरहसे फायदेमें रहना ।
उँघाई—स्त्री० ऊँघनेकी क्रिया, झपकी ।
उंचन—स्त्री० अदवान, अदवान ।
उँचना—सक्रि० अदवान कसना ।
उँचाई—स्त्री० ऊँचापन । बड़प्पन ।

उँचान—पु० ऊँचाई ।
उँचाना—सक्रि० ऊँचा करना, ऊपर उठाना 'हौं सुधि पल छल करि पचि हारी लग्यो न शीश उँचाई ।'
उँचाव, उँचास—पु० ऊँचाई, ऊँचापन । [सूरा० ३२
उंचास—वि० एक कम पचास । पु० ४९ की संख्या ।
उंछ—स्त्री० फसल कटनेके बाद गिरे हुए दानोंको जीविकाके निमित्त चुनना ।
उंछवृत्ति—स्त्री० अन्नके गिरे हुए दानोंको बीनकर एकत्र करनेकी वृत्ति ।
उंछशील—वि० उंछवृत्तिवाला ।
उँजरिया—स्त्री० चाँदनी । रोशनी वि० स्त्री० उँजेली ।
उँजियार—पु० प्रकाश । वि० प्रकाशमान, उज्ज्वल 'ससि चौदसि जो दई सँवारा । ताहू चाहि रूप उंजियारा ।' प० ७
उँजियारी, उँज्यारी—स्त्री० उजारी, चाँदनी, प्रकाश । 'उजियारी मुख इन्दुकी परी उरोजनि आन ।' ललित० ५०,(उज्यारी, रस० ३७) । वि० स्त्री० प्रकाशयुक्त ।
उँजेरा, उँजेला—पु० उजाला, प्रकाश ।
उँडेलना—सक्रि० उड़ेलना ।
उँदरी—स्त्री० खल्वाट या गञ्जा होना ।
उंदुर—पु० इन्दुर, चूहा ।
उ—पु० ब्रह्मा, मनुष्य । अ० भी 'अउरउ एक गुपुत मत सबहिं कहहुँ कर जोरि ।' रामा० ५६१
उअना—अक्रि० उगना, उदय होना 'उआ सूक जस नखतन माँहा ।' प० ९
उआना—सक्रि० उगाना । मारनेको हथियार सन्नद्ध करना।
उऋण—वि० ऋणमुक्त । देखो 'उरिन' ।
उकचन—पु० मुचकुन्दका फूल ।
उकचना—अक्रि० उखड़ना, उचड़ना । हट जाना, उठ जाना '···सिर सों उराय याहू ठौर ते उकचि हौं ।' भू० १२६
उकटना—सक्रि० बीती बातको उठाना, बारम्बार कहना
उकटा—वि० उकटनेवाला ।
उकठना—अक्रि० सूखकर ऐंठ जाना 'जिमि न नवै पुनि उकठि कुकाठू ।' रामा० २०८; 'दीठि परी उकठी सब बारी ।' प० ९३
उकठा—वि० सूखकर ऐंठा हुआ । सूखा 'उकठे विटप लागे फूलन फलन ।' दिन० ५८३
उकड़ूँ—पु० घुटने तोड़कर बैठनेकी मुद्रा ।
उकत—स्त्री० उक्ति, कथन ।
उकताना—अक्रि० ऊब जाना । जल्दी मचाना, अधीर होना ।
उकति—स्त्री० उक्ति, कथन ।
उकलना—अक्रि०(लपेटका) खुल जाना,उधड़ना,उचड़ना।
उकलाई—स्त्री० उलटी, क़ै, मचली ।
उकलाना—अक्रि० क़ै करना । अकुलाना 'बँधे प्रीतिगुन सों उठैं पल पल में उकलाइ ।' रतन० ५९
उकवथ, उकौथ,-था—पु० दादके सदृश एक चर्मरोग ।
उकसना—अक्रि० ऊपरको उठना 'पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं ।' रामा० ७८ । उभड़ना, निकलना 'ता फनिकी फन-फाँसिनुपै फँदि जाय फँसे, उकसै न कहूँ छिन ।' भाव० ६५
उकसनि—स्त्री० उभड़न
उकसाना—सक्रि० ऊपरको उठाना । उभाड़ना,हटा देना। अक्रि० हट जाना हाथिनके हौदा उकसानै भू० १५१
उकसौंहा—वि० उठता हुआ, उभड़ता हुआ आज कालहमें देखियत उर उकसौंही भाँति ।' बि० ७२
उक़ाब—पु० बड़ा गिद्ध ।
उकालना—सक्रि० खोलना, उचाड़ना, अलग करना ।
उकासना—सक्रि० ऊपरको खींचना, उभाड़ना 'वृषभ शृङ्गसों धरनि उकासत बल मोहन तन हेरैं ।' सूबे० २४३, ( भ्रम० १३६ )
उकासी—स्त्री० खुल जाना (उदे० 'उलसना'),'उसासी' छुट्टी । उत्सव ।
उकील—पु० वकील ( छत्र० ३७,४९ ) ।
उकुति—स्त्री० देखो 'उकति' ।
उकुति जुगुति—स्त्री० सलाह और उपाय ।
उकुरू—पु० देखो 'उकड़ूँ' ।
उकुसना—सक्रि० उधेड़ना, उचाड़ना ।
उकेलना—सक्रि० खोलना, उधेड़ना, उचाड़ना ।
उकौना—पु० गर्भिणीकी इच्छा, दोहद ।
उक्त—वि० कहा हुआ ।
उक्ति—स्त्री० कथन, विलक्षण वचन ।
उखटना—सक्रि० कुतरना । अक्रि० लड़खड़ाना ।
उखड़ना—अक्रि० स्खलित हो जाना, च्युत हो जाना, स्थानसे हट जाना । चिह्न पड़ जाना 'कोमल हार उखड़ गेलि हार' । विद्या० ११०

उखम—स्त्री० गरमी।

उखमज—पु० ऊष्मज जीव।

उखर—पु० ऊख बोनेके बाद होनेवाली हलकी पूजा।

उखरना—अक्रि० देखो 'उखड़ना,।

उखली—स्त्री० पत्थर या लकड़ीका पात्र जिसमें अनाज रखकर मूसल इत्यादिसे उसकी भूसी निकालते हैं।

खा—स्त्री० उषा, प्रभात, तड़का।

उखाड़ना, उखारना—सक्रि० 'उपारना, गड़ी या जमी हुई वस्तुको स्थानसे अलग करना। भड़काना, हटाना। नष्ट करना।

उखाड़ू—वि० उखाड़नेवाला। चुगली खानेवाला।

उखारी—स्त्री० ऊखका खेत।

उखालिया—पु० सरगही, व्रत आरम्भ करनेके पूर्व रातके तीसरे पहरका लघु भोजन।

उखेरना—सक्रि० उखाड़ना, अलग करना।(सूसु०१८२)

उखेलना—सक्रि० लिखना, ( चित्र ) खींचना।

उगटना—अक्रि० फिर फिर कहना, ताना मारना, व्यंग-बाण छोड़ना।

उगना—सक्रि० उदय होना। अंकुरित होना, उत्पन्न होना।

उगरना—अक्रि० कुएँ इ०में भरा हुआ पानी निकालना।

उगलना—सक्रि० वमन करना, थूकना, ( मुँहके ) बाहर निकालना ( सूबे० ६२ )। ज़हर—=तीखी या अप्रिय बात कहना।

उगलवाना,उगलाना—सक्रि० मुँहसे निकलवाना। पचे हुए मालको निकलवाना। दोष क़बूल कराना।

उगवना—सक्रि० उदय करना, उत्पन्न करना।

उगसाना—सक्रि० उकसाना, उभाड़ना।

उगसारना—सक्रि० कहना, प्रकट करना।

उगहना—दे० 'उगाहना, ( रत्ना० १७८ )।

उगाना—सक्रि० उदय करना, जमाना, उत्पन्न करना। ( शस्त्र ) उठाना, तानना।

उगार,उगाल—पु०कै, थूक। निचोड़ा हुआ पानी।

उगारना—सक्रि० कुएँ इ० का पानी बाहर निकालकर उसे खाली करना।

गालदान—पु० थूकनेका बर्त्तन, पीकदान।

गाहना—सक्रि० वसूल करना, हाट बाट सब हमहिं उगाहत अपनो दान जगात।' सूबे १३३

गाही—स्त्री० रक़म वसूल करनेका कार्य। लगान।

उगिलना—सक्रि० थूकना, खाई हुई वस्तुको मुखसे बाहर निकालना 'मनहुँ क्रोधवस उगिलत नाहीं। रामा० ८८। बात प्रकट कर देना।

उगिलवाना, उगिलाना—सक्रि० मुँहसे बाहर निकलवाना। दोष स्वीकार कराना। पंजेसे छुड़ाना 'गिल्यो बुन्देलखण्ड उगिलायो।' छत्र० १५

उग्र—वि० प्रचण्ड, तीक्ष्ण, प्रबल, घोर। पु० महादेव। विष्णु। सूर्य। एक संकर जाति।

उग्रह—पु० उद्धार।

उग्रा—स्त्री० दुर्गा। कर्कशा स्त्री। अजवाइन। बच। धनिया।

उघटना—सक्रि० ताल देना, बार बार पदको कहना उघटहिं छन्द प्रबन्ध गीत पद रागतान बन्धान।' गीता० २७१(सू सु० २३५)। बीती बातको उठाना। भला-बुरा कहना।

उघटा—वि० देखो 'उकटा'।

उघड़ना, उघरना—अक्रि० खुलना 'रवि बहु चढ़ै रैनि सब निघटी उघरे सकल किवार।' सूबे० ७२। सच्ची बातका प्रकाशित होना। 'उघरि', उघरकर'=खुलम खुला ( सू० ९ ), ( ललित ८०, ९८ )

उघरारा—पु० खुली जगह। वि० खुला हुआ।

उघाड़ना, उघारना—सक्रि० खोलना 'सखी वचन सुनि सकुचि लिय दीन्ह्यो दृगनि उघारि।' रघु०। प्रकाशित या प्रकट करना 'नीके जाति उघारि आपनी युवतिन भले हँसायो। सूबे० १३६

उघारा—वि० अनावृत्त, खुला हुआ (उदे० 'अटपटाना', भू० १५४, सू० ५८ )।

उघेलना—सक्रि० उघारना, खोलना 'को उजियार करै जग झाँपा चन्द उघेलि।' प० १९८

उचकना—अक्रि० एड़ी उठाकर खड़ा होना। ऊँची वस्तु लेनेके लिए एड़ी उठाकर ऊपरको उछलना, झपटना 'सबनि धीरज दियो उचकि मंदर लियो कह्यो गिरिराज तुमको उवार्यो।' सूबे० १२४, ( रवि० ४०, ८८)। ऊपर उठना, स्थानसे हट जाना। सक्रि० उछलकर लेना।

उचका—क्रिवि० सहसा, एकाएक, 'याकीखाँ उचका पर्यो उदभट कटक सकेल।' छत्र० २०।

उचकाना—सक्रि० ऊपर उठाना 'केतिक लंक उपारि वाम कर लै आवै उचकाय।' सूरा० ३०

उचक्का—पु० छीनकर भागनेवाला, ठग, लुच्चा, धूर्त्त ।
उचटना—अक्रि० भड़कना, अलग होना, हटना । 'तेरो जस काज आज मरजा निहारि कवि मन भोज विक्रम कथाते उचटत हैं ।' भू० ७५ । उखड़ना, छूटना या ऊपर उठना । 'उचटत फिर अंगार गगन लौं, सूर निरखि ब्रज जन बेहाल ।' सू० ८१
उचटाना—सक्रि० उचाड़ना, भड़काना, अलग करना, विरक्त करना । 'जब ब्रजकी बातें यहि कहियत तबहिं तबहिं उचटावत ।' सू० २१२
उचड़ना—अक्रि० हट जाना, अलग होना ।
उचना—अक्रि० ऊँचा होना, ऊपर उठना । सक्रि० ऊँचा करना 'भौंह उचै आँचरु उलटि मोरि मोरि मुँह †
उचनि—स्त्री० उठान, उभाड़ । [ † मोरि ।' वि० १०१
उचरना—सक्रि० उच्चारण करना, मुखसे (शब्द) निकालना, बोलना 'चढ़ि गिरि शिखर शब्द इक उचरयो ' ' सूरा० ३० । अक्रि० आवाज़ होना ।
उचाट—पु० विरक्ति, मनका हट जाना, उदासी । 'भये उचाटबस मन थिर नाहीं । छन वन रुचि छन सदन सुहाहीं ।' रामा० ३४३ [ न लगना, विरक्ति ।
उचाटन—पु० किसीके चित्तको कहींसे हटाना । चित्तका
उचाटना—सक्रि० उच्चारण करना, विरक्त करना 'लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसर पाइ ।' रामा० ३५०
उचाटी—स्त्री०उदासीनता, विरक्ति । [को अलग करना ।
उचाड़ना—सक्रि० उखाड़ना, चिपकी या जुड़ी हुई चीज़-
उचाना—सक्रि० ऊपर उठाना, ऊँचा करना, उठाना । 'चौंकि उठ्यो चारि मुख चितवत चारों ओर चन्द्रचूड़ चेत्यो चित चपन उचाय कै ।' रघु० १११, 'बाँह उचाइ कारजरी धौरी गैयन टेरि बुलावत ।' सूवे० ११६
उचारना—सक्रि० उच्चारण करना, बोलना 'आँसु पोंछि मृदु बचन उचारे । रामा० २७८ । उखाड़ना 'बिरिछ उचारि डारि मुख मेलहिं ।' प० १९
उचित—वि० मुनासिब, योग्य ।
उचेलना—सक्रि० उचाड़ना, उकेलना ।
उचौंहा, उचौंहा—वि० उभड़ा हुआ ।
उच्च—वि० ऊँचा, महान, श्रेष्ठ ।
उच्चता—स्त्री० ऊँचाई, महत्ता, उत्तमता ।
उच्चयीश्रवा—पु० इन्द्रका घोड़ा (रत्ना० ५१४) । सूर्यका घोड़ा ।
उच्चरण—पु० मुँहसे शब्द निकलना ।
उच्चरना—सक्रि० उच्चारण करना 'राम नाम ही सदा उच्चरो ।' सूवे० ३१
उच्चरित—वि० जिसका उच्चारण किया गया हो ।
उच्चाटन—पु० देखो 'उचाटन ।
उच्चार—पु० कथन ।
उच्चारण—पु० मुँहसे शब्द निकालना ।
उच्चारना—देखो उच्चरना' ।
उच्चारित—वि० जिसका उच्चारण किया गया हो, [ कथित ।
उच्चैःश्रवा—पु० सूर्यका घोड़ा ।
उच्छरना—अक्रि० नीचे ऊपर उठना, उछलना ।
उच्छल—पु० छलकनेकी क्रिया ।
उच्छलना—अक्रि० ऊपर उठना और गिरना ।
उच्छव—पु० उत्सव, धूमधाम, पर्व ।
उच्छाव—पु० उत्साह । धूमधाम ।
उच्छास—पु० उच्छ्वास, उसास, साँस ।
उच्छाह—पु० उत्साह, हर्ष ।
उच्छिन्न—वि० खडित ध्वस्त, निर्मूल । [ पु० जूठन ।
उच्छिष्ट—वि० जुठारा हुआ, जूठा, खानेसे बचा हुआ ।
उच्छृंखल—वि० निरङ्कुश, उद्दण्ड, मनमानी करनेवाला ।
उच्छेद,-दन—पु० विध्वंस, नाश ।
उच्छ्वसित,उच्छ्वासित—वि० उच्छ्वासयुक्त । खिला हुआ ।
उच्छ्वास—पु० उसास । प्रकरण ।
उछंग—पु० गोद 'लेइ उछङ्ग कबहुँक हलरावइ ।' रामा० १११, 'पीड़ सहे बिनु पदमिनी पूत न लेत उछङ्ग ।' साखी ४२
उछकना—अक्रि० चौंक पड़ना । होशमें आना ।
उछरना—अक्रि० उछलना, कूदना 'जोन्हको हँसत जोति हीरामनि मन्दिरन, कन्दरनमें छबि कुहूकी उछरति है ।' भू० २२, 'मृग उछरत आकाशको भूमि खनत वाराह ।' रहीम । क्रै करना । उपटना, उभड़ना । उतराना ।
उछलकूद—स्त्री० कूदफाँद, खेलकूद, चञ्चलता ।
उछलना—अक्रि० कूदना, नीचे ऊपर उठना, होना । उपटना, चिह्न पड़ना । तराना ।
उछाँटना—सक्रि० छाँटना, चुनना । देखो 'उचाटना' ।
उछार, उछाल—स्त्री० एकाएक ऊपर उठना । ऊँचाई । छींटा, ऊपर उठता हुआ विन्दु या कण । क्रै ।

उछारना, उछालना—सक्रि० ऊपरकी ओर फेंकना, 'मारग मानुष सोन उछारा ।' प० ७ । प्रकट करना ।

उछाव—पु० उमङ्ग 'सूर श्याम पद कमल परसिहौं मन अति बढ्यो उछाव ।' सूबे० २७५

उछाह—पु० उत्साह, आनन्द 'जा दिन जनम लीन्हों भूपर भुसिल भूप ताही दिन जीत्यो अरि उरके उछाहको । भू० ५, 'भुवन चारिदस भयउ उछाहू । जनकसुता रघुबीर बिआहू ।' रामा० १५६ । उत्सव उत्कण्ठा ।

उछाही—वि० उत्साही । हर्ष मनानेवाला । 'तब सुकाल महिपाल राज्यमें ह्वै है प्रजा उछाही ।' रघु०

उछिन्न—वि० खण्डित, निर्मूल ।

उछिष्ट—वि० उच्छिष्ट, खानेसे बचा हुआ, जूठा । दूसरे-का बर्ता हुआ । पु० भोजनावशिष्ट ।

उछीनना—सक्रि० उच्छिन्न करना, नष्ट करना ।

उछीर—पु० अवकाश, छिद्र, रिक्त स्थान ।

उछेद—पु० उच्छेद । खण्डन, नाश ( सूसु १० ) ।

उजट—पु०—पर्णकुटी, उटज ।

उजड्ड—वि० गँवार, उच्छृंखल ।

उजड़ना, उजरना—अक्रि० नष्ट होना, वीरान होना, बिखरना 'महि उजरी सायर सब सूखा ।' प० २५१

उजबक—वि० मूर्ख ।

उजर—वि० ऊजड़, 'सूरदास प्रभु सुखके दाता गोकुल चले उजर कै ।' सूबे० २६८

उजरत—स्त्री० पारिश्रमिक, मजूरी, भाड़ा ।

उजरा—वि० उजला, सफेद, स्वच्छ, दिव्य ।

उजराई—स्त्री० सफेदी, उज्वलता, कान्ति, स्वच्छता ।

उजराना—सक्रि० उज्वल करना । साफ करना ।

उजलत—स्त्री० उतावली । वि० उज्वलित, प्रकाशमय 'हँसन अबीर हीर दुति सुन्दर, उजलत परम उजोरी ।' —श्रीगुणमञ्जरीदास

उजला—वि० सफेद, साफ, उज्ज्वल ।

उजागर—वि० दीप्तिमय, प्रकाशित, प्रसिद्ध । 'राम जनमि जग कीन्ह उजागर ।' रामा २९४, 'सूर धन्य यदुवंश उजागर, धन्य धन्य ध्वनि घुमरि रह्यो ।' सू० १९४

उजाड़—वि० उजड़ा हुआ, वीरान । पु० उजड़ा हुआ या शून्य स्थान । जंगल ।

उजाड़ना, उजारना—सक्रि० नष्ट करना, तितर बितर करना 'नारद कर मैं काह बिगारा । भवन मोर जिन्ह बसत उजारा ।' रामा० ५८

उजान—क्रिवि० देखो 'उजाल' ।

उजार—पु० शून्य स्थान । वि० उजड़ा हुआ, उजाड़'जौ पै नाहीं अहथिर दसा । जग उजार का कीजिय बसा ।' प० ५५

उजारा—पु० प्रकाश 'कंचनके मन्दिर दीठि ठहरात नाहीं, सदा दीपमाल लाल मानिक उजारे सों ।' रसखान । वि० प्रकाशमान 'जौ न होत अस पुरुष उजारा । सूझि न परत पंथ अँधियारा ।' प०५, 'आरसीसे अंबर मैं आभासी उजारी ठाढ़ी प्यारी राधिकाको प्रतिबिम्ब सो लगत चन्द ।' रवि० ४२

उजारी—स्त्री० चाँदनी,प्रकाश । 'राख्यो अपने वृन्दाबनमें जेहि ठाँ रूप उजारी ।' नागरी०

उजालना—सक्रि० चमकाना, साफ करना । जलाना ।

उजाला—पु० प्रकाश । वि० प्रकाशयुक्त ।

उजाली—स्त्री० चाँदनी ।

उजास—पु० दीप्ति, चमक,उजाला 'कछु उजास भो प्रात समाना ।' रामरसायन; 'कौतुक देखा देह बिनु रबि ससि बिना उजास ।' साखी १२०

उजासना—अक्रि० प्रकाशित होना 'सूरके तेज तें सूरज दीसत चन्द्रके तेज तें चन्द्र उजासै ।' सुन्द० १५९

उजियर—वि० उज्ज्वल, सफेद ।

उजियरिया—स्त्री० चाँदनी, प्रकाश ।

उजियाना—सक्रि० उत्पन्न करना, प्रकट करना 'पलटि चली मुसुकाय, दुति रहीम उजियाय अति । बाती सी उसकाय, मानो दीनी दीपकी ।' रहीम

उजियार, उजियारा—पु० प्रकाश, उजेला । वि० उज्ज्वल, प्रकाशयुक्त । 'हीरा लेइ सो विद्रुम धारा । विहँसत जगत होइ उजियारा ।' प० ४७

उजियारना—सक्रि० जलाना, प्रकाशित करना ।

उजियारी—स्त्री० चाँदनी 'रही छिटक पूनो उजियारी ।' प्रकाश । कुल कान्ति वर्द्धक भाग्यशीला स्त्री 'सो पदमावति तेहिकर बारी । जो सब दीपमाहिं उजि-यारी ।' प० ४२ । वि० स्त्री० प्रकाशयुक्त ।

उजियाला—पु० प्रकाश ।

उजीर—पु० वज़ीर, मन्त्री 'सुनि सु उजीरन यों कह्यो सरजा सिव महराज ?' भू० ३६

उजुर—पु० उज्र, आपत्ति, विरोध 'चाकर हैं उजुर कियो न जाय नेक पै कछू दिन उबरते तो घने काज [करते।' भू० ७०
उजेर—पु० प्रकाश।
उजेरा, उजेला—पु० प्रकाश। वि० प्रकाशयुक्त।
उज्जयिनी—स्त्री० आधुनिक उज्जैन नगर।
उज्जर—वि० उज्ज्वल, सफेद।
उज्जल—क्रिवि० धाराके प्रतिकूल। वि० उज्ज्वल।
उज्जीवित—वि० पूर्णतः जीवित।
उज्ज्वल—वि० साफ, उजला। चमकदार।
उज्ज्वलित—वि० जो उज्ज्वल बनाया गया हो। प्रदीप्त।
उज्यारा—पु० देखो 'उजियारा'।
उज्यारी—स्त्री० देखो 'उजियारी' ''मोंहिं वाकी स्याम-ताई लागति उज्यारी हैं।' आलम; 'रवि आगे खद्योत [उज्यारी।' सू० १००
उज्यास—पु० देखो 'उजास'।
उज्र—पु० आपत्ति, विरोध।
उज्रदारी—स्त्री० विरोध या आपत्ति प्रकट करनेकी क्रिया।
उज्वालना—सक्रि० जलाना, 'उज्वालि लोचन दीपिका निज नयन सब कहँ देहि।' रघु० १३७
उझकना—अक्रि० उछलना, ऊपर उठना (भ्र० १२७)। ताकनेके लिए सिर उठाना। चौंकना।
उझपना—अक्रि० खुलना 'बरुनीमें फिरैं, न छपैं उझपैं पलमें न समाइवो जानती हैं। पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना, अँखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं।'
उझरना—सक्रि० ऊपर उठाना। [हरि० (व्रज०)।
उझलना, उझिलना—अक्रि० उमड़ना 'मनु सावनकी सरिता उलझी।' सुजा० ४६। सक्रि० ऊपरसे गिराना, उँडेल कर लेना, ढालना।
उझाँकना—अक्रि० सिर उठाकर देखना, उझकना।
उझिला—स्त्री० उबटनके निमित्त भूनी हुई सरसों।
उटंग—वि० लम्बाईमें कम (कपड़ा), ओछा।
उटकना—सक्रि० अन्दाज लगाना।
उटकनाटक—वि० ऊटपटाँग।
उटज—पु० कुटिया, झोपड़ी।
उटड़पा—उटड़ा—पु० जूएके नीचे लगी हुई लकड़ी जिसपर गाड़ी ठहरायी जाती है।
उटँगन—पु० टेक, सहारा, आधार।
उटँगना—अक्रि० टिककर बैठना, दीवार आदिका सहारा लेना, लेटकर जरा देर सुसता लेना।
उठकना—देखो 'उठङ्गना' (रत्ना० १११)।
उठना—अक्रि० खड़ा होना, हटना, जागना, ऊँचा होना, उदय होना, कूदना, उभड़ना, जारी होना। खर्च हो जाना। दूकान इत्यादिका बन्द होना। दीवार आदि-का तैयार होना। उठ जाना = मर जाना उठते बैठते = हर अवस्थामें।
उठल्लू—वि० एक जगह न रहनेवाला, आवारा।
उठान—पु० उठनेकी क्रिया, उत्थान, आरम्भ, वृद्धिक्रम। ऊँचाई 'मानो तुङ्ग तरङ्ग विश्वकी हिमगिरिकी वह सुदर उठान' (कामायनी ३०)
उठाना—सक्रि० लेटे हुएको बैठाना, खड़ा करना। दूर करना। धारण करना, ऊपर लेना। निकालना, शुरू करना। तैयार करना। पड़ी हुई या रखी हुई वस्तु को हाथमें लेना। भोगना। जगाना। स्वीकार करना।
उठाव—पु० उठा हुआ अंश, उठान, वृद्धिक्रम।
उठौनी—स्त्री० उठानेकी क्रिया। पेशगी। मृतक सम्बन्धी एक रीति। विवाह पक्का करनेके लिए कन्या-पक्षको दी गयी रकम।
उडंकू—वि० उड़नेवाला, घूमने फिरनेवाला।
उड़—पु० तारा 'प्रथम-प्रकम्पन उडगनमें' पल्लव ३८
उड़नखटोला—पु० उड़नेवाला खटोला।
उड़नछू—वि० चम्पत, गायब।
उड़ना—अक्रि० पक्षियों इत्यादिका हवामें या आकाशमें एक स्थानसे दूसरेको जाना। फैलना, फहराना। तीव्र गतिसे चलना। पृथक् होना, दूर जा गिरना, लुप्त होना, खर्च होना। फीका पड़ना, बहानेबाज़ी करना, बात बनाकर सत्य छिपानेका प्रयत्न करना। (गबन० ४१२)। उड़ खाना = अप्रिय लगना।
उड़पति, उड़राज—पु० चन्द्रमा।
उड़सना—अक्रि० विनसना, भङ्ग होना 'उड़सा नाच नचनिया मारा।' प० १६२। बिछौना उठाना।
उड़ाँक, उडाँकू—वि० उड़नेवाला। जो उड़ सकता हो।
उड़ाऊ—वि० उड़ाने या मनमाना ख़र्च करनेवाला।
उड़ाका—पु० उड़नेवाला, वायुयान इ० पर उड़नेवाला।
उड़ान—पु० उड़नेका काम। छलाँग। कलाई।
उड़ाना—सक्रि० उड़नेमें प्रवृत्त करना। हवामें इधर उधर छितराना। पृथक् करना, ग़ायब करना, दूर करना। ख़र्च करना। भुलावा देना। वेगसे दौड़ाना।

अक्रि० उड़ना, छितरा जाना 'ये मधुकर रुचि पङ्कज लोभी, ताहीते न उड़ाने। सू० १२१; 'जीव जन्तु जे गगन उड़ाहीं।' रामा० ४१५, (प० ७१)।
**उड़ायक**—वि० उड़ानेवाला 'उड़ी जाउ कितहूँ तऊ गुडी उड़ायक हाथ।' वि० ३० (वङ्ग०)।
**उड़ास**—स्त्री० रहनेकी जगह, महल। [ * उठाना।
**उड़ासना**—सक्रि० दूर करना, उजाड़ना। विस्तरा *
**उड़िया**—पु० उत्कल देशका निवासी। स्त्री० उत्कलकी [भाषा।
**उड़ियाना**—पु० छन्द विशेष।
**उड़ी**—स्त्री० उलाँट, कलाबाज़ी।
**उड़ीसा**—पु० उत्कल देश।
**उड, उडु**—पु० नक्षत्र, पक्षी।
**उडुप**—पु० चन्द्रमा, नृत्यका एक भेद, घड़ेकी बनी नाव, [घन्नई नौका।
**उडुपति—राज** = चन्द्रमा।
**उड़ुस**—पु० खटमल।
**उड़ेरना, उड़ेलना**—सक्रि० ढालना, उझिलना, गिराना।
**उड़ैनी**—स्त्री० जुगनू 'कौंधत रहि जस भादौं रैनी। साम रैन जनु चलै उड़ैनी। प० २३२
**उड़ौंहा**—वि० उड़नेवाला।
**उड्डीन**—वि० उड़ा हुआ, उड़ता हुआ।
**उड्डीयमान**—वि० उड़ता हुआ।
**उढ़कना**—अक्रि० अड़ना, उलझना, सहारा लेना।
**उढ़काना**—सक्रि० सहारे खड़ा करना, भिड़ाना।
**उढ़ना**—सक्रि० बाहर निकालना (?) 'अँचवन पै तातो जब लागो रोवत जीभ उढ़ै। सूसु० ७५
**उढ़रना**—अक्रि० विवाही स्त्रीका पर-पुरुषके साथ भागना 'मुए चामसे चाम कटावै भुइँ सकरीमें सोवै। घाघ कहै ये तीनों भकुआ उढ़रि जाय औ रोवै।' घाघ (ककौ० ४००)
**उढ़री**—स्त्री० रखी हुई स्त्री, सुरैतिन, रखेली।
**उढ़ाना**—सक्रि० वस्त्रसे ढाँकना, ओढ़ना।
**उढ़ावनी, उढ़ौनी**—स्त्री० ओढ़नी, चद्दर।
**उतंक, उतंग**—वि० उतुङ्ग, ऊँचा 'ताको तदगुन कहत हैं, भूषण बुद्धि उतङ्ग।' भू० ११२
**उत**—क्रिवि० उधर, वहाँ।
**उतन**—क्रिवि० उस ओर। [उस मात्राका।
**उतना**—क्रिवि० उस मात्रामें, उस सीमातक। वि०
**उतपात**—पु० उपद्रव, अशान्ति, आफ़त।
**उतपानना**—सक्रि० उत्पन्न करना।
**उतमंग**—पु० उत्तमाङ्ग, सिर।
**उतर**—पु० उत्तर, जबाब, बदला। एक काव्यालंकार। दक्षिणके सामनेकी दिशा।
**उतरना**—अक्रि० ऊपरसे नीचे आना। ढलना या समाप्त होनेको आना। फीका पड़ना, कम हो जाना। नीचे हो जाना, गिरना, हट जाना। ठहरना, डेरा डालना 'देखि देखि तरुवर अनुरागे। जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे।' रामा०३३३। पार जाना 'जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भव-सिन्धु अपारा।' रामा० २४७
**उतराई**—स्त्री० ऊपरसे नीचे आनेका काम। पार उतारनेका महसूल 'पद कमल धोइ चढाइ नाव न नाथ उतराई चहउ।' रामा० २४७
**उतराना**—अक्रि० पानीपर तैरना। उफान खाना। देख पड़ना, प्रकट होना।
**उतरायल**—वि० उतारा हुआ, पहना हुआ।
**उतरारी**—वि० स्त्री० उत्तर दिशाकी (हवा)।
**उतराव**—पु० उतार, ढाल, घटाव।
**उतरावना**—सक्रि० किसीके जरिये या किसीकी सहायतासे नीचे लाना।
**उतराहा**—क्रिवि० उत्तरकी ओर। वि० उत्तरका 'उठी वायु आंधी उतराही।' प० १९०
**उतरिन**—वि० उऋण, ऋणमुक्त।
**उतलाना**—अक्रि० उतावली करना।
**उतवंग**—पु० उत्तमाङ्ग, मस्तक।
**उतसहकंठा**—स्त्री० उत्कण्ठा। उत्कट इच्छा। लालसा।
**उताइल, उतायल**—वि० शीघ्रतायुक्त (रामा० ३११,
**उताइली, उतायली**—स्त्री० शीघ्रता। [दे० 'खेवा')।
**उतान**—वि० चित्त या सीधा।
**उतार**—पु० उतरनेकी क्रिया। ढाल। क्रमशः कम होना, घटाव। उतारन। न्योछावर।
**उतारना**—सक्रि० ऊँची जगहसे नीची जगहमें लाना। दूर करना, 'अवनि उतारन भारको हरि लीन्ह्यो अवतार'। रघु०। काटना, तोड़ना 'आये इतै हम बन्धु समेत उतारैं प्रसून जो होइ न बारन।' रघु० ९५। पहिनी हुई वस्तुको अलग करना 'पिय हियकी सिय जाननि हारी। मनि मुँदरी मन मुदित उतारी।'

रामा० २१८,'उतारति हैं कण्ठनि ते हार।'सूवे० ८०। न्योछावर करना। उत्सर्ग करना। साँचे आदिपर चढ़ाकर तैयार करना। चित्रित करना। सक्रि० पार ले जाना 'वेगि आनु जल पाय पखारू। होत बिलम्ब उतारहि पारू।' रामा० २४७, (भू० १५५)। राई नमक इ० चारो ओर घुमाकर आगमें डालना 'ताहि प्रेतबाधा वारन हित राई लोन उतार्यो।' रघु० ३०

उतारा—पु० नदी आदि पार करने या डेरा डालनेका काम। उतरनेका स्थान। पु० पीड़ित व्यक्तिके शरीरके चारो ओर खाने पीने आदिकी सामग्री घुमाकर चौराहे इत्यादिपर रखना। उतारेकी वस्तु।

उतारु—वि० तैयार, उद्यत।

उताल—क्रिवि० शीघ्र 'बरनत दसरथ सुजस नृपाला। निज निज देशन चले उताला।' रघु० २०५ (दास १२)। स्त्री० शीघ्रता।

उतालता—स्त्री० शीघ्रता, (गुलाब २०६)।

उताली—स्त्री० शीघ्रता, फुर्ती। क्रिवि० जल्दीसे।

उतावल—क्रिवि० शीघ्रतासे 'कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ उतावल धावत।' सूवे० ४४४

उतावला—वि० जल्दबाज़, चञ्चल।

उतावली—स्त्री० शीघ्रता, जल्दबाज़ी, व्यग्रता। वि० स्त्री० जो शीघ्रतामें हो, जल्दबाज़।

उताहल, उताहिल—क्रिवि० शीघ्रतासे।

उतै—क्रिवि० वहाँ, उस ओर।

उतैला—वि० उतावला। [(प्रिय० ८८)।

उत्कंठ—वि० जिसकी गर्दन ऊपर उठी हुई हो। उद्ग्रीव

उत्कंठा—स्त्री० लालसा, उत्कट अभिलाषा। एक सञ्चारी [भाव।

उत्कंठित—वि० उत्कण्ठायुक्त।

उत्कंठिता—स्त्री० संकेत-स्थलमें प्रियके न आनेपर चिन्ता करनेवाली नायिका।

उत्कट—वि० प्रचण्ड, कठिन, भारी, विकट, प्रबल।

उत्कर्ष—पु० समृद्धि, बढ़ती, उत्तमता। प्रशंसा।

उत्कल—पु० उड़ीसा प्रदेश। वि० विपुल, अधिक 'व्यक्त हो चुका चीत्कारोत्कल, क्रुद्ध युद्ध का रुद्ध-कण्ठफल' —अनामिका १२०

उत्कलित—वि० खिला हुआ, प्रमत्त।

उत्का—स्त्री० उत्कण्ठिता नायिका (गुलाब २०६)।

उत्कीर्ण—वि० खुदा हुआ, लिखा हुआ।

उत्कृष्ट—वि० श्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

उत्कोच—पु० घूस।

उत्क्रांति—स्त्री० ऊपरकी तरफ या पूर्णताकी ओर गमन, सीमाके बाहर जाना, मृत्यु।

उत्खनन—पु० खुदाई, खोदनेका काम।

उत्खाता—वि० खोदनेवाला, उखाड़नेवाला।

उत्तंग—वि० ऊँचा (भू० ६)।

उत्तंस—पु० अवतंस, भूषण, मुकुट,श्रेष्ठता सूचक शब्द।

उत्त—पु० आश्चर्य, सन्देह। क्रिवि० वहाँ, उधर।

उत्तप्त—वि० ज्यादा तपा हुआ, सन्तप्त, पीड़ित, कुपित।

उत्तम—वि० श्रेष्ठ, उत्कृष्ट।

उत्तमता,-ताई-स्त्री०,उत्तमत्व—पु० भलाई, श्रेष्ठता।

उत्तमर्ण—पु० ऋणदाता।

उत्तम श्लोक—वि० विख्यात, सुप्रसिद्ध, कीर्तिमान्।

उत्तमांग—पु० सिर।

उत्तर—पु० जवाब। बदला। दक्षिणके प्रतिकूल दिशा। वि० बादका। बढ़कर। उत्कृष्ट।

उत्तरदाता—पु० जिम्मेदार, जवाबदेह।

उत्तरदायित्व—पु० जिम्मेदारी।

उत्तरदायी—वि० जिम्मेदार।

उत्तरा फाल्गुनी,-भाद्रपदा—स्त्री० नक्षत्र विशेष।

उत्तराधिकारी—पु० जो किसीकी मृत्युके बाद उसकी सम्पत्ति पानेका हक़दार हो। वारिस।

उत्तरायण—पु० सूर्यका मकर रेखासे उत्तरकी ओर जाना। छ मासका वह समय जबतक सूर्यकी गति उत्तरकी ओर रहती है।

उत्तरीय—पु० दुपट्टा, उपरना।

उत्तरोत्तर—क्रिवि० लगातार, क्रमशः, एकके बाद एक।

उत्तान—वि० सीधा, चित।

उत्ताप—पु० तपन, दुःख, वेदना।

उत्ताल—वि० भीषण, ज़ोरका, ऊँचा।

उत्तीर्ण—वि० जो पार हो गया हो, कृतकार्य,मुक्त।

उत्तुंग—वि० बहुत ऊँचा।

उत्तेजक—वि० उकसानेवाला, उभाड़नेवाला, प्रेरक।

उत्तेजन पु०,-ना—स्त्री० प्रोत्साहन,बढ़ावा, प्रेरणा, जोश।

उत्तोलन—पु० ऊपर उठानेकी क्रिया।

उत्थवना—सक्रि० आरम्भ करना।

उत्थान—पु० उठनेकी क्रिया, उदय, उन्नति।

उत्थानि—स्त्री० आरम्भ 'कवित उभय उत्थानिके तेई अङ्कुर जानि ।' दीन० ३

उत्थापन—पु० ऊपर उठाने, जगाने, उखाड़ने इत्यादिकी क्रिया ।

उत्थित—वि० उठा हुआ ।

उत्पत्ति—स्त्री० जन्म, उद्भव, आरम्भ ।

उत्पन्न—वि० पैदा हुआ, उद्भूत ।

उत्पल—पु० कमल, पद्म ।

उत्पात—पु० उपद्रव, दंगा, गड़बड़, हलचल ।

उत्पाती—वि० शरारत करनेवाला, ऊधमी, उपद्रवी ।

उत्पादक—वि० उत्पन्न करनेवाला ।

उत्पादन—पु० उत्पन्न करनेकी क्रिया । उत्पत्ति ।

उत्पीड़न—पु० कष्ट पहुँचानेकी क्रिया, अत्याचार ।

उत्प्रेक्षा—स्त्री० एक काव्यालङ्कार । आरोप ।

उत्फुल्ल—वि० खिला हुआ, विकसित । चित ।

उत्संग—पु० गोद, मध्य भाग ।

उत्स—पु० स्रोत, सोता, चश्मा ( प्रिय० ८७ )

उत्सर्ग—पु० त्याग, दान ।

उत्सर्जन—पु० त्यागनेकी क्रिया, दान ।

उत्सन्न—वि० ह्रासको प्राप्त, ध्वस्त, उजड़ा हुआ ।

उत्सव—पु० आनन्द, आनन्दका समय, धूमधाम, पर्व ।

उत्सवशाला—स्त्री० वह स्थान या भवन जहाँ समारोह होता है 'फिर निर्जन उत्सवशाला' लहर ५४

उत्सादक—पु० विनाश करनेवाला ( प्रिय० १७४ )

उत्सार—वि० हटानेवाला, नाश करनेवाला ।

उत्साह—पु० उमङ्ग, लहर, साहस ।

उत्साहिल, उत्साही—वि० उत्साहपूर्ण 'जो उत्साहिल चित्तमें देत बढ़ाइ उछाह ।' दास २४

उत्सुक—वि० उत्कंठित, लालसायुक्त ।

उत्सृष्ट—वि० छोड़ा हुआ, त्यक्त ।

उत्सेक—पु० सिञ्चन, बाढ, अभिमान ( कोकि० ७२ ) ।

उत्सेध—पु० उन्नति । ऊँचाई । वि० श्रेष्ठ, ऊँचा ।

उथपना—सक्रि० स्थापित करना । उखाड़ना ( कविता० २१२ ) ।

उथलना—अक्रि० देखो 'उलथना' ।

उथल पुथल—स्त्री० उलट पलट, हलचल ।

उथला—वि० छिछला, जो ज़्यादा गहरा न हो ।

उदंड—वि० उद्दण्ड, निडर, उद्धत ।

उदंत—पु० वृत्तान्त 'तब उदंत छाला लिखि दीन्हा ।' प० १०९ । अदन्त, जिसके दाँत न जमे हों ।

उदउ—पु० देखो 'उदय' ।

उदक—पु० पानी ।

उदकअद्रि—पु० हिमालय ।

उदकना—अक्रि० कूदना, छटककर अलग हो जाना ।

उदगरना—अक्रि० निकलना, प्रकट होना । उभड़ना ।

उदगार—पु० उद्गार, उबाल, वमन, आधिक्य, मनमें रखी हुई बातको एकाएक प्रकट करना ।

उदगारना—सक्रि० बाहर निकालना, भड़काना । डकार लेना 'ज्यूँ कछु भच्छ किये उदगारत, कैसहि राखि सकै न अघानौ ।' सुन्द० १४५

उदगारी—वि० बाहर निकालनेवाला, वमन करनेवाला ।

उदग्ग, उदग्र—वि० ऊँचा, उग्र, उद्धत ।

उदघटना—अक्रि० प्रकट होना ।

उदघाटना—सक्रि० प्रकट करना, खोलना ।

उदथ—पु० उदय और अस्त होनेवाला,सूर्य 'बिन अवलम्ब कलिकानि आसमानमें ह्वै होत बिसराम जहाँ इन्दु औ उदथके ।'भू० ११४

उदधि—पु० समुद्र, सागर ।

उदधिसुत—पु० चन्द्रमा, कमल, शङ्ख, अमृत, ऐरावत ।

उदधिसुता—स्त्री० लक्ष्मी ।

उदपान—पु० कूल, कूँएके पासका गड्ढा । कमण्डलु,'कर उदपान काँध बघछाला ।' प० ५७

उदवर्त्तन—पु० किसी वस्तुको शरीरमें लगाना, व्यवहार । उबटन 'सखी हेत उदबर्त्तन लावैं, आनँद रससों सवै अन्हावैं ।' ध्रुवदास

उदबस—वि० स्थानसे निकाला हुआ । सूना, उजाड़ । 'चञ्चल निशि उदबस रहैं करत प्रात बसि राज । अरविन्दनमें इन्दिरा, सुन्दरि नैननि लाज ।'ललित० ७८

उदबेग—पु० घबड़ाहट,भय,क्लेश,'अब जहँ राउर आयसु होई । मुनि उदबेग न पावइ कोई ।' रामा० २५९

उदभट—वि० प्रबल, श्रेष्ठ 'भूषन भनत भौंसिलाके भट उदभट जीति घर आये धाक फैली घर घरमें ।' भू० ८९

उदभव—पु० उत्पत्ति । बढ़ती, उन्नति ।

उदभौत—पु० आश्चर्यकी वस्तु, अद्भुत बात या घटना ।

उदमदना—अक्रि० उन्मत्त होना, आपेको भूल जाना ।

उदमाद—पु० पागलपन, उन्मत्तता ।

उदमादी—वि० मतवाला, पागल ।

उदमान—वि० मतवाला ।
उदमानना—अक्रि० मतवाला होना ।
उदय—पु० निकलने या ऊपर उठनेकी क्रिया । उद्गम । [उन्नति, वृद्धि ।
उदयगढ़,-गिरि—पु० उदयाचल ।
उदयना—अक्रि० उदय होना 'पाइ लगन बुध केतु तौ उदयो हू भो अन्त ।' मुद्रा० ७३
उदयाचल, उदयाद्रि—पु० वह पहाड़ जहाँसे सूर्योदय होता है ( पौराणिक ) ।
उदरंभर-उदरभरि—वि० अपना पेट भरनेवाला पेटू ।
उदर—पु० पेट, मध्य भाग ।
उदरना—अक्रि० फटना, नष्ट होना । गिरना 'देखत ऊँचाई उदरत पाग, सूधी राह द्योम हू में चढ़ें ते जे साहस निकेत हैं ।' भू० ४३
उदवना—अक्रि० उदय होना, निकलना ।
उदवासना—सक्रि० दूर करना ( रत्ना० १६८ ) । भगा [देना, उजाड़ना ।
उदवाह—पु० विवाह ।
उदवेग—पु० घबराहट, आवेश । देखो 'उदवेग' ।
उदसना—अक्रि० उजड़ना, बेसिलसिले होना ।
उदात्त—वि० दयालु, श्रेष्ठ, समर्थ, उदार । उच्च स्वरसे उच्चरित । एक अर्थालंकार 'अति सम्पति ऐश्वर्यको जेहि थल बरनन होत ।'
उदान—पु० वह प्राणवायु जिससे डकार या छींक आती है।
उदाम—वि० बन्धनरहित, महान् । पु० वरुण ।
उदायन—पु० उद्यान, उपवन ।
उदार—वि० दानशील, वदान्य, सरल, श्रेष्ठ, 'ऐसी मति कहाँ धौं उदार कौनकी भई ।' राम० २ । अनुकूल ।
उदारचेता—वि० उदार चित्तवाला ।
उदारता—स्त्री० दानशीलता, शिष्टता, क्षमाशीलता, हृदयकी विशालता ।
उदारना—सक्रि० फाड़ना । छिन्नभिन्न करना 'लाजनि ते कहू न जनावे काहू सखिन सों उरको उदारि अनुराग उमगतु है ।' रस० २०
उदाराशय—वि० उच्चाशय या उच्च विचारोंवाला ।
उदास—वि० रंजीदा, दुःखी, उदासीन, विरक्त । पु० ( मन्त्रित कीलोंके प्रयोगद्वारा ) उजाड़नेकी क्रिया ( कविप्रि० ६० ) ।
उदासना—सक्रि० उजाड़ना, तोड़ना फोड़ना, समेटना ।
उदासिल—वि० उदास, उदासीन ।
उदासी—स्त्री० खिन्नता, दुःख । पु० त्यागी मनुष्य, वैरागी ।
उदासीन—वि० निरपेक्ष, विरक्त ।
उदाहरण—पु० मिसाल, दृष्टान्त । एक काव्यालंकार 'कछुक बात सामान्य कहि दीजे कछुक मिसाल ।'
उदित—वि० प्रकट, निकला हुआ, प्रस्फुटित ।
उदियाना—अक्रि० परेशान होना, व्याकुल होना ।
उदीची—स्त्री० उत्तर दिशा ।
उदीच्य—वि० उत्तर दिशाका, उत्तर दिशामें स्थित । पु० उत्तरी प्रदेश, उत्तर दिशाका निवासी ।
उदीपन—पु० उभाड़नेकी क्रिया, उत्तेजन ।
उदुंबर—पु० गूलर । नपुंसक । देहरी ।
उदूलहुक्मी—स्त्री० आज्ञाका उल्लंघन ।
उदेग—पु० उद्वेग, व्यग्रता ।
उदै—पु० उदय, उन्नति । प्रकट होना ।
उदो—पु० देखो 'उदौ' ( सुबे० ४०७ ) ।
उदोत—पु० प्रकाश, शोभा 'तिय ललाट बेंदी दिये अग नित बढ़त उदोत ।' बि० १३७ । वृद्धि, बढ़ती 'ज राजवन्त जग जोगवन्त । तिनको उदोत, केहि भाँति होत ।' राम० ९३ । वि० उदित, प्रकाशित, प्रक 'होत उदोत प्रभाकर जो दिश पच्छिम तो कछु दोष नहीं है ।' मोती राम, ( भू० ३५ ) ।
उदोतकर—वि० प्रकाश करनेवाला, चमकानेवाला ।
उदोती—वि० उदय करनेवाला, प्रकाश करनेवाला ।
उदौ—पु० निकलना, प्रकट होना 'भौसिंलाके डरन डरानी रिपुरानी कहैं, पिय भजौ, देखि उदौ पावसके साजको ।' भू० ३२, ( रतन० ६९ ) ।
उद्गत—वि० उद्भूत, उत्पन्न, व्याप्त, प्रकट ।
उद्गम—पु० उत्पत्ति, उदय । उत्पत्तिस्थान ।
उद्गार—पु० मुँहसे निकल पड़नेकी क्रिया, कै, डकार, उफान । हर्ष शोकादि-सूचक शब्द ।
उद्गीय—पु० सामवेदका गान, सामवेदका दूसरा भाग
उद्गीरण—पु० उगलनेकी क्रिया, व्यक्त करनेकी क्रिया 'अन्धकार उद्गीरण करता अन्धकार घनघोर अपार' [अनामिका १०५
उद्ग्रीव—वि० गर्दन उठाये हुए ।
उद्घाटन—पु० उघारने, खोलने या प्रकट करनेकी क्रिया
उद्घात—पु० आघात, धक्का । आरम्भ, उपक्रम, उद्गार।
उद्घातक—पु० नाटकमें एक तरहकी प्रस्तावना । वि० [आघात करनेवाला।
उद्दंड—वि० उद्धत, निडर ।

उद्गत—वि० उद्यत, उठाया हुआ ( रत्ना० ५०८ ) ।
उद्दाम—वि० स्वतंत्र,बन्धनहीन, निरङ्कुश, प्रबल, बड़ा।※
उद्दित—वि० उदित, उद्धत। [ ※ पु० वरुण ।
उद्दिम—पु० उद्यम, प्रयत्न, पुरुषार्थ ( छत्र० ८१ ) ।
उद्दिष्ट—वि० अभिप्रेत, अभीष्ट, दिखलाया हुआ।
उद्दीपक—वि० प्रदीप्त करनेवाला, उभाड़नेवाला ।
उद्दीपन—पु० जगाना या उत्तेजित करना । रसको बढ़ाने-
उद्दीप्त—वि० उत्तेजित । [ वाले विभाव ।
उद्देश—पु० इरादा, अभीष्ट । हेतु । [ जाय ।
उद्देश्य—पु० लक्ष्य, इरादा । जिसके विषयमें कुछ कहा
उद्दोत—पु० प्रकाश (दास २०), उदय । वि० प्रकाशित, उदित 'पुर पैठत श्रीरामके भयो मित्र उद्दोत। राम० ८३
उद्दोतिताई—स्त्री० प्रकाश 'नील पट पीत फहरात अंगनि मिथुन तड़ितघन नील उद्दोतिताई ।' अलबेली अलि ।
उद्ध—क्रिवि० ऊपर 'उद्ध अधमूल तूल पटनि लपेटे चहूँ लपट सुगन्ध सेज सुखद सुहातीमैं ।' रवि० ४३,'कलि-युग जलधि अपार उद्ध अधरम्म उर्मिमय ।' भू० २३
उद्धत—वि० उजड्ड, अशिष्ट, निडर ।
उद्धतपन—पु० ओछापन, अशिष्टता ।
उद्धना—अक्रि० ऊपर उठना, फैल जाना । [※उन्मूलन ।
उद्धरण—पु० उद्धार,ऊपर उठना,लेखादिका अवतरण ।※
उद्धरणी—स्त्री०पढ़े हुए पाठको फिर फिर पढ़ना,रटना । वह अंश जो कहींसे उद्धृत किया गया हो । (पभू० ९४)।
उद्धरना—सक्रि० उद्धार करना । अपहरण करना, अलग करना, काटना 'तब कोपि राघव सत्रुको सिर बाण तीक्षण उद्धर्‍यो ।' राम० ४६८ । अक्रि० मुक्त होना 'बूझियत बात वह कौन विधि उद्धरे ।' के० ८२
उद्धार—पु० निस्तार, छुटकारा, बचाव, रक्षा । सुधार ।
उद्धारना—सक्रि० मुक्त करना, उबारना ।
उद्धृत—वि० ज्योंका त्यों लिया हुआ, उगला हुआ ।
उद्ध्वस्त—वि० नष्ट, टूटा फूटा, गिरा हुआ ।
उद्बुद्ध—वि० जगा हुआ, चैतन्य, विकसित ।
उद्बोधक—वि० ज्ञान करानेवाला, जगानेवाला ।
उद्बोधन—पु० जगाने, चेताने इ० की क्रिया ।
उद्भट—वि० प्रचड, बड़ा भारी, धुरन्धर ।
उद्भव—पु० उत्पत्ति, उदय, उन्नति ।
उद्भावना—स्त्री० कल्पना ( पभू ५५ ), उत्पत्ति, सृष्टि
उद्भासमान—वि० प्रकाशवान् । [ ( पभू० ११२) ।

उद्भासित—वि० प्रकाशित, प्रकट, ज्ञात, प्रतीत ।
उद्भिज्ज, उद्भिद—पु० वनस्पति ।
उद्भूत—वि० उत्पन्न । [ हतबुद्धि-सा ।
उद्भ्रांत—वि० भूला हुआ, घूमता हुआ । चकित या
उद्यत—वि० तैयार, प्रस्तुत, उतारू ।
उद्यम—पु० उद्योग, व्यापार, प्रयत्न ।
उद्यमी—वि० उद्यम करनेवाला, यत्नवान, परिश्रमी ।
उद्यान—पु० बाग़, उपवन ।
उद्यापन—पु० व्रतकी समाप्ति पर होनेवाला हवनादिक
उद्योग—पु० चेष्टा, प्रयत्न, धन्धा । [ कार्य ।
उद्योगी—वि० उद्योग करनेवाला, परिश्रमी ।
उद्योत—पु० उजेला, प्रकाश, आभा ।
उद्रेक—पु० आधिक्य, उन्नति, एक काव्यालंकार ।
उद्वर्त्तन—पु० उबटन । किसी वस्तुका प्रयोग या व्यवहार।
उद्वासन—पु० वास स्थानसे हटाना, भगाना, उजाड़ना, मारना ।
उद्विग्न—वि० घबड़ाया हुआ, क्षुब्ध, व्यग्र, परेशान ।
उद्वेग—पु० घबराहट, व्याकुलता, आवेश ।
उद्वेलित—वि० चञ्चल, वेग-पूर्ण, व्याकुल ।
उधड़ना—अक्रि० उचड़ना, अलग हो जाना, खुलना ।
उधम—पु० ऊधम, उपद्रव ।
उधर—क्रिवि० उस तरफ ।
उधरना—अक्रि० उद्धार पाना 'सूरदास भगवन्त भजन करि सरन गहे उधरे ।' सूवि० १६ । उचड़ना, निकल जाना । सक्रि० उद्धार करना 'तुम मीन ह्वै वेदनको उधरो जू ।' राम० ५०८ गायब हो जाना 'धीर उध-रान्यो आह व्रजके सिवानेमें ।' रत्न० १५५
उधराना—अक्रि० छितरा जाना, बिखरना । ऊधम मचाना, उन्मत्त होना ।
उधार—पु० उद्धार, मुक्ति ( रहीम १८)। ऋण, मँगनी ।
उधारक—वि० छुडानेवाला ।
उधारन, उधारी—वि० उद्धार करनेवाला 'सूर पतित तुम पतित उधारन गहो बिरदकी लाज ।' सूबे० २६
उधारना—सक्रि० मुक्त करना, उद्धार करना 'अबके नाथ मोहिं उधारि ।' सूवि० २४
उधेड़ना, उधेरना—सक्रि० अलग करना, छितराना, भङ्ग करना 'जरासन्धकी ओर उधेर्‍यो, फ़ारि कियो द्वै फाँको ।' सूवि० ३३

उधेड़बुन—स्त्री० सोच विचार, चिन्ता ।
उनंत—वि० झुका हुआ, अवनत 'भई उनंत प्रेम कै साखा।' प०२७, 'भै उनंत पद्मावति बारी ।' प०२४
उनईस—वि० एक कम बीस । पु० '१९' की संख्या ।
उनचास—वि० एक कम पचास । पु० '४९' की संख्या।
उनतीस—वि० एक कम तीस । पु० '२९' की संख्या ।
उनदा, उनदौंहा—वि० उनींदा, नींदका सताया हुआ ।
उनमत,-मद—वि०मतवाला, पागल । पु०पागल मनुष्य।
उन्मद—वि० उन्मत्त, उन्मादयुक्त, मतवाला ।
उनमना—वि० उदास, अनमना, सुस्त ।
उनमाथना—सक्रि० मथना ।
उनमाथी—वि० मथनेवाला ।
उनमाद—पु० पागलपन, चित्त विभ्रम ।
उनमान—पु० अटकल, अनुमान, विचार 'सुनि स्रवननि उनमानि करति हौं, निगम नेति यह लखनि लखीरी । सू० १६६ । परिमाण, थाह 'लेन उनमान फतेअलीने पठायो दूत' सुजा० १५ । सामर्थ्य, योग्यता । वि० समान, सदृश 'कमलदल नैननिकी उनमान।' रहीम ३२
उनमानना—सक्रि०अनुमान करना ख़याल करना, विचारना 'फटि फउनी कर लकुट मनोहर,गोचारनचले मन उनमानि ।' सू०, ( फे० २२६ ) [ खिलना ।
उन्मीलन—पु० नेत्रादिका खुलना, प्रस्फुटित होना,
उन्मीलित—वि० खुला हुआ, विकसित । पु० एक अर्थालंकार 'सदृश वस्तुते मिलि कछुक कारनमें बिलगात ।
उनमुना—वि०मौन, चुप 'हँने न बोलै उनमुनी चञ्चल मेला मार ।' साखी ८
उनमुनी—स्त्री० हठयोगकी एक मुद्रा (साखी ११९) ।
उनमूलना—सक्रि० उखाड़ना, नष्ट करना । [प्रकाश ।
उनमेष—पु० आँख या फूल इत्यादिका खुलना, विकास,
उनमेखना—अक्रि० खुलना, विकसित होना ।
उनमेद—पु० माँजा,प्रथम वर्षामें उत्पन्न विषैला फेन'जल उनमेद मीन ज्यों मंगुरो पाव कुहारो मार्‍यो।'सूवि० ५१
उन्मोचन—सक्रि० उन्मुक्त करना, दूर करना ।
उनयना—देखो 'उनवना' ।
उनरना—अक्रि० उमड़ना, उठना 'उनरत जोवन देखि नृपति मन भावइ हो ।' रामलला०। उछलना 'यचनपाश बाँधे माधव-मृग, उनरत घालि लये ।'भ्र० १२५
उनवना—अक्रि० झुकना । घिर आना । टूटना ।
उनवर—वि० न्यून, क्षुद्र, तुच्छ ।
उनवान—पु० अनुमान, ख़याल । [ की संख्या
उनसठ, उनसठि—वि० एक कम साठ । पु० '५९' की
उनहत्तर, उनहत्तरि—वि०एक कम सत्तर । पु० '६९'
उनहानि—देखो 'उन्हानि' । [ की संख्या ।
उनहार—वि० समान, सदृश ।
उनहारि—स्त्री० समानता, एकरूपता, रूप या शकल । 'चुनरी श्याम सतार नभ, मुख शशिकी उनहारि ।' वि० १३६, ( दास १५६ ) [ मानना ।
उनाना—सक्रि० झुकाना, प्रवृत्त करना । सुनना । आज्ञा
उनारना—सक्रि० उठाना, उकसाना, खसकाना, बढ़ाना 'ज्योति बढ़ावत दशा उनारि । मानहु स्यामल सीक पसारि ।' के० २२
उनासी—वि० एक कम अस्सी । पु० ७९ की संख्या ।
उनींद—स्त्री० अर्द्ध निद्रा, ऊँघाई, 'लरिका स्रमित उनींद वस सयन करावहु जाइ ।' रामा १९३
उनींदा—वि० नींदसे भरा हुआ , अलसाया हुआ । नैन उनादे भये रँगराते ।' सू०१६९
उन्नइस—वि० एक कम बीस । पु० १९ की संख्या ।
उन्नत—वि० उठा हुआ, उभड़ा हुआ, समृद्धि, प्रसन्न,
उन्नति—स्त्री० वृद्धि, अभ्युदय । ऊँचाई । [ऊँचा
उन्नायक—वि० ऊपर उठानेवाला, बढ़ानेवाला ।
उन्नासी—वि० एक कम अस्सी । पु० '७९' की संख्या।
उन्निद्र—वि० जिसे नींद न आयी हो, निद्रारहित । खिला
उन्नीस—वि० एक कम बीस । पु०'१९' कीसंख्या [हुआ
उन्मत्त—वि० पागल, मतवाला, आपेसे बाहर ।
उन्मन—वि० विमनस्क, उदास । [ फिरना।
उन्मनन—पु० मनका बेठिकाने रहना, मनका उड़ा उड़ा
उन्मदकर—वि० उन्मादक ।
उन्माद—पु० पागलपन, विक्षिप्तता ।
उन्मादक—वि० उन्माद लानेवाला ।
उन्मादिनी—वि० स्त्री० उन्माद लानेवाली ।
उन्मार्गी—वि० बुरे रास्तेपर चलनेवाला, कुचाली ।
उन्मीलन—पु० खुलनेकी क्रिया, खुलना, उठना, उठान
उन्मीलना—सक्रि० खोलना, विकसित करना ।
उन्मुक्त—वि० खुला हुआ, स्वतंत्र । [ प्रवृत्त
उन्मुख—वि० ऊपरकी तरफ मुँह किये हुए । उत्सुक।
उन्मूलन—पु० उखाड़ने या नष्ट करनेकी क्रिया ।

उन्मेष—पु० खुलना, खिलना, विकास ।
उन्मोचन—वि० खोलनेवाला ।
उन्हानि—स्त्री० बराबरी, समता ।
उन्हारि—स्त्री० रूप, शकल, प्रकार 'एकसे देखु, कछू न बिसेखु ज्यौं एकै उन्हारि कुँभारके भाँड़े ।' देव (व्रज०)। '...जातु है उन्हारि केराकी ।' रवि० २९
उपंग—पु० एक बाजा 'चंग उपंग नाद सुर तूरा ।' प० २६० । उद्धव-पिता ( उपंगसुत = उद्धव ) ।
उपंत—वि० उत्पन्न ।
उपकरण—पु० सामग्री,साधन । चँवर,छत्रादि राजचिह्न।
उपकारना—सक्रि० उपकार करना ।
उपकार—पु० नेकी, भलाई, एहसान, लाभ ।
उपकारक—वि० भलाई करनेवाला, शुभचिन्तक ।
उपकारी—वि० भलाई करनेवाला, परहितकारक ।
उपकृत—वि० जिसके साथ भलाई की गयी हो । कृतज्ञ ।
उपकृति—स्त्री० उपकार । [करनेका आयोजन ।
उपक्रम—पु० आरम्भ या अनुष्ठान । भूमिका । आरम्भ
उपखान—पु० पुरानी कथा, वृत्तान्त 'एक उपखान चलत त्रिभुवनमें तुमसों आज उघारि ।' सू० १०९
उपगार—पु० उपकार, भला ( कबीर १ ) ।
उपगारी—वि० उपकारी, भला करनेवाला (कबीर १९२)
उपग्रह—पु० छोटा ग्रह । कैदी । गिरफ्तारी ।
उपघाती—वि० नाशकारक, कष्ट देनेवाला ।
उपचर्या—स्त्री० सेवा-शुश्रूषा । चिकित्सा ।
उपचार—पु० चिकित्सा, इलाज, सेवा, व्यवहार ।
उपचारक—पु० उपचार करनेवाला, उपाय या चिकित्सा करनेवाला ।
उपचारना—सक्रि० काममें लाना । विधान करना ।
उपचित—वि० सञ्चित, संवर्द्धित, पुष्ट ।
उपचेतन—पु० अनचेतन, अंतःसंज्ञा ।
उपज—स्त्री० उत्पत्ति, पैदावार । सूझ । गढ़ी हुई बात ।
उपजत—स्त्री० पैदावार, आमदनी ( अष्ट० ८५ ) ।
उपजना—अक्रि० उत्पन्न होना ।
उपजाऊ—वि० उर्वर, जिसमें उपज अच्छी हो ।
उपजाना—सक्रि० उत्पन्न करना ।
उपजीवी—वि० पराश्रयी, दूसरेके आधारपर रहनेवाला ।
उपटन—पु० उबटन, लेप । आघात इ० का चिह्न ।
उपटना—अक्रि० उखड़ना । चिह्न पड़ना, उछल आना 'बेई गड़ि गाड़ैं परी उपट्यो हारु हियै न । आन्यो मोरि मतंग मनु मार गुरेरन मैन ।' बि० ४५, 'बिनु गुन पिय उर हरवा, उपटेउ हेरि ।' रहीम ४२
उपटा—पु० ठोकर । पानीकी बाढ़ ।
उपटाना—सक्रि० उबटन लगवाना, उबटन लगाना 'आई हुती अन्हवावन नाइनि, सोंधे लिये वह सूधे सुभायनि । कंचुकी छोरी उतै उपटैबेको ईंगुरसे अँगकी सुखदायिनि ।' देव । उखड़वाना । उचाटना, हटाना ।
उपटारना, उपटारना—सक्रि० उच्चाटन करना, हटाना । 'मधुवनतें उपटारि श्याम कहँ या व्रज लै कै आव ।' [भ्र० १२८
उपटौकन—पु० भेंट, उपहार, नज़र ।
उपड़ना—अक्रि० देखो 'उपटना' ।
उपत्यका—स्त्री० पहाड़के पासका भूभाग, तराई ।
उपदंश—पु० आतशक, गरमी । चिखना, चाट ।
उपदिशा—स्त्री० प्रमुख दिशाओंके बीचकी दिशा,विदिशा।
उपदेश,-देस—पु० नसीहत, सीख, सलाह । गुरुमन्त्र ।
उपदेशक, उपदेष्टा—पु० उपदेश देनेवाला ।
उपदेशना, उपदेसना—सक्रि० शिक्षा देना 'सुन्दर गौर सु विप्रवर अस उपदेसेउ मोहिं ।' रामा० ४५
उपद्रव—पु० ऊधम, गड़बड़, उत्पात ।
उपद्रवी—वि० उत्पाती, गड़बड़िया, ऊधमी ।
उपधरना—अक्रि० अंगीकार करना, सहारा देना ।
उपधान—पु० तकिया । आधार-वस्तु ।
उपनना—अक्रि० उत्पन्न होना 'आगि जो उपनी ओहि समुन्दा । लंका जरी ओहि इक बुन्दा ।' प० ६९
उपनयन—पु० यज्ञोपवीत संस्कार ।
उपनाना—सक्रि० पैदा करना 'अला एकै नूर उपनाया ताकी कैसी निंदा ।' कबीर १०४
उपनाम—पु० अन्य नाम, उपाधि ।
उपनिवेश—पु० दूसरे स्थानसे आये हुए लोगोंकी बस्ती ।
उपनिषद्—स्त्री० विद्या सीखनेके लिए आचार्यके पास बैठना वेदोंके अंग ब्राह्मणोंके वे अंश जिनमें आत्मा परमात्मा आदिके रहस्यपर प्रकाश डाला गया है, धार्मिक साहित्य ।
उपनीत—वि० जिसका उपनयन हो गया हो, पास लाया हुआ ।—होना—पहुँचना ।
उपन्यास—पु० कल्पित कहानी, आख्यायिका । वाक्यका
उपपति—पु० यार, जार । [उपक्रम ।

उपपत्ति—स्त्री० सहायता, आधार ( प्रिय० १०१ )। प्राप्ति । प्रतिपादन, सिद्धि, समाधान । संगति, [ युक्ति ।
उपपातक—पु० छोटा पाप ।
उपपादित—वि० प्रतिपादित, प्रमाणित, ठहराया हुआ ।
उपबरहन—पु० 'उपबर्हण', तकिया, 'भूप बचन सुनि सहज सुहाये । जटित कनकमनि पलँग डसाये । उपबरहन बर बरनि न जाहीं ।' रामा० १९२
उपभोक्ता—वि० उपभोग करनेवाला ।
उपभोग—पु० बर्तने या व्यवहारमें लानेकी क्रिया, आस्वादन । विलासकी सामग्री ।
उपमंत्री—पु० सहायक मन्त्री ।
उपमा—स्त्री० सादृश्य, मिलान, एककाव्यालङ्कार ।
उपमान—पु० वह वस्तु जिससे समता की जाय,अवर्ण्य ।
उपमाना—सक्रि० उपमा देना 'चारु कुण्डल सुभग स्रवननि, को सके उपमाइ । सू० १७५
उपमित—वि० जिसकी उपमा अन्य वस्तुसे दी गयी हो पु० कर्मधारय समासका एक भेद ।
उपमेय—पु० वह वस्तु जिसकी तुलना की जाय, वर्ण्य ।
उपमेयोपमा—स्त्री० एक अर्थालङ्कार ।
उपयुक्त—वि० ठीक, उचित ।
उपयोग—पु० लाभ, आवश्यकता, प्रयोग, व्यवहार ।
उपयोगिता—स्त्री० उपयोगी होनेका भाव,लाभकारिता ।
उपयोगी—वि० काममें आनेवाला, कामका, लाभदायक, [ अनुकूल ।
उपरत—वि० विरत, उदासीन । मृत ।
उपरना—पु० ऊपरसे ओढ़नेका कपड़ा, दुपट्टा 'पहिरे राती कन्चुकी सिर स्वेत उपरना सोहै ।' सूवि० २० अक्रि० उखड़ना ।
उपरफट—वि० ऊपरी, व्यर्थका 'मेरी बाँह छाँड़ि दे राधा करत उपरफट बातैं ।' सूवे० ७८
उपरहित—पु० पुरोहित ।
उपरांत—क्रिवि० इसके बाद, अनन्तर ।
उपराग—पु० वर्ण । विषय-वासना । सूर्य या चन्द्रका ग्रहण । राहु 'बिनु धर वह उपराग गलो । ना जानौं वह राहु उमापति क्ति है सोध लह्यो ।' भ्र० १३१
उपराजना—सक्रि० उत्पन्न करना, बनाना ( प० ५, इन्द्रा० ५६ ), उपार्जन करना ।
उपराना—अक्रि० ऊपर होना 'डोलहि बोहित लहरैं खाहीं । खिन तर होहिं खिनहिं उपराहीं ।' प० ६८ सक्रि० ऊपर करना ।
उपराम—पु० विराम, विश्राम । त्याग, निवृत्ति ।
उपराला—पु० सहायता, बचाव, 'उपराला करि सक्यो न कोई ।' छत्र० १२८ [हुआ हो ।
उपरावटा—वि० अकड़ा हुआ, जिसका सिर ऊपर तना
उपराहीं—क्रिवि० ऊपर 'बरनौं माँग सीस उपराहीं । सेंदुर अबहिं चढ़ा जेहि नाहीं ।' प० ४४ । वि० श्रेष्ठ, बढ़कर 'धावहिं बोहित मन उपराहीं ।' प० ६६
उपरी-उपरा—पु० चढ़ा-ऊपरी, स्पर्द्धा ।
उपरूपक—पु० अभिनयका एक भेद ।
उपरैना—पु० दुपट्टा 'कञ्चन बरन पीत उपरैना, सोभित साँवर अङ्ग री ।' सू० १८०, सूसु० २६१ )।
उपरैनी—स्त्री० ओढ़नी ।
उपरोक्त—वि० ऊपर कहा हुआ ।
उपरोधक—पु० बाधा डालनेवाला । भीतरी कमरा ।
उपरोहित—पु० पुरोहित ।
उपरोहिती—स्त्री० पुरोहितका कार्य 'उपरोहिती कर्म अति मन्दा ।' रामा० ५६३
उपरौंश—पु० ऊपरका पल्ला ।
उपरौना—पु० उपरना । दुपट्टा ।
उपर्युक्त—वि० ऊपर कहा हुआ ।
उपल—पु० पत्थर, रत्न, ओला ।
उपलक्षण—पु० संकेत, चिह्न ।
उपलब्ध—वि० प्राप्त । ज्ञात ।
उपला—पु० गोबरका सुखाया हुआ टुकड़ा ।
उपली—स्त्री० कण्डी, गोहरी ।
उपल्ला—पु० ऊपरका पर्त ' रायजूको रायजू रज दीन्हीं राजी ह्वैके सहरमें ठौरठौर सोहरत भई है ।' 'साँस लेत उड़िगो उपल्ला औ भितल्ला सबै, दिन है बाती हेत रुई रह गई है ।' बेनी
उपवन—पु० उद्यान, फुलवारी ।
उपवना—अक्रि० उड़ जाना । उदय होना 'मोद-मगोद लिये लालति सुमित्रा देखि देव कहैं सब सुकृत उपवियो है ।' गीता० २७९
उपवास—पु० लंघन, अनशन ।
उपविष्ट—वि० बैठा हुआ ।
उपवीत—पु० उपनयन संस्कार, जनेऊ ।
उपशम—पु० शान्ति, निवारण । इन्द्रियदमन ।

उपशमित—वि० शांत। [ परिच्छेद।
उपसंहार—पु० समाप्ति, परिहार। सारांश। अन्तका
उपसर्ग—पु० उप, अनु आदि शब्द जो शब्दोंके पहले जोड़े जाते हैं। उत्पात।
उपस्थ—पु० पेड़ू, मूत्रेन्द्रिय ( जीव० ७० ), स्त्री-चिह्न।
उपस्थान—पु० पास आना, खड़े होकर आराधना करना।
उपस्थित—वि० हाज़िर, विद्यमान, सम्मुख आया हुआ।
उपहार—पु० भेंट, नज़राना।
उपहास—पु० हँसी, बुराई, निन्दा 'हौंहुँ कहावत सब कहत राम सहत उपहास।' रामा० २२
उपहासी—स्त्री० हँसी, निन्दा।
उपही—पु० अपरिचित या बाहरी मनुष्य, परदेसी 'ये उपही कोउ कुँवर अहेरी।' गीता० ३४९
उपांग—पु० अवयव, अङ्गोंकी पूर्ति करनेवाली वस्तु। एक
उपांत्य—वि० अन्तवालेके पासका। [ बाजा।
उपाइ, उपाउ—पु० उपाय, तदबीर, साधन, युक्ति।
उपाख्यान—पु० पुराना आख्यान,प्राचीन कथा,अन्तर्कथा।
उपाटना,उपाड़ना—सक्रि० उखाड़ना 'योजना विस्तार शिला पवनसुत उपाटी।' सूरा० ४४
उपादान—पु० प्राप्ति, स्वीकार। बोध। स्वयं कार्यका रूप धारण करनेवाला कारण।
उपादि, उपाधि—स्त्री० छल, कपट 'राम नाम जान्यो नहीं, जान्यो सदा उपादि।' रहीम। पदवी। विघ्न, बाधा, उपद्रव।
उपादेय—वि० स्वीकार करने या लेने योग्य, अच्छा,उत्कृष्ट।
उपाधि—स्त्री० सम्मानसूचक पद। छल, धूर्तता। उपद्रव। निशान। विशेष गुन।
उपाधी—वि० उपद्रव मचानेवाला,बखेड़ा खड़ा करनेवाला।
उपाध्याय—पु० गुरु, अध्यापक। ब्राह्मणोंका एक भेद।
उपाध्याया—स्त्री० अध्यापिका।
उपाध्यायी—स्त्री० उपाध्याय-पत्नी, अध्यापिका।
उपानत, उपानह—पु० जूता, पदत्राण 'धोती फटी सी लटी दुपटी अरु पाँय उपानहकी नहिं सामा।' सुदामा० ७
उपाना—सक्रि० उत्पन्न करना 'हौं मनते विधि पुत्र उपायो। जीव उधारन मन्त्र बनायो।' के० ८३, ( सूवे० २६ ) 'अब लखहु करि छल-कलह नृपसों भेद-बुद्धि उपाइके।' मुद्रा० ४८। करना। रचना।
उपाय—पु० युक्ति, प्रयत्न, उपचार।
उपायन—पु० उपहार, भेंट, सौग़ात, तोहफा।
उपारना—सक्रि० उखाड़ना 'खायेसि फल अरु विटप उपारे।' रामा० ४२४, साचहुँ मैं लबार भुज बीहा। जौ न उपारउँ तव दस जीहा।' रामा० ४६८
उपार्जन—पु० पैदा करने या कमानेकी क्रिया।
उपार्जित—वि० कमाया हुआ।
उपालंभ—पु० ताना, निन्दा, शिकायत।
उपाव—पु०—उपाय, युक्ति ( भ्र० ९७ )।
उपास—पु० लंघन, अनशन। पु० उपास्य, इष्टदेव 'नैन द्रवै जलधार वह, छिन छिन लेत उसाँस। रैनि अँधेरी डोलिहौं, गावत जुगुल उपास।' नागरी०
उपासक—पु० उपासना करनेवाला, पूजक, भक्त।
उपासना—सक्रि० पूजा करना, भजना 'सन्ध्याहि उपासत भूमिदेव। जनु वाकदेवकी करत सेव।' के०२२५। अक्रि० उपवास करना, भूखा रहना। स्त्री० पूजा।
उपासी—स्त्री० उपासना, पूजा, स्तुति 'केशव विश्वामित्रके रोषमयी दग जानि, सन्ध्यासी तिहुँ लोकके किहिनि उपासी आनि।' राम० ९७। वि० उपासक, सेवक 'पंच पीरकी भगति छाँड़िकै ह्वै हरिचरन उपासी।'
उपास्य—वि० पूज्य, सेव्य, आराध्य।
उपेंद्र—पु० इन्द्रके छोटे भाई वामन, विष्णु।
उपेंद्रवज्रा—स्त्री० एक वर्ण-वृत्त।
उपेक्षणीय—वि० तिरस्करणीय, घृणा के योग्य। छोड़ देने
उपेक्षा—स्त्री० अवहेलना; तिरस्कार, विरक्ति। [ योग्य।
उपेक्षित—वि० जिसकी उपेक्षा की गयी हो।
उपेखना—सक्रि० उपेक्षा करना ( रत्ना० ३७५ )।
उपैना—वि० खुला हुआ, नग्न ( सूसु० ४३ )।
उपोद्घात—पु० भूमिका, प्रस्तावना।
उफड़ना—अक्रि० उबलना, उफनना।
उफनना—अक्रि० उबलना, आँचके कारण ऊपर उठना। उमड़ना 'उफनत तक्र चहूँ दिश चितवति चित लाग्यो नँदलालहिं।' सूवे० १७०
उफनाना—अक्रि० उबलना, फेन सहित ऊपर उठना। उमड़ना 'अंगनि चन्दन घनसार अंगरात सेत सारी छीर फेन कैसी आभा उफनात है।' रस० २६ (उदे० [ "निवारना" )।
उफान—पु० उबाल।
उफाल—स्त्री०—लम्बी डग 'हनुमन्त ये जिन मित्रता

रविपुत्र सों एमनों करी । जलजाल फाल कराल माल उफाल पार धरा धरी ।' के० २०

उबकाई—स्त्री० जी मचलाना, वमन ।

उबट—पु० अटपट रास्ता । वि० ऊबड़ खाबड़ ।

उबटन—पु० सरसों चिरौंजी आदिका लेप ।

उबटना—अक्रि० उबटन लगाना 'उबटि नहाहु गुहौं चोटिया चलि देखि भलो घर करहिं बड़ाई ।' कृष्ण गी० ४४१, सक्रि० 'जेहि सुख मृगमद मलयज उबटति'—भ्र० ५२ [ १८६) ऊबना ।

उबना—अक्रि० 'डूबना' का उलटा, ऊपर उठना (बीजक

उबरना—अक्रि० उद्धार पाना, छूटना, बचना '…कछू दिन उबरते तो घने काज करते ।' भू० ७० । बाकी बचना 'दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा । उबरा सो जनवासहिं आवा ।' रामा० १७७, (सुवे० १४६)

उबरा—वि०बचा हुआ 'उबरो धन देहु विदेशिनको'के०३

उबलना—अक्रि० उफनना, खौलना ।

उबहना—सक्रि० हथियार उठाना । पानी उलीचना । ऊपर उठाना । जोतना । वि० बिना जूतोंका ।

उबहनी—स्त्री० रस्सी ।

उबाँत—स्त्री० क़ै, उलटी ।

उबाना—वि० नंगे पैर । पु० कपड़ा बुननेमें जो सूत राछके बाहर रह जाता है, वह ।

उबार—पु० उद्धार, रक्षा 'निज निज गृह सब करहिं बिचारा । नहिं निसिचर कुल केर उबारा ।' रामा० ४३३, ( उदे० 'झरझराना' ) । ओहार, पर्दा ।

उबारना—सक्रि० उद्धार करना,रक्षा करना 'लाखागृहतें जरत पाण्डुसुत बुधिबल नाथ उबारे ।' सुवि० १०

उबालना—सक्रि० जोश देना, खौलाना, पानीमें पकाना ।

उबासी—स्त्री० जँभाई ।

उबाहना—सक्रि० उबहना, हथियार खींचना, उठाना ।

उबिटना, उबीठना—सक्रि० अच्छा न लगना 'माथुर लोगनके सँगकी यह बैठक तोहिं अजौं न उबीठी ।' कवि प्रि० । अक्रि० तबीयतका ऊब उठना 'कामकी बात अघात नहीं दिनराति नहीं रतिरंग उबीठे ।' भवानी० २०

उबीधना—अक्रि० फँसना । विद्ध हो जाना । गड़ना ।

उबीधा—वि० फँसा हुआ, गड़ा हुआ, धँसा हुआ । गड़नेवाला, कण्टकमय ।

उबेना—वि० बिना जूतेका, 'उबाना' । 'तब लौं उबेने पायँ फिरत पेटै खलाय'—कविता० २३३

उबेरना—सक्रि० उद्धार करना । बचाना (रतन० ३) ।

उभड़ना, उभरना—अक्रि० ऊपर उठना, उकसना, प्रकट होना, बढ़ना ।

उभना—अक्रि० उठना 'खाँड़ेदान उभै निति बाहाँ ।'प०१

उभय—वि० दोनों, दो ।

उभयतः—क्रिवि० दोनों तरफसे ।

उभयभारती—स्त्री० मण्डनमिश्रकी पत्नी ।

उभरौंहा—वि० ऊपर उठा हुआ ( उदे० 'भावक' ) ।

उभा—स्त्री० चिन्ता 'सबहिं उभामें लगि रहा राव रंक सुलतान । साखी ६३

उभाड़—पु० उभड़ापन, ऊँचाई । वृद्धि ।

उभाड़दार—वि० उभड़ा हुआ, चटकीला, भड़कीला ।

उभाड़ना—सक्रि०ऊपर उठना,उकसाना,उत्तेजित करना।

उभाना—अक्रि० सिर हिलाना, हाथ पाँव पटकना 'एक होय तौ उत्तर दीजै, सूर सु उठी उभानी' सू०२११

उभार—पु० उठान ।

उभिटना—अक्रि० हिचकना, रुक जाना, रह जाना ।

उभै—वि० दोनों । [ उभाड़ ।

उमंग, उमग, उमगन—स्त्री० जोश, लहर, आनन्द,

उमँगना, उमगना—अक्रि० उमड़ना, आवेशमें आना, उल्लासमें होना 'बन्धु समेत जनक तब आये । प्रेम उमँगि लोचन जल छाये ।' रामा० १८४, 'औघट अगाध सिन्धु स्याहीको उमगि आयो तामें तीनों लोक बूड़ि गये एक संगमें ।' रवि० ४१,(५५,७१ भी)

उमगाना—सक्रि०उभाड़ना, उत्तेजित करना 'मीत कहा सों दुखिहु मोहि रनहित उमगावत ।' मुद्रा० १०५

उमचना—अक्रि० शरीरको झटकेके साथ ऊपर उठाकर नीचे गिराना । चौंक पड़ना, सावधान होना ।

उमड़ना—अक्रि० पानी इत्यादिका ऊपर उठना । फैलना, छाना । आवेशमें आना ।

उमदगी—स्त्री० अच्छाई, बढ़ियापन ।

उम्दगी—स्त्री० बढ़ियापन, उत्कृष्टता, खूबी ।

उमदना—अक्रि० उमंगमें भरना, उमड़ना ।

उमदा—वि० बढ़िया, उत्कृष्ट, अच्छा ।

उमदाना—अक्रि० उन्मत्त होना । आवेशमें आना

उमर—स्त्री० उम्र, आयु, अवस्था । [ (वि० ७७)

उमरती—स्त्री० एक बाजा ।
उमरा—पु० 'अमीर' का बहुवचन । सरदार लोग ।
उमराय, उमराव—पु० सरदार लोग, रईस (भू० ११, १४)
उमस—स्त्री० हवा न चलनेसे उत्पन्न गरमी ।
उमहना—अक्रि० उमड़ना 'भूलि हुलास विलास गये दुखते भरिकै अँसुवा उमहै हैं ।' रस० २६ । छाना, उमंगमें आना, प्रसन्न होना ।
उमहाना—सक्रि० उमड़ाना, उमाहना 'कथा गंग लागी मोंहिं तेरी, उहि रससिंधु उमहायो ।' सू० २६३
उमा—स्त्री० पार्वतीजी, भवानी । हलदी । दुर्गा ।
उमाकना—सक्रि० उन्मूलन करना, नष्ट करना ।
उमाकिनी—वि० स्त्री० उन्मूलन करनेवाली ।
उमाचना—सक्रि० उभाड़ना, निकालना । 'सुन्दरि मन्दिर तैं न कढ़ी कहूँ नैनभि तैं नहिं लाल उमाची ।' [ रवि० ७८
उमाद—पु० उन्माद, पागलपन ।
उमाधो, उमापति—पु० शङ्करजी ।
उमाह—पु० उमङ्ग, उत्साह, आनन्द 'प्रगट करौ सब चातुरी, मनमें विपुल उमाह ।' चाचाहि० ( ललित० १३५ )
उमाहना—अक्रि० उमहना, उमड़ना, मौज या आवेशमें आना (सुन्द० ९४) सक्रि० उमड़ाना 'प्रलय करन त्रिपुरारि कुपित जनु गङ्ग उमाहिय । सुजा० ९३
उमाहल—वि० उत्साहपूर्ण, उमङ्गयुक्त ।
उमेठना, उमेड़ना, उमैठना—सक्रि० मरोड़ना, ऐंठना ( उदे० 'अठ-पाव', रहीम १५ ) ।
उमेलना—सक्रि० उन्मीलन करना, प्रकट करना । बयान करना ।
उम्दा—वि० अच्छा, बढ़िया ।
उम्मत—स्त्री० जमाअत, साम्प्रदायिक दल ।
उम्मस—स्त्री० पीड़ा ( रत्ना० ४३१ ) ।
उम्मीद, उम्मेद—स्त्री० आशा, भरोसा ।
उम्मेदवार—पु० वह जो नौकरी पानेकी गरज़से किसी दफ्तर या दूकानमें निर्वेतन काम करे । नौकरी पानेकी आशा करनेवाला, चुनावके लिए खड़ा होनेवाला ।
उम्मेदवारी—स्त्री० निर्वेतन काम करना ।
उम्र—स्त्री० आयु, अवस्था ।
उरंग, उरगम—पु० सर्प ।
उर—पु० छाती, हृदय, मन ( उदे० 'उरझाना' ) ।
उरई—स्त्री० खस, उशीर ।

उरकना—अक्रि० ठहरना, रुकना ।
उरग—पु० पेटके बल चलनेवाला, सर्प ।
उरगना—सक्रि० ग्रहण करना, अङ्गीकार करना ।
उरगाद, उरगारि—पु० गरुड़ ।
उरगाय—पु० विष्णु 'दास तुलसी कहत मुनिगन 'जयति-जय उरगाय ।' विन० ५०५ । सूर्य । प्रशंसा । वि० प्रशंसित । फैला हुआ ।
उरगिनी—स्त्री० सर्पिणी, नागिन ।
उरज, उरजात—पु० स्तन, कुच । [ (रतन० ७१)
उरझना—अक्रि० फँसना, लिपटना, लिप्त होना ।
उरझाना—सक्रि० फँसाना, लिप्त रखना । अक्रि० फँसना 'बरणि न जाहीं । उर उरझाहीं ।' राम० १८
उरझेर—पु० झकोरा 'पानीको सो घेर किधौं पौन उरझेर किधौं....' सुन्द० ४२
उरद—पु० अन्न-विशेष, माष ।
उरदावन—स्त्री० उंचन, अदवान, पैतानेकी रस्सी
उरध—क्रिवि० ऊर्ध्व, ऊपर । [ ( ग्राम० ४४ ) ।
उरधारना—सक्रि० फैलाना, बिखराना ।
उरना—अक्रि० उड़ना ( उदे० 'गच्छना' ) ।
उरबसी—स्त्री० एक अप्सरा ( उर्वशी ) । एक भूषण 'तोपर वारौं उरबसी, सुन राधिके सुजान । तू मोहन-के उर बसी ह्वै उरबसी समान ।' वि० १६
उरबी—स्त्री० धरती, पृथिवी ।
उरमना—अक्रि० झूलना, लटकना 'गजमोतिनकी अवली अपार । तहँ कलसनपर उरमति सुढार ।' राम० १२८
उरमाना—सक्रि० लटकाना ।
उरमाल—पु० रूमाल ।
उरमी—स्त्री० पीड़ा, दुःख 'तू तो घट उरमी रहित सदा एक रस ।' सुन्द० १११ । देखो 'उर्मि' ।
उरला—वि० पिछला । विरला, निराला (साखी १२३) ।
उरविज—पु० उर्वीपुत्र मंगल । [ कृत्य ।
उर्स—पु० पीरों आदिकी मृत्यु-तिथि या उस दिनका
उरस—वि० नीरस, स्वादहीन । पु० छाती, हृदय ।
उरसना—सक्रि० चलाना, उथल पुथल करना 'स्वास उदर उरसति यों मानों दुग्ध सिंधु छबि पावै ।' सू० ५०
उरहन, उरहना—पु० शिकायत, उलाहना 'उरहन देन चली यशुमतिके मनमोहनके रूप रई ।' सूबे० १०७
उरा—स्त्री० पृथिवी ।

उराट, उराऊ—पु० 'उराव', उमंग, चाह, उत्साह 'बरन्यो मकल महामुनि मंजुन बालचरित्र उराऊ।' रघु० ९२। खुसी 'पुरन कहीं खबर तहँकी मब नृपरनिवास उराऊ।' रघु० १२६

उराना, उरा जाना—अक्रि० चुकना, खतम हो जाना।

उराय—पु० देखो 'उराव'।

उरार—वि० बड़ा, विस्तृत।

उराव—पु० चाह, उमंग, हौंसला 'तुलसी उराव होत रामको सुभाव सुनि' कविता० २०५ (पाठान्तर),

उराहना—पु० शिकायत। [(सू० १८८)

उरिण, उरिन—वि० ऋणमुक्त 'सुन सुत तोहिं उरिन [मैं नाहीं।' रामा० ४३१

उरु—पु० जाँघ।

उरुजना—अक्रि० 'उरझना', फँसना।

उरे—क्रिवि० आगे, उस पार, दूर।

उरेखना—सक्रि० देखो 'अवरेखना'।

उरेह—पु० चित्रकारी (प० १)।

उरेहना—सक्रि० खींचना, चित्रित करना, 'पुनि धनि सिंघ उरेहै लागी।' प० ७८। रँगना; लगाना।

उरोज, उरोरुह—पु० कुच, स्तन।

उर्द—पु० अन्न विशेष।

उर्ध—वि० ऊँचा, खड़ा।

ऊर्ध्वग—वि० ऊपर जानेवाला, उत्थानशील।

उर्फ—पु० उपनाम, चलतू नाम। [भूमिका २५।

उर्मि—स्त्री० लहर 'मधुर सुरत हित हिलोर' 'पल्लव'

उर्मिल—वि० लहर सम्बन्धी, लहरदार।

उर्मिला—स्त्री० लक्ष्मणकी स्त्रीका नाम।

उर्वर—वि० पु० उर्वरा—वि० स्त्री० उपजाऊ। स्त्री० उपजाऊ ज़मीन।

उर्वशी—स्त्री० एक प्रसिद्ध अप्सराका नाम।

उर्विजा, उर्वीजा—स्त्री० सीता।

उर्वी—स्त्री० पृथिवी।

उर्वीधर—पु० शेषनाग।

उलंगना, उलंघना—सक्रि० उल्लंघन करना, नाँघना। उपेक्षा करना 'देहरि उलंघि सकत नहिं सो अब खेलत नन्द कुमार।' सू० ७३ (के० १४७)

उल्का—स्त्री० प्रकाश, अग्निपिण्ड। मसाल, दीपक।

उल्कामुख—पु० एक 'भूत' जिसके मुँहसे आगकी लपट निकलती हो, अगिया बैताल। [कर फेंकना।

उलचना, उलछना—सक्रि० छितराना, फैलाना, निकाल-

उलछारना—सक्रि० ऊपरकी तरफ फेंकना। प्रकट करना।

उलझन—स्त्री० फँसाव, अटकाव। फेर, समस्या, चिन्ता।

उलझना—अक्रि० देखो 'उरझना'। [बाधा।

उलझाना—सक्रि० देखो 'उरझाना'। अक्रि० फँसना।

उलझाव, उलझेड़ा—पु० अटकाव, चक्कर, झंझट।

उलझौंहा—वि० फँसानेवाला, मुग्ध करनेवाला।

उलटना—अक्रि० पलटना, घूमना, लौटना। उमड़ना। विरुद्ध होना, अस्त-व्यस्त होना. नष्ट होना। सक्रि० खोदकर फेंकना, नष्ट करना। बात दोहराना। लौटाना। औरका और करना, 'पचिहारी कछु काम न आई उलटि सबै विधि दीनी।' हरि० उड़ेलना।

उलटना, पलटना—सक्रि० ऊपर नीचे करना अस्त व्यस्त करना। अक्रि० इधर उधर आना जाना।

उलट-पलट, उलट-पुलट—वि० अस्त व्यस्त, परिवर्तित। पु० परिवर्तन, गड़बड़ी।

उलटफेर—पु० अदल बदल, परिवर्तन।

उलटा—वि० औंधा, जो ठीक हालतमें न हो। क्रमविरुद्ध, विपरीत 'जदपि होत सुन्दर कमल उलटो तदपि सुभाव।' मुद्रा० ९। मनमाना। क्रिवि० विरुद्ध क्रमसे, जो उचित न हो ऐसे ढङ्गसे। पु० चीला। **उलटी साँस चलना** = ऊर्ध्व श्वास चलना, मृत्युकाल उपस्थित होना। **उलटी गंगा बहाना** = उलटी रीति चलना। **उलटे पाँव फिराना** = फौरन वापस होना। **उलटी सीधी सुनाना** = भला बुरा कहना।

उलटाना—सक्रि० लौटाना, फेरना 'जो शोकसों भई मातुगनकी दशा सो उलटायहौं।' मुद्रा०। औरका और करना।

उलटा-पलटा, उलटा-पुलटा—वि० क्रमविरुद्ध, बेसि

उलटी—स्त्री० कै, वमन। एक कसरत। [पैरका।

उलटे—क्रिवि० विपरीत क्रमसे, जैसा चाहिए उससे

उलठना—अक्रि० देखो 'उलटना'। [विरुद्ध ढंगसे।

उलठ-पलठ—देखो 'उलट-पलट'।

उलथना—अक्रि० नीचे ऊपर होना, उलटना। 'नैन बाँक सरि पूज न कोऊ। मानसरोदक दोऊ।' प० ४५; 'लहरैं उठीं समुद उलथाना'। प० १९०। सक्रि० उलट पुलट करना।

उलथा—पु० अनुवाद। एक तरहका नाच। कलाबाज़ी, —मारना = करवट बदलना।
उलद—स्त्री० झड़ी, वर्षा।
उलदना—सक्रि० उड़ेलना, गिराना ( उदे० 'आह' ) 'धाओ धाओ धरो' सुनि धाये जातुधान धारि, वारि-धारा उलदैं जलद ज्यों न सावनो।, कविता० १७५
उलफत—स्त्री० प्यार, प्रेम।
उलमना—अक्रि० 'उरमना', लटकना।
उलमुक—पु० अंगारा, जलती हुई लकड़ी। (प्रिय० १२४)
उलरना—अक्रि० कूदना, झपटना, धावा करना, ऊपर नीचे होना।
उललना—अक्रि० ढरकना, उलटना।
उलसना—अक्रि० विलसना, शोभित होना 'राखी ना रहत जऊ हाँसी कसि राखी देव नैसुक उकासी मुख ससिसे उलसि उठैं।' देव
उलहना—पु० शिकायत। 'उलाहना'। अक्रि० उमड़ना, प्रस्फुटित होना, खिलना 'बालतन यौवन रसाल उल-हत लखि सौतिनके साल भो निहाल नन्दलाल भो।' रस० ३, 'ऋतु बसन्त फूली द्रुमबल्ली उलहे पात नये।' सू० २७५, ( रवि० ३६ )
उलाँघना—सक्रि० लाँघना। अवहेलना करना, न मानना
उलार—वि० पीछेकी ओर झुका हुआ।
उलारना—सक्रि० उछालना।
उलाहना—पु० शिकायत। सक्रि० शिकायत करना। उलाहना देना। निन्दा करना।
उलिचना, उलीचना—सक्रि० पानी निकालना, खाली करना, 'कहत सारदहु कर मति हीचे। सागर सीप कि जाहिं उलीचे।' रामा० ३३४
उलूक—पु० उल्लू पक्षी।
उलूखल—पु० ओखली, खरल।
उलेड़ना, उलड़ना—सक्रि० उड़ेलना। ढालना।
उलेल—स्त्री० बाढ़। उमंग, उछल कूद। वि० लापरवाह, अनजान।
उल्का—स्त्री० देखो 'उलका'।
उल्कापात—पु० तारा टूटकर गिरना, आकाशमें किसी प्रकाशमय पिण्डका दर्शन होना।
उल्था—पु० अनुवाद, तरजुमा।
उल्लंघन—पु० लाँघनेकी क्रिया, अतिक्रमण, अवहेलना
उल्लंघना—सक्रि० लाँघना, अवहेलना करना, अतिक्र-मण करना।
उल्लसित—वि० प्रसन्न, चमकता हुआ
उल्लाल, उल्लाला—पु० एक मात्रिक छन्द।
उल्लास—पु० हर्ष, चमक, । परिच्छेद। एक काव्यालंकार।
उल्लासना—सक्रि० प्रकट करना। हर्षित करना।
उल्लिखित—वि० जिसका उल्लेख हुआ हो, ऊपर जिसका जिक्र आया हो। खोदा हुआ, लिखित।
उल्लू—पु० एक पक्षी। वि० मूर्ख।
उल्लेख—पु० वर्णन, जिक्र, लेख। एक काव्यालंकार। 'एकहिको जह बहुतजन बहुविधि करत बखान। या एकहिं बहुविधि कहत बहुगुनसों युत जान।'
उल्लेखनीय—वि० लिखने या वर्णन करने योग्य।
उवना—अक्रि० उदय होना, निकलना (उदे०'अथवना')।
उवनि—स्त्री० प्रकट होनेकी क्रिया, उदय।
उशीर, उशीरक—पु० खस।
उषःकाल—पु० उषाके निकलनेका समय, प्रातःकाल
उषा—स्त्री० तड़का, प्रातःकाल। बाणासुरकी कन्या।
उष्ट्र—पु० ऊँट।
उष्ण—वि० गरम।
उष्णता—स्त्री०,—त्व—पु० गरमी।
उष्णीष—पु० मुकुट या पगड़ी।
उष्मज—पु० पसीने इत्यादिसे उत्पन्न छोटे छोटे जन्तु।
उसकन—पु० घासपात या नारियलकी जटा आदिका मुट्ठा जिससे बर्त्तन माँजे जाते हैं।
उसकाना, उसकारना—सक्रि० उभाड़ना, चला देना (उदे० 'उजियाना'), ऊपर उठाना, चढ़ाना'इतनी कहि उसकारत बाँहें रोष सहित बल धायो।' सूसु० ११९
उसनना—सक्रि० पानीमें पकाना, उबालना।
उसनीस—पु० मुकुट, पगड़ी।
उसपार—पु० इस संसार या लोकसे दूर।
उसरना—अक्रि० हटना ( सुजा० ३६ ), अलग होना ( उदे० 'गुझरौट' )। बीतना। बिसरना, भूल जाना।
उसलना—अक्रि० पानीमें उतराना। हटना, उखड़ जाना ऐल फैल खैल भैल खलकमें गैल गैल राजनकी ठैल पैल सैल उसलत है।' भू० १५०। बीतना।
उससना—अक्रि० साँस लेना। हटना, टलना।
उसाँस—स्त्री० लम्बी साँस, दुःखकी साँस। साँस 'सूर-दास स्वामीके बिछुरत भरि भरि लेत उसाँस।' सूबे०३७
उसाना—सक्रि० अनाजका भूसा उड़ाना, ओसाना ( रत्ना० २५३ )।

उसारना, उसालना—सक्रि० उखाड़ना, छिन्न भिन्न करना 'साहनके दल दौरि उसालौ।' छत्र० ९० । भगाना, दूर करना 'कोट यामिनी तिमिर उसारै।' छत्र १५८

उसारि—स्त्री० ओसारा 'कहा चुनावै मेड़ियाँ लम्बी भीति उसारि।' साखी ६३

उसास—स्त्री० दुःख-सूचक साँस, लम्बी साँस 'बहू दूबरी होत क्यों, यों बूझी जब सासु। उत्तर कह्यो न बाल मुख ऊँची लई उसासु।' रस० २१

उसासी—स्त्री० अवकाश, आराम लेनेका अवसर 'जानै को केशव केतिक बार मैं सेसके सीसन दीन्ह उसासी।' [ राम० ६९

उसिनना—देखो 'उसनना'।

उसीर—पु० 'उशीर', खस।

उसीला—पु० वसीला, मदद करनेवाला, सहायक 'साहब कहूँ न रामसे तोसे न उसीले।' विन० ११८

उसीस—देखो 'उसीसा' 'छोटे बड़े उसीस धरे दसबीस सँवारे।' रत्ना० १३१

उसीसा—पु० तकिया, सिरहाना।

उसूल—पु० सिद्धान्त। वि० वसूल।

उस्ताद—पु० अध्यापक, गुरु। वि० चालाक, दक्ष, निपुण।

उस्तादी—स्त्री० चालाकी, प्रवीणता, शिक्षकका पुरस्कार।

उस्तुरा—पु० छुरा।

उस्वास—स्त्री० उसाँस 'माला स्वास उस्वासकी-जामें गाँठ न मेर।' साखी ९८

उहवाँ, उहाँ—क्रिवि० वहाँ।

उहार—पु० परदा। पालकी इत्यादिपर पड़ा हुआ कपड़ा 'सिविका सुभग उहार उघारी। देखि दुलहिनिन्ह होंहि सुखारी।' रामा० १८९

---

# ऊ

ऊँख—पु० ऊख, गन्ना।

ऊँघ, ऊँघन—स्त्री० झपकी, हलकी नींद।

ऊँघना—अक्रि० झपकी लेना।

ऊँच, ऊँचा—वि० ऊपर उठा हुआ। श्रेष्ठ, कुलीन। तीव्र। ऊँचानीचा = उलटा-सीधा, खरा-खोटा, हानि-लाभ।

ऊँचाई = स्त्री० उठान, उच्चता। श्रेष्ठता।

ऊँचे—क्रिवि० ऊपरकी ओर। उच्च स्वरसे।

ऊँछ—पु० रागविशेष।

ऊँछना—सक्रि० बालोंमें कंघी करना।

ऊँट—पु० पशुविशेष, उष्ट्र।

ऊँड़ा—पु० वह पात्र जिसमें धन गाड़ा जाय। तहखाना

ऊँदर—पु० चूहा।

ऊँहूँ—अ० नहीं, कदापि नहीं।

ऊ—अ० भी। सर्व० वह।

ऊअना—अक्रि० उदय होना, निकलना।

ऊआबाई, ऊवाबाई—वि० असम्बद्ध, निरर्थक, अंडबंड स्त्री० निरर्थक बात, घबराहट 'नतो कछु उरझ्यो न सुरझ्यो कहीं सो कौन सुन्दर सकल यह ऊवाबाई आनिए।' सुन्द० ११६

ऊक—स्त्री० तपन, आँच 'हृदय जरत है दावानल ज्यों कठिन बिरहकी ऊक।' सू०। पु० लुआठ। टूटा हुआ तारा। स्त्री० ग़लती।

ऊकना—अक्रि० ग़लती करना, चूकना। सक्रि० भू[ल] जाना, जोड़ना। जलाना, तपाना 'ये व्रजचंद चलौ कि[न] वा व्रज लूक बसंतकी ऊकन लागीं।' कवी० ४४५

ऊख—पु०, स्त्री० गन्ना। गरमी। वि० तप्त, उ[ष्ण] (दोहा० १२०)

ऊखम—स्त्री० गरमी।

ऊखल—पु० ओखली, एक तरहका पत्थर इ० का गह[रा] बर्तन ( सू० ७० )।

ऊगना—अक्रि० उगना, उदय होना, निकलना।

ऊचर—वि० उबियानेवाला, नीरस (निबन्ध० १-७९)।

ऊज—पु० ऊधम, उत्पात, अन्याय।

ऊजड़—वि० उजाड़, वीरान।

ऊजर—वि० वीरान, उजाड़ 'सोई भुव ऊजर भई, लख लखी नहिं जात' मुद्रा० ९९। उज्ज्वल, सफेद।

ऊजरा—वि० उज्ज्वल, कान्तियुक्त, सफेद या गोरे रंगका 'लसत गूजरी ऊजरी, विलसत लाल हजार।' रस० १[..]

ऊटना—अक्रि० उमंगमें भरना, प्रोत्साहित होना ( भू० १०९ )। सोच विचार करना ( नवरस० ६६ )

ऊटपटांग—वि० बेढङ्गा, असम्बद्ध। निरर्थक।

ऊड़ी—स्त्री० पानीमें डुबकी लगानेवाली एक चिड़िया। निशाना 'वह भइ धानुक हौं भा ऊड़ी।' प० २३३ डुबकी, गोता।

ऊढ़ना—अक्रि० सोच विचार करना, अटकल लगाना।

ऊढ़ा—स्त्री० विवाहित स्त्री, वह विवाहित स्त्री जो उपपतिसे प्रेम करे।

ऊत—वि० देखो 'अऊत'। उजबक, मूर्ख। पु० वह निःसन्तान मनुष्य जो मृत्युके बाद प्रेतयोनि पाता है।

ऊतर—पु० उत्तर, जवाब, ( सुजा० १५ )। बहाना।

ऊतला—वि० उतावला, चञ्चल, तेज़।

ऊतिम—वि० उत्तम, अच्छा।

ऊदबत्ती—स्त्री० एक तरहकी धूपबत्ती।

ऊदबिलाव—पु० नेवलेकी जातिका एक जन्तु।

ऊदा—वि० बैंगनी।

ऊधम—पु० उपद्रव, हुल्लड़, अत्याचार।

ऊधमी—वि० ऊधम करनेवाला, उपद्रवी, नटखट।

ऊधव, ऊधो—पु० कृष्णके एक मित्र, उपंगसुत।

ऊन—वि० न्यून, कम। तुच्छ, क्षुद्र। पु० भेड़ आदिका रोम। दुःख, ग्लानि 'तातें मन मानौ मत ऊनौ।' छत्र० १४७, 'जनि मरु रोय दुलहिया करि मन ऊन।' [ रहीम

ऊनता—स्त्री० न्यूनता, कमी।

ऊनविंश—वि० उन्नीस।

ऊना—वि० न्यून, कम, तुच्छ, छोटा, 'पून्यो ई को पूरन पै आन दिन ऊनो ऊनो ( चन्द्र० )' राम० २१३

ऊनी—वि० ऊनका बना। वि० स्त्री० कम, थोड़ी। स्त्री० दुःख, ग्लानि।

ऊपना—अक्रि० पैदा होना।

ऊपर—क्रिवि० ऊँची जगहपर, आकाशकी तरफ। सहारेपर। अधिक। पहिले। बाहरी तौरसे, प्रकटमें। अतिरिक्त, प्रतिकूल। ऊपरकी दोनों = दोनों चर्मचक्षु 'ऊपरकी दोनों गईं हियकी गईं हिराय।' कबीर। ऊपरसे=देखनेमें,प्रत्यक्षतः। निश्चित वेतनके अतिरिक्त।

ऊपरी—वि० ऊपरका, बाहरी, दिखाऊ।

ऊब—स्त्री० आकुलता, उद्विग्नता। उमंग, उत्साह।

ऊबट—वि० ऊँचा नीचा। पु० ऊबड़ खाबड़ मार्ग।

ऊबड़ खाबड़—वि० ऊँचा नीचा। अटपट।

ऊबना—अक्रि० उबियाना, उकताना, एक ही अवस्थामें रहनेसे व्याकुल होना। गरम होना 'मोरी कमरिया पाँच टकाकी सबरी ऊबे देह।' ब० वै० ७८

ऊबर—वि० ज़्यादा ( रत्ना० १६३ )

ऊबरना—अक्रि० 'उबरना', 'कह तुलसिदास सो ऊबरै जेहि राख राम राजिवनयन।' कविता० २३१

ऊभ—वि० उठा हुआ, ऊँचा। स्त्री० गरमी, आकुलता। उमंग, हौसला।

ऊभचूभ—स्त्री० पानीमें डूबने और उतरानेकी क्रिया।

ऊभट—पु० देखो 'ऊबट','निगुरा तो ऊभट चलैं जब तब करै कुदाव।' साखी १७

ऊभना—अक्रि० खड़ा होना, उठना ( सूरा० ५६ ), 'बछरा था सो मरि गया, ऊभी चाम चटाय।' साखी ९१। अक्रि० ऊबना, एक ही अवस्थामें रहनेसे व्याकुल होना।

ऊमक—स्त्री० झोंक, झपेटा, वेग।

ऊमना—अक्रि० ऊमड़ना।

ऊमर, ऊमरि—पु० गूलर ( के० १११ )।

ऊमस—स्त्री० उमस, गरमी।

ऊर—पु० ओर, अन्त, सीमा 'समुद ऐसन निसि न पारिए ऊर।' विद्या० १२८

ऊरध—देखो 'ऊर्ध्व'।

ऊरधरेता—वि० देखो 'ऊर्द्ध्वरेता'। पु० योगी (कवि० प्रि० १२० )।

ऊरु—पु० उरु, जंघा।

ऊर्जस्वल, ऊर्जस्वित, ऊर्जस्वी—वि० प्रतापवान्, शक्तिमान्, ओजयुक्त।

ऊर्जित—वि० ओजपूर्ण, तीव्र।

ऊर्ण—पु० ऊन।

ऊर्णनाभ—पु० मकड़ा।

ऊर्द्ध्वगामी—वि० ऊपरकी ओर जानेवाला, मुक्त।

ऊर्द्ध्वद्वार—प्र० ब्रह्मरन्ध्र।

ऊर्द्ध्ववाहु—पु० भुजा ऊपर उठाये रहनेवाले साधु।

ऊर्ध्वरेता, ऊर्द्ध्वरेता—वि० जितेन्द्रिय ( विन० ११५ )

ऊर्द्ध्व—वि० ऊपरका, ऊपरकी ओर, खड़ा। क्रिवि० ऊपर।

ऊर्मि,ऊर्मी—स्त्री० तरङ्ग, लहर। पीड़ा।

ऊर्मिमाली—पु० समुद्र।

ऊर्मिल—ऊर्मिसम्बन्धी, ऊर्मिका बना हुआ।

ऊलजलूल—वि० अंडबंड, ऊटपटांग। अशिष्ट, अनाड़ी।

ऊलना—अक्रि० उछलना, कूदना 'पग पग मन अगमन परत चरन अरुन दुति ऊलि।' बि० १०२ (बङ्गवासी)

ऊगा—स्त्री० देखो 'उषा'।
ऊम पु०, ऊमा स्त्री०—गरमी। ग्रीष्मकाल। वाष्प, जोश। श, ष, स, ह—ये चार वर्ण।
ऊसर—पु० अनुपजाऊ ज़मीन। वि० अनुपजाऊ।
ऊह—पु० विचार, निष्पत्ति, अन्दाज़ा, अनुमान। तर्क। अ० ओह दुःख या आश्चर्यसूचक शब्द।
ऊहा—स्त्री० देखो 'ऊह'।
ऊहापोह—पु० सोच-विचार, तर्क-वितर्क।

# ऋ

ऋ—स्त्री० अदिति, निन्दा।
ऋक्ष, ऋच्छ—पु० भालू, तारा।
ऋक्षपति—पु० चन्द्रमा। भालुपति जाम्बवान।
ऋचा—स्त्री० वेदमन्त्र, स्तोत्र।
ऋजु—वि० सरल, सीधा। प्रसन्न।
ऋजुता—स्त्री० सिधाई, सरलता।
ऋण, ऋन—पु० कर्ज़। देना।
ऋणी, ऋनिया, ऋनी—वि० देनदार, कर्ज़दार।
ऋतु—स्त्री० मौसिम। रजोदर्शन। यज्ञ 'सो मम धाम आय ऋतु करहीं। होय वृष्टि तौ सब सुख भरहीं।' रसिक बिहारी
ऋतुचर्या—स्त्री० ऋतुओंके अनुरूप आहार-विहार ठीक करना।
ऋतुमती, ऋतुवती—वि० स्त्री० रजस्वला (स्त्री)। वसन्त आदि ऋतुवाली।
ऋतुराज—पु० वसन्त।
ऋत्विज्—पु० यज्ञ करनेवाला।
ऋद्धि—स्त्री० समृद्धि, विभव।
ऋषभ—पु० बैल।
ऋषभध्वज—पु० वृषकेतु, शंकरजी।
ऋषि—पु० मन्त्रद्रष्टा। तत्वदर्शी।
ऋषिपत्तन—पु० सारनाथका प्राचीन नाम।
ऋष्यश्रृंग—पु० विभाण्डक ऋषिके पुत्रका नाम

# ए

ऐंड़ा-बेंड़ा—वि० उलटा-सीधा।
ऐंडुआ—पु० गेंडुरी, कुण्डली।
ए—पु० विष्णु। अ० अय, अरे, हे। सर्व० यह ये 'ए बिचरहिं मग बिनु पदत्राना।' रामा० २५६
एकंगा, एकंगी—वि० एक तरफका, एकतरफा।
एकंत—वि० एकान्त, निराला।
एक—वि० दोका आधा। अकेला 'जस कहि सब मुकराय भटनको धँस्यो कौसदल एका।' रघु० २३६। अद्वितीय। कोई 'एक कहहिं भल भूपति कीन्हा।' रामा० १४१। पु०=ऐक=ऐक्य, साम्य 'कीन्ह बहुत श्रम एक न आये। तेहि हरिषा बन आनि दुराये।'रामा० २५६। एक अंक, एक आँक—क्रिवि० देखो 'आँक'। एकटक—क्रिवि० अनिमेष, स्थिर दृष्टिसे। एकतार—वि० एक ही तरहका, समान। क्रिवि० सम भावसे। एकदम=क़तई; तुरन्त, सीधे, बिना रुके, एकबारगी। एकपास—क्रिवि० पास पास।
एकछत्र—वि० जिसमें और किसीका अधिकार न हो, पूर्ण प्रभुत्वयुक्त। पु० वह शासन जिसमें सारा अधिकार एक ही व्यक्तिके हाथमें हो।
एकज—पु० शूद्र। राजा। वि० एकमात्र।
एकटक—वि० अपलक। निर्निमेष।
एकड़—पु० लगभग बत्तीस बिस्वेके बराबर माप।
एकत—क्रिवि० एकत्र। एक स्थानपर 'कहलाने एकत रहत अहि मयूर मृग बाघ।' वि० २०२
एकतरफा—वि० एक पक्षीय, एक रुखा, पक्षपातयुक्त
एकता—स्त्री० एका, हेल मेल। समानता।

एकतारा—पु० वह सितारा जिसमें एक ही तार लगा हो।
एकतीस—देखो 'इकतीस'।
एकत्र—क्रिवि० एक स्थानमें।
एकत्व—पु० एकता, अद्वैत।
एकदंत—पु० गणेशजी।
एकदेशीय—वि० एक देशका, एक स्थल या एक समयसे सम्बन्ध रखनेवाला।
एकनिष्ठ—वि० एकहीपर जिसकी श्रद्धा हो।
एक प्राण होना—अक्रि० घुलना, मिलना।
एकबारगी—क्रिवि० एकही बारमें, एक साथ। अकस्मात्। [बिलकुल।
एकबाल—पु० भाग्य। प्रताप। स्वीकृति।
एकरदन—पु० गणेशजी।
एकरस—वि० जो सदा एकसा रहे, जिसमें परिवर्तन न हो।
एकरार—पु० वचन, प्रतिज्ञा, स्वीकृति।
एकरूप—वि० सदृश रूपवाला, एक समान। वैसा ही।
एकरूपता—स्त्री० सादृश्य, समानता।
एकल—वि० अकेला, बेजोड़।
एकला—वि० अकेला।
एकलौता—वि० ( माँ बापका ) अकेला ( लड़का )।
एकसर—वि० अकेला (उदे० 'अगुआना, बीजक १४०) एक पर्तका। एक छोरसे दूसरे छोरतक, कुल।
एकहरा—दे० 'इकहरा'
एकांगी—वि० एकतरफा, हठी। [अकेला।
एकान्त—पु० निर्जन स्थान। वि० बिलकुल। अलग,
एकान्तिक—वि० एक स्थलसे सम्बन्ध रखनेवाला, [एक देशीय।
एका—पु० एकता, मेल।
एकाएक—क्रिवि० अचानक, सहसा, एकबारगी।
एकाएकी—क्रिवि० सहसा। वि० अकेला।
एकाकी—वि० अकेला।
एकाकीपन—पु० अकेलापन।

एकाक्ष—वि० एक आँखवाला पु० शुक्राचार्य। कौआ।
एकाग्र—वि० जिसका ध्यान एक ओर हो, एकपर स्थिर।
एकादशी—स्त्री० पाखकी ग्यारहवीं तिथि।
एकावली—स्त्री० एक काव्यालंकार।
एकीकरण—पु० ऐक्य स्थापन, मिलाकर एक करना।
एकीभूत—वि० एक बना हुआ, सिमटा हुआ, एकत्र, [संगठित।
एकौझा—वि० अकेला।
एक्का—देखो 'इक्का'।
एक्कावान—पु० एक्का रखने या हाँकनेवाला।
एड़, एड़ी—स्त्री० टखनेके नीचेवाला पैरका पिछला भाग।
एण—पु० कृष्ण वर्णका मृग ( राम० ११२ )।
एतक़ाद—पु० यक़ीन, भरोसा।
एतदर्थ—क्रिवि० इसलिए, इस निमित्त।
एतद्देशीय—वि० इस देशका, इस देशसे सम्बन्ध [रखनेवाला।
एतना, एता—क्रिवि० इतना।
एतबार—पु० विश्वास, भरोसा, यक़ीन।
एतमाद—पु० एतक़ाद, विश्वास, ( सेवास० २६९ )
एतराज़—पु० आपत्ति, विरोध।
एतिक—वि० स्त्री० इतनी।
एन—पु० थन ( नव० १४ )। देखो 'एण'।
एला—स्त्री० इलायची।
एलची—पु० राजदूत, दूत।
एवं—क्रिवि० इसी प्रकार। अ० और।
एवज—पु० बदला, प्रतिकार। बदलेमें काम करनेवाला।
एवजी—वि० एवजमें काम करनेवाला। पु० स्थानापन्न [व्यक्ति।
एषणा—स्त्री० इच्छा, खोज।
एह—सर्व० यह 'एक जन्मकर कारण एहा।' रामा ७२
एहतमाम—पु० कोशिश, इन्तजाम।
एहतियात—स्त्री० सतर्कता, सावधानी, खबरदारी, परहेज।
एहसान—पु० निहोरा, उपकार, कृतज्ञता।

---

# ऐ

ऐंचना—सक्रि० खींचना 'नारायणको धनुबाण लियो। ऐंच्यो हँसि देवन मोद कियो।' राम० १७६, (वि०८७)
ऐंचाताना—वि० जिसकी आँखकी पुतली दूसरी ओरको फिरी रहे। [* खींचतान।
ऐंचातानी—स्त्री० अपनी अपनी ओर खींचनेका प्रयत्न*
ऐंचीला—वि० लचीला, खींचे जाने योग्य।
ऐंछना—सक्रि० झाड़ना, बाल ऊंछना, 'देह पोंछि पुनि ऐंछि स्याम कच चोटी सुभग बनावैं।' रघु० ४६

ऐंठ—स्त्री० ऐंठन, अकड़, घमण्ड । द्वेष ।
ऐंठन—स्त्री० मरोड़, लपेट, घुमाव । खिंचाव ।
ऐंठना—सक्रि० मरोड़ना, घुमाव देना । भय दिखाकर या धोखा देकर लेना । अक्रि० खिंचना, बल खाना, अकड़ना । इतराना, टर्राना । मरना ।
ऐंड़—पु० ऐंठ, शान, 'ऐंड बुँदेलखण्डकी राखी ।' छत्र० ७७ । घमण्ड । पानीका भँवर ।
ऐंड़दार—वि० घमण्डी 'गाय वेद विप्रन प्रतिपालैं । घाउ ऐंड़दारनपर घालैं । लाल, ( कवी० ३७१ )
ऐंड़ना—अक्रि० ऐंठना, अँगड़ाना, घमण्ड करना । सूख कर कड़ा हो जाना । सक्रि० ऐंठना, (बदन) तोड़ना।
ऐंड़बैंड़—वि० वक्र, तिरछा ।
ऐंड़ा—वि० ऐंठा हुआ, टेढ़ा, ऐंठ या दर्प सहित 'सोहत एकै डार काक कछु वाक न बोलै । ऐंड़ो रहै निसक तासु हाँसी करि डोलैं ।' दीन० १९४
ऐंड़ाना—अक्रि० अँगड़ाई लेना महा मीच मूरति मनहुँ ऐंड़ानी जमुहाय ।' रघु० ६४ । ऐंठ दिखाना ।
ऐंद्रजालिक—वि० इन्द्रजाल करनेवाला । पु० बाजीगर।
ऐ—अ० सम्बोधन-सूचक एक शब्द ।
ऐकांतिक—वि० एक देशीय, एकतरफा, जो सर्वत्र न घट सके । निश्चित, पूर्ण ।
ऐक्य—पु० एकता, एका, मेल ।
ऐगुन—पु० अवगुण ।
ऐच्छिक—वि० जो अपनी इच्छापर निर्भर हो, वैकल्पिक।
ऐजन—पु० वही, तथैव ।
ऐतिहासिक—वि० इतिहास सम्बन्धी । इतिहास जाननेवाला।
ऐन—पु० 'अयन', घर ( रामा० २८२ ) । एण, कस्तूरी मृग । वि० ठीक, अच्छा 'साहितनै सिवराजकी सहज टेव यह ऐन ।' भू० ७३, 'कहा भयो है देव देहधरि, अरु ऊँचोपद पायो ऐनु ।' सू० ७५ पूरा पूरा ।
ऐनक—पु० चश्मा । आईना ।
ऐना—पु० आईना ( कवी० ५२७ ) ।
ऐपन—पु० एक मंगल वस्तु जो चावल व हल्दीको एक साथ पीसनेसे बनती है।
ऐब—पु० दोष,अवगुण, बुराई ।
ऐबजोई—स्त्री० दोष ढूँढ़नेकी क्रिया ।
ऐबी—वि० दोषयुक्त, बुरा । दुष्ट, उत्पाती । काना या अन्य रूपसे विकलांग।
ऐयाम—पु० समय, ज़माना, मौसिम ।
ऐयार—पु० धूर्त्त व्यक्ति । छद्मवेश धारण करनेवाला ।
ऐयाश—वि० आरामतलब, विलासी, लम्पट, विषयासक्त।
ऐरागैरा—वि० इधर उधरका, अजनबी ।
ऐरापति, ऐरावत—पु० इन्द्रका हाथी ।
ऐल—पु० पुरूरवा । प्रचुरता । बाढ़, प्रबल प्रवाह 'भूषण भनत साहितनै सरजाके पास आइबेको चढ़ी उर हौंसनिकी ऐल है ।' भू० २५ । समूह (उदे० 'उसलना')। खलबली ( छत्र० ११० ) ।
ऐश, ऐस—पु० आराम, भोग-विलास 'ऐसमें रहत लैस कूर चढ़ै बलपै ।' ( ग्वाल )
ऐश्वर्य—पु० विभव, सम्पत्ति, प्रभुत्व ।
ऐश्वर्यवान शाली—वि० सम्पत्तिवाला, सम्पन्न ।
ऐसा—वि० इस तरहका ।
ऐसे—क्रिवि० इस तरह ।
ऐहिक—वि० सांसारिक, इहलौकिक ।

# ओ

ओं—अ० प्रश्नबोधक या स्वीकृतिसूचक शब्द ।
ओंकना—अक्रि० क़ै करना । ऊबना, फिर जाना 'काँपि उठी कमला मन सोचति मोसों कहा हरिको मन ओंको ।' सुदामा० ९ ( बु० वै० ९ ) ।
ओंगन—पु० वह तेल इ० जो गाड़ीकी धुरीमें दिया जाय
ओंगना—सक्रि० गाड़ीकी धुरीमें तेल देना ।
ओंटना—सक्रि० देखो 'औटना' ।
ओंठ—पु० होंठ, लब । घड़े इत्यादिके मुँहका किनारा । —चबाना = ज्यादा गुस्सा दिखाना ।
ओंड़ा—वि० गहरा ( देखो 'औंड़ा' ) पु० गड्ढा ।
ओक—पु० घर, स्थान ( भू० २ ), आश्रय । नक्षत्रपुंज अंजलि 'लैहौं री माँ चंदा चहौंगो । कहा करौं भीतरको बाहर ओकि गहौंगो ।' सूबे० ५९ । समूह स्त्री० मतली ।
ओकना—अक्रि० क़ै करना । भैंसकी-सी आवाज़ करना
ओकाई—स्त्री० वमन, क़ै । क़ै करनेकी इच्छा ।

**ओखद**—स्त्री० दवा औषध।
**ओखरी, ओखली**—स्त्री० देखो 'उखली'।
**ओखा**—पु० बहाना। वि० 'चोखा' नहीं, खोटा। कठिन, टेढ़ा। रूखा-सूखा। विरल या झीना।
**ओग**—पु० चन्दा, महसूल 'सूर हमहिं मारग जिनि रोकहु घरते लीजे ओग।' सूबे० १५२। गोद 'देखत नन्द यशोदा रोहिणि अरु देखत ब्रज लोग। सूरश्याम गाइन सँग आये मैया लीनो ओग।' सूबे० ८७, (३४०भी)
**ओघ**—पु० राशि, समूह, पुञ्ज, प्रवाह।
**ओछना**—सक्रि० देखो 'ऊँछना'। काढ़त गुहत नहावत ओछत नागिन सी भ्वैं लोटी।' सूबे० ५८
**ओछा**—वि० क्षुद्र, नीच, खोटा। कम, छोटा। छिछला।
**ओछाई**-स्त्री०, **ओछापन**—पु० नीचता, छिछोरापन।
**ओज**—पु० तेज़, कान्ति, प्रकाश। कविताके तीन गुणोंमें-से एक।
**ओजना**—सक्रि० अँगेजना, (भार) ऊपर लेना, सहना।
**ओजस्विता**—स्त्री० प्रभाव, तेज, प्रताप, दीप्ति।
**ओजस्वी**—वि० प्रतापी, प्रभावशाली, तेजस्वी।
**ओझ**—पु० पेटकी थैली, अँतड़ी।
**ओझर**-पु०,**ओझरी**—स्त्री०पेट,पचौनी ( कविता १९९)।
**ओझल**—पु० आड़, ओट।
**ओझा**—पु० ब्राह्मणोंकी जातिविशेष। भूतप्रेत झाड़नेवाला।
**ओट**—स्त्री० रोक, आड़ 'बेगि करहु किन आँखिन ओटा।' रामा० १५२। शरण 'अजहूँ सोच विचारकै, गहि भक्तनि पद ओट।' ध्रुवदास
**ओटना**—सक्रि० रुई और बिनौलेको पृथक् करना। ओढ़ना, अपने ऊपर लेना।
**ओटनी**—स्त्री० बिनौला अलग करनेकी चरखी।
**ओटी**—स्त्री० देखो 'ओटनी'।
**ओठगन**—पु० आधार, (ग्राम० १०३)।
**ओठगना**—अक्रि० देखो 'उठँगना'।
**ओठँगाना**—सक्रि० टिकाकर रखना या बैठना, सिकड़ी या सिटकिनी बन्द किये बिना यों ही किवाड़से किवाड़ लगा देना।
**ओड़न**—पु० प्रहार रोकनेकी वस्तु ढाल (रामा० २२०)।
**ओड़ना**—सक्रि० आड़ करना, रोकना, सहना 'होहिं कुठाय सुबन्धु सुहाये। ओड़ियहि हाथ असनिके घाये।' रामा० ३४५, 'ओड़ै सुभट सुभटकी घाई। छत्र०४५। फैलाना 'घर घर जाँचक भीख हित कर ओड़त कछु देहु। पद्माभ० १५। ऊपर लेना, धारण करना 'सावधान ह्वै सोक निवारो ओड़हु (मुँदरी) दक्षिण हाथ।' सूरा० ३८
**ओढ़ना**—सक्रि० कपड़े इत्यादिसे देह ढँकना। अपने ऊपर लेना पु० ओढ़नेका कपड़ा।
**ओढ़नी**—स्त्री० स्त्रियोंके ओढ़नेका कपड़ा। फरिया।
**ओढ़र**—पु० मिस या बहाना।
**ओढ़ाना**—सक्रि० कपड़े इत्यादिसे ढाँकना।
**ओढ़ौनी**—स्त्री० ओढ़नी ( कवि प्रि० २७० )।
**ओत**—स्त्री० प्राप्ति, बचत, लाभ। आराम, चैन कविता० १८० ) 'साहितनै सरजाके भय सों भगाने भूप मेरुमें लुकाने ते लहत जाय ओत हैं।' भू० ३५। आलस्य। पु० तानेका सूत। वि० बुना हुआ, गुथा हुआ।
**ओतप्रोत**—वि० गुथा हुआ, अच्छी तरह मिला या भरा हुआ।
**ओता, ओतो, ओत्ता**—क्रिवि०, वि० उतना ( विन० १८४ ), 'दुइजहि जोति कहाँ जग ओती।' प० ४५
**ओद**—वि० तर, भींगा हुआ 'अतिसय चपल सकल सुखदायक निसिदिन रहत केलि-रस ओद।' सूसु०६८
**ओदन**—पु० भात।
**ओदर**—पु० उदर ( प० २२ )।
**ओदरना**—अक्रि० फटना। गिर पड़ना 'ओदरहि बुरुज जाहिं सब पीसा।' प० २५९
**ओदा**—वि० गीला, तर 'बिरहकी ओदी लाकरी सिलगि सिलगि उठि जागि।' साखी ४६ [ करना।
**ओदारना**—सक्रि० विदीर्ण करना, फाड़ डालना, नष्ट
**ओधना**—अक्रि० बँधना, उलझना। काममें व्यस्त होना। 'भारत होइ जूझ जौ ओधा।' प० १२२ ( १२१ भी ) [ प० १७०
**ओनंत**—वि० झुका हुआ 'भई ओनंत, फूल फरि साखा।'
**ओनचन**—स्त्री० पैतानेकी रस्सी। अदवान।
**ओनवना**—अक्रि० झुकना, घिर आना, 'ओनई घटा परी जग छाहाँ।' प० २७। टूटना।
**ओना**—पु० पानी निकलनेका रास्ता, निकास।
**ओनाना**—सक्रि० कान लगाकर सुनना, देखो 'उनाना' ( ग्राम० ११८ )।
**ओप**—स्त्री० कान्ति, चमक, शोभा।
**ओपची**—पु० वह सैनिक जो कवच पहिने हो।

ओपना—सक्रि० साफ करना, चमकाना, प्रकाशित करना (राम० ९)। अक्रि० चमकना, देखो 'औपना'। 'ओपनी पियूष ऐंच नीकी भाँति ओपतो तो राधामुख चन्द्रकी समान चन्द होवते। गुलाबकवि,(ललित२२४

ओपनिवारी—वि० स्त्री० चमकनेवाली 'हँसत सुआ पहँ आइ सो नारी। दीन्हि कसौटी ओपनिवारी।' प० ३७

ओपनी—स्त्री० पत्थर इत्यादिका टुकड़ा जिससे कोई वस्तु माँजी जाय ( उदे० 'ओपना' )।

ओफ—अ० आश्चर्य या दुःखादि-सूचक शब्द।

ओबरी—स्त्री० तंग कोठरी 'यह काजरकी ओबरी निकरो अंग बचाय।' दीन २३९, (प० ३२५)

ओर—स्त्री० दिशा। पक्ष। पु० छोर, किनारा, अन्त 'पुनि होइ कठिन नियाहत ओरा।' प० ५४

ओरती—स्त्री० ओलती, ओरी 'नैन चुवहिं जस ओरति धारा।' प० २९२

ओरदावन—देखो 'उरदावन' ( ग्राम० ५४, ५७ )।

ओरमना—अक्रि० लटकना 'फूलनके विविध हार, घोरिलन ओरमत उदार।' के० १६६

ओरमाना—सक्रि० लटकाना ( ग्राम० २०२ )।

ओरा—पु० ओला, पत्थर 'गरहिं गात जिमि आतप ओरे।' रामा० २६९

ओराना—अक्रि० खतम हो जाना, चुक जाना, चुक जाना।

ओरिया, ओरी—स्त्री० ओलती, छप्परका वह भाग जहाँसे पानी नीचे गिरता है। ( रवि ६६ ), 'मोरि दुइ नैन चुवैं जस ओरी।' प० १६७

ओलंदेजी—वि० हालैण्ड देशका।

ओलंबा, ओलंभा—पु० उपालम्भ, उलहना।

ओल—स्त्री० गोद। ओट, पर्दा। शरण। वह वस्तु या व्यक्ति जो जमानतमें रहे, प्रतिभू 'राजै चली छोड़ावै तहँ रानी होइ ओल।' प० २१६। बहाना (दे० ओल्यो ) 'देव इन्हैं सुखसों सजिकै रससों रचिकै तजि लाजकै ओलै।' रवि० १३, ( सुजा० ७७ ) वि० गीला।

ओलती—स्त्री० देखो 'ओरी'। [ रोकना। घुमाना।

ओलना—सक्रि० ओढ़ना, ऊपर लेना। पर्दा करना,

ओलरना—अक्रि० सोना, लेट जाना ( ग्राम० ४५३ )।

ओलराना, ओलारना—सक्रि० सुला देना, लिटा देना, ( ग्राम० २२८ )।

ओला—पु० उपल, बिनौली। पर्दा, भेद।

ओलिक—पु० पर्दा, आड़।

ओली—स्त्री० गोद, अंचल। झोली।—ओड़ना = अंचल पसारकर कुछ याचना करना।

ओल्यो—पु० बहाना 'बैठी बहू गुरु लोगनिमें लखि लाल गये करि कै कछु ओल्यो।' भाव० १२०

ओषधि ओषधी—स्त्री० दवाकी जड़ी बूटी, दवा।

ओषधीश—पु० चन्द्रमा, कपूर।

ओष्ठ—पु० ओंठ।

ओस—स्त्री० भाप जो रातकी सरदीसे जमकर छोटे छोटे जलकणोंके रूपमें देख पड़ती है। शबनम।

ओसर,-सरिया—स्त्री० गर्भ धारण योग्य भैंस।

ओसरी—स्त्री० पारी।

ओसाना—सक्रि० अनाजका भूसा उड़ाना।

ओसारा—पु० बरामदा, दालान। सायबान।

ओह—अ० दुःख या विस्मय सूचक शब्द।

ओहट—स्त्री० ओट, आड़।

ओहदा—पु० पद, स्थान।

ओहदेदार—पु० पदाधिकारी, अफ्सर, हाकिम।

ओहार—पु० पालकी इत्यादिके ऊपर पड़ा हुआ कपड़ा पर्दा 'सुरंग ओहार मोति बहु लाये।' प० ३१५

ओहो—अ० आश्चर्य या हर्ष सूचित करनेवाला शब्द।

# औ

औंगा—वि० जो बोल न सके, गूंगा।

औंगना—सक्रि० देखो 'ओंगना'।

औंघना, औंघाना—अक्रि० ऊँघना, अलसाना।

औंघाई—स्त्री० झपकी ( प० २०५ )।

औंजना—अक्रि० ऊबना, उद्विग्न होना, घबराना (कविता० १७८ )। सक्रि० उझिलना।

औंठ—पु० देखो 'ओंठ'।

औंड़—पु० बेलदार। मिट्टी खोदनेवाला।

औंड़ा—वि० गहरा 'पहिले थाह दिखाइ करि औंड़े देसी आन।' साखी १३८ । वि० उमड़ा हुआ।

औंदना—अक्रि० व्याकुल होना। उन्मत्त होना।

औंदाना—अक्रि० घबड़ाना, ऊबना।

औंधना—अक्रि० औंधा ( उलटा ) होना। सक्रि० उलट देना।

औंधा—वि० उलटा ( साखी १२१ ) नीचा 'राजा रहा दृष्टि कै औंधी। प० २२

औंधाना—सक्रि० उलटा करना। नीचा करना।

औ—अ० और।

औक़ात—स्त्री० हैसियत, सामर्थ्य। समय।

औगत—स्त्री० दुर्गति। वि० विदित, जाना हुआ।

औगाहना—अक्रि० देखो 'अवगाहना'।

औगी—स्त्री० बैल हाँकनेका छोटा डण्डा। एक तरहका कोड़ा, किसी पशुको पकड़नेके लिए बनाया गया गड्ढा।

औगुन—पु० अवगुण, दोष, ऐब।

औगुनी—वि० दोषी। दुर्गुणी, निर्गुणी।

औघट—वि० अटपट, कठिन, दुर्गम। पु० दुर्गम मार्ग 'घाट छाँड़ि औघट धर्‍यो' छत्र० १९

औघड़—पु० अघोरी। मनमौजी वि० अटपट।

औघर—वि० अनगढ़, विचित्र।

औचक—क्रिवि० एकाएक, सहसा ( सूबे० ७६, भाव० ४१ ), 'औचक दृष्टि परे रघुनायक।' के० २४२

औचट—स्त्री० कठिनाई, विकट स्थिति; संकट। क्रिवि०

औचिन्त—वि० निश्चिन्त। [सहसा। भूलसे।

औचिती—स्त्री० औचित्य।

औचित्य—पु० उपयुक्तता।

औज—स्त्री० ओज, तेज, बल, प्रकाश।

औजक—क्रिवि० औचक, अचानक।

औजड़—वि० अनाड़ी, उजड्ड।

औज़ार—पु० चीरने, काटने, कूटने इ० के साधन।

औझड़, औझर—क्रिवि० लगातार। [हथियार।

औटन—स्त्री० उबाल, ताप।

औटना—सक्रि० आगपर रखकर गरम करना। खौलाना ( प० १३८ )। अक्रि० घूमना, भटकना। गरम होकर गाढ़ा होना, खौलना। पगना 'ना जेहू प्रेम औटि एक भयऊ।' प० १०७। तपस्या करना ( प०

औटाना—सक्रि० आँच देकर गाढ़ा करना, खौलाना।

औठपाय—पु० चालबाज़ी, शरारत।

औढर—वि० इच्छानुसार ढल पड़नेवाला, थोड़ेमें ही प्रसन्न होनेवाला ( विन०७२ )।

औतरना—अक्रि० देखो 'अवतरना', पदमावति कन्या अवतरी।' प० २२

औतार—पु० अवतार। उतरना, शरीर ग्रहण। सृष्टि। 'कीन्हेसि बरन बरन औतारू।' प० १

औत्सुक्य—पु० उत्सुकता, उत्कण्ठा।

औथरा—वि० कम गहरा, छिछला 'अति अगाध अति औथरो, नदी कूप सर बाय।' वि० १६६

औदकना—अक्रि० चौंकना ( उदक पड़ना, बुन्देल० ), '...नाउँ लिये ऐसे कोउ औदकि परति है।'

औदसा—स्त्री० दुर्दशा, विपत्ति। [सुन्दर शृं० ८६ )

औदार्य—पु० उदार होनेका भाव या क्रिया।

औदासीन्य—पु० उदासीनता, विरक्ति, उपेक्षा, सुख दुःखके बीचकी अवस्था ( जीव ४१ )।

औदुंबर—पु० यम विशेष। वि० गूलरका बना। ताम्र-

औद्धत्य—पु० उजड्डपन, धृष्टता। [निर्मित।

औद्योगिक—वि० उद्योगसे सम्बन्ध रखनेवाला।

औध—पु० अवध, कोशल देश। [समय।

औध, औधि—स्त्री० सीमा, निर्धारित समय। अन्त

औधारना—सक्रि० देखो 'अवधारना', 'राखा छात, चँवर औधारा।' प० ३२५। प्रारम्भ करना (प०३५)

औनापौना—वि० थोड़ा बहुत।

औनि—स्त्री० अवनि, भूमि, धरती ( भू० १२ )।

औनिप—पु० राजा।

औपचारिक—वि० उपचार सम्बन्धी।

औपटी—वि० स्त्री० अटपटी, विकट ( रत्ना० ३५१ )।

औपनिवेशिक—वि० उपनिवेश सम्बन्धी।

औपनी—स्त्री० देखो 'ओपनी'।

औपन्यासिक—वि० उपन्यास सम्बन्धी, विलक्षण। पु० उपन्यास लिखनेवाला।

औम—स्त्री०अवम तिथि,वह तिथि जिसका क्षय हुआ हो।

और—अ० दो शब्दों या वाक्योंको मिलानेवाला शब्द। वि० दूसरा, भिन्न। अधिक। औरका और—कुछका कुछ, उलटा 'घटि बढ़िते बढ़ि घटि रकम करी औरकी और।' बि० ९२

औरत—स्त्री० स्त्री, महिला, पत्नी। [सूमना (बुन्देल०)।
औरना—अक्रि० अग्रसर होना ( उत्त० ४४ )। सक्रि०
औरस—वि० विवाहित स्त्रीसे उत्पन्न।
औरसना—अक्रि० विरस होना, रुष्ट होना।
औरासा—वि० विचित्र, विलक्षण, बेढङ्गा 'कहँ वियोग यह मिलान कहाँ अब काल चाल औरासी।' सू० १०६, (अ० १२९)
औरेब—पु० टेढ़ी चाल। उलझन, पेंचकी बात।
औलना—अक्रि० गरमी पड़ना, तप्त होना, जलना।
औलाद—स्त्री० सन्तान। नस्ल।
औलिया—पु० सिद्ध पुरुष। ( मारवी० १२३ )।
औषध—स्त्री० दवा।
औसत—पु० भिन्न भिन्न संख्याओंको जोड़कर, जितनी संख्याएँ हों उतनीसे भाग देनेपर प्राप्त संख्या, परता। वि० सामान्य, साधारण।
औसर—पु० अवसर। समय, अवकाश, मौक़ा।
औसान—पु० अवसान, समाप्ति। नतीजा। पु० होश-हवास, चेत 'गै अवसान सबन्ह कर देखि समुद्र कै बाढ़।' प० ७०
औसाना—सक्रि० फल इ० को पाल डालकर पकाना।
औसि—क्रिवि० अवश्य।
औसेर—स्त्री० देखो अवसेर' ( अ० ८९ )।
औहत—स्त्री० अपमृत्यु, दुर्गति।
औहाती—वि० स्त्री० सोहागिन, सौभाग्यवती।

# क

कं—पु० सुख। जल। अग्नि। शिर। काम। कंचन।
कँउधा—स्त्री० देखो "कौंध"।
कंक—पु० एक मांसाहारी पक्षी, सफेद चील 'काक कंक लै भुजा उड़ाहीं।' रामा० ५०४
कंकड़, कंकर—पु० पत्थरका बहुत छोटा टुकड़ा, मिट्टी और चूने इ० के संयोगसे बना रोड़ा। किसी चीज़का सख्त हिस्सा, रवा।
कंकड़ीला—वि० देखो 'कंकरीला'।
कंकण, कंकन—पु० कड़ा, ककना, दुलहा या दुलहिनके हाथमें बाँधा जानेवाला लोहेका छल्ला इत्यादि।
कंकरीट—पु० कंकड़ इ०से बना हुआ गच पीटनेका मसाला।
कंकरीला—वि० जिसमें कंकड़ोंकी अधिकता हो। कंचु।
कंकरेत—स्त्री० देखो 'कंकरीट', देखो 'कंकरीला'।
कंकाल—पु० अस्थिपञ्जर।
कंकाली—पु० जाति-विशेष। वि० स्त्री० कर्कशा।
कँगवारी—स्त्री० काँचकी फुदिया।
कँघौरी—स्त्री० काँच। काँचकी फुदिया।
कंगन, कँगना—पु० देखो 'कंकन'। 'बाहूँ कंगन, टाड़ सलोनी।' प० ९९
कँगनी—स्त्री० छोटा कंकन। दानेदार चक्कर। एक अन्न।
कंगला—वि० धनहीन, गरीब। अकालपीड़ित।
कँगहेरा, कँघेरा—पु० जातिविशेष ( रवि० ३२, ४४ )।
कंगाल—देखो 'कंगला'।
कंगाली—स्त्री० गरीबी, निर्धनता।
कँगुरिया—स्त्री० छिगुनी, सबसे छोटी उँगली।
कँगूरा—पु० शिखर, बुर्ज।
कंघा—पु० बाल झाड़नेके लिए सींग इ० की बनी वस्तु।
कंघी—स्त्री० छोटा कंघा।
कघेरा—पु० कंघा बनानेवाला।
कंच—पु० काँच 'मनि गुन पुंज जु व्रजपति छाँड़त हित हरिवंस सुकर गहि कंचु।' हित०
कंचन—पु० सुवर्ण, सम्पत्ति।
कंचनी—स्त्री० वेश्या, अप्सरा ( पूर्ण २४६ )।
कंचुक—पु० चोली। कवच। केंचुल।
कंचुकी—स्त्री० केंचली 'जैस साँप कंचुकी कूँ लिये रो कोउ दिन जीरन उतारि करि नूतन गहत है।' सुन्द० १०५। सर्प। चोली ( उदे० 'उपरना')। पु० अन्तःपुरचारी वृद्ध ब्राह्मण।
कँचुरि, कँचुली—स्त्री० ( साँपकी ) केंचुल।
कँचुवा—पु० कंचुकी, चोली।
कँचेरा—पु० काँचका काम करनेवाला।
कंज—पु० कमल, ब्रह्मा, केश।
कंजई—वि० कंजे रंगका, खाकी।
कंजज—पु० ब्रह्मा ( राम २४९ )।

कंजड़—पु० जातिविशेष। [ एक जंगली पेड़।
कंजा—वि०गाढ़े खाकी रंगका। कञ्जे रंगकी आँखोंवाला।
कँजियाना—अक्रि० कालासा पड़ना, मुरझाना, ठंढा
कंजूस—वि० कृपण। [ पड़ना।
कंट, कंटक—पु० काँटा, विघ्न, विघ्न डालनेवाला।
कंटकित—वि० काँटेदार। रोमांचयुक्त। [(भ्र० १३८)
कँटिया—स्त्री० छोटी कील, हुक। एक आभूषण।
कँटीला—वि० काँटेदार 'अब अलि रही गुलाबकी अपत कँटीली डार।' बि० १०७
कंटोप—दे० 'कनटोप'।
कंठ—पु० गला। शब्द, स्वर। कण्ठा, हँसुली। तोते इत्यादिके गलेकी रेखाएँ।—फूटना = तोते आदिके गलेमें रेखाओंका चिह्न दिखायी पड़ना।
कंठगत—वि० कंठमें आया हुआ, जो निकलनेपर हो ( प्राण )।
कंठमाला—स्त्री० गलेके चारों ओर गाँठें होनेका रोग।
कँठला—पु० देखो 'कठुला'।
कंठसिरी—स्त्री० गलेका एक गहना, कंठी 'कल हंसनि कण्ठनि कण्ठसिरी। राम० २५२
कंठस्थ—वि० कण्ठगत, कण्ठाग्र, मुखाग्र, ज़बानी।
कंठा—पु० गलेका भूषण-विशेष 'कुंजर-मनि-कंठा कलित उरन्ह तुलसिका माल।' रामा० १३३। तोते इत्यादिके गलेकी रेखाएँ 'हीरामन हौं तेहिक परेवा। कण्ठा फूट करत तेहि सेवा।' प० ४१
कंठाग्र—वि० मुखाग्र, ज़बानी।
कंठी—स्त्री० छोटे दानोंका कण्ठा या माला।—लेना' = वैष्णव बनना, मांसादिका त्याग करना।
कंठ्य—वि० जिसका उच्चारण कण्ठसे होता हो। कण्ठसे
कंडहार— देखो कंडिहरिया'। [ उत्पन्न।
कंडा—पु० सूखा गोबर, गोहरा, उपला।
कंडाल—पु० एक तरहका ढोल। तुरही नामक बाजा।
कंडिहरिया—पु० कर्णधार, ( बीजक २६० )
कंडील—पु० कागज इ० की बनी लालटेन।
कंडु—स्त्री० खुजली।
कंडौरा—पु०कंडा पाथने वा रखनेकी जगह। कंडोंका ढेर।
कंत—पु० कान्त, पति, ईश्वर।
कंथ—पु० कन्त, स्वामी।
कंथा—स्त्री० गुदड़ी 'कंथा पहिरि दंड कर गहा।' प० ५७, ( सूबे० ३२१ )
कंद—पु० गूदेदार जड़। बादल।
कंदन—पु० विध्वंस, नाश। नाशक।
कंदना—सक्रि० नष्ट करना, मारना ( रत्ना० ५१४ )।
कंदर—पु० गुफा 'अब बहु भये तकहु गिरि-कंदर।' रामा० ५१०। कन्द, मूल 'प्रकट्यो पूत सकल सुख-कंदर।' सू० ४७
कंदरा—स्त्री० गुहा, गुफा। [ कंदर।' सू० ४७
कंदरिया, कंदरी—स्त्री० मुलायम डंठल (ग्राम० ८४)।
कंदर्प—पु० कामदेव।
कंदा—पु० शकरकन्द। घुइयाँ।
कंदुक—पु० गेंद। सुपारी। गेंडुआ।
कँदैला—वि० गँदला, मैला।
कंध—पु० कन्धा, तनेका ऊपरी भाग जहाँसे शाखाएँ फूटती हैं।
कंधनी—स्त्री० करधनी, मेखला। [ फूटती हैं।
कंधर—पु० गरदन 'केहरि कन्धर चारु जनेऊ।' रामा० ८४। (दशकंधर = दशग्रीव, रावण )।
कंधरा—स्त्री० गर्दन।
कंधा—पु० गर्दन और बाहुमूलके मध्यका भाग।
कंधार, कंधारी—पु० कर्णधार,मल्लाह (सू०३५) 'जाकहँ ऐस होइ कंधारा। तुरत बेगि सो पावै पारा।' प० ८
कंधावर—पु० देखो 'कन्हावर'।
कँधेला—पु०साड़ीका छोर जो कन्धेपर डाल लिया जाता है।
कंप-पु० कंपन—स्त्री० काँपनेकी क्रिया, कँपकँपी। धड़कन 'उर उरकी कम्पनमें व्यापक' ( पल्लव १३७ )
कँपकँपी—स्त्री० काँपना, कम्प।
कँपना—अक्रि० काँपना, थरथराना, डरना।
कंपा—पु० पक्षियोंको फँसानेकी बाँसकी तीलियाँ।
कँपाना—सक्रि० कँपकँपी पैदा करना, हिलाना। भयभीत करना।
कंपायमान—वि० काँपता हुआ, हिलता हुआ।
कंपित—वि० काँपता हुआ, हिलता हुआ, भयभीत।
कंपू—पु० कैम्प, डेरा, पड़ाव।
कंबर—पु० कम्बल, ऊनका वस्त्रविशेष।
कंबल—पु० देखो 'कम्बर'।
कंबु—पु० शंख।
कँवल—पु० कमल, पद्म, 'भँवर आइ बनखंड सन लेइ कँवल कै बास।' प० १०, ( साखी ३, १०४ )
कंस—पु० उग्रसेनका पुत्र और कृष्णका मामा जो बड़ा

अत्याचारी था काँसा, फाँस, करोटा, सुराही।
फँसनाल—पु० फाँस।
क—पु० ब्रह्मा, सूर्य, अग्नि, विष्णु,यम,वायु, आत्मा इ०
कई—पु० कतिपय, अनेक।
कइनी—स्त्री० टहनी ( ग्राम० ५४ )।
ककई—स्त्री० कंघी।
ककड़ी, ककरी—स्त्री० एक लम्बा फल।
ककना—पु० हाथका एक गहना, कंगन।
ककनी—स्त्री० नुकीले कंगूरेवाला एक गहना या उसी तरहकी छाहकी चूड़ी।
ककनू—पु० एक तरहका पक्षी। कहते हैं कि इसके गानेसे घोंसलेमें आग लग जाती है और वह जल मरता है 'ककनू पखि जैस सर साजा।' प० ९५
ककहरा—पु० 'क' से "ह"तकके अक्षर। प्रारम्भिक बातें 'ऐसे व्यक्ति नियुक्त किये जाते हैं, जो इस व्यवसाय का ककहरा भी नहीं जानते।'
ककही—स्त्री० कंघी 'बैठे रसिक सँवारन बारन, कोमल कर ककही सों।' स्वामी हरिदास। कपासका एक भेद।
ककुद्—पु० बैलकी गर्दनके पासका कूबड़, डिल्ला।
ककुभ—पु० दिशा, वीणाका अंग-विशेष, एक राग। [ अर्जुन वृक्ष।
ककुभा—स्त्री० दिशा।
ककोड़ा—पु० खेखसा नामक तरकारी।
ककोरना—सक्रि० खरोंचना। मोड़ना, सिकोड़ना (बुँदेल)
कक्ष—पु० काँख। लाँग, काँछ। कोठरी, वन। श्रेणी।
कक्षा—स्त्री० श्रेणी। समता। ग्रह-मार्ग। परिधि।
कखौरी—देखो 'कँखौरी'। [ काँख। ड्योढ़ी।
कगर—पु० घाट, मेंड़, कुछ उठा हुआ किनारा। क्रिवि० किनारेपर। निकट। अलग।
कगरी—स्त्री०, कगार—पु० ऊँचा किनारा, करार। टीला। 'हंस-सुताकी सुंदरि कगरी अरु कुंजनकी छाहीं।' भ्र० ६८
कच—पु० केश, बाल। झुंड। पपड़ी। [
कचड़ा—पु० देखो 'कचरा'।
कचनार—पु० एक वृक्ष।
कचपच—पु० गुत्थम गुत्था होना, गिचपिच।
कचपचिया, कचपची—स्त्री० कृत्तिका नक्षत्र। बहुतसे छोटे छोटे तारोंका समूह। 'पहिरे खुमी सिंघलदीपी। जनौं भरी कचपचिआ सीपी।' प० ४८, 'औ मो चंद गचपची गरासा।' प० ७३। चमकीला बूँदा, सितारा
कचबची—स्त्री० चमकदार बूँदा, सितारा।
कचरना—सक्रि० पाँवसे कुचलना, चूर करना, दबाना
कचरा—पु० कूड़ा करकट, कतवार।
कचरी—स्त्री० एक बेल जिसमें छोटे छोटे अण्डोंकी तरह फल लगते हैं। पेहँटा। कचरीके सुखाये हुए टुकड़े सुखाये हुए फल इत्यादि।
कचहरी—स्त्री० न्यायालय, दरबार।
कचाई—स्त्री० कचापन, अनुभवहीनता।
कचाना—अक्रि० कचियाना, आगापीछा करना।
कचायँध—स्त्री० कचेपनकी बू।
कचारना—सक्रि० दे मारना, पटकना, पटक कर धोना।
कचालू—पु० उबले हुए आलू इ० के टुकड़े जिनमें नमक मिर्च, मसाला पड़ा हो। [ झेंपना।
कचियाना—अक्रि० हिम्मत हारना, हिचकिचाना।
कचीची—स्त्री० 'कचपची', कृत्तिका नक्षत्र। जबड़ा।
कचुला—पु० कटोरा, प्याला।
कचूमर—पु० भर्ता, गूदा, कुचली हुई वस्तु।
कचूर—पु० कचुला, कटोरा 'नयन कचूर भरे जनु मोती।' प० २०२। एक पौधा 'परहिं भूमिपर होइ कचूरू। परहिं कदलि पर होइ कपूरू।' प० १४८।
कचोटना—अक्रि० चुभना, गड़ना 'कलेजेमें कचोटने-वाली करुणा' आँधी १४६
कचोरा—पु० कटोरा 'नयन कचोर प्रेममद भरे।' प० ९०, ( सूसु० २६४ ) [ पकवान्।
कचौड़ी, कचौरी—स्त्री० एक तरहकी पूरी या नमकीन
कच्चा—वि० अपक्व, जो न आगपर सेंका गया हो, न पानीमें चुराया गया हो। कमज़ोर, कोमल, अपरिपुष्ट, अस्थायी, निःसार। ( हिसाब इत्यादि ) जो नियमानुकूल न हो। कच्ची मिट्टीका बना। अनभ्यस्त, अनुभवहीन, अपटु। व्यौरेवार। पु० ढाँचा, मसविदा,
कच्छ—स्त्री० कच्छप, कछुआ। [ जबड़ा।
कच्छप—पु० कछुआ। भगवान्का एक अवतार।
कच्छा—स्त्री० एक तरहकी नौका।
कछना—सक्रि० पहिनना, धारण करना 'स्याम रंग कछनी कछ लीन्हे।' छत्र० ३६
कछनी—स्त्री० छोटी धोती ( सू० ८८ ), 'कटि कछनी पीताम्बर ओढ़े हाथ लिये भौंरा चकडोरी।' सूबे० ७५

घुटनेतक रहनेवाला एक तरहका घाँघरा ।
**कछरा**—पु० चौड़े मुँहवाला मिट्टीका बरतन ।
**कछवाहा**—पु० राजपूतोंका एक भेद ।
**कछार**—पु० नदी-तटकी भूमि ।
**कछु, कछुक**—वि० कुछ, थोड़ा ।
**कछुआ, कछुवा**—पु० कच्छप ।
**कछोटा**—पु०, **कछोटी**—स्त्री० छोटी धोती । देखो, 'कछनी' । 'खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैजनी बाजती, पीरी कछोटो ।' रसखान, ( गीता० २९७ ) —**मारना** = पीछे लाँग खोंसना ( स्त्रियोंका ) ।
**कजरा**—पु० काजल ।
**कजराई**—स्त्री० कालापन ।
**कजरारा**—वि० काजलवाला, अंजनयुक्त । काला 'भारे कजरारे तैसे दीरघ दँतारे मेघ मण्डल विहण्डैं जे वे शुण्डादण्ड ताने ते ।'' पील खुलैं पीलखाने ते ।' सुखदेव मिश्र ।
**कजरी**—स्त्री० एक त्योहार । कालिख, स्याही । काली आँखोंवाली गाय । पु० एक तरहका धान, 'बासमती, कजरी, रतनारी । मधुकर, ढेला, झीना सारी ।'प० २७० ।
**कजरौटा, कजलौटा**—पु० काजल रखनेकी डिबिया । 'कजरौटा बरु होइ, लुकाठन आँजै नैना ।' गिरधर
**कजलाना**—अक्रि० काला पड़ जाना, ठण्ढा पड़ना । सक्रि० आँजना ।
**कजली**—स्त्री० कालिख । एक त्योहार ।
**कजा**—स्त्री० माँड़, काँजी । क़ज़ा=स्त्री० मृत्यु ।
**कज़ाक**—पु० डाकू, बटमार 'जिहि मग दौरत निरदई, तेरे नैन कजाक ।' रतन० २९
**कजाकी**—स्त्री० डाका, लूटमार । धोखा, छल, चालाकी 'तासों कैसे चलै कजाकी ।' छत्र० ३७
**कजिया**—पु० झगड़ा, बखेड़ा, लड़ाई ।
**कज्जल**—पु० काजल, कालिख, सुरमा ।
**कट**—स्त्री० नरकटकी चटाई, टट्टी । पु० गण्डस्थल ।
**कटक**—पु० सेना । साथरी । कंकण 'छोटे छोटे भुजन बिजायठ छोट कटक कर माहीं ।' रघु० ४२
**कटकई**—स्त्री० सेना, कटक ( रामा० ८७ ) ।
**कटकट**—पु० दाँत पीसनेका शब्द ।
**कटकटना, कटकटाना**—अक्रि० दाँत पीसना 'कट-कटाहिं कोटिन्ह भट गरजहिं ।' रामा० ४७२
**कटकाई**—स्त्री० कटक, सेना 'जो आवै मरकट कटकाई । जियहिं बिचारे निसिचर खाई ।' रामा० ४२४
**कटखना**—वि० काटखानेवाला, कटहा । पु० चाल, युक्ति ।
**कटजीरा**—पु० काला जीरा 'कूट काइफर सोंठि चिरैता कटजीरा कहुँ देखत ।' सूबे० १३९
**कटताल**—पु० 'करताल' नामक काठका बना बाजा ।
**कटती**—स्त्री० खपत, बिक्री । छँटना ।
**कटना**—अक्रि० दो टुकड़े हो जाना, क्षत हो जाना । बीतना, दूर होना, खपना, नष्ट होना, शर्मिन्दा होना । आसक्त होना 'मनमोहन छबिपर कटी कहै कव्यानी देह ।' बि० २८४ । वि० कटहा, काटनेवाला ।
**कटनास**—पु० नीलकण्ठ पक्षी ।
**कटनि**—स्त्री० काट । प्रीति 'फिरत जो अटकत कटनि बिन रसिक सुरस न खियाल ।' बि० २१७
**कटनी**—स्त्री० बिक्री, खपत । फसल काटनेकी क्रिया ।
**कटरा**—पु० छोटा बाजार । भैंसका बाछा । कटार 'मोगरा द्विविद, तार कटरा, कुमुदनेजा, अंगद शिला, गवाक्ष विटप विदारे हैं ।' राम० ४९३, 'कटरा काढ्यो पेटमें दये घाउपर घाउ ।' छत्र० ६५
**कटवा**—पु० गलेमें पहननेका एक गहना ।
**कटसरैया**—स्त्री० एक कँटीला पौधा ।
**कटहर,-हल**—पु० एक पेड़ या उसका फल ।
**कटहरा**—देखो 'कठघरा' ।
**कटहा**—वि० काट खानेवाला ।
**कटा**—पु० मारकाट, हत्या, प्रहार, चोट 'बिज्जु छटासी अटापै चढ़ी सु कटाछनि घालि कटा करती हो ।' जग० ९१
**कटाइक**—पु० काटनेवाला ( कविता० २०८ ) ।
**कटाऊ**—पु० काट, काट-छाँट, बेलबूटा 'जावत कहिए चित्र कटाऊ । तावत पँवरिन्ह बने जड़ाऊ ।' प० २७६
**कटाक्ष, कटाच्छ**—पु० आक्षेप । तिरछी चितवन ।
**कटाना**—सक्रि० काटनेका काम दूसरेसे कराना, कम कराना, डसवाना ।
**कटार, कटारी**—स्त्री० एक तरहकी छुरी या दुधारा [ हथियार ।
**कटाव**—पु० काटनेकी क्रिया । काटकर बनाये हुए फूल [ या पत्तियाँ ।
**कटाह**—पु० बड़ी कड़ाही ।
**कटि**—स्त्री० कमर, लंक ।
**कटिजेब**—स्त्री० करधनी 'अङ्गको कि अङ्गराग गेंडुआ कि

गरमुई कियौं कटिजेब हीको टरको कि हारु है।' रामा० २८९ ( पाठा० ) [ मेंसे एक।
कटिबंध—पु० कमरपट्टा। भूगोलके पाँच कल्पित भागों-
कटिबद्ध—वि० कमर कसे हुए, समुद्यत, तुला हुआ।
कटियाना—अक्रि० कंटकित होना, देखो 'कटयाना'।
कटीला—वि० काँटेदार, नुकीला। तीक्ष्ण, तुरन्त प्रभाव डालनेवाला, मुग्ध करनेवाला।
कटु, कटुक—वि० कड़ुआ, तिक्त, अप्रिय 'कटुक कठोर कुवस्तु दुराई।' रामा० २८४
कटुता—स्त्री०, कटुत्व—पु० कटुआपन।
कटैया—पु० काटनेवाला। स्त्री० भटकटैया।
कटोरा—पु० प्याला।
कटोरिया, कटोरी—स्त्री० प्याली।
कटौती—स्त्री० किसी रकममेंसे कुछ अंश काट लेना।
कट्टर—वि० दृढ़। हठी। अंधविश्वासी। पक्का।
कट्ठा—पु० मोटा गेहूँ। एक नाप। बिस्वा ( बिहार )।
कट्याना—अक्रि० कंटकित होना, प्रेम या आनन्दसे रोमाञ्चित होना। (दे० 'कटना')।
कठफोला, कठफोड़वा—पु० एक पक्षी। [ पिंजड़ा।
कठघरा—पु० लकड़ीसे घिरा हुआ स्थान, काठका घर या
कठबाप—पु० वह व्यक्ति जिसके साथ माताने पुनर्विवाह कर लिया हो। [ साधु ( दोहा० ११२ )।
कठमलिया—पु० कंठी पहननेवाला। मिथ्या वेशधारी
कठमस्त—वि० लम्पट, हट्टा कट्टा।
कठला—पु० एक तरहकी माला।
कठवत—स्त्री०, कठवता—पु० काठका बड़ा बरतन।
कठारा—पु० नदी इत्यादिका किनारा।
कठिन—वि० कड़ा, कठोर, दुष्कर। स्त्री० कठिनाई, सङ्कट 'हमकों कठिन परी गढ़माहीं।' छत्र० ६२
कठिनता, कठिनताई, कठिनाई—स्त्री० कड़ाई, कठोरता,
कठिया—वि० कड़े छिलकेवाला। [असाध्यता, सङ्कट।
कठुला—पु० एक तरहकी माला, हार ( रामा० १४८ ), 'उर बघनहा कंठ कठुला झडूले बार ···' सू० ५५ (५७)
कठैठ, कठैठा—वि० कड़ा, दृढ़ 'बैर कियो शिव चाहत हो तय लौं अरि बाह्यौ कटार कठैठो।' भू० ९९
कठैला—पु० काठका पात्र, कठौता।
कठोर—वि० कड़ा, कठिन, परुष, रूखा, निष्ठुर।
कठोरता, कठोरताई—स्त्री० कड़ाई, निर्दयता।
कठोरपन—पु० निष्ठुरता, निर्दयता।
कठौता—पु० काठका बड़ा बरतन 'छोटोसो कठौता भरि आनि पानी गंगाजू को · ·' कविता० १६६
कठौती—स्त्री० छोटा कठौता। [ जलन, कसक।
कड़क—स्त्री० कड़कड़ाहटकी आवाज़, गर्जन, तड़प,
कड़कड़ाता—वि० 'कड़कड़' करता हुआ। प्रचंड, तेज़।
कड़कड़ाना—अक्रि० 'कड़कड़' आवाज करना। सक्रि० खूब गरम करना (घी इ०)। [फटना, चिटकना।
कड़कना—अक्रि० 'कड़कड़' आवाज करना, गरजना।
कड़खा—पु० वीरोंको उत्तेजित करनेवाले गीत।
कड़खैत—पु० कड़खा गानेवाला भाट।
कड़वा—देखो 'कड़ुआ'।
कड़ा—वि० सख्त, दृढ़, रूखा, कठोर, प्रचंड, कठिन। पु० हाथ या पैरका चूरा। कुण्डा।
कड़ाई—स्त्री० सख़्ती, कठोरता, दृढ़ता।
कड़ाका—पु० टूटनेकी आवाज़। लंघन ( दिनभरका सड़ाका )। कड़ाकेका=प्रचंड, भीषण।
कड़ाबीन—स्त्री० एक तरहकी बन्दूक।
कड़ार—कड़ाहा—पु० पूरी इ० छाननेकी बड़ी कड़ाही।
कड़ाही—स्त्री० लोहे आदिका कुण्डेदार छोटा गोल पात्र।
कड़िहर—स्त्री० कमर ( ग्राम० ४० )।
कड़िहार—पु० काढ़नेवाला, उद्धारक 'अस अवसर नहिं पाइहौ धरौ नाम कड़िहार।' साखी ९४
कड़ी—स्त्री० जंजीरका एक छल्ला, हुक।
कड़ुआ—वि० कटु, जिसका स्वाद नीम इत्यादिकी तरह अप्रिय हो। तीक्ष्ण स्वभावका' क्रोधी। अप्रिय।
कड़ुआना—अक्रि० कड़ुआ लगना। नाराज़ होना।
कढ़ना—अक्रि० निकलना, उदय होना, बाहर आना (सू० १३९,) 'पियत रहै अधरानिको रस अति मधुर अमोल। तातें मीठो कढ़त है बाल बदनते बोल।' रस० ५६। लाभ निकलना 'तुम तो सुघर स्यानी कहिये सबेई बात, चलिये जरूर बैठे कहौ का कढ़त है।'
कढ़नी—स्त्री० मथानी घुमानेकी रस्सी। [ श्री हरि
कढ़राना, कढ़लाना—सक्रि० घसीटकर बाहर निकालना 'सूर तबहुँ न द्वार छाँड़ै डारिहौ कढ़राइ।' सूवि २८
कढ़वाना, कढ़ाना—सक्रि० निकलवाना, खिंचवाना 'पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी। तौ धरि जीभ कढ़ावहुँ तोरी।' रामा० २०५

**कढ़ाई**—स्त्री० कड़ाही । कसीदा काढ़नेकी क्रिया या उसकी मज़दूरी ।
**कढ़ी**—स्त्री० बेसनसे बना हुआ एक तरहका द्रव व्यञ्जन।
**कढ़ोरना**—सक्रि० घसीटना ।
**कढ़ोलना**—देखो कढ़ोरना' ( सुधानिधि १५४ )
**कण**—पु० बहुत छोटा टुकड़ा, रवा, एक दाना ।
**कण-कण**—पु० कंकणक । शब्द 'कण-कण कर कंकण प्रिय किण-किण रव किंकणी, रणन-रणन नूपुर, उर लाज, लौटरंकिणी' । गीतिका ६
**कणिका**—स्त्री० छोटा टुकड़ा ।
**कत, कतक**—क्रिवि० क्यों, किस लिए 'बिन पूछे ही धर्म कतक कहिये दहिये हिय ।' नन्द० । किस तरह 'सिरिस सुमन कत बेधिय हीरा ।' रामा० १४०
**कतई**—अ० बिलकुल नहीं, जरा भी नहीं ।
**कतरन**—स्त्री० काट-छाँटके बाद बचे हुए कपड़े इ० के छोटे छोटे टुकड़े ।
**कतरना**—सक्रि० कैंची इ० से काटना ।
**कतरनी**—स्त्री० कैंची ।
**कतरब्यौंत**—स्त्री० काट छाँट । युक्ति, सोच-विचार ।
**कतरा**—पु० टुकड़ा । क़तरा = बूँद । [जाना ।
**कतराना**—सक्रि० कटवाना । अक्रि० बचाकर निकल
**कतरी**—स्त्री० जमी हुई मिठाईका पतलासा टुकड़ा । एक
**क़तल**—पु० हत्या, खून । [गहना । कोल्हूकी पटिया ।
**कतलबाज**—पु० बधिक, संहार करनेवाला ।
**कतलाम**—पु० जनसमूहका वध । सर्व संहार ।
**कतवार**—पु० कूड़ा करकट 'ज्ञानहिंकी बढ़नी मनो हाथ लै कायरता कतवार बुहारै । गुरु० गो० कातनेवाला ।
**कतहुँ, कतहूँ**—क्रिवि०कहीं, किसी जगह 'कतहुँ रहउ जौं जीवत होई ।' रामा० ४०५
**कता**—स्त्री० आकार । काट छाँट । ढङ्ग । श्रेणी, पंक्ति ।
**कताना**—सक्रि० कातनेका काम कराना ।
**कतार**—स्त्री० श्रेणी, श्रृखला, पंक्ति । समूह ।
**कतारी**—स्त्री० ढंग ।
**कति**—वि० कितने, कितने ही, कौन ।
**कतिक**—वि० 'कितेक', कितना । कैसे । थोड़ा । बहुत,
**कतिपय**—वि० कई एक, कुछ, कितने ही । [अनेक ।
**कतेक**—वि० कितने । थोड़ेसे, कुछ । अनेक ।
**कतेब**—पु० धर्मग्रन्थ (कबीर ३२३) ।
**कतौनी**—स्त्री० कातनेकी क्रिया, कातनेकी मजदूरी । किसी कामके लिए देरतक प्रतीक्षा करना ।
**कत्ता**—पु० एक तरहकी कटार, छुरी ( उदे० 'अकह ) ।
**कत्ती**—स्त्री० एक तरहकी पगड़ी । दे० 'कत्ता' ।
**कत्थई**—वि० कत्थेके रङ्गका । [एक प्रकारका नृत्य ।
**कत्थक**—पु० गाने बजानेका काम करनेवाली एक जाति ।
**कत्था**—पु० खैर ।
**क़त्ल**—पु० वध, खून ।
**कथक**—पु० कथा कहनेवाला, पौराणिक । कत्थक ।
**कथक्कड़**—पु० बहुत ज्यादा कथा कहनेवाला, हमेशा कथा कहनेके फेरमें रहनेवाला ।
**कथकली**—पु०—एक प्रकारका नृत्य ।
**कथड़ी**—स्त्री० कमरी ।
**कथन**—पु० कहना, उक्ति, बात । [विपरीति ।' भ्र०५२
**कथना**—सक्रि० कहना, बोलना 'ऊधो कहा कथत
**कथनी**—स्त्री० बात, कथन 'जब लग अपना आप न जाणै तब लग कथनी काची ।' दादू० बकवाद 'जब लग कथनी हम कथी दूर रहा जगदीस ।' साखी ३८
**कथनीय**—वि० कहने योग्य ।
**कथरी**—स्त्री० गुदड़ी, पुराने कपड़ोंका बना बिछौना ।
**कथा**—स्त्री० आख्यान, कहानी, बात, हाल, झगड़ा ।
**कथानक**—पु० छोटी कथा-कहानी ।
**कथावस्तु**—स्त्री० कथा या कहानीका ढाँचा ।
**कथित**—वि० कहा हुआ ।
**कथीर,कथील**—पु० राँगा 'काँच कथीर अधीर नर जतन करत ह्वै भंग । साधू कंचन ताइए चढ़ै सवाया रंग ।' साखी ७९
**कथोपकथन**—पु०वाद-विवाद, बातचीत ।
**कदंब**—पु० झुण्ड, समूह । एक पेड़ ।
**कदंश**—पु० खराब हिस्सा,सारहीन भाग (प्रिय० १०३)।
**कद**—स्त्री० द्वेष, बुराई । हठ । पु०बादल । क़द=डील।
**कदध्व**—पु० बुरा मार्ग, कुपथ ।
**कदन**—पु० हत्या, नाश, युद्ध । छुरी, 'बिरह कदन करि मारत लुंजै ।' भ्र० ३६
**कदन्न**—पु० कुत्सित या मोटा अन्न ( कोदो इ० ) ।
**कदम**—पु० एक पेड़, कदम्ब वृक्ष (सू० १८१) । समूह 'सुनत बचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे

जंजाल विपुल दुग्ध कदम टारे।' सूचे ६०। घोड़ेकी एक चाल। याज=कदम चलानेवाला।

क़दम—पु० डग, चरण।

क़दर—स्त्री० आदर, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, पूछ। मात्रा।

कदरई—स्त्री० कायरता। देखो 'कदराई'।

कदरज—पु० एक पापीका नाम। वि० कंजूस।

क़दरदान—वि० क़दर करनेवाला। गुणग्राहक।

कदरमस—स्त्री० मारपीट, लड़ाई।

कदराई—स्त्री० कायरता, भीरुता 'रिपुपर कृपा परम कदराई।' रामा० ३७२

कदराना—अक्रि० डरना, कचियाना, पीछे हटना 'तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू।' रामा० २८३

कदरो—स्त्री० मैनाके बराबर एक पक्षी।

कदर्थना—स्त्री० दुर्गति, विडम्बना, बुरी हालत।

कदर्थित—वि० जिसकी दुर्दशा की गयी हो।

कदर्य—वि० लोभी, कृपण, कंजूस।

कदली—स्त्री० केला।

कदाकार—वि० जिसका आकार भद्दा हो, बदशकल।

कदाच, कदाचि—क्रिवि० कदाचित्, शायद, कभी। 'जो कदाचि मोहिं मारिहैं तौ पुनि होब सनाथ।' †

कदाचार—पु० दुराचार, बुरा आचरण।

कदाचित्—क्रिवि० शायद, कभी। [ † रामा० ३९९

कदापि—अ० कभी।

कदा—क्रिवि० कभी वि० हठी ( कबीर २० )

क़दीम—वि० पुराना।

क़दीमी—वि० चिरकालसे चला आता हुआ।

कदुष्ण—वि० कम गर्म, कुनकुना।

कद्दू—पु० घिया, लौकी।

कद्दूकश—पु० लोहे इ० का एक औज़ार जिसपर कद्दूको कसकर बारीक टुकड़े करते हैं।

कदे—क्रिवि० कभी 'उस समर्थका दास हौं कहे न होइ अकाज।' कबीर २०

कधी—क्रिवि० कभी ( साखी ५४ )।

कनंक—पु० सोना 'पुन्य काळन देत विप्रन तौलि तौलि कनंक।' के० १३५

कन—पु० अन्नका एक दाना, 'कुङ्कमके फूटे कहूँ निकसत कन है।' सुन्द० १३। छोटा टुकड़ा, रेतका कण, बूँद, प्रसाद, भिक्षान्न 'कै पढ़ियो कै तपोधन है कन माँगत बाँभनै लाज नहीं।' सुदामा० २, राखत है जनकी परतिज्ञा हाथ पसारत कनको।' सू० २

कनउँड़ी—स्त्री० दासी 'मन लागेउ तेहि कमलके दण्डी। भावै नाहीं एक कनउँड़ी।' प० २८०

कनउड़—वि० काना या अपङ्ग। निन्दित। लज्जित। एहसानमन्द, उपकृत 'हमै आजु लग कनउड़ काहु न कीन्हेउ। पारबती तप प्रेम मोल मोहिं लीन्हेउ।' पार्वती मङ्गल। [ आटा।

कनक—पु० सोना, धतूरा ( बि० ८२ )। टेसू। स्त्री०

कनककली—स्त्री० कानका एक आभूषण, लौंग।

कनकटा—वि० कान काटनेवाला। जिसके कान काट डाले गये हों।

कनकना—वि० तनिकमें टूटनेवाला, ज़रामें चिढ़नेवाला। 'नेहिनके मन काँचसे अधिक कनकने आइ।' रतन०७७

कनकनाना—अक्रि० चुनचुनाना, गलेमें लगना। चौकन्ना

कनका—पु० कनकी, कण। [ होना।

कनकानी—पु० घोड़ेकी एक जाति।

कनकी—स्त्री० छोटा टुकड़ा, चावलके छोटे-छोटे टुकड़े।

कनकैया—स्त्री०, कनकौआ—पु० गुड्डी, पतङ्ग।

कनखजूरा—पु० गोजरकी जातिका एक पतलासा कीड़ा।

कनखियाना—सक्रि० कनखीसे इशारा करना।

कनखी—स्त्री० दूसरोंकी नज़र बचाकर देखनेकी क्रिया।

कनखैया—स्त्री० देखो 'कनखी'। [ आँखका इशारा।

कनगुरिया—स्त्री० सबसे छोटी उँगली, छिङ्गुली 'अब जीवनकी है कपि आस न कोइ। कनगुरिया कै मुँदरी कङ्कन होइ।' बरवै रामा० २२।

कनछेदन—पु० कर्णवेध संस्कार।

कनटोप—पु० कानोंको भी ढाँक देनेवाली टोपी।

कनधार—पु० कर्णधार, केवट।

कनपटी—स्त्री० कान और आँखके मध्यका भाग।

कनफुँका, कनफुँकवा—वि० कान फूँकनेवाला, दीक्षा देनेवाला। जिसने कान फुँकाया हो। पु० कान फूँकनेवाला गुरु। [ चुगली खानेवाला।

कनफुसका—पु० कानमें चुपकेसे बात कहनेवाला,

कनफूल—पु० कानका एक गहना। तरौना।

कनबतिया—स्त्री० कानमें या बिलकुल धीरेसे कही गयी बात। [ हिलना डुलना।

कनमनाना—अक्रि० आहट पाकर सोये हुए आदमीका

कनय—पु० कनक, सोना 'बिजुरी कनक-कोट चहुँपासा।' प० ७३ [ आनन्द ।

कनरस—पु० गीत, वाद्य, या सुखद बातें सुननेका

कनसुई—स्त्री० चुपचाप कान लगाकर सुनना ।—लेना =आहट लेना, भेद लेना । गोबरकी गौर फेंककर सगुन विचारना ।

कनस्तर—पु० टीनका चौखूँटा पीपा ।

कनहार—पु० कर्णधार, केवट ( रामा० १४१ ) ।

कनाउड़ा, कनावड़ा—वि० देखो 'कनौड़ा' ।

कनागत—पु० पितृपक्ष ।

कनात—स्त्री० मोटे कपड़ेका परदा जो तम्बू इ० के चारों तरफ लगाया जाता है । 'करना' ) ।

कनिआरी—स्त्री० कनक चम्पा नामक वृक्ष ( उदे०

कनिका—पु० 'कनूका', किसी वस्तुका अति सूक्ष्म भाग ।

कनिगर—पु० अपनी 'कानि' ( प्रतिष्ठा ) रखनेवाला ।

कनियाँ—स्त्री० गोद, उछङ्ग 'खसि खसि कान्ह परत कनियाँ ते । दै ससि कहत नन्द रनियाँ ते ।' व्रजवि०, 'जेंवत श्याम नन्दकी कनियाँ ।' सू० ६३

कनियाना—अक्रि० कन्नी खाना, गुड्डीका एक ओरको झुक [ जाना । कतराना ।

कनियार—पु० देखो 'कनियारी ।'

कनिष्ठ—वि० सबसे छोटा, जो बादमें पैदा हुआ हो । निकृष्ट ।

कनिष्ठा—स्त्री० छोटी उँगली दो या अधिक स्त्रियोंमें सबसे छोटी विवाहिता स्त्री या वह स्त्री जिसपर पति का अनुराग कम हो ।

कनिष्ठिका—स्त्री० कानी या सबसे छोटी उँगली ।,

कनिहार—पु० मल्लाह, कर्णधार 'ज्यूँ कनिहार न भेद करै कछु आइ चढ़ै तिहि नाव चढ़ावै ।' सुन्द० १३८

कनी—स्त्री० हीरे, चावल आदिका छोटा टुकड़ा । बूँद 'झलकी भरिभाल कनी जलकी, पुट सूखि गये मधुराधर वै ।' कविता० १६६, ( सू० ९७ ) । मींगी 'कूकस कूटै कनि बिना, बिन करनीका ज्ञान ।' साखी ८७ आँखकी पुतली 'नील नलिन-सी हैं वे आँखें! जिनमें बस उर का मधुवास कृष्ण-कनी बन गया विशाल ।' गुञ्जन ३९ [ उँगली ।

कनीनिका—स्त्री० आँखकी पुतली या तारा । छोटी

कनीर—पु० कनेर वृक्ष या उसका फूल ( ललित०९१ )

कनूका—पु० अनाजका दाना 'जीवै जग जाते जग जीव-को कनूका मिलै-मिलै भली बात यह काम मरदईको।' गोपालचन्द्र मिश्र, ( अ० ४७ ) ।

कने—क्रिवि० निकट, पास ।

कनेखी—स्त्री० देखो 'कनखी' ।

कनेठी—स्त्री० कान ऐंठना ।

कनेर, कनैर—पु० एक पुष्प-वृक्ष ।

कनोई—पु० कानका मैल, खोंट 'कानन कनोई नाक चपटी चुवत रैंट कारे कारे दन्तनमें कीट लपटानो है ।'

कनोखा—वि० कटाक्षयुक्त ( साकेत ८८ ) । [ बेनी ।

कनौड़ा—वि० काना या अपङ्ग । बदनाम, तिरस्कृत, लज्जित । उपकृत, एहसानमन्द ( सू० ६३ ) । नीच, क्षुद्र 'ह्वै रही कनौड़ी मति, कौड़ी भई गोपी अति डौंड़ी फिरी लौंड़ीकी न लाज धारिमतु है ।' दीन० ५१

कनौती—स्त्री० पशुका कान या कानकी नोंक 'चलत कनौतीं लई दबाई । चमर सिखाहू हलन न पाई ।' लक्ष्मणसिंह बाली । कान खड़ा करनेका ढङ्ग ।

कन्ना—पु० किना । चावल आदिका कण । पतङ्ग बाँधने-का तागा । पे -पौधोंका एक रोग ।

कन्नी—स्त्री० हाशिया, किनारा, गुड्डीमें बाँधी जानेवाली धज्जी । पु० कोंपल । 'करनी' नामक औज़ार ।

कन्यका—स्त्री० पुत्री । अविवाहित लड़की ।

कन्या—स्त्री० लड़की, पुत्री, सुता । एक राशि (ज्योतिष)

कन्याधन—पु० कन्या अवस्थामें मिला हुआ धन ।

कन्यारासी—वि० कन्याराशिमें चन्द्रमाके रहनेपर जिसका जन्म हो । चौपट, कायर, निर्बल ।

कन्हावर—पु० वह दुपट्टा जो काँधेपर डाला जाता है । जुएका वह हिस्सा जो बैलकी गर्दनपर रहता है ।

कन्हैया—पु० श्रीकृष्ण । सुन्दर बालक । प्रिय व्यक्ति ।

कपट—पु० छिपाव, छल । [ कर अलग निकालना ।

कपटना—सक्रि० काटना ( उदे० 'बिगुरदा' ) । काट-

कपटी—वि० धोखेबाज़, छलिया, दुराव रखनेवाला ।

कपड़छन,-छान—पु० पिसी हुई चीज़को कपड़ेमें छाननेका काम । वि० कपड़ेमें छाना हुआ ।

कपड़ा, कपरा—पु० वस्त्र 'मन न रँगाये, रँगाये जोगी कपरा ।' कबीर

कपरौटी—स्त्री० कपड़मिट्टी । ओषधि इत्यादि फूँकते समय गीली मिट्टीके लेपके साथ सम्पुटपर कपड़ा [ लपेटनेकी क्रिया ।

कपर्दिका—स्त्री० कौड़ी ।

कपर्दिनी—स्त्री० दुर्गा, चण्डिका।

कपर्दी—पु० शिवजी। एक रुद्र।

कपाट—पु० किवाड़। [ अभागा।' रामा० २०६

कपार, कपाल—पु० सिर, खोपड़ी 'फोरइ जोग कपारु

कपालक—पु० शैव मतके साधु जो नर कपाल लिये रहते हैं।

कपालक्रिया—स्त्री० जलती हुई लाशकी खोपड़ीको बाँससे फोड़नेकी क्रिया।

कपालिका—स्त्री० काली। खोपड़ी।

कपाली—पु० शिव, भैरव।

कपास—स्त्री० रुईका पौधा।

कपासी—वि० हलके पीले रङ्गका। पु० हलका पीला रङ्ग।

कपि—पु० बन्दर। हाथी। सूर्य।

कपिकेतु, कपिध्वज—पु० अर्जुन। [ सा। सफद।

कपिल—पु० एक मुनि। अग्नि। वि० भूरा या लाल-

कपिला—वि० स्त्री० सफेद या भूरे रंगवाली। बहुत सीधी। स्त्री० सफेद रंगवाली या सीधी गाय।

कपिश, कपिस—वि० मटमैला। पीला भूरा।

कपिशा—स्त्री० आधुनिक कोसी नदी।

कपिस—पु० रेशमी वस्त्र 'कनक कपिसपर शोभित सुभग साँवरे अंग।' हित हरि०

कपूत—पु० कुपुत्र, कुलका नाम डुबानेवाला लड़का।

कपूती—स्त्री० पुत्रका कुत्सित आचरण।

कपूर—पु० एक सुगन्धित पदार्थ जो धीरे धीरे हवामें उड़ जाता है।—खाना=विष खाना।

कपोत—पु० कबूतर।

कपोल—पु० गाल।

कपोलकल्पना—स्त्री० झूठमूठ गढ़ी हुई बात।

कप्पर—पु० कपड़ा।

कफ—पु० बलगम, श्लेष्मा। शरीरके अन्दरकी एक धातु। पु० आस्तीनका अगला हिस्सा। लोहेका टुकड़ा जो चकमकसे आग निकालनेमें काम देता है 'काया कफ चित चकमकै झारौं बारम्बार। कबीर

कफन—पु० शवपर लपेटा जानेवाला वस्त्र।

कफनाना—अक्रि० कफनके नीचे ढँक जाना, कफनयुक्त होना। सक्रि० कफनमें लपेटना।

कफन खसोटी—स्त्री० कफन फाड़कर लिया जानेवाला डोमोंका कर। कंजूसी।

कबंध—पु० मुण्डहीन धड़। केतु। एक राक्षस। पेट। मेघ।

कब—क्रिवि० किस समय। कबको, कबसे=देरसे।

कबड्डी—स्त्री० एक खेल। [ कब कब=बहुत कम।

कबरस्तान, कब्रिस्तान—पु० मुर्दा गाड़नेकी जगह।

कबरा—वि० सफेदपर काले, लाल या अन्य रङ्गके निशान वाला, चितला।

कबरी—स्त्री० चोटी, वेणी 'कबरी-भारनि रचैं आनि अवली गुजनकी।' दीन० २३८

कबल—अ० पहले, पूर्व।

कबाड़—पु० रद्दी चीजें। व्यर्थका काम।

कबाड़ा—पु० झंझट, व्यर्थका काम।

कबाड़िया, कबाड़ी—पु० रद्दी चीजोंका व्यापारी।

कबाब—पु० लोहे इ० की छड़में गोदकर भूना हुआ मांस।

कबाबचीनी—स्त्री० मिर्च जैसा एक छोटा फल।

कबाय—पु० एक तरहका ढीला कपड़ा।

कबार—पु० रोज़गार, छोटा व्यवसाय ( रामा० २४७)। लेनदेन। यश-कीर्तन 'मागध सूत भाट नट याचक जहँ तहँ करहिं कबार।' गीता २७२ रद्दी या छोटी-मोटी चीजें ( पूर्ण २७०)।

कबाहट, कबाहत—स्त्री० बुराई, अड़चन, झंझट।

कबीला—स्त्री० स्त्री, परिवार 'भाइ बन्धु अरु कुटुम कबीला, सुमिरि सुमिरि पछतैहैं। सू० २८१

कबीला—पु० एक पेड़ या उसके फलोंपरकी धूल।

कबुलवाना,-लाना—सक्रि० क़बूल कराना।

कबूतर—पु० एक पक्षी, कपोत।

कबूलना—सक्रि० स्वीकार करना।

क़ब्ज़—पु० साफ दस्त न होना।

क़ब्ज़ा—पु० अधिकार। मूँठ। लोहे या पीतलके जुड़े हुए टुकड़े जो किवाड़को थामे रहते हैं।

क़ब्जादार—वि० जिसमें क़ब्ज़ा लगा हो। पु० जिसका कब्जा या अधिकार हो।

क़ब्ज़ियत—स्त्री० खुलासा दस्त न होना, मल-बद्धता।

कब्र—स्त्री० लाशको गाड़नेका गड्ढा या उसके ऊपरका चबूतरा, समाधि।

कब्रिस्तान—पु० मुर्दे गाड़नेकी जगह।

कभी, कभू—क्रिवि० किसी समय।

कमंडल—पु० तुमड़ी आदिका बना साधुओंका जलपात्र।

कमंडली—वि० कमण्डल रखनेवाला।

पु० साधु, ब्रह्मा ।

कमंडलु—पु० कमंडल ।

कमंद—पु० रस्सीका फन्दा, दीवार आदिपर चढ़नेकी एक तरहकी रस्सी । कबन्ध, मुण्डहीन धड़ 'माथा टूटै धर छरै कमँद कहावै सोय ।' साखी २९

कम—वि० थोड़ा । क्रिवि० प्रायः नहीं, बहुत थोड़ा, कदाचित् ही ।

कमख़ाब—पु० कलाबत्तूका बेलबूटेदार रेशमी कपड़ा ।

कमची—स्त्री० पतली छड़ी, तीली ।

कमज़ोर—वि० निर्बल, शक्तिहीन ।

कमज़ोरी—स्त्री० दुर्बलता, शक्तिहीनता, दोष ।

कमटी—स्त्री० देखो 'कमची' ।

कमठ—पु० कछुआ, कमंडल ।

कमठा—पु० कमाची, कमान, धनुष ।

कमठी—स्त्री० कछुई । कमची ।

कमती—वि० कम । स्त्री० कमी ।

कमना—अक्रि० कम होना, घटना 'कमै न कौनहुँ वस्तु समै महँ'—रघु १४

कमनी—वि० 'कमनीय', सुन्दर 'ऊँचो जामें बँगला, कमनी सरवर तीर ।' चाचा हित वृंदा०

कमनीय—वि० सुन्दर ।

कमनीयता—स्त्री० सौन्दर्य ।

कमनैत—पु० तीरन्दाज 'ज्यों कमनैत दमानकमें फिरि तीरसों मारि लै जात निसानो । रहीम ३१ (छत्र० १४५)

कमनैती—स्त्री० तीरन्दाजी, बाण चलानेकी विद्या 'टूक टूक कंचुकि करी करि कमनैती काम ।' रस० ४१

कमबख्त—वि० अभागा, भाग्यहीन ।

कम्र—वि० इच्छुक । सुंदर ( साकेत ३४५ ) ।

कमर—स्त्री० कटि ।—कसना = आमादा होना, पक्का इरादा करना ।—टूटना = आशा या उत्साहका न रह जाना ।

कमरख—पु० एक पेड़ या उसका फल ।

कमरबंद—वि० कटिबद्ध । पु० कमरपट्टा, कमरमें लपेटनेकी पेटी या रस्सी ।

कमरा—पु० कोठरी । कम्बल ।

कमरिया—स्त्री० कमर, कटि । छोटा कम्बल 'काँधे कमरिया करन लकुटिया, विहरत वन वछ साथ ।' सू० ७४

कमरी—स्त्री० छोटा कम्बल 'या कमरीके एक रोमपर वारो चीर नील पाटम्बर ।' सूवे० १३५

कमल—पु० पंकज, पद्म, वारिज, अरविन्द, अम्बुज, वनज । पेटके भीतरका कमल जैसा मांसपिंड ।

कमलनाभ—पु० विष्णु ।

कमलभव,-भू,-योनि—पु० ब्रह्मा ।

कमला—स्त्री० लक्ष्मी ।

कमलाकर—पु० सरोवर ।

कमलाकांत,-पति—पु० विष्णु ।

कमलिनी—स्त्री० छोटा कमल । कमलोंसे युक्त जलाशय ।

कमली—स्त्री० देखो "कमरी" ।

कमवाना—सक्रि० रुपया पैदा कराना, नीच कार्य कराना, परिश्रम कराना, कम कराना, घटवाना ।

कमसिन—वि० छोटी अवस्थावाला ।

कमाइच—स्त्री० सारंगी बजानेकी कमानी 'बीना वेनु कमाइच गहे । बाजे अमृत तहँ गह गहे । प० २६०

कमाई—स्त्री० काम-धन्धा । कमाई हुई रक़म ।

कमाऊ—वि० द्रव्योपार्जन करनेवाला ।

कमाची—स्त्री० तीली पतली फटा ।

कमान—स्त्री० धनुष । मेहराब । तोप या बन्दूक 'कमान कैसो गोला हनुमान चल्यो लंकको' राम० ३१५ । 'चलीं कमानैं जिन्ह मुख गोला ।' प० २४९

कमाना—सक्रि० कोई उद्यम करके धन प्राप्त करना, अर्जन करना, कर्म करना । श्रमद्वारा उपयुक्त बनाना ( चमड़ा इ० ) । कम करना ।

कमानियाँ—पु० कमनैत, तीरन्दाज ।

कमानिया—वि० मेहराबदार ।

कमानी—स्त्री० लोहे इ० की लचीली तीली । कमानके ढँगकी तीली या लकड़ी ।

कमाल—वि० परिपूर्ण, उत्तम 'ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सोहबत हो यादमें गुसैंयाके हमेस विरमा रहैं ।' ग्वाल । बहुत अधिक । पु० निपुणता, कारीगरी । कोई विलक्षण काम ।

कमालियत—स्त्री० चतुरता, कौशल, पूर्णता ।

कमासुत—वि० कमाकर रुपया लानेवाला ।

कमी—स्त्री० अल्पता, न्यूनता, त्रुटि, नुक्स ।

कमीज़—स्त्री० कुरते जैसा एक पहनावा ।

कमीना—वि० क्षुद्र, ओछा ।

कमुकंदर—पु० धनुष तोड़नेवाले श्रीरामचन्द्र ।

कमोदन, कमोदिन, कमोदिनी—स्त्री० कुमुदनी, कोई 'जलमें बसे कमोदिनी चंदा बसै अकास ।' साखी ५२

कमोदिक—पु० 'कामोद' राग गानेवाला व्यक्ति, गवैया।
कमोरा—पु० दूध दही रखनेके लिए मिट्टीका बना हुआ चौड़े मुँहवाला पात्र, माँड़ा।
कमोरी—स्त्री० दूध, दही इत्यादि रखनेके लिए मिट्टीका छोटा बरतन 'कहि धौं मधुप, वारि मथ माखन, कौने भरी कमोरी।' भ्र० २७, 'माखन भरी कमोरी देखीले है लागे खान।' सूचे० ६२ [ॐ छावा।' प० ७३
कया—स्त्री० काया। शरीर 'कया दहत चंदनु जनु ॐ
क़यामत—स्त्री० मुसलमानी धर्मके अनुसार सृष्टिका अन्तिम दिन जब मुर्दोंके कर्मोंका हिसाब होता है। विपत्ति। हलचल, प्रलय।
क़यास—पु० ध्यान, अनुमान।
करंक—पु० अस्थिपंजर 'कागा करँक ढँढोलिया, मुट्ठी इक लिया हाड़।' साखी ४२
करंजा—पु० एक पेड़। वि० भूरी आँखोंवाला।
करंड—पु० खड्ग, तलवार, बाँसकी टोकरी। हथियार तेज करनेका पत्थर।
कर—(प्रत्यय) का, 'नारदकर उपदेस सुनि कहहु बसेउ को गेह।' रामा० ४८। पु० हाथ। सूँड। किरण। राजस्व।
करक—पु० अनार। पलास। कचनार। मौलसिरी या करील। कमण्डलु। ठठरी। स्त्री० 'कड़क', कसक, ठहर ठहरकर होनेवाली पीड़ा। रगड़ इत्यादिका चिह्न।
करकच—पु० समुद्र-जलसे निकलनेवाला नमक। बखेड़ा (बीजक १२८)।
करकट—पु० घासपात, कूड़ा 'ज्यों जळ खाँड समाइ, फिरै करकट उतरानो।' भगवत रसिक।
करकना—अक्रि० कड़कके साथ टूटना। तड़कना, चिटकना, फूटना। गड़ना, कसकना 'नहिं जानत कान्ह तिहारे कटाछकी कोरैं करेजनमें करके।' भाव० १०
करकरा—वि० खुरखुरा, स्पर्श करनेसे जिसके कण अँगुलियोंमें गड़े। पु० एक तरहका सारस।
करकराहट—स्त्री० आँखमें किरकिरी गड़नेके सदृश पीड़ा। कड़ापन।
करकस—वि० कर्कश, कड़ा, कठोर। प्रचण्ड, तीव्र।
करक—स्त्री० उपलक्षि। [काँटेदार।
करखना—अक्रि० उत्तेजित होना, जोशमें आना 'ता दिन अखिल खलभलै खलकमें जा दिन सिवाजी गाजी नेक करखत हैं।' भू० ७४
करखा—पु० बढ़ावा, ताव, जोश 'रात दिवस बरषत झर लाये दिन दूनी करखा सों।' सू० २५९। पु० करिखा, कालिख।
करगस—पु० तीर 'करगस सम दुर्जन बचन, रहै संतजन टारि। बिजली परै समुद्रमें कहा सकैगी जारि।' साखी १५१
करगह—पु० जुलाहोंके कारखानेकी नीची जगह जिसमें कपड़ा बुनते समय पाँव लटकाये जाते हैं। जुलाहोंका कारखाना, या वस्त्र बुननेका यंत्र (कर्घा)।
करगी—स्त्री० वाद। चीनी खुरचनेका औजार।
करघा—दे० 'करगह'।
करछा—पु० एक पक्षी। देखो 'करछुल'।
करछुल—स्त्री० दाल इ० निकालनेका बड़ा चम्मच।
करछैयाँ—स्त्री० कुछ कुछ काली सी गाय 'कृष्ण कपिला लाली पीली कबरी और करछैयाँ।' पूर्ण १९
करछौंह—पु० हलका काला रंग।
करज—पु० नख। अंगुली। 'करंजा' नामक पेड़।
करट—पु० कौआ (भ्र० ११०) 'यह तो सम्बुक मलिन सर करटनकी मिरियासि।' दीन० २०८। हाथीकी
करटी—पु० हाथी (ललित० ७०)। [कनपटी।
करण—पु० इन्द्रिय, हेतु। क्रिया। एक कारक।
करणी—वि० करने योग्य।
करतब—पु० करतूत, हुनर, काम 'विधि करतब उलटे सब अहहीं।' रामा० २५६
करतरी, करतल पु०, करतली—स्त्री० हथेली। कैंची, छुरी। 'निसि वासर मग करतली, लिये काल कर वाहि। कागद सम भइ आयु तव, छिन छिन कतरत ताहि।' ध्रुवदास
करतव्य—पु० करने योग्य काम, धर्म। वि० करणीय
करतार—पु० ईश्वर, ब्रह्मा (रामा० ४५८)। पु० झाँझ मँजीरा 'नृत्यति नूपुर बाँधि कै गावत लै करतार।' ॐ
करतारी, ताली—स्त्री० एक बाजा। ताली।
करताल—पु० देखो 'करताली'। [ॐ ध्रुवदास।
करतूत, करतूति—स्त्री० काम। करनी। गुण।
करद—वि० करदेनेवाला। अधीन। आश्रय देनेवाला। स्त्री० छुरी '...सुधिकी करद लगे क्यों न उर फारि है'—दीन ४९। काला मुँह कर करदका दिलसे दुई निवार।' साखी १७७

करदम—पु० कीचड़ । पाप । मांस ।
करधनी—स्त्री० कमरका एक आभूषण ।
करधर—पु० मेघ, बादल ।
करनधार—पु० कर्णधार, केवट, पतवार ।
करनफूल—पु० कानका एक आभूषण ( रवि० ३१ ) ।
करनवेध—पु० 'कर्णछेदन' संस्कार ।
करना—सक्रि० निबटाना, सम्पादित करना । पति या पत्नी रख लेना 'वह रावरे पितु करी पत्नी तजी विप्रन थूँकिकै ।' राम० १२६ । बनाना, पकाकर तैयार करना 'जो नरेस मैं करउँ रसोई ।' रामा० ९४ । किसी रूप विशेषमें परिणत कर देना । पहुँचाना, रखना । पु० कर्म, करतूत । एक पौधा 'जाही जूही सेवती करना कनिआरी ! वेलि चमेली मालती बूझति, द्रुम-
करनाई—स्त्री० तुरही । [ डारी ।' सुबे० २२०
करनाटकी—पु० करनाट देशवाला । जादूगर । कलाबाज ।
करनाल—पु० एक तरहकी तोप ( भू० १६४ ) । भोंपा, बड़ा ढोल ।
करनी—स्त्री० कार्य, करतूत ( रामा० १४९ ) । अन्त्येष्टि
करपर—स्त्री० खोपड़ी । वि० कृपण । [ क्रिया ।
करपरी—स्त्री० पीठीकी पकोड़ी या बरी ।
करबला—पु० ताजिया दफन करनेकी जगह । वह स्थान जहाँ जल न मिले । [ *चितकबरा ।
करबुर—पु० सोना । धतूरा । राक्षस । पाप । वि०*
करभ—पु० हाथी या ऊँटका बच्चा । हाथीकी पीठ । कटि ।
करभोरु—पु० सूँडकी सी जङ्घा । वि० स्त्री० सुन्दर
करम—पु० कर्म, कार्य, भाग्य । [ जङ्घावाली ।
करमकल्ला—पु० पातगोभी ।
करमट्ठा—वि० कन्जूस ।
करमठ—वि० कर्मनिष्ठ ( दोहा० ११३ ) ।
करमात—पु० कर्म, भाग्य ।
करमाली—पु० सूर्य ।
करमी—वि० कर्म करनेवाला, कर्मनिष्ठ ।
करमुखा करमुहाँ—वि० काले मुखवाला, कलङ्की । 'जनु घुँघची ओहि तिल करमुही ।' प० ४८
कररना, करराना—अक्रि० कर्णकटु शब्द करना । (दोहा० १४१, छत्र० १३१ ) । चरमराकर टूटना ।
करराना—स्त्री० धनुष चलानेकी आवाज़, टङ्कार ।
कररी—स्त्री० भमरी, वनतुलसी ।

कररुह—पु० नाखून, करज ।
करल—पु० कड़ाही ।
करला—पु० 'कल्ला', कोमल पत्ता ।
करली—स्त्री० कनखा, कोमल पत्ता ।
करवट—स्त्री० बाजूके बल लेटनेकी स्थिति । पु०करपत्र, आरा । —लेना = आरे व चक्रके नीचे पुण्यलाभकी आशासे प्राण देना ( अ० ४२ ) ।
करवत—पु० आरा ( उर्दू० 'करवत' ) ।
करवर—स्त्री० घात । सङ्कट 'करवर टरी आज सीताकी' राम रसायन, 'करवर टरी बड़ी मेरेकी घर घर आनन्द करत बधाई ।' सूबे० ४८, ( रामा० १९४ ) । पु० करवाल, तलवार 'तब पञ्चम नृप करवर काढ्यो । निज सिर देत भगति रस बाढ्यो । छत्र० ६
करवरना—अक्रि० कलरव करना, चहकना (प० १२) ।
करवा—पु० मिट्टीका टोंटीदार बरतन ।
करवानक—पु० गौरवा पक्षी, चिड़ा ( भू० १७३ ) ।
करवार, करवाल—पु० तलवार 'मतिराम कहै करवारके कसैया केते गाड़रसे मूँड़े जग हाँसीको प्रसङ्ग भो ।' ललित० २०, ( अ० १२२ )
करवाली—स्त्री० छोटी तलवार, 'करौली' ।
करवीर—पु० कनेर वृक्ष ( भू० ८ ) । करील । खड्ग ।
करवील—पु० करील वृक्ष 'केतकी करवील वेलउ बिमल बहुविधि मञ्ज ।' सू० २०६ ( अ० १२४ )
करवैया—वि० करनेवाला ।
करवोटी—पु० एक पक्षी ।
करश्मा—पु० करामात, चमत्कार ।
करष—पु० खिंचाव, मनमुटाव, वैर 'कन्त करष हरिसन परिहरहू ।' रामा० ४३३ । क्रोध । जोश ।
करषक—पु० कृषक, किसान ।
करषना, करसना—सक्रि० खींचना, तानना 'निज मायाकै प्रबलता, करषि कृपानिधि लीन्ह ।' रामा० ७९ 'यसुमति रिस करि करि रजु करषै ।' सूबे० ६६, ( सूरा० ४२ ) । बुलाना, बटोरना । सुखाना ।
करसाइल, करसायर, करसायल—पु० कृष्णसार,
करसान—पु० किसान । [ कालामृग ।
करसी—स्त्री० उपलोंका चूरा । कण्डा । कण्डेकी आग 'सिर करवत तन करसी बहुत सीझ तेहि आस ।'
करह—पु० ऊँट । पुष्पकलिका । [ प० ५०

करहाट, करहाटक—पु० कमलकी जड़, मुरार। कमलके फूलके भीतरकी छतरी ( दास १०६ )।

करांकुल—पु० जलके पास रहनेवाला एक पक्षी। क्रौंच।

करा—स्त्री० कला 'अस भा सूर पुरुष निरमरा। सूर चाहि दस आगर करा।' प० ७

कराई—स्त्री० कालापन।

करामात—स्त्री० चमत्कार, करश्मा।

करामाती—वि० चमत्कार दिखानेवाला।

करार—पु० नदीका ऊँचा किनारा '···माँगत नाव करार द्वै ठाढ़े। कविता० १६५, ( मुद्रा० ७२ )।

क़रार—पु० वादा। चैन। धैर्य, ठहराव।

करारना—अक्रि० काँ काँ करना, कर्कश शब्द निकालना 'वाणी मधुर जानि पिक बोलत कदम करारत काग।' सूबे० २२१

करारा—पु० टीला। नदीका ऊँचा किनारा 'लखन दीख पय उतर करारा।' रामा० २६२। कौआ। वि० कड़ा, तेज, उग्र, दृढ़, घोर, भयावना 'धरणि अकास बराबर ज्वाला झपटत लपट करारी। सूबे० ९४

कराल—वि० भीषण, भयावना।

करालिका, कराली—वि० स्त्री० भयावनी।

कराह—स्त्री० कराहनेकी आवाज़।

कराह, कराहा—पु० कड़ाह।

कराहना—अक्रि० क्लेशसूचक शब्द मुखसे निकालना।

कराही—स्त्री० कड़ाही ( प० ८१ )।

करिंगा—पु० मसखरा।

करिंद—पु० करीन्द्र, उत्तम हाथी। ऐरावत हाथी।

करि—पु० हाथी।

करिखई, करिखा—स्त्री० कालापन, कालिमा ( रहीम [ १९० )।

करिणी,-नी—स्त्री० हथिनी।

करिया—वि० काला 'करिया मुख करि जाहु अभागे।' रामा० ४७७। पु० पतवार। केवट, कर्णधार 'साधु परदन लेइ, नाव करिया गहि चोरै। नरहरि, 'तन बिनु ब्रजवासी यों सोहत ज्यों करिया बिनु नाव।' [ भ्र० १२०

करियाई—स्त्री० कालापन। कालिख।

करियारी—स्त्री० लगाम, बाग ( रघु० ३६ )

करिल—वि० काला 'करिल केस बिसहर बिस भरे।' प० २७। स्त्री० कला, कोंपल 'उठी करिल नइ कोंप सँवारी।' प० २००

करिहाँ,-हाँउँ,-हाँव—स्त्री० कमर 'कै गई कारि करेजनिके कतरे कतरे पतरे करिहाँकी।'—पद्माकर, 'नखिम खण्ड दुइ तस करिहाँउँ।' प० ४०१

करिहैयाँ—स्त्री० कमर ( पूर्ण १७९ )।

करी—स्त्री० कली 'यों करवीर करी बन राजैं।' के० २४५, नवल बसन्त सँवारी करी।' प० २७। कड़ी, धरन 'सब चन्दनकी शुभ शुद्ध करी।' के० १७४। पु० मातङ्ग, हाथी।

करीना—पु० केराना, मसाला। टाँकी।

करीना—पु० क्रम, ढङ्ग, पद्धति।

क़रीब—क्रिवि० पास, लगभग। अन्दाज़न।

करीम—पु० परमेश्वर। वि० कृपालु।

करीर, करील—पु० एक पत्रहीन पेड़। टेंटीका पेड़।

करीष—पु० सूखा और कड़ा गोबर, बनकण्डा।

करीश,-स—पु० गजेन्द्र 'सोक-सरि बहुत करीसहिं दई काहू न टेक।' विन० ४९९

करुआ—वि० कटु, अप्रिय 'रहिमन करुए मुखनकी चहिये यही सजाय।' रहीम। पु० करवा, घड़ा 'जलको करुआ भरिके आगे धरिकैं।' अष्ठ ७२

करुआई—स्त्री० कड़ुआपन।

करुआना, करुवाना—अक्रि० दुखना 'सूर तिन्हैं तुम रवि दरसावत, यह सुनि सुनि करुआति।' भ्र० ५२। सक्रि० कड़ुआ लगनेपर मुँह बनाना 'पटरसके परकार जहाँलगि लै लै अधर छुआवत। विश्वम्भर जगदीश जगतगुरु परसत मुख करुवावत।' सूबे० ५४

करुखी—स्त्री० कनखी, तिरछी चितवन।

करुण—वि० करुणा उत्पन्न करनेवाला, दुःखपूर्ण। पु० काव्यके नव रसोंमेंसे एक। दया।

करुणा,-ना—स्त्री० दया। अनुकम्पा। शाक। एक पौधा

करुणाकर—वि० दया करनेवाला या दया-निधान।

करुणानिधान,-निधि—वि० जो दयाका आधार व दयाका समुद्र हो।

करुणावान—वि० दयालु।

करुर, करुवा, करू—वि० कड़ुआ।

करुवारि—स्त्री० पतवार ( ग्राम० ४०७ )।

करेजा—पु० हृदय, कलेजा।

करेणु—पु० हाथी।

करेणुका, करेनका—स्त्री० हथिनी।

करेथुवा—स्त्री० एक साग ( ग्राम० ४०२ )
करेय—स्त्री० एक रेशमी कपड़ा ।
करेमू—पु० पानीमें होनेवाला एक साग ।
करेर,करेरा—वि० कठोर, कड़ा 'सत्ताको सपूत राव संगरको सिंह सोहै जैतवार जगत करेरी किरवानको' ललित० ४८, 'हौं न कबूलत बाँधि कै मोल करत करेरो ।' विन० ३५६
करेला, करैला—पु० एक तरकारी ।
करैत—पु० एक तरहका काला साँप ।
करैल—स्त्री०एक तरहकी काली मिट्टी पु० बाँसका गोंफा ।
करोंट—स्त्री० करवट 'मैं बरजी कै बार तू, इत कित लेत करोंट ।' वि० १०७
करोटी—स्त्री० खोपड़ी । करवट ।
करोड़—पु० सौ लाखकी संख्या । वि० सौ लाख ।
करोदना, करोना—सक्रि० खुरचना, खसोटना ।
करोर—वि० सौ लाख । पु० सौ लाखकी संख्या ।
करोला—पु० गडुआ 'लसत अमोले कनक करोलैं ।' [ रघु० १६३
करौंछा—वि० काला ।
करौंजी—स्त्री० 'कलौंजी', मँगरैल ।
करौंट—पु० देखो 'करोंट' ।
करौंदा—पु० एक कँटीला पेड़ या उसके फल 'राइ करौंदा होत है, कटहर होत न राइ ।' रहीम । कानके समीप निकली हुई गाँठ ।
करौत—पु० देखो 'करवत' ।
करौती—स्त्री० आरी । काँचका छोटा पात्र ।
करौला—पु० शिकारी 'धाइ कै सिंह कह्यौ समुझाय करौलनि आय अचेत उठाए ।' भू० ३५
करौली—स्त्री० एक तरहकी छुरी । छोटी तलवार ।
कर्क—पु० केंकड़ा । एक राशि । अग्नि ।
कर्कट—पु० केंकड़ा, कर्क राशि । लौकी ।
कर्कश—वि० कठोर । पु० ऊख । तलवार ।
कर्कशा—स्त्री० झगड़ालू स्त्री । वि० स्त्री० झगड़ालू ।
कर्घा—देखो 'करगह' ।
कर्ज़, कर्ज़ा—पु० ऋण, उधार लिया हुआ धन ।
कर्ण—पु० कान । पतवार । कुन्तीका एक पुत्र ।
कर्णकुहर—पु० कानका छिद्र ।
कर्णधार—पु० केवट, नाविक । पतवार ।
कर्णपाली—स्त्री० कानकी बाली । कानकी लौ ।
कर्णफूल—पु० कानका एक आभूषण ।
कर्ण-वेध—पु० कान छेदनेका संस्कार ।
कर्णाधार—पु० कर्णधार 'न लाए कोई कर्णाधार, कौन पहुँचा देगा उस पार' नीहार ३४
कर्णिकार—पु० कनकचम्पा । अमलतासका एक भेद ।
कर्त्तन—पु० कतरना, काटना । सूत कातना ।
कर्त्तनी—स्त्री० कैंची । कतरनी ।
कर्त्तब—पु० काम, करतूत ।
कर्त्तरी—स्त्री० कतरनी, (यशोधरा ३१), छुरी ।
कर्त्तव्य—पु० करने योग्य काम, फ़र्ज़ । वि० करणीय ।
कर्त्तव्यमूढ़—वि० जो घबराहटके कारण कर्त्तव्य न समझ सके ।
कर्त्ता—पु० करनेवाला, बनानेवाला, प्रभु ।
कर्त्तार—पु० ईश्वर, बनानेवाला, करनेवाला ।
कर्त्तृत्व—पु० कर्त्ताका भाव ।
कर्दम—पु० पंक, कीचड़ । पाप । छाया ।
कर्नेता—पु० घोड़ोंका एक भेद ।
कर्पट—पु० फटा-पुराना कपड़ा ।
कर्पटी—पु० गूदड़ पहननेवाला, भिक्षुक ।
कर्पूर—पु० कपूर ।
कर्वुर—वि० धूमला ( अ० ९९ ) । देखो 'करबुर' ।
कर्म—पु० 'करम', कार्य, कर्त्तव्य । भाग्य । अन्त्येष्टि क्रिया । दूसरा कारक ( व्याक० ) ।
कर्मकांड—पु० धार्मिक कृत्य, धार्मिक कृत्यों सम्बन्धी शास्त्र ।
कर्मकांडी—पु० यज्ञादि करानेवाला
कर्मकार—पु० नौकर, सुवर्णकार, लोहार ।
कर्मचारी—पु० कार्य करनेवाला, करिन्दा, अहलकार ।
कर्मठ—वि० कर्मनिष्ठ । पु० कर्मकांडी ।
कर्मण्य—वि० उद्योगी, कार्यदक्ष ।
कर्मधारय समास—पु० समासका एक भेद ।
कर्मना—क्रिवि० 'कर्मणा', कर्मसे ।
कर्मनिरत—वि० काममें लगा हुआ, कर्मनिष्ठ ।
कर्मनिष्ठ—वि० शास्त्रानुमोदित कर्म करनेवाला । कर्मण्य ।
कर्मवादी—पु० कर्मकाण्डको प्राधान्य देनेवाला ।
कर्मशील—वि० कर्मयोगी ।
कर्मशूर—पु० उद्योगी, साहसपूर्वक कार्य करनेवाला ।
कर्मिष्ठ—वि० देखो 'कर्मनिष्ठ' ।
कर्मी—पु० कर्म करनेवाला ।
कर्रा—वि० मुश्किल, कड़ा । पु० सूत कातनेका कार्य ।

करौना—अक्रि० कड़ा होना।
कर्ष—पु० खेती। जोश। ताव। १६ माशेकी तौल।
कर्षक—पु० कृषि करनेवाला, खींचनेवाला।
कर्षण—पु० खींचनेकी क्रिया, आकर्षण।
कर्षना—सक्रि० खींचना, तानना 'कर्षति है दुहुँ करन भवानी सोभा रासि भुजा गहि गाढ़ो।' सू० ५३
कर्षमर्ष—पु० संघर्ष 'समझो वह प्रथम वर्षा रुका नहीं मुक्त हर्षा यौवन दुर्धर्ष कर्ष मर्षमें लड़ा' अनामि० १४
कलंक—पु० लाञ्छना, अपवाद, दोष, दाग़। पारेकी
कलंकी—वि० दोषी। [कज्जली (दोहा० १२६)।
कलँगी—स्त्री० पक्षीके पंख जो मुकुटमें लगाये जाते हैं। मोतियों या सुवर्णका बना हुआ शिरोभूषण।
कलंदर—पु० एक तरहका मुसलमान फ़क़ीर 'जोगी काके मीत कलंदर किसके भाई'—कबी० ५८०। बन्दर या रीछ नचानेवाला 'चित पितुको बन्दर कियो अहो कलन्दर लोभ।' दीन० २५२
कलंदरा—पु० एक तरहका रेशमी वस्त्र। तम्बूका अँकुड़ा जो कपड़ेसे ढका रहता है।
कल—क्रिवि० आनेवाला दिन। बीता हुआ दिन। किसी और समय। स्त्री० चैन, सुख (सू० १३३)। नीरोगता। पुरजा, यंत्र। युक्ति'बुधि बल छलकल कैसेहूँ करि कै काटि अनत लै दीजै।' सूबे० ४४। पु० मधुर ध्वनि। वि० सुन्दर, मधुर, कोमल।
कलई—स्त्री० राँगेका लेप जो बरतनोंपर किया जाता है, मुलम्मा। अन्य कोई लेप जो चमक लानेके लिए लगाया जाय। चूना। ऊपरी तड़क-भड़क।—खुलना=भ्रमक बात प्रकट होना।
कलईगर—पु० कलई करनेवाला।
कलकंठ—वि० जिसका कंठ मधुर हो। पु० कोकिल,कबू-
कलक—स्त्री० भारी दुःख, चिन्ता, बेचैनी। [तर, हंस।
कलकना—अक्रि० चिल्लाना, चीत्कार करना, शब्द करना।
कलकल—स्त्री० झगड़ा, कलह। खुजली। पु० पानी गिरने या बहनेका मधुर शब्द। कोलाहल।
कलकान,-कानि—स्त्री० परेशानी, दुःख, कलह 'हरि-चन्द जू बात ठनी सो ठनी, नितके कलकानितें छूटनो है।' हरि०, (रस ४१, सुसु० २६)
कलगी—स्त्री० देखो 'कलँगी'।
कलछा—पु० बड़ी करछी।
कलछी—स्त्री० चम्मच, करछुल।
कलत्र—स्त्री० पत्नी, सहधर्मिणी।
कलदार—पु० कलद्वारा बनाया गया रुपया। वि० [पेंचदार।
कलधूत—स्त्री० चाँदी।
कलधौत—पु० सुवर्ण, सोना। चाँदी। मधुर ध्वनि
कलना—स्त्री० पकड़, समझ क्रिया, धारण करना।
कलप—पु० कल्प, ब्रह्माका एक दिन। चार अरब ३२ करोड़ वर्ष। कलफ़।—करना=काट देना 'सो कं जानै बापुरा करै जो सीस कलप्प।' प० ५५
कलपना—अक्रि० बिलखना, तलफना। कल्पना करना। सक्रि० काटना 'कलपौं माथ वेगि निरतरऊँ।' प० १९९। स्त्री० विलाप, दुःख। उद्भावना शक्ति अनुमान, भावना। रचना। अध्यारोप।
कलपाना—सक्रि० तरसाना, दुःखी करना, कुढ़ाना।
कलफ—पु० माड़ी।
कलबल—पु० दाँवपेंच, युक्ति। 'कलबल तें हरि हार परे।' सू० ५४। शोरगुल। वि० अस्पष्ट।
कलबूत—पु० ढाँचा 'पूत कलबूतसे रहेंगे सब ठाढ़े तब कछू न चलेगी जब दूत धरि पावैगो।' दीन० १४१
कलभ—पु० हाथी (या ऊँट) का बच्चा, छोटा हाथी।
कलम—पु०, स्त्री० लेखनी। पौधेकी टहनी। दवा। कानके पासके बाल। रङ्ग भरनेकी कूँची। नक्काशी करनेका औज़ार।
कलमकारी—स्त्री० कलमसे किया हुआ बेलबूटे आदिका [काम।
कलमख—पु० पाप, कलंक, धब्बा।
कलमना—सक्रि० काटना।
कलमलना,कलमलाना—अक्रि० कुलबुलाना (कविता० १७२), इधर उधर हिलना 'यह तो कलमलात अब माहीं, मेरे करमें आवत नाहीं।' ब्रजवि०, (रामा० १४२), 'अस गयंद साजे सिंघली। मोटी कुम्भ पीठि कलमली।' प० २५३
कलमस—देखो 'कल्मष' (रत्ना ३०३)।
कलमा—पु० वाक्य, बात। इस्लामके मूल मन्त्रका वाक्य 'ला इलाह इल्लिल्लाह, महम्मद रसूलिल्लाह।'
कलमी—वि० कलम लगाकर उत्पन्न किया हुआ। रवादार। [। लिखित
कलमुहाँ—वि० काले मुँहवाला। कलंकित।
कलरव—पु० मधुर ध्वनि, कूजन। कपोत,

कलरव निकट स्थित वृक्षसे सुनाई पड़ता है'—निबंध० २–१४६ । कोयल ।
कलरौ—देखो 'कलरव' ( कलस १४९ ) ।
कलवरिया—स्त्री० शराबकी दूकान ।
कलवार—पु० जाति-विशेष, कलार ।
कलश,-स, कलसा—पु० घट, गगरा । मन्दिर आदिका शिखर या कँगूरा । श्रेष्ठ व्यक्ति, 'शिरोमणि' ।
कलशी—स्त्री० गगरी । मंदिर इ० का कँगूरा ।
कलहंस—पु० राजहंस । ब्रह्म ।
कलह—पु० झगड़ा, युद्ध । [ * वाली, झगड़ालू ।
कलहकारी, कलही—वि० कलह करनेवाला, झगड़ालू।
कलहनी,कलहारी—वि० स्त्री० कलहकारिणी, लड़ने*
कलहांतरिता—स्त्री० वह नायिका जो 'प्रथम कछू अपमान करि पियको फिरि पछताय ।' जगत्०
कलाँ—वि० बड़ा ।
कला—स्त्री० चन्द्रका सोलहवाँ या सूर्यका बारहवाँ भाग । अंश । हुनर (इनके ६४ प्रकार माने गये हैं) । लेश । लगाव । महिमा । शिव । नौका । तेज, ज्योति, विभूति 'बरनै दीनदयाल सुगंध कला छिति छाई ।' दीन० २१५ । करतब, युक्ति 'केतो सोम कला करो करो सुधाको दान ।' दीन० १९८ । शोभा, प्रभा, लीला, क्रीड़ा । छल, धोखा 'चाली हंसनकी चलै चरन चोंच करि लाल । लखि परिहै बक तव कला झख मारत तत्काल ।' दीन० २०९ । मिस, बहाना ।
कलाई—स्त्री० मणिबन्ध, पहुँचा ।
कलाकंद—पु० एक मिठाई, बरफी ।
कलाकर—पु० चन्द्रमा ।
कलाकौशल—पु० शिल्प । कारीगरी ।
कलात्मक—वि० कलापूर्ण, कला सम्बन्धी ।
कलाद—पु० सोनार । [ बैठनेकी जगह ।
कलादा—पु० कलावा, हाथीके मस्तकपर महावतके
कलाधर—पु० चन्द्रमा । शिवजी । कला जाननेवाला ।
कलानाथ, कलानिधि—पु० चन्द्रमा ।
कलाप—पु० झुण्ड, समूह । मोरपुच्छ । बाण, तूणीर । व्यापार । कल्पना, दुःख 'राम विलाप कलाप कह्यो पुनि गीधराज गति करना ।' रघु० २४
कलापति—पु० चन्द्रमा ।
कलापिनी—स्त्री० मोरनी । रात ।
कलापी—पु० मोर । कोयल ।
कलाबत्तू—पु० रेशमके साथ बटनेका सोने-चाँदी आदिका तार । कपड़ेके किनारेपर टाँकनेका कलाबत्तूका फीता ।
कलाबाज़—पु० नटकी क्रिया करनेवाला ।
कलाबाज़ी—स्त्री० सिरके बल उलट जाना, नट-क्रिया ।
कलाम—पु० वचन, बात, वाक्य, प्रतिज्ञा ।
कलामत—पु० संगीतज्ञ, गवैया ( अष्ट ७४ ) ।
कलामुख—पु० चन्द्रमा ( दास० ८४ ) ।
कलार, कलाल—पु० मद्य बेचनेवाला 'नाम रसायन प्रेम रस, पावत बहुत रसाल । कबीर जीवन कठिन है, माँगै सीस कलाल ।' साखी २९
कलावंत—पु० कलाबाजी करनेवाला । गायक (भू०९६)।
कलावा—पु० हाथीकी गर्दन, सूतका लच्छा ।
कलावान—वि० हुनरमन्द ।
कलिंग—पु० एक चिड़िया । सरिस । तरबूज । एक देश ।
कलिंद—पु० तरबूज ( कवि० ९८ ) । सूर्य । बहेड़ा, [ एक पहाड़ ।
कलिंदजा—स्त्री० यमुना नदी ।
कलि—पु० 'कलि कलेश, कलि सूरमा, कलि निषंग, संग्राम ।' कलि कलियुग, यह और नहिं केवल केशव नाम ।' नंददास । स्त्री० कली । वि० काला ।
कलिका—स्त्री० कली । मुहूर्त्त । मँगरैल । अंश ।
कलिकान—वि० हैरान, परेशान 'तबही सलाबत खान । मनमें भयौ कलिकान ।' सुजा० ५७
कलित—वि० विदित । शोभित । युक्त । सुन्दर ।
कलिमल—पु० पाप ।
कलिया—पु० शोरबादार मांस ।
कलियुग—पु० द्वापरके बादवाला युग, कलिकाल ।
कलियुगी—वि० कलियुगका । जिसकी प्रवृत्ति खराब हो ।
कलिल—वि० घना, मिश्रित । पु० राशि, ढेर ।
कलींदा—पु० तरबूज 'काल्हिकी देवी कलींदेको खप्पर'–भू० १०५
कली—स्त्री० कलिका । 'बोंड़ी' । कलई 'ऊपर कली लपेटि कै भीतर भरी भँगार ।' साखी ५७
कलुख,कलुष—पु० पाप,मैल, दोष । वि० पापी,मलिन।
कलुखी—वि० कलंकी ।
कलुषाई—स्त्री० दोष, अपवित्रता ।
कलुषित—वि० मैला । दोषयुक्त, दूषित ।
कलूटा—वि० अत्यन्त काला ।

कन्दूला—पु० कुल्ला ( उत्तर० ५९ )।
कलेऊ—पु० कलेवा 'करन कलेऊ हेतु पठावहु चारिहु राजदुलारे।' रामकलेवा।
कलेकल—क्रिवि० धीरे-धीरे ( ग्राम० ४९ )।
कलेजा—पु० यकृत्। जिगर, हृदय, दिल, साहस। अति प्रिय वस्तु।—फटना= दुःख पहुँचना, असह्य मालूम होना।—खाना=तक़ाज़ाके मारे नाकमें दम करना, खूब तङ्ग करना।—ठंढा होना=इच्छा पूरी होना, चैन पड़ना।—धकसे हो जाना=भय आदिसे स्तब्ध हो जाना।—पक जाना=बहुत दुःखी होना, दुःखसे आजिज़ आ जाना।—मुँहको आना=बहुत व्याकुल होना।—का टुकड़ा=पुत्र या वह जो बहुत प्यारा हो।
कलेजी—स्त्री० कलेजेका मास।
कलेवर—पु० देह, चोला। आकार।
कलेवा—पु० जलपान। यात्राके लिए संगृहीत भोजन, पाथेय।
कलेस—पु० क्लेश, दुःख।
कलैया—स्त्री० गिरहबाज़ी।
कलोर—स्त्री० वह गाय जो ब्याई न हो। पु० बछड़ा 'मानो हरे तृन चारु चरैं बगरे सुरधेनुके धौल कलोरे।' कविता० २२८
कलोल—पु० केलि, आमोद प्रमोद। तरंग 'सूर यह सुख गोप गोपी, पियत अमृत कलोल।' सू० १८७
कलोलना—अक्रि० केलि करना, क्रीड़ा करना 'दिना चारकी औधमें लीजै नेक कलोलि।' दीन० २१८
कलौंजी—स्त्री० एक पौधा, मँगरैल। मसाला भरकर बनायी गयी भंटा, करेला आदिकी तरकारी।
कल्क—पु० क्वाथ, काढ़ा।
कल्कि—पु० विष्णुका दसवाँ अवतार।
कल्प—पु० ब्रह्माका एक दिन। एक वेदांग। कृत्य। कल्पना वि० समकक्ष, तुल्य ( 'ऋषिकल्प दादा भाई नौरोजी' )।
कल्पक—पु० रचने या बनानेवाला, काटनेवाला, नाई।
कल्पलता—स्त्री० उद्भावना-शक्ति, अनुमान। रचना।
कल्पलता, कल्पवृक्ष,-शाखी,-साखी—पु० कल्पद्रुम 'सदा वृक्ष फूले फले तत्र सोहैं। जिन्हें अल्पधी कल्पसाखी विमोहैं।' के० १९०
कल्पांत—पु० कल्पकी समाप्ति, प्रलय।
कल्पित—वि० माना हुआ, गढ़ा हुआ, फ़र्ज़ी।
कल्मष—पु० पाप। मवाद, मल।
कल्य—पु० प्रातःकाल। अगला या पिछला दिन। मदिरा। वि० स्वस्थ।
कल्याण, कल्यान—पु० भलाई, शुभ। सुवर्ण।
कल्याणी—वि० स्त्री० कल्याण करनेवाली।
कल्योना—पु० कलेवा ( ग्राम० ३५५)।
कल्लर—पु० देखो "कल्हर"।
कल्ला—पु० जबड़ा। अंकुर।
कल्लाना—अक्रि० चोट लगनेसे दर्द होना, असह्य होना।
कल्लोल—पु० तरंग, क्रीड़ा, उमङ्ग।
कल्लोलिनी—स्त्री० लहरवाली नदी।
कल्हर—पु० नोनी मिट्टी। वि० बंजर।
कल्हरना—अक्रि० कड़ाहीमें भूना जाना।
कल्हार—पु० पुष्प विशेष 'अद्भुत सतदल विकसित कोमल, मुकुलित कुमुद कल्हार।' श्रीकृष्णदास
कल्हारना—अक्रि० कराहना। सक्रि० कड़ाहीमें तलना
कवच—पु० आवरण। झिलम, सन्नाह, बख्तर।
कवन—सर्व० कौन।
कवर—पु० ग्रास। देखो 'कवरी'।
कवरना—सक्रि० सेंकना, ज़रा ज़रा भूनना।
कवरी—स्त्री० जूड़ा, चोटी (देखो 'कबरी' ), बनतुलसी।
कवर्ग—पु० 'क' से 'ङ' तकके पाँचों वर्ण।
कवल—पु० ग्रास, कौर। कोवा। एक मछली। पु० एक तरहका घोड़ा।
कवलित—वि० खाया हुआ।
क़वायद—स्त्री० नियम। युद्ध करनेके पैंतरे इ० का अभ्यास।
कवि—पु० कविता रचनेवाला, शायर। शुक्र(सुसु०७४)
कविता, कविताई—स्त्री० पद्यमय सरस रचना, काव्य।
कवित्त—पु० इकतीस अक्षरोंका एक वृत्त। काव्य।
कवित्व—पु० कविता करनेकी शक्ति। काव्योचित गुण।
कविनासा—स्त्री० कर्मनासा नदी।
कविराज—पु० उत्तम श्रेणीका कवि। भाट। बंगाली वैद्य
कविराय—पु० देखो 'कविराज'।
कविलास—पु० कैलास। स्वर्गलोक।
कवोष्ण—वि० कदुष्ण, कुनकुना, कुछ-कुछ गरम ( कोकि० ७४ )।
कव्य—पु० पितरोंको दिया जानेवाला अन्न

कश—पु० चाबुक । स्त्री० फूक, दम ( गबन २८२ ) ।
कशमकश—स्त्री० खींचातानी, धक्कमधक्का, असमंजस ।
कशा—स्त्री० चाबुक । रस्सी । कशाघात=कोड़ेकी मार
कशीदा—पु० वेल-बूटेका काम ।
कशेरू—पु० देखो 'कसेरू' ।
कश्ती—स्त्री० नाव ।
कश्मल—पु० पाप, मोह । वि० पापपूर्ण ।
कश्मीर—पु० पंजाबके उत्तरमें स्थित एक राज्य ।
कश्यप—पु० एक ऋषि । मृगभेद ।
कष—पु० सोने चाँदीकी जाँच करनेका पत्थर ।
कषाय—पु० कसैली वस्तु, क्वाथ । वि० गेरूके रंगका, रँगा हुआ, भगवा । कसैला ।
कष्ट—पु० क्लेश, आपत्ति । [ हुई युक्ति ।
कष्टकल्पना—स्त्री० खींचतान कर किसी प्रकार भिड़ायी
कष्टसाध्य—वि० कठिनाईसे सिद्ध होनेवाला ।
कस—क्रिवि० क्यों, कैसे 'कस न दीनपर द्रवहु उमा-वर ।' विन० ७३ पु० 'कष', जाँच, कसौटी । तलवारकी लचक ( उर्दू० 'खटाना' ) । वल । रोक, इख्तियार, वश । सार, अर्क । [ हौसला ।
कसक—स्त्री० थोड़ा थोड़ा दर्द । पूर्व द्वेष । सहानुभूति ।
कसकन—स्त्री० कसकनेकी क्रिया, कसक ।
कसकना—अक्रि० पीड़ा करना, खटकना 'चतुरनके कसकत रहै, चूक समयकी हूक ।' रहीम २२ । दर्दका अनुभव करना ( रतन० १११ ) ।
कसकुट—पु० ताँबे और जस्तेसे बनी हुई एक मिश्रित धातु, काँसा ।
कसना—सक्रि० खींचना, बाँधना, 'निज दल विकल देखि कटि, कसि निषङ्ग धनु हाथ । लछिमन चले सरोष तव नाइ राम पद माथ ।' रामा० ५०० । जकड़ना । कसकर=जकड़कर, वलपूर्वक, पूरा पूरा, बे-रहमीसे 'हौं कसि कसि कै रिस करौं, ये निसखे हँसि देत ।' वि० २३५ । 'काँखिनमें सखि राखिबे जोग, इन्हें कसिकै वनवास दियो है । कविता० ( पाठ० ) । पीड़ा देना 'भरत भवन वसि तन तप कसहीं ।'रामा० २५५ । कसौटीपर रखना, परखना 'सोना सज्जन कसनको विपति कसौटी कौन । छोटे छोटे टुकड़े करना ( कद्दूकसपर कसना ), तलना । अक्रि० खिंचना, तंग होना ।

कसनि—स्त्री० कसनेकी क्रिया । वह रस्सी जिससे कोई वस्तु कसी गयी हो । क्लेश, पीड़ा ।
कसनी—स्त्री० वह रस्सी या कपड़ा जिससे कोई वस्तु कसी जाय । कञ्चुकी 'फुँदिया और कसनिया राती ।' प० १५८ । कसौटी, परीक्षा 'कह कबीर कसनी सहै, कै हीरा कै हेम ।' साखी ८०
कसब—पु० परिश्रम । व्यभिचार, वेश्याकर्म ।
क़सबा—पु० बड़ा गाँव ।
कसबिन, कसबी—स्त्री० वेश्या या व्यभिचारिणी स्त्री ।
क़सम—स्त्री० सौगन्ध, शपथ ।
कसमस, कसमसी—स्त्री० कुलबुलाहट, घबड़ाहट, उथल पुथल, ( पु० भी ) धक्कमधक्का ( सीताको देखनेके लिये ) 'कसमस पर्यो कपिनको भारी ।' रघु० २५९
कसमसाना—अक्रि० भीड़ या स्थानकी कमीके कारण परस्पर रगड़ खाना, कुलबुलाना । बेचैन होना, हिच-
कसमसाहट—स्त्री० कुलबुलाहट, व्याकुलता । [कना ।
कसर—स्त्री० त्रुटि, कमी, दोष, बैर, हानि ।
कसरत—स्त्री० व्यायाम । आधिक्य,प्रचुरता । [ पुष्ट ।
कसरती—वि० कसरत करनेवाला । कसरतकी वजहसे
कसहँड़ा—पु० भोजन बनाने इ० के लिए काँसेका एक तरहका बरतन ।
कसाई—पु० वधिक, गोघातक । वि० निष्ठुर, निर्मोही ।
कसाना—सक्रि० जकड़वाना, बँधवाना । अक्रि० कसैला
कसार—पु० पंजीरी, 'चूरन । [ हो जाना ।
कसाला—पु० दुःख, कष्ट 'शिशिरके पालाको न व्यापत कसाला तिन्हैं जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं ।' —पद्माकर, ( रघु० १२४ ) । मेहनत ।
कसाव—पु० तनाव, खिंचाव । कसैलापन । काटनेवाला । हलाल करनेवाला, कसाई । ( रतन० १११ ) ।
कसावर—पु० एक देहाती बाजा ।
कसीटना—सक्रि० कसना, रोकना 'गुफाकूँ सँवारत है आसनहू मारि करि प्राणही कूँ धारि धारणा कसीटियतु
कसीदा—दे० 'कशीदा' । [ है ।' सुन्द० १६७
कसीस—स्त्री० निर्दयता 'तुम्हैं निसिद्योस मन भावन असीसैं सजीवन हौ करो हमपैं कसीसैं ।'आनन्दघन । कोशिश 'भूषन असीसै, तोहि करत कसीसैं'—भ० ४६ । एक लोहे जन्य पदार्थ ।

कसूँभी—वि० कुसुमानी रङ्गका ।
कसूर—पु० दोष, अपराध ।
कसूरमंद,-वार—वि० दोषी, गुनहगार ।
कसेरा—पु० काँसे इ० का बरतन बनानेवाला ।
कसेरू—पु० एक तरहकी गठीली जड़ ।
कसैया—पु० परखनेवाला । कसने या बाँधनेवाला ।
कसैला—वि० जिसमें कसाव हो ।
कसोरा—पु० मिट्टीका कटोरा । प्याला ।
कसौंदा—पु० एक फल 'काहू हरफारेवरि कसौंदा ।' प० ८८
कसौटी—स्त्री० काला पत्थर जिसपर सोना परखा जाता है । जाँच, परख ।
कस्त—पु० पक्का इरादा ( हिम्मत० १८, ) ।
कस्तूरिका, कस्तूरी—स्त्री० एक सुगन्धित वस्तु, मृग-मद ।
कहँ—क्रिवि० कहाँ । प्रत्य० को, के लिए ।
कहँरना—देखो 'कहरना' 'कहँरत भट घायल तहँ गिरे ।' रामा० ७०४
क़हक़हा—पु० ज़ोरकी हँसी, अट्टहास ।
कहगिल—पु० दीवार बनानेमें प्रयुक्त होनेवाला मिट्टी-का गारा ।
क़हत—पु० दुष्काल, महँगी, दुर्भिक्ष ।
कहन—स्त्री० कथन, वचन । कविता । कहावत ।
कहना—सक्रि० बोलना, प्रकट करना, खोलना, नाम रखना । पु० कथन । उपदेश । आज्ञा ।
कहनाउत, कहनावत—स्त्री० कथन, चाल । कहावत ।
कहनि—स्त्री० कथन, वचन, कहावत ।
कहनूत—स्त्री० कहावत, कथन, मसल ( पूर्ण ८६ ) ।
कहर—पु० आफत, क्लेश ।—करना=अनोखा काम करना, अत्याचार करना । 'देखत ही मुख विष लहरि सी आवै लगी जहर सों नैन करै कहर कहारकी ।' रवि० २९ । वि० कठिन, भीषण 'कहर जूझ द्वै पहर भो हारयो सार सों सारु ।' छत्र० ११२। अपार, अथाह 'रूप कहर दरियाव में तरिबो है न सलाह ।' रतन० १९
कहरना—अक्रि० कराहना ( दास ४२ ) ।
कहरी—वि० विपत्ति लानेवाला, ( भू० २८ ) ।
कहल—पु० उमस, गर्मी, ताप, पीड़ा । ' . . दिनमनि ताप तन मेटत कहल है ।'—नागरी०, (व्रज० ३५७)
कहलना—अक्रि० अकुलाना कसमसाना, व्याकुल होना।
कहलाना—अक्रि० देखो 'कहलना' । 'कहलाने एकत रहत अहि मयूर मृग बाघ ।' वि० २०२। सक्रि० कहवाना ।
कहवाँ, कहाँ—क्रिवि० किस स्थानपर । कहाँतक=किस जगहतक, कबतक । कहाँसे=व्यर्थ ( कहाँसे यह बला हमने अपने सिर ली ।
क़हवा—पु० एक पेड़का बीज ।
कहा—क्रिवि० किस तरह, कैसे । सर्व० क्या । वि० कौन । पु० कहना, उपदेश "मैं संकर कर कहा न माना ।' रामा० ३६ । स्त्री० कथा 'बचन परगट करन लागे प्रेम कहा चलाय ।' भ्र० २
कहाउति कहावत—स्त्री० कहनावत, मसल,लोकोक्ति । उक्ति, कथन 'जनक भरत संवाद सुनाई । भरत कहाउति कही सुहाई ।' रामा० ३४०
कहाकही—स्त्री० कथोपकथन, उत्तर-प्रत्युत्तर, झगड़ा ।
कहानी—स्त्री० किस्सा, आख्यायिका । गढ़ी हुई बात ।
कहार—पु० पानी भरने व पालकी आदि उठानेवाली जाति (रामा० २९१)।
कहारा—पु० दौरी या टोकरा ।
कहारिन—स्त्री० कहारकी स्त्री ।
कहाल—पु० एक बाजा ।
कहासुनी—स्त्री० झगड़ा, उक्ति प्रत्युक्ति, विवाद ।
कहिया—क्रिवि० कब ।
कही—स्त्री० कहना, कथन, मसल ( पूर्ण ८६ ) ।
कहीं, कहुँ, कहूँ—क्रिवि० किसी स्थानपर । यदि, सम्भवतः । कदापि नहीं । अत्यधिक ।
कहुला—वि० काला ( लछिराम ११७ ) ।
काँइयाँ—वि० धूर्त, चाइयाँ ।
काँई—अ० क्यों ।
काँकर—पु० पत्थरका अत्यन्त छोटा टुकड़ा, कंकड़ 'कुस कण्टक मग काँकर नाना ।' रामा० २२८
काँकरी—स्त्री० छोटा कङ्कड़ 'डगर तजति पग गड़त काँकरी'—सूरदास मदनमोहन
कांक्षा—स्त्री० चाह, ख्वाहिश ।
कांक्षी—वि० चाहनेवाला, अभिलाषी, इच्छुक ।
काँख—स्त्री० बगल ।
काँखना—अक्रि० श्रमादिके कारण मुँहसे आवाज करना। मल त्यागनेके समय जोर करना ।
काँखासोती—स्त्री० बायें कन्धेके ऊपर व दाहिने नीचेसे होते हुए दुपट्टा डालनेका ढँग 'पियर काँखासोंती । दोउ आँचरन्ह लगे मनिमोती ।' रामा० १७८
काँगनी—स्त्री० देखो 'कँगनी' ।

काँगही—स्त्री० कंघी। ( सुन्दर श्र० ९०, १०७ )
काँगुरा—पु० कँगूरा 'जैसी विधि काँगरेहु कोटपर देखियत तैसी विधि देखियत बुदबुदा नीर में।' सुन्द० १२९
काँच—पु० एक पारदर्शक धातु, शीशा। '"'यह जग काँचो काँचसों।' बि० ७८। काछ। लाँग। मलद्वार-का भीतरी भाग।
कांचन—पु० सोना। धतूरा।
काँचरी, काँचली—स्त्री० सर्पकी केंचुली ( ऊपरी आवरण ), कंचुली, कंचुरि। चोली, कंचुकी 'काँचलि खोलि आलिङ्गन देल।' विद्या० २२४
काँचा—वि० कच्चा, अदृढ़, क्षणभंगुर, अपरिपक्व ( उदे० काँच श्र० ३४)'हौं जानतिहौं अबही काँचा।'प० १०७
कांची—स्त्री० करधनी, गोटा, घुँघची 'काँची पाट भरी धुनि रूई।' प० १३९। एक पुरी।
काँचुरी—स्त्री० साँपकी केंचुल 'ज्यों काँचुरी भुअङ्गम तजही, फिरि न तकै जु गये सु गयेरी।' सू० १४७
काँचुली—स्त्री० केंचुल 'सूर श्याम सँग जात भयो मन अहि काँचुली उतारी।' सूबे० ३७७
काँछना—सक्रि० काछना, सँवारना, पहनना।
काँछा—स्त्री० कांक्षा, अभिलाषा।
काँजी—स्त्री० एक तरहका खट्टा पदार्थ। मट्ठे या दही-का पानी 'दूध फटै काँजी परे, सो फिर दूध बनै न।'
काँजी हाउस—पु० वह मवेशीखाना जहाँ दूसरोंको क्षति पहुँचानेवाले चौपाये बन्द कर दिये जाते हैं और कुछ दण्ड लेकर छोड़े जाते हैं।
काँट, काँटा—पु० कण्टक, खटकनेवाली बात, अँकुड़ा, कील। लौंग। तराजू। काँटा बोना = बुराई करना 'जो तोको काँटा बुवै, ताहिं बोउ तैं फूल।' कबीर। सूखकर काँटा होना = क्षीण होना।
काँटी—स्त्री० कील, काँटा।
काँठा—पु० कण्ठ, गला। तोतेके गलेकी लाल-नीली रेखा, 'बाँधी कण्ठ परा जरि काँठा।' प० १०४। पार्श्व, किनारा 'भाइ विभीषन जाइ मिल्यो प्रभु आइ परे सुनि सायर काँठे।' कवित्ता० १९३
काँड—पु० तना, डण्ठल। सरकण्डा। पोर। समूह। बाण। घटना, सर्ग।—रचना = उत्पात मचा रखना।
काँड़ना—सक्रि० कुचलना, कूटना, पीटना 'वाटिका उजारि अच्छ रच्छकनि मारि भट भारी भारी रावरैके चाउरसे काँड़िगो।' कवित्ता० १९२
काँड़ी—स्त्री० वस्तुओंको ढकेलने आदिके लिए लकड़ीका डण्डा। छड़ ( प० २६६ )। उखलीका गड्ढा।
कांत—पु० पति। शिव, विष्णु। चन्द्रमा। वि० कान्ति-युक्त, सुन्दर, प्रिय।
कांतलौह—पु० चुम्बक।
कांता—स्त्री० पत्नी, प्रिया।
कांतार—पु० घना जङ्गल, भयानक जगह। छिद्र। बाँस।
कांति—स्त्री० चमक, तेज, शोभा।
कांतिमान्—वि० चमकवाला, दीप्तिमान्।
काँती—स्त्री० बिच्छूका डङ्क। तीव्र व्यथा। छूरी 'कत लिखि लिखि पठवत नँदनन्दन, कठिन विरहकी कान्ती।' सू० २१७। कैंची।
काँथरि—स्त्री० गुदड़ी, कथड़ी।
काँदना—अक्रि० रोना।
काँदव, काँदो—पु० कर्दम, कीचड़, कीच।
काँध, काँधा—पु० कन्धा (उदे० 'काँधना', सू० ७४)। कृष्ण।—काँध देना=अङ्गीकार करना, सहायता देना।
काँधना—सक्रि० उठाना, सँभालना ( रतन० ३५ )। धारण करना, 'रनहित आयुध काँधन काँधे।' रघु० १२२। अङ्गीकार करना, सहना 'हनुवँत सरिस भार जेइ काँधा।' प० २४३। ( युद्ध ) ठानना 'आनि पर बाम विधि बाम तेहि रामसों सकत संग्राम दसकंध काँध्यो।' कवित्ता० १८६
काँधर, काँन—पु० श्रीकृष्ण।
काँप—स्त्री०, काँपा—पु० बाँसकी पतली तीली ( श्र० ३१ )।
काँपना—अक्रि० भय इत्यादिसे थर्राना, हिलना, डरना।
काँवर, काँवरि—स्त्री०कन्धेपर रखकर चीजें ढोनेके लिये बाँसका चीरा हुआ टुकड़ा जिसके छोरोंपर छींके लगे हों, बहँगी 'दधि चिउरा उपहार अपारा। भरि भरि काँवरि चले कहारा।' रामा० १६४ ( प० १७५ )
काँस—पु० एक लम्बी घास जो वर्षाके अन्तमें फूलती है।
काँसा, कांस्य—पु० ताँबे जस्तेके योगसे बनी धातु, कसकुट।
का—सम्बन्धकारककी विभक्ति। सर्व० क्या।
काइफर—पु० देखो 'कायफर' ( उदे० 'कटजीरा' )।
काई—स्त्री० महीन घासके समान वह हरी हरी या मैले रङ्गकी सूक्ष्म वस्तु जो पानी या सीड़के कारण पत्थर इत्यादिपर जम जाती है 'कागरकीर ज्यों भूपन चीर शरीर लस्यो तजि नीर ज्यों काई।' कवित्ता० १६४। एक तरहका मोरचा या मैल 'मनु मोहि जारि भसम

दिय चाहत सावत मनु कलङ्क तनु काई ।' सू०२०९

काऊ—क्रिवि० कभी 'सकेहु न दुखित देखि मोहिं काऊ। बन्धु सदा तव मृदुल सुभाऊ ।' रामा० ४८४ ( प० ३० ) सर्व० कोई 'कहत राम विधुवदन रिसौंहे सपनेहु लखेउ न काऊ ।' विन० २५८

काक—पु० कौआ । लँगड़ा ।

काकतालीय—वि० दैवात् या संयोगसे होनेवाला ।

काकदंत—पु० कौवेके दाँतकी तरह अविश्वनीय बात ।

काकपक्ष,-पच्छ—पु० सिरके दोनों ओरके बड़े बड़े बाल, जुल्फ । [चिह्न ( ‸ ) ।

काकपद,-पाद—पु० छूटे हुए शब्द इ०का स्थान सूचक

काकपाली—स्त्री० कोयल (रत्ना० ३५५, पूर्ण ९७,९९)।

काकवंध्या—स्त्री० वह स्त्री जो एक सन्तान उत्पन्न करने- के बाद बन्ध्या हो गयी हो ।

काकरी—स्त्री० ककड़ी । [

काकरेजी—पु० लाल कालेकी मिलावटसे बना एक रङ्ग।

काकली—स्त्री० मधुर ध्वनि । गुञ्जा, घुँघची ।

काका—पु० चाचा ।

काकिणी, काकिनी—स्त्री० घुँघची, कौड़ी ।

काकु—पु० व्यङ्ग स्वरभेद । वक्रोक्तिका एक भेद ।

काकुल—पु० जुल्फ ।

काकोदर—पु० कौएका पेट । साँप ।

काकोल—पु० साँप, कौआ, एक विष ।

काग—पु० कौआ । बोतलमें लगानेकी डाट ।

काग़ज़—पु० सन, घास, बाँस इ०की लुगदीसे बना हुआ पत्र जो लिखनेके काममें आता है ।

कागज़ी—वि० कागजका । पतले छिलकेवाला ।

कागद—पु० काग़ज़ 'ए कागदके फूल सुगन्ध मरन्द न पामें ।' दीन० २०७, ( अ० ४६ )

कागर—पु० पङ्ख, कैंचुली ( उदे० 'काई' ) । कागद 'मसि छूटी कागर जल भीजे···'अ० ६७ । 'तुम्हरे देख कागर मसि छूटी ।' सूबे० ४३८, (प० १९४) ।

कागरी—वि० तुच्छ । नगण्य ।

कागा—पु० काग, कौआ ( प्रिय० ५७ ) ।

कागारोल—पु० हल्लागुल्ला, हुल्लड़ ।

कागायासी—स्त्री० बड़े तड़के तैयार की गयी भाँग ।

कागौर—पु० कौवेके लिए निकाला गया कव्यका भाग ।

काचरी—स्त्री० साँपकी केंचुल ।

काचा—वि० कच्चा, कमज़ोर, डरपोंक ( सूवि० २९ ) । अनित्य । जो पकाया न गया हो । [ बाना, भेष ।

काछ—पु० धोतीका छोर जो पीछे खोंसा जाता है, लाँग।

काछना—सक्रि०धोतीके छोरको जङ्घोंके बीचसे ले जाकर पीछे खोंसना । लाँग मारना । वेष बनाना, पहनना 'आगे राम लषन बने पाछे । तापस वेष विराजत काछे ।' रामा० २४७ । 'नटवर भेष काछे स्याम ।'सू०११३ । किसी द्रव पदार्थको एक ओर हटाकर उठाना ।

काछनी—स्त्री० घुटनोंतक पहनी हुई धोती । एक तरहका कटि वस्त्र 'करमें कनकथार लीन्हें कटि कनक काछनी काछे ।' रघु० १८० ( सू० ७६ ) देखो 'कछनी' ।

काछा—पु० कछनी, ऊपर कसकर पहनी हुई धोती ।

काछी—पु० तरकारी बोने और बेचनेवाली जाति('मरार' —छत्तीसगढ़ ) । [प०६८

काछू—पु० कछुआ 'जहँ तहँ मगर मच्छ औ काछू ।'

काछे—क्रिवि० पास समीप ।

काज—पु० काम, कृत्य ( रामा० ९४ ) प्रयोजन, अर्थ 'जो तनु धरि हरिपद साधहिं जन, सो बिन काज गँवावों । विन० ३४७ । के काज=के लिए 'पसरे कर कुमुदिनि काज मनो ।' राम० ८५

काजर—पु० काजल ।

काजरी—स्त्री० एक तरहकी गाय जिसकी आँखके चारों ओरका हिस्सा काला हो ( सू सु० ७६ ) ।

काजल—पु० दीपककी कालिख ।

क़ाज़ी—पु० न्यायाधीश ।

काजू—पु० एक वृक्ष या उसका फल ।

काट—पु० काटनेकी क्रिया, कटाव, घाव । स्त्री० मैल, मोरचा 'आप न देखत है अपनो मुख दर्पण कार लग्यो अति धूला ।' सुन्द० १०० [( ग्राम० ६ )।

काट,-कपट—स्त्री० छिपाकर या अनुचित रीतिसे काटना

काटना—सक्रि०खण्डित करना, कुछ अंश अलग करना। डसना, दाँत गड़ाना, घाव करना । मार डालना। मिटाना । ब्योंतना । बिताना । अप्रिय लगना ।

काटर—वि० कट्टर 'आना काटर एक तुखारू ।'प०१२१

काठ—पु० लकड़ी । काठकी पुतली 'कतहुँ पखण्डी काठ नचावा ।' प० १७ ।-का उल्लू=महामूर्ख ।-की हाँड़ी=धोखा देनेवाली या दिखाऊ चीज ।-मारना= बेड़ी डालना, सजा देना ( के० १२७ ) ।-में पाँव देना = जान बूझकर बन्धनमें पड़ना '[फूले फूले ।

फिरत हैं हीत हमारो ब्याव। तुलसी गाय बजायके देत काठमें पाँव।' तुलसी ]

काठिन्य—पु० कठिन होनेका भाव, कड़ापन।

काठी—स्त्री० घोड़े या ऊँटकी पीठपर रखनेकी गद्दी। ईंधन, 'हाड़ जराइ दीन्ह जस काठी। प० ७०। तलवारकी म्यान। देहकी बनावट।

काढ़ना—सक्रि० बाहर निकालना 'घरके कहैं बेगि ही काढ़ो, भूत भये कोउ खैहैं।' सू० २८१। निकालना 'काम काढ़ि चुप रहै, फेर तिहि नहिं पहिचानै।' —गिरिधर राय। चित्रित करना 'राम वियोग विकल सब ठाढ़े। जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े।'रामा० २३९। 'पुतरी गढ़ि गढ़ि खम्भन काढ़ी।' प०१३८। कर्ज लेना ( रामा० १४९ )।

काढ़ा—पु० क्वाथ, ओषधि उबालकर बनाया हुआ शरबत।

कातना—सक्रि० रुईसे सूत निकालना।

कातर—वि० दुःखित, व्याकुल, अधीर। पु० जबड़ा। एक मछली।

कातरता—स्त्री० व्याकुलता, अधीरता, बुजदिली।

काता—पु० तागा। छुरी, कटार '···हनहन कर तुअ क़ाता।' विद्या० ४

कातिक—पु० कार्तिक, आश्विनके बादका महीना।

कातिब—पु० लिखनेवाला।

कातिल—वि० प्राणहारक, घातक। पु०वध करनेवाला।

काती—स्त्री० देखो 'कत्ता' छूरी, कैंची ( अ० ९२ )।

कात्यायनी—स्त्री० देवी विशेष, दुर्गा, वह अधेड़ विधवा जो भगवा कपड़े पहने। कात्यायनपत्नी।

काथ—पु० कत्था 'जहँ बीरा तहँ चून है, पान सोपारी काथ।' प० २४८। स्त्री० गुदड़ी 'कोउक सेत कपायक ओढ़त कोउक काथ रँगे बहु अम्बर।' सुन्द० ६७

काथरी—स्त्री० कथरी, गुदड़ी 'कैसे ओढ़ब काथरि कंथा।' प० ५८।

कादंब—पु० एक तरहका हंस, बाण, ऊख।

कादंबरी—स्त्री० सरस्वती। मदिरा। कोयल, मैना।

कादंबिनी—स्त्री० बादलोंकी घटा (मेघावली)।

कादर—वि० भीरु, कायर 'बोल्यो वचन अरे कादर तू भयो बन्धु कस मोरा।' रघु० २२६। आकुल, अधीर।

कादिरी—स्त्री० एक तरहकी चोली।

कान—पु० श्रवण, कर्ण।—टाना = आहट लेना, चौकन्ना होना 'घुरघुरात हय आरव पाये। चकित विलोकत कान उठाये।' रामा० ७८।—करना = ध्यान देना 'बालक वचन करिय नहिं काना।' रामा० १५१।—गरम करना = कान ऐंठ देना—पर जूँ न रेंगना = ध्यान न होना, असर न पड़ना।—भरना = किसीकी शिकायत कर किसीको उसके विरुद्ध भड़काना।—में तेल डालकर लेट रहना = शिकायत या अनुरोध सुनकर भी कुछ न कहना। स्त्री० देखो 'कानि'। —काट लेना=बढ़ जाना, मात करना।

कानन—पु० जंगल।

काना—वि० एक आँखका। तिरछा। पु० पासेकी एक बिन्दी ( सूसु० ३० )। [ ( रावन ३०१ )।

कानाफुसकी,-फूसी—स्त्री० कानके पास धीरेसे कहनेकी क्रिया या इस तरह कही हुई बात।

कानि—स्त्री० लोक-लज्जा, प्रतिष्ठा ( उदे० 'अस्ति' ) रामा० ४० )। प्रतिष्ठाका ध्यान, लिहाज़ 'कोऊ न काहुकी कानि करै कछु चेटक सो जो कस्यो जदुरैया।'—रसखानि। दुःख 'सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिन कैसे घटत कठिन कानी।' सूवे० ३२५

कानी—स्त्री० देखो 'कानि'। वि० स्त्री० एक आँख वाली। सबसे छोटी ( अँगुली )।

कानीन—वि० कन्यासे उत्पन्न 'अद्यापि आनी न। रे बंदि कानीन।' राम० ६६

क़ानून—पु० विधान, आईन।

क़ानूनदाँ—पु० क़ानून जाननेवाला। हुज्जती।

क़ानूनी—वि० क़ानून सम्बन्धी, नियमानुकूल। क़ानून छाँटनेवाला।

कान्यकुब्ज—पु० आधुनिक कन्नौज

कान्ह, कान्हर—पु० श्रीकृष्ण।

कापथ—पु० बुरा रास्ता।

कापर—पु० कपड़ा 'कापर रँगे रंग नहिं होई।' प०१४७

कापाल—पु० प्राचीन कालका एक अस्त्र।

कापालिक—पु० देखो 'कपालक'।

कापी—स्त्री० नक़ल, प्रतिलिपि। लिखनेकी सादी बही। प्रति, जिल्द।

कापीराइट—पु० किसी पुस्तकके प्रकाशनादिका स्वत्व।

कापुरुष—पु० कायर या नीच व्यक्ति।

काफ़िया—पु० तुक।

काफिर—वि० मुसलमानोंकी दृष्टिमें उनसे भिन्न धर्मावलम्बी। नास्तिक। बुरा।

काफ़िला—पु० व्यापारियों या तीर्थयात्रियोंका गमनकारी गरूह।

काफ़ी—वि० पर्याप्त, बस। स्त्री० एक पेड़का बीज।

काफ़ूर—पु० कपूर।—होना = गायब हो जाना।

काबर—वि० चितकबरा। पु० एक तरहकी जमीन

काबा—पु० मक्का शहरकी एक जगह। [(रतन २०)।

क़ाबिल—वि० लायक, योग्य।

क़ाबू—पु० इख्तियार, वश।

काम—पु० कार्य, क्रिया। प्रयोजन, उद्देश्य। उपयोग। मतलब, सरोकार। व्यवसाय, कारबार। कारीगरी, दस्तकारी। इच्छा। कामदेव। शिवजी।—का = उपयोगी, जिससे कोई मतलब निकले।—आना = युद्धमें हत होना, व्यवहारमें आना, सहायता देना।—करना = असर करना, कारगर होना।—तमाम करना = खातमा करना, मार डालना।—निकलना = अर्थ सिद्ध होना, मतलब पूरा होना।

कामकला—स्त्री० रति। कामदेवकी स्त्री।

कामकाज—पु० कारबार।

कामकाजी—वि० कामकाजमें रातदिन फँसा रहनेवाला।

कामकेलि—स्त्री० काम-क्रीड़ा।

कामग—वि० स्वेच्छापूर्वक चलनेवाला।

कामचर—वि० स्वैर। स्वेच्छाचारी।

कामचलाऊ—वि० जिससे किसी तरह काम चलाया [जा सके।

कामचारी—वि० देखो 'कामचर'।

कामतरु—पु० कल्पवृक्ष।

कामता—पु० चित्रकूटके समीपका एक गाँव। चित्रकूट।

कामद—वि० इच्छित फल देनेवाला।

कामदगिरि—पु० चित्रकूटका एक पर्वत जहाँ रामने निवास किया था।

कामदमणि—पु० चिन्तामणि (विन० १०२)।

कामदा—स्त्री० कामधेनु। एक देवी।

कामदानी—स्त्री० सलमे सितारेके बेलबूटेवाला काम।

कामदार—वि० जिसपर जरदोज़ीका काम हो।

कामदुघा,-दुहा—स्त्री० कामधेनु (रामा० १७७)।

कामदेव—पु० एक पौराणिक देवता, मन्मथ, रतिपति, [मदन।

कामधाम—पु० कामकाज, काम-धन्धा।

कामधुक,-धेनु—स्त्री० एक पुराणोक्त गाय जिससे माँगी हुई सभी चीजें मिल सकती हैं।

कामना—स्त्री० ख्वाहिश, इच्छा।

कामभूरुह—पु० कल्पवृक्ष।

काम्य—वि० जिसकी इच्छा हो, वांछनीय, सुन्दर (साकेत १६६)। पु० कामनाकी सिद्धिके लिए किया गया [कार्य (यज्ञादि)।

कामयाब—वि० सफल।

कामरि, कामरिया, कामरी—स्त्री० कम्बल 'या लकुटी अरु कामरियापर राज तिहूँ पुरको तजि डारौं।' —रसखान, (सू० १०३)

कामरू, कामरूप—पु० आसाम प्रान्तका एक ज़िला जहाँ कामाख्या देवीका स्थान है। वि० इच्छानुसार रूप धर सकनेवाला (रामा० ४३७)।

कामलड़ी, कामली—स्त्री० देखो 'कामरी'। 'फाटि पटोली धुज करौं कामलड़ी फहराय। जेहि जेहि भेषे पिय मिलै, सोइ सोइ भेष कराय।' साखी ४२

कामशास्त्र—पु० स्त्री पुरुषोंके परस्पर समागम सम्बन्धी शास्त्र।

कामांध—वि० विषयान्ध, विचारहीन। पु० कोयल।

कामा—स्त्री० कामिनी स्त्री।

कामारि—पु० शिवजी।

कामिनी—स्त्री० स्त्री, सुन्दरी। मदिरा। एक पुष्प।

कामी, कामुक—वि० इच्छा करनेवाला। विषयी।

कामोद्दीपक—वि० कामकी प्रवृत्ति जगानेवाला।

काम्य—वि० वांछनीय इच्छासे सम्बद्ध, वासना सम्बन्धी

काय, कायक—स्त्री० शरीर 'सबको सब भाँति स सुखदायक। गुण गावत वेद मनोवचकायक।' के० २७

कायदा—पु० रीति, नियम। व्यवस्था।

कायफर, कायफल—पु० एक वृक्ष या उसका फल

क़ायम—वि० स्थिर, मुकर्रर। स्थापित।

कायम मुकाम—वि० स्थानापन्न।

कायर—वि० भीरु, डरपोक।

कायरता—स्त्री० भीरुता।

कायल—वि० तर्कसे दूसरेकी बात मान लेनेवाला, हारने वाला, स्वीकार करनेवाला। लाजवाब।

कायली—स्त्री० लज्जा, ग्लानि। सुस्ती।

काया—स्त्री० देह, शरीर।

कायाकल्प—पु० दवाके बलसे जराग्रस्त देहको तरुण बनानेकी क्रिया। तरुण बनानेवाली ओषधि।

कायापलट—पु० रूपपरिवर्तन, हेरफेर। रूपान्तर [करण।

कायिक—वि० देहसम्बन्धी।

कारक—पु० करनेवाला। संज्ञा या सर्वनामका वह रूप जिससे उसका सम्बन्ध वाक्यके किसी दूसरे शब्दके साथ प्रकाशित होता है।
कारकदीपक—पु० एक काव्यालंकार।
कारकुन—पु० कारिन्दा।
कारखाना—पु० यन्त्रादिद्वारा प्रचुर मात्रामें वस्तुएँ तैयार करनेकी जगह। व्यवसाय।
कारगर—वि० उपयोगी, प्रभावकारी।
कारगुज़ार—वि० मुस्तैदीसे काम करनेवाला।
कारगुजारी—स्त्री० कार्यकुशलता, मुस्तैदी।
कारचोबी—स्त्री० ज़रदोज़ी, या फूल काढ़नेका काम। वि० जिसपर ज़रदोज़ीका काम हो।
कारज—पु० कार्य, काम। प्रयोजन। फल।
कारटा—पु० करट, कौआ। [ साधन। देखो 'कारन'।
कारण—पु० हेतु, सबब। आदि या मूल। विष्णु, शिव।
कारणमाला—स्त्री० एक काव्यालंकार।
कारतूस—पु० बन्दूकमें भरकर चलानेकी एक नली जिसमें गोली इ० भरी रहती है।
कारन—पु० देखो 'कारण'। करुण स्वर 'नागमती कारन कै रोई।' प० १७४
कारनी—पु० करानेवाला। भेद करानेवाला।
कारबार—पु० कामकाज, व्यापार।
कारबारी—पु० कारिन्दा। वि० कामकाजी।
काररवाई—स्त्री० काम, कृत्य, उपाय, चाल।
कारवाँ—पु० यात्रियोंका समूह। [ चालबाज़।
कारसाज—वि० बिगड़े हुए कामको बनानेवाला।
कारसाजी—स्त्री० काम बनानेकी युक्ति। चालबाज़ी।
कारस्तानी—स्त्री० चालबाज़ी, काररवाई।
कारा—वि० काला। कलुषित। पु० सर्प 'स्वाति बूँद सीपी मुकुत कदली भयो कपूर। कारेके मुख विष भयो संगतिको फल सूर।' स्त्री० कारागार, बन्दीगृह।
कारागार, गृह—पु० बन्दीख़ाना, जेल।
कारावास—पु० बन्दीगृहमें रहनेकी सजा, क़ैद।
कारिंदा—पु० कारकुन, गुमाश्ता।
कारिका—स्त्री० सूत्रोंकी श्लोकबद्ध व्याख्या।
कारिख—स्त्री० कालिमा, स्याही, काजल। कलंक। 'भूम कुसंगति कारिख होई। लिखिय पुरान मंजु मसि सोई।' रामा० ८
कारी—वि० गहरा 'कारी घाव जाय नहिं डोला।' प० ३२८
कारीगर—पु० शिल्पी। दस्तकार।
कारीगरी—स्त्री० हुनर। निर्माणकला।
कारु—पु० कारीगर, शिल्पी।
कारुणिक—वि० करुणाशील, दयालु, मेहरबान।
कारुण्य—पु० दया।
कारूनी—स्त्री० घोड़ोंकी जाति विशेष।
कारो—वि० काला। पु० सर्प।
कारौंछ—दे० 'कालौंछ'।
कारोबार—दे० 'कारबार'।
कार्ड—पु० मोटा काग़ज़। मोटे कागजका वह टुकड़ा जो डाकद्वारा भेजे जानेवाले खुले पत्रका काम देता है।
कार्त्तवीर्य—पु० कृतवीर्य-सुत, सहस्रार्जुन।
कार्त्तिक—पु० आश्विनके बादका महीना। कार्त्तिकेय 'हैं दक्षिणमें लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग, दक्षिण गणेश, कार्त्तिक बाएँ रण-रंग-राग' अनामिका १६५
कार्त्तिकेय—पु० शिवपुत्र षडाननका एक नाम।
कार्पण्य—पु० कञ्जूसी, दीनता।
कार्पास—पु० कपास।
कार्मना—पु० मन्त्र-तन्त्रका प्रयोग। मन्त्र-तन्त्र।
कार्मुक—पु० धनुष, चाप।
कार्य—पु० काम, परिणाम।
कार्यकर्त्ता—पु० काम करनेवाला, कर्मचारी।
कार्यक्रम—पु० कार्यकी व्यवस्था, कार्यको सिलसिलेवार रखना, या स्थिर करना।
कार्यालय—पु० दफ्तर, आफिस।
कार्रवाई—दे० 'काररवाई'।
कार्षापण—पु० एक प्राचीन सिक्का।
काल—क्रिवि० कल 'काल करन्ते आज कर आज करन्ते अब्ब।' पु० समय। अन्तिम समय, मृत्यु, यमराज 'तुम तो काल हाँकि जनु लावा।' रामा० १४९। उपयुक्त समय, अवसर। नियत समय। तङ्गीका समय, अकाल।
कालकंठ—पु० शंकर। मोर, नीलकण्ठ, खञ्जन।
कालकूट—पु० एक तीक्ष्ण विष।
कालकोठरी—स्त्री० जेलकी तङ्ग कोठरी, जिसमें कैदी अकेला रखा जाता है।
कालक्षेप—पु० समय व्यतीत करना, कालयापन।
कालचक्र—पु० दिनोंका फेर।

कालधर्म—पु० मृत्यु, समयका स्वभाव।
कालनाथ—पु० कालभैरव, शिव।
कालनिशा—स्त्री० अत्यन्त अँधेरी रात, दिवालीकी रात।
कालबूत—पु० मेहराब बनानेके लिए किया गया कच्चा भराव। ढेना, 'कालबूत दूती बिना जुरै न और उपाय।' वि० १६२
कालयापन—पु० समय बिताना, दिन काटना।
कालर—पु० देखो 'कल्लर'। हरिजन सेती रूसना, संसारीसे हेत। ते नर कधी न नीपजैं ज्यों कालरका खेत।' साखी ५७। गलेकी पट्टी।
कालराति,-रात्रि—स्त्री० प्रलय, मृत्यु या दिवालीकी रात। अत्यन्त अँधेरी रात।
कालवाचक,-वाची—वि० समय बतलानेवाला।
कालविपाक—पु० समयकी समाप्ति। काम पूरा होनेकी अवधि।
काल-सर्प—पु० वह साँप जिसके डसनेसे कोई बचता नहीं (के० २०८), 'काल सर्पिणी नन्दकुल क्रोध धूममी जौन। अजहूँ बाँधन देत नहिं अहो शिखा मम कौन।' मुद्रा० ५
काला—वि० कृष्ण वर्णका। कलङ्कित, कलुषित।
काला कलूटा—वि० गहरे काले रङ्गका (आदमी)।
कालाक्षरी—वि० भारी विद्वान्।
कालाग्नि—स्त्री० प्रलयके समयकी आग।
काला चोर—पु० भारी चोर। तुच्छ व्यक्ति।
काला पान—पु० ताश का एक रङ्ग,'हुकुम' का रङ्ग।
कालापानी—पु० देशनिकालेकी सज़ा। अन्दमान निकोबार द्वीप।
कालाभुजंग—वि० अत्यन्त काला।
कालिंग—वि० कलिङ्ग देशका। पु० कलिङ्ग देशका रहनेवाला या वहाँका राजा। साँप, हाथी, तरबूज इ०।
कालिंदी—स्त्री० कलिन्द-कन्या। यमुना। एक रागिनी।
कालि—क्रिवि० कल। पिछला या अगला दिन। शीघ्र ही 'पुनि आउब यहि बिरिया काली।' रामा० १२८
कालिका—स्त्री० काली, दुर्गा। कालिमा, मेघ, इ०।
कालिख, कालिमा—स्त्री० देखो 'कालिख'।
कालिदास—पु० संस्कृतके प्रसिद्ध और प्राचीन नाटककार तथा कवि। [टोपियों का ढाँचा।
कालिब—पु० शरीर 'एक जान दो कालिब'-प्रतिज्ञा १०८
काली—स्त्री० देवी, दुर्गा। उमा।
कालीदह—पु० जमुनाके भीतरका वह कुण्ड जिसमें कालिया नाग रहता था।
कालीन—पु० गलीचा।
कालीमिर्च—स्त्री० एक मसाला, गोल मिर्च।
कालौंछ—स्त्री० कालिख, कालापन।
काल्पनिक—वि० मनगढ़न्त, कल्पित।
काल्ह, काल्हि—क्रिवि० कल।
कावा—पु० घोड़ेका एक वृत्तमें चक्कर देना।
काव्य—पु० रसात्मक वर्णन। शुक्राचार्य।
काव्य लिंग—पु० एक काव्यालङ्कार।
काव्यार्थापत्ति—पु० एक अर्थालङ्कार 'जब यह कीन्हों यह कह्यो—इमि जहँ बरनन होत।'
काश—पु० एक तरहकी घास। काँस। श्वासरोग। अ० ईश्वर करे, क्या अच्छा हो।
काशीफल—पु० कुम्हड़ा।
काश्त—स्त्री० कृषि। कृषि करनेका स्वत्व।
काश्तकार—पु० खेतिहर, किसान।
काश्तकारी—स्त्री० कृषि। कृषि करनेका स्वत्व। वह खेत जिसपर खेती करनेका स्वत्व हो।
काश्मीरा—पु० एक तरहका ऊनी कपड़ा।
काषाय—वि० गेरुआ। पु० गेरुआ वस्त्र।
काष्ठ—पु० जलावन, काठ, लकड़ी।
कास—पु० देखो 'काश'।
कासनी—स्त्री० एक तरहका पौधा या उसका फल।
कासा—पु० कटोरा। भोजन। [एक रङ्ग।
कासार—पु० तालाब, पोखरा। एक पकवान।
कासिद—पु० पत्रवाहक, हरकारा।
काह—सर्व० क्या, कौन बात (रामा० २२१)।
काहल—वि० गन्दा, मैला 'बरनै दीनदयाल तोहिं मधि करिहैं काहल।' दीन २०३
काहली, काहिल—वि० आलसी, सुस्त, (कविता० २०८)।
काहिली—स्त्री० आलस्य।
काहीं—अ० को, पास, द्वारा (रघु० १६), 'गये गलानि मानि मनमें हम भजन हेतु हरि काहीं। रघु० ९, 'मुनिजन निरखि परसुधर काहीं। आपुसमें सिगरे बतराहीं।' रघु० १९१ (पृ० १६, ६२)।
काहू—सर्व० किसी (काहूकी, काहूसों इत्यादि)।
काहे—क्रिवि० क्यों, किस कारणसे, किस प्रयोजनसे।
किंकर—पु० नौकर, सेवक, परिचारक।

किंकर्त्तव्य विमूढ़—वि० देखो 'कर्त्तव्यमूढ़'।
किंकिणि, किंकणी, किंकिनि—स्त्री० करधनी 'कङ्कन किङ्किनि नूपुर धुनि सुनि।' रामा० १२६, (सू० ५५)
किंगरी, किंगिरी—स्त्री० छोटी सारङ्गी 'किङ्गरी हाथ गहे बैरागी।' प० ६२, 'किङ्गरी गहे बजावै झूरै।' प० ७७
किंचन—वि० कुछ।
किंचित्—क्रिवि० थोड़ा, कुछ-कुछ। वि० थोड़ासा, कुछ।
किंजल्क—पु० पद्मपराग, पद्मकेशर। वि० पीला।
किंतु—अ० बल्कि, लेकिन, पर।
किंपुरुख, किंपुरुष—पु० किन्नर, वर्णसङ्कर।
किंवदंति—स्त्री० जनप्रवाद, उड़ती खबर, अफवाह।
किंवा—अ० अथवा, या, या तो।
किंशुक—पु० टेसू, पलाश।
कि—क्रिवि० क्या, कैसे। अथवा। अ० एक योजक शब्द।
किकियाना—अक्रि० रोना, चिल्लाना।
किचकिच—स्त्री० व्यर्थका झगड़ा। दाँतापीसी।
किचकिचाना—अक्रि० दाँतपर दाँत रखकर दबाना। दाँत पीसना।
किचड़ाना,-राना—अक्रि० (आँखका) कीचड़से भरना।
किचपिच, किचर पिचर—वि० क्रमरहित, अस्पष्ट।
किछु—वि० कुछ।
किटकिट—पु० कहासुनी, वादविवाद।
किटकिटाना—अक्रि० दाँत पीसना।
किट्ट—पु० धातुका मल। जमा हुआ मल।
कित—क्रिवि० कहाँ, किधर। तरफ 'पढ़त वेद वैदिक धरनीसुर जयधुनि चहुँ कित छाई।' रघु० ८३
कितक, कितिक—वि०, क्रिवि० कितना। कहाँ, कितनी दूर 'तनु स्रम अधिक जनावहीं, कहै कितक तब धाम।' चाचा हित वृन्दा०
कितना—वि० किस परिमाण या मात्राका? ज्यादा। क्रिवि० अत्यधिक। किस परिमाण या मात्रामें?
कितव—पु० जुआरी, दुष्ट, धूर्त्त, कपटी।
किता—पु० संख्या। काटनेका ढंग। चाल।
किताब—स्त्री० पुस्तक।
किताबी—वि० पुस्तक-सम्बन्धी, जो पुस्तकमें ही हो (किताबी ज्ञान), किताबकेसे आकारवाला।
कितेक—वि० कितना, असंख्य, अपरिमित।
कितेब—स्त्री० किताब, धर्मग्रन्थ, 'कुरान' 'कहुँ आपदा तसबी कहूँ कितेब।' साखी ९
कितै—क्रिवि० कहाँ? [ किते।' सुजा० १६।
कितो—वि०, क्रिवि० कितना 'फौज केती इतै और बैरी
कित्ति—स्त्री० कीर्त्ति, बड़ाई।
किधर—क्रिवि० किस तरफ।
किधौं—अ० या तो, न जाने, अथवा 'पसरे कर कुमुदिनि काज मनो। किधौं पद्मिनीको सुख देन घनो।' राम० ८५
किन—क्रिवि० क्यों न 'बिगरी बात बनै नहीं लाख करौ किन कोय।'—रहीम। सर्व० 'किस' के बहुवचनका रूप। पु० चिह्न।
किनका, किनिका, किनुका—पु० छोटा दाना, 'कनूका' चावल इत्यादिका महीन टुकड़ा। बूँद 'घट घट झलकिं कपोलनि किनुका, मानों मदहि चुवावैं।' सू० ९७, (सूबे० १५९), 'विद्रुम हेम बज्रके किनुका नाहिन हमहिं सुनावति।' सूबे० १४६
किनार, किनारा—पु० कोर, तीर, तट, प्रान्त, हाशिया। किनारा करना = दूर होना, छोड़ देना।
किनारदार—वि० जिसमें किनारा हो (कपड़ा इ०)।
किनारी—स्त्री० गोटा, कोर।
किन्नरी—स्त्री० किन्नर जातिकी स्त्री। किंगरी, छोटा चिकारा 'कहूँ किन्नरी किन्नरी लै सुगावैं।' राम० ११२, 'ताल मुरज रबाब बीना किन्नरी रससार।' सूबे० २०७
किफायत—स्त्री० बचत, कमखर्ची।
क़िबला—पु० पिता। पश्चिम दिशा।
किबलानुमा—पु० पश्चिम दिशा-सूचक यंत्रविशेष 'वाही तन ठहराति यह क़िबलनुमा लौं दीठि। बि० १८
किमरिक—पु० एक तरहका सफेद चिकना कपड़ा।
किमि—क्रिवि० किस तरह, कैसे।
किम्मत—स्त्री० क़ीमत, प्रतिष्ठा (छत्रप्रं० ७६)।
कियत—वि० कितना, कुछ।
कियारी—स्त्री० 'क्यारी', सिंचाईके लिए बनाये गये खेतोंके छोटे टुकड़े।
किरका—पु० कंकड़, छोटा टुकड़ा।
किरकिटी, किरकिरी—स्त्री० कण या धूल जो आँखमें पड़कर दुःख देती है (उदे० 'अहटाना')।
किरकिरा—वि० कंकरीदार। बेलुत्फ।
किरकिराना-अक्रि० किरकिरी पड़नेकी सी तकलीफ होना।
किरकिरी—स्त्री० शानमें बट्टा लगाना, अप्रतिष्ठा, हेठी

जिल्ला ।  [ छींक आती है । पु० गिरगिट ।
किरकिल—स्त्री० शरीरके भीतरकी वह वायु जिसमे
किरकिला—स्त्री० देखो 'किलकिला' ।
किरच, किरचक—स्त्री० एक तरहकी तलवार । काँच आदिका नोकदार टुकड़ा,कनी 'परिपूरन पूर पनारन ते जनु पीक कपूरनकी किरचैं ।' के० ३४४ । सृष्टि 'लोक लज्जा काँच किरचक, स्याम कंचन खानि ।' सू० ९७
किरण, किरन—स्त्री० रश्मि । अंशु ।
किरणमाली—पु० अंशुमाली, सूर्य ।
किरतम—पु० मायिक प्रपंच 'पूरन ब्रह्म कहाँ ते प्रकटे, किरतमकिन उपराजा ।' (बीजक १४१,कबी० ५२८)
किरपा—स्त्री० कृपा, दया, अनुग्रह ।
किरपान—स्त्री० कृपाण, तलवार ।
किरम—पु० कीड़ा ।
किरमाल—पु० कृपाण, तलवार ।
किरमिच—पु० एक तरहका मोटा कपड़ा ।
किरमिजी—वि० मटमैले लाल रंगका ।
किरराना—अक्रि० दाँत पीसना । 'किर्र किर्र शब्द करना 'देखि सुवा सारो किररानो ।' छत्र० ३५
किरवान, किरवार—पु० तलवार 'काटि कटक किरवान बल बाँटि जम्बुकनि देहु ।' छत्र० १२४ ( भू० ३३ )
किरवारा—पु० अमिलतासका पेड़ ।
किराँची, किराचिन—स्त्री० माल ढोनेकी गाड़ी । ( पूर्ण १६९ ), बैलगाड़ी ।
किरात—पु० एक जंगली जाति । देश-विशेष । साईस ।
किरान—क्रिवि० निकट, समीप ।
किराना—पु० नमक मसाला इ० चीज़ें ।
किराया—पु० किसी वस्तुके प्रयोग करनेका मुआवज़ा ।
किरायेदार—पु० भाड़ेपर कोई चीज़ लेनेवाला ।
किरार—पु० एक जाति ( रवि० २५ ) ।
किरावल—पु० रणक्षेत्र ठीक करनेके निमित्त आगे जाने-
किरिच—स्त्री० देखो 'किरिच' ।  [वाला सैन्य-भाग ।
किरिमदाना—पु० एक तरहका कीड़ा ।
किरिया—स्त्री० सौगन्ध । काम । अन्त्येष्टि क्रिया ।
किरीट—पु० एक शिरोभूषण,मुकुट । सवैया का एक भेद ।
किरीटी—पु० अर्जुन या इन्द्र ।
किरीरा—स्त्री० क्रीड़ा 'हँसहिं हंस औ करहिं किरीरा ।'
किर्च—स्त्री० देखो 'किरच' ।  [ प० ७२

किर्तनिया—पु० कीर्तन करनेवाला ( साखी ९० ) ।
किलक—स्त्री० किलकारी । एक तरहका नरकट ।
किलकन—स्त्री० किलकनेकी क्रिया, किलक ।
किलकना—अक्रि० किलकारी मारना, किलकिल शब्द करके हर्ष प्रकट करना, 'किलकत हँसत दुरत प्रगटत मनु, घनमें विद्युत् छपाइ ।' ( सू० व्रज० १२९ )
किलकारना—अक्रि० ज़ोरसे आवाज़ करना 'मुल्ला चढ़ि किलकारिया, अलख न बहिरा होय ।' साखी १८१
किलकार किलकारी—स्त्री०किलकनेका शब्द,हर्षध्वनि ।
किलकिंचित—पु० संयोग श्रृङ्गारका एक हाव ।
किलकिल—स्त्री० किटकिट, झगड़ा ।
किलकिला—स्त्री०मछली खानेवाला एक पक्षी । आनन्द-ध्वनि 'लांघि सिंधु यहि पारहिं आवा । शब्द किल-किला कपिन सुनावा ।' रामा० ४२६ । पु० एक समुद्र 'एहि किलकिला समुद्र गँभीरू ।' प० ७०
किलकिलाना—अक्रि० किलकारी मारना, हर्षसूचक शब्द करना । विवाद करना । अस्पष्ट शब्द करना ।
किलना—अक्रि० कीला जाना । गति रुकना । वशीभूत ।
किलनी—स्त्री० एक छोटा कीड़ा,किल्ली । [किया जाना ।
किलबिलाना—अक्रि० चंचल होना, बहुतसे कीड़ों या अन्य छोटे जन्तुओंका थोड़ीसी जगहमें एक साथ हिलना डोलना ।
किलवांक—पु० एक तरहका काबुली घोड़ा ।
किलवाना—सक्रि० कील जड़वाना । टोना करना । तंत्र मंत्रद्वारा प्रेतादिक विघ्न रोकना ।
किलविष—पु० पाप । रोग । दोष ।
क़िला—पु० गढ़, दुर्ग ।
किलाबंदी—स्त्री० व्यूह बनाना, दुर्ग बनाना ।
किलाया—पु० हाथीकी गर्दनपरकी रस्सी ।
किलिक—स्त्री० एक तरहका नरकट ।
किलोल—पु० आमोद-प्रमोद, मौज, तरंग ।
किल्लत—स्त्री० तंगी, कमी, संकोच ।  [ २४९ ) ।
किल्लाना—अक्रि० कल्लोल करना, किलबिलाना ( पूर्ण
किल्ली—स्त्री० कुंजी । खूँटी, कील । सिटकिनी 'चितंग कै मोहि स्यो है किल्ली ।' प० ३१६ । एक छोटा कीड़ा ।
किल्विष—पु० अपराध, दोष । रोग ।
किवाड़, किवार—पु० पट, कपाट ( सू० १० )
किशमिश—स्त्री० छोटी दाख ।

किशलय—पु० कोंपल, कोमल पत्ता।
किशोर—वि० ११ से १५ वर्षकी उम्रका। पु० पुत्र।
किशोरक—पु० बच्चा।
किश्त—स्त्री० शह, बादशाहपर किसी मोहरेका घात पड़ना।
किश्ती—स्त्री० नौका।
किश्तीनुमा—वि० नावके आकारका।
किसनई—स्त्री० किसानी, खेती ( उदे० 'कनूका' )।
किसब—पु० कारीगरी ( कविता० २१७, व्यवसाय।
किसबत—स्त्री० छुरा आदि रखनेकी नाईकी थैली।
किसमिस—देखो 'किशमिश'।
किसमी—पु० मज़दूर, श्रमजीवी।
किसलय—पु० किशलय, कोमल पत्ता, कोंपल।
किसान—पु० कृषक, खेतिहर।
किस्त—स्त्री० देन इ० चुकानेके लिए निश्चित किया हुआ समय-विभाग। ऋणका वह भाग जो निर्धारित समयपर दिया जाय।
किस्तवार—क्रिवि० हरएक किस्तपर, किस्त किस्त करके।
किस्म—पु० भेद, प्रकार, जाति, श्रेणी, चाल।
किस्मत—स्त्री० भाग्य, अदृष्ट, तकदीर। पु०...कमिश्नरी।
किस्सा—पु० कहानी, आख्यान, वृत्तान्त। झगड़ा।
किहुनी—स्त्री० बाहु और हाथके जोड़की हड्डी।
की—अ० वा, या फिर 'की तनु प्रान कि केवल प्राना। विधि करतब कछु जाइ न जाना।' रामा० २२६। क्या।
कीक—स्त्री० चीख, चिल्लाना, चीत्कार-ध्वनि।
कीकट—वि० धनहीन, कृपण। पु० एक देश।
कीकना—अक्रि० चीख मारना, चिल्लाना।
कीका—पु० घोड़ा।
कीच—स्त्री० कीचड़,पङ्क 'मीच है कबूल पै न कीच लखनऊ की'-बेनी, 'अन्तहु कीच तहाँ जहँ पानी।' रामा० २८६
कीचक—पु० विराटराजका सम्बन्धी दैत्य विशेष।
कीचड़, कीचर—पु० पङ्क, पानी मिली हुई धूल व मिट्टी। आँखका मैल 'बार बार लीखैं लगीं लाखन जुआंके जोट आँखिन बरौनिनमें कीचर छपानो है।' बेनी
कीट—पु० कीड़ा। मैल ( उदे० कनोई' )।
कीड़ा—पु० रेंगनेवाला या उड़नेवाला लघु जन्तु, कृमि, कीट। साँप।
कीड़ी—स्त्री० छोटा कीड़ा, चींटी 'साईंके सब जीव हैं कीड़ी कुंजर दोय।' साखी १५४.

कीदहुँ—अ० किधौं, कौन जाने, शायद 'कीदहुँ रानि कौसिलहि परिगा भोर हो।' रामललानहछू
कीनखाब—पु० कलाबत्तूके कामवाला एक तरहका मोटा रेशमी कपड़ा।
कीना—पु० मनोमालिन्य, द्वेष ( कर्म० ४३६ )।
कुंजित वि० भूंजित।
कीप—स्त्री० बोतल इ० में तैलादि डालनेकी चोंड़ी। चोंगी।
क़ीमत—स्त्री० मोल, दाम।
क़ीमती—वि० ज्यादा कीमतवाला, बहुमूल्य।
कीमिया—स्त्री० रसायन। रासायनिक क्रिया।
कीमियागर—पु० रसायन बनानेवाला।
कीर—पु० सुआ। किरात,बहेलिया 'कड़िया खटकी जालकी आड़ पहूँचा कीर।' साखी ७४ सर्प ( उदे० काई )
कीरति, कीर्त्ति—स्त्री०प्रसिद्धि,ख्याति। राधाजीकी माता।
कीरी—स्त्री० कीड़ी, चींटी।
कीर्त्तन—पु० गुणकथन, हरिभजन तथा कथावर्णन इ०।
कीर्त्तिमान्,-वान—वि० विख्यात, यशस्वी।
कील—स्त्री० कँटिया ( सू० १७६ )। खूँटिया। लौंग।
कीर्ण—वि० ढँका हुआ, बिखरा हुआ, रखा हुआ, लगा हुआ, 'कर्णे कीर्ण हीरके द्वय' अनामिका १४१।
कीलना—सक्रि० कटिया इ० जड़ना। स्तम्भित करना।† †अधीन करना।
कीला—पु० बड़ी कँटिया।
कीलित—वि० जड़ित, निश्चेष्ट।
कीली—स्त्री० वह कील जिसपर कोई चक्र घूमता है।
कीश, कीस—पु० बन्दर, मर्कट।
कीसा—पु० खीसा, जेब, थैली।
कुँअर, कुँअरेटा—पु० पुत्र, बालक। राजकुमार। 'कुँअर कुँअरि कल भाँवरि देहीं।' रामा० १७५
कुँआँ—पु० कूप।
कुँआरा—वि० अविवाहित ( रामा० ४४ )।
कुँइआँ—स्त्री० छोटा कुँआ।
कुँई—स्त्री० कुमुदिनी।
कुंकुम—पु० रोली। केसर।
कुंकुमा—पु० लाखका पोला गोला जिसमें गुलालभर-कर मारते हैं।
कुंचन—पु० सिकुड़ने या सिमटनेकी क्रिया।
कुंचिका—स्त्री० बाँसकी टहनी ( कविप्रि० ८४ )।
कुंचित—वि० घुँघरवाला, घूमा हुआ, टेढ़ा।
कुंची, कुँची—स्त्री० कुंजी, चाभी।

कुंज—पु०, स्त्री० लता आदिसे आवृत स्थान ।
कुंजक—पु० कंचुकी, अन्तःपुरका अनुचर ।
कुंजकुटीर—स्त्री० लतागृह ।
कुंजगली—स्त्री० लतावृत पथ । संकीर्ण मार्ग ।
कुँजड़ा—पु० एक जाति जो तरकारी बेचनेका काम करती है।
कुंजर—पु० हाथी । बाल । आठकी संख्या । कुंजरो वा नरो वा=हाथी या मनुष्य, दुविधाकी बात ।
कुंजरारि—पु० सिंह ।
कुंजल—पु० कुञ्जर, हाथी । काँजी ।
कुंजा—पु० पुरवा, कुल्हड़ ।
कुंजित—वि० कूजित ।
कुंजी—स्त्री० चाभी, टीका ।
कुंठ—वि० भोथरा, गुठला, स्थूल बुद्धिवाला, मूर्ख ।
कुंठन—पु० कुंठित होनेकी क्रिया, हिचक ।
कुंठित—वि० मन्द, जिसकी धार तेज़ न हो । गुठला ।
कुंड—पु० छोटा तालाब । कुंडा । अग्निहोत्रादिके लिये गड्ढा या पात्र । लोहेका टोप ( उदे० 'खड़ाका' ) । हौदा, [गड्ढा ।
कुंडरा—पु० मिट्टीका बड़ा बरतन, कुंडा ।
कुंडल—पु० कानका बाला । मंडल, घेरा । साँपका मंडल नाभि 'कस्तूरी कुंडल बसै मृग ढूँढ़े बनमांहि ।' साखी ११६
कुंडलिनी—स्त्री० सुषुम्ना नाड़ीके मूलके पासकी एक कल्पित वस्तु । इमरती । [ देखो:'कुंडलिनी' ।
कुंडली—पु० सर्प । मयूर । स्त्री० ग्रह चक्र, जन्मपत्री ।
कुंडा—पु० नाद, बड़ा मटका । कौंदा ।
कुंडिका—स्त्री० कुण्डी, पथरी । कमंडल ।
कुंडी—स्त्री० छोटी पथरी । सिकड़ी । कड़ी । एक तरहका शिरस्त्राण ( हम्मीरहठ २४ ) ।
कुंत—पु० भाला, बरछी 'महासमर या ठाँव चलैं सर कुंत कृपानैं ।' दीन० २३२ । जूँ । कौडिल्ला ।
कुंतल—पु० केश । प्याला । हल । जौ ।
कुंता, कुंती—स्त्री० युधिष्ठिरकी माता । बरछी ।
कुंद—पु० एक पौधा या उसका सफेद फूल, कनेर । कमल । नौकी संख्या । प्रसाद 'कुंदकी सी भाई घातें' कविता० २१६ 'कुंदै फेर जानु गिउ काढ़ी ।' प० ४९ वि० भोथरा ।
कुंदन—पु० अच्छा और चोखा सोना ।...नगीना जड़नेके काममें आनेवाला बढ़िया सोनेका पतला पत्तर ।
कुंदरुकी, कुंदरु—स्त्री० कुंदारु,सलकी वृक्ष (उत्तर०४१)
कुंदरू—पु० एक बेल या उसका फल । बिम्बा ।
कुंदा—पु० लकड़ीका टुकड़ा या मोंगरी, लक्कड़, मूठ ।
कुंदी—स्त्री० कपड़ेकी सिकुड़न दूर करनेके लिए मोंगरीसे पीटनेका काम, पीटना ।
कुंदीगर—पु० कुंदी करनेवाला ।
कुंदेरना—सक्रि० खरादना, छीलना ।
कुँदेरा—पु० खरादनेवाला, कुनेरा 'गीउ मयूर केर जस ठाढ़ी । कुंदै फेरि कुँदेरै काढ़ी ।' प० २३८
कुंभ—पु० घड़ा ।
कुँभकार, कुंभार—पु० मिट्टीके बरतन बनानेवाला ।
कुंभज—पु० घड़ेसे उत्पन्न व्यक्ति अगस्त्य । वशिष्ठ ।
कुंभजात,-योनि,-संभव—दे० 'कुंभज' ।
कुंभिका—स्त्री० वेश्या, छोटा पात्र, बिलनी । कायफल । एक वनस्पति ।
कुंभिलाना—अक्रि० मुरझाना ( सू० १८१ ) ।
कुंभी—स्त्री० छोटा घड़ा । एक वृक्ष । एक पौधा जो जलमें होता है । एक नरक । पु० हाथी । मगर ।
कुंभीपाक—पु० एक नरकका नाम ।
कुंभीपुर—पु० हस्तिनापुर । प्राचीन दिल्ली नगर ।
कुँवर, कुँवरेटा—पु० कुँअर । पुत्र । राजपुत्र । 'कानन कुंडल माल गरे सँग मंडित गोपिनके कुँवरेटा ।' रवि० १०
कुँवरि, कुँवरी—स्त्री० पुत्री, कुमारी, राजपुत्री ।
कुँवाँ—पु० कुआँ, कूप ।
कुंवारा—वि० अविवाहित ।
कुँहकुँह—पु० कुंकुम, केशर । 'पेट परत जनु चंदन लावा । कुहँकुहँ केसर बरन सुहावा ।' प० ५०
कु—स्त्री० पृथ्वी । उप० बुरा, नीच ( जैसे, कुपाक, कुजाति ) ।
कुआँ—पु० कुवाँ, कूप, इनारा ।
कुआँर, कुआर—पु० आश्विन मास ।
कुइयाँ—स्त्री० छोटा कुआँ ।
कुकड़ना, कुकरना—अक्रि० सिकुड़ जाना, सिमिटना ।
कुकड़ी—स्त्री० कच्चे सूतका लच्छा । नैपाली छुरा । मुर्गी
कुकनू—पु० एक गानेवाला पक्षी । [(कबीर १०८)
कुकरी—स्त्री० कुक्कुट,मुर्गी । सूतकी अंटी (बीजक१६५)
कुकर्म—पु० बुरा या गर्हित कार्य । [नैपाली छुरी ।
कुकर्मी—वि० खोटा काम करनेवाला ।
कुकुर—पु० कुत्ता, यादवोंकी एक शाखा ।

कुकुरखाँसी—स्त्री० वह खाँसी जिसमें कफ बाहर न* निकले।
कुकुरमाछी—स्त्री० कुत्ते, गाय इ० के शरीरमें लगनेवाली एक तरहकी मक्खी। [ *निकले।
कुकुरमुत्ता—पु० छत्रक, गोबरछत्ता।
कुकुरी—स्त्री० मुर्गी, कुतिया।
कुकुही—स्त्री० वन-कुक्कुट।
कुक्कुट—पु० मुर्गा। लुक, चिनगारी, चिनगी।
कुक्कुर—पु० कुत्ता।
कुक्षि—स्त्री० कोख, पेट। गुफा।
कुखेत—पु० बुरी जगह, कुठाँव 'असगुन होहिं नगर पैठारा। रटहिं कुभाँति कुखेत करारा।' रामा० २७४
कुख्यात—वि० जिसकी अपकीर्त्ति फैली हो, बदनाम।
कुख्याति—स्त्री० अपयश, बदनामी।
कुगति—स्त्री० दुरवस्था, दुर्गति।
कुगहनि—स्त्री० बुरा हठ, अनुचित आग्रह।
कुघा—स्त्री० दिशा, तरफ।
कुघात—पु० बुरा दाँव, छल कपट 'बड़ कुघात कर पातकिनि कहेसि कोपगृह जाहु।' रामा० २०९। कुअवसर।
कुच—पु० स्तन, उरोज। वि० कृपण, सङ्कुचित।
कुचकुचा—वि० कोंचा गया, मसला हुआ, ध्वस्तविध्वस्त 'काची रोटी कुचकुची, परती माछी बार।' गिरिधर०
कुचकुचाना—सक्रि० बार बार कोंचना।
कुचक्र—पु० साजिश, गुप्त आयोजन।
कुचक्री—पु० साजिश करनेवाला, षड्यन्त्रकारी।
कुचना—अक्रि० सङ्कुचित होना।
कुचलना—सक्रि० मसलना, दबाना, पाँवसे रौंदना।
कुचला—पु० एक पेड़ या उसका बीज जो विषैला होता है।
कुचाल—स्त्री० अनुचित आचरण। खोटाई, दुष्टता 'लखी कुचाल कीन्हि कछु रानी।' रामा० २१७।
कुचाली—वि० दुराचारी, दुष्ट 'एहि विधि विलपहिं पुर नरनारी। देहिं कुचालिहिं कोटिक गारी।' रामा० २२३ स्त्री० अनुचित आचरण '... दै गति बिना विवेक एक पा और कुचाली। अरपै कोऊ कोटि तिनैं लै करो कपाली।' दीन० २५८
कुचाह—स्त्री० अवाञ्छित सम्वाद, अमंगलसूचक बात।
कुचिया—स्त्री० छोटी टिकिया।
कुचिल—वि० देखो 'कुचील', 'पतिबरता मैली भली, काली कुचिल कुरूप।' साखी २०
कुची—स्त्री० कुञ्जी 'ज्ञान कपाट कुची जनु खोलत।' के० २४३, ( उदे० 'तारा' )। कूचा, ब्रश।
कुचील—वि० मैला कुचैला, मालिन, दुराचारी 'कामी कृपन कुचील कुदरसन कौन कृपा करि तार्यो।' सूवि० २५। गन्दा ( उदे० 'चिहुर', सू० २५९ )
कुचेल—वि० देखो 'कुचैला'। पु० मलिन वस्त्र।
कुचेष्टा—स्त्री० गर्हित चेष्टा, बुरी चाल।
कुचैन—स्त्री० दुःख, बेचैनी 'सोवत जागत सपन बस रस रिस चैन कुचैन।' बि० ९६। वि० व्याकुल।
कुचैला—वि० मलिन वेषधारी, मैला।
कुच्छित—वि० कुत्सित, अधम।
कुछ—वि० टुक, तनिक, थोड़ा, चन्द।—कुछ=जरा जरा, थोड़ा।—न-कुछ=थोड़ा बहुत।—का कुछ=उलटा।
कुजंत्र—पु० बुरा यन्त्र, टोना, 'कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रू। गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्रू।' रामा० ३००
कुज—पु० पेड़। मङ्गल ग्रह। नरकासुर। वि० लाल।
कुजा—स्त्री० धरणीसुता, जानकी।
कुजात, कुजाति—स्त्री० नीच जाति। पु० नीच जाति का व्यक्ति। पतित मनुष्य।
कुजोग—पु० कुयोग, बुरा मेल, बुरा संयोग 'ग्रह, भेषज जल पवन पट, पाइ कुयोग सुयोग।' रामा० ८
कुजोगी—वि० कुयोगी, असंयमी।
कुज्जा—पु० पुरवा, मिट्टीका पात्र ( साखी ४२ )।
कुटंत—स्त्री० कुटाई, मार, चोट।
कुट—पु० घर। पेड़। गढ़। घड़ा। स्त्री० एक झाड़ी।
कुटका—पु० किरका, छोटा टुकड़ा 'चन्दनकी कुटकी भली, ना बबूल बनराँव।' साखी १३५ [ मुनि।
कुटज—पु० कुरैया (दीन० २१९)। द्रोणाचार्य। अगस्त्य
कुटनई—स्त्री०, कुटनपन—पु० दूती कर्म।
कुटनहारी—स्त्री० धान इ० कूटनेका काम करनेवाली।
कुटना—अक्रि० पीटा जाना, कूटा जाना। पु० कूटनेका औज़ार। स्त्रियोंको फुसलाकर परपुरुषसे मिलानेवाला, दूत। झगड़ा पैदा करानेवाला।
कुटनाना—सक्रि० किसी स्त्रीको फुसलाकर कुमार्गपर ले जाना।
कुटनापन, कुटनापा—पु० देखो 'कुटनई'। [ले जाना।
कुटवाल—पु० कोतवाल ( कबीर २०२ )।
कुटनी—स्त्री० स्त्रियोंको फुसलाकर पर-पुरुषोंसे मिलानेवाली स्त्री, झगड़ा लगानेवाली स्त्री।

कुटाई—स्त्री० कूटनेका कार्य या उसकी मजदूरी ।
कुटिया—स्त्री० कुटी, छोटीसी झोपड़ी । मँड़ैया ।
कुटिल—वि० दुष्ट, टेढ़ा, वक्र, छली । पु० खल ।
कुटिलता—स्त्री०, कुटिलपन—पु० टेढ़ापन । दुष्टता, छल कपट ।
कुटिलाई—स्त्री० देखो 'कुटिलता' ।
कुटी, कुटीर—स्त्री० घास फूससे बना घर, झोपड़ी ।
कुटुंब, कुटुम—पु० परिवार 'उग्रसेन सब कुटुंब लै ता ठौर सिधायो ।' सूर्य० ४१६
कुटुंबी—पु० कुटुम्बवाला, कुटुम्बके लोग ।
कुटेक—स्त्री० बुरी टेक । दुराग्रह ।
कुटेव—स्त्री० बुरा अभ्यास ।
कुटौनी—स्त्री० धान कूटनेका कार्य या उसकी मजदूरी ।
कुट्टनी—दे० 'कुटनी' ।
कुट्टमित—पु० एक हाव ।
कुठला—पु० अनाज रखनेका मिट्टीका बना बरतन ।
कुठाँउ, कुठाँव—पु० बुरी जगह, कुठौर ।
कुठाट—पु० बुरा साज, बुरा आयोजन 'मोहि लगि यह कुठाट तेहि ठाटा ।' रामा० २१०
कुठाय—पु० कुठाँव, कुठौर 'सिर धुनि लीन्ह उसास असि मारेसि मोहि कुठाय ।' रामा० २१३
कुठार—पु० कुल्हाड़ा । भण्डार, कुठला ।
कुठारपाणि,-पानि—वि० जो हाथमें कुठार लिये हो । पु० परशुराम ।
कुठारी—पु० भण्डारी । स्त्री० कुल्हाड़ी, विनाश करनेवाली 'जनि दिनकर-कुल होसि कुठारी ।' रामा० २१५
कुठाहर, कुठौर—पु० बुरा स्थान, कुठाँव । अनुपयुक्त अवसर 'सो सब मोर पाप परिनामू । भयउ कुठाहर जेहि विधि बामू ।' रामा० २१६
कुठिया—स्त्री० अनाज रखनेका मिट्टीका गहरा बरतन ।
कुड़कुड़ाना—अक्रि० भीतर ही भीतर चिढ़ना । सक्रि० पशु पक्षियोंको भगाना ।
कुड़बुड़ाना—अक्रि० मन ही मन चिढ़ना ।
कुड्मल, कुडमल—पु० कली 'कुलिस कुन्द कुडमल दामिनि द्युति दसनन देखि लजाई ।' विन० १९५
कुडरी—स्त्री० विड़ई, गेंडुरी । नदीके घुमावके बीचकी ज़मीन ।
कुडौल—वि० बेडौल, कुरूप ।
कुढंग—पु० बुरी रीति, कुचाल । वि० भद्दा, बेढंगा ।
कुढंगा—वि० बुरी तरहका, भद्दा ।
कुढंगी—वि० बुरी चाल चलनेवाला । अशिष्ट, गँवार ।
कुढ़न—स्त्री० चिढ़, अव्यक्त क्रोध ।
कुढ़ना—अक्रि० चिढ़ना, खार खाना, डाह करना ।
कुढ़ाना—सक्रि० चिढ़ाना, क्रुद्ध करना, तङ्ग करना, कुञ्ज-
कुणप—पु० इङ्गुदी, राँगा, मृतदेह, बरछी, दुर्गन्धि । [पाना
कुतका—पु० अँगूठा । मोटा डण्डा, घोंटनेका डण्डा ।
कुतना—अक्रि० कूता जाना ।
कुतरना—सक्रि० दाँतसे कुछ अंश काट लेना ।
कुतरा—पु० कुत्ता ( कबीर ३०४ ) ।
कुतर्क—पु० बे-सिर पैरकी दलील, वितण्डावाद ।
कुतवार—पु० कोतवाल ।
कुतवारी—स्त्री० कोतवालका काम या उसका दफ्तर ।
कुतवाल, कुतवाली—देखो 'कुतवार', 'कुतवारी' ।
कुताही—स्त्री० कमी, कसर ।
कुतुक—पु० इच्छा । देखो 'कौतुक' ( साकेत ६९ ।
कुतुब—पु० ध्रुवतारा । स्त्री० 'किताब' का बहुवचन ।
कुतुबनुमा—पु० ध्रुवदर्शक यन्त्र ।
कुतुबफरोश—पु० पुस्तक-विक्रेता ।
कुतूहल—पु० तमाशा, खिलवाड़ । अचम्भा । उत्कण्ठा ।
कुत्ता—पु० श्वान, लपटौवाँ घास ।
कुत्सा—स्त्री० निन्दा ।
कुत्सित—वि० निन्दित, नीच, बुरा ।
कुथ—पु० कथरी । ओहार, झूल । एक कीड़ा ।
कुदकना—अक्रि० कूदना-फाँदना ।
कुदरत—स्त्री० प्रकृति, माया । महिमा । कारीगरी । शक्ति, सामर्थ्य ।
कुदरा—पुं० देखो 'कुदार' ।
कुदर्शन—वि० जो देखनेमें सुन्दर न हो, बदसूरत ।
कुदलाना—अक्रि० उछलना, कूदना ।
कुदाँव—पु० कुघात, धोखा । बुरी स्थिति, बुरा स्थान ।
कुदाई—वि० कुघात करनेवाला, धोखा देनेवाला ।
कुदाउ—पु० देखो 'कुदाँव' । 'नृप सनेह लखि धुनेउ सिर पापिनि कीन्ह कुदाउ ।' रामा० २३४
कुदान—स्त्री० कूदनेकी क्रिया । पु० अपात्रको दान ।
कुदाना—सक्रि० कूदनेके लिये प्रेरित करना, दौड़ाना ।
कुदाम—पु० खोटा रुपया ।
कुदाय—पु० देखो 'कुदाँव' ।
कुदार, कुदारी, कुदाली—स्त्री० मिट्टी खोदनेका औज़ार ( सू० २११ ), 'मरमी सज्जन सुमति कुदारी ।

ग्यान विराग नयन उरगारी।' रामा० ६०९
कुद्दाल—स्त्री० कुदारी ( कविप्रि० ८५ )।
कुदिन—पु० बुरा दिन, विपत्तिकाल।
कुदिष्ट, कुदृष्टि—स्त्री० बुरी नज़र, पाप दृष्टि 'इन्हहिं कुदिष्ट बिलोकै जोई। रामा० ४००
कुदेव—पु० भूसुर, ब्राह्मण। राक्षस, दानव।
कुद्रव—पु० कोदो। पु० तलवार चलानेका एक प्रकार।
कुधर—पु० पहाड़। शेषनाग।
कुधातु—स्त्री०हलकी धातु, लोहा 'पारस परसि कुधातु सोहाई।'रामा० ५
कुनकुना—वि० कुछ कुछ गरम।
कुनना—सक्रि० खरोंचना, खरादना।
कुनबा—पु० कुटुम्ब।
कुनबी—पु०एक हिन्दू जाति जो खेतीका काम करती है।
कुनवा—पु० खरादका काम करनेवाला मनुष्य।
कुनह—पु० द्वेष, मनमोटाव, खुनस वैमनस्य।
कुनाई—स्त्री० लकड़ी इ० खरादने या खुरचनेपर निकली हुई बुकनी।
कुनित—वि० गुञ्जार करता हुआ, बजता हुआ, शब्दायमान 'नूपुर पद कुनित पीताम्बर कटि बाँधे, लाल उपरना सिर मोरनके चँदवा।' श्रीकृष्णदास
कुपंथ—पु० बुरा रास्ता। वर्जित मार्ग, कुत्सित सिद्धान्त, कुचाल ( रामा० १२७ )।
कुपढ़—वि० निरक्षर, मूर्ख।
कुपथ—पु० कुमार्ग, कुचाल। स्वास्थ्यके लिए हानिकारक भोजन 'कुपथ माँगु रुज व्याकुल रोगी।' रामा० ७७
कुपथ्य—पु० अपथ्य, हानिकारक भोजन।
कुपना—अक्रि०कोप करना,नाराज़ होना। [रामा०१०८
कुपाठ—पु० बुरी सलाह 'कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू।'
कुपात्र—वि० वह,जो दान विश्वास आदिके अयोग्य हो, अनधिकारी।
कुपार—पु० सागर, समुद्र।
कुपित - वि० नाराज़, क्रुद्ध।
कुप्पा—पु० चमड़ेका बड़ा बरतन।
कुफ़ुर,कुफ़्र—पु०मुसलमानी मतसे भिन्न और कोई मत।
कुबंड—पु० कोदण्ड, धनुष। वि० विकृतांग।
कुबड़ा—वि० झुका हुआ। पु० टेढ़ी पीठवाला।
कुबत—स्त्री० बुरी बात, कुचाल, निन्द्य आचरण 'कहति न देवरकी कुबत कुल तिय कलह डराति।' बि० ४०
कुबरी—स्त्री० कंसकी एक दासी, कुब्जा। मन्थरा।
कुबली—स्त्री० पिंडी।
कुबाक—पु० अनुचित वाणी, शाप। तजी संक सकुचति नचति बोलति बाक कुबाक।' बि० ९२
कुबानि—स्त्री० बुरी टेव।
कुबुद्धि—स्त्री० दुर्बुद्धि, नासमझी, मूर्खता। वि० मूर्ख।
कुबेर—पु० कुवेर, यक्षराज।
कुबोलनी—वि० स्त्री० कुभाषिणी।
कुब्बा—पु० कूबड़, कोहान।
कुमंठी—स्त्री० लचीली कमची या टहनी।
कुमंत्रणा—स्त्री० बुरी सलाह।
कुमक—स्त्री०साहाय्य। सहायताके लिए भेजी गयी फौज। पक्षपात।
कुमकुम—पु० केसर। देखो 'कुकुमा'।
कुमकुमा—पु० देखो 'कुकुमा'।
कुमाच—पु० एक तरहका रेशमी वस्त्र 'काम जो आवै कामरी, का लै करै कुमाच।' दोहा० १५४
कुमार—पु० पुत्र, बालक। राजपुत्र। कार्त्तिकेय। वि० अविवाहित।
कुमारग—पु० बुरा मार्ग।
कुमारिका, कुमारी—वि० स्त्री० अविवाहिता। स्त्री० १२ वर्षतककी या अविवाहित लड़की।
कुमारिल—पु० प्रसिद्ध मीमांसक।
कुमार्ग—पु० बुरा रास्ता, कुपन्थ।
कुमार्गी—वि० लम्पट, दुराचारी, अधर्मी।
कुमुद-कर—पु० चन्द्रकिरण।
कुमुद-कला—स्त्री० चन्द्रकला।
कुमुदकिरण—स्त्री० चन्द्रकिरण 'तुहिनबिंदु बनकर सुन्दर, कुमुदकिरणसे सहज उतर' वीणा
कुमुदबंधु—पु० चन्द्रमा।
कुमुदिनी—स्त्री० कुँई।
कुमुदिनीनाथ—पु० चन्द्रमा।
कुमेरू—पु० दक्षिणी ध्रुव।
कुमोद—पु० कुमुदिनी, कुँई।
कुमोदनी, कुमोदिनी—देखो 'कुमुदिनी'।
कुम्मैत, कुम्मैद—पु० कुछ कालापन लिये हुए लाल रंग या इस रंगका घोड़ा।
कुम्हड़ा, कुम्हाड़ा—पु० काशीफल ( अ० १३ )। कुम्हड़ बतिया=कुम्हड़ेका छोटा फल; निर्बल मनुष्य 'इहाँ कुम्हड़-बतिया कोउ नाहीं।'रामा०१४८ [बरी।
कुम्हड़ौरी—स्त्री०कुम्हड़ा और उरद मिलाकर बनायी हुई

कुम्हलाना—अक्रि० मुरझाना, प्रसन्नता रहित या कान्ति-हीन होना।
कुम्हार—पु० देखो 'कुँभार'।
कुम्ही—स्त्री० पानीपर फैलनेवाला एक पौधा।
कुयोनि—स्त्री० नीच योनि, तिर्यग्योनि।
कुरंग—पु० बुरा लक्षण। लालकी तरहका रंग। इस रंगका घोड़ा। हिरन, मृग। वि० बदरंग, बुरे रंगका।
कुरंगक,-नाम—पु० कुरंग, मृग।
कुरंगलांछन—पु० चन्द्रमा।
कुरंगसार—पु० कस्तूरी।
कुरंगिन—स्त्री० मृगी।
कुरकुट—पु० मुर्गा, कुक्कुट 'ललितकिसोरी सुनि यहि बानी, कुरकुट विसद पुकारे।' ललितकि०। छोटा टुकड़ा।
कुरकुटा—पु० टुकड़ा, रवा। कड़ा मोटा अन्न। रोटीका टुकड़ा। 'जूठ कुरकुटा भीखहिं खाहा। जोगी तात भात पर काहा।' प० ६०
कुरकुर—पु० खरी चीजोंके दबकर टूटनेका शब्द।
कुरकुरा—वि० जिसके दबकर टूटनेसे कुरकुर शब्द हो। कड़ा, करारा।
कुरच—पु० क्रौंच, टिटिहरी।
कुरता, कुर्ता—पु० एक तरहका पहनावा।
कुरती, कुर्ती,—स्त्री० औरतोंका एक पहनावा।
कुरना—अक्रि० ढेर लगना, गिरना 'पारावार पूरन अपार परमब्रह्म रासि, जसुदाके कोरे एक बारही कुरै परी।' देव ( गंज० २७३ )। पक्षियोंका कलरव करना।
कुरबक—पु० कटसरैया।
कुरबान—वि० न्योछावर किया हुआ।
कुरबानी—स्त्री० बलि देनेकी क्रिया, बलि।
कुरमा—पु० कुनबा, परिवार ( कवि प्रि० १२२ )।
कुररा—पु० (स्त्री० कुररी) क्रौंच। टिटिहरी 'बिलपति अति कुररीकी नाईं।' रामा० ३८२
कुरल—पु० कुण्डली 'वह भाव कुरल कुहरे-सा भरकर आया।, सुमित्रानंदन १०।
कुरलना—अक्रि० कलरव करना 'खूँदहिं कुरलहिं जनु सर हंसा।' प० १५२, ( १६३ )
कुरला स्त्री०—क्रीड़ा 'कुरला काम केरि मनुहारी।' प० १५२। कुल्ला।
कुरव—पु० एक पौधा, एक वृक्ष। वि० कर्कश स्वरवाला
कुरवना—सक्रि० कूरा लगाना। एक साथ बड़े मिकदारमें गिराना।
कुरवारना—सक्रि० खोदना, खरोंचना 'सुख कुरवारि फरहरी खाना।' प० ३१, ( अ० १४२ )
कुरसी—स्त्री० एक तरहका ऊँचा आसन या चौकी। मकानका ऊँचा फर्श। चौकी या तावीज़। पुश्त।
कुरसीनामा—पु० वंशपरम्परा सूचक पत्र, वंशवृक्ष।
कुरा—पु० एक पोधा, कटसरैया।
कुराई—स्त्री०कुराह, देखो 'कुराय'। 'कुस कंटक काँकरी कुराईं। कटुक कठोर कुवस्तु दुराईं।' रामा० ३४८
कुरान—पु० मुसलमानोंका धर्म-ग्रंथ।
कुराय, कुराह—स्त्री० कुमार्ग, ऊँची नीची जगह, गड्ढा।
कुराहर—पु० कोलाहल, शोर 'काग कुराहर करि सुख पावा।' प० २११ ( ८६ )
कुराही—पु० दुराचारी, कुमार्गी 'कुटिल कुराही कुलदोषी सो कलंक भरो कुमति मते मैं अति महामद पूर है।'—रघुनाथ। स्त्री० कुमार्गगमन, दुराचार।
कुरिया—स्त्री० महल, मकान (बीजक ६८)। राशि ढेर।
कुरियाल—स्त्री० चिड़ियोंका फुरहरी इ० लेना।
कुरिहार—पु० कोलाहल, 'को नहिं करै केलि कुरिहारा।' प० २०९
कुरी—पु० कुल 'अस्टौ कुरी नाग सब, अरुझ केसके बाँद।' प०४४। समूह, राशि, 'तेइ सत ब्रोहित कुरी चलाये।' प० ६८ (१२९, १८१ भी), टीला। स्त्री० टुकड़ा। कुरी कुरी होना=खण्ड खण्ड होना।
कुरीति—स्त्री० बुरी रस्म, कुप्रथा, कदाचार।
कुरु—पु० देश विशेष, एक चन्द्रवंशी राजा।
कुरुख—वि० वक्र दृष्टियुक्त, क्रोधित ( भू० ११,११७)
कुरुखि—स्त्री० वक्रदृष्टि, कटाक्ष 'बार बार अवलोकि कुरुखियन, कपट नेह मन हरत हमारे।' सू० १६२
कुरुखेत—पु० कुरुक्षेत्र।
कुरुम—पु० कछवा।
कुरुरना—अक्रि० कलरव करना, बोलना, 'मोरे अँगना चननकर गछिया ताहि चढ काग कुरुरयेरे' ( विद्या २८९ )। [ ५५९ ), उरद। कवियानोत
कुरुविंद—पु० मोथा, ईंगुर, शीशा, मानिक ( रत्न
कुरूप—वि० बदशकल, कुडौल, भद्दा।
कुरेदना—सक्रि० खरोंचना।

कुरेर—पु० कलोल, क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद।
कुरेलना—सक्रि० कुरेदना, खोदना।
कुरैना—सक्रि० ढालना। ढेर लगाना। पु० राशि, ढेर।
कुरैया—स्त्री० एक जङ्गली वृक्ष।
कुरौना—सक्रि० ढेर लगाना, ढालना।
कुर्क०—वि० ज़ब्त।
कुर्जा—स्त्री० एक छोटी चिड़िया (ग्राम० ४८)।
कुर्मी—पु० खेती करनेवाली एक जाति।
कुर्सीनामा—पु० देखो 'कुरसीनामा'।
कुलंग—पु० लम्बी गरदनवाला एक जलपक्षी। मुर्गा,। छलाङ्ग, चौकड़ी 'हरि कुलङ्ग करि कूद्यो एक।' हम्मीर-[हठ
कुलंज, कुलंजन—पु० एक तरहका पौधा।
कुल—पु० वंश, कुनबा, जाति, समूह। वि० सब।
कुलकना—अक्रि० प्रसन्न होना, हर्षसे उछलना।
कुलकानि—स्त्री० वंशकी मर्यादा।
कुलकुल—पु० जल प्रवाह-जनित शब्द।
कुलकुलाना—अक्रि० कुलकुल आवाज़ करना।
कुलक्षण,-लच्छन—पु० बुरा चिह्न, ऐब, खोटी चाल।
कुलक्षणी, कुलच्छनी—स्त्री० बुरे लक्षणवाली या बद-चलन स्त्री। वि० बुरे लक्षणवाला, दुराचारी।
कुलजा—स्त्री० ऊँचे कुलमें उत्पन्न स्त्री।
कुलटा—वि० स्त्री० व्यभिचारिणी।
कुलतारन,-तारक—वि० कुलको तारनेवाला, वंशोद्धारक।
कुलथी—स्त्री० एक कदन्न।
कुलना—अक्रि० दर्द करना, टीसना।
कुलपति—पु० कुटुम्बका मुखिया, गृह-स्वामी। दस हजार शिष्योंको शिक्षा तथा अन्नदान देनेवाला आचार्य, [पीठाध्यक्ष।
[कु]लफ—पु० ताला।
[कु]लफत—स्त्री० चिन्ता, मानसिक कष्ट।
[कु]लफा—पु० एक तरहका साग।
[कु]लफी—स्त्री० बर्फ जमानेका चोंगा। दूध इ० मिलाकर चोंगेमें जमायी हुई बर्फ।
[कु]लबुलाना—अक्रि० व्याकुल होना, चलना-फिरना, सुजलाना (हाथ या पाँव)। देखो 'किलबिलाना'।
[कु]लवंत,'कुलवान्—वि० अच्छे कुलवाला, कुलीन।
[कु]लवधू—स्त्री० अच्छे घरकी स्त्री, मर्यादापूर्वक रहनेवाली स्त्री।
[कु]लह, कुलहा—स्त्री० टोपी। शिकारी पक्षियोंकी आँखों-परका ढक्कन 'कुमति-विहङ्ग-कुलह जनु खोली।' रामा० २१२
कुलही—स्त्री० कनटोप, बच्चोंकी टोपी (सू० ५१)।
कुलांगार—पु० कुलको नष्ट करनेके लिए अग्निस्वरूप, कुलबोरन।
कुलाँच, कुलाँट—स्त्री० छलाँग, चौकड़ी।
कुलाँचना—अक्रि० चौड़ी मारना, छलाँग मारना, दौड़-[धूप करना।
कुलाधि—स्त्री० पाप।
कुलाबा—पु० लोहेका काँटा जिससे किवाड़ चौखटके साथ जड़ा रहता है।
कुलाल—पु० कुम्हार (भ्र० ९२, सू० २३)
कुलाह—स्त्री० एक तरहकी ऊँची टोपी।
कुलाहल—पु० कोलाहल, शोर-गुल 'जब गहि बाँह कुलाहल कीनों तब गहि चरण निहोरी।' सूबे० ६५
कुलिंग—पु० एक पक्षी।
कुलिक—पु० कारीगर। जाति या खानदानका मुखिया। [एक नाग।
कुलिया—स्त्री० तङ्ग गली।
कुलिश, कुलिस—पु० वज्र, 'कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि।' रामा ५४;। हीरा। भगवान्के चरणोंका वज्राकार चिह्न।
कुली—पु० मजदूर, बोझा ढोकर रोजी कमानेवाला।
कुलीन—वि० उच्च वंश-सम्भूत, शुद्ध।
कुलुफ—पु० ताला 'जुलफमें कुलुफ करी है मति मेरी छलि एरी अलि कहा करौं कल ना परति है।' [दीन० १०
कुलेल—स्त्री० कलोल, क्रीड़ा।
कुलेलना—अक्रि० आमोद-प्रमोद करना। किलोल करना।
कुल्या—स्त्री० नाला, नहर। कुलवती स्त्री।
कुल्ला—पु० मुँहमें पानी लेकर इधर उधर करना और बाहर फेंकना।
कुल्ली—स्त्री० देखो 'कुल्ला'। काकुल, जुल्फ।
कुल्हड़—पु० पुरवा।
कुल्हरा, कुल्हाड़ा—पु० पेड़ या लकड़ी काटनेका औजार, कुठार। (रघु०१९७)। बड़ा कुल्हड़ (अ१०४०)
कुल्हरी, कुल्हाड़ी—स्त्री० छोटा कुल्हरा, कुठार, 'ऐसे भारी वृक्षको कुल्हरी देत गिराय।' गिरिधर०
कुल्हिया—स्त्री० छोटा कुल्हड़, छोटा पुरवा 'खुलिहै खुले कपाटके तजि कुल्हियाको मोह।' दीन० २२३
कुव—पु० पुष्प, कमल।

कुवलय—पु० नीला कमल । भूमण्डल ।
कुवलयापीड़—पु० एक हाथी जिसे कृष्णने मारा था ।
कुवाँ—पु० कूप, इनारा ।
कुवाँर, कुवार—पु० आश्विन मास ।
कुविचार—पु० कुत्सित विचार, बुरा खयाल ।
कुवेर—पु० धनके देवताका नाम, धनपति, अलकापति, राजराज ।
कुश, कुस—पु० काँसकी तरहकी एक घास । दाभ, दर्भ । पानी । कुसिया । लवके बड़े भाई ।
कुशध्वज—पु० जनकके छोटे भाईका नाम ।
कुशल—वि०,स्त्री० देखो 'कुसल' ।
कुशलता—स्त्री० कौशल, चतुरता, निपुणता ।
कुशलाई,—लात—स्त्री० देखो 'कुशलाई' 'कुसलात' ।
कुशली—वि० स्त्री० चतुर 'नियति बन कुशली चितेरा रँगगई सुखदुख रँगों से, मृदुल जीवन पात्र मेरा' सांध्यगीत ३५ ।
कुशाग्र—वि० पैना, नुकीला, तीव्र, तीक्ष्ण ।
कुशादगी—स्त्री० फैलाव, विस्तार ।
कुशादा—वि० विस्तृत, जिसमें खूब जगह हो,खुला हुआ ।
कुशासन—पु० कुशका बना आसन । कु-शासन=बुरा शासन । [ फाल ।
कुशिक—पु० विश्वामित्रके पितामह । बहेड़ा । हलकी
कुशीलव—पु० नट, गायक । कवि ।
कुशेश, कुशेशय—पु० कमल ( कुशेश-भ्र० ९९ ) ।
कुश्ता—पु० धातुसे रासायनिक क्रियाद्वारा बनायी हुई [ भस्म ।
कुश्ती—स्त्री० मल्लयुद्ध ।
कुश्तीबाज़—वि० कुश्ती लड़नेवाला ।
कुष्ट, कुष्ठ—पु० कोढ़ नामक रोग ।
कुष्टी, कुष्ठी—पु० कोढ़ी ( साखी ९५ ) ।
कुष्मांड—पु० कुम्हड़ा ।
कुसंग—पु०, कुसंगति—स्त्री० बुरोंका साथ, खराब [सोहबत ।
कुसगुन—पु० असगुन, अशुभ लक्षण ।
कुसमय—पु० अनुपयुक्त समय, विपत्तिकाल ।
कुसरात, कुसलात—स्त्री० कुशल, क्षेम 'दच्छ न पूछी कछु कुसलाता ।' रामा० ४०, (कुसरात, सुजा० ६४)
कुसल—स्त्री० क्षेम, राज़ी-खुशी 'अब कहु कुसल बालि कहँ अहई ।' रामा० ३६० । वि० चतुर, भला, अच्छा, पुण्यशील ( रामा० १५७ ) ।
कुसलई—स्त्री० चतुरता, दक्षता ।
कुसलाई—स्त्री० चतुरता, निपुणता । राज़ीखुशी, कुशल क्षेम ( रामा० १६५ ) ।
कुसाइत—स्त्री० अशुभ मुहूर्त्त, कुसमय ।
कुसाखी—पु० बुरा पेड़ । [ भरा होता है ।
कुसियार—पु० एक तरहकी ऊख जिसमें रस खूब
कुसी—स्त्री० हलकी फाल जिससे ज़मीन खुदती है ।
कुसुंभ—पु० कुंकुम, केसर । बरें, कुसुम ।
कुसुंभी—वि० कुसुमकी तरह लाल 'हरियर भूमि,कुसुंभी चोला । औ धनि पिउ सँग रचा हिंडोला ।' प० १६१
कुसुम—पु० फूल, प्रसून । एक नेत्ररोग । रजोदर्शन । एक पेड़ जिसके फूलोंसे लाल रङ्ग बनता है ।
कुसुमपुर—पु० पटना नगरका एक पुराना नाम ।
कुसुमबाण,-शर, कुसुमायुध—पु० कामदेव ।
कुसुमाकर—पु० वसन्त । उद्यान ।
कुसुमासव—पु० पुष्परस, पुष्पमधु ।
कुसुमित—वि० फूलोंसे युक्त, फूला हुआ ।
कुसूत—पु० बुरा सूत, बुरी व्यवस्था ।
कुसेस,कुसेसय—पु० कमल ।
कुस्टी—पु० कोढ़ी 'बाहन बैल, कुस्टिकर भेसू ।' प० ९०
कुहँकुहँ, कुहकुह—पु० कुमकुम, केशर ( प० ११ ) 'पेट परत जनु चन्दन लावा । कुहँकुहँ केसर बरन सुहावा ।' प० ५०
कुहँचा—पु० कलाई, पहुँचा ( हिम्मत० २२ ) ।
कुहक, कुहुक—पु० इन्द्रजाल, जादू, धोखा । जादूगर, ठग, छलिया । कुक्कुट आदिकी बोली ।
कुहकना—अक्रि० दे० 'कुहुकना' ।
कुहकिनि—स्त्री० जादूगरनी, कामायिनी ।
कुहकुहाना—अक्रि० ( कोयलका ) कूकना (भ्र० ३८)
कुहना—सक्रि० मारना 'पाहि हनुमान, करुनानिधान राम पाहि कासी कामधेनु कलि कुहत कसाई है ।' कविता०२४९ । पु० गान, अलाप ।
कुहनी—स्त्री० देखो 'कोहनी' ।
कुहप—पु० निशाचर, राक्षस ।
कुहर—स्त्री० एक शिकारी पक्षी । पु० छिद्र ।
कुहर,कुहरा—पु० जमी हुई भाफके जलकण जो मिले रहते हैं 'ज्यों रवि तेज पाइ दसहूँ दिसि कुहरको फाट्यो ।' सूबे० ३९

कुहराम—पु० शोरगुल, रोना चिल्लाना। खलबली।
कुहरित—वि० शब्दायमान 'मगमें पिक-कुहरित डाल-डाल।' तुलसीदास ४०
कुहाड़ा, कुहारा—पु० कुल्हाड़ी (उदे० 'उनमेद'), ज्ञानकुहाड़ा कर्मबन, काटि किया मैदान।' साखी २६
कुहाना—अक्रि० कुपित होना, रूठना 'जानेउँ मरम राउ हँसि कहई। तुम्हहिं कुहाब परम प्रिय अहई।' [रामा० २१२
कुहासा—पु० देखो 'कुहरा'।
कुही—स्त्री० एक शिकारी पक्षी, 'कुहर'। 'कुही सम सुकुल मयूरसे तिवारी भारी, जुर्रा सम मिसिर नवैया नहीं माथके।'—हरिनाथ। पु० एक तरहका घोड़ा।
कुहु, कुहू—स्त्री० अमावस्या (सू० ११९)। कोयल इत्यादिकी कूक। अँधेरी रात (सू० १४)।
कुहुकंठ—पु० कोयल।
कुहुक—स्त्री० कूजन, चिड़ियोंकी मीठी आवाज़।
कुहुकना—अक्रि० कोयल इ० पक्षियोंका मीठे स्वरमें बोलना 'कुहुकहिं मोर सोहावन लागा।' प० १३
कुहुक बान—पु० एक तरहका बाण।
कुहेलिका—स्त्री० कुहरा।
कूँख—स्त्री० कुक्षि, उदर, गर्भ। काँखनेका शब्द।
कूँखना—अक्रि० काँखना।
कूँचना—सक्रि० कुचलना।
कूँचा—पु० बढ़नी, झाड़ू।
कूँची—स्त्री० छोटी झाड़ू, ब्रश। कुंजी 'सहज कपाट उघार गये ताला कूँची टूट।' सूबे० २९७
कूँज—पु० एक तरहकी चिड़िया, क्रौंच। [१९१)।
कूँजना—अक्रि० पक्षियोंका मधुर शब्द करना (सू०
कूँड—स्त्री० लोहेकी ऊँची टोपी, शिरस्त्राण (उदे० 'अँगरी'), 'रुण्ड मुण्ड अब टूटहिं स्यो बखतर औ कूंड़। प० ३१९ (३२२ भी)। मिट्टी या धातुका गहरा, चौड़ा बरतन।
कूँडा—पु० कुण्डा, मिट्टीका चौड़ा बरतन। गमला।
कूँडी—स्त्री० कुण्डी, पथरी। गेंडुरी।
कूँथना—अक्रि० कराहना। कबूतरोंका बोलना।
कूँदना—सक्रि० खरादना, 'कुन्दन बेल साजि जनु कूँदे।' प० ५७ [प० ५७
कूँई—स्त्री० कुमुदिनी 'अब कित दीठ कमल औ कूँई।'
कूक—स्त्री०कोयल इ०की बोली;सुरीला स्वर(दीन०२२६)

कूकना—अक्रि० कोयल इत्यादिका बोलना, कुहुकना। चिल्लाना, किलकारी मारना (छत्र०२०)।
कूकर—पु० कुत्ता। [तुच्छ वस्तु।
कूकरकौर—पु० कुत्तेके आगे डाला गया जूठा भोजन।
कूकस—पु० भूसी (उदे० 'कन', 'कनी')।
कूका—पु०सिक्खोंका एक सम्प्रदाय। लम्बी गहरी आवाज़ (बुन्देल०)।
कूच—पु० प्रस्थान, प्रयाण (रवि० २४) देवता कूच कर जाना = बदहवाससा हो जाना, स्तब्ध हो जाना।
कूचा०—पु० सङ्कीर्ण पथ। झाडू (ललित ३७)। क्रौंच पक्षी, करांकुल 'बाएँ कुररी, दहिने कूचा।' प० ६१
कूचिका, कूची—स्त्री० बालों आदिका ब्रश, बालोंकी
कूज, कूजन—स्त्री० मधुर ध्वनि। [क़लम, तूलिका।
कूजना—अक्रि० मधुर ध्वनि करना।
कूजा—पु० बेलेका फूल 'सुरँग गुलाल कदम औ कूजा।' प० १५। कुज्जा, कुल्हड़। कुज्जेकी मिसरी।
कूजित—पु० पक्षीकी आवाज़, कूजन, अस्पष्ट शब्द। वि० गूँजा हुआ, ध्वनित।
कूट—पु० गूढ़ अर्थवाला व्यंग्य। गुप्त भेद, कठिन अर्थ-वाली रचना। घड़ा। झूठ। धोखा। गिरिशिखर। अनाज इ० का ऊँचा ढेर। जाल। सींग। हथौड़ा। टूटे सींगवाला बैल 'हे रसाल अज कूट कपि कोल क्रमेलक अन्ध।' दीन० १५। निहाई। कालकूट 'का वह पङ्खि कूट मुँह कूटे। अस बड़ बोल जीभ मुख छोटे।' प० ३६। वि० झूठा, छलिया। बनावटी, धर्म-च्युत। स्त्री० कुटी। कुट नामक औषध (उदे० 'कटजीरा')।
कूटना—सक्रि० कुचलना, मारना, पीटना।
कूटनीति—स्त्री० राजनीतिक चालबाजी, छद्म-नीति।
कूटस्थ—वि० अटल। गुप्त। सर्वोत्तम।
कूड़ा—पु० कचड़ा, कतवार।
कूढ़—वि० मूर्ख, नासमझ (मुद्रा० ४४)। पु० हलका
कूढ़मग्ज—वि० जड़बुद्धि, कुन्दज़िहन। [एक भाग।
कूतना—सक्रि० अनुमान करना। [जाना।
कूदना—अक्रि० उछलना, पहुँच जाना। सक्रि० लाँघ
कूप—पु० कुआँ, कुण्ड।—मंडूक=कुएँका मेंढक, जिसको बाहरका ज्ञान न हो। अनुभवहीन व्यक्ति।
कूब, कूबड़, कूबा—पु० पीठपरका उठा हुआ भाग 'कूबरीको कूब काढि लाय दे सिताबी हमैं टोपी करि

ताकी तव गोरी जोगिनी वर्नै ।' ग्वाल
कूवरी—स्त्री० कुबरी ( कंसकी दासी ), कैकेयीकी दासी ।
क्रूर—वि० दुष्ट, निर्दय, डरावना, निकम्मा, मूर्ख । मिथ्या ( सुन्द० ८८ ) ।
क्रूरता—स्त्री० कठोरता, कायरता, मूर्खता ।
कूरम—पु० कछुवा । पृथिवी ।
कूरा—पु० राशि, ढेर 'विन जिठ पिण्ड छारकर कूरा ।' प० ९१ भाग, अंश । वि० कुटिल 'कवीर नाव है झाँझरी, कूरा खेवनहार ।' साखी ७७
कूरी—स्त्री० टीला धुस ( प० २१८ ) । छोटी राशि ।
कूर्म—पु० कछुवा । विष्णुका एक अवतार । पृथ्वी ।
कूल—पु० तट, किनारा । निकट, पास 'रक्षिवेकोको यज्ञ कूल बैठि वीर सावधान ।' राम० ३२
कूलिनी—स्त्री० नदी ।
कूल्हा—पु० पेड़के दोनों ओरकी हड्डी । चूतड़ ।
कूवत—स्त्री० ताक़त, बल ।
कूवर—पु० हरिस, हलमें जूआ बाँधनेकी जगह, गाड़ीका बम ।
कूष्मांड—पु० कुम्हड़ा, पेठा ।
कूह—स्त्री० चीख । विषाद ।
कूही—स्त्री० एक शिकारी पक्षी, कुही ।
कृच्छ्र—पु० दुःख, पाप । वि० कष्टयुक्त ।
कृत—त्रि० किया हुआ, रचित । पु० सतयुग, करनी, कार्य ।
कृतक—वि० अनित्य कृत्रिम ।
कृतकाम, कृतकृत्य—वि० कृतार्थ ।
कृतघ्न, कृतघ्नी—वि० अकृतज्ञ, नमकहराम ।
कृतघ्ननाई—स्त्री० नमकहरामी, अकृतज्ञता ।
कृतज्ञ—वि० उपकार माननेवाला ।
कृतयुग—पु० सतयुग ।
कृतविद्य—वि० शास्त्र दक्ष, पण्डित, विद्वान् ।
कृतहीन—वि० कृतघ्न ( उदे० 'पतीजना' ) ।
कृतांत—पु० यमराज, मृत्यु ।
कृतात्मा—पु० महात्मा, शुद्धात्मा ।
कृतार्थ—वि० जिसका मनोरथ पूरा हो गया हो, सन्तुष्ट ।
कृतास्त्र—वि० जिसने अस्त्र चलाना सीखा हो, धनुर्विद्यामें निपुण । अस्त्रोंसे सुसज्जित ।
कृति—स्त्री० कार्य, रचना । क्षति । जादू । एक छंद ।
कृतिवास, कृत्तिवास—पु० कृत्ति ( चमड़ा ) ही वस्त्र है जिनका ऐसे शिवजी ।
कृती—वि० पण्डित, चतुर, कृतार्थ, पुण्यवान् ।
कृत्तिका—स्त्री० एक नक्षत्र । गाड़ी, शकट ।
कृत्य—पु० कर्तव्य, कर्म ।
कृत्या—स्त्री० शत्रु-विनाशार्थ मन्त्रद्वारा उत्पन्न भयावह स्त्री, 'पिशाचिनी' ।
कृत्रिम—वि० बनावटी, नकली ।
कृदंत—पु० धातुमें कृत्-प्रत्यय लगाकर बनाये हुए शब्द ।
कृपण, कृपन—वि० कजूस, अनुदार । असहाय, दीन, नीच, पतित 'कृपा निधान सूरकी यह गति कासों कहै कृपण यहि काल ।' सूवि० ४०
कृपणता—स्त्री० कंजूसी, क्षुद्रता ।
कृपनाई—स्त्री० कंजूसी, क्षुद्रता ।
कृपा—स्त्री० दया, अनुग्रह ।
कृपाण, कृपान—स्त्री० तलवार, कटार ।
कृपाणी—स्त्री० छोटी तलवार, कटारी ।
कृपालता, कृपालुता—स्त्री० दयाभाव, दयालुता ।
कृपिण, कृपिन—वि० कंजूस । नीच । (रामा० ४४४) ।
कृपिणता, कृपिनता, कृपिनाई—स्त्री० देखो 'कृपनाई' ।
कृमि—पु० छोटा कीड़ा ।
कृश—वि० दुर्बल, क्षीण, सूक्ष्म ।
कृशता, कृशताई—स्त्री० दुर्बलता, क्षीणता, अल्पता ।
कृशानु—पु० अग्नि । चित्रक ।
कृशित—वि० दुबला, क्षीण ।
कृषक—पु० किसान, काश्तकार ।
कृषि, कृषी—स्त्री० खेती ।
कृषिफल—पु० फसल, पैदावार 'दलमल देते, पर्णोपम वन, वाछित 'कृषिफल ।' पल्लव १२१
कृषीवल—पु० किसान ( सूसु० ११ ) ।
कृष्ण—वि० काला, साँवला, नीला, अँधेरा, (कृष्णपक्ष) । पु० वासुदेव, पिक, अर्जुन, कलि इ० ।
कृष्णद्वैपायन—पु० व्यासजी ।
कृष्णलोह—पु० चुम्बक ।
कृष्णसार—पु० एक तरहका काला मृग । सेंहुड़ । शीशम
कृष्णा—स्त्री० द्रौपदी । आँखकी पुतली । काली तुलसी
केंचुआ-वा—पु० एक बरसाती कीड़ा । जो लगभग एक बालिश्त लम्बा होता है । पेटका एक कीड़ा ।
केंचुरि, केंचुल, केंचुली—स्त्री० सर्पादिकोंका ऊपरी आवरण 'तुलसी केंचुरि परिहरे होत साँपहू डीठि ।' दोहा० १११ । 'ज्यों केंचुलि तजै भुजंग ।' सू० १०१

कैंत—पु० एक तरहका बेंत ।
केंद्र—पु० मध्यविन्दु । प्रधान स्थान, अड्डा ।
के—सर्व० कौन ।
केउ—सर्व० कोई ।
केउर—पु० देखो 'केयूर'।'कम्बु कण्ठ भुज नैन बिसाला । कर कञ्चन केउर नग जाला ।' सुबे० ९७
केऊ—सर्व० कोई । वि० कई, कितने ही (सुन्दर०१४३)।
केकड़ा—पु० एक जल-जन्तु । कर्कट ।
केकय—पु० एक देश जो काश्मीरके पास था ।
केका—स्त्री० मयूरकी वाणी, मोरकी कूक ।
केकि, केकी—पु० मयूर ।
केड़ा—पु० कोंपल, अङ्कुर । नवयुवक ।
केत—पु० निकेत, घर, स्थान । ध्वजा । केतकी 'भौंर न देख केतकर काँटा ।' प० १०८
केतक—पु० केवड़ा । वि० कितने, बहुत ।
केतकी—स्त्री० एक तरहका फूलवाला पौधा, केवड़ा ।
केतन—पु० ध्वजा, चिह्न, घर, स्थान ।
केता, केतो—वि० कितना ।
केतिक—वि० कितने ( उदे० 'उसासी' ) कितना ।
केतु—पु० ध्वजा, चिह्न, पुच्छल तारा । एक ग्रह ।
केदली—पु० कदली वृक्ष ।
केदार—पु० थाला, कियारी ( दीन० १९ ) । एक तीर्थ ।
केना—पु० छोटा मोटा सौदा, अन्न देकर खरीदी हुई वस्तु (अ० १२) । तरकारी ।
केम—पु० कदम्ब 'अब तजि नाव उपावको आयो सावन मास । खेल न रहिबो खेमसों केम कुसुमकी वास ।'
केयूर—पु० बाजूबन्द, बिजायठ । [ बि० २७६
केर—पु० केला 'कह रहीम कैसे बने केर बेरको संग ।' —रहीम । अ० का-के-की ।
केरल—पु० भारतके दक्षिणमें स्थित एक देश ।
केरा, केला—पु० वृक्ष विशेष,रम्भा,कदली । रम्भाफल । केलि, क्रीड़ा, बिहार 'भगवत भगवत कहैं, करैं नहिं हम बिन केला ।'-भगवतरसिक। एक प्रकारका कपड़ा।
केराना—पु० मसाला, नमक आदि वस्तुएँ ।
केराव—पु० मटर जैसा एक अन्न (कलस २२२ ) ।
केलि—स्त्री० क्रीड़ा, रति ।
केवट—पु० एक वर्णसंकर जाति । [(रस० १२) ।
केवड़ा, केवरा—पु० एक पौधा, उसका फूल या आसव,
केवल—क्रिवि० मात्र, सिर्फ । वि० एकमात्र, शुद्ध ।
केवाँच—स्त्री० सेमकी तरहकी बेल या उसकी फली । कौंच । 'सेज केवाँच जानु कोइ लावा ।' प७८
केवा—पु० कमल 'भौंर खोज जस पावै केवा । तुम्ह कारन मैं जिउ पर छेवा ।' प० १४६ । पु० बहाना, संकोच ।
केवाड़—पु० किवाड़ ।
केश, केस—पु० बाल, कच । किरण । सूर्य । वरुण । विश्व ।
केशपाश—पु० बालोंकी लट ।
केशर, केसर—पु० फूलके मध्यके रेशे जिनमें पराग होता है । कश्मीर इ० में होनेवाले एक पौधेके फूलका
केशरपट—पु० केसरिया रङ्गका वस्त्र । [केसर। अयाल ।
केशरी,-सरी—पु० सिंह, घोड़ा ।
केशव,-सव—पु० विष्णु या कृष्णका एक नाम ।
केशरिया—वि० केसरके रंगका, पीलासा ।
केशी—वि० सुन्दर बालोंवाला । पु० सिंह या अश्व ।
केसरी —वि० केसरिया, केसरके रंगका । [एक दैत्य ।
केसारी—स्त्री० एक कदन्न ।
केसू—पु० टेसू, पलासका फूल 'केसू फूले दिवस चारि खंखर भये पलास ।' कबीर २१
केहरिनहा—पु० बघनाहा ( रत्ना० ५०८ ) ।
केहरी—पु० सिंह 'भालु बाघ बृक केहरि नागा । करहिं नाद सुनि धीरज भागा ।' रामा०२२८। घोड़ा ।
केहा—पु० मोर । बटेरकी तरहका पक्षी ।
केहुनी—स्त्री० बाँहके बीचकी गाँठ ।
केहूँ, केहू—क्रिवि०किसी प्रकार 'केहू न मानत महा हठीलो, कही तुम्हारी आख्यो ।'—कृष्णदास, ( राम० ७८ )
कैंकर्य—पु० सेवा-टहल, खिदमत ।
कैंची—स्त्री० कतरनी । एक कसरत । एक पेंच ।
कैंचुल—स्त्री० केंचुल ।
कैंड़ा—पु० माप, पैमाना । ढंग, चालाकी । एक यन्त्र ।
कै—वि० कितने । अ० या, अथवा। की। क़ै=क्रय, वमन ।
कैटभारि—पु० कैटभ राक्षसको मारनेवाले विष्णु ।
कैतव—पु० कपट, धोखा, बहाना । जुआ । धतूरा ।
कैतवापह्नुति—स्त्री० एक काव्यालंकार ।
कैथ, कैथा—पु० एक पेड़ या उसका फल, कबीठ ।
कैथी—स्त्री० छोटी जातिका कैथ । कायस्थोंकी मुँड़िया
क़ैद—स्त्री० कारावास, बन्धन, रुकावट । [ लिपि ।
कैदखाना—पु० बन्दीगृह, जेल ।

कैधौं—अ० या, अथवा।

कैफ—पु०, स्त्री० नशा 'चढ़ी इश्ककी कैफ यह उतरै [सिरके साथ।' नागरी०

कैफियत—स्त्री० हाल, तफसील।

कैफी—वि० नशेबाज, मतवाला।

कैंवर—स्त्री० तीरकी गाँसी 'कैंवरसी कसकै हिये बाँकी चितवनि नारि।' राममहाय

कैया—क्रिवि० कई बार 'कैया आवत यह गली रहे चलाय चलै न।' वि० १९१

कैवार—पु० किवाड़ 'एरे मन मेरे, तैं घनेरे दुख दीन्हें, अब एकै बार देकै तोहिं मूँदि मारौं एकै वार।' [ रवि० १००

कैम, कैमा—पु० देखो 'केम'।

कैरव—पु० कोंई, कुमुद। [का। भूरी भूरी आँखोंवाला।

कैरा—पु० भूरा रङ्ग। एक तरहका बैल। वि० भूरे रङ्ग-

कैलास—पु० शिवगिरि। स्वर्ग।

कैलासपति—पु० शिवजी।

कैवल्य—पु० मुक्ति। निर्लिप्तता।

कैशोर—पु० किशोरावस्था 'स्वप्नजटित जीवन कैशोर।' [ परिमल ६८

कैसर—पु० सम्राट्।

कैसा, कैसो—वि० किस तरहका। के सदृश।

कैसिक—क्रिवि० कैसे, किस भाँति 'कैसिक पीर उघारि दिखाऊँ, सो मेरो हिय रोई जानै।' ललित कि०

कोंछा—पु० स्त्री० के अंचलका भाग जिसमें कोई चीज़ बाँधकर कमरमें खोंस ली जाय।

कोंई—स्त्री० कुमुदिनी 'कँवल पास जनु बिगसीं कोंई।' [ प० २३

कोंकण—पु० देश-विशेष।

कोंचना—सक्रि० चुभाना, गड़ाना ( उदे० 'अतस' )।

कोंछ—पु० स्त्रियोंके अंचलका एक भाग।

कोंछना, कोंछियाना—सक्रि० साड़ीका कुछ भाग चुनकर नाभिके समीप खोंसना। कोंछमें कुछ रखकर उसके दोनों छोरोंको कमरमें दाहिने बायें खोंसना।

कोंढ़ा—पु० लोहे इत्यादिका कुंडा जिसमें सिकड़ी लगायी जाती है।

कोंप, कोंपल—स्त्री० पेड़ोंका नया पत्ता, कल्ला, अंकुर। 'उठी कोंप जस दारिउँ दाखा।' प० २७, 'अजया गज मस्तक चढ़ी निर्भय कोंपल खाय।' साखी ८१

कोंवर, कोंवरा—वि० कोमल, मुलायम 'कठिन भूमि, अति कोंवरे, जावक युत शुभ पाय'। के० २३७, 'कोंवर कुटिल केस नग कारे।' प० ४४

कोंहड़ा—पु० कुम्हड़ा।

कोंहड़ौरी—स्त्री० देखो 'कोहँड़ौरी'।

को—सम्बन्ध, कर्म व सम्प्रदानकी विभक्ति। सर्व० कौन।

कोआ—पु० रेशमके कीड़ेका घर। कटहलका पका हुआ बीज-कोश। आँखका डेला (गटा) या आँखका कोना। 'बरुनी बघम्बरमें गूदरी पलक दोऊ, कोए राते बसन भगोहे भेप रखियाँ।···जोगिन ह्वै बैठी हैं वियोगिनकी अँखियाँ।' देव ( व्रज० २९८ )

कोइरी—पु० तरकारी बोनेवाला, काछी।

कोइला—पु० लकड़ीका बुझा हुआ अंगारा। जलनेवाला एक खनिज द्रव्य।

कोइल, कोइलिया—स्त्री० कोयल।

कोइली—स्त्री० आमकी गुठली। दागदार कच्चा आम।

कोई—सर्व० न जाने कौन एक। अज्ञात या अविशेष व्यक्ति अथवा वस्तु। वि० अनिश्चित एक, एक भी। क्रिवि० लगभग।

कोउ, कोऊ—सर्व०, वि० देखो 'कोई'।

कोउक—सर्व० कोई एक, कुछ लोग।

कोक—पु० चकवा पक्षी।

कोकई—वि० गुलाबीकी झलक लिये हुए नीला। पु० गुलाबीकी झलकवाला नीला रंग। स्त्री० छोटी कँटिया।

कोकनद—पु० लाल कमल।

कोकावेरी, कोकावेली—स्त्री० नीली कोंई 'तोहि असि नाहीं, कोकावेरी।' प० २१४

कोकाह—पु० श्वेत रंगका घोड़ा।

कोकिल, कोकिला—स्त्री० कोयल, पिक।

कोको—स्त्री० कौआ। बच्चोंको भुलावा देनेका शब्द।

कोख—स्त्री० कुक्षि, उदर, गर्भाशय ( उदे० 'अचगरा' )।

कोखजली—वि० स्त्री० जिसकी सन्तान मर जाती हो।

कोखबंद—वि० स्त्री० बाँझ।

कोगी—पु० सोनहा नामक जानवर जो कुत्तेके साथ [होता है।

कोचना—सक्रि० देखो 'कोंचना'।

कोचवान—पु० बग्गी हाँकनेवाला।

कोजागर—पु० शरद् पूर्णिमा।

कोट—पु० क़िला, राजप्रासाद। परकोटा, प्राचीर। एक पहनावा। समूह। वि० करोड़ 'लूटे सुख मौज करै मनुहार कोटै, वैड्यो पायन पलोटै लाल [महारानीके।' औघ

कोटपाल—पु० दुर्गरक्षक।

कोटर—पु० खोड़रा, कुटिया।

कोटवार—पु० दुर्गरक्षक,चौकीदार,शान्तिरक्षक 'नौ पौरी तेहिं गढ़ मझियारा। औ तहँ फिरहिं पाँच कोटवारा।' प० १००

कोटि—स्त्री० वर्ग, दरजा। उच्चता, उत्तमता। धनुष-का सिरा, नोक। समूह। वि० करोड़।

कोटिक—वि० करोड़, अगणित।

कोटिशः—क्रिवि० करोड़ों बार, कई तरहसे।

कोठरी—स्त्री० छोटा कमरा।

कोठा—पु० कोष्ठ, कमरा, अटारी, खण्ड। पेट।

कोठार—पु० भण्डार।

कोठारी—पु० भण्डारी।

कोठिला—पु० देखो 'कुठला'।

कोठी—स्त्री० बड़ा मकान। बड़ी दूकान,लेनदेनकी दूकान।

कोठीवाल—पु० बड़ा व्यापारी, साहूकार।

कोड़ना—सक्रि० देखो 'गोड़ना'।

कोड़ा—पु० चाबुक। चेतावनी। एक पेंच।

कोड़ाई—स्त्री० गोड़नेकी क्रिया या मज़दूरी।

कोड़ी—स्त्री० बीसका समूह।

कोढ़—पु० त्वचा सम्बन्धी एक रोग। कोढ़की खाज, कोढ़में खाज=विपत्तिपर विपत्ति लानेवाली वस्तु 'एक तो कराल कलिकाल सूल मूल तामें कोढ़मेंकी खाजु सी शनीचरी है मीनकी।' विन० ५०२, (उद्दे० ['निनारा')

कोढ़ी—पु० कुष्ठरोग-ग्रस्त मनुष्य।

कोण—पु० कोना।

कोत—स्त्री० ताक़त, शक्ति। दिशा, ओर।

कोतल—पु० जलूस इत्यादिके लिए सजाया गया घोड़ा। राजा या प्रधानके चढ़नेका-घोड़ा 'गवने भरत पयादेहि पाये। कोतल संग जाहिं डोरिआये।' रामा० २९६

कोतवार—पु० देखो 'कोटवार'। 'पौरि पौरि कोतवार जो बैठा।' प० ११८

कोतवाल—पु० नगरपाल, शान्तिरक्षक।

कोतह—वि० छोटा, कम, तंग।

कोता, कोताह—वि० छोटा, थोड़ा, ओछा, अल्प।

कोताही—स्त्री० तंगी, कमी, कसर।

कोति—स्त्री० दिशा, तरफ।

कोथली—स्त्री०कमरमें बाँधकर रुपये रखनेकी थैली,बसनी।

कोदंड—पु० धनुष।

कोद—स्त्री० दिशा, तरफ (बि० २२७), एक कोद रघुनाथ उदार। भरत दूसरी कोद विचार।' के० १५५, (अ० १४६)

कोदव, कोदो, कोद्रव—पु० एक तरहका कदन्न 'फरइ कि कोदव बालि सुसाली।' रामा० ३२४

कोध—स्त्री० 'कोद', दिशा, तरफ 'नरनारी सब देखि चकित भे दावा लग्यो चहुँ कोध।' सूबे० ९१

कोन—पु० कोना।

कोना—पु० एक विन्दुपर मिलनेवाली दो रेखाओंके बीच-का अन्तर। खूँट, नुकीला किनारा। एकान्त स्थान।

कोनिया—स्त्री० दीवार इ० के कोनमें लगायी गयी काठ या पत्थरकी पटिया। छाजनका एक भाग।

कोप—पु० गुस्सा, क्रोध।

कोपना—अक्रि० क्रुद्ध होना, (सू० १५), कोपेउ जबहिं बारिचर केतू।' रामा० ५०।...वि० स्त्री० क्रुधा, क्रोध करनेवाली (साकेत ४१)।

कोपर—पु० बड़ा थाल 'दधि मधुनीर कनकके कोपर आपुन भरत भरे।' सू० ४५

कोपल—स्त्री० नयी मुलायम पत्ती।

कोपीन—पु० संन्यासियों आदिके पहननेकी लँगोटी, काँछा। पाप, अनुचित कार्य।

कोबी—स्त्री० एक तरकारी, गोभी।

कोमल—वि० मृदु, नम्र, नाज़ुक, सुन्दर(के० २४),कच्चा।

कोमलता, कोमलाई—स्त्री० मृदुता, नरमी, मधुरता। 'चरन लुनाई दृग देखे बनि आई जिन जीती कोमलाई औ ललाई पदुमनकी।' (कक्रौ० ५०७), (रघु० १०१)

कोमलावृत्ति—स्त्री० प्रसाद गुणवाली वर्णयोजना।

कोय—सर्व० कोई।

कोयल—स्त्री० पिक, कोकिला।

कोयला—पु० बुझा हुआ अंगारा।

कोया—पु० देखो 'कोआ'। 'जहँ सियराम लखन निसि सोये। कहत भरे जल लोचन कोये।' रामा० २९३

कोरंजा—पु० मजदूरीमें दिया जानेवाला अन्न।

कोर—स्त्री० किनारा, सिरा (ललित १०२)। कोना (अ० ५६)। 'बदन तनु चितचोर चितवत झलक लोचन कोर।' सू० १७६। द्वेष। दोष। कतार। उँगली, कुहनी आदिकी सन्धि, गाँठ, पोर 'कोर कोर कटि गयो हटि कै न पग दयो लयो रन जीति किरवान

करतूतीको ।'—नेवाज । करोड़ 'रकत न खंजन नैन गे जतन कीजियत कोर ।' रतन० ४७ । अपांग, आँखका कोना 'अश्रु बह जाते थे कामिनीके कोरोंसे कमलके कोरोंसे प्रातकी ओस ज्यों' अनामिका ६१

कोरक—स्त्री० कलिका । मृणाल । फूलकी कटोरी ।

कोरकसर—स्त्री० त्रुटि, कमी, दोष ।

कोरदार—वि० नुकीला, कसनेवाला ।

कोरना—सक्रि० खोदना 'भा कटाव सब अनभन भाँती । चित्र कोरि कै पाँतिहि पाँती ।' प० २० । कुरेदना, कुतरना 'जैसे काठ कोरि तामें पूतरी बनाय राखी सो विचार देखिये तो उहै एक दारु है । सुन्द० १२८

कोरवा—पु० 'कोरा', गोद 'जय झोरिला कोरवा रहै तो हियरा हुलसात ।' सुधाकर

कोरा—वि० जो व्यवहारमें न आया हो, नया 'जाइ लेहु आरे पर राखो कालिह मोल लै राखै कोरी ।' सूवि० ७७ । अछूता, साफ़, सादा, खाली । विद्याविहीन, दोष-रहित, बेदाग । 'दिन थोरी भोरी अति कोरी देखत ही जु स्याम भये चाढ़ी ।' सू० ६६ । पु० एक जल-पक्षी । गोद, क्रोड़ ( उदे० 'कुरना' ) ।

कोरापन—पु० अछूतापन, नयापन ।

कोरि—वि० कोटि, करोड़ । 'कर जोरि पग परि तोरि उपवन कोरि किंकर मारियो । राम० ३४५

कोरिया—स्त्री० झोपड़ी 'ढूँढ़ि फिरे घर कोउ न बतावै स्वपच कोरिया लों ।' सूवि० ५०

कोरी—पु० कपड़ा बिननेवाली एक जाति,हिन्दू जुलाहा । स्त्री० बीस वस्तुओंका समूह ।

कोरो—पु० खपरैलमें नीचे लगाया जानेवाला बाँस ।

कोल—पु०गोद । शूकर । एक जङ्गली जाति । एक तौल।

कोलना—सक्रि० छेद करना ( रतन० १०८ ), पोला करना ।

कोलाहल—पु० शोरगुल, हल्ला ।

कोलिया—स्त्री० लम्बा-सा खेत । देखो 'कुलिया' ।

कोली—स्त्री० अङ्क, गोद, अँकवार । पु० कोरी ।

कोल्हाड़—पु० ऊख पेरने और गुड़ बनानेका स्थान ।

कोल्हू—पु० ऊख, तेल इ०पेरनेका यन्त्र (उदे०'पीरना') ।

कोविद—वि० विद्वान् पण्डित ।

कोविदार—पु० कचनारका वृक्ष या उसका फूल ।

कोश, कोष—पु० खज़ाना, सञ्चित धन । ठव्या । अण्डा सम्पुट, म्यान । समूह, शब्द-संग्रह । कोया । मद्यपात्र ।

कोशकार—पु० शब्दकोशका रचयिता । रेशमका कीड़ा। तलवार इ० का म्यान बनानेवाला ।

कोशल—पु० एक देश । अयोध्या नगरी ।

कोशकीट—पु० रेशमका कीड़ा ।

कोशिश—स्त्री० उद्योग, प्रयत्न ।

कोषाध्यक्ष—पु० कोषाधीश, ख़ज़ानची ।

कोष्ठ—पु० कोठा, पेटका भीतरी हिस्सा । कोष ।

कोष्ठक—पु० शब्द या शब्द समूह घेरनेके चिह्न विशेष । खानेदार चक्र ।

कोष्ठबद्धता—स्त्री० कब्ज़ियत, मलावरोध ।

कोस—पु० दो मीलकी दूरी । कोष, भण्डार ( विन० ४५७ ) । कालेकोसों=बहुत दूर ( ग़बन १९८ ) ।

कोसना—सक्रि० दुर्वाक्य कहकर किसीका अमङ्गल चाहना । पानी पी पीकर कोसना = हदसे ज्यादा कोसना ।

कोसा—पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा । कसोरा ।

कोसिला—स्त्री० कौशल्या ।

कोहँड़ौरी—स्त्री० पीठी और कुम्हड़ेकी बरी (प०१२५) ।

कोह—पु० पहाड़ । क्रोध 'सुध दूध सुख करिय न कोहू ।' रामा० १५०, ( सू० ६८ ) ।

कोहनी—स्त्री० बाहुके बीचकी गाँठ ।

कोहबर—पु० विवाहके समय कुलदेवताकी पूजाका स्थान ( रामा० १७८ ) ।

कोहरा—पु० कुहरा, कुहासा ।

कोहाँर—पु० कुम्हार 'जैसे भँवै कोहाँरक चाका । प०७०

कोहान—पु० ऊँटकी पीठका कूबड़ ।

कोहाना—अक्रि० क्रोध करना, अप्रसन्न होना, रूठना 'कीरति कुसल भूति जय ऋधि सिधि तिन्हपर सबै कोहानी ।' गीता० २७२

कोहिस्तान—पु० पहाड़ी प्रदेश ।

कोही—वि० क्रोधी 'सुनि रिसाय बोले मुनि कोही।' [ रामा० १४०

कौंकिर—स्त्री० हीरेकी कनी । काँचकी किरिच, काँचकी रेत।

कौंच—स्त्री० केवाँच ।

कौंतिक—पु० भाला चलानेवाला ।

कौंतेय—पु० कुन्तीके पुत्र, युधिष्ठिर आदि ।

कौंध—स्त्री० बिजलीकी चमक; चमक 'छोरि परी है सुकन्चुकी न्हानको अङ्गन तेजमें ज्योतिके कौंधे।' पद्माकर

कौंधना—स्त्री० बिजलीका चमकना 'कौंधत अह जस भादौं रैनी।' प० २३२, (सूसु० ६१, २०९)
कौंधा—स्त्री० देखो 'कौंध' 'हँसनमें दसन दुतिकी होत कौंधैं।' आनन्दघन। बिजली 'मनि कुण्डल झलकैं अति लोने। जनु कौंधा लौकहि दुइ कोने।' प० ४८
कौंल—पु० कमल (ललित १०९)।
कौंवरा—वि० कोमल 'कौंवरे अंग करेरे कुचावृत लाजलची गुन ऊँचे मनोरथ।' रवि० ४५
कौंहर—पु० इन्द्रायनकी तरहका फल जो पकनेपर बहुत लाल होता है 'कौंहर सी एँड़ीनकी लाली देखि सुभाइ। पाय महावर देनको आप भई बेपाइ।' बि० २४
कौ—सम्बन्ध कारकको विभक्ति 'हरिऔध गारिहौं गरब मगरूरिनकौ-रसक० १६
कौआ—पु० काक। बहुत चालाक मनुष्य। गलेके भीतर लटकताहुआ मांसका टुकड़ा।
कौआली—देखो 'कौवाली' (सेवा० २२४)।
कौटिल्य—पु० कुटिलता, वक्रता। चाणक्यका नाम।
कौटुंबिक—वि० कुटुम्ब सम्बन्धी।
कौड़ा—पु० बड़ी कौड़ी (वि० ९६)। गड्ढेमें जलाई हुई आग, अलाव।
कौड़िया, कौड़िल्ला—पु० मछली खानेवाला एक जल-पक्षी 'नैन कौड़िया होइ रहे…' प० ६४
कौड़ियाला—वि० कौड़ी जैसे हलके रङ्गका।
कौड़ियाही—स्त्री० कौड़ीकी दरसे मज़दूरी देकर काम करनेका एक तरीक़ा।
कौड़ी—स्त्री० घोंघेकी तरह अस्थिकोशमें रहनेवाला एक कीड़ा। उक्त कीड़ेका अस्थिकोश जो द्रव्यके रूपमें व्यवहृत होता है, बराटिका। धन, रुपया-पैसा 'कौडो लागी लोभबस, करहिं विप्र गुरुघात।' रामा०५९१। छातीके नीचेकी बीचवाली हड्डी। कटारकी नोक। जङ्घा काँख इ०की गिल्टी। कौड़ीका = जिसका कुछ मूल्य न हो 'कौडीके न कामके सु आये बिन दामके हैं निपट निकाम ये आम दयारामके।'—बेनी। दो कौड़ीका=निस्सार, तुच्छ। कौड़ीकौड़ी जोड़ना = थोड़ा थोड़ा करके धन एकत्र करना।
कौणप—पु० मुर्दा खानेवाला, राक्षस। एक नाग।
कौतिक, कौतिग—पु० देखो 'कौतुक'।
कौतुक—पु० विनोद, आश्चर्य, तमाशा (कबीर० १३१)।
कौतुकिया—वि०कौतुक करनेवाला,पु०विवाह तै कराने वाले पुरोहित इ० 'तौ कौतुकियन्ह आलस नाहीं।'रामा०४९
कौतुकी—पु० देखो कौतुकिया' (रामा० ७७)।
कौतूह, कौतूहल—पु० कुतूहल, लीला, कौतुक 'कामकेलि कौतूह गाय आनँद नित साजे। सहचरिशरण
कौतूहलता—स्त्री० कुतूहल।
कौथ—स्त्री० कौन तिथि। कौन सम्बन्ध।
कौन—सर्व० एक प्रश्नवाचक सर्वनाम।
कौपीन—पु० देखो 'कोपीन'। पाप।
क़ौम—स्त्री० जाति।
कौमार—पु० कुमारावस्था।
कौमी—वि० कौमका, जातीय।
कौमुदी—स्त्री० चाँदनी। कार्त्तिकी पूर्णिमा। कुमुदिनी।
कौमोदकी, कौमोदी—स्त्री० विष्णु भगवान्‌की गदा।
कौर—पु० ग्रास, निवाला (राम० ४५१)।
कौरना—सक्रि० सेंकना, ज़रा ज़रा भूनना।
कौरव—पु० कुरुका वंशज।
कौरा—पु० दरवाज़ेके दोनों ओरका वह भाग जिससे किवाड़ (खुलनेपर) सटे रहते हैं। किवाड़के पीछेकी दीवार। कौरे लगना = दरवाज़ेके पास छिपकर खड़ा रहना। किसी घातमें छिपा रहना (सूजे० १९२)।
कौरी—स्त्री० गोद, उछङ्ग, अङ्क 'भेंटे रतनसाह भर कौरी।' छत्र० ८३
कौल—पु० कमल, पद्म 'मृगहूते सरस विराजत बिसाल दृग देखिये न अति दुति कौलहूके दलमें।'—गङ्ग। ग्रास, निवाला। वि० ऊँचे कुलका। वाममार्गी।
क़ौल—पु० वचन, प्रतिज्ञा 'जरत जाठरानल विषे कीन्यौ कौल अनेक।' दीन० ६७। उक्ति, वाक्य।
कौलटेय—पु० कुलटाका पुत्र।
कौला—पु० देखो 'कौरा'।
कौलौं—क्रिवि०कबतक 'कलपि कलपि कौलौं बासर बिताइये।' रसक० १४२
कौवा—पु० एक पक्षी, काक, वायस।
कौवाली—स्त्री० एक तरहका मुसलमानी गाना।
कौश—वि० रेशमी।
कौशल, कौसल—पु० कुशलता, दक्षता। मङ्गल।
कौशल्या, कौसल्या—स्त्री० रामचन्द्रजीकी माता।
कौशांबी—स्त्री० एक प्राचीन नगरी जो प्रयागके पास यमुना-तटपर स्थित थी।

कौशिक, कौसिक—पु० इन्द्र। कुशिक राजाके पुत्र गाधि, या वंशज विश्वामित्र। नेवला। उल्लू।
कौशेय—त्रि० रेशमी। पु० रेशमी वस्त्र, कोसा।
कौसुंभ—पु० कुसुमके रङ्गसे रँगा हुआ कपड़ा। वन-[कुसुम।
कौस्तुभ—पु० एक पुराणोक्त मणि।
कौद्रव—पु० इन्द्रायन ( कलश ९२ )।
क्या—सर्व० एक प्रश्नवाचक सर्वनाम। [पूर्ण २४९।
क्यार—विभक्ति 'का' 'पियो दूध जिन माता क्यार-'
क्यारी,-ली—स्त्री० बागों व खेतोंमें थोड़ी थोड़ी दूरीपर मेड़ोंसे घिरी हुई ज़मीन जिसमें पौधे लगाये जाते हैं। ( क्याली, दीन० ७० )
क्यों—क्रिवि० किस तरह, कैसे 'हरि सो प्रीतम क्यों बिसराहीं।' सू०। किस कारण, किस लिए 'बावरी जो पै कलङ्क लग्यो तौ निसङ्क ह्वै क्यों नहिं अङ्क लगावत।' रसखान
क्रंदन—पु० काँदना, रुदन, विलाप। [नरक विशेष।
क्रकच—पु० आरा। करील वृक्ष। एक अमङ्गल योग।
क्रतु—पु० यज्ञ, याग। सङ्कल्प। विवेक। चाह।
क्रम—पु० प्रणाली, सिलसिला। डग धरना। कर्म ( सू० १०८ ), जे पद पदुम तातरिस-त्रासित मन वच क्रम प्रह्लाद सँभारे।' सू० ९। क्रम क्रम करके = धीरे [धीरे।
क्रमनासा—स्त्री० कर्मनाशा नदी।
क्रमशः—क्रिवि० क्रमसे, धीरे धीरे।
क्रमागत—वि० क्रमसे आया हुआ, परम्परागत।
क्रमिक—वि० क्रमागत, क्रमपूर्वक।
क्रमेल, क्रमेलक—पु० ऊँट।
क्रय—पु० खरीद, मोल लेनेका काम।
क्रवान—पु० देखो 'किरवान' ( सुजा० २२, ३४ )।
क्रव्य—पु० मास।
क्रव्याद—पु० मांस-भक्षक जीव, राक्षस (साकेत ४१६)।
क्रांत—वि० जिसपर हमला हुआ हो।
क्रांति—स्त्री० गमन, गति, फेरफार, व्यापक परिवर्तन।
क्रिमि—पु० छोटा कीड़ा। पेटमें केंचुए पड़नेका रोग।
क्रिया—स्त्री० कार्य। अनुष्ठान। स्नानादि नित्य कर्म 'प्रात क्रिया करि मातुपद बन्दि गुरुहि सिर नाइ।' रामा० २९६। अन्त्येष्टि क्रिया 'तेहिकी क्रिया यथोचित निजकर कीन्ही राम।' रामा० ३८२। उपाय, चिकित्सा। प्रायश्चित्त आदि कृत्य।
क्रिस्तान—पु० ईसाई धर्मका माननेवाला।
क्रीट—पु० 'किरीट', शिरोभूषण-विशेष 'पारावार अपार धार सिर क्रीत तरे हो।' दीन० १९८
क्रीड़न—पु० देखो 'क्रीड़ा'।
क्रीड़नक—पु० खिलौना।
क्रीड़ना—अक्रि० क्रीड़ा करना, खेल करना 'प्रभु क्रीड़त मुनि सिद्ध सुर व्याकुल देखि कलेस।' रामा० ५१५
क्रीड़ा—स्त्री० खेल, केलि, किलोल।
क्रीड़ित—वि० वह व्यक्ति जिसने क्रीड़ा की हो। क्रीड़ा किया हुआ।
क्रीत—स्त्री० कीर्त्ति, 'हौं कहा कहौं सूरके प्रभुकी निगम करत जाकी क्रीत।' सू०(ककौ०)। वि० खरीदा हुआ।
क्रुद्ध—वि० क्रोधयुक्त, नाराज।
क्रूर—वि० दुष्ट, निर्दय, कठिन, नीच। पु० भात, इ०।
क्रूस—पु० सलीब, त्रिशूलाकार ईसाइयोंका धर्म चिह्न।
क्रेता—पु० मोल लेनेवाला।
क्रोड़—पु० गोद, वक्ष स्थल। शूकर।
क्रोड़पत्र—पु० किसी पत्र या पुस्तकका पूरक पत्र।
क्रोध—पु० गुस्सा, कोप।
क्रोधवंत—वि० क्रोधयुक्त, कुपित।
क्रोधित—वि० क्रुद्ध, कुपित।
क्रोधी—वि० क्रोध करनेवाला, गुस्सैल।
क्रोश—पु० कोस, दूरीकी एक माप।
क्रौंच—पु० कराँकुल पक्षी, कुररी। एक अस्त्र। एक द्वीप [या पहाड़
क्लम—वि० थका हुआ, दुर्बल।
क्लांत—वि० श्रमके कारण थका हुआ।
क्लांति—स्त्री० थकावट, मेहनत।
क्लिन्न—वि० भींगा हुआ, निर्बल, दब्बू।
क्लिशित—वि० क्लेश पाया हुआ, दुःखी।
क्लिष्ट—वि० दुःखी। कठिन, जटिल, असम्बद्ध।
क्लीव—पु० नपुंसक, कायर।
क्लेद—पु० गीलापन, पसीना, कीच, पाप।
क्लेश, क्लेस—पु० कष्ट, पीड़ा।
क्लैव्य—पु० नामर्दी, नपुंसकता।
क्वचित्—क्रिवि० शायद ही कभी, शायद ही कोई, [बहुत कम'
क्वण—पु० घुँघरू या वीणाकी आवाज।
क्वणित—वि० बजता हुआ। पु० आवाज, शब्द।
क्वाँरा—वि० अविवाहित।

क्वाथ—पु० काढ़ा।
क्वान—पु० झनकार 'नेत करषत हरष बरषत वलय किंकिनि क्वान।' गदाधर भट्ट
क्वैला—पु० कोयला, अधजला अंश 'जरैं काम क्वैला मनौ मधु ऋतु-बात विलास।' के० २४५
क्षंतव्य—वि० क्षमा करने योग्य।
क्षण—पु० समयका अति छोटा भाग, पल। मौक़ा। [आनन्द।
क्षणदा—स्त्री० रात्रि।
क्षणद्युति, क्षणप्रभा—स्त्री० बिजली।
क्षणभंगु, क्षणभंगुर—वि० अनित्य 'रामकाज क्षण भंगु शरीरा।' रामा० २९०
क्षणिक—वि० क्षणकालीन, अस्थायी।
क्षणिका—स्त्री० विद्युत्, चपला।
क्षत—पु० घाव, फोड़ा। वि० आहत, जख्मी।
क्षतज—वि० लाल। क्षतसे उत्पन्न। पु० पीब, रक्त।
क्षत-विक्षत—वि० जिसे कई जगह चोट लगी हो, ज्यादा [घायल, आहत।
क्षति—स्त्री० हानि, नाश।
क्षत्र—पु० राष्ट्र, बल। शरीर। क्षत्रिय।
क्षत्रप—पु० मांडलिक राजा, प्रान्ताधिपति।
क्षत्रिय, क्षत्रि—पु० देशकी रक्षा तथा शासन करनेवाली [जाति।
क्षपणक—पु० बौद्ध भिक्षु। जैन साधु।
क्षपा—स्त्री० रात्रि।
क्षपाकर—पु० निशाकर, चन्द्रमा।
क्षपानाथ—पु० चन्द्रमा।
क्षम—वि० समर्थ, योग्य, सशक्त।
क्षमता—स्त्री० शक्ति, योग्यता।
क्षमताशील—वि० शक्तिमान।
क्षमना—सक्रि० देखो 'छमना'।
क्षमवाना, क्षमाना—सक्रि० क्षमा कराना 'यह सुनिके अकुलाइ चले हरि कृत अपराध क्षमाने।' सूबे०२२१
क्षमा—स्त्री० सहनशक्ति, तितिक्षा। पृथिवी।
क्षमापन—पु० माफी। क्षमा करानेका काम।
क्षमावना—सक्रि० क्षमा कराना।
क्षमावान्,-शील—वि० क्षमा करनेवाला, सहिष्णु।
क्षमी—वि० क्षमाशील, शान्त स्वभाववाला 'सुर अति क्षमी असुर अति कोही।' सू०
क्षम्य—वि० क्षमा करने योग्य।
क्षय—पु० ह्रास, नाश। तपेदिककी बीमारी।
क्षयपक्ष—पु० कृष्णपक्ष।
क्षयी—वि० नष्ट या क्षीण होनेवाला, क्षय रोगसे पीड़ित। पु० चन्द्रमा। स्त्री० एक रोग। [ॐ जीवात्मा।
क्षर—वि० अस्थिर, नष्ट होनेवाला। पु०शरीर। जल।ॐ
क्षरण—पु० चूना, बूँद बूँद टपकना, नष्ट होना।
क्षांत—वि० सहनशील, क्षमाशील।
क्षांति—स्त्री० सहनशीलता।
क्षा—स्त्री० धरणी, पृथिवी।
क्षात्र—वि० क्षत्रियोंका। पु० क्षत्रियत्व।
क्षाम—वि० क्षीण, कमजोर, पतला।
क्षार—पु० खार, सज्जी, रसायनकी क्रियासे तैयार किया हुआ राखका नमक।
क्षार होना—अक्रि० राख होना, नष्ट होना।
क्षालन—पु० धोना, धोनेकी क्रिया।
क्षालित—वि० धुला हुआ, साफ।
क्षिति—स्त्री० पृथिवी, स्थान।
क्षितिज—पु० वह स्थान जहाँ पृथिवी और आकाश परस्पर मिले हुए देख पड़ते हैं।
क्षितिधर—पु० पर्वत, दिग्गज, कच्छप।
क्षितिपति—पु० राजा।
क्षितिरुह—पु० वृक्ष।
क्षिप्त—वि० पतित, त्यागा हुआ। फेंका हुआ।
क्षिप्र—क्रिवि० जल्द। वि० चंचल, तेज
क्षीण—वि० दुबला।
क्षीर—पु० दूध, खीर, जल।
क्षीरनिधि—पु० समुद्र, पयोधि।
क्षीरसार—पु० मक्खन।
क्षीरोद—पु० दूधका समुद्र।
क्षीव—वि० मत्त, मतवाला ( ध्रुव ७४ )।
क्षुण्ण—वि० नष्ट हुआ, मारा हुआ। पीछा किया गया।
क्षुद्र—वि० दरिद्र, नीच। छोटा, कंजूस, खोटा।
क्षुद्रघटिका—स्त्री० करधनी, घुँघरू।
क्षुद्रता—स्त्री० नीचता, लघुता, गरीबी, दरिद्रता, सूक्ष्मता।
क्षुद्राशय—वि० नीच, कमीना।
क्षुधा—स्त्री० भूख।
क्षुधित—वि० भूखा।
क्षुप—पु० झाड़ी।
क्षुब्ध—वि० घबराया हुआ। अधीर, चंचल।

क्षुमित—वि० व्याकुल, डरा हुआ।
क्षुर—पु० उस्तुरा, छुरा।
क्षुरी—स्त्री० चाकू, छुरी। पु० हज्जाम।
क्षेत्र—पु० खेत। स्थान। शरीर। स्त्री।
क्षेत्रज्ञ—वि० जाननेवाला, निपुण। पु० आत्मा, परमात्मा, कृषक, गवाह।
क्षेत्रपति—पु० खेतका स्वामी, कृषक, जीवात्मा।
क्षेत्रफल—पु० रकबा। [ हुआ भाग।
क्षेपक—वि० फेंकनेवाला। प्रक्षिप्त। पु० बादमें जोड़ा
क्षेपण—पु० फेंकनेकी क्रिया। निन्दा।
क्षेमंकरी—स्त्री० एक तरहकी चील।
क्षेम—पु० कल्याण, सुरक्षा।
क्षोणि—स्त्री० पृथिवी।
क्षोणिप—पु० राजा।
क्षोभ—पु० घबड़ाहट, शोक, क्रोध।
क्षोभन—वि० क्षोभ उत्पन्न करनेवाला।
क्षोभना—अक्रि० व्याकुल होना। भयभीत या क्रुद्ध होना। चित्त चलायमान होना, 'सोवत जागत नेकु न क्षोभै। सो समता सब ही महँ शोभै।' के० ८१
क्षोभित—वि० विचलित, क्रुद्ध, भयभीत, व्याकुल।
क्षोभ—पु० रेशमी वस्त्र।
क्षौम—पु० रेशमी वस्त्र। सनका बना कपड़ा। रेशम
क्षौर—पु० हजामत। [ ( साकेत १९ )।
क्ष्मा—स्त्री० पृथिवी।

# ख

खं—पु० आकाश, रिक्त स्थान, छिद्र, शून्य। स्वर्ग।
खंख, खंखी—वि० खाली, रिक्त, उजाड़ 'बैसहि देह परी पुनि दीसत, एक बिना सब लागत खंखी।' सुन्द० ३३
खंखर—वि० वीरान, उजड़ा हुआ ( उदे० 'केसू' )।
खँखारना—अक्रि० खरखराहटके साथ फेफड़ेसे कफ इत्यादि निकालना। दूसरेका ध्यान खींचनेके लिए खाँसने जैसा शब्द करना।
खंग—पु० खड्ग, तलवार। गैंड़ा। स्त्री० घाव 'कुम्भकर्ण तनु खंग लग गई लंक विभीषण पाई।' सूरा० ३६
खँगना—अक्रि० कम होना।
खँगहा—वि० निकले हुए दाँतवाला ( पशु ), दँतैल।
खँगार—पु० एक जाति (ककौ० ५०४)। [ पु० गैंड़ा।
खँगारना, खँगालना—सक्रि० पानी डालकर यों ही साफ करना, खाली करना।
खँगी—स्त्री० कमी, घटी।
खँगैल—वि० देखो 'खँगहा'। खुरके रोगसे ग्रस्त।
खँचना—अक्रि० निशान पड़ना।
खँचाना—सक्रि० अंकित करना, खींचना 'रेख खँचाइ कहउँ बल भाखी। भामिनि भयउ दूधकै माखी।' रामा० २०८। शीघ्रतासे लिखना।
खँचिया—स्त्री० छाबा।
खंज—पु० एक रोग। खंजन पक्षी। वि० लँगड़ा।
खंजक—वि० लँगड़ा।
खँजड़ी,-री—स्त्री० डफली जैसा एक छोटा बाजा।
खंजन, खंजरीट—पु० एक पक्षी 'मनहुँ मुदित मरकत मनि आँगन खेलत खंजरीट चटकारे।' सू० १६९
खंजर—पु० कटार।
खंड—पु० टुकड़ा, भाग। खाँड़। दिशा। देश। नौकी संख्या। खाँड़ा। वि० खण्डित, छोटा।
खंडत—वि० खंडित, टूटा फूटा ( शब्द ) 'खण्डत बचन देत पूरन सुख।' अष्ट० १३
खंडन—पु० तोड़ना, काटना, ग़लत साबित करना।
खंडना—सक्रि०खण्डन करना, निराकरण करना। टुकड़े टुकड़े करना ( रामा० १४७ ), 'स्यन्दन खण्डि महारथ खण्डो।' सू० १४
खंडपरशु—पु० शिवजी ( राम० ५६ )।
खंडपाल—पु० हलवाई।
खंडप्रलय—पु० छोटा प्रलय, किसी देश या [illegible] नाश। [ * [illegible]
खंडर—पु० भग्नावशेष, गिरे हुए मकानका बचा हुआ
खँडरना—सक्रि० खण्डित करना, खण्ड खण्ड कर 'ताहि सियपुत्र तिलतूल सम खण्डरै।' के० ३१
खँडरा—पु० एक पकवान 'खँडरा, बचका औ
खँडरिच—पु० 'जरीट, खञ्जन। [ पु० ]

खँडरू—पु० जाजिम ( ग्राम० ३२० )।
खँडवानी—स्त्री० खाँड मिला पानी, शर्बत। बरातियों-को शर्बत इत्यादि भेजनेका काम। 'पानि देहिं खंड-वानी, कुवहिं खाँड बहु मेलि।' प० १५
खंडशः—क्रिवि० खण्ड-खण्ड करके।
खँडहर—पु० भग्नावशेष।
खंडित—वि० टूटा हुआ, विभक्त, अपूर्ण।
खंडिता—स्त्री० प्रातरागत नायकमें परनारी-सम्भोग चिह्न देखकर कुपित होनेवाली नायिका।
खंडी—स्त्री० एक तरहका कर 'खण्डी सु मनमानी लई' हिम्मत० ४। गल्लेका एक माप ( लगभग दो या ढाई मन।)
खँडौरा—पु० मिसरीका लड्डू।
खंतरा—पु० कोना, दरार, छोटा गड्ढा।
खंदक—पु० गड्ढा, नगर या दुर्गके चारो ओरकी खाई।
खंदा—पु० खननेवाला, खोदनेवाला।
खंधवाना—सक्रि० खाली कराना। [प० १६१
खंधार—पु० तम्बू, छावनी 'वहाँ न लूटौं कटक-खँधारू।'
खंभ, खंभा—पु० स्तम्भ, सहारा 'तुम गोरा बादल खंभ दोऊ प० ३०८
खंभार—पु० घबराहट, चिन्ता, डर, शोक 'सास ससुर गुरु प्रिय परिवारू। फिरहु त सबकर मिटइ खँभारू।' रामा० २४५, ( दे० 'खभार', सूबे० १२३ )
खंभिया—स्त्री० छोटा खम्भा।
खँसना—अक्रि० गिरना, खसकना 'सुरपुरतें जनु खँसेउ जजाती।' रामा० २६९
ख—पु० शून्य स्थान, आकाश, गड्ढा इ०।
खई—स्त्री० क्षयकारक काम। झगड़ा, कलह ' सुत सनेह तिय सकल कुटुम मिलि निसदिन होत खई।'सू०१७
खक्खा—पु० क़हक़हा। ज़ोरकी हँसी।
खखरा—पु०बाँसका टोकरा। चावल आदि पकानेका देग।
खखरिया—स्त्री० पापड़ जैसा एक पकवान।
खखसा—पु० एक तरकारी, खेकसा।
खखार—पु० गाढ़ा कफ।
खखारना—अक्रि० देखो 'खँखारना'।
खखेटना—सक्रि० पीछा करना 'वेई पटनेटे सेल साँगन खखेटे भूरि···' सुजा० ९७। दबाना। छेदना, व्याकुल करना।
खखेटा, खखेट्यो—पु० छिद्र। शङ्का, खटका 'सोच भयो सुरनायकके कलपद्रुमके हिय माँझ खखेट्यो।' सुदामा० ८
खग—पु० पक्षी, वायु, बादल, सूर्य, तारा इ०।
खगउड़ा—पु०एक तरहका कड़ा ( ग्राम० ५५ )।
खगकेतु—पु० गरुड़जी।
खगना—अक्रि० गड़ना, चुभना ( भ्र० ८४ )। चिह्नित होना, उपट आना। चित्तमें बैठना, प्रभाव पड़ना। लिप्त होना 'दग नास न तौ तप जाल खगी, न सुगन्ध सनेहके ख्याल खगी।' दास (उदे०'पुहुकर')। अटल हो जाना, अड़ रहना 'तेहि खेत खगिय सूरज-बली जङ्ग जित्ति जयपत्ति लिय।' सुजा० ९८
खगनाथ,-नायक,-पति—पु० गरुड़।
खगहा—पु० गैंड़ा।
खगेश—पु० पक्षिराज गरुड़।
खगोल—पु० गगनमण्डल, आकाशमण्डल।
खग्ग—पु० खड्ग, तलवार ( भू० १४१ )।
खग्रास—पु० पूर्ण ग्रहण।
खचना—अक्रि० जड़ा जाना, उलझ जाना, अङ्कित होना।
खचर—पु० आकाशगामी। वायु, सूर्य, मेघ, पक्षी इ०।
खचरा—वि० वर्णसङ्कर। बदमाश।
खचाखच—क्रिवि० ठसाठस।
खचाना—सक्रि० खींचना, अङ्कित करना, शीघ्रतापूर्वक लिखना। अपनी खचाना = अपने ही कथनपर ज़ोर देना।
खचित—वि० लिखा या चित्र इत्यादि बनाया हुआ।
खच्चर—पु० एक पशु जो गधे और घोड़ीके संयोगसे पैदा होता है।
खज—वि० खाने योग्य, भक्ष्य ( उदे० 'अखज' )।
खजला—पु० एक पकवान, खाजा।
खजहजा—पु० खाने योग्य अच्छे फल 'हुलसीं सरस खजहजा खाई।' प० २१८
ख़ज़ानची—पु० कोषाध्यक्ष।
ख़ज़ाना, ख़ज़ीना—पु० कोश, धनागार, भाण्डार 'पटा लिखाया गुरू पै खरा खजीना खाहिं।' साखी २९
खजुआ, वा—पु० खजला खाजा।
खजुलाना—सक्रि० शरीरके किसी स्थलको नख इ० से रगड़ना, सुहलाना।
खजुली—स्त्री० एक तरहकी मिठाई। खुजलाहट। एक* [*रोग।

खजूर—पु० एक पेड़ या उसका फल। एक मीठा पकान्न।
खजोहरा—पु० एक प्रकारका रोएँदार कीड़ा जिसके लगनेसे खुजली उत्पन्न होती है।
खट—पु० टूटने या टक्कर लगनेका शब्द। कफ,हल,घास।
खटसे—क्रिवि० फौरन, झटपट।
खटक—स्त्री० खटका, आशङ्का, चिन्ता।
खटकना—अक्रि० गड़ना, अप्रिय मालूम होना, खलना 'खटकत है जियमाँह कियो जो बिना विचारे।'—गिरिधर। उचटना, ठीक न जान पड़ना। खटखट शब्द होना, ठनना, झगड़ा होना।
खटका—पु० 'खटखट' शब्द। ।चिन्ता, शङ्का। रोकनेवाली चीज़ (जैसे, दो खटकेवाला ताला)।
खटकाना—सक्रि० किसी चीज़पर आघातकर खटखट [शब्द करना।
खटकीड़ा,-कीरा—पु० खटमल।
खटखट—स्त्री० पीटने पाटनेका शब्द, झञ्झट, खटपट।
खटखटाना—सक्रि० खटपट आवाज़ करना।
खटना—अक्रि० काम धन्धा करना, रुपया कमानेमें हैरान होना 'तीन तीन बच्चे हैं, उन सबोंके लिए मुझे खटना पड़ता है।' आँधी ९
खटपट—स्त्री० झगड़ा। दो चीज़ोंके टकरानेकी आवाज़।
खटपटिया—वि० झगड़ा करनेवाला।
खटपद—पु० भौंरा।
खटपदी—स्त्री० षट्पदी, छप्पय।
खटपाटी—स्त्री० खटियाकी पाटी।—लेना=रूठना।
खटबुना—पु० चारपाई बुननेवाला।
खटमल—पु० खटकीड़ा, उड़िस।
खटमिट्ठा,-मीठा—वि० जो खट्टा भी हो, मीठा भी हो।
खटमुख—पु० षडानन, कार्त्तिकेय।
खटरस—पु० मीठा, कड़ुआ, कसैला इ० छः रस।
खटराग—पु० झञ्झट, व्यर्थका बखेड़ा। फजूल चीज़ें।
खटला—पु० पत्नी (मध्य प्रान्त)। परिवार, लवाज़मा (कर्म० १५५)।
खटवाट,-वाटी—स्त्री० देखो 'खटपाटी' 'मैं तोहि लागि लेऊँ खटवाटू।' प० १०६
खटाई—स्त्री० खट्टी वस्तु। खट्टापन।
खटाका—पु० 'खट' की आवाज़।
खटाखट—क्रिवि० चटपट। स्त्री०'खटखट'की आवाज।
खटाना—अक्रि० निभना, टिकना, (कविता २०८) ठहरना '...अब नहिं प्रान खटात।' भ्र० ९७। परखमें ठीक उतरना (विन० ४७४)। खट्टा होना (व्रज० २०३)।
खटापटी—स्त्री० झगड़ा, विरोध, अनबन।
खटाव—पु० निर्वाह।
खटास—स्त्री० खट्टापन।
खटिक—पु० तरकारी बेचनेवाली एक हिन्दू जाति।
खटिका—स्त्री० खड़िया। [टेढ़े हाथवाला।
खटिया—स्त्री० चारपाई, खाट।
खटीक—पु० तरकारी बोने तथा बेचनेवाली जाति।' कसाई 'कान पकरिके लै चला ज्यों अजयाहिं खटीक।' [साखी ७८
खटोलना—देखो 'खटोला'।
खटोला—पु० छोटी चारपाई, पालकी 'बाँस पुरान साज सब अटपट सरल तिकोन खटोलारे।' विन० ४७४
खट्टा—वि० अम्ल, तुर्श।
खट्वा—स्त्री० चारपाई।
खड़ंजा—पु० वह जोड़ाई जिसमें ईंटें खड़ी रहती हैं।
खड़कना—अक्रि० 'खड़खड़' शब्द होना, खटकना।
खड़खड़ाना—सक्रि० 'खड़खड़' शब्द करना, खटखटाना, ठकठकाना। अक्रि० 'खड़खड़' शब्द होना।
खड़खड़िया—स्त्री० पालकी।
खड़्ग—पु० तलवार।—दान=तलवार चलाना 'खड्ग-दान सरि पूज न कोऊ।' प० १९
खड़्गी, खड़्जी—पु० गैंडा 'खड़्गी खजाने खरगोस खिलवतखाने खीसैं खोले खसखाने खाँसत खबीस हैं।' भू० १४३
खड़बड़ाना—अक्रि० घबड़ाना, बेसिलसिले होना। सक्रि० घबड़ा देना, बेसिलसिले कर देना। 'खड़बड़' शब्द करना।
खड़बड़ी—स्त्री० गड़बड़ी, हलचल, गोलमाल।
खड़मंडल—पु० गड़बड़।
खड़हर—पु० खँड़हर।
खड़ा—वि० सीधा, दण्डायमान, ऊपरको उठा हुआ, [निर्मित, उपस्थित।
खड़ाऊँ—स्त्री० पादुका।
खड़ाका—पु० खटका, 'खटपट' शब्द 'कुन्दनके ऊपर कड़ाके उठैं ठौर ठौर जीरनके ऊपर खड़ाके खड़गन [के।' भू० १२१
खड़ानन—पु० कार्त्तिकेय।
खड़िया—स्त्री० एक तरहकी उजली मिट्टी। अरहरका [सूखा पेड़।
खड़ी—स्त्री० खड़िया मिट्टी।

खड्ग—पु० एक अस्त्र, खाँड़ा, तलवार।
खड्गकोष,-पिधान—पु० म्यान, ढाल।
खड्गी—पु० गैंडा। खड्गधारी।
खड्ड,-खड्ढा—पु० गड्हा, गड्ढा।
खत—पु० क्षत, चोट 'तिय निय हिय जु लगी चलत पिय-नख-रेख-खरौंट। सूखन देति न सरसई खोंटि खोंटि खत-खोंट।' बि० १२५। ख़त=पु० चिट्ठी, [लिखावट। लकीर। हजामत।
ख़तना—पु० सुन्नत।
ख़तम—वि० समाप्त।
ख़तरा—पु० डर, खौफ।
खतरेटा—पु० खत्री।
ख़ता—पु० अपराध, भूल-चूक। धोखा 'जाहु जनि आगे खता खाहु मति यारो…' भू० १३२। खता=फोड़ा।
ख़तावार—वि० अपराधी। [(बुंदेल०), घाव, दोष।
खति—स्त्री० नुकसान, क्षति।
खतियाना—सक्रि० खातेमें चढ़ाना (सू० ११)।
खतियौनी—स्त्री० पटवारियोंका एक काग़ज़। खाता। खतियानेका कार्य।
खत्ता—पु० अन्न रखनेका गड्ढा। प्रान्त, स्थान।
ख़त्म—वि० समाप्त।
खत्री—पु० पंजाबकी एक जाति जो प्रायः व्यापार करती है।
खदंग,खदंगी—स्त्री० बाण 'लाखन मार बहादुर जंगी। जँबुर कमानैं तीर खदंगी।' प० २४६
खदबदाना—अक्रि० 'खदबद' शब्द करना, चुरना।
खदरा—वि० निरुपयोगी, रद्दी। पु० गड्ढा।
खदान—स्त्री० खान।
खदिर—पु० कत्था। चन्द्रमा।
खदुका—पु० कर्ज़ लेनेवाला।
खदेड़ना, खदेरना—सक्रि० भगाना, हटाना।
खद्योत—पु० जुगनू। पटबीजना।
खन—पु० समय, क्षण 'खन भीतर खन बाहिर आवति' —सूबे० ८८। क्रिवि० तुरंत। पु० वृक्ष-विशेष। कपड़ेका टुकड़ा जिसके पोलके इ० बनते हैं 'धोती सूती रेशमी खन साड़ी मंडील-' पूर्ण २१५
खनक—पु० खान इ० में खोदनेका काम करनेवाला। खान। चूहा। सेंध मारनेवाला। भूतत्त्व-वेत्ता।
खनकना—अक्रि० खनखनाना, 'खनखन' आवाज़ करना
खनखजूरा—पु० देखो 'कनखजूरा'।
खनखनाना—अक्रि० 'खनखन' आवाज़ होना। सक्रि० 'खनखन' शब्द उत्पन्न करना।
खनन—पु० खोदनेका कार्य, खोदाई।
खननहारा—वि० खोदनेवाला।
खनना—सक्रि० खोदना।
खनवाना,खनाना—सक्रि० खुदवाना '…तजि नभ कूप खनावौं।' विन० ३४७, (सू० १३)
खनिज—वि० खानसे निकला हुआ।
खनित्र—पु० गैंती।
खनियाना—सक्रि० खाली करना (रत्ना० २९२)।
खनोना—सक्रि० खोदना, कुरेदना 'द्रुम शाखा अवलम्ब बेल गहि नखसों भूमि खनोवति।' सूबे० २१५
खपची—स्त्री० बाँसकी पतली फट्टी, कमची।
खपड़ा, खपरा—पु० घर छानेके लिए मिट्टीका पकाया हुआ टुकड़ा। भिक्षा-पात्र, खप्पर (सुन्द० १३८)।
खपड़ी—स्त्री० दाना इ० भूननेका मिट्टीका पात्र।
खपत—स्त्री० मालकी बिक्री। गुन्जाइश।
खपना—अक्रि० लगना, व्यय होना, नष्ट होना, मरना (क० वचन० ८३), निभना।
खपरट—पु० खपड़ेका टुकड़ा (गुलाब ४२१)।
खपरैल—स्त्री० खपरोंसे छाया हुआ घर या छत।
खपाना—सक्रि० लगाना, प्रयोगमें लाना, बेचना। निभाना। नष्ट करना 'खग्ग खोलि ते सबै खपाये।' छत्र १५७
खपुआ—पु० डरपोक व्यक्ति (उदे० 'खरकना')।
खपुष्प—पु० आकाश-पुष्प। कोई असम्भव बात।
खप्पर—पु० तसलेकी तरहका मिट्टीका पात्र, भिक्षुकका पात्र। कालिका देवीका पात्र (उदे० 'कलींदा'),पात्र।
ख़फ़गी—स्त्री० नाराज़गी, क्रोध।
ख़फ़ा—वि० नाराज़, क्रुद्ध, अप्रसन्न।
ख़फ़ीफ—वि० छोटा, थोड़ा, क्षुद्र।
ख़बर—स्त्री० सम्वाद, वृत्तान्त। सूचना, सन्देसा, खोज। [होश।
ख़बरगीरी—स्त्री० देखभाल।
ख़बरदार—वि० सावधान, चौकन्ना, होशियार।
खबर, खबरिया—स्त्री० देखो 'खबर'।
खबीस—पु० क्रूर, शरारती व भयंकर मनुष्य (भू० १४२)।
ख़ब्त—स्त्री० सनक, पागलपन।
ख़ब्ती—वि० सनकी, झक्की।

खमरना—सक्रि० मिश्रित करना। खलबली मचाना।

खभार—पु० चिन्ता, दुःख 'ख्याउब हम छन बारहिं बारा। छिनहु न नेकु मनहिं खभारा। रघु० १८५। डर, व्याकुलता 'देखि निबिड़ तम दसहु दिसि कपि दल भयउ खभार।' रामा० ४७६, 'मोहि अपने पिय केर खभारू।' प० २९६

खम—पु० तिरछापन, झुकाव। गाते समय लयमें लचक लानेके अभिप्रायसे लिया गया विश्राम।—खाना= झुकना, पराजित होना 'मुरक्यो तुरक यहाँ खम खाई।' छत्र ११३।—ठोकना=लड़नेके लिए ताल ठोकना।

खमकना—अक्रि० खम खम शब्द करना।

खमदार—वि० टेढ़ा।

खमीर—पु० आटे आदिका सड़ाव।

खय—स्त्री० क्षय, विध्वंस, प्रलय।

खया—पु० भुजमूल ( गीता० २९८ ) 'अचल उड़त मन होत गड़गड़ो फरकत नैन खये।' सूर० ४४२

खयानत—स्त्री० गबन, अमानतमें रखी हुई चीज़को हड़प कर जाना।

खयाल—पु० ध्यान, स्मरण।

खरंजा—पु० देखो 'खड़ंजा'। खाँवाँ।

खर—पु० गधा, कौआ। घास 'पशु खर खात सवाद सों गुर गुलियाये खाय।'—रहीम। रावणका भाई। वि० खरा, चोखा, अमल 'गाँठी बाँध्यो दाम तो परख्यो न फेरि खरखोट। विन ४४४। तेज़। सख्त, कुरकुरा। घना।

खरक—पु० गायोंके ठहरनेका घेरा हुआ स्थान, 'बाड़ा', 'ठाट'। 'मन्दरतें ऊँचे कहा मन्दिर हैं द्वारकाके ब्रजके खरक मेरे हिये खरकत हैं।'—रसखानि। बाँसका किवाड़। पशुओंके चरनेकी भूमि। खड़खड़ाहट। स्त्री० खटखट। डर, चिन्ता।

खरकना—अक्रि० खटकना, कसकना, चुभना ( उदे० 'खरक' ) 'कौन पातसाह के न हिये खरकतु है।' भू० ९५। अक्रि० खरखराना 'बारहिं बार बिलोकत द्वारहिं चौंकि परै तिनके खरके हूँ।' रस० २९। खिसकना 'तुलसी करि केहरि नाद भिरे भट खग्ग खगे खपुआ खरके।' कविता० १९५

खरका—पु० देखो 'खरक'। पु० कड़ा तिनका।

खरखशा—पु० झंझट, खटका, डर, तकरार।

खरखौकी—स्त्री० घास आदिकी खानेवाली अग्नि।

खरग—पु० खड्ग, तलवार।

खरगोश—पु० खरहा, शशक।

खरच, खरचा—पु० खर्च, व्यय।

खरचना—सक्रि० खर्च करना, लगाना, बरतना।

खरतुआ—पु० एक निकम्मी घास 'खेत बिगार्‌यो खरतुआ, सभा बिगारी कूर।' साखी ३६

खरदूषण—पु० खर तथा दूषण नामके राक्षस-बन्धु। धतूरा। तृणोंको नष्ट करनेवाले ( खर = तृण ) सूर्य। 'नृपके खरदूषण ज्यों खरदूषण।' राम० २५९

खरधार—पु० तेज धारवाला हथियार।

खरब—वि० देखो 'खर्ब'।

खरबूजा—पु० एक बेल या उसका फल।

खरभर—पु० शोर-गुल, खलबली 'सुनि आगमन दसानन केरा। कपिदल खरभर भयेउ घनेरा।' रामा० ५११। ( स्त्रीलिंगमें भी, उदे० 'आनंदना', गीता० २८४ )

खरभरना—अक्रि० क्षुब्ध होना, घबड़ाना 'तब जलधर खरभरो त्रास गहि जन्तु उठे अकुलाई।' सूर० ५०

खरभराना—अक्रि० शोर करना, खलबली मचाना, व्याकुल होना।

खरभरी—स्त्री० देखो 'खरभर', 'बीजापुर-बिपति बिडरी सुनि भाजे सब दिली दरगाह बीच परी खरभरी है।' भू० [१११

खरल—पु० पत्थर इ० की गहरी कुंडी, खल।

खरवाँस—पु० पौष या चैत्रमास।

खरसा—पु० एक पकवान ( प० २७३ )।

खरसान—स्त्री० धार तेज़ करनेका पत्थर 'मानहु सकल जगत जीतनको, काम बान खरसान सँवारे।' सू० ११

खरहरा, खरेरा—पु० अरहरके डंठलका झाड़ू।

खरहरी—स्त्री० एक तरहका मेवा, खारिक, छुहारा 'परी चिरौंजी औ खरहरी।' प० २७३

खरहा—पु० खरगोश, शश।

खरांशु—पु० तीक्ष्ण किरणोंवाला। सूर्य।

खरा—वि० चोखा। तेज़। कड़ा, करारा। सच्चा, साफ़। बढ़िया, असल, उच्च 'रामसो खरो है कौन, मो सो कौन खोटो।' विन० २१४। बहुत ज़्यादा 'बीथी असवारिन भरी। हय हाथिनसों सोहति खरी।' के० १५४, (वि० १०२)। नक़द ( मजूरी इत्यादि )

खराई—स्त्री० भोरके समय कुछ खानेको न मिलनेके कारण तबीयतका कुछ खराब होना। खरापन।

खराऊँ—स्त्री० खड़ाऊँ । पादुका ।
खराद—पु० सतह चिकनानेका यंत्र । स्त्री० खरादनेका काम, खरादनेका भाव । गढ़ना । खरादपर चढ़ाना = सुधारना, सँवारना ।
खरादना—सक्रि० खरादपर चढ़ाकर चिकना और सुडौल करना ।
खराब—वि० बुरा, हीन, पतित ।
खराबी—स्त्री० बुराई, ऐब, दुर्दशा ।
खरारि—पु० कृष्ण या राम, विष्णु ।
खराश—पु० खरोंच, छिल जानेका घाव ।
खरिक, खरिका—पु० देखो 'खरक' । 'गयो हुतो चारन गो ग्वारनके संग आज खरिकामें खेलत मो लरिका डरायोरी ।' दीन० ७, 'अहो सुबल श्री दामा भैया ल्यावहु गाय खरिकके नेरे ।' सूबे० ७३ । तिनका ।
खरिया—स्त्री० पतली रस्सीकी जाली 'कृशगात ललात जो रोटिनको घरवात धरै खुरपा खरिया ।' कविता० २१२ । थैली । खड़िया । वि० स्त्री० चोखी ।
खरिहान—पु० ढेर । देखो 'खलिहान' ( प० ६० ) ।
खरी—स्त्री० खली, खड़िया । खाड़ी ( सू० ९ ) ।
खरीक—पु० तिनका 'भूषन भनत तेरे दानजल जलधिमें गुनिनको दारिद गयो बहि खरीकसो ।' भू० १३४ ।
खरीता—पु० जेब, थैली, बड़ा लिफाफा ।
खरीदना—सक्रि० मोल लेना ।
खरीदार—पु० खरीदनेवाला, ग्राहक ।
खरीफ—स्त्री० वर्षा तथा शरदकालकी फसल ।
खरोंच—स्त्री० नखादिसे छिल जानेका चिह्न, खरोंट ।
खरोंचना—सक्रि० खुरचना, छीलना ।
खरोंट—स्त्री० छिल जानेका चिह्न, खरोंच, खराश ।
खरोई, खरेई—क्रिवि० सचमुच वस्तुतः ( उदे० 'अचगरा' ) । अत्यन्त 'सूरदास अब धाम देहरी चढ़ि न सकत हरि खरेई अमान । सू० पं० वा २३
खरोष्ट्री, खरोष्ठी—स्त्री० एक प्राचीन भारतीय लिपि ।
खरौंट—स्त्री० देखो 'खरोंट' (उदे० 'खत', बि० १०७) ।
खरौंटना—सक्रि० खरोंचना, खुरचना ।
खरौंहा—वि० कुछ खारा 'अँसुवन करति तरौंसको छिनक खरौंहो नीर ।' बि० १२३
खर्ग—पु० खड्ग, तलवार ( उदे० 'चिरचना' ) ।
खर्च, खर्चा—पु० व्यय, लागत, सरफा । खपत ।
खर्चना—सक्रि० देखो 'खरचना' ।
खर्चीला—वि० अधिक व्यय करनेवाला, उड़ाऊ ।
खर्पर—पु० खप्पर, भिक्षापात्र । चोर ।
खर्ब—पु० सौ अरब । वि० छोटा, तुच्छ (रामा०१३९) ।
खर्रा—पु० कच्चा चिट्ठा, हिसाब या ब्योरेका लम्बा कागज ।
खर्राट—वि० होशियार, अनुभवी । वृद्ध ।
खर्राटा—पु० सोते समय नाकसे निकलनेवाला शब्द ।
खल—पु० खरल, दुष्ट व्यक्ति, सूर्य, धतूरा, इ० । पत्थर का बड़ा टुकड़ा 'इते मान यह सूर महाशठ हरिनग बदलि महाखल आनत ।' सूवि० ३३ । खल करना= खलमें बारीक पीसना । खल होना=चूर चूर होना ।
खलई—स्त्री० खलता, दुष्टता । वि० दुष्ट, नीच ।
खलक—पु० संसार, दुनिया 'खीजेते खलक माहिं खल-बल डारत है' भू० ६४
खल्खल्—पु० अच्छी तरह हँसनेसे उत्पन्न शब्द' धँसता दलदल, हँसता नद खल्खल् बहता, कहता कुलकुल कलकल कलकल' परिमल १५० ।
खलता—स्त्री०,-त्व -पना—पु० दुष्टता ।
खलना—अक्रि० अप्रिय मालूम होना, बुरा लगना । चूर्ण कर डालना, घोंटना 'रावण सो रसराज सुभटरस सहित लंक खल खलतो' गीता० ३८२
खलबल—पु० शोर, हलचल, घबराहट (उदे० 'खलक') ।
खलबलना,-बलाना,-भलना,-भलाना—अक्रि० घबड़ा उठना ( उदे 'करखना' ), 'सबै सैदकी फौज यों खलभलानी ।' सुजा० ४७ (१३६ भी) । कुलबुलाना खौलना ।
खलबली—स्त्री० देखो 'खलबल' ।
खलभल—पु० शोर, हलचल । उत्तेजित होना ।
खलभली—देखो 'खलभल' ।
खलल—पु० रुकावट, बाधा । धूम 'दौरि दौरि खोरि खोरि खलल मचायो है ।' रघु० २२५
खलाई—स्त्री० दुष्टता, नीचता ।
खलाना—सक्रि० खाली करना,गड्ढा करना या पचकाना, 'तौ कत द्वार द्वार कूकर ज्यों फिरते पेट खलाये।'विन०३९८
खलास—वि० समाप्त, मुक्त ।
खलासी—पु० जहाजपर पाल चढ़ाने इ० का काम करने-वाला, कुली । स्त्री० छुटकारा ।
खलित—वि० स्खलित, हिला हुआ, गिरा हुआ,डाँवाडोल 'खलित बचन अधखुलित दृग ललित स्वेदकम जोति ।' बि० २६

खलियान—पु० कटी हुई फसल रखनेकी जगह । ढेर ।

खली—स्त्री० तेल निकालनेके बाद तेलहनका बचा हुआ अंश । वि० खलनेवाला ।

खलीज—स्त्री० खाड़ी, उपसागर ।

खलीता—पु० जेब थैला ।

खलीफा—पु० प्रधानाधिकारी, बादशाह, नायब, वृद्ध पुरुष । नाई । दरजी इ० का सम्बोधन ।

खलु—क्रिवि० निःसन्देह, अवश्य ।

खलेल—पु० खली आदिका वह भाग जो फुलेलमें रह जाता है और छानकर निकाला जाता है ।

खल्व—पु० सिरके बाल गिरनेका रोग ।

खल्वाट—वि० गंजा । पु० बाल झड़नेका रोग ।

खवा—पु० कन्धा, देखो 'खवा' ।

खवाना—सक्रि० खिलाना भोजन कराना ।

खवारा—वि० खोटा 'कर्म खवारा पुट भरि लाई तातें बहुविधि भयो अचेत ।' सुन्द० १५४

खवास—पु० नौकर, खिदमतगार 'कहि खवासको सैन दै सिरपाँव मँगायो ।' सूवे०२५२ । नाई (सू० १०) । मन्त्री 'तुम तौ निपट निकटके वासी सुनियत हुते खवास्यो ।' भ्र० १३६

खवासी—स्त्री० खवासका काम । खिदमतगारी,चाकरी ।

खस—पु० जाति विशेष । 'खसिया । स्त्री० गाडर नामक घासकी जड़, उशीर ।

खसकना—अक्रि० अपने स्थानसे हट जाना, सरकना, चुपकेसे चले जाना ।

खसकाना—अक्रि० सरकाना, हटाना ।

खसखस—स्त्री० पोस्तेका दाना ।

खसखसा—वि० भुरभुरा । बहुत छोटा ।

खसखाना—पु० खसकी टट्टियोंसे घिरा हुआ घर ।

खसना—अक्रि० खसकना, स्थानसे हटना, गिरना 'सिरउ गिरे सन्तत सुभ जाही । मुकुट खसे कस अस गुन ताही ।' रामा० ४५६, ( सू० २२ )

खसबो—स्त्री० खुशबू, सुगन्धित ( रतन० ११ ) ।

खसम—पु० पति । स्वामी, प्रभु ।

खसरा—पु० पटवारियोंका एक कागज़ जिसमें खेतोंका विवरण रहता है । छोटी चेचक, खुजली ।

खसलत—स्त्री० आदत ।

खसाना—सक्रि० गिराना, नीचेकी ओर फेंकना, त्यागना 'पायो नाम चारु चिन्तामनि उर करते न खसैहौं ।' विन० २६७

खसिया—वि० बधिया, नपुंसक । पु० बकरा ।

खसी—पु० बकरा । हिजड़ा 'नरनारीके स्वादको खसी नहीं पहिचान ।' साखी ८४ । वि० नपुंसक ।

खसोटना—सक्रि० नोचना, उखाड़ना, जबरन ले लेना, लूट लेना ।

खस्ता—वि० भुरभुरा, तनिक दबानेसे टूटनेवाला, खानेमें मुलायम ।

खस्सी—वि० देखो, 'खसी' ।

खाँखर—वि० पोला । बहु छिद्रोंवाला, झीना ।

खाँग—स्त्री० कमी ( प० ६३ ), 'बरिस बीस लगि खाँग न होई ।' प० २४९ । त्रुटि । पु० काँटा, गैंडेके मुँहके ऊपरका सींग या बनैले सूअरका बाहर निकला हुआ दाँत ।

खाँगना—अक्रि० कम होना, घटना 'कहहु सो पीर काह पुनि खाँगा ।' प० ५३ । सक्रि० छेदना 'सर सो प्रति वासर वासर लागै । तन घाव नहीं मन प्रानन खाँगै ।' राम० ३६१

खाँगी—स्त्री० कमी, घटी, त्रुटि ।

खाँचना—सक्रि० खींचना, अंकित करना, 'पूछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची ।' रामा० २०९ । खींचकर बनाना या जल्दी जल्दी लिखना ।

खाँचा—पु० बड़ी खँचिया, टोकरा । पिंजड़ा ।

खाँड़—स्त्री० कच्ची चीनी । गड्ढा 'खाँड़ खनै जो आनको ताको कूप तयार ।'

खाँड़ना—सक्रि० टुकड़े टुकड़े करना । चबाकर खाना ।

खाँड़र—पु० कतला, टुकड़ा 'भाँति भाँति सब खाँडर, तरे ।' प० २७२

खाँड़ा—पु० खड्ग, चौड़ी तलवार ( भू० १६१ ) 'का मधुप कैसे समायेंगे, एक म्यान दो खाँड़े ।' भ्र० ११ । भाग, टुकड़ा ।

खाँधना—सक्रि० खाना 'नैन नासिका मुख नहीं चोरी दधि कोने खाँधो ।' भ्र० ९

खाँभ—पु० खम्भा । लिफाफा ।

खाँभना—सक्रि० लिफाफेमें रखना ।

खाँवा—पु० खूब चौड़ी खाई । एक छोटा पौधा ।

खाँसना—अक्रि० झटकेके साथ कण्ठसे हवा निकालना ।

खाँसी—स्त्री० गलेके भीतरसे कफ इत्यादि रुकनेके कारण

झटकेसे हवा निकालना । खाँसनेका रोग ।

खाई—स्त्री० दुर्ग आदिके चारो तरफ खोदा गया गड्ढा ।

खाऊ—वि० अधिक खानेवाला । उड़ाऊ ।

ख़ाक—स्त्री० धूल, राख । तुच्छ वस्तु । कुछ नहीं । ख़ाकसाही = काली भस्म, छार 'मारि करि पातसाही खाकसाही कीन्हीं जिन जेर कीन्हीं जोर सों लै हद्द सब मारे की' । भू० १७२

ख़ाकसार—पु० नाचीज़, तुच्छ व्यक्ति, अकिंचन ।

खाका—पु० ढाँचा, रूपरेखा । अनुमानपत्र ।

खाकी—वि० भूरे रंगका । पु० साधुओंका एक सम्प्रदाय ।

खाख—स्त्री० ख़ाक, धूल, चूर्ण 'मृगमद मिलै कपूर कुमकुमा, केसर मलया खाख ।' सू० २५१

खाखरा—पु० एक तरहका बाजा ( हिम्मत० ६ ) ।

खागना—अक्रि० देखो 'खाँगना' । 'नासा तिलक प्रसून पदविपर चिबुक चारु चित खाग ।' सूबे० १८०

खाज—स्त्री० खुजली । कोढ़की खाज, देखो 'कोढ़' ।

खाजा—पु० एक मिठाई । खाद्य वस्तु ।

खाट—स्त्री० पलंग । अरथी 'दुवौ सवति चढ़ि खाट बईठी ।' 'अन्त सबै बैठे पुनि खाटा ।' पु० ३३०

खाटा, खाटो—वि० खट्टा, अम्ल ।

खाड़—पु० गड्ढा ( उदे० 'खाँड' )।

खाड़ी—स्त्री० समुद्रका संकीर्ण भाग जिसके प्रायः तीन ओर स्थल हो ।

खात—पु० तालाब । कुआँ । गड्ढा 'जोड गिर्‌यो जिस खातमें धँस गयो कान प्रयन्त ।' गिरिधर० । शराब बनानेके लिए रखी हुई महुएकी राशि । खाद ।

ख़ातमा—पु० समाप्ति, मृत्यु ।

खाता—पु० हिसाबकी किताब । मद ।

ख़ातिर—स्त्री० सम्मान, आदर । अ० लिए ।

ख़ातिर जमा—पु० सन्तोष, विश्वास ।

ख़ातिरदारी—स्त्री० आदर, अतिथिसेवा ।

ख़ातिरी—स्त्री० आदर-सत्कार, आवभगत । भरोसा ।

खाती—स्त्री० गड्ढा । पु० खोदनेका काम करनेवाली जाति ।

खाद—स्त्री० पाँस । खली, गोबर आदि जो खेतकी उर्वराशक्ति बढ़ानेके लिए डाले जाते हैं ।

खादक—पु० खानेवाला । कर्ज लेनेवाला, अधर्मी ।

खादर—पु० नीची भूमि जहाँ पानी भरा रहता है । कछार, तराई 'मेघ परस्पर यहै कहत हैं धोय करहु गिरि खादर ।' सूबे० १२२ । गोचरभूमि ।

खादिम—पु० खिदमत करनेवाला ।

खादी—स्त्री० हाथका कता व हाथका बुना कपड़ा, गजी । वि० खानेवाला । नाशक ।

खाद्य—पु० भोजन । वि० खाने योग्य ।

खाध, खाधु, खाधुक—पु० खाद्य वस्तु, भोजन । 'सीस न देइ पतंग होइ तब लगि लहै न खाध ।' प० ७० । वि० खानेवाला 'जौं न होहिं अस परमँसखाधू । कित पंखिन्ह कहँ धरै बियाधू ।' प० ३४

खान—पु० खाना, भोजन । सरदार । स्त्री० खानि, आकर, कोष, धाम । आधार-स्थान 'तन रोगोंकी खान है धन भोगोंकी खान ।'

खानक—पु० खान खोदनेवाला, बेलदार । राज ।

खानगी—वि० निजी, घरू, आपसका ।

खानदान—पु० घराना, कुल ।

खानदानी—वि० वंश या कुल सम्बन्धी, परम्परासे सम्बद्ध ।

खानपान—पु० खाना-पीना । अन्न पानी । सहभोजका सम्बन्ध ।

खानसामा—पु० बेहरा ।

खाना—सक्रि० भक्षण करना, हड़प जाना, उड़ाना, नष्ट करना । सहना । पु० भोजन ।

ख़ाना—पु० विभाग, घर ।

ख़ानाख़राब—वि० सत्यानाश करनेवाला, आवारा ।

ख़ानाजाद—पु० दास । वि० घरजाया, गृहपालित 'अर्ध रात कोइ जन कहे खानाजाद गुलाम ।' साखी १७०

ख़ानातलाशी—स्त्री० मकानकी छानबीन ।

ख़ानाबदोश—वि० गृहरहित ।

खानि—स्त्री० खान, खदान । उत्पत्ति-स्थान । कोष, धाम । तरफ । प्रकार ।

खानिक—स्त्री० खानि, खदान । 'चमकैं ठौरहिं ठौर जगे हैं जे जेहि खानिक ।' दीन० १०७

खाब—पु० ख्वाब, स्वप्न ।

खाम—पु० चिट्ठी बन्द करनेका लिफ़ाफ़ा । जोड़ । खम्भा । वि० । घटनेवाला ।

ख़ाम—वि० कच्चा, अनुभवहीन । कमज़ोर । [ देखो 'खाँभना' ।

खामना—सक्रि० मिट्टी आदिसे मुँह बन्द करना । देखो

ख़ामी—स्त्री० कचाई, कमी 'कविनके मामलेमें करै जौन

गामी तीन नमकहरामी मरे कफन न पावैंगे।'
—करनेस।

खामोश—वि० चुप, शान्त।

खार—पु० विशेष प्रकारकी राखका नमक। रेह, लोनी। सज्जी। क्षार, राख। छोटा तालाव, डबरा 'दई न जात खार उतराई चाहत चढ़न जहाज।' 'पुनि पाछे अघ सिन्धु बढ़त है सूर खार किन पाटत।' सूवि० २९

खार—पु० काँटा। द्वेष, जलन।

खारक—पु० छोहारा।

खारा—पु० आम तोड़नेका थैला। खाँचा। घास इ० बाँधनेकी जाली। एक तरहका कपड़ा। वि० नमकीन। अप्रिय।

खारिक—पु० देखो 'खारक'।

खारिज—वि०निकाला हुआ। जो (अभियोग) विचार करनेके योग्य न समझा जाय।

खारुआँ—पु० मोटा कपड़ा रँगनेका एक तरहका रंग।

खाल—स्त्री० शरीरका ऊपरी आवरण, चमड़ा। शरीर (ब्रज० २७६)। धौंकनी। मृत देह। नीची जगह, खाली जगह, निचाई, खाड़ी।

खालीर—स्त्री० खाल, चमड़ी (गुलाब ४९६)।

खाला—स्त्री० मौसी 'खाला केरी बेटी ब्याहैं'—कबीर।

खालिक—पु० सृष्टिकर्ता।

खालिस—वि० विशुद्ध। जिसमें मिलावट न हो।

खाली—वि० रीता, रिक्त, रहित। जो प्रयोगमें न आ रहा हो। व्यर्थ। क्रिवि० सिर्फ, केवल 'खाली धुनि धुनि परै नहीं जीवनकी आशा।' दीन० २१०

खाले—क्रिवि० नीचे।

खाविन्द—पु० पति, स्वामी।

खास—वि० विशेष, प्रधान। निजका। ठीक।

खासदान—पु० पनडब्बा, पानदान (सेवा० २५)।

खासा—वि० अच्छा, सुन्दर। स्वस्थ। पूरा। पु० एक तरहका सफेद कपड़ा 'खासा मलमल बाफता, उनकर राखै मान।' गिरिधर०

खासबरदार—पु० राजाकी सवारीके आगे चलनेवाला कर्मचारी।

खास्सा—पु० विशेष लक्षण, विशेषता (सेवा० १८६)

खासियत—स्त्री० विशेषता, प्रकृति। गुण।

खाहिश—स्त्री० ख्वाहिश, इच्छा, चाह।

खिचना—अक्रि०आकर्षित होना, किसी तरफको बढ़ाना, चित्रित होना। निकल आना।

खिचाव—पु० तनाव, खिंचनेका भाव।

खिआल—देखो 'खियाल' मज़ाक 'इक रजपूत हमसे खिआल करै।' ग्राम० १००

खिखिंद—पु० किष्किन्ध पहाड़ 'कीन्हेसि मेरु खिखिंद पहारा।' प० ८

खिचड़ी—स्त्री० एकमें मिला हुआ या मिलाकर पकाया हुआ दाल चावल। कई वस्तुओंकी मिलावट। मकर संक्रान्तिका पर्व। विवाहकी एक रस्म।

खिजना, खिझाना—अक्रि० झुँझुला उठना, चिढ़ना, गुस्सा होना 'जबहिं मोहिं देखत लरिकन सँग तबहिं खिझत बल भैया।' सूवे० ६१। हठ करना 'कहत जननी दूध डारत खिझत कछु अनखाइ।' सू० ७७

खिजमत, मति—स्त्री० खिदमत, सेवा (कबी० ५२५)

खिजमतगार—पु० सेवक, नौकर (गुलाब १६९)

खिजलाना—अक्रि० चिढ़ना, झुँझला उठना। सक्रि० तंग करना, चिढ़ाना।

ख़िज़ाँ—स्त्री० पतझड़का समय।

ख़िज़ाब—पु० बाल काला रँगनेकी दवा।

खिझाना, खिझावना—सक्रि० तंग करना, चिढ़ाना 'ऐसेहि कहि सब मोहिं खिझावत'—सूवे० ६१

खिड़कना—अक्रि० खिसक जाना, चुपकेसे चल देना।

खिड़काना—सक्रि० हटाना, अलग करना। बेच डालना

खिड़की—स्त्री० झरोखा, गवाक्ष, जंगला।

ख़िताब—पु० उपाधि, पदवी।

खिदमत—स्त्री० सेवा, परिचर्या।

खिदमतगार—पु० नौकर, टहलुवा।

खिन—पु० क्षण (वि० ५९)

खिन्न—वि० नाराज़, उदास, दुःखी।

खिपना—अक्रि० खपना। मिल जाना, तल्लीन होना।

खियाना—सक्रि० खिलाना। अक्रि० घिस जाना।

खियाल—पु० ख्याल, विचार। हँसी, खेल (बि० ११४)

खिरका—पु० देखो 'खरक' राँभति गौ खिरकनमें बछरा हित धाई।' सू० ५८

खिरकी—स्त्री० खिड़की, झरोखा।

खिरनी—स्त्री० एक तरहका पेड़ या उसका फल।

खिराज—पु० मालगुजारी। राजस्व।

खिरिरना—सक्रि० सींकके छाजमें रखकर अनाजको छानना। खुरचना। ( कविता० १९२ )
खिरौरा—पु०, खिरौरी—स्त्री० केवड़ा देकर बाँधी हुई खैरकी टिकिया 'सोंधा सबै बैठ लै गाँधी। फूल कपूर खिरौरी बाँधी।' प० १६
खिलंदरा—वि० खिलवाड़ करनेवाला ( रत्ना ३४७ )।
खिलअत—स्त्री० देखो 'खिलत'।
खिलकत—स्त्री० सृष्टि, भीड़।
खिलकौरी—स्त्री० क्रीड़ा, खेल।
खिलखिलाना—अक्रि० ज़ोरसे हँसना।
खिलत, खिलति, खिलवति—स्त्री० सम्मानसूचक वस्त्रादि 'खिलवति करी नवाब...' सुजा० ६४
खिलना—अक्रि० विकसित होना, फूलना, प्रसन्न होना, भला मालूम होना।
खिलवत—स्त्री० तनहाई, एकान्त स्थान, पोशीदगी।
खिलवती—पु० अन्तरंग मित्र ( हिम्मत० ३ )।
खिलवत खाना—पु० एकान्त जगह, गुप्त मन्त्रणाका स्थान ( उदे० 'खड़गी' )।
खिलवाड़,-वार—स्त्री० खेल, तमाशा, दिलबहलाव। पु० खेलाड़ी ( उदे० 'खेलवार' )।
खिलाई—स्त्री० खिलानेका काम।
खिलाड़, खिलाड़ी—पु० खेलनेवाला। खेल करनेवाला।
खिलाना—सक्रि० भोजन कराना। विकसित करना। [ खेलमें लगाना।
खिलाफ़—वि० विरुद्ध, उलटा।
खिलौना—पु० ( बालकोंके ) खेलनेकी चीज़।
खिल्ली—स्त्री० हँसी, दिल्लगी। पानका बीड़ा। खील, कील।
खिसकना—अक्रि० देखो 'खसकना'।
खिसना—अक्रि० खिसकना, गिरना, चला जाना 'तन मन धन जोबन खिसै, तऊ न मानै हार।' सू० २१
खिसलना, खिसिलना—अक्रि० फिसलना, गिर पड़ना 'ऐसी सिलसिली ओप सुन्दर कपोलनकी खिसिल खिसिल परै डीठि जिन परते।' सुन्दर श्टं० १०७
खिसाना, खिसिआना, खिसियाना—अक्रि० क्रुद्ध होना, कुढ़ जाना, रिसियाना ( उदे० 'अनैसा' )। 'सुनि कपि बचन बहुत खिसियाना।' रामा० ४२७। लज्जित होना 'आवत नहीं लाजके मारे मानो कान्ह खिस्यानो।' भ्र० ३९
खिसी—स्त्री० लज्जा। धृष्टता ( बि० १९९ )।
खींच—स्त्री० खिचाव। अत्यधिक माँग।
खींचतान—स्त्री० खींचाखींची, नोकझोंक। खींचखाँचकर किसी तरह अर्थ लगाना।
खीचना—सक्रि० आकर्षित करना, तानना, ऐंचना, निकालना, घसीटना। चित्रित करना।
खींचाखींची,-तान,-तानी—स्त्री० देखो 'खींचतान'।
खीज, खीझ—स्त्री० कुढ़न, झुँझलाहट, 'कोप जाकी खीज भूपति भिखारीसे निहारे होत, भूपसे भिखारी जाकी रीझ पै सराहकी।' ललित० ३७
खीजना, खीझना—अक्रि० झुँझलाना, क्रुद्ध होना 'निज सारथि सन खीझन लागा।' रामा ५१३, (सूसु० ८१)
खीन—वि० क्षीण, दुर्बल, सूक्ष्म। 'देखि उमहिं तप खीन-शरीरा।' रामा० ४६, 'बसा लङ्क बरनै जग झीनी। तेहितें अधिक लंक वह खीनी।' प० ५१
खीनता, खीनताई—स्त्री० दुर्बलता, सूक्ष्मता, घटी।
खीप—पु० एक घना पेड़। लज्जालु।
खीमा—पु० तम्बू, पटसदन।
खीर—स्त्री० दूधमें पका चावल। दूध 'खीर खड़ाननको मद केशव सो पलमें करि पान लियोई।' राम० १११
टेढ़ी—=कठिन बात ( जीव ९४ )।
खीरा—पु० ककड़ीकी तरहका फल ( रहीम १४ )।
खीरी—स्त्री० खिरनी नामक फल 'कोइ दारिउँ कोइ दाख औ खीरी।' प० ८७। थनके ऊपरका मांस।
खील—स्त्री० काँटा, कील, लौंग। लावा, 'कुंकम तथा खीलोंसे भरे थाल'' आँधी १९६
खीला—पु० काँटा, कील।
खीली—स्त्री० पानका बीड़ा।
खीवन, खीवनि—स्त्री० मस्ती, मत्तता।
खीस—वि० नष्ट, व्यर्थ ( रहि० वि० ४० )। विध्वस्त 'सहसभुजहु दससीस खीस ह्वै गये सहित कुल।' दीन० १४७, ( भ्र० ५५ )। स्त्री० अप्रसन्नता, क्रोध। शरम। हानि 'अब सलाह इनसों करे, कछू न ह्वै है खीस।' छत्र० ५३। हाथीके दाँत जो बाहर निकले रहते हैं।
खीसा—पु० जेब, थैला।
खुंबी, खुंभी—स्त्री० कानमें पहननेका एक गहना, लौंग, कील 'कानन कनक जड़ाऊ खुंभी।' १६, ( ४८ भी )
खुआर—वि० नष्ट, दुर्दशाग्रस्त, खराब। प्रतिष्ठारहित।

खुआरी—स्त्री० नाश, बरबादी, खराबी। अप्रतिष्ठा।
खुक्ख—वि० खाली, दरिद्र, छूछा।
खुखड़ी—स्त्री० (नैपालियोंकी) एक तरहकी कटार।
खुगीर—पु० पायजामेके नीचे लगानेका कपड़ा। ज़ीन।
खुचुर—स्त्री० व्यर्थके दोष दिखलाते रहना।
खुजलाना, खुजाना—अक्रि० खुजली मालूम होना। सक्रि० खुजलीके कारण नख इत्यादिसे रगड़ना।
खुजली—स्त्री० एक तरहका चर्मरोग, खाज। सुरसुरी।
खुटक—स्त्री०, खुटका—पु० सन्देह, चिन्ता।
खुटकना—सक्रि० ऊपरकी पत्ती या फुनगी इ० तोड़ना, खोंटना, नोच लेना।
खुटचाल—स्त्री० खोटा आचरण, दुष्टता, उपद्रव।
खुटचाली—वि० दुष्ट, लम्पट, दुराचारी, बदमाश।
खुटना—अक्रि० पूरा होना, खतम होना। अक्रि० खुलना 'विकट जटे' जौलगु निपट खुटैं न कपट कपाट।' वि० १५०। अक्रि० अलग होना।
खुटपन—पु० खोटापन, दोष।
खुटाई—स्त्री० दोष, खराबी।
खुटाना—अक्रि० खुटना, पूरा होना ( रामा० १४६ )।
खुटिला—पु० नाकमें या कानमें पहननेका एक गहना ( सू० १६३, १७० )।
खुट्टी—स्त्री० बालकोंकी पारस्परिक नाराजगी सूचक एक क्रिया जिसमें वे दूसरेकी कानी अँगुलीसे अपनी कानी उँगली मिलाकर उसे चूम लेते हैं।
खुड्डी, खुड्ढी—स्त्री० शौचके लिए बैठनेके पायदान। पाखाना फिरनेका गड्ढा।
खुतबा—पु० प्रशंसा, गुणवर्णन।
खुत्थी, खुथी—स्त्री० फसल कट जानेपर अरहर आदिके पेड़का ज़मीनमें बचा हुआ अंश। खूँटी। वसनी। धरोहर। सम्पत्ति।
खुद—अ० स्वयं, स्वतः, आप।
खुदकुशी—स्त्री० आत्महत्या।
खुदगरज—वि० स्वार्थी।
खुदना—अक्रि० खोदा जाना।
खुदरा—पु० छोटी छोटी साधारण चीज़ें, फुटकर चीज़ें।
खुदा—पु० खुद पैदा होनेवाला, ईश्वर।
खुदाई—स्त्री० खोदनेकी क्रिया। खोदनेकी मजदूरी। ईश्वरत्व। ईश्वरकी रचना, दुनिया।
खुदी—स्त्री० अभिमान, अहंकार।
खुद्दी—स्त्री० चावल आदिके छोटे टुकड़े।
खुनखुना—पु० बच्चोंका एक खिलौना। घुनघुना।
खुनस—स्त्री० रिस, क्रोध 'मोपर कृपा सनेह बिसेखी। खेलत खुनस न कबहूँ देखी।' रामा० ३२३
खुनसाना—अक्रि० रिसाना, क्रोध करना।
खुनसी—वि० क्रोधी, गुस्सैल।
खुफ़िया—पु० गुप्तचर, जासूस। वि० गुप्त।
खुभना—अक्रि० चुभना, धँसना, गड़ना (उदे०'खुभी')।
खुभराना—अक्रि० उत्पात करनेके लिए घूमना, इठलाते हुए फिरना।
खुभाना—सक्रि० चुभाना, गड़ाना 'नन्दलला तियके हियमें मतिराम तहाँ दृगवान खुभायो।'ललित० १८९
खुभिया, खुभी—स्त्री० कानमें पहननेका गहना, लौंग, कील 'मनमथ नेजा, नोकसी खुभी खुभी जिय माँहि' वि० ७, बूचिहि खुभी आँधरी काजर' 'अ० १७। पीतल या चाँदी-सोनेका पोला जो हाथीके दाँतपर चढ़ाया जाता है 'मोतिनहार जलाजल मानो, खुभी दन्त झलकावै।' सू० (व्रजमा० १६) ( दे० 'खुमी' )
खुमान—वि० आयुष्मान् (शिवाजीकी उपाधि,भू० ५२)। पु० शिवाजी 'ग्रीषमके भानु सो खुमानको प्रताप देखि तारे सम तारे गये मूँदि तुरकनके।' भू० १४
खुमार—पु० खुमारी।
खुमारी, खुम्हारि—स्त्री० नशा। नशेकी थकावट, आलस्य 'राजत सुख सैन नैन मैनकी खुमारी।' —अलबेली आल, कबहूँ इत कबहूँ उत डोलन लागी प्रीति खुम्हारि।' सूबे० ७८
खुमी—स्त्री० पोला जो हाथीके दाँतपर चढ़ा रहता है। दाँतमें जड़ी सोनेकी कँटिया। ( दे० 'खुभी' )
खुरंट, खुरंड—स्त्री० सूखे घावकी पपड़ी।
खुर—पु० चौपायोंके पाँवकी फटी टाप। सुम।
खुरक—स्त्री० अँदेशा,खटका। नृत्यका एक भेद। एक पेड़।
खुरखुर—पु० गलेकी घरघराहट।
खुरखुरा—वि० गड़नेवाला, खरदरा, जो समतल न हो।
खुरचन—स्त्री० खुरचकर निकाली हुई चीज़। कड़ाहीसे कुरेदकर निकाला हुआ दूध या गुड़।
खुरचना—सक्रि० खरोंचना, कुरेदना, छीलना।
खुरचनी—स्त्री० खुरचनेका औज़ार।

खुरचाल—स्त्री० दुष्टता, शरारत ।
खुरजी—स्त्री० घोड़े आदिकी पीठसे दोनों तरफ लटकनेवाली बड़ी थली ।
खुरतार—स्त्री० खुरका आघात ।
खुरपा—पु० घास छीलनेका एक छोटासा औज़ार ( उदे० 'खरिया' ) ।
खुरपी—स्त्री० छोटा खुरपा ।
खुरमा—पु० एक तरहका पकवान । छोहारा ।
खुरहा—पु० एक पशु-रोग ।
खुराक—स्त्री० आहार, भोजन ।
खुराफात—स्त्री० बखेड़ा, रद्दी बात ।
खुरी—स्त्री० रका चिह्न ।
खुर्द—वि० छोटा ।—बीन=स्त्री० अणुवीक्षण यंत्र ।
खुर्दबुर्द—वि० नष्ट, बरबाद ।
खुर्राट,खुर्रांट—वि० देखो 'खर्राट' ।
खुलना—अक्रि० आवरण हटना, प्रकट होना, बन्धनका छूटना, छूटना ( उदे० 'पील' ), खिलना 'कुसुम जब खुल पड़ते सोच्छ्वास' पल्लव १४७ शोभित होना, फबना '...ते सब तजि अलि कहत मलिन मुख, उज्वल भस्म खुली ।' सू० ( गीता० २९२ ) ।
खुलासा—वि० संक्षिप्त । स्पष्ट, साफ़। पु० सारांश ।
खुल्लमखुल्ला—क्रिवि० जाहिर तौरपर, प्रकट रूपसे ।
खुवारी—स्त्री० बर्बादी, खराबी । अप्रतिष्ठा, अपमान । 'राजा करै न न्याय प्रजाकी होत खुवारी ।' बैताल ।
खुश—वि० प्रसन्न । अच्छा, सुन्दर, मधुर ।
खुशकिस्मत—वि० अच्छे नसीबवाला, भाग्यवान् ।
खुशखत—वि० जिसकी लिखावट अच्छी हो ।
खुशखबरी—स्त्री० अच्छी खबर ।
खुशनसीब—वि० देखो 'खुशक़िस्मत' ।
खुशनुमा—वि० सुन्दर, मनोहर ।
खुशबू, खुशबो—स्त्री० सुगन्धित ।
खुशहाल—वि० जिसकी स्थिति अच्छी हो । धनसम्पन्न ।
खुशहाली—स्त्री० अच्छी स्थिति ।
खुशामद—स्त्री० चापलूसी, चाटुकारिता ।
खुशियाली—स्त्री० खुशहाली, प्रसन्नता ।
खुशी—स्त्री० हर्ष, आनन्द ।
खुश्क—वि० सूखा, जो सरस न हो, रूक्ष ।
खुश्की—स्त्री० सूखापन, रुखाई । स्थल ।
खुसामति—देखो 'खुशामद' ( सुधानिधि ३३ ) ।
खुसाल, खुस्याल—वि० आनन्दित, प्रसन्न 'मार्यो फिरि फिरि मारिये, खूनी फिरत खुस्याल ।' वि० १६३, 'आपकी प्रसंसा सुनि आपही खुसाल होइ'सुन्द०११८
खुही—स्त्री० वर्षा इत्यादिसे बचनेके लिए खास तरहसे लपेटा गया कम्मल या कपड़ा ।
खूँखार—वि० हिंसक । क्रूर । भयङ्कर ।
खूँट—पु० कोना । ओर । कोनेमें लगा हुआ बड़ा पत्थर । भाग ।—छँड़ाना = पिंड छुड़ाना, छुटकारा पाना 'हा हा करति सबनि सों मैं ही कैसेहु खूट छँड़ावति ।' सूबे० ११३ । स्त्री० कानका एक भूषण, ढार 'कानन्ह कुण्डल खूँट औ खूँटी ।' प० १४२ । रोक, पूछताछ । कानका मैल ।
खूँटना—सक्रि० छेड़छाड़ करना, टोकना, पूछताछ करना, रोकना । अक्रि० घट जाना (उदे० 'कागर') । टूटना । 'परे सेल टूटे कहूँ खग्ग खूँटे ।' सुजा० २३
खूँटा—पु० मेख ।
खूँटी—स्त्री० पौधों या बालोंकी जड़का अंश । कील, छोटा खूँटा ।
खूँद—स्त्री० घोड़ेकी उछल कूद 'तुलसी जौ मन खूँद सम कानन बसहु कि गेह ।'दोहा० ११०('उदे० चुटकना')
खूँदना—अक्रि० पैरोंके नीचे दबाना, कुचलना, पाँव उठा उठाकर जल्दी जल्दी ज़मीनपर पटकते रहना । (सू० ५) 'खूँदहिं कुरलहिं, जनु सर हंसा ।' प० १५२
खूक, खूखू—पु० सूअर 'खूक मलहारी गजगदह विभूतिधारी गिदुआ मसान वास कर्योई करत है ।' गुरु गो०
खूटना—अक्रि० घटना ( देखो 'खूँटना' ) । बीत जाना, चुक जाना 'आयुर्बल खूट्यो धनुष ज्यु टूट्यो, मैं तनमन सुख पायो ।' राम० १७४, ( सू० २५९ ) । रुक जाना, बन्द हो जाना 'चारि मास बरषे जल खूटे' –सूबे० ४०६ । सक्रि० टोकना, छेड़ना ।
खून—पु० रुधिर, रक्त । हत्या ।
खूनखराबा—पु० मारकाट । एक तरहकी वार्निश ।
खूनख़राबी—स्त्री० मारकाट ।
खूनी—वि० हत्यारा, घातक । अत्याचारी ।
खूब—क्रिवि० अच्छी तरह, पूर्णतः । वि० अच्छा । अ० वाह, ठीक ।
खूबसूरत—वि० सुन्दर, लावण्यमय ।

खूबसूरत—स्त्री० सुन्दरता, लावण्य, उत्तमता ।
खूबी—स्त्री० विशेषता, विलक्षणता, अच्छाई, गुण ।
खूसट—पु० उल्लू (प० २१२) । वि० नीरस हृदय । बुड्ढा ।
खूसर—पु० उल्लू '···सुमिरे कृपालुके मराल होत खूसरो ।' कविता २०६ । वि० मनहूस, निर्बुद्धि, बुड्ढा ।
खेकसा, खेखसा—पु० देखो 'खखसा' ।
खेचर—पु० गगनचारी । विमान । पक्षी । ग्रह, तारा । [ मेघ ।
खेचरीमुद्रा—स्त्री० योगकी एक मुद्रा ।
खेटक—पु० आखेट, शिकार । गाँव । तारा । ढाल ।
खेटकी—पु० शिकारी । भड़ेरिया, भड्डर ।
खेड़ा—पु० छोटा गाँव । खेड़ेकी दूब=बहुत दुर्बल ।
खेड़ी—स्त्री० आँवल ।
खेत—पु० जोतने बोनेकी भूमि, क्षेत्र । रणभूमि 'तैसेहि भरतहिं सैन समेता । सानुज निदरि निपातउँ खेता ।' रामा० २०९ । खेत आना=लड़ाईमें मारा जाना । खेत करना=युद्ध करना ।
खेतिहर—पु० किसान, कृषक (सूवि० २९) ।
खेती—स्त्री० किसानी, बोई हुई फसल ।
खेद—पु० दुःख, ग्लानि (सुन्द० ७०) ।
खेदना—सक्रि० भगाना, खदेड़ना, दौड़ाना । शिकारके पीछे दौड़ना 'भुज भुजगेसकी वै सङ्गिनी भुजङ्गिनी सी खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलनके । भू० १७७
खेदा—पु० जङ्गली जानवरको पकड़नेके लिए किसी खास जगहपर लाना । शिकार ।
खेना—सक्रि० नाव चलाना । बिताना, काटना ।
खेप—स्त्री० एक बारका बोझा, लदा माल । दोप ।
खेपना—सक्रि० व्यतीत करना, काटना ।
खेम—पु० क्षेम, कुशल, मङ्गल, मुक्ति 'मीठी अरु कठवति भरी रौताई अरु खेम ।' दोहा० १०६, (उदे० 'क्षेम')
खेमा—पु० डेरा, तम्बू ।
खेरा—पु० खेड़ा, छोटा गाँव 'आप पापको नगर बसावत, सहि न सकत पर खेरो ।' विन० ३५०, (अ० ४७)
खेरौरा—पु० एक तरहका लड्डू 'मोति लाडू औ खेरौरा बाँधे ।' प० २९५
खेल—पु० क्रीड़ा, तमाशा, विनोद, उछलकूद, मनबहलाव, विहार । तुच्छ कार्य ।
खेलक—पु० खेलनेवाला मनुष्य, खिलाड़ी ।
खेलना—अक्रि० दौड़धूप, उछल-कूद, तमाशा इ० में लगना । अभिनय करना । विचरना 'न जनौं कौन देस तें खेला ।' प० १०१ चला जाना 'हंस कजाइ मानसर खेले ।' प० २३९ । खेलना खाना=चैनसे दिन बिताना ।
खेलवाड़—पु० खेल, तमाशा, दिल्लगी ।
खेलवार—पु० खेल करनेवाला 'संपति चकई भरत चक मुनि आयसु खेलवार ।' रामा० ३२२ । पु० खेल, तमाशा, दिल्लगी ।
खेला—स्त्री० खेल, मन-बहलाव (साकेत २४३) ।
खेलाड़ी—वि० खेल करनेवाला । खेलमें लगा रहनेवाला ।
खेलाना—सक्रि० खेलमें लगाना, बहलाना ।
खेलार—पु० खेलनेवाला, खेलाड़ी 'चढ़ी चङ्ग जनु खैंच खेलारू ।' रामा० ३१४
खेलौना—पु० खेलनेकी चीज़ ।
खेवक—पु० खेनेवाला, केवट 'जेहिके नाव औ खेवक बेगि लागि सो तीर ।' प० ८, (प० १६७)
खेवट, खेवटिया—पु० मल्लाह 'खेवटसे परिचय नहीं क्योंकर उतरै पार ।', सागर उमड़ा प्रेमका खेवटिया कोइ एक ।' साखी ५०
खेवनहार—पु० खेवक ।
खेवना—सक्रि० खेना, नाव चलाना ।
खेवरिया—पु० खेनेवाला, मल्लाह, कर्णधार (गुलाब६७)
खेवा—पु० नावद्वारा पार करनेका काम । नाव खेनेका किराया । बोझसे लदी हुई नाव । नावका बोझ 'चले उताइल जेहि कर खेवा ।' प० ८
खेवाई—स्त्री० नाव खेनेका काम या मज़दूरी ।
खेस—पु० सूतकी बनी हुई मोटी चादर ।
खेसारी—स्त्री० एक कदन्न ।
खेह, खेहर—स्त्री० धूल, विभूति, ख़ाक, मिट्टी (प० 'कह कबीर ता साधुकी हम चरननकी खेह ।' सा० ११०, 'मोद न मन, तन पुलकि नैन जल, सो खेहर खाउ ।' विन० २५८
खैंचना—सक्रि० खींचना, आकर्षित करना । 'खेत बन वत खैंचत गाढ़े ।' रामा० १४२
खैर-आफ़ियत—स्त्री० कुशल क्षेम ।
खैरख़ाह—वि० हितैषी, भला चाहनेवाला ।
खैर मैर, खैल भैल—पु० हलचल, शोर-गुल 'कैंते

चहुँ ओर मच्यो अति आनँद पुर न समाइ।' रघु० ११, [( उदे० 'उछलना')

खैरा—वि० कत्थई रंगका।

खैरात—पु० दान।

खैरिअत—स्त्री० कुशल। कल्याण।

खैला—पु० मथानी ( अखरा० ३५७ )।

खोंइचा—पु० आँचल।

खोंच—स्त्री० कँटिया आदिमें लगकर कपड़ेका फटना। नोकदार वस्तुसे छिलनेकी हलकी चोट। 'तुलसी चातक प्रेम-पट मरतहु लगी न खोंच।' दोहा० ६२९। पु० मुट्ठी, मुट्ठीभर अन्न।

खोंचा—पु० पक्षियोंको फँसानेका बाँस। देखो 'खोंच', पु०।

खोंचिया—पु० खोंची लेनेवाला भिखारी।

खोंची—स्त्री० वह थोड़ा अन्न इ० जो बाजारमें दूकानदारोंकी ओरसे भिखमङ्गोंको दिया जाता है, भीख 'खाई खोंची माँगि मैं तेरो नाम लिया रे।' विन० १२१

खोंट—स्त्री० खोट।

खोंटना—सक्रि० ऊपरी हिस्सा तोड़ना। नोचना। उपाटना, उखाड़ना ( उदे० 'खत' )।

खोंड़र—पु० पेड़ इत्यादिका खोखला भाग, गड्ढा।

खोंड़ा—वि० विकलांग, जिसका कोई अङ्ग भङ्ग हो।

खोंतल—पु० घोंसला।

खोंता, खोंथा—पु० देखो 'खोंतल।

खोंप—स्त्री० दूरपर लगा हुआ टाँका। नुकीली चीजमें फँसकर फटा हुआ कपड़ेका अंश, खोंच (गबन २५)।

खोंपा—पु० हलकी लकड़ी जिसमें फाल लगी रहती है। छाजनका कोना। चोटीका गुच्छा, चूड़ा 'सरवरतीर पदमिनीआई। खोंपा छोरि केस मुकलाई।' प० २७

खोंसना—सक्रि० अटकाना 'रघुवंसी सरदार रतनकी खोंसे सीस कलँगी।' रघु० ३०

खोई—स्त्री० ऊखके रस निकाले हुए डंठल। खुद्दी। लाई।

खोखला—वि० शून्य, पोला, थोथा। पु० बड़ा छिद्र।

खोगीर—पु० चारजामेके नीचेका कपड़ा। ज़ीन।

खोज—स्त्री० पता, अनुसन्धान, निशान 'रहा न कतहुँ दुःख कर खोजू।' प० १६३। पहियेकी लीक या पाँव आदिका चिह्न 'सचिव चलायउ तुरत रथ, इत उत खोज दुराइ।' रामा० २४०, ( प० ५१ )। खोज पड़ना=पीछे पड़ना 'सत्य कहहु पदमावति सखी परीं सब खोज।' प० १५५

खोजक, खोजी—वि० पता लगानेवाला, ढूँढनेवाला।

खोजना—सक्रि० अनुसन्धान करना, ढूँढना।

खोजा—पु० हिजड़ा ( साखी १३६ )। नौकर।

खोजी—वि० खोजनेवाला, अनुसन्धान करनेवाला।

खोट—स्त्री० बुराई ( सुसु० २२ ), पाप 'हरि कृपालु सब पाछिली, छमिहैं तेरी खोट।' ध्रुवदास। अगूर, फोड़ेका देउल, खुरंड ( बि० १२५ )। निकृष्ट वस्तुकी मिलावट। मिलायी गयी वस्तु। वि० दुष्ट, ऐबी 'छोट कुमार खोट अति भारी।' रामा० १५१। खोट होना = दूषित होना, बिगड़ जाना (उदे० 'अगोट')।

खोटता—स्त्री० खोटापन, बुराई।

खोटपन—पु० खोटापन, दुष्टता।

खोटा—वि० दूषणयुक्त, बुरा, दुष्ट।

खोटाई—स्त्री० दुष्टता, नीचता, बुराई, दोष। कपट।

खोटापन—पु० देखो 'खोटाई'।

खोड़—स्त्री० आसेब इ० का फेर, प्रेतबाधा, दैवकोप।

खोड़रा—पु० कोटर; दाँत इ० के भीतरका गड्ढा।

खोदना—सक्रि० गड्ढा करना, खनना। छेड़छाड़ करना। उसकाना। [ * उसकी मजदूरी।

खोदाई—स्त्री० खोदने या चिह्नित करनेका काम या

खोनचा—पु० फेरी देकर बेचनेवालोंका मिठाई रखनेका थाल।

खोना—सक्रि० नाहक जाने देना, गुम कर देना। खराब करना।

खोपड़ा, खोपरा—पु० गरी। सिरकी हड्डी। सिर।

खोपड़ी—स्त्री० कपाल, सिर।

खोपा—पु० देखो 'खोंपा'।

खोभरा—पु० चुभनेवाली वस्तु, खूँटी 'जैसे कोई पाँवनि पैजार कूँ चढ़ाइ लेत ताकूँ तौ न कोऊ काँटे खोभरेको दुख है।' सुन्द० १४७

खोभार—पु० कूड़ा इ० फेंकनेका गड्ढा। शूकरके रहनेका स्थान।

खोम—पु० क़ौम, जाति, झुण्ड '...बसे खलनके खेरन खबीसनके खोम हैं।' भू० १४२

खोया, खोवा—पु० गाढ़ा औंटा हुआ दूध। ईंटका गारा।

खोर—स्त्री० गली, कूचा (व्रज १२०), दोष (रतन० ७५)।

खोरना—अक्रि० स्नान करना, नहाना 'आयसु भंगते जो न डरौं सब मीजि सभासद सोनित खोरौं।' कवित्ता० १८९, ( गीता० ३६८ )। सक्रि० खोलना,

'ज्ञान दियो गुरुदेव कृपा करि दूरि कियो भ्रम खोरि कियारो ।' सुन्द० १५६

खोरा—वि० लँगड़ा, अगभंग 'काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ।' रामा० २०७ । पु० कटोरा, गिलास 'रतन-जड़ाऊ खोरा खोरी ।' प० १३४

खोराक—स्त्री० भोजन या दवाकी मात्रा । आहार ।

खोराकी—स्त्री० खानेके निमित्त दिया हुआ द्रव्य । वि० पेटू ।

खोरि—स्त्री० गली, संकीर्ण मार्ग ( उदे० 'खलल' ) 'लरिका सहस एक सग लीने नाचत फिरत साँकरी खोरी ।' सूबे० ६५ । दोष 'हँसिवे जोग हँसे नहिं खोरी ।' रामा० ९, 'सूठे सुतहिं लगावति खोरि ।' सूबे० ११४। बुराई । चन्दनका आड़ा तिलक 'गये श्याम रवितनयाके तट अंग लसत चंदनकी खोरी ।' सूबे०७६

खोरिया—स्त्री०कटोरी, बुंदेके रूपमें कटे हुए डाँकके टुकड़े ।

खोरी—स्त्री० कटोरी (उदे० 'खोरा') 'काहू हाथ चंदनके खोरी ।' प० १३८ । देखो 'खोरि' ।

खोल—पु० आवरण, गिलाफ । मोटी चादर ।

खोलना—सक्रि० आवरण या रुकावट हटाना । बन्धन तोड़ना, मुक्त करना । उद्घाटन करना । रहस्य प्रकट करना ।

खोली—स्त्री० गिलाफ़ । झोपड़ी । कोठरी ( छत्तीस० ) ।

खोसना—सक्रि० लुचकना, छीनना '·· दारा सुत वित्त तेरे खोसि खोसि खायँगे ।' सुन्द० १३

खोह—स्त्री० गुफा, दर्रा ।

खोही—स्त्री० धूल 'सूर सुयस्तुहिं छोड़ि अभागे, हमहिं पतावत खोहि ।' सू० २२५ । स्त्री० पत्र-छत्र । 'खुही', वर्षा इत्यादिसे बचनेके लिए खास तरहसे लपेटा गया कम्मल या कपड़ा ( गीता० ३३८, सूबे० १०८ ) ।

खौंट—पु० खुरड ( उदे० 'खत' )

खौफ़—पु० दहशत, भय, त्रास ।

खौर—स्त्री० चन्दनका आड़ा व धनुषके आकारका तिलक। स्त्रियोंका एक गहना । 'हरिके केसन सों सटी कपाल खौर इकतार ।' व्यास

खौरना—सक्रि० चन्दनका तिलक लगाना ।

खौरहा—वि० खौरा रोगवाला । गंजा ।

खौरा—पु० एक चर्मरोग जिसमें बाल गिर जाते हैं। वि० देखो 'खौरहा' ।

खौरी-स्त्री० देखो 'खौर' । 'केसरि खौरि करी तियके तन प्रीतम और सुबासके संगनि ।' रस० १९(सू०१२३)

खौलना—अक्रि० उबलना, चुरना, जोश खाना ।

खौलाना—सक्रि० दूध इत्यादि गरम करना ।

खौहा—वि० दूसरेकी कमाईपर निर्वाह करनेवाला । पेटू।

ख्यात—वि० प्रसिद्ध, जाहिर ।

ख्याति—स्त्री० प्रसिद्धि, यश ।

ख़याल—पु० ध्यान । विचार, मत, आदर । पु० खेल, हँसी, लीला 'हाय दई ! यह कालके ख्यालमें, फूलसे फूलि सबै कुम्हिलाने ।'—देव । 'सिला, गुह, गीध, कपि, भील, भालु, रातिचर, ख्याल ही कृपालु कीन्हे तारनतरन ।' विन० ५६४

ख्याली—वि० कल्पित । सनकी । कौतुकिया, खेल करने वाला । ( कविता० २४० )

ख्रिष्टान—पु० ईसाई मतका माननेवाला, क्रिस्तान ।

ख्वाजा—पु० खोजा । सरदार, मुसलमान, फकीर ।

ख्वानचा—पु० छोटा थाल या रक़ाबी ।

ख़्वाब—पु० स्वप्न ।

ख़्वार—वि० खराब, नष्ट, अनादृत ।

ख्वारी—स्त्री० खराबी । तिरस्कार । वि० नष्ट 'रावन कुटुंब समेत भे ख्वारी ।' सूबि० १४

ख्वाह—अ० या, या तो ।

ख्वाहिश—स्त्री० चाह, इच्छा ।

# ग

गंगबरार—स्त्री० नदीकी धारा या बाढ़के हटनेसे निकली हुई भूमि ।

गंगशिकस्त—पु० नदीकी धारासे कटी हुई ज़मीन ।

गंगा—स्त्री० एक प्रसिद्ध नदी, भागीरथी, जाह्नवी । [ सागरमें जाना। उलटी—बहाना = लोक-परम्परा या लोक-रीतिके विरुद्ध काम करना ।—उठाना = गंगाजल उठाना

गंगागति—स्त्री० मुक्ति ।

गंगाजमुनी—वि० मिश्रित । दो तरहकी धातुओंका

रंगोंका बना हुआ ।
गंगाजल—पु० गंगाका पानी । एक तरहका सफेद चमकदार रेशमी कपड़ा 'गंगाजलकी पाग सिर सोहत श्री रघुनाथ ।' राम० १३२
गंगाजली—स्त्री० टिन इ० की बनी हुई सुराही जिसमें यात्री गंगाजल भरकर ले जाते हैं ।
गंगाधर—पु० शिव । समुद्र ।
गंगापुत्र—पु० भीष्म, गांगेय । घाटिया, पंडा ।
गंगाल—पु० कंडाल, बड़ा जलपात्र ।
गंगालाभ—पु० मृत्यु ।
गंगेय—पु० भीष्मपितामह ।
गंगोझ—पु० गंगाजल 'सुरसरि गत सोई सलिल, सुरा-सरिस गंगोझ ।' दोहा० ११०
गंगौटी—स्त्री० गंगाके किनारेकी मिट्टी ।
गंज—पु० बाल उड़नेका रोग, खल्वाट । बालखोरा । गल्लेका बाज़ार, हाट । ख़ज़ाना, राशि । समूह 'हरष विषाद न केसरिहि कुंजर गंज निहार ।' दोहा० १३६
गंजगुवारा—पु० बंबका गोला ( हम्मीरहठ ३० ) ।
गंजन—वि० नष्ट करनेवाला 'पापतरु भंजन, विघनगढ़ गंजन, जगत मनरंजन द्विरदमुख गाइये ।' भू० १, (सू० ७७) । पु० नाश । तिरस्कार । दुःख, 'तेहि मिलि गंजन को सहै ? वरु दिनु मिले निचिंत ।' प० १४९
गंजना—सक्रि० नष्ट करना, चूर करना 'तोहि समेत नृपदल मद गंजा ।' रामा० ४२५, 'कह कबीर वा दासको गंजि सकै नहिं कोय ।' साखी १२४
गंजा पु०बाल झड़नेका रोग । वि० जिसके बाल झड़ गयेहों ।
गंजाना—सक्रि० नाश करना, मारना 'मनसबदार चौकीदारन गँजाय महलनमें मचाय महाभारतके भारको ।' भू० ७४ । ढेर लगाना ।
गंजिया—स्त्री० घास बाँधनेकी जाली । रुपये रखनेकी सूतकी थैली । कन्दा, शकरकन्द ।
गंजी—स्त्री० एक पहनावा, बण्डी । राशि, समूह ।
गंजीफा—पु० एक तरहका खेल ।
गंजेड़ी—वि० गाँजा पीनेवाला ।
गँठजोड़ा—पु० गाँठ जोड़ना, विवाहकी एक रस्म ।
गँठिवन—स्त्री० एक पौधा जो दवामें काम आता है ।
गंड—पु० कपोल । फोड़ा, गाँठ ।
गँडदार—पु० देखो 'गड़दार' ।

गंडमंडल,-स्थल—पु० गालके ऊपरकी जगह, कनपटी ।
गंडा—पु० गाँठ । गाँठवाला अभिमन्त्रित तागा । तोते आदिके गलेका चिह्न ।
गँड़ासा—पु० एक तरहका हथियार । घासके टुकड़े करनेका औज़ार
गँड़ासी—स्त्री० छोटा गँड़ासा ।
गंडुक, गंडूक—देखो 'गंडूष'-चिल्लू ( सूसे० १८९; १०१, ११५ ) ।
गंडूष—पु० कुल्ला । चिल्लू 'मानहु भरि गंडूष कमलतें डारत अलि अनंदन ।' सूबे० २२३ । सूँडकी नोक ।
गँडेरी—स्त्री० चूसनेके लिए काटा हुआ ऊखका छोटा टुकड़ा ।
गंतव्य—पु० लक्ष्य । वि० चलने योग्य ।
गंता—पु० गमन करनेवाला ।
गंदगी—स्त्री० मैल, मैलापन । बदबू ।
गंदला—वि० मैला, गन्दा ।
गंदा—वि० मैला, घृणित ।
गंदुम—पु० गेहूँ ।
गंध—स्त्री० महँक, बास, लेश ।
गंधक—स्त्री० एक खनिज द्रव्य ।
गंधकी—वि० हलके पीले रंगका ।
गंधरब,-गधर्ब—पु० एक देव जाति जो गान-कलामें पटु होती है ।
गंधर्व-विद्या—स्त्री० संगीत । गानविद्या ।
गंधर्व-विवाह—पु० वर-वधूका स्वेच्छापूर्वक सम्बन्ध कर लेना ।
गंधर्वी—स्त्री० "गन्धावन" । वि० गन्धर्व सम्बन्धी ।
गंधवह,-वाह—पु० हवा ।
गंधवाही—पु० गन्धका वहन करनेवाला, गन्धको साथ ले चलनेवाला, गन्धयुक्त 'गन्धवाही गहन कुन्तल ।' सान्ध्यगीत० ४५
गंधसार—पु० चन्दन ।
गंधाना—अक्रि० महँकना । बस्साना ।
गंधाबिरोजा—पु० एक पेड़का गोंद जो प्रायः दवाके काममें आता है ।
गँधिया—पु० एक दुर्गन्धयुक्त बरसाती कीड़ा ।
गंधी—पु० अत्तार 'ए गन्धी, मतिअन्ध तू अतर दिखावत काहि ।' वि० उपस्क० ४० । एक घास । एक कोड़ा ।
गंधीला—वि० गन्दा, मैला 'बहता पानी निर्मला, बँधा गँधीला होय ।' साखी १२४
गँभीर—वि० गहरा, अथाह, शान्त, जटिल, भारी ।
गँव—स्त्री० घात, अवसर 'देखि लागि मधु कुटिल किराती । जिमि गँव तकहि लेउँ केहि भाँती ।' रामा० २०५ ।

प्रयोजन। उपाय, युक्ति। गवँहीं=युक्तिसे, चुपकेसे 'उठेउ गवँहिं जेहि जान न रानी।' रामा० ९६, (१३६)
गँवई—स्त्री० छोटा गाँव (वि० १८०) वि० ग्रामीण।
गँवरदल—वि० भद्दा, गँवारका सा।
गँवरमसला—पु० ग्रामीण लोगोंकी कहावत।
गँवाना—सक्रि० खोना। समय काटना।
गँवार—वि० ग्रामीण, देहाती, मूर्ख, नासमझ।
गँवारिन—स्त्री० ग्रामीण स्त्री, मूर्ख नारी।
गँवारी—स्त्री० गँवारपन, मूर्खता। गँवार या मूर्ख स्त्री 'स्वामिनि अविनय छमबि हमारी। बिलगु न मानब जानि गँवारी।' रामा०२५४। वि०ग्रामीण सा, ग्राम्य।
गँवारू—वि० गँवारका सा, बुरा, भद्दा। [बेढंगा।
गँवेली—स्त्री० गँवार स्त्री 'नागरि विविध विलास तजि, बसी गँवेलिन माहिं।' वि० २०८
गँस—पु० गाँठ, कुटिलता (अ० १३४) शत्रुता, हृदयमें गड़ जानेवाली बात, ताना। स्त्री० गाँसी (सूसु० ६५१), तीरकी नोक।
गँसना—सक्रि० जकड़ना, मजबूतीसे कसना। अक्रि० खूब भर जाना, सर्वत्र छा जाना।
गँसीला—वि० गँसा हुआ, ठसा हुआ। गफ। नोकदार
गइंद—पु० गयन्द, गजेन्द्र, बड़ा हाथी। [चुभनेवाला।
गई करना—अक्रि० जाने देना, खयाल न करना।
गईबहोर—वि० गयी हुई वस्तुको पुनः प्राप्त करनेवाला 'गईबहोर गरीब निवाजू।' रामा० ११
गऊ—स्त्री० गो, गाय।
गकरिया—स्त्री० लिट्टी, बाटी, मधुकरी।
गगन—पु० आकाश, नभ। शून्य स्थान।
गगनचर—पु० आकाशगामी। पक्षी, ग्रह, इ०।
गगनचुंबि, गगनचुंबी—देखो 'गगनस्पर्शी'
गगनभेदी—वि० बहुत ऊँचा, प्रचंड (स्वर)।
गगनस्पर्शी—वि० आकाशको छूनेवाला। अत्यन्त ऊँचा।
गगरा—पु० कलश, पीतल इत्यादिका घड़ा।
गगरिया, गगरी—स्त्री० छोटा घड़ा, कलसी 'सिरते नीर ढराइ देत फोरि सब गगरी।' सूवे० १११
गच—पु० पक्का फर्श, पक्की छत; चूना-सुरखी आदिसे पिटी भूमि' ज्यों गच काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तनकी।' विन० २४१। चूना-सुरखी आदिसे युक्त मसाला।
गचकारी, गचगीरी—स्त्री० चूने सुरखीका काम।
गचगर—पु० चूने सुरखी आदिका काम करनेवाला, गच पीटनेवाला।
गचना—सक्रि० खूब कसके भरना। गाँसना।
गचाका—पु० 'गच'से गिरनेकी आवाज।
गच्छना, गछना—अक्रि० जाना 'दक्षिनकी पच्छिनी सी गच्छैं अंतरिक्ष मग, पच्छिमकी पक्षहीन पक्षी ज्यों उरत हैं।' के० १५८। सक्रि० निबाहना। अपने ऊपर लेना। सक्रि० ...गूँथना, बनाना 'हरवा गछल भइल साँझ रे।' ग्राम० १४४
गजंद, गजंदा—पु० हाथी 'गाडर लदे गजंद सों देखो उलटी रीति।' साखी २९, (२७ भी)।
गज—पु० हाथी। नींव। गज़=तीन फुटके बराबर माप।
गज असन—पु० गजाशन, पीपलका पेड़।
गज़क—पु० मद्य पीनेके बाद खाई जानेवाली चटपटी वस्तु, चिखना, चाट (उर्दू 'अछक') जलपान।
गजगाह—पु० हाथीकी झूल, पाखर 'साजिकै सनाह गजगाह सउछाह दल महाबली धाए बीर जातुधान धीरके।' कविता० १९४, (प० २५२)
गजगौनी—वि० स्त्री० हाथीके समान मन्द चालसे [चलनेवाली स्त्री
गजगौहर—पु० गजमोती।
गजदंती—वि० हाथी दाँतका बना हुआ।
गजधर—पु० थवई, राज, मेमार।
गजना—अक्रि० गर्जन करना 'तो बलसों गढ़ काट गजै अरु तू गढ़ कोटनके बल गाजै।' भू० ८८, 'जगको धन तुम देत हौ गजिकै जीवनदान।' दीन १०६
गजनाल—स्त्री० हाथियोंद्वारा खींची जानेवाली तोप।
गजपति—पु० श्रेष्ठ हाथी। कलिङ्ग देशके राजाकी उपाधि 'सुनहु गजपति उतर हमारा। हम तुम एकै, भा निरारा।' प० ६३। बहुतसे हाथियोंवाला राजा।
ग़ज़ब—पु० अन्धेर। आपत्ति। नाराजगी।
गजबीली—वि० स्त्री० गजब ढानेवाली (उत्तर० १०१)
गजमणि, गजमनि—स्त्री० गजमोती।
गजमुक्ता—पु० स्त्री० वह मोती जो हाथीके मस्तकसे [निकले।
गजमोती—पु० गजमुक्ता।
गजर—पु० गजल। एक एक पहरपर घण्टा बजनेकी आवाज 'पहरहि पहर गजर नित होई।' प० १८ प्रातःकालका घण्टा। जगानेका घण्टा।

गजर बजर—पु० अण्डबण्ड, गिचपिच ।

गजरा—पु० घनी गुँथी हुई पुष्पमाला, हार । कलाईका भूषण-विशेष । एक रेशमी वस्त्र ।

ग़ज़ल—स्त्री० एक तरहका गीत ।

गजवदन, गजानन—पु० गणेशजी ।

गजवान—पु० महावत ।

गजा—पु० नगाड़ा बजानेका डण्डा, नगाड़ेकी चोब 'सुर-दुन्दुभि सीस गजा, सर रामको, रावणके सिर साथहिं लाग्यो । राम० ४९७

गजी—स्त्री० हथिनी । एक तरहका मोटा देशी कपड़ा, गाढ़ा 'कह कबीर कोरी गजी कैसे लागे रङ्ग ।' साखी ३३ । पु० हाथीका सवार ।

गजेंद्र—पु० गजराज, ऐरावत, श्रेष्ठ हाथी ।

गज्जूह—पु० हाथियोंका झुण्ड 'केहरि कबहुँ न तृन चरै जो व्रत करै पचास । जो व्रत करै पचास विपुल गज्जूह बिदारै ।' नरहरि ।

गझिन—वि० घनी बुनावटवाला, मोटा, गफ ।

गटई, गटइया—स्त्री० गर्दन ।

गटकना—सक्रि० निगलना 'गटकि गटकि करि विष फल खातु है ।' सुन्द० ५५ । हड़पना ।

गटकीला—वि० गटक जानेवाला, खानेवाला 'ब्रजजुवतिनके प्रेम भोगमें घर घर माखन गटकीले ।' नारायण स्वामी ।

गटना—अक्रि० बँधना, जकड़ जाना 'अपनी रुचि जितही तित खैंचति इन्द्रिय ग्राम गटी ।' सू० ५

गटपट—स्त्री० मिलावट, परस्परका मेल । सहवास ।

गटरमाला स्त्री० बड़े दानोंकी माला । ( जीव० २५९ )

गटा—पु० गट्टा, कलाई, बीज, नेत्रगोलक । गटरमाला 'रहै प्रेम मन अरुझा गटा ।' प० ३०६

गटी—स्त्री० गाँठ । समूह 'राजपत्नि समेत पुत्रनि विप्रलाप गटी रटी ।' राम० २२१ ।

गट्टा—पु० कलाई । गाँठ । बीज ।

गट्ठा—पु० बड़ी गठरी, गट्ठर, घास इ० का बोझा, प्याज इ० की गाँठ ।

गट्ठर—पु० बड़ी सी गठरी ।

गठन—स्त्री० बनावट, गढ़न ।

गठना—अक्रि० मेल होना, पटना, जुड़ना, शामिल होना, संयोग होना, अच्छी तरह बनना ।

गठबंधन—पु० विवाहमें एक रस्म । 'गँठजोड़ा' ।

गठरी—स्त्री० पोटली, बोझ ।

गठा—दे० 'गट्टा' ( उदे० 'परजरना' ) ।

गठित—वि० गठा हुआ, बना हुआ, ग्रथित ।

गठिबंध—पु० गठबन्धन ।

गठिया—पु० वातरोग-विशेष । खुरजी, गठरी ।

गठीला—वि० गाँठयुक्त । दृढ़, चुस्त ।

गठौत, गठौती—स्त्री० दोस्ती, मेल । षड्यन्त्र ।

गड़काना—सक्रि० डुबाना ।

गड़गड़ा—पु० एक तरहका हुक्का ।

गड़गड़ाना—अक्रि० गरजना । सक्रि० (हुक्का) पीना ।

गड़गड़ी—स्त्री० डुग्गी 'ढोल दमामा गड़गड़ी सहनाई अरु भेरि ।' साखी ६३

गड़दार—पु० मतवाले हाथीके साथ चलनेवाले साँटेमार नौकर ( उदे० 'अड़दार' ) । महावत ।

गड़ना—अक्रि० चुभना 'काँटे सी कसकति हिये गड़ी कटीली भौंह ।' बि० १६६ । पीड़ा देना, दर्द करना । समाना, प्रवेश करना 'तू मोहन मन गड़ि रही गाढ़ी गड़नि गुवालि ।' बि० २५२ । जमना, ठहरना, स्थिर होना । मिट्टी आदिके नीचे दबना ।

गड़प—स्त्री० पानी इ० में किसी वस्तुके गिरने या डूबनेका शब्द ।

गड़पना—सक्रि० हड़पना, खा जाना ।

गड़बड़—स्त्री० अव्यवस्था, गोलमाल । उपद्रव । वि० अनियमित, बेसिलसिले । ऊबड़ खाबड़ ।

गड़बड़झाला—पु० गोलमाल, गड़बड़ी ।

गड़बड़ाना—अक्रि० गड़बड़ीमें पड़ना । सक्रि० गड़बड़ करना ।

गड़बड़िया—पु० गड़बड़ करनेवाला ।

गड़बड़ी—स्त्री० देखो 'गड़बड़' स्त्री० ।

गड़रिया—देखो 'गड़ेरिया' ।

गड़हरी—स्त्री० लात ( ग्राम० ६० ) ।

गड़हा—पु० गड्ढा ।

गड़ही—स्त्री० छोटा गड्ढा 'निकट निरादर होत है ज्यों गड़हीको पानि ।' रहीम २०

गड़ाना—सक्रि० धँसना, चुभाना 'कवि मतिराम काम तीरहूतें तीक्षन कटाक्षनकी कोर छेदि छातीमें गड़ाई हैं ।' ललित १०२ । सक्रि० गाड़नेमें लगाना ।

गड़ाप—पु० देखो 'गड़प' ।

गड़ापा—पु० गहरा स्थान ।

गड़ायत—वि० गड़नेवाला, चुभनेवाला ।
गड़ारी—स्त्री० घिरनी । घेरा वृत्त । आड़ी धारी ।
गड़ियार—वि० सुस्त, मट्ठर ।
गड़ुआ, गडुवा—पु० लोटा ( प० १३४ ) ।
गडुर, गडुल—पु० कुबड़ा मनुष्य । वि० कुबड़ा ।
गडुरी—स्त्री० एक पक्षी ।
गडेरदार—वि० घेरदार ।
गड़ेरिया—पु० भेंड़ पालनेवाली जाति ।
गड़ोना—सक्रि० धँसाना, चुभाना ।
गड़ौना—पु० काँटा ।
गड्ड—पु० गड्ढा । ढेरी, समूह ।
गड्डमगोल—पु० गड़बड़झाला ( जीव २९३ ) ।
गड्डी—स्त्री० ढेर, गाँज, समूह ।
गड्ढा—पु० गड़हा, गर्त ।
गढ़त—वि० कपोलकल्पित ।
गढ़—पु० क़िला, कोट । केन्द्र या अड्डा । खाई ।
गढ़त, गढ़न—स्त्री० बनावट, रचना, गठन ।
गढ़ना—सक्रि० बनाना, रचना 'सुरप्रतिमा खम्भन्हि गढ़ि काढ़ी । मंगल द्रव्य लिये सब ठाढ़ी ।' रामा० १४६ । सुडौल करना, प्रस्तुत करना । बात गढ़ना= घात बनाना, झूठमूठकी बात तैयार कर लेना 'सजि प्रतीति बहु बिधि गढ़ि छोली । अवध साढ़साती तब बोली ।' रामा० २०७
गढ़पति, गढ़पाल—पु० क़िलादार, राजा ।
गढ़वार, गढ़वाल—पु० गढ़वाला । एक प्रदेश ।
गढ़ा—पु० गड्ढा, गर्त, खात ।
गढ़ाना—सक्रि० बनवाना । अक्रि० अखरना ।
गढ़िया—वि० गढ़नेवाला ।
गढ़ी—स्त्री० छोटा क़िला ।
गढ़ीश, गढ़ीस—पु० गढ़पति । गढ़का मालिक ।
गढ़ैया—वि० गढ़नेवाला, रचनेवाला, बनानेवाला ।
गढ़ोई—पु० गढ़पति, किलादार 'और गढ़ोई नदी नद सिव गढ़पाल दरयाव ।' भू० ४४
गण—पु० श्रेणी, झुण्ड, सघ । तीन अक्षरोंका समूह ।
गणक—पु० ज्योतिषी । [ देखो 'गन' ।
गणतंत्र—पु० वह राज्य जहाँ प्रजातन्त्र प्रचलित हो ।
गणना—स्त्री० गिनती, सख्या ।
गणनाथ,-पति, गणाधिप—पु० गजानन, गणेशजी ।
गणिका—स्त्री० वेश्या । एक वृक्ष ।
गणित—पु० संख्या, परिमाण इ० सम्बन्धी शास्त्र ।
गणेश—पु० गणपति, विनायक ।
गत—स्त्री० गति, दशा, अवस्था । रूप, रंग, वेष । उपयोग । दुर्दशा । मृत देहका क्रिया-कर्म । नाचमें शरीरका विशेष प्रकारसे हिलाना-डुलाना 'रसजुत लेत अनन्त गत पुतरी पातुर राय ।' बि० ११९ (वंग०) । वि० बीता हुआ, पिछला । रहित, खाली ।
गतका—पु० खेलनेका डण्डा । घूँसा ।
गतांक—पु० पिछली सख्या । वि० गया गुज़रा ।
गतालोक—वि० आलोकहीन, महत्त्वहीन ।
गति—स्त्री० गमन, चाल । दशा । पहुँच, पैठ । लीला, करनी । रीति, ढंग । शरण, अवलम्ब, अन्तिम उपाय मोक्ष, मुक्ति (उदे० 'अगती') । रूपरंग, वेष । मृत्युके बादकी दशा । नृत्यादिमें विशेष रूपसे अंग परिचालन । पैतरा, कुश्ती इ० लड़नेवालोंके पैरकी चाल ।
गत्ता—पु० दफ्ती, पुट्ठा ।
गत्तालखाता—पु० बट्टाखाता ।
गत्थ, गथ—पु० पूँजी, दाम, धन-सम्पत्ति 'जो ओहि हाट सजक भा गथ ताकर पै बाँच ।' प० १७,(अ० ४१)। माल 'तुम्हरो गथ लादो गयदपर हींग मिरच पीपरि कहा गावति ।' सूबे० १४० । झुण्ड ।
गथना—सक्रि० एकको दूसरेसे जोड़ना या मिलाना ।
गद—पु० व्याधि, रोग । विष । एक कपि । एक असुर । मोटाई ( रतन ९२ ) ।
गदका—पु० वह डण्डा जिसपर चमड़ेकी खोल चढ़ी रहती है और जो लकड़ी खेलनेके काममें आता है ।
गदकारा—वि० गुलगुला, मुलायम 'गोरी गदकारी परै हँसत कपोलनु गाड़ ।' बि० २९३
गदगद—वि० खुशी अथवा प्रेमकी अधिकताके कारण रुका हुआ या अस्पष्ट ( कंठ, स्वर, इ० ) । पुलकित ।
गदना—सक्रि० कहना 'कहि सकल लोक काकों चही । चोर नामकों का गदत ।' दीन० ११३
गदबदा—वि० गुलगुला, कोमल ।
गदर—पु० बग़ावत, विद्रोह । उपद्रव ।
गदराना—अक्रि० पकनेपर होना । ( अंगोंका ) पक्षिम अवस्थाको प्राप्त होना । आँख आनेपर होना । वि० गदराया हुआ ( उदे० 'आम' ) ।

गदला—वि० गन्दा, मैला ( जल )।
गदलाना—अक्रि० मैला होना। सक्रि० मैला करना।
गदहपचीसी—स्त्री० पचीस वर्षतककी तरुण अवस्था जब सिरपर एक तरहकी मस्ती सवार रहती है।
गदहरा—पु० गदहा, खर। गदेला, तोषक।
गदहा—पु० गर्दभ, खर, गधा रोगहर्त्ता, वैद्य।
गदहिला—पु० ईंटा इत्यादि लादनेका गदहा रखनेवाला।
गदा—स्त्री० प्राचीनकालका एक अस्त्र। मुद्गरकी तरह
गदाई—वि० क्षुद्र, रद्दी, खराब। [ भाँजनेका एक डंडा।
गदाला—पु० हाथीकी पीठपरका गद्दा।
गदेरी—गदोरी—स्त्री० हथेली [❋गदेले।' छत्र० २९
गदेला—पु० तोषक। बालक बच्चा 'फिरे मुलकमें मोगल❋
गद्गद—वि० प्रेमादिके आवेशसे पूर्ण।
गद्दर—वि० अधपका। पु० मोटा गद्दा।
गद्दा—पु० तोषक, मोटा बिछौना जिसमें रुई इ० भरी हो
गद्दी—स्त्री० किसी अधिकारीका स्थान। घोड़ेकी पीठपर ज़ीनके नीचे रखनेका कपड़ा। व्यापारियों आदिके बैठनेकी जगह।
गद्दीनशीन—वि० जो गद्दीपर बैठा हो, सिंहासनारूढ़।
गद्य—पु० वार्तिक, पद्यका उलटा।
गधा—पु० गदहा, गर्दभ।
गन—पु० झुण्ड, समूह (भू० ७२)। श्रेणी। दूत। किंकर। शिवजीके सेवक। अनुचरोंका समूह। अनुयायी,
गनक—पु० गणक, ज्योतिषी। [ अनुगामी। चोवा।
गनती—स्त्री० गिनती। गणना। संख्या।
गनना—स्त्री० गणना। सक्रि० गिनना।
गननाना—अक्रि० गूँजना, सनसनाना (छत्र० १३१)।✠
गननायक—पु० गणेशजी। शिवजी। [ ✠ घूमना।
गनप,-गनपति,-राय—पु० देखो 'गननायक'।
गनाना—सक्रि० गिनाना। अक्रि० गिना जाना।
गनाल—स्त्री० एक तरहकी तोप ( हिम्मत० १२ )।
गनिका—स्त्री० वेश्या। वह नायिका जो धनके लोभमे नायकसे प्रीति करे। [कृपा अधिकाई।' बिन०३९१
गनी—वि० धनवान् 'निदरि गनी आदर गरीबपर करत
गनीम—पु० डाकू 'कबीर तोड़ा मानगढ़ मारे पाँच गनीम।' साखी २७। शत्रु 'महाराज सिवराज चढ़त तुरंगपर ग्रीवा जात नै करि गनीम अति बलकी।' भू० ७८
गनीमत—स्त्री० सन्तोषकी बात, बड़ी बात। मुफ्ती माल।
गन्ना—पु० ऊख।
गप—स्त्री० झूठी खबर, झूठी बात। मनबहलावकी बात।
गपकना—सक्रि० झटपट खा लेना, हड़पना। गप्प उड़ाना, झूठ कहना 'कीन्हों है सग त घात सो मैं नाहि कहौं फेरि पील पै तोरायो चार चुगुलके गपके।' भू० १५६
गपड़चौथ—पु० निरर्थक वार्तालाप। वि० अंडबंड।
गपना—सक्रि० गप मारना, बकवाद करना 'हारहि जनि जन्म जाय गाल गूल गपत।' विन० ३०८
गपिया, गपिहा—वि० गप मारनेवाला, बकवादी।
गपोड़—वि० बनावटी या झूठी बात कहनेवाला।
गपोड़ा—पु० झूठी बात।
गपाड़िया—पु० गप्पी, गपोड़।
गप्प—स्त्री० देखो 'गप'।
गप्पी—वि० गप्प मारनेवाला, बात गढ़कर या बात बढ़ा-
गफ़—वि० ठस, घना। [ कर कहनेवाला।
गफलत, गफिलाई—स्त्री० असावधानी। भ्रान्ति, मोह।
गबड़ी, गबड्डी—स्त्री० कबड्डी खेल 'हिम्मति बड़ीके गबड़ीके खिलवारन लौं देत लै हजारन हजार बार चपटैं।' भू० १७८
गबन—पु० ख़यानत, किसीकी धरोहरको हड़प जाना।
गबरगंड—वि० बेवकूफ़।
गबरहा—वि० गोबर मिला हुआ।
गबरा—वि० देखो 'गब्बर', 'धनी भये निधन, निधन भये गबरे।' कवी० ५०४
गबरू—वि० नवयुवा। भोला-भाला। पु० पति।
गब्बर—वि० अभिमानी, घमण्डी। बहुमूल्य। धनी। हठी।
गभीर—वि० गम्भीर 'ऐ गभीर गन्धर्व-साम-ध्वनि।' पल्लव ८४
गभुआर—वि० गर्भजात ( केश ), जन्मके समयका रखा हुआ 'चिक्कन कच कुञ्चित गभुआरे। बहु प्रकार रचि मातु सँवारे।' रामा० ११०। जिसके सिरके जन्मके बाल न कटे हों, छोटी अवस्थाका।
गम—पु० मार्ग, रास्ता ( उदे० 'अर्थाना' )। गमन, सहवास। स्त्री० पहुँच, पैठ ( क० वच० ७ )। गम करना=खा लेना।
ग़म—पु० दुःख, शोक। चिन्ता, ध्यान।
गमक—स्त्री० सुगन्ध। पु० बतलानेवाला, जानेवाला।
गमकना—अक्रि० महँकना। उत्साहपूर्ण होना भू० १२०

गमखोर—वि० सहनेवाला, सहिष्णु ।
गमगीन—वि० उदास, दुःखित ।
गमन—पु० जाना, चलना, सम्भोग ।
गमनना—अक्रि० जाना ।
गमना—अक्रि०जाना, चलना । देखो 'गमिना' ।
गमला—पु० फूल पौधे लगानेके निमित्त बना हुआ मिट्टी आदिका पात्र ।
गमाना—सक्रि० खोना, गँवाना, जाने देना ( सुन्द० [ ९६ ) ।
गमार—वि० देहाती, गँवार ।
गमिना—सक्रि० गम करना, ध्यान देना 'मेरे तौ न डर रघुबीर सुनौ साँची कहौं खल अनखैहैं, तुम्हें सज्जन न गमिहैं ।' कविता० २१९
गमी—स्त्री० शोक, शोककी अवस्था । मृत्यु ।
गम्यता—स्त्री० गमन ।
गयंद—पु० गजेन्द्र, बड़ा हाथी ( उदे० 'अरिन्द' ) ।
गय—पु० घर । धन । प्राण । आकाश । पुत्र । हाथी 'तेहि पुर बसइ सीलनिधि राजा । अगनित हय गय सेन समाजा ।' रामा० ७५ । सुग्रीवकी सेनाका एक वानर । [ १८ ) ।
गयनाल—स्त्री० देखो 'गजनाल' । हथनाल ( सुजा०
गयल—स्त्री० गैल, गली, रास्ता ।
गयावाल—पु० गयाजीमें रहनेवाला पण्डा ।
गरंथ—पु० 'ग्रन्थ' ( प० ५ ) ।
गर—पु० गरदन ( सू० १२ ), 'लोभ पास जेहि गर न बँधाया ।' रामा० ४०६ । विष । एक मादक रस । गरे पड़ना=सिर पड़ना, सहनेके लिए मौजूद रहना । अव्य० अगर ।
गरक—वि० मग्न, डूबा हुआ '...सुन्दर कहत ज्ञानी ज्ञानमें गरक है ।' सुन्द० १५०
गरकाव—पु० डूबनेका भाव । वि०डूबा हुआ, निमग्न । 'जिनकी गरज सुने दिग्गज बेआब होत मदहीके आब गरकाव होत गिरि हैं ।' भू० १३३
गरगज—पु०किलेकी दीवारोंपरका बुर्ज 'गरगज चूर चूर होइ परहीं ।' प० २६०, ( २५९ ) । लड़ाईकी सामग्री रखनेका घनाउटी टीला । टिकटी, नावके [ ऊपरकी छत ।
गरगाव—देखो 'गरकाव' ।
गरज—स्त्री० गम्भीर और ऊँची ध्वनि । ग़रज़=मतलब, स्वार्थ, प्रयोजन । आवश्यकता । इच्छा ।
गरजन—पु० गरज, गम्भीर ऊँचा शब्द ।
गरजना—अक्रि० ऊँचा और गम्भीर शब्द करना 'कपि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गरजा अरु धावा ।' रामा० ४२४ तड़कना,चटकना ।वि०गर्जन करनेवाला।
ग़रज़ी, गरजू—वि० ग़रज़वाला । मतलबी । इच्छुक ।
गरट्ट—पु० झुण्ड, समूह 'हैवर हरट्ट साजि गैवर गरट्ट सम पैदरके ठट्ट फौज जुरी तुरकानेकी । भू० १७८
गरद—स्त्री० गर्द, धूल 'सौ भैया राजा दुर्योधन पलमें गरद समोयो । सूवि० १८ । पु० विष । वस्त्र-विशेष।
गरदन—स्त्री० ग्रीवा, गला । [ देनेका काम ।
गरदनियाँ—स्त्री० गरदनमें हाथ डालकर बाहर निकाल
गरदनी—स्त्री० गरदनियाँ । कुरते आदिका गला ।
गरदा—पु० धूल, मिट्टी । [ साधना । कबूल करना ।
गरदानना—सक्रि० समझना, गिनना । शब्द-रूप
गरना—अक्रि० गलना, नष्ट होना 'राजा कौन बड़ो रावनतें गर्वहिं गर्व गरे । सू० २, 'साहि तनै सब कोप कृसानु ते वैरि गरे सब पानिपवारे ।' भू० ७१। निचुड़ना, गिरना, टपकाना 'जबते बिछुरे कमलनयन सखि रहत न नयन नीरको गरिबो ।' भ्र० ४०
गरनाल—स्त्री० चौड़े मुँहवाली तोप ।
गरब—पु० गर्व, घमण्ड, अभिमान ।—गहेली-वि० स्त्री० अभिमानिनी 'तू गजगामिनि गरबगहेली ।' [ प० ११५
गरबई—स्त्री० गर्वीलापन, घमण्ड ।
गरबना, गरबाना—अक्रि० घमण्ड करना ( कबीर १९४ ), 'हँसे श्यामसुख हेरिके धोवत गरबानो ।' [ सूदे० १८१
गरबाहीं—स्त्री० देखो 'गलबाहीं' ।
गरबित—वि० अभिमानयुक्त, घमण्डी ।
गरबीला, गरभी—वि० अभिमानी, घमण्डी ।
गरभ—पु० देखो 'गर्भ' ।
गरभाना—अक्रि० गर्भयुक्त होना ।
गरम—वि० उष्ण, तप्त, उग्र, तीक्ष्ण । [युक्त विवाद।
गरमागरमी—स्त्री० उत्साह, जोश, तत्परता । उत्तेजना-
गरमाना—सक्रि० गरम करना । अक्रि० गरम होना। क्रोध करना । जोशमें आना ।
गरमाहट—स्त्री० गरमी ।
गरमी—स्त्री० उष्णता, क्रोध, तेज़ी, गर्व, मस्ती । उप- [ दंश । ग्रीष्मऋतु।
गरमीदाना—पु० अम्हौरी ।
गररा—पु० एक तरहका घोड़ा ।

गरराना—अक्रि० गम्भीर और ऊँचा शब्द करना (उदे० 'गोम') गरजना, गड़गड़ाना। मस्ती चढ़ना (बुन्देल०)।
गररी—स्त्री० एक चिड़िया। गलगलिया, सिरोही।
गरल—पु० विष।
गरवा—वि० भारी, विशाल। पु० गला।
गरसना—सक्रि० ग्रसना, पकड़ना।
गरह—पु० ग्रह, बाधा, अरिष्ट।
गरहन—पु० चन्द्र या सूर्य-ग्रहण। पकड़नेका काम।
गराँव—पु० बैल इत्यादिके गलेकी रस्सी, गरैयाँ।
गरा—पु० देखो 'गला'।
गराज—स्त्री० गरजन, गम्भीर ध्वनि 'भूषन कुमिस गैर-मिसिल खरे कियेको किये म्लेच्छ मुरछित करिकै गराजको।' भू० ११
गराड़ी—स्त्री० चरखी, घिरनी। गहरी लकीर।
गराना—सक्रि० गलाना। गारना, निचोड़ना, बहाना।
गरारा—वि० गर्वीला, प्रचण्ड, बलवान्। पु० 'गरगर' शब्द करके कुल्ली करना।
गरास—पु० ग्रास, निवाला। पकड़, ग्रहण।
गरासना—सक्रि० निगलना, पकड़ना 'राहु गरासै ताहुको मानुष काहे भूल।' साखी ७३। कष्ट देना।
गरिमा—स्त्री० महत्त्व। एक सिद्धि। घमण्ड। भारीपन।
गरियाना—सक्रि० गाली देना, कुवचन कहना।
गरियार,-ल—वि० एक जगह अड़ जानेवाला, सुस्त, [मट्ठर।
गरिष्ठ—वि० जो जल्द न पचे। बहुत भारी।
गरी—स्त्री० नारियलके भीतरका गोला, खोपरा।
गरीब—वि० दरिद्र, दीन, नम्र।
गरीबनिवाज—पु० दीनदयालु।
गरीबपरवर—वि० दीनपरिपालक।
गरीबाना—वि० गरीबों जैसा, गरीबों लायक। [बाना।
गरीबी—स्त्री० निर्धनता, दीनता, नम्रता। वि० गरी-
गरीयसी—वि० स्त्री० बड़ी, महत्त्वशालिनी।
गरु, गरुअ, गरुआ—वि० गुरु, भारी, वज़नदार 'न दरै पग मेरुहुतें गरु भो'—कविता० १८९, '…जस मोहिं गरुअ एक परद्रोही।' रामा० १०२, 'हलुकन-को उड़ि जान दे गरुए राखि बटोर।' रहीम
गरुआई—स्त्री० भारीपन 'हरिहउँ सकल भूमि गरु-आई।' रामा० १०४। बड़प्पन, महत्व 'ऐसेहु पितुतें अधिक गीधपर ममता गुन गरुआई। विन० २६८
गरुआना—अक्रि० भारी या वज़नदार होना (रामा० १३६)।
गरुड़—पु० विष्णुका वाहन, खगपति। एक पक्षी।
गरुता—स्त्री० गुरुता, भारीपन, बड़प्पन।
गरुवाई—स्त्री० देखो 'गरुआई'।
गरू—वि० गुरु, भारी, बड़ा 'रावरे आदरे लोक वेदहू आद-रियत, योग ग्यानहूतें गरू गनियत है।' विन० ४२७
गरूर—पु० घमण्ड, गर्व। वि० देखो 'गरूरा' (कविता० १६२)।
गरूरत, गरूरताई—स्त्री० घमण्ड, मस्ती, अहंकार 'सुनिए जू जदुराई गंगकी गरूरताई गरजी ह्वै जमराई अरजी लगाई है।' दीन० १३०
गरूरा, गरूरी—वि० अभिमानी, मतवाला 'ते सरजा सिवराज दिये कविराजनको गजराज गरूरे।' भू० ११५
गरेबान—पु० कुरते आदिका गला।
गरेरना—सक्रि० चारों ओरसे घेर लेना। रोकना 'सात पँवरि नाँघत नृपहिं लेइगा बाँधि गरेरि।' प० २८७
गरेरा—पु० घेरा (प० २५९) वि० घुमावदार (प० १३)
गरेरी—स्त्री० गराड़ी, घिरनी। वि० स्त्री० घुमावदार 'खंड खंड सीढ़ी भई गरेरी।' प० १३
गरैयाँ—स्त्री० गलेकी रस्सी, पगहा।
गरोह—पु० समूह, झुण्ड।
गर्जन—पु० गम्भीर ध्वनि, तुमुल शब्द, घोर निनाद।
गर्जना—देखो 'गरजना'।
गर्जित—वि० गर्जनपूर्ण।
गर्त्त—पु० गड्ढा, दरार, विवर, गुफा, रथ।
गर्द; गर्दन—देखो 'गरद'; 'गरदन'।
गर्दखोर,-खोरा—वि० जो गर्द पड़नेसे मैला न जान पड़े। पु० पायन्दाज़।
गर्दभ—पु० गदहा। एक कीड़ा। सफेद कुमुद।
गर्दिस—स्त्री० आफत, विपत्ति। चक्कर।
गर्भ—पु० हमल, कोख, भ्रूण।
गर्भस्राव—पु० गर्भाधानके बाद तीन चार महीनेके भीतर रुधिरके रूपमें गर्भका गिर जाना।
गर्भांक—पु० नाटकका एक अंश।
गर्भाधान—पु० गर्भका ठहरना, गर्भ-स्थिति। संस्कार-
गर्भिणी—वि० स्त्री० जिसे गर्भ हो, सगर्भा। [विशेष।
गर्भित—वि० गर्भसहित। पूर्ण।
गर्रा—पु० गराड़ी, चरखी। पानीका आघात। लाखी रंगका घोड़ा; लाखी रंग। वि० लाखके रंगका।

गर्व—पु० घमण्ड, अभिमान।
गर्वाना—अक्रि० घमण्ड करना।
गर्वित—वि० गर्वयुक्त।
गर्विष्ठ, गर्वी, गर्वीला—वि० घमण्डी, अभिमानयुक्त।
गर्हित—वि० निन्दनीय, दूषित, बुरा।
गर्ह्य—वि० निन्द्य, नीच।
गलकंबल—पु० गायके गलेमें लटकती हुई खाल। लहर। 'सेहय सहित सनेह देह भरि कामधेनु कलिकासी। ‥ गलकंबल बरुना बिभाति जनु लूम लसत सरितासी।'
गलका—पु० अँगुलीके सिरेपरका फोड़ा। [ विन० ९७
गलगंजना, गलगाजना—अक्रि० आनन्दध्वनि करना 'सारदूल दुहुँ दिसि गढ़ि काढे। गलगाजहिं जानहुँ ते ठाढ़े।'प० २७६। लम्बी चौड़ी बातें करना आनन्दित होना 'धाई सब गलगाजि कै ऊधो देखे जाय।' भ्र० ७
गलगंड—पु० रोग विशेष। घेवा। [ बड़ा नीबू।
गलगल—पु० मैनाकी तरहकी एक चिड़िया। एक तरहका
गलगला—वि० गीला, भींगा हुआ, तर 'राख्यो गहि गाढ़े गरो मनो गलगली दीठ।' वि० १६७
गलगलिया—स्त्री० गलगल चिड़िया, सिरोही।
गलचुमनी—स्त्री० कानका एक गहना, जो कुछ दूरतक कपोलको भी ढके रहता है।
गलझंप—पु० गलेपरकी लोहेकी झूल 'तैसे चँवर बनाए औ घाले गलझंप।' प० २५२
गलतंस—पु० निःसन्तानकी सम्पत्ति। नि.सन्तान मृतव्यक्ति।
गलत—वि० अशुद्ध। झूठ।—फहमी=समझकी भूल।
गलतान—वि० लुढ़कता हुआ, घूमता हुआ 'उनमुनि लागी सुन्नमें निसु दिन रहि गलतान।' साखी ११२
गलती—स्त्री० भूल, भ्रान्ति, धोखा।
गलथन, गलथना—पु० गलस्तन, किसी किसी बकरीके गलेके दोनों ओर लटकनेवाले 'थन'।
गलना—अक्रि० घुलना, पिघलना, ध्वस्त विध्वस्त होना, ठिठुरना, नष्ट होना।‥ बहुत परिश्रम करना, खटना ( गबन ६२ )।
गलबल—पु० कोलाहल, हलचल 'भई भीर गलबल मच्यो ‥' छत्र० १०८, (सुबे० १२२ )।
गलबहियाँ,-बाहीं—स्त्री० गलेमें बाँह डालना 'गलबाँही दीन्हे दोउ प्रिया नवल नँदलाल।' नागरी०
गलमंदरी—स्त्री० शिवजीको प्रसन्न करनेके लिए गाल बजाना। निरर्थक बकवाद करना।
गलमुच्छा—पु० गालोंपर रखे हुए बाल।
गलसुआ—पु० गालके नीचे सूजन होनेका रोग।
गलसुई—स्त्री० गालके नीचे लगानेका छोटा तकिया ( उर्दे० 'कटिजेब' )।
गलस्तन—पु० गलथन, बकरीके गलेके थन।
गलही—स्त्री० नावका अगला ऊपरका हिस्सा।
गला—पु० ग्रीवा, गर्दन, कण्ठ। आवाज़।—काटना=नुकसान पहुँचाना, उत्पीड़ित करना। गले पड़ना—इच्छा न होते हुए भी प्राप्त होना।—लगाना आलिंगन करना।
गलाना—सक्रि० द्रव रूपमें लाना। थोड़ा थोड़ा करके गायब करना। खर्च करना।
गलानि—स्त्री० दु.ख खेद, पश्चात्ताप, लज्जा। 'करु राज परिहरहु गलानी।' रामा० २८२, ( २७८ )
गलित—वि० गला हुआ। जीर्ण या नष्टभ्रष्ट।
गलियारा—पु०, गलियारी—स्त्री० तग रास्ता, गली।
गली—स्त्री० तग रास्ता खोरी।
गलीचा—पु० एक तरहका बेल बूटेदार मोटा बिछावन।
गलीज़—वि० मैला कुचैला। पु० गन्दगी।
गलीत—वि० गलित, जीर्ण शीर्ण अवस्थाको प्राप्त 'मीत न नीति, गलीत ह्वै जो धरिये धन जोरि।' वि० १९८
गलेबाज़—वि० (गवैया) जिसका स्वर अच्छा हो।
गलौ—पु० चन्द्रमा, निशाकर।
गल्प—स्त्री० छोटी कहानी। गप्प। डींग।
गल्यारा—पु० सकीर्ण गली।
गल्ल—पु० गाल।
गल्ला—पु० हल्ला, शोर। दल, झुण्ड।
गल्ला—पु० अनाज, फसल। मद। गोलक।
गवँ; गवँही—स्त्री० देखो 'गँव'।
गवन—पु० गमन, जाना। गौना।
गवनचार—पु० गौना।
गवनना—अक्रि० गमन करना, जाना 'कहहि गवँरि छिनक श्रम, गवनब अबहिं कि प्रात।' रामा० २५१
गवाँना—सक्रि० खोना ( उर्दे० 'गवनना' )।
गवाक्ष, गवाख, गवाछ—पु० झरोखा। सुग्रीवकी सेनाका एक वानर।
गवारा—वि० सह्य, स्वीकृत, पसन्द।

गवास—पु० कसाई, हत्यारा, 'कासी मगु सुरसरि क्रमनासा । मरु मालव महिदेव गवासा ।' रामा० ७
गवाह—पु० साक्षी ।
गवाही—स्त्री० साक्ष्य ।
गवीश—पु० गोस्वामी । साँड़ । विष्णु ।
गवेजा—स्त्री० बातचीत 'केवट हँसे सो सुनत गवेजा। समुद न जानु कुवाँकर मेजा ।' प० ६७
गवेल—वि० देहाती, गँवार 'नागरि विविध विलास तजि बसी गवेलिन माहिं ।' वि० २०८
गवेषणा—स्त्री० खोज, छानबीन ।
गवेसना—सक्रि० खोजना 'कहाँ सो गुरु पावौं उपदेशी, अगम पन्थ जो कहै गवेसी ।' प० १९७
गवैया—पु० गानेवाला ।
गवैहाँ—वि० देहाती ।
गव्य—वि० गायसे उत्पन्न ( दूध, दही आदि ) ।
गश—पु० मूर्छा, बेहोशी ।
गश्त—पु० टहलना, चक्कर, दौरा ।
गश्ती—वि० भ्रमण करनेवाला, घूमता फिरता ।
गसीला—वि० गठा हुआ, जकड़ा हुआ ।
गहकना—अक्रि० लालसायुक्त होना, लपकना, शीघ्रता करना 'गहकि गाँस औरै गहे रहे अधकहे बैन।' वि० ३३
गहगह—वि० प्रफुल्ल, उमंगयुक्त, आह्लादपूर्ण 'नदत गहगह कंठ भरि कलकंठ चित्रक मोर ।' गदाधर भट्ट। क्रिवि० धूमके साथ ।
गहगहा—वि० प्रफुल्ल, आनन्दपूर्ण ( उदे० 'खया' ) । घमाधम 'बाजे नभ गहगहे निसाना ।' रामा० १४२
गहगहाना—अक्रि० आनन्दमग्न होना, उमंगमें भरना 'गहगहात किलकिलात, अंधकार आयो ।' सू० ३९ । फसल आदिका उत्तम रूपसे तैयार होना ।
गहगहे—क्रिवि० आनन्दपूर्वक, धूमधामके साथ, बहुत अच्छी तरहसे । सबै पंखि बोलत गहगहे ।' प० २११
गहडोरना—सक्रि० गन्दा करना ।
गहन—पु० ग्रहण। कलंक। बन्धन। कष्ट, विपत्ति । स्त्री० पकड़ । हठ । वि० घना, दुर्गम 'मिलइ न जल वन गहन भुलाने ।' रामा० ४०८ । कठिन, जटिल। गहरा, अथाह । पु० गहराई । जंगल इ० दुर्गम स्थान 'डर-पहिं धीर गहन सुधि आये । मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये ।' रामा० २२९ । कुंज, वनमें कोई गुप्त स्थान । कठिन समय, विपत्ति ।
गहना—पु० जेवर । बन्धक । सक्रि० पकड़ना, ग्रहण करना (विन० २५३) । देखो 'गाहना' ।
गहनि—स्त्री० हठ, टेक ।
गहने—क्रिवि० धरोहर या रेहनके तौरपर ।
गह्वर—वि० व्याकुल 'गह्वरि हिय कह कौसिला मोहिं भरतकर सोच ।' रामा० ३३४, गहवर नैन आए भरि आँसू ।' प० १८३ । सघन, दुर्गम 'जहँ आवत तम कुंज पुंज गहबर तरु छाईं ।' नन्द० । ध्यानमग्न, बेसुध, प्रेमपूर्ण 'सजल नयन गदगद गिरा गहबर मन पुलक सरीर ।' विन० ४५०
गहवरना—अक्रि० घबड़ा उठना, व्याकुल होना 'ततखन रतनसेन गहबरा ।' प० ९९
गहवराना—सक्रि० घबड़ा देना । अक्रि० घबड़ाना ।
गहर—पु० देरी, विलम्ब 'कबहूँ नाहीं गहर कियो । सूवि० ३७ । वि० गहन, गूढ़, सघन 'जानि बूझि अधरात गहर वन महँ फिरि आई ।' नन्द०
गहरना—अक्रि० देरी करना । अक्रि० झगड़ना। भीतर ही भीतर क्रुद्ध होना ।
गहरवार—पु० क्षत्रियोंका एक भेद ।
गहरा—वि० 'उथला' का उलटा, गम्भीर, तेज़, घोर, बहुत ज्यादा, दृढ़, कठिन, गाढ़ा ।
गहराई—स्त्री० गहरापन, गम्भीरता ।
गहरु—पु० विलम्ब, देर 'हरिसन माँगउँ सुन्दरताई । होइहि जात गहरु अति भाई ।' रामा० ७६ । 'सखी काहेको गहरु लगावति ।' सू० ४७
गहलौत—पु० क्षत्रियोंका एक भेद ।
गहवरा—वि० देखो 'गह्वर' । 'गारी दै हँसि मिलत गहवरे, अंतर प्रेम सँजोग ।' नागरी०
गहाई—स्त्री० पकड़, पकड़नेका भाव ।
गहागह—क्रिवि० देखो 'गहगह' ।
गहाना—सक्रि० ग्रहण कराना, पकड़ाना ।
गहासना—सक्रि० देखो 'गरासना' । 'औ चाँदहिं पुनि राहु गहासा ।' प० ४५
गहिरा, गहिरो—वि० देखो 'गहरा' ।
गहिला—वि० पागल, उन्मत्त 'गहिली गरब न कीजिए समै सुहागहिं पाय ।' वि० १३१
गहीर—वि० गम्भीर, गहरा, घना 'सीरे नद नीर तरु

सीतल गहीर छाँह, सोयें परे पथिक पुकारें पिकी करि जात।' देव (व्रज० २८३)

गहीला—वि० घमण्डी, गर्वसंयुक्त 'सो वल गयो किधौं भये सब गर्वगहीले।' विन० ११९। मदोन्मत्त।

गहुआ—पु० एक तरहकी सँड़सी।

गहेजुआ—पु० छछूँदर (बीजक ५९)।

गहेलरा—वि० पागल। मूर्ख, गँवार।

गहेला—वि० घमण्डी 'तू गजगामिनि गरव गहेली।' प० ११५। हठी, बावला, पागल, मूर्ख।

गहैया—वि० ग्रहण करनेवाला, अंगीकार करनेवाला।

गह्वर—पु० गुहा, गुप्त स्थान, बिल, कुंज। वन। कठिन विषय। वि० 'गह्वर', व्याकुल 'मन गह्वर मोहिं उतर न आयो हौं पुनि सोचि रही।' सूबे० २६०। गुप्त। [दुर्गम।

गाँकर—स्त्री० गकरिया, लिट्टी।

गांग—वि० गंगा सम्बन्धी या गंगाका।

गांगेय—पु० गंगापुत्र, भीष्म पितामह।

गाँज—पु० ढेर, राशि।

गाँजना—सक्रि० इकट्ठा करना, ढेर लगाना।

गाँजा—पु० भाँगकी जातिका एक मादक पौधा।

गाँठ, गाँठि—स्त्री० ग्रन्थि, गिरह। गठरी, गट्ठा। सन्धि, जोड़। पोर, पर्व 'जैसे साँठेकी कठिन गाँठ भरी मिठास।' वि० १४०। चद्दर इ० के छोरमें कुछ रखकर लगायी हुई गाँठ, 'जहाँ गाँठि तहँ रस नहीं यह जानत सब कोय। मदये तरकी गाँठिमें गाँठि गाँठि रस होय।' रहीम। गाँठ छोड़ना=कठिनाई दूर करना। मनमें गाँठ पड़ना=मनमोटाव होना (वि० १५०)। गाँठका=पासका 'फौज पठाई हुती गढ़ लेनको गाँठिहुके गढ़ कोट गँवायो।' भू० ८६ (बात) गाँठमें बाँधना=स्मरण रखना।

गाँठदार—वि० जिसमें गाँठें हों, जो गठीला हो।

गाँठना—सक्रि० गाँठ लगाना, जोड़ना, (जूता) सीना, मिलाना। वशमें करना, रोब जमाना।

गाँठी—स्त्री० देखो 'गाँठ' रामा० ७८। (दूब।

गाँडर—स्त्री० मूँज जैसी एक घास। खस। एक तरहकी

गाँडा—पु० ईख इ० से कटा हुआ टुकड़ा, ईख (भ्र० १३)।

गांडीव—पु० अर्जुनका धनुष। —धर=अर्जुन।

गाँथना—सक्रि० गूँथना, एकत्र करना, मोटी सिलाई करना, जोड़ना। 'जटाजूट दृढ़ बाँधे माथे। सोहहिं सुमन बीच बिच गाँथे।' रामा० ५०२

गांधर्व—वि० गन्धर्व सम्बन्धी। गन्धर्व देशका। पु० गन्धर्व विद्या, संगीतशास्त्र। एक तरहका विवाह।

गांधार—पु० देश-विशेष। ['खिरौरा')।

गांधी—स्त्री० एक कीड़ा। हींग। पु० गन्धी (उदे०

गांधीवाद—पु० महात्मा गांधीका सिद्धान्त। सत्य और अहिंसाके उपयोगसे समाज और जीवनके सभी क्षेत्रोंमें सुख, शांति और सुव्यवस्था स्थापित करने का सिद्धान्त।

गांभीर्य—पु० गम्भीरता, जटिलता, स्थिरता।

गाँव—पु० ग्राम, खेड़ा। —मारना=डाका डालना।

गाँस—स्त्री० रोक टोक, रुकावट (उदे० 'गहकना'), भेदकी बात, रहस्य। गाँठ, बनावट। अनी, फाँस 'अमृत ऐसे वचनमें रहिमन रिसकी गाँस।' —रहीम। फन्दा (सूसु० १२९), बैर, ईर्षा। तीर व बर्छीका फल, अधिकार, शासन, निगरानी।

गाँसना—सक्रि० गूँथना। चुभाना, छेदना। ठूँसना, कसना। रोकना, निगरानीमें रखना, पकड़में करना।

गाँसी—स्त्री० तीर, बर्छी इ० का फल, हथियारकी नोक (मति० २२३)। गाँठ। कपट, मनोमालिन्य। कपटकी बात, चुभनेवाली बात 'पावैगो पुनि किशो आपनो जो रे! कहैगो गाँसी।' भ्र० २७

गाइ, गाई—स्त्री० देखो 'गाय'। गाइगोठ=गायगोठ।

गागर, गागरी—स्त्री० छोटा घड़ा, कलसा (सू० ७) 'जल हिलोरि गागरि भरि नागरि जब ही शीस उठायो।' [सूबे० ११।

गाछ—पु० दरख्त, पेड़।

गाछी—स्त्री० बाग़।

गाज—स्त्री० शोर, गर्जन 'ब्रह्माका आसन ढिगा, सुनी कालकी गाज।' साखी १४४। वज्र, बिजली 'अवधपुरीमें गाज परे। कै अब राज्य भरत्थ करै।' राम० ११। बिजली गिरनेकी आवाज़। पु० झाग, फेन।

गाजना—अक्रि० गर्जन करना, चिल्लाना। 'हनुमान अंगद रन गाजे।' रामा० ४७६, 'धाए धुरवा न छाये, धूरिके पटल, मेघ गाजिबो न बाजिबो है दुन्दुभी दराज की।' भू० ३२। प्रसन्नतासूचक शब्द करना, प्रसन्न होना।

गाजर—स्त्री० एक तरहका मूल।

गाज़ी—पु० वह मुसलमान जो धर्मके लिए युद्ध करे। जीतनेवाला, वीर 'काहे ते

गाजी तेरोई सुजस होत तोसों अरिबर सरिबरसी करत हैं ।' भू० ६९ ।

गाड़—स्त्री० गड्ढा ( उदे० 'गदकारा' ) 'भाऊ नरिन्दके धाक धुके अरि जाय गिरे गिरि गाड़न ही में ।' ललि०८३

गाड़ना—सक्रि० दफनाना, तोपना, छिपाना, धँसाना ।

गाडर—स्त्री० भेड़, (उदे० 'गजंद', 'करवार' ) ।

गाड़ा—पु० बैलगाड़ी, छकड़ा । घातका स्थान, गड्ढा । 'अंध अंध टेक चलै क्यों न परे गाड़े ।' सुवि० ३८

गाड़ी—स्त्री० छकड़ा, शकट, यान ।

गाड़ीखाना—पु० गाड़ियाँ रखनेकी जगह ।

गाड़ीवान—पु० गाड़ी हाँकनेवाला ।

गाढ़—पु०, स्त्री० संकट, कठिनाई, दुःख 'उलटी गाढ़ परी दुर्वासा दहत सुदर्शन जाको ।'सुवि० ३२, ( सू० १८६ ),'जहाँ गाढ़ ठाकुर कहँ होई । संग न छाँड़े सेवक सोई ।' प० ११२ । वि० गाढ़ा, घना, अधिक दृढ़, कठिन 'सातौ खंड गाढ़ दुइ नाके ।' प० २७५ । दुर्गम, अथाह ।

गाढ़ा—वि० घना,मोटा,गहरा, घनिष्ठ, कठिन, घोर, तीव्र, अधिक। तिन्हहिं सराप दीन्ह अति गाढ़ा ।' रामा०७८, 'कह सीता धरि धीरज गाढ़ा ।' रामा० ३७९। पु० एक मोटा कपड़ा । गाढ़े दिन = बिपत्तिके दिन । 'क्यों रहीम खोजत नहीं गाढ़े दिनको मित्त ।' रहीम

गाढ़ा, गाढ़े—क्रिवि० खूब अच्छी तरह, दृढ़तासे ( उदे० 'खैंचना', विन० ५८९ )। 'बिरहा मोसे यों कहै, गाढ़ा पकड़ो मोहिं ।' साखी ४४

गात—पु० शरीर ।

गाता—पु० गवैया ।

गाती—स्त्री० शरीरमें लिपटनेका वस्त्र । विशेष ढङ्गसे लपेटा हुआ वस्त्र ।

गात्र—पु० शरीर, देह ।

गाथ—पु० स्तोत्र । यश ।

गाथक—पु० गानेवाला ।

गाथना—सक्रि० देखो 'गाँथना', 'माथे मुकुट मनिनके गाथे भाथे कंध सुहाई ।' रघु० १४६

गाथा—स्त्री० कथा, कहानी, वृत्तान्त, स्तुति ।

गादड़—पु० गरियाल बैल । मेढ़ा । सियार । वि० भीरु ।

गादड़ी—स्त्री० गीदड़, सियार ।

गादर—वि० कादर, डरपोक । मट्ठर, सुस्त । गदराया हुआ । पु० मट्ठर बैल 'ताका भैंसा गादर बैल ।... इनसे बाँचैं चातुर लोग...।'—घाघ । गीदड़ ।

गादुर—पु० चमगीदड़ 'गादुर मुख न सूरकर देखा ।' प० ३२८

गाध—वि० 'अगाध' का उलटा, छिछला । थोड़ा । पु० थाह । स्थान । लोभ । नदीका बहाव ।

गाधि—पु० विश्वामित्रके पिता ।

गाधितनय,-पुत्र,-सुत—पु० विश्वामित्रजी ।

गान—पु० गाना, गीत ।

गाना—सक्रि० लयके साथ ध्वनि निकालना, मीठी आवाज़में बोलना । वर्णन करना ( रामा० ३५८ ), स्तुति करना 'गाइये गनपति जगबन्दन ।' विन० ६५ । [ पु० गीत ।

गाफ़िल—वि० बेख़बर ।

गाभ, गाभा—पु० कोंपल, नया पत्ता । वृक्षके बीचका हीर । 'कदलि-गाभ कै जानौ जोरी ।' प० ४९

गाम—पु० ग्राम, गाँव ( रत्ना० १८३ ) ।

गामी—वि० जानेवाला, चलनेवाला ।

गाय—स्त्री० गैया, धेनु । सीधा आदमी ।

गायक—पु० गानेवाला ।

गायगोठ—स्त्री० गोशाला 'जे अघ मातु पिता सुत मारे । गायगोठ महि-सुर-पुर जारे ।' रामा० २७९

गायताल—पु० निकम्मा पशु । निकम्मी वस्तु । वि० निकम्मा । —लिखना=बट्टे खाते डालना ।

गायत्री—स्त्री० एक पवित्र मन्त्र । दुर्गा । गंगा ।

गायन—पु० गाना । गानेवाला । स्त्री०···गानेवाली स्त्री, गौनहारिन ( गबन ९४ ) ।

गायब—वि० अन्तर्धान, लुप्त ।

गायबाना—क्रिवि० छुपकेसे, गैरहाजिरीमें ।

गायिका—स्त्री० गानेवाली ।

गार—स्त्री० गारि,गाली 'सुनहु व्रज बसि स्रवनमें व्रज-बासिनिनकी गार । नागरी० । पु० गड्ढा । गुफा ।

गारड़ू—पु० गारुड़ी ( कबीर ११४ ) ।

गारत—वि० बरबाद, चौपट, नष्ट ।

गारद—स्त्री० रक्षाके लिए नियत सिपाहियोंकी टोली ।

गारना—सक्रि० निचोड़ना । पानीके साथ रगड़ना, घिसना 'मलयज गारा करैं...'कर्कौ०५११ । त्यागना, अलग करना, निकालना 'जान जो गारै-रकत पसेऊ ।' प० १०४, 'जे पद परसि सुरसरी गारी ।' सू० १०१।

गलाना। नष्ट करना, बरबाद करना 'आछो गात अकारथ गार्‌यो।' सूवि० २५, (छत्र० १४२)। क्षीण करना (भ्र० १२८)।
गारा—पु० गीला किया हुआ चूना इ०, गिलावा।
गारी—स्त्री० गाली। कलंक 'सूर श्याम यहि बरजिके मेटहु कुलगारी।' सूवि० २१। विवाहादि समयके विशेष गीत।—आना,—लगना,—पड़ना=कलंक लगना।
गारुड़—पु० साँपका मन्त्र। वि० गरुड़का।
गारुड़ी—पु० साँपका विष उतारनेवाला 'जावत गुनी गारुड़ी आये।' प० ५३
गारो—पु० अभिमान, गर्व 'क्षुद्र पतित तुम तारि रमा-पति जिय जु करो जिन गारो।' सूवि० ४२, (भ्र० १२४), 'भू आय तहाँ सिवराज लयो हरि औरँग-जेबको गारो।' भू० ७२। घर 'गोबरको गारो सुतौ मोहिं लगै प्यारो नहिं भावै ये महल जे जटित मर फत हैं।'-रसखान। प्रतिष्ठा, इज्जत।
गार्हस्थ्य—पु० गृहस्थका धर्म, गृहस्थाश्रम।
गाल—पु० कपोल। बकबक करनेकी आदत 'तव कि चलिहि अस गाल तुम्हारा।' रामा० ४६४।—करना=मुँहजोरी करना 'गालु करब केहिकर बल पाई।' रामा० २०५।—फुलाना=रिसाना 'दोउ एक संग न होइ भुआला। हँसब ठठाइ फुलाउब गाला।' रामा० २१५।—बजाना=डींग हाँकना 'पुनि सकोप बोलेउ जुवराजा। गाल बजावत तोहि न लाजा।' रामा० ४६७।—मारना=बढ़ बढ़कर बातें करना 'बालि न कबहुँ गाल अस मारा। रामा० ४६८
गालगूल—पु० अण्डबण्ड बात (उदे० 'गपना')।
गालमसूरी—स्त्री० एक पकवान।
गालव—पु० एक ऋषि।
गाला—पु० पूनी। गोला, ढेर (कलस २१८)।
गालिब—वि० जीतनेवाला, श्रेष्ठ।
गालिम—वि० दृढ, प्रचण्ड। देखो 'गालिब'।
गाली—स्त्री० गारी। दुर्वचन, अपशब्द। कलङ्कसूचक वाक्य, कलङ्क।
गाली गलौज,-गुफ्ता—स्त्री०परस्पर दुर्वचन कहना।
गाल्हू—वि० डींग मारनेवाला बकवादी।
गावकुशी—स्त्री० गोहत्या, गोवध।
गावतकिया—पु० कमरके पीछे रखा जानेवाला बड़ा तकिया।
गावदी—वि० नासमझ, मूर्ख।
गावदुम—वि० चढ़ाव-उतारवाला, जो ऊपरसे बराबर पतला होता गया हो।
गावन—स्त्री० गानेकी क्रिया या ढङ्ग 'आजु गई गलि जीमें गुपालकी गावन' (गुलाब ३६०)।
गास—पु० सङ्कट, आपत्ति।
गासिया—पु० जीनपोश।
गाह—पु० अवगाहन करनेवाला मनुष्य। ग्राहक। ग्राह, मगर। पकड़, घात।
गाहक—पु० अवगाहन करनेवाला। खरीदार, लेनेवाला। 'सबद अहै गाहक नहीं वस्तु सो गरुआ मोल।' साखी १०५। कदर करनेवाला, अभिलाषी 'इहाँ सबै प्रेमी बसैं, तुम्हरो गाहक नाहिं।' नन्ददास
गाहकताई—स्त्री० कदरदानी (रामा० ४६२)।
गाहना—सक्रि० अवगाहन करना, डुबकी लगाना। पार करना 'फेरि भीमरा कृष्णा गाही।' छत्र० ८०। मथना, क्षुब्ध करना 'गाहियो सिंधु सरोवर सो जेहि बालि बली बरसो बर पर्‌यो।' के० ३३३। ग्रहण करना, पकड़ना 'पछलत्त तुरीनके हैं सुगमैं नख नाहर को हठि गाहनो है।' दीन० २५९। उण्डेसे उलट-पुलटकर झाड़ना 'झारि झूरि मन तौ हरि लै गये बहुरि पयारहि गाहत।' भ्र० १०६
गाहा—स्त्री० गाथा, कथा, वार्त्ता, वृत्तान्त 'करन चहौं रघुपति गुनगाहा।' रामा० ९
गाही—स्त्री० पाँच वस्तुओंका समूह।
गिंजना—अक्रि०दबने या उलटने पुलटनेके कारण मैला हो जाना या सिकुड़ जाना।
गिंडुरी—स्त्री० गेंडुरी, बिड़ई।
गिंदौड़ा, गिंदौरा—पु० मोटी रोटीकी तरह जमाई हुई चीनी
गिआन—पु० ज्ञान।
गिउ—स्त्री०ग्रीवा,गरदन,गला (उदे०'कुन्द',प० ११३)
गिचपिच, गिचरपिचर—वि० सटा हुआ, बहुत नज़दीक नजदीक, अस्पष्ट।
गिजगिजा—वि० गीला और नरमसा जो अच्छा न लगे। गुलगुल।
ग़िज़ा—स्त्री० खोराक, भोजन 'कहै पदमाकर त्यों गज़ गिजा हैं सजी सेज हैं सुराही हैं सुरा है और प्याला हैं।' पद्माकर (ककौ० ४४६)
गिटपिट—स्त्री० अर्थहीन शब्द।
गिट्टक—स्त्री०, गिट्टा—पु० चिलममें तम्बाकूके

रखनेका कङ्कड़ या गोली ।

गिट्टी—स्त्री० पत्थरके छोटे टुकड़े । रील ।

गिड़गिड़ाना—अक्रि० विनती करना, चिरौरी करना ।

गिद्ध—पु० एक तीव्र दृष्टिवाला मांसाहारी पक्षी ।

गिनती—स्त्री० गणना । संख्या । गिनतीमें आना= कुछ महत्त्वका समझा जाना ।

गिनना—सक्रि० गणना करना, संख्या निश्चित करना । महत्त्व देना । दिन गिनना = धैर्यके साथ दुःख दूर होनेकी प्रतीक्षा करना ।

गिन्नी—स्त्री० चक्कर । सुवर्ण-मुद्राविशेष ।

गिम—स्त्री० गर्दन ( विद्या० २६ ) ।

गिय—स्त्री० 'गिउ', गरदन ।

गियाद्—पु० एक तरहका घोड़ा ।

गिर—पु० गिरि, पहाड़ ।

गिरगिट-टान—पु० गिरदौना नामक जन्तु ।

गिरगिरी—स्त्री० बालकोंका एक खिलौना ।

गिरजा—स्त्री० पार्वती । पु० एक वृक्ष । क्रिस्तानोंका 'उपासना-भवन' ।

गिरद्—अ० आसपास, इधर उधर ।

गिरदा—पु० चक्कर । तकिया । ढाल ।

गिरदान,-दौना—पु० छिपकली जैसा पर उससे कुछ बड़ा एक जन्तु, गिरगिट ( बीजक ५९ ) ।

गिरधर, गिरधारन, गिरधारी—पु० पहाड़ उठानेवाला । श्रीकृष्ण । हनूमान ।

गिरना—अक्रि० पतित होना, खसकना, टपकना । मन्दा पड़ना । [ हुआ ।

गिरफ्तार—वि० पकड़ा हु , स्त, पकड़में आया

गिरमिट—पु० इकरार, प्रतिज्ञा । इकरारनामा । छेद

गिरवर—पु० बड़ा पर्वत । [ करनेका औज़ार ।

गिरवान—पु० देवता । कुरतेका कालर । गरदन ।

गिरवी—वि० बन्धक, गिरो । [ रखी हो ।

गिरवीदार—पु० वह जिसके यहाँ कोई चीज गिरवी

गिरह—स्त्री० गाँठ । जेब । सवा दो इञ्चका नाप । सन्धि । गाँठ । उलटी, कलैया 'ऊँचो चितै सराहियत गिरह कबूतर लेत ।' बि० १५४

गिरहकट—पु० जेबकट, पाकटमार ।

गिरहबाज़—पु० कलैया खानेवाला कबूतर ।

गिरही—पु० गृही, गृहस्थ ( गिरहिनी-भ्र० ६४ ) ।

गिराँ—वि० महँगा, भारी ।

गिरा—स्त्री० वाणी, सरस्वती । कविता । जीभ ।

गिराना—सक्रि० पतन करना, टपकाना । प्राण ले लेना । अधःपतित करना, घटाना ।

गिरानी—स्त्री० महँगी, अकाल, अभाव । पेट इ० का भारीपन ( रतन० ५९ ) ।

गिरापति, गिरापितु—पु० ब्रह्माजी ।

गिरास—पु० पकड़, कौर, निवाला । ग्रहण लगना ।

गिरासना—सक्रि० ज़ोरसे पकड़ना, सताना ।

गिराह—पु० ग्राह या मगर ।

गिरि—पु० पहाड़, पर्वत ।

गिरिजा—स्त्री० पार्वती । गंगा । मल्लिका ।

गिरिधर,-धरन,-धारन,-धारी-पु० श्रीकृष्ण । हनुमान् ।

गिरिनंदिनी,-सुता—स्त्री० देखो 'गिरिजा' ।

गिरिनाथ, राज,गिरींद्र,गिरीश—पु० शिवजी । बड़ा

गिरिसंकट—पु० दर्रा । [ पहाड़ । हिमालय । मेरु ।

गिरी—स्त्री० बादाम इ० का गूदा ।

गिरैयाँ—स्त्री० गलेका छोटा रस्सा या बन्धन ( जग० ) वि० गिरनेवाला, पतनोन्मुख ।

गिरो—वि० बन्धक, रेहन ।

गिर्द—अ० आसपास, इधर उधर । चारो तरफ ।

गिर्दावर—पु० एक तरहके कर्मचारी जो घूम घूमकर

गिल—स्त्री० गारा । [ कामकी जाँच करते हैं ।

गिलकारी—स्त्री० गारा लगानेका काम ।

गिलगिल—पु० एक जलजन्तु । वि० पिलपिला ।

गिलगिलिया—स्त्री० देखो 'गलगल' ।

गिलट—स्त्री० एक हलकी धातु ।

गिलटी—स्त्री० बगल इ० में उठी गाँठ या ग्रंथि ।

गिलना—सक्रि० हड़पना, निगलना, ('उदे० उगिलाना') 'कुञ्जर कूँ कीरी गिलि बैठी'—सुन्द० ८७,(दीन०१७६) ।

गिलबिला—वि० पिलपिला । [ मनमें ही रखना ।

गिलबिलाना—अक्रि० साफ न बोलना ।

गिलम—वि० मुलायम, कोमल । स्त्री० ऊनका नरम कालीन, मुलायम गद्दा 'गुलगुली गिलमैं गलीचा हैं गुनीजन हैं चाँदनी है चिक हैं चिरागनकी माला हैं ।'

गिलमिल—पु० एक तरहका कपड़ा । [ पद्माकर ।

गिलहरा—पु० पान रखनेका बाँसका डब्बा । एक वस्त्र ।

गिलहरी—स्त्री० एक छोटा जन्तु ।

गिला—पु० उलाहना, शिकायत।
गिलान—स्त्री० ग्लानि, खेद। घृणा। 'निरबुद्धी धनमानको मानत सकल जहान। लखि दरिद्र विद्वान्की जगजन करैं गिलान।' दीन० ७९
गिलाफ—पु० खोल। म्यान।
गिलाव, गिलावा—पु० कीचड़। ईंट जोड़नेका गारा। 'सतगुरु महल बनाइया प्रेम गिलावा दीन्ह।' साखी ३, (प० १२८)
गिलास—पु० पीतल इ० का बना कुल्हड़ सा पात्र।
गिलिम—स्त्री० देखो 'गिलम' (सुन्द० १२९)।
गिलोला—पु० गुलेलसे फेंकनेकी मिट्टीकी गोली।
गिलोय, गिलो—स्त्री० लताविशेष, गुरुच, अमृता।
गिलौरी—स्त्री० पानका बीड़ा।
गिल्यान—स्त्री० देखो 'गिलान'।
गिल्ली—स्त्री० दोनों ओर नुकीला बीचमें मोटा लकड़ीका छोटा टुकड़ा, गुल्ली।
गींजना—सक्रि० किसी कोमल वस्तुको हाथसे मलकर खराब कर देना, मसल डालना।
गींव—स्त्री० गरदन।
गीउ—स्त्री० गरदन (उद्दे० 'कुन्देरा', प० ४९)।
गीड़, गीड़र—पु० आँखका मैल 'थूकत लार भरयो मुख दीमत आँखिमें गीडर नाकमें सेड़ो।' सुन्द० ५०
गीत—पु० गाना। यश।
गीता—स्त्री० किसी विशेषज्ञसे प्राप्त ज्ञानोपदेश। कथा, हाल, वार्ता 'राम चले सुनि शूद्रकी गीता।' के० २७६
गीति—स्त्री० गान।
गीदड़, गीदर—पु० सियार।—भवकी = मिथ्या क्रोध या ऊपरी साहस दिखाना। झूठी धमकी।
गीध—पु० गृद्ध (रामा० ४११)।
गीधना—अक्रि० ललचना, परचना, 'गीधे गीध अमिख दली जानत अली।सुगंध।'दीन० २१०,(सूसु० ९,२४)
गीबत—स्त्री० गैरहाजिरी। चुगलखोरी।
गीर—स्त्री० गिरा, वाणी।
गीरवाण,-वान—पु० देवता 'भगे विमान गीरवान लै विचारि अन्त ही।' रघु० ११७
गीला—वि० आर्द्र, भींगा हुआ, तर। [†प० ११२
गीव,गीवा—स्त्री० गरदन 'राहग देखि कै नावहिं गीवा।'†
गुंग, गुंगा—वि० गूँगा।
गुँगुआना—अक्रि० गूँगेकी तरह बोलना। धुँआ देना।
गुंचा—पु० कली। आमोद-प्रमोद, विहार।
गुंची—स्त्री० घुँघची, गुंजा।
गुंज—स्त्री० एक आभूषण, मधुर ध्वनि, गुंजार। घुँघची।
गुंजन—पु० गूँजने या भनभनानेकी आवाज।
गुंजनपर—वि० गुञ्जनमें लगा हुआ, गुञ्जन करनेमें लीन।
गुंजना—अक्रि० भनभनाना, गुनगुनाना, गुञ्जार करना।
गुंजरै—पु० गुञ्जार।
गुँजरना—अक्रि० भनभनाना (रवि० ५८), गुंजार करना। गरजना।
गुँजहरा—पु० बच्चोंके हाथका बड़ा कड़ा (ग्राम० ७९)।
गुंजा—स्त्री० घुँघची।
गुंजाइश—स्त्री० सुवीता। जगह।
गुंजान—वि० सघन, गाढ़ा, अविरल।
गुंजायमान—वि० गूँजता हुआ, गुंजार करता हुआ।
गुंजार—पु० भनभनाहट, भौंरेका गूँजना।
गुंजारना—अक्रि० गूँजना।
गुंजित—वि० गुंजारयुक्त।
गुंठा—पु० एक तरहका घोड़ा।
गुंड—वि० पिसा हुआ। पु० मलार रागका एक प्रकार
गुंडई—स्त्री० गुंडापन, धूर्तता, बदमाशी।
गुंडा—वि० बदमाश, लुच्चा, दुराचारी, छैला।
गुंदला—पु० नागरमोथा।
गुंधना—अक्रि० साना जाना। सक्रि० गुहना, गूँधना
गुँधाई—स्त्री० गूँधने या गूँथनेकी क्रिया या मज़दूरी।
गुंफ—पु० गुच्छा। गलमुच्छा। उलझन।
गुंफन—पु० गूँथना, संग्रन्थन, उलझाव।
गुंफित—वि० गुथा हुआ, उलझा हुआ, पिरोया हुआ।
गुंबज, गुंबद—पु० गोल छत।
गुंमी—स्त्री० कोंपल, गाभ, अंकुर।
गुआ—पु० चिकनी सुपारी, सुपारी।
गुआर—पु० ग्वाला। [†गुआरि।' सूदे० ७४
गुआरि,गुआलिन—स्त्री० ग्वालिन 'हरिको टेरत फिरत
गुइयाँ—पु०, स्त्री० सहचर या सहचरी, साथी।
गुग्गुर, गुग्गुल—पु० एक पेड़। एक सुगन्धित द्रव्य।
गुच्छ, गुच्छा—पु० झब्बा, फुँदना।
गुच्छेदार—वि० गुच्छेवाला, जिसमें गुच्छा हो।

गुज़र—पु० निर्वाह। प्रवेश, गति। पहुँच।
गुज़रना—अक्रि० बीतना, निबहना, किसी स्थानसे जाना या निकलना। गुज़र जाना = मर जाना।
गुजरान—पु० निर्वाह, गुज़र, कालयापन।
गुजरिया—स्त्री० ग्वालिन।
गुजरी—स्त्री० देखो 'गूजरी'। एक तरहकी पहुँची।
गुजरेठी—स्त्री० गूजरकी बेटी, ग्वालिन।
गुजश्ता—वि० गुजरा हुआ, बीता हुआ।
गुजारना—सक्रि० व्यतीत करना।
गुज़ारा—पु० निर्वाह। घाट उतारनेका महसूल।
गुजारिश—स्त्री० अर्ज़, निवेदन।
गुझरोट,-रौट, गुझौट—पु० शिकन,कपड़ेकी सिकुड़न। 'कर उठाय घूँघट करत उसरत पट गुझरौट।' बि० १७३। औरतोंकी नाभिके इर्दगिर्दका भाग।
गुझिया—स्त्री० एक पकवान। एक मिठाई।
गुटकना—सक्रि० निगल जाना। अक्रि० गुटरगूँ करना।
गुटका—स्त्री० गोली, बटी। छोटी पुस्तक। लट्टू।
गुटकाना—सक्रि० बजाना (तबला) (रत्ना० २७८)।
गुटरगूँ—स्त्री० कबूतरोंका बोलना।
गुटिका—स्त्री० एक सिद्धि। बटिका।
गुट्ट—पु० समूह, दल, मण्डली।
गुठल—वि० गुठलीदार। मूर्ख। पु० गिलटी,गुलथी,गाँठ।
गुट्ठी—स्त्री० मोटी गाँठ। टखना, गुल्फ।
गुठलाना—अक्रि० दाँतका खट्टा होना।
गुठली—स्त्री० फलका बड़ा बीज।
गुड़ंवा—पु० उबालकर चाशनीमें डाला हुआ कच्चा आम।
गुड़—पु० ऊखका जमाया हुआ रस।
गुड़गुड़ाना—अक्रि०गुड़गुड़ करना। सक्रि० हुक्का पीना।
गुड़गुड़ी—स्त्री० एक तरहका हुक्का।
गुड़च—स्त्री० गुरुच, गिलोय।
गुड़धनिया,-धानी—स्त्री० गुडमें पागकर बनाये गये [गेहूँके लड्डू।
गुड़ाकू,-खू—पु० वह तम्बाकू जिसमें गुड़ मिला हो।
गुड़हल गुड़हर,-हल—पु० अड़हुल या जपाका पेड़ या फूल 'बिन मधु मधुकरके हिये गड़े न गुड़हर फूल।' बि० ११९।
गुडाकेश—पु० (निद्राको वशमें करनेवाले) अर्जुन। [शिवजी।
गुड़िया—स्त्री० कपड़ेकी पुतली। स्त्री० छोटे छोटे पाँव 'छोटी छोटी गुड़ियाँ अँगुरियाँ छोटी छबीली...' सू० ५५
गुड़ी—स्त्री० गुड्डी, पतंग (बि० १५३)। गाँठ, द्वेष, मनमोटाव। सिकुड़न।
गुड्डा—पु० बड़ी पतंग। कपड़ेका पुतला।
गुड्डी—स्त्री० पतंग।
गुढ़ना—अक्रि० छिपना।
गुण—पु० देखो 'गुन'।
गुणकारक,-कारी—वि० लाभदायक।
गुणन—पु० गुणा या जरब। मनन।
गुणग्राहक—वि० गुणियोंकी इज्जत करनेवाला। पु० वह जो गुणियोंका आदर करे।
गुण्य—पु० वह संख्या जिसमें किसी अन्य संख्यासे गुणा करना हो।
गुणवंत,-वान्—वि० गुणी, गुणोंवाला।
गुणा—स्त्री० गणितकी क्रिया-विशेष।
गुणाढ्य—वि० गुणोंसे युक्त, गुणी।
गुणानुवाद—पु० गुण-वर्णन, बड़ाई।
गुणी—वि० जिसमें कोई गुण हो, गुणवान्। पु० गुणोंसे युक्त व्यक्ति, हुनर जाननेवाला, झाड़ने-फूँकनेवाला।
गुणीन—वि०.गुणा किया गया। गिना गया।
गुत्थमगुत्था—पु० भिड़न्त। फँसाव।
गुत्थी—स्त्री० उलझन, गाँठ।
गुथना—अक्रि० एक साथ पिरोया जाना, नाथा जाना। परस्पर लिपट जाना।
गुदकार,-कारा—वि० गूदेदार, गुदगुदा, फूला हुआसा 'चारु कपोल गोल गुदकारे अरु सुंदरसी ठोढ़ी।' सुजा० २२९
गुदगुदा—वि० गुलगुला, कोमल। गुदारा।
गुदगुदाना—सक्रि० छेड़ने या हँसानेके लिए काँख इ० को सुहराना। उत्तेजित करना, उमँगाना।
गुदगुदी—स्त्री० अंग-स्पर्शके कारण पैदा हुई सुरसुराहट। उत्कट इच्छा, चुल, उमंग। [बेचनेवाला।
गुदड़िया—पु० गुदड़ी धारण करनेवाला। फटे पुराने वस्त्र
गुदड़ी—स्त्री० पुराने कपड़ोंको सीकर बनाया हुआ बिछावन, कथरी, 'था।
गुदड़ी बाज़ार—पु० पुरानी चीज़ोंका बाज़ार।
गुदना—अक्रि० गड़ना, चुभना। पु० गोदना।
गुदर—पु० राजदरबारमें हाजिरी 'अबहीं करहु गुदर मिस साजू।' प० १११

गुदरना—अक्रि० निवेदन करना, सूचित करना "... सो कथा सुनि, प्रभु सों गुदरि नियरयो हौं।" बिन० ६०३। अलग रहना 'मिलि न जाय नहिं गुदरत बनई।' रामा० ३१४

गुदराना—सक्रि० सूचित करना, निवेदन करना 'निकट बिभीषण आय गुलाने। कपिपति सों तबही गुदराने।' राम० ३८२। सामने रखना, भेंट देना।

गुदरी—स्त्री० देखो 'गुदड़ी'।

गुदरैन—स्त्री० परीक्षाके लिए पाठ सुनाना। परीक्षा।

गुदाना—सक्रि० चुभवाना। सूईसे चिह्नित कराना।

गुदार—वि० जिसमें खूब गूदा हो, गूदेदार।

गुदारना—सक्रि० सुनाना, पढ़ना 'मुलना तहाँ निवाज गुदारै।' छत्र० ८२

गुदारा—पु० नदी पार करना, उतारा 'भा भिनसार गुदारा लागा।' रामा० २९६। वि० गूदेदार।

गुद्दी—स्त्री० गूदा, मींगी।

गुन—पु० विशेषता, धर्म। सद्वृत्ति, शील। प्रवीणता। तीनकी संख्या। धनुषकी प्रत्यचा। प्रभाव, फल। डोरा, रस्सी 'कबीर सबद सरीरमें बिन गुन बाजै ताँत।' साखी १०२

गुनकारी—वि० लाभदायक।

गुनगुना—वि० थोड़ा गरम। नाकमें बोलनेवाला।

गुनगुनाना—अक्रि० 'गुनगुन' करना। धीमी आवाज़में गाना।

गुनगौरि—स्त्री० गौरी जैसी सौभाग्यवती स्त्री। पतिव्रता नारी।

गुनना—सक्रि० विचार करना, सोचना 'राजकुमारि सिखावन सुनहू। आन भाँति नहिं जिय कछु गुनहू।' रामा० २२८। गाना, वर्णन करना (गीता० २९४, २९५)

गुनवंत—देखो 'गुणवंत'।

गुनहगार, गुनही—वि० दोषी, पापी।

गुनावन—पु० विचार 'नृप दृढ़ताके कसन हेतु हरि कीन्ह गुनावन।' रत्ना० ९४ (९८, १०२)।

गुनाह—पु० अपराध, पाप।

गुनाही—वि० अपराधी, दोषी, पापी।

गुनिया—पु० गुण जाननेवाला व्यक्ति। देखो 'गुनी'।

गुनियाला—वि० गुणवाला 'प्रीति अड़ी है तुझसे बहु गुनियाला कंत।' साखी ३१

गुनी, गुनीला—वि० गुणवान् 'परम गुनीलो नन्दसुत मैं देख्यो टकटोग।' चाचाहित। पु० चतुर मनुष्य, विशेषज्ञ 'जोरिय कोउ बड़ गुनी बोलाई।' रामा० १५०। झाड़ फूँक करनेवाला ( उदे० 'गारुड़ी')।

गुपचुप—स्त्री० एक मिठाई। क्रिवि० चुपचाप। बिना किसीको मालूम हुए।

गुपुत, गुप्त—वि० छिपा हुआ, गूढ़। रक्षित।

गुप्तगोदावरी—स्त्री० चित्रकूटके निकट एक तीर्थ स्थान।

गुप्तचर—पु० जासूस, भेदिया।

गुप्ता—स्त्री० प्रेमको गुप्त रखनेका प्रयत्न करनेवाली नायिका।

गुप्ती—स्त्री० ऐसी छड़ी जिसके भीतर लम्बीसी पतली छुरी गुप्त रूपसे रखी गयी हो।

गुप्फा—पु० झब्बा।

गुफा—स्त्री० कन्दरा, गुहा, खोह।

गुफ्तगू—स्त्री० बातचीत।

गुबरैला—पु० गोबरका कीड़ा।

गुबार—पु० धूल। दिलमें दबाया हुआ क्रोध या द्वेष।

गुबारा, गुब्बाड़ा, गुब्बारा—पु० कागज आदिका गोला जो गरम हवा या भाप भरनेपर उड़ता है।

गुबिंद—पु० गोविन्द। (कर्म० २९)।

गुम—वि० गुप्त। खोया हुआ, गायब। चुप, मौन

गुमकना—अक्रि० भीतर ही भीतर गूँजना, बाहर प्रकट न होना 'धमकि मार्यो घाउ गुमकि हृदय रह्यो झमकि गहि केश लै चले ऐसे।' सूबे० २९३

गुमटा—पु० माथेपरकी गोल सूजन, गूमड़ा। देखो 'गूमड़ा।'

गुमटी—स्त्री० मकानके कमरे आदिकी वह छत जो सब से ऊपर उठी हुई हो।

गुमज़ी—स्त्री० छोटा गुँबज ( निबन्ध १-१४ )।

गुमना—अक्रि० गुम हो जाना, गायब हो जाना।

गुमनाम—वि० अज्ञातनामा, जिसका नाम प्रसिद्ध या प्रकट न हो, बग़ैर नामके।

गुमर—पु० घमण्ड। गुबार। कानाफूसी।

गुमराह—वि० जो राह भूल गया हो। खराब रास्तेपर जानेवाला।

गुमान—पु० घमण्ड। उपस्थिति। अनुमान। लोकनिन्दा।

गुमाश्ता—पु० व्यापारी या कोठीवालका कारिन्दा।

गुम्मट—पु० गुम्बज।

गुरंड—पु० एक जाति, अंग्रेज ( रत्ना० ५६५ )।

गुरंब, गुरंबा—पु० देखो 'गुड़ंबा'। 'औ अमृत गुरंब भरे मेटा।' प० २७३

गुर—पु० गुड़। मूलमन्त्र, सरल साधन, सूत्र। गुल "... गुल, फूल कविप्रि० २२२

गुरगा—पु० भेदिया। नौकर, किंकर। शिष्य।
गुरज, गुरुज—पु० गुर्ज, गदा 'तीसर खडग कूँडपर लावा काँधे गुरुज हुत घाव न आवा।' प० ३२२
गुरदा—पु० कलेजेके पासका एक अंग। हिम्मत।
गुरमुख—देखो 'गुरुमुख'।
गुरम्मर—पु० मीठे आमका पेड़।
गुरदी—वि० अभिमानी, घमण्डी।
गुरसी—स्त्री० अँगीठी,आग रखनेका बरतन (सू०२४२)।
गुराई—स्त्री० गोरापन, गोराई 'कुन्दनको रँग फीको लगै झलकै अति अंगन चारु गुराई।' रस० २
गुराब—पु० वह गाड़ी जिसपर तोप लादी जाती है(रघु०३)
गुरिद—पु० गदा।
गुरिया—स्त्री० मनका, दाना। कटा हुआ छोटा टुकड़ा।
गुरीरा—वि० मीठा, उत्तम।
गुरु—पु० आचार्य, अध्यापक, पुरोहित। बृहस्पति। ग्रह, दीर्घ वर्ण। देखो 'गुरु'। वि० बड़ा, वज़नी।
गुरुआनी—स्त्री० गुरुपत्नी। अध्यापिका।
गुरुकुल—पु० विद्यापीठ।
गुरुच—स्त्री० एक बेल, गिलोय।
गुरुजन—पु० पूज्यजन, बड़े बूढ़े लोग।
गुरुडम—स्त्री०, पु० 'गुरु' बननेका दावा या धुन।
गुरुता,-ताई—स्त्री० भारीपन, बड़प्पन, गौरव। गुरुका काम।
गुरुत्व—पु० गुरुका कार्य, गुरुता, महत्व, भारीपन, बोझ।
गुरुबिनी—वि० स्त्री० गर्भवती। [हो।
गुरुभाई—पु० वे व्यक्ति जिन्हें एक ही गुरुसे शिक्षा मिली
गुरुमुख—वि० जिसने गुरु मन्त्र लिया हो।
गुरुमुखी—स्त्री० एक पंजाबी लिपि।
गुरुवार—पु० बृहस्पतिवार।
गुरू—पु० अध्यापक, आचार्य, पुरोहित। [—पूर्ण।
गुरूडम—देखो 'गुरुडम' 'सिरपर' हुआ सवार गुरूडम,
गुरेरना—सक्रि० नेत्र फाड़ फाड़कर देखना, घूरना।
गुरेरा—पु० देखो 'गुलेला'। 'आन्यो मोरि मतंग मनु मारि गुरेरन मैन।' बि० ४५। देखादेखी 'अंत कंत सौं भएउ गुरेरा।' प० १८७
गुर्गा—देखो 'गुरगा' (कर्म० ४२४)।
गुर्ज—पु० गदाकी तरहका शस्त्र (छत्र०६६)। बुर्ज। गुर्ज-बरदार=गदाधारी सैनिक 'कैयक हजार जहाँ गुर्जबरदार टाढ़े करिकै हुस्यार नीति पकरि समाजकी।' भू० १५६
गुर्जमार—पु० एक तरहके मुसलमान फकीर।
गुर्जर—पु० एक देश (गुजरात)। [हठ ३०)।
गुर्दा—देखो 'गुरदा'। एक तरहकी छोटी तोप (हम्मीर
गुर्राना—अक्रि० क्रोधभरी आवाज़में बोलना।
गुर्विणी—वि० स्त्री० गर्भवती।
गुर्वी—वि० स्त्री० गर्भवती। विशाल 'डिगति उर्वि अति गुर्वि सर्व पब्बै समुद्र सर।' कविता० १५९। स्त्री० श्रेष्ठ स्त्री।
गुल—पु० फूल। गुलाबका फूल। गालका गड्ढा। फूलके आकारकी चकती या बिन्दी। बत्ती या तमाखूका जला हुआ अंश। हलवाईका भट्ठा। कनपटी।—करना = बुझाना। —खिलना=उपद्रव होना, विचित्र ❀
गुल—पु० शोर, चिल्लाहट। [❀ बात होना।
गुलअब्बास—पु० गुलाबों सा एक पौधा जिसमें बरसात के दिनोंमें लाल या पीले रंगके फूल लगते हैं।
गुलकन्द—पु० मिश्री या चीनीमें मिली हुई गुलाबकी पँखडियोंसे बनी एक दवा।
गुलकारी—स्त्री० कपड़े आदिपर फूल काढ़नेका काम।
गुलखैरू—पु० एक पौधा जिसमें नीले रंगके फूल लगते हैं
गुलगपाड़ा—पु० शोरगुल।
गुलगुल—वि० गुलगुला, कोमल। [पकवान। कनपटी।
गुलगुला—वि० मुलायम (रवि० ४९, ६३)। पु० एक
गुलगुलाना—सक्रि० गुदगुदाना (गुलाब २५, ४०३)। गुलगुला या मुलायम बनाना।
गुलगुली—स्त्री० गुदगुदी (गुलाब ४१५)।
गुलचना—सक्रि० गुलचका आघात करना।
गुलचा—पु०गालपर हाथकी अँगुलियोंका हलका आघात।
गुलचाना,-चियाना—सक्रि० गुलचा मारना।
गुलछर्रा—पु० अनुचित भोग विलास। मौज। [❀बाग़।
गुलज़ार—वि० जहाँ खूब चहल-पहल हो, हराभरा। पु०❀
गुलथी—स्त्री०मैदा आदिको घोलनेसे बनी हुई गाँठ,गीली।
गुलदस्ता—पु० सजावटके लिए बनाया गया फूलों और पत्तियोंका गुच्छा, पुष्पस्तवक।
गुलदाउदी,-वदी—स्त्री० एक पौधा या उसका फूल।
गुलदान—पु० गुलदस्ता रखनेका पात्र।
गुलदुपहरिया—पु० एक पौधा या उसका फूल जो गहरे लाल रंगका होता है।

गुलनार—पु० अनारका फूल।
गुलबकावली—स्त्री० एक प्रकारका सफेद और सुगंधित फूल, जिसका पौधा हल्दीकी जातिका होता है।
गुलबदन—पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा।
गुलमेंहदी—स्त्री० एक पौधा या उसका फूल।
गुललाला—पु० एक पौधा या उसका लाल फूल।
गुलशन—पु० बाग, उद्यान।
गुलशब्बो—पु० रजनीगंधा नामक पौधा या उसका फूल।
गुलाब—पु० एक कँटीला पौधा या उसका फूल।
गुलाबजामुन—पु० एक मिठाई। एक वृक्ष।
गुलाबपाश—पु० गुलाब छिड़कनेका पात्र-विशेष।
गुलाबा—पु० एक तरहका बरतन।
गुलाबी—वि० गुलाबके रङ्गका। गुलाबजलसे सुवासित।
गुलाम—पु० दास, सेवक। ताशका एक पत्ता। [हलका।
गुलामी—स्त्री० दासता, सेवा, पराधीनता।
गुलाल—पु० एक लाल बुकनी।
गलाला—पु० देखो 'गुललाला'।
गुलियाना—सक्रि० दवा इत्यादि बाँसके चोंगेमें भरकर पिलाना ( उदे० 'खर' )।
गुलूबंद—पु० ठंडसे बचनेके लिए गलेमें अथवा सिरपर बाँधनेकी ऊनी या सूती पट्टी।
गलेल—स्त्री० वह कमान जिससे पक्षियों आदिको मारनेके लिए मिट्टीकी गोलियाँ चलायी जाती हैं।
गुलेला—पु० मिट्टीकी गोलियाँ जो गुलेलसे चलायी जाती [हैं। गुलेल।
गुल्फ—पु० पैरकी गाँठ, टखना।
गुल्म—पु० पेटका एक रोग। पौधोंकी एक जाति।
गल्ला—पु० देखो 'गुलेला'। गुलेल। शोर, ऊँची आवाज़। ऊखका टुकड़ा। एक पेड़। छेनेकी बनी एक मिठाई।
गुल्लाला—पु० एक लाल फूल 'फूले नैन ज्यों गुल्लाल।' सुजा० ११४
गुल्ली—स्त्री० लड़कोंके खेलनेका लकड़ीका छोटा टुकड़ा, 'गिल्ली'। गुठली। लम्बा सा छोटा टुकड़ा।
गुवार, गुवाल—पु० ग्वाल।
गुवालि—स्त्री० ग्वालिन, गोपी।
गुसलखाना, गुसुलखाना—पु० स्नानागार (भू०२१)।
गुसाँई—पु० जितेन्द्रिय। गौओंका स्वामी। विरक्त, साधु। एक सम्प्रदाय। ईश्वर ( छत्र० ८२ ), प्रभु, स्वामी।
गुसा—पु० क्रोध, गुस्सा।

गुसैयाँ—पु० स्वामी, ईश्वर 'ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सोहबत हो यादमें गुसैयाँके हमेस विरमा रहै।' [ग्वाल।
गुस्ताख—वि० बेअदब, उद्धत, धृष्ट।
गुस्ताखी—स्त्री० बेअदबी, धृष्टता।
गुस्ल—पु० स्नान।
गुस्लखाना—पु० स्नानागार ( भू० ११, २१ )।
गुस्सा—पु० क्रोध।
गुस्सैल—वि० क्रोधी, चिड़चिड़ा।
गुह—पु० एक निषाद। घोड़ा। षडानन।
गुहना—सक्रि० एकमें पिरोना, गूँथना, गाँथना 'रहौ, गुहीं बेनी, लखे गुहिबेके त्यो नार।' बि० १९८
गुहराना—सक्रि० चिल्लाकर बुलाना, पुकारना 'हम अब कहाँ जाइ गुहरावैं बसत तुम्हारे गाउँ।' सूबे० ११
गुहाँजनी—स्त्री० देखो 'गुहेरी'।
गुहा—स्त्री० गुफा, कन्दरा।
गुहाई—स्त्री० गुहनेकी क्रिया या मजदूरी। बिलनी।
गुहाना—सक्रि० गुहनेका कार्य कराना।
गुहार, गुहारि—स्त्री० पुकार, दोहाई 'दीन गुहारि सु स्रवननि भरि गर्व वचन सुनि हृदय जरौं।' सू० १०
गुहेरा—पु० छिपकली जैसा एक जन्तु, गोह।
गुहेरी—स्त्री० आँखकी बरौनी परकी फुड़िया, बिलनी।
गुह्य—वि० गोप्य, गुप्त।
गूँगा—वि० जो बोल न सके, मूक। पु० मूक मनुष्य
गूँज—स्त्री० भौंरे इ०के गूँजनेकी आवाज़। लट्टू की कील प्रतिध्वनि।
गूँजना—अक्रि० गुञ्जार करना, भनभनाना। प्रतिध्वनि होना, आवाज़ फैलना। गरजना, देखत साहसिंहाल गूँजा।' प० २६१
गूँजा—देखो 'गुँजहरा' ( ग्राम० १०६ )।
गूँथना, गूँदना, गूँधना—सक्रि० सानना, मसलना पिरोना, गुहना। बालोंको बटना ( सू० १०२ ), सिर केस कुसुम भरि गूँदे, तेहि कैसे भसम करै। सू० २२६, ( मति० १९१ ), बेनी गूँथत नन्दलाल चित लोल।' रस० १०
गू—पु० मल, विष्टा, बीट। —करना=गन्दा करना।
गूजर—पु० ग्वाला। क्षत्रियोंका एक भेद।
गूजरी—स्त्री० गूजर जातीय स्त्री, ग्वालिन गहना ( उदे० 'ऊजरा' )।

गूझा—वि० गुप्त 'मंजन सो जु मनोमल-भंजन सज्जन सो जु कहै गति गूझे।' सुन्द० ७९। पु० बड़ी पिराक।
गूढ़—वि० गुप्त, जटिल, कठिन, गम्भीर।
गूढ़गेह—पु० यज्ञगृह 'प्रौढ़ रूढ़िको समूढ़ गूढ़गेहमें गयो।' राम० ४८१
गूढ़ता—स्त्री०,गूढ़त्व—पु० गुप्तता, जटिलता, क्लिष्टता।
गूढ़पुरुष—पु० भेदिया, गुप्तचर।
गूढ़ोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार।
गूथना—सक्रि० पिरोना, गुहना, टाँकना, सीना।
गूद—पु० गूदा। स्त्री० गड्ढा, चिह्न।
गूदड, गूदर—पु० जीर्ण वस्त्र, चिथड़ा, 'पाटंबर अंबर तजि गूदर पहिराऊँ।' सू० ११
गूदा—पु० किसी फल, बीज आदिका सार भाग, मींगी। [भेजा।
गून—स्त्री० नाव खींचनेकी रस्सी।
गूनी—स्त्री० देखो 'गोनी' ( कबीर १७४ )।
गूमडा—पु० चोट लगनेसे फूला हुआ सिरका भाग।
गूलड़, गूलर—पु० एक पेड़ या उसका फल।
गूह—पु० देखो 'गू'।
गृद्ध, गृध्र—पु० गीध पक्षी।
गृम—पु० गर्दन ( विद्या० ४७, १२३ )
गृह—पु० घर, रहनेकी जगह। वंश।
गृहप—पु० गृहपति। द्वाररक्षक, कुत्ता ( विन० ३२२ )।
गृहपति—पु० घरका स्वामी। छात्रालयका निरीक्षक।
गृहपशु—पु० कुत्ता। पालतू जानवर।
गृहयुद्ध—पु० एक ही देशके रहनेवालोंमें होनेवाला युद्ध।
गृहस्थ—पु० स्त्री बच्चोंवाला आदमी, वह जिसके यहाँ खेती होती हो। खुशहाल व्यक्ति।
गृहस्थी—स्त्री० बाल-बच्चे, घरबार। गृहस्थका धर्म। गृहस्थाश्रम। खेती-बारी।
गृहिणी गृहिनी—स्त्री० गृह-स्वामिनी, पत्नी।
गृही—पु० गृहस्थ, गृहपाल।
गृहीत—वि० पकड़ा हुआ, स्वीकार किया गया।
गेंड़ा—देखो 'गोंइँड़ा'।
गेंडली—स्त्री० घेरा, चक्कर, फेंटा।
गेंडा—पु० ऊखका ऊपरी भाग। एक जंगली पशु।
गेंद, गेंदुक—पु० गेंद।
गेंड़ुआ, गेंडवा—पु० छोटा तकिया, उसीसा 'चहुँदिसि गेंडवा औ गलसूई।' प० १३९। बड़ा गेंद।
गेंडुरी, गेंडुली—स्त्री० कुंडली, घड़ा रखनेके लिए रस्सी इ० का बना मेंडरा, इंडुरी 'गेंडुरि दई फटकारिकै हरि करत है लँगरी।' सूबे० १११
गेंद—पु० लड़कोंके खेलनेका कपड़े इ० का गोला, कन्दुक।
गेंदतड़ी—स्त्री० परस्पर गेंद मारनेका लड़कोंका खेल।
गेंदवा—पु० उसीसा, तकिया।
गेंदा—पु० पीले फूलवाला एक पौधा। एक आभूषण।
गेंदुक—पु० कन्दुक, गेंद।
गेंदुर—पु० चमगादड़।
गेंदुवा—पु० उसीसा, गेंडुआ, तकिया।
गेंदौरा—पु० एक तरहकी मिठाई। चीनीकी मोटी रोटी।
गेड़ना—सक्रि० रेखासे घेरना। अक्रि० देखो 'गेरना'।
गेदा—पु० बेपरका चिड़ियाका बच्चा।
गेय—वि० गाने योग्य।
गेरना—सक्रि० गिराना, उँडेलना। आरोप करना,डालना 'गेरि बाँह सुठि ग्रीवपर चूड़ी हरी रसाल।' नागरी० अक्रि० चारो तरफ फिरना, परिक्रमा करना।
गेरवाँ, गेराँव—पु० देखो 'गरैयाँ।'
गेरुआ—वि० गेरूके रँगका। गेरूमें रँगा हुआ,जोगिया। पु० फसलका एक कीड़ा।
गेरुई—स्त्री० चैतकी फसलका एक रोग 'नीचे ओद ऊपर बदराई। कहै घाघ अब गेरुई खाई।' घाघ
गेरू—स्त्री० एक तरहकी लाल खनिज मिट्टी।
गेह—पु० गृह, निवासस्थान, घर 'नारद कर उपदेस सुनि कहउ बसेउ को गेह।' रामा० ४८
गेहनी—स्त्री० गृहिणी, स्त्री ( सू० १९६ )।
गेहिनी—देखो 'गेहनी'।
गेही—पु० गृहस्थ।
गेहुँअन—पु० एक तरहका विषैला साँप।
गेहुँआ—वि० गेहूँके रँगका।
गेहूँ—पु० एक अन्न जिसकी फसल चैतमें तैयार होती है।
गैंड़ा—पु० एक विशालकाय पशु।
गैंती—स्त्री० मिट्टी खोदनेका औज़ार, कुदारी।
गैन—पु० गैल, रास्ता। गमन (सुसु० १२८),'सुख पावो तो विरमियो नहिं कर जैयों गैन।' चाचा हित०। गगन ( वि० २४४ )। गयन्द ( व्रज० ५३५ )।
गैना—पु० नाटा बैल।
गैनी—वि० स्त्री० गामिनी ( व्रज० ९७ )।

गैयर—पु० एक चिड़िया, श्रेष्ठ हाथी ( उर्दे० 'गरट्ट' )।
गैबी०—वि० गुप्त। गूढ़, अज्ञात 'हिंदू कहूँ तो मैं नहीं, मुसलमान भी नाहिं। पाँच तत्वका पूतला, गैबी खेले माहिं।' साखी ८२
गैयर--पु० गैवर ( गयवर ), श्रेष्ठ हाथी।
गैया—स्त्री० गाय।
गैर—वि० अन्य। अपने परिवार या दलसे बाहरका।
गैर—स्त्री० अन्यायपूर्ण वर्त्ताव, अन्धेर। गैल ( उर्दे० ['अइदार' )। निन्दा, अपयश।
गैरत—स्त्री० शर्म।
गैरमनकूला—वि० स्थावर, अचल ( सम्पत्ति )।
गैरमामूली—वि० असामान्य, असाधारण।
गैरमिसिल—क्रिवि० बेतरतीबसे, अनुचित जगहमें ( उर्दे० 'गराज' )।
गैरमुनासिब,-वाजिब—वि० अनुचित, बेजा।
गैरमुमकिन—वि० नामुमकिन, असम्भव।
गैरहाज़िर—वि० अनुपस्थित।
गैरिक—पु० गेरू ( ललित० ४४ )। सुवर्ण। वि० गेरुआ, गेरूके रंगका।
गैल—स्त्री० रास्ता, पथ ( सूबे० ११६), गली। गैल बताना = दगाबाजी करना 'नारायन महबूब साँवरे घायल करि फिर गैल बतावे।' नारायण स्वामी
गोंइँटा—पु० कंडा, गोहरा, उपला।
गोंइँड़, गोंइँड़ा—पु० गाँवको तटवर्ती भूमि।
गोंठना—सक्रि० कोर मोड़ देना, गुठली करना। घेरना। चित्रित करना ( ग्राम० २०० )।
गोंठनी—स्त्री० गोंठनेका औजार।
गोंड़—पु० मध्यप्रदेशकी एक जाति।
गोंड़ा—पु० बस्ती। आँगन, बाड़ा। परछन। गाँवके समीपकी भूमि 'निकसि ब्रजके गई गोंड़े, हरप भई सुकुमारि।' सूबे० १३१ [ छएक वृक्ष।
गोंद—पु० वृक्षोंके तनोंसे प्राप्त लसदार वस्तु। स्त्री०छ
गोंदी—स्त्री०मौलिसिरीकी तरहका वृक्ष विशेष, इंगुदी।
गो—स्त्री० गाय। इन्द्रिय। किरण। वाणी। दृष्टि। नेत्र। पृथिवी। दिशा। जीभ। माता। वृषराशि। सरस्वती। पु० सूर्य, बैल, इ०। अ० यद्यपि।
गोंहँटा—देखो 'गोंइँटा'।
गोंहँड़—देखो 'गोंइँड़'।
गोंहँदा—पु०जासूस, गुप्तचर।
गोइ—पु० गेंद, गोय ( उर्दे० 'चौगुना' )।
गोइन—पु० एक तरहका हिरन।
गोइयाँ—पु०, स्त्री० देखो 'गुइयाँ' ( गीता० २९७ )।
गोई—स्त्री० सखी, सहेली 'सुनि निसचै नैहरकै गोई। गरे लागि पदमावति रोई।' प० २९६
गोल—वि० छिपानेवाला, हरण करनेवाला।
गोकन्या—स्त्री० कामधेनु।
गोकुल—पु० स्थानविशेष। गौओंके रहनेकी जगह, गोवृन्द।
गोखग—पु० थलचारी जीव, पशु।
गोखरू, गोखुरू—पु० एक तरहका कँटीला पौधा। गोटे इत्यादिसे बना हुआ एक साज। एक तरहकी कँटिया।
गोखा—पु० दीवारमेंका छोटा छेद, झरोखा।
गोखुर—पु० गायके खुरका चिह्न।
गोखुरा—पु० काला साँप, करैत।
गोघातक, गोघाती—पु० गाय मारनेवाला, कसाई।
गोघ्न—पु० कसाई। अतिथि।
गोचर—वि० इन्द्रियग्राह्य। पु० चरागाह। प्रान्त।
गोजई—स्त्री० गेहूँ और जौ मिला हुआ अनाज।
गोजर—पु० कनखजूरा, काँतर ( 'पटार' बुन्देल० )।
गोजी—स्त्री० बड़ा डण्डा, लट्ठ। [ बूढ़ा बैल।
गोझा—पु० गुझिया नामक पकवान। एक कँटीली घास। जेब। लकड़ीकी कील। [ किनारा, मगजी
गोट—पु० तोपका गोला। स्त्री० गोटी। मण्डली।
गोटा—पु० एक तरहका सुनहला या रुपहला फीता। गोला 'औ ज्यों छुटहिं वज्र कर गोटा।' प० १०१। शुष्क मल।
गोटी—स्त्री० चौपड़ इत्यादिका मोहरा। ( कंकड़ आदिका छोटा टुकड़ा जिससे लड़के खेलते हैं।
गोठ—स्त्री० गोशाला। देखो 'गायगोठ'। गोष्ठी, सभा ( आँधी १९६ )
गोठा—पु० सलाह 'सावधान करि लेहिं अपनपौ सब हमसों करि गोठो।' भ्र० १११
गोड़—पु० पाँव, चरण ( सूबे० ४९ )।
गोड़इत—पु० गाँवका चौकीदार।
गोड़ना—सक्रि० मिट्टी खोदकर उलट-पुलट देना। कोसना 'नाम जाको कल्पतरु देत फल चारि ताहि तुलसी बिहाइ कै बबूर रेंड़ गोड़िये।' कविता २०९।
गोड़वरियाँ—स्त्री० पैताना ( ग्राम० ४० )।

गोड़हरा—पु० पाँवका कड़ा ( ग्राम० ७९ ) ।
गोड़ा—पु० चारपाई, चौकी आदिका पावा । घोड़िया ।
गोड़ापाई—स्त्री० बार बार आना जाना ।
गोड़िया—स्त्री० देखो 'गुड़िया' ।
गोड़ी—स्त्री० प्राप्ति, लाभ । प्राप्तिका आयोजन । पाँव ।
गोत—पु० वंश, कुल 'रहिमन अपने गोतको सबै चहत उत्साह ।' रहीम २२ । समूह '…ताहि कहत ललितोपमा सकल कविनके गोत ।' भू० २१ ।
गोता—पु० डूबनेकी क्रिया, डुबकी ।
गोताखोर,-मार—पु० डुबकी लगानेवाला ।
गोतिन—स्त्री० सखी ( ग्राम० ३७ ) ।
गोतिया, गोती—वि० अपने गोत्रका । पु० भाई-बन्धु ।
गोतीत—वि० इन्द्रियोंसे परे, जो इन्द्रियोंद्वारा न जाना जा सके ।
गोत्र—पु० कुल । सन्तति । नाम । बन्धु । क्षेत्र इ० ।
गोत्रभिद्—पु० इन्द्र । [ पहाड़ ।
गोत्रसुता—स्त्री० पार्वती ।
गोद—स्त्री० उत्संग, उछंग, कोरा । अञ्चल ।
गोदना—सक्रि० नुकीली चीज़ चुभाना, गोड़ना । चुभनेवाली बात कहना । किसी कामके लिए बार बार उकसाना । पु० तिलकी तरहका एक कृत्रिम चिह्न ।
गोदा—स्त्री०गोदावरी नदी ।पु०बड़ इ०के फल । नयी डाल।
गोदाम—पु० माल रखनेका विस्तृत स्थान । बटन
गोदावरी—स्त्री० एक नदी । [ (बुन्देल०) ।
गोदी—स्त्री० गोद ।
गोध, गोधा—स्त्री० गोह, एक विषैला जन्तु ।
गोधन—पु० गौ रूपी सम्पत्ति, गायोंका समूह 'जे गोधनके सँग धाये ।' सू० ८० । गोवर्धन पहाड़ 'गिरि कीजै गोधन मयूर नव कुंजनको, पसु कीजै महाराज नन्दके बगरको ।'—श्री हठी । एक पक्षी ।
गोधूम—पु० गेहूँ ।
गोधूलि—स्त्री० सन्ध्या बेला ।
गोन—पु० देखो 'गोनी' । सोलह मानीकी तौल ।
गोनरखा—पु० नावका मस्तूल ।
गोना—सक्रि० छिपाना, गुप्त रखना 'रहिमन निज मनकी व्यथा मनही राखो गोय ।' रहीम १८ '…याही डर गिरिजा गजाननको गोइ रही गिरि तें गरे तें निज गोद तें उतारै ना ।'—पद्माकर

गोनिया—स्त्री० सिधाई जाँचनेका राज आदिका एक
गोनी—स्त्री० टाट इ० की बड़ी थैली । [ औज़ार ।
गोप—पु० अहीर । एक आभूषण । राजा ।
गोपति—पु० साँड़ । शिव । श्रीकृष्ण । ग्वाल । राजा ।
गोपद—पु० गायके खुरका पड़ा हुआ चिह्न । [ इन्द्र ।
गोपदी—वि०गायके खुरके सदृश छोटा ।
गोपन—पु० छिपानेकी क्रिया ।
गोपना—सक्रि० छिपाना 'है नहिं पास कछू कहिके तेहि गोपि घनी विधि काँखमें राखे ।' सुदामा० (ककौ०)
गोपनीय—वि० छिपाने योग्य, गोप्य ।
गोपा—स्त्री० ग्वालिन । श्यामा लता । बुद्ध पत्नी ।
गोपाल—पु० गोपालक, ग्वाला, श्रीकृष्ण, राजा ।
गोपिका, गोपी—स्त्री० गोपकी स्त्री, ग्वालिन ।
गोपीत—पु०, (स्त्री०) खंजन पक्षीका एक भेद 'अछरी छर्पी, छर्पी गोपीता ।' प० ४५
गोपुर—पु० नगरका द्वार, दुर्गम द्वार, फाटक 'गोपुरलों पहुँचायके फिरे सकल दरबार ।' सुदामा० १२ ।
गोप्ता—वि० रक्षा करनेवाला । [ गोलोक, स्वर्ग ।
गोप्य—वि० गोपनीय, छिपाने लायक । [ढेलवाँस ।
गोफन,-ना—पु० कंकड़ फेंककर मारनेका रस्सीका फन्दा,
गोफा—स्त्री० तहखाना, गुफा 'गोफन माँही पौढ़ते परिमल अंग लगाय । साखी ३८ । पु० गाभ ।
गोबर—पु० गौकी विष्ठा ।
गोबरगणेश—वि० मूर्ख । बदशकल, भद्दा ।
गोबरी—स्त्री० गोहरी, कंडा । गोबरका लिपाव ।
गोबरैला,-रौला—पु० गोबरमें उत्पन्न होनेवाला एक तरहका कीड़ा ।
गोभ—पु० पौधोंका एक रोग । स्त्री० लहर 'रसिकन हिये बढ़ावनी नवल प्रेमकी गोभ ।' चाचाहित०
गोभा—स्त्री० लहर 'जाहि देखत उठति सखि आनन्दकी गोभा ।' गदाधर भट
गोभी—स्त्री० एक तरकारी । पौधोंका एक रोग ।
गोभृत—पु० धराधर पहाड़ ।
गोम—स्त्री० घोड़ोंकी एक भँवरी । पु० स्थान 'ऐडायल गजगन गैंडा गररात गनि गेहनमें गोहन गरूर गहे
गोमती—स्त्री० एक नदी । [ गोम हैं ।' भू० १४२
गोमय—पु० गोबर । कंडा ( मुद्रा० ) ।
गोमर—पु० गाय मारनेवाला, कसाई 'कामधेनु धरनी

कलि-गोमर, वियस विकल जामति न बई है।'
गोमाय, गोमायु—पु० गीदड़, सियार। [विन० ३३९
गोमुख—पु० गायका मुँह। गोमुखकी तरहकी थैली, गोमुखी। नरसिंहा नामक बाजा। एक तरहका शंख।
गोमुख नाहर=देखनेमें सीधा, किन्तु वास्तवमें क्रूर।
गोमुखी—स्त्री० गोमुखकी तरह बनी थैली, जपमाली।
गोमेद, गोमेदक—पु० एक रत्न।
गोमेध—पु० एक यज्ञ।
गोयँड़—पु० गाँवके पासकी भूमि।
गोय—पु० गेंद (प० ३१७, साखी १०९)।
गोया—क्रिवि० मानो।
गोर—वि० देखो 'गोरा'। स्त्री० कब्र 'जाका बासा गोरमें सो क्यों सोवे सुक्ख।' साखी १७४
गोरखधंधा—पु० एक तरहका कड़ियों, तारों इ० का उलझनदार खिलौना। उलझन। उलझनका काम।
गोरज—स्त्री० गौओंके चलनेसे उड़ी हुई धूल।
गोरटा—वि० गोरा, गौर वर्णका। गोरटी=स्त्री० गोरे रंगकी स्त्री '...छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीरकी।'वेनी
गोरस—पु० दूध, दही। इन्द्रिय सुख (वि० ५६)
गोरसवाली—स्त्री० दूध बेचनेवाली ग्वालिन।
गोरसा—पु० गायके दूधसे पलनेवाला बच्चा।
गोरसी—स्त्री० देखो 'गुरसी'।
गोरा—वि० श्वेत और उज्ज्वल वर्णवाला।
गोराई—स्त्री० गोरापन, सुन्दरता।
गोरी—स्त्री० गौर वर्णवाली स्त्री। सुन्दर रूपवाली स्त्री।
गोरू—पु० चौपाया, सींगवाला पशु।
गोरोचन—पु०पीले रङ्गकी एक सुगन्धित वस्तु।
गोरोचना—स्त्री० देखो 'गोरोचन'।
गोलंदाज—पु० तोप दागनेवाला।
गोलंबर—पु० गोल चबूतरा, गुम्बद।
गोल—वि० वृत्ताकार, अंडाकार। पु० छल्ला, अँगूठी (सूपं० वा० १६)। वृत्त, चक्कर। गोला 'गोलनकी विनती सुनि ईंरा।' के० १५९। झुण्ड (भू० १६६), समूह, दल 'कहि सिरदार गोल तें गाजे। छत्र० १२३। गोलमाल, गड़बड़, हलचल। गोल पारना=हलचल मचाना 'ल्यायो हरि कुशलात धन्य तुम घर घर पारयो गोल। भ्र० ५०
गोलक—पु० गोल वस्तु, आँखका गटा, आँखकी पुतली। गुम्बद। गोलोक। आमदनीकी पेटी या थैली। रकम।
गोलगप्पा—पु० एक पकवान।
गोलमाल—पु० गड़बड़।
गोलमिर्च—स्त्री० काली मिर्च।
गोलविद्या—स्त्री० ज्योतिषका एक अङ्ग।
गोलयोग—पु० एक ही राशिमें ६-७ ग्रहोंका एकत्र होना
गोला—पु० लोहे इ० का गोल पिण्ड 'गोला आके आगे जाय। सोई ताहि चलै अपनाय।' के०१५६। बाज़ार, [गंज।
गोलोक—पु० विष्णु लोक, कृष्णधाम, स्वर्ग।
गोली—स्त्री० बन्दूकमें भरनेका सीसेका गोल टुकड़ा। वटिका। मिट्टी या काँचका गोल पिंड।
गोवना—सक्रि० देखो 'गोना'। छिपाना।
गोविंद—पु० विश्व-ज्ञाता श्रीकृष्ण। बृहस्पति।
गोवर्धन—पु० एक पहाड़।—धर=श्रीकृष्ण।
गोश—पु० कान।
गोशमाली—स्त्री० कान ऐंठना, चेतावनी।
गोशवारा—पु० जोड़, योग। एक लेखा। सिरपेच, कलङ्गी। कुण्डल। एक वृक्षका गोंद।
गोशा, गोसा—पु० कोना। किनारा (मति० १८२) दिशा, ओर। एकान्त स्थान। कमानका सिरा।
गोशाला—स्त्री० गौओंके रहनेकी जगह।
गोश्त—पु० मांस।
गोष्ठ—पु० दल, समाज। गोशाला।
गोष्ठी—स्त्री० मण्डली, सभा। बातचीत।
गोष्पद—पु० गायका खुर।
गोसमावल—पु० 'गोशमायल', पगड़ीमें लटकनेवाला मोतियोंका गुच्छा।
गोसाँई—पु० देखो 'गुसाँई'।
गोस्वामी—पु० इन्द्रियोंको वशमें रखनेवाला। वैरागी, एक जाति 'अतीथ'।
गोह—स्त्री० मोटे चमड़ेवाला एक जन्तु।
गोहन—पु० साथ 'सजि दीनदयाल विसाल प्रभा लरि वाल सखा सब गोहनके।' दी० १२, (सुसु० २४१) साथमें रहनेवाला 'एक जो भाँवर भयो बियाही। अब दूसर है गोहन जाही।' प० २३१, 'भए बरात गोहने सब राजा।' प० ११।
गोहरा—पु० बड़ी उपली।
गोहराना—सक्रि० अक्रि० आवाज़ देना, चिल्लाना, पुकारना। 'दहिउ लेहु' ग्वालिनि गोहराई।' प० १।
गोहार, गोहारि, गोहारी—स्त्री० रक्षाके लिए चिल्लाना

पुकार, शोरगुल ( नंदे० 'अंधबाई' ) ।
गोही—स्त्री० छिपाव, गुप्त बात 'कहा दुरावति हौ मो आगे सब जानत तुव गोही ।' सूबे० १४०
गोहुवन—पु० एक तरहका विषैला साँप ।
गोहेरा—पु० एक विषैला जन्तु, गोह ।
गौं—स्त्री० घात, सुयोग, सुभीता ( गीता० ३६८ ), प्रयोजन, उद्देश 'दोऊ अधिकाई भरे एकै गौं गहराय ।' बि० २३१ । चाल '…चलत मस्त गज गौंहैं ।' [गीता० ३०५, ( अ० ३४ )
गौ—स्त्री० गाय ।
गौख—स्त्री० दरवाज़ेपरका बरामदा । देखो 'गोखा' ।
गौखा—पु० देखो 'गोखा' । गो-चर्म ।
गौगा—पु० अफवाह । हल्ला ।
गौड़—पु० एक देश । ब्राह्मणों तथा कायस्थोंका एक भेद ।
गौड़ी—स्त्री० पुरुषावृत्तिका दूसरा नाम । एक तरहकी [शराब ।
गौण—वि० कम महत्त्वका, अप्रधान, सहायक ।
गौतम—पु० न्यायके आचार्य । एक पौराणिक ऋषि । बुद्ध [भगवान् ।
गौद—स्त्री० गुच्छा ।
गौदुमा—वि० देखो 'गावदुम' ।
गौतमी—स्त्री० गोतम-पत्नी अहिल्या । गोतम-प्रवर्तित न्यायदर्शन । गोदावरी नदी । कृपा । दुर्गाका एक नाम ।
गौन—पु० गमन 'भरतहिं बिसरेउ पितु मरन सुनत राम बन गौन ।' रामा० २७५ । वि० चञ्चल(सुन्द०११०) ।
गौनहर—स्त्री० एक तरहकी बाजारू स्त्रियाँ जो साथ मिलकर गानेका काम करती हैं ।
गौनहाई—वि० स्त्री० जो हालमें ही गौने आयी हो ।
गौनहारी,-हारिन—स्त्री० गाने-बजानेका पेशा करने- [वाली स्त्री ।
गौना—पु० द्विरागमन ।
गौमुखी—स्त्री० गोमुखकी तरहकी थैली ।
गौर—वि० गोरा, उज्ज्वल । स्त्री० 'गौरा' ( रामा० [ १७४ ) ।
गौर—पु० सोच-विचार, ध्यान ।
गौरव—पु० महत्त्व, आदर, प्रतिष्ठा ।
गौरा—स्त्री० गोरे रङ्गकी स्त्री, पार्वतीजी । गोरोचन 'पोते अगर भेद औ गौरा ।' प० १५
गौरी—स्त्री० देखो 'गौरा' अष्टवर्षीया बालिका । चमेली 'कोई मौलसिरि पुहुप बकौरी । कोई रूप-मञ्जरी गौरी ।' प० ८८ । एक रागिनी 'दमकत दशन कनक कुण्डल मुख मुरली गावत गौरी ।' सूबे० ११७
गौरीश,-स—पु० शिवजी ।
गौहर—पु० मोती ।
ग्यान—पु० ज्ञान ।
ग्याति—स्त्री० जाति (बिन० ३६६) ।
ग्यारस—स्त्री० एकादशी तिथि ( के २८५ ) ।
ग्यारह—वि० दशसे एक अधिक । पु० ११ की संख्या ।
ग्रंथ—पु० पुस्तक ।
ग्रंथकर्त्ता,-कार,-लेखक—पु० पुस्तक लिखनेवाला ।
ग्रंथचुंबक—पु० पुस्तकोंको सरसरी तौरसे पढ़ जानेवाला व्यक्ति । साधारण योग्यता रखनेवाला व्यक्ति ।
ग्रंथन—पु० गूँथने या जोड़नेकी क्रिया, गुम्फन ।
ग्रंथना—सक्रि० गुहना 'जा सिर फूल, फुलेल मेलि कै हरि कर ग्रन्थैं मोरी ।' अ० ५९ [बन्धन ।
ग्रंथि—स्त्री० गाँठ, गिरह, उलझन । सांसारिक मायाका
ग्रंस—पु० छलछिद्र 'वे अक्रूर ए ऊधौ सजनी, जानत नीके ग्रंस ।' सूबे० ३६०
ग्रथित—वि० गुम्फित, आक्रान्त ।
ग्रसना—सक्रि० ज़ोरसे पकड़ना 'वक्र चन्द्रमहिं ग्रसै न राहू ।' रामा० १५२
ग्रसित, ग्रस्त—वि० खाया हुआ, पकड़ा हुआ । पीड़ित ।
ग्रस्तोदय—पु० ग्रहण लगी हुई अवस्थामें सूर्य या चन्द्रमाका उदय होना ।
ग्रह—पु० बुध, मङ्गल आदि तारे । नौ की संख्या । गृह ( विन० ३८९ ) । ग्रहण । कृपा ।
ग्रहण—पु० स्वीकार । चन्द्र या सूर्यपर पृथ्वीकी छाया- [का पड़ना ।
ग्रहणी—स्त्री० संग्रहणी नामक रोग ।
ग्रहदशा—स्त्री० ग्रहोंकी स्थिति । बदकिस्मती ।
ग्रहपति—पु० सूर्य ।
ग्रहीता—पु० ग्रहण करनेवाला ।
ग्रांडील—वि० बड़े डीलडौलका ।
ग्राम—पु० गाँव । समूह । [सुजा० ४९
ग्रामसिंह—पु० कुत्ता 'ग्रामसिंह श्रवननि फटकाये ।'
ग्रामिक—वि० गाँवका रहनेवाला, ग्रामीण ।
ग्रमीण—वि० देहाती । पु० मुर्गा, कुत्ता, कौआ, शूकर ।
ग्राम्य—वि० ग्रामीण, गँवारू, मूर्ख । छल-छिद्रहीन ।
ग्राव—पु० पत्थर । ओला । पहाड़ । 'अमृतको तजि ग्राव हनत को तुमै निवारै ।' दीन० २०१
ग्रास—पु० कौर । पकड़, ग्रहण ।
ग्रासना—सक्रि० पकड़ना, निगलना । सताना ।

ग्राह—पु० मगर नामक जलजन्तु, ग्राहक ।
ग्राहक—पु० पकड़नेवाला । खरीदनेवाला, चाहनेवाला ।
ग्राह्य—वि० ग्रहण करने योग्य, मान्य ।
ग्रीक—स्त्री० यूनान देशकी भाषा, यूनानी भाषा ।
ग्रीखम—स्त्री० ग्रीष्म, गर्मीका मौसिम ।
ग्रीवा—स्त्री० गरदन ।
ग्रीषम, ग्रीष्म—स्त्री० गर्मीका मौसम, निदाघ ।
ग्रेह—पु० देखो 'गेह' ( कबीर १९६ ) ।
ग्रेही—वि० संसारी 'जाका गुरु ग्रेही अहै, चेला ग्रेही होय ।' साखी १५
ग्लानि—स्त्री० चित्तकी शिथिलता या खिन्नता । अरुचि ।
ग्वार—पु० ग्वाल 'मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं मिलि गोकुल गाँवके ग्वारन ।'-रसखानि । एक पौधा ।
ग्वारपाठा—पु० घीकुआर ।
ग्वारिन, ग्वारी—स्त्री० ग्वालिन ।
ग्वाल, ग्वाला—पु० अहीर ।
ग्वालिन—स्त्री० ग्वाला जातिकी स्त्री । स्त्री० बिनौरी नामक बरसाती कीड़ा । एक तरकारी ।
ग्वाह—पु० गवाह ( गुलाब ४२१ ) ।
ग्वैंठना—सक्रि० ऐंठना, टेढ़ा करना, मरोड़ना ।
ग्वैंठा—वि० टेढ़ा, ऐंठा हुआ । पु० उपला ।
ग्वैंड—स्त्री० सीमा 'सुन्दरताकी ग्वैंड ऐंड सो पैंड चलैया ।' रत्ना० १३७
ग्वैंड़ा—पु० गाँवका सामीप्य, गाँवका तट ( बि० ६४ ) ।
ग्वैंड़े—क्रिवि० पास, समीप, ।

---

# घ

घँघरा—पु० स्त्रियोंका एक घेरदार पहनावा । लहँगा ।
घँघोरना, घँघोलना—सक्रि० हिलाकर घोलना । गन्दा करना । [ पात्र । अँगूठा, ठेंगा ।
घंट—पु० घण्टा । प्रेतात्माको जल देनेके लिए मिट्टीका
घंटा—पु० अढ़ाई घड़ीका समय । एक झनकारदार बाजा जो मन्दिरोंमें लटकता रहता है । घण्टे घण्टेपर बजाया जानेवाला घड़ियाल । ठेंगा ।
घंटाघर—पु० वह धौरहर जिसमें बड़ी धर्मघड़ी लगी हो।
घंटिका—स्त्री० घुँघरू । रहँटके छोटे छोटे घड़े ।
घंटी—स्त्री० छोटा घण्टा या उसके बजनेका शब्द । घुघरू । छोटी लोटिया । ( गलेका ) कौआ ।
घई—स्त्री० पानीका भँवर, प्रवाह 'थके वचन पैरत सनेह सरि पर्यो मानो घोर घई है ।' गीता० ३६३ । वि०
घघरा—पु० लहँगा । [बहुत गहरा, अथाह ।
घट—पु० घड़ा । शरीर । हृदय । वि० घटा हुआ, थोड़ा, छोटा । स्त्री० घटना 'यह दुर्घटना देखि भगीरथ निपट चकाये ।' रत्ना० २६६
घटक—पु० मध्यस्थ, विवाह ठीक करानेवाला । घड़ा ।
घटकना—सक्रि० गलेके नीचे उतारना, पी जाना 'खप्पर में रक्त भरि घट्ट घट्ट घटकत' रसवाटिका १४२
घटकर्ण—पु० कुम्भकर्ण ।
घटकी—पु० दम निकलते समय कफ रुकनेकी अवस्था।
घटकार—पु० कुम्हार ।
घटज—पु० कुम्भज, अगस्त्य ।
घटती—स्त्री० कमी, घटी, न्यूनता, अवनति । मानहानि, अप्रतिष्ठा 'घटती होइ जाहिते अपनी ताको कीजे त्याग।'
घटदासी—स्त्री० दूती, कुटनी । [सूबे० १६१
घटना—अक्रि० होना । लागू होना (पभू०७२) । लगना, आरोप होना 'सपने नृप कहँ घटै बिप्रबध, बिकल फिरै अघ लागे ।' विन० २९६ । काम आना 'काय बचन मन सपनेहु घटत न काज पराये ।' विन० ४६५। कम होना, क्षीण होना । स्त्री० वारदात, बात ।
घटबढ़—स्त्री० कमी-बेशी । वि० कम-ज्यादा ।
घटयोनि—पु० अगस्त्य मुनि ।
घटवाई—वि० घाटवाला । रोकनेवाला 'आवन जान न पावत कोऊ तुम मगमें घटवाई ।' सूबे० १५१
घटवार, घटवालिया—पु० घाटिया, केवट ।
घटसम्भव—पु० अगस्त्य ।
घटा—स्त्री० मेघमाला । झुण्ड ।
घटाई—स्त्री० मानहानि, अप्रतिष्ठा ।
घटाटोप—पु० बादलोंका जमाव । ओहार ।
घटाना, घटावना—सक्रि० कम करना । अप्रतिष्ठा करना।

घटाव—पु० कमी। घटी, न्यूनता।
घटिक—पु० घंटा बजानेवाला कर्मचारी।
घटिका—स्त्री० घड़ी। गगरी।
घटित—वि० बना हुआ, गढ़ा हुआ, जो हुआ हो।
घटिताई—स्त्री० कमी, त्रुटि 'इनहुँमें घटिताई कीन्हीं। रसना श्रवण नैनके होतेकी रसनाहींको नहिं दीन्हीं।' सूबे० १८५
घटिया—वि० कम दामका, निम्न श्रेणीका। क्षुद्र।
घटिहा—वि० नीच, दुष्ट, चालाक। निम्न कुलका। अपना मौक़ा ढूँढ़नेवाला।
घटी—स्त्री० कमी, घाटा, हानि। घड़ी। छोटा बड़ा। प्रपंच 'लोक घटीते हठीको बचाउ कृपा करि श्री वृषभानु दुलारी।' हठी
घटूका—पु० भीमसेनका पुत्र घटोत्कच।
घटो—पु० घट, घड़ा ( दास० १४६ )।
घटोत्कच—पु० भीमके एक पुत्रका नाम।
घटोद्भव—पु० अगस्त्य।
घट्टा—पु० घटी, घाटा, कमी। छिद्र या दरार, रगड़का चिह्न। घटा 'प्रलयकालके जनु घनघट्टा।' रामा० ५०३
घट्टा—पु० रगड़के कारण पड़ा हुआ चिह्न।
घड़घड़ाना—अक्रि० 'घड़घड़' शब्द होना।
घड़ना—सक्रि० गढना ( कबीर १०५ )
घड़नैल—पु० घड़ोंसे बनाया हुआ एक तरहका बेड़ा,
घड़ा—पु० कलसा, जलपात्र। [ घन्नई।
घड़िया—स्त्री० सोना इ० गलानेका मिट्टीका पात्र। रहँटके छोटे पात्र। गर्भाशय।
घड़ियाल—पु० एक बड़ा जन्तु, मगर। घण्टा।
घड़ियाली—स्त्री० पूजाके समय बजानेका एक तरहका घण्टा। पु० देखो 'घटिक'।
घड़ी—स्त्री० चौबीस मिनटका समय। समय-सूचक यंत्र। समय। घड़ी-घड़ी = फिर-फिर। घड़ी-भर =
घड़ीसाज़—पु० घड़ी दुरुस्त करनेवाला। [थोड़ी देर।
घड़ोला—पु० झंझर, कलशी।
घड़ौंची—स्त्री० पानीके घड़े इ० रखनेका चबूतरा या
घतिया—पु० धोखा देनेवाला। [ तिपाई।
घतियाना—सक्रि० घातमें लाना।
घन—वि० घना, निबिड़। दृढ़, ठोस, बहुत अधिक। पु० बादल ( घन समय = वर्षा ऋतु ) 'घन समै मानहु घुमरि करि घन घनपटल गलगाजहीं।' भू० ६। समूह 'पियत मधुर मकरन्द करत झंकार भृंग घन।' भू० ९। बड़ा हथौड़ा 'सुनि सुनि उर लागै घन कैसी घमक।' भू० १७८। कपूर। देह, शरीर।
घनक—स्त्री० गड़गड़ाहट, गर्जन 'घनकी घनक घन घंटा घनकत आली।' दीन० ३९। चोट, प्रहार 'दरकत नहीं वियोगमें लगे घनक घनघोर।' मति० २२७
घनकना—अक्रि० गर्जन करना, आवाज करना ( उदे० 'घनक' )।
घनकारा—वि० गर्जन करनेवाला, बुलन्द आवाज करनेवाला, द्वारे द्वारे बजत नगारे घनकारे घहरारे।'
घनकोदण्ड—पु० इन्द्र-धनुष। [ रघु० २९।
घनघनाना—अक्रि०, सक्रि० 'घनघन शब्द करना।
घनघोर—वि० बहुत घना, भीषण। पु० घनघनाहट, भीषण ध्वनि।
घनचक्कर—पु० मूर्ख। आवारा फिरनेवाला।
घनता—स्त्री०, घनत्व-पु० घना या दृढ़ होनेका भाव। लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई ( या गहराई ) का भाव।
घनतार—पु० झाँझ'तंत वितंत सुभर घनतारा।' प० २६०
घन्नई—देखो, 'घड़नैल'।
घननाद—पु० मेघगर्जन। मेघनाद।
घनप्रिय—पु० मोर। [ गुणनफल।
घनफल—पु० लम्बाई, चौड़ाई और गहराई—तीनोंका
घनबान—पु० एक तरहका बाण 'चले चंदबान, घनबान, औ कुहूकबान......।' भू० १७५
घनबेल—वि० बेलोंसे युक्त, जिसमें बेलबूटे बने हों।
घनबेली—स्त्री० बेलाकी एक जाति 'बहुत फूल फूली घनबेली'। प० १५
घनमूल—पु० घनफलका मूल अंक।
घनरस—पु० कपूर, जल।
घनवाहन—पु० इन्द्र।
घनसार—पु० कपूर।
घना—वि० बहुत अधिक (संख्या या परिमाण) 'मंगनको भुवपाल घने पै निहाल करै सिवराज रिझाए'। भू० ५५, '...काल चाल हेरि होति हिये घनी घिन।' विन० ५५। दृढ़ ( उदे० 'गोपना' )। सघन, घनिष्ठ, गाढ़ा। पु० जंगल, घने पेड़ोंका झुरमुट (अष्ट० ७२)।
घनाक्षरी—पु० मनहर छन्द, कवित्त।

घनाघन—पु० बरसनेवाला मेघ, इन्द्र ।
घनाली—स्त्री० मेघमाला ।
घनिष्ठ—वि० घना, प्रगाढ़, निकटका ।
घनेरा—वि० बहुत, अधिक 'सुनि आगमन दसानन केरा । कपिदल खरभर भयेऊ घनेरा ।' रामा० ५१४, ( ५११, ५१२ भी ), 'साधत साधु लोक परलोकहिं सुनि गुनि जतन घनेरे ।' विन० ५१९
घपचिआना—अक्रि० भ्रममें पड़ जाना, घबड़ाना ।
घपची—स्त्री० पंजोंको मिलाकर दोनों हाथोंसे दृढ़तापूर्वक पकड़ना ।
घपला—पु० गोलमाल, गड़बड़ ।
घपुआ, घप्पू—वि० भकुआ, मूर्ख, भोंदू । ।
घबड़ाना, घबराना—अक्रि० व्याकुल होना, जल्दी मचाना । सक्रि० हड़बड़ा देना । उचाट करना ।
घबड़ा (रा) हट—स्त्री० व्याकुलता, उद्वेग, चित्तकी अस्थिरता ।
घमका—पु० मुक्का घूँसा ।
घमंड—पु० गर्व, दर्प, अभिमान । भरोसा, बल ।
घम—पु० ( घूँसा इ० ) मारनेका शब्द ।
घमक—स्त्री० घूँसा, गदा इत्यादिके प्रहारका शब्द । चोट ( उदे० 'घन' ) । घूँसा मारना ।
घमकना—अक्रि० गरजना, गंभीर शब्द करना । सक्रि०
घमका—पु० देखो 'घमक' । हवाका न चलना 'सेनापति नेक दुपहरीके ढरत होत घमका विषम ज्यों न पातु खरकतु हैं ।' कवि० ३१४ ['घमघम' शब्द होना ।
घमघमाना—सक्रि० घूँसे जमाना, पीटना । अक्रि०
घमर—पु०गम्भीर शब्द,नगाड़े इ०की आवाज (सूबे० ६६)।
घमस—स्त्री,घमसा—पु० ऊमस, तेज़ गर्मी । आधिक्य ।
घमसान—पु० घोर युद्ध, सग्राम 'बोल्यो रजनीचरनसों करहु घोर घमसान ।'रघु० २४५, (भू०४९) वि०घोर ।
घमाका—पु० देखो 'घमका' ।
घमाघम—क्रिवि० 'घमघम' शब्दके साथ । ज़ोरसे । स्त्री० 'घमघम' की आवाज़ ।
घमायल—वि० ( फल इ० ) जो धूपसे पक गया हो ।
घमासान—पु० देखो 'घमसान' । रेल पेल, मारकाट'युद्धकी घमासानके वर्णनमें...'पभू० १२५ । वि०घोर, भीषण ।
घमीला—वि० घाम खाया हुआ, घाममें मुरझाया हुआ । ( उत्तर० ३०६ ) ।
घमोई—स्त्री० बाँसका रोग-विशेष 'वेनुबंस सुत भयेउ घमोई ।' रामा० ४५२
घमोय—स्त्री० एक क्षुप, सत्यानाशी, भँड़भाँड़ ।
घमोरी—स्त्री० अम्हौरी ।
घर—पु० निवासस्थान, गृह, मकान । कुल, वंश । जन्म-भूमि । कोठा, खाना, कागज इत्यादिका रक्खा, 'केस' । केन्द्र, भाण्डार (कविता० २२६) । घरका= अपना, अपने कुटुम्बका, आपसका; पति । घर घरके होना=बेठिकाने होना,मारे मारे फिरना । घर घलना= घर बिगड़ना, कुलमें कलंक लगना ।
घरघराना—अक्रि० 'घर घर' आवाज़ करना ।
घरघाल—वि०घर बिगाड़नेवाला, कुलमें कलंक लगानेवाला।
घरजाया—पु० गुलाम, दास 'तुलसी तिहारो घरजायउ है घरको ।' कविता० २३१
घरणी—स्त्री० गृहिणी ।
घरद्वार—पु० ठिकाना । गृहस्थी ।
घरनाल—स्त्री० एक तरहकी तोप 'सिमि घरनाल और करनालैं सुतुरनाल जंजालैं ।' रघु० ३
घरनी—स्त्री० गृहिणी, स्त्री ( सू० ३४ ) ।
घरफोरी—स्त्री० घरमें फूट करानेवाली (रामा० २०५)।
घरबसा—पु० प्रेमी, उपपति ।
घरबसा—स्त्री० रखी हुई स्त्री । वि०-घर बसानेवाली। घर उजाड़नेवाली ( व्यंग्यमें ) ।
घरबार—पु० देखो 'घरद्वार' । घर व माल-असबाब ।
घरबारी—पु० वह जिसके घरबार हो, गृहस्थी ।
घरमकर—पु० सूर्य ।
घरमना—अक्रि० प्रवाह रूपमें गिरना ( विद्या० १७)।
घरयार—देखो "घरियार" ( रतन० ४ ) ।
घरबात—पु० घरका सामान, गृहस्थी (उदे० 'खरिया')।
घरवाली—स्त्री० पत्नी ।
घरसा—पु० रगड़ा, पीछा ।
घरहाई—वि० स्त्री० चुगुलखोर । कलंककी बात फैलानेवाली 'ए घरहाई लोगाई सबै निसि द्योस नेवाज हमें दहती हैं ।'–नेवाज । स्त्री० घरमें फूट करानेवाली या लांछन लगानेवाली स्त्री।
घराऊ—वि० घरू, आपसका ।
घराती—पु० लड़कीवालेकी तरफके लोग ।
घराना—पु० कुल, वंश ।
घरिआर, घरियार—पु० घड़ियाल, घण्टा ( सू० ११० ) 'नीर चुरावत सम्पुटी मारु सहत घरियार ।' दीन० २० । एक हिंसक जल-जन्तु, मगर ।
घरिया—स्त्री० देखो 'घड़िया' ।

घरियाना—सक्रि० तह करना ।
घरियारी—पु० घंटा बजानेवाला ( प० १८ ) ।
घरी—स्त्री० तह, लपेट 'इह निर्गुन निर्मोलकी गठरी, अब किन करत घरी ।' सू० २३५ । घड़ा 'नैन रहे होइ रहँटक घरी ।' प० २११ । घड़ी । चौबीस मिनटके बराबरका एक मान । समय,अवसर । घरी घरी = बार बार, थोड़ी थोड़ी देरके बाद 'घरी घरी घरियार पुकारा ।' प० १८ । घरी गिनना = बड़ी उत्सुकतासे प्रतीक्षा करना । मृत्युकी इन्तज़ारी करना ।
घरीक—क्रिवि० घड़ीभर, क्षणभर ।
घरुआ,-वा—पु० चश्मा इ० रखनेका लकड़ी, कागज या और चीज़का बना डिब्बा, घर, कोश ।
घरू—वि० घरका, निजी ।
घरेलू—वि० घरका, पालतू ।
घरैया—वि० घरका । पु० घरका आदमी,निकट सम्बन्धी।
घरो—पु० घड़ा । [ वैभव ९१ ) ।
घरोवा—पु० घर जैसा व्यवहार, प्रेम सम्बन्ध ( बु०
घरौंदा, घरौंधा—पु० बच्चोंका बनाया मिट्टी आदिका
घरौना—पु० 'घरौंदा' । घर । [ छोटा घर ।
घर्घर—पु० रथ आदिके चलनेसे उत्पन्न हुआ शब्द ।
घर्म—पु० धूप ।—बिंदु = प्रस्वेद, पसीना ।
घर्मांशु—पु० सूर्य ।
घर्माक्त—धूपसे पूर्ण, गर्म ।
घर्राटा—पु० गहरी नींदमें ज़ोरसे साँस लेनेका शब्द ।
घर्षण—पु० घिसनेका कार्य । रगड़ ।
घर्षिता—वि० स्त्री० घिसी हुई ।
घलना—अक्रि० फेंका जाना, चल जाना । मारपीट हो
घलाघल, घलाघली—स्त्री० मारपीट । [ जाना ।
घलुआ—पु० देखो 'घाल' ।
घवद—स्त्री० घौद, फलोंका गुच्छा ।
घवरि—स्त्री० फलों इत्यादिका गुच्छा ।
घसना—सक्रि० घिसना, रगड़ना ।
घसियारा—पु० घास बेचनेवाला । [ जल्दीमें लिखना ।
घसीटना—सक्रि० कढ़ोरना, खींच लाना (रामा०२७७)।
घहनाना—अक्रि० ( घण्टे आदिकी ) आवाज़ होना ।
घहर—स्त्री० गर्जन । [ घहराना ।
घहरना, घहराना—अक्रि० गड़गड़ाना, गरजना, घोर शब्द करना 'एहि अंतर अंधवाइ उठी इक गरजत ज्ञान सहित घहरे ।'सूबे० ५२,'घहरात जिमि पविपात गरजत जनु प्रलयके बादले।'रामा० ४७८, (सूबे० ७९)
घहरानि—स्त्री० गरज, गम्भीर शब्द ( सूबे० ५१ ) ।
घहरारा—वि० गम्भीर ध्वनि करनेवाला । पु० गरज ।
घहरारी—स्त्री० घोर शब्द, गरज ।
घाँ—स्त्री० दिशा, तरफ 'त्यों त्यों चिबुक गहि आप घाँ [ करी ।' सू० मदन•
घाँघरा, घाँघरो—पु० लहँगा ।
घाँटी—स्त्री० गलेका कौआ, गला ।
घाँटो—पु० एक तरहका गीत ।
घाँह, घाँही—स्त्री० ओर ।
घा—स्त्री० देखो 'घाँ' ( चहूँघा = चारों तरफ़ ) ।
घाइ—पु० घाव, जख्म,चोट 'इक देत सीसपर खग्ग घाइ' [—सुजा० २४
घाइल—वि० घायल, आहत, जख्मी ।
घाई—स्त्री० तरफ 'मित्र दुखदाई बात घलैं चहुँ घाई घोर किधौं यह ग्रीषम कै भीषम बुढ़ाई है ।' दीन० १३६ । बार, दफा,बीचकी जगह,सन्धि,पानीका भँवर ।
घाईं—स्त्री० अँगुलियोंके बीचकी जगह। स्त्री० घाव, चोट (उदे०छत्र०१५ या 'ओड़ना') । छल । चालबाज़ी।
घाउ—पु० घाव, जख्म, चोट ( रामा० १६८ ) ।
घाग, घाघ—पु० एक चतुर और अनुभवी कविका नाम । अत्यन्त अनुभवी या चतुर मनुष्य ।
घाघरा—पु० लहँगा । एक पौधा । स्त्री० सरयू नदी ।
घाघी—स्त्री० मछली मारनेका बड़ा जाल ।
घाट—पु० स्नानादिके लिए नदी इ० का पक्का बँधा हुआ किनारा । नाव द्वारा या पानीमें घुसकर पार करने-की जगह । संकीर्ण पहाड़ी रास्ता । पहाड़ । रंगढंग, भेद । घाट बाट = जहाँ तहाँ 'तेरेही अधीन अधिकार तीन लोकको सुदीन भयो क्यों फिरै मलीन घाटबाट हैं ।' देव । वि० कम, न्यून । थोड़ा । बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्हतें कछु घाट ।' रामा० ५९१
घाटवाल—पु० घाटिया ।
घाटा—पु० घटी, हानि ( मुद्रा० ११९ ) ।
घाटारोह—पु० घाटका रोकना 'हथबासहु बोरहु तरनि कीजिय घाटारोह ।' रामा० २८९
घाटि—वि० 'घाट', न्यून, कम 'केहि आचरन घाटि हौं तिनतें, रघुकुल-भूषण भूप ।' विन० ३५२ । स्त्री० नीच कर्म, बुराई; 'मानव-दानव-देव-सतावन रावन घाटि रच्यो जगमाहीं ।' कविता० २३५

घाटिया—पु० घाटकापंडा । [ पहाड़ी रास्ता ।
घाटी—स्त्री० पहाड़ोंके बीचकी भूमि, दर्रा । ऊँचा नीचा
घात—पु० चोट, प्रहार, वध । स्त्री० सुअवसर, ताक । दाँव 'सूरश्याम नागर नागरिसों करत प्रेमकी घातैं ।' सूवे० ७८ । चालबाज़ी 'लीजिये दान हौं दीजिये जान तिहारी सबै हम जानती घातैं । ललित० २०१, ( सुजा० १३१ ) टक्कर 'मानस सागर के तटपर क्यों लोल लहरकी घातें' आँसू० ४ । —लगना = सुयोग मिलना । —लगाना = उपाय ढूँढ़ना 'केलिकै राति अघाने नहीं दिनहीमें लला पुनि घात लगाई ।' रस० ५ । —में बैठना = आक्रमण आदिके निमित्त गुप्त रूपसे तैयार रहना ।
घातक, घाती—पु० मारनेवाला । शत्रु ।
घातिया—पु० नाश करनेवाला, वध करनेवाला ।
घातुक—वि० हिंसक, निष्ठुर ।
घान—पु० उतनी वस्तु जितनी एक बार चक्की, कड़ाही आदिमें डाली जाय । आघात ।
घाना—सक्रि० मारना, नाश करना । पु० प्रहार, युद्ध ( सुजा० २२ ) । [ १९२ ) । समूह ।
घानी—स्त्री० देखो 'घान' कोल्हू ।(छत्तीस०), (कविता०
घाम—पु० धूप (रामा० २२८),पसीना 'घाम तिलक बहि गेला।'विद्या० १२५ । घामनिधि = सूर्य(छत्र १०५)।
घामड़—वि० धूपका सताया हुआ ( पशु ) । मूर्ख ।
घाय—पु० घाव, चोट, प्रहार 'लोह कुटिलके सगतें सहै अगिन घन घाय ।' दीन० ७४
घायक—वि० नाश करनेवाला ।
घायल—वि० आहत, ज़ख्मी ।
घाल, घाला, ( घालि )—पु० घलुआ, उचित तौल या गिनतीके ऊपर दी हुई वस्तु ।—न गिनना = कुछ न समझना 'वीर करि-केसरी कुठारपानि मानी हारि, तेरी कहा चली बिढ, तो सो गनै घालि को ।' कविता० १८८, ( प० २२९ ) ।
घालक—वि० मरनेवाला, विनाशक ।
घालकता—स्त्री० विनाश करनेका काम 'अति कोमल केशव बालकता। बहु दुष्कर राकस घालकता।'राम०४२
घालना—सक्रि० प्राण लेना । प्रहार करना 'कोप तेहि कलिकाल कायर मुएहि घालत घाय ।' विन० ५०४ । बिगाड़ना, नष्ट करना 'श्री सरजा सलहेरिके युद्ध घने उमरावनके घर घाले ।' भू० ११५ । रखना, डालना 'कबहुँ पालने घालि झुलावइ ।' रामा० १११ । छोड़ना, चलाना 'घालति छुरी प्रेमकी बानी सूरदास को सकै संभारि ।' सू० १०५ । कर डालना । नीचे करना 'पाँयन्ह परी घालि गिउ नारी ।' प० २०३
घालिका, घालिनी—वि० स्त्री० नाश करनेवाली ।
घाव—पु० चोट, प्रहार 'दुंद-घाव भा इन्द्र सकाना ।' प० २४४ । क्षत, ज़ख़्म, व्रण ।
घावरिया—पु० घावोंकी दवा करनेवाला ।
घास—स्त्री० चारा, तृण ।
घाह—पु० 'घाई', अगुलियोंके बीचकी जगह, गावा ।
घिअ, घिउ—पु० घी ।
घिआँड़ा—पु०मिट्टीका वह पात्र जिसमें घी रखा जाता है ।
घिग्घी—स्त्री० हिचकी, रोनेके कारण साँसका रुक रुक कर चलना ।
घिघियाना—अक्रि० बड़ी दीनतासे विनती करना ।
घिचपिच०—वि० गिचपिच,अस्पष्ट । स्त्री०स्थल-संकोच ।
घिन—स्त्री० अरुचि,चित्तका खिन्नभाव, घृणा (उदे०'घना')
घिनाना—अक्रि० घिन करना, घृणा करना (विन०४११)।
घिनावना, घिनौना—वि० अरुचि उत्पन्न करनेवाला, घृणित, गंदा ( उदे० 'घूस' ) ।
घिय, घिरत—पु० घी 'घेवर अति घिरत चभोरे । है खाँड उपर तरबोरे ।' सू०, ( सूसु० २६४ )
घिया—पु० लौकी, कद्दू ।
घियाकश—पु० कद्दू आदिको बारीक छीलनेका औज़ार।
घियातरोई,-तोरी—स्त्री० एक तरकारी ।
घिरना—अक्रि० घेरेमें आना, आवेष्टित होना । चारों ओर फैल जाना ।
घिरनी, घिरिनी—स्त्री० चरखी, गिरहबाज़ कबूतर, कौडिल्ला पक्षी 'आइ परे होइ घिरिनी परेवा ।' प० ७८, ( प० १७०, २२८ ) ।
घिरवाना, घिरावना—सक्रि० आवेष्टित कराना, इकट्ठा कराना 'सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों मेरे पाइ पिराने' सू० ७८
घिराई—स्त्री० पशु चरानेका काम या मजदूरी ।
घिरायँद—स्त्री० पेशाबकी बदबू ।
घिराव—पु० घेरनेकी क्रिया । घेरा ।
घिरित—पु० घृत ।

घिरिन परेवा—पु० गिरहबाज कबूतर। (उदे० 'घिरनी')
घिरिया—स्त्री० शिकार घेरनेके निमित्त बनाया हुआ [ मनुष्योंका मंडल।
घिरौरा—पु० घूसका बिल।
घिव—पु० घी।
घिसघिस—स्त्री० व्यर्थकी देरी, गड़बड़ी।
घिसना—अक्रि० रगड़ खाना, धीरे धीरे नष्ट होना। (पभू० २३७)। सक्रि० रगड़ना।
घिसाई—स्त्री० घिसनेकी क्रिया या मजदूरी। घिसनेसे [ नष्ट हुआ अंश।
घिस्सा—पु० धक्का, रगड़ा।
घींच—स्त्री० गरदन (सूसु० २७१)।
घी—पु० खराया हुआ नवनीत, घृत। घीके दीप बलना= इच्छा पूरी होना, आनन्द मंगल होना।
घीउ, घीऊ, घीय—पु० देखो 'घी'।
घीकुवाँर—पु० एक पौधा जिसका गूदा दवाके काममें [आता है।
घीसा—पु० घिसना या रगड़ना। 'घिस्सा'।
घुँगची, घुँघची—स्त्री० एक बेल या उसके लाल लाल बीज, गुंजा। [ तला गया हो।
घुँघनी, घुघरी—स्त्री० चना जो भिगोकर घी या तेलमें
घुँघरारे, घुँघराले—वि० घुँघरवाले, छल्लेदार।
घुँघरू—पु० चाँदी इ० का पोला दाना। छम छम बजनेवाला एक आभूषण।
घुँघुवारा—वि० घूँघरवाला 'घुँघुवारी अलक लटकि, हलकैं छलक कपोल।' रघु० ८८
घुंडी—स्त्री० कपड़ेका बटन, कड़े इ० की गोल गाँठ।
घुआ—पु० देखो 'घूआ'।
घुग्घी—स्त्री० विशेष प्रकारसे लपेटा हुआ कंबल जिसे वर्षा, शीत इ० के समय ओढ़ते हैं। पंडुक।
घुग्घू, घुघुआ—पु० उल्लू।
घुघुआना—अक्रि० बिल्लीका गुर्राना या उल्लूका बोलना।
घुघरी, घुघुरी—देखो 'घुँघनी' (रत्ना० २७९)।
घुटकना—सक्रि० एक एक घूँट करके पी जाना, गुटकना, [ निगल जाना।
घुटकी—स्त्री० गलेकी नली, नटई।
घुटना—अक्रि० (साँस) रुकना, फँसना। कड़ा होना 'फिरहिं दुऔ सतफेर घुटै कै। सातहु फेर गाँठि सो एकै।' प० १३७। पीसा जाना। सक्रि० मजबूतीके साथ कसना। पु० पाँवके बीचका जोड़।
घुटनी—स्त्री० घुटना (कर्म० ४९९)।
घुटन्ना—पु० घुटनों तकका पायजामा।

घुटवाना, घुटाना—सक्रि० घोटनेका काम कराना। मुँड़ाना, बाल बनवाना, चिकना कराना।
घुटी—स्त्री० बच्चोंकी एक दवा। घूँट 'चतुर सिरोमनि सूर नन्दसुत लीन्हीं अधर घुटी।' सू० मदन०
घुटुरुन, घुटुरुवन—क्रिवि० घुटनोंके बल (सू० ५२), घुटुरुवन चलत श्याम मणि-आँगन मात पिता दोउ देखत री।' सू० (ककौ० १६८)
घुटुरू—पु० घुटना 'कबहुँ उलटि चलैं धामको घुटुरुन करि धावत।' सू०
घुड़कना—सक्रि० डाँटना, डपटना।
घुड़की—स्त्री० धमकी, भभकी, डाँट, फटकार।
घुड़चढ़ा—पु० अश्वारोही, सवार।
घुड़नाल—स्त्री० एक तरहकी तोप।
घुड़ला—पु० छोटा घोड़ा। चीनी इ० का बना 'घोड़ा'।
घुड़सवार—पु० घोड़ेपर चढ़नेवाला सिपाही।
घुड़सार,-साल—स्त्री० घोड़े बाँधनेकी जगह, अस्तबल।
घुणाक्षरन्याय—पु० ऐसा काम जो घुनके कारण लकड़ीपर बने हुए अक्षरोंकी तरह अपने आप अज्ञात रूपसे हो जाय।
घुन—पु० एक छोटा कीड़ा।—लगना= भीतर ही भीतर नष्ट या क्षीण होना (रामा० ५७५)।
घुनघुना—पु० एक खिलौना 'कोउ मुठुकी घुनघुना झुलावै कोउ करताल बजावै।' रघु० ३७
घुनना—अक्रि० घुन लगनेसे खोखला हो जाना।
घुन्ना—वि० जो द्वेष इ० को प्रकट न होने दे, भीतर ही भीतर चिढ़नेवाला।
घुमंडना—अक्रि० घने बादलोंका इधर उधरसे आकर एकत्र होना। छा जाना (सूबे० १२१)। गरजना (उदे० 'चावना')।
घुमक्क—वि० बहुत अधिक घूमनेवाला।
घुमटा—पु० सिर चकराना, घुमड़ी।
घुमड़ना—देखो 'घुमाना'।
घुमड़ाना—अक्रि० देखो 'घुमड़ना'।
घुमड़ी—स्त्री० सिर घूमनेका रोग। चक्कर देनेकी क्रिया।
घुमनी—वि० स्त्री० जो बहुत घूमा करे। स्त्री० घुमड़ी।
घुमरना, घुमराना—अक्रि० घुमड़ना, बादलोंका इकट्ठा होना। ऊँचा शब्द करना या ज़ोरसे बजना (उदे० 'उज्ञागर'), घूमन्ना।

घुमरी—स्त्री० सिरमें चक्कर आनेका रोग 'घर अँगना मोहि नाहिं सुहावे, बैठत ही घुमरी सी आवे।' हरि०। पानीका भँवर।

घुमाना—सक्रि० ऐंठना, फिराना, सैर कराना। चक्कर देना।

घुमाव—पु० घूमनेका भाव, मोड़, चक्कर।

घुमावदार—वि० घुमाववाला, चक्करदार।

घुम्मरना—सक्रि० देखो 'घुमरना' ( रामा० १६२ )।

घुरकना—सक्रि० डाँटना, डपटकर बोलना।

घुरघुराना—अक्रि० घुरघुर शब्द करना (उदे० 'आरव')।

घुरना—अक्रि० घुलना, द्रव पदार्थमें हिलमिल जाना, क्षीण होते जाना। शब्द करना या बजना ( सुजा० ३२ ), 'घुरत निसान मृदंग संख धुनि भेरि झाँझ सहनाई।' सू० ३

घुरबिनिया—स्त्री० घूरे इत्यादिसे टूटी फूटी वस्तुएँ एकत्र करनेका काम। घूरमें पड़े दाने इत्यादि बीननेवाली 'तुलसी मन परिहरत नहिं घुरबिनियाकी बानि।' दोहा० १०६

घुमरना—अक्रि० घूमना, चक्कर खाना 'घुरमि घुरमि घायल महि परहीं।' रामा० ४८९

घुराना—अक्रि० भर आना 'बढ़ि बढ़ि अँखियन नींद घुरानी।' अलबेली अलि।

घुर्मित—वि० चक्कर खाता हुआ ( रामा० ४८९ )।

घुलना—अक्रि० द्रव पदार्थमें हिलमिल जाना। गलना, क्षीण होना।

घुलाना—सक्रि० गलाना। द्रवित करना। मुलायम करना। गुज़ारना, लगा देना।

घुवा—देखो 'घूआ' ( पूर्ण २६७ )। एक तरहकी छीमी या फली जिसमेंसे रुई जैसी वस्तु निकलती है।

घुपना—अक्रि० रटा रहना, याद होना।

घुसना—अक्रि० प्रवेश करना, पैठना, धँसना, गड़ना।

घुसाना, घुसेड़ना—सक्रि० प्रवेश कराना, गाड़ना, डालना, ठूँसना।

घूंघट—पु० साड़ी इ० का वह भाग जो लज्जा, आदिके कारण मुखपर खींच लिया जाता है, अवगुंठन।

घूँघरवारे,-वाले—वि० घुँघराले, कुंचित।

घूँघरी—स्त्री०,-घूँघरू—पु० घुँघरू, नेपुर।

घूँचा—पु० घूँसा।

घूँट—पु० उतना पानी, या दूध इ०, जितना एक बारमें [घूँटा जा सके।

घूटना—सक्रि० (पीना) गलेके भीतर ले जाना।

घूँटा—पु० टाँगके बीचका जोड़।

घूँटी—स्त्री० बच्चोंकी एक दवा।

घूँस—स्त्री० रिश्वत, उत्कोच। एक तरहका चूहा।

घूँसा—पु० मुक्का, ढुक।

घूआ—पु० काँस इत्यादिका रुई जैसा फूल। किवाड़की [चूल अटकानेका छेद।

घूक—पु० उल्लू पक्षी।

घूघ—स्त्री० शिरस्त्राण, लोहेकी टोपी।

घूघू—पु० उल्लू 'बीर बिजैपुरके उजीर निसिचर गोलकुण्डा वारे घूघूते उड़ाए हैं जहान सों।' भू० २७

घूटना—सक्रि० देखो 'घूँटना' 'मत्त भयो मन संग फिरै रसखानि सुरूप सुधारस घूट्यो।'—रसखानि। [दबाना, साँस रोकना।

घूड़ा—देखो 'घूर'।

घूम—स्त्री० मोड़, घुमाव, घेरा 'राची कर महँदी महावरि सों राजै पग घाघरेकी घूम मति घनेरिनिकी।' रवि० १२

घूम घुमारा—वि० मतवाला 'प्यारी तेरे नैननको ब्यौहार। ...'सहज अरुन अति घूम घुमारे, खूनी खून खुमार।' अलबेली अलि। उनींदा '(नयन) कृष्ण रसामृत पाय अलस कछु घूम घुमारे।' नन्द०। बड़े घेरेवाला।

घूमना—अक्रि० चक्कर खाना, मुड़ना, भ्रमण करना, मँडराना, टहलना। मतवाला होना।

घूमनि—स्त्री० घेरा ( घाँघरेकी घूमनि—रस० १७ )।

घूर, घूरा—पु० कूड़ा-करकट फेंकनेकी जगह 'ठाढ़े हूजत घूरपर जब घर लागति आग।' रहीम १५

घूरना—अक्रि० क्रोधसे या आँख गड़ाकर देखना।

घूर्णित—वि० घूमता हुआ।

घूर्णा—वि० घूमता हुआ।

घूस—स्त्री० रिश्वत। एक तरहका बड़ा चूहा 'कोने घुस कहै घूसि घिनौनी बिलारि औ ब्याल बिले मां बैसौ।' के० ७७

घृणा—स्त्री० नफरत। दया ( निर्घृण = निर्दय )।

घृणित—वि० जो घृणाके योग्य हो, जो घृणा उत्पन्न करे, निन्दनीय।

घृणी, घृनी—वि० दयालु 'सब निर्दंभ धरमरत घृनी।' [रामा० ५१।

घृत—पु० खौलाया हुआ मक्खन। [मनी।

घेंघ,-घा,घेघा—पु० गलेका एक रोग। गला या गलेकी

घेणौंची, घेनौंची—स्त्री० पानीसे भरे घड़े रखनेका ऊँचा स्थान।

घेर, घेरा—पु० चारों तरफका फैलाव, परिधि, मंडल । देखो 'घैर' 'घैरा' ( मति० १९१ ) ।
घेरघार—पु० खुशामद, विस्तार, फैलाव ।
घेरना—सक्रि० आवेष्टित करना, रूँधना, छेंकना, ग्रसना 'धर्म सनेह उभय मति घेरी ।' रामा० २२५ । चराना ।
घेरा—पु० घिराव । मुहासरा, अवरोध । हाता । चारों बाहुओंका योग, परिधि ।
घेवर—पु० एक तरहकी मिठाई ( सुसू० २६४ ) ।
घैया—स्त्री० थनसे निकलती हुई दूधकी धार 'तुलसी दुहि पीवत सुख जीवत पय सप्रेम घनी घैया ।' गीता० २८३ ( देखो 'अबार' ) । ताजे दूधके ऊपरका मक्खन 'कबहूँ प्रात न कियो कलेवा साँझ न पीन्ही घैया ।' अ० ४ । ताजे दूधके ऊपरके मक्खनको काढ़ कर एकत्र करनेका काम । घाव, प्रहार । ओर, दिशा ।
घैर, घैरा—पु० अपकीर्त्ति, लाञ्छन, पीठ पीछेकी निन्दा 'तो कारन गृह सुख तजे, सह्यो जगत्‌को घैर ।' नागरी०, ( रस० ३२ ) । शिकायत ( रतन० २६ ) ।
घैला—पु० गगरा, घड़ा ।
घोंघा—पु० एक कीड़ा । वि० खोखला, सत्वहीन, मूर्ख ।
घोंघाबसन्त—वि० महामूर्ख, बुद्धू ।
घोंचा—पु० घौद, गुच्छा ।
घोंचुआ—पु० देखो 'घोंसला' ।
घोंटना—सक्रि० देखो 'घूटना' । रगड़कर मिलाना । पीसना, दबा देना । रटना, खूब पढ़ना ।
घोंपना—सक्रि० गड़ाना, धँसाना ।
घोंसला, घोंसुआ—पु० नीड़, खोंता 'बचै न बड़ी सबीलहू चील घोंसुआ माँस । बि० २६९
घोखना—सक्रि० रटना, बार बार पढ़कर याद करना ।
घोट, घोटक—पु० घोड़ा ।
घोटना—सक्रि० बारीक पीसना । किसी वस्तुसे रगड़कर चिकनाहट लाना । मश्क करना । मूँड़ना । पीना ( उदे० 'घोम' ) ।
घोटा—पु० बारीक करनेका औजार । डाँकको चमकीला करनेका औजार । क्षौर ।
घोटाला—पु० गड़बड़ ।
घोड़सार,-साल—स्त्री० देखो 'घुड़साल' ।
घोड़ा—पु० अश्व, तुरंग । बन्दूकका खटका । खूँटी । शतरंजका एक मोहरा ।
घोड़ानस—स्त्री० एँड़ीसे ऊपरकी तरफ जानेवाली एक प्रधान नस ।
घोड़िया—स्त्री० घोड़ी । दीवारकी खूँटी जिससे कपड़े टाँगे जाते हैं । टोड़िया ।
घोड़ी—स्त्री० घोड़ेकी मादा । धोबियोंकी अलगनी । पानीके घड़े रखनेके निमित्त खम्भोंके सहारे लगायी गयी पटरी ।
घोर—पु० घोड़ा । मट्ठा 'कउड़ि पठाओले पाब नहिं घोर ।' विद्या० १४२ । स्त्री० गर्जन, आवाज 'केका सुनि व्याल ज्यों बिलात जात घनश्याम, घननकी घोरन जवासो ज्यों तपत है ।' राम० ३४१, 'करि करि निसानकी घोर घोर ।' सुजा० ११० । वि० भयंकर, गाढ़ा, गहरा । घना, दुर्गम । अत्यधिक, बहुत भारी (भू० १५३) । पु० ज़ोर 'काल हीको डर सुनि भाग्यो मूसा पैगम्बर जहाँ जहाँ जाइ तहाँ तहाँ वाको घोर है ।' सुन्द० ३०
घोरना—सक्रि० घोलना, पानी इ० में हिलाकर मिलाना (विन० ३७९) । अक्रि० गर्जन करना 'सोहत श्याम जलद मृदु घोरत धातु रँगमगे शृंगनि ।' गीता० ३५५
घोरा—पु० घोड़ा । खूँटा ( रामा० ४९८ ) ।
घोरिला—पु० मिट्टीका बना बालकोंके खेलनेका घोड़ा । घोड़ेकी तरह मुँहवाला खूँटा ( उदे० 'ओरमना' ) ।
घोरी—स्त्री० घोड़ी । अघोरी ।
घोल—पु० घोलकर बनायी हुई चीज । मट्ठा, तक्र ।
घोलना—सक्रि० पानीमें मिलाना या डालकर हिलाना ।
घोष—पु० अहीरोंकी बस्ती ( सू० १५० ), गोशाला । गरजनेका शब्द, गर्जना 'वचन मधुर गम्भीर घोष बरषत प्रमोद बर ।' ललित० १३ । किनारा । शब्द ।
घोषणा—स्त्री० सूचना, मुनादी ।
घोषना—देखो 'घोखना' ।
घोसना—सक्रि० घोषित करना, उच्चारण करना 'संभु सिखवन रसनहूँ नित राम नामहिं घोसु ।' विन० २८१ । स्त्री० सूचना, डुग्गी इत्यादि । गर्जना, आवाज ।
घोसी—पु० ग्वाला, अहीर ।
घौंर, घौंरा, घौद, घौर—पु०, घौरी—स्त्री० फलोंका गुच्छा 'काहु गही केरा कै घौरी ।' प० ८८
घ्राण—स्त्री० नाक, बास, बू । सूँघनेकी शक्ति ।
घ्रातव्य—वि० सूँघने लायक ।

# च

चंक—वि० कुल, सारा 'चक्रवती चकता चतुरङ्गिनि चारिउ चापि लई दिसि चंका।' भू० ५२

चंक्रमण—पु० टहलना, घूमना फिरना।

चंग—स्त्री० गुड्डी ( रामा० ३१४ )। एक तरहका बाजा (उदे० 'उपंग')।—उमहना,—चढ़ना = खूब जोर होना। वि० स्वस्थ (रतन० ६८ ), सुन्दर। निपुण।

चंगना—सक्रि० खींचना, कसना।

चंगा—वि० स्वस्थ, विकाररहित, अच्छा, पुष्ट 'नेति नेति पर योल लोल दग, भई प्रीति अति चंगी।' अलबेली अलि।

चंगु—पु० चंगुल पकड़, वश। 'वरन चंगुगत चातकहिं नेम प्रेमकी पीर।' दोहा० १२९

चंगुल—पु० पंजा, पकड़, वकोटा।

चँगेर—,-री,-ली—स्त्री०,-रा—पु० वाँसकी चौड़ी टोकरी। बच्चोंका झूला। फूल रखनेकी डलिया, फूल रखनेका जालीदार बर्तन 'चन्दनकी चौकी चारु चाँदीके चँगेरे हैं।' पदमा०। मशक।

चंच—स्त्री० चञ्चु चोंच 'पपिहाका पन देखि करि धीरज रहै न रञ्च। मरते दम जलमें पड़ा तऊ न बोरी चञ्च। साखी ३०। पु० पाँच अंगुलके बराबर नाप।

चंचरी—स्त्री०देखो 'चाँचरि'। भ्रमरी। एक छन्द।

चंचरीक—पु० भौंरा, मधुप।

चंचल—वि० अस्थिर, चपल, अधीर, चुलबुला।

चंचलता, चंचलताई, चंचलपन, चंचलाई—स्त्री० चपलता, अस्थिरता 'अति मदवारे जहाँ दुरदै निहारियत तुरगनहीमें चंचलाई परकीति है।' भू० ९७

चंचला—स्त्री० बिजली। लक्ष्मी।

चंचा—स्त्री० घासका पुतला जिसे पक्षियोंको डरानेके लिए खेतमें बनाते हैं, 'धोखा'। चटाई।

चंचु—स्त्री० चोंच। पु० एक शाक। मृग। रेंड़।

चँचोरना—सक्रि० दाँतोंसे दबाकर चूसना।

चंट—वि० चालाक, छटा हुआ, धूर्त।

चंड—वि० तीक्ष्ण, कठोर, उग्र, भयंकर।

चंडदीधिति, चंडांशु—पु० सूर्य।

चंडता,-स्त्री०,-त्व-पु०तीक्ष्णता,उग्रता। विक्रम, प्रताप।

चंडावल—पु० सेनाका पिछला भाग। पहरेदार।

चँडाई—स्त्री० शीघ्रता, उतावली। जबरदस्ती।

चंडाल—पु० चांडाल, डोम। वि० नीच।

चंडिका—स्त्री० कर्कशा स्त्री, झगड़ा करनेवाली स्त्री। दुर्गा। वि० स्त्री० झगड़ालू, कर्कशा।

चंडी—स्त्री० दुर्गा। कर्कशा स्त्री।

चंडीपति, चंडीश—पु० शंकर जी।

चंडू—पु० अफीमसे बनी एक मादक वस्तु।

चंडूखाना—पु० चंडू पीनेकी जगह।—नेकी गप = बिलकुल अंड बंड और तथ्यहीन बात।

चंडूल—पु० एक तरहकी छोटी चिड़िया।

चंडोल—पु० पालकी 'पदमावति चंडोल बईठी।' प० २०७

चंद—पु० चन्द्रमा। वि० कुछ।

चंदक—पु० चन्द्रमा। चाँदनी। एक गहना। एक मछली।

चंदचूर—पु० चन्द्रचूड़, शिवजी ( रत्ना० २८६ )।

चंदन—पु० एक वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है।

चंदनहार—पु० गलेका एक गहना।

चंदना—पु० चन्द्रमा 'रसिक चकोरन हेतु सु प्रगट्यो चन्दना।' अलबेली अलि।

चंदनी—स्त्री० चाँदनी।

चंदनौता—पु० एक तरहका लहँगा।

चंदबान—पु० अर्द्ध चन्द्राकार फलवाला बाण ( उदे० 'धनबान')।

चंदला—वि० जिसकी 'चाँद' पर बाल न हों, गञ्जा।

चँदवा—पु० चँदोवा, वितान। मोरके पंखकी चन्द्रिका ( उदे० 'कुनित' )। गोल चकती। एक प्रकारका शिरोभूषण।

चंदा—पु० चन्द्रमा। बेहरी, उगाही। साल छः महीनेके लिए लिया जानेवाला समाचार पत्रादिका मूल्य।

चंदिनि, चंदिनी—स्त्री० चाँदनी, चन्द्रमाका प्रकाश। वि० स्त्री० चाँदनयुक्त, उजेली 'चोरहिं चन्दिनि राति न भावा।' रामा० २०४

चँदिया—स्त्री० पीछेकी छोटी रोटी। सिरका मध्य भाग।

चंदिर—पु० चन्द्रमा।

चंदेल—पु० राजपूतोंकी एक शाखा।

चँदोया, चंदोवा—पु० देखो 'चँदवा', 'रतन दीप [ चारु चँदोवा। कहत न बनइ आन जेहि ओवा'। [ रामा०

चंद्र—पु० चन्द्रमा। एककी संख्या।

चंद्रक—पु० चन्द्रमा। चन्द्रिका। एक मछली। नख। कपूर। जल ( कवि प्रि० १४५ )।

चंद्रकला—स्त्री० एक आभूषण। चन्द्रमाका सोलहवाँ [हिस्सा।

चंद्रकांत—पु० एक मणि।

चंद्रकांता—स्त्री० चन्द्रपत्नी, रात्रि। एक वृर्णवृत्त।

चंद्रगुप्त—पु० मगधका एक मौर्यवंशी राजा।

चंद्रचूड़,-धर—पु० शिवजी ( रामा० १७० )।

चंद्रधनु—पु० चाँदनी रातमें दीख पड़नेवाला इन्द्रधनुष।

चंद्रवधू,-वधूटी—स्त्री० देखो 'चंद्रवधू'।

चंद्रयाण—पु० देखो 'चंदबान'।

चंद्रभागा—स्त्री० पंजाबकी एक नदी।

चंद्रभाल,-भूषण—पु० शिवजी।

चंद्रमणि—पु० एक मणि।

चंद्रमल्लिका—स्त्री० एक प्रकारकी चमेली।

चंद्ररेखा,-लेखा—स्त्री० चन्द्रकला, द्वितीयाका चाँद।

चंद्रमा—पु० निशाकर, इन्दु, हिमांशु, रजनीश, विधु।

चंद्रमाललाट,-ललाम—पु० शिवजी।

चंद्रमौलि,-शेखर—पु० शिवजी।

चंद्रवधू,-वधूटी—स्त्री० बीरबहूटी नामक लाल रंगका कीड़ा 'द्युतिवंतनको विपदा बहु कीन्ही। धरती कहँ चन्द्रवधू धरि दीन्ही।' राम० ३००

चंद्रशाला—स्त्री० चाँदनी। सबसे ऊपरकी कोठरी।

चंद्रहार—पु० सोनेका बना एक तरहका हार।

चंद्रहास—पु० तलवार, रावणकी तलवारका नाम† [†(रामा० ४१९)।

चंद्रा—स्त्री० चँदोवा। घटका।

चंद्रातप—पु० चँदोवा। चाँदनी।

चंद्रापीड़—पु० शिव।

चंद्रायण—पु० 'चांद्रायण', व्रतविशेष।

चंद्रिका—स्त्री० मयूर-पुच्छकी आँख। चाँदनी।

चंद्रिकातप—पु० चाँदनी 'चारु चंद्रिकातपसे पुलकित निखिल धरातल' ग्राम्य १६८

चंद्रोपल—पु० चन्द्रकान्त मणि।

चंपई—वि० पीला।

चंपक—पु० एक पेड़ या उसका फूल (उदे०'अवरेखना')।

चंपकमाला—स्त्री० एक गहना। एक छन्द।

चंपकली—स्त्री० गलेमें पहननेका एक आभूषण, चम्पाकली।

चंपत—वि० अन्तर्धान, ग़ायब।

चंपना—अक्रि० बोझ, लज्जा, आदिसे दबना। व्याकुल होना '···चकवा ज्यों चंद्र चितै, चौगुनो चँपत है।' राम० ३४१। सक्रि० दबाना 'घर बैठेंहि दशन अधरन धरि चँपै श्वास भरै।' सूबे० २४७

चंपा—पु० एक हलके पीले रंगके फूलवाला वृक्ष। घोड़ेका एक भेद। एक तरहका केला।

चंपाकली—स्त्री० गलेमें पहननेका एक गहना।

चंपू—पु० गद्य पद्यमय काव्य। [*तरहकी कलँगी।

चँवर—पु० सुरा गायकी पूँछके बालोंका गुच्छा। एक*

चँवरी—स्त्री० घोड़ेकी पूँछको बालोंका बना चँवर।

च—पु० चन्द्रमा। कछुवा। चोर।

चउतरा, चऊतरा—पु० देखो 'चबूतरा'।

चउर—पु० देखो 'चँवर'।

चक—पु० 'चकई' ( चक्री ) नामक खिलौना। भूमिका टुकड़ा। खेड़ा। अधिकार। एक गहना। चक्का, पहिया। चकवा ( उदे० 'खेलवार')। एक अस्त्र 'खरग धनुक,चक्र, बान दुइ जगमारन तिन्ह नाँव।' प० ४५ वि० चपकाया हुआ, भौंचक्का। अधिक।

चकई—स्त्री० मादा, चकवा, चकवी। एक छोटा खिलौना 'चारु चकई लै घुनघुना लट्टू कंचनको–दीन० ८

चकचकाना—अक्रि० पानी इ० का छोटे छोटे कणोंके रूपमें निकलना। भींग जाना।

चकचाना—अक्रि० चकाचौंध लगाना।

चकचाल—पु० फेरा, चक्कर।

चकचाव—पु० चकाचौंध।

चकचून, चकचूर—वि० पिसा हुआ, चकनाचूर, 'नैसक नाहके नेह बिना चकचूर ह्वै जैहै सबै चिकनाई।' रवि० १५, 'टूटहिं परवत मेरु पहारा। होइ चकचून उड़हिं तेहि छारा।' प० २५१

चकचूरना—सक्रि० चूर चूर करना 'ढोंकनि ढेला करति दुरत ढेलनि चकचूरति।' रत्ना० २७१

चकचोही—वि० स्त्री० चिकनी-चुपड़ी, ऊपरसे मीठी ( भ्रमर १०६ )।

चकचौंधना—अक्रि० तेज़ रोशनीके सामने आँखका न ठहर सकना, आँख तिलमिलाना। सक्रि० आँखोंमें तिलमिलाहट उत्पन्न करना 'चपला चमकि चमकि चकचौंधति करति शब्द आघात।' सूबे० १२५

चकचौंधी—स्त्री० चकाचौंध।

चकचौंह—स्त्री० चकाचौंध, आँखोंकी तिलमिलाहट।

चकड्वा—पु० बखेड़ा। फेर। विकट परिस्थिति।
चकडोर—स्त्री० चकई नामक खिलौना व उसकी डोरी 'हाथ लिये भौंरा चकडोरी।' सूबे० ७५,(गीता०२९७)
चकता, चकत्ता—पु० चगताई खाँ, चगताईके वंशका कोई व्यक्ति ( उदे० 'अकह' भू० ११,१६ )। धब्बा, ददोरा, चिह्न।
चकताई—पु० एक मोगल सरदार।
चकती—स्त्री० गोल छोटा टुकड़ा।
चकना—अक्रि० विस्मित होना,चकित होना। सशंक होना 'चकी जकी सी ह्वै रही,बूझे बोलत नीठि।' वि० २६२
चकनाचूर—वि० चूर चूर। बिलकुल थका हुआ।
चकपक, चकबक—वि० चकित, स्तम्भित 'चकबक ताकती इतै उतै विलोकि काहू मुरि मुसुकाय लल-चाय जोरि नैनको।' रणधीरसिंह
चकपकाना—अक्रि० चकित होना, चौंकना।
चकबंदी—स्त्री० ज़मीनका बँटवारा।
चकमक़—पु० एक पत्थर जिसपर आघात होनेसे जल्द आग निकलती है ( साखी ९५ )।
चकमा—पु० धोखा, भुलावा। एक खेल। हानि।
चकमूँदर—पु० छछूँदर जैसा एक जन्तु ( पूर्ण २६६ )।
चकर—पु० चक्कर, फेरा। गोल वस्तु। चकवा पक्षी।
चकरवा—देखो 'चकड्वा'।
चकरा—वि० फैला हुआ, चौड़ा 'सौ जोजन विस्तार कनकपुरि चकरी जोजन बीस।' सूरा० ३१
चकराना—अक्रि० चकित होना, घबड़ाना। चक्कर खाना।
चकरी—स्त्री० चकई नामका खिलौना। चक्कीका पाट।
चकल—पु० दूसरे स्थानपर लगानेके निमित्त मिट्टीके साथ पौधा उखाड़ना। इस प्रकारके पौधेमें लगी हुई मिट्टी।
चकलई—स्त्री० चौड़ाई।
चकला—पु० गोल पाटा, होरसा। दुराचारिणी स्त्रियोंका केन्द्र। चक्की। वि० चौड़ा।
चकलाना—सक्रि० चौड़ा करना। दूसरे स्थानपर लगानेके लिए मिट्टीके साथ पौधा उखाड़ना।
चकली—सक्रि० चन्दन घिसनेका चकला। गड़ारी।
चकलेदार—पु० जमींदार, तालुकेदार। सूबेका हाकिम।
चकवँड़—पु० एक पात्र जिसे कुम्हार हाथ भिगोनेके लिए चाकके पास रखते हैं। एक पौधा।
चकवा—पु० चक्रवाक पक्षी।
चकवाना—अक्रि० चकपकाना।
चकवारि—पु० कछुवा 'उर निरखि चकवारि बिथके, कटि निरखि बनराज।' सू० १११
चकवाह—पु० चक्रवाक पक्षी।
चकवी—स्त्री० चकई, मादा, चकवा।
चकहा—पु० चक्का, पहिया 'महत उतंग मनि जोतिनके संग आनि कैयो रंग चकहा गहत रविरथके।'भू०११४
चका—पु० चक्का, पहिया 'चका कुँवर कर शोभित कैसे। हरि कर चक्र सुदर्शन जैसे। सबल०। चक्रवाक वि० चकित ( उदे० 'चकना' )।
चकाचक—क्रिवि० पूरे तौरसे। वि० तरबतर। स्त्री० तलवार इ० के आघातका शब्द।
चकाचौंध,-चौंधी—स्त्री० तिलमिलाहट।
चकाना—अक्रि० चकराना, घबड़ाना ( रवि० ३१ )।
चकाबू—पु० चक्रव्यूह ( रत्ना० ४९६ )।
चकाबूह—पु० चक्रव्यूह 'चकाबूह अभिमनु ज्यों जूझा।'
चकार—पु० समवेदना सूचक-शब्द।
चकासना—अक्रि० चमकाना 'आपने भाव तैं तारे अनन्त जु आपने भाव तैं बीज चकासै।' सुन्द० १२१
चकित, चकितवंत—वि० विस्मित, सशंक, क्षुब्ध। 'अब अति चकितवंत मन मेरो।' सूबे० ३९०।
चकिताई—स्त्री० आश्चर्य ( रघु० ८२ )।
चकुला—पु० चिड़ियाका बच्चा।
चकृत—वि० चकित, विस्मित, चौकन्ना ( सू० ९८ )।
चकैया—स्त्री० चकवी "···पीतमैं चकैया मिलो···" कक्कौ० ५०६।
चकोटना—सक्रि०बकोटना, मांस नोचना, चिमटी लेना।
चकोतरा—पु० एक तरहका नीबू।
चकोर—पु०तीतरकी तरहका एक पक्षी।
चकौंध—स्त्री० चकाचौंध।
चक्क—पु० दिशा (भू० ५)। चकवा 'नीलकण्ठ कलकण्ठ सुत, चातक, चक्क, चकोर।' रामा० २६४। कुम्हार-का चाक। पीड़ा।
चक्कर—पु० गोल घूमना। घुमरी। गोल वस्तु। चक्र, मण्डल, घेरा, घुमाव, फेर, भुलावा,धोखा,असमंजस।
चक्कवइ—वि० चक्रवर्ती सार्वभौम।
चक्कवर्त—पु० चक्रवर्त्ती राजा।
चक्कवै—वि० चक्रवर्ती ( राजा ) 'चहूँ खण्ड हौं चक्कवै जस रवि तपै अकास।' प० २२८

चक्रस—पु० बुलबुल आदिके बैठनेका अड्डा।
चक्रा—पु० पहिया, चक्र।
चक्राव्यूह—पु० चक्रव्यूह 'यह जग चक्राव्यूह किय कज्जल कलित अगाध।' के० ८५
चक्री—स्त्री० जाँता, आटा पीसनेका यन्त्र।
चक्खी—स्त्री० चरपरा खाद्य। बुलबुल इ० को लड़ाते समयकी चुगाई।
चक्र—पु० पहिया,गोल वस्तु। झुण्ड, पानीका भँवर,फेरा, घेरा। दिशा। चक्रवाक—'चक्रके जोड़े कहो क्या मोदमय होनेको हैं' कानन कुसुम ८।
चक्रदंष्ट्र,-मुख—पु० शूकर।
चक्रधर—पु० राजा। विष्णु। नट। सर्प। परगने या जिलेका अधीश। [हो, विष्णु भगवान्।
चक्रपाणि, चक्रपानि—पु० जो हाथमें चक्रधारण किये
चक्रवंध—पु० एक तरहका चित्र-काव्य।
चक्रवती,-वर्ती—वि० समुद्र पर्यन्त भूमिपर राज्य करनेवाला ( उदे० 'चंक' )। पु० समुद्र पर्यन्त भूमि-
चक्रवाक—पु० चकवा पक्षी। [का राजा।
चक्रवात—पु० चक्राकार घूमनेवाली हवा, बवण्डर।
चक्रवाल—पु० अन्तरिक्ष 'चक्रवालकी धुँधली रेखा मानो जाती झुलसी' ( कामायनी १२१ )
चक्रवृद्धि—स्त्री० सूद-दरसूद, व्याजपर व्याज।
चक्रव्यूह—पु० सेनाकी एक मण्डलाकार स्थिति।
चक्रांक—पु० चक्रकी छाप।
चक्रांकित—वि० जिसने चक्रकी छाप ली हो। पु० वैष्णवोंका एक सम्प्रदाय।
चक्रांग—पु० हंस। रथ। चक्रवाक पक्षी।
चक्रायुध—पु० विष्णु।
चक्रित—वि० चकित, विस्मित।
चक्री—पु० चक्रधर, विष्णु। कुँभार। सर्प। चक्रवाक।
चक्षु, चख—पु० नेत्र,नयन। चखपूतरि=प्रिय व्यक्ति
चखचख—स्त्री० झगड़ा, कहासुनी। [उदे० 'आँख')।
चखचौंध—स्त्री०देखो 'चकाचौंध'। [रसास्वादन करना।
चखना—सक्रि० स्वाद लेना, स्वादके साथ खाना,
चखा—वि० चखनेवाला, रसिक 'पीतरेख तव कटि बसत, उत पीताम्बर चारु।''' जुगुल-रसके चखा।' सत्यनारायण
चखाचखी—स्त्री० विरोध, झगड़ा, शत्रुता, लाग-डाँट।
चखाना—सक्रि० रसास्वादन कराना।
चखोड़ा—पु० डिठौना।
चगड़—वि० होशियार, चण्ट, चालाक।
चगताई—पु० चगताई खाँका वंश।
चचा—पु० पिताका भाई।
चचिया—वि० चचाके समकक्ष सम्बन्धका।
चची—स्त्री० चाची।
चचीड़ा, चचेड़ा—पु० एक बेल या उसका फल।
चचेरा—वि० चाचासे उत्पन्न।
चचोड़ना—सक्रि० दाँतसे दबाकर चूसना।
चचोरना—सक्रि० रस चूसना 'आप गयो तहीं जहँ प्रभु रहे पालने कर गहे चरण अंगुठ चचोरहिं।' सूबे० ५१
चच्छु—पु० चक्षु, नेत्र, नयन 'चकित चच्छु निज छवि अवलोकित'—श्रीभट्ट।
चट—पु० धब्बा, लाञ्छन, कलंक। कड़ी वस्तुके टूटने या उँगली फूटनेकी आवाज 'अति सुख पाइ असीस देत सोइ करि अँगुरिन चट अलियाँ।' हरि०। क्रिवि० तुरन्त।—कर जाना=खा जाना, हड़प जाना।
चटक—स्त्री० चटकीलापन, उज्ज्वलता 'चटक न छाँड़त घटतहू सज्जन नेह गँभीर।' बि० १७४। गौरैया चिड़िया। कलियोंके चटकनेकी क्रिया 'दे मृदुकलियों-की चटक' ( ताल रश्मि २ )। वि० चमकदार, चट-कीला। शीघ्रता करनेवाला, फुरतीला। चटपटा, चरपरा। स्त्री०शीघ्रता, फुरती। क्रिवि० तुरन्त, शीघ्रतासे 'पानि पकर निज नाग पै लीन्ह्यो चटक चढ़ाय।' रघु० १६०
चटकाई—स्त्री० चटकीला पन, शोभा ( रत्ना० २२० )।
चटकदार—वि० चटकीला, चमकदार।
चटकना—अक्रि० 'चट' करके टूटना, कलियोंका प्रस्फु-टित होना 'तुव जस सीतल पौन परसि, चटकी गुलाबकी कलियाँ।' हरि०। झुँझलाना। दरकना, फटना। बिगाड़ होना। पु० तमाचा।
चटकनी—स्त्री० किवाड़ बन्द करनेकी कुण्डी, सिटकिनी।
चटक मटक—स्त्री० तड़क-भड़क। नाज़ नख़रा।
चटका—पु० शीघ्रता, फुरती। धब्बा, चकत्ता।
चटकाना—सक्रि० 'चट' शब्द उत्पन्न करना, बजाना 'रहिमन धागा प्रेमको मत तोरो चटकाय।' रहीम। 'कबहूँ चटकोरा चटकावति झुँझना झुझुन झूलना झूलै।' सू० मदन०। अँगुलियाँ फोड़ना। तोड़ना। दूर करना।

चटकारा—वि० चपल (उदे० 'खजरीट')। चटकीला।
चटकारी—स्त्री० चुटकी 'मदन महीपजूको बालक बसत ताहि प्रात हिये लावत गुलाब चटकारी दै।' देव(कको०)
चटकाली—स्त्री० गौरैया नामक चिड़ियों का समूह, चिड़ियोंका झुण्ड 'नभलाली चाली निसा चटकाली धुनि कीन।' वि० ५२
चटकीला—वि० चमकीला, भड़कीला (सू० ९६), ज्यों पटमें अति ही चटकीलो चढ़े रङ्ग तीसरी बारके बोरै।' रस० ४१। चटपटा, मजेदार।
चटकोरा—पु० बच्चोंका एक खिलौना (उदे० चटकाना')।
चटखना; चटखनी—देखो 'चटकना'; 'चटकनी'।
चटचटाना—अक्रि० फूटते, टूटते या जलते समय 'चट-चट' शब्द करना।
चटचेटक—पु० जादू, इन्द्रजाल 'मोहन, वसीकरन चटेचटक मंत्र जंत्र सब जानै हो।' गदाधर भट्ट
चटनी—स्त्री० चाटनेकी वस्तु। खूब पीसी हुई गीली वस्तु।
चटपट—क्रिवि० तुरन्त, तत्काल। [एक खिलौना।
चटपटा—वि० जिसमें खूब मिर्च मसाला पड़ा हो, तिक्त, चरपरा, तेज।
चटपटाना—अक्रि० छटपटाना (उदे० 'पजर')।
चटपटी—स्त्री० उतावली, व्यग्रता, उत्सुकता, छटपटी 'रसिक कहावैं कोई जिनके जुगल मिलनकी चटपटी। चाचा हित०
चटरी—स्त्री० एक कदन्न, खेसारी (पूर्ण २६४)।
चटशाला—स्त्री० पाठशाला।
चटसार,-साल—स्त्री० पाठशाला (सू०१९६),'पढ़े एक चटसार, कही तुम कैवो वार...' सुदामा०४। रङ्गभूमि 'जुगुल मिसु सौदामिनी जनु नचत नट चटसार।'
चटाई—स्त्री० तृणादिका बिछावन। [गदाधर भट्ट
चटाक, चटाख—स्त्री० अँगुली चटकाने इ० की आवाज।
चटान—स्त्री० देखो 'चट्टान' (पूर्ण १९७)।
चटाना—सक्रि० चटवाना, चिताना, खिलाना।
चटापटी—स्त्री० शीघ्रता, महामारीके कारण लोगोंका जल्दी जल्दी मरना।
चटावन—पु० अन्नप्राशन संस्कार।
चटिक—क्रिवि० चटपट, तत्काल।
चटियल,चटैल—वि० खुला हुआ, पेड़ पौधोंसे रहित मैदान (सेवा० १२६)।
चटी—स्त्री० चटसार, पाठशाला। एक तरहका जूता।
चटुल—वि० सुन्दर, चंचल (भू० ९)।
चटोरा—वि० स्वादलोलुप। लालची।
चट्ट—वि० गायब। हड़प, समाप्त।
चट्टान—स्त्री० बृहत् शिला, बड़ा पत्थर।
चट्टावट्टा—पु० बालकोंके लकड़ीके छोटे छोटे खिलौनोंका समूह। बाजीगरके गोले व गोलियाँ।
चट्टी—स्त्री० पड़ाव, टिकान। घाटा। एक तरहका जूता।
चड्डी—स्त्री० एक तरहका लँगोट।
चड्ढी—स्त्री० एक खेल जिसमें हारनेवाला जीतनेवालेको पीठपर लादकर घुटनोंके बल ले चलता है 'राह बचता चला गठी फिर भी चड्ढी हो गई उछाहसे भनबन' अणिमा० ९८
चढ़न—स्त्री० देवताको चढ़ायी गयी वस्तु।
चढ़ना—अक्रि० नीचेसे ऊपर जाना। तेज हो जाना। सवार होना। उन्नति करना। चढ़ाई करना। महीने आदिका आरम्भ होना। दर्ज होना। देवताको अर्पित होना। हाथ— = हाथमें आना 'दच्छिनके नाथ सिव राज तेरे हाथ चढ़ै धनुषके साथ गढ़ कोट दुरजनके।' भू० ४६। रग— = रङ्गका किसी कपड़े इ० पर आना 'सूरदास खल कारी कामरि चढ़त न दूजो रङ्ग।' सू० ७३। चढ़ बजना = मनोरथ सफल होना, खूब आनन्द होना।
चढ़ाई—स्त्री० चढ़नेकी क्रिया। बराबर ऊँची होती जाने वाली भूमि। आक्रमण। देवताओंकी भेंट, चढ़ावा।
चढ़ा उपरी, चढ़ाचढ़ी—स्त्री० प्रतिस्पर्द्धा, होड़ा होड़ी।
चढ़ाना—सक्रि० चढ़नेमें लगाना। ऊपर ले जाना। सवारी करना। ऊँचा करना। तीव्र करना। अर्पित करना। लगाना (उदे० 'गूँदना')। पहनाना (गिलाफ इ०)। आँकना, लिखना।
चढ़ाव—पु० अधिकाधिक ऊँचा होनेका भाव,चढ़ाई,वृद्धि।
चढ़ावा—पु० वधूके लिए वर-पक्षद्वारा लाया गया गहना। देवार्पित वस्तु।
चणक—पु० चना। [
चतुरग—पु० शतरंज। एक तरहका गाना। वि० चार अंगोंसे युक्त (सेना)।
चतुरंगिणी,-नी—स्त्री० हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल सैनिकोंसे युक्त सेना।
चतुर—वि० दक्ष, प्रवीण, चालाक। पु० हस्तिशाला।

चतुरई, चतुरता—स्त्री० चतुराई, होशियारी 'सूर श्याम रचि कपट चतुरई युवतिनके मन यह भरमायो'। सूवे० ११७। चतुरई छोलना, चतुरई तौलना = होशियारी करना, धोखा देना [ 'जाहु चले गुन प्रगट सूर प्रभु कहा चतुरई छोलत हो।' सू० ]
चतुराई—स्त्री० चतुरापन—पु० देखो 'चतुरई'।
चतुरानन—पु० ब्रह्मा।
चतुर्थ—वि० चौथा
चतुर्मास—पु० बरसातके चार महीनोंका समय।
चतुर्थी—स्त्री० चौथी तिथि, चौथ।
चतुर्दशी—स्त्री० चौदस।
चतुर्दिक—पु० चारों दिशाएँ क्रिवि० चारो ओर।
चतुर्भुज—वि० जिसके चार भुजाएँ हों। पु० बिष्णु। चार भुजाओंवाली आकृति। [ का एक सम्प्रदाय।
चतुर्भुजी—वि० जिसके चार भुजाएँ हों। पु० वैष्णवों-
चतुर्युगी—स्त्री० चार युगोंका समय।
चतुष्कोण—वि० चार कोनोंवाला। चौकोन।
चतुष्पथ—पु० चौराहा।
चतुष्पदी—स्त्री० एक छन्द, चौपाई।
चत्वर—पु० चबूतरा।
चद्दर—स्त्री० धातुका बड़ा चौखूँटा पत्तर। लम्बा चौडा कपड़ा, पिछौरी। ''एक तरहकी तोप (हिम्मत १३)।
चनक—पु० चना 'प्यासेहू न पावे वारि, भूखे न चनक चारि''' कविता० २३९
चनकट—स्त्री० तमाचा, थप्पड़ ( हिम्मत० ३० )।
चनकना,-खना—अक्रि० चटकना, तड़कना। नाराज
चनन—पु० चन्दन। [ होना।
चनवर—पु० ग्रास, कौर 'अपेन हाथ लै देत हैं चनवर दूध दही घृत सानि।' अष्ट ६८
चना—पु० एक तरहका अन्न, रहिला।
चनार—पु० एक वृक्ष।
चन्नि—स्त्री० परनी ( ग्राम० १४० )।
चपकन—स्त्री० एक लम्बा पहनावा।
चपकना, चपटना—अक्रि० देखो 'चिपकना'।
चपटा—वि० धँसा या धँसा हुआ, दबा हुआ।
चपटी—स्त्री० तालो, चुटकी। एक कीड़ा, किलनी 'मुख भंज मनोर्जप न्हक्रिनिसी लपटी चपटीन उड़ावहि को।' ए[illegible]

चपड़गट्टू, चपरगट्टू—वि० अभागा, सत्यनाशी।
चपड़ा—पु० एक लाल कीड़ा। साफ की हुई लाख।
चपत—स्त्री० तमाचा। घाटा, चपेट।
चपना—अक्रि० दबना, कुचल जाना ( रघु० २४४ )। लज्जित होना 'निज करुना करतूति भक्तपर, चपत चलत चरचाउ।' विन० २९५
चपरना—सक्रि० चुपड़ना या फैलाकर लगाना। सानना मिलाना। अक्रि० भाग जाना। शीघ्रता करना।
चपरास—स्त्री० पीतल आदिकी पट्टी, बिल्ला।
चपरासी—पु० अरदली, नौकर।
चपरि—क्रिवि० तेज़ीसे, एकबारगी, ज़ोरसे 'चपरि चपेटे देत नित केस गहे कर मीच।' दोहा० १२५,'''हठि न पिनाक काहू चपरि चढ़ायो है।' कविता० १२९
चपल—वि० चञ्चल, उतावला। चालाक। पु०पारा इ०।
चपलता, चपलाई—स्त्री० चञ्चलता। धृष्टता।
चपला—स्त्री० बिजली। लक्ष्मी। दुराचारिणी स्त्री। जीभ।
चपलाना—अक्रि० हिलना, चलना। सक्रि० चलाना।
चपवाना—सक्रि० दबवाना।
चपाकदै—क्रिवि० अचानक 'करत करत धंध कछुहिनजानै अंध आवत निकट दिन आगलैं चपाक दैं।'सुन्द० २७
चपाती—स्त्री० पतली रोटी।
चपाना—सक्रि० दबवाना। दबाना। लज्जित करना।
चपेट—स्त्री० धक्का, थप्पड़, आघात। हानि।
चपेटा—पु० देखो 'चपेट' ( उदे० 'चपरि' )।
चपेटना, चपेरना—सक्रि० दबाना।
चपौटी—स्त्री० छोटी टोपी।
चप्पल—पु० एक तरहका जूता।
चप्पा—पु० थोड़ीसी जगह। चतुर्थांश। चार अंगुलकानाप।
चबक—स्त्री० टीस। वि० डरपोक।
चबाई—पु० देखो 'चवाई' ( सू० ५९ )।
चबाना—सक्रि० दाँतोंसे दबाना या कुचलना।
चबारा—पु० मकानके ऊपरका कोठा, चौबारा।
चबाव, चबावन—पु० 'चवाव'। बदनामी, लोकापवाद 'होत चबाव बचावों सो क्यों करि क्यों अहि मोरिये प्रान पियारो।' रसखान, ( सू० १० )
चबूतरा—पु०ज़मीनसे कुछ ऊँची बनायी हुई चौरस जगह।
चबेना—पु० चबाकर खानेके लिए भूना हुआ दाना।
चभक—स्त्री० पानीमें डूबनेका शब्द।

चभना—अक्रि० कुचला या रौंदा जाना ।
चभाना—सक्रि० भोजन कराना । [ 'विरत' ।
चभोरना—सक्रि० डुबोना, भिगोना, तर करना । (उदे०
चमंकना, चमकना—अक्रि० जगमगाना 'बहु कृपान तरवारि चमकहिं । जनु दस दिसि दामिनी दमकहिं ।' रामा०५०३ । फुरतीसे निकल जाना । भड़कना, चौंकना ।
चमक—स्त्री० कान्ति, प्रकाश, झलक । लचक, तड़क ।
चमकताई—स्त्री०चमकीलापन, चमक, आभा(सू०१२९) ।
चमक दमक—स्त्री० तड़क भड़क । आभा । ठाट ।
चमकदार—वि० चटकदार, चमकीला ।
चमकारा—पु० तेज, प्रकाश ।
चमकारी—स्त्री० चमक, ज्योति । वि० स्त्री० चमकीली ।
चमकी—स्त्री० कारचोबीमें लगनेवाले चिपटे टुकड़े ।
चमकीला—वि० चमकनेवाला, भड़कदार ।
चमगादड़—पु० एक उड़नेवाला जन्तु जो रातको इधर उधर उड़कर अपना आहार एकत्र करता है और दिनको न देख सकनेके कारण टाँगोंके बल डालियोंसे उलटे लटका रहता है । [ मिठाई ।
चमचम—क्रिवि० चमकके साथ । स्त्री० एक बँगला
चमचमाना—अक्रि० चमकना, चिलकना, दमकना, प्रकाशयुक्त होना ( सूबे० १२२, १२४ ) ।
चमचा—पु० बड़ा चम्मच । करछुल ।
चमजुई, चमजोई—स्त्री० एक छोटी किलनी, चिचड़ी । जल्द न छोड़नेवाली वस्तु ।
चमटा—पु० धातुका बना हुआ आग इ० पकड़नेका
चमड़ा—पु० त्वचा, खाल । छिलका । [ औज़ार ।
चमड़ी—स्त्री० खाल ।
चमत्कार—पु० आश्चर्य, विलक्षण बात, अद्भुत घटना, करामात । विचित्रता, अनोखापन ।
चमत्कारी—वि०चमत्कारसे भरा हुआ । विलक्षण, अद्भुत ।
चमत्कृत—वि० विस्मित, चकित ।
चमकीला—'रश्मि-चमत्कृत स्वर्णालंकृत नवल प्रभात'
चमत्कृति—स्त्री० चमत्कार, अचम्भा । [परिमल १३९
चमन—पु० वाटिका । गुलज़ार शहर ।
चमर—पु० देखो 'चँवर' । स्त्री० सुरा गाय ।
चमरख—स्त्री० चरखेकी गुड़ियोंमें लगानेकी चमड़े या मूँजकी चकती ( कबीर० १६५ ) ।
चमरशिखा—स्त्री० घोड़ेकी कलँगी ।
चमरस—पु० जूतेकी रगड़से होनेवाला घाव ।
चमरी—स्त्री० एक तरहकी गाय 'चौर करै चमरी चय मोर चकोर मृगी मृग चाकर भारी ।' रवि० ३०
चमरौट—पु०चमारको दिया जानेवाला फसलका हिस्सा ।
चमरौधा—पु० चमौआ, चमड़ेसे सिला हुआ भद्दा जूता ।
चमाऊ—पु० चमर, चँवर '··रहे अटल चकत्ताको चमाऊ धरि डरिके ।' भू० ५३
चमाक—स्त्री० चमक, कान्ति, प्रकाश 'चन्दते दुचन्द मुखचन्दकी चमाकैं रुचि चन्दमौलि चित्त ह्वै चकोर रह्यो फँसि कै ।' दीन० ३१
चमाकना—अक्रि० चमकना (ग्राम० ४३५ ) ।
चमाचम—क्रिवि० देखो 'चमचम' ।
चमार—पु० चमड़ेका काम करनेवाली एक जाति ।
चमारी—स्त्री० चमारका काम । चमारकी स्त्री ।
चमू—स्त्री० सेना ।
चमूहर—पु० शिव ।
चमेली—स्त्री० एक लता या उसका फूल ।
चमोटा—पु० छुरा तेज़ करनेका चमड़ा ।
चमोटी—स्त्री० कोड़ा, चाबुक, कमची । चमड़ेका टुकड़ा ।
चमौवा—देखो 'चमरौधा' ।
चम्मच—पु० छोटा चमचा, छोटी करछुल ।
चय—पु० राशि । कोट । गढ़ । चौकी ।
चयन—पु० चुनाव, संग्रह चुननेका काम । चैन, आराम, 'जूझहिमें कलह कलहप्रिय नारदै, कुरूप है कुबेरै, लोभ सबके चयनको ।' के० १४९
चयनशील—वि० संग्रही, संग्रह, करनेवाला ।
चर—वि० चलनेवाला, अस्थिर । जङ्गम । पु० दूत ।
चरई—स्त्री० पशुओंको चारा पानी देनेके लिए बनाया गया छोटा हौज़ । तारकी खूँटी ( बीजक २२५ ) ।
चरक—स्त्री० एक तरहकी मछली । पु० कुष्टका दाग । दूत । पथिक । भिक्षुक । चरक-संहिताके रचयिता ।
चरकटा—पु० हाथी इ० के लिए चारा काटनेवाला नौकर
चरकना—अक्रि० फूटना, टूटना, दरकना 'तनी तरक कर चूरी चरकति' कर्को० ५०७
चरका—पु० चकमा, धोखा ( गबन १७५ ) ।
चरख—पु० पहियेके आकारका गोल चक्कर । खराद । तोप रखनेकी गाड़ी । एक शिकारी पक्षी ।
चरखा—पु० चर्खा, चरख, चरखी, रहँट ।

चरखी—स्त्री० गड़ारी। पहिये जैसी वस्तु । छोटा चरखा । हिंडोला ।

चरग—पु० चरख नामक शिकारी पक्षी ( दोहा० १२९) ।

चरचना—सक्रि० ताड़ लेना, भाँपना 'लैननि चरचि लई गौननि थकित भई नैननिमें चाह करै बैननिमें नहियाँ ।' रस० ६४ । लेपना । पूजना 'सूरदास मुनि चरन चरचि करि सुरलोकनि रुचि मानी ।' सू० २७६

चरचराना—अक्रि० 'चर चर' शब्दके साथ टूटना या जलना । चर्राना, खिंचावके कारण दर्द करना ।

चरचा—स्त्री० जिक्र, वर्णन, बातचीत, विवाद 'सेवा कीन्हे फल मिलै चरचा उपज विषाद ।' चाचा हित०

चरचारी—पु० चरचा चलानेवाला । निन्दा करनेवाला ।

चरचित—वि० पोता हुआ, लेप लगाया हुआ ।

चरज—पु० 'चरख' नामक पक्षी ।

चरजना—सक्रि० बहकाना । अक्रि० अन्दाज़ लगाना ।

चरण, चरन—पु० पैर, पाँव । छन्दका पद । बड़ोंका

चरणदासी—स्त्री० पत्नी । जूता । [ संग । चतुर्थांश ।

चरणपादुका—स्त्री० खड़ाऊँ । पदचिह्न ।

चरणपीठ—पु० खड़ाऊँ । ( रामा० ३५० )

चरणामृत, चरणोदक—पु० वह जल जिससे किसी पूज्य व्यक्तिका चरण धोया गया हो ।

चरती—पु० व्रत न करनेवाला व्यक्ति ।

चरना—अक्रि० चलना, व्यवहार करना 'जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं बिस्व प्रतिकूल ।' रामा० १५० । चलना-फिरना, विचरना (विन० ४६८)। लाँघना, दबाना 'काके हैं द्वै सीस ईसके जो हठि जनकी सीव चरै ।' विन० ३३५। सक्रि० खेतोंमें फैलकर(चारा आदि)खाना।

चरनायुध—पु० अरुणशिखा, मुर्गा ( मति० २३० ) ।

चरनि—स्त्री० गति, चाल ।

चरनी—स्त्री० चरी । चारा । चरनेकी क्रिया 'गौवन छाँड़ी तृनकी चरनी ।' सूबे० ३७९ [ बदमाश ।

चरपट—पु० चपत । दूसरेकी चीज़ उड़ाकर भागनेवाला,

चरपर, चरपरा—वि० तीता ( साखी १७६ ), तेज़ ।

चरफराना—अक्रि० तड़फड़ाना, व्याकुल होना ।

चरब—वि० तीक्ष्ण, तीखा ।

चरबन—पु० चबैना ( रत्ना० ५२० ) ।

चरबाँक, चरवाक—वि० चतुर । निडर । चंचल ।

चरबी—स्त्री० मेद ।

चरम—वि० अन्तिम, सबसे ऊँचा या बड़ा ।

चरम-गिरि—पु० अस्ताचल 'रुचिरतरनिय कनक-किरणोंको तपन, चरम गिरिको खींचता था कृपण-सा ग्रन्थि ३

चरमराना—सक्रि० 'चरमर' शब्द उत्पन्न करना । अक्रि० 'चरमर' शब्द होना ।

चरमोन्नत—वि० अत्यन्त उन्नतिशील ।

चरवाई,-ही—स्त्री० पशु चरानेका काम या मज़दूरी ।

चरवाहा—पु० पशु चरानेवाला ।

चरवैया—पु० चरानेवाला । चरनेवाला ।

चरस—पु० एक मादक वस्तु । चमड़ेका थैला, मोट 'चिबुक कूप रसरी अलक तिल सु चरस दृग बैल ।' मुबारक

चरसा—पु० बैल इ० का चमड़ा । चमड़ेका थैला, मोट ।

चरसी—पु० चरस पीनेवाला । चरससे पानी निकालने

चरहा—पु० चारागाह ( ग्राम० ४९ ) । [ वाला ।

चराचर—वि० जड़-चेतन ।

चरान—पु० समुद्र-तीरका नमकवाला दलदल । गोचर-

चरागाह—पु० पशुओंके चरनेकी जगह, चरी । [भूमि ।

चराना,-वना—सक्रि० पशुओंको चरनेके लिए ले जाना ।

चरिंदा—पु० पशु ।

चरित, चरित्र—पु० स्वभाव, कार्य, आचरण, जीवनी ।

चरितार्थ—वि० पूरा उतरनेवाला । कृतकार्य ।

चरित्तर—पु० चालबाजी, बहाना, ढोंग ।

चरित्रवान्—वि० उत्तम चरित्रवाला ।

चरी—स्त्री० पशुओंके चरनेके लिए दी गयी भूमि ।

चरु—पु० चरी । हविष्यान्न ।

चरुआ—पु० जच्चाके लिए जल पकानेका पात्र ।

चरुखला—पु० चरखा ।

चरू—पु० देखो 'चरु' । 'प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हे ।'

चरेरा—वि० सख्त, रूखा । [ रामा० १०५

चरेरू—पु० पक्षी ( छत्र ग्रं० २० ) ।

चरोखर—स्त्री० देखो 'चरी' । [ गयी भूमि ।

चरोतर—पु० किसी व्यक्तिको जीवन भरके लिए दी

चर्ख—स्त्री० गोलाकार घूमनेवाली चीज ।

चर्खा—पु० सूत कातनेका एक यन्त्र । गराड़ी । रहँट ।

चर्खी—देखो 'चरखी' [ बखेड़ा । ऊखकी कल ।

चर्चरी—स्त्री० चाँचर आनन्दोत्सव ।

चर्चा—स्त्री० देखो 'चरचा' ।

चर्चित, चर्परा—देखो 'चरचित'; 'चरपरा' ।

चर्पटी—स्त्री० चपाती।
चर्म—पु० चमड़ा, ढाल।
चर्मकार—पु० देखो 'चमार'।
चर्मदंड—पु० चाबुक।
चर्मपादुका—स्त्री० जूता।
चर्या—स्त्री० आचरण, जीविका, काम काज।
चर्य्य—वि० करने योग्य।
चर्राना—अक्रि० तनावके साथ मामूली पीड़ा होना। 'चर चर' शब्द करना। इच्छादिका प्रबल होना [ ( शौक चर्राना )।
चर्वण—पु० चबाना। चबेना।
चर्वित—वि० चबाया हुआ।
चर्वित चर्वण—पु० किसी कही हुई बात या किये हुए कामको दुहराना, पिष्टपेषण।
चल—वि० चंचल, अस्थिर। पु० पारा, शिव, छल इ०।
चलकना—अक्रि० चिलकना, चमकना।
चलचूक—स्त्री० छल, धोखा। [ गतिशील।
चलता—वि० चालाक। काम करनेके लायक। प्रचलित,
चलतू—वि० चलता हुआ, जो जारी हो। आबाद।
चलदल—पु० पीपलका पेड़।
चलन—पु०प्रचार, व्यवहार, चाल ( उदे० 'अनेड़' )।
चलनसार—वि० जो व्यवहारमें चलता हो। टिकाऊ।
चलना—अक्रि० गमन करना, गतिमें होना, छिड़ना, शुरू होना '...अली चली क्यों बात।' वि० ९२। प्रचलित होना 'रघुकुल रीति सदा चलि आई।' रामा० २१२। निर्वाह होना। साफ किया जाना ( पिसान )। प्रयुक्त होना। वश चलना।
अपने चलते=यथाशक्ति 'अपने चलत न आजु लगि, अनभल काहुक कीन्ह।' रामा० २०८
चलनि—स्त्री० गति, चाल। रीति, रिवाज। प्रयोग, व्यवहार। [ ( उदे० 'अंतस' )।
चलनी—स्त्री० आटा इ० चालनेका बरतन, छलनी
चलवंत—पु० प्यादा, पैदल सैनिक।
चल विचल—स्त्री० व्यतिक्रम। वि० स्थान-च्युत, अव्यवस्थित। बे ठिकाने।
चला—स्त्री० बिजली, लक्ष्मी, पृथिवी।
चलाऊ—वि० बहुत घूमनेवाला। टिकाऊ।
चलाक—वि० चालाक, चतुर, चंचल 'सबते चलाक चित तेऊ कुलि आलमके रहैं उर अन्तरमें धीर न धरत हैं।' भू० १४१
चलाका—स्त्री० बिजली।
चलाचल—वि० चंचल। स्त्री० चाल। देखो 'चलाचली'।
चलाचली—स्त्री० चलनेकी धूमधाम, चलनेका समय, हलचल 'हय चले हाथी चले संग छोड़ि साथी चले ऐसी चलाचलीमें अचल हाड़ा ह्वै रहो।' भू० १७६
चलान—पु० भेजनेकी क्रिया, न्यायालयमें भेजा जाना। रवन्ना।
चलाना, चलावना—सक्रि० चलनेके लिए प्रेरित करना, गति देना, छोड़ना। शुरू करना। निभाना। प्रचलित करना, व्यवहृत करना।
चलायमान—वि० विचलित। चंचल।
चलाव—पु० गौना। यात्रा। प्रयाण।
चलावा—पु० गौना। रिवाज।
चलौना—पु० दूध इत्यादि चलानेकी कलछी।
चवना—अक्रि० देखो 'चुअना', 'चन्द चवइ बरु अनल कन, सुधा होइ विष तूल।' रामा० २२२
चवन्नी—स्त्री० एक सिक्का जो रुपयेका चतुर्थांश होता है।
चवा—स्त्री० चारों तरफसे बहनेवाली हवा।
चवाई—पु० बदनामी फैलानेवाला, निन्दा करनेवाला 'घातक कुटिल चवाई कपटी महाक्रूर संतापी।' सूवि० ४५। चुगलखोर, मिथ्याभाषी 'सुनहु कान्ह बलभद्र चवाई, जनमत हीको धूत।' सू० ५९
चवाउ, चवाव—पु० बदनामी, निन्दा, चुगलखोरी 'अनाचार सेवकसों मिलिकै करत चवावन काम।' [ सू० १०
चशम, चश्म—स्त्री० आँख, नेत्र।
चशमा, चसमा—पु० ऐनक। सोता।
चश्मदीद—वि० आँखोंसे देखा हुआ।
चश्मनुमाई—स्त्री० आँख दिखलाना, धमकी।
चष—पु० चख, चक्षु, नेत्र 'अस मानस मानस चष चाही। भइ कवि बुद्धि विमल अवगाही।' रामा० ३१
चषक—पु० शराब पीनेका बर्तन। शराब। मधु।
चषचोल—पु० आँखका ढक्कन। आँखकी पलक।
चसक—पु० शराब पीनेका बर्तन। स्त्री० कसक, दर्द।
चसकना—अक्रि० कसकना, हलका दर्द होना। चसका [ चुआना।
चसका—पु० लत, चाट।
चसकी—स्त्री० चसका।
चसना—अक्रि० एकमें सट जाना, चपकना। मरना।
चसम—स्त्री० देखो 'चश्म' ( रतन० ६९ )।

चह—स्त्री० गड्ढा। लकड़ीका चबूतरा।
चहक—स्त्री० पक्षियोंका कलरव।
चहकना—अक्रि० कलरव करना। जलना 'विरह आगितें चहक कै प्रान करत प्रस्थान।' सत्यनारायण। सक्रि० जलानेकी-सी पीड़ा देना, 'जलाना ( चैंकना-बुंदेल० )। फाँसीसे फुलेल लागे गाँसीसे गुलाब आब गाज ऐसे अरगजा चोआ लागे चहकन।' रवि० ९९
चहका—पु० कीचड़। लूका। ईंटोंका फर्श।
चहकारा—वि० कलरव करनेवाला ( रत्ना० ४७८ )।
चहचहा—पु० पक्षियोंका कलरव। हँसी-मज़ाक। वि० आनन्द उत्पन्न करनेवाला।
चहचहाना—अक्रि० चहकना, कलरव करना।
चहना—सक्रि० चाहना, इच्छा करना। देखना 'काहूके कहे सुनेते जाही ओर चाहैं ताही ओर इकटक घरी चारिक चहत हैं।' भू० ११८
चहनि—स्त्री० चाह, इच्छा।
चहबच्चा—पु० पानी रखनेका हौज़। धन छिपाकर रखनेका तहख़ाना।
चहर—स्त्री० आनन्दोत्सव ( सूबे० १११ )। शोरगुल, हलचल, उपद्रव। सूर श्यामहिं नेकु बरजहु करत हैं अति चहरि।' सूबे० १११। वि० उत्तम। तेज़।
चहरना—अक्रि० आनन्दित होना।
चहर-पहर—स्त्री० चहल पहल 'चहर पहर चहुँकित सुनि चायन जग्यो राम लघु भ्राता।' रघु० ३९
चहराना—अक्रि० आनन्दित होना। फटना, दरकना।
चहल—स्त्री० कीचड़ 'माखन महल सी परागके चहल सी गुलाबके पहल सी नरम मखमल सी।'—श्रीपति 'ग्वाल कवि चन्दन चहलमें कपूर चूर चंदन अतर तर बसन खरौ करै।' ग्वाल
चहलकदनी—स्त्री० मन्दगतिसे घूमना, टहलना।
चहल पहल—स्त्री० हँसी खुशी, उत्सव, धूमधाम।
चहला—पु० कीचड़, दलदल 'चहले परि निकसै नहीं, मनो दूबरी गाय।'-व्यासजी ; 'इक भीजे चहले परे, बूड़े बहे हजार।' वि० १९१
चहारदीवारी—स्त्री० किसी स्थानके चारों ओर बनी हुई दीवार।
चहारुम—वि० चौथा। पु० चौथा भाग।
चहुँ, चहूँ—वि० चार।
चहुधा, चहूँधा—क्रिवि० चारों तरफ(राम० २९), 'उपवन बन्यो चहूँधा पुरके अति ही मोको भावत।' सूबे० २७७
चहुटना—सक्रि० चोट लगाना 'चित चकमक चहुटै नहीं धूवाँ ह्वै ह्वै जाय।' साखी ४४
चहूँटना—अक्रि० सटना, मिलना।
चहेटना—सक्रि० निचोड़ना, गारना, सार निकालना।
चहेता—वि० प्यारा, भावता।
चहोड़ना,-रना—सक्रि० आरोपित करना, लगाना, बैठाना। सँभालना 'काटी कूटी माछली छींके धरी चहोड़ि।' कबीर० ३०
चाँइयाँ—वि० धूर्त्त, ठग।
चाँई—वि० चालाक, धूर्त्त। गंजा।
चाँकना—सक्रि० चक्रांकित करना, चिह्न लगाना, हद बाँधना 'चितवनि चारु भृकुटि वर बाँकी। तिलक रेख सोभा जनु चाँकी।' रामा० १२१
चाँगला—वि० चालाक। पुष्ट, स्वस्थ।
चाँचर, चाँचरि—स्त्री० फाग इत्यादिके गीत ( विन० ४६९, गीता० ३५३ ), 'खिनहिं चलहिं खिन चाँचरि होई। नाच कूद भूला सब कोई।' प० ८८। स्त्री० परती छोड़ी हुई भूमि।
चाँचु—स्त्री० चोंच।
चाँटा—पु० चिउँटा, तमाचा।
चाँटी—स्त्री० चिउँटी ( उदे० 'इंदुर' )।
चाँड़—वि० प्रचण्ड, उग्र, बलवान्, श्रेष्ठ, 'तीख तुखार चाँड़ औ बाँके। सँचरहि पौरि ताज बिनु हाँके।' प० १९। अघाया हुआ, सन्तुष्ट। स्त्री० बड़ी ज़रूरत या लालसा। बढ़ती। ठेक, खम्भा।—सरना = लालसा पूर्ण होना 'तोरे धनुष चाँड़ नहिं सरई।' रामा० १६४
चाँड़ना—सक्रि० खोद डालना, नष्ट करना।
चांडाल—पु० डोम। नराधम।
चाँड़िला—वि० प्रबल, उद्धत। बहुत अधिक चढ़ा हुआ 'मखतूल गुहे घुँघरू पहिराय, छला छिंगुनी चित चाँड़िलीके।' हठी
चाँड़ी—स्त्री० चोंगी, कीप। स्त्री० खोपड़ी।
चाँद—पु० चन्द्रमा। निशानेका लक्ष्य। एक गहना।
चाँदना—पु० प्रकाश, चाँदनी 'अपने मुख चाँदने चलत सुन्दर वनमाई।'—नन्द० 'उनमुनिसे मन लागिया, गगनहिं पहुँचा जाय। चाँद बिहूना चाँदना, अलख निरंजन राय।' साखी० ११९ ( १८३ भी )
चाँदनी—स्त्री० चन्द्रमाका प्रकाश, ज्योत्स्ना।
चाँदबाला—पु० कानका एक गहना।
चाँदमारी—स्त्री० निशाना लगानेका अभ्यास।

चाँदा—पु० भूमिकी एक विशेष नाप।
चाँदी—स्त्री० रजत, रौप्य। अच्छी आमदनी।
चाँदीका जूता—पु० रिशवत ( औद्यो० ३८ )
चांद्र—वि०चन्द्रमा सम्बन्धी। पु०चन्द्रव्रत। चन्द्रलोक। चान्द्र महीना। अदरख।
चांद्रायण—पु० एक व्रत जो महीने भर चलता है।
चाँप—स्त्री० दबाव, धक्का 'कोई काहू न सँभारै होत आव तस चाँप।' प० २४९। पु० धनुष। चम्पाका फूल।
चाँपना—सक्रि० दबाना 'मुनिवर सयन कीन्ह तब जाई। लगे चरन चाँपन दोउ भाई।' रामा० १२४, 'अतिही कोमल भुजा तुम्हारी चाँपति यशुमति मात।' सूवे० १२७, 'चलत हस्ति जग काँपा चाँपा सेस पतार।' प० २४६, ( सू० १०२ )
चाँवर—पु० चावल ( पूर्ण ८१ )।
चाउ—पु० चाव, प्रबल, इच्छा, प्रेम, उत्साह 'इनके क्रोध भस्म ह्वै जैहो, करहु न सीता चाउ।' सू० ३४, 'बाजहिं ढोल निसान जुझाऊ। सुनि धुनि होहि भटन्ह मन चाऊ।' रामा० ४३७।
चाउर—पु० चावल ( उदे० 'काँड़ना' )।
चाक—पु० पहिया। घिरनी, गराड़ी। वि० पुष्ट, सुन्दर।
चाकचक—वि० सुदृढ़, सुरक्षित।
चाकना—सक्रि० देखो 'चाँकना'।
चाकर—पु० नौकर ( उदे० 'उजुर' )।
चाकरी—स्त्री० नौकरी, सेवा।
चाकी—स्त्री० वज्र। पटेकी चोट। चक्की।
चाकू—पु० फल इ० काटनेकी छुरी।
चाक्रिक—पु० तेली। भाट। कुम्हार। वि० चक्रसम्बन्धी।
चाक्षुष—वि० नेत्र सम्बन्धी।
चाख—पु० 'चाष', नीलकण्ठ।
चाखना—सक्रि० चखना, स्वाद लेना, रस लेना ( सू० ८३ ), 'अयहि अछूत न काहू चाखे।' प० ४७
चाचर,चाचरि—स्त्री० होलीके गीत, होलीका हुल्लड़। [ हलचल।
चाचरी—स्त्री० एक योगमुद्रा।
चाचा—पु० पिताका भाई, काका।
चाट—स्त्री० चसका, लालसा, लत। चटपटी वस्तु। पु० ठग, धूर्त मनुष्य।
चाटना—सक्रि० जीभसे चखना, जीभ घड़ाकर या अँगुलीसे जीभपर लगाकर खाना। पोंछकर खा जाना।
चाटु—पु० मिथ्या प्रशंसा।
चाटुकार—पु० खुशामदी, चापलूस।
चाड़—स्त्री० प्रबल इच्छा, प्रेम।
चाढ़ा—पु० प्रिय व्यक्ति, प्रेमी। वि०मोहित (उदे०'कोरी')।
चाणक्य—पु० चन्द्रगुप्तका मन्त्री, कौटिल्य।
चाणाक्ष—वि० धूर्त, चालाक ( निबन्ध१-१०५ )।
चाणूर—पु० कंसका एक पहलवान।
चातक—पु० पपीहा।
चातकनी—स्त्री० चातककी स्त्री, मादा चातक।
चातुर—देखो 'चतुर' ( उदे० 'चिकनियाँ' )।
चातुरई, चातुरी—स्त्री० चतुरता, चालाकी 'सुनहु राम स्वामी सकल चल न चातुरी मोर।' रामा० ४००
चातुरिक—पु० सारथी।
चातुर्मास्य—पु० आषाढ़ शुक्ल द्वादशीसे लेकर कार्तिक शुक्ल द्वादशीतक चारमास। चार मासमें समाप्त होनेवाला एक यज्ञ।
चातुर्य—पु० चतुरता, दक्षता, कुशलता।
चातुर्वर्ण्य—पु० चारो वर्णोंका धर्म।
चात्रिक,-ग—पु० चातक, पपीहा 'चात्रिक सुतहिं पढ़ा· वही आन नीर मत लेय।' साखी १८५, ( रतन० ९)
चादर—स्त्री० पीतल इ०का लम्बाचौड़ा टुकड़ा। ओढ़नेका लम्बा कपड़ा, पिछौरी। लाजकी चादर रहना= इज्ज़त बनी रहना।
चान—पु० चन्द्र ( विद्या० २८७ )।
चानक—क्रिवि० अचानक, अकस्मात्।
चानन—पु० चन्दन ( विद्या० १५२ )।
चाप—स्त्री० दबाव। पु० धनुष ( उदे० 'अंस' )।
चापट, चापड़—स्त्री० भूसी, चोकर। वि० चिपटा, दबा हुआ। चौपट। समतल।
चापना—सक्रि० दबाना 'धरनि परेउ दोउ खण्ड बढ़ाई। चापि भालु मर्कट समुदाई।' रामा० ५१६
चापल—वि० चपल, चञ्चल। पु० चपलता।
चापलता—स्त्री० चञ्चलता।
चापलूस—वि० खुशामद करनेवाला। पु० चाटुकार।
चापलूसी—स्त्री० चाटुकारी, खुशामद।
चापल्य—पु० चञ्चलता।
चाव—स्त्री० चौभड़, डाढ़। औषधि-विशेष।
चावना—सक्रि०' दाँतोंसे कुचलकर खाना '[illegible]

घुमण्डि अरि चण्ड मुण्ड चावि करि पीवत रुधिर कछु लावत न वारको।' भू० ३३

**चावी, चाभी**—स्त्री० कुञ्जी।

**चाबुक**—पु० कोड़ा। उत्तेजना देनेवाली वस्तु।

**चाभना**—सक्रि० चबाना, खाना।

**चाम**—पु० खाल, चमड़ा। **—के दाम चलाना**= अन्धेर करना [सिर पै सौति हमारे कुबजा चामके दाम चलावे।' सू०]

**चामर**—पु० चँवर, मोरछल। चावल 'खोलके पोट अछोट मुठी गिरिधारन चामर चाव सों चाख्यो।' सुदामा०,

**चामरी**—स्त्री० सुरा गाय। [(ककौ० १९४)

**चामीकर**—पु० सुवर्ण। धतूरा।

**चामुंडा**—स्त्री० एक देवी।

**चाय**—स्त्री० एक पौधा। पु० देखो 'चाव', 'ब्रह्म मैं ढूँढ्यो पुरानन गानन वेद रिचा सुनि चौगुने चायन।' रसखान, (उदे० 'इकौनी')

**चायक**—पु० प्रेमी। चयन करनेवाला, चुननेवाला।

**चार**—वि० पाँकसे एक कम। कुछ, कई। **चारों फूटना**= चारों आखें (चर्म चक्षु तथा ज्ञान चक्षु) फूटना 'फूटि न गई तिहारी चारों कैसे मारग सूझै।' सू० १९५। पु० दूत, चर 'चार चले तिरहूति।' रामा० ३२९। नौकर, दास 'स्वामी सर्वज्ञसों चलै न चोरी चारकी'—विन० २१२। आचार, रस्म 'बारोठेको चार करि कहि केशव अनुरूप। राम० १०९। चाल, गति। ४की संख्या।

**चारक**—पु० चलानेवाला। चरवाहा। चाल।

**चारखाना**—पु० एक तरहका धारीदार कपड़ा।

**चारजामा**—पु० पलान, ज़ीन। [चराना।

**चारण, चारन**—पु० बन्दीजन, भाट। चरानेकी क्रिया,

**चारदीवारी**—स्त्री० प्राचीर, परकोटा, घेरा।

**चारना**—सक्रि० चराना (उदे० 'खरिक'), 'गोप वेष गोकुल गो चारत हैं प्रभु असुर निकन्दन।' सू० ७२

**चारपाई**—स्त्री० खटिया।

**चारपाया**—पु० पशु, चौपाया।

**चारबाग**—पु० चौखूँटा। बगीचा। [सिक्का।

**चारयारी**—स्त्री० मित्रमण्डली। एक तरहका चाँदीका

**चारा**—पु० पशुओंका भोजन, घास इ०। चिड़ियोंआदि के खानेकी वस्तु (दीन० ११४), 'सो रावण रघुनाथ छिनकमें कियो गिद्धको चारो।' सूरा० ७६। मछलियोंको लुभानेके लिए वंसीमें लगाया हुआ आटा इ० 'कृपा-डोरि बनसी पद-अंकुस, परम प्रेममृदु चारो।' विन० २६२। वश, तदवीर, उपाय 'बिन अपराध तजी हम दासी कहा हमारो चारो।' भागनि।

**चाराजोई**—स्त्री० नालिश, निवेदन।

**चारि, चारी**—वि० आचरण करनेवाला, चलनेवाला। चार। पु० सन्देश 'पठवहु चारि चारके हाथा।' रघु० १२६। स्त्री० दौत्य, चुगली 'चुप करि ये चारी करति सारी परी सलोट। बि० २५१

**चारितु**—पु० चारा, घास इ० 'चारितु चरित करम कुकरम करि मरत जीव गन घासी।' विन० ९७, (दोहा० १४८)

**चारु**—वि० सुन्दर, रमणीय, सुहावना।

**चारुता, -ताई**—स्त्री० सौन्दर्य, रमणीयता (कलस २१४)।

**चार्वाक**—पु० एक प्रसिद्ध अनीश्वरवादी। नास्तिक। एक राक्षस।

**चाल**—स्त्री० चलनेकी क्रिया या ढङ्ग, गति, आचरण, व्यवहार। चालाकी। रीति। रस्म। चलनेकी साइत। हलचल।

**चालक**—पु० चाल चलनेवाला, छलिया। संचालक।

**चालचलन**—पु० आचरण, चरित्र।

**चालढाल**—स्त्री० तौर-तरीका, व्यवहार।

**चालन**—पु० संचालन, चलाना, प्रचार करना 'जन-बल-बर्द्धनके हेतु वाम-पथका चालन' अणिमा ३७

**चालना**—सक्रि० परिचालित करना, कार्यका सञ्चालन करना, छानना। हिलाना, डिगाना 'नष्ट करौं विधि सृष्टि ईश आसनते चालौं।' राम० १७१। अक्रि० चलना 'सूरदास प्रभु पथिक न चालहिं, कासौं कहौं सँदेसनि।' सू० २०५। (वधूका) चलाव या विदा होकर आना।

**चालनी**—स्त्री० आटा इ० चालनेकी चलनी 'गुन तजि अवगुन जाल, गहत नित्य प्रति चालनी।' के० १५१

**चालबाज़**—वि० चालाक, धूर्त। मक्कार। धोखेबाज।

**चालबाज़ी**—स्त्री० धूर्तता, छल।

**चाला**—पु० प्रस्थान, वधूका पहले पहल ससुराल जाना 'चालेकी बातें चलीं सुनत सखिनके टोल। गोयेहू लोचन हँसति बिगसत जात कपोल।' बि० ६०। चलनेकी साइत।

**चालाक**—वि० चतुर, होशियार, धूर्त।

**चालान**—पु० बीजक। माल, रुपया इ० का ब्यौरा।

चालिया—वि० देखो 'चालबाज' ।

चाली—वि० चालाक, उपद्रवी, नटखट । स्त्री० चाल, चलनेका ढङ्ग ( उदे० 'कला' ) ।

चालीस—वि० तीस और दस । पु० चालीसकी संख्या

चालीसा—पु० ४०पद्योंकी कविता । ४०चीजोंका समूह ।

चाल्ह, चाल्हा—स्त्री० एक मछली, चेल्हवा 'यह तो चाल्ह न लागे कोहू । का कहिहो जब देखिहो रोहू ।' प० ६७, 'ततखन चाल्हा एक देखावा ।' प० ६६

चाल्ही—स्त्री० नावका वह पटा हुआ स्थान जहाँ मल्लाह खेनेके लिए बैठता है ।

चाव—पु० लालसा, उत्कण्ठा, प्रेम, दुलार, चाह ( उदे० 'चामर' ), हिम्मत, उत्साह 'भूषन भनत सिव सर-जाकी धाक ते वै काँपत रहत चित गहत न चाव हैं ।' भू० ३७ । लोक-निन्दा 'ब्रज बसिकै सब लाज गँवाई घर घर चाव चलायो ।' हरि०

चावना—सक्रि० चाहना ( सू० २८१ ) ।

चावर, चावल—पु० एक अन्न, तण्डुल ।

चाशनी—स्त्री० पानीमें चीनी इ० घोलकर सुराया हुआ गाढ़ा रस, सीरा । चसका, चाट ।

चाष—पु० चक्षु नेत्र । नीलकण्ठ 'चाएँ दिसा चाषु चरि डोला ।' प० ६१ । चाहा पक्षी ।

चास—पु० खेती, जोताई ।

चासा—पु० किसान, हलवाहा ।

चाह—स्त्री० इच्छा, प्रेम, आवश्यकता, क़दर । चाव । गुप्त भेद, खबर, संवाद 'पुनि सासुर लेइ राखहि तहाँ । नैहर चाह न पाउब जहाँ ।' प० २६, हौं सखि नई चाह एक पाई ।' सूबे० ४६ पु० कूप ।

चाहक—पु० चाहनेवाला, प्रेमी ।

चाहना—सक्रि० चाहसे देखना, निहारना 'सीय चकित चित रामहिं चाहा । भये मोह वस सब नरनाहा ।' रामा० १३५ । खोजना, ढूँढ़ना 'दीनेहूँ चसमा चखनु चाहै लहै न मीचु ।' बि० ६२ । इच्छा करना, प्रेम करना, समझना 'भूपन सब भूपननिमें उपमहि उत्तम चाहि ।' भू० १० । स्त्री० चाह, आवश्यकता '··· जाकी इहाँ चाहना है ताकी वहाँ चाहना ।' ग्वाल

चाहा—पु० एक तरहकी चिड़िया ।

चाहि—अ० से बढ़कर, की अपेक्षा 'कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा ।' रामा० १४०, ( उदे० 'उँजियार' )

चाहिए—अ० मुनासिब है ।

चाही—वि० कूप विषयक । जो कुएँसे सींची जाय ( जमीन ) । वि० स्त्री० चाही हुई । चहेती ।

चाहे—अ० इच्छा हो तो । या तो ।

चिआँ, चियाँ—पु० इमलीका बीज ।

चिउँटा—पु० एक छोटा कीड़ा ।

चिगना—पु० मुर्गी इ० का बच्चा । छोटा बच्चा ।

चिगारी—स्त्री०स्फुलिङ्ग, अग्निखण्ड ।

चिघाड़ना—अक्रि० चीखना । हाथीका चिल्लाना ।

चिचा—स्त्री० इमली, इमलीका बीजा ।

चिचिनी—स्त्री० इमली ( विन० १२० ) ।

चिची—स्त्री० घुँघची ।

चिंज—पु० चिरञ्जीव, लड़का, बेटा 'गिरत गब्भ कोटै गरब्भ चिञ्जी चिञ्जा डर ।' भू० १६४

चिंड—पु० नाचका एक भेद ।

चिंत, चिंता—स्त्री० फिक्र, ध्यान ।

चिंतक—वि० चिन्तन करनेवाला, विचार करनेवाला ।

चिंतन—पु० ध्यान, विचार ।

चिंतना—सक्रि० चिन्तन करना, फिक्र क० (क० बच० १५), ध्यान करना । सोचना, समझना 'रुचै सु कीजै चित्तमें चिन्तहु मित्र अमित्र ।' राम० ४३१ । स्त्री० चिन्ता, ध्यान ।

चिंतनीय—वि० विचारणी, शोचनीय ।

चिंत्य—वि० विचारणीय, शोचनीय, चिन्ता करने योग्य ।

चिंतवन—देखो 'चिन्तन'

चिंता-पल—वि० चिन्तासे व्यग्र, चिन्ता पर 'नमित मुख सान्ध्य कमल लक्ष्मण चिन्ता पलपीछे वानर-वीर सकल' अनामिका ५४९

चिंतामणि—पु० इच्छा-पूरक एक कल्पित मणि ।

चिंतित—वि० चिन्तायुक्त ।

चिंदी—स्त्री० टुकड़ा । धज्जी ।

चिउड़ा, चिउरा—पु० धानको उबालकर व कूटकर बनाया हुआ चर्वण ( रामा० १६४ ) [ छिपिका ।

चिक—स्त्री० तीलियोंका बना पर्दा । क़साई । कलक,

चिकट—वि० जिसपर मैल लपटा हो । गन्दा । पु० एक रेशमी कपड़ा । देखो 'चीकट' ।

चिकटना—अक्रि० मैलसे ढँक आना, चिपचिपा हो जाना

चिकन—पु० बूटी काढ़ा हुआ महीन वस्त्र ।

चिकना—वि० साफ और बराबर । स्निग्ध । स्नेही, अनुरागी । मीठी मीठी बातें करनेवाला ।

चिकनाई—स्त्री० चिकनाहट, फिसलन, स्निग्धता, सजावट, सुन्दरता ( उदे० 'चकचूर' ) ।

चिकनाना—सक्रि० चिकना करना । साफ करना । स्निग्ध करना । अक्रि० चिकना होना, स्निग्ध होना । अनुरक्त होना 'ज्यों-ज्यों रुख रूखो करति त्यों-त्यों चित चिकनाय ।' बि० १५१

चिकनाहट—स्त्री० देखो 'चिकनाई' ।

चिकनियाँ—वि० बना ठना, सुन्दर, छैला 'चोर चोर, चित चोर चिकनियाँ, चातुर नवल किसोर ।' नागरी०,

चिकनी सुपारी—स्त्री०एक तरहकी सुपारी। [(सू०१०८)

चिकरना—अक्रि० ज़ोरसे चिल्लाना, चिंघाड़ना ।

चिकवा—पु० एक रेशमी कपड़ा 'चिकवा चीर मघौना लोने ।' प० १५८ । मांस बेचनेवाला, बूचड़ ।

चिकार—पु० चीत्कार, चिल्लानेकी आवाज 'तब धावा करि घोर चिकारा ।' रामा० २९५

चिकारना—अक्रि० चीत्कार करना, गरजना 'सागरको मद झारि चिकारि त्रिकूटकी देह बिहारि गयो जू ।' राम० ४०४

चिकारा—पु० सारंगीके सदृश एक बाजा । एक बनैला पशु 'चतुर चिकारे चुणि चुणि मारे'—कबीर १५१

चिकित्सक—पु० चिकित्सा करनेवाला, वैद्य, हकीम ।

चिकित्सा—स्त्री० रोगका प्रतिकार, दवा, इलाज ।

चिकुटी—स्त्री० चिमटी, चिकोटी ।

चिकुर, चिकूर—पु० केश, साँप आदि सरीसृप । पहाड़ ।

चिकोटी—स्त्री० देखो चिकुटी' ।

चिक्कट—वि० जिसमें मैल खूब चिपट गया हो, गन्दा । पु० जमा हुआ मेल ।

चिक्कण, चिक्कन—वि० चिकना ।

चिक्करना—अक्रि० चीत्कार करना, चीखना 'लागत बान बीर चिक्करहीं' । रामा० ५०३

चिक्कस—पु० बुलबुल आदिके बैठनेके लिए लोहेकी छड़ इ० का बना अड्डा । जौका आटा ।

चिक्कार—पु० चिकार, चीत्कार । [ चाट ।

चिखना—पु० मद्यपानके बाद खानेकी चटपटी वस्तु,

चिखुरन—स्त्री० खेत निराकर निकाली हुई घास । जोतनेके बाद निकाली हुई घास ।

चिखुरना—सक्रि० जोतनेके बाद घास निकालना ।

चिखुराई—स्त्री० चिखुरनेकी क्रिया या मज़दूरी ।

चिखुरी—स्त्री० गिलहरी 'चूरा चिखुरीके दाँतन बनि हैं नहिं तैसे ।'—दत्त । [नामक कीड़ा ।

चिचड़ा—पु० लटजीरा या अपामार्गका पेड़ । किल्ली

चिचान—पु० बाज़ पक्षी ।

चिचाना, चिचावना, चिचियाना—अक्रि० चिल्लाना 'काल चिचावत है खड़ा,जागु पियारे मिंत ।' साखी७७

चिचोड़ना,चिचोरना—देखो 'चचोरना' ( उदे० 'आग',

चिजारा—पु० कारीगर । [ सुन्द० ६० ) ।

चिट—स्त्री० रुक्का । कागज़ या कपड़ेका टुकड़ा ।

चिटकना—अक्रि० 'चिटचिट' शब्द करना, दरकना, फटना । खीजना ।

चिटकाना—सक्रि० चिढ़ाना । सूखी लकड़ी इ०तोड़ना ।

चिटनवीस—पु० किरानी, लेखक ।

चिट्टा—पु० हानिकारक काम करनेके लिए दी गयी उत्तेजना । वि० सफेद ।

चिट्ठा—पु० लेखा, फर्द, सूची । वह रुपया जो मज़दूरी इ० की तरह बाँटा जाय ।

चिट्ठी—स्त्री० पत्री, पुरजा ।

चिट्ठीपत्री—स्त्री० खतकिताबत, पत्र-व्यवहार ।

चिट्ठीरसाँ—स्त्री० डाकिया, चिट्ठी पहुँचानेवाला ।

चिड़चिड़ा—वि० तनिकमें चिढ़नेवाला, क्रोधी ।

चिड़चिड़ाना—अक्रि० दरकना, 'चिड़चिड़' करना । चिढ़ना, झुँझलाना ।

चिड़ा—पु० चिरवा, गौरैयाका नर ।

चिड़िया—स्त्री० पक्षी ।

चिड़िहार, चिड़िमार—पु० बहेलिया ।

चिढ़—स्त्री० कुढ़न, नफरत ।

चिढ़ना—अक्रि० नाराज़ होना, बुरा मानना, कुढ़ना ।

चिढ़ाना—सक्रि० खिजाना, मुँह बनाना, 'बिराना' ।

चित—पु० चित्त, मन । चितवन, नज़र ।—चढ़ना= ध्यानमें आना, समझ पड़ना 'तब चित चढ़ेउ जो शंकर कहेऊ ।' रामा० ४० ।—चुराना=मोहित करना ।—देना,—धरना=ध्यान देना, मनमें लाना । —में बैठना = मनमें दृढ़ होना ।—होना,—में होना=जी चाहना 'यह चित होत जाऊँ मैं अबहीं यहाँ नहीं मन लागत ।' सू० ।—सेउतारना=भूल

जाना।—से न टलना=न भूलना। वि० इकट्ठा किया हुआ। ढका हुआ। पीठके बल पड़ा हुआ।

चितउन, चितवन—स्त्री० दृष्टि, कटाक्ष 'चित उनकी मूरति वसी, चितउन माहिं लखाय।' वि० २६०

चितकवरा—वि० रङ्गविरङ्गा।

चितचिता, चितचेता—वि० देखो 'चीता'।

चितचोर—वि० चित्तको चुरानेवाला, मोहक।

चितरनहार—पु० चित्रण करनेवाला ( कबीर १३३ )।

चितरना—सक्रि० चित्र बनाना, वेल-बूटे बनाना।

चितरोख—स्त्री० चितरवा नामक चिड़िया।

चितला—वि० चितकबरा। [ ६५ )।

चितवना—सक्रि० देखना, हेरना ( उदे० 'अनैसे', सू०

चितवाना—सक्रि० दिखाना। [ जाता है। मरघट।

चिता—स्त्री० लकड़ियोंका ढेर जिसपर मुर्दा जलाया

चिताना—सक्रि० याद दिलाना, सचेत करना।

चितावनी—स्त्री०सावधान करनेकी क्रिया। [ चेतनता।

चिति—स्त्री० चिता। चुनाई। राशि। देखो 'चित्ती'।

चितेर, चितेरा—पु० चित्रकार 'सून भीतिपर चित्र, रङ्ग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे।' विन० २७६, 'सबै चितेर चित्र के हारे।' प० २३२

चितैना—देखो 'चितौना' ( उदे० 'अन' )।

चितौन—स्त्री० देखो 'चितवन'।

चितौना—सक्रि० देखो 'चितवना'। 'सीनो धकधकत पमीनो आयो देह सब हीनो भयो रूप न चितौत

चित्—स्त्री० चेतन। [ बाएँ दाहिने।' भू० १२७

चित्त—पु० देखो 'चित'।

चित्तर-सारी—स्त्री० चित्रशाला 'जहँ सोने कर चित्तर-सारी। लेइ बरात सब तहाँ उतारी।' प० १३३

चित्ती—स्त्री० चिपटी पीठवाली कौड़ी। मुनिया चिड़िया।

चित्र—पु० तसवीर। तिलक। वि० विचित्र। [ बुँदकी।

चित्रकंठ—पु० कबूतर।

चित्रक—पु० चित्रकार। बाघ। तिलक।

चित्रकार—पु० चित्र बनानेवाला, चितेरा।

चित्रकारी—स्त्री० चित्र बनानेकी विद्या, चित्रकला।

चित्रकाव्य—पु० वह काव्य जिसके अक्षर किसी चित्रमें रखे जा सकें।

चित्रकूट—पु० एक पहाड़, चित्तौरका एक नाम।

चित्रगुप्त—पु० एक पुराणोक्त यमराज जो प्राणियोंके कर्मोंका लेखा रखते हैं। कायस्थोंके मूल पुरुष।

चित्रना—सक्रि० चित्रित करना ( के० १६९ )।

चित्रनेत्रा—स्त्री० मैना।

चित्रपट—पु० वह कपड़ा या कागज इ० जिसपर चित्र

चित्रपटी—स्त्री० छोटा चित्रपट। [ बनाया जाय।

चित्रभानु—पु० सूर्य। अग्नि। मदार।

चित्ररथ—पु० सूर्य, गन्धर्वराज।

चित्रल—वि० देखो 'चितला'।

चित्रांग—वि० जिसकी देहपर चित्तियाँ हों। पु० चीता। सर्प। ईंगुर। हरताल।

चित्रा—स्त्री० एक नक्षत्र। खीरा। चितकबरी गाय। मजीठ। एक तरहका छन्द। वि०चित्रवाली,रूपवाली।

चित्राधार—पु० चित्र रखनेका स्थान, चित्रपट।

चित्रिणी—स्त्री० स्त्रियोंका भेद-विशेष।

चित्रित—वि० जिसपर चित्र बना हो, चित्रयुक्त।

चिरकालिक—वि० दीर्घ कालीन।

चित्रोत्तर—पु० एक काव्यालङ्कार।

चिथड़ा—पु० फटा पुराना कपड़ा, लत्ता।

चिथाड़ना—सक्रि० चिथेड़ करना। [ करना।

चिथाड़ना—सक्रि० चिथेड़ करना, फाड़ना। तिरस्कृत

चिदाभास—पु० चैतन्य रूप परमात्माका आभास।

चिद्रूप—पु० परमेश्वर, आत्मा।

चिनक, चिनग—स्त्री०चुनचुनाहट, जलन, चमक।

चिनगटा—पु० चिथड़ा 'धूरनमेंके बीनि चिनगटा रच्छा कीजै सीतन।' व्यासजी।

चिनगारी, चिनगी—स्त्री० जलती आगका छोटा कण, स्फुलिङ्ग 'बिरहकै चिनगी सो पुनि जरा।' प० ८०

चिनना—अक्रि० दीवार उठाना ( कबीर ७३ )।

चिनाना—सक्रि० चुनवाना, दीवार उठवाना।

चिनार—स्त्री० देखो चिन्हार' (बु०वै० ७८)।

चिनिया—वि०चीन देशका। श्वेत। छोटी जातिका(केला)।

चिनियापोत—पु० एक तरहका कपड़ा (रत्ना० १११)।

चिनियाबादाम—पु० मूँगफली।

चिन्मय—पु० परमेश्वर। वि० चेत, चेतनायुक्त।

चिन्ह—देखो 'चिह्न'।

चिन्हार—वि० परिचित।

चिन्हारि, चिन्हारी—स्त्री० परिचय, जान-पहचान 'जिन आँखिन रूप चिन्हारि भई, तिनको नितही

जागनि है।' आनन्दघन, ( छन्द सं० ३६ )
चिपकना, चिपटना, चिमटना—अक्रि० सटना, गोंद इ०से जुड़ जाना।
चिपकाना—सक्रि० किसी लसदार वस्तुके द्वारा दो वस्तुओंको परस्पर मिलाना।
चिपचिपा—वि० लसदार।
चिपटा—वि० धँसा हुआ। दबा हुआ।
चिप्पड़—पु०किसी चीजका टुकड़ा। छाल इ०का टुकड़ा।
चिप्पी—स्त्री० छोटा चिप्पड़। उपली।
चिबु, चिबुक—स्त्री० ठोडी, 'कर जोरौं चिबु परसि चरन छी मारौं हाथ ऐसि ही करिहौं।' ललित कि०
चिमटना—अक्रि० चिपकना, लिपटना ( गबन १६५ ), पिण्ड न छोड़ना। [ हुआ एक औज़ार।
चिमटा—पु० वस्तुएँ पकड़नेके लिए लोहे इ० का बना
चिमटी—स्त्री० चुटकी, चिकोटी। छोटा चिमटा।
चिमड़ा—वि० देखो 'चीमड़'
चिमनी—स्त्री०धुआँ निकलनेके लिए मकानके ऊपर बनाया हुआ छिद्र। लालटेन या लम्पमें लगानेकी शीशेकी नली।
चिरंजीव—वि० दीर्घायु। पु० पुत्र।
चिरंतन—वि० बहुत दिनोंका पुराना।
चिरंतनता—स्त्री० सब दिन रहनेका भाव, प्राचीनता।
चिर—क्रिवि० बहुत दिनोंतक। वि० दीर्घकालीन। बहुत दिनोंका।
चिरकना—अक्रि० थोड़ा थोड़ा मल बाहर निकालना।
चिरकालिक—वि० दीर्घकालीन।
चिरकुट—पु० चिथड़ा, गूदड़।
चिरचना—अक्रि० चिड़चिड़ाना, क्रुद्ध होना, 'तेहि बार न बार भई बहु बारन खर्ग हने न गिनैं चिरचै'।'
चिरचिटा—पु० अपामार्ग, चिड़चिड़ा। [ के० ३४४
चिरचिरा—वि० देखो 'चिड़चिड़ा'। पु० चिचड़ा।
चिरता—स्त्री० अमरता, बहुत दिनों या सब दिन रहनेका भाव।
चिरना—अक्रि० बीचमेंसे फट जाना, सीधा कट जाना।
चिरनिद्रा—स्त्री० महानिद्रा, मृत्यु, निर्वाण।
चिरमि, चिरमिटी—स्त्री० घुँघची, गुञ्जा 'राखत प्रान कपूर ज्यों वहै चिरमिटी माल।' बि० ४२(बंग०), पाइ तरुनि कुच उच्चपद चिरमि ठग्यो सब गाँउ।' बि० ९९
चिरवाई, चिराई—स्त्री० चिरवानेकी क्रिया या मजदूरी।
चिरवाना—सक्रि० चीरनेके काममें किसीको लगाना।
चिरसात—वि० चिरकालिक।
चिरस्थायी—वि० बहुत कालतक रहनेवाला।
चिरहँटा—पु० बहेलिया, चिड़ीमार ( प० १७ )।
चिराक—स्त्री०, चिराग़—पु० दीपक 'जेती और राजनिके राजनिमें सम्पति है तेती रोज रावके चिराकैं जोति जागती।' ललित० १९६
चिराग़ी—स्त्री० दीप जलानेका खर्च या मजदूरी। समाधिपर चढ़ानेकी भेंट।
चिरातन—वि० चिरन्तन, पुराना, जीर्ण।
चिराना—वि० पुराना 'भरेउ सुमानस सुथल थिराना। सुखद सीत रुचि चारु चिराना।' रामा० २७। सक्रि० फड़वाना। अक्रि० फटना, बीचसे चिर जाना 'मकु गोंहूँ कर हिया चिराना।' प० १८४
चिरायँध—स्त्री० चरबी इ० जलनेकी दुर्गन्ध।
चिरायता—पु० एक पौधा जो दवाके काममें आता है।
चिरायु—वि० चिरकालतक जीनेवाला, दीर्घायु।
चिरारी—स्त्री० चिरौंजी।
चिरिया—स्त्री० चिड़िया, पक्षी।
चिरिहार—पु० बहेलिया, चिड़ीमार 'सुनि बाह्मन बिनवा चिरिहारू। करि पंखिन्ह कहँ मया न मारू।'प० ३४
चिरीखाना—पु० चिड़ियाघर '...देस देसमें बखाने चिरीखाने हरिनाथके।'—हरिनाथ
चिरेता,-रैता—पु० एक ओषधि ( उदे० 'कटजीरा' )।
चिरैया—स्त्री० चिड़िया 'सूर श्यामको यशुदा बोधति गगन चिरैयाँ उड़त लखावत।' सूबे० ५८
चिरौंटा—पु० गौरैया पक्षी, चिड़ा ( ज्योत्स्ना १२ )।
चिरौंजी—स्त्री० अचार नामक फलकी गिरी।
चिलक—स्त्री० चमक, कान्ति 'चिलक चिकनई चटक सों लफति सटक लौं आय। बि० ८४। ठहर ठहर कर उठनेवाली पीड़ा।
चिलकना—अक्रि० चमकना 'चिलकै दुति सूछम सोभति बारू।' राम० ५११। रुक रुककर पीड़ा होना।
चिलका—पु० रुपया।
चिलगोजा—पु० एक फल।
चिलचिलाना—अक्रि० चमकना। चिलचिलाती धूप=तेज़ धूप 'चिलचिलाती धूपको जो चाँदनी देवें बना'—
चिलड़ा—पु० देखो 'चीला'। [ हरिऔध (गुलाब ४७४)

चिलता—पु० एक तरहका कवच ।
चिलबिल—पु० चिलबिल, एक जङ्गली पेड़ ।
चिलबिला बिल्ला—वि० चंचल, नटखट ।
चिलम—स्त्री० तम्बाकू इ० पीनेका चाँड़ीके सदृश आकार-वाला मिट्टीका पात्र ।
चिलमची—स्त्री० खूब चौड़े ओठोंवाला हाथ-मुँह [धोनेका पात्र ।
चिलमन—स्त्री० चिक, परदा ।
चिलवाँस—पु० चिड़िया फँसानेका फन्दा 'बैरिनि सवति दीन्ह चिलवाँसू ।' प० १७२
चिलियानवाला—पु० पञ्जाबका एक स्थान ।
चिल्लड़—पु० जूँके सदृश एक सफेद कीड़ा जो गन्दे कपड़ोंमें पड़ जाता है ।
चिल्ल पों—स्त्री० चिल्लाहट, हल्ला गुल्ला, पुकार ।
चिल्ला—पु० प्रत्यञ्चा । चीला । एक पेड़ । चालीस दिनोंका काल ( रतन० ११ ) ।
चिल्लाना—अक्रि० उच्च स्वरसे बोलना, ज़ोरसे शब्द [निकालना । बकना ।
चिल्लिका—स्त्री० बिजली, वज्र, ( हिम्मत० ११ ) ।
चिल्ली—स्त्री० वज्र, बिजुली । झिल्ली नामका कीड़ा ।
चिल्ही—स्त्री० चील पक्षी ।
चिवुक—दे० 'चिबुक' ।
चिहँक—स्त्री० चिड़ियोंका बोलना, चहक ( पूर्ण ११८)।
चिहुँकना—अक्रि० चौंकना, भड़कना ।
चिहुँटना—सक्रि० चिमटी लेना । चिपटना । चित्त चिहुँटना = चित्तमें पीड़ा उत्पन्न करना ।
चिहुँटनी, चिहुटिनी—स्त्री० घुँघची ( वि० ७२ ) ।
चिहुँटी—स्त्री० चिकोटी, चिमटी । [है ।' पूर्ण १४१
चिहकार—स्त्री० चहक 'हा विहगोंकी नहीं चिहकार
चिहुर—पु० केश, बाल 'बसन कुचील चिहुर लपटाने, देह पीताम्बर बरनी ।' सू० ३४, (अ० ४१, प० २९)
चिह्न—पु० निशान, धब्बा, लक्षण । ध्वजा ।
चिह्नित—वि० चिह्न युक्त । [विरोधका प्रदर्शन ।
चीं चपड़—स्त्री० शब्द या कार्यद्वारा प्रतिकार या
चींचीं—स्त्री० पक्षियों या बच्चोंका मन्द स्वरमें अधिक [बोलना ।
चींटचा, चींटा—पु० चिउँटा ।
चींतना—सक्रि० चित्रित करना । लिखना 'कौरेन सँधिया चींतति नवनिधि'—सू० ४८
चींथना—सक्रि० ( कपड़े इ० ) फाड़ना ।
चीक—स्त्री० चीखनेकी आवाज़ ।
चीकट—पु० एक रेशमी वस्त्र । बहिनकी सन्तानके विवाहमें बहिनको दिया गया कपड़ा इ० । तेलका मैल । वि० गन्दा ।
चीकना—अक्रि० चीख मारना, चिल्लाना 'चीकैं चौंकि चौंकि अति रोवैं नाहिं सोवैं रंच ।'—राम रसायन । वि० देखो 'चिकना' ( उदे० 'अलिक' ) ।
चीखना—सक्रि० चखना, स्वाद लेना, थोड़ी मात्रामें खाना 'निजकर नयन काढ़ि चह दीखा । डारि सुधा विष चाहत चीखा ।' रामा० १२१ । अक्रि० चीख [मारना, चिल्लाना ।
चीखर, चीखल—पु० कीचड़ ।
चीखुर—पु० गिलहरी ।
चीज—स्त्री० वस्तु ।
चीठ—स्त्री० मैल, कीचड़ ( साखी ४१ ) ।
चीठा—पु० लेखा, सूची ।
चीठी—स्त्री० चिट्ठी, पत्री ।
चीड़, चीढ़—पु० एक ऊँचा वृक्ष ।
चीत—पु० चित्रा नक्षत्र । चित्त, मन 'सग रहत सि मेलि ठगौरी हरत अचानक चीत ।' सूबे० ३१८
चीतकार—पु० चिल्लानेकी आवाज, चिकार, शोर । चित्रकार ।
चीतना—सक्रि० चिन्तन करना, सोचना, चेत होना, स्मरण आना । देखो 'चींतना' । [एक सिक्का ।
चीतल—पु० एक तरहका साँप । एक तरहका हिरन ।
चीता—पु० चित्त, मन । एक मांसाहारी पशु । स्त्री० चिन्ता 'मन्दोदरी हृदय करि चीता ।' रामा० ४३१ । सुधबुध । वि० विचारा हुआ, चाहा हुआ । चित चीता = मनचाहा 'वा चकईको भयो चितचीतो, चितौति चहूँदिसि चायसों नाची ।'—देव, 'डोलत खाक मनो रनजीते । भये सबहिंके मनके चीते ।' सू० १८
चीत्कार—पु० चीखने या चिल्लानेकी आवाज़ ।
चीथड़ा, चीथरा—पु० फटा कपड़ा 'तेलसूँ भिंजोइ कै चीथरा लपेटि राखै...' सुन्द० १३१
चीथना—सक्रि० नोंचना, टुकड़े टुकड़े करना ।
चीन—पु० एक कदन्न । सूत । ध्वजा । एक तरहका हिरन
चीनना—सक्रि० चीन्हना, पहिचानना ( सुसु० १२ ), 'लोक लाज कुलकानि तजी सब जामें तुव रुचि चीनी' ललित कि०
चीना—पु० चीनी कपूर, 'कीन्हेसि भीमसेन औ चीना ।

प० २। चिह्न 'छिनमें बरषि प्रलय जल पाटौं खोजु रहै नहिं चीनो।' सूने० १२० स्त्री० दालचीनीका वृक्ष, इसका फूल रोएँदार होता है।
चीनाबादाम—पु० मूँगफली।
चीनिया—वि० चीन देशका।
चीनी—स्त्री० खाँड़, शक्कर।
चीन्हना—सक्रि० पहचानना ( उदे० 'अंबिरथा', रामा० [ १५७ ) ।
चीन्हा—पु० चिन्ह, निशानी।
चीप—स्त्री० मिट्टीका वह खण्ड जो एक बार कुदाल [ चलानेसे निकले।
चीपड़—पु० आँखका मैल, कीचड़।
चीमड़, चीमर—वि० जो खींचने आदिसे न फटे।
चीयाँ—पु० इमलीका बीज।
चीर—पु० वस्त्र। घाव 'तोहि बिनु अंग लाग सर-चीरू।' [ प० १६९
चीरना—सक्रि० फाड़ना।
चीरफाड़—स्त्री० चीरने फाड़नेका कार्य।
चीरवासा—पु० शिवजी।
चीरा—पु० पगड़ी बनानेका एक तरहका लहरियादार कपड़ा 'कुटिल अलक सोहै सीस चीरा लसो है।' दीन० ३। चीर कर बनाया हुआ घाव।
चीरी—स्त्री० चिड़िया। झींगुर।
चील, चील्ह—स्त्री० गिद्धकी तरहका एक पक्षी।
चीलड़, चीलर—पु० देखो 'चिल्लड़'।
चीला—पु० उलटा नामक पकवान।
चील्ही—स्त्री० एक तरहका टोटका '...चील्ही करवाय राई लोन उतरायो है'—रघु० ५५
चीवर—पु० (बौद्ध) भिक्षुओंका पहनावा (आँधी १५)।
चुँगना—सक्रि० देखो 'चुगना'।
चुंगल—पु० पक्षियों या पशुओंका पन्जा। बकोटा, चंगुल।
चुंगी—स्त्री० बाहरसे आयी वस्तुओंपर लगनेवाला महसूल। चुटकीभर वस्तु।
चुँघाना—सक्रि० चुसाना। चूसनेमें प्रवृत्त करना।
चुंडित—वि० चुंडीवाला, चोटीवाला।
चुंडी—स्त्री० चोटी, शिखा।
चुँदरी—स्त्री० देखो 'चुनरी'।
चुंदी—स्त्री० देखो 'चुंडी'। कुटनी।
चुँधलाना, चुँधिआना—अक्रि० देखो 'चौंधिआना'।
चुँधा—वि० जिसकी आँखें छोटी हों। जिसकी दृष्टि क्षीण हो।
चुंबक—पु० एक धातु जो लोहेको खींचती है। कामुक।
चुंबन—पु० चूमनेकी क्रिया, बोसा।
चुंबनकर—वि० चुम्बन करनेवाला।
चुंबना—सक्रि० चुम्बन करना, स्पर्श करना।
चुंबित—स्पर्शित 'बीचियों में कलरव सुख चुंबित प्रणय का था मधुर आकर्षणमय' ( आनामिक )
चुंबिनी—वि० स्त्री० चूमनेवाली।
चुँभना—अक्रि० चुभना, गड़ना, हृदयमें खटकना।
चुअना—अक्रि० चूना, टपकना।
चुआन—स्त्री० नहर, खाई।
चुआना—सक्रि० टपकाना। चुपड़ना, रसयुक्त बनाना।
चुकंदर—पु० एक मूल जो तरकारीके काममें आता है।
चुकचुकाना—अक्रि० पसीजना, कणोंके रूपमें निकलना।
चुकट, चुकटा—पु० चुटकी। चुटकीभर वस्तु 'जगमें भक्त कहावई चुकट चून नहिं देय।' साखी १४५
चुकता—वि० बेबाक।
चुकना—अक्रि० समाप्त होना, बाकी न रहना 'समय चुके पुनि का पछिताने।' रामा० १४२। तै होना। खाली जाना, व्यर्थ होना, चूकना, त्रुटि करना।
चुकरैंड—पु० दो मुँहोंवाला साँप।
चुकाना—सक्रि० तै करना, अदा करना। अक्रि० चूकना, भूल करना 'तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं। देखु बिचारि मातु मन माहीं।' रामा० २१९
चुकिया—स्त्री० कुल्हिया।
चुकौता—पु० ऋण-परिशोध।
चुक्कड़—पु० मद्यादि पीनेका पात्र। पुरवा, कुल्हड़।
चुखाना—सक्रि० गाय दुहनेके पहिले बछड़ेको पिलाना। [ चखाना।
चुगद—पु० मूर्ख व्यक्ति। उल्लू।
चुगना—सक्रि० चोंचसे उठाकर दाना खाना, दाना बीनना।
चुगल, चुगलखोर—पु० पीठ पीछे निन्दा करनेवाला।
चुगली—स्त्री० पीठ पीछेकी निन्दा, झूठी शिकायत।
चुगाना—सक्रि० चिड़ियोंको दाना इ० खिलाना 'कागहिं कहा कपूर चुगाये स्वान न्हवाये गङ्ग।' सू० २३
चुगुल, चुगुलखोर—पु० देखो 'चुगल', 'चुगलखोर'।
चुचकारना, चुचुकारना—सक्रि० पुचकारना, दुलारना 'मनहुँ सरोज बिधु बैर बिरचि कर, करत नाद बाहन चुचुकारे।' सू० १२०। फुसलाना ( सूसु० १४९ )।
चुचाना, चुचुआना—अक्रि० टपकना, निचुड़ना, चूना
चुचुक—पु० स्तनका अग्र भाग। एक देश। [(सू० १८०)।

चुचुकना—अक्रि० पचक जाना, सूखना ।

चुटकना—सक्रि० चाबुक मारना 'करे चाह सों चुटकि कै खरे उड़ौंहे मैन । लाज नवाये तरफरत करत खूँद सी नैन ।' वि० २२४ । सक्रि० चुटकीसे तोड़ना ।

चुटका—पु० चुटकी भर अन्न । बड़ी चुटकी ।

चुटकी—स्त्री० बीचकी अँगुली और अँगूठेके मेलसे बनी स्थिति । चुटकी बजानेकी आवाज । पाँवकी अँगुलीका एक आभूषण । चुटकीभर आटा । —जोड़ना = खुशामद करना 'बारबार तैं जोरि चुटकियाँ, जिन नैननके गुनन बखानै ।' ललित कि० ।—लेना = हँसी उड़ाना, चुभती बात कहना । चुटकीसे दबाना ।

चुटकुला—पु० विलक्षण उक्ति । लटका ।

चुटला—पु० वेणी । चोटीपरका एक आभूषण ।

चुटिया—स्त्री० बालोंकी चोटी, शिखा 'चुटिया सुरझाइ बीच सुमन हीं गुथाऊँ ।' सू० मदन०

चुटियाना, चुटीलना—सक्रि० जख्मी करना ।

चुटीला—वि० अनियारा, चोट पहुँचानेवाला 'भौंहैं गोल गरूर हैं याके नयन चुटीले भारी ।' चाचा हित०। चोट खाया हुआ । पु० छोटी चुटिया ।

चुटुकी—देखो 'चुटकी', चुटुकी दै दै हँसत ग्वाल सब सिरतें देत चलबीर ।' सू० ५९

चुटैल—वि० चोट खाया हुआ, घायल ।

चुड़िहारा—पु० चूड़ी बेचनेवाला ।

चुड़ैल—स्त्री० डायन, कर्कशा स्त्री ।

चुत—वि० च्युत, गिरा हुआ 'ज्यों अनिच्छ तरुतें परै चुत पद महिके माहिं ।' दीन० ८७, ( रतन० ५९ )

चुन—पु० चूर्ण । आटा । चुगनेकी वस्तु, सुए इ०का भोजन ।

चुनचुना—वि० चुनचुनाहट या जलन पैदा करनेवाला ।

चुनचुनाना—अक्रि० जलन पैदा करना, चुभना ।

चुनट, चुनन—स्त्री० शिकन, परत ।

चुनना—सक्रि० बीनना, छाँट लेना, निर्वाचित करना । जोड़ाई करना । (फूल) तोड़ना । सिकुड़न या चुनन डालना 'आपुहि देत जवकवा, गूँदत हार । चुनि पहिराय चुनरिया, प्रान अधार ।' रहीम ३४

चुनरी—स्त्री० रङ्गीन बुँदकीदार साड़ी (उदे० 'अनुहारि') ।

चुनवाना, चुनाना—सक्रि० चिनवाना, चुनन डलवाना। दीवारकी जोड़ाई कराना 'काँकर पाथर जोरिके मसजिद लई चुनाय ।' साखी १८१

चुनाँ चुनीं—स्त्री० ऐसा वैसा । इधर उधरकी बात ।

चुनाई—स्त्री० चुननेकी क्रिया या उसकी मजदूरी। दीवारकी जोड़ाई ।

चुनाव—पु० चुननेका कार्य, निर्वाचन ।

चुनावट—स्त्री० चुनन ।

चुनिंदा—वि० बढ़िया, चुना हुआ ।

चुनियाँ—स्त्री० देखो 'चुनी' ( गुलाब० ६११ ) ।

चुनी—स्त्री० चुन्नी, मानिक इत्यादिका छोटा टुकड़ा। 'लाल लाल चमकत चुनी चौका चिह्न समान ।' बि० २९ (बंग०), 'कनक चुनिन सों लसित नहरनी लिये कर हो ।' रामलला०, 'चीकने कपोल चौका चमकै चुनीसे दन्त....' रवि० २१

चुनौटिया—पु० कालापन लिये हुए लाल रंग 'पहिरै चीर चुनौटिया, चटक चौगुनी होति ।' बि० २५८

चुनौटी—स्त्री० गीला चूना रखनेका बरतन, चूनादानी।

चुनौती—स्त्री० ललकार, बढ़ावा, उत्तेजना (सूबे १८०, [ साखी० १३३) ।

चुन्नन—स्त्री० देखो 'चुनन' ।

चुन्नी—स्त्री० देखो 'चुनी' । ओढ़नी । चमकी या सितारा 'तिलक सँवारि जो चुन्नी रची ।' प० २३४

चुप—वि० मौन । स्त्री० खामोशी ।

चुपका—वि० मौन । क्रोध इ० प्रकट न करनेवाला, [ चुप्पा ।

चुपकी, चुप्पी—स्त्री० खामोशी ।

चुपड़ना, चुपरना—सक्रि० पोतना, लेप करना, ढाँकना, छिपाना । 'चुपरि उबटि अन्हवाइ कै नयन आँजे ।' गीता० २७९, 'दुरत न कुच बिच कचुकी चुपरी सारी सेत ।' बि० ८०

चुपाना—अक्रि० खामोश होना, चुप हो रहना ।

चुप्पा—वि० चुप रहनेवाला, बहुत कम बोलनेवाला ।

चुबलाना, चुभलाना—सक्रि० मुँहमें रखकर धीरे धीरे स्वाद लेना ।

चुभकना—अक्रि० पानीमें डूबना और उतराना ।

चुभकाना—सक्रि० पानीमें बारबार डुबाना ।

चुभकी—स्त्री० गोता, डुबकी 'ले चुभकी तजि एक छिन करत एक सों केलि ।' जगद्० [ लीन होना ।

चुभना—अक्रि० गड़ना, खटकना, हृदयपर असर करना,

चुभाना, चुभोना—सक्रि० गड़ाना, धँसाना ।

चुभीला—वि० चुभनेवाला, मुग्ध करनेवाला 'मंजुल मंजु तानिकी चारु, चुभीली जहाँ सुखमा सरसाई ।' गुलाब०

चुमकारना—सक्रि० चुचकारना, पुचकारना। [६२०
चुर—पु० बैठक। माँद। वि० प्रचुर, बहुत।
चुरकना, चुरगना—अक्रि० चहकना, चीं-चीं करना।
चुरकुट—वि० चूर्णित, चकनाचूर, टुकड़े-टुकड़ेके रूपमें 'उरज तजी कंचुकि चुरकुट भई, कटितट ग्रन्थि हटी।'
चुरकुस—पु०चूर्ण, बुकनी। [सू० मदन, (सूबे २९१)।
चुरचुरा—वि० जो दबानेसे चुरचुर शब्दके साथ टूट जाय।
चुरना—अक्रि० पानीके साथ पकना, सीझना, गरम होना, दग्ध होना 'ता दिनते पीर दीनदयाल किमि धरौं धीर विरहागि दहे अङ्ग रहे चुरि चुरि कै।' दीन० ९
चुरमुर—वि० कुरकुरा 'परवर कुँदरू भूँजे ठाढे। बहुतै घिउ महँ चुरमुर काढ़े।' प० २७३। पु० कुरकुरी चीजोंके टूटनेकी आवाज।
चुरमुरना—सक्रि० चुरमुर शब्द करके तोडना। अक्रि० चुरमुर शब्द करके टूटना।
चुरस—स्त्री० सिकुड़न, शिकन।
चुरा—पु० चूर्ण, बुरादा।
चुराना—सक्रि० चोरी करना। छिपाना। पकाना, खौलाना।
चुरिहार—पु० चूड़ीवाला।
चुरी—स्त्री० चूड़ी 'सरजा समत्थ वीर तेरे बैर बीजापुर बैरी बैयरनि कर चीन्ह न चुरीनके।' भू० ६७
चुरुट—पु० तम्बाकूकी बनी एक तरहकी बत्ती, सिगार।
चुरू—पु० देखो 'चुल्लू' ( सूसु० २६४ )।
चुरैल—स्त्री० चुड़ैल।
चुल—स्त्री० खुजलाहट, तीव्र इच्छा।
चुलबुला, चुलबुलिया—वि० चंचल, शरारती।
चुलाना—सक्रि० चुवाना।
चुलुक—पु० विकट दलदल। चुल्लू 'जयति जयति योगीन्द्र मुनि कुम्भज महा अनूप। देखे ताके चुलुकमें कच्छप मत्स्य सरूप।' गुलाब ( ललित० २०८ )।
चुलूक—पु० चुल्लू 'डूबनको कहूँ एरे मयङ्क तू एक चुलूक हूँ वारि न पावत।'—कलस २६९
चुला, चुल्ली—वि० नटखट।
चुल्लू—पु० अँगुलियों और हथेलीसे बना गड्ढा।
चुल्हौना—पु० चूल्हा।
चुवना—अक्रि० चूना, टपकना। आँसू इत्यादि टपकना ( उदे० 'ओरती' )। सक्रि० चुगना, चोंचसे दाना उठाकर खाना 'मुक्ता मनों चुवत खग खञ्जन चोंचि पुटी न समात।' सू० ७०। टपकाना 'कहै मतिराम कवि लोगनि कौं रीझि करि दीने ते दुरद जे चुवत मदधार हैं।' ललित० ४७
चुवा—पु० चौवा, चतुष्पद ( गाय, बैल, मृग आदि ) 'चारु चुवा चहुँओर चलैं लपटैं झपटैं सो तमीचर तौंकी।' कविता० २३८। मज्जा, हड्डीके भीतरका मांस।
चुवाना—सक्रि० टपकाना ( उदे० 'किनुका' )।
चुसना—अक्रि० चूसा जाना। शक्ति, धन, रस इ० खींच लिया जाना।
चुसनी—स्त्री० एक खिलौना। दूध पिलानेकी शीशी।
चुस्त—वि० कसा हुआ, सुदृढ़, गठीला।
चुहँटी, चुहटी—स्त्री०चुटकी 'ज्यों कर त्यों चुहटी चलति ज्यों चुहटी त्यों नारि।' बि० २६६ ( बङ्ग० )
चुहकना—सक्रि० चूसना ( ग्राम० ४५४ )।
चुहचुहा—वि० चुहचुहाता हुआ, रसयुक्त, चटकीला।
चुहचुहाना—अक्रि०रस चुआना, चहचहाना, कलरव करना।
चुहचुही—स्त्री० एक छोटी चिड़िया ( प० १२ )।
चुहटना—सक्रि० कुचलना, पाँवसे दबाना।
चुहड़ा, चुहरा—पु० देखो 'चूहड़ा', 'चूहरा।'
चुहल—स्त्री० हँसी, विनोद।
चुहलबाज़—वि० मजाकिया, ठट्ठेबाज।
चुहिया—स्त्री०छोटा चूहा।
चुहुकना—सक्रि० चूसना।
चुहुटना—अक्रि० चिपकना।
चुहुटनी—स्त्री० घुँघची।
चूँ—पु० चिड़ियोंके बोलनेकी आवाज।—करना= विरोध करना, विरोधमें मुँहसे शब्द निकालना।
चूँकि—क्रिवि० क्योंकि।
चूँच—स्त्री० चोंच 'बीन्ध्यो कनक पासि सुक सुन्दर चुनै बीज गहि चूँच।' सू० १५५
चूँदरी—स्त्री० चुनरी।
चूँनी—स्त्री० अन्नकण। चुन्नी 'चूनरी सुरङ्ग अङ्ग ईंगुरके रङ्ग देव बैठी परचूँनकी दूकानपर चूँनीसी।' रवि० २०
चूक—स्त्री० खता, भूल। एक तरहका खट्टा पदार्थ। वि० बहुत खट्टा।
चूकना—अक्रि० भूल करना, मौका खोना।
चूची—स्त्री० स्तन, स्तनका अगला हिस्सा।
चूचुक—पु०स्तनका अग्र भाग।

चूज़ा—पु० मुर्गीका बच्चा।
चूड़ांत—क्रिवि० बहुत ज्यादा। वि० सम्पूर्ण, चरम, पराकाष्ठापर पहुँचा हुआ। पु० चरम सीमा।
चूड़ा—पु० चूरा, कड़ा। चिउड़ा। चोटी, जूड़ा। माथा, मुखिया। [ बानेका संस्कार।
चूड़ाकरण—पु० मुण्डन, पहले पहल बच्चेके बाल बन-
चूड़ी—स्त्री० लाख इ० का बना हुआ एक मण्डलाकार गहना जिसे औरतें कलाईपर पहनती हैं।
चूड़ीदार—वि० जिसमें चूड़ीसी बनी हो। पास पास कई लकीरोंवाला ( साड़ी इ० का किनारा )।
चूत, चूतक—पु० आम्रवृक्ष।
चूतड़—पु० नितम्ब। जघाके ऊपर पीछेकी ओरका
चूतिया—वि० बे-समझ, उल्लू। [ मांसल भाग।
चूतिया पंथी—स्त्री० बे-समझी।
चून—पु० चूना 'ज्यों हरदी जरदी तजी, तजी सफेदी चून।' रहीम २०। देखो 'चुन', 'सुन्दर तू मत सोच करै कछु चोंच दई जिन चूनहि देहै।' सुन्द० ४६
चूनर, चूनरी—स्त्री० चुनरी ( उदै० 'चूँनी' )।
चूना—पु० कंकड़, पत्थर आदिकी भस्म (सू० ९९)। अक्रि० टपकना, बूँद बूँद गिरना, स्खलित होना।
चूपड़ी—वि० स्त्री० चुपड़ी हुई 'देखि बिरानी चूपड़ी मत ललचावै जीव।' साखी १७९
चूमना—सक्रि० बोसा लेना।
चूमा—पु० चुम्बन ( सुन्द० १२९ )।
चूमाचाटी—स्त्री० चूम-चाटकर प्रेम प्रकट करना।
चूर—पु० चूर्ण, किसी चीजके बहुत बारीक टुकड़े। बुरादा। वि० निमग्न, तल्लग्न।
चूरन—पु० देखो 'चूर'। बारीक पीसी हुई औषधियोंकी बुकनी। चूर्ण करनेवाला ( सू० १०१ )।
चूरना—सक्रि० टुकड़े टुकड़े करना, तोड़ना 'यत्र तत्र छत्र चारु चौंर चाह चूरियो।' राम० ४८१, 'बादशाह गढ़ चूरा चितउर भा इसलाम।' प० ३३१
चूरमा—पु० घी चीनी मिश्रित पूरीका चूर।
चूरा—पु० कड़ा 'तन अँगुली सिर लाल चौतनी कर चूरा दुहुँ पाइ।' सूबे० ५४। चिउड़ा।
चूरामनि—पु० चूड़ामणि, सिरमें पहननेका एक गहना।
चूर्ण—पु० बुकनी।
चूल—पु० चोटी। स्त्री० किसी लकड़ीका पतला हिस्सा जो जोड़नेके लिए दूसरी लकड़ीके छेदमें ठोंका
चूलिक—पु० लुचुई। [ जाता है।
चूलिका—स्त्री० नाटकका एक अङ्क।
चूल्हा—पु० एक तरहकी भट्ठी जिसपर भोजन पकाते हैं।
चूषना—सक्रि० (किसीका) दूध पीना ( कविप्रि० १३०।
चुष्य—वि० जो चूसा जा सके।
चूसना—सक्रि० जीभ और ओंठद्वारा रस खींचना। शक्ति, धन इ० लेना।
चूहड़ा, चूहरा—पु० चाण्डाल, भङ्गी 'साधू आवत देखि के मनमें करै मरोर। सो तो होसी चूहरा बसै गाँवकी छोर।' साखी १३१, ( १६९ भी )
चूहरी—स्त्री० भङ्गिन (रवि० २२)। चूड़ी बेचनेवाली।
चूहा—पु० मूसा, इन्दुर।
चूहादन्ती—स्त्री० एक आभूषण। [ पिंजड़ा।
चूहादान—पु०, चूहेदानी—स्त्री० चूहा फँसानेका
चेंचें—स्त्री० चिड़ियोंकी आवाज। व्यर्थकी बकवाद।
चेंटुआ—पु० चिड़ियाका बच्चा ( दोहा० १३० )।
चें पें—स्त्री० देखो 'चीं चपड़'।
चेचक—स्त्री० 'माता' की बीमारी।
चेजा—पु० छिद्र, छेद। [ छकरानेवाला।
चेट—पु० दास। पति। नायक और नायिकाकी भेंट
चेटक—पु० नौकर, दूत। शीघ्रता। चाट। जादू (उदै० 'कानि', प० २२१ )। तमाशा।
चेटका—स्त्री० मृत देह जलानेका स्थान, श्मशान, चिता।
चेटकी—पु० जादूगर (कविता० २२५), तमाशा करनेवाला, कौतुकी। [ कहावति चेटी।' के० १००
चेटिका, चेटिकी, चेटी—स्त्री० दासी 'तेरी जग मीच
चेटिया—पु० शिष्य, छात्र 'सब चेटियन ऐसी मन आई। रहै सबै हरिपद चित लाई।' सूबे० ३२
चेटुवा—पु० देखो 'चेंटुआ' ( दोहा० १३० )।
चेत—पु० चेतना, होश, ज्ञान, ख्याल 'नृप हारेउ पहिचान गुरु भ्रम बस रहा न चेत।' रामा० ९१। चित्त 'और कछू माँगौ सुमुखि रुचै जु तुम्हरे चेत।'
चेतन—पु० आत्मा। मनुष्य। ईश्वर। [ के० १००
चेतनता—स्त्री० सजीवता।
चेतना—अक्रि० होशमें आना, सँभलना, सावधान होना 'अब चित चेति चित्रकूटहि चलु।' विन० १ ( सू० २७ )। स्त्री० बुद्धि, होश, स्मृति।

चेतनावान—वि० सचेतन, चेतनायुक्त।
चेतवनि—स्त्री० चितवन। चितावनी।
चेतावनी—स्त्री० देखो 'चतावनी'।
चेतिका—स्त्री० देखो 'चेटका'।
चेत्—अ० अगर।
चेदि—पु० एक देश।
चेना—पु० साँवाँकी जातिका एक अन्न।
चेप—पु० गाढ़ा चिपकनेवाला रस, लासा 'दग खंजन गहि लै गयो, चितवनि चेप लगाय।' वि० ६५ (बङ्ग०)। उत्साह।
चेर, चेरा—पु० दास, नौकर 'ब्रह्म तू हौं जीव तू ठाकुर हौं चेरो।' विन० २६। चेला, शिष्य।
चेराई—स्त्री० शिष्यता, सेवा, दासता 'जो पै चेराई रामकी करतो न लजातो।' विन० ३६६
चेरि, चेरी—स्त्री० दासी (रामा० २०६)।
चेल—पु० चैल, वस्त्र।
चेलकाई, चेलहाई—स्त्री० चेलोंका समूह।
चेला—पु० शिष्य, शागिर्द।
चेल्हवा—स्त्री० एक छोटी मछली।
चेष्टा—स्त्री० अङ्ग-परिचालन, प्रयत्न, इच्छा।
चेहरा—पु० मुखड़ा। मिट्टी या कागजकी बनी राक्षस, बानर आदिके मुखकी नकल।
चेहल्लुम—पु० मुहर्रमके चालीसवें दिनकी एक रस्म।
चै—पु० चय, ढेर, समूह।
चैत—पु० चैत्र मास।
चैतन्य—पु० आत्मा, ज्ञान। प्रकृति, परमेश्वर। चेतनता, सजगता 'जहाँ मदिरा देती चैतन्य'–नीहार।९८ वि० ज्ञानमय। सावधान।
चैती—स्त्री० एक प्रकारका गाना। रब्बीकी फसल। वि० चैत्र मास सम्बन्धी।
चैत्य—पु० मन्दिर, गृह, यज्ञ भूमि। बुद्ध, बुद्ध-मूर्त्ति। बौद्ध विहार। बौद्ध भिक्षु। अश्वत्थ वृक्ष।
चैत्र—पु० फागुनके बादका महीना। देखो 'चैत्य'।
चैन—पु० आराम, आनन्द।
चैपला—पु० एक पक्षी (रतन० ७४)।
चैयाँ—स्त्री० बाहु।
चैल—पु० वस्त्र, चीर (रामा० १९२)।
चैला—पु० लकड़ीका छिलका या छोटा टुकड़ा।
चैली—स्त्री० जलाने इ० के निमित चीरा हुआ लकड़ीका [टुकड़ा।
चोंक—स्त्री० चुम्बनका चिह्न।
चोंगा—पु०एक तरफ बन्द मुँहवाली बाँस इ० की नली।
चोंगी—स्त्री०भाथीमें लगायी गयी हवा निकलनेकी नली।
चोंथना—सक्रि० चुगना, चोंचसे दाना बीनना।
चोंच—स्त्री० पक्षियोंके मुँहका अग्रभाग, चंचु।
चोंटना—सक्रि० खोंटना, तोड़ना।
चोंड़ा—पु० सिर। झोंटा। सिंचाईके लिए खुदा हुआ छोटा कच्चा कुआ।
चोंथना—सक्रि० खोंटना, नोचना, बकोटना।
चोंधर—वि० मूर्ख, छोटी आँखोंवाला।
चोंप—पु० चोप, कोई चिपकनेवाली वस्तु, लासा। देखो ['चोप'।
चोआ—पु० देखो 'चोवा'।
चोई—स्त्री० दालका छिलका जो धोनेसे निकलता है।
चोकर—पु० भूसी। आटे इ० का चालन।
चोका—पु० चूसनेका कार्य।
चोख—स्त्री० शीघ्रता,फुरती। वि० शुद्ध। सच्चा। तेज।
चोखना—सक्रि० चूसकर पीना। थनसे मुँह लगाकर दूध पीना।
चोखनि—स्त्री० चोखनेकी क्रिया 'नियरावनि चोखनि मगहीमें झुकि बछियान छबीली।' ललित कि०
चोखा—वि० खरा, शुद्ध, सच्चा, श्रेष्ठ, पु० भरता।
चोगा—पु० ढीलाढाला लम्बा पहनावा, लबादा।
चोचला—पु० नखरा, हाव-भाव
चोज—पु० चमत्कारपूर्ण उक्ति, व्यंग्यपूर्ण हँसी। 'यह रस रसिक विलास है, जामें अति ही चोज।' चाचाहित०
चोट—स्त्री०प्रहार, आघात। सदमा, सन्ताप।
चोटन पोटना—सक्रि० फुसलाना, मनाना 'तेल उब-टनो आगे दधि धर लालहि चोटत पोटत री।' सूसु० ७९
चोटहा—वि० जिसपर चोट लगनेका चिन्ह हो।
चोटा—पु० राब का पसेव, चोआ।
चोटार—वि० चोट पहुँचानेवाला। चोट खाया हुआ।
चोटारना—सक्रि० चोट करना, प्रहार करना।
चोटिया—स्त्री० चोटी, बालोंकी लट।
चोटियाना—सक्रि० चोटी पकड़ना। चोट मारना।
चोटी—स्त्री० शिखर, चुन्दी, शिखा, गूँधे हुए बालोंकी लट। जूड़ेका एक गहना।

चोटी पोटी—वि० स्त्री० चिकनी चुपडी। बनावटी (बात) 'हमसों सदा दुरावति सो यह बात कहै मुख चोटी पोटी।' सूसु०२०७

चोट्टा—पु० चोरी करनेवाला, चोर।

चोप—पु० उमङ्ग, रुचि, चाव, इच्छा। 'पावा नवल बसन्त पुनि बहु आरति बहु चोप।' प० ९४, (अ० १७)। उत्तेजना। देखो 'चोब'।

चोपदार, चोबदार—पु० सोने या चाँदीसे मढ़ा हुआ डण्डा लेकर चलनेवाला नौकर।

चोपना—सक्रि० मुग्ध होना, आसक्त होना।

चोपी—वि० उत्साही। इच्छुक।

चोब—स्त्री० सोंटा, नगाड़ा बजानेका डण्डा, चान्दी या सोनेसे मढ़ा डण्डा। तम्बूका मुख्य खम्भा।

चोबदार—पु० दरबान, द्वारपाल।

चोर—पु० चोरी करनेवाला, तस्कर।

चोरक़ट—पु० चोर।

चोरटी—स्त्री० स्त्री चोर (उदे० 'गोरटी')।

चोर दरवाज़ा,-द्वार—पु० गुप्त द्वार।

चोरदाँत—पु० अतिरिक्त दाँत जिनके निकलनेमें ज्यादा तकलीफ होती है। बच्चोंका एक मुखरोग।

चोरना, चोराना—सक्रि० चुराना, चोरी करना (दीन० २३८), 'देखु सखी मोहन मन चोरत।' सू० १२३, (सूवे ६४, २९१)

चोरमहल—पु० प्रेमिकाको छिपा रखनेका मकान।

चोरमिहीचनी—स्त्री० आँख मिचौअलका खेल 'दोऊ चोर मिहीचनी खेल न खेल अघाय।' वि० २१९

चोराचोरी—क्रिवि० चोरीसे, चुपके चुपके (रवि०५०)।

चोरिका, चोरी—स्त्री० चुरानेका काम।

चोरीचोरा, चोरी चोरी—क्रिवि० चोरीसे, लुकछिपकर (रतन० ३४)।

चोल, चोली—स्त्री० स्त्रियोंका एक पहनावा 'पास वस्त्र ढाँकै नहीं क्या करे बपुरी चोल।' साखी ११

चोलना—पु० साधुओंका लम्बा कुरता, जामा 'काम क्रोधको पहिरि चोलना कण्ठ विषयकी माल।' सू०११

चोला—पु० देखो 'चोली','चोलना' 'हरियर भूमि कुसुम्भी चोला।' प० १६२। देह, शरीर।

चोल्ला—पु० देखो 'चोला'।

चोवा—पु० चोआ। एक सुगन्धित द्रव्य 'अतर गुलाब रस चोवा घनसार सब सहज सुवासकी सुरति बिसराती है।' भू० १५४

चोषण—पु० चूसनेकी क्रिया या भाव।

चोषना—सक्रि० देखो 'चोखना', दूध पीना 'केशोदास मृगज-बछेरू चोष बाघिनीन, चाटत सुरभि बाघ बालक बदन है।' राम० ५१८

चोष्य—वि० चूसने लायक।

चौंकना—अक्रि० भड़कना, झिझकना, चकित होना, सावधान होना (मुद्रा० ११५)। वि० भड़कनेवाला 'बैल चौंकना जोतमें औ चमकीली नार। ये बैरी हैं जानके कुसल करै करतार।' घाघ

चौंटना—सक्रि० चुटकीसे तोड़ना 'मनु लुटि गो लौटनु चढ़त, चौंटत ऊँचे फूल।' बि० २८८

चौंडेल—पु० पर्देदार डोला (बु० वै० ८०)।

चौंध—स्त्री० तिलमिली, तेज़ रोशनीके सामने नज़रका न ठहरना 'चितवत मोहिं लगी चौंधीसी....' गीता०३४६

चौंधना—अक्रि० चकाचौंध उत्पन्न करना, ज़ोरसे चमकना 'की दामिनि चौंधति चहूँदिस की सुभग पीत पट फेरनि।' सू० १३५। चौंधिया जाना 'उठा चौंधि राघव चितहरी।' प० २२२

चौंधियाना—अक्रि० चकाचौंध होना, चमक इ० के कारण दिखायी न पड़ना।

चौंधी— देखो 'चौंध'।

चौंप—पु० चोप, इच्छा 'कबीर सोया क्या करै, जागनकी करु चौंप।' साखी १७४

चौंर—पु० चँवर 'भर्तभये प्रभु सारथि सोभन। चौंर धरे रवि-पुत्र विभीषन। के० २७। झुमका, फुँदना 'तापै चहूँ दिसि चन्द छपा से सुसोभित चौंर घने लटकाइये।' मुद्रा० ४३

चौंराना—सक्रि० चँवर करना। झाड़ू देना।

चौंरी—स्त्री० बेणी बाँधनेकी डोरी। मक्खियाँ उड़ानेके लिए घोड़ेके बालोंका गुच्छा।

चौआ—पु० चार बूटियोंवाला ताशका पत्ता। चार अङ्गुलकी माप। चौपाया।

चौआई—स्त्री० चारों तरफसे बहनेवाली हवा। अफवाह।

चौआना—अक्रि० चकित होना, सकपका जाना।

चौक—पु० चौकोर जगह, आँगन 'चौकमें चौकी जराय जरी तेहि पै खरी बार बगारत सौंधे।' पदमा०। अर्द्ध

अबीर आदिकी लकीरोंसे बनाया गया चौखूँटा चित्र। 'बीथी सकल सुगन्ध सिंचाई। गजमनि रचि बहु चौक पुराई।' रामा० ५४०। सामनेके चार दाँत 'चमकहिं चौक बिहँस जौ नारी।' प० २३६। चौसर खेलनेका कपड़ा। चौकड़ी। चार वस्तुएँ।

चौकठ—स्त्री० किवाड़के पल्ले लगानेका ढाँचा। दहलीज।

चौकठा—पु० तसवीर इत्यादि मढ़नेका चार लकड़ियोंका [ढाँचा।

चौकड़ा—पु०कानमें पहननेकी एक तरहकी बाली।

चौकड़ी, चौकरी—स्त्री० छलाँग, कुलाँच। चतुर्युगी, चारका समूह। गुट (जीव० २१०)। चार घोड़ोंकी [गाड़ी।

चौकन्ना—वि० होशियार, सतर्क।

चौकस—वि०पूरा, ठीक। होशियार, सचेत। [निगरानी।

चौकसाई, चौकसी—स्त्री० होशियारी, सावधानी,

चौका—पु० सामनेके चार दाँतोंकी पंक्ति 'लाल लाल चमकत चुनी चौका चिह्न समान।' बि० ३९। लीपी हुई जगह। सीसफूल। चार बिन्दियोंवाला पत्ता। आटे आदिकी लकीरोंसे बना चौखूँटा चित्र 'चौके भाँति अनेक पुराई। सिंधुर मनिमय सहज सुहाई।' रामा० १५६।—लगाना=चौपट करना।

चौकी—स्त्री० पत्थर या लकड़ीका चौखूँटा आसन (उदे० 'चौक')। पहरा (रतन २४)। जादू, एक तरहका जड़ाऊ ताबीज़ 'चौकीकी चमकनपर डारूँ स्वेत दामिनी वारि।' चाचा हित०, 'सुभग हमेल कनक अँगिया नग नगन जरितकी चौकी।' सूबे० १४३

चौकीदार—पु० पहरेदार।

चौकोन, चौकोना—वि० चौखूँटा, चार कोनेवाला।

[च]ौकोर—वि० चौकोना, चौखूँटा।

[च]ौखट—स्त्री० द्वारमें लगी चार लकड़ियोंका ढाँचा,देहरी।

[च]ौखटा—पु० लकड़ीके चार टुकड़ोंका बना तसबीर इ० का ढाँचा।

[च]ौखानि—स्त्री० चार प्रकारकी सृष्टि (उद्भिज्ज, अण्डज, स्वेदज, पिण्डज) 'जाके उदर लोकत्रय जल, थल, पञ्चतत्व चौखानि।' सू० ७३

[चौ]खूँटा—पु० चौकोना।

[चौ]गड्डा—पु० जहाँ चार गावोंकी सीमाएँ या चार रास्ते [मिलते हों।

[चौ]गड़ा—पु० खरगोश।

[चौ]गान—पु०एक तरहका गेंदका-खेल (साखी ३७), 'एक काल अति रूपनिधान। खेलनको निकरे चौगान।' के० १५३। गेंद खेलनेका मैदान 'यहि विधि गये राम चौगान। सावकाश सब भूमि समान।' के० १४५। चौगान खेलनेकी लकड़ी (गीता० २९८, सूसु० ९३), 'आजु खड्ग चौगान गहि करौं सीस-रिपु गोइ।' प० ३१८

चौगिर्द—क्रिवि० चारो तरफ।

चौगुन, चौगुना, चौगून—वि० चतुर्गुण।

चौगोड़ा—पु० खरहा। वि० चार टाँगोंवाला।

चौगोड़िया—स्त्री० ऊँची छोटी चौकी जो निसेनी इ० का काम दे। [की टोपी।

चौगोशिया—वि०चार कोनेवाला। स्त्री० एक तरह-

चौघड़—देखो 'चौपड़'।

चौघड़ा—पु० एक तरहका बाजा। दे० 'चौघरा'।

चौघर—वि० सरपट (चाल)।

चौघरा—पु० चार खानोंवाला पात्र।

चौघोड़ी—स्त्री० चार घोड़ोंकी गाड़ी।

चौचंद—पु० चवाव, निन्दा, बदनामी। हल्लागुल्ला, झगड़ा 'बनि-बनि बावनबीर बढ़त चौचन्द मचावत।' [(रत्ना०२८०)

चौचंदहाई—वि०स्त्री०निन्दा करनेवाली।

चौड़ा—वि० फैला हुआ, चकरा या चकला।

चौड़ान—स्त्री० चौड़ाई, विस्तार। [प० १६०।

चौडोल—पु० एक बाजा 'आस पास बाजत चौडोला।'

चौतनियाँ—स्त्री० चौबन्दी, चोली। बच्चोंकी टोपी।

चौतनी—स्त्री० चौगोशी टोपी (रामा० १३३, सूबे० ५४), 'लाल झँगा शिर चौतनी चारु लसैं कटिमें पटपीत सु काछे। राम रसायन

चौतरा—पु० चबूतरा 'आई बुलाय कै चौतरा ऊपर ठाढ़ी भई सुख सौरभ सानी।'—रघुनाथ

चौथ—स्त्री० मराठोंका एक कर। चतुर्थी, पखवारेका चौथा दिन।—का चाँद=भाद्र शुक्ल चतुर्थीका चन्द्रमा। इसके देखनेसे झूठा कलंक लगता है, ऐसा लोगोंका विश्वास है। 'तौ परनारि लिलार गुसाँई। तजहु चौथ चन्दाकी नाईं।' रामा० ४३४।वि०चतुर्थ।

चौथपन, चौथापन—पु० चौथी अवस्था, वृद्धावस्था 'पितहिं बुझाइ कहहु बलि सोई। चौथेपन जेहि अजसु न होई।' रामा० २१९

चौथा—वि० चतुर्थ।

चौथिया—पु० चौथे दिन आनेवाला ज्वर। एक नाप।

चौथी—स्त्री० विवाह हो चुकने पर चौथे दिनकी एक रीति।

चौदंता—वि० चार दाँतोंवाला, उद्दंड। पु० चार दाँतोंवाला हाथी ( स्यामका ) 'दूवौ आइ भिरे चौदंता।' [ प० २१८

चौदस—स्त्री० चतुर्दशी।

चौदह—वि० तेरह और एक। पु० चौदहकी संख्या।

चौदाँत—पु० दो हाथियोंकी लड़ाई।

चौधराना—पु० चौधरीका पद या पुरस्कार।

चौधरी—पु० जाति या समाजका मुखिया।

चौधारी—स्त्री० चारखानेका कपडा।

चौप—पु० देखो 'चोप'। 'जब लगि मन मिलयो नहीं तब नची चौपके नाचरी।' सूबे० ११७

चौपट—वि० नष्ट-भ्रष्ट, तबाह 'तोहि पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ।' रामा० ४६६। चारों ओरसे खुला हुआ।

चौपटहा, चौपटा—वि० नष्ट-भ्रष्ट करनेवाला।

चौपड़—स्त्री० एक खेल।

चौपतना—सक्रि० तह लगाना।

चौपथ—पु० चौमुहानी, चौराहा।

चौपद—पु० चौपाया।

चौपरतना—सक्रि० तह लगाना।

चौपहल,चौपहला, चौपहलू—वि० चार बाजुओंवाला।

चौपाई—स्त्री० एक सुप्रचलित छन्द जिसके प्रति चरणमें सोलह मात्राएँ होती हैं।

चौपाया—पु० चार पाँवोंवाला पशु।

चौपार, चौपाल—पु० बैठक। दालान 'बिसकरमै सो हाथ सँवारा। सात खण्ड सातहिं चौपारा।'प० १३८ एक तरहकी पालकी।

चौपुरा—पु० वह कुआँ जिसमें एक साथ चार मोट चल

चौफला—वि० चार फलोंवाला ( चाकू इ० )। [ सकें।

चौफेर—क्रिवि० चारों तरफ।

चौबंदी—स्त्री० एक तरहकी चुस्त बण्डी।

चौबगली—स्त्री० एक तरहकी मिर्जई।

चौबच्चा—देखो 'चहबच्चा'।

चौबाई—स्त्री० चारों तरफसे बहनेवाली हवा। उड़ती खबर।

चौबारा—पु० कोठेके ऊपरका बँगला। खुली बैठक 'मनिमय रचित चारु चौबारे। रामा० २४२।

चौबे—पु० ब्राह्मणोंकी एक उपाधि या शाखा।

चौबोला—पु० छन्द विशेष।

चौभड़, चौभर—पु० खानेकी वस्तु चबानेका चौड़ा दाँत।

चौमार्ग—पु० चौराहा, चौरस्ता।

चौमासा—पु० वर्षाके चार मास।

चौमुख—क्रिवि० चारों तरफ। वि० चार मुखोंवाला।

चौमुहानी—स्त्री० चौराहा।

चौमेड़ा—पु० चार सीमाओंके मिलनेका स्थान।

चौमेखा—पु० दण्डका एक प्राचीन प्रकार। वि० जिसमें चार मेखें हों।

चौरंग—पु० तलवार चलानेका एक तरीका। वि० तलवारके आघातसे खण्डित।

चौर—पु० डबरा, खादर। चोर।

चौरठ, चौरठा—देखो 'चौरेठा'।

चौरस—वि० बराबर, समथल।

चौरसाना—सक्रि० बराबर करना।

चौरस्ता, चौरहा—पु० चौमुहानी।

चौरा—पु० चबूतरा, वेदी। खुली बैठक। बोड़ा।

चौराई—स्त्री० देखो 'चौलाई'।

चौरासी—वि० अस्सी और चार। पु० ८४ चौरासी ला[ख] योनि 'भ्रमत चौरासी यह जीव अविनासी ..' दीन १५५। एक तरहका घुँघरू 'चँवर लाग चौरासी बाँधे

चौराहा—पु० चौमुहानी, चौमार्ग। [ प० २५

चौरी—स्त्री० वेदी, छोटा चौरा ( सूबे० ४२६ )।

चौरेठा—पु० भिगोकर पीसा हुआ चावल। चावल

चौलकर्म—पु० चूड़ाकरण संस्कार। [ पिसान

चौलाई—स्त्री० एक तरहका साग।

चौवा—पु० चार बूटियोंवाला पत्ता। चार अङ्गुलियों समूह। चार अङ्गुलकी माप। पशु।

चौस—पु० चार बार जोता हुआ खेत।

चौसई—स्त्री० गजी 'जाके खासा मलमल साफनके परे ताके आगे आनि करि चौसई रखाइये।' सुन्द०।

चौसर—पु० चौपड़का खेल। पु० चार लड़ोंका हार 'चौसर चमेली चारु पहिर सिंगार हार लची कुच जीति लीनी है फलनियाँ।' रवि० २६

चौसिहा—पु० चार गाँवोंकी सीमाओंके मिलनेकी जग[ह]

चौहट, चौहट्ट—पु० वह जगह जहाँ चारों तरफ दू[कानें] हों, चौक। चौराहा 'चौहट सुन्दर गली सुहा[ई] सन्तत रहहिं सुगन्ध सिंचाई।' रामा० ११८

चौहरा—वि० चार तहोंवाला, चौगुना 'दुहरे चौहरे भूपन जाने जात।' बि० २८०

चौहैं—क्रिवि० चारों तरफ।
च्यवन—पु० एक ऋषि। धीरे धीरे चूना।
च्युत—वि० चुआ हुआ, भ्रष्ट, विमुख।
च्युति—स्त्री० गिरना, पतन, स्खलन।
च्यूत—पु० आमका वृक्ष या फल।
च्योनो—पु० घरिया ( भ्र० १२९ )।

# छ

छंग—पु० गोद, उछङ्ग ( सू० २१ )।
छंगा, छंगू—वि० छः अँगुलियोंवाला।
छँगुनिया, छँगुली—स्त्री० कनिष्ठिका, सबसे छोटी [अँगुली।
छंछौरी—स्त्री० एक पकवान।
छँटना—अक्रि० छिन्न होना, अलग होना, चुना जाना।
छँटनी—स्त्री० छाँटनेकी क्रिया, सफाई (जीव० २४८)।
छँटा—वि० ( घोड़ा या गदहा ) जिसके पिछले पैर रस्सीसे बाँधे गये हों।
छँटाई—स्त्री० छाँटनेकी क्रिया, छाँटनेकी मजदूरी।
छंडना—सक्रि० छाँटना। छोड़ना 'जानि सबै गुण दोष-न छण्डै।' के० ९०
छँड़ाना—सक्रि० छुड़ाना,मुक्त कराना 'ऋषि हैं नहीं,कुश है नहीं लव लेइ कौन छँड़ाय।' के० ३२३, (सू० ७७)
छंद—पु० वर्ण, मात्रादिकी गणनाके अनुसार रचित वाक्य। वेद-वाक्योंका भेद। स्वेच्छाचार। इच्छा। समूह। छल, कपट। चेष्टा, व्यवहार 'घाट धर्‌यो तुम इहै जानि कै करत ठगनके छन्द।' सूबे० १४४। चालबाजी, युक्ति। छलछंद = धोखेबाजी।
छँदक—पु० छल। सिद्धार्थके सारथीका नाम। वि० छली।
छंदना—अक्रि० पैरोंका रस्सीसे बाँधा जाना।
छंदबंद—पु० धोखा, कपट।
छंदी—वि० छलिया। स्त्री० हाथमें पहननेका गहना।
छंदीबद्ध—वि० जिसकी रचना पद्यमें की गयी हो।
छः—वि० चार और दो। पु० ६ की संख्या।
छ—वि० चार और दो। चंचल। स्वच्छ। पु० काटना। काटा हुआ अंश, खंड। गृह। ढकना। छःकी संख्या।
छई—स्त्री० क्षय रोग। वि० नष्ट होनेवाला।
छक—स्त्री० नशा, तृप्ति, लालसा 'मेरे छक है गुननकी सुनो खोलि कै कान।' चाचा हित०, (व्रज० ३९०)
छकड़ा—पु० बैलगाड़ी।
छकड़िया—स्त्री० छः कहारोंकी पालकी।
छकड़ी—स्त्री० देखो 'छकड़िया'। चारपाई बुननेका एक तरीका। छःका समूह।
छकना—अक्रि० तृप्त होना, अघाना। मतवाला होना 'भेंटती मोहि भटू केहि कारन कौनकी धौं छविसों छकती हो।' देव। अक्रि० हैरान होना, चकराना।
छकाछक—वि० परितृप्त, परपूर्ण। नशेमें चूर।
छकाना—सक्रि० तङ्ग करना, चक्करमें डालना। खूब खिलाना। मद्य पिलाकर उन्मत्त करना।
छकीला—वि० छका हुआ, मस्त 'छबीले छकीले अरुनी-लेसे नसीले आली, नैना नँदलालके नचीले औ नुकीले हैं।' ललित कि० [*करना।
छकुर—पु० फसलका छठा भाग जमींदारके लिए पृथक्*
छक्का—पु०छः बिन्दियोंवाला पत्ता, जुएका एक दाँव, जुआ। होश।—पंजाभूलना = होश गुम होना, [बुद्धिका काम न देना।
छग, छगड़ा—पु० बकरा।
छगन—पु० नन्हाला प्यारा बच्चा। छोटे बच्चेके लिए प्रेमका शब्द।—मगन = बच्चोंके लिए प्यारका शब्द। हँसता खेलता बच्चा 'कहा काज मेरो छगन मगनको नृप मधुपुरी बुलायो।' सू० १८८
छगल—पु० बकरा। एक पेड़।
छगुनी—स्त्री० देखो 'छँगुनिया'।
छछिआ, छछिया—स्त्री० छाँछ। छाँछ पीनेका छोटा बर्त्तन 'ताहि अहीरकी छोहरियाँ छछिया भर छाँछ पै नाच नचावैं।' रसखानि
छछूँदर—पु० चूहेकी तरहका एक जन्तु। साँप छछूँदर की गति=ऐसी स्थिति जिसमें दोनों ओर हानि या रुकावट हो 'धरम सनेह उभय मति घेरी। भइ गति साँप छछूँदर केरी।' रामा० २२५[1]
छजना—अक्रि० अच्छा लगना, शोभा देना ( कलस २२५ )। ठीक जँचना।
छजाना—सक्रि० बनाना, छाना, स्थान बनाना 'छजा

मृदु दुरित छज्जों का छाज' गुंजन ५३

छज्जा—पु० दीवारके बाहर निकला हुआ कोठेका भाग। ओलती, दीवारके बाहर निकला हुआ छतका भाग। 'छज्जे महलन देखिके मन हरप बढ़ावत।' सूबे० २७७

छटंकी—स्त्री० छटाँककी माप या वटखरा।

छटकना—अक्रि० सटकना, दूर होना, उछलना।

छटकाना—सक्रि० छटक जाने देना, छुड़ाना, बलपूर्वक खींच लेना।

छटपटाना—अक्रि० व्याकुल होना, तड़फना।

छटपटी—स्त्री० बेचैनी। आकुलता।

छटाँक, छटाक—स्त्री० पावका चतुर्थ भाग।

छटा—स्त्री० शोभा, छवि, प्रकाश। बिजली। लड़ी, सर 'मोतिनकी बिथुरी शुभ छटैं। हैं उरझी उरजातन लटैं।' के० २६५

छटैल—वि० छँटा हुआ, छुटा हुआ, धूर्त्त, चालाक।

छट्ठी, छठी—स्त्री० जन्मसे छठा दिन 'छठी छत्रपतिनको जीत्यो भाग अनायास जीत्यो नामकरनमें करन प्रवाहको।' भू० २। छठीमें न पड़ना=प्रकृतिमें न होना, भाग्यमें न होना 'पढ़िबो पर्‌यो न छठी छमत रिगु जजुर अथर्वन सामको।' विन० ३७४

छठ—स्त्री० पाखकी छठी तिथि।

छठा—वि० पाँचवेंके बादका।

छड़—स्त्री० सीधा पतला डण्डा।

छड़ना—सक्रि० छोड़ना 'बाँह तुम्हारी नेकु न छड़िहौं महरि खीझिहैं हमको।' सूबे० ७८

छड़ा—पु० पैरका एक गहना, लच्छा।

छड़िया, छड़ीदार—पु० द्वारपाल, डेवढ़ीदार 'द्वार खड़े प्रभुके छड़िया तहँ भूपति जान न पावत नेरे।' सुदामा० ६।

छड़ी—स्त्री० हाथमें लेनेकी पतली लकड़ी। झण्डी।

छत—क्रिवि० रहते हुए, होते हुए, (उदे० 'अछत')। पु० क्षत, घाव। स्त्री० पाटन, दीवारोंके ऊपर पाटा हुआ फर्श।

छतगीरी—स्त्री० छतसे सटाकर टँगा हुआ कपड़ा, चँदोवा।

छतना—पु० पत्तोंका बना छाता, (मधुमक्खी आदिका) छाता 'रूख बानर भेदि तत्क्षण लक्षधा छतना करे।' राम० ४८९। अक्रि० रहना (कबीर० १९१)।

छतनार-नारा—वि० (छाते इ० की तरह) फैला हुआ 'छतनारे वृक्षोंकी छाया'—आँधी १

छतरी, छतुरी—स्त्री० पत्तोंका बना छाता। छाता। चँदोवा 'मण्डप कञ्चनको एक सोहै। सेत तहाँ छतुरी मन मोहै।' के० १७०। दे० 'छत्री'।

छतवंत—वि० क्षतयुक्त (कलस १९०)।

छता—पु० छाता।

छति—स्त्री० हानि, नुकसान।

छतिया—स्त्री० छाती।

छतियाना—सक्रि० (बन्दूक छोड़नेके लिए उसका कुन्दा) [सीनेके पास ले जाना।

छतिवन—पु० एक पौधा जो प्रायः दवाके काममें आता है।

छतीसा—वि० चालबाज़, चतुर। धूर्त्त।

छत्ता—पु० छतरी। मधुमक्खी आदिके रहनेका घर। कमलका बीज-कोष। छत्रसाल।

छत्तीसा—पु० नाई। वि० धूर्त्त, चालाक।

छत्तीसी—वि० स्त्री० कुलटा, छलछन्दी।

छत्र—पु० राजाओंका छाता। छतरी। कुकुरमुत्ता।

छत्रक—पु० कुकुरमुत्ता (रामा० १३८, ब्रज० ९१)।

छत्रधर, धारी—पु० छत्र धारण करनेवाला, राजा। राजाके ऊपर छाता लगानेवाला नौकर।

छत्रपति—पु० राजा।

छत्रबंधु—पु० निम्न श्रेणीका क्षत्रिय।

छत्रभंग—पु० अराजकता। राजाका पतन।

छत्रसाल—पु० बुन्देलखण्डके प्राचीन नरेश।

छत्री—पु० क्षत्रिय। स्त्री० महलकी बुर्जी, छतरी 'लसै पीत छत्री मढ़ी ज्वाल मानो।' राम० ३५१। वि० छत्र धारण करनेवाला।

छदंब, छदम—पु० बहाना, छल, गोपन 'लगत न लाज लजावत सन्तन करतहिं दम्भ छदम्ब बिहानी।' ललितकि०

छद—पु० आवरण, पङ्ख, पत्ता।

छदन—पु० पक्षियोंका पङ्ख। पत्ता। ढकना।

छदाम—पु० पैसेका चतुर्थांश, 'दुकड़ा'।

छद्म—पु० छल। छिपाव। बहाना, मिस।

छद्मवेश—पु० बनावटी वेश।

छद्मी—वि० कपटी, बनावटी वेश धारण करनेवाला।

छन—पु० क्षण। समय। अवसर। उत्सव, आनन्द।

छनक—पु० एक क्षण, थोड़ी देर। स्त्री० झनक, झनझनाहट। भड़क। फुर्ती।

छनकना—अक्रि० पानी आदिका जल जाना, उड़ जाना

'अब नहिं बचै क्रोध नृप कीन्हों जैहै छनक तवा ज्यों पानी।' सूबे० २५० । झनझनाना । बिचकना, भड़कना।
छनक मनक—स्त्री० गहनोंकी आवाज़ । सजधज ।
छनकाना—सक्रि० पानी आदिको जलाकर उड़ा देना । 'छन छन' शब्द उत्पन्न करना। भड़काना, बिचकाना ।
छनकार—स्त्री० 'छनछन' शब्द का होना, छनछनाहट।
छनछनाना—अक्रि० 'छन छन' शब्द होना।
छनछवि—स्त्री० बिजली ।
छनदा—स्त्री० रात्रि 'दिन छनदा छाकी रहत, छुटत न छिन छवि छाक ।' बि० ९२ । बिजली (मति० ८१)।
छनन मनन—पु० खौलते हुए घी या तेलमें पकनेवाली चीज़ डालनेसे उत्पन्न शब्द ।
छनना—अक्रि० छोटे छोटे छिद्रोंसे होकर निकलना, साफ हो जाना । छिद जाना । घीमें पकना । पु० छाननेका कपड़ा ।
छनभंगु—वि० क्षणभरमें नष्ट होनेवाला, नाशवान् 'राम काज छनभंगु शरीरा ।' रामा० २९०
छनिक—पु० एक क्षण। क्रिवि० चणभर। वि० अनित्य, एक क्षण रहनेवाला ।
छन्न—वि० ढका हुआ। लुप्त । पु० देखो 'छनन मनन'। तपी हुई चीजपर पानीका छीटाइ० पड़नेसे उत्पन्न शब्द।
छप—स्त्री० पानीमें किसी चीजके गिरनेका शब्द ।
छपका—पु० छींटा । छापा । कबूतर फँसानेका जाल ।
छपटाना—सक्रि० चिपकाना, लगाना ( ग्राम० २२ ) ।
छपद—पु० षट्पद, भौंरा 'जीते जोर जंग अति अतुल उतंग तन दूनी श्याम रंग छवि छपदनि छायेतें।' [ ललित० ७४
छपन—पु० संहार, नाश ।
छपनहार—वि० नाश करनेवाला ( कविता० १९३ ) ।
छपना—अक्रि० छिपना (उदे० 'गोपीत'), 'ग्वाल कवि० कहै मृगमदके धुकाये धूम ओढ़ि ओढ़ि धार भार आगहू छपीसी जाइ ।'–ग्वाल । छापा जाना ।
छपरखट, छपरखाट—स्त्री० मसहरीवाला पलंग ।
छपर छपर—वि० तराबोर 'बरसै मेह चुवहिं नैनाहा । छपर छपर होइ रहि बिनु नाहा ।' प० १७२
छपरबंद—वि० देखो 'छप्परबंद' ।
छपरबंदी—स्त्री० छप्पर छानेका काम या मजदूरी ।
छपरी—स्त्री० झोपड़ी ।
छपवैया—पु० छापने या छपवानेवाला ।
छपा—स्त्री० रात्रि ।
छपाई—स्त्री० छापनेका काम या मजदूरी ।
छपाकर, छपानाथ—पु० क्षपाकर, चन्द्रमा ।
छपाका—पु० पानीपर किसी चीजके गिरनेका शब्द ।
छपाना—सक्रि० छिपाना 'जहँ जुगुतिसों आनको कहिए आन छपाय।' भू० ३२ । अक्रि० लगा रहना ( उदे० 'कीचर' ) । सक्रि० चिह्नित कराना, मुद्रित कराना ।
छपाव—पु० छिपाव, दुराव ।
छप्पय—पु० छः चरणोंवाला एक छन्द, षट्पदी ।
छप्पर—पु० छाजन, आच्छादन ।
छप्परबंद—वि० जो घर बनाकर रहने लगा हो।आबाद। पु० एक जाति, छप्पर छानेवाला ।
छब, छबि—स्त्री० शोभा, रूप ।
छबिधर—वि० सुन्दर ।
छबिमान—पु० सुन्दर ।
छबिवंत—वि० शोभायुक्त, रूपवान् ।
छबीला—वि० सुन्दर, शोभायुक्त ।
छबुंदा—पु० एक तरहका विषैला कीड़ा ।
छम—वि० योग्य, समर्थ । पु० शक्ति, बल । स्त्री० पानी बरसने या घुँघरू इत्यादि बजनेकी आवाज़ ।
छमक—स्त्री० (स्त्रियोंकी) चालढाल सम्बन्धी कृत्रिमता । ठसक ।
छमकना—अक्रि० छमछम करना । ठमकना ।
छमछम—स्त्री० देखो 'छम' स्त्री० । क्रिवि० 'छमछम' करते हुए ।
छमना—सक्रि० क्षमा करना 'छमहु चूक अनजानत केरी ।' रामा० १५२
छमा—स्त्री० क्षमा, माफी ।
छमाई—स्त्री० क्षमा करनेका काम 'करहु नाथ अपराध छमाई । रघु० [ गहनोंकी झनकार ।
छमाछम—क्रिवि० 'छमछम' शब्दके साथ। स्त्री०
छमाना, छमवाना—सक्रि० क्षमा कराना 'सूर श्याम युवतिनसों कहि कहि सब अपराध छमाहीं।'सूबे० २०२
छमापन—पु० क्षमा करनेकी क्रिया ।
छमावान—वि० क्षमा करनेवाला, सहनशील ।
छमासी—स्त्री० मृत्युसे छठे महीनेका श्राद्ध ।
छमुख—पु० कार्त्तिकेय ।
छय—पु० क्षय, विनाश ।
छयना—अक्रि० नष्ट होना। छाजाना,फैलना 'दूनी भू-आभा

भई छई छटा चहुँओर।' कलम २१६, ( १७७ मी )
छर—पु० छल, धोखा 'बीच पाइ नीच बीच ही छरनि छर्यो हौं।' विन० ६०३, (उदे० 'आँटना'प० ११९)। वि० क्षर, नाशवान्। [भागना। बिचकना।
छरकना—अक्रि० छलकना। बिसरना। उछलते हुए
छरकीला—वि० लम्बा और सुडौल ( रत्ना० ३५८ )।
छरछंद—पु० छलछन्द, चालबाज़ी।
छरछंदी—वि० धूर्त्त, कपटी 'भूपन भनत छरछन्दी मति-मन्द महा सौ सौ चूहे खायकै बिलारी बैठी तपके।'Ⓢ
छरछर—पु० कणों इ०के गिरनेका शब्द। छड़ी लगनेकी हलकी आवाज। [Ⓢ भू० १५६
छरछराना—सक्रि० छरछर करके गिरना। अक्रि० चुनचुनाना, घावपर नमक लगनेकी-सी पीड़ा होना।
छरना—अक्रि० साफ किया जाना, क्षरना, टपकना, बहना, दूर होना 'खग मोहे मृगयूथ भुलाने, निरखि मदन छवि छरत।' सू०। सक्रि० साफ करना। छलना, धोखा देना। मोहित करना 'योगी कौन बड़ो शंकरतें ताको काम छरे।' सू० २
छरभार—पु०कामकी जिम्मेदारी, झंझट (विन० २६५)।
छरहरा—वि० हलका, पतला। चुस्त, फुरतीला।
छरा—पु० रस्सी। इजारबन्द, नारा। लड़ी। पाँवका एक गहना 'रेसमके गुन छोलि छरा करि छोरति ऐंचि सनेह रचावे।' रवि० १८
छरिंदा—वि० अकेला, बिना किसी बोझ इत्यादिके।
छरिया—पु०देखो 'छड़िया'। [कपटी, धूर्त्त।
छरी—स्त्री० छड़ी। साँटी। पतली लकड़ी। वि० छली,
छरीदा—वि० अकेला, जिसके पास बोझ इ० न हो।
छरीदार—पु० पहरेवाला, रक्षक 'आये दरबार बिललाने छरीदार देखि जापता करनहारे नेकहू न मनके।'
छरौरा—पु० खरोंच। [भू० १४, ( उदे० 'चिरकना' )
छर्दि—स्त्री० कै। वमनका रोग।
छर्रा—पु० लोहे आदिके छोटे कणोंका समूह।
छल—पु० बहाना, धोखा।
छलक, छलकन—स्त्री० हिलनेके कारण किसी तरल पदार्थका पात्रसे बाहर गिरना।
छलकना—अक्रि० उछलकर बाहर गिरना, उमड़ना। 'नीर भरी अलकें निचुरैं छुटिकै छलकैं मनो माँगके मोती।' रवि० २३, '...सरजाके दगन उछाह छलकत है'—भू० १२८। चमकना, शोभित होना 'भाल बिसाल तिलक छलकाहीं। कच बिलोकि अलि-अवलि लजाहीं।' रामा० १३३, ( देखो झलकाना' )।
छलछंद—पु० चालाकी, धोखेबाजी।
छलछलाना—अक्रि० 'छल छल' शब्द करना। भर आना, पानी छोड़ना ( आँख )।
छलछात—पु० छलछिद्र 'जब स्वार्थी दुख दे रहे अपने मलिन छलछात से' काननकुसुम ४५'
छलछाया—स्त्री० कपटजाल, माया 'पालु बिबुध-कुल करि छलछाया।' रामा० ४३०
छलछिद्र—पु० कपटमय वर्ताव, चालबाजी।
छलना—सक्रि० धोखा देना, ठगना। स्त्री० धोखा, चालबाजी ( आँधी ५३ )।
छलनी—स्त्री० आटा इ० छाननेका बरतन, चलनी।
छलहाई—वि० कपटी, छलयुक्त।
छलांग—स्त्री० उछाल, कुदान, चौकड़ी।
छला—पु० अँगुलीमें पहननेका आभूषण। एक तरहकी सादी अँगूठी ( उदे० 'छिंगुनी' ) झलक, दीप्ति।
छलाई—स्त्री० छलयुक्तता, धूर्त्तता।
छलाना—सक्रि० धोखा दिलाना, छलनेका कार्य कराना।
छलावा—पु० तुरन्त अन्तर्हित हो जानेवाली भूतादिकी छाया, अगिया बैताल। धोखा, जादू (कलस २७२)।
छलित—वि० वञ्चित, जो ठगा गया हो।
छलिया—वि० छल करनेवाला, धोखा देनेवाला।
छली, छलीक—वि० छलिया, धोखा देनेवाला 'किन किनकी मति नहिं छली तू मरुकूप छलीक।' दीन२१०
छल्ला—पु० देखो 'छला'। कड़ी, रिंग।
छल्लेदार—वि० छल्लायुक्त, जिसमें घेरे हों। घुँघराले।
छवना—पु० देखो 'छौना'।
छवड़ा—पु० झौवा, टोकरा।
छवड़ी—स्त्री० खचिया, छोटा झौवा, ( गबन २३३ )।
छवा—पु० किसी चौपायेका बच्चा। पु० एड़ी 'छूटे छवानि लौं केस बिराजत तार बड़े तम तार इनेसे।'
छवाई—स्त्री०छानेकी मजदूरी। छानेका कार्य। [रवि ८१
छवाना—सक्रि० छानेका कार्य कराना।
छवि—स्त्री० शोभा, सुन्दरता, सजावट, झाँकी, कान्ति।
छविवंत—वि० देखो "छबिवंत" ( उदे० 'छाजना' )।
छवैया—पु० छानेका काम करनेवाला।

छहर—स्त्री० छहरने या बिखरनेकी क्रिया ।

छहरना—अक्रि० बिखरना, इधर उधर फैल जाना ।

छहराना—अक्रि० इधर उधर फैलना, छितराना 'लसत कपोल अमोल गोल अति तनक अलक छहरारी।' रघु० ४३ । सक्रि० फैलाना 'यों सिर पै छहरावत छार हैं जाते उठे असमान बगूरे।' भू० ११५ । भस्म करना।

छहियाँ—स्त्री० छाया ( सूबे० ७४ ) ।

छाँ—स्त्री० छाया ।

छाँक—पु० टुकड़ा । देखो 'छाक' । 'एक ग्वालि मण्डली करि बैठति, छाँक बाँटिकै देति ।' सू० २६२

छाँगना—सक्रि० ( पेड़की डाल ) छाँटना ।

छाँगुर—वि० देखो 'छंगा' ।

छाँछ—पु० मट्ठा, मही ( उदे० 'छछिया' ) ।

छाँट—स्त्री० कै । काटनेकी क्रिया । कतरन । भूसी ।

छाँटना—सक्रि० चुनना, अलग करना । काटना । साफ करना, धोना, कचारना 'जालपाने कभी धोती न छाँटी थी'—गबन २५

छाँड़ना—सक्रि०छोड़ना 'ताते ऋषिराज सबै तुम छाँड़ौ । भूदेव सनाढ्यनके पद माँड़ौ ।' के० ७, ( उदे० 'अंबा' )

छाँद—स्त्री० गदहे इ० के पैर बाँधनेकी रस्सी । नोई ।

छाँदना—सक्रि० कसना, जकड़ना ।

छाँदा—पु० पकवान, हिस्सा । [ ( रवि० १४ ) ।

छाँवड़ा—पु० छौना, पशुका छोटा बच्चा । छोटा बालक

छाँस—स्त्री० छाँटनेसे निकला हुआ अन्नका कण ।

छाँह, छाँही—स्त्री० छाया 'देखि दुपहरी जेठकी छाँहौं चाहत छाँह ।' बि० २८ । छायी हुई जगह । प्रतिबिम्ब । बचावका स्थान, शरण ।

छाँहगीर—पु० छत्र आईना ।

छाँहरि—स्त्री० छाया ( उत्तर० २८ ) ।

छाक—स्त्री० कलेवा, वह भोजन जो चरवाहे इत्यादि दोपहरको कामसे छुट्टी पाकर करते हैं 'दही भातकी छाक मँगावत ग्वालन सँग मिलि खाते ।' सूबे० १४४। नशा, मद (उ० 'छनदा'), छकनेका भाव, तृप्ति, 'कबीर हम गुरु रस पिया बाकी रही न छाक ।' (साखी ५०)

छाकना—अक्रि० छकना, अघाना, मतवाला होना । 'है कटि काल कराल न सूझत मोह मार मद छाके ।'

छाग—पु० बकरा । [ विन० ५१५, ( सुन्द० ९४ )

छागर छागल—स्त्री० पाँवका एक गहना । छोटी मशक।

छाछ—पु०, छाछि—स्त्री० देखो 'छाँछ' । [पु० बकरा ।

छाज—पु० छप्पर, सूप ।

छाजन—स्त्री०छप्पर । कपड़ा 'छाजन भोजन प्रीतिसों दीजै साधु बुलाय ।' साखी १२० । अपरस नामक रोग ।

छाजना—अक्रि० सुशोभित होना 'तेज-निधाननिमें रवि ज्यों छविवन्वनमें विधु ज्यों छवि छाजै ।' भू० ६ । शोभा देना, अच्छा लगना 'तो करसों छिति छाजत दान है दानहूसों अति तो कर छाजै ।' भू० ८८

छाजा—पु० देखो 'छज्जा' ।

छात—पु० छतरी, राजछत्र ( उदे० 'औधारना' प० ६) । आधार । वि० दुर्बल । छिन्न ।

छाता—पु० छत्ता, छतरी, छातीका घेरा ।

छाती—स्त्री० सीना, वक्षःस्थल, हृदय, मन ।—जलना, —दहना = दुःखसे या क्रोधसे हृदय पीड़ित होना 'सोइ करै विविध उपाय जातें अधिक तुव छाती जरै ।' विन० ३२१, 'बहइ न हाथ दहइ रिस छाती ।' रामा० १५१ ।—जुड़ाना = हृदय सन्तुष्ट करना । पत्थरकी—करना=विपत्तिका सामना करनेके लिए दिल पक्का करना ।—पर मूँग दलना=किसीको चिढ़ानेकी गरजसे उसके सामने वही काम करना जो उसे पसन्द न हो ।—पर साँप लोटना = जी जलना, मनका व्यथित या क्षुब्ध होना । —भर आना=प्रेमकी प्रबलता या करुणाके आवेगसे गद्गद्

छात्र—पु० विद्यार्थी । [ होना । दूध उतरना ।

छात्रवृत्ति—स्त्री० किसी छात्रको विद्याध्ययनार्थ नियमित रूपसे मिलनेवाला धन । [ देनेवाला ।

छादक—पु० ढाँकनेवाला । छप्पर छानेवाला । वस्त्र

छादन—पु०ढँकने या छिपानेका कार्य । छिपाव । आवरण ।

छादी—वि० जो आच्छादन करे ।

छाद्मिक—वि० बहुरूपिया । छद्मवेशी । [ रस्सी ।

छान—स्त्री० देखो 'छानि' । पशुओंके पाँव बाँधनेकी

छाननहार—पु०छाननेवाला, अलग करनेवाला(क०व०१)

छानना—सक्रि० पानी इत्यादिको महीन कपड़े या चलनी के पार निकालना । छेदकर पार करना । नशा पीना 'प्रेम बारुनी छानिके बरुन भये जलधीस ।'—रसखानि । अलग करना, बिलगाना । जाँचना, खोज करना । घीमें पकाना (पूरी [illegible]) । रस्सीसे बाँधना, कसना ।

छानबीन—स्त्री० बारीक जाँच, पूर्ण समीक्षा या अनुसन्धान।
छाना—सक्रि० ऊपर ढाँकना या आच्छादित करना 'एहि पापिनिहिं बूझिका परेऊ। छाइ भवनपर पावक धरेऊ।' रामा० २२१। शरणमें लेना, फैलाना, बिछाना। अक्रि० फैलना ( उर्दू० 'कित' ), बिछ जाना, भर जाना, बसना, टिकना 'चित्रकूट रघुनन्दन छाये। समाचार सुनि सुनि मुनि आये।' रामा० २६२
छानि, छानी—स्त्री० घास फूसकी छाजन, छप्पर 'कलिमें नामा प्रगटियो वाकी छानि छवावै।' सू० वि० ७
छाने छाने—क्रिवि० छिपे छिपे, चुपकेसे (अष्ट० ११६)।
छाप—स्त्री० ठप्पे, मुहर आदिका चिह्न ( रतन० १४ ), मुद्रा। 'आजुहिं दान पहरि ह्याँ आये कहाँ दिखावहु छाप।' सूबे० १३३, 'दै छवि छापैं करै मन छाप सु छीपनि बाल छिपै न छिपाई।' रवि०१८। एक तरहकी ठप्पादार अँगूठी। वैष्णवोंके शरीरपर अंकित किये गये चिह्न। [करना।
छापक—वि० छोटा ( ग्राम० ४५, ७८ )।
छापना—सक्रि० ठप्पे इ० से अङ्कित करना, मुद्रित
छापा—पु० ठप्पे इत्यादिसे अङ्कित चिह्न। ठप्पा, मुहर, मुद्रणयंत्र। वैष्णवोंके शरीरपर अंकित शङ्ख चक्रादिके चिह्न 'जप माला छापा तिलक सरै न एको काम।' वि० ६३। आकस्मिक आक्रमण।
छापाखाना—पु० ग्रन्थ आदि छापनेका स्थान, प्रेस।
छाम—वि० दुबला, क्षीण 'नेक न जानी परत यों पर्यो विरह तन छाम।' वि० ५२
छामोदरी—वि० स्त्री० कृशोदरी, जिसका पेट छोटा हो।
छाय—स्त्री० छाया, परछाँही।
छायल—पु० औरतोंका एक तरहका पहरावा(प० १५८)।
छाया—स्त्री० देखो 'छाँह'।
छायातन—पु० वह व्यक्ति जिसका शरीर छायासे निर्मित हो, निराकार 'तुमको क्या बोधू छायातन' नीरजा [५३
छायादार—वि० छायापूर्ण।
छायापथ—पु० आकाश-गङ्गा।
छायामान—पु० चन्द्रमा।
छायायंत्र—पु० धूपघड़ी।
छायालोक—पु० अदृश्य जगत, स्वप्नलोक 'इस क्षुद्र लेखनीसे केवल करता मैं छाया-लोक सृजन।' युगवाणी २५
छायावाद—पु० एक तरहकी कविता जिसमें अज्ञातके प्रति जिज्ञासा इत्यादि हो। रहस्यवाद।
छार—स्त्री० राख, भस्म 'भानु कमल कुल पोषनिहारा। बिनु जर जारि करइ सोइ छारा।' रामा०२०७। धूल (वि० ६२३)। क्षार, नमक। [तरहकी मिठाई।
छाल—स्त्री० वृक्षका ऊपरी आच्छादन, वल्कल। एक
छालटी—स्त्री० छाल या पाटका बना कपड़ा।
छालना—सक्रि०छाना, साफ करना। धोना। छेद करना।
छाला—पु०फफोला, झलका। छाल, चर्म (रामा०३७८)। पत्र 'तब उदंत छाला लिखि दीन्हा।' प० १०९
छालित—वि० प्रक्षालित, धोया हुआ 'रघुपति-भक्तिवारि छालित चित, बिन प्रयास ही सूझै।' विन० २१९
छावँ—स्त्री० छाया, आश्रय, पनाह।
छावना—सक्रि० देखो 'छाना' ( सू० २०७ )।
छावनी—स्त्री० सेनाका पड़ाव, डेरा। छप्पर।
छावरा—पु० छौना, पशुका बच्चा ( भू० १०४ )।
छाह—स्त्री०छाछ, मही।
छिंगुनिया, छिंगुनी, छिंगुलिया, छिंगुली—स्त्री० सबसे छोटी अँगुली 'मखतूल गुहे घुँघरू पहिराय, छला छिंगुनी चित चाड़िलीके।'—हठी
छिंछ, छिंछि—स्त्री० धार, छींटा, बूँद 'सोनित छिंछ उछरि आकासहिं, गज बाजिन सर लागी।' सू० ४१
छिः, छि—अ० घृणा, अरुचि इ० का सूचक शब्द।
छिउँकी—स्त्री० एक तरहकी चींटी।
छिगुनिया, छिगुनी, छिगुली—स्त्री० देखो 'छिंगुनी' [इ०।
छिच्छ—स्त्री० देखो 'छिंछ'।
छिछला—वि० उथला।
छिछली—स्त्री० एक खेल जिसमें लड़के पानीपर ठीकरे फेंकते हैं। वि० स्त्री० जो गहरी न हो।
छिछोरपन—पु० क्षुद्रता, नीचता।
छिछोरा—वि० क्षुद्र प्रकृतिका, ओछा।
छिजाना—सक्रि० नष्ट होने देना।
छिटकना—अक्रि० चारों ओर फैल जाना, छितराना 'छिटकि रहीं चहुँदिशि जु लटुरियाँ लटकन लटकत भालकी।' सूबे० ५६, चहूँ खंड छिटकी वह आगी।' [प० १७७
छिटकाना—सक्रि० बिखराना। फैलाना।
छिटनी—स्त्री०तीलियों,डण्ठलों आदिकी बनी हुई टोकरी।
छिटवा—पु० झावा, टोकरा।

छिड़कना—सक्रि० सींचना, छींटे डालना, भुरकना ।
छिड़काई—स्त्री० छिड़कनेकी क्रिया या मज़दूरी ।
छिड़काव—पु० सिंचाई ।
छिड़ना—अक्रि० शुरू होना, ठन जाना ।
छिड़ाना—सक्रि० छुड़ा लेना, छीनना ।
छिण—पु० क्षण, थोड़ा समय ।
छितनी—स्त्री० छिछली ठोकरी । [ रना ।
छितराना—सक्रि० फैलाना, बिखराना । अक्रि० बिख-
छिति—स्त्री० धरती, पृथिवी 'छिति जल पावक गगन समीरा ।' रामा० ४०१ । एककी संख्या ।
छितिकंत,-नाथ,-पाल—पु० राजा, भूपाल ।
छितिरुह—पु० पेड़ ।
छितीस—पु० राजा ।
छिदना—अक्रि० चुभना, बिंधना ।
छिदरा—वि० छेददार, जो घना न हो ।
छिद्र—पु० छेद, विवर । त्रुटि । अवकाश, मौक़ा ।
छिद्रान्वेषी—वि० दूसरेके दोष ढूँढ़नेवाला, त्रुटि निकालनेवाला ( विन० ५७६ ) ।
छिद्रित—वि० छेदोंसे भरा हुआ, छिद्रयुक्त 'पत्रोंके बहु
छिन—पु० देखो 'छन' । [ छिद्रित द्वार ।' पल्लव ६२
छिनक—क्रिवि० थोड़ी देर, क्षणभर (उदे० 'गवनना') ।
छिनकना—सक्रि० ( नाक ) साफ करना ।
छिनछवि, छिनौछवि—स्त्री० बिजली 'जोति जवाहिरकी मतिराम नहीं सुरचाप छिनौछबि छाजैं ।' ललित०
छिनदा—स्त्री० रात्रि । [ ५७
छिनना—अक्रि० छीना जाना । सक्रि०सिल इ० कूटना ।
छिनभंग—वि० क्षणभरमें नष्ट होनेवाला, नाशवान् 'यह तन अति छिनभंग धुँवेको धौलहर ।' नागरी०
छिनरा—पु० व्यभिचारी पुरुष, लम्पट ।
छिनाना—सक्रि० छुड़ाना, अपहरण करना । छीननेका काम कराना । छेनीसे कटवाना ।
छिनार, छिनाल—वि० स्त्री० दुराचारिणी, कुलटा । स्त्री० पर-पुरुष गामिनी स्त्री ।
छिनाला—पु० व्यभिचार, कुलटापन ।
छिन्न—वि० कटा हुआ, खण्डित ।
छिन्न-भिन्न—वि० टूटा-फूटा, अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त ।
छिपकली—स्त्री० बिसतुइया, पल्ली । एक कर्णाभूषण ।
छिपना—अक्रि० आड़में होना, लुकना । अदृश्य होना ।
छिपाना—सक्रि० गोपन करना, आड़में करना, गुप्त रखना, प्रकट न करना ।
छिपारुस्तम—पु० वह विशेष क्षमतावाला व्यक्ति जो अप्रसिद्ध हो । वह जिसके गुण या दोष लोगोंपर
छिपाव—पु० छिपानेका कार्य, दुराव । [ प्रकट न हों ।
छिपी—पु० देखो 'छीपी' । दर्जी ( बुन्देल० ) 'जूझ्यो नन्दन छिपी सभागौ । ब्यौतन लग्यो इन्द्र कौ बागौ ।' छत्र० ११२ [ रामा० ४१९
छिप्र—क्रिवि० शीघ्र 'तपी जपी विप्रन छिप्र ही हरौ ।'
छिमा—स्त्री० देखो 'छमा' । 'छिमा बड़ेनको चाहिये छोटेनको उत्पात ।' रहीम २०
छिया—स्त्री० घृणित वस्तु, मल । देखो 'छी—पु०' ( रवि० २७ ) । स्त्री० लड़की । वि० घृणित, मलिन, तुच्छ 'भूषण भनत जाकी साहिबी सभाके देखे लागैं सब और छितिपाल छितिमें छिया ।' भू० ४ । छिया छरद करना = छी छी करना, घृणा करना 'जन्मते इकटक लागि आशा रही विषय विष खात नहिं तृप्त मानी । जो छिया छरद करि सकल संतन तजी तासु मतिमूढ़ रस प्रीति ठानी ।' सूवि० ३०
छिरकना, छिलकना—सक्रि० छिड़कना ( सू०१५४ ), 'घसि केसरि स्यों बहु विविधि नीर । छिति छिरके चर थावर सरीर ।' के ११०, 'नहिं बरष्यो नहिं छिरक्यों काहू कहुँ धौं गयौ बिलाय ।' सूबे० ९४ । डाँटना दपटना 'छरीदार बैगार विनोदी, छिरकि कीने ।' सू० ३ [ चाहिये
छिलका—पु० बकला, भूसी, वाह्य आवरण ।
छिलछिला—वि० छिछला, उथला 'सदा प्रफुल्लित रहैं जल बिनु निमिष नहिं कुम्हिलाहिं । देखि नीर जो छिलछिलो अति, समुझि कछु मनमाहिं ।' सू० १९
छिलना—अक्रि० रगड़ खाना, खरोंच जाना ।
छिहानी—स्त्री० मरघट ।
छींक—स्त्री० नाक और मुखसे आवाज़के साथ वायुका सवेग निकलना ( रामा० २९० ) ।
छींकना—अक्रि० छींक लेना ।
छींका—पु० देखो 'छीका' ( उदे० 'चहोड़ना' ) ।
छींट—स्त्री० पानी इ० की बूँद, पानीका छींटा या उसके चिह्न । एक बूटीदार कपड़ा । 'आनन रहीं ललित पय छीटैं छाजत छवि तृन तोरे ।' सू० ९४

छींटना—सक्रि० छिटकाना, छितराना ( मुद्रा० ४३ )।

छींटा—पु० देखो 'छींट' छिछला टोकरा। छिपा हुआ [ आक्षेप।

छींदा—स्त्री० छीमी।

छी—अ० अरुचि, घृणा इ० प्रकट करनेका शब्द। पु० कपड़ा कचारते समय धोबियोंके मुखसे निकलनेवाला शब्द।

छींका—पु० सिकहर, सीका 'मैं बालक बहियनको छोटो छीको केहि विधि पायो।' सू०,'सुभग ढकनियाँ ढाँपि बाँधि पट जतन राखि छींके समदायो।' सूबे० १६२

छीछड़ा—पु० मांसका बेकाम टुकड़ा।

छीछालेदर—स्त्री० दुर्गति, दुर्दशा।

छीज—स्त्री० कमी, ह्रास ( प० १५४ )

छीजना—अक्रि० कम होना, क्षीण होना 'मर्कट मनुज अहार हमारे लखत बिचारे छीजैं।' रघु० २२७, 'मज्जन करिय समर स्रम छीजइ।' रामा० ५२७। बिगड़ना, हानि होना 'लङ्कापति त्रिय कहति पिया मों, यामें कछू न छीजै।' सू० ३७

छीट—देखो 'छींट'

छीटा—पु० खाँचा। बाँसका बना तवा जैसा पात्र।

छीतना—सक्रि० डङ्क मारना। प्रहार करना।

छीति—स्त्री० घटी, हानि ( सूसु० २५६ )।

छीदा—वि० विरल, बहु छिद्रोंवाला।

छीन—वि० क्षीण, दुर्बल 'कनक छरीसी कामिनी काहेको कटि छीन।' आलम। मलिन। नष्ट 'तन तिनको मृत्यु न करति छीन।' राम० ९२

छीनता—स्त्री० क्षीणता, कृशता, मलिनता।

छीनना—सक्रि० अपहरण करना। छिन्न करना, काट डालना 'काटत ही पुनि भये नवीने। राम बहोरि भुजा सिर छीने।' रामा० ५०७

छीना—सक्रि० छूना 'कौन सहाय करैगो वा छिन, पानी पात न जय छीवोंगी।' ललित कि० 'स्वान प्रसादहिं छी गयो, कौवा गयो बिटारि।' व्यास जी, (रवि०६६)

छीनाखसोटी—देखो 'छीना झपटी'।

छीना छीनी, छीना झपटी—स्त्री० जबरन या लड़भिड़ कर लेनेकी क्रिया, छिनालेई।

छीप—स्त्री० छाप, धब्बा। एक चर्म-रोग। सीप। वह लकड़ी जिससे मछली फँसानेकी कटिया लटकायी जाती है। वि० वेगवान्, तेज।

छीपना—सक्रि० बंसीमें मछली फँसनेपर उसे बाहर [ फेंकना।

छीपी—पु० छींट छापनेवाला (उदे०'छाप')।

छीवर—स्त्री० बेल-बूटेदार कपड़ा।

छीमी—स्त्री० मटर इ० की फली।

छीर—पु० दूध, खीर ( उदे० 'बछरा' )। छोर।

छीरज—पु० दही।

छीरधि—पु० क्षीरसागर 'छीरधिमें एक कलानिधिमें कलंक, याते रूप एक टंक ए लहैं न तव जसको।' [ भू० १८

छीरप—पु० बच्चा।

छीरसमुद्र,-सागर,-सिंधु,—पु० क्षीरसागर, दूधका समुद्र।

छीलक—पु० छिलका 'भीतर तो कछु सार नहीं पुनि ऊपर छीलक अंबरदंभा।' सुन्द० १८

छीलना—सक्रि० खरोंचना, छिलका अलग करना।

छीलर—पु० छिछला गडढा, झील ( सुरा० ११), 'वे दोउ हंस मानसरोवरके छीलरे क्षुद्र मलीन कैसे न्हातरी।' सूबे० २६२ वि० छिछला 'जैसे छीलर ताल जल घटत घटत घटि जाय।' वृन्द सतसई

छुँगली—स्त्री० घुँघुरूदार अँगूठी।

छुआछूत—स्त्री० छूतछातका विचार। अछूतको छूना।

छुआना—सक्रि० स्पर्श कराना।

छुईमुई—स्त्री० लाजवन्ती या लज्जालु नामक पौधा।

छुगनू—पु० घुँघुरु।

छुच्छी—स्त्री० नाककी कील। चोंढ़ो। छोटी नली।

छुछुंदर—पु० चूहेकी जातिका एक जन्तु।

छुछुआना—अक्रि० छछूँदरकी तरह मारे मारे फिरना।

छुट—अ० छोड़कर, सिवाय।

छुटकाना—सक्रि० छुड़ाना। त्यागना, छोड़ना, अलग [ करना।

छुटकारा—पु० मुक्ति, रक्षा, त्राण।

छुटना—अक्रि० देखो 'छूटना' ( रामा० ५१३ )।

छुटपन—पु० लड़कपन। छोटाई।

छुटाना—सक्रि० मुक्त करना, छुड़ाना।

छुट्टा—वि० अकेला, बन्धनरहित।

छुट्टी—स्त्री० अवकाश, तातील। मुक्ति, रिहाई। बिदा।

छुड़ाई—स्त्री० छोड़नेकी क्रिया या किसी चीज़को छोड़नेके बदलेमें दिया हुआ धन।

छुड़ाना—सक्रि० मुक्त करना, अलग करना, छीनना।

छुड़ैया—वि० छुड़ानेवाला, बचानेवाला।

छुत्—स्त्री० क्षुधा, भूख ।
छुतिहा—वि० छूतवाला, दूषित ।
छुद्र—वि० नीच, कृपण, छोटा 'छुद्र नदी भरि चली तोराई ।' रामा० ४०२
छुद्रघंट—पु०, छुद्रघंटिका—स्त्री० घुँघरूदार करधनी 'राखा छात चँवर औधारा । राखा छुद्रघंट झनकारा ।' प० ३२५ [ बाजत परम रसाल ।' सू० ११२
छुद्रावलि—स्त्री० करधनी 'पीताम्बर कटिमें छुद्रावलि
छुधा—स्त्री० क्षुधा, भूख ।
छुधित—वि० भूखा 'छुधित बहुत अघात नाहीं निगम द्रुम दल खाइ ।' सूवि० २१
छुप—पु० क्षुप, झाड़ी, पौधा ।
छुपना, छुपाना—देखो 'छिपना'; 'छिपाना' ।
छुबुक—पु० ठोढ़ी ।
छुभित—वि० क्षुब्ध, घबराया हुआ, विचलित ।
छुभिराना—अक्रि० क्षुब्ध होना, विचलित होना ।
छुरधार—स्त्री० छुरेकी धार । तीक्ष्ण धार 'देव विकटतर वक्र छुरधार प्रमदा तीव्र दर्प कन्दर्प खर खड्ग धारा ।'
छुरा—पु० बड़ी छुरी, उस्तरा । [ विन० १८८
छुरिका,-री—स्त्री० तरकारी इ० काटनेका औज़ार, चाकू ।
छुलकना, छुलछुलाना—अक्रि० थोड़ा थोड़ा करके पेशाब करना ।
छुलछुल—पु० थोड़ा थोड़ा पेशाब करनेका शब्द ।
छुलाना—सक्रि० छुवाना, स्पर्श कराना ।
छुवना—सक्रि० स्पर्श करना ।
छुवाना—सक्रि० स्पर्श कराना ( बि० १५९ ) ।
छुहना—अक्रि० छू जाना । रँगा जाना, पुतना, चित्रित होना 'छुहे पुरट घट सहज सुहाये । मदन सकुच जनु नीड़ बनाये ।' रामा० १८८
छुहाना—सक्रि० दया करना, प्रेम करना ।
छुहारा—पु० एक तरहका खजूर । खजूरका फल ।
छुही—स्त्री० पोतनेकी सफेद मिट्टी ।
छूँछा—वि० रिक्त, निस्सार, निष्फल 'मैं सब कीन्ह तोहि बिनु पूछे । तेहिते परेउ मनोरथ छूँछे ।' रामा० २१४
छूँछी—स्त्री० नाकका एक गहना । नली, नरी । कीप ।
छूः—वि० नाचीज, व्यर्थ ।
छू—पु० मन्त्र पढ़कर फूँकनेका शब्द ।
छूछू—वि० बेवकूफ ।

छूट—स्त्री० मुक्ति, छुटकारा । किसी कामका भूलसे न किया जाना । ऋण इत्यादिका छोड़ देना । स्वतन्त्रता । फुरसत ।
छूटना—अक्रि० अलग होना, दूर होना, 'कपट न छूटे हरि गुन गावत ।' —व्यासजी । खुल जाना, मुक्त होना । टूटना, बन्द हो जाना । चल पड़ना, वेगके साथ निकलना । बाक़ी बच रहना । भूलसे रह जाना ।
छूत—स्त्री० स्पर्श । अपवित्र वस्तुके छूनेका दोष ।
छूना—सक्रि० स्पर्श करना, बहुत कम प्रयोगमें लाना । पोतना । अक्रि० स्पृष्ट होना ।
छूरा—पु० देखो 'छुरा' ।
छेंकना—सक्रि० घेरना 'सुना साहि गढ़ छेंका आई ।' प० १० । रोकना 'प्रभु करुनामय परम विवेकी । तनु तजि रहत छाँह किमि छेंकी ।' रामा० २४५ । जगह लेना, स्थान घेरना । लकीरसे काटकर ठीक करना, मिटाना ।
छेक—पु० छेद, कटाव ( साखी ७ ) पाला हुआ पक्षी ।
छेकानुप्रास—पु० एक शब्दालङ्कार । [ वि० चतुर ।
छेकापह्नुति—स्त्री० एक अर्थालङ्कार जिसमें झूठी बात कहकर शङ्का करनेवालेके यथार्थ अनुमानका निराकरण करनेकी चेष्टा की जाती है ।
छेकोक्ति—स्त्री० एक काव्यालङ्कार ।
छेटा—स्त्री० रुकावट, विघ्न ।
छेड़—स्त्री० चिढ़ानेकी क्रिया या बात । विरोध । बजानेके लिए सितार आदिको छूना । [ करना, कोंचना ।
छेड़ना—सक्रि० शुरू करना । उठाना, रोकना, तंग
छेत्र—पु० क्षेत्र, खेत, स्थान 'राजा हुतो प्रबल दुष्ट अनेक हारी । वाराणसी विमल छेत्र निवासकारी ।' के० २०५
छेद—पु० छिद्र, सूराख, विवर, बिल । दोष । नाश । खण्ड ।
छेदक—पु० देखो 'छेदनहार' । [ १४८ ) ।
छेदन, छेदनहार—वि० छेदनेवाला, काटनेवाला (रामा०
छेदना—सक्रि० भेदना, बेधना, चुभाना, काटना, घाव करना । [ छिद्र ।
छेदा—पु० घुन । घुनद्वारा अनाजका खोखला होना ।
छेना—पु० पानी निचोड़ा हुआ फटा दूध । कण्डा । अक्रि० क्षीण होना । सक्रि० छिन्न करना, काटना ।
छेनी—स्त्री० टाँकी नामक औज़ार ।
छेम—पु० क्षेम, कुशल, कल्याण । सुख 'रच्यो परस्पर

प्रेम छेम बाढ्यो अति भारी ।' श्रीभट्ट

छेमकरी—स्त्री० सफेद चील 'पुरी छेमकरी कहा महा गगन भरमाय ।' दीन० ५६

छेरी,छेली—स्त्री० बकरी ( सू० १३ ) ।

छेव—पु० आघात, चोट, घाव 'कवि कहैं करन करनजीत कमनैत, अरिनके उर माहि कीन्ह्यो इमि छेव है ।' भू० २८ । छिद्र 'भूपन भनत वह चहूँ चक्क चाहि कियो पातसाहि चकताकी छाती माहिं छेवा है ।' भू० ३१ । ( छलछेव=छलछिद्र ) । होनेवाला अनिष्ट । अन्त 'पर उपकारी सब जीवनके सारे काज कबहूँ न आवै जाके गुननिको छेव सो ।' सुन्द० ७

छेवन,छोवन—पु० चाकसे बरतन काटकर अलग करनेका कुम्हारका तागा ।

छेवना—सक्रि० काटना,चिह्न लगाना । मिलाना । जीवपर छेवना = जीपर खेलना 'जो अस कोई जिउपर छेवा ।' प० १३०, ( उदे० ,'केवा' ) ।

छेवनी—स्त्री० देखो 'छेनी' ।

छेवा—पु० आघात, घाव, छेद ( उदे० 'छेव' ) ।

छेह—पु० नाश, अन्त 'छीजत जाय घटै दिन ही दिन दीसत है घटको नित छेहा ।' सुन्द० २५ । आघात, चोट । दाँव ( खेलका ) 'गोपिन सँग निसि सरदकी रमत रसिक रसरास । लियो छेह अति गतिनको सबनु लखे सब पास ।' बि० १२२ । वि० खण्डित, न्यून । स्त्री० खेह, धूल, राख ।

छै—स्त्री० क्षय, ह्रास, विनाश । वि० छः, पाँच और एक ।

छैना—अक्रि० क्षीण होना, नष्ट होना ।

छैया—पु० छोटा बचा 'कहति मल्हाइ लाइ उर छिन छिन छगन छबीले छोटे छैया ।' गीता० २८३

छैल, छैला—पु० बना ठना आदमी, रँगीला 'गयो अचानक आँगुरी छाती छैल छुवाय ।' वि० १५९

छैलचिकनियाँ,छबीला—पु० छैला, बाँका ।

छोंकर—पु० शमी वृक्ष ( उत्तर० ८१ ) ।

छोंड़ा—पु० मथानी । लड़का ।

छोंड़ि—स्त्री० मथानी । लड़की ( कविता० २०६ ) ।

छो—पु० छोह, प्रेम । [ छिछड़ासा पात्र ।

छोई—स्त्री० ईखकी पत्तियाँ, नीरस गँडेरी, तुच्छ या निस्सार वस्तु 'श्रीभट अटकि रहे स्यामीपन आन वृतै मानै सब छोई ।' श्रीभट्ट

छोकड़ा, छोकरा—पु० बालक, कम उम्रवाला ।

छोकर,-रा—पु० शमीका पेड़ ( अष्ट० ६० ), [ लघु ।

छोट, छोटा—वि० आकार, अवस्था आदिमें कम । क्षुद्र,

छोटाई—स्त्री०, छोटपन—पु० लघुता, क्षुद्रता ।

छोड़छुट्टी—स्त्री० सम्बन्ध न रहना, नाता टूटना ।

छोड़ना—सक्रि० मुक्त करना, त्यागना, चलाना, माफ़ करना । डालना, बचा देना, रहने देना, खोलना ।

छोत—स्त्री० छूत ( साखी ७४, १२१ ) ।

छोनिप—पु० क्षोणिप, राजा । [छोनी ।' रामा० ३१०

छोनी—स्त्री० धरणी, पृथिवी 'सहज छमा बरु छाँड़इ

छोप—पु० मोटा लेप । छिपाव । आघात, प्रहार ।

छोपना—सक्रि० थोपना, मोटा लेप चढ़ाना, ढकना, ग्रसना ।

छोभ—पु० घबराहट, खलबली, विकलता 'संकर उर अति छोभु सती न जानइ मरम सोइ ।' रामा० २३

छोभना—अक्रि० चित्त डोलना, विचलित या क्षुब्ध होना 'लछिमन देखु बिपिन कै सोभा । देखत केहि कर मन नहिं छोभा ।' रामा० ३८६ । मुग्ध होना । डरना 'सनीर जीमूत-निकास सोभहीं । विलोकि जाको सुर सिद्ध छोभहीं ।' राम० ४३५

छोभित—वि० क्षोभित, विचलित ।

छोम—वि० चिकना । मृदु, मुलायम ।

छोर—पु० किनारा, नोक, अन्त, आदि ( नवरस २० ) । विस्तारकी सीमा ।

छोरटी—स्त्री० लड़की ( उदे० 'गोरटी' ) ।

छोरना—सक्रि० देखो 'छोड़ना' । अपहरण करना, छुड़ाना 'चोरि सकै नहिं चोरऊ छोरि सकै नहिं भूप ।' दीन० ८१

छोरा—पु० लड़का, पुत्र 'भो जमदग्नि तासु पुनि छोरा ।' रघु० १९९, 'देखोरी यह नन्दका छोरा बरछी मारे जाता है ।' ललित कि०

छोरा छोरी—स्त्री० छीना-झपटी, बखेड़ा ।

छोरी—स्त्री० लड़की ।

छोलदारी—स्त्री० छोटा तम्बू ।

छोलना—सक्रि० छीलना, खुरचना 'सजि प्रतीति बहु विधि गढ़ि छोली । अवध साढ़साती तब बोली ।' रामा० २०७ । फैलाना, दिखाना (उदे० 'चतुराई') ।

छोलनी—स्त्री० खुरचनी ।

छोला—पु० चना । ईख काटने छीलनेवाला ।

छोह—पु० अनुग्रह, कृपा ( विन० ६१८ )। 'मोसे वञ्चकको कृपालु छल छाँड़ि कै छोह कियो है।'विन० ४०३। प्रेम, ममता 'रहिमन मछरी नीरको तऊ न छाँड़त छोह।' रहीम [प्रेम करना।

छोहना—अक्रि० क्षुब्ध होना, विचलित होना। दया या

छोहरा—पु० छोरा, लड़का '…काहै मुनि मेरे छोटे छोहरा पै दयावान ना भये।' रघु० ५७, ( सूवे० २८३)। छुहारा 'ऊधो मन मानेकी वात। दाखि छोहरा छाँड़ि अमृतफल, विपकीरा विष खात।' सू० २५६

छोहरिया, छोहरी—स्त्री० लड़की 'नौआ केरि छोहरिया मोहिं सग कूर।' रहीम ३६

छोहाना—अक्रि० अनुग्रह करना, प्रेम दिखाना 'पै सो पिता न हिये छोहाना।' प० १८४

छोहारा—पु० फल-विशेष।

छोहिनी—स्त्री० अक्षौहिणी। सेनाकी एक निश्चित संख्या।

छोही—वि० प्रेमी। स्त्री० गँडेरीकी सीठी 'रसहि छाड़ि छोही गहै कोल्हू परतछ देख। साखी ८७

छौंक—स्त्री० बघार।

छौंकना—सक्रि० बघारना, तड़का देना।

छौंड़ा—पु० अनाज रखनेका गड्ढा। गड़हा।

छौना—पु० किसी पशुका बच्चा ( उदे० 'इकौनी' ), [छोटा बच्चा।

छौर—पु० हजामत।

छ्वाना—सक्रि० स्पर्श कराना।

---

# ज

जंग—स्त्री० युद्ध, समर। पु० ( लोहेका ) मोरचा।

जंगम—वि० चलने फिरनेवाला।

जंगमता—स्त्री० चलनेकी क्रिया या शक्ति।

जँगरैत—वि० परिश्रमी, हाथ पाँव चलानेवाला।

जंगल—पु० अरण्य, वन।

जँगला—पु० छडदार खिड़की, कटहरा।

जंगली—वि० जंगलमें प्राप्य, जंगलमें रहनेवाला, वनैला।

जंगार—पु० एक रंग। ताँवेका कसाव।

जंगारी—वि० नीलासा। ( पूर्ण १०८ )।

जंगी—वि० फौजी, लड़ाऊ। विशाल।

जंघा—स्त्री० जाँघ, पिंडली।

जंघार—पु० जाँघका फोड़ा।

जँघाल—पु० दूत, पायक, धावन। [*होना।

जँचना—अक्रि० जाँचा जाना। ठीक या भला मालूम*

जंजर, जंजल—वि० पुराना, टूटा फूटा, बेकाम।

जंजार, जंजाल—पु० बन्धन, उलझन, बखेड़ा। 'सेवाहू में दूर किय, विधि निषेध जंजार।'—ध्रुवदास, 'गृह कारज नाना जंजाला।' रामा० २८। एक तरहकी बन्दूक या तोप (उदे० 'धरनाल')। पानीका भँवर।

जंजालिया—वि० झन्झटिया, उपद्रवी, प्रपञ्ची।

जंजाली—स्त्री० पाल चढ़ानेकी घिरनी। वि० फसादी।

ज़ंजीर—स्त्री० सिकड़ी, साँकल।

ज़ंजीरा—पु० जंजीर जैसी सिलाई, लहरिया।

जंतर—पु० यन्त्र, तावीज। जंतर मंतर = टोना टोटका।

जंतरी—स्त्री० पत्रा। पु० बाजा बजानेवाला, जादूगर।

जँतसार—स्त्री० जाँता गाड़नेकी जगह।

जंता—वि० यन्त्रणा देनेवाला, शासन करनेवाला। पु० तार खींचनेका औज़ार।

जँताना—अक्रि० जाँते इ० से दबकर पिस जाना।

जंती—स्त्री० तार खींचनेका सुनारोंका एक औज़ार।

जंतु—पु० प्राणी, जीव।

जंत्र—पु० यन्त्र। तावीज। ताला। [ †क्लेश। शासन।

जंत्रना—सक्रि० ताला लगाना, जकड़ना 'भरत भगति सबकै मति जन्त्री।' रामा० ३४४। स्त्री० यंत्रणा,†

जंत्रित—वि० यंत्रित, जकड़ा हुआ, बन्द।

जंत्री—वि० यंत्रित करनेवाला। पु० बाजा बजानेवाला। बाजा।'...बिना तार तंत्र जीभ जंत्री सी बजत है।' रवि० ४८। स्त्री० पत्रा।

जंद—पु० पारसियोंका धर्मग्रन्थ।

जंदरा—पु० जाँता यन्त्र।

जपना—सक्रि० कहना 'यों कवि भूषन जंपत है लखि सम्पतिको अलकापति लाजै।' भू० ६

जंबाल—पु० काई। पङ्क।
जंबालिनी—स्त्री० नदी ( प्रिय० ६२ )।
जंबीर—पु० एक तरहका नीबू। वन-तुलसी।
जंबु—पु० जामुन।
जंबुक—पु० सियार। जामुन।
जंबुद्वीप, जंबूद्वीप—पु० पुराणोक्त सात द्वीपोंमेंसे एक।
जंबुर—पु० एक तरहकी तोप ( उदे० 'खदङ्गी )। तोप-की चर्ख।
जंबू—पु० काश्मीरका एक नगर। जामुन (ललित० ८७)।
जंबूर—देखो 'जम्बुर'।
जंबूरची—पु० जम्बूर नामक तोप चलानेवाला।
जंबूरा—पु० एक औज़ार। तोपकी चर्ख।
जंभ—पु० जबड़ा या दाढ़। जँभाई। महिषासुरका पिता, जिसे इन्द्रने मारा था। जंभरिपु=इन्द्र।
जंभक—पु० एक तरहका नीबू। वि० जँभाई लानेवाला। [ हिंसक।
जंभा—स्त्री० जँभाई।
जँभाई—स्त्री० आलस्यादिवश मुँह खुलनेकी क्रिया।
जँभाना—अक्रि० जँभाई लेना।
जंभी, जंभीर—पु० एक तरहका नीबू ( भू० ८ )।
ज—पु० मृत्युञ्जय। जन्म। जनक। विष्णु इ०। प्रत्य० उत्पन्न ( जलज, मनोज )।
जई—स्त्री० जौकी तरहका एक अन्न। जौका अङ्कुर। अङ्कुर। फलोंकी बतिया 'परसि परम अनुराग सींचि सुख लगी प्रमोद जई। सू० ११५
जईफ—वि० वयो-वृद्ध।
जउबन—पु० यौवन ( विद्या० १२२ )।
जऊ—क्रिवि० यद्यपि 'खेल तऊ न तजै जइ जीव जऊ पड़वानल क्रोध उठोई।' के० ७५
जकंद—स्त्री० उछाल, छलाँग।
जकंदना—अक्रि० कूदना, झपटना, टूट पड़ना।
जकंदनि—स्त्री० दौड़धूप, उलझन ( कवी० ३१२ )।
जक—स्त्री० हठ, जिद ( सुसु० १२ ), धुन, रटना 'ज्यों त्रिदोष उपजे जक लागत बोलत वचन न सूधो।' सू० ( कवी० १७४ )। डर। हानि, हार। पु० यक्ष, कृपण मनुष्य।
जकड़—स्त्री० कसकर बाँधनेकी क्रिया।
जकड़ना—सक्रि० कसना, बाँधना।
जकना—अक्रि० आश्चर्य करना, भौचक्का होना, निश्चेष्ट सा हो जाना, स्तम्भित होना। 'ना यह नन्दको मन्दिर है, वृषभानको भौन, कहा जकती हो।' देव, 'चकी जकी सी ह्वै रही बूझे बोलत नीठि।' बि० २६२, ( सूबे० ७० )
जकरना—सक्रि० बाँधना 'पग जोहारि जञ्जीरनि जकर्यो यह उपमा कछु पावै। सूबे० ११६, ( सू० २६ )
ज़कात—पु० कर। दान।
जकित—वि० चकित, स्तम्भित।
जक्त—पु० जगत्, संसार 'हैं घर घर ह्वै रह्यो खिलौना जक्त कहत जाको अविनासी।' नागरी०
जक्ष—पु० यक्ष।
जखनी—स्त्री० यक्षिणी।
जखम, जख़्म—पु० घाव। सदमा। जख़्मी=घायल।
ज़खीरा—पु० राशि, संग्रह, कोष ( रतन० ९५ )।
जग—पु० जगत्, संसार। दुनियाके लोग।
जगकर—पु० ब्रह्मा ( कविप्रि० ६२ )।
जगजगाना—अक्रि० जगमगाना, चमचमाना।
जगजोनि—पु० ब्रह्मा। [ जाता है।
जगण—पु० छन्दः शास्त्रका एक गण जो अशुभ माना
जगत—पु० जगत्, संसार। स्त्री० कुएँका चबूतरा।
जगती—स्त्री० पृथिवी, संसार।
जगत्—पु० संसार, दुनिया।
जगत्सेठ—पु० भारी महाजन ( मुद्रा० ११६ )।
जगदंबा,-दंबिका—स्त्री० संसारकी माता, भवानी, दुर्गा।
जगदीश—पु० जगत्के स्वामी, ईश्वर, जगन्नाथजी।
जगना—अक्रि० जागना, नींदसे उठना। सावधान होना। उभड़ना, उत्तेजित होना। जलना, चमकना '… निमिके कुल अद्भुत जोति जगै।' राम० ९४
जगप्रान—पु० वायु, हवा 'आवत ही हेमन्त तो कम्पन लगो जहान। कोक कोकनद भे दुखी अहित भये जगप्रान।' दीन० १९५
जगवंद—वि० संसारके वन्दना करने योग्य (राम०२१४)।
जगमग, जगमगा—अक्रि० प्रकाशित ( दीन० १२१ ), प्रकाशयुक्त, चमकदार।
जगमगना, जगमगाना—अक्रि० चमचमाना, दमकना ( सू० ४८ ),'राम सीय सुन्दर परिछाहीं। जगमगाति मनि-खम्भन माहीं।' रामा० १७६
जगर—पु० कवच।

जगरमगर—वि० प्रकाशित, झलमल 'लसति रसोईकैं बगर जगरमगर दुति होति।' वि० १९७

जगह—स्त्री० स्थान। पद, ओहदा। गुञ्जाइश (पभू०६६

जगाजोति—स्त्री० जगमगाहट (रत्ना० ३२०)।

जगात—पु० दान, कर (उदे० 'उगाहना', रतन० ४३)।

जगाती—पु० दानी, कर उगाहनेवाला 'सूर श्याम अब भए जगाती वै दिन सब बिसराए।' सूबे० १३३, 'घाट जगाती धरमराय सबका झारा लेहि।' साखी ७८

जगाना—सक्रि० नींद छुड़ाना, चैतन्य करना, उद्दीपित करना 'अधर सुधारस मदन जगावत'—सू० ९२। यन्त्र मन्त्र, सिद्धि आदिका साधना।

जगार—स्त्री० जाग्रति, जागरण।

जगीर—स्त्री० जागीर 'सोइ जगीरैं खाय'—रहीम।

जगीला—वि० जागते रहनेके कारण सुस्तीसे भरा हुआ [उनींदा।

जग्य—पु० यज्ञ।

जघन—पु० पेड़ू। नितम्ब ( रवि० ३० )।

जघन-चपला—स्त्री० दुराचारिणी या कामुकी स्त्री, वेश्या।

जघन्य—वि० निन्द्य, गर्हित, नीच।

जचना—अक्रि० जाँचा जाना, अच्छा लगना।

जच्चा—स्त्री० वह स्त्री जिसने प्रसव किया हो।

जच्छ—पु० यक्ष ( राम० २५४, भू० ६ )।

जजना—सक्रि० पूजना, आदर करना, मानना 'कलि पूजैं पाखण्डको जजैं न श्रुति आचार।' दीन० ७६

जजबा—पु० प्रवृत्ति, झुकाव, दिलकी उमङ्ग ( कर्म० १८३ )।

जजमान, जजिमान—पु० यजमान, पूजा करनेवाला।

जज़ा—स्त्री० 'सज़ा' का उलटा, इनाम (सेवा० १८४)।

जज़िया—पु० मुसलमानी शासनकालका एक कर जो गैरमुसमानोंपर लगता था।

जज़ीरा—पु० टापू।

जजुर—पु० यजुर्वेद ( उदे० 'छठी' )।

जटना—सक्रि० जड़ना, जकड़ना ( उदे० 'खुटना' ), 'दिन दिन हीन छीन भई काया दुःख जञ्जाल जटी।' [सू० ५। ठगना।

जटल—स्त्री० व्यर्थकी बकवाद।

जटा—स्त्री० सिरके जटे हुए लम्बे बाल। उलझे हुए लम्बे [रेशे। शाखा।

जटाजूट—पु० जटाओंका समूह।

जटाधर—पु० शङ्करजी।

जटाधारी,-माली—पु० शिवजी।

जटाना—अक्रि० ठगा जाना। सक्रि० जटनेमें किसीको प्रवृत्त करना।

जटामासी—स्त्री० एक पौधेकी सुगन्धयुक्त जड़।

जटाल—वि० जिसके जटा हो। पु० वटवृक्ष।

जटित—वि० जड़ा हुआ। जकड़ा हुआ।

जटिल—वि० जटावाला 'जोगी जटिल अकाम मन नगन अमङ्गल बेख।' रामा० ४२। दुर्बोध। दुष्ट, कुटिल।

जटिला—स्त्री० जटामासी, वच, पिप्पल। ब्रह्मचारिणी। राधाकी सास।

जटी—वि० जटाधारी 'अनाथैं सुन्यो मैं अनाथानुसारी। बसैं चित्त दण्डी जटी मुण्डधारी।' राम० ३२५

जटुल—पु० एक तरहका शरीरपर दाग जो जन्मसे ही होता है, लच्छन या 'लहसुन'।

जठर—पु० पेट। वि० वृद्ध। [शक्ति।

जठरागि,-ग्नि-स्त्री०,-नल—पु० पेटकी आग, पाचन-

जठेरा—वि० ज्येष्ठ, बड़ा 'विप्रवधू कुल मान्य जठेरी।' रामा० २२२। पु० लड़का '…छल सों कछु करतु फिरतु महरिको जठेरो। सू० ६५

जड़—स्त्री० वृक्षोंका वह भाग जो ज़मीनके नीचे रहता है। नींव, आधार, कारण।—उखाड़ना,—खोदना= हानि पहुँचाकर नष्ट करना 'जर तुम्हारि चह सवति उखारी।' रामा० २०७। वि० अचेतन, निर्बुद्धि, स्तब्ध।

जड़क्रिया—वि० दीर्घसूत्री, देरसे काम करनेवाला।

जड़ता,-ताई—स्त्री०, जड़त्व—पु० अचेतनता, मूढ़ता, स्तब्धता। 'हरौ जीव-जड़ताई।' विन० २६४

जड़ना—सक्रि० जटना। एक चीज़को दूसरीपर ठोंक-कर या पच्ची कर बैठाना। जड़ देना = जमा देना ( तमाचा इ० ) ( जीव० १६९ )।

जड़वाद—पु० भौतिकवाद।

जड़वाना, जड़ाना—सक्रि० नग इ० जड़नेका काम [कराना।

जड़हन—पु० धानका एक भेद।

जड़ाई—स्त्री० जड़नेकी क्रिया या मज़दूरी।

जड़ाऊ—वि० जिसपर रत्नादि जड़े हों।

जड़ाव—पु० जड़नेका काम।

जड़ावर—पु० जाड़ेमें पहननेके कपड़े।

जड़ित—वि० जड़ा हुआ। जो किसीमें जड़ा हो। स्थिर, [जड़ाऊ।

जड़िमा—स्त्री० जड़ता, अज्ञान।

जड़िया—पु० नग जड़नेवाला, कुन्दनसाज़ ।
जड़ी—स्त्री० वह वनस्पति जिसकी जड़ दवाका काम दे ।
जड़ैया—स्त्री० जाड़ा देकर आनेवाला बुखार ।
जड़ता—स्त्री०जड़ता । निश्चेष्टता । मूर्खता ।
जत—वि० जितना ।
जतन—पु० यत्न, उपाय 'चलै कि जल बिन नाव कोटि जतन पचि पचि मरिय ।' रामा० ५८५
जतलाना—सक्रि० बतलाना, सूचित करना ।
जताना—सक्रि० बताना, सूचित करना ।
जति, जती—पु० यती, संन्यासी । [या 'लहसुन' ।
जतु, जतुक—पु० लाख । दोपहरका एक चिह्न, लच्छन
जतुका—स्त्री० एक लता । चमगादड़ ।
जतुगृह—पु० जल्द आग पकड़ लेनेवाली चीजोंका बना घर, लाखका बना घर ।
जतेक—वि० जितना । 'जत' ।
जत्था—पु० मण्डली, समूह ।
जथा—क्रिवि०यथा, ज्यों, जैसे । स्त्री०पूँजी । पु०जत्था ।
जथारथ—वि० यथार्थ । उचित । ज्योंका त्यों ।
जद—अ० यदि । क्रिवि० जब ।
जदपि—अ० यद्यपि ।
जदुनाथ,-पति, पाल—पु० यदुपति, श्रीकृष्ण ।
जदुपुर—पु० मथुरा ।
जदुराइ, जदुबीर—पु० श्रीकृष्ण ।
जद्द—वि० ज्यादा । प्रबल । पु० दादा ।
जद्दपि—अ० यद्यपि ।
जद्बद्द—पु० खराब बात ।
जन—पु० अनुचर, सेवक । लोग ।
जनक—पु० पिता, जन्मदाता । मिथिलाके निमिवंशियों-की उपाधि । सीताजीके पिताका नाम ।
जनकसुता—स्त्री० जानकी ।
जनकारी—पु० महावर, लाखका रङ्ग ।
जनकौर—पु० जनकपुर । जनकके वंशवाले ।
ज़नख़ा—पु० हिजड़ा, स्त्रियों जैसी चेष्टा करनेवाला ।
जनचर्चा—स्त्री० अफवाह । लोकचर्चा ।
जन-तंत्र—पु० जन शासन प्रणाली ।
जनता—स्त्री० सर्वसाधारण ।
जनन—पु० जननेकी क्रिया, जन्म, उत्पत्ति, पैदाइश ।
जनना—सक्रि० प्रसव करना, जन्म देना (विन० ४२०) । सक्रि० जानना 'इहाँ कोऊ हितू मेरो न तेरो जो यह पीर जनै ।' स्वामी हरिदास
जननि, जननी—स्त्री० माता । जन्म देनेवाली 'जननी तू जननी भई, विधि सन कछु न बसाइ ।' रामा० [२७१
जनपद—पु० देश । सर्व-साधारण, प्रजा ।
जनपदकल्याणी—स्त्री० वेश्या ।
जनप्रवाद—पु० देखो 'जनचर्चा' ।
जनम—पु० जन्म । जीवन, आयु ।
जनमना—सक्रि० उत्पन्न करना, जन्म देना 'सुन्दर सुत जनमत भइँ ओऊ ।' रामा० १०८ । अक्रि० जन्म लेना, उत्पन्न होना 'जनमत काहे न मारेसि [मोही ।' रामा०२७१
जनमरक—पु० महामारी ।
जनमसँगाती,-सँघाती—पु० वह जो जन्मसे ही साथ हो । सदा साथ रहनेवाला 'कालव्यालको कष्टनिवारन भजि हरि जनमसँगाती ।' नागरी०
जनमाना—सक्रि० प्रसव कराना ।
जनमारो—पु० जन्म, जीवन ( अष्ट १० )
जनयिता—पु० जन्म देनेवाला, पिता ।
जनयित्री—स्त्री० जननी, माता ।
जनरव—पु० जनश्रुति, अफवाह । लोकापवाद ।
जनवाई—स्त्री० जनवानेकी मजदूरी या नेग ।
जनवाद—पु० प्रजावाद । [खबर दिलवाना ।
जनवाना—सक्रि० जननेमें मदद देना, बच्चा पैदा करना,
जनवास, जनवासी—पु० बरातियोंके टिकानेकी जगह ।
जनस्थान—पु० दण्डक-वन ।
जनश्रुत—वि० मशहूर ।
जनश्रुति—स्त्री० उड़ती खबर, अफवाह ।
जना—वि० पैदा किया हुआ । स्त्री० पैदाइश ।
जनाउ, जनाव—पु० इत्तिला, खबर, सूचना 'अवधनाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाउ ।' रामा० १८२
जनाज़ा—पु०अरथी । शव । [की जगह ।
जनानखाना—स्त्री० अन्तःपुर, स्त्रियोंके उठने बैठनेकी
जनाना—सक्रि० पैदा कराना । जनना । अक्रि० जान पड़ना, मालूम होना 'क्योंहू न याम जनात है जात ...' कलस १८१ । सक्रि० बताना । जताना । पु० अन्तःपुर । वि० स्त्री सम्बन्धी, नपुंसक, कमजोर ।
जनाब—पु० आदरसूचक शब्द । महोदय, महाशय ।
जनावर—पु० जानवर, पशु 'कहि हरिदास पिंजराके

जनावर लौं तरफराइ रह्यो उड़िबेको कितोउ करि।'

जनाश्रय—पु० सराय, धर्मशाला। [स्वामी हरि०

जनि—अ० नहीं, मत ( उदे० 'जलपना' )।

जनित—वि० उत्पन्न, पैदा हुआ।

जनिता—पु० जनक, पिता।

जनित्री—स्त्री० जननी, माता।

जनियाँ—स्त्री० प्रिया, वल्लभा।

जनी—वि०स्त्री० पैदा की हुई। स्त्री०दासी। माता। स्त्री।

जनु—क्रिवि० मानो। [पुत्री। माया (बीजक २,३१)

जनुक—अ० मानो ( ग्राम० ४९ )।

जनेऊ, जनेव—पु० यज्ञोपवीत।

जनेत—स्त्री० बरात 'जनक नगरमें अवधपति राजे सहित जनेत।' राम रसायन, 'पछिताव भूत पिसाच प्रेत जनेत ऐहैं साजिके।' पा० मं०

जनेरा—पु० एक तरहका अन्न। जोन्हरी।

जनेश—पु० नरेश, राजा।

जनैया—वि० जाननेवाला।

जन्नत—पु० बाग़, स्वर्ग ( कर्म० ११७ )।

जन्म, जन्मना—देखो 'जनम'; 'जनमना।'

जन्मपत्र—पु०,—पत्रिका,-पत्री—स्त्री० ग्रह-स्थिति-सूचक जन्मका विवरण-पत्र, ज़ायचा।

जन्मभूमि—स्त्री०वह देश या स्थान जहाँ जन्म हुआ हो।

जन्मशील—वि० जन्मयुक्त, जन्मसापेक्ष 'जन्मशील है मरण' युगवाणी २४

जन्मसिद्ध—वि० जन्मसे ही प्राप्त, स्वाभाविक।

जन्मांतर—पु० दूसरा जन्म।

जन्य—वि० जो उत्पन्न हुआ हो। जनसम्बन्धी। जातीय।

जप—पु० मन्त्रादिका बार बार पाठ करना।

जपतप—पु० पूजा-पाठ।

जपना—सक्रि० मन्त्रादिका फिर फिर उच्चारण करना ( रामा० ३०३ )। यज्ञ करना।

जपा—स्त्री० अड़हुल पुष्प ( सू० १२१ )। देखो 'जपी'।

जपिया, जपी—पु० जप करनेवाला 'वीर धीर साहसी बली जे विक्रमी क्षमी। साधु सर्वदा सुधी तपी जपी जे संजमी।' के० २३, 'जपिया तपिया बहुत हैं सीलवन्त कोइ एक।' साखी १५०

जफा—स्त्री० अन्याय, कठोरता।

जफीर, जफील—स्त्री० सीटी। सीटीका शब्द।

जब—क्रिवि० जिस समय।

जबड़ा—पु० वह हड्डी जिसमें डाढ़ें रहती हैं।

ज़बर, ज़बरदस्त—वि० ताकतवर, बली, 'जो कुछ करे वेग तू कर ले, सिर पर काल जबर रे।' कको० ५३३

ज़बरदस्ती—स्त्री० सीनाजोरी, अन्याय। क्रिवि० बलपूर्वक।

जबरन्—क्रिवि० बलपूर्वक। बलात्। [

जबरा—वि० ज़बरदस्त, बलवान्।

ज़बह—पु० गला काटकर बध करना।

ज़बां—स्त्री० जिह्वा।

ज़बान—स्त्री० जीभ, वाणी, बोल। भाषा। वादा।—डालना = कहना, पूछना, किसी बातकी याचना करना।—देना = बचन देना।—पर रखना = चखना।—पर होना = याद रहना।—बन्द करना = बोलना बन्द करना, बहसमें हरा देना।—बिगड़ना = मुँहका स्वाद बिगाड़ना, अपशब्द कहनेकी आदत पड़ जाना।

ज़बानी—वि० मुँहसे कहा हुआ, मौखिक, लिखित नहीं।

ज़बून—वि० खराब।

ज़ब्त—पु० किसीकी सम्पत्ति इत्यादि किसी व्यक्ति या राज्यद्वारा अधिकारमें किया जाना। अमल। क़ैद। रोकटोक। कुर्क।

ज़ब्ती—स्त्री० ज़ब्त या कुर्क किया जाना, निगरानी।

जब्र—पु० ज्यादती, अन्याय, सख्ती।

जब्रन्—क्रिवि० बलपूर्वक, अन्यायसे।

जम—पु० धर्मराज, कृतान्त। निग्रह, विष्णु, शनि।

जमकात, जमकातर—स्त्री० एक तरहका खाँड़ा, यमका खाँड़ा 'बिजुरी चक्र फिरै चहुँ फेरी। औ जमकात फिरै जमकेरी।' प० ७३, 'होइ हनुवँत जमकातर ढाहौं।' प० ३१९। पु० भँवर।

जमघंट—पु० यमघण्ट। एक अशुभ योग। कार्तिक सुदी १।

जमघट—पु० जमात, भीड़।

जमज—पु० एक साथ उत्पन्न होनेवाले बच्चोंका जोड़ा।

जमदिसा—स्त्री० दक्षिण दिशा। [अश्विनी कुमार।

जमधर—पु० तलवार 'चंचल मनुवाँ चेत रे, सौवै कहा अजान। जमघर जम ले जायगा, पड़ा रहेगा म्यान।' साखी० १६२

जमना—अक्रि० अच्छी तरह स्थित होना, जमा होना।

टण्ड इ० से द्रव पदार्थका ठोस हो जाना। उगना। स्त्री० यमुना।
जमनिका—स्त्री० जवनिका, परदा, टट्टी 'मानकी जमनिकाके कंज मुख मूँदिवेको सीता जूको उत्तरीय सब सुख सारु है।' राम० २८९। काई।
जमराज—पु० मृत्युके देवता।
जमवट—स्त्री० कुएँमें जोड़ाईके नीचे रखनेका लकड़ीका [ गोल ढाँचा।
जमवार—पु० यमका द्वार।
जमा—स्त्री० पूँजी, धन। वि० इकट्ठा, एकत्र।
जमाई—पु० दामाद 'देखत सन्त भयानक लागत भावते ससुर जमाई।' व्यासजी।
जमाजथा—स्त्री० मालमत्ता।
जमात—स्त्री० समूह, मण्डली ( उद्दे० 'जिनिस' )।
जमादार—पु० सिपाहियों या कुलियोंका प्रधान।
जमानत—स्त्री० अपराधीको कचहरीमें उपस्थित करनेकी जिम्मेदारी। कर्ज अदा करनेकी जिम्मेदारी।
जमाना—सक्रि० द्रव पदार्थको गाढ़ा करना या ठोस बनाना, अच्छी तरह बैठाना, आरोपित करना 'गाइ गो तान जमाइ गो नेह, रिझाइ गो प्रान चराइ [ गो गैया।' रसखानि
ज़माना—पु० समय।
जमाबंदी—स्त्री० पटवारियोंका एक कागज जिसमें लगान आदिका ब्योरा रहता है।
जमामार—वि० दूसरोंकी जमा हड़प जानेवाला। [ आता है।
जमाल—पु० शोभा।
जमालगोटा—पु० एक पौधेका बीज जो दवाके काममें
जमाव—पु० जमने या जमानेका भाव। भीड़भाड़।
जमावट—स्त्री० जमनेका भाव।
जमावड़ा—पु० भीड़ ( पमू० १०४ )।
ज़मीं—स्त्री० जमीन।
ज़मींदार—पु० ज़मीनका अधिकारी।
जमी—वि० यमी, संयमी, इन्द्रिय-निग्रह करनेवाला 'असन पान सुचि अमित अमीसे। देख लोग सकुचात [ जमीसे।' रामा० ३०२
जमींकंद—पु० ओल, सूरन।
ज़मीन—स्त्री० धरती, पृथिवी, स्थान।
ज़मीर—पु० अन्तःकरण, अन्तरात्मा ( कर्म० १४५ )।
जमुकना—अक्रि० बिल्कुल पास होना।
जमुहाना—अक्रि० जँभाई लेना ( उद्दे० 'ऐंड़ाना' )।
जमूरक, जमूरा—पु० एक तरहकी छोटी तोप।
जमोगना—सक्रि० सरेखना, भार सौंपना, जाँच कराना।
जम्हाई—स्त्री० जमुहानेकी क्रिया।
जम्हाना—अक्रि० देखो 'जमुहाना'।
जम्हावरि—स्त्री० जम्हाई ( सूसु० २५४ )।
जयंत—वि० बहुरुपिया। विजयी। पु० इन्द्रका पुत्र। भीमसेनका एक नाम।
जयंती—स्त्री० पताका। किसी महापुरुषकी वर्षगाँठका [ उत्सव।
जय—स्त्री० जीत। लाभ। एक पेड़।
जयजीव—पु० एक प्राचीन अभिवादन 'कहि जयजीव बैठ सिर नाई।' रामा० २१७
जयति—अक्रि० जय हो।
जयद्रथ—पु० दुर्योधनका बहनोई।
जयना—सक्रि० जय पाना, जीतना 'इन्हमें न एको भयो बूझि न जूझ्यो न जयो।' विन० ५७४
जयपत्त, जयपत्र—पु० विजय-सूचक पत्र (उद्दे० 'खगना')।
जयमाल—स्त्री० वह माला जो विजयीको, या स्वयंम्वरमें वरे हुए पुरुषको, पहनायी जाय।
जया—स्त्री० दुर्गा। पार्वती। ध्वजा। हरी दुर्वा। अड़हुल।
जयी—वि० जीतनेवाला, जेता।
जर—स्त्री० देखो 'जड़' ( सू० ११५ )। पु० जल 'भानु कमल कुल पोषनिहारा। बिनु जर जारि करइ सोइ छारा।' रामा० २०७। ज्वर 'जरहिं दुसह जर पुर नरनारी।' रामा० ३२४। जरा, बुढ़ापा। स्त्री० औकात 'मसका कहत मेरी सरवर कौन उड़े, मेरे आगे गरुड़की केती एक जर है।' सुन्द० १४३। ज़र= सोना, धन।
जरई—स्त्री० जौ आदिके हरे हरे अंकुर।
जरकटी—पु० एक शिकारी चिड़िया।
जरकस, जसकसी—वि० ज़रीदार, जिसपर सोनेके तार लगे हों 'ललित राजपथमें जहाँ जरकस बसन बिकात।' ललित० १४, 'सरस कृपान तरकसरु कमान बान जरकसी चीरा हीरा जहाँ जाइ लाइये।' गोपाल [ मि
ज़रखेज़—वि० उपजाऊ।
जरजर—वि० बहुत पुराना, बेकाम, ध्वस्त विध्वस्त।
जरठ—वि० बुड्ढा। कठोर। पु० वृद्धावस्था। [ बूढ़।
जरठाई—स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धावस्था। (उत्तर २१)
जरतार—पु० सोने चाँदी इत्यादिका तार, ज़री।
जरतारी—स्त्री० जरीका काम 'सारी जरतारीकी

झलकति तैसो केसरिको अंगराग कीन्हों सब तनमें ।'
[ ललित० १७८

जरद—वि० पीला ।

ज़रदा—पु० एक तरहका पुलाव । एक तरहकी सुवासित [ सुरती ।

ज़रदी—स्त्री० पीलापन ( उदे० 'चून' ) ।

ज़रदुश्त—पु० पारसियोंके धर्मका प्रवर्त्तक ।

ज़रदोज़—पु० कलाबत्तू आदिका काम करनेवाला ।

ज़रदोज़ी—स्त्री० कलाबत्तू आदिका काम ।

जरन—स्त्री० जलन, दाह, ईर्ष्या ।

जरना—अक्रि०जलना,बलना, संतप्त होना (उदे०'आँच')। ईर्ष्या करना।सक्रि०नग इत्यादि जड़ना(उदे०'जराय')।

जरनि—स्त्री० जलन, दाह, पीड़ा 'हृदयकी कबहुँ न जरनि घटी ।' सू० ५

जरब—स्त्री० चोट, प्रहार 'जोबन जरब महारूपके गरब गति मदनके मद मद मोकल मतङ्गकी।' ललित० १५२

ज़रब—स्त्री० गुणा, धक्का, घाटा । ठप्पा, थाप ।—देना= नुकसान पहुँचाना, आघात करना ।

जरबीला—वि० भड़कीला, चमकदार ( गुलाब ६११ ) ।

ज़रर—पु० नुकसान ।

जरवारा—वि० सम्पत्तिवाला, धनवान् ।

जरा—स्त्री० बुढ़ापा । ज़रा=वि० थोड़ा ।

जराउ—वि० देखो 'जड़ाऊ' । 'गोरे भाल बिन्द सेंदुरपर टीका धर्‌यो जराउ ।' सूबे०१३० [ ❀ करना ।

जराना—सक्रि० जलाना, प्रज्वलित करना, ईर्ष्या पैदा❀

जराय, जराव—पु० पच्चीकारी, नग इ० जड़नेका काम 'नीको लसत ललाट पर टीको जटित जराय ।' बि० ४९, (उदे० 'चौक')। वि० जड़ाऊ, रत्न इत्यादिसे जटित ।

जरायम-पेशा—वि० जुर्म करनेवाली ( जातियाँ ) ।

जरायु—पु० जन्मके समयकी बच्चेके शरीरपर लिपटी हुई झिल्ली, खेड़ी । गर्भाशय । [ ❀जीवधारी ।'

जरायुज—पु० जरायुमें लिपटा हुआ उत्पन्न होनेवाला❀

जरिया—पु०नग जड़नेवाला, कुन्दनसाज (देखो 'जरना')।

ज़रिया—पु० द्वार, सम्बन्ध, हेतु । ज़रिये=के द्वारा ।

जरी—स्त्री० जड़ी बूटी । वि० वृद्ध, जराग्रस्त ।

ज़री—स्त्री० सोनेके तारोंका बना काम ।

जरीब—स्त्री० ज़मीन नापनेकी एक माप । लाठी ।

ज़रूर—क्रिवि० अवश्य, निश्चय ही ।

ज़रूरत—स्त्री० आवश्यकता ।

ज़रूरी—वि० आवश्यक, कामका ।

जरौट—वि० जड़ाऊ 'कोउ कजरौट जरौट लिए कर कोउ मुरछल कोउ छाता ।' रघु०

जर्जर—वि० जीर्ण, ध्वस्त-विध्वस्त ।

जर्जरता—स्त्री० जीर्णता, कमजोरी ।

जर्जरित—वि० जीर्ण-शीर्ण, टूटाफूटा, पुराना ।

जर्द—क्रिवि० जरद, पीला ।

ज़र्रा—पु० सूर्यके प्रकाशमें दिखायी देनेवाले छोटे कण

जर्राह—पु० चीर-फाड़ करनेवाला ।

जलंधर—पु० एक रोग । एक राक्षसका नाम ।

जल—पु० पानी । खस ।

जल-अलि—पु० पानीका भँवरा ।

जल कुक्कुट—पु० मुर्गाबी ।

जलकौवा—पु० एक पक्षी ।

जलक्रिया—स्त्री०, जलप्रदान—पु० पितृतर्पण ।

जलचर—पु० मछली, मगर इ० जल-जन्तु ।

जलचरी—स्त्री० मछली ( अमर० ९८ ) ।

जलचारी, जंतु—देखो 'जलचर' ।

जलज, जलजात—पु० कमल, मोती, शङ्ख इ० ।

ज़लज़ला—पु० भूकम्प, भूडोल ।

जलतरंग—पु० एक बाजा ।

जलत्रास—पु० पागल कुत्ते आदिके काटनेपर जल देखनेसे उत्पन्न होनेवाला भय ।

जलथंभ—पु० मन्त्रबलसे जल रोकनेकी क्रिया ।

जलद, जलधर—पु० बादल ।

जलधरी—स्त्री० देखो 'जलहरी' ।

जलधारी—वि० जो जल धारण करे । पु० बादल ।

जलधि—पु० समुद्र ।

जलन—स्त्री० जलनेकी तकलीफ । ईर्ष्या ।

जलना—अक्रि० झुलसना, बलना, दग्ध होना, कुढ़ना ।

जलनिधि—पु० समुद्र ।

जलपति—पु० समुद्र । वरुण ।

जलपथ—पु० नाली इ० ।

जलपना—अक्रि० लम्बी चौड़ी बातें करना 'यहि विधि जलपत भयेउ बिहाना ।' रामा० ४९१ । सक्रि० डींग मारकर कहना 'जिन्हके अगुन न सगुन विवेका । जलपहिं कलपित बचन अनेका ।' रामा० ६८ । बार-बार कहना ( सूसु० १२७ ) । स्त्री० डींग, व्यर्थकी बकवाद 'जनि जलपना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा ।' रामा० ५०६

जलपाटल—पु० काजल।
जलपान—पु० नाश्ता, कलेवा।
जलप्लावन—पु० पानीकी बाढ़। जल-प्रलय।
जलफल—पु० सिंघाड़ा।
जलबिंब—पु० जलका बुलबुला।
जलभृत्—पु० बादल। कपूरका एक भेद।
जलयान—पु० नाव, जहाज़।
जलरुह—पु० कमल।
जलवाह—पु० बादल 'बँधा विद्युत्-छविमें जलवाह' [पल्लव २६
जलशायी—पु० विष्णु।
जलसा—पु० सभा, उत्सव।
जलसिंह—पु० एक समुद्री जन्तु जो बहुत बड़ा होता है।
जलसीप—स्त्री० मोतीवाली सीप।
जलसुत—पु० कमल, मोती।
जलस्तंभ—पु० स्तम्भके आकारमें बादलका झुककर जलाशयसे मिलना।
जलहर—पु० जलाशय 'वे जलहर हम मीन बापुरी...' सूबे० ४३९, जीवनन्तु जलहर बसे गये विवेक जु भूल।' साखी १५८। वि० जलपूर्ण।
जलहरी—स्त्री० शिवलिङ्गका आधारभूत पत्थर या धातु-खण्ड। शिवलिङ्गके ऊपर लटकनेवाला जलपात्र।
जलहस्ती—पु० एक समुद्री जन्तु।
जलांजलि—स्त्री० प्रेतादिके लिए अँजुलीमें भरकर जल देना।
जलाक—स्त्री० उदर ज्वाला। लू. 'कहै पदमाकर त्यों जेठकी जलाकैं तहाँ पावैं क्यों प्रवेश वेस वेलिनकी वारी है।' पद्मा०, 'जोमते जलाकनके जगत् पजावा भयो।' कलस २०८
जलाका—स्त्री० देखो 'जलाक' 'तपित सलाका भई जेठकी जलाकामें।' रत्ना० ४५७
जलाजल—पु० गोटे इत्यादिकी झालर (उदे० 'खुभी')। वि० जलमय, जलाहल 'वे नद चाहत सिंधु भये अब सिंधु ते ह्वै जलाजल सारे।' तोष
जलाद—पु० घातक। (देखो 'जल्लाद')।
जलाना—सक्रि० आग या आँचके द्वारा किसी पदार्थको भस्म करना या जलाना। ईर्ष्या पैदा करना।
जलापा—पु० ईर्ष्यासे उत्पन्न जलन।
जलाल—पु० रोब, आतङ्क, दीप्ति, तेज 'जो मुखों पर उसके जलाल था' पूर्ण २३९
जलावतन—पु० देश-निर्वासनका दण्ड। वि० देशसे निकाला हुआ।
जलावन—पु० ईंधन। अग्निमें जलाने इत्यादिसे नष्ट हुआ [अंश।
जलावर्त्त—पु० पानीका भँवर।
जलाशय—पु० जलपूर्ण स्थान, तालाब, नदी इत्यादि।
जलाहल—वि० जलमय (उदे० 'जलाजल' पाठ०)।
जलिका, जलुका, जलूका—स्त्री० जोंक।
ज़लील—वि० जिसकी बेक़दरी की गयी हो। अपमानित, तुच्छ, क्षुद्र। शर्मिन्दा, कमीना।
जलूस—पु० किसी बातके उपलक्ष्यमें बहुत आदमियोंका एकत्र होकर चलना।
जलेचर—पु० जलमें रहनेवाला प्राणी।
जलेबी—स्त्री० कुण्डलीके आकारकी एक मिठाई।
जलेश—पु० समुद्र। वरुण देवता।
जलोदर—पु० पेटमें पानी जमा होनेका एक रोग।
जलौका—स्त्री० जोंक।
जल्द—क्रिवि० फ़ौरन, शीघ्र।
जल्दबाज—वि० शीघ्रता करनेवाला।
जल्दी—स्त्री० शीघ्रता। क्रिवि० शीघ्र।
जल्पना—देखो 'जळपना'।
जल्लाद—पु० अपराधियोंको फाँसीपर चढ़ानेवाला, वध करनेवाला। निष्ठुर व्यक्ति।
जव—पु० जौ। एक तौल। वेग।
जवन—पु० यवन। घोड़ा। वेग। वि० वेगवान्।
जवनिका—स्त्री० नाटकका परदा। पट, परदा, कनात।
जवाँमर्द—वि० वीर, बहादुर।
जवा—पु० लहसुनका दाना। सिलाईका एक ढङ्ग। स्त्री० [जपा, अड़हुल।
जवाखार—पु० एक तरहका नमक।
जवादि—पु० वनबिलावसे प्राप्त एक सुगन्धित वस्तु, सुगन्धित उबटन 'कुंकुम मेदो जवादि, मृगमद करपूर आदि, बीरा बनितन बनाय, भाजन भरि राखे।' के० १११
जवान—पु० युवक, वीर पुरुष, सिपाही। वि० तरुण।
जवानी—स्त्री० युवावस्था। अजवाइन।
जवाब—पु० उत्तर।
जवाबदेह—वि० उत्तरदायी।
जवाबदेही—स्त्री० जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व।
जवाबी—वि० जवाब सम्बन्धी। जिसका जवाब देना हो।
जवार—पु० देखो 'जवाल'। 'स्वारथ अगम

कहा चली पेटकी कठिन जगजीवनको जवारु है।' कविता० २१७। जुआर।

जवारा—पु० जौका अङ्कुर ( सुबे०२४५ )।

जवाल—पु० अवनति। जञ्जाल, बखेड़ा 'छाँड़ि कै जवाल जाल, गहि तू गोपाल लाल तातें कहि दीनदयाल फन्द क्यों फँसातु है।' दी० १७०, ( भू० २८ )

जवास, जवासा—पु० एक कँटीला पौधा जो वर्षामें जलकर सूख जाता है 'सहमि सूखि सुनि सीतल बानी। जिमि जवास परे पावस पानी।'रामा० २२४,

जवाहर, जवाहिर—पु० रत्न। [ ( दे० 'घोर' )

जशन—पु० आनन्दोत्सव। कई वेश्याओंका एक साथ

ज़स—पु० यश, कीर्ति। क्रिवि० जैसा। [नाचना गाना।

ज़सवंत—पु० एक फूल ( पूर्ण ९७ )।

जसोवै—स्त्री० कृष्णकी माता, यशोदा।

जस्तई—वि० जस्तेके रङ्गका।

जस्ता—पु० एक तरहकी धातु। [ चारो ओर।

जहँ—क्रिवि० जहाँ, जिस जगह।—तहँ=इधर उधर,

जहँड़ना, जहँड़ाना—अक्रि० हानि उठाना, धोखेमें पड़ना 'संसय छूटै गुरु कृपा तासु विमुख जहँड़ाय।' साखी १९०, ( बीजक ३८ )

जहतिया—पु० लगान वसूल करनेवाला 'मन्मथ करै कैद अपनीमें ज्ञान जहतिया लावै।' सू० ११

जहत्स्वार्था—स्त्री० लक्षणाका एक भेद।

जहदना—अक्रि० कीचड़ होना। थक जाना।

जहदा—पु० कीचड़, दलदल।

जहन्नम, जहन्नुम—पु० नरक, कष्टमय स्थान।

जहना—सक्रि० त्यागना। नष्ट करना।

जहमत—स्त्री० आफत, कष्ट, झञ्झट।

जहर—पु० जौहर व्रत। ज़हर=विष।

ज़हरबाद—पु० एक तरहका भयंकर फोड़ा।

ज़हरमोहरा—पु० एक तरहका पत्थर जो साँपका विष

ज़हरीला—वि० विषमय, विषाक्त। [खींच लेता है।

जहल—स्त्री० ताप, गरमी 'आवन भयो है...जेठकी जहलमें' ( रत्न० ३३४ )।

जहाँ—क्रिवि० जिस जगह।

जहाँदीद—वि० तजरुबेकार।

जहाँपनाह—पु० संसारका रक्षक।

जहाज़—पु० जलयान, समुद्रपोत।

जहान—पु० दुनिया, संसार।

जहालत—स्त्री० मूर्खता।

जहिआ,जहिया—क्रिवि० जिस समय, जब 'भुजबल विश्व जितब तुम जहिया।' रामा० ८०

जहीं—क्रिवि० जिस स्थानपर। ज्यों हीं 'जहाँ बारुनीकी करी रंचक रुचि द्विजराज।' राम० ८७

जहीन—वि० समझदार,जिसकी धारणाशक्ति अच्छी हो।

जहूर—पु० प्रकाश, रौनक, ठाट।

जहेज—पु० देखो 'दहेज'।

जह्नुतनया, जह्नुसुता—स्त्री० गङ्गा।

जाँग—स्त्री० जाँघ। पु० घोड़ोंका एक भेद।

जाँगड़ा—पु० भाट, राजाओंकी कीर्त्ति गानेवाला।

जाँगर—पु० हाथ-पाँव चलानेकी शक्ति। अन्न निकाला हुआ डण्ठल 'तुलसी त्रिलोककी समृद्धि सौज सम्पदा, सकेलि चाकि राखी रासि, जाँगर जहान भो।' कविता० १८३

जाँगलू—वि० जङ्गली, ग्रामीण, देहाती। पु०ग्रामीण व्यक्ति

जाँघ—स्त्री० जङ्घा, उरु।

जाँघा—पु० गड़ारी रखनेका कुएँपरका खम्भा। गड़ारीका

जाँघिया—पु० एक तरहका लँगोट, काछा। [धुरा।

जाँघिल—पु० एक तरहका पक्षी। पु० पिछले पैरका लँगड़ा बैल।

जाँच—स्त्री० परीक्षा, देखरेख, तहकीकात।

जाँचक—पु० याचक, भिक्षुक।

जाँचकता—स्त्री० याचकता, माँगनेका काम।

जाँचना—सक्रि० माँगना, प्रार्थना करना ( सू० २० ), 'को जाँचिये शम्भु तजि आन।' विन० ६८। अनुसन्धान करना, निरीक्षण करना। आजमाना, परीक्षा लेना 'आज क्षितिजपर जाँच रहा है तूली कौन चितेरा।'

जाँजरा—वि० जर्जर। [ सांध्यगीत ६७

जाँझ—पु० आँधी-पानी।

जाँत, जाँता—पु० आटा पीसनेकी पत्थरकी चक्की।

जाँपना—सक्रि० चाँपना, दबाना 'चोचन जाँपि चहूँ दिसि डोलत चारु चकोर अँगारन भोरे।' के० २०

जाँब,जाँबवत, जाँबु—पु० जामुन 'काहू जाबु बिरह अति झारा।' प० ८७

जांबवंत,-वान्—पु० सुग्रीवके एक मन्त्रीका नाम।

जांबूनद—पु० धतूरा, सोना।

जाँचत—क्रिवि० जितना।
जाँवर—पु० प्रस्थान, गमन।
जा—सर्व० जो, जिस 'जा तनकी झाँई परे श्याम हरित दुति होइ।' वि० १। यह ( स्त्री० बुंदे० )। वि० उचित। स्त्री० माता, देवरानी।
जाइ—वि० व्यर्थ।
जाइफर,-फल—पु० जायफल।
जाई—स्त्री० कन्या ( रवि० २१ )।
जाउँनि—स्त्री० जामुन।
जाउर—स्त्री० खीर 'पुनि जाउरि पछियाउरि आई।' प० १३५
जाक—पु० यक्ष।
जाकड़—पु० लौटा सकनेकी शर्तपर माल लाना।
जाखिनी—स्त्री० यक्षिणी 'राघव करै जाखिनी पूजा।' प० २२०
जाग—पु०यज्ञ 'आगम-विधि जग जाग करत नर सरत न काज खरो सो।' विन० ४०७, 'श्री रघुराज हमूँ चलिहैं सुख पैहें विदेहकी जागहिं जोई।' रघु० ८६। स्त्री० जागरण। जगह, स्थान ( रतन० ८ )।
जागना—अक्रि० सोकर उठना, सावधान होना, निद्रा-रहित अवस्थामें रहना। शोभित होना, प्रकाशित होना, प्रसिद्ध होना 'जागत हौ तुम जगतमें भावसिंह दीवान। जागत गिरिवर कन्दरनि अरिवर तज अभि-मान।' ललित० ७८। चमक उठना, समृद्ध होना, समुत्थित होना।
जागर—पु० जागनेकी क्रिया। कवच।
जागरण, जागरन—पु० जागनेकी क्रिया, निद्राका न रहना।
जागरित—वि० जो जागता हो। सचेत। पु० जागरण।
जागरूक—वि० जाग्रत, चैतन्य।
जागरूप—वि० प्रत्यक्ष, स्पष्ट।
जागा—स्त्री० जगह 'माँछी माछर माँगने मूसे बाँदर चोर। काँटे दीमक जीवको जागा दस दुख घोर।' भगवत रसिक
जागी—पु० बन्दी, भाट।
जागीर—स्त्री० तअलुका, राजा इ० से दानमें मिली भूमि।
जागीरदार—पु० तअलुकेदार।
जागीरी—स्त्री० रईसी।
जागृत, जागृति—दे० 'जाग्रत्', 'जाग्रति'।
जाग्रति—स्त्री० जागनेकी अवस्था, जागरण।
जाग्रत्—वि० जो जागता हो। सजग, सचेत।
जाचक, जाचकता—देखो 'जाँचक'; 'जाँचकता'।
जाचना—सक्रि० माँगना, प्रार्थना करना ( रतन० १ )।
जाजम—देखो 'जाजिम'।
जाजरा—वि० जर्जर।
जाजिम—स्त्री० छपी हुई चादर, गलीचा।
जाज्वल्य—वि० प्रकाशित, खूब चमकता हुआ।
जाज्वल्यमान—वि० प्रकाशमय, दीप्तिमान्।
जाट—पु० उत्तर भारतकी एक जाति। [ लट्ठा।
जाठ—पु० तालाबके बीचमें गड़ा हुआ लट्ठा। कोल्हूका
जाठर—पु० पेट। भूख। जठराग्नि। वि० पेट सम्बन्धी।
जाठरानल—पु० पेटकी अग्नि ( उदे० 'कौक' )।
जाड़, जाड़ा—पु० जाड़ा, शीत 'जड़ता जाड़ विषम उर लागा। गयेहु न मजन पाव अभागा।' रामा० २८।
जाड़, जाड्य—पु० जड़ता। [ शीतऋतु।
जात—स्त्री० जाति, बिरादरी। पु० पुत्र। वि० उत्पन्न।
जातक—पु० पुत्र, बच्चा।
जातकर्म—पु० शिशु-जन्मके समयका संस्कार।
जातना—स्त्री० यातना, कष्ट ( विन० ३२१ )।
जातनाई—स्त्री० देखो 'जातना', 'कीजै मोको जमजात-नाई।' विन० ४०३
जात-पाँत, जाति-पाँति—स्त्री० बिरादरी, वर्ण आदि।
जातरूप—पु० सोना, धतूरा।
जातवेद—पु० अग्नि, सूर्य इ०।
जाति, जाती—स्त्री० जाति। चमेली 'हे मालति, हे जाति, जूथके, सुनि हित दे चित।' नन्द० १२
जाती—वि० निजी, व्यक्तिगत।
जातीय—वि० जाति सम्बन्धी, जातिका।
जातुधान—पु० यातुधान, राक्षस।
जात्रा—स्त्री० यात्रा, सफर।
जाथका—स्त्री० राशि, पुञ्ज।
जादव—पु० यादव।
जादसपति—पु० वरुण।
जादा—वि० अधिक।
जादू—पु० इन्द्रजाल। टोना। ठगोरी, मोहनी।
जादूगर—पु० जादू करनेवाला। ऐन्द्रजालिक।
जादूगरनी—स्त्री० जादूगरकी स्त्री, जादू करनेवाली।
जादौ—पु० यादव, यदुवंशी।
जान—स्त्री० समझ 'मेरे जान अजहुँ जानकी दीजे।' सू० २७। जानकारी। ...जादू, टोना 'मेरे जान आवत

तू जानति है जान कछू'—कवि प्रि० २०१।—पहचान=परिचय ( विन० ४५० )। वि० सुजान, ज्ञानवान् ( कविता० २११ ), बुद्धिमान्। पु० यान, वाहन, विमान 'विष्णु बिरञ्चि महेस बिहाई। चले सकल सुर जान बनाई।' रामा० ३९। जानु, घुटना। स्त्री० दम, प्राण, सामर्थ्य। पत्नी।

जानकार—वि० जाननेवाला। चतुर।

जानकारी—स्त्री० अभिज्ञता, ज्ञान। विज्ञता।

जानकी—स्त्री० श्री जनककी पुत्री और श्री रामचन्द्रकी पत्नी।

जानकीकुंड—पु० चित्रकूटका एक तीर्थ।

जनकीजान,-जानि—पु० ( जानकी जिनकी स्त्री हैं ऐसे ) रामचन्द्रजी 'जग जाँचिये कोऊ न, जाँचिये जौ जिय जाँचिये जानकि जानिहि रे।' कविता० २१०

जानकीजीवन,-नाथ,-रमण—पु० श्रीराम।

जानदार—वि० जिसमें जीव हो, जिसमें कुछ दम हो।

जाननहार—पु० जाननेवाला।

जानना—सक्रि० ज्ञान प्राप्त करना, परिचित होना। समझना, सोचना।

जानपद—पु० देश। लोग। कर।

जानपना—पु०, जानपनी—स्त्री० जानकारी, चतुराई।

जानमनि—पु० (जानों) बुद्धिमानोंका शिरोमणि। अत्यन्त ज्ञानी व्यक्ति।

जानराय—पु० चतुर-शिरोमणि।

जानवर—पु० पशु। जीवधारी।

जान्ह—स्त्री० जाँघ ( ग्राम० १४९ )।

जानहार—वि० जानेवाला, नष्ट होनेवाला।

जानहु—अ० मानो।

जाना—अक्रि० गमन करना, अग्रसर होना, कहींसे हट जाना, ग़ायब होना, खोना। व्यतीत होना, नष्ट होना, अलग होना। सक्रि० पैदा करना 'दुइ सुत सुन्दर सीता जाये।' रामा० ४८३। अक्रि० पैदा होना '...किधौं ब्रह्म-जीव जग जाये।' गीता ३०६

जानि—वि० ज्ञानी, जानकार 'यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ। जानि-सिरोमनि कोसलराऊ।' रामा० ४८३।

जानिब—स्त्री० ओर, दिशा।

जानिबदार—वि० तरफदार।

जानी—स्त्री० प्राणेश्वरी। वि० जान लेनेवाला। दिली।

जानु—अ० जानो। पु० घुटना। जाँघ (उदे० 'उन्हारि')।

जानुपानि—क्रिवि० घुटनों और हाथोंके बल।

जानू—पु० जँघा।

जाप—पु० देखो 'जप'।

जापक—पु० जप करनेवाला।

ज़ाफत—स्त्री० दावत।

जाफ़रान—पु० केसर।

जाबर—पु० लौकी और चावल मिलाकर तैयार किया हुआ एक तरहका खाद्य।

जाबिर—वि० जबरदस्ती करनेवाला, अन्यायी।

ज़ाब्ता—पु० कानून, कायदा।

जाम—पु० याम, पहर। प्याला। [ १२। स्त्री० पत्नी।

जामगी—स्त्री० तोपमें आग देनेकी बत्ती, तोड़ा। हिम्मत

जामदानी—स्त्री० कपड़े रखनेका सन्दूक। पु० एक तरहका बेलबूटेदार कपड़ा।

जामन—पु० वह खट्टी चीज जिससे दूध जमाया जाता है 'जामन दयो सो धर्‍यो धर्‍योई खटायगो'—रसखानि

जामना—अक्रि० जमना, आरोपित होना (उदे० 'गोमर', सू० ११५), 'देव न बरिषहिं धरनि पर नये न जामहि धान।' रामा० ५९३

जामा—पु० एक तरहका पहनावा।

जामाता, जामातु—पु० दामाद।

जामिक—पु० यामिक, पहरा देनेवाला, रक्षक।

जामिन—पु० जमानत करनेवाला। प्रतिभू।

जामिनी—स्त्री० यामिनी, रात्रि।

जामी—स्त्री० जमीन 'गाड़्यो धन जामीमें बिछाय राखी तापै खाट'—गुलाब ५०१

जामुन—पु० एक मीठा कसैला फल या उसका पेड़।

जायँ—वि० मुनासिब।

जाय—क्रिवि० व्यर्थ, निष्फल 'तात कुतरक करहु जनि जाये।' रामा० ३२५। वि० व्यर्थ, वृथा 'जाय कहब करतूति बिन जाय जोग बिन छेम।' दोहा० ११३

ज़ायक़ा—पु० स्वाद। ज़ायक़ेदार—वि० स्वादिष्ट।

ज़ायचा—पु० जन्मपत्री।

जायज़—वि० उचित, वाजिब।

ज़ायद—वि० फालतू।

जायदाद—स्त्री० सम्पत्ति।

जायफल—पु० एक सुगन्धित फल जो मसाले आदिके काममें आता है।

ज़ायल—वि० नष्ट, बरबाद।

जाया—स्त्री० पत्नी, स्त्री (जिसके सन्तान हो चुकी हो)। वि० उत्पन्न ( उदे० 'अचगरा' । )

ज़ाया—वि० नष्ट, खराब।

जार—पु० जाल 'ऐसे अनुक्रम करि सिष्य सूँ कहत गुरु सुन्दर सकल यह मिथ्या भ्रमजार है।' सुन्द० ११०, 'मीनको ज्यों जार।' सू० २८४। पर स्त्रीसे प्रेम करनेवाला, यार ( साखी० ३२ )। वि० नाशक।

जारकर्म—पु० व्यभिचार।

जारज—पु० जारसे उत्पन्न सन्तति।

जारण—पु० जलाकर भस्म करना। [ *( के० ६१ )।

जारना—सक्रि० जलाना, नष्ट करना, पीड़ा देना*

जारिणी—स्त्री० दुराचारिणी स्त्री०।

जारी—वि० प्रवाहित, प्रचलित, क़ायम।

जालंधरी विद्या—स्त्री० इन्द्रजाल।

जाल—पु० सूत इ० का दूर दूर बुना हुआ पट, फन्दा। झरोखा। समूह। युक्ति। इन्द्रजाल। घमण्ड। एक तरहकी तोप। धोखा, फरेब। मकड़ीका जाला।

जालक—पु० झरोखा। घोंसला। जाल। समूह।

जालना—सक्रि० जलाना ( कबीर ७३ )।

जालरंध्र—पु० झरोखेका वह छेद जिससे प्रकाश आता है।

जालसाज—वि० जाल रचनेवाला, फरेब करनेवाला।

जाला—पु० एक नेत्र रोग। मकड़ीका जाल।

जालिक—पु० जाल लगानेवाला, मल्लाह, वधिक 'जालिक सा था अनिल, हमारा नील-सलिलमें फैला जाल' [ पल्लव ९६।

जालिका—स्त्री० समूह।

जालिम—वि० अत्याचारी, अन्यायी।

जालिया—वि० धोखा देनेवाला।

जाली—वि० बनावटी, झूठा। स्त्री० बहु छिद्रयुक्त कपड़ा या लोहे आदिकी चद्दर। जालका स्त्रीलिंग रूप।

जालीलेट,-लोट—पु० एक तरहका छेददार कपड़ा।

जावक—पु० महावर (उदे० 'कोंवरा')। [चाँटा।'प० २

जावत—क्रिवि० जहाँतक 'जावत जगत हस्ति औ

जावन—पु० देखो 'जामन'। 'गुरुजन जावन मिल्यो न भयो दृढ दधि, मध्यो न विवेक रई देव जो बनायगो।' देव ( मज० २८६ )।

जावा—पु० शराब बनानेका मसाला।

जावित्री—स्त्री० जायफलका छिलका।

जासनी—स्त्री० यक्षिणी।

जासूस—पु० भेदिया, गुप्तचर।

जाहर, जाहिर—वि० प्रसिद्ध, प्रकट।

ज़ाहिरा—क्रिवि० प्रकट रूपमें।

जाहिल—वि० अशिक्षित, अनाड़ी।

जाही—स्त्री० चमेली जैसा एक फूल (उदे० 'करना')।

जाह्नवी—स्त्री० जह्नुसुता, गङ्गा।

ज़िंदगानी—स्त्री० जीवन। आयु।

ज़िंदगी—स्त्री० आयु, जीवन।

ज़िंदा—वि० जीता हुआ।

जिंस—पु० सामान, गल्ला, वस्तु, प्रकार।

जिंसवार—पु० पटवारियोंका एक कागज जिसमें फसल॰ का ब्योरा रहता है।

जिआना—सक्रि० जिलाना। पालना 'नाना खग बालकन्हि जिआये। बोलत मधुर उड़ात सुहाये।' रामा० ५५३

जिउ—पु० जीव, प्राण।

जिउकिया—पु० रोजगार करनेवाला।

जिउतिया—स्त्री० पुत्रवती हिन्दू स्त्रियोंका एक व्रत।

जिक्र—पु० चर्चा, उल्लेख।

जिगर—पु० कलेजा, साहस, चित्त।

जिगरी—वि० दिली, घनिष्ठ।

जिगीषा—स्त्री० जीतनेकी इच्छा।

ज़िच,-च्च—स्त्री० लाचारी। शतरंजके खेलकी वह अवस्था जब शाहको चलनेका घर न हो।

जिज्ञासा—स्त्री० जाननेकी इच्छा।

जिज्ञासु,-सू—वि० जिसे ज्ञान-प्राप्तिकी इच्छा हो।

जिठानी—स्त्री० पतिके बड़े भाईकी स्त्री।

जित—क्रिवि० जिस तरफ, जिधर। वि० जो जीता गया हो।

जितना—क्रिवि० जिस परिणाम या अंशमें। वि० जिस [ मात्राका।

जित्वर—वि० जीतनेवाला, विजयी।

जितवना—सक्रि० जताना, सूचित करना। जितवाना, जीतने देना 'समरथ बड़ो सुजान सुसाहब सुकृत सैन हारत जितई है। विन० ३३९

जितवाना, जिताना, जितावना—सक्रि० जीतनेमें समर्थ करना 'हारेउ खेल जितावहिं मोहीं।' रामा० ३२४

जितवार—वि० जीतनेवाला, मात करनेवाला 'त्रिबहूकी [ जितवार तिय...।'

जितवैया—पु० जीतनेवाला।

जितात्मा, जितेन्द्रिय—वि० जिसे अपनी इन्द्रियोंपर ( अधिकार हो।

जिते—वि० जितने।

जितैया—वि० जीतनेवाला ( भू० २८ )।

जितो—वि० जितना।

ज़िद—स्त्री० हठ, टेक, दुराग्रह।
ज़िद्दी—वि० हठी।
जिधर—क्रिवि० जिस तरफ, जहाँ।
ज़िनाकार—वि० पर-स्त्री-गामी, लम्पट।
जिनिस—स्त्री० वस्तु, सामग्री। प्रकार, भाँति 'बहु जिनिस प्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहिं बनै।' रामा० ५६
जिबह—पु० गला काटना, मारना (उदे०'जोरी')।
जिब्भा, जिभ्या—स्त्री० जीभ, जिह्वा 'माला जपों न कर जपों जिभ्या कहों न राम। मलूकदास
जिमाना—सक्रि० भोजन कराना, खिलाना (सूबे०११९)
जिमि—क्रिवि० जैसे, जिस प्रकारसे।
जिम्मा—पु० किसी कामका भार-ग्रहण, देख-भाल।
जिम्मादार, जिम्मेदार, जिम्मेवार—वि० उत्तरदायी।
जिय—पु० जी, मन।
जियन—पु० जीवन।
जियरा—पु० जी, जीव।
ज़ियान—पु० हानि, घाटा ( देखो 'ज्यान' )।
जियाना—सक्रि० देखो 'जिआना'। 'तेहि काल लक्ष्मणको जियाय जियाइयो हम जानिकै।' के० २१
ज़ियाफ़त—स्त्री० दावत।
ज़ियारत—स्त्री० तीर्थदर्शन, तीर्थयात्रा।
जियारी—स्त्री० जीवन,साहस। जीवन-निर्वाहका साधन।
जिरगा—पु० मण्डली, गरोह।
जिरह—पु० उलटे सीधे प्रश्न, बहस। ज़िरह = कवच।
जिरही—पु० कवचधारी सैनिक ( हिम्मत० १५ )।
ज़िराअत—स्त्री० खेती।
जिराफा—पु० ऊँटकीसी लम्बी गरदनवाला एक पशु।
जिला—स्त्री० चमक। माँजकर चमक लानेका कार्य।
ज़िला—पु० प्रांतका एक भाग।
जिलाना—देखो 'जिआना'।
जिलाह—पु० अन्यायी, अनाचार करनेवाला।
जिल्द—स्त्री० पुस्तकके ऊपर लगायी गयी दफ्ती इ०। ऊपरी चमड़ा।
जिल्दबंद,-साज़—पु० किताबोंकी जिल्द बाँधनेवाला।
ज़िल्लत—स्त्री० दुर्दशा। अपमान।
जिव—पु० जीव, प्राणी। प्राण।
जिवाँना—सक्रि० जिमाना।
जिवाना—सक्रि० जिलाना। जीवनधारण करनेमें सहायता देना ( उदे० 'अनवोलता' )।
जिष्णु—वि० जीतनेवाला।
जिस्म—पु० शरीर।
जिह—स्त्री० ज्या, प्रत्यञ्चा, रोदा।
ज़िहन—पु० समझ, धारणाशक्ति।
जिहाज—पु० 'जहाज'। 'तहँ विभावना औरऊ बरनत बुद्धि जिहाज।' ललित० ७१
जिहाद—पु० धार्मिक लड़ाई।
जिहालत—स्त्री० मूर्खता।
जिह्म—वि० टेढ़ा-मेढ़ा, अराल।
जिह्वा—स्त्री० जीभ।
जिह्वाच्छेद—पु० जीभ काटनेकी सज़ा।
जींगन, जीगनि—पु० जुगनू 'जहाँ तहाँ जींगनिकी ज्योति जगैं ज्वाल जैसी जमकी जमाति सी जनाति जाति जामिनी।' दीन० ४२
जी—पु० दिल, चित्त, हृदय ( उदे० 'अदूजा' )। इच्छा, विचार। साहस, तबीयत। प्राण। **जी तोड़कर** = प्राणपणसे। **जीमें खुभना, जीमें गड़ना** = चित्तमें दृढ़ स्थान कर लेना, हृदयमें अङ्कित हो जाना। **जीमें धरना** = मनमें लाना, ख़याल करना, क्रोध करना।
जीअ, जीउ—पु० देखो 'जीव'।
जीअन—पु० देखो 'जीवन'।
जीगन—पु० देखो 'जींगन'।
जीजा—पु० जेठी बहिनका पति।
जीजी—स्त्री० बड़ी बहिन, जेठानी।
ज़ीट—स्त्री० डींग ( ग़बन २३ )।
जीत—स्त्री० विजय, सफलता।
जीतना—सक्रि० विजय या सफलता प्राप्त करना।
जीता—वि० जीवित। तौलसे कुछ अधिक।
जीन—पु० घोड़ेकी पीठपर कसनेकी गद्दी, काठी 'रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे। बरन बरन बर बाजि बिराजे।' रामा० १६०। एक मोटा कपड़ा। वि० जीर्ण, फटा पुराना। वृद्ध।
जीनत—स्त्री० शोभा, शृङ्गार ( कर्म० ५२० )।
जीना—अक्रि० जिन्दा रहना, सजीव रहना, जीवन-यापन करना।
ज़ीना—पु० सीढ़ियोंका समूह।

जीभ—स्त्री० जिह्वा, रसना । —थोड़ी करना = अधिक न बोलना ।
जीभी—स्त्री० जीभ साफ करनेकी ताँबे इ० की पट्टी ।
जीमना—सक्रि० भोजन करना ( सुन्द० ८६ ) ।
जीमूत—पु० मेघ, इन्द्र । पहाड़ । सूर्य इ० ।
जीय—पु० देखो 'जी' ।
जीयट—पु० जीवट, साहस ।
जीयति—स्त्री० जिन्दगी, जीवन ।
जीर—पु० जीरा, केसर । तलवार । कवच । ( उदे० 'खद्राका' ) । वि० जीर्ण, जर्जर ।
जीरण,जीरन,जीर्ण—वि० पुराना,जर्जर ( मुद्रा० ११४, उदे० 'कचुकी' ) ।
जीरना—अक्रि० जीर्ण होना, मुरझाना, फटना 'मारी मरै कुसङ्गकी ज्यों केला ढिग बेरि । वह हालै वह जीरई साकट सङ्ग निबेरि ।' साखी ५७
जीर्णोद्धार—पु० टूटी फूटी चीज़ोंकी मरम्मत ।
जील—स्त्री० मध्यम या धीमा स्वर । तबलेका बायाँ ।
जीला—वि० झीना, महीन ।
जीव—पु० प्राणी । जीवन, प्राण, आत्मा, जी, मन ( उदे० 'चूपड़ी' ) । बृहस्पति ( राम० ४०० ) ।
जीवट—पु० साहस ।
जीवति—स्त्री० जीविका 'जीवति सों सब राज तिहारी । निर्भय है भुवलोक निहारी ।' के० ३११
जीवधन—पु० प्राणप्रिय । धन जो पशुओंके रूपमें हो ।
जीवधारी—पु० प्राणी ।
जीवन—पु० प्राण धारण, जिन्दगी । प्राणाधार, प्राण । पानी 'उदित भयो है जलद तू जगको जीवन दानि । मेरो जीवन लेत है कौन बैर मन मानि ।'ललित० १२१
जीवनचरित,-चरित्र—पु० जीवन वृत्तान्त । जीवन-वृत्तान्तवाली पुस्तक ।
जीवनधर—वि० जीवनदायक, जीवनरक्षक ।
जीवनद—वि० जीवनदायक । [दायक ।
जीवनफर—वि०जीवनका भरणपोषण करनेवाला, जीवन-
जीवनमूरि—स्त्री० सञ्जीवन । अत्यन्त प्रिय वस्तु ।
जीवनवृत्त,-वृत्तांत—पु० जीवनी, जीवनमें किये हुए कार्योंका वर्णन । [करनेवाला ।
जीवनहर—वि० जीवनको हरनेवाला, जीवनका नाश
जीवना—सक्रि० जीना ।
जीवनि—स्त्री० जिलानेवाली वस्तु, अत्यन्त प्यारी वस्तु ।
जीवनी—स्त्री० जीवन-वृत्तान्त । [हो गया हो ।
जीवन्मुक्त—वि० जिसके हृदयसे मायाका अन्धकार दूर
जीवन्मृत—वि० जो जीवित अवस्थामें मृतवत् हो ।
जीवप्रभा—स्त्री० आत्मा 'बालक वृद्ध कहौ तुम काको । देहनिको किधौं जीवप्रभाको ।' के० ३६०
जीववंद, जीवबंधु—पु० गुल,दुपहरिया 'ओंठनकी लाली जिमि लाली जीव-बंदकी' हठी, 'ओंठ जीवबन्धु वारौं, हाँसी सुधाकंद वारौं, कोटि कोटि चन्द वारौं राधे मुखचन्द पे ।' हठी
जीवरा—पु० जीव ।
जीवरि—स्त्री० जीवन धारण करनेकी शक्ति ।
जीवांतक—पु० वधिक, घातक । बहेलिया ।
जीवा—स्त्री० प्रत्यञ्चा । ज्या ।
जीवाजून—पु० जीव-जन्तु 'पौ फाटी पगरा हुआ जागे जीवा जून ।' साखी ८०
जीविका—स्त्री० जीवन-निर्वाहका साधन, वृत्ति ।
जीवित—वि० जिन्दा । पु० जीवन ।
जीवितेश—पु० प्राणेश्वर, प्रिय व्यक्ति ।
जीह,जीहा,जीही—स्त्री० जीभ, जिह्वा 'जो न उपारउँ तव दस जीहा ।' रामा० ४६८, 'पापी पपीहा न जीहा थकै तुअ पीपी पुकार बकै उठि भोरै ।' दास० ३९, ( उदे० 'आउबाउ' ) ।
जुअती—स्त्री० युवती 'जौ पटतरिय तीय महँ सीया । जग अस जुअति कहाँ कमनीया ।' रामा० १२५
जुआँ, जुआ—पु० जूँ ( उदे० 'कीचर' ) ।
जुआ—पु० देखो 'जुवा' ।
जुआचोर—पु० दाँव जीतकर चल देनेवाला । ठग ।
जुआठा—पु० हलका वह अंश जो बैलके कन्धेपर रहता है ।
जुआर—स्त्री० बजड़ी नामक अन्न ।
जुआर, जुआरी—पु० जुआ खेलनेवाला 'बाढ़े खल बहु चोर जुआरा ।' रामा० १०२
जुई—स्त्री० छोटा जुआँ । सेम इ० में लगनेवाला कीड़ा ।
जुकाम—पु० ठण्ड लगनेसे हुई बीमारी, सर्दी ।
जुग—पु० युग । जोड़ा,दल,गुट्ट । जुगजुग=चिरकाल तक ।
जुगजुगाना—अक्रि० टिमटिमाना ।
जुगजुगी—स्त्री० 'शकरखोरा' नामक पक्षी ।
जुगत—स्त्री० युक्ति, उपाय । चतुराई । वि० युक्त, सम्भव ( उदे० 'अनुगत' ) ।

जुगनी, जुगुनी—स्त्री० जुगनू, माला इ० के बीचमें लगा नग, 'तिलरी कै जुगुनी चमाकै सारी रतिया' ( ग्राम० ४३५ )।
जुगनी-स्त्री०, जुगनू—पु० खद्योत। एक आभूषण।
जुगम—वि० युग्म दोनों 'समुझि तजहि भ्रम भजहि पद जुगम, सेवत सुगम गुन गहन गँभीर।' विन० ४५५
जुगवना, जुगाना—सक्रि० जोड़ जोड़कर रखना। हिफाजतसे रखना 'सिद्धि, सची, सारद पूजहिं मन जुगवत रहति रमासी।' विन० ९७, ( रामा० ३७५ )
जुगार—स्त्री० देखो 'जुगाली' ( गुलाब २८५ )।
जुगालना—अक्रि० रोमन्थ करना, जुगाली करना।
जुगाली—स्त्री० खायी हुई वस्तुको बाहर निकालकर दुबारा चबाना। पागुर।
जुगुत, जुगुति—स्त्री० युक्ति, उपाय 'नाना वेष बनाय दिवस निसि, पर वित जेहि तेहि जुगुति हरौं।' विन० ३४४
जुगुप्सा—स्त्री० निन्दा, अरुचि, घिन, अश्रद्धा।
जुगुल—वि० जोड़ा, युग्म ( उदे० 'उन्हारि' )।
जुज़—पु० एक फारम ( ८ या १६ पृष्ठ )।
जुज्झ—स्त्री०-युद्ध, संग्राम।
जुझवाना—सक्रि० युद्धार्थ प्रोत्साहित करना। युद्धमें प्रवृत्त कर मरवा डालना।
जुझाऊ—वि० युद्ध सम्बन्धी। युद्धार्थ उत्तेजित करनेवाला ( उदे० 'चाउ' )।
जुझार—वि० युद्धप्रिय, वीर 'सेन संग चतुरंग अपारा। अमित सुभट सब समर जुझारा।' रामा० ८७। पु० युद्ध 'का जानसि कस होइ जुझारा।' प० ३११
जुट—स्त्री० जत्था, थोक, गुट। जोडी।
जुटना—अक्रि० जुड़ना, सम्बद्ध होना, सटना। लिपटना, गुथना। किसी काममें जी-जानसे लगना 'पुत्रवधू अरु पुत्र राखि घर और काज महँ जूटो।'रघु० १७९, ( छत्र० १३३ )
जुटली—वि० बालोंकी लम्बी लम्बी लटोंवाला।
जुटाना—सक्रि० जोड़ना, सटना। एकत्र करना।
जुट्टी—स्त्री० गड्डी। अँटिया।
जुठारना—सक्रि० चखकर छोड़ देना, जूठा करना। 'सब उपमा कवि रहे जुठारी।' रामा० १२६
जुठिहारा—पु० उच्छिष्ट खानेवाला।

३०

जुड़ना—अक्रि० सम्बद्ध होना। देखो 'जुरना'।
जुड़पित्ती—स्त्री० एक रोग जिसमें खुजलाहटके साथ शरीरमें चकत्तेसे निकल आते हैं।
जुड़वाँ—वि० यमल, जुड़े हुए।
जुड़ाना—अक्रि० ठंढा होना, तृप्त होना 'राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने।' रामा० १५०। सक्रि० दे० जुड़ावना।
जुड़ावना—सक्रि० ठंढा करना, शान्त करना, तृप्त करना 'रामानुज दीन्ही यह पाती। नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती।' रामा० ४४३
जुत—वि० युक्त।
जुतना—अक्रि० नधना, लग जाना, जोता जाना।
जुतवाना—सक्रि० बैल इ० को नधवाना। खेत जोतनेका काम कराना।
जुतिऔवल—स्त्री० आपसमें जूतोंसे मारपीट करना।
जुतियाना—सक्रि० जूता मारना।
जुत्थ—पु० यूथ, समूह।
जुदा—वि० भिन्न, अलग।
जुदाई—स्त्री० वियोग, विरह।
जुद्ध—पु० युद्ध, लड़ाई।
जुनूनी—वि० पागल।
जुन्हाई, जुन्हैया—स्त्री० चाँदनी 'तरनि-तनया-पुलिन विमल सरद निसि जुन्हाई री।' कृष्णदास। चन्द्रमा 'बैयाँ बैयाँ डोलत कन्हैयाकी बलैयाँ जाउँ मैया मैया बोलत जुन्हैयाको लखावै री।' दीन० ७, (रतन ७३)
जुबराज—पु० युवराज, वह राजपुत्र जो राज्यका उत्तराधिकारी हो ( उदे० 'गाल' )।
जुबली—स्त्री० वह उत्सव जो किसी घटनाके स्मारकके तौरपर मनाया जाय।
जुबाद—पु० एक तरहकी कस्तूरी ( कविप्रि० ९० )।
जुबान—स्त्री० भाषा। जीभ।
जुमला—वि० कुल। पु० वाक्य।
जुमा—पु० शुक्रवार।
जुर—पु० ज्वर, ताप ( रवि० १२ )।
जुरअत—स्त्री० साहस।
जुरना—अक्रि० प्राप्त होना, उपलब्ध होना 'चहिअ अमिअ जग जुरइ न छाछी।' रामा० ९,(रतन०८२)। सम्बद्ध होना, संयुक्त होना 'टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने।' रामा० १५०। एकत्र होना 'फटिक सिलानके

महल महरानी बैठी, सुरनकी रानी जुरि आई मन भावती ।'—हठी, 'वरजत हू जाचक जुरैं दानवतके ठौर ।'—दास ७३ । युद्धमें भिड़ना 'लव सों न जुरो लवणासुर भोरे ।' के० ३२९

जुरवाना, जुरमाना—पु० अर्थदण्ड ।

जुरा—स्त्री० जरा, बुढ़ापा ( कबीर ७६ ) । ज्वरा, मृत्यु कविप्रि० ६६

जुराना, जुरावना—सक्रि० एकत्र करना 'घर घर गोपन सों कह्यो करभार जुरावहु।'सूबे० २६४। देखो'जुड़ाना' ।

जुराफा—पु० अफ्रिकानिवासी एक पशु जिसका जोड़ा बिछुड़ते ही नर मादा दोनोंकी मृत्यु हो जाती है 'मिलि विहरत बिछुरत मरत दम्पति अति रसलीन । नूतन विधि हेमन्त सब जगत जुराफा कीन ।'वि० २०५

जुरी—स्त्री० हलका ज्वर ।

जुर्म—पु० अपराध, दोष ।

जुर्रत—स्त्री० साहस, हिम्मत ( कर्म ३४ ) ।

जुरीब—स्त्री० मोजा ।

जुर्रा—पु० नर बाज ( उदे० 'कुही' ) ।

जुल—पु० झाँसा-पट्टी, छल । जुलबाजा = दमबाज, धूर्त ।

जुलफ, जुलुफ—स्त्री० बालोंकी लट (उदे० 'कुलुफ' ) ।

जुलहा, जुलाहा—पु० वस्त्र बुननेवाला, तंतुकार । एक [ कीड़ा ।

जुलाब—पु० दस्तावर दवा, रेचन ।

जुलुम, जुलम—पु० अत्याचार, अन्धेर ।

जुलूस—पु० देखो 'जलूस' ।

जुलोक—पु० द्युलोक, सुरलोक, वैकुण्ठ 'ब्रह्मरंध्र फोरि जीव यों मिल्यो जुलोक जाय ।' राम० २०६

जुल्फ, जुल्फी—स्त्री० सिरके लम्बे बाल ।

जुल्लाब—पु० देखो 'जुलाब' ।

जुवराज—पु० देखो 'युवराज' ।

जुवा—पु० द्यूत ( के० १४५ ) । गाड़ी इत्यादिकी वह लकड़ी जो बैलोंके कन्धोंपर रहती है 'जुवा बनावत चन्द्रमा चपल होत सारंग ।' सू० १६२

जुवान—देखो 'जवान' ।

जुवार—पु० देखो 'जुआर' । स्त्री० देखो 'ज्वार' ।

जुस्तजू—स्त्री० खोज ।

जुहाना, जुहावना—सक्रि० संचित करना, इकट्ठा करना । सक्रि० एकत्र होना 'महा भीर भूपतिके द्वारे लागन विप्र जुहाने ।' रघु० ८१

जुहार, जुहारि—स्त्री० अभिवादन 'सब कोऊ सब सों करै राम जुहार सलाम ।' रहीम, ( सू० २८ )

जुहारना—सक्रि० प्रणाम करना ( सूबे० २६१ ) ।

जुही—स्त्री० एक तरहका फूलवाला पौधा ।

जूँ—स्त्री० बालोंका कीड़ा । कानपर जूँ रेंगना = खबर होना, होश होना ।

जूँठ, जूँठा—वि० किसीका चखा हुआ, उच्छिष्ट 'बेर जूँठे दियो शबरी भक्षियो सुख पाय ।' के० १३४

जूँठन, जूठनि—स्त्री० उच्छिष्ट भोजन (विन० ४०१) ।

जू—अ० एक आदर सूचक शब्द ।

जूआ—देखो 'जुवा' ।

जू जू—पु० बच्चोंको डरानेके लिए एक कल्पित भयंकर जीवका नाम, 'हाऊ' ।

जूझ—पु० युद्ध लड़ाई ( उदे० 'कहर' ) भा धावा, भा जूझ असूझा । बादल आय पँवरि पर जूझा ।' प० ३३१ । [ ( उदे० 'जूझ' ) ।

जूझना—अक्रि० युद्ध करना । युद्धमें प्राण देना

जूट—पु० सन । सनका कपड़ा । जटा । जटाकी गाँठ ।

जूटना—सक्रि० जोड़ना, मिलाना, सन्धि करना 'अफजल खान, रुसतम जमान, फत्तेखान, कूटे लूटे जूटे ए उजीर बिजैपूरके ।' भू० ९३ । अक्रि० जुड़ना, एकत्र होना ( कविता० २०० ) । फँसना, लगे रहना 'जूटे हो अजामिल कै गनिकै उधारन में' पूर्ण० ७९

जूटि—स्त्री० जोड़ी 'सोहत ललित ललाट पै उभै भौंहकी जूटि ।' नागरी० ( ब्रज० ३४७ )

जूठन—स्त्री० देखो 'जूँठन' ।

जूठा—वि० देखो 'जूँठा' । झूठा ( कबीर ३१५ ) ।

जूड़—वि० शीतल, प्रसन्न, 'भली भाँति पहिचाने जाने साहिब जहाँ लौं जग जूड़े होत थोरे ही थोरे ही गरम ।' विन० ५६५ । पु० जूड़ा ।

जूड़ा—पु० सिरके बालोंकी गाँठ । चोटी । गेंड़री ।

जूड़ी—स्त्री० जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर (विन० २६१) ।

जूता—पु०, जूती—स्त्री० पदत्राण, पनही ।

जूताखोर—वि० जूता खानेवाला, बेहया, निर्लज्ज ।

जूती पैजार—पु० जूतोंसे मारपीट करना । झगड़ा ।

जूथ—पु० यूथ, झुण्ड, समूह ।

जूथका, जूथिका—स्त्री० एक तरहका फूल (उदे० 'जाति')

जून—वि० जीर्ण, पुराना 'का छति लाभ जून धनु तोरें

रामा० १४७ । पु० समय, वेला 'रामहिं जात जानि तिहि जूना ।' रघु० १७२
जूप—पु० जुआ । वर वधूका जुआ खेलना । यूप, खम्भा, 'प्रति प्रति गृह तोरन ध्वजा धूप । सब सजे कलस अरु कदलि जूप ।' सू० ४४
जूमना—अक्रि० जुटना, एकत्र होना 'द्विज हरखावैं पय पावैं चहुँ ओरन तें अम्बर सुहावैं सिखि आवैं जूमि जूमि हैं ।' दीन० ४५, ( गुलाब० ३४४ )
जूर—पु० संचय, राशि ।
जूरना—सक्रि०जोड़ना । अक्रि० इकट्ठा होना (सू०१६८)।
जूरा—पु० जूड़ा, सिरके बालोंकी गाँठ, चोटी 'काको मन बाँधे न यह जूरा बाँधनहारि ।' बि० २८४
जूरी—स्त्री० एक पौधा । छोटा पूला । एक पकवान, ( सू० पं० बाल ४० ) ।
जूप, जूस—पु० रसा । दालका पानी ।
जूसी—स्त्री० चोटा, रावका पसेव ।
जूह—पु० समूह ( रामा० ४८८ ),'पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ।' रामा० ४०५
जूहर—पु० जौहर ।
जूही—स्त्री० चमेलीकी तरह फूलवाला एक पौधा ।
जृंभा—स्त्री० जँभाई, सुस्ती ।
जृंभण—पु० जँभाई लेनेका कार्य ।
जेंगना—पु० जुगनू ,'जेंगनाकी जोति कहा रजनी विलात है ।' सुन्द० ६६
जेंवन—पु० खानेकी चीजें । खानेका कार्य ।
जेंवना—सक्रि० भोजन करना 'नारिवृन्द सुर जेंवत जानी ।' लगीं देन गारी मृदु बानी ।'रामा० ६० ।*
जेंवनार—स्त्री० भोज, रसोई । [* पु० भोजन ।
जेंवाना—सक्रि० भोजन कराना ( विन० ५०२ ) ।
जे—सर्व० 'जो' का बहुवचन ।
जेइ, जेउ—सर्व० जो ।
जेठ—वि० ज्येष्ठ, बड़ा । पु० ज्येष्ठ मास । भसुर ।
जेठा—वि० ज्येष्ठ, बड़ा । श्रेष्ठ ।
जेठानी—स्त्री० जेठकी स्त्री ।
जेठी—वि० जेठका । स्त्री० जेठानी 'जेठी पठाइ गई दुलही हँसि हेरे हरैं मतिराम बुलाई ।' रस० ५
जेठीमधु—स्त्री० एक पौधेकी लकड़ी जो दवाके काममें आती है । मुलेठी ।
जेठौत—पु० जेठका पुत्र ।
जेता—वि० जितना 'तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर ।' ( उदे० 'चिराक' ) । पु० जीतनेवाला ।
जेतिक—वि० जितना ।
जेते—वि० जितने 'जगमहँ सखा निसाचर जेते । लछिमनु हनइ निमिष महँ तेते ।' रामा० ४३७
जेना—अक्रि० देखो 'जेंवना', 'जपि जेइं पिय संग भवानी ।' रामा० १७
जेब—स्त्री० खीसा, खलीता, पाकेट ( साखी ९ ), 'ठगिया तेरे नैन ये छलबल भरे किलेब । कतरत पल मकराज सों नेही मनकी जेब ।' रतन० ३४ । शोभा । 'जेब जगी सिर फूल तें लैके जराइकी जेहरी लौं पगमें' सुंदर श्रृंगार ४१
जेबकट—पु० जेब काटकर रुपया उड़ानेवाला, गिरहकट ।
जेबखर्च—पु० निजका ऊपरी खर्च ।
जेबी—वि० जेबमें रखने लायक, छोटा ।
जेय—वि० जिसपर विजय प्राप्त की जा सके ।
जेर—वि० परास्त, पीड़ित । स्त्री० खेड़ी, आँवल ।
जेरना—सक्रि० पीड़ित करना, तङ्ग करना 'नाम-ओट अब लगि बच्यो मलजुग जग जेरो ।' विन० ३५६
ज़ेरबार—वि० ऋण या कष्टसे घिरा हुआ । हानिग्रस्त ।
जेरिया, जेरी—स्त्री० चरवाहोंके हाथकी लाठी ।
जेल—पु० जञ्जाल, बन्धन 'जोवन मैं अँखियाँ सखी, परी लाजके जेल ।' मति० १९३ । बन्दीगृह ।
जेवड़ी—स्त्री० रस्सी 'एक जेवड़ी सब लपटानेके बाँधे के छूटे ।' कबीर १४७, ( २० भी )
जेवना—सक्रि० भोजन करना। पु०भोजन (ग्राम० ४६३)
जेवनार—स्त्री० देखो 'जेंवनार' ।
जेवर—पु० अलङ्कार, गहना । [*जेवरा ।' कबीर ३१२
जेवरा—पु० रस्सा, फन्दा 'चहुँदिसि पसर्यो है जम*
जेवरी—स्त्री० रस्सी 'सो हरि प्रेम जेवरी बाँध्यो जननि साँट लै डाँटे ।' सूबे० ६८ ।
जेष्ठ—देखो 'ज्येष्ठ' ।
जेह—स्त्री० ज्याका मध्य स्थान, चिल्ला 'तिय कत कमनैती पढ़ी, बिन जेह भौंह कमान ।' वि० १४८ । दीवारमें नीचेकी ओरका कुछ मोटा व उभड़ा हुआ पलस्तर ।
ज़ेहन—पु० बुद्धि, समझ, मेधा, धारणाशक्ति ।
जेहर, जेहरि, जेहरी—स्त्री० पायजेब,'जुगल अङ्ग जेहरि

जरावकी राजति परम उदार।' सू० १६०, 'जागैं जगमगी जाकी जेहरी जराय जरी'''।' दीन० १६६

जैं—अ० मत, जनि 'यत्र तत्र जाहु पै पत्याहु जैं अमित्रको।' के० ३८५

जै—स्त्री० जय, जीत। वि० जितने।

जैकार—स्त्री० जयकार।

जैत—स्त्री० जीत, विजय। पु० एक पेड़।

जैतपत्र—पु० जीतका पत्र।

जैतवार—पु० जीतनेवाला (उदे० 'करेर'), 'जैतवार यह मार सों अकस करो जिन चेत।' मति० १८२

जैतून—पु० एक पेड़।

जैन—पु० सम्प्रदायविशेष। जिनधर्मका अनुयायी, जैनी।

जैनु—पु० भोजन।

जैबो—अक्रि० जाना।

जैमाल,जैमाला—स्त्री० देखो 'जयमाल'।

जैमिनि—पु० पूर्व मीमांसा नामक दर्शनके प्रवर्त्तक।

जैल—पु० नीचेका हिस्सा। हलका।

जैसा—वि० जिस प्रकारका। जितना। समान। क्रिवि० [ जितना।

जैसे—क्रिवि० जिस तरहसे।

जों—क्रिवि० ज्यों, जैसे।—तों=ज्यों त्यों।

जोंक—स्त्री० पानीमें रहनेवाला एक कीड़ा।

जोंकी—स्त्री० जोंक। एक तरहका पानीका कीड़ा। जोंक निगल जानेसे उत्पन्न पेटकी जलन।

जोंदरी, जोंधरी—स्त्री० छोटी ज्वार।

जोंधैया—स्त्री० जुन्हैया, चाँदनी।

जो—सर्व०सम्बन्ध बतलानेवाला एक सर्वनाम। अ० यदि।

जोअना—सक्रि० जोवना,जोहना, देखना, रास्ता देखना। तलाश करना (मुद्रा० ११२)।

जोइ—स्त्री० स्त्री, पत्नी 'तुलसी विना उपासना विन दूलहकी जोइ।' कबी० २२७, (सू० १५०,प० २९४, कबीर २११)।

जोइसी—पु० ज्योतिषी 'फिरि हुलस्यो जिय जोइसी समुझे जारज योग।' वि० २३९ (वंग०)

जोखना—सक्रि० जाँचना, विचार करना। तौलना।

जोखम—देखो 'जोखिम'।

जोखा—पु० हिसाब।

जोखिउँ, जोखिम—पु०, स्त्री० अनिष्टकी आशङ्का, खतरा 'जोखिउँ एव सहहु केहि काजा।' प० ६३

जोखिता—स्त्री० पत्नी, स्त्री। योगीपन (रहीम २०)।

जोखों—स्त्री० जोखिम।

जोग—पु० योग, मेल, शुभ अवसर, सुभीता। तप और ध्यान। जोड़। चित्त-वृत्तिका नियन्त्रण। ध्यान।

जोगड़ा—पु० नकली योगी। [ वि० योग्य।

जोगता—स्त्री० योग्यता।

जोगन—स्त्री० जोगीकी स्त्री, विरक्त स्त्री। एक रण-देवी।

जोगवना—सक्रि० सावधानीसे रक्षा करना 'पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती। जोगवहिं जननि सकल दिन राती।' रामा० २९५। जोड़ जोड़कर रखना, पूरा करना। ध्यान न देना।

जोगानल—पु० योगक्रिया द्वारा उत्पन्न अग्नि।

जोगिंद—पु० योगीन्द्र, योगिश्रेष्ठ। शिवजी।

जोगि—स्त्री० जोगिनी (उदे० 'जिनिस')।

जोगिन—स्त्री० देखो 'जोगन'।

जोगिनी—स्त्री० देखो 'जोगन'। तपस्विनी। रण चण्डिका।

जोगिया—वि० जोगीका। गेरूमें रँगा हुआ। पु० जोगी।

जोगींद्र—पु० योगिश्रेष्ठ, शिवजी।

जोगी—पु० योगी, एक प्रकारके गेरुआ-वस्त्रधारी भिक्षुक।

जोगीड़ा—पु० एक तरहका गाना। जोगीड़ा गानेवालोंका [ समाज।

जोगोटा—पु० जोगी।

जोग्य—वि० योग्य। लायक। समर्थ। उचित।

जोजन—पु० योजन। चार कोसकी दूरी। सयोग, मेल।

जोट—पु० जोड़ा 'दीन्ह असीस देखि भल जोटा।' रामा० १४६। साथी। झुण्ड (उदे० 'कीचर'), 'भोंसिलाके हाथ गढ़ कोट हैं चढ़त अरि जोट ह्वै चढ़त एक मेरु गिरि शृङ्गमें।' भू० ५०

जोटा—पु० जोड़ा (गीता० ३०५, उदे० 'जोट')।

जोटी—स्त्री० जोड़ी। बराबरीका साथी (सूसु० १५२), गोइयाँ 'सूर महरि सवितासों विनवति भली श्यामकी जोटी।' सूबे० ८१, 'सूरदास प्रभु जीवहु युग युग हरि हलधरकी जोटी।' सूबे० ८७

जोड़—पु० योग, मेल, गाँठ, जुड़नेकी जगह, जोड़ा।

जोड़न—स्त्री० जामन।

जोड़ना—सक्रि० योग करना, इकट्ठा करना। सटाना, मिलाना। देखो 'जोरना'।

जोड़वाँ—पु० यमज। [ की मजदूरी। है

जोड़वाई—स्त्री० जोड़वानेकी क्रिया या भाव।

जोड़वाना—सक्रि० किसीको जोड़नेके काममें लगाना।

ज़ोड़ा—पु० एक सी दो वस्तुएँ। जूता। पहननेके कुल कपड़े। देखो 'जोड़ी'।

जोड़ी—स्त्री० जोड़ा, बराबरीका साथी।

जोड़ू—स्त्री० 'जोरू', स्त्री।

जोत—स्त्री० ज्योति (रतन०८२)। जोतनेको मिली भूमि। बैल इ० के गलेकी रस्सी, तराजूकी रस्सी। भूमि जोतनेकी क्रिया ( उदे० 'चौंकना' )।

जोतना—सक्रि० रथ, गाड़ी इ० में घोड़े या बैलको नाधना। हल चलाना। किसीको बलात् किसी काममें लगाना। [ हल जोतनेवाला।

जोता—पु० जुएमें बँधी बैलोंके गलेमें फँसानेकी रस्सी।

जोताई—स्त्री० जोतनेकी क्रिया या मज़दूरी।

जोति—स्त्री० घीका दीपक। ज्योति ( उदे० 'उछरना')। जोतने योग्य भूमि।—जागना=प्रकाश फैलना।

जोतिक,जोतिखी—पु० ज्योतिषी 'बार बार जोतिक सों घरी बूझि आवै।' सूबे० २५२

जोतिष,जोतिस—पु० ज्योतिष, ग्रहादि सम्बन्धी विद्या।

जोत्स्ना—स्त्री० ज्योत्स्ना, चाँदनी।

जोध, जोधा—पु० योद्धा, वीर।

जोन, जोनी—स्त्री० योनि।

जोना—सक्रि० देखना 'बोलै गूँग पङ्गु गिरि लंघै अरु आवै अन्धा जग जोई।' सूवि० २३

जोन्ह, जोन्हाई—स्त्री० चाँदनी। चन्द्रमा 'ऐसी गई मिलि जोन्हकी जोतिमें रूपकी रासि न जाति बखानी।' रघुनाथ, ( उदे० 'उछरना' )।

जोप—पु० यूप ( उदे० 'अंग' )।

जोपै—अ० यदि। यद्यपि।

जोबन—पु० यौवन। रूप। कुच। वि० युवा 'सूर श्याम करिकाई भूली जोबन भये मुरारी।' सूबे० १४०

जोबना—पु० यौवन 'जरा जोबना बैर, बैर मूरख अरु ज्ञानी।' नरहरि। कुच। सक्रि० देखो 'जोवना'।

जोम—पु० जोश, उत्साह, उमङ्ग 'करिहौ महि बिन बानरी, बाढ़ी मन यह जोम। रघु० २४८। तीक्ष्णता, प्रबलता ( उदे० 'जलाक' )। समूह (उदे० 'बेहर')। गर्व ( कलस २६७ )।

जोय—सर्व० जो। स्त्री० जोइ, स्त्री।

जोयना—सक्रि० जलाना ( क० वच० ७ )। जोहना, आसरा देखना। देखना 'इतनो बचन स्रवन सुनि सुनि कै सबनि पुहुमि तन जोयो।' सू० ४१

ज़ोयसी—पु० ज्योतिषी।

ज़ोर—पु० शक्ति, बल। काबू, अधिकार। आवेश, वेग, प्रबलता 'रोरके ज़ोरते सोर घरनी कियो चल्यो द्विज द्वारका जाय ठाढ्यो।' सूवि० ८। परिश्रम, तनाव। सहारा, साथ 'अनुचित उचित रहीम लघु करहिं बड़नके जोर।' रहीम १६। वि० प्रबल, ज़बरदस्त (उदे० 'आमिल')। ज़ुल्म ( कबीर १७६ )।

जोर—पु० देखो ज़ोर', 'जोड़'। योग, सन्धि, मेल। जोड़ा, बराबरी 'तीनि लोक तिहुँ काल न देखत सुहृद रावरे जोरको हौं।' विन० ५२५

ज़ोरदार—वि० जिसमें बहुत ज़ोर हो, प्रभावशाली।

जोरना—सक्रि० दो चीज़ोंको मिलाकर या और किसी उपायसे एक करना, इकट्ठा करना, संग्रह करना 'जोरति छाक प्रेमसों मैया।' सूबे० ७२, 'खाये खरचे जो जुरै तो जोरिये करोर।' वि० १९८। सम्बद्ध करना 'पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाय।' रामा० ३९६। मिलाना 'यों मतिराम भयो हियमें सुख बालके बालम सों दृग जोरें।' ललित० २९, ( सूबे० ११२ )। टूटी फूटी वस्तुको दुरुस्त करना ( उदे० 'गुनी' )।

जोराजोरी—स्त्री० ज़बरदस्ती। क्रिवि० ज़बरदस्तीसे, 'अलकैं अबै डारि गर फाँसी, लिये जात मन जोराजोरी।' ललितकि० ( व्रज० ४८५ )

ज़ोरावर—वि० बलवान्।

जोरी—स्त्री० जोड़ी, दो समान वस्तुएँ (उदे० 'अविचर')। बराबरीका व्यक्ति ( सू० ३२, सूबे० ८१ )। स्त्री० ज़बरदस्ती 'जोरी करि जिबहै करैं कहते हैं जहलाल।' [ कबीर ४२

जोरू—स्त्री० स्त्री, पत्नी।

जोल—पु० समूह, झुण्ड 'कहा करौं बारिज मुख ऊपर बिथके षटपद जोल।' सू० ११५, ( सूवि० ४५ )

जोलहा, जोलाहा—पु० देखो 'जुलाहा'।

जोलाहल—स्त्री० अग्नि, ज्वाला।

जोली—स्त्री० जोड़, बराबरीका व्यक्ति।

जोलो—पु० अन्तर 'कैधौं तुम पावन प्रभु नाहीं कै कछु मोपै जोलो।' सूवि० ४५

जोवना—सक्रि० देखना (उदे० 'चंदोवा'), जोहना 'हौं

मारग जीवौं धरि साँसा ।' प० ७६ । आसरा देखना 'खानदानवारे पावदान लिये दौरत हैं तान गानवारे बैठे जीवत महल पै ।' ग्वाल । तलाश करना । गिनना ख्याल करना 'भूख न प्यास न नींद न जोवैं । खेलनको बहुभांतिन रोवैं ।' के० ६० । दे० 'जोवना' ।

जोश—पु० उबाल, उमंग आवेश ।

जोशन—पु० बाँहपर पहननेका एक आभूषण । कवच ।

जोशीला—वि० जोशसे भरा हुआ ।

जोप—स्त्री० जोख, तौल । प्रीति । सेवा । आराम ।

जोपा—स्त्री० स्त्री ।

जोपिता—स्त्री० पत्नी, स्त्री ।

जोषी—पु० ज्योतिषी ।

जोह—स्त्री० प्रतीक्षा । तलाश, खोज । कृपादृष्टि ।

जोहन—स्त्री० जोहनेका काम । प्रतीक्षा । खोज ।

जोहना—सक्रि० रास्ता देखना । देखना 'रूप न जाइ बखानि जान जोइ जोहइ ।' पा० मं०, ( सूबे० ८३, प० ८९ ) । खोजना ।

जोहार—पु० नमस्कार, अभिवादन 'पुरजन करि जोहारु घर आये । रघुवर संध्या करन सिधाये ।' रामा० २४१, ( प० २१ )

जोहारना—सक्रि० अभिवादन करना 'देहिं असीस जोहारि सब गावहिं गुनगन गाथ ।' रामा० १९१

जौं—अ० यदि । क्रिवि० ज्यों ।

जौंरे—क्रिवि० आसपास निकट ।

जौ—अ० यदि, जब । पु० यव नामक अन्न । एक तौल ।

जौख—पु० झुण्ड, समूह, सेना ।

जौजा—स्त्री० पत्नी ।

जौतुक—पु० यौतुक, दहेज ।

जौन—सर्व० जो । वि० जो । पु० यवन ।

जौन्ह—स्त्री० जोन्ह, चन्द्रिका ।

जौपै—देखो 'जोपै' ।

जौवति—स्त्री० युवती 'भनइ विद्यापति सुन वर जौवति इह रस केओ पए जाने ।' विद्या० २३

जौवन—पु० यौवन ।

जौशन—पु० देखो 'जोशन' ।

जौहर—पु० मूल्यवान् पत्थर । सारांश । विशेषता, खूबी । युद्धके समय राजपूत स्त्रियोंके सामूहिक प्राण त्यागकी प्रथा । प्राणत्याग 'जोगमे तो जौहर भला घड़ी एकका काम ।' साखी २८ । राजपूत स्त्रियोंके लिए सामूहिक रूपसे जलनेके हेतु बनायी गयी चिता 'जौहर कहँ साजा रनिवासू ।' प० २९३

जौहरी—पु० रत्न-विक्रेता, पारखी, गुण-ग्राहक 'इतै न कोऊ जौहरी ह्याँ सब बसैं अजान ।' दीन० १०७

ज्ञात—वि० विदित ।

ज्ञातव्य—वि० जानने योग्य ।

ज्ञाता—वि० जाननेवाला ।

ज्ञाति—स्त्री० भाई-बन्धु ।

ज्ञान—पु० जानकारी, बोध, समझ ।

ज्ञानवान—वि० जिसे ज्ञान हो, समझदार, विद्वान ।

ज्ञानी—वि० ज्ञानवाला । ब्रह्मज्ञानी ।

ज्ञानेंद्रिय—स्त्री० श्रवणेंद्रिय इत्यादि पाँच इन्द्रियाँ जिनके द्वारा विषयोंका ज्ञान होता है ।

ज्ञापन—पु० जनानेकी क्रिया ।

ज्ञेय—वि० जानने योग्य ।

ज्या—स्त्री० धनुषकी रस्सी ।

ज्यादती—स्त्री० अधिकता ।

ज्यादा—वि० बहुत, अधिक ।

ज्यान—पु० हानि 'सुनो जोगको का लै कीजै जहाँ ज्यान है जीको ।' भ्र० १२ । दु खका कारण (जगत० ४२) ।

ज्याना, ज्यारना, ज्यावना—सक्रि० जीवित करना, जिलाना 'दोहाई कहे ते कवि लोग ज्याइयतु और दोहाई कहेते अरि लोग ज्याइयतु है ।' भू० ५१ । पालना 'सुक सारिका जानकी ज्याये ।' रामा० १८३

ज्याफत—स्त्री० भोज, दावत ।

ज्यामिति—स्त्री० रेखागणित ।

ज्यूँ, ज्यो—क्रिवि० जैसे, जिस रूपसे । जिस क्षण । ज्यों ज्यों = जैसे जैसे, जिस मात्रासे (विन० ९६) । ज्यों त्यों = जैसे तैसे, किसी न किसी प्रकार ।

ज्येष्ठ—पु० जेठ मास । वि० जेठा, बड़ा ।

ज्यो—पु० जीव, प्राण ( राम० १५९ दास १४७ ) ।

ज्योति—स्त्री० प्रकाश, लौ, अग्नि, दृष्टि ।

ज्योतिक, ज्योतिषी—पु० गणक, आगमी, दैवज्ञ ।

ज्योतित—वि० प्रकाशित, ज्यो० ६१ ।

ज्योतिरिंगण—पु० जुगनू 'प्रखर प्रलय पावसमें ज्योतिरिंगणोंसे जगते' कामायनी १९

ज्योतिमान—वि० प्रकाशमान् ।

ज्योतिर्मय—वि० ज्योतियुक्त, प्रकाशमान् ।
ज्योतिर्मान—वि० प्रकाशवान्, चमकीला ।
ज्योतिष—पु० वह विद्या जिससे ग्रहों आदिकी गति तथा अन्य बातोंका ज्ञान हो ।
ज्योतिष्मान—वि० प्रकाशयुक्त, चमकीला । पु० भास्कर, सूर्य ।
ज्योतिष्ना—स्त्री० ज्योत्स्ना 'उन थकी हुई सोती सी ज्योतिष्नाकी पलकोंमें नीहार १०३ ।
ज्योत्स्ना—स्त्री० चाँदनी कौमुदी । उजेली रात ।
ज्योत्स्नामयी—वि० स्त्री० प्रकाशवती, प्रकाशयुक्त ।
ज्योनार, ज्यौनार—स्त्री० भोज, रसोई ।
ज्योहत—पु० प्राण-त्याग, जौहर ।
ज्यौ—अ० जो, यदि ।
ज्वर—पु० बुखार ।
ज्वरा—स्त्री० मृत्यु ।
ज्वर्रा—पु० देखो 'जुर्रा' ।
ज्वलंत—वि० प्रकाशमान्, सुस्पष्ट ।
ज्वलन—पु० दाह । आग । ज्वाला ।
ज्वलित—वि० जला हुआ, प्रदीप्त । चमकीला ।
ज्वानी—स्त्री० जवानी, युवावस्था ( भू० ५ ) ।
ज्वार—स्त्री० बजड़ी । लहरका चढ़ाव ।
ज्वारभाटा—पु० लहरोंका चढ़ना-उतरना ।
ज्वारी—पु० जुआरी ।
ज्वाल, ला—स्त्री० लपट (उदे० 'छत्री'), आँच, ताप ।
ज्वालमुखी—स्त्री० देवी, सुरांगना 'प्रतिविम्बित दीप दिपैं जलमाहीं । जनु ज्वालमुखीनके जाल नहाहीं ।' राम० ५११
ज्वालामुखी पहाड़—पु० आग्नेय पर्वत, जिसकी चोटीसे धुआँ, राख, या पिघले हुए पदार्थ निकलते हों ।
ज्वैना—सक्रि० जोहना 'कृपाकी बाट ज्वै चुकी' रत्ना० ४४६

---

# झ

झंकना, झंखना—अक्रि० झीखना, बहुत दुःखी होकर पछताना । डरना 'तीन लोक डर जाके कंपै तुम हनुमान न झंखे ।' सूरा० ५०, ( विद्या० २५३ )
झंकाड़, झंखाट, झंखाढ़—पु० काँटेदार सघन पौधा, पत्तोंसे रहित पेड़ ।
झंकार—स्त्री० धातु के पात्र या गहनेसे उत्पन्न शब्द । झिल्लियोंके बोलनेका शब्द ( उदे० 'घन' ) ।
झंकारना—अक्रि० 'झनझन' आवाज होना । सक्रि० 'झनझन आवाज़ करना ।
झंकृत—वि० ध्वनित ।-होना = बजना (ज्योत्स्ना ८१) ।
झंकृति—स्त्री० झंकार ।
झंगा—पु० झगा, बच्चोंका ढीला कुरता (उदे० 'चौतनी') ।
झँगुला, झँगूला—पु० ढीला कुरता 'डार द्रुम पालन बिछौना नव पल्लवके सुमन झँगूला सोहै तन छबि भारी दै ।' देव ( ककौ० २७७ )
झँगुलिया, झँगुली, झँगूली—स्त्री० देखो 'झँगुला', ( उदे० चूरा' ), 'पहिरि लेउ झँगुली, फेंटा बाँधि लेहु मेवा ।' सू० मदन० ( गीता० २९१ )
झंझ—पु० झाँझ । मन्जीरेकी तरहके दो बड़े गोलाकार [ टुकड़ोंका बाजा ।
झंझट—पु०, स्त्री० बखेड़ा, टंटा ।
झंझनाना—अक्रि० 'झनझन' आवाज़ होना ।
झंझर—पु० जल रखनेका मिट्टीका छोटा पात्र ।
झँझरा—वि० बहुतसे छेदोंवाला ।
झँझरी—स्त्री० जाली । लोहे इ० की जालीदार चद्दर । जालीदार खिड़की, छिद्र 'पौनके झकझोर ते झँझरी झरोखन आजहीं ।' राम० ३५० । पिसान चालनेकी चलनी ।
झंझा—पु० आँधी-पानी, अन्धड़ । छोटी बूँदोंकी वर्षा । झाँझ । वि० तेज, प्रबल 'महापुरुष सों जाकी प्रीति । हरति सो झंझा मारुति रीति ।' के० ४७
झंझानिल, झंझावात—पु० आँधी । वह तेज़ हवा जिसके साथ पानी भी बरसे ।
झंझार—पु० आगकी ज्वाला, लपट 'अति अगिनि झार भार धुन्धार करि, उचटि अङ्गार झंझार छायो' । सू० ८१
झँझोटी, झँझौटी—स्त्री० एक रागिनी ।
झँझोड़ना—सक्रि० झकझोरना, झटकेसे हिलाना ।
झंडा—पु० ध्वजा, पताका ।

झंडाबरदार—पु० झण्डा ले चलनेवाला ( पूर्ण २७ )।
झंडी—स्त्री० छोटा झण्डा।
झँडूला—वि० गर्भके बालोंयुक्त ( बालक ), गर्भका ( केश-जाल ) 'उर बघनहा कण्ठ कठुला झँडूले केस, मेढ़ी लटकनि मसि बिंदु मुनि-मन-हर।' गीता० २९२, ( सू० ५५ )। सघन। पु० गर्भके बालोंसे युक्त बालक। गर्भके बाल। घने पत्तोंवाला पेड़।
झँपझंप—पु० घोड़ोंके गलेका एक आभूषण। छलाँग, उछाल।
झँपकना—अक्रि० पलक गिराना। वेगसे आगे बढ़ना। सहमना।
झँपना—अक्रि० लपकना, वेगसहित आगे बढ़ना ( सू० १८७। उछलना, अचानक आ पड़ना। छिपना। लज्जित होना। झपकी लेना। बन्द होना ( उदे० 'उझपना' )। सक्रि० ढँपना, छिपाना 'पसरि पत्र झम्पहि पिनाह सकुचि देत ससि सीत' रहि० १०
झँपरिया, झँपरी—स्त्री० ओहार, पालकीपर फैलानेका
झंपान—पु० एक तरहकी खटोलीदार सवारी। [ वस्त्र।
झंपित—वि० छिपा हुआ, आच्छादित।
झँपोला—पु० झावा, पिटारी।
झंब—पु० गुच्छा 'बिच बिच अम्ब कदम्ब झम्ब झुकि पाइन आई।' नागरी० ( व्रज० ३५९ )
झँबकारा—वि० झावरा 'गैंद गयन्द जरे भये कारे। औ बनमिरिग रोझ झँबकारे।' प० २५०
झँबराना—अक्रि० काला पड़ जाना।
झँबा—पु० झाँवाँ, पैर धोनेका कङ्कड़ ( उदे० 'झँवावना' )।
झँवाना—अक्रि० झाँवेकी तरह कुछ काला पड़ जाना, कुम्हलाना, कम हो जाना। झाँवेसे रगड़ा जाना।
झँवावना—सक्रि० झाँवेसे रगड़वाना 'हँठि करि पाँव झँवावती तिन्ह सों तिय मगरूरि।' दास १०५'। कुछ काला कर देना, कुम्हला देना। कम कर देना। झाँवेसे रगड़ना या रगड़वाना 'झझकत हिये गुलाबके झँवा झँवावति पाँय।' वि० १९९
झँसना—सक्रि० सिर आदिमें धीरे धीरे तेल इ० रग ड़ना। धूर्तता करके धन ऐंठना।
झई, झाई—स्त्री० छाया, अँधेरा, आँखोंके सामने अँधेरा छाना, तिरमिराहट ( सू० २०१ ), 'भरतहि देखि मातु उठि धाई। मुरछित अवनि परी झई आई। रामा० २७७
झक—स्त्री० सनक, धुन 'द्वारका जाहु जू द्वारका जाहु जू आठहु याम यही झक तेरे।' सुदामा०। झीखनेका भाव, झख, आँच, ताप 'मायाके झक जग जरै कनक कामिनी लागि।' साखी १६८। वि० चमकदार, साफ़।
झककेतु—पु० झखकेतु, कामदेव।
झकझक—स्त्री० व्यर्थकी बकवाद, हुज्जत।
झकझका—वि० चमकीला।
झकझेलना—सक्रि० झोंकेके साथ हिलाना।
झकझोर—पु० झटका, धक्का, वि० तेज़, झोंकेदार।
झकझोरना, झकझोलना—सक्रि० झटका देना, पकड़ कर ज़ोरसे हिलाना ( सूबे० ७९, साखी ८० )।
झकझोरा—पु० देखो 'झकझोर'।
झकड़, झकर—पु० आँधी, तेज़ हवा। गरम हवा, लू ( बुदेल० )।
झकना—अक्रि० बकवाद करना, झगड़ा करना 'माखन माँगत बात न मानत झकत यसोदा जननी तीर।' सू० ५६। कुपित होकर बड़बड़ाना 'इमि सोचत सोचत झकत, आये निजपुर तीर।' सुदामा०
झका—वि० चमकदार, साफ।
झकाझक—वि० चमकता हुआ, उज्ज्वल, बिलकुल साफ।
झकुराना—अक्रि० झकोर लेना, झूमना 'रुक्यौ साँकरे कुन्जमग करत झाँझ झकुरात। मन्द-मन्द मारुत तुरँग खूँदत आवत जात। बि०
झकोर—पु० झोंका, धक्का। हवाका झोंका।
झकोरना—अक्रि० हवाका झोंका मारना।
झकोरा, झकोल—पु० देखो 'झकोर', नील पीत सित अरुन ध्वजा चल सीर समीर झकोल।' सू० १५३
झक्क—देखो झक'
झक्कड़—वि० देखो 'झक्की'। पु० देखो 'झकड़'।
झक्की—वि० सनकी, बकबकिया।
झक्खना, झखना—अक्रि० दुखी होना और पछताना, दुखड़ा रोना।
झख—स्त्री० झीखनेकी क्रिया या भाव। पु० ताप। मछली, ( उदे० 'पान्यो', 'कला' ), 'मकर नक्र झख नाना व्याला। सत-जोजन तन परम बिसाला।' रामा० ४५०
झखकेतु—पु० कामदेव।
झखराज—पु० मकर।
झखी—स्त्री० मछली।

झगड़ना, झगरना—अक्रि० झगड़ा करना, विवाद करना ( सू० १४८, सूबे० १४२ )।
झगड़ा, झगरा—पु० लड़ाई, बखेड़ा ( सूबे० १४५ )
झगड़ालू—वि० तकरारी, झगड़नेवाला।
झगर—पु०एक तरहकी चिड़िया। झगड़ा (उदे०'बिबरना')।
झगराऊ—वि० झगड़ा करनेवाला।
झगरी—स्त्री० नेगके लिए झगड़नेवाली। झगड़ा 'सूरश्याम ऐसे ही सदा हमसों करै झगरी।' सूबे० १११
झगला, झगा—पु० ढीला कुरता, जामा 'झीन झगामें झलमलै श्याम गात नख रेख।' बि० ८०
झगुलिया, झगुली—स्त्री० देखो 'झँगुली', 'पीत झगुलिया तनु पहिराई। जानु-पानि-बिचरनि मोहि भाई।' रामा० ११०
झज्झर—पु० देखो 'झंझर'। [ भड़क।
झझक, झझकन—स्त्री० झझकनेका भाव या क्रिया।
झझकना—अक्रि० भड़कना, चमकना, डर इत्यादिसे ठिठकना, चौंकना ( उदे० 'झँवावना' )। झुँझलाना।
झझकाना—सक्रि० भड़काना। चौंका देना। अक्रि० झझकना 'महाराज क्यों आजुही सपने झझकाने।'
झझकार—स्त्री० डाँट-फटकार। [ सूबे० २५०
झझकारना—सक्रि० दुरदुराना, उपेक्षा करना।
झझिया—देखो 'झिझिया' ( रत्ना० ४६६ )
झट—क्रिवि० चटपट, तुरन्त तत्काल।
झटकना, झटकाना—सक्रि० झटकेसे छीनना, झटका देना 'यहि लालच अँकवारि भरत हौ हार तोरि चोली झटकाई।' सूबे० १४८, 'प्यारी पीताम्बर उर झटक्यो।' सूबे० १४०
झटका—पु० झोंका। धक्का, आघात।
झटकारना—सक्रि० फटकारना।
झटपट—क्रिवि० जल्दीसे, तुरन्त।
झटिका—स्त्री० झाड़ी, 'मुई आँवला' 'झटिकाके झोंकेमें तरु था झुका' परिमल १२९
झटित—क्रिवि० तुरन्त।
झड़—स्त्री० देखो 'झड़ी'।
झड़कना—सक्रि० देखो 'झिड़कना'। [ बोलना।
झड़झड़ाना—सक्रि० झटकना, हिलाना। बिगड़कर
झड़न—स्त्री० झड़नेकी क्रिया। झड़ी हुई वस्तु।
झड़ना—अक्रि० टपकना, गिरना, साफ होना।

झड़प—स्त्री० आवेश, लपट। परस्पर भिड़ना। झटका।
झड़पना—अक्रि० उलझना, झटकेसे कुछ छीन लेना,
झड़पा, झड़पी—स्त्री० हाथापाई। [ हमला करना।
झड़पाना—सक्रि० पक्षियोंको आपसमें लड़ाना।
झड़बेरी,-बैरी—स्त्री० जङ्गली बेर या उसका पेड़।
झड़वाना—सक्रि० झाड़नेके काममें किसीको लगाना।
झड़ाई—स्त्री०झाड़नेकी क्रिया,झाड़नेके कामका पारिश्रमिक।
झड़ाका—क्रिवि० फौरन। पु० मुठभेड़, लड़ाई।
झड़ाझड़—क्रिवि० बराबर, धड़ाधड़। जल्द जल्द।
झड़ी—स्त्री० लगातार वर्षा। ताँता।
झड़ूला—वि० देखो 'झँडूला' ( उदे० 'कठुला' )।
झन—स्त्री० धातुखण्डपर चोट पड़नेसे उत्पन्न हुआ शब्द।
झनक—स्त्री० झनझनाहट, झनकार, भनक, आवाज़ 'कबहुँक दीनदयालके झनक परेगी कान।'
झनकना—अक्रि० झनझन शब्द करना। क्रोधमें आकर बड़बड़ाना या हाथ-पाँव पटकना।
झनक मनक—स्त्री० आभूषण आदिकी झनकार।
झनकवात—स्त्री० घोड़ोंका एक रोग।
झनकार—स्त्री० देखो 'झंकार'।
झनकारना—सक्रि० झनझनकी आवाज़ पैदा करना। अक्रि० झनझन आवाज़ होना।
झनझनाना—सक्रि० देखो 'झनकारना'।
झनझनाहट—स्त्री० 'झनझन' की आवाज़। झुनझुनी।
झनाझन—स्त्री० 'झनझन' शब्द या झनकार।
झनिया—वि० झीना, बिलकुल महीन।
झन्नाहट—स्त्री० झनझनाहट।
झप—क्रिवि० झट, शीघ्र ही।
झपक—स्त्री० पलकका गिरना। लमहा, पल। झपकी।
झपकना—अक्रि० देखो 'झँपना'।
झपकाना—सक्रि० बार बार पलक गिराना।
झपकी—स्त्री० हलकी नींद। धोखा।
झपकौंहा—वि० नींदसे या नशेसे मस्त।
झपट—स्त्री० आक्रमण, लपक 'देखि महीप सकल सकुचाने। बाज झपट जनु लवा लुकाने।' रामा० १४५, (उदे० 'अगवना')।
झपटना—अक्रि० तेज़ीसे किसीकी ओर बढ़ना। लपकना, आक्रमण करना। [ * हमला कराना।
झपटाना—सक्रि० झपटनेमें प्रवृत्त करना। उसकाना।*

झपट्टा—पु० देखो 'झपट'।
झपना—अक्रि० ( आँखोंका ) बन्द होना, ( उदे० 'उझपना' )' (पलकोंका) गिरना। लज्जित होना। झुकना
झपवाना—सक्रि०झपानेमें प्रवृत्त करना। [(दीन० १६)।
झपसना—अक्रि०पौधेका घना होकर फैलना। फलना (ग्राम० २२) झपटकर जाना (ग्राम० ३३१)
झपाका—पु० शीघ्रता। क्रिवि०शीघ्रतासे।
झपाटा—पु० हमला। झपट।
झपाना—सक्रि० बन्द करना। लज्जित करना।
झपित—वि० झपा हुआ, निद्रायुक्त। लज्जित।
झपिया—स्त्री० झाँपी, पिटारी। एक आभूषण।
झपेट—स्त्री० चपेट, चपटनेकी क्रिया।
झपेटना—सक्रि० चपेटना, झपट कर दबा लेना।
झपेटा—पु० धक्का, आक्रमण। प्रेत-बाधा।
झपोला—पु० देखो 'झँपोला'।
झपोली—स्त्री० छोटा झाबा।
झप्पर—पु० झापड़ ( भू० १२५ )।
झप्पान—पु० एक तरहकी पहाड़ी सवारी।
झबरा—वि० जिसके शरीरपर लम्बे तथा बिखरे हुए बाल हों।
झबरीला, झबरैरा—वि० चारों तरफ बिखरा हुआ ( केशजाल ),
झबा—पु० रेशम इ० के बहुतसे तारोंका गुछा गुच्छा।
झबार—स्त्री० देखो 'झबारि'।
झबिया—स्त्री० छोटा फुँदना। बाजूबंद इत्यादिका कटोरीनुमा लटकन।
झबूकना—अक्रि० झझकना, चौंकना।
झब्बा—पु० देखो 'झबा'।
झमक, झमकन—स्त्री० चमक, प्रकाश, झमझम शब्द।
झमकना—अक्रि० झमझम करते हुए चलना फिरना 'चढ़ी सिंहासन झमकति चली।' प० ३१०। सहसा सामने आना 'पावक झरसी झमकि कै गयी झरोखे झाँकि।' बि० २६५। झमाझम शब्द होना या करना बज उठना 'पगके धरत कल किंकिन नेवर बजैं बिछिया झमक उठे एक ही झमकते।' रस० ३१। छाना, फैलना '(सिसिरमें) सेनापति होति शीतलता है सहसगुनी रजनीकी झाँई बासरमें झमकति है।' —सेनापति। प्रज्वलित होना, प्रकाशित होना। तेज़ी दिखाना, अकड़ दिखाना ( उदे० 'गुमकना' )।
झमकाना—सक्रि० चमकाना, मटकाना 'ठगिनी क्या नैना झमकावै, कबिरा तेरे हाथ न आवै।' कबीर। चलनेमें जेवर आदि बजाना "जात नचावत कछुक चलावत पुनि झमकावत बाजी।' रघु० १५९
झमकारा—वि० झमझम शब्द करके बरसनेवाला।
झमकीला—वि० चंचल 'ललित किशोरी झमकीले गरबीले मानो, अति ही रसीले चमकीले औ रँगीले हैं। ( नैना नन्दलालके )।' ललित कि०
झमझम—स्त्री० पानी बरसने या घुँघरू इ० का शब्द। क्रिवि० 'झमझम' करते हुए।
झमझमाना—अक्रि० चमकना। 'झमझम' शब्द होना। सक्रि० 'झम झम' शब्द करना। चमकाना।
झमना—अक्रि० दबना, विनम्र होना।
झमा—पु० देखो 'झवाँ'।
झमाका—पु० आभूषणों आदिका या वर्षाका शब्द।
झमाझम—क्रिवि० 'झमझम' शब्दके सा०। चमकके साथ।
झमाट—पु० पेड़ों आदिका घना समूह।
झमाना—अक्रि० छाना, घेरना, झँपना। देखो 'झँवाना'।
झमेला—पु० झंझट, झगड़ा। भीड़ भाड़।
झमेलिया—वि० बखेड़ा करनेवाला, झगड़ा करनेवाला।
झर—स्त्री० झड़ी, लगातार वर्षा 'सरसै बरसै नीरहू झरहू मिटै न झार।' वि० २२, 'प्रीतमको गौन सुखदेव न सुहात भौन दारुन बहत पौन लाग्यो मेघ झर है।' सुखदेव। झरना, सोता। पानी गिरनेकी जगह। झुण्ड, समूह। झार, ज्वाला, तपन ( उदे० 'झमकना', सूबे० २०६ )।
झरक—स्त्री० झलक, चमक, प्रतिबिम्ब।
झरकना—अक्रि० चमकना। डपट कर या तिरस्कारपूर्वक कोई बात कहना।
झरझर—पु० जल, हवा इत्यादिके बहनेका शब्द।
झरझराना—सक्रि० 'झरझर' शब्द करते हुए गिराना। अक्रि० 'झरझर' शब्द करते हुए जलना 'झरझरात भहरात लपट अति देखिअत नहीं उबार।' सूबे० १२
झरना—अक्रि० बूँद या छोटे छोटे कणोंके रूपमें गिरना, ऊँचे स्थानसे गिरना, टपकना 'जु' चन्दाते झरैं दैया अँगारे। चकोरनकी कहौ गति कौन प्यारे।' आनंदघन, ( सूबे० २०२, २८१ )। बजना ( नौबत)

'नौवत झरत चली, नागन, महँ रब करनाल अपारे।' रघु० १३४ ( उदे० 'कहर' )। पु० सोता, चश्मा। वि० झरनेवाला। सक्रि० बजाना 'भैरो' झालर झरत हैं, ब्रु० वै० २०९।
झरप—स्त्री० झोंका। लकड़ी इत्यादिका सहारा। वेग। परदा, चिक ( रवि० १९ )।
झरपना—अक्रि० झोंका देना। झगड़ना। हमला करना।
झरफ—स्त्री० देखो 'झरिफ' ( रघु० ८८ )।
झरबेरी—स्त्री० जंगली बेर।
झरर—पु० झाड़ू देने वाला।
झरसना—अक्रि० झौंसना, झुलसना, कुम्हलाना। सक्रि० झुलसाना ( कलस २०८ ) मुरझा देना।
झरहरना—अक्रि० 'झरझर' आवाज़ करना।
झरहरा—वि० जालीदार छिद्रयुक्त।
झरहराना—अक्रि० वायु चलनेसे पत्तोंका शब्द करते हुए गिरना, खड़खड़ाना 'झरहरात बनपात गिरत तरु धरनी तरकि तड़ाकि सुनाइ।' सू० ८१। सक्रि० पत्तों इत्यादिको शब्द उत्पन्न करते हुए गिराना। झटकना।
झराझर—क्रिवि० बेगके साथ, लगातार, 'झरझर' आवाज [के साथ।
झरापना—सक्रि० झगड़ा करना, आक्रमण करना 'आये पास मृग हू पै बाघ न झरापै है।' रत्ना० ५८।
झरि—स्त्री० लगातार वर्षा, झड़ी।
झरिफ—स्त्री० परदा, चिक।
झरी—स्त्री० झड़ी, लगातार वर्षा 'कबहुँ न मिटत सदा पावस व्रज लागी रहत झरी।' सूबे० ४०५। पानीका [सोता।
झरोखा—पु० झँझरीदार छोटी खिड़की, गवाक्ष।
झर्प— देखो 'झरप' ( गुलाब ९३ )।
झल—पु० आँच, जलन 'जारि अँगार क्रोध झल निन्दा धूआँ होय। इन तीनौंको परिहरै साध कहावै सोय।' साखी १४४, ( कबीर ३५ ), 'साहब मिलै न झल बुझै रही बुझाय बुझाय।' साखी ४६। प्रबल इच्छा, काम-वासना। समूह। [ † 'झलकना' )।
झलक—स्त्री० चमक, प्रकाश, प्रतिबिम्ब, छाया ( उदे०*
झलकदार—वि० जिसमें चमक हो। चमकीला।
झलकना—अक्रि० चमकना 'रीझ भार अँखियाँ थकीं झलके श्रमजल विन्दु।' ललित० ६७, ( उदे० गुराई')। थोड़ा थोड़ा प्रस्फुटित होना 'छुटी न शिशुताकी झलक झलक्यो जोवन अंग।' वि० ३४
झलकनि—स्त्री० देखो 'झलक'।
झलका—पु० छाला (रामा० २९६ )।
झलकाना—सक्रि० चमकना, दरसाना। अक्रि० चमकाना, शोभित होना 'भाल विशाल तिलक झलकाहीं।' रामा० १३३ ( पाठ )। [ कान्ति।
झलझल, झलझलाहट—स्त्री० चमक ( यशो० ५१ ),
झलझलाना—अक्रि० चमकना, झलमलाना। सक्रि० चमकाना।
झलना—सक्रि० (पंखा इ० ) हिलाना 'भीजे खस वीजन झलेहू न सुखात स्वेद गात न सुहात बात दावासी डरापिनी।' ग्वाल। ढकेलना। दे० 'झालना'।
झलमल—पु० हलकी रोशनी।
झलमला—वि० चमचमाता हुआ, चमकीला।
झलमलाना—अक्रि० ठहर ठहर कर चमकना, चमचमाना, प्रकाशका अस्थिर होना 'मनहु कलानिधि झलमलै कालिन्दीके नीर।' बि० २३
झलरी, झल्लरी—स्त्री० झाँझ नामक बाजा।
झलहाया—पु० डाह करनेवाला व्यक्ति।
झला—पु० क्षणिक वर्षा, हलकी वृष्टि 'बरसि सिरावै पहुम डर रूप झलान झकोर।' रतन २६। पंखा।
झलाझल—वि० चमचमाता हुआ। [ झालर, बन्दनवार।
झलाझली—वि० झलाझल, चमकीला। [ हो जाना।
झलाना—अक्रि० चोट लगने से किसी स्थानका सुन
झलाबोर—वि०जिसमें चमक दमक हो। पु० चमक। कारचोबी। कामदार अञ्चल। झाड़ी।
झलामल—स्त्री० चमक-दमक, चमचमाहट।
झल्ल—पु० ज्वाला। भाँड़। एक बाजा।
झल्ला—वि० जो गाढ़ा न हो। पु० टोकरा। बौछार।
झल्लाना—सक्रि० झुँझलाना, चिढ़ना। सक्रि० किसीको चिढ़ाने के लिए कुछ करना।
झवर, झवारि—स्त्री० झगड़ा 'बड़े घरकी बहू बेटी करत वृथा झवारि।' सूबे० १४९, (दीन० ८७ )। वि० [ चमकीला
झष,झषना— देखो 'झख'; 'झखना'।
झषकेतु—पु० कामदेव।
झषराज—पु० मगर।
झसना—देखो 'झँसना'। [ का ) खड़ा होना।
झहनना—अक्रि० झन्नाना, झनझनाना। ( रोएँ इत्यादि

झहनाना—सक्रि० झनकारना, बजाना 'गति गयंद कुच कुंभ किंकिनी मनहुँ घण्ट झहनावैं ।' सू० ९६

झहरना—अक्रि० गिरने या झड़नेका सा शब्द करना । शिथिल पड़ना । सक्रि० डाँटना, गुस्सा होना 'सूर प्रभुको कहा सिखयौ रिसनि युवति झहरि।' सूवे०१२२

झहराना—अक्रि० लड़खड़ाकर या शिथिल होकर गिरना ( उदे० 'अरराना' ), 'भहरात झहरात दावानल आयो।' सू० ८१ । खिजलाना, झल्लाना 'तुम आवत अति ही झहरानी कहा करी चतुराई ।' सूवे० २२६ । तिरस्कृत होना 'भटकत फिरत निलज बरजत ही फकर ज्यों झहरावे ।' व्यास जी । सक्रि० पकड़ कर हिलाना, झकझोरना 'कीन्हों झुकि झहराय सकल तारका कुसुम बिन । राम० ८७

झाँई—स्त्री० परछाईं, छाया, झलक 'जा तनकी झाँईं परे श्याम हरित दुति होइ ।' वि० १, (सूवे० २७७) । अँधेरा ( उदे० 'झमकना' ) । प्रतिध्वनि ।

झाँकना—अक्रि० आड़मेंसे ताकना ।

झाँकनी—स्त्री० झाँकी ।

झाँकर—पु० देखो 'झंकाड़' ।

झाँका—पु० जालीदार खाँचा । झरोखा । अन्तर 'सभामाँझ द्रुपदी पति राखी पानिप गुन है जाको । बसन ओट करि कोट विश्वंभर परन न पायो झाँको ।' सूवि० १२

झाँकी—स्त्री० दर्शन, दृश्य, खिड़की ।

झाँख—पु० एक तरहका बनैला मृग ( रवि० ३३ ) ।

झाँखना—अक्रि० खीजना 'हाथ मरोरि धुने सिर झाँखी । प० १०० । दुखड़ा रोना, पछताना और कुढ़ना ( रामा० २१३ ) । झाँकना ( उदे० 'झमकना' ) ।

झाँखर—पु० काँटेदार और घनी झाड़ियोंका समूह । अरहर इत्यादिके ठँठुए 'यह संसार झाड़ और झाँखर, आग लगे बरि जाना है ।' कबीर ( ककौ० १५३ )

झाँगला—वि० ढीला ( वस्त्र ) ।

झाँगा—पु० बच्चोंका ढीला कुरता ।

झाँझ—स्त्री० एक तरहके बड़े आकारके मजीरे 'झाँझि, भेरि डिंडिमी सुहाई । सरस राग बाजहिं सहनाई ।' रामा० १८७ । शैतानी, ऊधम,, अड़ियलपन ( उदे० 'झकुराना' ) क्रोध । पाँवका एक जेवर ।

झाँझड़ी—स्त्री० 'झाँझ' । पाँवका एक गहना ।

झाँझन—स्त्री० झाँझर, एक तरहका पैरका कड़ा जो भीतरसे पोला होता है और जिसमें, बजनेके लिए, धातु इ० के दाने भरे रहते हैं ।

झाँझर, झाँझरि—स्त्री० पाँवका एक जेवर, पैंजनी । छलनी । वि० जर्जर, पुराना । छिद्रयुक्त ( उदे० 'कूरा' )' 'तिन बातन्ह झाँझर भा हीया ।' प० २३५

झाँझरी—स्त्री० झाँझ । पाँवका एक जेहर, पैंजनी ।

झाँझा—पु० झंझट । झाँझ । सेव निकालनेका पौना । एक कीड़ा ।

झाँझिया—पु० झाँझ बजानेवाला । [ * उछल कूद ।

झाँप—स्त्री० परदा, ढकन, आवरण । झपकी । पु० *

झाँपना—सक्रि० आवरण डालना, छिपाना, ढाँपना ( उदे० 'उघेलना', सू० १२४ ), 'ज्यों उझकति झाँपति बदन विहँसत अति सतराइ ।' वि० २०७ झेंपना, लज्जित होना ।

झाँपी०—स्त्री० झपकी । बाँस या मूँजकी पिटारी ।

झाँवना—सक्रि० झाँवेसे घिस घिस कर धोना (मति० २२८, दास ४१ ) ।

झाँवर—स्त्री० डाबर । वि० झाँवेके सदृश कुछ काले रंगका । कुम्हलाया हुआ, शिथिल 'भीखन ग्रीषम तापते भयो झाँवरो छीन । है यह चातक डाबरो अनुग रावरो दीन ।' दीन० २०० । '…चितवत मग भई दृष्टि झाँवरी । सूवे० ३९०

झाँवली—स्त्री० आँखका संकेत । झाँईं ।

झाँवाँ—पु० जली हुई ईंट ।

झाँसना—सक्रि० बहकाना, धोखा देना ।

झाँसा—पु० धोखा, बहकावा ।

झाँसिया, झाँसू—वि० धोखेबाज़, पट्टीबाज़ ।

झाईं—स्त्री० देखो 'झाँईं', ( विन० ३६२ ) ।

झाऊ—पु० एक पेड़ ( सू० ६१ ) ।

झाग—पु० फेन, गाज ( कबीर ३२३ ) ।

झागड़—पु० झगड़ा, बखेड़ा ।

झाड़—पु० पेड़ । झाड़की तरहका लैम्प । सिलसि 'झाड़ बाँधा है मेंहने दिन रात'—गुलबन ३१२ पत्रहीन वृक्ष 'पतझड़ या, झाड़खंडके सूखी सी फु वारीमें' आँसू १५ । स्त्री० फटकार ।

झाड़खंड—पु० जंगल ।

झाड़ झंखाड़—पु० काँटेदार झाड़ोंका समूह । रद्दी ची का ढेर ।

झाड़न, झारन—स्त्री० झाड़नेका कपड़ा । झाड़नेसे निकला हुआ मैल ।
झाड़ना—सक्रि० बुहारना, फटकारना, धूल साफ करना। झाड़ फूँक करना 'निरजन सोइ मंत्र जब झाड़िए तब इह होएब भाल ।' विद्या० २१३ ।
झाड़फूँक—स्त्री० मंत्रादिसे झाड़कर प्रेतबाधा इ० दूर-करनेकी क्रिया ।
झाड़बुहार—स्त्री० सफाई ।
झाड़ा—पु० झा-फूँक । मल ।—फिरना = मल-त्याग करना 'दहिने स्वर झाड़े फिरै बायें लघुशंकाय । युक्ती ऐसी साधिये तीनों भेद बताय ।' चरनदास ।
झाड़ी—स्त्री० छोटे छोटे पौधोंका समूह । छोटा पौधा । टोंटीदार पात्र ।
झाड़ू—स्त्री० बोहारी, बढ़नी । पुच्छल तारा ।
झाड़ूबरदार—पु० मेहतर, भंगी ।
झापड़—स्त्री० थप्पड़, तमाचा ।
झाबर—पु० दलदल भूमि । पु० झावा, खाँचा ।
झावा—पु० झब्बा । झौआ, बड़ी टोकरी ।
झाम—पु० गुच्छा । छल, धोखा। डाँट डपट। बड़ी कुदाल।
झामर—वि० मलिन 'सामरि हे झामरि तोर देहा।' विद्या० १२३, ( २६७ ) । पु० एक गहना । सिल्ली।
झामी—पु० छलिया, धोखा देनेवाला ।
झायँ झायँ—स्त्री० ( सुनसान स्थानकी ) झनझनाहट ।
झार—स्त्री० ज्वाला, लपट, आग, आँच 'धरती सरग जरै तेहि झारा ।' प० ६९, ( उदे० 'अधिकाना' ) । ईर्ष्या, जलन (उदे० 'झर') । पु० झाड़, पेड़ 'विकट पहार झार घने सिंह स्यार निरबाह नहीं होत रथ हरुको जामें है ।' गोपालचन्द्र मिश्र । पौना, झरना । समूह । वि० समूचा, समस्त । एक मात्र ।
झारखंड—पु० देखो 'झारखण्ड' । एक पर्वत ।
झारझरस—स्त्री० गर्मी, उष्णता ।
झारना—सक्रि० झटकारना 'राधेको बनाय विधि धोयो हाथ जाम्यो रंग ताको भयो चन्द्र कर झारे भये तारे हैं ।' बेनी झटका देकर गिराना, अलग करना 'दुश्मन दावागीर होय तिनहूँको झारै ( लाठी ) ।' गिरिधर । बालोंमें कंघी करना 'झारहु केस मकुट सिर देहू ।' प० १३१ । चलाना 'तमकि तेग तुरकन पर झारी ।' छत्र० ९० । झाड़ना-फूँकना ।
झारा—पु० तलाशी ( उदे० 'जगाती', साखी ७८ ) । सूप । पौना जिसमें छेद हों ( बुंदेल० ) ।
झारि—स्त्री० लपट, ज्वाला, जलन । वि० एक मात्र । कुल 'जाके बल लवलेस ते जितेहु चराचर झारि ।' रामा० ४२६, 'गढ़पर बसहिं झारि गढ़पती।' प०१८
झारी—स्त्री० लुटियाकी तरहका एक टोंटीदार पात्र 'फूटी एक थारी बिन टोटनीकी झारी हुती, बाँसकी पिटारी औ कँथारी हुती टाटकी ।' सुदामा० १५ । वि० कुल, समस्त 'धेनु रूप धरि हृदय विचारी । गई तहाँ जहँ सुरमुनि झारी । रामा० १०२ । स्त्री० झाड़ी । एक खट्टी पेय वस्तु 'पुनि झारि सो द्वै विधि स्वाद घने । विधि दोइ पछावरि सात पने ।' के० २०४ ।
झाल—स्त्री० वर्षाकी झड़ी । झार, लपट 'एक कनक अरु-कामिनि दोउ अगिनकी झाल ।' स खी १७३ । तीक्ष्णता तीतापन । लहर । पु० झाँझ वि० देखो 'झार' ।
झालड़,-र—स्त्री० लटकता हुआ हाशिया । घड़ियाल । झाँझ । एक पकवान'झालर माँडेआये पोई ।' प० १३४
झालना—सक्रि० बरतनमें टाँका लगाकर ठीक करना ।
झालदार—वि० जिसमें झालर लगी हो ।
झालरना—अक्रि० फैल कर छा जाना 'नैंक न झुरसी बिरह झर नेहलता कुँभिलाति । नित नित होती हरी हरी खरी झालरति जाति ।' वि० ४५ । पुष्पादियुक्त होना ( उदे० 'आलबाल' ) ।
झालि—स्त्री० एक खट्टी पेय वस्तु ( झारी ) । वर्षाकी झड़ी ।
झावँझावँ—स्त्री० हुज्जत, बकवाद ।
झावुक—पु० झाउ ।
झिंगवा—स्त्री० मछली ।
झिंगुली—स्त्री० झँगुलिया, बच्चोंका ढीला कुरता ।
झिंझिया—स्त्री० बहुतसे छेदोंवाला घट 'जालरंध्र मग ह्वै काढ़े तियतन दीपति-पुंज । झिंझिया कैसो घट भयो दिनहीमें बनकुञ्ज ।' रस० २
झिंझी—स्त्री० झिल्ली ।
झिगरना—अक्रि० झगड़ना 'एक गरे धरे बाँह नाँहसो झिगरि रही एक पद पाँह परी विनवति दासी ह्वै ।' दीन० ३१
झिझक—देखो 'झझक' ।
झिझकना—अक्रि० हिचकिचाना, ठिठकना, रुकना ।
झिझकारना—सक्रि० उपेक्षा करना, दुत्कारना, झटकना ।
झिटका—पु० झटका ।
झिड़कना—सक्रि० घुड़कना, अवज्ञापूर्वक कहना ।

झिड़की—स्त्री० घुड़की, डाँट, फटकार। [झटकना।
झिनवा—वि० झीना। पु० धानका एक भेद।
झिपना—अक्रि० झेंपना, लज्जित होना, बंद होना
झिपाना—सक्रि० लज्जित करना।
झिर—स्त्री० कुएँका स्रोत।
झिरकना—सक्रि० डपट कर या अनादरके साथ बात कहना। अलग फेंक देना।
झिरझिर—क्रिवि० मंदगतिसे, 'झिरझिर'आवाज़के साथ।
झिरझिरा—वि० झीना, बारीक।
झिरहर—वि० झँझरा, जिसमें बहुत छेद हों 'छिनहर घर औ झिरहर टाटी, घन गरजत कंपै मेरी छाती।' कबीर १८१ [की रस्सी।
झिलगा—पु० ढीली बुनावटवाली खाट, टूटी हुई खाट-
झिलना—अक्रि० घुसना 'संकल्प नीर भई सरिता गँभीर बहु जिनके प्रवाहना पयोधि पै झिलत हैं।' राम रसायन। मग्न होना, तृप्त होना। झेला जाना, सहा जाना। सक्रि० आक्रमण करना ( छत्र०२० )।
झिलम—स्त्री० एक तरहका शिरस्त्राण ( रतन० ३६ )।
झिलमिल—स्त्री० काँपता हुआ प्रकाश 'जहँ ललित बागनि द्रुमलतनि मिलि रहै झिलमिलि झूमि है।' भू० ८। ज्योतिकी अस्थिरता। एक महीन वस्त्र। लोहे का कवच। वि० चमचमाता हुआ।
झिलमिला—वि० महीन, चमकता हुआ 'झिलमिली ओढ़नी किनारीदार चीरकी।' रवि ० ६३
झिलमिलाना—अक्रि० रोशनीका हिलना। ठहर ठहर कर चमकना, जुगजुगाना 'अगम अगोचर गम नहीं जहाँ झिलमिले जोत।' साखी १२१
झिलमिली—स्त्री० एक तरहका परदा, चिक ( रतन० ३४ )। कानका एक गहना।
झिली, झिल्ली—स्त्री० झींगुर ( दास २७ )। बारीक चमड़ा, पतली तह, आँखका जाला।
झिलड़—वि० ( कपड़ा ) जो गफ न हो। झीना।
झींक, झींका—पु० छींका, सिकहर। जितना अन्न एक बार चक्कीके मुखमें डाला जाय।
झींकना,झींखना,झीखना—अक्रि० मनमें पछताना और कुढ़ना, मनमें गुस्सा होना, खीजना। दुखड़ा रोना।
झींगवा—स्त्री० एक छोटी मछली।
झींगा—पु० एक तरहकी मछली।
झींगुर—पु० एक छोटा कीड़ा।
झींवर—पु० देखो 'झीमर', ( कबीर २०० )।
झींसी—स्त्री० वर्षाकी छोटी छोटी बूँदें, फुहार।
झीठ—वि० झूठ 'भारी कहूँ तो बहु डरूँ हलुका कहूँ तो झीठ।' साखी १२४
झीड़ना—अक्रि० घुसना, धँसना, झिलना 'मानहु सुधा सिन्धुमें झीड़त मकर पानके हेत।' सुसू० २६६
झीना—वि० पतला, अति सूक्ष्म ( देखो 'खीन' ), ( रतन० ५६ ) दुर्बल, मन्द। बहु-छिद्र-युक्त 'झीनी झीनी बीनी चदरिया।' कबीर ( कको० १५३ ) बहुत छोटा 'झीनी झीनी पतिया अमिलकइ।' ग्राम० ४०५ ( ४६५ )।
झीनासारी—पु० एक तरहका चावल (उदे० 'कजरी')।
झीमना—अक्रि० झूमना 'नव नील कुञ्ज हैं झीम रहे' कामायनी ६५।
झीमर—पु० धीवर, मछुआ, मल्लाह।
झील—स्त्री० प्रकृतिनिर्मित बड़ा तालाब।
झीलर—पु० छोटा तालाब।
झीवर—देखो 'झीमर'
झुँगना—पु० जुगनू 'चतुर प्रवीण आगे मूरख उचार करै सूरजके आगे जैसे झुँगना दिखाइये।' सुन्द० ७४
झुँझना—पु० एक तरहका खिलौना, झुनझुना, घुनघुना, 'कबहूँ चटकोरा चटकावति झुँझना झुझुन झूलना झूलैं।' सू० मदन० ( व्रज० १२२ )।
झुँझलाना—अक्रि० चिढ़ना, खीजना।
झुंड—पु० समुदाय, समूह, गरोह।
झुकना—अक्रि० प्रवृत्त होना। निहुरना, नवना ( उदे० 'झूँक' ) नम्र होना। कुपित होना। ( उदे० मर गाना' ), 'भेग्रन सों प्रभु झुकत हैं क्यों न कहौ समुझाइ।' राम० ४५६, (सूबे० ३४१, मति० १८०)
झुकरना—अक्रि० झुँझलाना 'रुण्डनके झुण्ड झूमि झूमि झुकरे से नाचैं—कविता० १९४
झुकराना—अक्रि० झोंका खाना। देखो 'झकुराना'।
झुकाना—सक्रि० नवाना, टेढ़ा करना, मोड़ना, किसी ओर प्रवृत्त करना।
झुकामुखी—स्त्री० अँधेरेका समय।
झुकाव—पु० प्रवृत्ति, रुख, ढाल।
झुझकावना—सक्रि० रेलना, आक्रमणके लिए प्रेरित

करना 'मो तम पर झुझकावहीं गज मतवारे नैन ।' रतन० २८ । [कम रहता है ।

झुटपुट—पु० प्रभात या सन्ध्याका वह समय जब प्रकाश

झुटुंग—वि० झोंटेवाली, जटाधारी, 'योगिनी झुटङ्ग झुण्ड झुण्ड बनी तापसी सी तीर तीर बैठी हैं समर सरि खोरि कै ।' कविता० १९९

झुठकाना—सक्रि० झूठा विश्वास कराना, धोखा देना 'त्यों गुलाल झूठी मुठी, झुठकावत प्यो जाय ।' वि० २०७ ( वंग ) । झूठा बनाना । [ करना ।

झुठलाना, झुठाना, झुठालना—सक्रि० झूठा साबित

झुठवना—सक्रि० झूठा बनाना, 'लरिकनको तुम सब दिन झुठवत मो सों कहा कहौगे ।' सूसु० ९५

झुठाई—स्त्री० असत्यता, झूठापन ।

झुनक—स्त्री० नूपुर बजने का शब्द ।

झुनकारा—वि० झीना, बारीक ।

झुनझुन—पु० नूपुर आदिका शब्द ।

झुनझुना—पु० देखो 'झुँझना' ।

झुनझुनाना—अक्रि० 'झुनझुन' शब्द होना । सक्रि० 'झुनझुन' शब्द करना ।

झुनझुनियाँ—स्त्री० झुनझुन आवाज़ करनेवाला गहना । बेड़ी । सनईका पौधा ।

झुनझुनी—स्त्री० एक प्रकारकी सनसनाहट जो हाथ या पैरमें, देरतक दबे रहनेके कारण, उत्पन्न होती है ।

झुपझुपी, झुबझुबी—स्त्री० कानका एक गहना ।

झुपरी—स्त्री० झोंपड़ी ।

झुमका—पु० कानका एक आभूषण ।

झुमिरना—अक्रि० झूमना, झुकना, उड़ना '···मकरंद हेतु झुमिरत अधीर । गुलाब ३२३

झुरना—अक्रि० सूखना । चिन्ता आदिके कारण दुबला होते जाना ।

झुरमुट—पु० पेड़ों आदिका समूह । मनुष्योंका समूह 'खिन इक महँ झुरमुट होइ बीता ।' प० १२६

झुरसना—अक्रि० कुम्हलाना, झौंसना, ऊपरी भागका अंशतः जल जाना 'तर झुरसी ऊपर गई कज्जल जल सिरकाय ।' वि० १३७ ( वंग० )

झुराना—सक्रि० सुखाना 'मंजन कै नित न्हायके अङ्ग अँगोछि कै बार झुरावन लागी ।' ललित० ६२ अक्रि० सूख जाना, दुःखसे क्षीण होना 'ते तित सुधि अति ही करत सब तन रही झुराय ।' सत्यना०, ( सूबे० ८८ ), 'सींचै लाग झुरानी बेली ।' प० २११

झुरावन—स्त्री० सुखानेके कारण नष्ट हुआ अंश ।

झुर्री—स्त्री० सूखनेका चिह्न । शिकन ।

झुलका—पु० घुनघुना ।

झुलना—स्त्री० झूला । ढीला कुरता ।

झुलनी—स्त्री० नथ इ० में लटकता हुआ मोतियोंका

झुलमुला—वि० चमचमाता हुआ, झिलमिला । [झुमका ।

झुलवा, झुलुवा —पु० झूला । [ मुरझा जाना ।

झुलसना—अक्रि० ऊपरी भागका कुछ कुछ जल जाना,

झुलाना, झुलावना—सक्रि० झूलेमें बैठाकर हिलाना, बारबार धक्का देकर हिलाना ( उदे० 'घालना' ) ।

झुलौआ, झुलौवा—पु० कुरता ।

झुहिरना—अक्रि० लादा जाना ।

झूँक—पु० झोंका, झकोरा 'रंगलाती' हरी हहराती लता झुकि जाती समीरके झूँकनि सों ।' देव (व्रज० २९९)

झूँखना—अक्रि० देखो 'झींखना' ( सूबे० ३५९ । )

झूँझल—स्त्री० चिढ़नेकी क्रिया ।

झूँटा—वि० झूठा । पु० बालोंका समूह । पेंग ।

झूँसना—सक्रि० किसीको बहलाकर रुपये आदि ले लेना ।

झूक—देखो 'झूँक', ( गुलाब ३२१ ) ।

झूकटी—स्त्री० क्षुप, छोटी झाड़ी ।

झूझ—पु० युद्ध (कबीर ६८ ) ।

झूझना—अक्रि० जूझना, युद्ध करना, युद्धमें प्राण देना

झूठ—वि० जो सच न हो, असत्य [(कबीर ६८, ६९ ) ।

झूठन—स्त्री० जूठन ।

झूठमूठ—क्रिवि० झूठे ही, व्यर्थ ही ।

झूठा—वि० असत्य । मिथ्यावादी । नकली, बनावटी । जूठा, उच्छिष्ट 'झूठे जानि न संग्रहे मनु मुँह निकसे बैन । याही ते मानो किये बातनको विधि

झूना—वि० देखो 'झीना' । [ नैन ।' वि० १४३

झूमक—पु० एक तरह का गीत जिसे स्त्रियाँ झुण्ड बाँध कर गाती हैं, झूमर 'सखि झूमक गावैं अँग मोरी ।' प० १६८, 'झूमि झूमि झूमक सब गावति बोलति मधुरी बानी ।' सूबे० २४५

झूमका—पु० झुमका, गुच्छा 'वर्ण वर्ण जहाँ तहाँ बहुधा तने से सुवितान । झालरैं मुकुतानिकी अरु झूमके बिन मान ।' के १७६

झमड़ झामड़—पु० व्यर्थकी बात, ढकोसला।

झमना—अक्रि० बार बार इधर उधर हिलना, बार बार झोंके खाना।

झमर—पु० कानमें पहिननेका गहना, झुमका। सिरमें पहिननेका एक गहना। एक तरहका गीत या उसके साथ होनेवाला नृत्य, झूमक। जमाव, जमघट।

झूमरि—स्त्री० देखो 'झूमर'।

झूर—वि० जूठा। सूखा। खाली। व्यर्थ। स्त्री० जलन, पीड़ा। [प० १७१, (३०४)

झूरना—अक्रि० सूखना 'तन तिनउर भा झूरौं खरी।'

झूरा—पु० सूखी जगह। वर्षाका अभाव, सूखा। कमी, घटी। वि० सूखा हुआ 'काठहु चाहि अधिक सो झूरा।' प० ६५। खाली।

झूरै—क्रिवि० व्यर्थ ही ( उदे० 'किंगरी', प० १७७ )। वि० सूखा, व्यर्थ, खाली 'झूरै ठाढ़ हौं, काहेक आवा। बनिज न मिला रहा पछितावा।' प० ३३

झूल—स्त्री० हाथी, घोड़े इत्यादिकी पीठपरका चौकोर कपड़ा ( ललित० ७१ )। झूला।

झूलन—पु० एक तरहका गाना। कृष्ण आदिकी मूर्तियों-के झुलानेका उत्सव। झूलनेकी क्रिया।

झूलना—अक्रि० नीचेकी ओर लटककर आगे पीछे हिलना। झूलेपर बैठकर आगे पीछे जाना। पु० झूला हिंडोला। आँखों में झूलना = हमेशा आँखोंके सामने रहना।

झूलरि—स्त्री० लटकता हुआ झुमका।

झूला—पु० छत या पेड़की डाल इत्यादिसे लटकायी हुई रस्सी या तार जिसपर पटरी डालकर या यों ही झूलते हैं, डोला, हिंडोला। झटका। एक गहना।

झेंपना—अक्रि० लज्जित होना, सकुचा जाना।

झेर—स्त्री० देर, विलम्ब (सूबे० १५२), 'दधि बेचहु घर सूधे आवहु काहे झेर लगावति।' सूबे० १६७। झगड़ा '' 'सी क्यों परै मुकिके झेरनि।' भ्रमर ९०

झेरना—सक्रि० झेलना, बरदाश्त करना, उठाना। अक्रि० शुरू करना।

झेरा—पु० झगड़ा, ( सूमु० १०० ), झंझट (सू० ६५), 'सूरदास प्रभुकी तुहि जावनि कतहि करत त्रिय झेरो।' सूबे० २२९

झेल—स्त्री० हिलोरा, धक्का। पु० झेर, विलम्ब 'चली बरात जाय सरजू तट रहि है, अबनहि झेला।' रघु० १३३ ( छत्रप्रं० १४ )

झेलना—सक्रि० सहना, ऊपर लेना 'ठेलि हलधर दियो, झेलि तब हरि लियो'—सूबे० २९२। ग्रहण करना। पानीमें हिलना, हाथ पाँवसे पानी हटाना ( सू० ४९ )। ढकेलना आगे चलाना, दूर करना 'पर्वत पुञ्ज जिते उन मेले। फूलके तूल लै बानन झेले।' के० ३६९।

झोंक, झोक—स्त्री० झोंका, झटका, आघात 'नेही हग तन क्यों सकैं इनकी झोकैं ओड़।' रतन० २७। वेग, भार। प्रवृत्ति, ठाट, चाल। पानीका धक्का।

झोंकना—सक्रि० झोंकेके साथ फेंकना। ढकेलना धक्का देना। भाड़ झोंकना = भाड़में सूखे पत्ते आदि डालना, तुच्छ काम करना 'जाके सिर अस भार, सो कस झोंकत भार अस।' रहीम।

झोंका—पु० धक्का, झटका, वायु इत्यादिका आघात। झकोरा। पानीका हिलोरा। मुट्ठी 'सोक भयो सुर-नायकके जब दूसरी बार लियो भरि झोंको।' सुदामा० ८। ठाट, चाल 'कटि लहँगा लीलो बन्यो झोंको जो देखि मन मोहै।' सूवि० २०

झोंकिया—पु० भाड़ झोंकनेवाला।

झोंकी—स्त्री० जोखिम। जवाबदेही।

झोझल—पु० गुस्सा, कुढ़न।

झोंझा—स्त्री० बयेका लटकता हुआ घोसला 'एक पेड़ पर बयेकी झोंझें दिखीं' 'कुकुरमुत्ता।

झोंट, झोंटा—पु० लम्बे केशोंका समूह (कबीर ३१३), झूला झुलानेको दिया गया धक्का, पेंग ( सू० १७५ )। 'हिंडोरौ झूलत है पिय प्यारी। श्री रँग देवी सुदेवी बिसाखा झोंटा देत ललितारी।' श्रीभट्ट (व्रज० १४२)।

झोंटी—स्त्री० बालोंका समूह, झोंटा 'सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी। लगे घसीटन धरि धरि झोंटी।' रामा० २७७। झोंका।

झोंपड़ा—पु० घास फूससे छाया हुआ छोटा मकान या [रहनेका स्थान।

झोंपड़ी—स्त्री० पर्ण-कुटी, मढ़ी।

झोंपा—पु० गुच्छा 'झूलहिं रतन पाटके झोंपा।' प० ५१

झोटा—देखो 'झोंटा'।

झोंटिंग—वि० बड़े बड़े बालोंवाला, जटाधारी ( राम ५०४ )।

झोपड़ा, झोपड़ी—देखो 'झोंपड़ा' । 'झोंपड़ी ।
झोर—पु० झोल, रसा ( ग्राम० ३१७ ) । [तरकारी ।
झोरई—वि० जिसमें रसा हो, रसेदार । स्त्री० रसेदार
झोरना—सक्रि० झोंका देकर हिलाना । झकझोरना ।
झोरि, झोरी—स्त्री० झोली 'रही उजराई है न घठपट सूझै नहिं लै गुलाल मोहमई झोरी झकझोरी है ।' दीन० १६० । एक तरहकी रोटी । पेट ।
झोल—पु० कपड़ेका झूलता हुआ अंश । कपड़ेके झूलने या लटकनेका भाव । अंचल, छोर । आड़ । तरकारी आदिका रसा । माँड़ । गर्भ । भस्म, राख 'तेहि पर विरह जराइ कै चहै उड़ावा झोल ।' प० १६९ । जलन । मुलम्मा । वि० खराब, बेकाम, व्यर्थ, तुच्छ 'थके मुख कछु कहि न आवै, सकल मख कृत झोल ।'
झोलदार—वि० ढीला-ढाला । रसेदार । [ सू० १८७
झोलना—सक्रि० झुलसना, जलाना ।
झोला—पु० साधुओंका ढीला-ढाला कुरता । बड़ी झोली । झोंका, धक्का 'कोई खाहिं पौन कर झोला ।' प० ७१, ( २२३ भी ) । इशारा ।
झोली—स्त्री० एक तरह की थैली । भस्म, राख ।
झौंका—पु० झोंका 'झूलना झौंकों के अनकूल पल्लव १०२
झौंझट—देखो 'झंझट' ।
झौंद—पु० पेट ।
झौंर—पु० जोरसे बहनेवाला पानी । एक तरहका गहना 'झब्बा' । कुंज, पेड़ोंका झुरमुट । समूह 'फिर फिर चित उतही रहत टुटी लाजकी लाव । अंग अंग छवि झौंरमें, भयो भौंरकी नाव ।' बि० ९
झौंरना—अक्रि० गूँजना ( बि० २०४ ) । सक्रि०
झौंरा—पु०झुण्ड । [ दौड़कर पकड़ना ।
झौंराना—अक्रि० डोलना, झूमना 'साँठिहि रंक चलै झौंराई ।' २०५ । काला पड़ जाना, कुम्हलाना ।
झौंसना—अक्रि० ऊपरी भागका अंशतः जल जाना, कुम्हलाना, मुरझाना ( उदे० -तौंसना' ) । [हुज्जत ।
झौड़—स्त्री० बातोंका झगड़ा, विवाद, कहा सुनी,
झौर—पु० झगड़ा, रार । डाँट-डपट । 'झपट', भगदड़ 'फैलि चल्यो अगनित घटा सुनत सिंह घहरानि । परै झौर चहुँ ओर तें होत तरुनकी हानि ।' दास ४५
झौरना—सक्रि० दौड़कर पकड़ना, दबा लेना ।
झौरा—पु० बखेड़ा, तकरार ।
झौरे—क्रिवि० धोरे, निकट, पास । साथ ।
झौवा—पु० छोटी टोकरी ।
झौंहाना—अक्रि० गुस्सेके साथ बोलना ।

---

# ट

टंक—पु० चार माशेकी तौल,मुद्रा । कुदाल,कुल्हाड़ी,टाँकी ।
टंकक—पु० चाँदीकी मुद्रा । [ सुहागा ।
टंकण, टंकन—पु० धातुकी चीज़में टाँका मारना ।
टँकना अक्रि० सिया जाना, टाँका लगाकर जोड़ा जाना, कुटना ( सिल इ० ), लिखा जाना ।
टंकशाला—स्त्री टकसाल ।
टंका—पु० एक पुराना सिक्का । एक पुरानी तौल । स्त्री०
टँकाई—स्त्री० टाँकनेकी क्रिया या मजदूरी । [ जाँघ ।
टँकाना—सक्रि० सिलवाना । (सिल इ०) कुटाना ।
टंकार—स्त्री० रोदा खींचनेका शब्द । ख्याति । झनकार ।
टंकारना—सक्रि० धनुषकी प्रत्यञ्चा तानकर आवाज़
टंकिका—स्त्री० छेनी, टाँकी । [ करना ।
टंकी—स्त्री० कंडाल, हौज ।
टंकोर—पु० धनुषकी कसी हुई रस्सी तानकर छोड़नेका शब्द, टंकार ( रामा० ५७२ )
टंकोरना—सक्रि० धनुषकी प्रत्यञ्चा खींचकर शब्द करना ।
टँकोरी—स्त्री० सोना इ० तौलनेका छोटा काँटा ।
टंग—पु० फरसा । टाँग । एक तौल । सुहागा ।
टँगड़ी, टँगरी—स्त्री० टाँग । [ ꣳ जाना ।
टँगना—अक्रि० लटकना, ऊँचे आधारपर अटकाया ꣳ
टंच—वि० तैयार, हृष्टपुष्ट । कृपण । नीच, दुष्ट 'पायो जानि जगतमैं सब जन कपटी कुटिल कलजुगी टंचु ।'
टंट घंट—पु० आडम्बर, ढकोसला । [ हित हरिवंश
टंटा—पु० बखेड़ा, झगड़ा, फसाद ।
टंटल, टंडैल—पु० मज़दूरोंका मुखिया
टंडिया—स्त्री० 'बहूँटा' नामक आभूषण ।

टई—स्त्री० युक्ति, प्रयोजन सिद्ध करनेका मौक़ा। काम 'कलि करनी वरनिये कहाँलों, करत फिरत विन टहल टई है।' विन० ३३९

टक—स्त्री० विना पलक गिराये, स्थिर दृष्टिसे, देखना।

टकटका—पु० टकटकी निर्निमेष दृष्टि।

टकटकाना—सक्रि० टकटकी लगाकर ताकना।

टकटकी—स्त्री० देखो 'टक'।

टकटोना, टकटोरना—सक्रि० टटोलना, अनुसन्धान करना ( उदे०'गुनीला' ), खोजना 'पायो नहिं आनन्द लेस में सबै देस टकटोये।' नागरी०, 'नहिं सगुन पायेउ रहे मिसु करि एक धनु देखन गये। टकटोरि कपि ज्यों नारियरु सिर नाइ सब बैठत भये।' जा०मं०, ( उदे० 'रढ़ना' ) [ॐ ( सूसु० ७६ )।

टकटोलना, टोहना—सक्रि० देखो 'टकटोरना' ॐ

टकराना—अक्रि० ठोकर खाना, जोरसे भिड़ना। मारा मारा फिरना, इधर उधर घूमना। सक्रि० टक्कर मारना, आघात करना, एक चीज़को दूसरीसे भिड़ाना।

टकसार, टकसाल—स्त्री० सिक्के ढालनेकी जगह।

टकसाल—वि० चोखा, खरा ( सत्यह० १८ )।

टकसाली—वि० खरा, चलनेवाला। प्रामाणिक। टकसाल सम्बन्धी।

टकहाई, टकाही—स्त्री० निम्न श्रेणीकी वेश्या।

टका—पु० चाँदीका सिक्का, रुपया। धन। अधन्ना, दो पैसे।

टकुआ—पु० चरखेका तकुआ। तराजूके पलड़ोंकी रस्सी।

टकुली—स्त्री० छेनी, टाँकी, रुखानी।

टकैत—वि० मालदार।

टकोर—स्त्री० देखो 'टंकोर', 'प्रथम कीन्ह प्रभु धनुष टकोरा। रिपु दल बधिर भयेउ सुनि सोरा।' रामा० ४८८। डंकेकी चोट। हलका आघात। चरपराहट।

टकोरना—सक्रि० सेंकना। चोट पहुँचाना, बजाना।

टकोरी—स्त्री० टक्कर। आघात, चोट 'बाजत हैं काम कोह ढफ और मृदंग, दोऊ लागी उदवेगकी उमंग सो टकोरी है।' दीन० १६०।

टकौरी—स्त्री० सोना इ० तौलनेके लिए छोटा काँटा।

टक्कर—स्त्री० 'मुठभेड़, प्रतिद्वन्द्विता, ठोकर, हानि।

टखना—पु० पाँवका गट्टा, गुल्फ।

टगर—पु० क्रीड़ा। सुहागा। एक पेड़। ऊँची मेंड़, टीला।

टघरना—अक्रि० देखो 'टिघलना'।

टघराना—सक्रि० पिघलाना।

टचटच—क्रिवि० धायँ धायँ करके।

टटका—वि० ताज़ा, हालका ( दीन० १८ )

टटकाई—स्त्री० ताजगी ( रत्ना० २२० )।

टटल बटल—वि० अंड बंड।

टटावली, टटीरी—स्त्री० टिटिहरी।

टटिया—स्त्री० बाँस, अरहर आदिका परदा या छाजन।

टटीवा—पु० चक्कर।

टटुआ—पु० टट्टू।

टटोना,-लना—सक्रि० खोजने या पता लगानेके लिए इधर उधर हाथ फेरना। जाँच करना, थाह लेना 'प्रीतमको देख्यो कहूँ इन लीन्ही गति चोरि। परम चातुरी सींवगुन, आये लेत बटोरि।' चाचा हित०, ( उदे० 'बिलखाना' )

टटोहना—सक्रि० टटोलना, हाथसे स्पर्श करना 'दै गलबाहीं रहे परस्पर चिबुक टटो हैं।' भगवत रसिक

टट्टर, टट्टा—पु० देखो 'टटिया'।

टट्टरी—स्त्री० ठट्टा। डींग। नगाड़े आदिका शब्द।

टट्टी—स्त्री० देखो 'टटिया'। पाखाना )

टट्टू—पु० छोटा घोड़ा।

टड़िया—स्त्री० बाँहपर पहननेका एक गहना।

टन—स्त्री० घंटा इ० बजनेका शब्द।

टनकना—अक्रि० रह रहकर पीड़ा होना। 'टन टन' शब्द होना।

टनटन—स्त्री० घंटा बजनेकी आवाज़।

टनटनाना—अक्रि० 'टन 'टन' शब्द होना। सक्रि० [ घंटा इ० बजाना।

टनमन—पु० जादू।

टनमना—वि० चंगा, स्फूर्तिमय।

टनाका—वि० तेज़ ( धूप )। पु० घंटेकी आवाज़।

टनाटन—स्त्री० लगातार घंटा इ० बजनेकी आवाज़। क्रिवि० 'टनटन शब्दके साथ।

टप—स्त्री० बूँद इत्यादि गिरनेका शब्द। बग्घी टमटम आदिके ऊपरका छत्र या वितान जो इच्छा होनेपर फैलाया अथवा गिराया जा सकता है।

टपकना—अक्रि० बूँद बूँद होकर गिरना, चूना। ऊपरसे एक बारगी गिरना, टूट पड़ना। प्रतीत होना [illegible] ( गबन २२८ )।

टाँगा—पु० कुल्हाड़ा । एक तरहकी सवारीकी गाड़ी ।
टाँगी—स्त्री० कुल्हाड़ी ।
टाँगुन—स्त्री० एक कदन्न ।
टाँघन—देखो 'टाँगन' ( रत्ना० १३८ ) ।
टाँच—स्त्री० टाँका, सियन । थिगली ।
टाँचना—सक्रि० सीना, टाँकना ( कबीर १५५ ) । काटना, छाँटना । [ जाय, वसनी ।
टाँची—स्त्री० रुपये रखनेकी लंबी थैली जो कमरमें बाँधी
टाँठ—वि० कड़ा, कठिन ( कविता० ११३ ), बलवान् ।
टाँठा—वि० पुष्ट । कड़ा । [ दृढ़ ।
टाँड—स्त्री० देखो 'टाढ़' । राशि, पंक्ति । एक तरहकी लकड़ीकी पाटन ।
टाँडा—पु० व्यापारकी वस्तुएँ जो बैलों आदिपर लादी गयी हों । व्यापारकी वस्तुओंसे लदे हुए बैलोंका समूह । ( व्यापारियोंका ) झुण्ड 'बहुत भरोसो जानि तिहारो अघ कीन्हों भरि भाँडो । लीजे वेगि निवेरि सूर प्रभु यह पतितनको टाँडो ।' सूवि० ५०, ( कबीर १७४, २०१ ), 'मन राजा नायक भया, टाँड़ा लादा जाय ।' साखी १११
टाँड़ी—स्त्री० टिड्डी नामका कीड़ा ।
टाँय टाँय—स्त्री० निरर्थक बकवाद । कड़वी आवाज ।
टाकू—पु० तकुआ, टेकुरी ।
टाट—पु० सनका बना मोटा कपड़ा 'सिअनि सोहावनि टाट पटोरे ।' रामा० १२ बिछावन, गद्दी ।
टाटर—पु० टट्टर । खोपड़ी ।
टाटिका, टाटी—स्त्री० देखो 'टटिया', ( कबीर ९३ ) ।
टाड़—स्त्री० बाँह पर पहिननेका आभूषण-विशेष, बहूँटा । 'बाहू कंगन टाड़ सलोनी ।' प० ४९, राघ० ९५
टान—स्त्री० खींच ; खिचाव । पु० टाँड ।
टानना—सक्रि० खींचना ।
टाप—स्त्री० घोड़ेका पदतल, सुम ।
टापड़—पु० परती । वह मैदान जिसमें कुछ फसल न हो ।
टापना—अक्रि० (घोड़ोंका) टाप मारना । कूदना । ताकते रह जाना ।
टापा—पु० झौवा । मैदान । छलाँग, उछाल । टापा देना=छलाँग मारना ( साखी ६५ ) ।
टापू—पु० द्वीप ।
टाबर—पु० बालक ।

टामक—पु० डुग्गी, डिमडिमी 'एक जाम जब निसि रहै सुनि टामकको सद ।' सुजा० १३२
टामन—पु० टोटका, मन्त्रतन्त्र ।
टारना, टालना—सक्रि० अलग करना । दूर करना, सरकाना, हटाना ( उदे० 'टरना' ) । औरका और करना । उल्लंघन करना । स्थगित करना । बिताना ।
टाल—स्त्री० पुआल आदिका ढेर । गंज । राशि । लकड़ीकी दूकान । [ क्रिया, बहाना ।
टालटूल, टालमटाल, टालमटूल—स्त्री० टरकानेकी
टाली—स्त्री० बैल इत्यादिके गलेकी घण्टी । कूदफाँद करनेवाली बछिया या गाय ।
टाहली—पु० टहल करनेवाला, नौकर (कविता० २०८)।
टिकट—पु० डाक महसूल, रेल किराया, इ०की अदायगी सूचित करनेवाला कागजका टुकड़ा ।
टिकटिकी—स्त्री० स्थिर दृष्टि । टिकठी ।
टिकठी—स्त्री० तिपाई । अरथी 'गढ़ सौंपा बादल कहँ गए टिकठि बसि देव ।' प० ३२९ । फाँसीका तख्ता ।
टिकड़ा—पु० गोल मोटी रोटी । चाँदी इ० का गोल चिपटा टुकड़ा ।
टिकना—अक्रि० कुछ दिन चलना या काम देना । ठहरना, विश्राम करना । तलीमें बैठ जाना । [ पकवान ।
टिकरी—स्त्री० टिकिया, मोटी रोटी । एक नमकीन
टिकली—स्त्री०छोटी बिन्दी या सितारा । छोटी टिकिया ।
टिकस—पु० टैक्स, महसूल ।
टिकाऊ—वि० कुछ दिन ठहरनेवाला, चलनेवाला ।
टिकान—स्त्री०टिकनेका स्थान । टिकनेकी क्रिया या भाव ।
टिकाना—सक्रि०ठहराना, रोकना, सहारा देना, सहारे रखना ।
टिकिया—स्त्री० एक पकवान । गोल चिपटा टुकड़ा ।
टिकुरी—स्त्री० तकली । [ बिन्दी ।
टिकुली—स्त्री० तकली । चमकी ।
टिकैत—पु० सरदार । युवराज ।
टिकोरा—पु०आमका नया छोटा फल, अमिया (अँधेर०८)।
टिक्कड़—पु० बाटी, अङ्गाकड़ी ।
टिक्की—स्त्री०बाटी । उँगली इ०से बनाया हुआ रङ्गका बिन्दु [ टिकिया ।
टिघलना—अक्रि० द्रवना, पिघलना ।
टिचन—वि० दुरुस्त, ठीक, उद्यत, तैयार 'टंच' ।
टिट—स्त्री० हठ, टेक 'टिट टारिकै हारि गुपालसों हाय हवाल हमैं कहनोई परयो ।' रत्ना० ३५२

टिटकारना—सक्रि० 'टिक टिक' शब्द करके घोड़े इ०को हाँकना।
टिटिह, टिटिहा—पु० नर टिटिहरी, नर टिट्टिभ।
टिटिहरी, टिट्टिभ—स्त्री० पानीके समीप रहनेवाली एक चिड़िया। कुररी।
टिटिहा रोर—पु०शोर,हल्ला,क्रन्दन।
टिड्डा—पु० एक कीड़ा जिसके पङ्ख होते हैं।
टिड्डी—स्त्री०एक उड़नेवाला कीड़ा जो प्रायः दल बाँधकर चलता है।
टिढ़बिंगा—वि० टेढ़ामेढ़ा।
टिन—पु० एक धातु।
टिपका—पु० बिन्दु।
टिप टिप—स्त्री० बूँद इ० गिरनेका शब्द।
टिपवाना—सक्रि० दबवाना। लिखवाना।
टिपारा—पु०ऊँची दीवारकी टोपी (गीता० २९७,३२२)।
टिपुर—पु० ढोंग। घमण्ड।
टिप्पणी, टिप्पनी—स्त्री० व्याख्या, टीका।
टिप्पन—पु० जन्मपत्री। व्याख्या।
टिमटिमाना—अक्रि० मन्द मन्द प्रकाश देना।
टिमाक—स्त्री० बनाव।
टिरफिस—स्त्री० धृष्टता, विरोध, चीं चपड़।
टिलवा—पु० नाटा या खुशामदी आदमी। बहाना।
टिल्लेनवीसी—स्त्री० निठल्लापन, बेमतलबका काम।
टिहुक—स्त्री० चमक, झमक, चौंकनेका भाव।
टिहुकना—अक्रि०चौंकना। रूठना। पु०रुष्ट हो जानेवाला
टिहुनी—स्त्री० कोहनी। ( रत्नावली ४४ )।
टींड़सी—स्त्री० एक तरकारीवाला फल।
टींड़ी—स्त्री० टिड्डी।
टीक—स्त्री० सिरपर या गलेमें पहननेका एक गहना।
टीकन—पु० थूनी।
टीकना—सक्रि० टीका या चिह्न लगाना।
टीका—पु० मस्तकपरका चन्दन इत्यादिका चिह्न, तिलक। '......सिर केसरिको टीको'—सू० ११०। विवाहके पूर्वकी एक रस्म, तिलक। श्रेष्ठ व्यक्ति, शिरोमणि। कलङ्क, लाञ्छन, चिह्न। भेंट, नजराना 'रघुकुल प्रगटे हैं रघुबीर। देश देश ते टीका आयो रतन कनक मनि हीर।' सूबे० ३४। माथेका एक गहना 'गोरे भाल बिन्दु सेंदुरपर टीका धरेउ जराऊ।' सू० १०३। सूई द्वारा किसी रोगका चेप देहमें प्रविष्ट करानेकी क्रिया, 'छापा'। स्त्री० व्याख्या।
टीकाकार—पु० किसी ग्रन्थकी व्याख्या करनेवाला।
टीन—पु० कलईदार लोहेकी चद्दर।
टीप—स्त्री० टीपने या दबानेकी क्रिया। जन्मपत्री। दस्तावेज, हुंडी।
टीपटाप—स्त्री० सजावट। आडंबर।
टीपना—स्त्री० जन्मपत्री। सक्रि० दबाना, हलका प्रहार करना। लिखना, नोट करना।
टीबा—पु० टीला, ऊँची ज़मीन 'ऊँचे टीबै मछ बसत है, ससा बसै जल माहीं।' कबीर १४७
टीमटाम—स्त्री० तड़क भड़क।
टीला—पु० धुस, पहाड़ी।
टीस—स्त्री० रुक रुक कर होनेवाली पीड़ा, यंत्रणा, हूल।
टीसना—अक्रि० रुक रुक कर पीडा करना।
टुँगना—सक्रि० कुतरना।
टुंच—वि० कमीना।
टुंटा—वि० जिसके हाथ न हों।
टुंड—पु० ठूँठ।
टुंडा—वि० ठूँठा। लूला।
टुइयाँ—स्त्री० एक तरहका छोटा तोता।
टुक—क्रिवि० तनिक, थोड़ा।
टुकड़तोड़—पु० पर-मुखापेक्षी व्यक्ति।
टुकड़ा—पु० टूटा हुआ भाग, खंड हिस्सा।
टुकड़ी०—स्त्री० खंड, दल, गोल।
टुघलाना—सक्रि० किसी चीज़को मुँहमें रखकर चुभलाना।
टुच्चा—वि० कमीना। दुष्ट।
टुटका—पु० टोना टनमन।
टुटनी—स्त्री० झारीकी टोंटी।
टुटपुँजिया—वि० जिसकी पूँजी कम हो।
टुटरूँटूँ—वि० अकेला। अशक्त। स्त्री० पेंडुकीकी बोली
टुड़ी—स्त्री० ढोंढ़ी, तुंदी, नाभि।
टुनगी—स्त्री० फुनगी।
टुनहाया—वि० जादू करनेवाला।
टुनिहाई—स्त्री० टोना करनेवाली,डायन उदे०'अदोखिल,
टुर्रा—पु० दाना, कण, टुकड़ा।
टूँगना—सक्रि० कुतरना।
टूँड—पु० जौ या गेहूँके दानेके ऊपरका नुकीला हिस्सा। मच्छड़ इ० की सूँड़।

टूँड़ी—स्त्री० जौ या गेहूँके दानेके ऊपरका नुकीला हिस्सा, नोक। टोंड़ी।

टूक—पु० टुकड़ा, खंड 'कुँवर हाथको खम्भ तव काटि कियो दो टूक।' सबल सिंह, राम० ६६)

टुकुर-टुकुर देखना—सक्रि० निराशाकी अवस्थामें किसीका मुखापेक्षी होकर उसकी ओर देखना, हत प्रभ होकर देखना।

टूट—वि० टूटा हुआ, खण्डित, 'टूट चाप नहिं जुरहिं रिसाने।' रामा० १५०। स्त्री० त्रुटि, चूक। 'टूट सँवारहु मेरवहु सजा।' प० १०

टूटना—अक्रि० भग्न होना, खंडित होना, प्रवाह रुक जाना, जारी न रहना। अनायास प्राप्त होना। झपटना। कम होना, टोटा होना, खूँटना (साखी २२)

टूठना—अक्रि० प्रसन्न होना। सन्तुष्ट होना।

टूस—पु० एक कपड़ा ( पूर्ण २१५ )।

टेंगना—स्त्री० एक तरहकी मछली, 'टेंगरा' मछली।

टेंगर, टेंगरा—स्त्री० एक तरहकी मछली।

टेंट—स्त्री० करील। कपासकी ढोंढ। धोतीकी मुर्री।

टेंटर—पु० आँखके कोनेका उभड़ा हुआ मांस, ढेंढर।

टेंटिहा—वि० बात बातमें झगड़नेवाला। [वाला।

टेंटी—स्त्री० करीलका फल, करील। पु० हुज्जत करने

टेंटें—स्त्री० व्यर्थकी बक बक। तोतेकी बोली।

टेउकी—स्त्री० लुढ़कनेसे रोकनेके लिए लगायी गयी वस्तु

टेक—स्त्री० टिकनेकी वस्तु, सहारा, आश्रय ( उदे० 'करीस' ), 'मोको और ठौर न, सुटेक एक तेरिये।' विन० ४२४, 'भइ बिनु टेक करै को ठाढ़ी।' प० १७५। हठ, दृढ़ संकल्प। आदत, टेव। सहारा देनेवाली वस्तु, थाम, थूनी। ऊँचा टीला। गीताका प्रथम पद।

टेकड़ी—स्त्री० पहाड़ी, टीला।

टेकन—पु०, टेकनी स्त्री० गिरने या लुढ़कनेवाली वस्तुको रोकनेके लिए लगायी जानेवाली वस्तु।

टेकना—सक्रि० सहारा लेना, सहारेके लिए हाथ या अन्य कोई वस्तु थाँमना 'वाम कर जु टेक्यो व्रजराज।' सूर १०४, ( उदे० 'पनार )। 'सुफल लागि पग टेकेउँ तोरा।' प० ९४। जिद करना, दृढ़ सकल्प करना। सहना 'टेकु पियास, बाँधु मन धीती।' प० १६६

टेकरा—पु०, टेकरी—स्त्री० टीला।

टेकला—स्त्री० धुन, रटना।

टेकान—स्त्री० बोझ टिकानेकी ऊँची जगह, छत ३० को सहारा देनेके लिए लगायी गयी लकड़ी, चाँड।

टेकाना—सक्रि० दीवार इ० के सहारे खड़ा करना [या थमाना।

टेकी—वि० हठी।

टेकुआ—पु० तकुआ, तकला।

टेकुरी—स्त्री० चमारोंका सूआ, सूत कातनेकी तकली।

टेड़ही—स्त्री० टेढ़ी छड़ी।

टेढ़—वि० वक्र, कुटिल, कठिन। स्त्री० टेढ़ापन, ऐंठ।

टेढ़ा—टेढ़ामेढ़ा वि० वक्र, कुटिल, असाधु, जटिल।

टेढ़े—क्रिवि० वक्र गतिसे। [अभद्र, उद्धत।

टेना—सक्रि० धार तेज करनेके लिए पत्थर आदिपर घिसना ( रामा० २०९ )।

टेम—स्त्री० चिरागकी लौ।

टेर—स्त्री० बुलानेकी आवाज़, पुकार। तान।

टेरना—सक्रि० उच्च स्वरसे पुकारना, बुलाना ( रामा० ५६७, उदे० 'गुआरि' )। ऊँची आवाज़से गाना 'नचत रचत रुचिर एक, याचक गुणगण अनेक, चारण मागध अगाध, बिरद बंदि टेरे।' के० १९८

टेरी—स्त्री० टहनी, शाखा।

टेव—स्त्री० आदत, स्वभाव ( विन० ४५५ ), 'कोऊ करौ कितेकहू तजौं न टेव गोपाल।' रस० २३

टेवा—पु० जन्मपत्री। लग्नपत्रिका। [क्ष २१२]।

टेवैया—पु० टेनेवाला, धार तेज़ करनेवाला ( कविता०

टेसुआ, टेसू—पु० पलाशका पेड़ या फूल। बालकोंका एक खेल ( भ्र० १०५ )।

टोंचना—सक्रि० गड़ाना, गोदना। पु० ताना, उपालंभ।

टोंट—स्त्री० चोंच।

टोंटा— ० पानी गिरानेकी नली, घोड़िया।

टोंटी—स्त्री० पानी गिरानेकी नली, लम्बा मुँह।

टोइयाँ स्त्री० तोती, सुग्गी।

टोकना—सक्रि० बीचमें बोल उठना, कुछ कहकर कार्यमें बाधा डालना। पु० झौवा, टोकरा।

टोकनी—स्त्री० देगची। छोटा टोकरा, डलिया।

टोकरा—पु० बड़ी खँचिया, झौवा।

टोकरी—स्त्री० खँचिया।

टोटक, टोटका—पु० मंत्रतंत्र, टोनाटनमन 'स्वारथके साथिन तज्यो, तिजराको सो टोटक औचट उलटि न हेरो।' विन० ६१५

टोटकेहाई—स्त्री० टोना करनेवाली।
टोटा—पु० कारतूस। हानि, क्षति। बाँस इ० का टुकड़ा।
टोनहा, टोनहाया—वि० टोना करनेवाला। [ कमी।
टोनहाई—स्त्री० जादूगरनी। जंत्र मंत्र करनेवाली।
टोना—पु० मंत्रतंत्र, टोटका, जादू ( उदे० 'अजोरना', सूदे० १५७ )। एक शिकारी पत्ती। सक्रि० देखो 'टटोहना।'
टोप—पु० बड़ी टोपी, सिरपर पहननेकी लोहेकी टोपी।
टोपा—पु० बड़ी टोपी। शिरस्त्राण 'सजे सनाहा पहुँची टोपा। प० २५२
टोपी—स्त्री० सिरपर धारण करनेका एक पहनावा, शिरश्छद। टोपी जैसी अन्य वस्तु।
टोभ—पु० टाँका।
टोर—स्त्री० कटारी।
टोरना—सक्रि० तोड़ना, भग्न करना। नेत्र टोरना= आँख हटाना, नज़र छिपाना।
टोल—स्त्री० मण्डली ( उदे० 'अदोखिल' ), समूह, 'कुंचित केस सुगंध सुवसु मनु उड़ि आये मधुपनके टोल।' सू० ११९। पाठशाला। टुकड़ा, रोड़ा
टोला—पु० मुहल्ला। पुरा। [ ( निबंध १८४ )।
टोली—स्त्री० मुहल्ला। मण्डली, झुण्ड। सिल।
टोह—स्त्री० पता, खोज।
टोहना—सक्रि० तलाश करना, खोजना 'आयो कहूँ अबहौं कहि को हौं। ज्यों अपनो पद पाऊँ सो टोहौं।' के० ८५। टटोलना, छूकर मालूम करना।
टोहाटाई—स्त्री० खोज, छानबीन, जाँच पड़ताल।
टोही—वि० खोज करनेवाला।

---

# ठ

ठंठ—वि० ठूँठा, स्थाणु।
ठंठनाना—सक्रि० किसी धातु खंड इत्यादिको बजाकर शब्द उत्पन्न करना। अक्रि० 'ठनठन' बजना।
ठंठार—वि० रिक्त, शून्य, छूँछा ( प० १५६ )।
ठंठी—वि० स्त्री० ठाँठ। बच्चा और दूध न देनेवाली ( गाय या भैंस )।
ठंड, ठंडक, ठंढ, ठंढक—स्त्री० सरदी, जाड़ा।
ठंडा,—ढा—वि० शीतल। शान्त, शिथिल, बुझा हुआ, तृप्त।
ठंडाई, ठंढई—स्त्री० देखो 'स्ढाई।' [ या पेय-विशेष।
ठंढाई—स्त्री० ठंढक लानेके लिए तैयार किया गया मसाला
ठक—स्त्री० हठ, जिद 'छाँड़ि सबै झक तोहि लगी बक आठहुँ याम यही ठक ठानी।' सुदामा०। ठोंकनेका शब्द। वि० भौचक्का, स्तब्ध।
ठकठक—स्त्री० 'ठकठक' शब्द, झंझट, बखेड़ा 'उठि ठकठक एती कहा पावसके अभिसार।' बि० २९१
ठकठकाना—सक्रि० खटखटाना। किसी चीज़के आघातसे शब्द उत्पन्न करना। [ करनेवाला।
ठकठकिया—वि० बकवादी, झंझट पैदा करनेवाला, हुज्जत
ठकठौआ—पु० करताल नामक बाजा। करताल बजाकर
ठकुरई—देखो 'ठकुराई'। [ भिक्षा माँगनेवाला।
ठकुरसुहाती—स्त्री० स्वामीको प्रसन्न करनेवाली बात, मुँहदेखी बात 'कहहि सचिव सब ठकुरसुहाती।' रामा० ४५३
ठकुराइत—स्त्री० प्रभुत्व, आधिपत्य 'नृप रावणकी भगिनी गनि मोकहँ। जिहिकी ठकुराइत तीनहु लोकहँ।' राम० २५६। ठाकुरके अधीन प्रदेश।
ठकुराइन—स्त्री० मालकिन। ठाकुरकी स्त्री। नाइन।
ठकुराई—स्त्री० ठाकुरका अधिकार, प्रभुत्व, बड़प्पन। महत्ता, अधीन प्रदेश, राज्य।
ठकुरानी—स्त्री० ठाकुरकी स्त्री, क्षत्राणी, स्वामिनी।
ठकुराय—पु० क्षत्रियोंका एक भेद।
ठकुरायत—स्त्री० देखो 'ठकुराइत।'
ठकोरी—स्त्री० सहारा लेनेकी लकड़ी, 'जोगिनी।'
ठक्कुर—पु० ठाकुर।
ठग—पु० धोखा देकर लूटनेवाला। छलिया।
ठगई—स्त्री० ठगी, धोखेबाजी, छल।
ठगना—सक्रि० धोखा देकर लूटना। धोखा देना, भुलावेमें डालना ( उदे० 'चिरमि'। अक्रि० ठगा जाना। धोखा खाना। चकित होना, दंग होना। ठगासा= धोखा खाया हुआ, चकित।

ठगनी—स्त्री० देखो 'ठगिनी ।'

ठगपना—पु० ठगई, ठगनेकी क्रिया ।

ठगमूरी—स्त्री० वह जड़ी जिसे खिलाकर ठग राहगीरोंको वेसुध करते थे (सुन्द० ५४)। ठगमूरी खाना = सुध बुध न रहना 'वूझति सखी सुनति नहिं नेकहु तुही किधौं ठगमूरी खाई ।' सू०

ठगमोदक, ठगलाडू—पु० ठगोंका लड्डू (प० २१८)। ठगमोदक या ठगलाडू खाना = मतवाला होना, वेहोश होना ।

ठगवाइ—पु० ठग 'लगैं चोर ठगवाइ, पेट चलै पानी लगें। कीजे कबहुँ न जाइ, पूरबके परदेसको ।' गोपालचन्द

ठगहाई, ठगाई, ठगाही—स्त्री० ठगपना ।

ठगाठगी—स्त्री० धोखेवाज़ी ।

ठगाना—अक्रि० ठगा जाना, छला जाना ।

ठगिन, ठगिनी—स्त्री० ठगनेवाली या धोखा देनेवाली स्त्री 'भ्रमो न ठगिनी मारिहै तुमै ठगोरी डारि ।' दीन० [ २४३

ठगिया—पु० धूर्त्त मनुष्य, ठग ।

ठगी—स्त्री० धोखेवाज़ी, ठगनेका काम ।

ठगोरी—स्त्री० धोखेमें डालनेवाली या मोहित करनेवाली शक्ति । मोहिनी, जादू । 'सुधि बुधि सब मुरली हरी प्रेम-ठगोरी लाय ।' प्रागनि कवि, ( सूबे० ११०, ७५, उदे० 'चीत' ) ।

ठट—पु० पक्ति, झुण्ड, भीड़, ठाट, रचना ।

ठटकीला—वि० भड़कीला, शानदार ।

ठटना—सक्रि० भड़कीला वनाना, सजाना, तैयार करना, 'राज करत विन काज ही, ठटहिं जे कूर कुठाट ।' दोहा० ३९ । स्थिर करना, ठहराना । छेड़ना । अक्रि० सजना, तैयार होना । ठहरना, खड़ा रहना ।

ठटनि—स्त्री० सजावट, बनाव, ठाट ।

ठटरी—स्त्री० शरीरका ढाँचा, अरथी ।

ठट—पु० ठाट, सजावट, रचना ।

ठट्ट—पु० देखो 'ठट' । 'कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा । मर्दन भालु कपिनके ठट्टा ।' रामा० ४९७

ठट्टी—स्त्री० ( हड्डीका ) ढाँचा, ठठरी 'रक्त मांस जरि जाय रहै पाँजरकी ठट्टी ।' गिरधर

ठट्ठई—स्त्री० देखो 'ठठई' ।

ठट्ठा—पु० दिल्लगी ।

ठठ—पु० भीड़, शक्ति, पक्ति ।

ठठई—स्त्री० ठट्ठा, हँसी ।

ठठकना—अक्रि० ठिठकना, सहसा रुक जाना या ठहर जाना । क्रियाशून्य हो जाना 'छिनुक चलत ठठकत छिनकु भुज पीतमगल डारि ।' वि० १६८

ठठरी—स्त्री० देखो 'ठटरी' ।

ठठाना—सक्रि० ज़ोरसे पीटना, ठोंकना । अक्रि० ज़ोरसे हँसना, खिलखिलाना ( उदे० 'गाल ) ।

ठठेरा—पु० कसेरा, पीतल इ० के बरतन बनानेवाला

ठठेरी—स्त्री० धातुपात्र बनानेका काम ।

ठठोल—पु० दिल्लगी । दिल्लगी करनेवाला ।

ठठोली—स्त्री० हँसी, मज़ाक ।

ठड़ा, ठढ़ा—वि० ठाढ़ो, खड़ा ।

ठड्डा—पु० रीढ़ ।

ठढ़िया—स्त्री० ऊँचा ऊखल ।

ठन—स्त्री० किसी धातुपर चोट पड़नेकी आवाज़ ।

ठनक—स्त्री० मृदंग इत्यादिकी आवाज़ । चसक, ठहर ठहर कर उठनेवाला दर्द । [※ इ० का बजना ।

ठनकना—अक्रि० ठहर ठहर कर पीड़ा होना । तबला,※

ठनका—पु० चोट पड़नेकी सी तकलीफ । देखो 'ठन'। वादल 'ठनका ठनकै' ग्राम० ४९८

ठनकाना—सक्रि० तबला इ० बजाना ।

ठनगन—पु० नेगके लिए अड़नेका काम, हठ, जि 'प्रीतमके अपराधसों ठानै ठनगन नारि ।' गुलाब३७।

ठनठन गोपाल—पु० वह जिसके पास कुछ न हो 'दरिद्रनारायण' । निःसार वस्तु ।

ठनठनाना—सक्रि० देखो 'ठठनाना' ।

ठनना—अक्रि० दृढ़ताके साथ आरंभ होना, छिड़ना ठहरना, प्रयुक्त होना, लगना । स्थिर होना, प होना ( उदे० 'कलकानि' ) । तैयार होना ।

ठनाका—पु० 'ठनठन' आवाज़ ।

ठनाठन—क्रिवि० 'ठनठन' आवाज़के साथ ।

ठपका—पु० लपका, हाथकी ठोकर, आघात, ( उदे ['टपका

ठप्पा—पु० सांचा, छापा ।

ठमक—स्त्री० लचक, चलते समय रुकनेकी क्रिया ।

ठमकना—सक्रि० सहसा ठहर जाना, ठिठकना । एक के साथ चलना 'चंदेलिनि ठमकहि पगु धाता ।' प० ८७

टमकाना—सक्रि० बजाना 'कहा भयौ बिछुवा ठमकायै।' कबीर १३२। ठहराना।

ठयना, ठवना—सक्रि० ठानना, दृढ़तापूर्वक आरम्भ करना। मनमें निश्चित करना, ठान रखना, 'एहि विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ।' रामा० ७७, (विन० ३३९)। कर चुकना, तैयार करना, बनाना 'तब रघुनाथ बाण कै हयो। निज निरवाण पंथ को ठयो।' रामा० २३८, 'सोरह जोजन मुख तेहि ठयऊ।' रामा० ४१५। स्थापित करना, प्रयुक्त करना, लगाना। अक्रि० ठनना, मनमें जम जाना, निश्चित होना 'ठानी हुती और कछु मनमें औरै आनि ठई।' सू० १७। स्थापित होना, जमना। प्रयुक्त होना। [जाना (रत्ना० ४९४)।

ठरना—अक्रि० ठिठुरना। तेज़ जाड़ा पड़ना। स्तब्ध हो

ठर्रा—पु० एक तरहकी रद्दी शराब। मोटा सूत।

ठलाना—सक्रि० गिराना, निकलवाना (अष्ट ३३)।

ठवनि—स्त्री० खड़े होने या बैठनेका ढंग, अंग सञ्चालन-विधि, स्थिति, मुद्रा 'सिंह ठवनि इन उत चितव धीर वीर बलपुञ्ज।' रामा० ४५८

ठस—वि० कड़ा, ठोस। आलसी, कंजूस। हठी, स्थिर।

ठसक—स्त्री० गर्वयुक्त आचरण, घमण्ड, ऐंठ, शान 'छिनहिं बादसा बंसकी ठसक छाँड़ि रसखान।' ॐ

ठसकदार—वि० अभिमानी, शानवाला। [ॐ रसखानि

ठसका—पु०, ठसकी—स्त्री सूखी खाँसी। मिर्चे इ० की गंधसे उठी खाँसी, फंदा, ठोकर।

ठसाठस—क्रिवि० कसकर (कसा हुआ), खचाखच।

ठस्सा—पु० ठसक, शान, गर्व।

ठहना—अक्रि० घण्टे इत्यादिका बजना, हिनहिनाना, सोच समझकर करना, सँवारना या बनाना।

ठहर—पु० स्थान 'तौ हौं बार बार प्रभुहिं पुकारि कै खिजावतो न जो पै मोको होतो कहूँ ठाकुर ठहर।' विन० ५६८। छिपी हुई जगह, चौका।

ठहरना—अक्रि० थमना, रुकना, स्थित रहना, क़ायम रहना, बना रहना, टिकना, स्थिर भावसे रहना, प्रतीक्षा करना। स्थिर होना, पक्का होना।

ठहराउ, ठहराव—पु० स्थिरता, निश्चय, निर्णय, ठहरौनी।

ठहराऊ—वि० ठहरनेवाला, सुदृढ़, टिकाऊ।

ठहराना—सक्रि० रोकना, स्थिर करना। अक्रि० ठहराना (उदे० 'उजारा')।

ठहरौनी—स्त्री० दहेज इ० लेने देनेकी प्रतिज्ञा।

ठहाका—पु० जोरकी हँसीका शब्द।

ठहियाँ—स्त्री० स्थान, जगह।

ठाँ, ठाँई—स्त्री० जगह (उदे० 'उजारी')। प्रति, तईं। पास, निकट।

ठाँउँ—पु० ठौर, जगह, रहनेका स्थान। मौका, अवसर (दे० 'ठाँव')। पास 'चार मीत जो मुहमद ठाँऊँ।' प० ५ [ †नीरस।

ठाँठ—वि० दूध न देनेवाली (गाय इ०)। सूखा हुआ†,

ठाँठर—पु० ठठरी 'ठाँठर टूट, फूट सिर तासू।' प० ३२३

ठाँयँ—पु० स्थान। पास। [ रही।' प० ९१

ठाँव—पु० देखो 'ठाँउँ'। मौका 'इहै ठाँव हौं बारति

ठाँसना—सक्रि० कसकर भरना या ठूँसना।

ठाँहीं—स्त्री० देखो 'ठाँई'।

ठाउँ—पु० देखो 'ठाँउँ' 'जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहिं देखावहुँ ठाँउँ।' रामा० २६०

ठाकुर—पु० देव, ईश्वर, स्वामी (उदे० 'चेरा')। पूज्य व्यक्ति, अधिपति, नायक (उदे० 'ठहर')। क्षत्रिय

ठाकुरद्वारा—पु० ठाकुरजीका मन्दिर। [ जाति।

ठाकुरबाड़ी—स्त्री० मन्दिर।

ठाकुरी—स्त्री० ठकुराई, शासन।

ठाट—पु० ढाँचा, रचना, सजावट, श्रृंगार (उदे० 'मिहरी'), धूमधाम, शान। उपाय, युक्ति। तैयारी, प्रबन्ध 'ठाटहु सकल मरइके ठाटा।' रामा० २८९, 'करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू।' रामा० २६२। झुण्ड, समूह 'जेहि बाट गमनत राजसुत तहँ तहँ लगत जन ठाट हैं।' रघु० ९१ 'ऐसी गति संसारकी ज्यों गाडर की ठाट।' साखी ९०। अधिकता।

ठाटना—सक्रि० बनाना, ठानना, करना, आयोजन करना (उदे० 'ठाट', 'कुठाट')। सजाना, सँवारना।

ठाटबाट—पु० तड़क भड़क, सजावट।

ठाटर—पु० ठाँठर, बाँसकी फट्टियोंका ढाँचा, ठाट।

ठाटी—स्त्री० समूह, झुण्ड। [ ठटरी। सजावट।

ठाढ़, ठाढ़ा—वि० खड़ा 'रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही।' रामा० ३८०, (उदे० 'करार'), 'गाढ़े ठाढ़े कुचनु ठिलिको पिय हिय ठहराय।' वि० १९१। साबित, समूचा। प्रकट, उत्पन्न। सुदृढ़, सबल। ठाढ़ा देना = ठहराना, टिकाना।

टाढ़ेश्वरी—पु० रात दिन खड़े रहनेवाले साधु।

टाद्र—पु० झगड़ा 'देव आपनो नहीं सँभारत करत इन्द्रसों टादर।' सूबे० १२२

टान—स्त्री० कामका शुरू किया जाना, आयोजन, दृढ़ संकल्प। आरब्ध कार्य।

टानना—सक्रि० दृढ़तापूर्वक आरम्भ करना, छेड़ना 'ठानी कथा प्रबोध बोलि सब गुरु समेत्यो।' भ० ८। दृढ़ संकल्प करना, निश्चित करना।

टाना—सक्रि० ठानना, छोड़ना, पक्का निश्चय करना, स्थापित करना, सत्यकर दिखलाना, धरना 'साँचो एक नाम हरि लीन्हें सब दुःख हरि, और नाम परिहरि नरहरि ठायो हो।' राम० ३६६।

टाम—पु० देखो 'ठाँउँ' मुद्रा ठवनि।

ठायँ—पु० देखो 'ठाँउँ'।

टार—पु० पाला, कठिन ठण्ढ। [छवैठा हुआ।

ठाला—पु० द्रव्याभाव, वेकारी। वैठाठाला=वेकारछ

ठाली—वि०निठल्ला, वेकार 'जामहिं कर्म विकर्म किये सब है यह देह परी अब ठाली।' सुन्द० ३३। स्त्री० धीरज, सान्त्वना, 'कहा कहीं आली खाली देत सब ठाली हाय, मेरे वनमालीको न कालीते छुड़ावहीं।' [रसखानि

टावँ—पु० देखो 'ठाँउँ'।

टाह—स्त्री० मन्दगतिमें गाना या वजाना।

टाहर, टाहरु—पु० जगह, ठहरनेका स्थान। ठिकाना 'अगम पथको पग धरैं डिगैं तो ठाहर नाहिं।' साखी २४, 'जीभ नाहिं पै सब किछु बोला। तन नाहीं, सब ठाहर डोला।' प० ४, ( उदे० 'ठाट', रामा० २११ )

ठिंगना, ठिंगुना, ठिगना—वि० नाटा, कम ऊँचा।

ठिकठैन—पु० ठीकठाक, व्यवस्था, आज कछू औरे भये ठये नये ठिकठैन।' बि० २१५

ठिकना—अक्रि० देखो 'ठठकना,।

ठिकाना—पु० जगह, रहने या ठहरनेकी जगह, अवलम्ब। नियत या उपयुक्त स्थान। निश्चित अस्तित्व, भरोसा।

ठिठकना—अक्रि० देखो ठठकना'। [हद, प्रबन्ध।

ठिठरना, ठिठुरना—अक्रि०अधिक ठण्डसे सिकुड़ जाना।

ठिठोली—स्त्री० ठठोली।

ठिनकना, ठुनकना—अक्रि०बच्चोंका झूटमूठका रोना।

ठिर—स्त्री० कड़ाकेका जाड़ा, पाला।

ठिरना—अक्रि० अधिक जाड़ा पड़ना। जाड़ेसे ठिठुरना।

ठिलना—अक्रि० ठेला जाना ( उदे० 'ठाद' ), बलपूर्वक बढ़ाया जाना। आगे धँसना। जमना।

ठिलाठिल—क्रिवि० एकपर एक गिरते हुए, कसमसी।

ठिलिया, ठिली—स्त्री०मिट्टीका छोटा घड़ा। [के साथ।

ठिलुआ—वि० बेकार, निठल्ला।

ठिहारी—स्त्री० निश्चय, समझौता, ठहराव।

ठीक—वि० दुरुस्त, यथार्थ, प्रामाणिक, शुद्ध, सीधा, निश्चित। पु० पक्की बात, निश्चय, तयारी, निश्चित

ठीकठाक—पु० निश्चय, प्रबन्ध, आयोजन। [प्रबन्ध।

ठीकड़ा,-रा—पु०मिट्टीके बरतन या खपरेका टुकड़ा।

ठीकरी—स्त्री० निकम्मी चीज़। देखो 'ठीकरा'।

ठीका—पु० निश्चित समयमें कोई काम करानेका भार। कर इत्यादि वसूल करनेका जिम्मा।

ठीकादार—देखो 'ठेकेदार'।

ठीकुरी—स्त्री० पत्थर, परदा 'निज आँखिन पै धरैं ठीकुरी कितने और रहौगे।' सत्यना०

ठीलना—सक्रि० ठेलना, जबरन् भेजना 'आज्ञा भंग होय क्यों मोपै गयउ तुम्हारे ठीले।' सूबे० ४१०

ठीवन—पु० थूक, कफ।

ठीह—स्त्री० हिनहिनानेकी आवाज़।

ठीहा—पु० गद्दी। लकड़ीका कुन्दा जिसपर कोई चीज रखकर बढ़ई आदि पीटते या गढ़ते हैं।

ठुंठ—पु० शाखारहित या सूखा वृक्ष। कटा हुआ हाथ।

ठुंढ—देखो 'ठूंठ'।

ठुकना—अक्रि० पीटा जाना, ठोका जाना, हानि होना।

ठुकराना—सक्रि० ठोकर मारना, तिरस्कार करना।

ठुकवाना—सक्रि० पिटवाना, मार खिलाना, हानि [कराना।

ठुड्डी—स्त्री० चिबुक।

ठुमक—वि० ठिठक भरी हुई ( चाल )।

ठुमक ठुमक—क्रिवि० फुदकते हुए ( चलना )।

ठुमकना—अक्रि० फुदकते हुए चलना।

ठुमका—वि० नाटा छोटे कदका।

ठुमकारना—सक्रि० डोरेको अँगुलीसे झटका देना।

ठुमकी—स्त्री० थपकी, अँगुलीका झटका। ठिठक।

ठुमरी—स्त्री० एक तरहका गाना।

ठुरियाना—अक्रि० जाड़ेके मारे ठिठुर जाना।

ठुर्री—स्त्री० भुना हुआ दाना जिसका लावा न फूटा हो।

ठुसना—अक्रि० जबरन या कठिनाईसे जाना। ठेल कर भरा जाना।
ठूँग—स्त्री० चोंच, चंचुप्रहार।
ठूँठ—पु० पेड़की लकड़ी जिसके डाल पात कट गये हों।
ठूँठा, ठूठा—वि० जिसका हाथ कट गया हो। शाखा पत्र-हीन। निर्बल, अशक्त 'ठिटके दिखात ठूँठे ठाकुर हैं ठौर ठौर।' कलस १३
ठूँठी—स्त्री० अरहर इ० की खूँटी।
ठूँसना, ठूसना—सक्रि० जबरन् भरना, कसकर भरना।
ठूँसा—पु० अँगूठा। अँगूठेका आघात, मुक्का।
ठेंगना—देखो 'ठिंगना'।
ठेंगा—पु० अँगूठा। लट्ठ, डण्डा।
ठेंगुर—पु० पशुके गलेमें बाँधी गयी लकड़ी।
ठेंघा—पु० थूनी।
ठेंठा-पु०,ठेंठी—स्त्री० कानमें जमा हुआ मैल। वह रुई या अन्य वस्तु जिससे कानका छेद बंद किया जाय।
ठेंपी—स्त्री० छेदका ढक्कन, काग, डाट।
ठेक—स्त्री० सहारा, टेक पेंदा।
ठेकना—सक्रि० आश्रय लेना, टेकना। ठहरना।
ठेका—पु० निश्चित शर्तोंपर किसी कामको पूरा करनेका ठहराव। अड्डा। टेक। ठोक।
ठेकाई—स्त्री० कपड़ेपर किनारेकी छपाई।
ठेकाना—पु० स्थान, निवास-स्थान 'तुलसिदास सीतल नित यह बल, बड़े ठेकाना ठौरको हौं।' बिन० ५२५
ठेकेदार—पु० ठेकेपर लेनेवाला।
ठेगना—सक्रि० देखो 'ठेकना'। मना करना, रोकना।
ठेगनी, ठेघनी—स्त्री० टेकनी, सहारा। टेकनेकी लकड़ी।
ठेघना—अक्रि० ठहरना, रुकना 'गगन साम भा धुआँ जो ठेघा।' प० २५१। सक्रि० ठहराना, रोकना 'औ तिन गगन पीठि ठेघा।' प० १६
ठेघा—पु० टेक, सहारेकी लकड़ी।
ठेट—पु० निपट, शुद्ध, निर्लिप्त। ठेठसे = बिल्कुल आरम्भसे।
ठेपी—स्त्री० देखो 'ठेंपी'।
ठेलना—सक्रि० धक्का देकर आगे बढ़ाना, उकसाना, प्रवृत्त करना 'जो जनतौं न हितू हरिसे तो मैं काहेको द्वारका ठेल पठौती।' सुदामा० ( कक्षौ० १९४ )
ठेला—पु० ठेलकर चलायी जानेवाली गाड़ी ( या नाव ), 'सग्गड़'। धक्का। घनी भीड़।
ठेलाठेल—स्त्री० घनी भीड़, धक्कम धक्का।
ठेस—स्त्री० ठोकर, चोट।
ठेहरी—स्त्री० किवाड़की चूलके नीचेकी लकड़ी।
ठैन—स्त्री० ठाँव, स्थान।
ठैयाँ—स्त्री० स्थान 'आयो हुतो नियरे रसखानि कहा कहूँ तू न गई वह ठयाँ।' रसखानि।
ठैल—स्त्री० दबाव, चोट ( उदे० 'उसलना' )।
ठोंकना, ठोकना—सक्रि०पीटना, प्रहार करना, धँसाना, थपथपाना। ठोकना बजाना = जाँचना, परखना 'नन्द ब्रज लीजे ठोकि बजाय।' सूबे ३११
ठोकर—स्त्री० चोट, पादप्रहार, धक्का, रास्तेका उभरा हुआ पत्थर।
ठोट—वि० मूर्ख, तत्वहीन।
ठोठरा—वि० पोपला, खाली।
ठोड़ी, ठोढ़ी—स्त्री० चिबुक, ठुड्डी।
ठोर—पु० एक पकवान। चोंच 'तेइ ओहि मच्छ ठोर भरि लेहीं।' प० ६७
ठोली—स्त्री०ठठोली (साखी ६६)।
ठोस—वि० खोखला या पोला नहीं, दृढ़, ठस ( विन० ३८१)। पु० ईर्ष्या, डाह।
ठोसा—पु० ठेंगा, अँगूठा।
ठोहना—सक्रि० खोजना।
ठौनि—स्त्री० देखो 'ठवनि'।
ठौर—पु० स्थान, ठिकाना। घात, मौका।—न आना= पास न आना।

# ड

डंक—पु०बिच्छू इत्यादिका ज़हरीला काँटा। डंका 'बोलन लगे नकीब डंक अब तो तिहुँ बाजे।' दीन० २३६
डंकना—अक्रि० गरजना।
डंका—पु० युद्धके समयका एक बाजा।
डंकिनी—स्त्री० चुड़ैल। एक पिशाची।
डंगर—पु० चौपाया।
डंगरा—पु० 'खरबूजा' नामक फल।
डँगरी—स्त्री० डायन,चुड़ैल,। लम्बी ककड़ी।
डँगवारा—पु० किसानोंकी बैल इ० के द्वारा पारस्परिक सहायता।

डँटैया—पु० डाँटनेवाला, घुड़कनेवाला।
डंटल—पु० पौधेका धड़।
डंड—पु० डण्डा। दण्ड, हानि। वड़ी (प० ७७)। एक कसरत। स्त्री० चुगली (बुन्देल०)।
डंडक—पु० देखो 'दण्डक'।
डंडपेल—पु० खूब कसरत करनेवाला।
डंडवत्—पु० दण्डवत्, साष्टाङ्ग प्रणाम।
डँड़वारा—पु०, डँड़वारी—स्त्री० चहारदीवारी।
डंडवी—पु० दण्ड देनेवाला, कर देनेवाला।
डंडा—पु० छोटी लाठी, सोंटा।
डंडाकरन—पु० दण्डकारण्य।
डंडा डोली—स्त्री० लड़कोंका एक खेल।
डंडाल—पु० नगाड़ा।
डँडिया—स्त्री० पालकी, डोली (ग्राम० ९५)।
डँड़िया—स्त्री० लम्बी रेखाओंवाली साड़ी। पु० कर लेनेवाला।
डँड़ियाना—सक्रि० दो कपड़ोंको लम्बाईकी ओरसे जोड़ना। [ वि० चुगली खानेवाला।
डंडी—स्त्री० डाँड़ी। पतली लकड़ी। मुठिया। नाल।
डँड़ीच, डँडीर—स्त्री० सीधी लकीर। [ खोजना
डँडोरना—सक्रि० हिलोर कर या उलट पलट कर
डंडौत—पु० दण्डवत्।
डंबर—पु० विस्तार, चँदोवा (दास १३२ १७९), आडम्बर। अंबर—सूर्यास्तके समयकी लाली।
डँवरुआ—पु० एक तरहका वातरोग, गठिया 'अहंकार अति दुखद डँवरुआ। रामा० ६११
डँवाडोल—वि० घबड़ाया हुआ, चन्चल।
डंस—पु० एक तरहका बड़ा मच्छर।
डँसना—सक्रि० देखो 'डंसना'।
डक—पु० एक तरहका कपड़ा। खेलनेका थान, थक्का 'डक कुढगति सी छ्वै चली टुकचित चली निहारि।' वि० ६० (बंग)
डकरना—अक्रि० डकार लेना, खाकर तृप्त होना 'गाढ़ि कै सुखदा आद कीन्हो यादशाह वातें डकरी चमुंडा गोलकुण्डाकी लड़ाईमें।' कालिदास त्रिवेदी
डकार—स्त्री० आवाज़के साथ मुखसे निकली वायु।
डकारना—अक्रि० डकार लेना। किसीका माल पचा जाना।
डकैत—पु० डाकू, लुटेरा। [ जाना।
डकैती—स्त्री० लूट।
डकौत—पु० एक जाति जो हस्तरेखा इ० देखनेका काम करती है। [ अन्तर, पैंड।
डग—पु० कदम, फाल। चलनेमें दोनों पाँवोंके बीचका
डगडगाना, डगडोलना—अक्रि० डगमगाना, काँपना।
डगडौर—वि० चञ्चल, डाँवाडोल (सू० १३१)।
डगना—अक्रि० हिलना, स्थानसे हटना, भूल करना। 'चलत कटकु दिगसिन्धुर डगहीं। छुभित पयोधि कुधर डगमगहीं।' रामा० ४९७
डगमग—क्रिवि० थरथराहट के साथ।
डगमगना, डगमगाना—अक्रि० इधर उधर हिलना, काँपना, विचलित होना (उदे० 'डगना')।
डगर—स्त्री० रास्ता, मार्ग 'जित तित ह्वै मग रोकत टोकत डगर तजति पग गड़त काँकरी।' सू० मदन०।
डगरना—अक्रि० चलना, धीरे धीरे चलना।
डगरा—पु० डगर, रास्ता।
डगरिया, डगरी—स्त्री० डगर, मार्ग (सूबे० १११, १४५)
डगा—पु० चोब, डागा, डुग्गी बजानेकी लकड़ी 'कहु कहि चला तबल देइ डगा।' प० १०
डगाना—सक्रि० हिलाना, खसकाना।
डटना—अक्रि० अड़ना, स्थिर होकर खड़ा रहना। डटा रहना = मुख न मोड़ना, जगहसे न हटना 'कबर्क टूकटक डटि रही टटिया अँगुरिन फारि।' वि० २११ शोभा देना (वि० ७१)।
डटाना—सक्रि० सामने रखना, भिड़ाना, जमाना।
डड़ढार—वि० बड़ी डाढ़ीवाला। साहसी।
डढ़न—स्त्री० जलन, सन्ताप।
डढ़ना—अक्रि० दग्ध होना, जलना (उदे० 'जऊ')।
डढ़ारा—वि० जिसके डाढ़ें हों, दाढ़ीवाला।
डढ़ियल, डढ्योरा—वि० डाढ़ीवाला।
डपट—स्त्री० झिड़क, फटकार।
डपटना—सक्रि० घुड़कना, डाँटना।
डपोरसंख—पु० बढ़ बढ़कर वातें करनेवाला। जड़, मनुष्य।
डफ, डफला—पु० एक तरहका बाजा।
डफली—स्त्री० खँजरी।
डफार—स्त्री० चिल्लाने या ज़ोरसे रोनेकी आवाज़।
डफारना—अक्रि० चिग्घाड़ना, ढाढ़ मारना (प० १५१), 'सूर हँसै ससि रोइ डफारा।' प० २११

डफालची, डफाली—पु० मुसलमानोंमें एक जाति जो डफला बजाती है।
डफोरना—अक्रि० चिल्लाना, गरजना 'वचन विनीत कहि सीताको प्रबोध करि तुलसी त्रिकूट चढ़ि कहत डफोरि के।' कविता० १८२
डबकना—अक्रि० टीसना, दर्द करना।
डबकौंहा—वि० डबडबाया हुआ, अश्रुपूर्ण 'बिलखी डबकौंहैं चखन तिय लखि गमन बराय।' बि० ७२
डबडबाना—अक्रि० अश्रुयुक्त होना।
डबरा—पु० पोखरा, जलयुक्त लम्बा गड्ढा।
डबरी—स्त्री० गड्ढा।
डबल—पु० पैसा। वि० दुगुना, दुहरा।
डबला—स्त्री० मिट्टीका छोटा कलसा, मटिया।
डबिया, डबी—स्त्री० ढक्कनयुक्त छोटा गहरा पात्र।
डबुलिया—स्त्री० छोटा डबला, कुल्हिया।
डबोना—सक्रि० डुबाना, चौपट करना।
डब्बा—पु० रेलगाड़ीका वह भाग जो पृथक् हो सके। ढक्कनदार बरतन।
डब्बू—पु० एकतरहका पात्र जो परसनेके काममें आता है।
डभकना—अक्रि० डबडबाना 'बदन पियर जल डभकहिं नैना।' प० ९८। डूबना-उतराना।
डभका—वि० ताजा। जो ( पानी ) कुएँसे अभी अभी निकाला गया हो।
डभकोरि—क्रिवि० अघाकर ( ग्राम० १५४ )।
डभकौंहाँ—वि० अश्रुपूर्ण।
डभकौरी—स्त्री० उड़दकी पीठीकी बरी।
डमरुआ—पु० देखो 'डँवरुआ'।
डमरू—पु० एक बाजा।
डमरूमध्य—पु० दो बड़े स्थल-भागोंको मिलानेवाला पतला स्थलभाग
डयन—पु० उड़ान। पंख।
डर—पु० भय, त्रास।
डरना—अक्रि० भयभीत होना।
डरपना—अक्रि० भयग्रस्त होना, डरना 'जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा।' रामा० १०४, 'डरपे गीध वचन सुनि काना।' रामा० ४१०
डरपोक—वि० कायर, भीरु।
डरवाना—सक्रि० भयभीत करना।
डरा—पु० डला, ढोका ( सुन्द० १२८ )।
डराकू—वि० डरनेवाला, डरपोक ( रत्नावली ३७ )।
डराडरी—स्त्री० भय, डर। ( उदे० 'अपभय' )।
डराना—सक्रि० भयभीत करना। अक्रि० डरना
डरापना—देखो 'डरावना', ( उदे० 'छलना' )।
डरावना—वि० भयप्रद, डर पैदा करनेवाला।
डरिया—स्त्री० डाल, शाखा ( उदे० 'पारधि' )।
डरी—स्त्री० डली, छोटा टुकड़ा 'छिनकु छाय छवि गुर डरी छले छबीले छैल।' बि० ३७ ( वंग० )
डरीला—वि० डालयुक्त, शाखाओंवाला।
डल, डला—पु० टुकड़ा।
डलना—अक्रि० डाला जाना।
डलवा—पु० डलिया।
डलवाना—सक्रि० किसीको डालनेके काममें लगाना।
डलिया—स्त्री० टोकरी।
डली—स्त्री० देखो 'डरी'। 'गीधे गीध अमिख डली जानत भली सुगन्ध। दीन० ९७
डवँरुआ—पु० गठिया नामक रोग।
डवँरू—पु० डमरू नामक बाजा।
डवरा—पु० एक तरहका बड़ा कटोरा जिसका आकार कुछ-कुछ लोटे जैसा होता है। ( अष्ट० २२,२३ )।
डसन—स्त्री० काटनेकी क्रिया।
डसना—सक्रि० साँप इत्यादिका काटना, डङ्क मारना 'काम भुजङ्ग डसत जब जाही। विषय नींब कटु लगत न ताही।' विन० ३०४
डसाना—सक्रि० सर्प इत्यादिसे कटवाना। बिछाना 'गुह सवाँरि साथरी डसाई। रामा० २४१, ( उदे० 'उपवर्हन' )।
डहकना—सक्रि० धोखा देना, छलना,ठगना 'इहि विधि इन डहके सबै जल थल जिय जेते।' सूवि० २०। कोई चीज़ दिखाकर न देना। अक्रि० बिलखना। दहाड़ मारना। चिग्घाड़ना। फैल जाना।
डहकाना—अक्रि० धोखे में आना, छला जाना 'इनके कहै कौन डहकावै ऐसी कौन अनारी।' सूवे० २८०, 'सुन्दर राम बिना सबही भ्रम देखहु या जग यूँ डहकायो। सुन्द० ७१। सक्रि० धोखा देना, ठगना। खोना नष्ट करना 'बाद विवाद यज्ञ व्रत साधे कतहूँ जाइ जन्म डहकावै।' सूवे० १७
डहडहा—वि० [illegible] हुआ, हरा भरा, प्रसन्न, आल्हा-

दर्पण'डहडहे इनके नैन अर्याह कहुँ देखे हैं हरि।'
डहडहाट—स्त्री० हरापन, प्रसन्नता। [नन्द०
डहडहाना—अक्रि० हराभरा होना, प्रसन्न होना।
डहन—पु० पर, डैना 'राते डहन लिखा सब पाठा।' प० ३५, ( १९२ )। स्त्री० डाह, जलन।
डहना—पु०पर, डैना। सक्रि० जलाना, पीड़ा पहुँचाना। अक्रि० जलना, चिढ़ना, द्वेष करना।
डहर, डहरि—स्त्री० 'डगर', रास्ता 'सखा लिये जमुना तट बैठो निवहत नहिं सब लोग डहरको।' सूबे० ११५, 'जल भरन कोउ नहीं पावति रोकि राखत डहरि।' सूबे० ११२
डहरना—अक्रि० चलना, टहलना।
डहराना—सक्रि० चलाना, फिराना। [घरतन, कुठिला।
डहरि, डहरिया—स्त्री० अनाज रखनेका मिट्टीका बड़ा
डहार—वि० तङ्ग करनेवाला ( दो० १५३ )।
डाँक—पु० डङ्का 'दान डाँक बाजे दरबारा। कीरति गई समुन्दर पारा।' प० ५०७। चाँदी आदिका पत्तर, टिकुली। डङ्क, बिच्छू इत्यादिका जहरीला कांटा 'लगै तिरीछी दीठि अब ह्वै बीछीके डाँक।' वि० २५४
डाँकना—सक्रि० लाँघना ( उदे० 'अगोट' )। अक्रि० कै करना।
डाँग—स्त्री० डङ्का, 'दान डाँग सबही जग सुनी।' प० २०९। पु० घना जङ्गल 'चित्र विचित्र विविध मृग डोलत डोंगर डाँग।' गीता० ३५३
डाँगर—पु० देखो 'डङ्गर'। वि० मूर्ख, क्षीणकाय।
डाँट—स्त्री० डपट,फटकार। दबाव। नियंत्रण।दे०'डाटा'
डाँटना—सक्रि० डपटना, कड़ककर बोलना 'डाँटेहिं पै नवनीच।' रामा० ४४५
डाँड़—पु० डण्डा 'परा जो डाँड़ जगत सब डाँड़ा।' प० १८। ऊँची उठी हुई मेंड़ या टीला। सीमा। दण्ड, अर्थदण्ड 'नीकी लगै ससुरारीकी गारि औ डाँड़ भलो जो गया भरिये जू।' केशव ( कक्षी० २८८ ) डण्डा एक ओर थोड़ा चौड़ा तख्ता लगा रहता है और जिससे नाव खेई जाती है।
डाँड़ना—सक्रि० अर्थदंड देना, दंड देना (उदे० 'डाँड़')।
डाँड़ा—पु० डण्डा, दण्ड 'वज्रक सांग, वज्रके डाँड़ा।' प० ३२२। मेंड़,सीमा। तराजूकी डंडी (रतन०२०)।
डाँड़ी—स्त्री० डण्डी, लम्बी पतली लकड़ी या लम्बा हत्था (सू० १७४)। डोरी 'साँस डाँड़ि मन मथनी गाढ़ी।' प० ६९। टहनी, डण्ठल, नाल। हिंडोलेकी पटरीको थामनेवाली चार सीधी लकड़ियाँ या रस्सियाँ। पालकी 'औ सोनहार सोनकै डाँड़ी। सारदूल रूपे कै काँड़ी।' [प० २६६
डाँवरा—पु० देखो 'डावरा'।
डाँवरी—स्त्री० लड़की 'रसखानि विलोकत ही सिगरी भई बावरियाँ व्रज डाँवरियाँ।' रसखानि
डाँवाडोल—वि० चंचल, अस्थिर।
डाँस—पु० एक तरहकी बड़ी मक्खी या बड़ा मच्छर। 'हनूमन्त सुग्रीव सोभैं सभागे। डसैं डाँससे भग मातंग लागे।' राम० ४६४
डाइन—स्त्री० चुडैल, भयावनी स्त्री।
डाइनी—देखो 'डाइन'।
डाक—स्त्री० यात्रा या पत्रादि पहुँचानेके लिए स्थान स्थानपर सवारी इ० का प्रबन्ध। नीलामकी बोली। पत्रादि पहुँचानेकी व्यवस्था। डाकसे मिलनेवाली चिट्ठियाँ या समाचारपत्रादि।
डाकखाना,-घर—वह स्थान जहाँ पत्र भेजने या बाँटने इ० की व्यवस्था होती है।
डाकगाड़ी—स्त्री० डाक ले जानेवाली ट्रेन।
डाकना—सक्रि० फाँदना। लाँघना। कै करना।
डाका—पु० डाकुओंका धावा।
डाकाज़नी—स्त्री० लूट।
डाकिनी—स्त्री० देखो 'डकिनी'।
डाकू—पु० लुटेरा।
डाख—पु० पलाश।
डागा—पु० चोब, नगाड़ा पीटनेकी लकड़ी।
डागुर—पु० जाटोंका एक भेद।
डाट—स्त्री० काग, चाँड, टेक। फटकार।
डाटना—सक्रि० चाँड़ लगाना, टेकना। कसकस कर भरना, डट कर खाना। डटाना, मिलाना। फटकारना
डाड़ना—सक्रि० जुरमानेकी सज़ा देना। [*की जटाएँ।
डाढ़—स्त्री० दाढ़, भोजन कूचनेके चौड़े दाँत। बट इ०*
डाढ़ना—सक्रि० जलाना, सन्तप्त करना 'लाल चले सुनि के घरको तिय अङ्ग अनङ्गकी आगिसों डाढ़े।' रस० ७७, 'पोंछि पसेउ बयारि करौं अरु पाँय पखारिहौं भूभुरि डाढ़े।' कविता० १६७, ( सूबे० २७० )
डाढ़ा—स्त्री० दावानल। अग्नि। ताप, जलन।

डाढ़ी—स्त्री० चिबुक, ठोड़ी। ठोड़ीपरके बाल।
डाब—स्त्री० कच्चा नारियल। एक तरहकी घास।
डाबक, डाभक—वि०देखो 'डभका'।
डाबर—पु० डबरा, गड्ढा, छोटा पोखरा 'डाबर जोग कि हंस कुमारी।' रामा० २२७। गन्दा पानी।
डाबा—पु० ढक्कनदार गहरा पात्र।
डाभ—पु० दर्भ, कुशकी तरहकी एक घास, कुश 'डाभ बचाये पग धरो, ओढ़ो पट अति घाम।' दास २१९। आमकी मञ्जरी 'जउ लहि अंबहिं डाभ न होई।'प०९
डामर—पु० अलकतरा। राल। एक तन्त्र। हलचल।
डामल—स्त्री० देशनिर्वासन या आजीवन कारावासका [दण्ड।
डामाडोल—देखो 'डाँवाडोल'।
डायँ डायँ—क्रिवि० व्यर्थ घूमना। मारे मारे (फिरना)।
डायन—देखो 'डाइन'।
डायरी—स्त्री० रोज़नामचा।
डार—स्त्री० डाल, शाखा 'मोतिनहींको कियो गहनो सब फूलि रही जनु कुन्दकी डार है।' सुखदेव मिश्र, (उदे० 'कँटीला')। फूल इत्यादि रखनेकी डलिया। थाली 'पुनि लेइ रूप डार मुख धोई।' प० २९६। समूह, झुण्ड 'मार्‍यो सिंह व्याघ्र पुनि मार्‍यो मारी बहुत मृगनकी डार।' सुन्द० ९२
डारना, डालना—सक्रि० छोड़ना, गिराना, प्रविष्ट कराना, मिलाना। फैला रखना। अङ्कित करना।
डाल—स्त्री० शाखा।
डाली—स्त्री० शाखा। चँगेरी। सम्मानार्थ भेजी गयी [फल इ० वस्तुएँ।
डावड़ा—पु० बेटा।
डावड़ी—स्त्री० डावरी, लड़की।
डावरा—पु० लड़का, बच्चा 'है यह चातक डावरो अनुग [रावरोदीन।' दीन० २००।
डावरी—स्त्री० लड़की।
डासन—पु० बिछावन 'डासन छाँड़िके कासन ऊपर आसन मारि पै आस न मारी।' सुन्द० ६७
डासना—सक्रि० बिछाना, फैलाना 'ए महि परहिं डासि कुस पाता। सुभग सेज कत सृजत बिधाता।' रामा० २५६, 'पाखुरी काढ़हिं फूलन सेंती। सोई डासहिं सौंर सपेती।' प० २४०। डाँसना, डाँस इत्यादिका काटना 'भूलि न उठत यशोदा जननी मनो भुअङ्गम [डासी।' सूबे० ३९२
डासनी—स्त्री० चारपाई, खाट।
डाह—स्त्री० ईर्ष्या, जलन।
डाहना—सक्रि० जलाना 'अब इह करत बियोग देहद्रुम सुनत काम दव डाहत। सूबे० ३८२। तंग करना।
डाही—वि० ईर्ष्या करनेवाला।
डाहुक—पु० एक पक्षी (विद्या० २६१)।
डिंगर—पु० पशुओंके गलेकी लकड़ी। मोटा मनुष्य। ठग।
डिंगल—स्त्री० राजपूतानेके चारणोंकी भाषा। वि० खराब।
डिंड़स-पु०, डिंड़सी—स्त्री० एक तरकारीवाला फल।
डिंडिम-पु०, डिंडिमी-स्त्री० डुगडुगी (उदे०'झाँझ')।
डिंब—पु० अण्डा। शोरगुल, दङ्गा-फसाद।
डिंभ—पु० छोटा बालक, बच्चा। आडम्बर 'प्रेम बिना जो भक्ति है सो निज डिंभ विचार।' साखी ३६
डिंभक—पु० छोटा बच्चा।
डिंभिया—वि० घमण्डी। पाखण्डी।
डिक्री—स्त्री० अदालतकी आज्ञा जिससे कोई अधि- [कार मिले।
डिगंबर—देखो 'दिगम्बर' (कबीर १५१)।
डिगना—अक्रि० हिलना, सरकना, हटना 'डिगै न शम्भु सरासन कैसे।' रामा० १३६, (उदे० 'गाज')। प्रतिज्ञा तोड़ना, संकल्पसे विचलित होना।
डिगरी—स्त्री० देखो 'डिक्री'। अंश या कला। विश्व-विद्यालयसे प्राप्त उपाधि।
डिगाना—सक्रि० हिलाना, हटाना, खसकाना। विचलित [करना।
डिगुलाना—अक्रि० हिलना, डगमगाना।
डिग्गी—स्त्री० तालाब, वापिका। साहस।
डिठिआरा,-यारा—वि० आँखवाला, दृष्टियुक्त 'अन्ध न रहहु होहु डिठिआरा।' अखरावट
डिठोहरी—स्त्री० एक फलका बीज जो बच्चोंको नजर लगनेसे बचानेके लिए पहनाया जाता है।
डिठौना—पु० काजलका निशान जो नज़र न लगनेके लिये लगाया जाता है। दूनी हो लागन लगी दिये डिठौना डीठि।' बि० १७, (सूबे० १३०)
डिडकारी—स्त्री० चिंघाड़ मारकर रोना 'मारि डिडकारी भारी रोय उठो आसमान'—पूर्ण २७
डिढ़—वि० दृढ़ 'जो निरास डिढ़ आसन मौना।' प० ३५
डिढ़ाना—सक्रि० दृढ़ाना, मजबूत करना, मनमें पक्का निश्चय करना।
डित्थ—पु० योग्य और सुन्दर व्यक्ति। काष्ठका हाथी।
डिबिया—स्त्री० छोटा डिब्बा।
डिब्बा—देखो 'डब्बा'।

डिभगना—सक्रि० ठहकना, मुग्ध करना ।
डिम—पु० रूपकका एक भेद ।
डिमडिमी—स्त्री० देखो 'डिंडिमी' ।
डिल्ला—पु० बैलोंके कन्धेपरका कूबड़ । छन्द-विशेष ।
डिहरी—स्त्री० देखो 'डहरिया' ।
डिहवा—पु० डीह खँडहर ( ग्राम० ३९ ) ।
डींग—स्त्री० शेखी, लम्बी-चौड़ी बात ।
डीठ—स्त्री० देखो 'डीठि ।'
डीठना—अक्रि० देख पड़ना । सक्रि० । देखना '... सो खुसरो मैं आँखों डीठा ।', वंचक विषय विविध तनु धरि अनुभवे सुने अरु डीठे ।' विन० ३९९
डीठबंध—पु० जादूगर । नज़रबन्दी ।
डीठि—स्त्री० दृष्टि, नज़र 'डीठि हि डीठि लगे दई देह दूबरी होति ।' बि० २०६ (बंग०), (उदे० 'डिठौना')
डीठिमूठि—स्त्री० नज़र जादू ।
डीन—स्त्री० उड़नेकी क्रिया ।
डीबुआ—पु० पैसा ।
डीमडाम—पु० टीमटाम, अहंकार, ठाट, ठसक ।
डील—पु० शरीर, शरीरकी ऊँचाई इत्यादि । व्यक्ति ।
डीलडौल—पु० शरीरका ढाँचा या विस्तार । आकार ।
डीह—पु० उजड़ी हुई बस्तीकी ऊँची ज़मीन । गाँव ।
डुंग, डुँगवा—पु० पुञ्ज, ढेर, ढूह, डूँगर, टीला । 'आठो पत्र जुरे सब एक डुगवे लागि ।' प० २६०
डुंड—पु० ठँडुआ, ठूँठ ।
डुक—पु० मुक्का, घूँसा, ठूँसा ।
डुगडुगी—स्त्री० डुग्गी ।
डुग्गी—स्त्री० चमड़ेसे मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा ।
डुपटना—सक्रि० तह करना, चुनियाना ।
डुबकी—स्त्री० गोता ।
डुबना, डुबोना—सक्रि० गोता देना, मग्न करना । नष्ट करना ।
डुब्बी—स्त्री० गोता ।
डुभकौरी—स्त्री० देखो 'डभकौरी', ( उदे० 'खदरा' ) ।
डुलना, डूलना—अक्रि० हिलना, चलना (उदे०'अरस')।
डुलाना—सक्रि० हिलाना, चलाना, हटाना । 'कहि न सकत मुख सीस डुलावत ।' सू० ९२ । (पंखा) झलना । अक्रि० डोलना, चलना ( उदे० ( 'बिजन' ) ।
डूंगर, डूंगा—पु० टीला या छोटी पहाड़ी 'तहँ एक परबत अह डूँगा ।' प० १९७
डूँगरी—स्त्री० पहाड़ी, टीला ।
डूँडा—वि० एक सींगवाला । पु० एक सींगवाला बैल ।
डूबना—अक्रि० पानी इत्यादिके भीतर चला जाना, डूबना । नष्ट होना, अस्त होना । तन्मय होना ।
डेड़सी—स्त्री० एक तरकारी ।
डेग—पु० भोजन बनानेका बड़ा बरतन, देग ।
डेगची—स्त्री० खाना पकानेका पात्र ।
डेढ़—वि० एक और आधा ।
डेढ़ा—वि० आधा और अधिक, डेवढ़ा । पु०एक पहाड़ा।
डेवरी—स्त्री० शीशे इत्यादिका चिराग, डिब्बी ।
डेरा—पु० पड़ाव निवास 'राम करहु तेहिके उर डेरा ।' रामा० २६२ । घर, तम्बू, खेमा । ठहरनेके लिए फैलायी हुई वस्तुएँ—बिछावन, तम्बू इ० 'मातु नहानी जानि सब डेरा चले लेवाइ ।' रामा० २९२
डेराना—अक्रि० डरना 'मुनि गति देखि सुरेश डेराना ।' रामा० ७२
डेला । पु० उल्लू पक्षी ।
डेल—पु० पिंजड़ा (प० २७) । देखो 'डेली' । रोड़ा,
डेलटा—पु० नदीके मुहानेपर धाराके बीच बनी हुई तिकोनी भूमि ।
डेला—पु० आँखका कोया । ढेला, ढेंगुर ।
डेली—स्त्री० डलिया, झौआ ( प० ३० ) ।
डेवढ़—स्त्री० देखो 'डेवढ़ा' । स्त्री० क्रम, सिलसिला ।
डेवढ़ना—सक्रि०मोड़ना(कपड़ा)। अक्रि०रोटीका फूलना।
डेवढ़ा—वि० डेढ़गुना । पु० डेढ़का पहाड़ा ।
डेवढ़ी—स्त्री० देखो 'ड्योढ़ी ।
डेहरा—पु० कोठिला ( ग्राम० ४३७ ) ।
डेहरी—स्त्री० दहलीज, देहरी । देखो 'डिहरी' ।
डेहल—पु० दहलीज । [प० ६७
डैन, डैना—पु० पर, पंख 'डोल समुद्र डैन जब डोला ।'
डोंगर—पु० देखो 'डूँगर' ( उदे० 'डाँग' ), 'बन डोंगर ढूँढ़त फिरी घर मारग तजि गाउँ ।' सूबे० २१८
डोंगी—स्त्री० छोटी नाव ।
डोंड़ा—पु० कारतूस, बड़ी इलायची । फल 'आँबनकी हौंस कैसे आक-डोंड़े जात है ।' सुन्द० ६६
डोंड़ी—स्त्री०डुगडुगी । पोस्तेका फल । डोंगी ।
डोई—स्त्री० कड़ाहमें दूध इ० चलानेकी एक तरहकी काठी ।
डोकरा—पु० बूढ़ा या अशक्त मनुष्य ।
डोकरी—स्त्री० वृद्धा स्त्री ।

डोका—पु० तेल इत्यादि रखनेका काठका छोटा पात्र ।
डोकिया, डोकी—स्त्री० देखो 'डोका' ।
डोड़हा—पु० एक तरहका साँप ।
डोब—पु० डुबकी ।
डोबना—सक्रि० डुबाना 'इत माया अगाध सागर तुम डोबहु भारत नैया ।' सत्यना०
डोबा—स्त्री० डुबकी, गोता ।
डोभना—सक्रि० जमाना, गाड़ देना ( ग्राम ४०५ ) ।
डोम—पु० जाति-विशेष ।
डोमकाग, कौआ—पु० बड़ा कौआ ( प० १७९ ) ।
डोमड़ा—पु० एक नीच जाति, डोम ।
डोमनी, डोमिन—स्त्री० डोम जातिकी स्त्री । गाने-बजानेका काम करनेवाली स्त्री ।
डोर—स्त्री० डोरा, सूत, रस्सी । बन्धन, लगाव ।
डोरना—सक्रि०हाथ पकड़कर ले चलना(कवि०प्रि०१२१)।
डोरा—पु० धागा, सूत, अनुसन्धानसूत्र । लकीर, प्रेम-बन्धन । आँखकी महीन नस 'नयनोंके डोरे लाल गुलाल-भरे खेली होली' गीतिका ४४ । रेशा, नस ( ग्राम० ४८६ ) ।.........प्रेमजाल,-डालना = प्रेम-जालमें फँसानेका प्रयत्न करना ( कर्म० ४५३ ) ।
डोरिया—पु० एक तरहका धारीदार कपड़ा ।
डोरियाना—सक्रि० डोरी पकड़कर ले चलना ( उदे० 'कोतल' ) ।
डोरी—स्त्री० रस्सी । बन्धन, पाश 'जिन बाँधे सुर असुर नाग नर प्रबल करमकी डोरी ।' विन० २५४ । लगाव सम्बन्ध, लगन 'डोरी लागी सुननकी कहि गोरी मुस-कात ।' वि० २१५ ( पंग० )
डोरे—क्रिवि० साथ साथ ( रवि ६ ) ।
डोल—पु० झूला, हिंडोला 'श्री नँदनन्दन झूलत डोल ।' सू० १८७, 'झूलत डोल दुलहिनी दूलहु ।' स्वामी हरिदास । डोली, पालकी । एक तरहका लोहेका बर-तन । हलचल 'बादशाह कहँ ऐस न बोलू । चढ़ै तो परै जगत महँ डोलू ।' प० २४२ । वि० जो डोलता [ हो ।
डोलची—स्त्री० छोटा डोल ।
डोलडाल—पु० शौचके लिए जाना । चलना फिरना ।
डोलना—अक्रि० हिलना, हटना, चलना, फिरना ( उदे० 'उपास' ) । 'अद्भुत वधू लिये सँग डोलत ।' सू० ३२ । डिगना 'हरि प्रेरित लछमन मन डोला ।' [ रामा० ३७९
डोला—पु० पालकी । पंग ।
डोलाना—सक्रि० हिलाना चलाना, दौड़ाना ( विन० [ ५२० ) ।
डोली—स्त्री० पालकी, शिविका ।
डोही—स्त्री० लकड़ीकी डण्डीवाली बड़ी करछी ।
डौंड़ी—स्त्री० डुगडुगी, ढिण्ढोरा । घोषणा ( उदे० 'कनौड़ा' ) ।
डौंरू, डौरू—पु० डमरू, एक तरहका बाजा 'डौरु ब्याल त्यों संग्रहो तजि मुरली बनमाल ।' दास ११८
डौआ—पु० देखो 'डौवा' ।
डौकी—स्त्री० पण्डुकी, परेई । स्त्री० पत्नी ( छत्तीस० ) ।
डौर—पु० तागा ( सूबे० ३३५, ३८२ ) ।
डौल—पु० ढाँचा, प्रकार, आयोजन, तैयारी, लक्षण ।
डौल डाल—पु० ब्योंत, कोशिश ।
डौलदार—वि० सुलक्षण-सम्पन्न, सुंदर ।
डौवा—पु० एक तरहकी काठकी करछी ।
ड्योढ़ा—वि० डेढ़गुना । पु० डेढ़का पहाड़ा ।
ड्योढ़ी—स्त्री० पौर, द्वारके समीपकी जगह, चौखट
ड्योढ़ीदार,-वान—पु० पौरिया, दरबान ।

# ढ

ढँकन—पु० ढक्कन ।
ढँकना—सक्रि० ढाँकना, छिपाना । अक्रि० दिखाई न देना, दृष्टिसे छिपाना । पु० ढक्कन ।
ढँकुलिया—पु० ढाकका वृक्ष ( ग्राम० ४९ ) ।
ढंख—पु० ढाँख, पलाश ।
ढंग—पु० रीति, रचना, गढ़न, प्रकार, युक्ति, बहाना, दशा, स्थिति, गतिविधि, आसार, लक्षण ।
ढंगी—वि० धूर्त, चालाक ।
ढंढस—पु० ढोंग, बहाना ।
ढंढार—वि० बेडौल ।

ढँढोर—पु० ज्वाला, लपट। लंगूर।
ढँढोरची—पु० मुनादी करनेवाला।
ढँढोरना, ढँढोलना—सक्रि० ढूँढ डालना 'तहँ लगि हेरै समुद ढँढोरी। जहँ लगि रतन पदारथ जोरी।' ६७। छान डालना, मथना, टटोलकर खोजना 'सायर माहिं ढँढोलता हीरे पड़ि गया हथ्थ।' कबीर १५, 'लोलुपतातें गोपिनके तुम सूने भवन ढँढोरे हो।' गदाधर भट्ट, (साखी ९०)
ढँढोरा—पु० डुगडुगी, मुनादी।
ढँढोरिया—पु० मुनादी करनेवाला, डुग्गी पीटनेवाला।
ढँपना—अक्रि० दृष्टिसे छिप जाना। पु० ढक्कन।
ढकना—देखो 'ढँकना।'
ढकनियाँ, ढकनी—स्त्री० ढक्कन (उदे० 'छीका')।
ढका—पु० धक्का, आघात, प्रहार 'वासर ढासनिके ढका रजनी चहुँ दिसि चोर।' दोहा० १२४। पु० एक तरह का ढोल।
ढकिल—स्त्री० आक्रमण चढ़ाई।
ढकेलना—सक्रि० धक्का देकर गिराना 'ढकनि ढकेलि पेलि सचिव चले लै ठेलि, नाथ न चलैगो बल अनल भयावनो।' कविता १७५
ढकेला ढकेली—स्त्री० धक्का धुक्की, ठेलाठेल।
ढकोसना—सक्रि० ज्यादा पी जाना। जल्दी जल्दी पीना।
ढकोसला—पु० व्यर्थ की बात, आडम्बर, दम्भ।
ढक्कन—पु० ढाँकनेकी वस्तु, ढकना। [हिम्मत० २६)।
ढक्का—स्त्री० डङ्का, नगाड़ा। पु० धक्का (रसिवि० २४,
ढचर—पु० सामान, तैयारी, ढकोसला। वखेड़ा।
ढटींगड़,-र—पु० मोटा ताज़ा व्यक्ति।
ढट्ठी—स्त्री० डाढ़ी बाँधनेका वस्त्र। काग।
ढड्ढा—वि० बहुत बड़ा। पु० ढाँचा।
ढढोरना—सक्रि० देखो 'ढँढोरना', 'देखि मनोहर चारिउ जोरी। सारद उपमा सकल ढढोरी।' रामा० १९०
ढनमना—अक्रि० लुढकना, गिर पड़ना 'रुधिर वमत धरनी ढनमनी।' रामा० ४१६
ढप,ढफ—पु० चमड़ेसे मढ़ा हुआ एक बाजा 'कङ्कन ताल किङ्किनी ढपरव बाजत हैं सुरसों री।' गुणमञ्जरी दास
ढपना—सक्रि० ढाँकना, छिपा देना। अक्रि० ढँका होना। पु० ढाँकनेकी चीज़, ढक्कन।
ढपला—पु० ढफला नामक बाजा।
ढप्पू—वि० बहुत बड़ा।
ढब—पु० तरह, तर्ज़, रीति, ढङ्ग। आदत उपाय। गढ़न।
ढबरी—स्त्री० टिन, पीतल आदि धातु या मिट्टीका बना लुटियानुमा दीपक।
ढबैला—वि० गँदला, पङ्कमय।
ढमकाना—सक्रि० बजाना 'कोउ उमङ्ग सों सङ्ग-सङ्ग ढोलक ढमकावत।' रत्ना० १२५
ढमढम—पु० ढोल इ० बजने की आवाज़।
ढयना—अक्रि० गिरकर नष्ट होना, मकान आदिका गिरना। [ढलना, गिरकर बह जाना।
ढरकना—सक्रि० नीचे की ओर खसकना या जाना,
ढरका—पु० पशुओंको दवा इ० पिलानेकी बाँसकी नली। नेत्रसे पानी बहते रहनेका रोग।
ढरकाना—सक्रि० लुढ़काना, नीचे गिराना (सू० १६१), 'दधि ढरकायो भाजन फोरी।' सूबे० ४९
ढरकी—स्त्री० कपड़ा बुनते समय सूत भरनेका औज़ार।
ढरकीला—वि० बहनेवाला, लुढ़कनेवाला।
ढरना—अक्रि० रीझना, द्रवना 'जा पर दीनानाथ ढरे।' सू० २। लुढकना, ढरकना 'नैनन्ह ढरहिं मोति औ मूँगा।' प० ५५। व्यतीत होना, निकल जाना। ढाला जाना 'सोन ढरै जेहिके टकसारा।' प० २२५
ढरनि—स्त्री० गिरने या रीझनेकी क्रिया। रीझनेका स्वभाव, दयाशीलता। झुकाव, गति।
ढरहरना—अक्रि० ढरकाना, ढलना, झुकना, सरकना।
ढरहरा—वि० ढालू, ढरारा।
ढरहरी—स्त्री० पकौड़ी। वि० स्त्री० ढालू।
ढराना—सक्रि० ढलाना, पानी इत्यादिको उढ़िलवाना। उड़ेलना (उदे० 'गगरी')। साँचेमें ढालकर बनवाना। गिराना, बहाना 'हा हा करि दसननि तृन धरि धरि लोचनि जलनि ढराऊँ री।' सू० २७९। अक्रि० अश्रु गिराना (सूसु० १५९)।
ढरारा—वि० गिरकर बह जानेवाला, ढरकनेवाला, झुक पड़नेवाला, प्रभावित होनेवाला। ढालू।
ढर्रा—पु० ढङ्ग, मार्ग, आदत, उपाय।
ढलकना, ढलना—अक्रि० देखो 'ढरना'।
ढलका—पु० नेत्रोंसे पानी गिरनेकी बीमारी।
ढलकाना—सक्रि० (पानी इ०) लुढ़काना।
ढलकी—देखो 'ढरकी'।
ढलमल—वि० शिथिल।
ढलवाँ, ढलुवाँ—वि० साँचे में ढाला हुआ।

ढलाई—स्त्री० ढालनेकी क्रिया या उसकी मज़दूरी ।
ढलैत—पु० ढाल बाँधनेवाला, सैनिक ।
ढवरी—स्त्री० लगन, धुन ।
ढसक—स्त्री० सूखी खाँसी या खाँसीका शब्द ।
ढहना—अक्रि० गिर पड़ना, नष्ट होना ।
ढहरना—अक्रि० लुढ़काना, गिर पड़ना ( रत्ना० २५० ) ।
ढहराना—सक्रि० लुढ़काना, गिराकर अलग करना ।
ढहरी—स्त्री० देहरी । डहरि, मटका 'डगर चलन न देत काहुहिं फोरि डारत ढहरि ।' सूबे० १११
ढहाना—सक्रि० घर इत्यादि गिराना, नष्ट करना । 'निसिचर सिखर समूह ढहावहिं । कूदि धरहिं कपि
ढाँक—पु० ढाक । [ फेरि चलावहिं ।' रामा० ४७३
ढाँकना—सक्रि० देखो 'ढाँपना' । [ बन-ढाँखा ।' प० २९
ढाँख—पु० 'ढाक' या पलाशका पेड़ 'जिउ लै उड़ा ताकि
ढाँचा—पु० किसी वस्तुकी बनावटका स्थूल रूप । प्रकार । ढङ्ग । गढ़न ।
ढाँपना—सक्रि० ढाँपना, किसी वस्तुके ऊपर कोई दूसरी वस्तु रखकर या फैलाकर उसे छिपाना या ओटमें करना (उदे० 'छीका'), 'परम दिव्य पायस सो पूरित रजत पात्र ते ढाँपी ।' रघु० १८
ढाँस—स्त्री० सूखी खाँसी ।
ढाँसना—अक्रि० खाँसना ।
ढाई—वि० दो और आधा ।
ढाक—पु० पलाश, छेवला । एक तरहका बड़ा ढोल ।
ढाकापाटन—पु० एक तरहका फूलदार कपड़ा ।
ढाटा—पु० डाढ़ी इ० बाँधनेकी पट्टी ।
ढाड़,ढाढ़—स्त्री० चीत्कार, चीख । दहाड़, चिग्घाड़ । ढाढ़ मारिकै राजा रोवा ।' प० १९७
ढाढ़ना—सक्रि० डाढ़ना, जलाना, सन्तप्त करना ।
ढाढ़स,ढारस—पु० तसल्ली, धैर्य, साहस ।
ढाढ़ी—पु० जन्मोत्सवके समय गाने बजानेका काम करने वाली एक जाति 'हौं तो तेरो घरको, ढाढ़ी सूरदास मो नाउँ ।' सू० मदन०, 'आगे ठाढ़ बजावहीं ढाढ़ी ।'
ढाना—सक्रि० देखो 'ढहाना' । [ प० २४८
ढापना—सक्रि० छिपाना । आवरण डालना ।
ढाबर—वि० गन्दा, मटमैला 'भूमि परत भा ढाबर पानी ।' रामा० ४०२ [ दूकान । ओलती ।
ढाबा—पु० हलका छप्पर या पाटन । अटारी । भोजनकी
ढामक—पु० नगाड़ा, ढोल ।
ढार,ढाल—पु० उतार । ढाँचा, बनावट,प्रकार । मार्ग स्त्री० फलक 'नेजा भाला तीर कोउ, कहत अनोखी तीर ।' रसखानि । ढालकी तरहका कानका एक भूषण ।
ढारना, ढालना—सक्रि० गिराना, बहाना 'मुनि वशिष्ट पुलकित तन नैननि ढारत आनँदधारा ।' रघु० ३३ । नीचे गिराना, उड़ेलना । डालना, ठेलना 'यह जिय जानि नन्दनन्दन तुम,इहाँ पठाये ढारि । सू० २३१ । साँचेमें ढालकर तैयार करना । हिलाना, झलना 'ताहि लिये रविपुत्र सदारत । चौंर विभीषण अङ्गद ढारत ।' के० ११४
ढारस—पु० ढाढ़स, धैर्य, साहस, तसल्ली ।
ढालवाँ—वि० जो बराबर नीचा होता गया हो ।
ढालिया—पु० साँचेमें डालकर बरतन इ० बनानेवाला ।
ढालुआँ, ढालू—वि० देखो 'ढालवाँ' ।
ढास—पु० डाकू, लुटेरा ( उदे० 'ढका' ) ।
ढासना—पु० तकिया, सहारा, आधारकी वस्तु ।
ढाहना—सक्रि० देखो 'ढहाना', 'भवन बनावत दिन लगै ढाहत लगत न बार ।' वृन्द
ढिंढोरना—सक्रि० देखो 'ढँढोरना' ।
ढिंढोरा—पु० डुगडुगी, घोषणा ।
ढिगढिग—क्रिवि० निकट, पास 'होय न जाकी छाँह ढिग फल रहीम अति दूर ।' रहीम १८ । स्त्री० निकटता । किनारा, कोर ।
ढिठाई—स्त्री० धृष्टता, अनुचित साहस ।
ढिबरी—स्त्री० मिट्टी, काँच इत्यादिका चिराग़ ।
ढिमका—वि० अमुक, फलाना ।
ढिमरिया—स्त्री० कहारिन ( बु० वै० ७७ ) ।
ढिलढिला—वि० ढीला, पानी जैसा पतला ।
ढिलाई—स्त्री० सुस्ती, शिथिलता, ढील ।
ढिलाना—सक्रि० ढीला कराना । ढीला करना, बन्धन इत्यादिसे मुक्त करना ।
ढिल्लड़—वि० ढीलढाल करनेवाला, आलसी ।
ढिसरना—अक्रि० फिसल पड़ना, झुकना ।
ढींगर—पु० दीर्घकाय मनुष्य । जार, उपपति ।
ढींगे—क्रिवि० ढिग, समीप ।
ढींढ़—पु० गर्भ । बड़ा पेट ।
ढींढस—स्त्री० एक फल जिसकी तरकारी बनती है ।

ढीच—स्त्री० कूबड़ 'सीस इलै कटि ढीच नयी जू।' [सुन्द० १६

ढीट—स्त्री० लकीर, रेखा।

ढीठ—वि० बेअदब, धृष्ट (विन० ५८४)। निडर,साहसी।

ढीठता—स्त्री०,ढीठो, ढीठ्यो—पु०,स्त्री०धृष्टता,ढिठाई 'राधा बोलि उठी बाबा कछु तुम सों ढीठ्यो कीनी।' सूबे० ८२, 'प्रभुसों मैं ढीठ्यो बहुत करी है।' गीता० ३६३, ढीठो करन श्याम तुम लागे जाइ गही कटि फेट।' सूबे० १४०

ढीम, ढीमा—पु० पत्थरका टुकड़ा, ढोंका (सुन्द० ७६)।

ढीमर—पु० पानी भरनेवाली एक जाति,कहार (बुन्दे०)।

ढील—स्त्री० डोरी इत्यादिको ढीला करनेका भाव, सुस्ती। व्यर्थकी देरी 'साँची बिरुदावली न बढ़ि कहि गई है। सील सिन्धु, ढील तुलसीकी बार भई है।'' विन० ४२८। फुरसत, छुट्टी 'उतते इत इतते उत होइ। नेकी ढील न पावै सोइ।' के० १५६

ढीलना—सक्रि० ढीला करना। बन्धन खोलना।

ढीला—वि० जिसमें झोल हो, जो खूब तना या चुस्त न हो। ज़्यादा गीला, मुलायम। सुगम 'काठहि काढ़ गाढ़ का ढीला।' प० ७१। सुस्त, शान्त, धीमा, मन्द। ढीली आँख = अधखुली आँख, मदपूर्ण दृष्टि 'ढीली अँखियन हीं इतै गई कनखियन चाहि।' वि० १९३ (बंग०)

ढीह—पु० डूह, अटम्बर, ऊँचा टीला।

ढुंढ—पु० लुटेरा।

ढुंढपाणि,-पानि—पु० दण्डपाणि, भैरव।

ढुँढ़वाना—सक्रि० खोज कराना।

ढुंढि,-राज—पु० गणेश जी।

ढुंढी—स्त्री० बाँह। नाभि।

ढुकना—अक्रि० घातमें छिपना, देखने या सुननेके लिए ओटमें छिपना (उदे० 'चिड़िहार')। (घरमें) घुसना (बीजक १३४)

ढुकास—स्त्री० तेज़ प्यास।

ढुटौना—पु० लड़का, ढोटा, 'तुम जानति मोहिं नन्द-ढुटौना नन्द कहाँ तें आये।' सूबे० १०४

ढुरकना—अक्रि० फिसलना, ढरकना। झुकना।

ढुरना—अक्रि० प्रसन्न होना, कृपा करना। ढरकना। टपकना 'ढुरि ढुरि बूँद परत कन्चुकिपर, मिलि काजर सों कारे।' सू० २००। इधर उधर डोलना, हिलना 'ग्रीवा ढुरनि मुरनि कलि कटिकी भृकुटी नैन नचावैं।' अलबेली अलि। फिसलना, लुढ़कना। प्रवृत्त होना।

ढुरहुरी—स्त्री० लुढ़कनेकी क्रिया। तङ्ग रास्ता।

ढुराना, ढुरावना—सक्रि० प्रसन्न करना, प्रवृत्त करना। लुढ़काना। टपकाना, ढरकाना, हिलाना 'आनँद मगन सकल पुरवासी चमर ढुरावत श्रीव्रजराज।' सू० १११ 'बीजनौ ढुरावती सखीजन त्यौं सीतहूँ मैं सौतिके सराप तन तापनि तरफराति।' रवि० ६९

ढुर्री—स्त्री० पगडण्डी।

ढुरुकना—देखो 'ढुलकना'।

ढुलकना—अक्रि० लुढ़कना।

ढुलकाना—सक्रि० लुढ़काना।

ढुलढुल—वि० लुढ़कनेवाला 'पारदके मोतीसे चञ्चल मिटते जो प्रतिपल बन ढुलढुल।' नीरजा १२१

ढुलना—अक्रि० देखो 'ढुरना'। ढोया जाना।

ढुलवाना—सक्रि० ढोने या ढुलानेका काम कराना।

ढुलाई—स्त्री० ढोनेकी क्रिया या ढोनेकी मज़दूरी।

ढुलाना—सक्रि० देखो 'ढुराना'। ढोनेका काम कराना।

ढुलुआ—स्त्री० खजूरकी चीनी। [पोतना।

ढूकना—अक्रि० ओटमें छिपना, घातमें छिपना। झाँकना। छिपकर देखना (राम० १२६)।

ढूँका—पु० गुप्त कथा सुनने वा आड़में छिपकर देखनेका काम 'लगी रहति ढूँका दिये कानन कानन काम।' वि० २४५ (बंग०)

ढूँढ़—स्त्री० ढूँढ़नेकी क्रिया, खोज।

ढूँढ़ना—सक्रि० खोज करना। पता लगाना।

ढूँढ़ी—स्त्री० भुने हुए चावल या आटेका बड़ा लड्डू।

ढूका—पु० घासके दस पूलोंके बराबरका मान।

ढूह—पु० टीला। पुञ्ज ढेर।

ढेक—स्त्री० एक जल-पक्षी 'कूजत पिक मानहुँ गजमाते। ढेक महोख ऊँट बिसराते।' रामा० २८७

ढेंकली, ढेंकुली—स्त्री० धान कूटने या पानी खींचनेका लकड़ीका यन्त्र।।

ढेंकी—स्त्री० धान आदि कूटनेका यन्त्र।

ढेंढ़, ढेढ़—पु० कौआ। एक अधम जाति 'ऐसे शरीरमें वास कियो तव एकसे दीसत ब्राह्मण ढेढ़ो।'सुन्द०५१, (५८ भी)। जड़, मूर्ख। देखो 'ढेंढ़ी'।

ढेंढ़र—पु० आँखका एक रोग या विकार।

ढेंढ़वा—पु० लंगूर।

ढेंढ़ी—स्त्री० कपास, सेमर इ० का ढोढा। सेमर सुख सेइया दुइ ढेंढ़ीकी आस।' साखी ७२

ढँपी—स्त्री० पत्ते इ०का वह अंश जो टहनीसे लगा रहता है।
ढेउआ—पु० देखो 'ढेबुआ'।
ढेकुला—पु० देखो 'ढेकुली', नामक ढेकुला, डोल तिल अलक लेजकर मैन।' तिल शतक १५
ढेढ़स—स्त्री० देखो 'ढींढ़स'।
ढेबरी—स्त्री० काँच, मिट्टी इ० का चिराग़।
ढेबुआ, ढेबुक—पु० पैसा।
ढेर—पु० राशि। टाल, पुन्ज। वि० बहुत।
ढेरा—पु० सुतरी बटनेकी फिरकी या चक्कर 'चिन्ता कैसो घेरा मन ढेरा सो भ्रमत फिरै, हृदै नहिं डेरा, सुधि खानकी न पानकी।' हठी।
ढेरी—स्त्री० राशि, ढेर।
ढेल, ढेला—पु० पत्थर, मिट्टी इत्यादिका टुकड़ा, 'भीजत ही गली जात माटीको सो ढेल है।' सुन्द० १५। टुकड़ा। एक तरहका धान ( उदे० 'कजरी' )।
ढेलवाँस—पु० ढेला फेंकनेका रस्सीका फन्दा।
ढैया—पु० एक पहाड़ा। ढाई सेरका बटखरा।
ढोंका—पु० पत्थर इ० का टुकड़ा जो गढ़ा न गया हो।
ढोंग—पु० बहाना, पाखण्ड, छल।
ढोंगबाज—वि० ढोंग करनेवाला, धूर्त्त।
ढोंगी—वि० धूर्त्त, छलिया, पाखण्डी।
ढोंटा—लड़का, पुत्र 'यसुमति ढोंटा व्रजकी शोभा।'
ढोंढ—पु० कली, ढेंढ़ी।
ढोंढ़ी—स्त्री० नाभि, तुन्दी।
ढोंक—स्त्री० राशि, ढेर। एक मछली।
ढोंका—पु० देखो 'ढोंका'।
ढोटा, ढोटौना—पु० लड़का। ढोटी=लड़की।
ढोना—सक्रि० उठाकर या लादकर ले जाना।
ढोर, ढोरा—पु० पशु, चौपाया 'ऊपर ऊपर हर फिरै ढोर चरैंगे घास।' साखीं ६१। ढङ्ग, छटा अदा 'कोमल चरन कौंल नटवर ढोर मोर पोर पोर छोरै छबि कोटिन अनङ्गकी' हरि०
ढोरना—सक्रि० ढालना, गिराना, ढरकाना 'चितै बदन लोचन जल ढोरैं'। सूबे० ६७। झलना, हिलाना 'छबि ठाढ़ी कर जोरे, गुन कला चौरैं ढोरे, द्युति सेवै तन गोरे रति बलि जाति है।' ध्रुवदास
ढोरी—स्त्री० धुन, लगन 'हरि दरसनकी ढोरी लागी।' सू० ढरकानेकी क्रिया।
ढोल—पु० एक तरहका बाजा।
ढोलक, ढोलकी—स्त्री० छोटा ढोल।
ढोलकिया—पु० ढोलक बजानेवाला। स्त्री० ढोलक।
ढोलना—पु० एक तरहका ताबीज। पालना, झूला। सक्रि० देखो 'ढोरना', ज्यूँ हरियाइ गऊ नहिं मानत दूध दुह्यो कछु सो पुनि ढोलै।' सुन्द० ४०
ढोलनी—स्त्री० बच्चोंका झूला।
ढोला—पु० शरीर। पति, प्रियतम। मूर्ख व्यक्ति। एक कीड़ा।
ढोलिनी—स्त्री० ढोल बजानेवाली स्त्री।
ढोलिया—पु० वह मनुष्य जो ढोल बजाता है।
ढोली—स्त्री० ठठोली, हँसी। दो सौ पानोंकी गड्डी।
ढोव—पु० डाली, भेंस 'लै लै ढोव प्रजा प्रमुदित चले भाँति भाँति भरि भार।' गीतां० २७१
ढोवा—पु० लूट 'सूतहिं सूत सँवारि गढ़ रोवा। कस होइहि जौ होइहि ढोवा।' प० २६५
ढोहना—सक्रि० खोजना 'सूर सुवैद वेगि ढोहो किन, भये मरनके योग। सू० २३२
ढौंचा—पु० साढ़े चारका पहाड़ा।
ढौसना—अक्रि० हर्ष-ध्वनि करना।
ढौकन—पु० भेंट, रिश्वत।
ढौरी—स्त्री०धुन, लगन ( रवि० ८० कबीर २१९ )।

---

# त

तंग—वि० संकीर्ण, छोटा। परेशान। पु० घोडे पर जीन कसनेकी पट्टी।
तंगदस्त—वि० ग़रीब। कंजूस।
तँगिया—स्त्री० तनी 'तरकी तँगिया दरकी अँगिया'—सुधानिधि ६५
तंगी—स्त्री० कमी, क्लेश, दरिद्रता। संकीर्णता।
तंजेब—स्त्री० महीन मलमलका एक भेद।
तंड—पु० नाच।
तंडव—पु० एक तरहका नाच।

तंदुल—पु० चावल । एक तौल ।
तंन—पु० तन्त्र, सितार इ० की तरहका बाजा ( उदे० 'घनतार' ) । तन्त्रशास्त्र ( प० ९० ) प्रयोग, टोना 'कत गँगिराति जम्हाति बहु भयो कौनसो तन्त ।' कलस १९० । क्रिया उपाय 'आवनको तन्त तेरो भयो ना घसन्त माहिं' कलस २१६ । अधीनता । इच्छा । तत्व । ताँत, सारङ्गी इत्यादिके तार । स्त्री० उतावली, आतुरता ।
तंतमंत—पु० तन्त्रमन्त्र, टोना-टनमन ।
तंतरी, तंत्री—पु० सितार आदि वजानेवाला मनुष्य । गवैया। बाजेका तार, तारवाला बाजा (दीन० २३९)।
तंतु—पु० डोरा, रेशा, ताँत, सारङ्गी इ० के तार । सन्तान ।
तंतुकीट—पु० रेशमका कीडा । मकड़ी ।
तंतुवाप, तंतुवाय, तंत्रवाय—पु० कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा, ताँती ।
तंत्र—पु० उपासना विषयक तथा मारण, उच्चाटन इत्यादि मन्त्रोंका एक शास्त्र । झाड़ फूँक । उपाय, ताँत, डोरा, वस्त्र । अधीनता, राज्य । अधिकार ।
तंत्री—स्त्री० वीणा आदि बाजोंके तार । वीणा । कोई बाजा जिसमें तार लगे हों । नाड़ी । रस्सी ।
तंदरा—स्त्री० उँघाई, अर्द्ध-निद्राकी अवस्था ।
तंदुरुस्त—वि० स्वस्थ, रोगरहित ।
तंदुरुस्ती—स्त्री० स्वास्थ्य, आरोग्य ।
तंदुल—पु० चावल । आठ सरसोंके बराबर तौल ।
तंदूर—पु० चूल्हेकी तरहका मिट्टीका पात्र जिसे गरम करके रोटियाँ पकाते हैं ।
तंदेही—स्त्री० ताकीद, कोशिश, चेष्टा, मेहनत ।
तंद्रा—स्त्री० उँघाई, अर्द्ध-निद्रा ।
तंद्रालु—वि० बहुत सोनेवाला, निद्राशील ।
तंद्रिल—वि० तन्द्राका तन्द्रासे सम्बद्ध ।
तंबा—पु० एक तरहका पायजामा । स्त्री० गाय ।
तँबिया—पु० ताँबेका छोटा तसला ।
तंबीह—स्त्री० सावधान करनेके लिए की गयी सूचना, चेतावनी, घुड़की, भर्त्सना, ताड़ना ।
तंबू—पु० खेमा, शामियाना ।
तंबूर—पु० एक तरहका ढोल ।
तंबूरा—पु० सितार जैसा एक बाजा ।
तंबूल, तंबोल—पु० ताम्बूल, पान, पानका बीडा ।
तंबोली—पु० पान बेचनेवाला, बरई ।
तंभ, तंभन—पु० स्तम्भ नामक सात्विक भाव ।
तँवार—देखो 'तमारि' ।
तअज्जुब—पु० अचम्भा, आश्चर्य ।
तअम्मुल—पु० सोच-विचार, आगा-पीछा । देर ।
तअल्लुक—पु० लगाव, सम्बन्ध, नाता ।
तअल्लुक़ा—पु० ऐसे ग्रामोंका समूह जो एक दूसरेसे लगे हुए हों। ऐसे ग्रामोंकी जमींदारी। बहुत बड़ा इलाक़ा। तहसील ( दक्षिणमें ) ।
तअल्लुकेदार—पु० तअल्लुकेका जमींदार या मालिक।
तअस्सुब—पु० पक्षपात, तरफदारी, धर्मसम्बन्धी पक्षपात, धार्मिक दुराग्रह ।
तइसा—वि० तैसा, उस प्रकारका ।
तईं—प्रत्य० को, प्रति, से । अ० लिए ।
तई—स्त्री० छिछली कड़ाही जिसमें जलेबी इ० बनाते हैं।
तउ—अ० तब, त्यों ।
तऊ—अ० तो भी. तथापि ।
तक—अ० पर्यन्त, लौं । स्त्री० टक । तराजू । पु० तक्र, मही 'पुनि खीरस्यों चौबिध भात बन्यो, तक तीन प्रकारनि शोभ सन्यो ।' के० २०३
तक़दीर—स्त्री० भाग्य, नसीब । अन्दाजा ।
तकना—सक्रि० ताकना, देखना 'देख री नन्दनन्दन ओर । त्रासतें तनु तृषित भो हरि, तकत आनन तोर।' सू० ६९ । 'मुँह कभी तकते नहीं ।' गुलाब ४७४। शरणमें जाना, आश्रय लेना ( उदे० 'कन्दर' ) ।
तकमा—पु० तमगा, पदक ।
तकरार—स्त्री० झगड़ा, विवाद ।
तकरारी—वि० तकरार करनेवाला ।
तक़रीर—स्त्री० बातचीत । वक्तृता, भाषण ।
तकला—पु० वह सलाई जिसपर सूत लिपटता है। [ तकुआ।
तकली—स्त्री० सूत कातनेका औजार ।
तकलीफ—स्त्री० कष्ट, दुःख ।
तकल्लुफ़—पु० शिष्टाचार ।
तकसीम—स्त्री० बाँटनेका काम, वितरण । भाग ।
तकसीर—स्त्री० कसूर, भूल, गलती ( कबी० ५३४ )
तकाज़ा—पु०वादा पूरा करनेका अनुरोध, प्रेरणा,तगादा
तकाना—सक्रि० ताकनेका काम दूसरेसे कराना ।
तक़ावी—स्त्री० वह ऋण जो राज्यकी ओरसे किसानों

बैल, बीज आदि खरीदने या कुआँ आदि बनवानेके लिए, विशेषतः अकालके समय, दिया जाता है।

तकिया—पु० सिरहाना, उसीसा, गेंडुआ। आश्रयस्थान 'जाहिर जहान भयो साहिजी खुमान वीर साहिनको सरन सिपाहिनको तकिया।' भू० ४। सहारा, भरोसा, आश्रय 'रामके गुलामनिको कामतरु रामदूत मोसे दीन दूबरेको तकिया तिहारियै।' कविता० २५०

तकियाकलाम—पु० मुँहसे बारबार निकलनेवाला शब्द।

तकुआ—पु० ताकनेवाला। देखो 'तकला'।

तक्र—पु० छाँछ, मही।

तक्षक—पु० पताल लोकका एक पुराण वर्णित नाग, सर्प। तक्षण कार्य करनेवाला।

तक्षण—पु० रन्दा करना। लकड़ी, पत्थर आदिपर मूर्त्ति, बेलबूटा इ० बनाना।

तखत, तख्त—पु० सिंहासन, राजगद्दी (उदे० 'अरकना')। चौकी।

तखफीफ—स्त्री० कमी।

तखमीना—पु० अनुमान, अनुमानपत्र।

तखलिया—पु० एकान्त स्थान।

तख्तनशीन—वि० सिंहासनारूढ़, जिसे राजगद्दी प्राप्त हुई हो।

तख्ता—पु० लकड़ीका चौकोर पतला टुकड़ा। ताव।

तख्ती—स्त्री० लिखनेकी पटिया, छोटी पटरी।

तगड़ा—वि० हृष्ट-पुष्ट, बलवान्।

तगण—पु० तीन वर्णोंका वह समूह जिसके अन्तमें लघु वर्ण तथा शुरूके दोनों वर्ण गुरु हों।

तगना—अक्रि० तागा जाना।

तगमा—पु० पदक।

तगर—पु० एक वृक्ष तथा उसकी लकड़ी जो सुगन्धयुक्त होती है।

तगा—पु० तागा, डोरा, सूत (उदे० 'अपरस')।

तगाई—स्त्री० तागनेका काम या मजदूरी।

तगादा—पु० तकाजा।

तगाना—सक्रि० दूर दूरपर मोटी सिलाई कराना। तागा डालकर फँसानेका काम करना।

तगीर—पु० परिवर्तन, तबदीली (रतन० ३६)।

तगीरी—स्त्री० देखो 'तगीर'।

तचना—अक्रि० तपना 'विरह तचे तिय कुचनिलों अँसुवा सकत न आइ।' वि० २३९। जलना, दुःखी होना, 'तच्यो आँच अति विरहकी रह्यो प्रेम रस भीजि।' वि० १५५, (ललित० ८१), 'जाके प्रताप त्रिलोक तचैं···' भाव० ७०

तचा—स्त्री० त्वचा, चमड़ा।

तचाना—सक्रि० जलाना, तप्त करना (रवि० २१)।

तचित—वि० सन्तप्त, दुःखित (गुलाब ७४)।

तच्छक—पु० एक सर्पका नाम। सर्प। नागवायु।

तच्छिन—क्रिवि० उसी क्षण तुरन्त ही।

तज़किरा—पु० चर्चा, जिक्र। वर्णन।

तजन—पु० परित्याग। चाबुक।

तजना—सक्रि० छोड़ना, त्याग देना (रामा० ५१०)।

तजरबा, -रुबा—पु० अनुभव।

तजवीज़—स्त्री० निर्णय, राय, उपाय, प्रबन्ध।

तजवीज़ सानी—स्त्री० किसी फैसलेका उसी अदालतमें पुनर्विचार। नजरसानी।

तज्ञ—वि० जानकार, तत्वविद्।

तटंक—पु० तार्टक, कनफूल नामक आभूषण।

तट—पु० किनारा। क्षेत्र। क्रिवि० पास, समीप 'एक समैं श्री राधिका कृष्ण कान्ति परगास। आन त्रिया तट जान कै मान कियो रसरास।' श्रीभट, (सुजा० ३९)

तटका—वि० टटका, तुरन्तका, ताजा।

तटनी—स्त्री० तटिनी, नदी।

तटस्थ—वि० किनारे रहनेवाला, उदासीन।

तटिनी—स्त्री० नदी।

तटी—स्त्री० नदी। किनारा। समाधि '···जतीनकी छूटी तटी'—राम० २४३

तड़—पु० समाज या जातिके उपविभाग या विभिन्न दल।

तड़क—स्त्री० छप्परके नीचे लगायी जानेवाली एक लकड़ी। तड़कनेकी क्रिया।

तड़कना—अक्रि० आवाजके साथ टूटना, चटकना। क्रुद्ध होना। जोरसे कूदना। जोरसे आवाज करना।

तड़क-भड़क—स्त्री० चमक-दमक, ठाट-बाट।

तड़का—पु० सवेरा। बघार।

तड़काना—सक्रि० 'तड़' शब्दके साथ तोड़ना। क्रोधित करना।

तड़क्का—क्रिवि० तुरन्त, शीघ्र ही।

तड़तड़ाना—सक्रि० तड़तड़ शब्द करना। अक्रि० तड़तड़ शब्द होना।

तड़प—स्त्री० छटपटाहट, चमक। गर्जन।

तड़पना—अक्रि० वेदनासे छटपटाना, तलफना। कूदना फाँदना, गरजना, जोरकी आवाज करना 'लगी तोप तड़पन तेहि अवसर पर्यो निसानन घाऊ।' रघु० १३४

तड़पाना—सक्रि० कष्ट पहुँचाकर व्याकुल करना ।
तड़बंदी—स्त्री० अलग अलग दल या तड बनाना ।
तड़ाक—पु० तड़ाकेकी आवाज । तड़ाग, सरोवर ।
तड़ाक फड़ाक—क्रिवि०तुरन्त । [क्रिवि०तुरन्त,चटपट ।
तड़ाग—पु० सरोवर ।
तड़ागना—अक्रि० कूद-फाँद करना, डींग मारना 'पहुँचैंगे तब कहैंगे वही देसकी सीच। अबही कहा तड़ागिये वेड़ी पायन वीच ।' साखी० ६१
तड़ातड़—क्रिवि० 'तड़तड़' शब्दके साथ । लगातार ।
तड़ित, तड़िता—स्त्री० बिजली ।
तड़िपाना—अक्रि० देखो 'तड़पना', 'जैसे छोटे पिंजरामें कोउ पछी परि तडिपात ।' हरि०
तड़ी—स्त्री० चपत, तमाचा ।
तड़ीत—स्त्री० देखो 'तड़ित' । 'गिरी अचेत ह्वै मनो घने वनै तड़ीतसी ।' के० २९०
तत—वि० उतना । तप्त, गरम । पु० तत्व । यथार्थ बात, सार वस्तु 'ततदरसी जो होय सो सत सार विचारई ।' साखी १३
ततकार, ततकाल—क्रिवि० तुरन्त ( छत्र० ११९ ) ।
ततखन, ततछन—क्रिवि० उसी समय, तुरन्त ।
ततवाउ—पु० वस्त्र बुननेवाला । मकड़ी ।
ततवीर—स्त्री० तदबीर, उपाय, युक्ति ।
ततसार—स्त्री० तपानेकी जगह ।
तताई—स्त्री० गरमी 'वरनि वताई छिति व्योमकी तताई जेठ आयो आतताई पुटपाक सो करतु है ।' सेनापति
ततारना—सक्रि० उष्ण जलसे, या धार देकर धोना ।
तति—वि० विस्तृत । स्त्री० पंक्ति, विस्तार ।
ततुवाऊ—पु० देखो 'ततवाउ' ।
ततैया—स्त्री० भिड़ या बर्रं नामक कीड़ा ।
तत्काल—क्रिवि० तत्क्षण, उसी समय, तुरन्त ।
तत्क्षण—क्रिवि० तत्काल, तुरन्त ।
तत्त—पु० तत्व । सारवस्तु । परमात्मा । यथार्थ बात ।
तत्ता—वि० उष्ण, गरम ।
तत्ताथेई—स्त्री० नाचके शब्द या बोल ।
तत्तोथंबो—पु० झगड़ेकी रोकथाम, बीचबिचाव ।
तत्त्व—पु० वास्तविक स्थिति, असलियत । वे मूल पदार्थ जिनके संयोगसे सृष्टिकी उत्पत्ति होती है पंचभूत ( पृथ्वी, वायु इ० ) ब्रह्म । सिद्धान्त । सार ।
तत्त्वज्ञ—देखो 'तत्त्वदर्शी' ।
तत्त्वज्ञान—पु० दर्शन-शास्त्र, आध्यात्म विद्या ।
तत्त्वतः—क्रिवि० सिद्धान्ततः ( पभू० १० ) ।
तत्त्वदर्शी, तत्त्ववेत्ता—पु० जिसे ब्रह्म और आत्माका ज्ञान हो, दार्शनिक ।
तत्त्वावधान—पु० देखरेख, निरीक्षण ।
तत्पर—वि० उद्यत, तैयार, चतुर ।
तत्पुरुष—पु० एक समास । ईश्वर ।
तत्सम—पु० संस्कृतका वह शब्द जो अविकृत रूपमें प्रयुक्त होता हो ।
तथा—अ० और, इसीप्रकार ।
तथागत—पु० बुद्ध भगवान् ( जीव० ३८२ ) ।
तथापि, तदपि, तद्यपि—अ० तो भी ।
तथ्य—पु० सच्ची बात, सच्चाई, यथार्थता । सार ।
तदबीर—स्त्री० उपाय, उक्ति ।
तदा—क्रिवि० उस समय ।
तदारुक—पु० रोक-थाम, प्रतीकार, अनिष्टके रोकनेका उपाय । दण्ड ।
तद्गत—वि० उसके अन्तर्गत तल्लीन (प्रिय० २५३) ।
तद्गुण—पु० एक काव्यालकार ।
तद्धित—पु०वह प्रत्यय जिसे संज्ञा-शब्दके अन्तमें जोड़नेसे नया शब्द बने । इस प्रकार बना हुआ शब्द ।
तद्भव—पु० संस्कृतके विकृत शब्द जो भाषामें प्रयुक्त होते हैं । वि० संस्कृतसे उत्पन्न ( शब्द ) ।
तद्यपि—अ० तथापि, तो भी ।
तद्रूप—वि० वैसाही, समान, तदाकार ।
तन—पु० तनु, देह, शरीर । क्रिवि० तरफ, ओर ( उदे० 'जोयना', सूबे० ७६, ३८, रामा० २५५ ) ।
तनक—वि० थोड़ा, अल्प, छोटा ( भ्र० १, सूबे० ११४, १२७ ), 'तनक तनक पाँइ चलिहौ कैसे आवत है है राति ।' सूबे० ८५
तनकना—अक्रि० तिनकना ठहरो सुनलो बात हमारी, तनक न जाओ आओ भी' ( कानन कुसुम ६१ ) ।
तनक़ीह—स्त्री० जाँच, विचार । किसी मामलेके विवादग्रस्त तथा विचारणीय विषयोंका स्थिर किया जाना ।
तनखाह, तनख़्वाह—स्त्री० वेतन, निश्चित समयके बाद मिलनेवाला पारिश्रमिक ।
*तनगना—अक्रि० तिनकना, चिढ़ना, नाराज़ होना*
तनजेब—स्त्री० बढ़िया महीन मलमल ।

तनज्जुल-पु०, तनज्जुली—स्त्री० अवनति, ह्रास। वेतन या पदका घटना।
तनतनहा—क्रिवि० बिलकुल अकेला।
तनतनाना—अक्रि० शान या क्रोध दिखलाना।
तनदिहि—स्त्री० मेहनत, उद्योगशीलता, प्रयत्न।
तनत्राण,-त्रान—पु० कवच ( राम० १४५ )।
तनना—अक्रि० खूब खिंचा रहना, फैलना 'फूलनेको सुवितान तन्यो वर। कञ्चनको पलिका यक ता तर।' के० १९१। अकड़के साथ सीधा खड़ा होना, अकड़ना, ऐंठना। किसी ओर खिंचना या प्रवृत्त होना।
तनपात—पु० शरीरपात, मृत्यु।
तनमय—वि० लगा हुआ, मग्न, दत्तचित्त।
तन्मनस्क—वि० तल्लीन, तन्मय।
तनय—पु० पुत्र। तनया—स्त्री० पुत्री।
तनरुह—पु० रोआँ, लोम। पुत्र। पंख।
तनसुख—पु० एक तरहका फूलदार कपड़ा 'छुद्रघण्टिका कटि लहँगा रँग तन तनसुखकी सारी।' सू०
तनहा—वि० अकेला। [( अ० २५ के० १६५ )।
तना—पु० वृक्षका धड़। क्रिवि० तन, तरफ।
तनाउ, तनाऊ—पु० तनाव। खिंचाव (मति० २४०)।
तनाकु—क्रिवि० तनिक, जरा। [ फैलाव।
तनाज़ा—पु० झगड़ा, विवाद। वैर, दुश्मनी।
तनाना—सक्रि० ताननेका काम करना।
तनाय, तनाव—पु० तननेकी क्रिया या भाव। रस्सी 'मानो गगन तम्बू तन्यो ताके सपेद तनाय हैं।' भू० ७
तनि, तनिक—क्रिवि० जरा। वि० थोड़ा, अल्प, छोटा। 'इहाँ हुती मेरी तनिक मडैयाको नृप आइ छयो।'
तनिमा—स्त्री० पतलापन, छहरापन। [ सुबे० ४३४
तनियाँ,-या—स्त्री० लँगोटी, कछनी ( गीता० २९२ )। चोली। तनीदार कुरता 'दिना चार ते पहिरन सीखे पट पीताम्बर तनियाँ।' अ० ६१
तनी—क्रिवि० देखो 'तनि'। वि० तनिक। स्त्री० डोरेकी तरहका बन्द, बन्धन।
तनु—पु० शरीर। चमड़ा। वि० दुबला। थोड़ा। बारीक 'अति तनु धनु रेखा नेक नाकी नजाकी।' राम० ३२९
तनुक—वि०, क्रिवि० देखो 'तनिक'। पु० शरीर।
तनुज, तनूज—पु० लड़का, पुत्र।
तनुता—स्त्री० कृशता, छोटाई।

तनुत्र-त्राण,-त्रान—पु० कवच।
तनुरुह, तनूरुह—पु० लोम, रोंगटा, बाल। पुत्र। पंख।
तनूजा—स्त्री० पुत्री, लड़की।
तनेना—वि० खिंचा हुआ, वक्र (रवि० २६)। रुष्ट 'क्यों एनी नैनी कहे परति तनेनी बाल।' कलस १९६
तनै—पु० तनय, पुत्र ( उदे० 'ऐल' )।
तनैया—स्त्री० तनया, पुत्री 'बाजत ताल रवाब और बहु तरनि-तनैया कूलहु।' स्वामी हरिदास
तनोज—पु० रोआँ। पुत्र।
तनोरुह—पु० देखो 'तनुरुह'। 'विलोकि सिरोरुह सेतु समेत तनोरुह कोविद यों गुण गायो।' के० ६७
तन्मय—वि० तल्लीन, लगा हुआ।
तन्मयता—स्त्री० तल्लीन।
तन्मात्र-पु०, तन्मात्रा—स्त्री० पञ्च महाभूतोंका आदि सूक्ष्म रूप—शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गन्ध (सांख्य)।
तन्वी—वि० स्त्री० कृश और कोमल अंगोंवाली।
तप—पु० तपस्या। नियम। अग्नि। गरमी, ज्वर।
तपकना—अक्रि० धड़कना। चमकना 'न जाने तपक-तड़ितमें कौन मुझे इङ्गित करता तब मौन' पल्लव ४७
तपती—स्त्री० सूर्यपत्नी (छाया), सूर्य कन्या।
तपन—पु० सूर्य। स्त्री० गरमी, जलन, धूप।
तपना—अक्रि० गरम होना। सन्तप्त होना, जलना, दुःख सहना 'तोलौं तू कहूँ ही जाय तिहूँ ताप तपिहै।' विन० २०७, (उदे० 'अवाँ')। तेजी या प्रताप दिखाना 'इहाँ इन्द्र अस राजा तपा।' प० १०१, 'सेरसाहि देहली सुलतानू। चारिउ खण्ड तपै जस भानू।' प० ५। तपस्या करना। सक्रि० पकाना 'सूरज जेहि कै तपै रसोई।' प० १२३
तपनि—स्त्री० जलन, ताप 'कोटि जतन कीजै तउ तनकी तपनि न जाय।' वि० २७४, ( उदे० 'अरदास' )
तपरितु—स्त्री० ग्रीष्म ऋतु (कलस २०९) [ःतपस्या।
तपश्चरण—पु०, तपश्चर्या—स्त्री० तपका आचरण,ः
तपसा—स्त्री० तपस्या 'लघु, दीरघ तपसा अरु सेवा, स्वामिधर्म सब जगहिं सिखाये। सु० ४५
तपसाली—पु० तपस्वी।
तपसी—पु० तपस्वी। स्त्री० एक मछली।
तपस्या—स्त्री० तप, व्रतचर्या। [ ःस्त्री० एक मछली।
तपस्वी—पु० तपस्या करनेवाला। सीधा, दयाका पात्र।ः

तपा—वि० तपस्यामें मग्न । पु० तपस्वी 'काहुहि लागि भयेउ है तपा ।' प० १२०, ( ५५, ७६ भी )

तपाक—पु० जोश, उत्साह, तेजी ।

तपानल—पु० तपोजनित तेज ।

तपाना—सक्रि० गरम करना, जलाना, दुःख देना । तरसाना 'दासन कहँ न तपावहु राजा ।' प० १५९

तपावंत—पु० तपस्वी ।

तपित—वि० तप्त, उष्ण ।

तपिया—पु० तपस्वी, तप करनेवाला 'जपिया तपिया बहुत हैं शीलवन्त कोई एक ।'साखी१५०। एक वृक्ष ।

तपिश—स्त्री० गरमी, आँच ।

तपी—पु० तपस्वी ।

तपेदिक—पु० जीर्णज्वर । यक्ष्मा । क्षयरोग ।

तपेला—पु० भट्टी, आँवा 'तनमन कीन्हें विरहिणीके तपेला हैं ।' रत्ना० १७३

तपोधन,-धर्म,-निधि—पु० तपस्वी ।

तपोभूमि-स्त्री०, तपोवन—पु० तपस्या करनेके लिए उपयुक्त स्थान या वन ।

तप्त—वि० गरम, जलता हुआ, दुःखी ।

तप्प—पु० तप, तपस्या ।

तफरका—पु० विरोध ।

तफरीक—स्त्री० जुदाई फर्क । बँटवारा ।

तफरीह—स्त्री० हँसी, विनोद । खुशी, आराम । ताज़गी । सैर ।

तफसील—स्त्री० फेहरिस्त, ब्योरा ( प० ३८ ) ।

तब—क्रिवि० उस समय, इस कारण, इसीसे ।

तबक़—पु० लोक, तल । तह । चाँदी या सोनेका वरक़ ।

तबक़गर, तबकिया—पु० चाँदी सोनेके पत्तर बनानेवाला

तबदीली—स्त्री० बदली, परिवर्तन ।

तबल—पु० ढका, नगाड़ा 'किछु कहि चला तबल देइ डगा ।' प० १०

तबलची—पु० तबला बजानेवाला ।

तबला—पु० एक बाजा ।

तबाह—वि० जो नष्ट हो गया हो, चौपट, बर्बाद ।'

तबाही—स्त्री० बर्बादी, नाश ।

तबीअत, तबीयत—स्त्री० मन, जी, हृदय, समझ ।

तबीअतदार, तबीयतदार—वि० भावग्राही, भावुक, सहृदय ।

तबीब—पु० चिकित्सक, यूनानी चिकित्सक, हकीम ।

तबेला—पु० घुड़साल '... रारि सी मची है त्रिपुरारिके तबेलामें'—भूधर । एक पात्र 'करवा, कौंपर पानदान, चौघरा तबेला ।' सुजा० १७२

तब्बर—पु० पुत्र ( भू० १५९ ) ।

तमंचा—पु० पिस्तौल । एक तरहकी छोटी बन्दूक ।

तम—पु० अंधकार, पाप, अज्ञान, क्रोध, तमोगुण ।

तमक—पु० स्त्री० उमंग, आवेश 'कवि मतिराम लोने लोचन लपट लाज अरुण कपोल काम तेजकी तमक तें ।' रस० ३१ । क्रोध 'तमक नई यह बैसकी तज फिरनो सब धाम ।' चाचा हित० । तीक्ष्णता, तीव्रता ।

तमकना—अक्रि० क्रोधके आवेशमें आकर कूद फाँद करना, कुपित होना, क्रोधकी अधिकता दिखाना 'तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं ।' रामा० १३६, कटकटान कपि कुञ्जर भारी । दुहुँ भुजदंड तमकि महि मारी ।' रामा० ४६६

तमगा—पु० पदक, मेडल ।

तमचर—पु० निशाचर, राक्षस, उल्लू ।

तमचुर,-चूर,-चोर—पु० मुर्गा, ( उदे० 'रौर' ) 'भोर भये बोले पुर तमचुर मुकुलित विपुल विहंग ।' प्राणनि कवि । 'घिरिनि परेवा गीउ उठावा । चहै बोल तमचूर सुनावा ।' प० २३८

तमच्छन्न—वि० अंधकारसे घिरा हुआ, अंधकारसे आच्छादित ।

तमतमाता—वि० चमकता हुआ, गर्म ।

तमतमाना—अक्रि० चमकना, चेहरा लाल होना ।

तमन्ना—स्त्री० ख्वाहिश ।

तमयी—स्त्री० रात्रि 'केशनि ओरनि सीकर रमैं । ऋक्षनिको तमयी जनु बमैं ।' के० २६५

तमलेट—पु० लोहे या टीनका बरतन जिसपर चीनी मिट्टी चढ़ी हो ।

तमश्चरिता—वि० अंधकारमें चलनेवाली, 'देखती तमश्चरिता छवि वेला कीन्हें अमिताएँ निरुपमिता' अ० मि० ८९ ।

तमस—पु० अँधेरा, अज्ञान, पाप । तमसा नदी ।

तमस्सुक—पु० दस्तावेज़, ऋणपत्र ।

तमहीद—स्त्री० प्रस्तावना, उपक्रम ।

तमा—स्त्री० रात्रि । तमअ, लालच, इच्छा 'खानेको हमा रहै न काहूकी तमा रहै जो गाँठ में जमा रहै तो खातिरजमा रहै ।' ग्वाल कवि

तमाकू, तमाखू—पु० एक पौधा या उसकी पत्ती, सुरती।
तमाचा—पु० थप्पड़, चपत, कराघात।
तमादी—स्त्री० अवधिका समाप्त होना।
तमाम—वि० कुल, सारा। समाप्त।
तमामी—पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा (रत्ना० ११)।
तमारि—स्त्री० तँवार, घुमटा, चक्कर। पु० सूर्य।
तमाल—पु० काली पत्तियोंवाला एक पेड़। खैरका वृक्ष।
तमाशबीन—पु० तमाशा देखनेवाला।
तमाशा—पु० मनोरञ्जक दृश्य, कौतुक, खेल।
तमाशाई—पु० तमाशा देखनेवाला (गुलाब २६१)
तमिस्र—पु० अन्धकार।
तमिस्रा—स्त्री० अँधेरी रात।
तमी—स्त्री० रात्रि, रजनी।
तमीचर—पु० निशाचर॥
तमीज़—स्त्री० भला बुरा समझनेकी शक्ति, बुद्धि, अदब।
तमीपति,-श—पु० रजनी-पति, चन्द्रमा (कलस २१७)।
तमोगुण—पु० प्रकृतिके तीन गुणोंमेंसे एक। काम,क्रोध, आलस्यादिकी प्रवृत्ति।
तमोगुणी—वि० तामस वृत्तिवाला।
तमोघ्न—पु० तम दूर करनेवाला, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, दीपक, विष्णु, शिव।
तमोर—पु० ताम्बूल, पान 'सुन्दर सुघर कपोल हो, रहे※
तमोरी—पु० तम्बोली। [※तमोर भरिपूर। सू० १६२
तमोल—पु० देखो 'तमोर'। पानका बीड़ा 'तज्यो तेल तमोल भूषन, अङ्ग वसन मलीन।' सू०, (व्रज०२७), पुनि राता मुख खाइ तमोला।' प० १४२
तमोहर—वि० तम दूर करनेवाला। सूर्य या चन्द्रमा।
तय—वि० निश्चित, निर्णीत, समाप्त।
तयना—अक्रि० गरम होना, तपना, पीड़ित होना, दुःख, क्रोध इ० से जलना 'त्राहि तुलसीस, त्राहि तिहूँ ताप तयो हौं।' विन० ४२४
तयार—वि० तैयार, उद्यत, प्रस्तुत, दुरुस्त।
तरंग—स्त्री० लहर, उमङ्ग, मौज।
तरंगवती, तरंगिणी, तरंगिनि—स्त्री० नदी।
तरंगायित—वि० जो तरङ्गयुक्त किया गया हो।
तरंगित—वि० लहरें लेता हुआ। लहराता हुआ।
तरंगी—वि० तरङ्गयुक्त, लहरी, मनमौजी 'नाचहिं गावहिं गीत, परम तरंगी भूत सब।' रामा० ५६
तर—क्रिवि० नीचे (उदे० 'उपराना'), 'तरतर कह हरिकथा प्रसंगा।' रामा० ५६७। पास, किनारे 'मन यह करत विचार गोमती तर गये।' सू० २६७। पु० तरु, पेड़ 'तरतर सुफर न होत, नारि पतिव्रता न घर-घर।'नरहरि। गति। आग। वि० आर्द्र, हराभरा, ठण्डा।
तरई—स्त्री० तारा, नक्षत्र 'जनहुँ चाँद सँग तरई ऊईं।' प० १६० (२७ मी)
तरक—स्त्री० तड़क, तड़कनेकी क्रिया। पु० तर्क, उक्ति (भ्र० ६८) चमत्कारपूर्ण कथन। विचार 'मनमहु तरक करइ कपि लागा।' रामा० ४१७
तरकना—अक्रि० तर्क करना, अनुमान करना, विचार करना 'चरित रामके सगुन भवानी। तरकि न जाहिं बुद्धि बल बानी।' रामा० ४९२। कूदना, लपकना, उछलना (सू० १४९), 'समर बाँकुरा वालिसुत तरकि चढ़ेउ कपि खेल।' रामा० ४७४। देखो 'तड़कना', (उदे० 'झरझराना')। तरक जाना = फूटना, दरक जाना (दास १००)।
तरकश,-कस—पु० तूणीर, तीर रखनेका घरुआ।
तरकसी—स्त्री० छोटा तरकस।
तरका—पु० उत्तराधिकारसे मिलनेवाली जायदाद। ऐसी जायदादका हिस्सा। देखो 'तड़का'।
तरकारी—स्त्री० सब्ज़ी, शाक।
तरकी—स्त्री० कानका एक गहना, देखो 'तरकुली'।
तरकीब—स्त्री० उपाय, युक्ति, तरीक़ा। मेल। रचना।
तरकुली—स्त्री० कानमें पहिननेका फूलके ढङ्गका गहना, तरकी, ताटङ्क 'नील निचोल, तरकुली कानन, सिर सिन्दूर, मुख पान।' हरि०
तरक़्क़ी—स्त्री० उन्नति बढ़ती।
तरखा—पु० प्रबल प्रवाह, तीव्र धारा।
तरछाना—अक्रि० आँखसे संकेत करना।
तरजना—अक्रि० डाँट-डपट बताना, क्रोध-भाव दिखाना 'भिरे उभौ वाली अति तरजा। मुठिका मारि महाधुनि गरजा।' रामा० ३९९ [※ दर।
तरजनी—स्त्री०अँगूठेके बादवाली उँगली (रामा० १४८)※
तरजीला—वि० क्रोधयुक्त, उग्र (रत्ना० २२६)।
तरजीह—स्त्री० महत्वमें अधिक होना, प्रधानता, प्रशस्तता।
तरजुमा—पु० उल्था, अनुवाद।

तरजौंहा—वि० क्रोधपूर्ण ( रत्ना० २०१ )।
तरण—पु० पार जाना, नौका।
तरणि—पु० सूर्य, आक। स्त्री० नौका।
तरणिजा,-तनया,-तनूजा—स्त्री० यमुना।
तरणितनय -सुत—पु० शनि। यम। सुग्रीव। कर्ण। [ अश्विनी कुमार।
तरणी—स्त्री० नाव।
तरतराता—वि० (वह पकवान) जिसमेंसे घी टपकता हो।
तरतराना—अक्रि० तोड़ने जैसा शब्द करना ( सूवे० १२० )। तड़तड़ाना ( सुजा० १८ )।
तरतीव—स्त्री० सिलसिला, क्रम।
तरदीद—स्त्री० खण्डन, मंसूखी।
तरद्दुद—पु० चिन्ता, फिक्र, सोच।
तरन—पु० तरनेकी क्रिया, उद्धार। तरकी, तरौना।
तरनतारन—पु० उद्धार करनेवाला। उद्धार।
तरना—सक्रि० उद्धार पाना ( सू० १५० )। तलना ( उदे० 'खाँदर' )। पार करना 'मोरे मन अस होत विचारा। तरत गोमती सैन्य अपारा।' रघु० २६७। अक्रि० पार होना, मुक्ति पाना। तैरना, उतराना। 'श्री रघुवीर प्रताप तें सिन्धु तरे पापान।' रामा० ४५०, 'पाहन तरे,काठ जो बूड़ै तौ हम माने नीति।' भ्र० ५२
तरनि, तरन्नि—पु० सूर्य 'शिव प्रताप तव तरनि सम, अरि पानिप हर मूल।' भू० १७। स्त्री० नौका 'तरनि, जगत जलनिधि तरनि, जै जै आनँद ओक।' भू० २।
तरनिजा, तरनितनूजा—स्त्री० यमुना नदी 'बसत त्रिविक्रमपुर सदा, तरनि तनूजा तीर।' भू० १०
तरनी—स्त्री० नौका। खोंचा इ० रखनेका आसन।
तरपत—पु० सुभीता, आराम।
तरपन—पु० पितरों इत्यादिको तृप्त करनेके लिये पानी देनेकी क्रिया। सन्तुष्ट करनेका काम।
तरपना—अक्रि० देखो 'तड़पना', 'तरिता तरपै पुनि लाल छटामें घिरी।' पजनेस
तरपर—क्रिवि० एकके बाद दूसरा, ऊपर-नीचे।
तरपीला—वि० चमकनेवाला ( रत्ना० २७९ )।
तरफ़—स्त्री० ओर, पक्ष, बाजू।
तरफ़दार—वि० समर्थक, पृष्ठ पोषक, पक्षपाती।
तरफराना—अक्रि० छटपटाना ( उदे० 'तुटकना', 'जनावर' ) पीड़ा इत्यादिसे व्याकुल होना।
तर-बतर—वि० बिलकुल भीगा हुआ, शराबोर।
तरबूज़—पु० एक वेल या उसका फल।
तरबूज़ा—पु०...ताज़ा फल ( उदे० 'सफरी' )।
तरबोना—सक्रि० तर करना ( सूसु० ६ )। अक्रि० तर होना, डूबना, भींगना 'पर निन्दा रसनाके रसमें अपने पर तरबोये।' सूवे० १९
तरभर—स्त्री० देखो 'तराभर'। तड़ातड़ आवाज़। सब-वली 'बजी बँदूखैं तरभर माची।' छत्र० १४४
तरमीम—स्त्री० सुधार, संशोधन।
तरराना—सक्रि० ऐंठना, मरोड़ना 'मूछन सहित पगा तरराने।' छत्र १३४
तरल—वि० चञ्चल, क्षिप्रगामी 'पठयो अवध तुरत हल कारे तरल तुरङ्ग चढ़ाई।' रघु० १०। क्षणभगुर। कान्तिमान्। द्रव, बहनेवाला, पोला। पु० हार। हार की मध्यमणि। घोड़ा। पेंदा।
तरलता, तरलाई—स्त्री० द्रवत्व। चञ्चलता।
तरलित—वि० द्रव बना हुआ, प्रवाहशील, चञ्चल।
तरवन—पु० तरकी या कर्णफूल।
तरवर—पु० बड़ा वृक्ष 'तरवर ते इक तिरिया उतरी, उसने खूब रिझाया।' खुसरो
तरवरिया, तरवरिहा—पु० तलवार चलानेवाला।
तरवा—पु० पैरके नीचेका हिस्सा, पादतल।
तरवार—स्त्री० तलवार, खड्ग।
तरवारि—स्त्री० तलवार ( रामा० २१२ )।
तरस—पु० दया, रहम।
तरसना—अक्रि० किसी वस्तुको न पानेसे व्याकुल होना, उत्कण्ठित होना 'त्यों रघुपति-पद-पदुम परसको तनु पातकी न तरस्यो।' विन० ४०१। सक्रि० तरासना, काटना 'तिनही तिनही लखि लोभ डसै। पटतन्तुन उन्दुर ज्यों तरसै।' के० ७०
तरसाना—सक्रि० किसी वस्तुके लिये व्याकुल करना, [ ललचाना।
तरसौंहाँ—वि० तरसनेवाला।
तरह—स्त्री० भाँति, प्रकार, ढङ्ग, बनावट, उपाय। तरह देना = जाने देना, ध्यान न देना।
तरहटी—स्त्री० नीची जगह, तराई 'मनो मेरुकी तरहट भयो सितासित संग।' रस० ५७
तरहदार—वि० सुन्दर, जिसकी बनावट या चाल सुन्दर लगे। सजधजका, शौकीन।
तरहर—क्रिवि० नीचे 'शिर तें पावम पादुका लै की

भरत विचित्र। चरण कमल तरहरि धरी हँसि पहिरी जगमित्र।' के० २६। वि० नीचा, निम्न श्रेणीका।
तरहारि—क्रिवि० नीचे 'पाँच चौक मध्यहि रचे, सात लोक तरहारि।' के० १६९
तरहुँड—वि० नीचा 'दृष्टि तरहुँडी हेर न आगे। प० २२९
तरहेल—वि० हारा हुआ, अधीन 'पुहुप-बास औ पवन अधारी कवल वोर तरहेल।' प० २१७
तराई—स्त्री० पहाड़के नीचेकी जगह, घाटी। तारा 'अनवट विछिया नखत तराई।' प० ५२, (१८,१४५)
तराजू—पु० तुला, तौलनेका यंत्र।
तराटक—पु० त्राटक, योग शास्त्रकी एक मुद्रा 'त्रिकुटी सँग भ्रूभंश तराटक, नैन नैन लगि लागै।' भ्र० ३३
तराना—पु० एक विशेष गाना। गीत। एक विशेष लय (?)
तराप—स्त्री० तड़प, गर्ज, तड़ाका; बन्दूक इत्यादिकी आवाज़ 'सैद अफगान सेन सगरसुतन लागी कपिल सराप लौं तराप तोपखानेकी।' भू० १७८
तरापा- पु० रोना-पीटना, हाहाकार।
तराबोर—वि० अच्छी तरह भींगा हुआ।
तराभर—स्त्री० तड़ातड़ आवाज़ 'दुहुँ दिसि तुपक तराभर माची।' छत्र० ९४
तरायला—वि० तरल, तेज़, चपल, 'आगे आगे तरुन तरायले चलत चले तिनके अमोद मन्द मन्द मोद सकसै।' भू० १२६
तरारा—पु० निरंतर गिरनेवाली जलधारा। छलांग।
तरावट—स्त्री० शीतलता, नमी।
तराश—स्त्री० काट। बनावट, ढङ्ग, तर्ज़।
तराशना—सक्रि० काटना, छीलना, कतरना।
तरासना—सक्रि० त्रस्त करना, डरवाना।
तराहीं—क्रिवि० नीचे 'आम जो फरि कै नवै तराहीं।' [प० १८४
तरिको—पु० तरौना, ताटंक, तरकी।'
तरिता—स्त्री० विद्युत्, तड़ित्, विजली (उदे० 'तरपना')। भाँग। अँगूठेके पासवाली अँगुली।
तरिवन—पु० देखो 'तरवन'। 'आभा तरिवन लालकी परी कपोलनि आन।' ललित० ५०
तरिवर—पु० देखो 'तरवर', (उदे० 'काऊ')।
तरिहँत—क्रिवि० नीचे।
तरी—स्त्री० कर्णफूल, तरौना। जूतेका तला' जूती 'जनु पहिरी तनत्राणको माणिक तरी बनाय।' के० २३७। ठंढक, गीलापन। तरहटी, कछार। नाव, तरणी।
तरीक़ा—पु० प्रकार, ढंग, रीति, युक्ति।
तरु—पु० वृक्ष, पेड़।
तरुण—वि० युवा, नया।
तरुणता तरुणाई—स्त्री० यौवन, युवावस्था।
तरुणी, तरुनी—स्त्री० युवती।
तरुन—वि० युवा, नूतन।
तरुनई, तरुनाई—स्त्री० युवावस्था 'विधवा होइ पाइ तरुनाई।' रामा० ३६१
तरुनापन, तरुनापा—पु० तरुणावस्था, जवानी 'बालापन खेलत ही खोयो तरुनापन अलसात।' सू० २५, (प० ४), मिला न तरुनापा जग हूँढ़ा।' प० ४
तरुपतिका—स्त्री० लता 'किसलय-वसनानव-वय-लतिका, मिली मधुर प्रिय उर तरु पतिका' गीतिका ३
तरुबाँही—स्त्री० वृक्षकी भुजा, शाखा।
तरेंदा—पु० पानीमें उतराता हुआ काठ या अन्य वस्तु जिसके सहारे कोई पार हो सके।
तरेट—पु० पेड़।
तरेटी—स्त्री० घाटी, तराई, तलहटी।
तरेरना—सक्रि० नेत्रोंका इस तरह संचालन करना जिससे अप्रसन्नता या असम्मति प्रकट हो 'सुनि कठोर बानी कपि केरी। कहत दशानन नयन तरेरी।' रामा० ४६०
तरैया—स्त्री० नक्षत्र, तारा 'कहा बापुरो भानु है तप्यो तरैयन खोय।' रहीम ( ककौ० २७५ )
तरोई—स्त्री० एक लम्बा फल जिसकी तरकारी बनती है।
तरोवर—पु० देखो 'तरवर', ( सूबे० २२९ )।
तरौंछ—स्त्री० देखो 'तलछट'।
तरौंटा—पु० चक्कीका नीचेवाला पत्थर।
तरौंस—पु० किनारा, तीर ( उदे० 'खरौंहा' )।
तरौना—पु० कानका भूषण विशेष, ताटंक, तरकी 'प्रभा तरौना लालकी परी कपोलन आनि।' रस० ५४
तर्क—पु० युक्ति दलील। व्यंग्य, चतुरतापूर्ण बात।
तर्कणा—स्त्री० दलील, विचार। [ रवि० ३७
तर्कना—स्त्री० विचार, युक्ति। अक्रि० तर्क करना।
तर्कवाद—पु० विवादके सिद्धान्त।
तर्कवितर्क—पु० सोच-विचार, बहस।
तर्कश—पु० देखो 'तरकस'।

तर्कशास्त्र—पु० दर्शनका एक अंग, न्यायशास्त्र ।
तर्कसी—स्त्री० तूणीर, तरकस 'कटि मूल श्रौननि तर्कसी भृगुलात सी दरसैं हिये ।' राम० १५२
तर्काभास—पु० ऐसा तर्क जो देखनेमें ठीक लगे पर विचारमें युक्तिसंगत न ठहरे । हेत्वाभास ।
तर्ज़—पु० ढंग, शैली, प्रकार ।
तर्जन—पु० धमकी, डाँट डपट, गुस्सा ।
तर्जना—सक्रि० डपटना, डाँटना 'नाना अस्त्रारेन्ह भिरहिं बहु विधि एक एकन्ह तर्जहीं ।' रामा० ४१६। अक्रि० क्रोध प्रकट करना, क्रोधसे तड़पना या उछल कूद करना 'आवत देखि विटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महा धुनि गर्जा ।' रामा० ४२४
तर्जनी—स्त्री० अँगूठेके पासवाली उँगली ।
तर्जुमा—पु० अनुवाद, उल्था ।
तर्पण—पु० देखो 'तरपन' ।
तर्खोना—पु० देखो 'तरौना' ।
तल—पु० तला, पेंदा, पाँवका तलवा, सतह, हथेली ।
तलक—अव्य० तक, पर्यन्त ( पूर्ण २५८ ) ।
तलकीन—स्त्री० शिक्षा, तालीम ।
तलघरा—पु० ज़मीनके नीचेकी कोठरी ।
तलछट—स्त्री० पानी इ० के नीचे जमा हुआ मैल ।
तलना—सक्रि० घी अथवा तेलमें भूनना या पकाना ।
तलप—पु० शय्या । अटारी ।
तलपना, तलफना—अक्रि० दुःखसे व्याकुल होना, छटपटाना 'जैसे जल विन मीन तलपै ..।' कबीर१६४
तलफ—वि० नष्ट । स्त्री० कष्ट ( उदे० 'तलावेली' ) ।
तलब—स्त्री० बुलाहट (कबीर १७०) । माँग,चाह । वेतन
तलबाना—पु० गवाह तलब करानेका खर्च । समयपर मालगुजारी न जमा करनेपर लिया जानेवाला तावान ।
तलवेली—स्त्री० प्रबल उत्कंठा, आतुरता, छटपटाहट, बेचैनी, 'संग ना सहेली, वैस नवल अकेली, तन परी तलवेली महा लायो मैन सरु है ।' सुखदेव मिश्र
तलमलाना—अक्रि० व्याकुल होना, छटपटाना ।
तलवा—पु० पाँवके नीचेका भाग ।
तलवार—स्त्री० कृपाण, खड्ग ।
तलहटी—स्त्री० पहाड़के नीचेकी ज़मीन ।
तला—पु० नीचेका हिस्सा, पेंदा ।
तलाई—स्त्री० देखो 'तलैया' ।
तलाक़—पु० विवाह-विच्छेद ।
तलातल—पु० नीचेका एक लोक ।
तलाव—पु० तालाब, पोखरा ।
तलावेली—स्त्री० देखो 'तलवेली', 'कहा कहौं लाख तलावेलीकी तलफ पर्यो वाल अलबेलीको वियोगी मन लाजको ।' ललित० ९१
तलामली—स्त्री० देखो 'तलवेली', 'तलामली परिजात घट निरखत स्याम विकास ।' ललित कि०(ब्रज५११)
तलाव—पु० देखो 'तालाब' ।
तलाश—स्त्री० खोज, पता, अनुसन्धान, चाह ।
तलाशना—सक्रि० खोजना ।
तलाशी—स्त्री० छिपाई हुई वस्तुको ढूँढ़ना । खोज । [अन्वेषण ।
तली—स्त्री० पेंदी । पादतल, हथेली ;
तलैटी—स्त्री० पेंदी । देखो 'तलहटी' ।
तले—क्रिवि० नीचे ।
तलैया—स्त्री० छोटा तालाब ।
तलौंछ—स्त्री० देखो 'तलछट' ।
तलौवन—पु० रङ्ग बदलना, मत-परिवर्त्तन (सेवा०१९) ।
तल्प—पु० शय्या । अटारी ।
तल्ला—पु० भितल्ला, अस्तर, जूतेके नीचेका हिस्सा । पास,
तल्लीन—वि० ( किसी विषयमें ) लगा हुआ, निमग्न ।
तव—सर्व० तुम्हारा ।
तवक्का—पु० आशा, भरोसा ।
तवज्जह—पु० ध्यान ।
तवना—अक्रि० देखो 'तयना', ( विन० ३३९ ) ।
तवनी—स्त्री० छोटा तवा ।
तवा—पु० रोटी इ० पकानेके लिए लोहेका गोल छिछला [पात्र ।
तवाज़ा—पु० दावत, आदर-सत्कार ।
तवायफ़—स्त्री० नर्तकी, रंडी ।
तवारा—पु० ताप, जलन ।
तवारीख—स्त्री० इतिहास ।
तवालत—स्त्री० झञ्झट । लम्बाई । अधिकता ।
तशखीस—स्त्री० निर्द्धारण, निश्चय । रोगका निदान ।
तशरीफ़—स्त्री० बड़ाई, महत्व, सम्मान ।—रखना = बैठना, आसीन होना, विराजना(आदरार्थ) ।
= होना ।—लाना = आना,पधारना ।—ले जाना, प्रस्थान करना ।
तश्त—पु० छिछला थाल, परात ।

तश्तरी—स्त्री० छोटा तश्त या थाली, रिकाबी।
तष्टी—स्त्री० एक तरहकी रकाबी 'कटोरा डबरा चमचा तष्टी प्रभृत सब सोना रूपा के किए।' अष्ट० २२।
तस—वि० तैसा। क्रिवि० तैसा, वैसा।
तसकर—पु० तस्कर, चोर ( सू० २५ )।
तसकीन—स्त्री० आराम, शान्ति। इतमीनान, समाधान, सान्त्वना, तसल्ली।
तसदीक़—स्त्री० सचाईकी जाँच, निश्चय, समर्थन।
तसदीह—स्त्री० दुःख तकलीफ़।
तसबी,तसबीह—स्त्री० माला, सुमिरनी हाथ तसल्लीबीह लिये प्रात उठै बन्दगीको आपही कपट रूप कपट सु जपके।' भू० १५६, ( उदे० 'कितेब' )
तसमा—पु० चमड़ेका फीता।
तसला—पु० कड़ाही जैसा एक बरतन।
तसलीम—स्त्री० सलाम, नमस्कार। स्वीकार। समर्पण।
तसल्ली—स्त्री० सान्त्वना, धैर्य।
तसवीर—स्त्री० चित्र।
तस्कर—पु० चोर।
तहँ, तहँवाँ, तहाँ—क्रिवि० वहाँ। उस जगह।
तह—स्त्री० परत। तली।
तहक़ीक—स्त्री० यथार्थताकी जाँच, पूछताछ, तसदीक।
तहक़ीकात—स्त्री० जाँच, अनुसन्धान।
तहख़ाना—पु० भुइँधरा, तलघरा।
तहज़ीब—स्त्री० सभ्यता, शिष्टता, शिष्ट व्यवहार।
तरेपंच—पु० पगड़ीके नीचेका हिस्सा।
तहदरज़—वि० बिना उपयोगमें लाये„ज्योंका त्यों रखा हुआ ( कपड़ा आदि )।
तहना—अक्रि० दहना, क्रुद्ध होना। [ वाला महसूल।
तहबज़ारी—स्त्री० बाजारमें सौदा बेचनेपर लिया जाने-
तहरी—स्त्री० हरी मटरके दानोंकी खिचड़ी 'तहरी पाकि, लौंग और गरी। परी चिरौंजी और खरहरी।'प०२७३ चावल और बरीकी खिचड़ी।
तहरीर—स्त्री० लिखाई, लिखावट, लिखित बात।
तहरीक—स्त्री०हरकत देना, बहकाना, उत्तेजन,कोशिश।
तहरीरी—वि० लिखित। [ आपत्ति भय।
तहलका—पु० खलभली, गुलगपाड़ा। मरण, तबाही,
तहवील—स्त्री० धरोहर, जमा, अमानत।
तहसनहस—वि० ध्वस्त-विध्वस्त।
तहसील—स्त्री० लगान, महसूल आदि वसूल करनेकी क्रिया, वसूली। किसी जमींदारकी सालाना आमदनी। तहसीलदारकी कचहरी। जिलेका वह भाग जो तहसीलदारके अधीन हो।
तहसीलदार—पु० लगान वसूल करनेवाला कर्मचारी, कारिन्दा। मालगुजारी वसूल करनेवाला सरकारी
तहाँ—क्रिवि० उस स्थानपर, वहाँ। [ अफसर।
तहाना—सक्रि० तह लगाना, लपेटना।
तहिआ, तहियाँ—क्रिवि० उस समय, तब। 'धरिहहिं विष्णु मनुज तनु तहिंआ।' रामा० ८०
तहियाना—सक्रि० तह करना, लपेट करना।
ताँईं—क्रिवि० तक। लिए, निमित्त 'दूरि गयो दरसनके ताँईं व्यापक प्रभुता सब बिसरी।' सू० ३३। पास, निकट। किसीके प्रति।
ताँगा—पु० एक तरहकी गाड़ी।
तांडव—पु० शिवजीका नाच। पुरुष-नृत्य।
तांडवप्रिय—पु० शिवजी।
ताँत—स्त्री० चमड़े या नसोंसे बनी डोरी, डोरी, प्रत्यञ्चा। सारंगी इत्यादिका तार 'सो मैं कुमति कहउँ केहि भाँती। बाज सुराग कि गाँडर ताँती।' रामा० ३१४, 'हाड़ भए सब किंगरी नसैं भईं सब ताँति।' प०१७४
ताँता—पु० सिलसिला, कतार, श्रेणी।
ताँति—स्त्री० देखो 'ताँत'। पंक्ति, ताँता।
तांत्रिक—पु० तंत्र जाननेवाला, जन्तर मन्तर करनेवाला।
तांबा—पु० एक प्रसिद्ध धातु। [ वि० तंत्र सम्बन्धी।
तांबूल—पु० पान या पानका बीड़ा।
ताँबरी—स्त्री०, ताँबरो—पु० जूड़ी, बुखार ( अ० ६३, ६७, गुलाब ३६९ )। मूर्च्छा, चक्कर।
ता—सर्व०, वि० उस। अ० तक।
ताईं—अ० देखो 'ताँईं'।
ताई—स्त्री० ताप, ज्वर, आग 'फूलनि सेज, सुगन्ध दुकूलनि,सूल उठै तनु तूल ज्यों ताई।' देव। ताऊकी स्त्री।
ताईद—स्त्री०समर्थन,पुष्टि,अनुमोदन। पु० मुंशी,नायब।
ताउ—पु० तपाने या पकानेके निमित्त पहुँचायी गयी गरमी। क्रोध, आवेश 'भवधनु भञ्जि निदरि भूपति भृगुनाथ खाइ गये ताउ।' विन० २५९
ताऊ—पु० पिताका बड़ा भाई।
ताऊन—पु० प्लेगकी बीमारी।

ताऊस—पु० मोर। एक बाजा।

ताक़—पु० ताकनेकी क्रिया, घात, तलाश। देखो 'ताक'।

ताक़—पु० आला, ताख। वि० विषम(संख्या)। बेजोड़, अनुपम। अति कुशल।

ताकझाँक—स्त्री० लुकछिपकर देखना। किसीको देखनेके लिए बार बार दृष्टिपात।

ताक़त—स्त्री० शक्ति, बल, सामर्थ्य।

ताक़तवर—वि० जिसमें ताकत हो, बलवान।

ताकना—सक्रि० स्थिर दृष्टिसे निहारना, बारीकीसे देखना 'तमकि ताकि ताकि शिवधनु धरहीं।' रामा० १३६। सोच विचारकर स्थिर करना, निश्चय करना 'उभय भाँति देखा निज मरना। तब ताकेसि रघुनायक सरना।' रामा० ३७७। नजर रखना, सोचना, चाहना। ताड़ लेना, समझ लेना।

ताका—वि० तिरछा ताकनेवाला ( उदे० 'गादर' )।

ताकि—अ० इसलिए कि, जिसमें या जिससे।

ताकीत—स्त्री० चेताकर कहनेका कार्य। देखो 'ताकीद'।

ताकीद—स्त्री० चेताकर दी हुई आज्ञा, बारबार समझाकर कही हुई बात, कड़ी आज्ञा।

ताग—पु० तागा, सूत 'सब कइ ममता ताग बटोरी। मम पद मनहि बाँध बर डोरी।' रामा० ४३९

तागना—सक्रि० रजाई इ० में दूर दूरपर सिलाई करना। पिरोना 'बासना करि मुक्ति, मुक्ता त्यागमें तागी गीतिका०।

तागपाट—पु० एक गहना जिससे विवाहकी एक रस्म [ होती है।

तागा—पु० धागा, सूत।

ताज—पु० राजमुकुट, शिखा। चाबुक।

ताज़गी—स्त्री० नयापन, हरापन।

ताजन, ताजना—पु० चाबुक, कोड़ा 'चलि बैकुण्ठ तोहि लै तारौं, थकहित प्रेम ताजन मारूँ।' कबीर ९६, 'चित चेतन ताजी करै लवकी करै लगाम। सबद गुरूका ताजना पहुँचे सन्त सुठाम।' साखी २३। उत्तेजक या प्रेरक वस्तु 'बन्धन हमारो काम केलिको, कि ताड़िबेको ताजनो विचारको, कै व्यजन विचारु है।' राम० ७८९। दण्ड, सजा 'दीजे और ताजन नयें जो मन भावे पर '। रसा० १८४

ताज़ा—वि० टटका, नया, हराभरा प्रसन्न।

ताज़िया—पु० रङ्गीन कागज आदिसे मढ़ा हुआ वह ढाँचा जिसे शिया मुसलमान मुहर्रमके अवसरपर बनाते हैं।

ताज़ियाना—पु० चाबुक।

ताज़ी—वि० अरबका, अरब सम्बन्धी। पु० ( अरबी ) घोड़ा 'तन ताजी असवार मन नयन पियादे साथ।' कवी० ५२५ '' एक तरहका शिकारी कुत्ता।

ताज़ीम—पु० आदर-सम्मान 'पुनि दीन्हीं ताजीम अरु ग्राम दूसरो दीन्ह।' ललित० १०

ताज़ीरात—पु० दण्ड सम्बन्धी कानूनोंका सग्रह, दण्ड-विधान। ताज़ीरात हिन्द = भारत सरकारका दण्ड-विधान, भारतीय दण्ड-विधान।

ताटंक—पु० तरौना नामक आभूषण। एक छन्द।

ताड़—पु० शाखाविहीन एक लम्बा पेड़।

ताड़का—स्त्री० एक राक्षसी, जिसे श्रीरामचन्द्रने विश्वामित्रके आश्रममें मारा था।

ताड़न—पु० ताड़नेकी क्रिया, डाँट 'ये सब ताड़नके अधिकारी।' रामा०

ताड़ना—सक्रि० ताड़ना देना, सजा देना, मारना, कष्ट देना 'मारत ताड़त परुष कहन्ता। पूजनीय द्विज गावहिं सन्ता।' रामा० डपटना, कुवचन कहना, पीटना। 'मन्दोदरी रुदन कर भारी। उर ताड़त बहु भाँति पुकारी।' रामा० ४९५। लखना, समझ लेना, जान लेना। स्त्री० दण्ड, प्रहार, डाँट-डपट, कष्ट।

ताड़ी—स्त्री० एक मादक द्रव्य, ताड़ या खजूरका रस। ध्यान, समाधि।

ताड़ू—वि० ताड़ जानेवाला।

तात—वि० गरम, तप्त ( उदे० 'कुरकुटा' )। पु० पूज्य व्यक्ति, पिता, गुरु, बड़ा भाई। छोटा भाई। मित्र, पुत्र इत्यादि।

ताता—वि० गरम, तप्त 'सब जग तेहि अनलहुतें ताता।' रामा० ३५८, (उदे० 'उड़ना', अ० ५२ )

तताथेई—स्त्री० नाचनेमें पाद-सञ्चालनका शब्द। नाचनेमें एक तरहका बोल।

तातील—स्त्री० छुट्टी।

तात्कालिक—वि० तुरन्तका। वर्तमान।

तात्पर्य—पु० मतलब, अभिप्राय।

तात्विक—वि० तत्व सम्बन्धी, यथार्थ, ठीक ठीक।

तादात्म्य—पु० एक वस्तुका दूसरीमें बिलकुल मिल जाना [ सम्पूर्ण अभेद।

तादाद—स्त्री० संख्या।

तादृश—वि० वैसा।
ताधा—देखो 'तातायेइ'।
तान—स्त्री० ताननेकी क्रिया, फैलाव, आलाप 'करहिं गान बहु तान तरंगा।' रामा० ७४। ताना, रस्सी 'आसने बिछावने बितान तान तूरियो।' राम० ४८१
तानतंज—पु० तानेबाज़ी, व्यंग।
तानना—सक्रि० खींचना, खींचकर फैलाना, ऊपर फैला कर बाँधना 'जिन रघुनाथ पिनाकहिं तान्यो तोस्यो निमिष महीं।' सू० ३५
तानपूरा—पु० तंबूरा नामक बाजा। [ बुने गये सूत।
तानबान—पु० तानाबाना। लंबाई और चौड़ाईके बल
ताना—पु० आक्षेप, व्यंग्य। लम्बाईके बलवाला सूत। सक्रि० ढक्कन चिपकाकर बर्तनका मुँह बन्द करना। मूँदना, बन्द कर रखना 'तिन स्रवनन परदोष निरन्तर सुनि सुनि भरि भरि तावों।' विन० ३४६। तपाना (उदे० 'कबीर')। परीक्षा करना। पिघलाना।
तानापाई—स्त्री० एक ही जगह फेरा लगाना।
तानारीरी—स्त्री० घटिया गाना। [ *तंत्र।
तानाशाही—स्त्री० स्वेच्छाचारपूर्ण शासन, अधिनायक*
तानी—स्त्री० तनी या बन्द 'कंचुकि चूर, चूर भइ तानी।'
ताप—पु० गरमी, आँच, ज्वर। [ प० १५३
तापत्तर—वि० तपानेवाला, संतप्त करनेवाला।
तापतिल्ली—स्त्री० प्लीहा या बरवट बढ़नेका रोग।
तापन—पु० तपानेवाला, सूर्य, एक तांत्रिक प्रयोग, सूर्यकांत मणि, कामदेवका एक बाण।
तापना—अक्रि० आगसे शरीर गरमाना (साखी ९६)। सक्रि० गरम करना।
तापमान—पु० सरदी गरमीका मान या मात्रा। तापमान यंत्र=गरमी नापनेका यंत्र, थरमामीटर।
तापस—पु० तपस्वी ( रामा० १९ )।
तापहर—वि० गर्मी दूर करनेवाला।
तापिच्छा—पु० तमाल वृक्ष ( साकेत ६३ )।
तापित—वि० जो तपाया गया हो, पीड़ित।
ताफ्ता—पु० धूपछाँ रेशमी कपड़ा 'दीपति देह दुहूनि मिलि, दिपति ताफतारंग।' वि० ३४
ताब—स्त्री० ताप (सूबे० ३९०)। सामर्थ्य, हिम्मत।※
ताबड़तोड़—क्रिवि० लगातार। [ ※ धैर्य। दीप्ति।
ताबूत—पु० मुर्दा ले जानेका सन्दूक, शव-पेटिका।



ताबे—वि० काबूमें, अधीन।
ताबेदार—पु० नौकर। वि० आज्ञावर्ती।
ताम—पु० व्याकुलता, उद्वेग 'कहँ रस रास बीच अन्तर सुख कहाँ नारि तनु ताम।' सू० (ब्रज०३३)। दुःख, ग्लानि। विकार, दोष। अँधेरा ( सूरा० ७१ )। क्रोध कंसको निर्वंश ह्वैहै करत इनपर ताम।' सूबे० २७१। वि० भयोत्पादक, भीषण 'वे हैं रोहनी सुत राम। गौर अंग सुरंग लोचन, प्रलय कैसे ताम।' सू० १९२। व्याकुल (सूसु० ११८), परेशान 'कुञ्ज गृहते निकसि धाये काम कीन्हों ताम।' सूबे० २३३
तामजान—पु० पालकीके ढंगकी एक पुरानी सवारी।
तामड़ा—वि० तांबेके रंग जैसा।
तामरस—पु० कमल, ताँबा, सुवर्ण इ०। एक छन्द।
तामलेट—पु० लुक फेरा हुआ या चीनी मिट्टी इ० से ढँका हुआ टीनका पात्र।
तामस—पु० क्रोध, अँधेरा, मोह। वि० तमोगुण-प्रधान 'सहज पापप्रिय तामस देहा।' रामा० ४३८
तामिल—स्त्री० दक्षिण भारतकी एक जाति तथा उसकी भाषा। [ चिढ़।
तामिस्र—पु० एक अंधकारपूर्ण नरकका नाम, रोष,
तामीर—स्त्री० (मकान) बनाना, मरम्मत।
तामील—स्त्री० (आज्ञादिका) पालन, कार्यान्वित होना।
तामोर—पु० ताम्बूल ( कवि प्रि० २२३ )।
ताम्मुल—पु० अँदेशा, आगा पीछा, विचार, देर, ढील, ( कर्म० ४२२ )।
ताम्र—पु० ताँबा नामक धातु। लाल रंग। वि० लाल।
ताम्रचूड़—पु० कुक्कुट, मुर्गा।
ताम्रपट्ट, ताम्रपत्र—पु० ताँबेकी चद्दरका टुकड़ा जिसपर दान इ० की बात उत्कीर्ण हो।
तायँ—अ० से 'कोउ आयो उततायँ जितै नँदसुवन सिधारे।' भ्र० ७। ताईं, तक।
ताय—पु० ताप, दाह, जलन, धूप,। सर्व० उसको।
तायदाद—स्त्री० संख्या।
तायना—सक्रि० तपाना, जलाना, संताप, पहुँचाना। 'सहित समाज भरत जनु आये। नाथ वियोग ताप तन ताये।' रामा० ३०७
तायनि—स्त्री० तपन, जलन, पीड़ा। बीजनौ डुरावती सखी जन त्यों सीतहूमें सौतिके सराप तन तायनि

तरफराति ।' देव

तार—पु० उच्च स्वर ( राम० १९१ ) । सोना इत्यादि धातुओंका सूत, तागा, सूत्र 'रहत निरन्तर जगत कौ वाहीके कर तार ।' रतन० ३ । सिलसिला, युक्ति, उपाय 'जंत्रमंत्र औ वेद तन्त्रमें सबै तारको तार ।' व्यासजी । मोती । तारा ( कबीर १९६ ), नक्षत्र । सुभीता, कनीनिका, आँखकी पुतली । ताड़ 'बाढेहु सो बिन काज ही जैसे तार खजूर ।' रहीम १८ । कानका गहना, तरौना । मंजीरा, करताल ( उदे० 'आवझ' ) । गाने इ० में कालका परिमाण 'कहूँ गावै नाचे कहूँ कहूँ देत है तार ।' रतन० ८ । बिजलीके तारसे प्राप्त समाचार । तौल । वि० बढ़िया, साफ, चमकीला ( उदे० 'छवा' ) । ऊँचा ( स्वर ) ।

तारक—पु० तारा, आँखकी पुतली । एक असुर । तारनेवाला ।

तारकशी—स्त्री० ( सोने चांदीके ) तार खींचनेका काम

तारका—स्त्री० आँखकी पुतली अचल पलकोंमें जड़ीसी तारकाएँ दीन ।' तारा रश्मि ३७

तारकूट—पु० चाँदी पीतल ( कवि प्रि० ७९ ) ।

तारघर—पु० वह दफ्तर जहाँ तारका काम होता है, तार-आफिस ।

तारण—वि० तारनेवाला, उद्धार करनेवाला ।

तारतम्य—पु० सिलसिला, न्यूनाधिक्य ।

तारतोड़—पु० कारचोबीका काम ।

तारन-तरन—वि० तारनेवालोंको भी तारनेवाला 'सकृत उर आनत जिनहिं जन होत तारनतरन ।' विन० ( उदे० 'ख्याल' ) ।

तारना—सक्रि० पार करना, उद्धार करना, मुक्ति देना । तैराना 'सुगमै वरु वारिधि पैरिबो है पय ऊपर तारिबो पाहनो है ।' दीन० २५८ । ताड़ना, देखना 'केशोदास है उदास कमलाकरसों कर शोषक प्रदोष ताप तमोगुण तारिये ।' के० २१२

तारपीन—पु० दवाके काममें आनेवाला एक तेल ।

तारबर्की—स्त्री० विद्युत् शक्ति द्वारा समाचार भेजनेका [ तार ।

तारल्य—पु० तरलता, अस्थिरता ।

तारा—पु० ताला 'धर्म धीर कुलकानि कुची करि, तेहि तारो दै दूरि धरयोरी ।' सू० १२२ । ताली 'रहसे तुरुक बजाइके तारा ।' प० २६२ । नक्षत्र, भाग्य, आँखकी पुतरी ( सू० १२० ) । स्त्री० बालि पत्नी । [ बृहस्पतिकी स्त्री ।

ताराकुमार—पु० अंगद ।

ताराज—पु० लूटपाट । तबाही, बरबादी । [ॐबृहस्पति ।

ताराधिप,-नाथ,-पति—पु० चन्द्रमा । बालि, सुग्रीव ।ॐ

तारामंडल—पु० तारोंका समूह । एक वस्त्र 'तारामँडल पहिरि भल चोला ।' प० ८६

तारिका—स्त्री० नक्षत्र, सितारा । आँखकी पुतरी ।

तारी—स्त्री० हथेलियोंका परस्पर आघात, करतलध्वनि 'बाजहिं ढोल देहिं सब तारी ।' रामा० ४२७ । ताली, कुञ्जी । समाधि ( बीजक ८४ ), टकटकी, ध्यान 'सुनि समाधि लागि गई तारी ।' प० १०८

तारीक—वि० काला, अंधेरा ।

तारीकी—स्त्री० अंधकार ।

तारीख—स्त्री० तिथि ।

तारीफ़—स्त्री० प्रशंसा, लक्षण ।

तारु, तारू—पु० तालू, मुखके भीतर ऊपरके दाँतों और कौवेके बीचका गड्ढा 'अतिहि सुकंठ दाहु प्रीतमको, तारु जीभ मन लावत ।' सू० २०८

तारुण्य—पु० तरुणता यौवन ।

तारेश, तारेस—पु० चन्द्रमा (मति०२२९) । [वाला ।

तार्किक—पु० तर्कशास्त्रका विद्वान् । तर्कशील तर्क करने

ताल—पु० तालाब 'तेइ एहि ताल चतुर रखवारे ।' रामा० २८ । ताड़का पेड़ 'दुन्दभि अस्थि ताल देख-राये । बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये ।' रामा० ३९८ । हथेली । करतल-ध्वनि 'उड़त अघविहंग सुनि ताल करतालिका ।' विन० १५१ । झाँझ, मँजीरा । गाने इत्यादिमें काल व क्रियाका परिमाण (उदे 'अनाघात') 'तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि दै ताल ।' सू० । जघा या बाहु ठोकनेका शब्द ।

तालक—पु० तअल्लुक, सम्बन्ध । ताला । हरताल ।

तालव्य—वि० जिसका उच्चारण-स्थान तालु हो ।

ताला—पु० संदूक इ० बन्द करनेका यन्त्र, कुफ़्ल । छातीपर पहना जानेवाला लोहेका तवा ( हिम्मत० [३८ ) ।

तालाव—पु० पोखरा, जलाशय ।

तालावेली—स्त्री० व्याकुलता 'बिरहा पीव पठाइया कहि साधू परमोधि । जा घट तालाबेलिवा ताको लावो सोधि ।' साखी ४०, ( ४३ भी )

तालिका—स्त्री० सूची, फिहरिस्त । चाबी । कुञ्

तालिब—पु० तलाश करनेवाला, शिष्य 'कबीरा तालिब तोरा तहाँ गोपत हरी गुर मोरा।' कबीर। ९८
तालिबइल्म—पु० विद्यार्थी।
ताली—स्त्री० कुञ्जी, छोटा तालाब। देखो 'तारी'।
तालीम—स्त्री० शिक्षा।
तालु, तालू—पु० देखो 'तारु'।
ताल्लुक—पु० ( तअल्लुक ), सम्बन्ध।
ताव—पु० देखो 'ताउ'। मूछों पर—देना=विजय या बल आदिके घमण्डमें मूँछें ऐंठना '···साहितनै सरजा सिवा दियो मुच्छपर ताव।' भू० १२२
तावना—सक्रि० देखो 'तायना', निरखि पतंग ध्यान नहिं छाँड़त जदपि ज्योति तन तावत।' सू० २८०; 'प्रीतम तन तावति तरुनि लाइ लगनिकी लाइ।' मति० २०८
तावर, तावरी—स्त्री० ताप, जलन, ज्वर, धूप। *
तावरा, तावरो—पु० देखो 'तावर'। [*मूर्छा, गश।
तावान—पु० हरजाना, क्षतिपूर्ति, दण्ड।
तावीज़—पु० धातुका यंत्र जिसमें मंत्र रखकर पहनते हैं।
ताश—पु० खेलनेका पत्ता।
ताशा, तासा—पु० एक बाजा।
तास—पु० एक कपड़ा ( षड्ऋतु० १८ )।
तासीर—स्त्री० प्रभाव, गुण 'फरजी मीर न हो सके टेढ़ेकी तासीर।' रहीम १५
तास्सुब—पु० पक्षपात, तरफदारी।
ताहम—अ० फिर भी, तिसपर भी।
तिंतिड़,-तिड़िका,-तिड़ी,-तिड़ीका—स्त्री० इमली।
ति—स्त्री० तिया, स्त्री 'पु' अली ति तेहि काल, एकै कीरति जानिये।' चे० १५१। सर्व० वे 'सुत मानसिक तिनकेति। भुवदेव भुव प्रगटेति।' के० २७३। वह 'तिन नगरी, तिन नागरी प्रति पद हंसक हीन।' राम० ८८
तिआ—स्त्री० तिया, स्त्री।
तिआह—पु० मृत्युके ४५ वें दिन होनेवाला श्राद्ध।
तिउहार—पु० त्यौहार।
तिकड़म—पु० युक्ति, कौशल।
तिकोन, तिकोना, तिकोनिया—वि० जिसमें तीन कोने हों (उदे० 'खटोला')। पु० समोसा नामक पकवान
तिक्की—स्त्री० तीन बूटियोंवाला पत्ता।
तिक्ख—वि० तीक्ष्ण, तीखा, तेज़।
तिक्त—वि० कड़ुआ, तीता।
तिक्ष—वि० तीक्ष्ण, तीव्र, चोखा। 'खल सर सर धारा क्यों सहै तिक्ष ताकी।' राम० ३२९
तिक्षता—स्त्री० तीक्ष्णता, तेज़ी ( राम० ८६ )।
तिखटी—स्त्री० तिपाई, काठका बना तीन पाँवोंवाला आसन।
तिखाई—स्त्री० तेज़ी।
तिगुना—वि० तीन गुना।
तिग्म—वि० तीक्ष्ण।
तिच्छ, तिच्छन—वि० तीक्ष्ण, तेज़ 'ऐंच्यो जहीं तबहीं कियो संयुत तिच्छ कटाक्ष नराच नवीनो।' राम० १०४
तिज़रा—पु०, तिजारी—स्त्री० तीसरे रोज़ चढ़नेवाला बुखार ( उदे० 'टोटक' )।
तिजहरिया,-हरी—स्त्री० तीसरा प्रहर (ग्राम० २४०)।
तिजारत—स्त्री० व्यापार, वाणिज्य।
तिजोरी—स्त्री० जेवर इ० रखनेका लोहेका मज़बूत सन्दूक।
तिड़ी—स्त्री० तीन बूटियोंवाला ताशका पत्ता। तिड़ी करना = ग़ायब करना।
तिड़ीबिड़ी—वि० तितर-बितर, अस्त-व्यस्त।
तित—क्रिवि० वहाँ, उधर।
तितना, तितेक,तितो—वि० उतना (उदे०'अनुमानना')
तितर बितर—वि० इधर उधर फैला हुआ, अस्तव्यस्त।
तितली—स्त्री० फूलोंपर उड़कर बैठनेवाला एक पतिङ्गा।
तितारा—पु० तीन तारोंवाला एक बाजा।
तितिंबा—पु० आडम्बर, ढकोसला। परिशिष्ट।
तितिक्ष,-तितिक्षु—वि० सहनशील, कष्टसहिष्णु, क्षमावान्।
तितिक्षा—स्त्री० सहनशीलता, क्षमा।
तितिम्मा—पु० अवशिष्ट। परिशिष्ट।
तितीर्षु—वि० पार होनेकी इच्छा रखनेवाला।
तितेक, तितो—वि० तितना, इतना।
तिथि—स्त्री० मिति या तारीख।
तिथिपत्र—पु० पत्रा, कैलेण्डर।
तिन—पु० तृण, तिनका ( प० ३ ), 'एक अचम्भव होत बड़ो तिन ओंठ गहे अरि जात न मारे।' भू० ७१
तिनउर—पु० तृणराशि।
तिनकना, तिनगना—अक्रि० चिढ़ना, बिगड़ उठना।
तिनका—पु० देखो 'तिनुका'। तिनका तोर = नाता तोड़ ( भ्र० ८१ )।
तिनगरी—स्त्री० एक तरहका पकवान।

तिनरंगा—वि० तीन रंगवाला, तीन रंगका ।

तिनुका, तिनूका—पु० तृण, तृणका टुकड़ा 'होनहार है रहै मोहमद सबको छूटे । होय तिनूका वज्र वज्र तिनुका है टूटे ।' राम० १५५

तिन्ना—पु० एक तरहके धानका पौधा ।

तिन्नी—स्त्री० नीवी । नारा । धानका एक भेद ।

तिपति—स्त्री० तृप्ति, सन्तोष ।

तिपाई—स्त्री० तीन पाँवोंकी चौकी, तिखटी ।

तिपाड़—पु० वह जो तीन पाट जोड़कर बनाया गया हो; जिसमें तीन पल्ले हों ।

तिब—स्त्री० चिकित्सा-शास्त्र ( हकीमी ) ।

तिबारा—क्रिवि० तीसरी बार । पु० तीन द्वारवाला कोठा ।

तिबासी—वि० तीन दिनका बना हुआ (खाद्य पदार्थ) ।

तिमंजिला—वि० जिसमें तीन मरातिब हों, तिखण्डा ।

तिमिंगल—पु० एक तरहका बड़ा मच्छ 'जलजाल काल कराल माल तिमिंगलादिक सों ग्रसै ।' राम० ३७४

तिमि—अ० उसी प्रकार । पु० एक समुद्री जन्तु ।

तिमिर—पु० अन्धेरा, धुन्धलापन ।

तिमिरनाशक,-हर, तिमिरारि—पु० सूर्य ।

तिमिरारी—स्त्री०अन्धकारका समूह,अन्धकार । पु० सूर्य ।

तिमुहानी—स्त्री० तीन रास्तों या तीन नदियोंके मिलनेकी जगह ( रामा० २९ ) ।

तिय, तिया—स्त्री० पत्नी, स्त्री ।

तियाग—पु० त्याग, उत्सर्ग, विरक्ति ।

तिरंग—वि० तीन रगवाला । [ उत्तर० ४३ ।

तिरकना—अक्रि० तरकना, फूटना, चटकना, दरक जाना

तिरखा—स्त्री० तृषा, प्यास, इच्छा, लालच ।

तिरखित—वि० तृषित, प्यासा, इच्छुक ।

तिरछा—वि० न बिलकुल खड़ा, न बिलकुल पड़ा [हुआ, बाँका ।

तिरछौहाँ—वि० कुछ कुछ तिरछा ।

तिरछौंहें—क्रिवि० वक्रताके साथ ।

तिरना—अक्रि० तैरना, तैर कर पार होना 'महाराज सिवराज तव बैरी तजि रस रुद्र । बचिबेको सागर तिरे, बूड़े सोक समुद्र ।' भू० ८६ । मुक्त होना 'दादू तनका आपा जारै तौ, तिरत न लागै बारा ।' दादू । पानीकी सतह पर उतराना ।

तिरनी—स्त्री० नीवी, फुफुंदी 'रोमावली सूँढि तिरनी ह्वौं नाभि सरोवर आवै ।' सू० ९६

तिरप—स्त्री० नाचमें एक तरहका ताल ( सूसु० २३३ ) ।

तिरपट—वि० टेढ़ा, विकट, कठिन ।

तिरपित—वि० तृप्त, प्रसन्न, सन्तुष्ट ।

तिरबेनी—स्त्री० त्रिवेणी । तीन नदियोंकी मिली हुई धारा । गङ्गा, यमुना और सरस्वतीका सङ्गम-स्थान ।

तिरमिरा—पु० चकाचौंध, तीक्ष्ण प्रकाशमें दृष्टिका न ठहरना, तिलमिली ।

तिरमिराना—अक्रि० चौंधियाना, आँखोंका झपना ।

तिरसूल—पु० त्रिशूल, शिवजीका अस्त्र । दैविक, दैहिक, तथा भौतिक दुःख ( साखी १०८ ) ।

तिरस्कार—पु० अनादर, उपेक्षा ।

तिरस्कृत—वि० अनादृत, उपेक्षित ।

तिरहुत—पु० मिथिलाका एक नाम ।

तिराना—सक्रि० पानीके ऊपर तैराना । तारना, उद्धार करना । पार करना ( सू० ६७ ) ।

तिरास—पु० त्रास, भय, क्लेश, दुःख ।

तिरासना—सक्रि० डराना, दुःख देना, तङ्ग करना ।

तिरिन—पु० तृण, तिनका ।

तिरिया—स्त्री० स्त्री, औरत ।

तिरीछा—वि० तिरछा 'खंजन मंजु तिरीछे नैननि । निज पति कहेउ तिन्हहिं सिय सैननि ।' रामा० २५५

तिरोधान,-भाव—पु० अदृश्य होनेका भाव, गायब हो जाना । गोपन, अदर्शन ।

तिरोभूत,-हित—वि० अदृष्ट, छिपा हुआ ।

तिरौंछा—वि० देखो 'तिरछा' ।

तिर्यक—वि० तिरछा । पु० पशु, पक्षी आदि ।

तिलंगा—पु० अंग्रेजी सेनाका देशी सैनिक ।

तिलंगी—स्त्री० गुड्डी, पतङ्ग ।

तिल—पु० एक पौधा तथा उसके बीज । शरीर परका छोटा काला बिन्दु या गोदना । क्षण 'सेही पिरीत अनुराग बखानइत तिले तिले नूतन होइ ।' विद्या० तिल-पु० आँखकी पुतलीके बीचका गोल बिन्दु मूँद पलकोंमें अचञ्चल, नयन काला दूभरा तिल सान्ध्यगीत ३१ । तिलभर=थोड़ासा, क्षणभर ।

तिलक—पु० माथेपर लगा हुआ चन्दनादिका चिह्न । टीका, गद्दी । एक आभूषण, विवाह स्थिर करनेकी एक रीति । श्रेष्ठ व्यक्ति । एक वृक्ष जो बसन्तमें खिलता है और जिसका फूल छत्तेके समान होता है ।

तिलकमुद्रा—स्त्री० साम्प्रदायिक तिलक और छापा (वैष्णव)।
तिलकुट—पु० तिलकी बनी एक मिठाई।
तिलचटा—पु० एक तरहका झींगुर।
तिलचाँवरी,-चावली—स्त्री० तिल और चावलकी खिचडी 'तिलचाँवरी गोद करि दीनी, फरिया दई फारि नव सारी।' सूसु०१९४, (सूबे० ८२)।
तिलछना—अक्रि० व्याकुल होना, छटपटाना।
तिलड़ी,-री—स्त्री० तीन लड़ोंकी माला।
तिलपट्टी,-पपड़ी—स्त्री० एक तरहकी मिठाई।
तिलमिलाना—अक्रि० देखो 'तिरमिराना'।
तिलमिलाहट, तिलमिली—स्त्री० चकाचौंध।
तिलवा—पु० तिलका लड्डू।
तिलस्म—पु० इन्द्रजाल, जादू।
तिलहन—पु० वे पौधे जिनके बीजसे तेल निकाला जाता है।
तिलांजलि—स्त्री० मृतक संस्कारके समय तिल डालकर अञ्जलिसे जल देनेकी विधि।
तिला—पु० नपुंसकत्व दूर करनेवाला तैल-विशेष।
तिलाक़—स्त्री० देखो 'तलाक़'।
तिलिस्मात—पु० अद्भुत अथवा चमत्कारिक वस्तु या व्यापार, जादू।
तिली—स्त्री० तितली 'प्रिय तिली! फूल-सी ही फूली' [युगान्त ४९।
तिलोक—पु० त्रिलोक।
तिलोचन—पु० तीन नेत्रोंवाला, शिवजी।
तिलोदक—पु० तिल डालकर जल देनेकी विधि।
तिलोरी—स्त्री० तेलिया मैना। एक तरहकी बरी जिसमें तिल भी मिला हो।
तिलौंछना—सक्रि० तेल लगाकर चिकना करना।
तेलौंछा—वि० तेलकेसे स्वाद या रंगवाला, चिकना, स्नेहयुक्त 'जकित चकित ह्वै तकि रहे तकित तिलौंछे नैन।' बि० १३२।
तेल्ला—पु० कलाबत्तू या कामदानीका काम। ऐसे कामवाला कपड़ा।
तेल्ली—स्त्री०एक तेलहन। बरवट,प्लीहा।
तेवास—पु० तीन वासर, तीन दिन।
तेवासा, तिवासी—वि० तीन दिनका।
तेशना—पु० ताना। स्त्री० तृष्णा, लोभ।
तेष्ट—वि० रचित 'कोउ कहै यह काल उपावत कोउ कहै यह ईसुर तिष्टी।' सुन्द० १५९
तेष्ठना—अक्रि० खड़ा होना, ठहरना, स्थिर रहना।
तेष्पन—वि० तीक्ष्ण।

तिसना—स्त्री० तृष्णा, प्यास, लोभ, तीव्र इच्छा।
तिसरैत—पु० तटस्थ या तीसरा व्यक्ति।
तिसाना—अक्रि० तृषित होना।
तिहरा—वि०तीन तहोंका,एक साथ तीन (उदे० 'चौहरा')।
तिहराना—सक्रि० तीन परत करना, तीसरी बार करना।
तिहाई—स्त्री० तीसरा भाग। फसल।
तिहाउ, तिहाव—पु० क्रोध, बिगाड़।
तिहार, तिहारो—सर्व० तुम्हारा।
ती—स्त्री० पत्नी, स्त्री 'पीतमको पहिलो अपराध निहारि न ती कटु बात कही।' ललित० ११७
तीक्षन, तीक्ष्ण—वि० तेज, प्रचण्ड, नुकीला, अप्रिय।
तीक्ष्णदृष्टि—वि० जिसकी नज़र बहुत तेज़ हो।
तीख, तीखा—वि० तीक्ष्ण, तेज़। चरपरा, अप्रिय। चोखा। उग्र स्वभाववाला (उदे० 'चाँड़')।
तीखन, तीछन—वि० देखो 'तीक्ष्ण' '…ये तेरे सबतें विषम ईछन तीछन बान।' बि० १४५
तीखुर—पु० एक पौधा या उसकी जड़का सत्त। एक तरहका आटा।
तीछा—देखो 'तीक्ष्ण', 'नगर व्यापि गई बात सुतीछी।'* [* रामा० २११
तीज—स्त्री० तृतीया, भाद्र शुक्ल तृतीया या उस दिन होनेवाला एक पर्व।
तीजा—वि० तीसरा। स्त्री० हरतालिका तीज।
तीत, तीता—वि० तिक्त, चरपरा, तीखा, कडुआ। गीला
तीतर, तीतुर. तीतुल—पु० एक पक्षी।
तीतरी—स्त्री० तितली नामक उड़नेवाला कीड़ा।
तीतुली— देखो 'तितुरी'।
तीन—वि० दोसे एक अधिक। पु० तीनकी संख्या।
-तेरह करना—पु० तितर बितर करना, छिन्नभिन्न करना
तीमारदारी—स्त्री० रोगीकी सेवा टहल,पथ्यादिका प्रबंध।
तीय, तीया—स्त्री० औरत, स्त्री।
तीरंदाज—पु० तीर चलानेवाला।
तीरंदाजी—स्त्री० बाण-विद्या।
तीर—पु० बाण। किनारा, तट। पास, 'पूछति चली खबरिया, मितवा तीर।' रहीम, (उदे० 'झकना')
तीरथ, तीर्थ—पु० पवित्र स्थान। शास्त्र अवतार इ०।
तीर्थंकर—पु० जैनियोंके उपास्य देव।
तीर्थपति,-राज—पु० प्रयाग।
तीर्थाटन—पु० तीर्थयात्रा।

तीली—स्त्री० सलाई सींक ।
तीवई—स्त्री० स्त्री 'तीवइ कवँल सुगंध शरीरू।' प० ५२
तीवर—पु० बहेलिया, व्याधा । धीवर, मछुआ । देखो 'तेवर' ।
तीव्र—वि० तेज, प्रचंड, कठोर, कटु ।
तीस—वि० पन्द्रहका दुगुना । पु० तीसकी संख्या ।
तीसर, तीसरा—वि० तृतीय ।
तीसी—स्त्री० अलसी ।
तुंग—वि० ऊँचा, प्रमुख, तीक्ष्ण, तेज़ ।
तुंड—पु० मुख 'करता दीखे कीरतन ऊँचा करिकै तुंड । साखी १८८, चोंच, थूथन । तलवारका अगला भाग 'तुट्टंत ठहूँ तरवारिन तुड ।' सुजा० ८६
तुंडिल—वि० बड़ी नाभिवाला, तोंदवाला ।
तुंडी—स्त्री० नाभि । वि० थूथन या सूंडवाला ।
तुंद—पु० पेट, तोंद । नाभि ।
तुंदिया, तुंदी—स्त्री० नाभि, ढोंढ़ी ।
तुंदिल, तुंदैला—देखो 'तुंडिल' ।
तुंवर, तुंवरु—पु० धनिया ।
तुंवरी, तुंबी—स्त्री० तूँबी, कड़ुआ, गोल कद्दू 'ते सिर कटु तुंबरि सम तूला । जे न नमत ।' रामा० ६७
तुंबा—पु० कड़ुआ कद्दू या उसका बना पात्र ।
तुअ—सर्व० तुम्हारा ।
तुअना—अक्रि० टपकना, गिर पड़ना । गर्भपात होना ।
तुअर—स्त्री० अरहर ।
तुक—स्त्री० अन्त्यानुप्रास, पद्यकी कड़ी ।
तुकबंदी—स्त्री० तुक जोड़नेकी क्रिया । हीन श्रेणीकी [कविता ।
तुकमा—पु० घुंडी अटकानेका फन्दा ।
तुका—पु० बिना गाँसीका तीर ।
तुकारना—सक्रि० 'तू' 'तू' कहकर सम्बोधन करना ।
तुक्कड़—पु० भद्दी पद्यरचना करनेवाला ।
तुक्कल—स्त्री० एक तरहकी बड़ी पतंग ।
तुक्का—पु० बिना गाँसीका तीर ।
तुख—पु० तुष, अन्नके ऊपरका छिलका, भूसा (कबीर २५२ ) । अंडेका ऊपरी भाग ।
तुखार—पु० एक प्राचीन देश या वहाँका निवासी । तुखार देशका घोड़ा (उदे०'काटर''चाँड'), स्यामकरन अरु चाँक तुखारा ।' प० ११, 'अस तुखार सब देखे [जनु मनके रथवाह ।' प० २०
तुख्म—पु० बीज ।

तुच—स्त्री० त्वचा, चमड़ा (सत्यह० ५७) ।
तुचा—स्त्री० त्वचा, चमड़ा 'रही जो मुइ नागिनी असि तुचा ।' प० २०७ [तुचार ।' गुलाब १८१
तुचार—वि० छुटार, पैना 'परिगो दाग अधरवा चोंच
तुच्छ—वि० क्षुद्र, छोटा, अल्प, निस्सार । [रता ।
तुच्छता—स्त्री०,तुच्छत्व—पु० क्षुद्रत्व, अल्पता, निस्सा-
तुजुक—पु० अदब, शान 'भूपन भनत तहाँ सरजा सिवाजी गाजी तिनको तुजुक देखि नेकहू न लरजा ।'
तुट—वि० तनिक, ज़रासा । [भू० ७७, (१४)
तुटना—अक्रि० सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना । सक्रि० प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना ।
तुड़ाना—सक्रि० भंग कराना, खडित कराना । भुनाना ।
तुतरा—वि० तोतला, अस्पष्ट बोलनेवाला । अस्पष्ट 'कब द्वै दंत दूधके देखौं कब तुतरै मुख बैन झरै ।' सूबे०५२
तुतराना—अक्रि० देखो 'तुतलाना' ।
तुतरौहाँ—वि० तोतला । [कर बोलना ।
तुलना—अक्रि० साफ़ उच्चारण न करना, अटक अटक
तुतलापन—पु० तुतलानेका भाव ।
तुदन—पु० तकलीफ, पीड़ा ।
तुनीर—पु० तुणीर, तरकस ।
तुनुकमिजाज—वि०बात बातमें तिनकनेवाला,चिड़चिड़ा।
तुनुकमिजाजी—स्त्री० चिड़चिड़ापन ।
तुपक—स्त्री० छोटी तोप, बन्दूक 'कहा करै छगि तोपमें तुपक तीर तरवारि ।' ललित० ८२, (साखी २७)
तुफैल—पु० कृष्ण सेवा ( सेवा० ८८ ) ।
तुभना—अक्रि० स्तब्ध होना, अचल या स्थिर होकर
तुमड़ी, तुमरी—स्त्री० देखो'तुम्बा' । [रह जाना ।
तुमल, तुमुल—वि० प्रचण्ड, तीव्र, भीषण । पु० युद्ध या सेनाका कोलाहल ।
तुरंग, तुरंगम—पु० घोड़ा । वि० तेज चलनेवाला ।
तुरंज—पु० बिजौरा नीबू 'गलगल तुरञ्ज सदाफर फरे'
तुरंजबीन—पु० नीबूके रसका बना एक पेय । [प०
तुरंत—क्रिवि० तत्क्षण, शीघ्रही । आनन फानन ।
तुरई—स्त्री० एक तरकारी ।
तुरकाना—पु० तुर्कोंका देश '......मिटि गई ठसक तमाम तुरकानेकी ।' भू० १७२ । वि० तुर्कों जैसा
तुरकी—पु० रूम या टर्की नामक देश । स्त्री०इस देश भाषा । खड़ी बोली, 'तुड़की' (बुन्देल०) । वि

तुर्कोंके देशका।
तुरग—पु० घोड़ा, अश्व।
तुरत—क्रिवि० त्वरित, शीघ्र, फौरन।
तुरपन—स्त्री० तुरपनेकी क्रिया। एक तरहकी सिलाई।
तुरपना—सक्रि० मोड़कर सीना।
तुरय—पु० घोड़ा। 'फेरा तुरय, छतीसौ कुरी।' प०१२९
तुरसीला—वि० घायल करनेवाला, पैना, तीखा 'फूल-छरीसी नरम करम करधनी शब्द हैं तुरसीले।' नारायण स्वामी
तुरही—स्त्री० एक बाजा, रणसिगा।
तुरा—स्त्री० शीघ्रता।
तुराइ, तुराय—क्रिवि० शीघ्रतापूर्वक, आतुरतासे 'गये गाधिसुत निकट तुराई।' रघु० ७२, 'बालक बतावन ब्याज प्रभुकर करत परस तुराय।' रघु० ९२
तुराई—स्त्री० तोषक, रुईभरा बिछावन 'कुस किसलय साथरी सुहाई। प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई।' रामा० २३०। क्रिवि० तुरन्त, शीघ्र ( दे० 'तुराना' )।
तुराना—अक्रि० घबड़ाना, जल्दी करना।
तुरावती—वि० स्त्री० वेगसे बहनेवाली।
तुरास—पु० वेग 'रोष भरे जस बाउर पवन तुरास उड़ाहिं।' प० २४५
तुरिया—स्त्री० मृतकवत्सा गाय या भैंस। जुलाहोंका एक औजार।
तुरी—स्त्री० एक बाजा जो फूँककर बजाया जाता है, तुरही। पु० घोड़ा 'श्रीपति सुकवि महावेग बिन तुरी फीको ···' श्रीपति, 'हैं ये चारों चंचल भले राजा पण्डित गज तुरी।' बैताल, ( प० ७९ )। सवार। स्त्री० घोड़ी। लगाम। जुलाहोंका एक औजार। तुरीयावस्था ( प्र० ६० )।
तुरीय—वि० चौथा। उत्कृष्ट 'जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय' अनामिका १५१ तुरीयावस्था= चतुर्थ अवस्था ( मोक्ष ) ( रामा० ६०७ )।
तुरुपना—सक्रि० मोड़कर सीना।
तुरुष्क—पु० तुर्किस्तान। तुर्किस्तानका निवासी।
तुर्क—पु० रूमदेश या तुर्कीका निवासी।
तुर्की—वि० देखो 'तुरकी'।
तुर्रा—पु० कलगी, गुच्छा, शिखा। कोड़ा, हाशिया। —यह कि = ऊपरसे इतना और।
तुर्श—वि० खट्टा।···अप्रसन्न, कुपित ( गबन ३८९ )।
तुर्शी—स्त्री० खटास।
तुलना—अक्रि० तौला जाना, तौलमें बराबर होना। बराबर होना 'तुलै न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसङ्ग।' रामा० ४१७। तैयार होना, सधना, नियमित होना। सक्रि० बढ़ाना (विद्या० २१५)। अक्रि० पहुँचना 'चेलाको न चलावै तुलै गुरू जेहि भेव।' प० ५६। स्त्री० मिलान, उपमा। गिनती, तौल।
तुलनात्मक—वि० तुलना सम्बन्धी, तुलनाके युक्त।
तुलवाना—सक्रि० तौल कराना।
तुलसी—स्त्री० एक पौधा।
तुला—स्त्री० तराजू ( उदे० 'अङ्क' ) तौल नाप, तुलना। एक राशि।
तुलाई—स्त्री० दुलाई, रुईभरा ओढ़ना 'तपन तेज तपता तपन तूल तुलाई माह। बि० १४२ (वंग०) तौलनेकी मजदूरी। धुरामें तेल दिलवानेकी क्रिया।
तुलादान—पु०अपनी तौलके बराबर किसी वस्तुका दान।
तुलाना—अक्रि० पूरा उतरना। पहुँचना ( उदे० 'गुदराना' )। आ पहुँचना 'ओहु विख भा जब व्याध तुलाना।' प० ३१। जाता रहना 'बोहित भवँहिं भँवै सब पानी। नाचहिं राकस आस तुलानी।' प०१९२। सक्रि० गाड़ीकी धुरीमें तेल देना।
तुलायंत्र—पु० तराजू।
तुलित—वि० तुला हुआ। बराबर किया गया। समान।
तुल्य—वि० समान, सदृश।
तुल्ययोगिता—स्त्री० एक काव्यालङ्कार।
तुवर—देखो 'तूवर'।
तुष—पु० भूसी, धान आदिका छिलका।
तुषाग्नि—स्त्री०, तुषानल—पु० भूसीकी आग। ऐसी आगमें जलकर किया जानेवाला प्रायश्चित्त।
तुषार—पु० पाला, हिम। देखो 'तुखार' ( प० २० )।
तुष्टता—स्त्री० सन्तोष, तृप्ति ( गुलाब ४३९ )।
तुष्टना—अक्रि० सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना।
तुष्टि—स्त्री० प्रसन्नता, तृप्ति।
तुस—पु० देखो 'तुख'।
तुसार—पु० पाला, हिम।
तुसी—स्त्री० देखो 'तुख'।
तुहमत—देखो 'तोहमत' ( पू० २३६ )।
तुहिन—पु० पाला, हिम, ठण्ढक।
तुहिनांशु—पु० चन्द्रमा।
तुहिनाचल—पु० हिमालय पहाड़ ( जीव० २६१ )।

तूँबा, तूँबी— देखो 'तुम्बा', तुम्बी' । रक्त खींचनेका यंत्र
तू—सर्व० मध्यम पुरुष—एकवचन । [ ( पभू० ५२ ) ।
तूख—पु० खरका, तिनकेका पतला टुकड़ा ।
तूटना—अक्रि० टूटना 'तूटे बँधे बँधे पुनि तूटे जब तब होइ बिनासा ।' कबीर ९९
तूठना—अक्रि० सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना 'कौन गरीब निवाजियो कित तूठ्यो रतिराज ।' वि० ३०
तूण—पु०, तूणी—स्त्री०, तूणीर—पु० तरकश ।
तूत—पु० शहतूतका वृक्ष या उसके फल ।
तूतिया—पु० नीला थोथा ।
तूती—स्त्री० छोटी जातिका तोता । एक बाजा । एक चिड़िया ।—बोलना = रोब जमाना, बातका माना जाना । नक्कारखानेमें—की आवाज़ = भीड़ भड़क्केमें कही गयी बात , बड़ों या अपनी अपनी हाँकनेवालोंके सामने छोटोंका कथन ।
तून—पु० तरकश । लाल वस्त्र विशेष ।
तूना—अक्रि० टपकना, गिरना । गर्भ स्खलित होना ।
तूनीर—पु० तूणीर, तरकश ।
तूफान—पु० अन्धड़, उपद्रव, झगड़ा, आपत्ति ।
तूफानी—वि० तूफान खड़ा करनेवाला । झगड़ालू, [ उत्पाती । प्रचण्ड ।
तूमड़ी—स्त्री० देखो 'तुम्बरी' ।
तूमना—सक्रि० रुईके रेशोंको पृथक् करना (रवि० २८) । उधेड़ना, भेद खोलना । धुनना (गीतिका ३४) ।
तूमरी—स्त्री० तूमड़ी, तूँबी ।
तूमापलटी,-फेरी—स्त्री० इसकी चीज उसको देना, फेर-बदल 'ऐसी तूमापलटीके गुन नेति नेति श्रुतिगावैं।' [ गुलाब ९२
तूमार—पु० बातका बतगड़ ।
तूर—पु० नगाड़ा, तुरही ( उदे० 'तार' 'उपङ्ग' ), 'मादर तूर झाँझ चहुँ फेरी ।' प० ८८
तूरज—पु० तुरही नामक बाजा 'इत सूरज तूरज कौं बजाइ ।' सुजा० ९९
तूरण, तूरन—क्रिवि० तूर्ण, तुरन्त, शीघ्र 'इनहींके तपतेज तेज बढ़िहै तन तूरण ।' राम० ४५
तूरना—सक्रि० तोड़ना ( दीन० १०, प० १८४ ), '…पूजिबे काज प्रसूननि तूरति ।' दास १३५ ।
तूरा—पु० तुरही । [ पु० तुरही ।
तूरानी—वि० तूरान देश ( ईरानके उत्तर-पूर्व ) का ।
तूर्ण—क्रिवि० तुरन्त, शीघ्र ।
तूल—वि० तुल्य, सदृश ( उदे० 'चवना', के० १६ ) । पु० सेमर, कपास इत्यादिका घूआ, रुई 'तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करइ सुगाढ़ि ।' रामा० ६०७ । शहतूत । एक लाल रङ्गका कपड़ा ('तूस' बुन्देल०) । गहरा लाल रङ्ग । विस्तार, ढेर 'हाड़ जले जैसे लकड़ीका तूला ।' कबीर ३०० ।—देना = बहुत बढ़ाना । —पकड़ना = बहुत बढ़ जाना ।
तूलना—अक्रि० बराबरी करना, बराबर होना 'तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसङ्ग ।' रामा० ४१७, 'रङ्ग न तेरो है कछू सुवरन सङ्ग न तूल ।' दीन० २११ । धूरीमें तेल देना ।
तूलम तूल—क्रिवि० आमने सामने ।
तूलिका, तूली—स्त्री० चित्रकारोंके लिए बनी हुई बालोंकी कलम, कूची ।
तूवर,तूवरक—पु० अरहर । डूँड़ा बैल । दाढ़ी मोछ रहित [ आदमी ।
तूष्णी—स्त्री० चुप्पी, मौन । वि० चुप ।
तूस—पु० देखो 'तुस' । पु० तूल, गहरे लाल रङ्गका कपड़ा । पशमीना ।
तूसना—सक्रि० सन्तुष्ट करना, खुश करना । अक्रि० [ सन्तुष्ट होना
तृखा—स्त्री० प्यास, इच्छा ।
तृजग—वि० 'तिर्यक्', तिरछा, टेढ़ा । पशु सम्बन्धी ।
तृण, तृन—पु० तिनका, घास । —गहाना=नम्र बनाना, वशीभूत करना' । —टूटना = बलिहारी जाना, नजर लगनेसे बचानेका उपाय किया जाना 'आजु तृन टूटत है री ललित त्रिभंगीपर ।' स्वामी हरिदास । वत्,—समान = अत्यन्त तुच्छ या महत्व हीन । —तोड़ना = सम्बन्ध तोड़ना '· देह गेह सब सन तृन तोरे ।' रामा० २३२ । बलैयाँ लेना (उदे०'छींट')। नज़र लगानेसे बचानेका उपाय करना।
तृणावर्त्त—पु० दैत्य विशेष । बवण्डर ।
तृतीय—वि० तीसरा ।
तृतीया—स्त्री० तीसरी तिथि ।
तृपति, तृप्ति—स्त्री० सन्तोष 'तृपित दृगनकी तृपति जौ ध्यान धरै ते होव ।' रतन० ३८, ( सूरा० १५ )
तृपित, तृप्त—वि० अघाया हुआ, सन्तुष्ट, प्रसन्न ।
तृपिता—स्त्री० तृप्ति, सन्तोष 'अँचवत आदर लोचन पुट दोउ, मनु नहिं तृपिता पावै ।' सू० १८६
तृसाना—अक्रि० तृप्त होना 'लोचन आँजि श्यामरूप

दरसन तवहीं मैं तृसति।' भ्र० ३२

तृषा—स्त्री० प्यास, लालच, लालसा।
तृषावंत—देखो 'तृषित'।
तृषित—वि० प्यासा, उत्सुक, इच्छुक (उर्दू० 'तृष्णित')।
तृष्णा, तृस्ना—स्त्री० प्यास, लालच।
तृष्णापर—वि० तृष्णामें लीन।
ते—प्रत्य० से, द्वारा।
तेंदुआ—पु० चीतेसे कुछ छोटा हिंसक पशु।
तेंदुस—पु० डेंडसी।
तेंदु—पु० एक जङ्गली फल या उसका पेड़।
ते—सर्व० वे।
तेखना—अक्रि० नाराज़ होना, कुपित होना।
तेग—स्त्री० तलवार।
तेगा—पु० तलवार, खाँडा।
तेजपुञ्ज—पु० प्रकाशका समूह, ऐश्वर्यका समूह।
तेज—पु० पराक्रम, प्रताप। चमक, ताप। वीर्य। प्रचण्डता, वेग। [सं० अग्नि। महँगा।
तेज़—वि० पैना, तीक्ष्ण, प्रचंड। फुर्तीला, वेगवान्,
तेजना—सक्रि० तजना, छोड़ना 'तेजि सर्व गुरु चरन गहु जनसे पावै वीर।' साखी ५, (उर्दू० 'अनु-सारना') [मसालेमें पड़ते हैं।
तेजपत्ता,-पत्र,-पात—पु० एक वृक्ष जिसके पत्ते
तेजमान—देखो 'तेजस्वी' (कल्प १७२)।
तेजवंत,-वान—देखो 'तेजस्वी'।
तेजसी, तेजस्वी—वि० प्रतापी, कान्तिमान्, शक्तिशाली 'रिपु तेजसी अकेल अपि, लघु करि गनिय न ताहु।' रामा० ९५ [के अम्लक्षार, अम्ल, एसिड।
तेज़ाब—पु० किसी क्षार पदार्थका अत्यन्त रूप, क्षार
तेज़ी—स्त्री० तीक्ष्णता, तीव्रता, वेग, फुर्ती, महँगी।
तेजोमय—वि० बहुत तेजवाला, तेजस्वी।
तेता, तेतिक—वि० उतना, उसी परिमाण या संख्याका 'जेती सम्पति कृपनकी तेती सूमति जोर।' बि० ५१ 'अग महुँ सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते।' रामा० ४३४
तेरस—स्त्री० त्रयोदशी।
तेरह—वि० दस और तीन। पु० तेरहकी संख्या।
तेरहीं—स्त्री० मृत्युके बादका तेरहवाँ दिन या उस दिनका कृत्य।

तेरुस—पु० त्रिवर्ष (या अगला) तीसरा वर्ष। स्त्री० [तेरस, तेरहवीं तिथि।
तेरे—अ० से।
तेल—पु० तेलहनों आदिसे प्राप्त चिकना द्रव पदार्थ।
तेलहन—देखो 'तिलहन'। [तिलहनकी एक रस्म।
तेलिया—वि० तेलके सदृश चिकना और चमकदार, तेलके समान रंगवाला। पु० काला चमकीला रंग। काले और चमकीले रंगका घोड़ा। 'एक निर तेलिया मारे हार झुनि तेही।' प० २०७
तेलिया पखान—पु० एक चिकना पत्थर 'जहाँ 'चन्द्र-मनि जो द्रवै यह तेलिया पखान।' कुल० १२८
तेली—पु० तेल निकालनेका व्यवसाय करनेवाली एक जाति। स्त्री० पेडल (ऊंट०)।
तेवन—पु० प्रमोद्वन, क्रीडोद्यान, नज़रबाग़। क्रीड़ा।
तेवर—पु० भृकुटी। क्रोध-भरी दृष्टि।
तेवरी—स्त्री० देखो 'त्योरी'।
तेवहार—पु० देखो 'त्योहार'।
तेवान—पु० चिन्ता 'मन तेवान कै राघव झूरा।' प० २२७
तेवाना—अक्रि० चिन्ता करना, विचारमें लीन होना।
तेह—पु० तेहा, घमण्ड, क्रोध, तेजी। 'तेह, तरेरो त्योर करि कत करियत दृग लोल।' बि० ५२
तेहर,-रि—स्त्री० तीन लड़ोंवाली करधनी (गुलब५००)।
तेहरा—वि० जिसके तीन प्रतिबिम्ब या तीन परतें हों। 'दोहरे तेहरे चौहरे भूषण जाने जात।' बि० २८०
तेहराना—देखो 'तिहराना'।
तेहा—पु० क्रोध, घमण्ड।
तेही—वि० क्रोधी, अहंकारी, घमंडी।
तैं—सर्व० तू। विभक्ति-'से'।
तैं—क्रिवि० उतना। वि० देखो 'तर'।
तैना—देखो 'तपना'। सक्रि० तपाना, जलाना '...कहाँ लौं हियो विरहागिनि तैये।' दास २९
तैनात—वि० नियुक्त, मुकर्रर।
तैनाती—स्त्री० किसी कामपर नियुक्त होना, नियुक्ति।
तैयार—वि० प्रस्तुत, उद्यत, दुरुस्त, हृष्टपुष्ट।
तैयारी—स्त्री० किसी कार्यके लिए प्रस्तुत होना या साज-सामान ठीक करना, मुस्तैदी, धूमधाम, सजावट।
तैरना—अक्रि० तैरना, उतराना।
तैराक—पु० जो तैरनेमें होशियार हो, तैरनेवाला।
तैल—पु० देखो 'तेल'।

तैलकार—पु० तेल निकालने इ० का काम करनेवाली

तैलकिट्ट—पु० खली। [ एक जाति, तेली।

तैलाक्त—वि० तैलसे युक्त।

तैश—पु० क्रोध, आवेश।

तैसा—वि० वैसा, उस तरहका।

तौं—क्रिवि० त्यों। उस प्रकार। उस समय।

तौंअर—पु० एक अस्त्र जो भालेकी तरहका होता है,

तौंद—स्त्री० आगे बढ़ा हुआ पेट। [ तोमर।

तौंदल—वि० तौंदवाला।

तौंदी—स्त्री० नाभि।

तो—अ० ऐसी हालतमें, तब। सर्व० तेरा। तुझ (तोमें

तोइ—पु० तोय, पानी। [ इ० )।

तोई—स्त्री० मगजी, गोट ( सुन्दर शृङ्गार ७७ )।

तोख—पु० तोष, सन्तोष, प्रसन्नता।

तोखना—सक्रि० सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना।

तोखार—पु० देखो 'तुखार'।

तोटक—पु० एक छन्द।

तोटका—पु० टोटका, टोना, जादू।

तोटना—अक्रि० टूटना ( मति० २३३ )।

तोड़—पु० नदीका तेज प्रवाह। तोड़नेकी क्रिया। पेंच।

तोड़ना—सक्रि० भंग करना, खडित करना, चूर्ण करना। बेकाम करना। [ पहिरावौं।' प० १९१।

तोड़र—पु० तोड़ा, पैरका एक गहना 'नौ गिरही तोड़र

तोड़ा—पु० हजार रुपयेकी थैली। एक गहना। पलीता।

तोण—पु० तूणीर, तरकश। [ तोत।' रतन० ७३

तोत—पु० राशि, ढेर 'घर घर उनहींके जुरे बदनामीके

तोतक—पु० पपीहा ( कवि प्रि० १०३ )।

तोतर, तोतरा, तोतला—वि० जो स्पष्ट उच्चारण न करता हो। जिसका उच्चारण साफ न हो 'जो बालक कह तोतरि बाता।' रामा० ८

तोतराना,-लाना—देखो 'तुतराना'। 'तनक मुखकी तनक बतियाँ माँगत हैं तोतराइ।' सूबे० ५७

तोता—पु० सुग्गा, सुआ, शुक। बन्दूकका घोड़ा।

तोदन—पु० पीड़ा, चाबुक।

तोप—स्त्री० एक बड़ा अस्त्र जिससे गोले चलाये जाते हैं। तोपदम करना=तोपसे उड़ा देना।

तोपखाना—पु० तोपें रखनेकी जगह। तोपोंका समूह या तोपसे लड़नेवाली सेना।

तोपची—पु० तोप चलानेवाला।

तोपना—सक्रि० ढाँकना, छिपाना 'बरषि बान रघुपति-रथ तोपेउ।' रामा० ५०८, ( कविता० १८५ )

तोबड़ा—पु० घोड़ेको दाना खिलानेका थैला।

तोबा—स्त्री० पापकर्मका पश्चात्तापपूर्वक त्याग, मद्यपान त्यागनेकी प्रतिज्ञा।

तोम—पु० राशि, समूह 'तीतर-तोम तमीचर-सेन समीर-की सूनु बड़ो बहरी है।' कविता० १९४, (भू० १६)

तोमर—पु० एक छन्द। एक अस्त्र। एक राजपूत वंश।

तोमरी—स्त्री० तूँबड़ी, कड़ुआ कद्दू।

तोय—पु० पानी।

तोयधि,-निधि—पु० समुद्र।

तोर—सर्व० तेरा। पु० दाँव,पेंच। जलका तीव्रप्रवाह।※

तोरई—स्त्री० एक तरकारी। [※ दहीका पानी।

तोरण, तोरन—पु० बन्दनवार। घर या नगरका बाहरी द्वार। फूलपत्तों आदिसे सुसज्जित फाटक।

तोरना—सक्रि० खडित करना, भग्न करना, नष्ट करना 'एहि विधि सकल बल तोरि। तेहि कीन्ह कपट बहोरि।' रामा० ५१४। दूर करना।

तोरा—पु० तुर्रा, कलगी 'को राखै हिन्दुनको तोरा।' छत्र० ८४। सर्व० तेरा।

तोराई—देखो 'तुराई' ( उदे० 'छुद्र' )।

तोराना—सक्रि० तुड़ाना, भग्न कराना, नष्ट कराना, बंधन छुड़ाना, अलग कराना।

तोरावान्—वि० तेज, वेगवाला।

तोरी—स्त्री० काले रंगकी सरसों।

तोलना—सक्रि० तराजूपर रखकर वजन करना,जाँचना। तुलना करके विचार करना। पहियेमें तेल देना। धनुष इत्यादिको उचित रीतिसे साधना, सँभालना, उठाना ( दोहा० ११८ )।

तोला—पु० बारह माशेकी तौल।—माशे होना=(तबी-यतका ) ज़रामें डाँवाडोल होना या बिगड़ जानेकी सम्भावना होना ( जीव० ९९ )।

तोशक—पु० देखो 'तोसक'।

तोशल, तोषल—देखो 'तोसल'।

तोशाखाना—पु० देखो 'तोसाखाना'।

तोषण—पु० सन्तुष्ट करनेकी क्रिया, तृप्ति।

तोषना—सक्रि० सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना ( ब्रौ०

'अवडेरना' )। अक्रि० सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना 'प्रभु तोषेउ सुनि शंकर बचना।' रामा० ४०
तोस—पु० सन्तोष, प्रसन्नता।
तोसक—पु० रुईदार बिछौना, मुलायम गद्दा।
तोसल—पु० मूसल। एक असुरका नाम।
तोसा—पु० यात्राके लिए रखी गयी खाद्य वस्तु।
तोसाखाना,-गार—पु० राजाओं इ० के क़ीमती कपड़े तथा आभूषण रखनेका कमरा।
तोहफा—वि० बढ़िया। पु० उपहार, भेंट।
तोहमत—स्त्री० मिथ्या दोषारोप।
तौंकना—अक्रि० आँचसे तपना ( उदे० 'चुवा' )।
तौंस—स्त्री० धूप खानेके कारण उत्पन्न विकट प्यास।
तौंसना—अक्रि० तप जाना, गरमीके कारण झुलस जाना '…तात तात ! तौंसियत झौंसियत झारहीं।' कविता० [ १७८
तौंसा—पु० भयंकर गरमी।
तौ—क्रिवि० तो। अक्रि० 'हतो', था।
तौक-पु०, तौकी—स्त्री० गलेका एक गहना, हँसुली। 'बाहुटाड़कर कंकन बाजूबंद येते पर तौकी।' सूबे०१४३
तौन—सर्व० वह।
तौफीक—स्त्री० रियायत, अनुग्रह, मदद, साहस, शक्ति, सामर्थ्य (सेवा० ३४९), बुद्धि।
तौर—पु० तरीका, प्रकार, ढंग। तौर तरीका=चाल-व्यवहार, रंगढंग।
तौरि—स्त्री० चक्कर, घुमरी।
तौरेत—पु० यहूदियोंकी धर्म-पुस्तक।
तौल—स्त्री० तौलनेकी क्रिया, वज़न। जोख।
तौलना—सक्रि० देखो 'तोलना'।
तौलाई—स्त्री० तौलनेकी क्रिया। तौलनेकी मजदूरी।
तौलिया—स्त्री० शरीर पोंछनेका मोटा गमछा।
तौसना—अक्रि० देखो 'तौंसना'। सक्रि० गर्मीसे ब्याकुल करना।
तौहीन—स्त्री० अपमान, बेइज्जती।
त्यक्त—वि० त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, विसर्जित।
त्याग—पु० छोड़ना, सम्बन्ध तोड़ना, हटाना, सुख या स्वार्थ छोड़ना, उत्सर्ग।
त्यागना—सक्रि० त्याग करना, छोड़ना।
त्यागपत्र—पु० इस्तीफा। तिलाकनामा।
त्यागी—वि० छोड़नेवाला, विरक्त।
त्याज्य—वि० त्याग करने योग्य।
त्यार—वि० तैयार, उद्यत, प्रस्तुत।
त्यों—क्रिवि० उस तरह। स्त्री०तरफ(उदे० 'अदोखिल', कविता० १३९ )।
त्योनार—पु० देखो 'त्यौनार', (उदे० 'गुहना')।
त्योर, त्योरी—स्त्री० चितवन, दृष्टि। त्योर टानना, त्योरी चढ़ाना, त्योरी बदलना=क्रोधसे भौंहें चढ़ाना 'आवत गुसुलखाने ऐसे कछु त्योर ठाने जाने अवरंगजूके प्राननको लेवा है।' भू० ३१
त्योरस, त्योरुस—पु० तीसरा वर्ष (गत या आगामी)।
त्योहार—पु० पर्वदिन, उत्सवका दिन।
त्योहारी—स्त्री० त्यौहारके उपलक्षमें नौकर इ० को दी जानेवाली रकम।
त्यौनार—पु० तरीका, ढंग।
त्यौर—पु०, त्यौरी—स्त्री० देखो 'त्योर'। 'दबै नहीं चित चढ़ि रह्यौ अबै चढ़ाये त्यौर।' बि० २४७
त्यौराना—अक्रि० सिर घूमना।
त्रपा—स्त्री० लज्जा। वि० लज्जित।
त्रय—वि० तीन।
त्रयी—स्त्री० तीनका समूह।
त्रयोदशी—स्त्री० पाखकी तेरहवीं तिथि।
त्रष्टा—पु० तष्टा, ताँबेकी तश्तरी।
त्रसना—अक्रि० भयभीत होना 'करम-कपीस-बालि-बली त्रस्यो हौं।' विन० ४२४
त्रसरेणु—पु० 'सूराखसे आनेवाली धूपमें दिखायी पड़ने-वाला अणु।
त्रसाना—अक्रि० भय दिखाना, डराना।
त्रसित, त्रस्त—वि० भयग्रस्त, पीड़ित।
त्राटक—पु० मनको एकाग्र करने या एक विन्दुपर दृष्टि जमानेकी प्रक्रिया ( जीव० ४४ )।
त्राण—पु० रक्षा। जिससे रक्षा हो, कवच।
त्राता, त्रातार—पु० रक्षक।
त्रास—पु० डर, भय। कष्ट।
त्रासक, त्रासकर—पु०त्रास देनेवाला। नष्ट करनेवाला।
त्रासना—सक्रि० देखो 'त्रसाना'। कहेसि सकल निसि-चरिन्ह बोलाई। सीतहिं बहुविधि त्रासहु जाई।' रामा० ४१९
त्रासित—वि० देखो 'त्रस्त'।
त्रासिनी—वि० स्त्री० डरानेवाली।
त्राहि—अ० रक्षा करो, बचाओ।
त्रिकालज्ञ,-दर्शी—पु० तीनों कालकी बात जाननेवाला।
त्रिकुटी—स्त्री० भौंहके बीचकी जगह (उदे० 'तराटक')।
त्रिकूट—पु० लङ्काके पासका एक पहाड़।

त्रिकोण—पु० तीन कोनोंवाली वस्तु। त्रिभुज।

त्रिखा—स्त्री० देखो 'तृषा'।

त्रिगुण—वि० तिगुना। पु० सत्व, रज और तमोगुण।

त्रिजग—पु० तिर्यक्, पशु, कीड़ा इ० 'त्रिजग देव नर असुर अपर जग जोनि सकल भ्रमि आयो।' विन० ४६१

त्रिजटा—स्त्री० विभीषणकी भगिनी।

त्रिज्या—स्त्री० केन्द्रसे परिधितककी रेखा।

त्रिजामा—स्त्री० रात, निशा।

त्रिण—पु० तिनका।

त्रिदल—पु० बिल्वपत्र, बेलका पेड़।

त्रिदश, त्रिदस—पु० देवता ( उदे० 'आरि' )।

त्रिदशपति—पु० इन्द्र।

त्रिदिव—पु० स्वर्ग।

त्रिदोष—पु० वात पित्त-कफसे उत्पन्न व्याधि, सन्निपात।

त्रिदोषना—अक्रि० वात, पित्त, कफके फन्देमें पड़ना। काम क्रोध तथा लोभके वश होना।

त्रिधा—क्रिवि० तीन तरहसे।

त्रिधारा—स्त्री० ( आकाश, पाताल, मृत्युलोकमें बहनेवाली ) गंगा। सेंहुड़।

त्रिन—पु० तिनका।

त्रिनयन,-नेत्र—पु० शङ्करजी।

त्रिपथगा—स्त्री० गंगा।

त्रिपिताना—अक्रि० तृप्त होना, सन्तुष्ट होना। सक्रि० सन्तुष्ट करना।

त्रिपुंड,-त्रिपुण्ड्र—पु० शैवोंका तीन आड़ी लकीरोंवाला तिलक।

त्रिपुटी—स्त्री० तीन पदार्थोंका समूह। छोटी इलायची। त्रिकुटी 'त्रिपुटीमें या कुटी बना ले समाधिमें रमाए गीता' कानन कुसुम ४२

त्रिपुर—पु० दैत्य विशेष। तीन नगरोंवाला प्रदेश।

त्रिपुरांतक, त्रिपुरारि—पु० शङ्करजी।

त्रिफला—पु० हड़, बहेड़े और आँवलेका योग।

त्रिवली—स्त्री० पेटके ऊपरकी तीन रेखाएँ।

त्रिवेनी—स्त्री० देखो 'त्रिवेनी'।

त्रिभंग—पु० टेढ़े खड़े होनेका ढङ्ग। वि० तीन स्थानोंसे टेढ़ा 'चलत अङ्ग त्रिभङ्ग करिकै, भौंह भाव चलाइ।' सू० १२६

त्रिभंगी—वि० तीन जगहोंसे टेढ़ा, जो इस प्रकारसे खड़ा हो ( कृष्ण )।

त्रिभुज—पु० तीन भुजाओंवाली आकृति।

त्रिभुवन—पु० तीनों लोक।

त्रिमूर्त्ति—पु० ब्रह्मा, विष्णु, महेश। तीन व्यक्तियोंका समूह।

त्रिय, त्रिया—स्त्री० स्त्री, पत्नी 'तन्दुल त्रिय दीने हुते, आगे धरियो जाय।' सुदामा०

त्रियामा—स्त्री० रात्रि।

त्रिलोक—पु०, त्रिलोकी—स्त्री० स्वर्लोक, भूलोक तथा पाताल, इन तीनोंका समूह।

त्रिलोकीनाथ—पु० परमेश्वर।

त्रिलोचन—पु० शिवजी।

त्रिवर्ग—पु० अर्थ, धर्म और काम। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य। सत्त्व, रज, तमोगुण।

त्रिविध—वि० तीन तरहका। क्रिवि० तीन तरहसे।

त्रिवेणी, त्रिवेनी—स्त्री० तीन नदियोंका संगम, गङ्गा-यमुना, सरस्वतीके मिलनेकी जगह।

त्रिशंकु—पु० एक पुराणवर्णित राजा। एक तारा।

त्रिशूल—पु० दैहिक, भौतिक, दैविक दुःख। शिवजीका अस्त्रविशेष।

त्रिषा—स्त्री० प्यास ( कबीर १६२ )।

त्रिसंध्या—स्त्री० सवेरा, दोपहर और शाम।

त्रिसित—वि० तृषित, प्यासा, लालायित।

त्रिस्रोता—स्त्री० गङ्गाजी।

त्रुटि—स्त्री० चूक, कमी, दोष।

त्रुटित—वि० टूटा हुआ ( रामा० ३२ )

त्रेतायुग—पु० सतयुगके बादवाला युग।

त्रै—वि० त्रय, तीन।

त्रैकालिक—वि० तीनों कालमें होनेवाला।

त्रैमातुर—वि० लक्ष्मण।

त्रैमासिक—वि० तीन महीनोंका। तीन महीनोंपर होनेवाला।

त्रैराशिक—पु० तीन राशियोंके सहारे चौथी राशि जाननेकी क्रिया।

त्रैवार्षिक—वि० तीन वर्षोंका, जो तीन वर्षोंमें हो।

त्रोण, त्रोन—पु० तूणीर, तरकश।

त्र्यंबक—पु० शिवजी।

त्वक—पु० त्वचा।

त्वचकना—अक्रि० भीतरकी ओर धँस जाना या दब जाना, पचकना, जीर्ण होना 'पहली दशा पलटि लीन्ही है त्वचा त्वचकि तनु पिलकी।' सू० २०१

त्वचा, त्वच्—स्त्री० चर्म, छिलका।

त्वदीय—सर्व० तुम्हारा।

त्वरा—स्त्री० शीघ्रता।
त्वरावान्—वि० जल्दबाज।
त्वरित—क्रिवि० तुरन्त, शीघ्रतासे।
त्वष्टा—पु० सूर्यका एक नाम, विश्वकर्मा, बढ़ई। शिवजी।

---

# थ

थंडिल—पु० यज्ञादिकी वेदी।
थंब, थंभ—पु० खम्भ 'प्रभु थंभ ते निकसे कै विस्तार…' कबीर २०७,'अति अद्भुत थंभनकी दुगई। गजदन्त सुकञ्चन चित्रमई।' के० १७५। थाम, सहारा।
थंभन—पु० ठहराव। थामनेवाला 'दिल्लि दलन दक्खिन दिशि थंभन, ऐंड धरन सिवराज बिराजै।' भू० ५४
थँभना—अक्रि० सँभलना, ठहरना, रुकना 'बिना आवने मोसों थँभै न रार।' सुजा० १४
थंभित—वि० ठहरा हुआ। अचल।
थक—पु० समूह, राशि।
थकन—देखो 'थकान'। ( ग़बन ३०६ )
थकना—अक्रि० क्लान्त होना, अधिक परिश्रमके कारण शिथिल होना। तंग आना, मुग्ध होना, छक रहना। ( सू० ८८ ), 'थके नारिनर प्रेम पियासे।' रामा० २५४। धीमा पड़ जाना।
थकान—स्त्री० शिथिलता, क्लान्ति, थकावट।
थकाना—सक्रि० शिथिल करना, क्लान्त करना।
थकावट,-हट—स्त्री० थकान, क्लान्ति, शिथिलता।
थकित—वि० श्रान्त, थका हुआ, विमुग्ध।
थकौंहाँ—वि० कुछ कुछ थका हुआ, शिथिल।
थक्का—पु० किसी गाढ़ी वस्तुका जमा हुआ टुकड़ा, लौंदा।
थगित—वि० रुका हुआ, शिथिल।
थति—स्त्री० थाती, धरोहर। रक्षित पूँजी।
थन—पु० गाय, भैंस इत्यादिका स्तन।
थनेला—पु०, थनेली—स्त्री० स्तनपर होनेवाला फोड़ा।
थनैत—पु० गाँवका मुखिया, जमींदारकी ओरसे लगान वसूल करनेवाला।
थपकना—सक्रि० हलके हाथसे ठोंकना।
थपका—पु० जमी हुई वस्तु, जमा हुआ कतरा।
थपकी, थपथपी—स्त्री० हाथका हलका आघात। मुँगरा।
थपड़ी—स्त्री० करताली, थपोड़ी।
थपन—पु० स्थापन, स्थापित करनेकी क्रिया।
थपना—सक्रि० स्थापित करना, जमाना, प्रतिष्ठित करना 'मारिकै मार थप्यो जगमें जाकी प्रथम रेख भट माहीं।' विन० ६९, ( उदे० 'माइ' )। अक्रि० स्थापित होना, प्रतिष्ठित होना।
थपाना—सक्रि० स्थापित कराना।
थपुआ—पु० घर छानेका मिट्टीका खपरा।
थपेड़ना—सक्रि०चपत मारना,आघात करना(साकेत२२१)
थपेड़ा—पु० चपत, तमाचा, धक्का।
थपोड़ी,थपोरी—स्त्री० ताली, थपड़ी ( कलस २२५ )।
थप्पड़—पु० थपेड़ा, तमाचा।
थम—पु० स्तम्भ, खम्भा। केलेकी पेड़ी।
थमकारी—वि० थामनेवाला। रोकनेवाला।
थमना—अक्रि० ठहरना, स्थित रहना, रुका रहना 'जिनके जप तपसे थमैं, सात द्वीप नवखण्ड।' चाचा हित०। धैर्य रखना। रुक जाना। बन्द हो जाना।
थर—पु० थल, सूखी ज़मीन, ज़मीन। जगह 'जेहि थर आनिहिं भाँतिकी बरनत बात कछूक।' भू० ४५। स्त्री० शेरकी माँद।
थरकना—अक्रि० भयसे काँपना।
थरकौंहाँ—वि० काँपता हुआ, इधर उधर डोलता हुआ, चञ्चल। स्थिर 'दृग थरकौंहैं अधखुले देह थकौंहैं ढार।' बि० २८६
थरथर—क्रिवि० हिलनेकी मुद्राके साथ।
थरथराना—अक्रि० भयसे काँपना। हिलना, काँपना।
थरथराहट—स्त्री० कँपकँपी, थरथरी।
थरथरी,थरहर,थरहरी—स्त्री० कम्प, कँपकँपी 'दीप-सिखासी थरहरी लगें बयारि झकोर।' मति० १९८, 'कोउ लाल यो सखि लखै लागे थरहर देह।' वि० २१३ (बंग०),साधुनके सतसंगते थरहर काँपै देह।'साखी ५४
थरमामीटर,-मेटर—पु० तापमान यन्त्र।
थरसल—वि० थहराया हुआ, हक्का बक्का 'थरसल गया न भाग सकौं वै भागे जात अगाऊ।' सूसु० १९९
थरहाई,-थराई—स्त्री० निहोरा।

थरि,-री—स्त्री० सिंह इत्यादिके रहनेकी जगह। माँद, 'सिंहनकी सुथरी गज खेले।' छत्र० २९

थरिया—स्त्री० थाली।

थरु—पु० थल।

थर्राना—अक्रि० काँप उठना, भयसे चौंक उठना।

थल—पु० भूमि, जगह, सूखी ज़मीन। जगह।

थलकना—अक्रि० डिगना, काँपना 'थलकत भूमि हलकत भूमिधर...'—दास १०५

थलचर पु०—स्थलचारी जीव।

थलज—पु० गुलाब 'थलज को फूल कौन, दारिमकी फलों' कहाँ सुंदर शृंगार १०७

थलथलाना—अक्रि० मोटे मनुष्यकी देहके चमड़ेका या तोंद इ० के मांसका हिलना।

थलपति—पु० भूपति, राजा।

थलरुह—वि० थलपर पैदा होनेवाले (वृक्ष इत्यादि)।

थली—स्त्री० स्थान, पानीके नीचेकी भूमि।

थवई—पु० मकान बनानेवाला, राजगीर (प० २६०)।

थहना—सक्रि० थाह लेना। किसीकी गहराई या आन्तरिक उद्देश्य इत्यादि मालूम करना।

थहरना—अक्रि० काँपना, हिलना 'चंचल लोचन चारु विराजत पास लुरी अलकैं थहरैं।' दास ८०,'जरीदार पगरी उदार, उर मुक्तमाल थहरति है।' सहचरिशरण

थहराना—अक्रि० भय इ० से काँपना, हिलना (भू० १९)।

थहरि—स्त्री० थली, भूमि 'इहै लालच गाइ दस लिये बसति है ब्रज थहरि।' सूबे० १११

थहाना—सक्रि० देखो 'थहना', 'गोपद बूड़िबे जोग करम करौं बातनि जलधि थहावौं।' विन० ५३०

थाँग—स्त्री० चोरोंका गुप्त अड्डा। पता, खोज।

थाँभ—पु० खम्भा 'थाँभ नाहिं उठि सकै नथूनी।'प०१७२

थाँमना—सक्रि० देखो 'थामना', (सुजा० २८)।

थाँवला—पु० देखो 'थाला'।

थाई—वि० स्थायी, स्थिर रहनेवाला। स्त्री० जगह, (बदले) 'उगटयो गरल दूधकी थाई।' छत्र ३५

थाक—पु० ग्रामसीमा, हद। राशि।

थाकना—अक्रि० देखो 'थकना', 'रथ समेत रवि थाकेउ निशा कवन विधि होय।' रामा १०९। ठहर जाना।

थात—वि० स्थित, ठहरा हुआ।

थाति—स्त्री० देखो 'थाती'। स्थिति, ठहरने या रहनेकी क्रिया 'भजे विकल बिलोकि कलि अघ अवगुननकी थाति।' विन० ५०८

थाती—स्त्री० अमानत, धरोहर, रक्षित धन या अन्य वस्तु (रामा० २०९), 'ये मम देस विलायत है गज ये मम मन्दिर ये मम थाती।' सुन्द० २४

थान—पु० स्थान 'जन्मथान जिय जानि कै ताते सुख पावत।' सूबे० २७७। रहनेकी जगह। पशुओंके बाँधे जानेकी जगह 'बड़ो डील लखि पीलको सबन तज्यो वन थान।' भू० ६२। कपड़े आदिका समूचा टुकड़ा। अदद, नग।

थाना—पु० केन्द्र, निवासस्थान 'रघुकुल राघव कृष्ण सदा ही गोकुल कीन्हों थानो।' सूवि० ११। पुलिसकी चौकी।

थानुसुत—पु० गणेशजी (कवि प्रि० १२१)

थानेदार—पु० थानेका मुख्य कर्मचारी।

थानैत—पु० ग्रामदेवता। अधिपति।

थाप—स्त्री० थपकी, थप्पड़, आघात 'लागत थाप मृदंग मुख शब्द रहत भरिपूरि।' के० १८८। दानका चिह्न, छाप। धाक, प्रतिष्ठा।

थापन—पु० स्थापित करनेका कार्य (साखी ५)। स्थापित करनेवाला, ज़मानेवाला (विन० ४१२), 'रघुकुलतिलक सदा तुम्ह उथपन थापन।' जा० मं०

थापना—सक्रि० स्थापित करना, प्रतिष्ठित करना 'असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज स्रुतिसेतु।' रामा० ७१, (उद्दे० 'अवडेरना')। स्त्री० स्थापना, प्रतिष्ठा।

थापर—स्त्री० थप्पड़, तमाचा 'हनुमन्त बली तेहि थापर मारी।' राम० ३१८

थापा—पु० छापा। पजेकी छाप 'थापे देत घरनके द्वारे गावति मंगल नारि सुहाई।',सूबे० ११८। राशि,पुञ्ज।

थापी—स्त्री० गच या कच्चा घड़ा पीटनेका औज़ार।

थाम—स्त्री० पकड़, रोक। पु० खम्भा।

थामना, थाम्हना—सक्रि० सँभालना सहारा देना, भार लेना, ग्रहण करना। रोकना।

थायी—वि० देखो 'थाई'।

थार, थारा—पु० बड़ी थाली 'गजमोतिनयुत शोभिजै मरकत मणिके थार।' के० १०९, '...थारापर पारा पारावार यों हलत है'—भू० १५०

थाल—पु० पीतल इ० का गोल छिछला बरतन जिसमें खानेके लिए भोजन या अन्य वस्तु रखते हैं।

थाला—पु० पौधा लगानेका घेरा या गड्ढा।

थालिका—स्त्री० थाला।
थावर—वि० स्थावर, जड़ (सू० ९२, उदे० 'छिरकना')।
थाह—स्त्री० तालाब इत्यादिकी तली, गहराईकी सीमा। सीमा, पार। परिमाण इत्यादिका अन्दाज, टोह 'जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महा मन्दमति पावन चाहा।' रामा० ३५८, ( उदे० 'अवगाह' ) वि० कम गहरा, उथला।
थाहना—सक्रि० थाह लेना, पता लगाना 'मन उलटा दरिया मिला लागा मलि मलि न्हान। थाहत थाह न आवई सो पूरा रहमान।' साखी ३८, (सूनु० ६९)
थाहरा—वि० उथला, छिछला।
थियटर पु० नाट्यशाला। अभिनय।
थिगली—स्त्री० पैबन्द, जोड़में लगा हुआ कपड़ेका*
थित—वि० स्थापित, स्थित, ठहरा हुआ। [* टुकड़ा।
थिति—स्त्री० स्थिति, ठहराव, ठहरनेकी जगह। दशा, स्थिरता, शान्ति। 'लोक वेद हूँ, विदित बात सुनि समुझि, मोह-मोहित्त विकल मति थिति न लहति।' विन० ५५८। क़ायम रहनेका भाव 'जाते जगको होत है उत्पति थिति अरु नाश।' के० ८८
थियासाफ़ी—स्त्री० ब्रह्मविद्या। सम्प्रदाय विशेष।
थिर—वि० स्थिर, शान्त ( उदे०'उचाट' ), जो चचल न हो 'कमला थिर न रहीम कहि यह जानत सब कोय।' रहीम १४। दृढ़, स्थायी।
थिरकना—अक्रि० ठमक ठमककर नाचना, आगे पीछे डोलना '...पाँखुरी पदुमपै भँवर थिरकत है'—आलम, 'बेसर थिरकि रही अधरनपै मोती थिरकत जात।' राय ईश्वरीप्रताप नारायण।
थिरकौंहा—वि० थिरकनेवाला। स्थिर।
थिरजीह—पु० मछली।
थिरता, थिरताई—स्त्री० स्थिरता, स्थायित्व। शान्ति।
थिरथानी—पु० स्थिर स्थानवाला।
थिरना—अक्रि० स्थिर होना, ठहरना 'दोउनको रूप गुन दोऊ बरनत फिरैं घर न थिरात रीति नेहकी नई नई।' देव। तलमें या नीचे बैठ जाना।
थिरा—स्त्री० अचला, पृथिवी।
थिराना—अक्रि० स्थिर होना (उदे०'चिराना')। सक्रि० मैल इ० को नीचे बैठ जाने देना। स्थिर होने देना।
थीता पु०, थीती—स्त्री० स्थिरता, धैर्य, शान्ति, चैन। 'टेकु पियास, बाँधु मन थीती।' प० १६६
थीर—वि० 'थिर', स्थिर 'निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा।' रामा० ५८६
थुकाना—सक्रि० थूकनेको प्रेरित करना, उगलवाना, बदनाम कराना। [※ तिरस्कार।
थुक्काफ़ज़ीहत—स्त्री० लज्जाजनक अपमान, दुर्गति, घोर※
थुड़ी—स्त्री० बदनामी, धिक्कार, लानत।
थुत्कार—पु० थूकनेकी आवाज़।
थुनी—स्त्री० देखो 'थूनी'।
थुपथुपी—स्त्री० थपकी, झोंका।
थुरना—सक्रि० देखो 'थूरना'।
थुरहथा—वि० जिसके हाथमें थोड़ी ही वस्तु आ सके 'कन दैबो सौंप्यो ससुर बहू थुरहथी जानि।' बि० १२४
थूक—पु० मुँहसे निकालनेवाला झागदार या लसीला रस, खखार। [निन्दा करना।
थूकना—अक्रि० थूक बाहर निकालना। सक्रि० उगलना,
थूथन,-ना, थूथरा—पु० घोड़े इ० के सदृश लम्बा मुँह।
थून, थूनी—स्त्री० खम्भा, चाँड़ ( उदे० 'थाँम' )।
थूरना—सक्रि० पीटना, कुचलना, चूर्ण करना 'थूरि मद, कंटकको दूरि करि यातें भूरि ईरिषा-कुसन खनि बाहिर निसारे हैं।' दीन० ५ ठूँठ ठूँसकर भरना।
थूल, थूला—वि० स्थूल, मोटा ( उदे० 'काट' )।
थूली—स्त्री० दलिया, सूजी।
थूवा—पु० डूह, टीला।
थूहड़, थूहर—पु० एक काँटेदार पेड़, सेंहुड़।
थूहा—पु० टीला, डूह।
थेथर—वि० हैरान, थका हुआ।
थेईथेई—स्त्री० नाचनेका एक ढंग और ताल।
थैला—पु० बड़ी थैली, गोन।
थैली—स्त्री० कपड़े इत्यादिको सीकर बनायी हुई खोली, बटुआ। वह थैली जिसमें रुपये भरे हों 'तुरत देव मैं थैली खोली।' रामा० १४९
थोक—पु० इकट्ठी वस्तु, राशि, समूह, 'कहुँ ललित अगर गुलाब पाटल पटल बेला थोक हैं।' भू० ८
थोड़ा, थोर—वि० कम, न्यून, अल्प, छोटा 'कछु बात बड़ी न कहौं मुख थोरे।' के० ३२९
थोथरा—वि० सारहीन, खोखला, बेकाम 'जप तप दीखे थोथरा तीरथ व्रत विस्वास। सूआ सेंमल सेइकै फिर

उडि चला निरास।' साखी १८१

थोथा–वि० कुंठित, नि:सार, तत्वहीन, बेकाम ( साखी ७२ )।

थोपना—सक्रि० थापना, छोपना, मत्थे मढ़ना।

थोचड़ा—पु० थूथन।

थोरिक—वि० ज़रासा, तनिकसा। [ २३

थौंद–स्त्री०तोंद 'किहूँ दै कटारीन सौं थौंदि फारी।' सुजा०

थ्यावस—पु० स्थिरता, दृढता, धैर्य।

---

# द

दंग—वि० स्तब्ध, चकित। पु० शंका, डर।

दंगई—वि० दंगा करनेवाला, फसादी, झगड़ालू।

दंगल—पु० कुश्ती। कुश्ती लड़नेकी जगह। समूह दल। मोटा गद्दा।

दंगली—वि० युद्ध करनेवाला '" तेरी खरगउ दंगली'*

दंगा—पु० झगड़ा, उपद्रव। हुल्लड़। [* भू० ७९

दंड—पु० सज़ा, शासन। डंडा (उदे० 'कंथा'), डाँड़ी। घड़ी या साठ पल। एक तरहकी कसरत।

दंडक—पु० दंड देनेवाला ( भू० २९ )। छन्दविशेष। एक वन।

दंडकारण्य—पु० विन्ध्याचलके दक्षिणका एक वन।

दंडधर—पु० शासक। सन्यासी। यमराज।

दंडना—सक्रि० दंड देना, सज़ा देना।

दंडनायक—पु० सेनापति, हाकिम।

दंडनीति—स्त्री० दण्डद्वारा वशमें रखनेकी नीति। फौजदारीका क़ानून।

दंडनीय, दंड्य—वि० दंड देने योग्य।

दंडमान—वि० सज़ा पाने लायक़।

दंडवत्—पु० साष्टांग प्रणाम।

दंडायमान—वि० सीधा खड़ा।

दंडित—वि० जिसे दंड दिया गया हो।

दंडी—पु० जो दंड धारण करता हो,संन्यासी। द्वाररक्षक।

दंत—पु० दाँत। दोकी संख्या। [ यमराज। शिवजी।

दंतकथा—स्त्री० जनश्रुति, कल्पित बात।

दंतच्छद,-छद—पु० ओंठ।

दंतछत,-छद—पु० दाँतोंसे काटनेका घाव' कहा छपावति चतुर तिय कत दंतछद जानि। मति० १८९ (उदे० ललित० ५०।

दंतधावन—पु० दाँत साफ करनेकी क्रिया। दाँतुन।

दंतबीज,-बीजक, दंतवीज, वीजक—पु० अनार।

दंतायुध—पु० सूअर। [ 'कजरारा' )।

दंतार, दंतारा—वि० बडे दाँतोंवाला। पु० हाथी (उदे०

दंताल, दंतावल—पु० हाथी।

दंति, दंती—पु० हाथी (मुद्रा० ४)।

दँतियाँ—स्त्री दँतुरिया, बच्चोंके छोटे छोटे दाँत 'चलैं किलकारैं चूइ चूइ परैं लोल लारैं लोगहू निहारैं भई दूइ दूइ दँतियाँ।' दीन० १३५

दँतुरियाँ—स्त्री० छोटे छोटे दाँत (सू० ५५, रघु० ५३)।

दँतुला—वि० जिसके दाँत निकले हों।

दंत्य—वि० जिसका उच्चारण दाँतकी सहायतासे हो।

दंद—पु० उपद्रव, हुल्लड़ - युद्ध (विद्या० ८)। गरमी। ज़ुल्म (विद्या० १३८)।

दंदन—पु० दमन करनेवाला 'हे चन्दन, दुख दन्दन सबकी जरन जुड़ावहु।' नन्द० [—गुलाब ३०३

दंदनी—स्त्री० शमन करनेवाली 'शोक संक दंदनी।'

दंदाना—पु० कंघी इ० का दाँत जैसा कंगूरा।

दंदारू—पु० फफोला।

दंदी—वि० उपद्रवी, झगड़ा करनेवाला।

दंपती—पु० पति-पत्नी, मियाँ-बीबी।

दंपा—स्त्री० विद्युत, बिजली।

दंभ, दंभान—पु० पाखंड, अहंकार 'हौ जु कहत हे सबै ज्ञानकी छाँड़ि सबै दंभान।' सूरा० ६४

दंभी—वि० पाखंडी, घमण्डी।

दंभोलि—पु० वज्र।

दँवरी—स्त्री० अन्नके डंठलोंको बैलोंसे रौंदवाना। दाँयँ।

दवारि—स्त्री० दवाग्नि 'ग्रीपम ऋतुमें देखि कै बनमें लगी दँवारि। मति० १९६

दंश—पु० दाँत। दाँतसे काटनेका घाव। दाँतसे काटनेकी

क्रिया। द्वेष। आक्षेप व्यंग। बिच्छू इत्यादिका डंक, मच्छर, डाँस 'कछु राति गये करि दंश दशासी। पुर माँझ चले बनराज-विलासी।

दंशन—पु० डसने या दाँतसे काटनेकी क्रिया। कवच।

दंशना—सक्रि० दाँतसे काटना (के० १३५)।

दंष्ट्र—पु०, दंष्ट्रा—स्त्री० बड़ा दाँत, दाढ़।

दंस—पु० देखो 'दंश'

दइत—पु० दैत्य ( भू० १३६ )।

दई—पु० दैव, विधाता। प्रारब्ध। दईमारा—हतभाग्य।

दक़ियानूसी—वि० अति प्राचीन। पुराने विचारका या पुराणपंथी ( मनुष्य )

दक़ीक़ा—पु० सूक्ष्म बात। उपाय, तदबीर।

दक्खिन—पु० दक्षिण दिशा। क्रिवि०दक्षिणकी ओर।

दक्खिनी—वि० दक्षिणका। पु० दक्षिणका रहनेवाला।

दक्ष—वि० चतुर, कुशल। दाहिना 'रामचन्द्र प्रदक्षिणा करि दक्ष ह्वै जबहीं चढे।' राम० ४८९।

दक्षकन्या,—कुमारी—स्त्री० सती। [एक प्रजापति।

दक्षता—स्त्री० कुशलता, चतुरता, नैपुण्य, योग्यता।

दक्षिण, दखिन—पु० दक्षिण दिशा। क्रिवि० दक्खिनकी ओर। वि० दाहिना, अनुकूल। दक्ष। दक्षिण दिशाका।—नायक = सब नायिकाओंसे एकसा प्रेम [करनेवाला नायक।

दक्षिणा—स्त्री० देखो 'दच्छिना'।

दक्षिणापथ—पु० देश-विशेष।

दक्षिणायन—वि० विषुवत् रेखासे दक्षिणकी ओर।

दखल—पु० कब्ज़ा, अधिकार। प्रवेश।

दखल दिहानी—स्त्री० किसी जायदादपर क़ब्ज़ा दिलानेकी कारखाई। [दखीलकारी हो।

दखीलकार—पु० वह असामी जिसकी किसी ज़मीनपर

दखीलकारी—स्त्री० असामीका किसी ज़मीनपर कब्ज़ा रखनेका हक़। वह ज़मीन जिसपर ऐसा हक़ हो।

दगदगा—पु० डर, त्रास, शंका। कागज इत्यादिकी बनी एक तरहकी लालटेन। [चमक पैदा करना।

दगदगाना—अक्रि० धकधक करना, चमकना। सक्रि०

दगधना—सक्रि० जलाना, पीड़ा देना। ठगना 'छापा तिलक बनाइ करि दगध्या लोक अनेक।' कबीर ४६। अक्रि० जलना 'सुलुगि सुलुगि दगधै होइ छारा।' प० १६८। पीड़ित होना।

दगना—अक्रि० दग्ध होना। दागा जाना, चिह्नयुक्त होना। तोप इत्यादिका छूटना। प्रसिद्ध होना। सक्रि० दग्ध करना, दागना।

दगरा—पु० विलम्ब। मार्ग, रास्ता।

दगल, दगला—पु०, दगली—स्त्री० लम्बा भारी पहनावा, लबादा, पहिरहु राता दगल सुहावा।' प०१३१

दगवाना—सक्रि० जलवाना, तोप इत्यादि छुड़वाना।

दगहा—वि० दागदार, जो दागा हुआ हो। पु० मृतकसंस्कार करनेवाला। [सू० १८९

दगा—स्त्री० धोखा, छल 'इन पलकन ही दगा दई'—

दगादार—वि० धोखा देनेवाला, छलिया 'कह्यो बार बार दगादार तैं पुकार मैं तो छाँड़ि संग अधम-उधार नाम गायो है।' दीन० १२८

दगाबाज़—वि० धोखेबाज, छली।

दगैल—वि० दगाबाज ( छत्र० ६४ ) दागी।

दग्ध—वि० जला हुआ, सन्तप्त।

दग्धाक्षर—पु० झ, ह, र, भ, ष–ये पाँच वर्ण जो छन्दके आरम्भमें निषिद्ध हैं।

दग्धित—वि० जलाया हुआ, सन्तापित (प्रिय० १५९)।

दचक—स्त्री० दबाव, धक्का ( उद० 'दचकना' )।

दचकना—अक्रि० दबना, धक्का खाना, हिल उठना, 'उचकि चलत कपि दचकनि दचकत मंच ऐसे चमकत भूतलके थल थल।' राम० ३७०। सक्रि० दबाना, [धक्का लगाना।

दचका—पु० धक्का, ठोकर।

दचना—अक्रि० गिरना।

दच्छ—वि० कुशल। दाहिना (विन०१९१)। पु० दक्ष [प्रजापति।

दच्छकुमारी, सुता—स्त्री० सती।

दच्छना, दच्छिना—स्त्री० दक्षिणा, पूजन इत्यादिके पीछे ब्राह्मणोंको दिया गया दान। भेंट।

दच्छिन—वि० उत्तरके विपरीत। दाहिना। दक्ष। अनुकूल 'दच्छिन पिय ह्वै बाम बस बिसराई तिय आन।' बि० १०८

दढ़ना—अक्रि० जलना 'भई देह जो खेह करमबस ज्यों तट गंगा अनल दढ़ी।' सू० ३१

दढ़ियल—वि० जिसके दाढ़ी हो।

दतवन—स्त्री० देखो 'दातौन'।

दतारा—वि० दाँतवाला, बड़े दाँतवाला 'छूट्यो बैरीसाल दतारौ' ( हाथी ) छत्र० १४१

दतुअन, दतुवन, दतून, दतौन—स्त्री०देखो 'दातौन'।

दत्त—वि० दिया हुआ । पु० दान 'दत्त न रहै, सत्त होइ दूरी ।' प० १८८ । दत्तक ।
दत्तक—पु० गोद लिया हुआ पुत्र । मुतबन्ना ।
दत्तचित्त—वि० जिसने कार्यमें मन लगाया हो, कार्यलीन ।
ददा—पु० दादा, पितामह, पिता, बड़ा भाई ।
ददिऔरा,-याल,-हाल—पु० दादाका घर ।
ददिया ससुर—पु० ससुरका पिता ।
ददोड़ा, ददोरा—पु० कीटादिकोंके काटनेसे सूजा हुआ* [*स्थान, चकत्ता ।
दद्रु, दद्रू—पु० दादका रोग ।
दध, दधि—पु० दही । समुद्र । स्त्री० (क्वचित्) 'धनी दधि खाई ।' छत्र ग्रं० २८ ।
दधसार—पु० मक्खन ।
दधिकाँदो—पु० एक उत्सव जिसमें लोग हल्दीमिश्रित [दही एक दूसरेपर फेंकते हैं ।
दधिजात—पु० चन्द्रमा । मक्खन । देखो दधिसुत' ।
दधिमुख—पु० सुग्रीवका एक मामा ।
दधिसार—पु० मक्खन ।
दधिसुत—पु० चन्द्रमा, मोती, कमल, विष, जालंधर नामका राक्षस, मक्खन 'गिरि गिरि परत बदलके ऊपर, ह्वै दधिसुतके विन्दु ।' सू० ६५
दधिसुता—स्त्री० सीप ।
दधीच,-चि—पु० एक ऋषि जिन्होंने वृत्रासुरको मारनेके लिए इन्द्रको अपनी हड्डी दी थी । —का हाड़=कोई कठोर वस्तु 'लार बह्यो लकरीको इतै जनु चूल्हेमें पावस आ उनई है । चाउर चन्दा गिरीको पहाड़ औ दाल दधीचिको हाड़ भई है ।' कादम्बरी पत्रिका, (कवौ० ५१८)
दनादन—क्रिवि० 'दनदन' शब्दके साथ ।
दनु—स्त्री० दानवोंकी माता ।
दनुज—पु० राक्षस, असुर ।
दनुजपति, दनुजेंद्र—पु० रावण ।
दपटना—सक्रि० डाँटना, धमकाना ।
दपु—पु० दर्प, घमण्ड, गर्व ।
दफन—पु० मुर्दा ज़मीनमें गाड़ना ।
दफनाना—पु० मुर्देका दफन करना ।
दफ़ा—स्त्री० बार, मरतबा । किसी क़ानूनका एक भाग, [धारा ।
दफादार—पु० सैनिकोंका एक अफसर ।
दफ्तर—पु० लिखापढ़ीका काम करनेकी जगह, कार्यालय, आफ़िस ।
दफ्तरी—पु० जिल्दबन्दी, आदिका काम करनेवाला ।
दबंग—वि० रोबीला, प्रभाववाला ।
दबकना—सक्रि० डपटना, डाँटना 'दबकि दबोरे एक, वारिधिमें बोरे एक, मगन महीमें एक गगन उड़ात हैं ।' कविता० १९६ । अक्रि० दबकर रह जाना (कलस २१७) । भयसे छिप जाना ।
दबकाना—सक्रि० छिपाना । धमकाना (बुदेल०) ।
दबदबा—पु० रोबदाब, आतंक, प्रभाव ।
दबना—अक्रि० भार या दाबके नीचे पड़ना, लाचार होना, झुकना, अधिक न बढ़ सकना, धीमा पड़ना ।
दबाना—सक्रि० भार या दाबके नीचे लाना, लाचार करना, दबाव डालना, दमन करना, दफन करना । छिपाना, हड़प जाना ।
दबाव—पु० दबानेकी क्रिया या भाव ।
दबीज—वि० मोटे दलका, मोटा, गाढ़ा, मजबूत ।
दबैल—वि० दबनेवाला, दबा हुआ, अधीन ।
दबोचना—सक्रि० धर दबाना, मसक देना । छिपाना ।
दबोरना—सक्रि० दबाना (उदे० 'दबकना') ।
दमंकना—अक्रि० चमकना (उदे० 'चमंकना') ।
दम—पु० साँस, दण्ड । इन्द्रिय-दमन । पल, क्षण । जान । धोखा ।—पर=क्षण क्षणपर ।—मारना=सुस्ताना । —लगाना = गाँजे आदिका धुआँ खींचना । नाकमें आना=आजिज़ आना, ऊब उठना । [करनेवाला ।
दमक—स्त्री० चमक, कान्ति (रस० ३१) । पु० दमन
दमकना—अक्रि० चमकना । सुलग उठना ।
दमकल—पु० आग बुझानेका पम्प ।
दमकला—पु० एक तरहकी पिचकारी । देखो 'दमचूल्हा' ।
दमकीली—वि० स्त्री० चमकदार ।
दमचूल्हा—पु० एक तरहका जालीदार चूल्हा जिसमें [कोयला जलता है ।
दमड़ी—स्त्री० देखो 'दमरी' ।
दमदमा—पु० फरेब, चापलूसी, नगाड़ा, दुर्गप्राचीर, बुर्ज ।
दमदार—वि० जिसमें दम हो, जानदार, मजबूत, तीव्र ।
दमन, दमना—स्त्री० द्रोण पुष्पकी लता 'दमन [illegible] सम तनु सुकुमार ।' विद्या० १२३, 'दमना माँझ उगल जनि चन्दा ।' विद्या० २७
दमन—पु० दबानेकी क्रिया, निग्रह, दण्ड ।
दमना—सक्रि० दमन करना, दबाना, दूर करना 'जि माँझ अहंपद जो दमिये । के० ७०
दमनी—स्त्री० शर्म, सकोच ।

दमनीय—वि० जिसे दबाना चाहिये, जो दबाया जा सके। तोड़ने योग्य।

दमपट्टी—स्त्री०, दमबुत्ता—पु० झाँसापट्टी।

दमबाज—वि० फुसलानेवाला, धोखेबाज।

दमयंती—स्त्री० राजा नलकी स्त्री।

दमरी—स्त्री० छदामका आधा, पैसेका आठवाँ हिस्सा। 'गुनमत छप्पन छदाम तामें देखियत, दमरी सु पाँच-सात बारह लखात हैं।' गुलाब ४२२। छदाम।

दमा—पु० श्वास रोग।

दमाद—पु० जामाता।

दमादम—क्रिवि० लगातार। धमाधम।

दमानक—स्त्री० तोपोंकी बाढ़ ( उदे० 'कमनैत' )।

दमामा—पु० नगाड़ा ( सुन्द० १५ )।

दमारि—पु० 'दवारि', दावानल।

दमावति—स्त्री० दमयन्ती 'भा बिछोह जस नलहिं दमावति।' प० ९३

दमैया—वि० दमन करनेवाला।

दमोदर—पु० दामोदर, श्रीकृष्ण।

दम्य—वि० दमनके योग्य। पु० बधिया करने योग्य बैल।

दयनीय—वि० करुण, दया करने योग्य।

दया—स्त्री० करुणा, कृपा।

दयानत—स्त्री० ईमान।

दयानतदार—वि० ईमानदार।

दयाना—अक्रि० दया करना, कृपालु होना (सूसु० २६१)।

दयानिधान—पु० देखो 'दयानिधि'।

दयानिधि—पु० दयाके आगार, दयाके भण्डार, परमेश्वर।

दयार—वि० दयावान् ( साखी १७४ )।

दयाल, दयालु—वि० दयावान्।

दयावना—वि० जिसपर दूसरोंको दया आवे, दयनीय, दयाजनक ( कविता० २०३ )।

दयावान्—वि० दयालु, रहमदिल, कृपालु।

दयाशील—वि० दया करनेवाला, दयालु।

दरिद्र-दाह-दोष दुख-दारुन-दुसह-दर दरप हरन।' विन० ५९३। स्त्री० भाव। मूल्य, कदर ( छत्रप्र० ७८ )। महत्व। ऊख। मंजिल। तिदरा=तिमञ्जिला )।

दरक—स्त्री० दरार। वि० डरपोक।

दरकना—अक्रि० विदीर्ण होना, फटना 'जलचर जरे औ सेवार जरि छार भयो जल जरि गयो पंक सूख्यो भूमि दरकी।' गंगकवि, ( सूबे० १०७ )। फूटना ( अ० ३५ )। [ फट जाय।

दरका—पु० दरार। ऐसी चोट जिससे शरीर इत्यादि

दरकाना—सक्रि० विदीर्ण करना। अक्रि० विदीर्ण होना ( उदे० 'घनक' )।

दरकार—क्रिवि० आवश्यक।

दरकिनार—वि० दूर, पृथक्।

दरकूच—क्रिवि० लगातार चलते हुए।

दरखत—पु० दरख्त, पेड़।

दरखास्त, दरख्वास्त—स्त्री० प्रार्थनापत्र, प्रार्थना।

दरख्त—पु० वृक्ष, पेड़।

दरगह, दरगाह—स्त्री० मकबरा। देहरी। दरबार 'धर्णी सहैगा सासनां जमकी दरगह माहिं।' कबीर २९, ( उदे० 'खरभरी' ) [ माफ करना।

दर गुज़र—वि० बाज़, वंचित।—करना=जाने देना,

दरज—स्त्री० दरार, छिद्र 'होत करेजनिकी दरजैं दरजी-की बहू बरजी नहिं मानै।' रवि० २१

दरजी—पु० देखो 'दर्जी'।

दरद—पु० दर्द, पीड़ा। दया, तर्स।

दरदर—क्रिवि० द्वार द्वार। जगह जगह।

दरदरा—वि० मोटा पीसा हुआ। जिसमें मोटे रवे हों।

दरदवंत—वि० पीड़ित, दुःखित। दयालु।

दरदवंद—वि० जिसके पीड़ा हो, दुःखित।

दरद्द—पु० देखो 'दर्द'।

दरन—वि० दलनेवाला, नाश करनेवाला 'विप्रसिद्ध, सुग,

दरप—पु० दर्प, घमण्ड, गर्व । उद्दण्डता । [छत्रप्र० १७०
दरपक—पु० घमण्डी मनुष्य । कामदेव ।
दरपन—पु० दर्पण, आईना, शीशा ( उदे० 'अजूवा' ) ।
दरपना—अक्रि० गर्व करना, क्रोध करना ।
दरपेश—क्रिवि० सामने, आगे । [निश्चित दर ।
दरबंदी—स्त्री० दर निश्चित करना । लगान आदिकी
दरब—पु० द्रव्य, धन 'कीन्हेसि दरब गरब जेहि होई ।' प० २ । किनारदार मोटी चादर ।
दरबा—पु० कबूतरों इ० के लिए खानेदार सन्दूक ।
दरबान—पु० द्वारपाल ।
दरबार—पु० राजसभा, कचहरी । द्वार (राम० १८३) ।
दरबारदारी—स्त्री० किसीकी प्रसन्नताके लिए उसके यहाँ हाज़िरी बजाना, खुशामद ।
दरबारी—वि० दरबार सम्बन्धी, दरबारके लायक । पु० दरबारमें उपस्थित रहनेवाला । [ बीजक ४९
दरवी—स्त्री० करछुल 'दरवी कहा महारस जाना ।'
दरभ—पु० दर्भ, कुश, डाभ । कुश-निर्मित आसन । कीश,
दरमाहा—पु० माहवारी तनख्वाह । [ बन्दर ।
दरमियान—पु० मध्य । क्रिवि० मध्यमें ।
दररना—सक्रि० धक्का देना, रगड़ना । दलित करना, पीस डालना, नष्ट करना ।
दरराना—अक्रि० निर्विघ्न रूपसे चला आना, वेगसे आ पहुँचना 'घटा घन घोर घहरात अररात दररात सररात ब्रज लोग डरपे ।' सूबे० १२१
दरवाजा—पु० द्वार, फाटक । किवाड़ ।
दरवी—स्त्री० साँपका फन । फनके आकारका पात्र,
दरवेश—पु० फकीर । [ ( चमचा, पौना इ० ) ।
दरशन—पु० साक्षात्कार, मिलन, भेंट । तत्वज्ञानका बोध करानेवाली विद्या । धर्म । नयन । बुद्धि । स्वप्न ।
दरशाना—सक्रि० दे० 'दरसाना' । अक्रि० दे० 'दरसना' ।
दरस—पु० भेंट, मिलन (उदे० 'आदरस') । सुन्दरता ।
दरसन—पु० देखो 'दरशन' ।
दरसना—सक्रि० देखना ( राम० ८२ ) । अक्रि० देख पड़ना, नज़र आना ( उदे० 'तर्कसी' ) ।
दरसनिया—पु० शीतला या मरीकी शान्तिके लिए पूजा करानेवाला ( भारत दु० १४ )
दरसनी—स्त्री० दर्पण ।
दरसनीय—वि० दर्शनीय, देखने योग्य ।
दरसनी हुंडी—स्त्री० ऐसी हुण्डी जिसका रुपया तुरन्त दे देना होता है ।
दरसाना, दरसावना—सक्रि० दिखलाना । बतलाना, समझाना । अक्रि० देख पड़ना, नज़र आना 'जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अन्धेको सब कछु दरसाई ।' सू० १
दराज—स्त्री० दरार । टेबिलमें बना हुआ कागज पत्रादि रखनेका खाना । वि० दीर्घ, बड़ा, विशाल 'सखिन समाज देख्यो विभव दराज आज ....।' रघु० १०६ ( उदे० 'गाजना' ) । क्रिवि० बहुत ।
दरार—स्त्री० फटने या सूखनेसे लकीरकी तरह पड़ी खाली जगह 'दुर्जन कुम्भ कुम्हारका एकै धका दरार ।'
दरारना—अक्रि० विदीर्ण होना । [ साखी ४९
दरारा—पु० देखो 'दरेरा', धक्का, रगड़ ( भू० १५१ ) । वि० जिसमें दरार हो, फूटा हुआ ।
दरिंदा—पु० हिंस्र जन्तु ।
दरिद, दरिद्र—पु० निधन मनुष्य । निर्धनता, गरीबी 'हरि बिन कौन दरिद्र हरै ।' सू०, 'दै दै दान दरिद्र विदारे ।' छत्र० १४ । वि० निर्धन, अकिंचन ।
दरिद्रता—स्त्री० निर्धनता, ग़रीबी, दैन्य ।
दरिया—पु० नदी, समुद्र ।
दरियाई—वि० समुद्री, नदी सम्बन्धी ।—घोड़ा= अफ्रिकामें मिलनेवाला एक घोड़ा जो नदियोंके किनारे रहता है । . स्त्री० एक तरहकी साटन (रत्ना०१०) ।
दरियाउ,-याव—पु० देखो 'दरिया' । आप दरियाव पास नदियोंके जाना नहीं दरियाव पास नदी होवेगी सो धावेगी ।' रघुनाथ, ( उदे० 'कहर'), 'मोहू पर कीजै मया, कान्ह दया दरियाउ ।' मति० २२६
दरियाफ्त—वि० ज्ञात, मालूम ।
दरी—स्त्री० गुफा ( उदे० 'आशीविष' ) । शतरंजी ।
दरीखाना—पु० बहुतसे द्वारोंवाला घर ।
दरीची—स्त्री० खिड़की ( कलस २२३ ) ।
दरीबा—पु० पानका बाजार, बाज़ार ।
दरेग—पु० त्रुटि, कमी । अफसोस, पछतावा ( कर्म०
दरेरना—सक्रि० धक्का देना, रगड़ना । [१३६)
दरेरा—पु० रगड़, चोट, धक्का, धावा 'साँझहू सबेरे वे अनेरे मदनादि मूढ़ देत हैं दरेरे मोहिं खेरे बाकि कई ।' दीन० १२८, ( विन० ३५० ), 'रात [illegible]

पर दिये दरेरे।' छत्र० १३९ [ ( बाँध आदि )।

दरेसी—स्त्री० नीचा ऊँचा बराबर करना, दुरुस्त करना

दरैया—पु० दलनेवाला, नष्ट करनेवाला।

दरोग़—वि० मिथ्या, झूठ।

दर्कार—दे० 'दरकार'।

दर्ज—वि० कागजपर लिखा हुआ। स्त्री० दरार।

दर्जन—पु० बारह वस्तुओंका समूह।

दर्जा—पु० श्रेणी, पद, खंड।

दर्जी—पु० कपड़ा सीनेवाला।

दर्द—पु० देखो 'दरद'।

दर्दमंद—वि० सहानुभूतिशील, हमदर्द, दुखिया।

दर्दुर—पु० मेंढक। मेघ।

दर्प—पु० गर्व, घमण्ड, मस्ती, गरूर। आतंक।

दर्पण—पु० आईना, शीशा।

दर्पित, दर्पी—वि० घमंडी, मगरूर।

दर्ब—पु० द्रव्य, धन ( क० वच० ११ )।

दर्बान, दर्बार—दे० 'दरबान'; 'दरबार'।

दर्भ—पु० कुश। कुशका बना आसन।

दर्याव—पु० नदी, समुद्र ( उदे० 'गढ़ोई' )।

दर्रा—पु० पहाड़ी मार्ग। मोटी दरार। कँकरीली मिट्टी।

दर्राना—दे० 'दरराना'। [ मोटा आटा।

दर्वी—स्त्री० देखो 'दरवी'।

दर्वीकर—पु० साँप।

दर्श—पु० दर्शन। [वाला।

दर्शक—पु० देखने या निगरानी करनेवाला दिखलाने

दर्शन—पु० भेंट, अवलोकन। तत्त्वज्ञान सम्बन्धी शास्त्र।

दर्शनगृह—पु० मिलने जुलनेका सजाया हुआ कमरा 'शमनकक्ष, दर्शनगृहकी श्रृङ्गार' ग्राम्य ७८

दर्शनज्ञ—पु० दर्शनशास्त्रका पण्डित।

दर्शनी हुंडी—स्त्री० देखो 'दरसनी हुण्डी'।

दर्शनीय—वि० देखने योग्य, अवलोकनीय, मनोहर।

दर्शाना—सक्रि० दिखलाना।

दल—पु० सेना। पक्ष। समूह, मण्डली। चने आदिके दो सम भागोंमेंसे एक। पत्ता, पँखुड़ी। धन। म्यान, कोष। परत, मोटाई।

दलक—स्त्री० गुदड़ी। टीस, चमक, दुःख 'दलित-जननके दलनकी दलक सारी'—कलस ३३३। धमक, कम्प।

दलकन—स्त्री० दलकनेकी क्रिया।

दलकना—अक्रि० चौंक उठना, काँपना 'दलकि उठेउ सुनि बचन कठोरू।' रामा० २१२। विदीर्ण होना, 'तुलसी कुलिशहुकी कठोरता तेहि दिन दलकि दली।' गीता० ३३५। सक्रि० भयभीत करना, दहला देना।

दलदल—पु०, स्त्री० कीचड, फसफसी जमीन।

दलदला—वि० दलदलवाला।

दलदार—वि० मोटे दलका।

दलन—पु० विनाश, दमन। नाश करनेवाला ( उदे० 'अरभक' )।

दलना—सक्रि० कुचलना, पीस डालना, कूटना 'करनाट हबस फिरङ्गहू विलायत बलख रूम अरितिय छतियाँ दलति हैं।' भू० ४७। टुकड़े टुकड़े करना, जीतना, नष्ट करना ( उदे० 'अमान' )।

दलपति—पु० दलनायक, मुखिया, अग्रणी, सेनापति।

दलबल—पु० सेना इत्यादि।

दलबादल—पु० बड़ी सेना। बादलोंका समूह।

दलमलना—सक्रि० कुचलना, मसलना, नष्ट करना। 'रनमत्त रावन सकल सुभट प्रचण्ड भुजबल दलमले।'

दलवाल—पु० सेनानायक। [ रामा० ५१०

दलवैया—पु० दलनेवाला, जीतनेवाला, कुचलनेवाला।

दलहन—पु० चना, इ० दालके अन्न।

दलान—पु० देखो 'दालान'। [ मध्यस्थ।

दलाल—पु० जो सौदा खरीदने या बेचनेमें मदद करे,

दलाली—स्त्री० दलालको मिलनेवाली रक़म, दलालका

दलित—वि० तोड़ा या कुचला गया। विनष्ट। [ काम।

दलिया—पु० दला हुआ जौ, गेहूँ आदि।

दली—वि० दलवाला, पत्तोंवाला। पु० वृक्ष 'पीछे तोहि न दली अली कोउ आदर करिहैं।' दीन ९८

दलील—स्त्री० बहस, तर्क, युक्ति। [ वाली कवायद।

दलेल—पु० सिपाहियोंसे सजाके तौरपर करायी जाने-

दव—पु० जङ्गल। जङ्गलकी आग, दावा। आग 'सकल गिरिन दव लाइये, रवि बिनु राति न जाय।'रामा०५७९

दवन—पु० दमन, विनाश। नाश करनेवाला 'रघुपति विपति-दवन।' विन० ४८९। एक पौधा।

दवना—सक्रि० जलाना। पु० एक पौधा।

दवनी—देखो 'दँवरी'।

दवा—स्त्री० जङ्गलकी आग। अग्नि 'विरह दवाको जरत सिरावा।' प० ९३, ( १७७ )। औषधि, उपचार।

दवागि, दवागिन, दवाग्नि—स्त्री० दावानल, जङ्गलकी आग।
दवात—स्त्री० मसाधार, मसिपात्र।
दवादर्पन—पु० औषध 'विना दवा दर्पनके गृहिनी स्वरग चली,-आँखें आर्तों भर' ग्राम्या २५
दवान—पु० शस्त्र विशेष 'गज्जे सुभट्ट ले लै दवान।' सुजा० १८, 'तोप वान अरु रहकला, चौकस करी दवान।' सुजा० ७
दवामी—वि० स्थायी, हमेशा क़ायम रहनेवाला।
दवार, दवारि—स्त्री० दावानल ( उदे० 'भराम' )।
दश, दस—वि० आठ और दो। पु० दसकी संख्या।
दशकंठ,-कंधर—पु० रावण।
दशकंठजहा—पु० दशकण्ठको मारनेवाले, श्रीराम।
दशन—पु० दाँत। कवच।
दशनच्छद—पु० ओंठ।
दशनामी—पु० एक तरहके संन्यासी।
दशबल,-भूमिग्र, भूमीश—पु० बुद्धदेव।
दशभुजा—स्त्री० दशभुजावाली देवी, शक्ति, दुर्गा।
दशमौलि, शीश—पु० रावण।
दशस्कंधर—पु० रावण।
दशहरा—पु० विजयादशमीका त्योहार।
दशांग—पु० एक धूप जो दस चीज़ोंके मेलसे बनता है।
दशा—स्त्री० अवस्था। किसी ग्रहका भोग्य समय। चित्त। दीयेकी वत्ती (उदे० 'उनारना', राम० ३४४)
दशानन, दशास्य—पु० रावण।
दशावरा—स्त्री० दस सभ्योंका शासकमण्डल।
दष्ट—वि० काटा हुआ, दसा हुआ।
दशगत—पु० शरीरके दस अवयव। मृतक-कर्म-विशेष।
दसन—पु० दाँत, कवच ( उदे०, 'वरही' )।
दसना—अक्रि० फैलाया जाना, फैलना। सक्रि० डसाना, बिछाना। साँप आदिका काटना। पु० बिछौना।
दसमाथ, दसमौलि—पु० रावण।
दसमी—स्त्री० पाखकी दसवीं तिथि।
दसवाँ—वि० नवेंके बादवाला। पु० मृत्युके बाद दसवें दिनका कृत्य इ०।
दसा—स्त्री० देखो 'दशा'। [छदमावैं—भ्र० ७४
दसाना—सक्रि० बिछाना '''योग कथा ओढ़ैं किछ
दसी—स्त्री० कपड़ेका छोर, कपड़ेके किनारेका सूत। चिह्न
दसौंधी—पु० चारणोंकी एक जाति, भाट। [पता।
दस्तंदाज़ी—स्त्री० हस्तक्षेप।
दस्त—पु० हाथ। पतला मल, पाखाना।
दस्तक—स्त्री० देना वसूल करनेका आज्ञापत्र। महसूल, राजस्व 'सूरदासको यह मुहासवा दस्तक कीजे माफ।' सूवि० ४७। खटखटानेका काम। परवाना।
दस्तकारी—स्त्री० हाथकी कारीगरी।
दस्तखत—पु० हस्ताक्षर, सही।
दस्तगीर—पु० सहायक, आश्रयदाता।
दस्त दराज़—वि० जिसे चुराने या मार बैठनेकी आदत हो, हथलपक, हथछुट।
दस्तबरदारी—स्त्री० स्वत्वत्याग बाज़दावा।
दस्तरखान—पु० वह कपड़ा जिसपर खाना चुना जाता है।
दस्ता—पु० बेंट, मूठ। चपरास, दल, गुच्छा, चौबीस [कागज़।
दस्ताना—पु० हाथका मोज़ा।
दस्तावर—वि० दस्त लानेवाला।
दस्तावेज़—स्त्री० तमस्सुक इ०। प्रतिज्ञापत्र।
दस्ती—वि० हाथका। स्त्री० छोटा बेंट, मशाल।
दस्तूर—पु० प्रथा, रस्म, विधि, नेग।
दस्तूरी—स्त्री० मालिकके लिए कोई चीज़ खरीदनेपर नौकरको दूकानदारकी ओरसे मिलनेवाला द्रव्य।
दस्यु—पु० तस्कर, डाकू, असुर।
दह—पु० नदीके भीतरका गहरा स्थान, कुण्ड 'कंज सकोच गड़े रहे कीचमें मीनन बोरि दियो दह नीरन।' दास, 'आजु कहा व्रज शोर मचायो तब जान्यो दह गिरयो कन्हाई।' सूत्रै० ९०। लपट, ज्वाला। वि० दस ( कवीर १४० )।
दहक—स्त्री० धधक, लपट, आँच, ज्वाला।
दहकना—अक्रि० तपना, गरम होना, जलना, धधकना।
दहकाना—सक्रि० जलाना, प्रज्वलित या उत्तेजित करना
दहड़दहड़—क्रिवि० प्रखरतासे जोरसे, धायँ धायँ।
दहन—पु० जलने या जलानेकी क्रिया। जलानेवाला, अग्नि।
दहना—सक्रि० जलाना 'ते वेली कैसे दहियतु है जे अपने रसभेय।' सू०। पीड़ित करना, चिढ़ाना, उत्तेजित करना (उदे० 'परछाईं')। अक्रि० भस्म होना, जलना, सन्तप्त होना 'एहि दुख दाह दहइ नित छाती।' रामा० ३००। वि० दाहिना, 'बायाँ' का उलटा।
दहपट—वि० कुचला हुआ, चौपट किया हुआ, विध्वस्त

'कूदत प्रभु रघुपति भने दहन्द होइ लंका'—
सूसा० ५५, ( सू० ११० )।

दहपटना—सक्रि० कुचलना, ध्वस्त करना।
दहर—पु० दे० 'दह'। छोटा भाई। चूहा। छछूँदर। आकाश। नरक। वि० छोटा, पतला, दुर्बोध।
दहलना, दहलना—अक्रि० एकाएक डर जाना, कलेजा धक्से हो जाना ( सूबे० ९६ )। सक्रि० डराना, भयसे कँपाना।
दहरौरी—स्त्री० एक तरहका गुलगुला ('दहिऔरी'—बिहार), 'दूधबरा दहरौरी। सो खात अघात न एक कौरी।' सूसु० ५८
दहला—पु० आलवाल, थाला। दस बुन्दियोंवाला पत्ता।
दहलाना—सक्रि० डरवा देना, कँपा देना, हिला देना।
दहली—स्त्री० देहरी।
दहलीज—स्त्री० देहरी।
दहशत—स्त्री० डर। खौफ।
दहाई—स्त्री० अंकोंकी लिखावटमें दाहिनी ओरसे दूसरा स्थान, दसगुनी संख्या।
दहाड़—स्त्री० ज़ोरसे रोनेकी आवाज़। हिंसक जन्तुका [गर्जन।
दहाड़ना, दहारना—अक्रि० ज़ोर ज़ोरसे रोना। गरजना।' ज़ोरसे चिल्लाना 'सोइ रह्यो कहा गाफिल ह्वै

दाँकना—अक्रि० दहाड़ना। भयंकर शब्द करना, [गरजना।
दाँग—पु० डंका। छोटी पहाड़ी।
दाँज—स्त्री० तुलना, समता।
दाँड़ना—सक्रि० दंड देना।
दाँत—वि० दमित दमन किया हुआ।
दाँत—पु० दन्त, दशन, रद। देखो 'दाँता'।—काढ़ना=विनीत भावसे प्रार्थना करना (सूसु० २११)।—खट्टे करना=गहरी शिकस्त देना, हराना, नाकों दम करना।—चबाना=दाँत पीसकर क्रोध प्रकट करना।—तोड़ना=हराना, दण्ड देना।—तले उँगली दबाना=आश्चर्य या दुःख प्रकट करना।—निकालना या निपोरना=मुँह बा देना, दाँत दिखानेके सिवा कुछ करते न बनना, व्यर्थकी हँसी हँसना। दाँतोंमें तिनका दबाना या लेना=क्षमायाचना करना, गिड़गिड़ाना।—लगना=लेनेकी प्रबल इच्छा [होना।
दाँतली—स्त्री० काग, डाट।
दाँता—पु० दाँत जैसा कंगूरा (कंघी इ० का)।
दाँता किटकिट,-किलकिल—स्त्री० बकझक, गाली-गुफ्ता, लड़ाई-झगड़ा, झंझट।
दाँती—स्त्री० दात्री, हँसिया। दन्त-पंक्ति।
दाँना—सक्रि० दाँय कराना, बैलोंसे खुदवाना।

घर मब भरे सुसाहिब, सूझत सबनि आपनो दाउँ।' विन० ३७२

दाउ—स्त्री० दवाग्नि 'दहकि पलास जरै तेहि दाऊ।'

दाऊ—पु० बलराम। बड़ा भाई। [ प० १७९

दाक्षिणात्य—पु० दक्षिणका निवासी। वि० दक्षिणका।

दाक्षिण्य—पु० प्रसन्नता, अनुकूलता, सरलता।

दाख, दाखि—स्त्री० मुनक्का। अंगूर।

दाखिल—वि० प्रविष्ट, पहुँचा हुआ, शरीक।

दाखिल खारिज—पु० किसी जायदादके एक अधिकारी का नाम कटकर उसकी जगह दूसरेका नाम दर्ज होना।

दाखिल दफ्तर—वि० विचारके अयोग्य समझकर मिसिलमें रखनेको भेजा हुआ ( काग़ज़, विषय )।

दाखिला—पु० प्रवेश। प्रवेशका ब्योरा रखनेकी बही।

दाग—पु० दाह-क्रिया, दाह। जलन। जलनेका चिह्न, चिह्न 'बाम विधि भाल हू न कर्म दाग दागिहै।' विन० २११। धब्बा, कलंक (दीन० २१५)।

दागना—सक्रि० जलाना, तपे लोहे आदिसे देहपर चिह्न बनाना ( उदे० 'दाग' )। अंकित करना (अ० ४१)। बन्दूक आदि चलाना।

दागबेल—स्त्री० सड़क आदि बनानेके लिए सरल रेखाके रूपमें खोदकर बनाया हुआ निशान।

दागी—वि० दागदार, कलुषित। दंडित।

दाघ—पु० तपन, गरमी, जलन 'जगत तपोवनसो कियो दीरघ दाघ निदाघ।' बि० २०२

दाजन, दाझन—स्त्री० जलन, पीड़ा, ईर्ष्या।

दाजना, दाझना—अक्रि० जलना ( कबीर १२ )। डाह करना। सक्रि० जलाना 'ते नर ऐसा सूखसी ज्यों बन दाझ्या रूख।' साखी १५

दाड़िम—पु० अनार।—प्रिय—पु० सुग्गा।

दाढ़—स्त्री० दहाड़, गर्जन। जबड़ेके भीतरके बड़े दाँत।

दाढ़ना—सक्रि० दग्ध करना, जलाना, सन्तप्त करना ( नव० २९ )।

दाढ़ा—पु० जंगलकी आग। अग्नि। जलन।

दाढ़िका, दाढ़ी—स्त्री० ठुड्डीपरके बाल, ठुड्डी।

दाढ़ीजार—पु० वह मनुष्य जिसकी दाढ़ी जल गयी हो। स्त्रियोंकी एक गाली 'तुलसी मँदोवै रोइ रोइ कै बिगोवै आपु, बार बार कह्यो मैं पुकार दाढ़ीजारसों।' कविता० १७६

दात—पु० दान। देनेवाला 'दात धनी याचै नहीं सेव करै दिन रात। कहै कबीर ता सेवकहिं काल करै नहिं घात।' साखी २१ [ वाला। पु० दानशीलता।

दातव्य—वि० जो देनेको हो, देने योग्य। दानसे चलने-

दाता, दातार—पु० देनेवाला।

दाती—स्त्री० देनेवाली ( सूबे० १३ )।

दातुन, दातून—दे० 'दातौन'।

दातौन, दात्योनि—स्त्री० दन्तधावन, दाँत साफ करनेके लिए नीमादिकी गीली लकड़ी। मुखारी 'दात्योनि करत हैं, मननि हरत हैं, और बोरि घनसार।' के० २००

दात्री—स्त्री० देनेवाली। दाँती, हँसिया।

दाद—स्त्री० एक चर्मरोग, दद्रु। देखो 'दादि'।

दादनी—स्त्री० पेशगी दी गयी रक़म, देय धन।

दादरा—पु० एक तरहका गीत। एक ताल।

दादा—पु० पितामह, पिता, बड़ा भाई, कोई पूज्य व्यक्ति।

दादि—स्त्री० न्याय 'दीजे दादि देखि नातो बलि, मही मोद-मंगल रितई है।' विन० २२२, ( ३५४ )। फर्याद 'सुनहु हमारी दादि गुसाईं...' कबीर १९१

दादी—स्त्री० आजी, पितामही पु० न्याय चाहनेवाला।

दादुर—पु० मेंढक। [ प० ८७

दाध—स्त्री० जलन, ताप 'सहि न जाय जोबन कै दाधा।'

दाधना—सक्रि० दग्ध करना, जलाना, सन्तप्त करना 'मैं तो दाधी बिरहकी रे काहेकूँ ओषद देय।' मीराबाई, 'प्रेम जो दाधा धनि वह जीऊ।' प० ६८

दान—पु० देनेका कार्य, उत्सर्ग, त्याग। बदलेमें कुछ न लेकर दी गयी वस्तु। कुछ देकर शत्रुपक्षवालोंको अपनी ओर मिलानेकी नीति। गजमद। मधु-विशेष। शुद्धि, महसूल, कर 'ग्वारिनि यह भली नहीं करति। दूध दधि घृत नितहिं बेचति दान देते डरति ?' सूबे० १३२, (उदे० छाप')।

दानपत्र—पु० दानके प्रमाण स्वरूप ताम्रपत्रादिपर [ खुदवाया गया लेख।

दानव—पु० दनुज, राक्षस।

दानवारि—पु० देवता, विष्णु।

दानवी—वि० दानव सम्बन्धी। स्त्री० राक्षसी।

दानवीर—वि० महादानी।

दानशील—वि० दान करनेवाला।

दानशीलता—स्त्री० दान देनेका स्वभाव, वदान्यता।

दाना—पु० अन्नका बीज, अन्न, चबेना। कोई छोटी गोल

वस्तु, गुरिया, मनका, रवा। वह अन्न जो घोड़े आदि-को प्रतिदिन दिया जाता है। वि० बुद्धिमान्।

दानाई—स्त्री० बुद्धिमानी।

दानापानी—पु० अन्न जल, रोजी, जीविका।

दानी—वि० देनेवाला, दानशील। पु० दान करनेवाला व्यक्ति। महसूल लेनेवाला 'तुम दानी ह्वै आये हमपर यह हमको नहिं भावत।' सूबे० १३४

दानेदार—वि० रवादार।

दानो—पु० दानव, असुर 'प्रगट खंभतें दई दिखाई यद्यपि कुलको दानो।' सूवि० ११

दाप—पु० दर्प, घमण्ड। शक्ति, प्रताप, आतंक। उत्साह, ताप, दुःख 'देहु भगति रघुपति अति पावनि। त्रिविध ताप भवदाप-नसावनि।' रामा० ५५६। रोष।

दापक—पु० दबानेवाला।

दापना—सक्रि० दबाना, रोकना।

दाब—स्त्री० दाबनेका भाव, चाँप, बोझ। रोब, शासन।

दाबदार—वि० रोबवाला, प्रतापी, मस्त (भू० ११)

दाबना—सक्रि० देखो 'दबाना'।

दाबा—पु० कलमके लिए टहनी ज़मीनमें गाड़नेका काम।

दाभ—पु० दर्भ, एक तरहका कुश।

दाम—पु० मूल्य। रुपया-पैसा, मुद्रा 'सुख निधि मथुरा तजि वृन्दावन दामनिको अकुलात।' व्यास जी। दमड़ीका तृतीयांश 'बंक बिकारी देत ज्यों दाम रुपैया होत।' बि० १८१। कुछ देकर शत्रुको वश करनेकी नीति। समूह। माला (भ्र० ६)। रस्सी 'धूरि मेरु सम जनक जम ताहि व्याल सम दाम।' रामा० ९७। फन्दा।

दामन—पु० छोर (रतन० ३२)। पहाड़के नीचेकी जमीन। पहननेके कपड़ेका निचला भाग।

दामनगीर—वि० पीछे पड़नेवाला, पल्ला न छोड़नेवाला, दावेदार 'बापुरो एदिलसाहि कहाँ कहँ दिल्लीको दामन-गीर सिवाजी।' भू० ८१

दामनी—स्त्री० रस्सी।

दामरि, दामरी—स्त्री० दाँवरी, रस्सी।

दामा—स्त्री० दावा, जंगलकी आग।

दामाद—पु० जामाता।

दामिनी—स्त्री० बिजली। सिरका एक गहना, बेंदी।

दामोदर—पु० श्रीकृष्ण।

दायँ—स्त्री० देखो 'दाँयँ'। देखो 'दाँवँ'।

दाय—पु० देय धन, पैतृक धन। दान, दहेज। दावा-नल। आग।

दायज, दायजा—पु० दहेज।

दायभाग—पु० पैतृक सम्पत्तिका बँटवारा।

दायम—क्रिवि० हमेशा (पूर्ण० २३७)।

दायमी—वि० सार्वकालिक, सदाका। स्थायी।

दायर—वि० चलता हुआ।—करना=पेश करना।

दायरा—पु० मंडल, वृत्त, (गोल) घेरा।

दायाँ—वि० दाहिना।

दाया—स्त्री० दया, अनुग्रह।

दायाद—पु० पैतृक धनमें हिस्सा पानेवाला,कुटुम्बी,पुत्र।

दायित्व—पु० जवाबदेही।

दायी—वि० देनदार। उत्तरदायी।

दायें—क्रिवि० दाहिनी तरफ।

दार—स्त्री० दारा, स्त्री। लकड़ी। दाल।

दारक—पु० पुत्र, लड़का। वि० फाड़नेवाला।

दारकर्म—पु० दारपरिग्रह, विवाह।

दारचीनी—स्त्री० एक पेड़।

दारन—वि० देखो 'दारुण', 'माधो दारन दुख सह्यो न जाय...' कबीर २१५। नष्ट करनेवाला।

दारना—सक्रि० विदीर्ण करना, पीस डालना, नष्ट करना '''दीरघ दुसह दुख दीननको दारिये।' के० १२७, (भू० ८६)

दारपरिग्रह—पु० विवाह।

दारमदार—पु० कार्यभार।

दारा—स्त्री० पत्नी।

दारि—स्त्री० दाल।

दारिउँ, दारिव—पु० दाड़िम, अनार (उदे० 'कोंप'), 'किसमिस सेव फरे नव पाता। दारिउँ दाख देखि मन राता।' प० १४, (४६)

दारिका—स्त्री० लड़की, कन्या (रामा० १७८)।

दारिद—पु० दरिद्रता, ग़रीबी (उदे० 'खरीक')।

दारिद्र, दारिद्र्य—पु० निर्धनता, कंगाली।

दारिम—पु० दाड़िम, अनार (सू० ८५)।

दारी—स्त्री० दासी। व्यभिचारिणी स्त्री 'अपनो पति छाँड़ि औरनि सों रति, ज्यों दारनिमें दारी।' स्वामी हरि-दास। बेवाई।

दारु—पु० लकड़ी, काष्ठ, कारीगर।

दारुका, दारुजोषित—स्त्री० कठपुतली।

दारुण, दारुन—वि० विदीर्ण करनेवाला, असह्य, भीषण। पु० शिव। भयानक रस। चित्रक वृक्ष। एक नरकका नाम।

दारुपुत्रिका,-योषित—स्त्री० दारुका, कठपुतली।
दारुसार—पु० चन्दन।
दारू—स्त्री० शराब। बारूद 'सौ सौ मन वे पीवहिं दारू।' प० २५०। दवा 'और दारू सब करी पै सुभावकी नाहिं। सो दारू सतगुरु करी रहै सबदके माहिं।' साखी १०२
दारो, दाख्यो—पु० दारिउँ, अनार ( दास ६६ )।
दारोगा—पु० थानेका अफसर।
दार्शनिक—वि० दर्शनशास्त्र सम्बन्धी। पु० तत्वज्ञानी। दर्शनशास्त्रका पंडित।
दार्शनिकता—स्त्री० दर्शन,सम्बन्धी पांडित्य।
दाल—स्त्री० दला हुआ उड़द। इ०। खुरंड।—न गलना=कामयाब न होना, मतलब पूरा न होना। —में काला होना = किसी तरहका शक या अंदेशा होना, बुरे आसार नजर आना।
दालचीनी—देखो 'दारचीनी'
दालना—दे०'दलना' 'पय पीवत पूतना दाली।' सूबे० २८०।
दालमोट—स्त्री० नमक मिर्च डालकर घी या तेलमें तली हुई दाल।
दालान—पु० ओसारा, बरामदा।
दालिम—पु० दाड़िम।
दावँ—पु० देखो 'दाँवँ'।
दावँना—सक्रि० माँड़कर या बैलोंसे रौंदवाकर डण्ठलसे दाने अलग करना।
दावँरी—स्त्री० देखो 'दाँवरी'।
दाव—स्त्री० वन। जङ्गलकी आग। अग्नि। ताप।
दावत—स्त्री० निमन्त्रण, भोज।
दावन—पु० दामन, अंगे इत्यादिका निचला हिस्सा ( रतन० ६५ )। दमन। हँसिया। नाश करनेवाला 'त्रिविध दोष दुख दारिद दावन।' रामा० २६
दावना—सक्रि० दाँयँ करना। दमन करना।
दावनी—स्त्री० माथेपरका एक गहना, बेंदी। वि०स्त्री० नष्ट करनेवाली। 'बँधावै।' सूवि० ६
दावरी—स्त्री० रस्सी '...सोइ सगुन होइ नन्दकी दावरी बँधावै।' सूवि० ६
दावा—स्त्री० देखो 'दाव' ( भू० २१ )। पु० अधिकार प्रकट करनेकी क्रिया,अधिकार,स्वत्व। अभियोग। दृढ़ता।
दावागीर—पु० अधिकार प्रकट करनेवाला। दुश्मन 'दावागीर होयँ तिनहूँको झारै।' गिरिधरराय
दावात—स्त्री० देखो 'दावात'।
दायादार—देखो "दावागीर"।
दावानल—पु० जङ्गलकी आग।
दाशरथि—पु० दशरथ-पुत्र श्री राम ( या भरत, लक्ष्मणादि )।
दास—पु० सेवक, भक्त, शूद्र। बिछौना। गुलामी।
दासता—स्त्री०, दासत्व—पु० दासका काम, सेवावृत्ति, गुलामी।
दासा—पु० दीवारका पुश्ता। दरवाजेके ऊपरकी लकड़ी या पत्थर।
दासानुदास—पु० सेवकका सेवक, लघुदास।
दासी—स्त्री० सेविका, टहलनी।
दासेय—वि० दासीसे उत्पन्न। पु० दासीपुत्र। धीवर।
दास्तान—पु० कथा, बयान।
दास्य—पु० दासता, सेवा-भाव।
दाह—पु० जलानेका काम, शवदाह, ताप, जलन, डाह, सन्ताप 'उर उपजा अति दारुन दाहा।' रामा० ३६
दाहक—वि० जलानेवाला ( रामा० २२९ )। पु० अग्नि चीता, चित्रक वृक्ष।
दाहकरण—पु० जलानेकी क्रिया, जलाना।
दाहकर्म—पु०,-क्रिया—स्त्री० शव जलानेका कार्य।
दाहन—पु० जलाने या जलवानेका कार्य।
दाहना—सक्रि० जलाना, दुःख पहुँचाना, नष्ट करना 'चन्दन तजि अँग भस्म बतावत बिरह अनल अति दाहीं।' सू०, 'जब जहँ तुमहिं पुकारत आरत तब तिनके दुख दाहे।' विन० ३५४। वि० 'बायाँ' का उलटा, दक्षिण।
दाहा—पु० ताजिया। मुहर्रमके प्रथम दस दिन।
दाहिन, दाहिना—वि० दक्षिण, अनुकूल 'जे बिनु काज दाहिनेहु बायें।' रामा० ६। दाहिनी देना या दाहिनी लाना = प्रदक्षिणा करना।
दाहिने—क्रिवि० दाहिनी तरफ।
दाही—वि० जो दाह-कर्म करे। जलानेवाला।
दिंड—पु० नृत्य-विशेष।
दिअना—पु० दिआ ( ग्राम० १२ भू० )।
दिअरी,दिअली—स्त्री० छोटा दीया।
दिआ—पु० दीया।
दिआना—सक्रि० दिलाना।
दिउला—पु०,दिउली—स्त्री० खुरण्ड, घावकी पपड़ी छोटा दीया
दिक़—पु० क्षयरोग, तपेदिक। वि० तङ्ग, हैरान।
दिकली—स्त्री० चनेकी दाल '...कुटियासे निकली का एक नारी गाली देती, खाती दिकली देख देख कर तरा।' कुकुरमुत्ता ५६

दिक्‌—स्त्री० दिशा।
दिक्क—वि० परेशान, हैरान।
दिक्क़त—स्त्री० अड़चन, कठिनाई। परेशानी।
दिक्‌पाल—पु० दिशाओंके दस देवता। छन्द-विशेष जिसमें २४ मात्राएँ होती हैं।
दिक्‌शूल—पु० विशेष दिशाओंमें, विशेष दिनोंमें, काल-[का वास।
दिखना—अक्रि० देख पड़ना।
दिखराना, दिखरावना—सक्रि० देखो 'दिखलाना'।
दिखलाना—सक्रि० दिखाना, बताना, मालूम करना।
दिखलाव—पु० दिखावा।
दिखहार—पु० देखनेवाला, दर्शक।
दिखाई—स्त्री० देखने या दिखानेकी क्रिया। देखने या दिखानेके बदले दिया जानेवाला द्रव्य।
दिखाऊ—वि० जो केवल देखने योग्य हो, ऊपरी, बनावटी।
दिखाना—सक्रि० देखो 'दिखलाना'।
दिखावटी—वि० दिखाऊ, बनावटी।
दिखावा—पु० बनावट, कृत्रिम व्यवहार। दिखानेके लिए किया गया ठाटबाट।
दिखैया—पु० देखनेवाला। दिखानेवाला।
दिखौआ—वि० देखो 'दिखाऊ'।
दिगंत—पु० दिशाका अन्त, क्षितिज। दसो दिशाएँ। पु० आँखका कोना।
दिगंबर—पु० एक जैन सम्प्रदाय। शिव। वि० नङ्गा।
दिगदंति, दिग्गज—पु० दिशाओंके हाथी।
दिगपाल, दिग्पाल—पु० दिशाओंके रक्षक।
दिग्‌—स्त्री० दिशा।
दिग्घ—वि० दीर्घ, बड़ा, लम्बा (ललित० १२०)। विषाक्त।
दिग्दर्शन—पु० स्थूल परिचय, विषयका साधारण वर्णन।
दिग्पति, दिग्राज—पु० दिग्पाल।
दिग्भ्रम—पु० दिशा सम्बन्धी भ्रम।
दिग्भ्रांत—वि० जिसे दिशाका भ्रम हो गया हो।।
दिग्विजय—पु० ख्याति स्थापित करनेकी दृष्टिसे चारों दिशाओंके देशोंको जीतनेका कार्य। विद्याबलसे देश-देशान्तरोंको प्रभावित करना।
दिग्विजयी—वि० विश्वविजेता।
दिग्व्यापी—वि० चारों ओर फैला हुआ।
दिङ्‌नाग—पु० प्राचीन और प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक जो कालिदासके समकालीन माने जाते हैं।
दिङ्‌मंडल—पु० दिशाका घेरा, दिशाकी परिधि।
दिच्छित, दिछित—वि० जो यज्ञमें प्रवृत्त हो, जिसने मन्त्र लिया हो 'गज धौं कहाँ को दिछित जाके सुमिरत लै सुनाम वाहन तजि धाये।' विन० ५४६
दिठादिठी—स्त्री० देखादेखी।
दिठाना—अक्रि० नज़र लगना। सक्रि० नज़र लगाना।
दिठौना—दे० 'डिठौना' ( रघु० ४३ )।
दिढ़—वि० दृढ़, मज़बूत, पक्का, प्रगाढ़, निडर, बलिष्ठ।
दिढ़ता, दिढ़ाई—स्त्री० दृढ़ता, मज़बूती, साहस, धैर्य।
दिढ़ाना—सक्रि० मज़बूत करना, पक्का करना, निश्चित करना।
दिढाव—पु० दृढ़ बनाना, समर्थन या पुष्टि करना 'है दिढ़ाइबे जोग जो ताको करत दिढ़ाव।' भू० १०४
दिति—स्त्री० दैत्योंकी माता।
दितिज, दितिसुत—पु० दैत्य, असुर, राक्षस।
दिन—पु० दिवस। समय।—दहाड़े = ठीक दिनकी चहल-पहलके समय।—दूना रात चौगुना = बड़ी शीघ्रतासे।—धराना = शुभ दिनका निश्चय कराना, मुहूर्त्त दिखवाना।—पर दिन = प्रतिदिन।—लौटना = फिर सुखका ज़माना आना। क्रिवि० अनुदिन, प्रति-दिन, हमेशा 'ह्वाँ सुनियत नृपवेश, यहाँ दिन देखियत बेनु लये।' भ्र० १४४
दिनअर—पु० दिनकर, सूर्य 'कीन्हेसि दिन, दिनअर-[ससि, राती।' प० १
दिनकंत, दिनकर—पु० सूर्य।
दिनचर्या—स्त्री० दिनभरका काम।
दिनदानी—पु० प्रतिदिन दान देनेवाला।
दिननाथ, -पति, -मणि—पु० सूर्य। [करता है।
दिनभृति—पु० वह मज़दूर जो रोजकी मज़दूरीपर काम
दिनमान—पु० सूर्योदय और सूर्यास्तके बीचके समयका [मान।
दिनराइ, दिनराउ, दिनराज—पु० सूर्य।
दिनाइ—पु० दादका रोग।
दिनाई—स्त्री० प्राणघातक विषैली वस्तु 'ऊधो, दीनी प्रीति दिनाई।' भ्र० ८४, ( सूबे० १५७ )।
दिनार—पु० प्राचीन सुवर्णमुद्रा 'बारह बानी चलै दिनारा।' प० २२५। सोनेका गहना।
दिनियर—पु० दिनकर, सूर्य।
दिनी—वि० बहुत दिनोंका, प्राचीन।
दिनेर—पु० दिनकर, सूर्य।
दिनेश, दिनेस—पु० सूर्य। मदार।

दिनौंधी—स्त्री० दिनमें न दिखायी देनेका रोग ।
दिपति—स्त्री० दीप्ति, प्रकाश, कान्ति, शोभा ।
दिपना—अक्रि० प्रकाश देना, चमकना, दीप्त होना 'दीपति देह दुहूनि मिलि दिपति ताफता रङ्ग ।' बि० ३४, 'रवि ससि नखत दिपहिं ओहि जोती ।' प० ४६, ( २०२ भी ) । [ दिपाई ।' प० ४५
दिपाना—अक्रि० चमकना 'सहस किरिन जो सुरुज
दिव्य—पु० अपनी निर्दोषता दिखानेको दी गयी परीक्षा ।
दिमाक—देखो 'दिमाग़' ( रत्ना० ३१८ )
दिमाकदार—वि० अच्छे मस्तिष्कवाला । घमण्डी ।
दिमाग़—पु० मस्तिष्क, अक्ल । घमण्ड ।
दिमाग़चट—वि० बहुत बकवाद करनेवाला ।
दिमाग़दार—वि० देखो 'दिमाकदार' ।
दिमाग़ी—वि० मस्तिष्क सम्बन्धी । घमण्डी ।
दिमात—पु० वह जिसके दो माताएँ हों । त्रि० दो माताओंवाला । दो मात्राओंवाला ।
दिमाना—वि० दिवाना, विक्षिप्त, पागल ।
दियट—स्त्री० दीयट, चिराग़दान ।
दियना—पु० दीया, चिराग़ ।
दियरा, दियला—पु० दीया, दीपक ( गीता० २९७ )।‡
दिया—पु० दीया दीपक । [‡ एक पकवान, लुक ।
दियाबत्ती—स्त्री० सायंकालमें दीप जलानेका कार्य ।
दियारा—पु० नदीका पानी हट जानेपर निकली हुई भूमि, कछार, लुक 'मुरुछि परै जोई मुख जोहै । जानहु मिरिग दियारहिं मोहै ।' प० ८९ । प्रान्त ।
दियासलाई—स्त्री० आग उत्पन्न करनेवाली सलाई । 'आगकाड़ी' ।
दियासा—पु० मृगतृष्णा 'थके नारि नर प्रेम पियासे । मनहुँ मृगीमृग देखि दियासे ।' रामा० २५४
दिरद—पु० द्विरद, हाथी ।
दिरमान—पु० चिकित्सा, इलाज ।
दिरमानी—पु० वैद्य । स्त्री० चिकित्साशास्त्र 'जस आमय भेषज न कीन्ह तस दोष कहा दिरमानी ।' विन० २९६
दिरानी—स्त्री० देवरानी ( कबीर ३०२ ) ।
दिरिस—पु० दृश्य, देखनेकी वस्तु ।
दिल—पु० हृदय, चित्त, कलेजा, साहस, इच्छा ।—मसोस कर रह जाना = क्रोध या शोकको दबाकर रह जाना । —का गवाही देना = मनमें किसी बातके निश्चित रूपसे होनेका विश्वास होना ।—का गुबार या बुखार निकालना = बककर अथवा रो धोकर दिलमें भरे हुए क्रोध या शोकको शान्त करना ।—के फफोले फोड़ना = जली कटी सुनाकर जी ठण्डा करना ।—खोलकर = निस्संकोच रूपसे, मनमाना, बिना कोर-कसर किये ।—देना = अनुरक्त होना ।—पक जाना = आजिज़ आना, ऊब जाना ।
दिलगीर—वि० उदास, खिन्न ।
दिलचला—वि० दानी, उदार, बहादुर ।
दिलचस्प—वि० मनोहर ।
दिलचस्पी—स्त्री० मन लगना, मनोरञ्जन । रुचि, शौक़ ।
दिलजमई, दिलजोई—स्त्री० सन्तोष, तसल्ली 'दिलजोई के
दिलजला—वि० दुखी । [ वचन सुनाये ।' छत्र० ८१
दिलदार—वि० उदार, प्रिय, प्रेमी, रसिक ।
दिलपज़ीर—वि० दिलपसन्द मनोहर ( सेवा० १९ ) ।
दिलबस्तगी—स्त्री० दिलका लगना ।
दिलरुबा—पु० प्रेमपात्र, माशूक । एक बाजा ।
दिलवर—पु० प्रेमपात्र, प्रियतम ।
दिलवाना, दिलाना—सक्रि० दूसरेको देनेमें प्रवृत्त करना।
दिलशिकन—वि० दिल तोड़नेवाला, हृदयविदारक
दिलावर—वि० बहादुर, वीर, साहसी ।[(कर्म० ५३०)।
दिलासा—पु० ढाढ़स, प्रबोध, आश्वासन ।
दिली—वि० हार्दिक । घनिष्ठ ।
दिलीप—पु० एक सूर्यवंशी राजा ।
दिलेर—वि० वीर, साहसी, उत्साही ।
दिल्लगी—स्त्री० मसखरी, हँसी, मखौल ।
दिल्लगीबाज—वि० मजाक करनेवाला, हँसोड़ । पु० मसखरा । [ जूता, सलेमशाही
दिल्लीवाल—पु० दिल्लीमें बननेवाला एक प्रकार
दिव—पु० आकाश, अन्तरिक्ष, स्वर्ग, वन, दिन ।
दिवराज—पु० इन्द्र ।
दिवला—पु० दीया 'यहि तनका दिवला करौं बाती मेल
दिवस—पु० दिन, वासर । [ जीव ।' साखी ४
दिवस अंध—देखो 'दिवान्ध' ।
दिवसकर,-नाथ,-मणि—पु० सूर्य ।
दिवसमुख—पु० प्रातःकाल ।
दिवसस्वप्न—पु० जाग्रत् स्वप्न, जागते हुए स्वप्नकी-सी स्थिति, अँगरेजी 'रेवरी' )

दिवांध—वि० जिसे दिनमें कुछ न देख पड़े। पु०उल्लू।
दिवसपति—पु० दिवाकर, सूर्य। इन्द्र। [ दिनौंधी।
दिवा—पु० दीया, चिराग़। दिन।
दिवाकर—पु० दिनकर, सूर्य।
दिवान—पु० दीवान, मन्त्री 'गुरुमुख गुरु चितवत रहै जैसे साह दिवान।' साखी १५। राजाका छोटा भाई 'अमान मान सों दिवान कुम्भकर्ण जाइयो।'—राम० ४५१। राजसभा 'घटही माहिं चबूतरा घटही माहिं दिवान।' साखी ६। दरबार (के० १९०), 'केहि दिवान दिन दीनको आदर अनुराग विसेखि।' विन० ४४४। समूह 'चढ़ि व्योम दीह विमान देव दिवान आनि निहारहीं।' के० १९। स्त्री० मर्यादा 'दिल्ली दलदाबि कै दिवान राखी दुनीमें।' भू० १७३
दिवाना—वि० दीवाना, पागल। सक्रि० दिलाना।
दिवानाथ—पु० सूर्य।
दिवाराम—स्त्री० दिनरात।
दिवारी—स्त्री० दीपावली 'फागुहि निलज लोग देखिये। जुवा दिवारीको लेखिये।' के० १४५
दिवाल—स्त्री० दीवार, भित्ति। वि० देनेवाला।
दिवाला—पु० ऋण चुकानेकी असमर्थता, टाट उलटना, किसी वस्तुका बिलकुल निश्शेष हो जाना।
दिवालिया—वि० कर्ज़ चुकानेको जिसके पास कुछ न हो
दिवाली—स्त्री० दीपावली।
दिवैया—पु० देनेवाला। [ 'दिब'।
दिव्य—वि० प्रकाशमान, स्वर्गीय, अलौकिक। पु० देखो
दिव्यदूत—पु० देवदूत, स्वर्गीय दूत।
दिव्य दृष्टि—स्त्री० परोक्ष बातोंको जाननेकी शक्ति,सिद्धि-विशेषसे प्राप्त अलौकिक दृष्टि।
दिव्यता—स्त्री० अलौकिकता।
दिव्या—स्त्री० स्वर्गीय नायिका।
दिव्यास्त्र—पु० मन्त्र-शक्तिसे चलाये जानेवाले अस्त्र।
दिश्य—वि० दिशा सम्बन्धी (साकेत ३२७)। दिशाकी ओर स्थित।
दिशा—स्त्री० तरफ। दसकी संख्या। देखो 'दिसा'।
दिशाशूल,-सूल—पु० देखो 'दिसासूल'।
दिशि—स्त्री० दिशा।
दिष्टि—स्त्री० दृष्टि (उदे० 'अलोप')।
दिस—स्त्री० देखो 'दिशा'।
दिसना—अक्रि० दिखना, दिखायी पड़ना।
दिसा—स्त्री० दिशा। दशा। शौच, पाखानेकी हाजत।
दिसावर—पु० दूसरा देश, विदेश।
दिसावरी—वि० बाहरसे आया हुआ। बाहरी।
दिसासूल—पु० निर्दिष्ट दिनोंमें किसी विशेष दिशाकी यात्राका निषेध।
दिसि—स्त्री० दिशा। ओर (उदे० 'अवरेखना')।
दिसिनायक,-राज—पु० दिग्पाल।
दिसिप—पु० दिक्पाल।
दिसैया—पु० देखनेवाला। दिखानेवाला।
दिस्टि—स्त्री० दृष्टि, नज़र।
दिस्ता—देखो 'दस्ता'।
दिहंदा—वि० देनेवाला।
दिहकानियत—स्त्री० देहातीपन (निबन्ध ३४)।
दिहात, दिहाती—दे० 'देहात'; 'देहाती'।
दीअट; दीआ—दे० 'दीयट'; 'दीया'।
दीक्षणा—स्त्री० उपदेश (सुन्द० ८४)।
दीक्षा, दीच्छा—स्त्री० मन्त्रोपदेश,यजन,पूजन,गुरुमन्त्र।
दीक्षित—वि० जिसने दीक्षा ली हो, जिसने यज्ञका अनुष्ठान किया हो।
दीखना—अक्रि० देख पड़ना, दिखायी देना।
दीघी—स्त्री० तालाब, पोखरा।
दीठ, दीठि—स्त्री० दृष्टि (उदे० 'उजारा')। देखनेकी शक्ति, ध्यान, कृपादृष्टि,कुदृष्टि,नज़र 'कहूँ दीठि लागी, लगी है काहूकी दीठि।' बि० २६२, (रवि० ५)
दीठना—सक्रि० देखना 'निरखत आइ लच्छिमी दीठी।'
दीठबंदी—स्त्री० नजरबन्दी, इन्द्रजाल। [प०२०२
दीदा—स्त्री० आँख,निगाह। साहस,ढिठाई।-लगना = [जी लगना।
दीदार—पु० दर्शन, भेंट (साखी ९)।
दीदी—स्त्री० बड़ी बहिन या बड़ी ननद।
दीधिति—स्त्री० किरण, रश्मि। अँगुली।
दीन—वि० ग़रीब, दुःखी,उदास,नम्र,हीन दशा-सूचक। पु० मज़हब।
दीनता, दीनताई—स्त्री० दरिद्रता, उदासी, दुःख-पूर्ण [अवस्था।
दीनदार—वि० धार्मिक।
दीन-दुनिया—स्त्री० लोक-परलोक, दोनों लोक।
दीनबंधु—पु० दीनोंके मित्र, अनाथोंके सहायक।
दीनानाथ—पु० ग़रीबोंके स्वामी, ईश्वर।

दीनार—पु० सोनेका एक सिक्का । सोनेका गहना ।
दीप—पु० दीया । द्वीप, टापू ।
दीपक—पु० दीया । एक राग । केसर । एक काव्यालंकार—'वर्ण्य अवर्ण्यनको जहाँ धर्म एक ही होय ।' वि० बढ़ानेवाला, उत्तेजक, प्रकाश करनेवाला ।
दीपत, दीपति—स्त्री० चमक, कान्ति (उदे० 'दिपना')। शोभा । कीर्ति, प्रताप ।
दीपदान—पु० देव-मूर्त्तिके सामने दीपक जलाना ।
दीपना—अक्रि० चमकना, प्रकाशित होना । सक्रि० प्रकाशित करना ।
दीपमालिका, दीपमाली—स्त्री० दीपावली ।
दीप-शलभ—पु० जुगनू, खद्योत 'दीपशलभने जिसे मिचौनी खेल खेलकर हुलसाया 'वीणा १५
दीपशिखा—स्त्री० दीयेकी लौ । दीयेका काजल ।
दीपावली, दीपावलि—स्त्री० दीवाली ।
दीपित—वि० प्रज्वलित, जलाया हुआ, उभाड़ा हुआ ।
दीपोत्सव—पु० दीपावली ।
दीप्ति—दे० 'दीपति' ।
दीप्तिमान्—वि० कान्तियुक्त, द्युतिमान् , प्रकाशित ।
दीमक—स्त्री० एक तरहकी चींटी जो कागज लकड़ी इ० खा जाती है ।
दीयट—स्त्री० दीया रखनेकी आधार-वस्तु, चिराग़दान ।
दीया—पु० चिराग़, दीपक ।
दीरघ, दीर्घ—वि० बड़ा, लम्बा ।
दीर्घजीवी—वि० बहुत दिनोंतक जीनेवाला, चिरजीवी ।
दीर्घदर्शी,-दृष्टि—वि० दूरतक सोचनेवाला, दूरंदेश ।
दीर्घनिद्रा—स्त्री० मृत्यु ।
दीर्घबाहु—वि० बड़ी भुजाओंवाला ।
दीर्घसूत्र,-सूत्री—वि० देरमें काम करनेवाला, ढीला, [सुस्त ।
दीर्घायु—वि० बड़ी आयुवाला, बहुकालजीवी ।
दीर्घिका—स्त्री० एक तरहका जलाशय, बावली ।
दीर्ण—वि० फटा हुआ, जर्जर, भयभीत ।
दीवट—स्त्री० देखो 'दीयट' ।
दीवा—पु० दीया, चिराग़ ( साखी १७ ) ।
दीवान—पु० मंत्री । राजसभा, दरबार । देखो 'दिवान' ।
दीवानखाना—पु० बैठकका कमरा ।
दीवाना—वि० पागल, विक्षिप्त ।
दीवानी—स्त्री० दीवानका कार्य या पद । सम्पत्ति इ० के झगड़ोंका फैसला करनेवाला न्यायालय । वि० स्त्री० पगली ।
दीवार, दीवाल—स्त्री० मिट्टी या ईंट आदिका परदा, [भित्ति ।
दीवारगीर—स्त्री० दीवारमें लगानेका लम्प ।
दीवाली—स्त्री० घरके भीतर बाहर रोशनी करनेका वह उत्सव जो कार्त्तिकी अमावास्याको पड़ता है ।
दीसना—अक्रि० देख पड़ना, दिखायी देना 'वीथी विमल सुगंध, समान । दुहुँ दिशि दीसत दीप अमान ।' के० १६१, ( उदे० 'अडंबर' )
दीह—वि० दीर्घ, बड़ा, लम्बा 'दीह दीह दिग्गजनके केसव मनहुँ कुमार ।' राम० १६, (उदे० 'खेदना')
दुंद—पु० जोड़ा । दो आदमियोंकी लड़ाई, युद्ध 'औ किछु दुन्द होइ दल माहीं ।' प० २१९ । उत्पात ( सुसु० १२० ), दुन्दुभी, नगाड़ा 'दुन्द घाव भा इन्द्र सकाना ।' प० २४४ । क्रिवि० ठक ठक 'भरे ते भारी होइ रहे, छूँछे बाजहिं दुंद ।' प० २७४
दुंदभ—पु० जन्म मरणादिक दुःख ( बीजक १८ ) ।
दुंदुभि—पु० एक राक्षस । वरुण । स्त्री० देखो 'दुंदुभी'।
दुंदुभी—स्त्री० नगाड़ा ( उदे० 'आनकदुंदुभी' ) ।
दुंदुर—पु० चूहा 'दुंदुर राजा टींका बैठे ।' कबीर १२२
दुंदुह—पु० जलमें रहनेवाला साँप ।
दुंबा—पु० भेड़ोंकी एक जाति जिसके रोएँसे बढ़िया ऊन [बनता है ।
दुःख—पु० क्लेश, पीड़ा, शोक, विपत्ति ।
दुःखकर—वि० दुःख उत्पन्न करनेवाला, क्लेशकारक ।
दुःखद,-दायी,-प्रद—वि० कष्ट देनेवाला ।
दुःखद्वंद्व—पु० क्लेश और उत्पात ।
दुःखपूर्ण,-मय—वि० क्लेश-युक्त ।
दुःखांत—पु० कष्टसमाप्ति । वि० जिसका अन्त दुःख-[मय हो ।
दुःखित—वि० पीड़ित, विपन्न ।
दुःखिनी—वि० स्त्री० पीड़िता, दुखिया ।
दुःशासन—पु० दुर्योधनका भाई ।
दुःशील—वि० दुष्ट स्वभाववाला ।
दुःसह—वि० जिसका सहना कठिन हो, असह्य ।
दुःसाध्य—वि० जिसका साधन कठिन हो, जो कठिनतासे किया जा सके, जो कठिनाईसे अच्छा हो ।
दुःसाहस—पु० अनुचित साहस, व्यर्थकी हिम्मत, धृष्टता।
दुःस्वप्न—पु० खराब या अनिष्टकर स्वप्न ।
दुआ—स्त्री० आशीर्वाद, प्रार्थना ।

दुआदस—वि० द्वादश, बारह । बारहवाँ ।
दुआबा—पु० दो नदियोंके बीचका स्थल ।
दुआर—पु० द्वार, दरवाजा (उदे० 'उलंघना' ) ।
दुआरी—स्त्री० छोटा द्वार ।
दुइ—वि० दो ।
दुइज—स्त्री० द्वितीया, पक्षकी दूसरी तिथि । पु० द्वितीयाका चन्द्र ( उदे० 'ओता' ) ।
दुई—स्त्री० द्वैतता, दोका भाव ।
दुकड़हा—वि० छदामका । क्षुद्र, नीच, अधम ।
दुकड़ा—पु० पैसेका चतुर्थांश, छदाम । जोड़ा ।
दुकना—अक्रि० छिपना, ओटमें बैठना 'जाके डर भाज्यो चाहत है ऊपर दुक्यो सचान ।' सूवि० २३
दुकान—स्त्री० माल बेचनेका स्थान ।
दुकानदारी—स्त्री० दूकानपर सौदा बेचनेका काम । बातें बनाकर किसी तरह पैसे खडे करनेका काम ।
दुकाल—पु० दुष्काल. दुर्भिक्ष 'यहि निशिचर दुकाल सम अहई । कपिकुल देस परन अब चहई ।' रामा० ४०९
दुकूल—पु० रेशमी कपड़ा, क्षौम वस्त्र, उपरना । कपड़ा।
दुकेला—वि० जिसके साथ कोई और भी हो ।
दुक्कड़—पु० एक बाजा जो शहनाईके साथ बजाया जाता है ।
दुक्का—पु०, दुक्की—स्त्री० दो बूटियोंवाला ताशका पत्ता।
दुखंडा—वि० दो खण्डोंवाला । दो-मंजिला ।
दुखंत—पु० दुष्यन्त ।
दुख—पु० कष्ट, सन्ताप, व्यथा, संकट ।
दुखड़ा—पु० दुःखकी कथा । विपत्ति ।
दुखद,दुखदाई—वि० दु.ख देनेवाला । क्लेशकर ।
दुखदुंद—पु० दुःख और उपद्रव ।
दुखना—अक्रि० दर्द करना, व्यथित होना ।
दुखरा—पु० देखो 'दुखड़ा' ।
दुखवना,दुखाना—सक्रि० दुःख देना, पीड़ित करना 'कनककसिपु विरञ्चिको जन, करम मन अरु बात । सुतहिं दुखवत विधि न बरज्यो, कालके घर जात ।' विन० ४९७
दुखारा, दुखारी—वि० व्यथित, पीड़ित ( के० ८४ ) ।
दुखित,दुखी—वि० जो दुःखमें हो, पीड़ित, व्यथित, रोगी ।
दुखिया—वि० जो दुःखी हो, जो किसी कष्टमें हो ।
दुखियारा—वि० दुःखी, रोगग्रस्त ।
दुखोहाँ—वि० दुःख देनेवाला ।
दुगई—स्त्री० बरामदा ( उदे० 'थंभ' ) ।
दुगदुगी—स्त्री० देखो 'धुकधुकी' । [ ५७ ) ।
दुगना—वि० द्विगुणित, दूना । अक्रि० छिपना ( नव०
दुगासरा—पु० छिपनेका स्थान 'गाँव गढ़ी कौ इक दुगासरौ ।' छत्र० ९४
दुगुन, दुगुना—वि० दूना ।
दुग्ग—पु० दुर्ग, क़िला ।
दुग्ध—पु० दूध । वि० दुहा हुआ ।
दुघरी—स्त्री० दुघड़िया मुहूर्त ।
दुचंद—वि० दूना 'कन्दतें दुचन्द नन्दनन्दनकी मीठी बात करति अनन्द गात मुद दानि जनकी'। दीन२१, ( उदे० चमाक' )
दुचित—वि० जिसका मन दुविधामें पड़ा हो,संशययुक्त, चिन्तित 'मिलतहिं कुरुख चकत्ताको निरखि कीन्हो सरजा सुरेस ज्यों दुचित व्रजराजको ।' भू० ११
दुचितई—स्त्री० दुविधा, चित्तकी अस्थिरता, सन्देह । 'भेजत बनत न, रोकत बनत न भै दुचितई महानी ।' रघु० २०८
दुचिताई—स्त्री० देखो 'दुचितई' । 'जारति चित्त चिता दुचिताई । दीह त्वचा अहि कोप चबाई ।' के० ६१, ( राम० ८१ ) । चिंता ( छत्र० ५ ) ।
दुचित्ता—वि० जो दुविधामें पड़ा हो, चिन्तित ।
दुज—देखो 'द्विज' ।
दुजन्मा—पु० ब्राह्मण । द्विज । वि० देखो 'द्विजन्मा' ।
दुजराज—पु० चन्द्रमा । ब्राह्मण । गरुड़ ।
दुजाति—पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य । द्विज ।
दुजीह—पु० साँप ।
दुड़बड़ी—स्त्री० एक बाजा । ( कबीर २० ) ।
दुड़ी—स्त्री० देखो 'दुक्की' । [ भगाना ।
दुतकारना—सक्रि० अपमान करना, तिरस्कारपूर्वक दूर
दुतरफा—वि० दोनों ओर होनेवाला । दोनों ओर चलने वाला ( आदमी ), दुरंगा ।
दुति—स्त्री० द्युति, चमक, कान्ति । शोभा ।
दुतिमान—वि० प्रकाशवान्, शोभायुक्त, सुन्दर ।
दुतिय, दुतिया—वि० द्वितीय, दूसरा, (कबीर२८६) ।

दुतिवंत—वि० देखो 'दुतिमान'।
दुतीया—स्त्री० द्वितीया, दूज।
दुदल—वि० दो बराबर बराबर खण्डोंवाला। पु० दाल।
दुदलाना—सक्रि० दुतकारना, तिरस्कार करना।
दुदिला—वि० देखो 'दुचित'।
दुद्धी—स्त्री० एक तरहकी घास। थूहरके सदृश एक पौधा। खरिया मिट्टी। [हो, निरा बचा।
दुधमुख, दुधमुहाँ—वि० जो अभीतक माँका दूध पीता
दुधहँड़ी, दुधाँड़ी—स्त्री० दूध औटनेकी हाँड़ी।
दुधार—वि० जो दूध देती हो। जिसमें दोनों ओर धार हो।
दुधारा—वि० जिसके दोनों ओर धार हो। पु० वह तलवार जिसके दोनों ओर धार होती है।
दुधारी, दुधारू—वि० देखो 'दुधार'।
दुधिया—देखो 'दूधिया'।
दुधैल—वि० स्त्री० ज्यादा दूध देनेवाली।
दुनरना, दुनवना—अक्रि० नवना, लचकर दोहरा हो जाना 'लंक नवलाकी कुचभारनि दुनोने लगी ·' —दास २६। सक्रि० नवाना, झुकाना।
दुनाली—वि० स्त्री० दो नलोंवाली ( वन्दूक )।
दुनियाँ,·या—स्त्री० संसार, संसारके लोग।
दुनियाई—स्त्री० संसार ( उदे० 'अदल' )। वि० ससार सम्बन्धी।
दुनियादार—वि० संसार-सम्बन्धी, सांसारिक, व्यवहार-चतुर। पु० संसारकी बातोंमें फँसा हुआ व्यक्ति।
दुनियादारी—स्त्री० घर गृहस्थी, व्यवहार-कुशलता, स्वार्थ साधनकी चतुरता, बनावटी व्यवहार या शिष्टाचार।
दुनियासाज—वि० मतलब गाँठनेवाला, स्वार्थी, चाप-
दुनी—स्त्री० दुनिया, संसार। [लूस।
दुनोना—दे० 'दुनवना'। [चादर।
दुपटा,दुपट्टा—पु० दो पाटोंका बना ओढ़नेका कपड़ा,
दुपटी—स्त्री० देखो 'दुपटा', ( उदे० 'उपानह' )।
दुपद—पु० दो पाँवोंवाला जीव। मनुष्य। वि० जिसके दो पाँव हों।
दुपलिया—वि० स्त्री० दो पल्लेवाली, दो पल्लोंके जोड़ने-से बनी हुई। स्त्री० एक प्रकारकी टोपी, 'सर सभीका फाँसनेवाला हूँ ट्रैप, टर्की टोपी, दुपलिया या गांधी कैप। कुकुरमुत्ता १२
दुपहर—स्त्री० मध्याह्न। [फूल।
दुपहरिया—स्त्री० मध्याह्न। एक पौधा या उसका लाल
दुपहरी—स्त्री० मध्याह्न 'जेठ मासकी दुपहरी, चली बाल पिय-भौन।' मति० २००, ( उदे० 'छाँह' )। एक फूल ( उदे० 'फूलना' )।
दुबकना—सक्रि० दबकना।
दुबधा—स्त्री० देखो 'दुविधा'।
दुबरा, दुबला—वि० दुर्बल, कमज़ोर।
दुबराई—स्त्री० दुर्बलता, कमज़ोरी।
दुबराना—अक्रि० दुर्बल या क्षीण होना।
दुबिधा—स्त्री० सन्दिग्ध अवस्था, संशय, चिन्ता, अस
दुबीचा—पु० दुबधा, खटका। [मंजस।
दुभाखी—पु० दो भाषाएँ जाननेवाला, आशय समझाने-वाला, मध्यस्थ 'अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी।' रामा० १८
दुभाषिया—पु० देखो 'दुभाखी'।
दुमंजिला—वि० दोतल्ला, दो खंडोंवाला।
दुम—स्त्री० पूँछ। पछलगा।
दुमची—स्त्री० घोड़ेके साजका दुमकी तरफवाला हिस्सा। पुट्ठोंके मध्यकी हड्डी।
दुमदार—वि० जिसके पूँछ ( या पूँछ जैसी वस्तु )
दुमन—वि० खिन्न। [लगी हो।
दुमात, दुमाता—स्त्री० दूसरी मा, विमाता।
दुमुँहा—पु० दो मुँहोंवाला साँप। [तरहका।
दुरंगा—वि० दो रङ्गोंवाला, दो चाल चलनेवाला, दो
दुरंत—वि० बहुत बड़ा, प्रचण्ड ( कलस २०९ ), कठिन, भीषण, अशुभ। 'धरे श्रृङ्खला दु'ख दाहैं दुरन्तै।' राम० ५११। अन्तहीन 'द्रौपदी अपट दुरन्त दुकूल है।' पल्लव १२
दुरंधा—वि० दो रन्ध्रोंवाला। जिसमें दो छिद्र हों।
दुर—पु० मोती। छोटीसी बाली। अ० देखो 'दूर'।
दुरजन—पु० बुरा आदमी, दुष्ट मनुष्य।
दुरतिक्रम—वि० जिसका उल्लंघन न किया जा सके जिसका कोई पार न पा सके।
दुरत्यय—वि० जिसे पार करना कठिन हो, दुस्तर।
दुरथल—पु० बुरी या गन्दी जगह 'दुरदिन परे रहीम कहि दुरथल जैयत भागि।' रहीम
दुरद—पु० हाथी ( उदे० 'चंचलाई', 'चुवना' )।

दुरदाम—वि० प्रबल, प्रचण्ड, दुस्साध्य ।
दुरदाल—पु० हाथी ।
दुरदिन—पु० बुरा दिन, वह दिन जब आकाश मेघाच्छन्न हो । सङ्कटका समय ( उदे० 'दुरथल' ) ।
दुरदुराना—सक्रि० अपमानपूर्वक अलग करना ।
दुरधिगम—वि० दुष्प्राप्य । दुर्बोध ।
दुरना—अक्रि० छिपना, आड़में होना 'प्रगटत दुरत करत छल भूरी ।' रामा० ३७८, ( उदे०, 'किलकना' ) ।
दुरपदी—स्त्री० द्रौपदी ।
दुरबल—वि० दुर्बल, कमज़ोर, अशक्त ।
दुरबार—वि० अटल 'प्रेमक गति दुरबार'—विद्या०१५८
दुरबेस—पु० फकीर ( साखी ५० ) ।
दुरभिसंधि—स्त्री० कुमन्त्रणा, कुचक्र ।
दुरभेव—पु० मनोमालिन्य ।
दुरलभ—वि० अलभ्य, अद्वितीय, अनोखा ।
दुरवस्था—स्त्री० दुर्दशा, बुरी स्थिति ।
दुरस—वि० दुरुस्त, सही, ठीक ( कबीर २०७ ) ।
दुराउ—पु० छिपाव, कपट, छल 'सती कीन्ह चह तहँहुँ दुराऊ ।' रामा० ३६
दुराक्रांत—वि० जो वशमें न आ सके, अविजित ।
दुराग्रह—पु० अनुचित हठ, ज़िद । अपने मतका [अनुचित पक्षपात ।
दुराग्रही—वि० हठी ।
दुराचरण—पु० दुर्व्यवहार, बुरा बर्ताव ।
दुराचार—पु० अनाचार, बुरी चाल, अनुचित आचरण ।
दुराज—पु० बुरा राज्य । दो राजाओंका राज्य ( सूबे० ३७५ ) । [ सुखी न देखा कोय ।' साखी ८२
दुराजी—वि० जिसमें दो राजा हों 'याहि दुराजी राजमें
दुरात्मा—वि० बुरे दिलका, दुष्ट, खोटा ।
दुरादुरी—स्त्री० दुराव, छिपाव ।—करके=गुप्त रीतिसे ।
दुराधर्ष—वि० दुर्दमनीय, प्रबल, भयंकर ।
दुराना—सक्रि० छिपाना 'बैर प्रीति नहिं दुरइ दुराये ।' रामा० २९१ दूर करना, त्यागना ( उदे० 'एक', 'बुराई' ) । अक्रि० छिपना, दूर होना 'नाम लेत नियरात सुख दुख दुरात दरशात ।' रसिकबिहारी
दुराराध्य—वि० जिसे प्रसन्न करना कठिन हो ।
दुराव—पु० छिपाव, छल, कपट 'होइ न बिमल बिवेक उर गुरु सन किये दुराव ।' रामा० ३२
दुराशा, दुरासा—स्त्री० झूठी आशा ।



दुरित—पु० पाप । वि० पाप करनेवाला, पातकी ।
दुरियाना—सक्रि० दुतकारना, दूर हटाना ।
दुरुखा—वि० जिसके दोनों ओर मुँह (या अन्य चिह्न) हो,
दुरुपयोग—पु० अनुचित उपयोग, दुर्व्यवहार । [दुरंगा ।
दुरुस्त—वि० ठीक, मुनासिब, सही ।
दुरुस्ती—स्त्री० सुधार, शुद्धि, मरम्मत ।
दुरूह—वि० समझनेमें कठिन, गूढ़ । मुश्किल ।
दुरेफ—पु० भौंरा, मधुप ।
दुर्—उप० बुरा, कठिन ( दुर्दिन, दुर्लभ ) ।
दुर्गंध—स्त्री० बुरी बास, बदबू ।
दुर्ग—पु० क़िला, गढ़ । वि० दुर्गम, कठिन 'दुर्ग प्रहार कृष्ण पर कीन्हों ।' सूबे० २९०
दुर्गत—स्त्री० देखो 'दुर्गति' । वि० बुरी दशाको प्राप्त ।
दुर्गति—स्त्री० दुर्दशा, दुर्गमता ( राम० ३१ ) ।
दुर्गम—वि० जहाँ जाना कठिन हो, बीहड़ । दुर्ज्ञेय । कठिन ।
दुर्गुण—पु० बुरा गुण, दोष ।
दुर्ग्रह—वि० दुर्बोध, दुर्ज्ञेय ।
दुर्घट—वि० कठिन, घोर ( कविता० १६० ) ।
दुर्घटना—स्त्री० दुःखद आकस्मिक घटना । वारदात,
दुर्जन—पु० बुरा आदमी, दुष्ट स्वभावका व्यक्ति । [विपत्ति ।
दुर्जय, दुर्जेय—वि० कठिनाईसे जीतने योग्य ।
दुर्ज्ञेय—वि० कठिनाईसे जानने योग्य, दुर्बोध ।
दुर्दम—वि० जिसको दबाना कठिन हो, प्रचण्ड ।
दुर्दमनीय, दुर्दम्य—वि० जिसे दबाना कठिन हो,
दुर्दर—देखो 'दुर्धर' ( रत्ना० २४४ ) । [ दुर्द्धर्ष, प्रबल ।
दुर्दशा—स्त्री० दुर्गति, बुरी हालत ।
दुर्दांत—वि० जो कठिनाईसे रोका जा सके । पु० कलह ।
दुर्दिन—पु० कुदिन पानी बादलका समय । कष्टका समय ।
दुर्दैव—पु० दुर्भाग्य, बुरी किस्मत ।
दुर्धर—वि० जो रोका न जा सके । प्रचण्ड, दुर्ग्राह्य ।
दुर्द्धर्ष—वि० दुर्दम, दुर्जय, प्रचण्ड ।
दुर्निवार—वि० जिसको रोका न जा सके, जिसे कठिनाईसे रोका जा सके । जिसका निवारन करना कठिन हो ।
दुर्बल—वि० बलहीन, क्षीण, कमज़ोर ।
दुर्बोध—वि० कठिनतासे समझने योग्य, दुरूह, क्लिष्ट, गूढ़ ।
दुर्भर—वि० न ढोने योग्य, असह्य ।
दुर्भाग्य—पु० खोटा भाग्य, बुरी किस्मत ।
दुर्भाव—पु० कुभाव, दुष्ट अभिप्राय, मनमोटाव ।

दुर्भिक्ष, दुर्भिच्छ—पु० अकाल।
दुर्भेद, दुर्भेद्य—वि० जो आसानीसे न छेदा जा सके।
दुर्मति—वि० जिसकी मति ठीक न हो, कुबुद्धि। स्त्री० बुरी मति।
दुर्मद—वि० घमण्डमें या नशेमें चूर, उन्मत्त।
दुर्मिल—पु० सवैयाका एक भेद। ३२ मात्राओंका एक छन्द। वि० विषम, अनमेल।
दुर्मुख—वि० अप्रिय भाषी। पु० श्रीरामका एक गुप्तचर। एक बन्दरका नाम।
दुर्योधन—पु० धृतराष्ट्रका बड़ा लड़का।
दुर्रा—पु० कोड़ा ( सप्तसरोज ५५ )।
दुर्रानी—पु० एक अफगान जाति।
दुर्लंघ्य—वि० जिसका लाँघना कठिन हो।
दुर्लभ—वि० दुष्प्राप्य, अलभ्य, अद्वितीय।
दुर्वचन—पु० कुवाक्य, अपशब्द, गाली।
दुर्वह—वि० जो वहन न किया जा सके, असह्य।
दुर्वाद—पु० निन्दा, कुवाक्य। अनुचित विवाद।
दुर्वार—वि० जो रोका न जा सके, दुर्निवार।
दुर्विदग्ध—वि० अधकचरा, अपरिपक्व। अनाड़ी, मूर्ख। मिथ्या अहंकारी।
दुर्विपाक—पु० दुष्परिणाम, बुरा संयोग।
दुर्व्यवहार—पु० बुरा व्यवहार, अनुचित वर्त्ताव।
दुर्व्यसन—पु० बुरी आदत, बुरी लत।
दुलकना—अक्रि० मुकरना, इनकार करना (कर्म०३५७)
दुलकी—स्त्री० घोड़ेका उछल उछलकर चलनेका ढङ्ग।
दुलत्ती—स्त्री० पिछली टाँगोंसे प्रहार करना।
दुलदुल—स्त्री० मुहम्मद साहबको भेंट की गयी खच्चरी जिसकी नकल मुहर्रमके दिनोंमे निकाली जाती है।
दुलना—अक्रि० हिलना, झूलना ( यशो० १७ )।
दुलभ—वि० दुर्लभ, दुष्प्राप्य 'नाम रसायन अधिक रस पीवत अधिक रसाल। कबीर पावन दुलभ है मांगै सीस कलाल।' साखी ५०
दुलरा—देखो 'दुलारा' ( रत्ना० ३४८ )।
दुलराना—सक्रि० दुलार करना, प्यार करना 'हलरावै दुलराइ मल्हावै जोइ सोइ कछु गावै।' सूबे० ४७, 'अङ्क उठावत अति दुलरावत निज कहँ धनि जग लेखी।' रघु० ४०। अक्रि० दुलारे बच्चोंकी तरह व्यवहार करना।
दुलरी—स्त्री० दो लड़ोंकी माला ( राम० १३८ )।
दुलहन,-हिन—स्त्री० नयी बहू।
दुलहा—पु० वह जिसका विवाह अभी हुआ हो, हो रहा हो या शीघ्र होनेवाला हो, वर। पति।
दुलहाई—स्त्री० विवाहका गीत ( बीजक ५२ )।
दुलहिया दुलही—स्त्री० नई बहू ( उदे० 'ऊन' )।
दुलहेटा—पु० दुलारा लड़का।
दुलाई—स्त्री० रुईदार ओढ़नेका कपड़ा।
दुलाना—सक्रि० देखो 'डुलाना', 'सीस दुलाइ बुंद वह देख्यो।' छत्र० ७
दुलार—पु० प्यार, लाड़।
दुलारना—सक्रि० प्यार करना, लाड़ करना 'मातु दुलारहिं कहि प्रिय ललना।' रामा० ११०
दुलारा—वि० लाड़ला, प्यारा। पु० लाड़ला पुत्र।
दुलारी—वि० स्त्री० लाड़ली। स्त्री० प्यारी बेटी। दुलाई 'प्रीति दुलारी खुलत है लहि कै मगजी लाल।' रसनिधि
दुलीचा, दुलैचा—पु० गलीचा 'हस्ती चढ़िये ज्ञानकी सहज दुलीचा डारि।' साखी १०९, (सुन्द० १२९)
दुल्लभ—वि० दुर्लभ, दुष्प्राप्य।
दुवन—पु० शत्रु 'गुर्ज मेरु मन्दर सम मण्डित जेहि लखि दुवन निरासा।' रघु० ३, (भू०४३)। दुर्जन, राक्षस।
दुवाज—पु० एक तरहका घोड़ा।
दुवादस—वि० बारह। दुवादस बानी = कान्ति-युक्त, [ चोखा। दे० 'बारहबानी'।
दुवार—पु० द्वार, दरवाजा।
दुविधा—स्त्री० संशय, चिन्ता, असमंजस।
दुशमन—पु० वैरी, शत्रु।
दुशवार—वि० मुश्किल, कठिन।
दुशाला—पु० पशमीनेकी दोहरी चद्दर।
दुश्चरित,-चरित्र—वि० बदचलन, दुराचारी।
दुश्मन—पु० वैरी, रिपु, विपक्षी।
दुश्वार—देखो 'दुशवार' ( कर्म० ४९५ )।
दुष्कर—वि० कठिनतासे करने योग्य, दुस्साध्य।
दुष्कर्म—पु० कुकर्म, बुरा काम।
दुष्काल—पु० बुरा समय, अकाल, दुर्भिक्ष।
दुष्कीर्त्ति—स्त्री० अयश, अपकीर्त्ति, बदनामी।
दुष्कृति—स्त्री० बुरा कार्य। वि० कुकर्मी।
दुष्ट—वि० अधम, क्रूर, खोटा, दूषित।
दुष्प्राप्य—वि० जिसका पाना कठिन हो, दुर्लभ।

दुष्यंत—पु० शकुन्तलाके पति, जो पुरुवंशी राजाके पुत्र थे। भरत इन्हींके पुत्रका नाम था, जिसके नामपर हमारा देश भारत कहलाया।
दुसराना—सक्रि० दुबारा करना या देना, दुहराना।
दुसरिहा—वि० जोड़का, प्रतिद्वन्द्वी। साथी।
दुसह—वि० असह्य, कठिन, घोर ( उदे० 'जर' )।
दुसही—वि० कठिनाईसे सहनेवाला ( उदे० 'असही' )।
दुसाखा—पु० दो कनखोंवाला शमादान। [ डाही।
दुसार—पु० वह छिद्र जो आरपार हो (उदे० 'भेदना')।
दुसाल—पु० देखो 'दुसार'। [ क्रिवि० आरपार।
दुसाला—पु० देखो 'दुशाला'।
दुसूती—वि० जिसमें दुहरे तागोंका ताना बाना हो। स्त्री० दुहरे तागोंके ताने बानेवाली मोटी चादर।
दुसेजा—पु० बड़ी चारपाई।
दुस्तर—वि० कठिनाईसे पार करने योग्य, कठिन।
दुस्त्यज—वि० जो कठिनाईसे त्यागा जा सके।
दुस्सह—वि० असह्य, जो कठिनतासे सहा जा सके।
दुहता—पु० नाती।
दुहत्था—वि० दोनों हाथोंसे किया गया।
दुहना—सक्रि० दूध निकालना। निचोड़ना, ( इच्छा या फल ) प्राप्त करना 'योगी लोग इसी शरीरसे मनमाने फल दुह सकते हैं।' जीव ४५
दुहनी—स्त्री० देखो 'दोहनी'।
दुहरा—वि० देखो 'दोहरा', ( उदे० 'चौहरा' )।
दुहराना—सक्रि० दुबारा कहना या करना। तह करना। अक्रि० दूना होना ( उदे० 'अपथ' )।
दुहाई—स्त्री० घोषणा, मुनादी। बचावके लिए की गयी पुकार। सौगन्ध। दुहनेकी क्रिया या मजदूरी।
दुहाग—पु० दुर्भाग्य, वैधव्य।
दुहागनि, दुहागिन—स्त्री० विधवा 'जो हाँसैंही हरि मिलै तौ नहीं दुहागनि कोइ।' कबीर ९
दुहागिल—वि० हतभाग्य। सूना।
दुहाना—सक्रि० दूध निकलवाना।
दुहावनी—स्त्री० दूध दुहनेकी मज़दूरी।
दुहिता—स्त्री० पुत्री, कन्या।
दुहिन—पु० ब्रह्मा। [ लगि कहौं दुहेल। प० २७०
दुहेल—पु० सङ्कट, क्लेश 'पदमावति जग रूपमनि कहँ
दुहेला—वि० कठिन, दुःसाध्य 'भक्ति दुहेली नामकी जस खाँड़ेकी धार।' साखी ३४। दुःखित 'जस बिछोह जल मीन दुहेला।' प० ९२, 'कहेसि कस न तुम्ह होहु दुहेली। अरुझी प्रेम जो पीतम बेली।' प०११७
दुह्योतरा—वि० दो अधिक। पु० दौहित्र, नाती।
दूँद—पु०, दूँदि—स्त्री० ऊधम, अन्धेर 'बेदन मूँदि करी इन दूँदि, सु सूद अपावन, पावन पाँड़े।' देव। झगड़ा 'तौ काहेको दूँद उठावैं।' छत्र० १२४
दूँदना—अक्रि० ऊधम करना।
दूइज—स्त्री० पक्षकी दूसरी तिथि।
दूक—वि० दो एक, कुछ।
दूकान—स्त्री० देखो 'दुकान'।
दूखन—पु० दूषण, दोष।
दूखना—सक्रि० दोष देना 'कलप कलप भरि एक एक नरका। परहिं जे दूखहिं स्रुति करि तरका।' रामा० ५९२। अक्रि० दुखना, दुःखित होना 'दुत जो अपार बिरह दुख दूखा। जनहुँ अगस्त उदय जस सूखा।' प० १५६
दूखित—वि० दुःखित। दूषित, बुरा।
दूज—स्त्री० देखो 'दूइज'।
दूजा—वि० दूसरा, अन्य ( उदे० 'अदूजा', 'चढ़ना' )।
दूत—पु० सन्देशा पहुँचानेवाला, बसीठ, चर।
दूतर—वि० दुस्तर, कठिन।
दूतावास—पु० दूसरे राज्यके दूतका कार्यालय।
दूतिका, दूती—स्त्री० प्रेमी और प्रेमिकाको मिलानेवाली या उनका सन्देशा एक दूसरेके पास पहुँचानेवाली स्त्री, कुटनी।
दूत्य—पु० दौत्य, दूतका काम; दूतका भाव।
दूध—पु० दुग्ध, पय।—का दूध, पानीका पानी करना=खरा न्याय करना।—के दाँत न टूटना= कम उम्रका या अनुभव हीन होना।—की मक्खी = तिरस्कृत वस्तु, ( उदे० 'खँचाना' )।
दूधपूत—पु० धन और सन्तति। [ जाता है।
दूधफेनी—स्त्री० एक पकवान जो दूधके साथ खाया
दूधभाई—पु० विभिन्न माताओंसे उत्पन्न ऐसे दो लड़के जिन्होंने एक ही स्त्रीका दूध पिया हो।
दूधमुँहा, दूधमुख—वि० जो अभीतक माँका दूध पीता हो, बालक, अल्पवयस्क ( उदे० 'कोह' )।
दूधिया—स्त्री० खरिया मिट्टी, एक सफेद पत्थर, एक

सफेद घास। वि० दूधके रङ्गका। जिसमें दूधका अंश हो। [ सूतसों कसी। राम० ३४९

दून, दूना—वि० दुगुना। दोहरा 'लै अप र रार ऊन दून

दूनर—वि० जो नवकर या लचकर दुहरा हो गया हो।

दूनौ—वि० दोनों।

दूब—स्त्री० एक तरहकी घास ( सूबे० ३९ )।

दूबर, दूबरा—वि० दुर्बल, पतला ( उदे० 'उसास' )। दीन 'छोटे वड़े, खोटे खरे मोटेऊ दूबरे ''' विन०

दूबा—स्त्री० देखो 'दूब'। [५५८, (उदे० 'चहला')।

दूभर—वि० दुःसाध्य, कठिन, भारी। 'दूभर रैनि, जाइ किमि गाढ़ी।' प० १६८, ( १६७ भी )

दूमना —अक्रि० हिलना।

दूरंदेश—वि० दूरदर्शी, दीर्घदृष्टि, अग्रसोची।

दूरंदेशी—स्त्री० दूरदर्शिता, बुद्धिमानी।

दूर—क्रिवि० फासलेपर, अलग। वि० जो फासलेपर हो।

दूरत्व—पु० दूरी, अन्तर।

दूरदर्शी—वि० बहुत दूरतककी बात सोचनेवाला, दूरंदेश।

दूरवा—स्त्री० दूब।

दूरवीन—स्त्री० एक यन्त्र जिसके द्वारा दूरकी वस्तुएँ पास और साफ दिखायी देती हैं।

दूरवर्त्ती—वि० जो दूर हो, दूरस्थ।

दूरवीक्षण—पु० दूरवीन।

दूरि—क्रिवि० दूर 'यहि विधि प्रभुहिं गयउ लै दूरी।' [ रामा० ३७८

दूरी—स्त्री० फासला, बीच, अन्तर।

दूर्वा—स्त्री० एक तरहकी मुलायम घास, दूब।

दूलह, दूल्हा—पु० देखो 'दुलहा'।

दूलित—वि० हिलाया हुआ, दोलायमान (प्रि० १६५)।

दूषण, दूषन—पु० दोष, अवगुण। एक राक्षसका नाम।

दूषणीय,-नीय—वि० दोष देखने योग्य। [ संहारक।

दूषना, दूसना—सक्रि० दोष लगाना।

दूषित—वि० दोषयुक्त, जिसमें कोई खराबी हो, बुरा।

दूसर, दूसरा—वि० अन्य, अपर। पहिलेके बादका, [ द्वितीय।

दूहना—सक्रि० दुहना ( कलस ३२२ )।

दूहनी—स्त्री० दूध दुहनेका पात्र।

दूहा—पु० दोहा नामक छन्द।

दृक्पात—पु० दृष्टिपात। नज़र डालना।

दृगंचल—पु० पलक ( राम० २१७ )।

दृग—पु० नेत्र, लोचन। दृष्टि।

दृगमिचाव—पु० आँखमिचौनीका खेल।

दृगोचर—वि० आँखसे दिखायी देनेवाला।

दृढ़—वि० पक्का, ठोस, स्थायी, हृष्टपुष्ट, प्रगाढ़, निर्भीक।

दृढ़ता—स्त्री०, दृढ़त्व—पु० मजबूती, पक्कापन, काठिन्य स्थिरता।

दृढ़प्रतिज्ञ—वि० अपनी प्रतिज्ञापर डटा रहनेवाला।

दृढ़मुष्टि—वि० मुट्ठीमें दृढ़तासे पकड़नेवाला, कञ्जूस।

दृढ़ाई—स्त्री० दृढ़ता, स्थिरता, मजबूती।

दृढ़ाना—सक्रि० पक्का करना, पुष्ट करना ( उदे० 'जोरना' )। अक्रि० पक्का होना, स्थिर होना।

दृप्त—वि० जिसे दर्प हो, गर्वित।

दृश्य—पु० देखनेकी वस्तु, नाटक, नाटकका अंश। वि० दर्शनीय, सुन्दर, जो देखा जा सके।

दृश्यमान—वि० जो देख पड़ता हो। दर्शनीय।

दृष्टकूट—पु० देखो 'दृष्टिकूट'।

दृष्टमान—वि० व्यक्त, प्रकट।

दृष्टव्य—वि० दर्शनीय, देखने योग्य।

दृष्टांत—पु० उदाहरण, एक अलंकार।

दृष्टि—स्त्री० देखनेकी शक्ति। नज़र। नेत्र। अनुमान। बुद्धि, समझ। परख।—पड़ना=दिखायी देना।—पसारना=नज़र दौड़ाना 'दसहु दिशा तन दृष्टि पसारी।' सूबे० २१४।—बिछाना=उत्कण्ठाके साथ राह देखना।—भर देखना=जीभरकर देखना।—लगाना=स्थिर होकर देखना।—लाना=टकटकी बाँधना।

दृष्टिकूट, कूटक—पु० पहेली, कूट अर्थवाली कविता।

दृष्टिगोचर—वि० जो आँखसे दिखायी दे।

दृष्टिपात—पु० दृष्टि डालनेकी क्रिया या भाव, देखना।

दृष्टिबंध—पु० इन्द्रजाल, जादू। हाथकी सफाई।

दृष्टिवंत—वि० दृष्टिवाला, विद्वान्।

दे, देई—स्त्री० देवी।

देउर—पु० देवर, पतिका छोटा भाई।

देखनहारा—पु० देखनेवाला।

देखना—सक्रि० अवलोकन करना। परखना, जाँचना। खोजना। समझना।

देखभाल—स्त्री निरीक्षण, जाँच-पड़ताल, देखरेख।

देखराना, देखाना—सक्रि० दृष्टिगोचर कराना, बताना, [समझाना।

देख-रेख—स्त्री० निरीक्षण, निगरानी।

देखादेखी—स्त्री० साक्षात्कार । अनुकरण ।

देखाभाली—स्त्री० देखभाल (पूर्ण २३४) ।

देखाव-पु०, देखावट—स्त्री० ठाटबाट दिखाना, आडम्बर,

देग—पु० भोजन बनानेका बड़ा बरतन । [तड़कभड़क ।

देगची—स्त्री० छोटा देग ।

देदीप्यमान—वि० चमकता हुआ, प्रकाश फैलाता हुआ ।

देन—स्त्री० दी हुई वस्तु । देनेकी क्रिया । ऋण ।

देनदार—पु० ऋणी ।

देनलेन—पु० रुपया उधार देकर सूद कमानेका व्यवसाय ।

देनहार—वि० देनेवाला ।

देना—सक्रि० अर्पण करना, प्रदान करना, रखना, लगाना । उत्पन्न करना । मारना । पु० ऋण ।

देमान—पु० दीवान, मंत्री ।

देय—वि० देने योग्य । जो देना हो ।

देयासिनि—स्त्री० झाड़-फूक करनेवाली (विद्या० २१२) ।

देर, देरी—स्त्री० विलम्ब । समय । [ सूबे० २१२

देरानी—स्त्री० देवरानी 'नन्दनन्दन राजा राधिका देरानी ।'

देव—पु० देवता, आदरणीय व्यक्ति । बादल । देवर 'तात मातु जन सोदर जानौ । देव जेठ सब संगिहु मानौ ।' राम० १९६ । दानव 'राजहिं देख हँसा मन देवा ।' प० १९०

देवकी—स्त्री० श्रीकृष्णकी माता, जो वसुदेवकी पत्नी तथा कंसकी बहिन थीं ।—नंदन—श्रीकृष्ण ।

देवगुरु—पु० देवताओंके गुरु, बृहस्पति ।

देवढ़ी—स्त्री० पौरी, द्वार, चौखट ।

देवता—पु० देव, अमर ।

देवत्व—पु० देवपन 'देवताके गुण शक्ति आदि ।

देवदार, देवदारु—पु० एक ऊँचा पेड़ तथा उसकी लकड़ी ।

देवदासी—स्त्री० मन्दिरोंमें नृत्य करनेवाली दासी, वेश्या ।

देवदेव—पु० देवताओंके राजा, इन्द्र ।

देवधुनी,-नदी—स्त्री० गंगा नदी ।

देवनागरी—स्त्री० वह लिपि जिसमें संस्कृत या हिन्दी

देवनिम्नगा—स्त्री० गंगा । [ लिखी जाती है ।

देवपुर-पु०,-पुरी—स्त्री० अमरावती ।

देवभाषा—स्त्री० संस्कृत भाषा ।

देवयानी—स्त्री० शुक्राचार्यकी पुत्री ।

देवयुग—पु० सत्ययुग ।

देवर—पु० पतिका छोटा भाई ( उदे० 'कुवत' ) ।

देवरा—पु० छोटा देवता । 'पुरुष पूजे देवरा तिय पूजइ

देवराज—पु० इन्द्र । [ रघुनाथ ।' रहि० वि० ३३

देवरानी—स्त्री० देवरकी स्त्री । इन्द्राणी ।

देवराय—पु० देवराज, इन्द्र ( सूबे० २९४ ) ।

देवर्षि—पु० देवताओंमें ऋषि (नारद, भृगु इ०) ।

देवल—पु० देवालय । पुजारी । देवर ।

देवलोक—पु० अमर-लोक, स्वर्ग ।

देववाणी—स्त्री० संस्कृत भाषा । आकाशवाणी ।

देवव्रत—पु० भीष्म पितामह ।

देवहरा—पु० मन्दिर ।

देवांगना—स्त्री० देवताकी स्त्री, देवबाला, अप्सरा ।

देवान—पु० दीवान, मंत्री । दरबार, राजसभा ।

देवाना—वि० पागल ( सूबे० १९० ) ।

देवारी, देवाली—स्त्री० दीपावली ।

देवालय—पु० मन्दिर । स्वर्ग ।

देवाला—पु० देवालय । दिवाला ।

देवी—स्त्री० देव पत्नी । दुर्गा, भवानी । राजमहिषी । शीलवती महिलाओंके लिए आदरसूचक शब्द ।

देवेश्वर—पु० इन्द्र ।

देवै—स्त्री० देवकी ( कबीर २४२ ) ।

देवोत्तर—पु० देवताके निमित्त अलग किया हुआ धन ।

देवोत्थान—पु० विष्णुका शेष-शय्यापरसे उठना ।

देवोद्यान—पु० देव-कानन—नंदनबन, चैत्ररथ, आदि ।

देश, देस—पु० मुल्क, जनपद, राष्ट्र । स्थान ।

देशज—वि० देशमें उत्पन्न । पु० हिन्दीके वे शब्द जो संस्कृतादि भाषाओंसे न निकले हों, वरन् जिनकी उत्पत्ति प्रान्तीय बोलियोंसे हुई हो ।

देशनिकाला—पु० देशसे बाहर भेज देनेकी सज़ा ।

देशभाषा—स्त्री० किसी देश या प्रान्त-विशेषकी भाषा ।

देशांतर—पु० अन्य देश । किसी मानी हुई मध्य रेखासे पूर्व या पश्चिमकी दूरी ।

देशाटन—पु० देश-भ्रमण, देशोंका पर्यटन ।

देशी, देसी—वि० देश सम्बन्धी, स्वदेशमें उत्पन्न या बना

देसवाल—वि० अपने देशका ( व्यक्ति ) । [ हुआ ।

देसावर—पु० अपर देश, विदेश ।

देसावरी—वि० दूसरे देशसे आया हुआ, बाहरी ।

देह—स्त्री० शरीर । जीवन ।—छोड़ना = मरना ।

देहकान—पु० कृषक । देहाती, गँवार ।
देहत्याग—पु० शरीरान्त, मृत्यु ।
देहधारी—पु० शरीर धारण करनेवाला, प्राणी ।
देहयात्रा—स्त्री० शरीररक्षाका साधन, भोजनादि । मृत्यु ।
देहरा—पु० देह । मन्दिर, देवालय 'कबीर दुनिया देहरे सीस नवावन जाय ।' साखी १८१, 'दस द्वारेका देहरा तामें जोति पिछान ।' साखी १८१
देहरि, देहरी, देहली—स्त्री० द्वारकी चौखटकी नीचेवाली लकड़ी ( उदे० 'डलंघना' ) ।
देहरी (ली) दीपक—पु० एक अलंकार । एक न्याय ।
देहवंत, देहवान्—वि० जिसके शरीर हो । पु० शरीर-वान् व्यक्ति, जीवधारी ।
देहात—पु०, स्त्री० गाँव, गँवई । [ ❀ सम्बन्धी ।
देहाती—पु० देहातका रहनेवाला । ग्रामीण । वि० देहात❀
देहात्मवाद—पु० शरीरको ही आत्मा माननेका सिद्धांत ।
देही—स्त्री० शरीर । पु० शरीरी, जीवात्मा ।
दैउ—पु० आकाश 'जानौ दैउ तड़पि घन गाजा ।' प० २४२ । देखो 'दैव' । दैउ दैउ करके = किसीप्रकार 'दैउ दैउकै सो ऋतु गँवाई ।' प० ८६
दैर्घ्य—_० लम्बाई ।
दैत्य— ० असुर, अनाचारी ।
दैत्यारि—पु० विष्णु । इन्द्र ।
दैनंदिन—क्रिवि० प्रति दिन । वि० प्रति दिनका ।
दैनंदिनी—स्त्री० डायरी, रोज़नामचा ।
दैन—पु० दैन्य, दीनता । स्त्री० देनेकी क्रिया, दी हुई वस्तु । वि० देनेवाला, यथा—सुखदैन ।
दैनिक—वि० प्रतिदिनका, रोजाना ।
दैन्य—पु० दीनता, नम्रता, कातरता, व्याकुलता ।
दैयत—पु० दैत्य, राक्षस 'है राकस दशशीशको दैयत बाहु हजार ।' राम० ६५
दैया—पु० देव । आश्चर्य या दुःखसूचक शब्द 'जु चंदा ते झरैं दैया अँगारे । चकोरनकी कहाँ गति कौन प्यारे ।' आनदघन । स्त्री० दाई ।
दैव—पु० भाग्य, संचित शुभाशुभ कर्म । विधाता, ईश्वर, भवितव्यता । आकाश । वि० देवसम्बन्धी ।
दैवज्ञ—पु० अदृष्ट जाननेवाला, ज्योतिषी ।
दैवप्रमाण—पु० भाग्यपर भरोसा करनेवाला, आलसी ।
दैवयोग—पु० इत्तिफाक, संयोग ।
दैववशात्, दैवात्—क्रिवि० दैवयोगसे, अकस्मात्, इत्तिफाकन ।
दैववादी—पु० आलसी, भाग्यका भरोसा करनेवाला ।
दैविक—वि० देव सम्बन्धी, देवोंका किया हुआ ।
दैवी—वि० देव सम्बन्धी, ईश्वरीय । देवकृत । आकस्मिक ।
दैहिक—वि० शारीरिक ।
दोंचना—सक्रि० दबाना, दबावमें डालना ।
दो, दोइ—वि० तीनसे एक कम, 'दुइ' ।
दोआब, दोआबा—पु० दो नदियोंके बीचका स्थल ।
दोउ—वि० दोनों ।
दोख—पु० दोष, ऐब, कलंक, दुर्गुण, अपराध । द्वेष, शत्रुता ।
दोखना—सक्रि० दोष लगाना ।
दोखी—पु० वह जो दोषयुक्त हो, अपराधी, ऐबी ।
दोगला—वि० जारसे उत्पन्न, वर्णसंकर ।
दोगा—पु० पानीमें घुला हुआ चूना । एक तरहका छपा* हुआ लिहाफ
दोगुना, दोचंद—वि० दूना ।
दोच, दोचन—स्त्री० दबाव । दुःख । असमंजस ।
दोचना—सक्रि० देखो 'दोंचना' ।
दोचित्ता—वि० जिसका चित्त ठिकाने न हो ।
दोज—स्त्री० दूइज, द्वितीया ।
दोजख, दोजग—पु० नरक ( कबीर १०५ ) ।
दोजानू—क्रिवि० घुटनोंके बल ।
दोतरफा—वि० दोनों ओरका । क्रिवि० दोनों तरफ ।
दोतल्ला—वि० दो खंडोंवाला ( मकान ) ।
दोतही—स्त्री० एक तरहकी मोटी चद्दर ।
दोदिला—दे० 'दोचित्ता' । [ * धार हो ।
दोधारा—स्त्री० एक पौधा । वि० जिसके दोनों तरफ *
दोन—पु० दो नदियों या दो पहाड़ोंके बीचका स्थान । दो नदियोंके मेलकी जगह । दो वस्तुओंका मेल या सन्धि । तिय तिथि तरुन किसोर वय पुन्य काल सम दोनु ।' बि० ११५
दोना—पु० कटोरेके आकारका पत्तोंका पात्र ।
दोनिया, दोनी—स्त्री० छोटा दोना ।
दोनों—वि० एक और दूसरा, उभय ।
दोपट्टा—दे० 'दुपट्टा' ।
दोपलिया, दोपली—वि० स्त्री० जिसमें दो पल्ले हों । स्त्री० एक तरहकी टोपी जो दो पल्लोंको ओड़कर बनायी जाती है ।
दोपहर—स्त्री० मध्याह्न ।
दोपहरिया, दोपहरी—स्त्री० मध्याह्न ।

दोपीठा—पु० एक तरफ छापनेके बाद दूसरी तरफ छापना । वि० दोनों ओर एक ही जैसा, दोरुखा ।
दोफसली—वि० दोनों फसलोंसे सम्बन्ध रखनेवाला ।
दोबल—पु० अपराध, दोष 'दोबल देत सबै मोहीको उन पठयों मैं आयो ।' सूबे० १५८ ।
दोबा—पु० दुविधा, दो स्थितियोंके बीचमें पड़ना 'मैं मरण और जीवनके दोबेमें पड़ी हूँ ।' (रत्ना० ४२) ।
दोबारा—क्रिवि० दूसरी बार, पुनः ।
दोबाला—वि० दूना ।
दोभाषिया—देखो 'दुभाषिया' ।
दोमंजिला—वि० दो खण्डोंवाला ( मकान ) ।
दोमुहाँ—वि० दो मुँहोंवाला, जो दुरङ्गी चाल चले ।
दोय—वि० दो, दोनों ।
दोयम—वि० दूसरे नम्बरका, दूसरा ।
दोरंगा—देखो 'दुरङ्गा' ।'
दोरुखा—वि० दोनों तरफ समान रङ्ग या बेल-बूटेवाला ।
दोल, दोला—पु० झूला, हिंडोला । डोली ।
दोलत्ती—दे० 'दुलत्ती' ।
दोलायमान—वि० हिलता डुलता हुआ, चञ्चल ।
दोलित—वि० दोलायमान, चञ्चल ( ज्यो० १७ ) ।
दोष—पु० बुराई, ऐब, त्रुटि, कसूर, बदनामी, कलङ्क ।
दोषन—पु० दूषण, अपराध, दोष । [ द्वेष, चिढ़ ।
दोषना—सक्रि० दोष लगाना ।
दोषा, दोसा—स्त्री० रात्रि ।
दोषाकर—पु० चन्द्रमा, निशाकर । दोषोंका समूह ।
दोषिल—वि० सदोष, दोषी ( रत्ना० ४०२ ) ।
दोषी, दोसी—पु० जिसका दोष हो, अपराधी, अभियुक्त ।
दोस—पु० देखो 'दोष' । [ वि० दोषयुक्त ।
दोसत, दोस्त—पु० मित्र ( कबीर २९ ) ।
दोसाला—वि० दो सालका, दो वर्ष-व्यापी ।
दोसूती—देखो 'दुसूती' ।
दोस्ताना—वि० मित्रता सम्बन्धी । पु० मित्रता ।
दोस्ती—स्त्री० मित्रता, स्नेह-सम्बन्ध ।
दोह—पु० द्रोह, द्वेष, वैर । दूध दुहनेका बर्तन ।
दोहगा—स्त्री० रखी हुई स्त्री, उपपत्नी ।
दोहता—पु० दौहित्र, नाती, बेटीका बेटा ।
दोहत्थड़—पु० दोनों हाथोंसे किया हुआ चपेटाघात ।
दोहद—स्त्री० गर्भिणीकी इच्छा । गर्भिणीकी मतली इ० । गर्भ । ...मुकुलित होनेके समय पौधोंमें मानी गयी तरुणियोंके पादस्पर्शादिकी इच्छा । वृक्षोंमें फलफूलादि उत्पन्न करनेका टोटका ( कर्पूर० ३१ ) । तिथि दोष या वार दोषके निवारणार्थ खाये जानेवाला पदार्थ ।
दोहन—पु० दुहनेका पात्र, या दुहनेका कार्य ।
दोहनी, दोहिनी—स्त्री० दूध दुहनेकी हाँडी, दुग्धपात्र । 'धर्यो गिरिवर दोहनीकर धरत बाँह पिराइ ।'सू० ७७
दोहर—स्त्री० दो परतोंवाली ओढ़नेकी चादर ।
दोहरना—सक्रि०—दुहराना, दोहरा करना । अक्रि० दोहरा होना ।
दोहरा—वि० दो तहोंवाला । द्विगुणित । पु० दोहा, 'सतसैयाके दोहरे जनु नावकके तीर' । बि० ४१ ( उपस्करण ) ।
सुपारी, खैर, चूना, लवंग, इलायची आदिसे बना हुआ मुखको सुवासित करनेवाला पदार्थ 'नीमसे लगा कच्चा चबूतरा । बैठा टिल्ला काट रहा या दोहरा' [ कुकुरमुत्ता ३९
दोहराना—सक्रि० देखो 'दुहराना' ।
दोहा—पु० एक प्रचलित छन्द ।
दोहाई—स्त्री० देखो 'दुहाई' । कविता ( भू० ५१ ) ।
दोहाग—पु० दुर्भाग्य । द्रोह ।
दोहित—पु० लड़कीका लड़का ।
दौं—अ० कौन जाने । तो । या, अथवा । स्त्री०देखो 'दौ', 'उभय अग्र दौ दारुकीट ज्यों शीतलताहि चहै ।' सूबे४०४
दौंकना—अक्रि० दमकना, चमकना ।
दौंचना—सक्रि० दबाकर लेना, हठ ठानकर लेना ।
दौंरी—स्त्री० देखो 'दँवरी' ।
दौ—स्त्री० दव, वनकी आग, सन्ताप 'जूझत सुभट जरत ज्यों दौ द्रुम बिनु साखा बिनु पात । सू० ४२
दौड़—स्त्री० शीघ्र गमन, धावा, चढ़ाई । वेग । पहुँच, प्रयत्नकी सीमा ।
दौड़धूप, दौड़ादौड़ी—स्त्री० बार बार आना जाना, प्रयत्न, परिश्रम, हड़बड़ी, परेशानी ।
दौड़ना—अक्रि० वेगसे चलना, धावना । फैलना ।
दौड़ान—स्त्री० दौड़नेकी क्रिया,आक्रमण,वेग,सिलसिला ।
दौड़ाना—सक्रि० द्रुत वेगसे चलाना, शीघ्रतापूर्वक यहाँसे वहाँ ले जाना । फैलाना ।
दौत्य—पु० दूतका कार्य ।
दौन—पु०दमन,विनाश । वि०दमन करनेवाला (अ० ६२)।

दौना—पु० कटोरेकी तरहका पत्तोंका बना पात्र। एक पौधा। द्रोणगिरि ( सूरा० ७१ )। सक्रि० दमन करना, दबाना।—गिरि=द्रोणाचल।
दौनाचल—पु० द्रोणाचल ( रत्ना० १७४ )।
दौर—स्त्री० द्रुतगमन, आक्रमण (भू० १६६)। भ्रमण।
दौर दौरा—पु० ज़ोर, प्रावल्य। [ प्रभाव।
दौरना—अक्रि० देखो 'दौड़ना'।
दौरा—पु० भ्रमण, फेरा। रोगका कभी कभी होनेवाला आक्रमण। बड़ी खचिया।
दौरात्म्य—पु० दुरात्माका भाव, दुर्जनता, दुष्टता।
दौरादौरी—स्त्री० देखो 'दौड़ादौड़ी'।
दौरान—पु० दौरा, पारी। सिलसिला जमानेका चक्कर,
दौराना—सक्रि० देखो 'दौड़ाना'। [ काल परिवर्त्तन।
दौरी—स्त्री० चँगेरी, छोटी टोकरी।
दौर्जन्य—पु० दुर्जनता, दुष्टता।
दौर्बल्य—पु० कमज़ोरी, क्षीणता।
दौर्भाग्य—पु० बदनसीबी, बुरी किस्मत।
दौर्मनस्य—पु० मनका खोटापन, दौर्जन्य।
दौर्वृत्य—पु० दुराचारिता, दुर्वृत्तित्व।
दौलत—स्त्री० सम्पत्ति, धन, द्रव्य।
दौलतखाना—पु० घर, रहनेकी जगह।
दौलतमंद—वि० धनवान्, श्रीमान्, धनाढ्य।
दौवारिक—पु० द्वारपाल, द्वाररक्षक।
दौहित्र—पु० दुहिता-पुत्र, नाती।
दौहृद—पु० गर्भिणीकी इच्छा, दोहद।
द्याना, द्यावना—सक्रि० दिलाना।
द्यु—पु० दिन। स्वर्ग या आकाश। अग्नि।
द्युति, द्युतिमा—स्त्री० कान्ति, प्रभा, शोभा, तेज।
द्युतिमान्—वि० जो चमकता हो, प्रकाशवान्।
द्युतिशाली—वि० द्युतिमान् ( पूर्ण ५० )
द्युपति—पु० सूर्य। इन्द्र। अकवन।
द्युमणि—पु० सूर्य। आकाश रत्न।
द्युलोक—पु० स्वर्गलोक।
द्यूत—पु० हार-जीतका एक खेल, जुआ।
द्योतक—वि० सूचक, प्रकाशक।
द्योति—स्त्री० कान्ति, प्रभा, छवि '' दामिनीकी लसनि दसनहोकी द्योति है'-ध्रुवदास
द्योस, द्यौस—पु० दिवस, दिन 'खेलन चोर-मिहीचनी आजु गई हुती पाछिले द्योसकी नाईं।' रस० ३
द्रग—पु० दृग, नेत्र 'जब दिनमनि श्रीकृष्ण द्रगनतें दूरि भये दुरि।' नन्द०
द्रम्म—पु० एक प्राचीन रजतमुद्रा।
द्रव—वि० तरल, गीला, पिघला हुआ। पु० तरल वस्तु, रस, आसव, बहाव, दौड़, वेग।
द्रवण—पु० बहने या पिघलनेकी क्रिया या भाव। बहाव।
द्रवना—अक्रि० बहना, पिघलना, ढरना, दयार्द्र होना। 'कस न दीनपर द्रवहु उमावर।' विन० ७३
द्रविड़—पु० एक देश या वहाँका निवासी।
द्रविण—पु० द्रव्य, धन, शक्ति, पराक्रम, इच्छा।
द्रवीभूत—वि० जो द्रव होगया हो, पिघला हुआ, दयार्द्र।
द्रव्य—पु० धन। सामग्री। पदार्थ।
द्रष्टव्य—वि० देखने योग्य। जिसे देखना हो या जो दिखाया जानेवाला हो।
द्रष्टा—पु० देखनेवाला, दर्शक।
द्राक्षा—स्त्री० दाख, अंगूर।
द्राघिमा—स्त्री० लम्बाई।
द्राव—पु० बहने वा पिघलनेकी क्रिया।
द्रावक—वि० पिघलानेवाला, तरल या मुलायम बना देने वाला। पु० चन्द्रमणि। जार।
द्राविड़ी प्राणायाम—पु० सीधी तरह की जानेवाली बातको टेढ़े मेढ़े तरीकेसे करना।
द्रुत—वि० त्वरायुक्त, शीघ्रगामी। पिघला हुआ। द्रुतै= शीघ्रतापूर्वक 'चल्यो सँग खोजन द्रुतै अति लघु रूप बनाय।' रघु० २२२
द्रुतगामी—वि० शीघ्रतापूर्वक चलनेवाला।
द्रुतविलंबित—पु० छन्द-विशेष।
द्रुपद—पु० एक चन्द्रवंशी राजा। द्रौपदी इन्हींकी पुत्री थी।
द्रुम—पु० वृक्ष, पेड़। पारिजात वृक्ष।
द्रोण, द्रोन—पु० दोना। नौका। सोमरस रखनेका काष्ठ-पात्र। एक प्राचीन माप। कौआ। वृक्ष। द्रोणाचार्य।
द्रोणमुख—पु० एक क़िला जो चार सौ ग्रामोंके बीच होता था।
द्रोणी—स्त्री० छोटा दोना। डोंगी। कठवत। एक माप।
द्रोह—पु० वैर, दूसरेकी बुराई चाहना। [ चार्य।
द्रोही—वि० द्रोह करनेवाला। पु० दुश्मन।
द्रौपदी—स्त्री० द्रुपद राजाकी पुत्री।

द्वंद, द्वंद्व—पु० जोड़ा । प्रतिद्वन्द्वी । झगड़ा । उलझन, कष्ट । डर । रहस्य । स्त्री० दुन्दुभी । द्वंद्वयुद्ध=कुश्ती ।

द्वंदर—वि० उलझनेवाला, झगड़ा करनेवाला । पु० संसार 'कामहु क्रोधहु लोभहु मोहहु लूटत है दसहू दिसि [ 'द्वन्दर' । सुन्द० १७

द्वय—वि० दो ।

द्वयता—स्त्री० दुई, दोका होना ।

द्वादश—वि० बारह, बारहवाँ ।

द्वादशबानी—स्त्री० देखो 'बारहबानी' ।

द्वादशी—स्त्री० पक्षकी बारहवीं तिथि, बारस ।

द्वापर—पु० त्रेताके बादका युग ।

द्वार—पु० दरवाजा, मुख, छिद्र । साधन ।

द्वारचार—पु०,-पूजा—स्त्री० बारात पहुँचनेपर कन्यावालेके द्वारपर होनेवाली एक रीति ।

द्वारप, द्वारपाल—पु० रक्षक, प्रतिहार, दरबान ।

द्वारपटी—स्त्री० दरवाजेका परदा, चिक इ० ( साकेत [ २८६ ) ।

द्वारा—अ० जरियेसे, कारणसे ।

द्वारावती, द्वारिका—स्त्री० गुजरातका एक प्राचीन नगर ।

द्वारी—स्त्री० छोटा दरवाजा ।

द्विगु—वि० जिसके दो गाये हों । पु० वह कर्मधारय समास जिसके पूर्व-पदके स्थानमें कोई संख्यासूचक शब्द हो ।

द्विज—पु० वह जिसका जन्म दो बार हुआ हो । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य । पक्षी । दाँत । चन्द्रमा ।

द्विजन्मा—पु० देखो 'द्विज' वि० जिसका दो बार जन्म [ हुआ हो ।

द्विजराज—पु० देखो 'दुजराज' ।

द्विजिह्व—पु० साँप । वि० दो जीभोंवाला । चुगुलखोर, दुष्ट ।

द्विजेन्द्र, द्विजेश—पु० चन्द्रमा, श्रेष्ठ, ब्राह्मण, गरुड़ ।

द्वितीय—वि० दूसरा ।

द्विदल—पु० दो दलोंवाला अन्न, दाल ।

द्वित्व—पु० दोहरे या दो होनेका भाव ।

द्विधा—क्रिवि० दो तरहसे । दो खण्डोंमें । स्त्री० अस- [ मञ्जस ।

द्वितीया—स्त्री० पक्षकी दूसरी तिथि ।

द्विपद—वि० दो पैरोंवाला ।

द्विरद—पु० हाथी ।

द्विरागमन—पु० वधूका पति-गृहको दुबारा आना, गौना ।

द्विरेफ—पु० भौंरा ।

द्विविधा—स्त्री० देखो 'दुविधा' ।

द्विष, द्विष्—पु० शत्रु, विरोधी । वि० द्वेषी ।

द्विषत्—पु० शत्रु ( साकेत ४०४ ) ।

द्वीप—पु० टापू ।

द्वेष—पु० चिढ़, शत्रुता ।

द्वेषी—वि० जो द्वेष करे, विरोधी, विपक्षी । पु० शत्रु ।

द्वेष्टा—पु० द्वेष करनेवाला, शत्रु ।

द्वै—वि० दोनों, दो ।

द्वैज—स्त्री० दूहज ( मति० २०८ ) ।

द्वैत—पु० दोका भाव, भेदभाव, मोह, अज्ञान, भ्रम ।

द्वैतवाद—पु० ईश्वर और जीवको दो पृथक् पृथक् पदार्थ माननेवाला सिद्धान्त ।

द्वैधी भाव—पु० दिखाऊ मित्रताका बर्ताव । एकसे विग्रह, दूसरेसे सन्धि । दुविधा, भेद ।

द्वैपायन—पु० व्यासजी ।

द्वैमातुर—वि० जिसकी दो माताएँ हों । पु० गणेशजी, जरासन्ध ।

## — ध —

धंका—पु० धक्का, चोट 'गजराज सहै गजराजको धंका ।'

धंध—पु० धन्धा, झञ्झट ( वि० ९६ ) । [भू० ५३ ।

धंधक, धंधरक—पु० काम-धन्धेका जञ्जाल, दुनियाका बखेड़ा ।

धंधरकधोरी—पु० वह जो दिनरात काममें लगा रहे 'तिनमँह प्रथम रेख जग मोरी । धिक धरमध्वज धंधरकधोरी ।' रामा० ११

धँधला—पु० ढकोसला, ढोंग ।

धंधा—पु० कामकाज, व्यवसाय ।

धँधार—स्त्री० ज्वाला, झण्डाल 'विरह-धँधार जरत न बुझाई ।' प० ७७ पु० एक औज़ार ।

धंधारि, धंधारी—स्त्री० गोरखधन्धा 'सगी सबद, धँधारी करा । जरे सो ठाँव पाँव जहँ धरा ।' प०

धंधोर—पु० होली, आग, ज्वाला । [ ३०३ । ज्व,ला ।

धँवना—सक्रि० धौंकना 'विरहा पूत लोहारका धँवै हमारी देह ।' साखी ४६

धँसना—अक्रि० गड़ना, पैठना ( उदे० 'एक' )। नीचे खसकना। नष्ट होना।
धँसान-स्त्री०, धँसाव—पु० धँसनेकी क्रिया। दलदल।
धँसाना—सक्रि० घुसाना, चुभाना, पैठाना।
धउरहर—पु० देखो 'धौरहर'। [एकाएक, सहसा।
धक—स्त्री० दिल धड़कनेका शब्द। उमंग। क्रिवि०
धकधकना, धकधकाना—अक्रि०भय इत्यादिसे हृदयका धकधक करना ( उदे० 'चितौना' ), 'सकसकात तन धकधकात उर अकवकात सब ठाढ़े।' सूबे० ३५०। धधकना।···चमकना 'वस्त्र धकधका रहे' ( साकेत ४१४ )। [धुकधुकी।
धकधकी—स्त्री० हृदयकी धड़कन। गलेके नीचेका गड्ढा,
धकपक—स्त्री० हृदयकी धड़कन, भय (कविप्रि० १६९)।
धकपकाना—अक्रि० जी धड़कना, हृदय दहलना †
धकपेल—स्त्री० धकाधकी। [†, डरना।
धका—पु० धक्का, टक्कर, झोंका, आघात (विन० ६०५)।
धकाधूम—स्त्री० रेलपेल, चढ़ा-ऊपरी।
धकाना—सक्रि० जलाना, सुलगाना।
धकापेल—स्त्री० देखो 'धक्कमधक्का'।
धकारा—पु० धकधकी, धड़कन, डर, शका।
धकियाना—सक्रि० धक्का देना, ठेलना, धक्का देकर
धकेलना—सक्रि० धक्का देना। [हटाना
धकैत—वि० धक्का देनेवाला।
धक्कमधक्का—पु० रेलपेल, कसामसी।
धक्का—पु० देखो 'धका'।
धक्का-धक्की—स्त्री० धक्कमधक्का, धकापेल।
धगड़, धगड़ा—पु० उपपति, यार।
धगड़ी—स्त्री० कुलटा।
धगधागना—अक्रि० धड़कना, धकधक करना।
धगरिन—स्त्री० चमारिन, 'वसोरन' (बुन्देल०) (ग्राम० ४५,२३२)।
धगरी—स्त्री०पतिकी मुँह लगी या व्यभिचारिणी स्त्री'नित प्रति ऐसेई ढँग करै हमसो कहै धगरी।' सूबे०१११
धगा—पु० सूत्र, डोरा।
धचका—पु० धक्का, झोंका।
धज—स्त्री०सजावट, शोभा, सुन्दर चाल ढाल।···शकल सूरत 'क्या धज बना रखी है।' कर्म० ३७८
धजा—स्त्री० पताका( प० १६१ )। देखो 'धज'
धज्जी—स्त्री०कपड़े इ०का लम्बा पतला टुकड़ा। धज्जियाँ उड़ाना=दुर्गति करना, ढूँढ़ ढूँढ़कर दोष दिखलाना।
धड़ंग—वि० नंगा, उघारा।
धड़—पु०कमरके ऊपर शरीरका स्थूल भाग,पेड़का तना।
धड़क—स्त्री० धड़कन, हृदयका स्पन्दन, अन्देशा,खटका।
धड़कन—स्त्री० धकधकी, स्पन्दन।
धड़कना—अक्रि०हृदयका धकधक करना,दिलका उछलना।
धड़का—पु० धड़कन, धड़ाका। खटका, हिचक। चिड़ियोंको भगानेका पुतला।
धड़काना—सक्रि० धड़क पैदा कराना,भय उत्पन्न कराना।
धड़क्का—पु० देखो 'धड़का' धूम-धड़क्का = ठाट-बाट, बृहत् आयोजन।
धड़धड़ाना—अक्रि० धड़धड़ आवाज करना।
धड़ल्ला—पु० धड़ाका, वेगके साथ गिरनेकी आवाज़। धड़ल्लेसे, धड़ल्लेके साथ = बेरोकटोक, बेधड़क।
धड़वाई—पु० तौलनेवाला।
धड़ा—पु० बटखरा, बाट। तराजू। दल, समूह। —बाँधना = तराजूके पलड़ोंको ठीक करना। दोष लगाना। [धमाका।
धड़ाका—पु० गिरने, चलने आदिका प्रबल शब्द।
धड़ाधड़—क्रिवि० लगातार, निरन्तर, बार बार धड़ाकेके साथ।
धड़ाबन्दी—स्त्री० धड़ा बाँधनेकी क्रिया। परस्पर युद्धार्थी दो सेनाओंका अपना सैनिक बल बराबर करना।
धड़ाम—पु० कूदने या गिरनेकी जोरकी आवाज़।
धत—स्त्री० बुरी आदत।
धतकारना—सक्रि०दुतकारना, तिरस्कारपूर्वक हटाना।
धता—वि० हटा हुआ, भागा हुआ।—बताना = चलता करना, अँगूठा दिखाना, देखो 'टाल देना'।
धतूर—पु० तुरही या धूतू नामक बाजा। 'धतूरा'।
धतूरा—पु० एक पौधा, जिसके फल विषैले होते हैं।
धत्ता—पु० छन्द-विशेष।
धधक—स्त्री० आगकी लपट, आँच।
धधकना—अक्रि० लपटके साथ जलना। भड़कना।
धधकाना—सक्रि० प्रज्वलित करना।
धनंजय—पु० अग्नि। अर्जुन। चित्रक वृक्ष, इ०।
धन—पु० दौलत, सम्पत्ति। प्रेमपात्र। जोड़का चिह्न। स्त्री० स्त्री 'सूरदास सोभा क्यों पावै पिय विहीन

धन मटके ।' सू० १७

धनक—पु० धनुष । धनेच्छा ( कबीर ८९ ) ।

धनिक—पु० धनुष ( कबीर १४२ ) ।

धनकुबेर—पु० कुबेरके सदृश धनवान् मनुष्य ।

धनतेरस—स्त्री० दिवालीके पहले पड़नेवाली त्रयोदशी ।

धनद—पु० कुबेर । अग्नि । वि० धन देनेवाला ।

धनददिशा—स्त्री० उत्तर दिशा ।

धनधान्य—पु० अन्न और धन ।

धनधाम—पु० मालमत्ता । घर और सम्पत्ति ।

धनधारी,-पति—पु० धनेश, कुबेर, पूँजीपति ।

धनमान—वि० देखो 'धनवान्' ( उदे० 'गिलान' ) ।

धनवंत,-वान्—वि० श्रीमान् , धनी, धनाढ्य ।

धना—स्त्री० वधू, स्त्री, युवती । एक रागिनी । पु० ‡

धनाढ्य—वि० मालदार, अमीर । [ धनिया (बुन्देल०)।

धनाधिप—पु० कुवेर । धनवान् आदमी ।

धनि—स्त्री० युवती स्त्री (उदे० 'धनुक'), । वि० धन्य ।

धनिक—पु० धनी व्यक्ति, स्वामी । वि० धनवान् ।

धनिया स्त्री०—एक पौधा या उसके फल । स्त्री, युवती ।

धनिष्ठा—स्त्री० एक नक्षत्र ।

धनी—वि० दौलतमन्द, धनाढ्य । पु० धनवान् मनुष्य । अधिपति, पति । स्त्री० स्त्री, युवती ।

धनु, धनुक—पु० धनुष, चाप । एक राशिका नाम । 'भौंहैं स्याम धनुक जनु ताना ।' प० ४५, 'भौंह धनुक, धनि धानुक, दूसर सरि न कराइ ।' प० ४५

धनुआ—पु० रुई धुननेका औजार । धनुष ।

धनुइ—देखो 'धनुही' ।

धनुकार—पु० धनुष चलानेवाला 'भलपति बैठे भाल लेइ औ बैठे धनुकार ।' प०२५३

धनुर्द्धर—पु० तीरन्दाज ।

धनुर्द्धारी—पु० धनुष धारण करनेवाला । कमनैत, योद्धा ।

धनुर्विद्या—स्त्री० बाण चलानेकी विद्या ।

धनुर्वेद—पु० धनुर्विद्याका निरूपण करनेवाला शास्त्र ।

धनुर्वैदिक—वि० धनुर्वेद सम्बन्धी ।

धनुष, धनुस—पु० चाप या कमान ( उदे० 'चक' ) ।

धनुहाई—स्त्री० धनुषद्वारा युद्ध ।

धनुहियाँ, धनुही—स्त्री० छोटा धनुष (सू० ३०), 'यह धनुही कैसी हुती मोहि बतावो राम ।' रामरसायन

धनेश—पु० धनपति, कुवेर, विष्णु । कुंडलीमें लग्नसे द्वितीय स्थान ।

धन्ना—पु० धरना देना, किसी बातके लिए किसीके यहाँ अड़कर बैठना ।

धन्नासेठ—पु० खूब मालदार आदमी ।

धन्नी—स्त्री० बैल या घोड़ेकी एक जाति ।

धन्य—वि० प्रशस्य, भाग्यवान्, पुण्यवान् ।

धन्य धन्य—अ० साधु साधु, वाह वाह ।

धन्यवाद—पु० कृतज्ञतासूचक शब्द, साधुवाद, प्रशंसा ।

धन्या—स्त्री० नारी ।

धन्वन्तरि—पु० देवताओंके वैद्य जो आयुर्वेदके प्रवर्त्तक माने जाते हैं ।

धन्वी—वि० धनुर्धर, चतुर । पु० अर्जुन, शिव इ० ।

धप—पु० किसी भारी चीजके गिरनेकी आवाज । चपत ।

धपना—सक्रि० दौड़ना, झपटना ।

धपाना—सक्रि० दौड़ाना, घुमाना ।

धप्पा—पु० धौल, तमाचा ।

धब्बा—पु० निशान, दाग, कलंक ।

धमक—स्त्री० किसी भारी वस्तुके गिरने या चलनेकी आवाज । दहल । आघात ( उदे० 'अहरन' ) ।

धमकना—अक्रि० 'धम' से गिरना, बजना (भू०१८१)। ठहर ठहरकर पीड़ा देना । प्रहार करना, धावा करना (छत्र० ३१) । झपटना ( उदे० 'गुमकना' ) ।

धमकाना—सक्रि० भय दिखाना, डरवाना, घुड़कना ।

धमकी—स्त्री० धमकानेकी क्रिया, घुड़की, झिड़की ।

धमगरज—पु० युद्ध, उपद्रव । [(कविता २०६) ।

धमधूसर—वि० भद्दा, बेडौल ( आदमी ) । मूर्ख

धमना—सक्रि० धौंकना, हवा करना 'लकरी बढ़ई कूँ गहि छीलें खाल सु बैठी धमै लुहार ।' सुन्द० ८९

धमनी—स्त्री० रक्तवाहिनी नाड़ी ।

धमसा—पु० नगाड़ा ।

धमाकना—देखो 'धमकना' ( ग्राम ४० ) ।

धमाका—पु० ज़ोरसे गिरनेका शब्द, धक्का । आघात, घूँसा ।

धमाचौकड़ी—स्त्री० कूद-फाँद । उपद्रव ।

धमाधम—स्त्री० पुनः पुनः प्रहार करने या गिरने आदिसे उत्पन्न धमधम आवाज़ । क्रिवि० धमधम आवाज़ करते हुए ।

धमार—स्त्री० उपद्रव, उछलकूद । कलाबाजी । पु० होलीमें गाया जानेवाला एक गीत ।

धमारी—वि० उपद्रवी । स्त्री० होलीकी क्रीड़ा 'फर फूलन सब करहिं धमारी ।' प० ८७( १६३, १७० भो ) ।

धयना—अक्रि० दौड़ना, धावा मारना 'ए सुजानके सङ्ग धए धरि धीर हैं ।' सुजा० १२३

धरंता—पु० पकड़नेवाला।

धर—पु० पहाड़। कूर्मराज। श्रीकृष्ण। धड़ (उदे० 'कमंद') शरीर 'धर धीरज क्यों धरि है।' कविप्रि० ३०३ स्त्री० धरा, पृथिवी 'धर अम्बर दिसि विदिसि बढ़े अति सायक किरन समान।' सू० ४१, (४भी)

धरक—स्त्री०, धरका—पु० धड़का, दिलकी धड़कन। खटका, शङ्का (राम० ४२०)।

धरकना—अक्रि० देखो 'धड़कना', (उदे० 'धुकधुकी')।

धरण—वि० धारण करनेवाला।

धरणि,धरणी—स्त्री० पृथिवी।

धरणिधर, धरणीधर—पु० शेषनाग, पहाड़, कछवा, [विष्णु।

धरणिसुता—स्त्री० सीता, जानकी।

धरता—पु० धारण करनेवाला। कर्ज़दार।

धरती—स्त्री० पृथिवी।

धरधर—पु० शेषनाग, पहाड़। विष्णु।

धरधरा—पु० धड़का,धकधकाहट 'करु धरि देखौ धरधरा उर कौ अजौं न जात।' बि० २६७, (छत्र० ३१)।

धरधराना—अक्रि० धड़ धड़ शब्द करना।

धरन—स्त्री० पाटन आदिका भार सँभालनेवाली लकड़ी, कड़ी। टेक। गर्भाशय। एक नस। धरती।

धरना—सक्रि० पकड़ना, रखना, थामना (उदे० 'दोहनी')। किसी स्त्रीको रखना 'व्याहीं लाख धरौं दस कुवरी अन्तहि कान्ह हमारो।' भ्र० ३९। ग्रहण करना। पु० अपनी इच्छा पूरी करानेके लिए किसीके द्वारपर या किसीके सामने हठ ठानकर और खाना पीना छोड़कर बैठ जानेकी क्रिया।

धरनी—स्त्री० पृथिवी। धरन, कड़ी। टेक '...हिये धरु चातककी धरनी'—कविता० २१०, (भ्र० २९)

धरनेत—पु० धरना देनेवाला।

धरम—पु० धर्म, मजहब, नीति। न्यायबुद्धि। कर्तव्य। सत्कर्म, पुण्य। स्वभाव। नित्य नियम। धर्मराज।

धरमसार—स्त्री० धर्मशाला। पु० सदावर्त्त 'रानी धरमसार पुनि साजा।' प० ३०३

धरपना—सक्रि० चूर्ण करना, मर्दन करना, दबाना, फाड़ना (सुसु० ११)। [जाना, डर जाना।

धरसना—सक्रि० डाँटना। दबाना। अक्रि० सहम

धरहर—स्त्री० बीच बिचाव, रक्षा, धर-पकड़। धैर्य।

धरहरना—अक्रि० 'धड़ धड़' शब्द करना।

धरहरा—पु० मीनार, धौरहर।

धरहरिया—पु० बीच-बिचाव करनेवाला 'परै बीच धरहरिया प्रेम-राज को टेक।' प० १६१। रक्षक (प० २१८)। [एक तौल।

धरा—स्त्री० धरती। संसार। गर्भाशय। पु० बटखरा

धराऊ—वि० जो विशेष समयपर काममें लानेके विचारसे हिफाजतसे रखा जाय, क़ीमती।

धराक, धराका—पु० धमाकेकी आवाज़।

धरातल—पु० पृथिवीका पृष्ठभाग, पृथिवीकी सतह।

धराधर—पु० शेषनाग। पहाड़। विष्णु। राजा '...और धराधरनको मेट्यो अहमेव है।' भू० २८

धराधीश—पु० भूपति, राजा।

धराना—सक्रि० पकड़ाना, रखाना, निश्चित कराना।

धरापुत्र—पु० पृथ्वीका पुत्र, मङ्गल।

धरासुर—पु० महीसुर, ब्राह्मण।

धराहर—पु० देखो 'धरहरा'।

धरित्री—स्त्री० धरती, पृथ्वी।

धरेजा—स्त्री० रखेली, उपपत्नी (अष्ट० ११०)।

धरेल—दे० 'धरेली'।

धरेली—स्त्री० रखी हुई स्त्री।

धरेस—पु० राजा (भू० २८)।

धरोहर—स्त्री० अमानत, थाती।

धर्त्ता—पु० धारण करनेवाला, ऊपर लेनेवाला।

धर्म—पु० किसी आचार्य या पैगम्बरद्वारा बताया गया मुक्ति पानेका विशेष मार्ग एवं ईश्वर, आत्मा स्वर्गादिके सम्बन्धमें कोई विशेष विश्वास। मजहब, पन्थ। शुभकर्म, सदाचार। नीति, कर्त्तव्य, स्वभाव, वर्ण्य या अवर्ण्यका गुण। ईमान, सचाई।

धर्मघड़ी—स्त्री० सबके देखने योग्य स्थानपर लगायी [गयी घड़ी।

धर्मज्ञ—वि० धर्मको जाननेवाला।

धर्मतः—क्रिवि० धर्मसे, धर्मकी साक्षी बनाकर।

धर्मध्वज, धर्मध्वजी—पु० धर्मका ढोंग रचनेवाला। (उदे० 'धंधरकधोरी')।

धर्मनिष्ठ—वि० धर्मपरायण, धार्मिक।

धर्मनिष्ठा—स्त्री० धर्मपरायणता, धर्ममें गहरा विश्वास।

धर्मपत्नी—स्त्री० विवाहिता स्त्री।

धर्मपुत्र—पु० युधिष्ठिर।

धर्मभीरु—वि० जो धर्मको डरता हो, धर्मपरायण।

धर्मयुद्ध—पु० न्याययुद्ध, वह युद्ध जिसमें किसी नियम-की अवहेलना न हो और न किसी तरहका अन्याय हो।
धर्मराज,-राय—पु० यमराज। युधिष्ठिर।
धर्मशाला—स्त्री० यात्रियोंके मुफ्त ठहरनेकी जगह। सत्र।
धर्मशील—वि० धर्मपरायण, धर्मात्मा, पुण्यशील।
धर्मशीलता—स्त्री० धर्माचरणका स्वभाव।
धर्मसभा—स्त्री० न्यायसभा, न्यायालय।
धर्मसारी—स्त्री० धर्मशाला (सू० २८)।
धर्मस्थ—पु० न्यायाधीश।
धर्मात्मा—वि० धर्मशील। पु० धर्मशील व्यक्ति।
धर्माधिकरण—पु० न्यायालय।
धर्माधिकारी,-ध्यक्ष—पु०धर्माधर्मका निर्णय करनेवाला, न्यायाधीश। ईसाइयोंका धार्मिक पदाधिकारी।
धर्मार्थ—क्रिवि० धर्मके लिए, पुण्य-लाभार्थ।
धर्मिष्ठ—वि० धर्मशील, सदाचारी।
धर्मी—वि० धर्मका अनुयायी, धर्मिष्ठ, पुण्यशील।
धर्षण—स्त्री०अपमान,तिरस्कार,नीचा दिखाना। सम्भोग।
धर्षणा—स्त्री० अपमान, तिरस्कार। दबा देनेकी क्रिया।
धर्षी—वि० धर्षण करनेवाला, परास्त करने या नीचा दिखाने [वाला।
धव—पु० एक जङ्गली वृक्ष। पति। पुरुष।
धवई—स्त्री० लाल रङ्गके फूलोंवाला एक वृक्ष।
धवनी—स्त्री० भाथी, धौंकनी।
धवर, धवरा—वि० धवल, सफेद।
धवरहर, धवराहर—पु० मीनार, धौराहर।
धवरी—दे० 'धौरी'।
धवल—वि० सफेद, उज्ज्वल। पु० धवर पक्षी। धव-वृक्ष। बैल (कविप्रि० ५६)।
धवलता—स्त्री० उज्ज्वलता, सफेदी।
धवलना—सक्रि० उज्ज्वल बनाना। प्रकाशयुक्त करना।
धवला—वि० सफेद। स्त्री० सफेद गाय। श्वेत वर्णवाली स्त्री।
धवलाई—स्त्री०धवलता, सफेदी, उज्ज्वलता(मुद्रा०५२)।
धवलागिरि—पु० हिमालयका एक उत्तुंग शिखर।
धवलित—वि० जो सफेद या उज्ज्वल किया गया हो।
धवली—स्त्री० सफेद गाय। बालोंका एक रोग।
धवा—पु० देखो 'धव'।
धवाना—सक्रि० दौड़ाना 'यहि विधि देखत कहत चारते जात तुरङ्ग धवाये। रघु० १२९, (२५५ भी)।
धवित्र—पु० पङ्खा।
धवीला—वि० सफेद रङ्गका, उज्ज्वल 'सुनहले, सजीले, रँगीले, छबीले' दीपशिखा ६
धस—पु० पानी इत्यादिमें घुसना, गोता।
धसक,धसकन—स्त्री० दहलने या दबनेकी क्रिया। डर।
धसकना—अक्रि० नीचेको खसकना, दब जाना। दहल उठना 'उठा धसकि जिउ औ सिर धुना।' प० १८३। ईर्ष्या करना। [नष्ट होना।
धसना—अक्रि० घुसना, पैठना। नीचेको खसकना।
धसमसाना—अक्रि० धँस जाना, जमीनमें गड़ जाना 'ऊपर जाइ गगन सिर धँसा। औ धरती तर महँ धसमसा।' प० २४६
धाँगड़—पु० जाति-विशेष। [ॐ खाना।
धाँधना—सक्रि० कोठरी आदिमें बन्द करना। ठूँसकर॰
धाँधली—स्त्री० उपद्रव। मनमानी। धोखा। जल्दबाज़ी।
धाँसना—अक्रि० घोड़े इ० का खाँसना।
धाँसी—स्त्री० घोड़ेकी खाँसी। [†(राम० १४७)
धाइ, धाई—स्त्री० दाई (राम० २४७)। धवई वृक्ष†
धाऊ—पु० सम्वादवाहक, हरकारा। 'धव' नामक वृक्ष।
धाक—स्त्री० आतङ्क (उदे०'उदभट'), दबदबा (ललित० ८३), भय। प्रसिद्धि। पु० खम्भा, आधार। भोजन।
धाकना—अक्रि० धाक जमाना। [बैल। पलास।
धागा—पु० सूत, डोरा।
धाड़—स्त्री० चिग्घाड़, ज़ोरसे रोना। झुण्ड। डाकुओंका [हमला।
धाड़स—स्त्री० ढाढ़स, तसल्ली।
धाड़ी—देखो 'ढाढ़ी' (सेवा० ११९)।
धाता, धातु—स्त्री० सोना, चाँदी आदि द्रव्य (सूबे० १८६, २२५)। शुक्र। नाड़ी 'केओ केओ कर धरि धातु विचारि।' विद्या० ७५। पु० बुद्ध या अन्य महात्माका भस्मावशेष, हड्डी इ०। तत्व। ईश्वर।
धाता—पु० ब्रह्मा, विष्णु, शिव। रक्षक।
धातुराग—पु० ईंगुर इत्यादि रङ्ग जो धातुओंसे निकलते हैं।
धातुवाद—पु० ताँबेसे सोना बनाने या रसायन बनानेका [काम। कीमियागरी।
धात्री—स्त्री०धाई,माँ। भूमि।
धात्रेयी—स्त्री० दूध पिलानेवाली, दाई।
धाधि—स्त्री० ज्वाला, लपट 'चानन देह चौगुन हो धाधि।' विद्या० २७९
धान—पु० धान्य, शालि।
धानक—पु० धानुक, कमनैत। धुनिया। धनिया।

धानपान—पु० विवाह सम्बन्धी एक रस्म ।

धाना—अक्रि० दौड़ना 'दावानल व्रज जन पर धायो ।' सूबे ९१, ( उदे० 'अम्य' ) । स्त्री० दाना, धनिया, धान । सत्तू ।

धानी—स्त्री० धान्य, भूना हुआ गेहूँ या जौ । स्थान । धनिया । हलका हरा रङ्ग । वि० हलके हरे रङ्गका ।

धानुक—पु० धनुष चलानेवाला, कमनैत ( उदे० 'धनि', 'ऊढी' ) । एक जाति ।

धानुष्क—पु० धनुर्धर, तीरन्दाज़ ।

धान्य—पु० धान,धनिया, अन्न । चार तिलके बराबर तौल।

धाप—पु० उतनी दूरी जितनी कोई दौड़कर एक साँसमें तय कर सके । सन्तोष ।

धापना—अक्रि० दौड़ना, धावना । अघाना, सन्तुष्ट होना, पूर्ण होना 'भच्छ अभच्छ अतेय पान करि कबहुँ न मनसा धापी ।' सुवि० ४५, 'बातोंके पकवानसे धापा नाहीं कोय ।' साखी ८६ । सक्रि० तृप्त करना ।

धाबा—पु० अटारी । भोजनगृह, 'बासा' ।

धाम—पु० घर, स्थान, प्रभा, देवस्थान, स्वर्ग ।

धामकधूमक—स्त्री० धूमधाम, ठाटबाट ।

धामस धूमस—स्त्री० धूमधाम,जञ्जाल (सुन्द० २६ ) ।

धामिन—पु० विषैली पूँछवाला एक लम्बा साँप ।

धाय—स्त्री० दाई, धात्री ।

धायना—अक्रि० दौड़ना 'चरन कमल बन्दों जगदीस जे गोधन सँग धाये ।' सू० ८०

धार—स्त्री० धारा, अखण्ड प्रवाह । झरना । हथियारका तेज़ किनारा । आक्रमण । तरफ, ओर 'महरि पैठत सदन भीतर छींक बाईं धार ।' सू० । सेना 'परी मुल्कपर धार अचीती । छत्र० १४२ । झुण्ड, राशि 'धूर धार नभ-मण्डल मण्ट्यो ।' छत्र० १३० पु० प्रबल वर्षा ऋण।

धारणा—स्त्री० धारण करनेकी क्रिया या भाव, मनमें धारण करने या ध्यान रखनेकी वृत्ति, बुद्धि, ख्याल, स्मृति, निश्चित मत, दृढ़ विश्वास ।

धारणिक—पु० ऋण लेनेवाला । कोठी आदि जहाँ धन जमा करते हैं । [ करना, रखना । उधार लेना ।

धारना—सक्रि० धारण करना ( सू० १०३ ) । ग्रहण

धारस—दे० 'धाड़स' ।

धारा—स्त्री० देखो 'धार' । सेनाका अगला भाग, सेना। झुण्ड । उन्नति । कीर्त्ति । लकीर । सन्तान ।

धाराधर—पु० बादल ( ललित० ७४ । तलवार ।

धारायंत्र—पु० फुहारा ।

धारावाही—वि० धाराके रूपमें चलनेवाला, लगातार ।

धारासंपात—पु० घोर वर्षा ।

धारि—स्त्री० देखो 'धार । झुण्ड, सेना (उदे०'उलहना'), 'बाटिका उजारि, अच्छ-धारि,मारि, जारि गढ़, भानु कुल-भानुको प्रतापभानु भानु सो ।' कविता० १८२

धारिणी—स्त्री० पृथिवी । सेमर । शची इ० चौदह देवस्त्रियाँ । वि० स्त्री० धारण करनेवाली ।

धारी—वि० धारण करनेवाला ऋणी । स्त्री० समूह, सेना । लकीर ।

धारीदार—वि० जिसमें धारियाँ या लकीरें हों ।

धारोष्ण—वि० तुरन्तका दुहा हुआ ( दूध ) ।

धार्त्तराष्ट्र—पु० धृतराष्ट्रका वंशज । एक तरहका हंस ।

धार्मिक—वि० धर्म सम्बन्धी । धर्मशील, पुण्यात्मा ।

धार्मिकता—स्त्री० धर्मशीलता ।

धार्य—वि० धारण करने योग्य ।

धावक—पु० हरकारा । धोबी ।

धावन—पु० धावने या दौड़नेकी क्रिया । धोनेकी क्रिया । वह जिससे कोई चीज़ धोयी जाय । हरकारा, दूत 'धावन तहाँ पठावहु, देहिं लाख दस रोक ।' प० ५१, 'सु तो हमारे कटकमें ओछो धावन एक ।' दास ११

धावना—अक्रि० देखो 'धाना' ।

धावनि—स्त्री० दौड़ । आक्रमण ।

धावरी—स्त्री० देखो 'धौरी' । वि० स्त्री० सफेद ।

धावा—पु० आक्रमण, दौड़ ।

धावित—वि० दौड़ता हुआ ।

धाह—स्त्री० चीख, उत्क्रन्दन, धाड़ ( सूबे० ८८ )

धाही—स्त्री० धात्री, धाय ।

धिंग, धिंगाई—स्त्री० उपद्रव, शरारत ।

धिंगरा—पु० मोटा ताज़ा आदमी, बदमाश, लम्पट ।

धिंगाना—अक्रि० शरारत करना, उत्पात मचाना ।

धिआ—स्त्री० लड़की, कन्या ।

धिआन—पु० ध्यान, चिन्तन, विचार ।

धिक—अ० घृणा, निन्दा आदि सूचक शब्द । लानत ।

धिकना—अक्रि० तप्त होना, गरम होना 'ओही आँच धिकै संसारा ।' प० १४७

धिकाना—सक्रि० गरम करना ।

धिक्, धिग—अ० देखो 'धिक'।
धिक्कार—स्त्री० घृणादि सूचक शब्द, लानत।
धिक्कारना—सक्रि० भला बुरा कहना, फटकारना।
धिक्कृत—वि० धिक्कारा हुआ, जो धिक्कारा गया हो।
धिय, धिया—स्त्री० लड़की, बेटी ( विद्या ३०२ )।
धिरयना, धिरवना—सक्रि० डराना, धमकाना, डाँटना 'सूर नन्द बलरामहिं धिरयो सुनि मन हरष कन्हैया।' सूबे० ६१ [अक्रि०धीमा पड़ जाना। स्थिर होना।
धिराना—सक्रि० डराना, घुड़कना ( सूबे० ११२ )।
धींग—वि० हृष्टपुष्ट, दुष्ट, पाजी। पु० हृष्टपुष्ट व्यक्ति।
धींगड़ा, धींगरा—पु० हृष्टपुष्ट मनुष्य, गुण्डा, बदमाश।
धींगरी—स्त्री० दुष्ट स्त्री, उपद्रव करनेवाली स्त्री।
धींगा—वि० दुष्ट, पाजी।
धींगाधींगी—स्त्री० उपद्रव, शरारत, बलप्रयोग, अन्धेर।
धींवर—पु० एक जाति, मल्लाह। सेवक।
धी—स्त्री० बुद्धि। मन। लड़की ( सुन्द० ५६ )।
धीजना—अक्रि० सन्तुष्ट होना। धैर्य धरना। सक्रि० अङ्गीकार करना। विश्वास करना (उदे० 'धूरे', साखी ८७) 'सुन्दर कहत ताहि धीजिए सुकौन भाँति मनको स्वभाव कछु कह्यो न परतु है।' सुन्द० ५६
धीम—वि० मन्द, हलका, नीचा, तुच्छ; निर्बल।
धीमर—पु० देखो 'धींवर'। 'मछरी दह छोड़ौ नहीं धीमर
धीमा—वि० देखो 'धीम'। [ तेरो काल।' साखी ७४
धीमान्—वि० बुद्धिमान्। पु० बृहस्पति।
धीय, धीया—स्त्री० बेटी, पुत्री 'धीयको न माय, बाप पूत न सँभारहीं।' कविता० १७७।
धीर—वि० धैर्यवान्। बलवान्। गम्भीर। विनीत। सुन्दर। धीमा। पु० धैर्य। सन्तोष।
धीरक, धीरज—पु० धैर्य, चित्तकी स्थिरता 'राजरवनि गाई व्याकुल ह्वै दै दै सुतको धीरक।' सूबि०३२
धीरता—स्त्री०चित्तकी स्थिरता, धैर्य, सब्र। [वान् हो।
धीरप्रशांत—पु०वह नायक जो कुलीन, विद्वान् और दया-
धीरललित—पु० वह नायक जो चिन्तासे रहित, कोमल स्वभाववाला और नाच आदिमें मस्त रहता हो।
धीरा—वि० धीमा। स्त्री० वह नायिका जो 'कोप जनावै व्यंग सों तजै न पति सम्मान।' जगत०
धीराधीरा—स्त्री० वह नायिका जो कुछ प्रकट और कुछ अप्रकट रूपसे पतिपर क्रोध करे।

धीरे—क्रिवि० मन्द गतिसे, मन्द स्वरसे, चुपकेसे।
धीरोदात्त—पु० वह नायक जो धीर, वीर, क्षमावान्, उदार और दर्पहीन हो। [ और अहंकारी हो।
धीरोद्धत—पु० वह नायक—जो शूरवीर, मायावी, चपल
धीर्य—पु० धैर्य, धीरज।
धीवर—पु० देखो 'धींवर'।
धुँआँ—पु० देखो 'धुआँ।'
धुँआरा—वि० धूमिल।
धुँई—स्त्री० धूनी।
धुंकार—स्त्री० गरजन। जोरसे गरजनेकी आवाज।
धुंगार—पु० छौंक, बघार।
धुंगारना—सक्रि० छौंकना। [ गयी हो।
धुंज—वि० अस्पष्ट, धुँधला। जिसकी नज़र कमज़ोर हो
धुंद, धुंध, धुंधि—स्त्री० नज़रकी कमजोरी। अँधेरा ( प० १७७ ), धुरवा धुंधि बढ़ी दसहूँ दिसि।'
धुंधका—पु० धुँआ निकलनेका छिद्र। [ सूबे० ३२८
धुंधकार—पु० अन्धेरा। धुंकार, गरजन।
धुंधर, धुंधरि—स्त्री० धुएँ, धूल आदिके कारण छाया हुआ अन्धकार 'दिसा धूरि धुन्धरि सों ढाँकी।' छत्र० १०९
धुँधराना,-लाना—अक्रि० कुछ कुछ काला या अन्धकार-युक्त होना।
धुँधला—वि० धुएँके रङ्गकी तरह, कुछ कुछ अन्धकार-
धुँधलाई—स्त्री० देखो 'धुँधलापन'। [ युक्त। स्पष्ट।
धुँधलाना—अक्रि० धुँधला हो जाना।
धुँधलापन—पु० धुँधला होनेका भाव।
धुँधली—स्त्री० अँधेरा, नजरकी कमजोरी।
धुँधाना—अक्रि० धुआँ देना ( पूर्ण १०१ )।
धुंधार—वि० धूमिल, धुआँधार ( उदे० 'झंझार' )।
धुंधुकार—पु० धुँधलापन, अँधेरा। गरजन, धुङ्कार।
धुंधुरि—स्त्री० धुएँ या धूल आदिके कारण छाया हुआ अन्धकार।
धुंधुरित—वि० जो कुछ धुँधला हो गया हो। धुँधली
धुंधुरी——दे० 'धुंधुरि'। [ दृष्टिवाला।
धुँधुवाना—अक्रि० धुआँ देना 'प्रगट धुआँ नहिं देखिये उर अन्तर धुँधुवाय।' गिरिधर
धुँधेरी—स्त्री० देखो 'धुंधुरि'।
धुअ—पु० ध्रुव। एक तारा। राजा उत्तानपादका पुत्र। पर्वत। आकाश। विष्णु। वि० अचल, दृढ़, नित्य।

धुआँ—पु० धूम्र, धूम। धज्जी, विनाश 'धुआँ देखि खर-दूपन केरा।' रामा० ३७४
धुआँकश—पु० अगिनबोट। [दूपन केरा।' रामा०३७४
धुआँधार—वि० धूममय। घोर 'करिकै समर धूआँधार धीर वीर नर'—कलस ३३०। काला। क्रि०वि० वेग के साथ। [होना।
धुआँना—अक्रि० धुएँ के कारण स्वाद इ० का खराब होना।
धुआँरा—पु० धुआँ निकलनेका छेद।
धुआँसा—वि० धुएँ से जिसका स्वाद बिगड़ गया हो। पु० छतमें जमी हुई कालिख। [पीछा।
धुकड़पुकड़—स्त्री० घबड़ाहट हिचकिचाहट, आगा-पीछा।
धुकधुकी—स्त्री० एक आभूषण, पदिक 'झमकति धुकधुकी जैसे दुलह बराती में।' रवि० २४। हृदय कलेजा 'मिलनि विलोकि भरत रघुबरकी।सुरगन सभय धुकधुकी धरकी।' रामा० ३१४। डर, धड़कन।
धुकना—अक्रि० गिर पड़ना (उदे० 'गाड़' सुजा० १५०), काँपना, नवना, झुकना 'तुलसी जिन्हे धाये झुके धरनी धर, धौर धकानिसो मेरु हले हैं।' कविता० १९५। टूट पड़ना, झपटना (कविता० २१०)।
धुकान—स्त्री० धुंकार, गरजन। गड़गड़ाहट।
धुकाना—सक्रि० गिरना। झुकाना। पटकना। धुवाँ देकर गरमी पहुँचाना (उदे० 'छपना') 'अक्रि० काँपना, भयभीत होना (भू० ३५)।
धुकार—पु० स्त्री० नगाड़े इ० के पीटे जानेकी आवाज 'होत धुकार दुन्दुभिनके अरु बजत संख सहनाई।' रघु० ११
धुकारना—सक्रि० देखो 'धुकाना'। [रघु० ११
धुज-पु०, धुजा—स्त्री० ध्वजा, झण्डा।
धुजिनी—स्त्री० सेना।
धुड़ंगी—वि० स्त्री० जो वस्त्रहीन या नग्न हो, जिसकी देहपर धूल ही धूल लगी हो।
धुतकारना—सक्रि० देखो 'दुतकारना'।
धुताई—स्त्री० धूर्तता, चालबाजी।
धुतारा—वि० धूर्त, बदमाश (दु०वै० १८९)।
धुधुकार—पु०स्त्री०,-कारी—स्त्री०गरजन, घोर शब्द।
धुन—स्त्री० लगकर काम करनेकी इच्छा, लगन। मनकी लहर, विचार। शब्द, आवाज। गानेका तर्ज।
धुनकना—सक्रि० (रुई) धुनना।
धुनकी—स्त्री० रुई धुननेका औजार, पिंजा, 'पींजन'।
धुनना—सक्रि०धुनकना,रुई साफ करना। लगातार कहते या करते जाना। मारना या पीटना 'पुनि पुनि कालनेमि सिर धुना।' रामा० ४८१, (उदे० 'कुदाव')
धुनि, धुनी—स्त्री० ध्वनि, आवाज (उदे० 'टरना')। नदी 'बहु गुन तोमें हैं धुनि अति पुनीत तो नीर।' दीन० २०३। धूनी।
धुनियाँ—पु० रुई धुननेवाला। स्त्री० धुनकी 'सोनेकी धुनिया रेसमकी है ताँत।' ग्राम० १२३
धुपना—अक्रि० धुलना।
धुपाना—सक्रि० धूप दिखाना। धूपके धुएँ से सुवासित करना (मुद्रा० ४३)।
धुपेली—स्त्री० अम्हौरी, गरमीके दिनोंमें निकलनेवाली फुन्सी।
धुमारा—वि० धूमिल, धूएँ जैसा। मटमैला। [फुन्सी।
धुमिलना—सक्रि० धूमिल बनाना 'बेहरि उदण्ड नवखण्ड धुमिलति है।' गुलाब ३२१
धुमिला—वि० धुँधला। धुएँ के रंगका।
धुरंधर—वि० भार उठानेवाला, श्रेष्ठ, प्रचण्ड। पु० वह जो भार उठाता हो।
धुर—पु० गाड़ीका धुरा। भार। गाड़ीका जूआ। मूल, आरम्भ (अ० १२) मुख्य या ऊँचा स्थान, किला 'धीर धरबी न फौज कुतुबके धुरकी।' भू० ६१। अ० ठीक, सीधे। बहुत दूर।
धुरजटी—पु० महादेवजी। [ठीक, सीधे। बहुत दूर।
धुरना—सक्रि० पीटना, बजाना। भूसेके लिए फिरसे दाँय करना।
धुरवा—पु० बादल (उदे०'गाजना')। [दाँय करना।
धुरा—पु० धुर, अक्ष। भार।
धुरियाना—सक्रि० धूलसे लपेटना, युक्तिसे ऐब छिपाना।
धुरी—स्त्री० गाड़ीकी कील, धुरा। [प्रधान, श्रेष्ठ।
धुरीण, धुरीन—वि० धुरन्धर, भार उठानेवाला। प्रधान, श्रेष्ठ।
धुरेंडी, धुलेंडी—स्त्री० चैत कृष्ण प्रतिपदाको मनाया जानेवाला हिन्दुओंका एक त्यौहार, मदनोत्सव।
धुरेटना—सक्रि० धूलसे ढँकना, धूलसे लपेटना 'ठेक जू सैल विहारी सुने तिहि गैलकी धूरिनि नैन धुरेटति।' दास १५८
धुर्रा—पु० कण, ज़र्रा। धुर्रे उड़ाना = धज्जी उड़ाना, टुकड़े टुकड़े कर डालना, नष्ट भ्रष्ट करना।
धुलना—अक्रि० धोया जाना, साफ होना, मिट जाना।
धुलवाना, धुलाना—सक्रि० पानी इ० से साफ कराना, धोनेमें प्रवृत्त करना।
धुलाई—स्त्री० धोनेका काम या उसकी मज़दूरी।

धुव—पु० देखो 'धुअ'। 'धुवतें ऊँच पेम-धुव ऊआ।' प० ५४। वि० अचल '...जीव कहा धुव धू है।' [ भू० १९
धुवाँ—पु० देखो धुआँ'।
धुवाँकश, धुवाँधार—दे० 'धुआँकश', 'धुआँधार'।
धुस्स—पु० बाँध, टीला।
धुस्सा—पु० ओढ़नेकी ऊनी ( या सूती ) मोटी चादर।
धूँध—स्त्री० अँधेरा, धुन्ध 'तीन ताप सीतल करत सघन तरुनकी धूंध।' नागरी०
धूँधर, धूँधुर—स्त्री० अँधेरा, उड़ती हुई धूलिराशि ( दीन० १३२ )। वि० धुँधला।
धूँधला—वि० देखो 'धुँधला'।
धू—पु० ध्रुवजी ( कबीर १९० )। ( उदे० 'ध्रुव' )।
धूईं—स्त्री० धूनी। [ वि० स्थिर।
धूकना—अक्रि० बढ़ना।
धूजट—पु० महादेवजी।
धूजना—अक्रि० हिलना, काँपना ( रत्ना० ५२२ )।
धूत—वि० धूर्त्त, चालबाज, छलिया (उदे० 'चबाई')। वि० जो धमकाया गया हो। थर्राता हुआ। त्यक्त। पवित्र 'धिक्! धार तुम यों अनाहूत। धो दिया श्रेष्ठ कुल धर्मधूत। रामके नहीं, कामके सूत कहलाए! तुलसीदास ४५। ..धोया हुआ, पवित्र 'प्राच्छित कै धूत ह्वै, बहुरि छबि छैहैं' रत्ना० ३७८।
धूतना—सक्रि० चालबाजी करना, छल करना, ठगना 'तुलसी रघुबर सेवकहिं सकै न कलियुग धूति।' दोहा० ११२, 'कोई फिरै नाँगे पायँ गुदरी बनाय करि देहकी दसा दिखाइ आइ लोक धूत्यो है।' सुन्द० ६६
धूताई—स्त्री० धूर्त्तता ( अ० १३८ )।
धूती—स्त्री० एक चिड़िया।
धूतुक, धूतू—पु० तुरही, नरसिंहा।
धूधू—पु० अग्निके प्रज्वलित होनेका शब्द।
धूनना—सक्रि० रुई साफ करना, पीटना। धूनी देना, [ जलाना।
धूना—पु० एक पेड़ या उसका गोंद।
धूनी—स्त्री० गुग्गुल आदिका धुआँ। साधुओंके तापनेकी आग।
धूप—स्त्री० आतप, घाम। पु० सुगन्धित द्रव्य जिसे पूजा इत्यादिके समय जलाते हैं ( प० ४२ )।
धूपघड़ी—स्त्री० धूपमें समय देखनेका यंत्र विशेष।
धूपछाँह—स्त्री० एक तरहका रंगीन कपड़ा।



धूपदान—पु०,—दानी—स्त्री० धूप रखनेका बरतन। अगियारी। [धुआँ पहुँचाना।
धूपना—अक्रि० सुगन्धित द्रव्य जलाना। सक्रि० धूपका
धूपबत्ती—स्त्री० सुगंधित मसाला लगी हुई सींक।
धूपित—वि० धूप दिया हुआ। तप्त, श्रान्त।
धूम—स्त्री० समारोह, उपद्रव, हलचल, शोर, चर्चा, प्रसिद्धि। पु० धूम्र, धुआँ। धूमकेतु। [महादेवजी।
धूमकेतन,—केतु—पु० अग्नि, पुच्छल तारा, केतु।
धूमधड़क्का—पु० ठाटबाट, विशेष आयोजन, समारोह।
धूमधाम—स्त्री० चहलपहल, ठाटबाट।
धूमपान—देखो 'धूम्रपान'।
धूमपोत—पु० धुआँकश, अगिनबोट।
धूमयोनि—पु० बादल।
धूमर, धूमरा, धूमल—वि० धुएँके सदृश काला, मटमैला, धुँधला ( सूबे० १२१ )।
धूमायमान—वि० धुएँसे पूर्ण।
धूमिल—वि० देखो 'धूमर'।
धूम्र—पु० धुआँ, एक गन्धद्रव्य। वि० धुएँके रंगका।
धूम्रपान—पु० तमाखू, बीड़ी आदि पीनेका कार्य।
धूर—स्त्री० धूल, रज। अ० ऊपर, दूर ( अ० १४२ )।
धूरजटी—पु० महादेवजी।
धूरत—वि० धूर्त्त, चालबाज।
धूरधान—पु० धुलका ढेर।
धूरधानी—स्त्री० धूलका ढेर। विनाश।
धूरा—स्त्री० धूल, चूरा, चूर्ण।
धूरि—स्त्री० धूल।
धूरे—क्रिवि० पास 'उज्जल देखि न धीजिये बग ज्यों माँड़े ध्यान। धूरे बैठि चपेटही, यों लै बूड़ै ज्ञान।' [ साखी १३८
धूर्जटि—पु० शंकरजी।
धूर्त्त—वि० चालाक, धोखेबाज।
धूर्त्तता—स्त्री० धोखेबाज़ी, चालबाज़ी, छल।
धूल, धूलि—स्त्री० गर्द, रेणु। नाचीज़।—उड़ाना=मज़ाक उड़ाना, दोष दिखाकर बदनाम करना।—फाँकना=बेकद्रीके साथ इधरसे उधर घूमते फिरना।—में मिलना=मिट्टीमें मिल जाना, नष्ट हो जाना।
धूवाँ—पु० देखो 'धुआँ'। [धूल लगा हुआ।
धूसर, धूसरा, धूसला—वि० मटमैला, धूलके रंगका।
धूसरित—वि० धूलसे मलिनीकृत, धूलसे भरा हुआ।

धूसित—वि० भरा हुआ, धूलसे मैला, धूलमें लिपटा।
धूहा—पु० टीला, ढूह।
धूक, धूग—अ० धिक् ( सू० १०६ )।
धृत—वि० पकड़ा हुआ, धारण किया हुआ।
धृतराष्ट्र—पु० दुर्योधनके पिताका नाम।
धृतलक्ष्य—वि० लक्ष्यनिष्ठ, उद्देश्यमें लगा हुआ।
धृति—स्त्री० धैर्य, दृढ़ता।
धृष्ट—वि० ढीठ, निर्लज्ज। (नायक) जो निस्संकोच होकर अपराध करे और उसे छिपानेका प्रयत्न न करे।
धृष्णु—वि० साहसी। ढीठ, निर्लज्ज।
धृष्णुता—स्त्री०,—त्व,—पु० धृष्टता, ढिठाई। साहस।
धेन, धेनु—स्त्री० गाय।
धेनुमुख—पु० गोमुख नामक बाजा।
धेय—वि० धारण करने योग्य। ग्राह्य, पोष्य।
धेरिया—स्त्री० बेटी, लड़की 'बड़ेरे बापनकी धेरिया बड़े बोल बोलै।' ग्राम्य० ५७
धेलचा, धेला—पु० अधेला, आधा पैसा।
धेली—स्त्री० अठन्नी।
धैना—स्त्री० काम धन्धा। स्वभाव, आदत 'कह गिरिधर कविराय फुहरके याही धैना। कजरौटा बरु होइ लुकाठन आँजे नैना।' गिरिधर
धैर्य—पु० धीरता, दृढ़ता।
धोंकना—सक्रि० प्रज्वलित करनेके लिए हवा करना। ऊपर डालना। अक्रि० काँपना 'ऋद्धि कँपी नवनिद्धि कँपी सब सिद्धि कँपी ब्रह्मनायक धोंको।' सुदामा० कवौ०
धोधा—पु० लोंदा, बेडौल शरीर।
धोई—पु० राजगीर।
धोकड़ा—वि० मोटा ताज़ा।
धोका, धोखा—पु० छल, दगा, भ्रम, भूल 'तुलसी जाके बदनते धोखेउ निकसत राम।' वैराग्य सन्दीपनी। वह वस्तु जिससे धोखा या भ्रम हो। अन्यथा या अनिष्ट होनेकी सम्भावना। चिड़ियोंको डरानेके लिए खेतमें रखा गया पुतला। धोखा लगाना = त्रुटि करना, कसर करना 'भाइहु लावहु धोख जनि आजु काज बड़ मोहि।' रामा० २९०। धोखेकी टट्टी = वह टट्टी जिसकी आड़में शिकार खेला जाय। भ्रममें डालनेवाली या अविश्वसनीय बात।
धोखेबाज़—वि० धोखा देनेवाला, धूर्त, छलिया।
धोटा—पु० बालक, लड़का, ढोटा।
धोती—स्त्री० कमरसे घुटनोंके नीचे तक पहिननेका वस्त्र। योगकी एक क्रिया।
धोना—सक्रि० साफ करना, प्रक्षालित करना, मिटाना।
धोप—स्त्री० तलवार 'सनमुख पिले धोप कर काढ़े।' छत्र० १३३, ( भू० १२० )
धोव—पु० कपड़ेका धोया जाना, धुलाई, धुलावट।
धोवन, धोबिन—स्त्री० धोबीकी स्त्री। कपड़े धोनेवाली स्त्री। एक चिड़िया।
धोबी—पु० कपड़ा धोनेवाला, रजक। [ कबीर २१६
धोम—पु० धूम्र, धूआँ 'इक धोम घोटि तन हूँहि श्याम।'
धोर—स्त्री० निकटता। धार, किनारा।
धोरी—पु० बैल। भार उठानेवाला। मुखिया, श्रेष्ठ व्यक्ति
धोरे—क्रिवि० समीप, पास। [ ( गीता०३२८ )।
धोवत—पु० धोबी 'हँसे श्याम मुख हेरिकै धोवत गरवानो।' सूबे० २८२ [ मुखजोति।' वि० १९७
धोवती—स्त्री० धोती 'टटकी धोई धोवती, चटकीली
धोवन, धोवा—पु० वह पानी जिससे कोई वस्तु धोयी गयी हो। जल।
धोवना—सक्रि० धोना, साफ करना। [ साफ होना।
धोवाना—सक्रि० धुलाना, साफ कराना। अक्रि०
धौं—अ० या, कि। मालूम नहीं, कौन जाने। भला, कहो तो, तो। 'अति किधौं रुचिर प्रताप पावक प्रगट सुरपुरको चली।' राम० २३
धौंक—स्त्री० धौंकनेकी क्रिया, गरम हवा। [ देना।
धौंकना—सक्रि० आग दहकानेके लिए हवाका झोंक
धौंकनी, धौंकी—स्त्री० भाथी। आग तेज़ करनेके लिए सुनारोंकी बाँस इत्यादिकी नली।
धौंज—स्त्री० व्याकुलता, घबराहट। दौड़-धूप 'एक कौं धौंज, एक कहै काढ़ो सौंज ..' कविता० १७८
धौंजना—अक्रि० धावना, दौड़ धूप करना। सक्रि० पाँवसे रौंदना, कुचलना। [उड़दकी दालका पिसान।
धौंस—स्त्री० घुड़की, धमकी, भभकी, भुलावा, धाक।
धौंसना—सक्रि० डपटना, घुड़की देना, ( सूबे० १५७)। पीटना, दबाना, दण्ड देना।
धौंसा—पु० डङ्का, नगाड़ा 'प्रकट युद्धके धौंसा बाजे।' छत्र० ४३, ( भू० १७२ )। सामर्थ्य।
धौंसिया—पु० धौंस जमानेवाला, झाँसा-पट्टी देनेवाला,

डङ्का या नगाड़ा बजानेवाला।
धौत—वि० धोया हुआ, नहाया हुआ, साफ।
धौति—स्त्री० हठयोगकी एक क्रिया।
धौर—वि० सफेद (साखी ७७)। पु० एक पक्षी। सफेद कबूतर। धौरधका=आघात ( उदे० 'धुकना' )।
धौरहर—पु० बुर्ज, धरहरा, ऊँची अटारी 'सरद-वारिधरसे लसत अमल धौरहर धौल।' ललित० १४
धौरा—वि० सफेद ( उदे० 'अवटना' )। उजला। पु० सफेद बैल।
धौराहर—पु० देखो 'धौरहर'। सात खण्ड धौराहर [साजा।' प० २०
धौरिय—पु० बैल।
धौरी—स्त्री० सफेद गाय 'धौरीको पय पान न करिहौं बेनी सिर न गुथैहौं।' सू० ( ककौ० १७० )
धौरे—क्रिवि० देखो 'धोरे'।
धौल—वि० सफेद ( उदे० 'धौरहर' )। पु० धौराहर। एक पेड़। स्त्री० तमाचा, चपत। हानि।
धौलधक्कड़,-धपड़—पु० उपद्रव, दङ्गा।
धौलहर, धौलहरा—पु० देखो 'धौरहर', ( साखी ३६ [उदे० 'छिनभंग' )।
धौला—दे० धौरा।
धौलाई—स्त्री० सफेदी, उज्ज्वलता।
ध्याता—पु० ध्यान करनेवाला, विचार करनेवाला।
ध्यान—पु० मनमें लानेकी क्रिया। मनन, ख्याल, चेत, बुद्धि, समझ। स्मृति, धारणा। चित्तकी एकाग्रता।
ध्यानना, ध्याना—सक्रि० ध्यान करना, चिन्तन करना, ( उदे० 'आउ' )। स्मरण करना।
ध्यानी—वि० ध्यान लगानेवाला, समाधिस्थ।
ध्येय—वि० ध्यान करने योग्य। पु० लक्ष्य, अभीष्ट।
ध्येयी—वि० ध्येय रखनेवाला, लक्ष्य रखनेवाला।
ध्रुपद—पु० एक तरहका गीत।
ध्रुव—पु०, वि० देखो 'धुअ'।
ध्रुवता—स्त्री० स्थिरता, अटलता, दृढ़ निश्चय।
ध्रुवतारा—पु० एक तारा विशेष। अटल लक्ष्य 'अन्तमें मेरी ध्रुवतारा तुम' अनामिका ७२
ध्वंस—पु० नाश, हानि। ध्वंसित = विनाशित।
ध्वंसक—वि० विनाशक।
ध्वज—पु० झण्डा, निशान, चिह्न, घमण्ड।
ध्वजभंग—पु० नपुंसकता, नामर्दी।
ध्वजा—स्त्री० झण्डा।
ध्वजिनी—स्त्री० सेना।
ध्वनि—स्त्री० आवाज़, शब्द। लय।
ध्वनित—वि० बजाया हुआ, व्यञ्जित।
ध्वस्त—वि० नष्ट, च्युत, खण्डित, भग्न, परास्त।
ध्वंसी—वि० ध्वंस करनेवाला, नाशक।
ध्वांत—पु० अन्धकार, नरकविशेष।
ध्वांतचर—पु० निशाचर, राक्षस।
ध्वान—पु० शब्द।

---

# न

नंग—वि० नङ्गा, लुच्चा। पु० नङ्गापन, ओछापन।
नंगधड़ंग—वि० बिलकुल नङ्गा।
नंगा—वि० वस्त्ररहित, खुला हुआ। लुच्चा, बदमाश।
नंगाझोली—स्त्री० जामा तलाशी।
नंगाबूचा—वि० कङ्गाल।
नँगियाना—सक्रि० नङ्गा करना। सब कुछ छीन लेना।
नंग्यावना—सक्रि० नङ्गा करना ( कवि प्रि० १६० )।
नंद—पु० आनन्द। पुत्र। विष्णु। एक तरहका मृदङ्ग। एक गोप। स्त्री० ननद 'निसिदिन निन्दति नन्द है, छिन छिन सासु रिसाति।' मति० १८७।
नंदकिशोर,-कुमार—पु० श्रीकृष्ण।
नंदनंद,-नंदन—पु० श्रीकृष्ण।
नंदन—वि० आनन्द देनेवाला। पु० पुत्र। इन्द्रकानन। विष्णु। शिव। चन्दन। मेघ। अस्त्रविशेष।
नंदन-वन—पु० इन्द्रका उपवन।
नंदना—अक्रि० आनन्दित होना 'सुक्रै नन्दै, बुध भये नाचै।' प० १८७ [गौरी, ननद।
नंदा—स्त्री० आनन्द देनेवाली। एक कामधेनु, सम्पत्ति,
नंदित—वि० प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित। बजता हुआ।
नंदिन, नंदिनी—स्त्री० बेटी, पुत्री। गङ्गा। उमा। ननद।

नंदी—पु० वटवृक्ष । धव वृक्ष । शिवगण । वृषोत्सर्ग करके छोड़ा हुआ बैल, शिवजीका बैल ।
नंदीमुख—पु० देखो 'नांदीमुख', 'नन्दीमुख सराध करि जात करम सब कीन्ह ।' रामा० १०८
नंदीश्वर—पु० शिवजी । व्रजका एक पवित्र स्थान ( व्रज० ३३२ ) । शिवजीका बैल ।
नंदेऊ, नंदोई, नंदोसी—पु० ननदका पति ।
नंबर—पु० संख्या, गिनती । छत्तीस इञ्चका नाप ।
नंबरदार—पु० एक तरहका जमींदार ।
नंबरवार—क्रिवि० सिलसिलेसे, यथाक्रम ।
नंबरी—वि० नम्बरवाला । नामी, प्रसिद्ध ।
नंस—वि० नष्ट ।
न—अ० नहीं । मत । या नहीं ?
नइहर—पु० मायका, पीहर ।
नई—स्त्री० नदी । वि० नीतिवान् , नयी ।
नउँजी—स्त्री० लीची फल ।
नउ—वि० नया । आठ और एक ।
नउआ—पु० नाई ( सू० १७९ ) ।
नउका—स्त्री० नौका, नाव ।
नउज—अ० देखो 'नौज' ( ग्राम० २९६ ) ।
नउत—वि० नत, नवा हुआ, नीचेकी तरफ झुका हुआ ।
नउलि—वि० नया, ताज़ा ।
नओढ़—स्त्री० नवविवाहिता स्त्री, युवती स्त्री ।
नकघिसनी—स्त्री० ज़मीनपर नाक रगड़ना, अत्यधिक नम्रता प्रकट करना । [ *आती हैं ।
नकछिकनी—स्त्री०एक घास जिसके फूल सूँघनेसे छींकें*
नकटा—वि० जिसकी नाक कटी हो, बेशर्म । पु० वह
नकड़ा—पु० नाकका एक रोग । [जिसकी नाक कटी हो ।
नकद—पु० कलदार रुपया, सिक्केके रूपमें धन । वि० प्रस्तुत । क्रिवि० तुरन्त रुपया-पैसा देकर ।
नकदी—स्त्री० रोकड़, रुपया पैसा ।
नकना—सक्रि० लाँघना, चलना, छोड़ना । नाकमें दम करना । अक्रि० नाकों दम आना । लाँघा जाना ।
नकफूल—पु० नाककी कील ।
नकब—स्त्री० चोरीके लिए दीवारमें किया गया छेद, सेंध ।
नक़ल—स्त्री० प्रतिलिपि, अनुकृति, अनुकरण, स्वांग ।
नक़लनवीस—पु० वह जिसका पेशा मिसिल इत्यादिकी नकल करना हो ।

नकलबही—स्त्री० नकल या प्रतिलिपि इ० की बही ।
नक़ली—वि० झूठा, बनावटी ।
नकवानी—स्त्री० नाकमें दम, परेशानी 'तिन रङ्कनको नाक सँवारत हौं आयो नकवानी ।' विन० ७१
नकशा,नकसा—दे० 'नक्शा' ।
नकसीर—स्त्री० नाकसे आप ही आप रुधिर बहना ।
नकाना—सक्रि० नाकों दम करना । लँघवाना ( छत्र० १४५ ) । अक्रि० नाकमें दम आना, तङ्ग होना ।
नक़ाब—पु० मुखका आवरण ।
नकार—पु० इनकार ।
नकारना—अक्रि० इनकार करना, नामञ्जूर करना ।
नकारा—पु० नगाड़ा । वि० निकम्मा, निरुपयोगी ( कलस २९९ ) ।
नकाशना,नकासना—सक्रि० बेल-बूटे खोदकर बनाना ।
नकाशी, नकाशीदार—दे० 'नक्काशी' ; 'नक्काशीदार' ।
नकियाना—सक्रि० नाकों दम करना । अक्रि० नाकों दम होना । नाकसे बोलना । [ ( सू० १० ) ।
नकीब—पु० एक तरहका चारण । यश बखाननेवाला
नकुल—पु० नेवला । अर्जुनके एक भाईका नाम । पुत्र । वि० कुलहीन । [ रस्सी । बाग ।
नकेल—स्त्री० ऊँट या भालूकी नाकमें पहनायी हुई
नक्का—पु० नाका, सुईका छेद ।
नक्कार—पु० अपमान, तिरस्कार ।
नक्कारखाना—पु० नौबतखाना ।
नक्कारा—पु० नगाड़ा, डुगडुगी ।
नक्काल—पु० भांड़, नक़ल करनेवाला ।
नक्काश—पु० बेलबूटे इ० खोदनेवाला ।
नक्काशी—स्त्री० धातु,पत्थर आदिपर बेलबूटे इ० खोदनेका काम । खोदकर बनाये गये बेलबूटे इ० ।
नक्काशीदार—वि० जिसपर बेलबूटे इ० खुदे हों ।
नक्कीमूठ—स्त्री० कौड़ियोंसे खेला जानेवाला एक खेल ।
नक्कू—वि० बड़ी नाकवाला, शानवाला । सर्वसाधारणसे उलटा काम करनेवाला ।
नक्त—पु० सन्ध्या या रात्रिका समय । एक व्रत ।
नक्तचर—पु० निशाचर, उल्लू, शिवजी ।
नक्र—पु० घड़ियाल, मगर । नाक ।
नक्शा—पु० चित्र, आकृति, गठन ।
नक्शानवीस—पु० नक्शा बनानेवाला ।

नक्षत्र—पु० तारोंका समूह ।
नक्षत्रनाथ,-पति,-राज—पु० चन्द्रमा ।
नख—पु० नाखून, नह । स्त्री० एक तरहका सूत ।
नखक्षत, नखच्छत—पु० नाखून गड़नेका चिह्न ।
नखछोलिया—पु० नखक्षत ।
नखत, नखतर—पु० नक्षत्र, तारा । तारोंका समूह ( उदे० 'अंधर', 'उअना' ) ।
नखतराज,-राय—पु० चन्द्रमा ।
नखतेस—पु० चन्द्रमा 'लसत सरस सिन्धुरवदन भालथली नखतेस ।' रतन० १
नखत्र—पु० नक्षत्र ( गुलाब ५६४ ) ।
नखना—अक्रि० लाँघा जाना 'जाके विलोकत वेनी प्रवीन कहै दुति मेनकाहूकी नखी है ।' नव० १४ । सक्रि० लाँघना । ध्वस्त करना । 'मउ फरकाबाद खोदिकै नक्खिहौ-सुजा० ६५
नखबान—पु० नाखून ।
नखर—पु० नख, पञ्जा, प्राचीनकालका एक अस्त्र ।
नखरा—पु० हावभाव, चोचला ।
नखरेख—स्त्री० नखक्षत ।
नखरेबाज़—वि० नखरा करनेवाला, चोचलेबाज़ ।
नखरौट—स्त्री० नखक्षत ।
नखशिख—पु० नखसे शिखतकके अङ्ग, सर्वाङ्ग । [ सर्वाङ्ग वर्णन ।
नखायुध—पु० शेर, चीता, इ० । नृसिंह (मति० २३०)।
नख़ास—पु० पशुओंका बाज़ार ।
नखियाना—सक्रि० नखसे खरोंचना ।
नखी—पु० शेर, चीता, कुत्ता ।
नखेद—पु० देखो 'निषेध' ( कबीर १९६ ) ।
नखोटना—सक्रि० देखो 'नखियाना' ।
नग—पु० नगीना, शीशे आदिका टुकड़ा । संख्या, थान । पहाड़ । पेड़ । सूर्य । सर्प । वि० न चलनेवाला, [ अचल ।
नगज—वि० पर्वतसे उत्पन्न । पु० हाथी ।
नगण—पु० एक गण जिसके तीनों अक्षर लघु हों ।
नगण्य—वि० जो गिनने योग्य न हो, तुच्छ, उपेक्षणीय ।
नगद—दे० 'नक़द' ।
नगधर, नगधरन—पु० गिरिधारी, श्रीकृष्ण ।
नगन—वि० नङ्गा, ( भू० १५३ ) ।
नगनी—स्त्री० कम उमरकी लड़की जो शरीरका ऊपरी भाग खुला रख सकती हो । पुत्री ।वस्त्रहीन स्त्री ।
नगपति—पु० हिमालय, सुमेरु । शिव । चन्द्रमा ।
नगफनियाँ—देखो 'नागफनी', ( गीता० २९२ ) ।
नगमा—पु० राग, गाना ( सेवा० १८९ ) ।
नगर—पु० पुर, शहर ।
नगरनारि—स्त्री० वीराङ्गना, वेश्या ।
नगरपाल—पु० नगररक्षक ।
नगरवासी, नगरहा—पु० नागरिक, शहरमें रहनेवाला ।
नगराई—स्त्री० नागरिकता, चतुराई ।
नगराध्यक्ष—पु० नगरपाल, नगररक्षक ।
नगरी—स्त्री० नगर । पु० नागरिक ।
नगवासी—स्त्री० नागपाश 'रोवँ रोवँ परे, फंद नगवासी ।' प० ४३
नगाड़ा, नगारा—पु० डुगडुगी, डङ्का ।
नगाधिप—पु० हिमालय या सुमेरु पर्वत ।
नगिचाना—अक्रि० पास आना ( कलस ३६७ ) ।
नगी—स्त्री० नगीना, रत्न । पहाड़ी स्त्री । पर्वत-कन्या, पार्वती ।
नगीच—क्रिवि० निकट, नजदीक ( रघु० २१८ ) ।
नगीना—पु० शीशे, पत्थर आदिका टुकड़ा, रत्न ।
नगेंद्र, नगेश—पु० हिमालय ।
नगेसरि—पु० एक पेड़, नागकेशर ।
नग्न—वि० नङ्गा, वस्त्रहीन ।
नग़्मा—पु० गाना ।
नग्र—पु० नगर, पुर ( सुजा० ११ ) ।
नग्रोध—पु० वटका पेड़ ।
नघना—सक्रि० नाँघना, पार करना ।
नघाना—सक्रि० पार कराना ।
नचना—अक्रि० नृत्य कराना । इधर उधर घूमना (उदे० 'कुवाक' ) । वि० नाचनेवाला ।
नचनि—स्त्री० नाच ।
नचनिया, नचवैया—पु०नाचनेवाला (उदे०'उड़सना')।
नचाना—सक्रि० नृत्य कराना, इधर उधर घुमाना या दौड़ाना, हैरान करना ।
नचीला—वि० चञ्चल ( उदे० 'छकीला' ) ।
नचौंहा—वि० नाचनेमें प्रवृत्त, चञ्चल 'बिहँसौंहेसे बदनमैं लसत नचौंहे नैन ।' मति० १७४
नछत्र—पु० तारोंका समूह ।
नछत्री—वि० भाग्यवान् ।
नज़दीक—क्रिवि० पास, समीप ।

नज़दीकी—वि० निकटका ('नज़दीकी रिश्तेदार)।

नज़र—स्त्री० दृष्टि, चितवन। खयाल, कृपादृष्टि। कुदृष्टि, दृष्टिका कुप्रभाव। उपहार।

नजरना—सक्रि० देखना। नज़र लगाना। [इन्द्रजाल।

नज़रबंद—वि० पहरे या निगरानीमें रखा हुआ। पु०

नज़रबंदी—स्त्री० कड़ी निगरानीमें रखे जानेकी सज़ा। पहरेमें रखे जानेकी स्थिति। इन्द्रजाल, जादूगरी।

नज़रबाग—पु० बड़े मकान या महलके साथ ही लगा हुआ उद्यान। [देना।

नज़रानना—सक्रि० नज़र लगाना। नज़र करना, भेंटमें

नज़राना—पु० उपहार। सक्रि० नज़र लगाना। अक्रि०

नज़ला—पु० रोग-विशेष। जुकाम। [नज़र लगना।

नज़ाकत—स्त्री० सुकुमारता।

नजात—स्त्री० मुक्ति, छुटकारा, उद्धार।

नज़ारा—पु० दृश्य, दृष्टि।

नजिकाना—अक्रि० नज़दीक पहुँचना 'जान्यो भूप मीच नजिकानी।' रघु० १९१

नजीक—क्रिवि० नज़दीक, पास (सुन्द० ८६)।

नज़ीर—स्त्री० मिसाल, उदाहरण।

नजूमी—पु० ज्योतिषी।

नजूल—पु० सरकारी ज़मीन।

नट—पु० अभिनेता, नाट्यकलामे चतुर व्यक्ति। एक जातिके लोग जो कसरतें, तमाशे आदि करके जीवन-निर्वाह करते हैं 'इतहिं उतहिं चित दुहुँनके नट लौं आवत जात।' वि० ८२

नटई—स्त्री० गला, गलेकी घण्टी।

नटखट—वि० उपद्रवी, चञ्चल, चालाक।

नटना—अक्रि० नाट्य करना, नृत्य करना 'कूजत विहग नटत कल मोरा।' रामा० १२५। पहिले स्वीकार करना, फिर नाहीं करना 'सौंह करै भौंहन हँसै, दैन कहै नटि जाय।' वि० १९५। सक्रि० नष्ट करना।

नटनि—स्त्री० नाच। अस्वीकृति। नटकी स्त्री।

नटनी—स्त्री० नट जातिकी स्त्री। नट-पत्नी।

नटवना—सक्रि० अभिनय करना, नाट्य करना 'एक ग्वालि नटवति बहु लीला'—सू० २६२

नटवर—पु० चतुर अभिनेता, श्रीकृष्ण, शिवजी।

नटवा—पु० नट (उदे० 'नटसारी')। नाटा बैल।

नटसार, नटसारा—स्त्री० नाट्यशाला, अभिनय करनेका स्थान। [—कबीर २२७

नटसारी—स्त्री० नटबाजी 'जिनि नटवै नटसारी साजी'

नटसाल—स्त्री० फाँस या काँटेका वह भाग जो टूटकर शरीरके भीतर रह जाय। तीरकी गाँसी। पीड़ा, रह रहकर होनेवाली व्यथा 'उठै सदा नटसाल लौं सौतिनके उर सालि।' बि० २५२

नटी—स्त्री० अभिनेत्री, नटकी स्त्री, नर्तकी। नट जातिकी स्त्री, वेश्या।

नटेश, नटेश्वर—पु० शङ्करजी।

नटैया—स्त्री० गला (कविता० २१३)।

नठना—सक्रि० नष्ट करना। अक्रि० नष्ट होना।

नढ़ना—सक्रि० गूँथना। कसना।

नत—वि० झुका हुआ।

नत, नतु—क्रिवि० नहीं तो 'नतु मारे जैहैं सब राजा।' रामा० ११७ (उदे० 'कुँआर।')

नतपाल—पु० प्रणतपाल, शरणागत-रक्षक 'प्रीतिरीति समुझाइबी नतपाल, कृपालुहिं परमिति पराधीनकी।' विन० ६२७ [भलि बादि बिधानी।' रामा० २३४

नतर, ननरक, नतरु—क्रिवि० नहीं तो 'नतरु बाँझ

नति—स्त्री० प्रणाम (राम० २४४, रघु० २०१)। विनय, नम्रता, झुकाव। पतन।

नतिनी—स्त्री० नातिन, बेटीकी बेटी।

नतीजा—पु० परिणाम।

नतुवा—अ० नहीं तो क्या?

नतैत—पु० नातेदार, सम्बन्धी।

नतैनी—स्त्री० सम्बन्ध, रिश्ता (उत्तर० ६२)।

नत्थी—स्त्री० एक साथ नाथने या बाँधनेकी क्रिया।

नथ—स्त्री० नाकका एक भूषण (रवि० ३७)।

नथना—अक्रि० नाथा जाना। पु० नाकका छेद, नाकका अग्रभाग। बैल इ० की नाक। [(मति०१८२)

नथनी, नथिया, नथुनी—स्त्री० छोटी नथ, बुलाक

नद—पु० बड़ी नदी। पुल्लिग नामवाली नदी।

नदना—अक्रि० नाद करना (उदे० 'गहगह')। रँभाना। आवाज़ करना, बजना।

नदान—वि० नादान, नासमझ, अल्पवयस्क।

नदारद—वि० गायब।

नदि, नदिया, नदी—स्त्री० दरिया, जल इत्यादिका प्रवाह। [प्रवाह

नदीन—पु० समुद्र, कुवेर।

नदीपति, नदीश—पु० समुद्र।

नदीश नंदिनी—स्त्री० लक्ष्मी।
नद्दना—दे० 'सदना'।
नद्ध—वि० नाथा हुआ, जुड़ा हुआ, बँधा हुआ।
नधना—अक्रि० जुटना, जुड़ना, सम्बद्ध होना।
ननंद, ननद—स्त्री० पतिकी बहिन।
ननकारना—अक्रि० अस्वीकार करना।
ननदोई—पु० ननदका पति।
ननसार—स्त्री० ननिहाल।
ननिअउरा, ननिआउर—पु० ननिहाल (रामा० २०७)।
ननिहाल—पु० नानाका घर।
नन्हा, नन्हैया—वि० छोटा।
नन्हाई—स्त्री० छोटापन, बदनामी (सूसु० १०७)।
नपाई—स्त्री० नापनेकी क्रिया या भाव, नापनेकी मज़दूरी।
नपाक—वि० अपवित्र।
नपुंसक—पु० क्लीव कायर। नामर्द।
नपुंसकता—स्त्री०-त्व-पु० नामर्दी, क्लैब्य, हिजड़ापन।
नपुआ—पु० नापनेकी चीज, मान, मापदण्ड।
नपुत्री—वि० निपुत्री, निःसन्तान।
नप्ता—पु० पोता या नाती।
नफ़र—पु० सेवक (साखी १०७)।
नफ़रत—स्त्री० घृणा।
नफ़ा—पु० लाभ।
नफासत—स्त्री० उत्कृष्टता, श्रेष्ठत्व, बढ़ियापन।
नफ़ीरी—स्त्री० तुरही 'बाजहिं भेरि नफीरि अपारा।' [रामा० ५७३
नफ़ीस—वि० बढ़िया, श्रेष्ठ, परिष्कृत, शुद्ध।
नबी—पु० ईश्वरका दूत, पैग़म्बर।
नबेड़ना, नबेरना—सक्रि० तै करना 'झगरा एक नबेरौ राम...' कबीर ९७। निपटाना। चुनना।
नबेरा—पु० निपटारा, निर्णय 'अवधू सो जोगी गुरु मेरा, जो या पदका करै नबेरा।' कबीर १४३
नबेला—वि० जवान, नया 'कटिलट बिच मेला पीत सेला नबेला।' रहीम ३०
नब्ज़—स्त्री० नाड़ी।
नब्बे—वि० अस्सी और दस। पु० नब्बेकी संख्या।
नभ—पु० आकाश। शून्य। आश्रय। भाद्रपद या श्रावण। शिव। बादल। वर्षा। जल।
भगंगा—स्त्री० आकाशगंगा।
भग—पु० पक्षी, बादल, हवा, देवता, चन्द्र या अन्य ग्रहादि। वि० अभागा। नभगनाथ=गरुड़।
नभचर—पु० देखो 'नभग'।
नभधुज—पु० बादल।
नभयान—पु० वायुयान, हवाई जहाज।
नभस्वान्—पु० वायु।
नभोमणि—पु० सूर्य।
नम—वि० तर, गीला। पु० नमस्कार। वज्र। त्याग।
नमक—पु० लवण। नोन।
नमकसार—पु० नमक निकलने या बननेकी जगह।
नमकहराम—वि० कृतघ्न।
नमकहलाल—वि० स्वामिभक्त।
नमकीन—वि० नमकके से स्वादवाला, जिसमें नमक मिला हो। सलोना, सुन्दर।
नमदा—पु० एक तरहका ऊनी कपड़ा या कम्बल।
नमन—पु० झुकनेकी क्रिया, नमस्कार, प्रणाम।
नमना—अक्रि० प्रणाम करना, झुकना।
नमनि—स्त्री० प्रणाम, झुकाव, नम्रता।
नमनीय—वि० प्रणाम करने योग्य। जो झुक सके।
नमसकारना—सक्रि० अभिवादन करना '...एक निराधार हृदय नमसकारूँ।' कबीर २०२
नमस्कार—पु० प्रणाम।
नमाज़—स्त्री० मुसलमानोंकी ईश्वर-स्तुति।
नमामा—सक्रि० नवाना, झुकाना, वशमें करना।
नमित—वि० झुका हुआ, नवा हुआ।
नमिस—स्त्री० रातभर ओसमें रखे हुए दूधको मथनेसे प्राप्त दूधका फेन।
नमी—स्त्री० तरी, गीलापन।
नमूना—पु० बानगी, ढाँचा, आदर्श।
नमेरु—पु० एक वृक्ष।
नम्र—वि० विनीत।
नय—पु० नीति, नम्रता। निर्णय। स्त्री० नदी 'केते औगुन जग करत नय वय चढती बार।' बि० १९५
नयकारी—पु० नर्त्तकोंका मुखिया, नर्त्तक। [(वंग०)
नयन—पु० नेत्र। नयनपट=नेत्रकी पलक।
नयनता—स्त्री० देखनेकी क्रिया, चितवन (ग्रन्थि ३३)।
नयना—अक्रि० नवना, झुकना 'सो न नयो तिल सीस नये सब।' राम० ६३। नम्र होना। प्रणाम करना। 'रघुबीर-बन्धु प्रतापपुञ्ज बहोरि प्रभु-चरननिह नयो।' [रामा० ५०१
नयनागर—वि० नीति-निपुण।
नयनू—पु० नैनू, मक्खन। वस्त्रविशेष।

नयर—पु० नगर, शहर ।
नयशील—त्रि० नीतिवान्, नीतिज्ञ । विनम्र ।
नया—वि० नूतन, हालका, ताज़ा, अपरिपक्व ।
नर—पु० मनुष्य, पुरुष । अर्जुन । नल 'नरकी अरु नर नीरकी एकै गति करि जोइ ।' बि० १३५ । वि० पुरुष वर्गका, मादाका उलटा ।
नरई—स्त्री० गेहूँकी बाल इ० का डण्ठल । एक तरहकी [ घास ।
नरकंत—पु० नरेश, राजा ।
नरक—पु० पापियोंके दण्ड भोगनेकी जगह, दोज़ख । कष्टमय या गन्दा स्थान ।
नरक चतुर्दशी—स्त्री० दिवालीके ठीक पहलेकी चतुर्दशी ।
नरकट, कुल—पु० एक पौधा जिसकी चटाइयाँ बनती हैं ।
नरकेसरी, नरकेहरी—पु० नृसिंह ।
नरगिस—पु० एक पौधा जिसके फूलका इत्र बनता है ।
नरतक— देखो 'नर्त्तक' ।
नरतात —पु० नरेश, राजा ।
नरद—स्त्री० चौसरकी गोटी 'फूटेतें नरद उठि जात बाजी चौसरकी आपुसके फूटे कहु कौनको भलो भयो ।' [ गङ्ग कवि
नरदन—स्त्री० गरजन ।
नरदा—पु० मैले पानीकी मोरी ।
नरदारा—पु० जनाना, नपुंसक, डरपोक ।
नरदेव, नाथ,-नायक— पु० राजा। नरके रूपमें देवता
नरनारि—स्त्री० (अर्जुनकी स्त्री) द्रौपदी ( विन० ४९,
नरनाह—पु० नरेश, राजा । [ कविता २०४) ।
नरपति,-पाल—पु० राजा, नरेश ।
नरपुंगव—पु० मनुष्योंमें श्रेष्ठ व्यक्ति । राजा ।
नरपशु—पु० पाशव वृत्तियोंसे युक्त नर ।
नरभक्षी—पु० मनुष्योंको खा जानेवाला, दैत्य ।
नरम—वि० कोमल, मुलायम ।
नरमट—स्त्री० मुलायम मिट्टीवाली ज़मीन ।
नरमा—पु० कपासका एक भेद । सेमरकी रुई । एक
नरमाई—स्त्री० नरमी, कोमलता । [ मुलायम कपड़ा ।
नरमाना—सक्रि० मुलायम करना, शान्त करना । अक्रि०
नरमी—स्त्री० कोमलता । [ नरम हो जाना ।
नरमेध—पु० एक तरहका यज्ञ ।
नरलोक—पु० मृत्युलोक, ससार ।
नरवाई—स्त्री० एक तरहकी घास । गेहूँकी बाल या घासका डण्ठल ।

नरवाह—पु० मनुष्यों द्वारा ढोयी जानेवाली सवारी, ( पालकी इ० ) ।
नरवाहन—पु० पालकी 'जालिमसिंह बैठि नरवाहन अब गढ़ बाहर आयो ।' सुजा० १२६ । कुबेर ।
नरसिंगा,-सिंघा—पु० तुरही जैसा एक बाजा, ( 'रमतूला'—बुन्देल० ) ।
नरसिंह—पु० विष्णुका एक अवतार । शक्तिशाली पुरुष ।
नरसों—क्रिवि० परसोंसे पहले या बादके दिन ।
नरहड़, हर—स्त्री० पिण्डलीके ऊपरकी हड्डी ।
नरहरि—पु० नृसिंहजी ।
नरांतक—पु० रावणका एक पुत्र ।
नरा—पु० सूत लपेटनेकी नली । नाल, नारा (बुन्देल०) ।
नराच—पु० बाण, तीर ।
नराजना—सक्रि० नाराज़ करना ( प० ६६ ) । अक्रि०
नराट, नराधिप—पु० नरेश, राजा । [ नाराज़ होना ।
नरिंद—पु० नरेन्द्र, राजा ( भू० ३ ) ।
नरि—स्त्री० नदी 'खरि नरि वेग भासलि नाइ ।'
नरिअर, नरियर—पु० नारियल । [ विद्या १७०
नरिया—स्त्री० एक तरहका लम्बा खपरा ।
नरियाना—अक्रि० ज़ोर ज़ोरसे चिल्लाना ।
नरी—स्त्री० नली । स्त्री (रवि० ५८, कविप्रि० १२) । एक घास । बकरेका चमड़ा । तार लपेटनेकी नली ।
नरुवा—पु० अनाजके पौधेका डण्ठल ।
नरेंद्र—पु० नरेश, राजा ! विष वैद्य ।
नरेश, नरेस—पु० राजा ।
नरों —दे० 'नरसों' ।
नर्क—पु० नरक, दोज़ख़ ।
नर्कट—दे० 'नरकट' ।
नर्गिस—स्त्री० एक फूल, जिसकी उपमा आँखसे दी [ जाती है ।
नर्तना—अक्रि० नाचना ।
नर्त्तक—पु० नाचनेवाला, नट । चारण । नरकट ।
नर्त्तकी—स्त्री० नाचनेवाली, नटी, वेश्या ।
नर्त्तन—पु० नाच, नृत्य ।
नर्त्तित—वि० नाचता हुआ ।
नर्द—दे० 'नरद'
नर्दन—दे० 'नरदन' ।
नर्दा—दे० 'नरदा' । [ देखो 'नरम' ।
नर्म—पु० हँसी, ठट्ठा । हँसी करनेवाला मित्र । त्रि०

नर्मद—पु० हँसोड़ व्यक्ति, मसखरा। वि० आह्लादकारी, प्रसन्न करनेवाला।
नर्मदा—स्त्री० मध्यप्रान्तकी एक नदी।
नर्मसचिव,-सुहृद—पु० विदूषक।
नर्मी—स्त्री० देखो 'नरमी'।
नल—पु० राजा नल। नरकट। कमल। पोली, लम्बी वस्तु, नली। नर, आदमी 'तैं मैं काह करसि नल बौरे, का तेरा का मेरा।' बीजक १८१, (१७०,१९९)।
नलकूबर—पु० कुबेरका एक पुत्र।
नलनी—स्त्री० नलिनी।
नलिका—स्त्री० नली। अस्त्रविशेष। एक यन्त्र। तरकश।
नलिन—पु० कमल। जल। नील। सारस पक्षी। नीली कुमुदिनी ( कविप्रि० ७६ )।
नलिनी—स्त्री० कमलिनी। वह कमल जो रात्रिको खिलता है। नदी। नलिका ( सू० २६ )।
नलिनीरुह—पु० ब्रह्मा। मृणाल।
नली—स्त्री० देखो 'नलिका'।
नलुआ—पु० बाँसकी पोर। पशुओंकी एक व्याधि।
नव—पु० नौकी संख्या। स्तुति। वि०आठसे एक ज्यादा। नूतन, नया। [ सूबे० ३५
नवका—स्त्री० नाव 'नवका नाहीं हौं लै जाऊँ।'
नवखंड—पु० भूमिके नवखण्ड—भरत, किंपुरुष, भद्र, हरि, हिरण्य, केतुमाल, इलावृत्त, कुश, रम्य।
नवग्रह—पु० सूर्य, चन्द्र, मङ्गल इ० नौ ग्रह।
नवछावरि—स्त्री० निछावर, उतारा, इनाम।
नवजात—वि० तुरत ही उत्पन्न हुआ, नवीन।
नवतन—वि० नया, ताज़ा।
नवद्वीप—पु० बङ्गालका एक गाँव, नदिया।
नवधा भक्ति—स्त्री० नौ प्रकारकी भक्ति—श्रवण,कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, सख्य, दास्य, आत्म-निवेदन। [ ( रामा० ३७६ )।
नवन—पु०, नवनि—स्त्री० नम्रता, झुकनेकी क्रिया
नवना—अक्रि० नमन करना, झुकना। नम्र होना।
नवनी—स्त्री०, नवनीत—पु० मक्खन।
नवम—वि० नवाँ।
नवमल्लिका—स्त्री० चमेली।
नवमालिनी—स्त्री० नवमल्लिका, चमेली।
नवमी—स्त्री० पक्षकी नवीं तिथि।

नवयुवक—पु० तरुण व्यक्ति, नौजवान।
नवयौवना—स्त्री० वह स्त्री जिसने हालमें ही यौवनमें प्रवेश किया हो, तरुणी। [ ( भू० २३ )।
नवरंग—वि० शोभावान्,रँगीला। नवेला। पु० औरंगजेब
नवरंगी—वि० नये नये आनन्द करनेवाला। प्रसन्नचित्त। स्त्री० नारङ्गीका फल।
नवरत्न—पु० हीरा, मोती, पन्ना, गोमेद, लहसुनिया, नीलम, मूँगा, माणिक्य, पुखराज। विक्रमादित्यकी सभाके नौ विद्वान्—कालिदास, शङ्कु, अमरसिंह, धन्वन्तरि, वराहमिहिर, वैताल भट्ट, घटखर्पर, क्षपणक, वररुचि।
नवरस—पु० काव्यके नौ रस—शृङ्गार, करुण, इ०।
नवरा—पु० नेवला।
नवरात,नवरात्र—स्त्री० चैत्र सुदी १ तथा कुआर सुदी १ से नवमीतकके नौ दिनोंका समय।
नवल—वि० नया। युवा। सुन्दर। स्वच्छ।
नवलकिशोर—पु० श्रीकृष्णचन्द्र।
नवलता—स्त्री० नवीनता।
नवला—स्त्री० नयी उम्रकी स्त्री, युवती।
नवसत, नवसप्त—वि० नौ और सात अर्थात् सोलह। पु० सोलह शृङ्गार 'सखी नवसत साजि लीन्हें कहत मधुरे बोल।' सू० १८७, ( कबीर ४७ )
नवसर—वि० नयी उम्रका ( सूबे० ८० )। पु० नौलरा हार।
नवससि—पु० दूजका चाँद।
नवसिखा—वि० नौसिखुआ।
नवाँ—वि० आठवेंके बादका, नवम।
नवाई—वि० नवीन। स्त्री० विनय, नम्रता।
नवाज—दे० 'निवाज'।
नवाजना—सक्रि० दया दिखलाना, अनुग्रह करना।
नवाजिश—स्त्री० दया, अनुग्रह, मेहरबानी।
नवाड़ा—पु० एक तरहकी नाव।
नवाना—सक्रि० नम्र करना, झुकाना।
नवाब—पु० बादशाहका प्रतिनिधि। एक उपाधि। अमीरी ठाटबाटसे रहनेवाला व्यक्ति।
नवाबी—वि० नवाबका, नवाबों जैसा। स्त्री० नवाबका पद या काम। नवाबों जैसा रङ्ग ढङ्ग या हुकूमत, अमीरी ठाट बाट। नवाबोंका शासनकाल।
नवारा—दे० 'नवाड़ा'।

नवासी—वि० एक कम नव्वे । पु० नवासीकी संख्या ।
नवाह—पु० वर्षका नया दिन । नौ दिनमें समाप्त होनेवाला रामायणका पाठ ।
नवीन—वि० नया, हालका । विचित्र ।
नवेद—पु० निमन्त्रण-पत्र, न्यौता ।
नवेला—वि० तरुण । नया । (उदे० 'अनु') । [नयी ।
नवेली—स्त्री० युवती स्त्री । वि० स्त्री० तरुणावस्थावाली,
नवोढ़ा—स्त्री० नवविवाहिता वधू । युवती स्त्री ।
नव्य—वि० नूतन, नया ।
नव्वाव—पु० नवाव ।
नशाना—अक्रि० देखो 'नसना' ।
नशा—पु० उन्मादकी दशा, मद, गर्व । मादक वस्तु ।
नशाखोर—पु० नशा करनेवाला, नशेबाज़ ।
नशाना—देखो 'नसाना' ।
नशीला—वि० मादक, नशा पैदा करनेवाला ।
नशेड़ी—देखो 'नशेबाज़' ( जीव० १४६ ) ।
नशेबाज़—वि० जो बराबर कोई नशा करता हो ।
नशोहर—वि० नाशक ।
नश्तर—पु० फोड़े इत्यादि चीरनेका एक औज़ार ।
नश्वर—वि० नाशवान्, भङ्गुर ।
नप—पु० नख, नाखून ।
नपत—पु० नखत, नक्षत्र ।
नपशिप—पु० देखो 'नखशिख' ।
नष्ट—वि० ध्वस्त, बिगड़ा हुआ । जो अदृश्य हो । धनहीन । नीच । व्यर्थ 'नगर नष्ट सरिता विना, धाम नष्ट विन कूप ।'
नष्टभ्रष्ट—वि० ध्वस्त-विध्वस्त, टूटा फूटा ।
नसंक—वि० निःशङ्क, निर्भय ।
नस—स्त्री० रुधिरवाहिनी नलिका, शरीरतन्तु ।
नसकटा—पु० नामर्द, हिजड़ा ।
नसतरंग—पु० एक तरहका बाजा ।
नसना—अक्रि० नष्ट होना । बिगड़ जाना । दौड़ना ।
नसल—स्त्री० वंश ।
नसवार—पु० नास, सुँघनी ।
नसा—पु० देखो 'नशा' । स्त्री० नाक ।
नसाना, नसावना—सक्रि० नष्ट करना, बिगाड़ना । अक्रि० नष्ट होना, बिगड़ जाना 'अबलौं नसानी, अब न नसैहौं ।' विन० २६७
नसीनी, नसेनी—स्त्री० सीढ़ी ।
नसीब—पु० भाग्य, क़िस्मत ।
नसीला—वि० नशेसे भरा हुआ, मदपूर्ण (उदे० 'छकीला') ।
नसीहत—स्त्री० सिखावन, उपदेश, सलाह ।
नस्य—पु० सुँघनी, नास ।
नस्वर—वि० नश्वर, नाशवान् ।
नहँ—पु० नख, नाखून ।
नहछू—पु० विवाहकी एक रीति जिसमें वरके नाखून आदि काटे जाते हैं ।
नहना—सक्रि० जोतना, काममें लगाना 'नतु और सबै विष बीज बये हर हाटक काम दुहा नहिं कै ।' कविता० २११, ( सूबे० ३३३ ) ।
नहनि—स्त्री० पुरवट खींचनेका रस्सा ।
नहर—स्त्री० कृत्रिम जलमार्ग ।
नहरनी—स्त्री० नख काटनेका औज़ार ( उदे० 'चुनी' ) ।
नहरुआ, नहरुवा, नहरू—पु० एक रोग जिसमें शरीरके किसी स्थानसे सूतके समान कीड़ा निकलता है ।
नहला—पु० नौ बूटियोंवाला पत्ता ।
नहलाना, नहवाना—सक्रि० स्नान कराना ।
नहसुत—पु० नखचिह्न, नख-रेखा ।
नहाँ—पु० देखो 'नहला' ।
नहान—पु० स्नान, स्नानपर्व ।
नहाना—अक्रि० स्नान करना, बिलकुल तर हो जाना ।
नहार—वि० जिसने सबेरेसे जलपानादि कुछ न किया हो ।
नहारी—स्त्री० कलेवा, जलपान ।
नहिं, नहिंन—अ० नहीं ।
नहिअन—पु० बिछियाके सदृश एक आभूषण ।
नहीं—अ० एक निषेध-सूचक शब्द ।
नहुष—पु० ययातिके पिताका नाम ।
नहूसत—स्त्री० उदासी ( गबन २३९ ) ।
नाउँ—पु० नाम ।
नाँगा—वि० नङ्गा, वस्त्रहीन ।
नाँघना—सक्रि० लाँघना, फाँदना 'बारिधि नाँघि एक कपि आवा ।' रामा० ४५३, ( उदे० गरेरना' )
नाँठना—अक्रि० बिगड़ जाना, नष्ट भ्रष्ट होना, विपरीत होना ।
नाँद—स्त्री० मिट्टीका बड़ा पात्र, हौदा । पु० गर्जन ।
नाँदना—अक्रि० नाद करना, गरजना । प्रसन्न होना 'उठति दिया लौं नाँदि हरि लिये तुम्हारो नाम ।' बि० ५१
नांदी—स्त्री० नाटकारम्भके पहले सूत्रधारद्वारा पढ़ा जानेवाला आशीर्वादात्मक पद्य । समृद्धि ।

नांदीमुख—स्त्री० पुत्रजन्म, विवाह आदिके समयका श्राद्ध
नाँयँ—पु० नाम। अ० नहीं।
नाँवँ—पु० नाम।
ना—अ० नहीं।
नाइक—पु० नायक, मुखिया।
नाइत्तिफाकी—स्त्री० विरोध, बिगाड़, फूट, मतभेद।
नाइन—स्त्री० नाई जातिकी स्त्री।
नाइब—पु० नायब, मुख्तार, सहायक।
नाईं—क्रिवि० सदृश, तरह। स्त्री० समान, दशा।
नाई—पु० हज्जाम। स्त्री० नाव (उदे०'नरि', सूरा०१४)।
नाउँ, नाऊँ—पु० नाम। [भई घरनाउ।' सू० २०२
नाउ—स्त्री० नाव, नौका 'इन नैननके नीर सखीरी सेज
नाउम्मेद—वि० आशाहीन, निराश।
नाउम्मेदी—स्त्री० आशाका अभाव, नैराश्य।
नाऊ—पु० हज्जाम, नापित। [क्षित ( बैल इ० )।
नाकंद—वि० गाड़ीमें फाँदकर न निकाला हुआ, अशि-
नाक—पु० स्वर्ग, आकाश 'नाक वास बेसरि लह्यो बसि मुकुतनके संग।' बि०। स्त्री० घ्राणेन्द्रिय, नासिका। प्रतिष्ठा। प्रतिष्ठाकी वस्तु। गर्व।—**कटना** = अप्रतिष्ठा होना।—**का बाल** = अधिक प्रिय, घनिष्ठ मित्र। —**चढ़ना** = क्रोध होना।—**भौं सिकोड़ना** = घिनाना, अप्रसन्नता जताना।—**में दम करना** = बहुत सताना।—**रगड़ना** = विनय करना, खुशामद करना। **नाकों आना** = बहुत तंग होना। **नाकों चने**
नाकड़ा—पु० देखो 'नकड़ा'। [चबवाना=तङ्ग करना।
नाक़दर—वि० जिसकी कद्र न हो, अप्रतिष्ठित।
नाकना—सक्रि० नाँघना, पार करना। मात कर देना। '( लक्ष्मी ) सूरनि नाकति ज्यों अहि देखि।' के० ५२
नाकपति—पु० इन्द्र ( दोहा० १२५ )।
नाकबुद्धि—वि० जो नाकसे सूँघकर भक्ष्याभक्ष्यका निर्णय करे, बुद्धिसे काम न ले। ओछी बुद्धिका।
नाका—पु० प्रवेश-द्वार, फाटक ( सूरा० १४ )। रास्तेका आरम्भ स्थान। चौकी ( उदे०'गाढ़' )। (सुईका)छेद 'गुरप्रसाद सूईके नाके हस्ती आवे जाहीं।' कबीर ९१
नाकाबंदी—स्त्री० फाटक आदिका छेंका जाना, विराव। पु० चौकीदार, सिपाही।
नाकाबिल—वि० अयोग्य, अक्षम।
ना-काम—वि० असफल।

नाकू—पु० घड़ियाल, मगर।
नाकेदार—पु० नाकेका सिपाही या अन्य कर्मचारी।
नाकेबंदी—देखो 'नाकाबन्दी'।
नाखना—सक्रि० नाँघना ( सुजा० १३८ )। उल्लंघन करना 'हाथ चाप बाण लै गये गिरीश नाखिकै।' राम० २६४। बिगाड़ना, नष्ट करना 'उन उर दोष धर्यो, गुन नाख्यो।' छत्र० ३४। दूर करना, फेंकना, डालना 'तृन ऊपर मृतिका नाखी, तब ऊपर हथिनी राखी।' सुन्द० (ककौ० ३२२, अ० ३२)
नाखुदा-(नाव खुदा)—पु० मल्लाह, कर्णधार ( सेवा० [१८७।
नाखुश—वि० अप्रसन्न।
नाखून—पु० नख। [पान। आठकी संख्या।
नाग—पु० सर्प। हाथी। जाति-विशेष। एक पहाड़।
नागकेसर—पु० एक पेड़ जिसमें सफेद फूल लगते हैं।
नागझाग—पु० अफीम, अहिफेन।
नागनग—पु० गजमोती।
नागना—अक्रि० नागा करना ( दीन० १३७ )।
नागपति—दे० 'नागराज'।
नागपाश—पु० शत्रुओंको बाँधनेका एक तरहका फन्दा।
नागफनी—स्त्री० एक पौधा। कानका एक भूषण।
नागफाँस—दे० 'नागपाश'।
नागफेन—पु० अफीम।
नागबेल—स्त्री० नागवल्ली। पानकी बेल।
नागर—वि० नगर सम्बन्धी। चतुर। सुन्दर(राम०३८८)। पु० नगरमें रहनेवाला व्यक्ति। चतुर या शिष्ट मनुष्य।
नागरता—स्त्री० नागरिकता। नगर जैसी रहन-सहन,
नागरवेल—स्त्री० पानकी लता। [शिष्टता, चतुरता।
नागरमोथा—पु० एक तरहकी घास।
नागराज—पु० शेषनाग, बड़ा साँप। ऐरावत। श्रेष्ठ हाथी।
नागरिक—पु० नगरनिवासी। वि० नगर सम्बन्धी। चतुर।
नागरी—स्त्री० नगरमें रहनेवाली स्त्री, चतुर स्त्री। वह लिपि जिसमें संस्कृत तथा हिन्दी लिखी जाती है।
नागलोक—पु० पाताल लोक।
नागवल्लरी,-वल्ली—स्त्री० पानकी बेल, पान।
नागवार—वि० अप्रिय, असहनीय।
नागा—पु० साधु विशेष जो नङ्गे रहते हैं। बीच, अन्तर ( दीन० १३७ )। वि० खाली, नङ्गा (कबीर २४)।
नागाशन—पु० सर्प खानेवाला, गरुड़, मोर। सिंह।

नागिन—स्त्री० सर्पिणी। पीठ इ० पर रोमोंकी लम्बी
नागेंद्र—दे० 'नागराज'। [ भौंरी।
नागेश्वर, नागेसर—पु० शेषनाग। ऐरावत। नाग-
नागेसर—पु० एक पेड़। [ केसर।
नागौरा,-री—वि० नागौरका (अच्छी जातिका बैल इ०)।
नाच—पु० नृत्य, क्रीड़ा, खेल। कृत्य, प्रयत्न।—काछना= नृत्यकी तैयारी करना।—नचाना = जैसा चाहे वैसा कराना, तङ्ग करना।
नाचना—अक्रि० नृत्य करना, खुशीके मारे उछलना कूदना। भ्रमण करना, भटकना, स्थिर न रहना, काँपना। सिरपर नाचना = ग्रसना, घेरना 'तिय-मिस मीचु सीसपर नाची।' रामा० २१५
नाचरंग—पु० आमोद-प्रमोद।
नाचार—वि० लाचार, असहाय। व्यर्थ। क्रिवि० लाचार
नाचीज़—वि० तुच्छ, क्षुद्र, निस्सार। [ होकर।
नाज—पु० अनाज, खाद्य वस्तु ( रहि० वि० ३५ )।
नाज़—पु० हाव-भाव।
नाज़नी—स्त्री० रूपवती स्त्री।
नाजनीन—देखो 'नाजनी'।
नाज़बरदारी—स्त्री० नाज उठाना, 'पत्नीकी नाज़बर-दारीमें ही बहुतसे रुपये उठ जायँगे'—प्रेमचन्द
नाजायज़—वि० नियमविरुद्ध, गैरवाजिब।
नाज़िर—वि० देखनेवाला। निरीक्षक, मुख्य लेखक। स्त्री० अन्तःपुरकी मुख्य परिचारिका (हम्मीरहठ १०)।
नाज़िल—वि० उतरनेवाला।—होना = नीचे आना, अवतरित होना ( सेवा० २११ )।
नाजुक—वि० सुकुमार, सूक्ष्म, पतला।
नाजो नाजौ—स्त्री० नाजनी, प्रियतमा (ग्राम० ५९)।
नाट—पु० नाट्य, स्वांग, नृत्य।
नाटक—पु० पात्रोंद्वारा विशेष रूप, हाव-भाव, वचन आदिकी सहायतासे घटनाओंका प्रदर्शन, अभिनय।*
नाटकिया—पु० अभिनय करनेवाला। [*दृश्य काव्य।
नाटकी—पु० नाटक करनेवाला, नाटक करके जीवन-निर्वाह करनेवाला।
नाटकीय—वि० नाटक सम्बन्धी।
नाटना—अक्रि० कही हुई बातसे फिर जाना, प्रतिज्ञा भंग करना। सक्रि० इनकार करना।
नाटा—वि० छोटे कदवाला। पु०छोटे डीलवाला बैल इ०

नाटिका—स्त्री० उपरूपकका एक भेद। [नय, स्वाँग।
नाट्य—पु० नटका कार्य, नृत्य, गीत तथा वाद्य ; अभि-
नाट्यकार—पु० नाटक करनेवाला, नट, अभिनेता।
नाट्यशाला—स्त्री० नाटक खेलनेकी जगह, नाटक-
नाठ—पु० नाश, अभाव। [मन्दिर, नाटक-घर।
नाठना—सक्रि० नष्ट करना, बिगाड़ना। अक्रि० नष्ट होना ( कबीर १९१ ), 'साँठि नाठि किछु गाँठि न रहा।' प० २०५। हटना, भाग जाना।
नाठा—पु० वह व्यक्ति जिसका कोई वारिस न हो।
नाड़—स्त्री० गर्दन। [ लाला पीला डोरा।
नाड़ा—पु० नीवी, इजारबन्द। पूजामें प्रयुक्त होनेवाला
नाड़ी—स्त्री० रुधिरवाहिनी नलिका, धमनी।—छूट जाना = प्राण निकल जाना।
नात—पु० नाता 'हमहिं नृपति सों नात है तातें हम माँगे।' सूबे० २८३। नातेदार, रिश्तेदार।
नातर, नातरि, नातरु—अ० नतरु, नहीं तो 'भली भई जो गुरु मिले नातर होती हानि।' साखी ५, 'आध पैंड दे वसुधा राजा नातरि चल सति हारी।' सू०
नातवाँ—वि० निर्बल, हीन। [२९, ( प० १३७ )।
नाता—पु० रिश्ता, सम्बन्ध ( विन० २२६ )।
नाताकत—वि० अशक्त, कमज़ोर।
नातिन—स्त्री० बेटीकी बेटी।
नाती—पु० बेटीका बेटा ( या बेटेका बेटा )।
नाते—क्रिवि० सम्बन्धसे। वास्ते, लिए।
नातेदार—पु० सम्बन्धी। वि० सगा।
नाथ—पु० स्वामी, पति। बैलों इत्यादिकी नाकमें डाली गयी रस्सी। स्त्री० नथ।
नाथना—सक्रि० नाक छेदना, नकेल डालना, वशमें करना 'पैठि पताल व्याल गहि नाथ्यो...।' सू० ६१
नाद—पु० ध्वनि, शब्द, संगीत।
नादना—अक्रि० बजना; गरजना, आवाज़ करना। आनन्दित होना, लहलहाना। देखो 'नाँदना'। सक्रि०
नादान—वि० मूर्ख, बे-समझ। [ बजाना।
नादानी—स्त्री० नासमझी, मूर्खता।
नादारी—स्त्री० निर्धनता। [ बहती बहती' लहर ११
नादिनि—वि० स्त्री० नाद करनेवाली 'कलकल नादिनि
नादिम—वि० लज्जित ( सेवा० १८६ )।
नादिया—पु० नन्दी बैल।

नादिर—वि० विलक्षण, अद्भुत ।
नादिरशाही—वि० मनमाना, निर्दयतापूर्ण । स्त्री० घोर अन्याय, अन्धेर ।
नादिहंद—वि० न देनेवाला, जिससे कर्ज़की रकम वसूल न हो।
नाधना—सक्रि० जोतना, जोड़ना, लगाना, बाँधना, गुहना, आरम्भ करना '''करिहै उजियारी ब्रज ऐसी रीति नाधी है।' रस० ३६
नानखताई—स्त्री० एक तरहकी खस्ता मिठाई ।
नानबाई—पु० पावरोटी इ० बनाकर बेचनेवाला ।
नाना—पु० माताका पिता । वि० विविध, अनेक।सक्रि० नवाना, झुकाना, डालना 'मैं अज्ञान अकुलाइ अधिक लै जरत माँझ घृत नायो।' सूवि० ५२, 'महामूढ़ सो मूल तजि शाखा जल नावै।' सूबे० २१
नानिहाल—पु० ननिहाल, नानाका घर ।
नानी—स्त्री० माताकी माता ।—मर जाना = होश उड़ जाना, संकट सा पड़ जाना ।
नान्ह—वि० नन्हा, क्षुद्र, महीन, छोटा 'सीतेश मोको कछु देहु शिक्षा। नान्हीं बड़ी ईश जु होय इच्छा।' राम० २४८,(सूबे० २५२ ) । नान्ह कातना = सूक्ष्म या कठिन काम करना ।
नान्हरिया—वि० नन्हा, छोटा (सूबे० ५१) ।
नान्हा—वि० देखो 'नान्ह' । पु० छोटा बालक ।
नाप—पु० स्त्री० माप, परिमाण ।
नाप जोख—स्त्री० नापने जोखनेकी क्रिया ।
नापना—सक्रि० लम्बाई, चौड़ाई इ० निश्चित करना ।
नापसंद—वि० जो अच्छा न लगे, अरुचिकर, अप्रिय ।
नापाक—वि० अपवित्र, अशुद्ध ।
नापायदार—वि०जो टिकाऊ या मजबूत न हो, कमज़ोर ।
नापित—पु० नाई, हज्जाम ।
नापैद—वि०जो न मिले, अप्राप्य ।
नाबदान—पु० पनाला ।
नाबालिग—वि० जो पूरी उम्र को न पहुँचा हो, अप्राप्त-वयस्क ।
नाबूद—वि० ध्वस्त, नष्ट ।
नाभि, नाभी—स्त्री० पेटके बीचका छोटा गड्ढा, तुन्दी, ढोंढ़ी । चक्रमध्य । कस्तूरी । पु० प्रधान व्यक्ति ।
नाभिज—पु० ब्रह्मा ।
नामंजूर—वि० अस्वीकृत, जो माना न गया हो ।
नाम—पु० संज्ञा, अभिधान, आख्या । ख्याति, प्रसिद्धि । —उठ जाना = वंशका नाश होना, कोई निशान न रह जाना ।—कमाना,-करना = यश प्राप्त करना । —का = नामक, कहनेके लिए।-किसीके—डालना या लिखना = किसीके जिम्मे चढ़ाना ।—के लिए = ज़रासा ।—जगना = ख्याति फैलना ।—डुबाना = कीर्त्तिमें धब्बा लगाना ।—धरना = नाम स्थिर करना, दोष लगाना ।-धराना = नाम स्थिर करना, निन्दा करना । किसीका—रखना = नामकरण करना, कर्त्तिको कलङ्कित न होने देना । किसीको—रखना = दोष देना, बुरा कहना ।—लगना = इलजाम लगाना ।—लेना = नाम जपना या नाम कहना, यश वर्णन करना, उल्लेख करना । नामो-निशान = अवशेष, पता ।
नामक—वि० नामवाला, नामसे मशहूर ।
नामकरण—पु०नाम रखनेका कार्य, हिन्दुओंका एक संस्कार।
नामज़द—वि० जो किसी कार्यादिके लिये चुन लिया गया हो । प्रसिद्ध ।
नामदार, नामवर—वि० विख्यात ।
नामदेव—पु० एक कृष्ण-भक्तका नाम ।
नामधराई—स्त्री० अपकीर्त्ति, अप्रतिष्ठा ।
नामधेय—पु० नाम, संज्ञा ।
नामनिशान—पु० चिह्न ।
नामबोला—पु० नाम लेनेवाला, स्मरण करनेवाला ।
नामर्द—वि० नपुंसक । कायर, डरपोक ।
नामलेवा—पु० नाम लेनेवाला, सन्तति, वारिस ।
नामवरी—स्त्री० ख्याति, प्रसिद्धि ।
नामशेष—वि० जिसका केवल नाम रह गया हो, मृत ।
नामाकूल—वि० जो ठीक न हो, गैरवाजिब । अयोग्य ।
नामालूम—वि० अज्ञात ।
नामावली—स्त्री०नामोंकी सूची । एक तरहका रामनामी कपड़ा ।
नामी—वि० नामवाला । प्रसिद्ध ।
नामुनासिब—वि० अनुचित ।
नामुमकिन—वि० जो होनेलायक न हो, असम्भव ।
नायँ—पु० नाम । अ० नहीं ।
नायक—पु० नेता, मुखिया । राजा । स्वामी (साखी९१)। काव्य आदिका प्रधान पात्र, हारके बीचकी मणि ।
नायकता—स्त्री० नेतात्व, नेतृत्व ।
नायका—स्त्री० नायिका, रूप-रस-युक्त नारी । कुटनी ।

नायन—स्त्री० देखो 'नाइन'।
नायब—पु० सहायक। मुनीब।
नायाब—वि० न मिलनेवाला।
नायिका—स्त्री० रूपवती, गुणवती स्त्री। काव्यादिका* प्रधान स्त्री-पात्र।
नारंग—पु० सन्तरा। गाजर।
नारंगी—स्त्री० एक पेड़ तथा उसका फल। वि०† नारङ्गीके रङ्गका।
नार—स्त्री० नारी, स्त्री। गरदन, गला। पु० नरसमूह। सोंठ। जल। नाल, नारा, इजारबन्द, मोटा रस्सा।
नारकी, नारकीय—वि० नरक भोगनेवाला, पापी 'पाव नारकी हरि पद जैसे।' रामा० १८३
नारद—पु० एक देवर्षि। झगड़ा करानेवाला।
नारना—सक्रि० पता लगाना, थाह लेना 'ये मन ही मन मोको नारति।' सूबे० १७८
नारबेवार—पु० जन्मे हुए बच्चेकी नाल इ०।
नारा—पु० इजारबन्द। नवजात शिशुकी नाल। अँतड़ी (-उखड़ना)। देवपूजनमें प्रयुक्त होनेवाला लाल सूत। नाला 'चहुँ दिशि फिरेउ धनुष जिमि नारा।' रामा० २६२
नाराइन—पु० भगवान्। विष्णु।
नाराच—पु० लोहेका बाण।
नाराज़—वि० क्रुद्ध, अप्रसन्न।
नाराज़गी, नाराज़ी—स्त्री० अप्रसन्नता।
नारायण, नारायन—पु० विष्णु, ईश्वर।
नारायणी—स्त्री० लक्ष्मी, दुर्गा, गङ्गा। सतावर। वि० नारायण सम्बन्धी, नारायणका (राम० १७१)।
नारि—स्त्री० नारी, स्त्री। गरदन 'जियत न नाई नारि चातक घन तजि दूसरहि।' दोहा० १२०
नारिकेल, नारियल—पु० एक पेड़ या उसका फल।
नारिदान—पु० पनारा (कविप्रि० २११)।
नारी—स्त्री० स्त्री। एक चिड़िया। वह रस्सी जिससे हल जुएमें बाँधा जाता है। देखो 'नाड़ी' तथा 'नाली'।
नारू—पु० जूँ। एक रोग। नहरुआ रोग।
नाल—स्त्री० कमल आदिका डण्ठल, डाँड़ी (बीजक२२५), नली। नवजात शिशुकी नाभिमें लगी हुई चमड़ेकी डोरी। पानी बहनेका स्थान। गोलाकार भारी पत्थर 'ऐसे जिन्हें ठाढ़े हैं अखाड़े बीच देत ताल नालको उठावै है उताल चूमि चूमिकै।' दीन० १४४। पु० पशुओंके खुर आदिमें जड़नेके निमित्त बना हुआ लोहेका गोलाकार टुकड़ा।
नालकी—स्त्री० इधर उधरसे खुली हुई पालकी।
नालबंद—पु० नाल जड़नेवाला।
नाला—पु० जल बहनेका मार्ग, छोटी नदी। नारा, रङ्गीन गण्डेदार सूत।
नालायक़—वि० अयोग्य, नाक़ाबिल, मूर्ख।
नालायक़ी—स्त्री० अयोग्यता।
नालिकेर—पु० नारियल।
नालिश—स्त्री० दुःख-निवेदन, फरियाद।
नाली—स्त्री० जल बहनेका मार्ग, मोरी, नाड़ी।
नावँ—पु० नाम।
नाव—स्त्री० नौका, किश्ती।
नावक—पु० एक तरहका छोटा बाण 'सतसैयाके दोहरे ज्यों नावकके तीर।' बि०उपस्क० ४१। मधुमक्खीका डङ्क। नाविक, केवट।
नावना—सक्रि० नवाना। डालना 'जूठो लेत सबनके मुखको अपने मुख लै नावत।' सूबे० ७४, (उदे० 'आम')। प्रविष्ट कराना।
नावर, नावरि—स्त्री० नौका। नावकी क्रीड़ा-विशेष 'जनु नावरि खेलहिं सर माहीं।' रामा० ५०४
नावाकिफ—वि० जो वाकिफ न हो, अनजान।
नाविक—पु० केवट, मल्लाह।
नाश—पु० ध्वंस, लोप, अदर्शन।
नाशक—वि० नाश करनेवाला, मिटानेवाला, दूर करनेवाला।
नाशकारी—वि० नाश करनेवाला, संहारक।
नाशन—वि० नष्ट करनेवाला।
नाशपाती—स्त्री० एक पेड़ या उसका फल।
नाशवान्, नाशुक—वि० जो नष्ट होनेवाला हो, नश्वर।
नाशित—वि० जिसका नाश किया गया हो, ध्वंसित।
नाशी—वि० नाशक, संहारक, नाशवान्।
नाश्ता—पु० जलपान, कलेवा।
नास—स्त्री० सुँघनी। पु० देखो 'नाश'।
नासना—सक्रि० नष्ट करना (उदे० 'जलपना'), मार डालना। अक्रि० नष्ट होना, दूर होना 'संसृति, सन्निपात दारुन दुख बिनु हरि कृपा न नासै। बिन०२२८
नासमझ—वि० निर्बुद्धि, मूर्ख, नादान।
नासमझी—स्त्री० मूर्खता, नादानी।
नासा—स्त्री० नासिका, नाकका छेद। पु०अग्रभाग,कोर।
नासापाक—पु० नाक पक जानेका रोग।

नासिक, नासिका—स्त्री० नाक 'नासिक देखि लजानेउ सुआ।' प० ४६

नासीर—पु० सेनाका अग्रभाग।

नासूर—पु० भीतर दूरतक फैला हुआ घाव, नाड़ी-व्रण।

नास्तिक—पु० ईश्वरको न माननेवाला।

नास्तिकता—स्त्री० ईश्वरका अस्तित्व न मानना।

नास्य—पु० बैल इ० की नाकमें पड़ी हुई डोरी, नाथ। वि० नाकसे उत्पन्न, नाकका।

नाह—पु० स्वामी, प्रभु, पति 'दुसह सौति-सालैं सुहिय गनति न नाह बियाह।' बि० २४८। पु० बन्धन। पहियेका छेद।

नाहक—क्रिवि० व्यर्थ, बेमतलब।

नाहर—पु० व्याघ्र, सिंह 'नाह गरजि नाहर-गरज बोल सुनायो टेरि।' बि० ९१, ( उदे० 'गाना' )

नाहरू—पु० नहरुवा नामका रोग। नाहर, सिंह 'मारसि गाइ नाहरू लागी।' रामा० २१६

नाहिन, नाहीं—अ० नहीं।

निंत—क्रिवि० नित्य, हमेशा।

निंदक—पु० निन्दा करनेवाला।

निंदना—सक्रि० निन्दा करना, भला बुरा कहना ( उदे० 'नन्द'), 'निन्दहिं आपु सराहहिं मीना।' रामा०२४०

निंदनीय—वि० निन्दा करने योग्य, भर्त्सनीय, गर्हित।

निंदरना—सक्रि० निन्दा करना, निरादर करना 'नाम लङ्किनी एक निसिचरी। सो कह चलेसि मोहिं निंदरी।'† रामा० ४१६

निंदरिया—स्त्री० निद्रा (सूबे० ४७)।

निंदा—स्त्री० बुराईका वर्णन, दोषकीर्त्तन। अपयश।

निंदाई—स्त्री० निरानेका काम या उसकी मजदूरी।

निंदाना—सक्रि० खेतसे घासपात दूर करना, निराना।

निंदासा—वि० उनींदा।

निंदित—वि० जिसकी निन्दा की गयी हो, जो बुरा कहा गया हो, गर्हित, बुरा।

निंदिया—स्त्री० निद्रा।

निंद्य—दे० 'निन्दनीय'।

निंब—स्त्री० नीमका पेड़।

निंबकौरी—स्त्री० नीमका फल 'काहु गही केराकै घौरी। काहू हाथ परी निंबकौरी।' प० ८८

निःकपट, निःकाम—दे० 'निष्कपट', 'निष्काम'।

निःकारण—देखो 'निष्कारण'।

निःछल, निःपाप—दे० 'निश्छल', 'निष्पाप'।

निःफल, निःशंक— दे० 'निष्फल', 'निश्शंक'।

निःशरण—वि० शरणहीन, निराधार।

निःशूल—वि० कंटकहीन, बाधाहीन।

निःशेष, निःसंकोच—दे० 'निश्शेष', 'निस्संकोच'।

निःश्रयणी, निःश्रेणी—स्त्री० सीढ़ी।

निःश्रेयस—पु० मुक्ति, हित, मङ्गल, भक्ति।

निःश्वास—पु० साँस।

निःसंग—वि० तटस्थ, अनासक्त।

निःसंतान, निःसंदेह—दे० 'निस्सन्तान', 'निस्सन्देह'।

निःसंबल—वि० आधारहीन, जिसको कोई सहारा न हो।

निःसत्व, निःसरण—देखो 'निस्सत्व', 'निस्सरण'।

निःसार, निःस्वार्थ—दे० 'निस्सार', 'निस्स्वार्थ'।

निःसीमता—स्त्री० सीमा हीनता।

निःसृता—वि० स्त्री० निकली हुई।

निःस्व—वि० स्वत्वहीन।

निःस्वन—पु० शान्ति, निःशब्दता 'सान्ध्य-निःस्वनसे गहन जल गर्भमें, था हमारा विश्व तन्मय हो गया।' ग्रन्थि ३

निअर—क्रिवि० पास, समीप। वि० समान।

निअराना—अक्रि० पास आना, निकट होना। सक्रि० पास पहुँचना।

निआउ—पु० न्याय 'नीक सगुन बिबरिहि झगर होइहि धरम निआउ'। रामाज्ञा०

निआन—पु० निदान, परिणाम 'जो निआन तन होइहि छारा। माटिहि पोखि मरैको भारा?' प० ५९। अ० अन्तमें।

निआमत—देखो 'नियामत'।

निआरा—वि० न्यारा, पृथक्। निराला।

निआर्थी—स्त्री० निर्धनता।

निकंटक—वि० निष्कंटक, निर्विघ्न।

निकंदन—पु० नाश। नाशक।

निकंदना—सक्रि० नाश करना 'तीरथ व्रत विष बेलरी सब जग राखा छाय। कबीर मूल निकंदिया कौन हलाहल खाय।' साखी १८१

निकट—क्रिवि० समीप, पास। वि० समीपका।

निकटता—स्त्री०, निकटपना—पु० समीपता।

निकटस्थ—वि० पासका, समीपी।

निकम्मा—वि० जो कोई काम न करे, जो किसी काममें न आवे, निरुपयोगी।

निकर—पु० राशि, समूह। देय धन। निकलना, उदय 'जासु बचन रविकर निकर।' रामा० ३

निकरना—अक्रि० प्रकट होना, उदय होना। देखो 'निकलना', ( उदे० 'ओबरी', 'चौगान' )।

निकलंक—वि० निष्कलंक, दोषरहित ।
निकलंकी—वि० कलंकहीन । पु०विष्णुका कल्कि अवतार।
निकलना—अक्रि० प्रकट होना, उदय होना, वाहर होना, दूर होना, अलग होना, व्यतीत होना, आरम्भ होना या जारी होना, उत्पन्न होना, पार होना, जिम्मे ठहरना, प्रमाणित होना, सरना, खपना, मिलना ।
निकष, निकषण, निकस—पु० कसौटी ।
निकसना—अक्रि० देखो 'निकलना' ( अ० ५१ )।
निकाई—स्त्री० उत्तमता, भलाई । सुन्दरता । 'राम निकाई रावरी है सबहीको नीक ।' रामा० २२ । पु० झुण्ड ।
निकाज—वि० निकम्मा ।
निकाम—वि० वेकाम, निरुपयोगी, बुरा, निकम्मा पु० आधिक्य, समूह 'विखरा देते तारा बलि-से नभमें उसके रत्नविकास' पल्लव ९६ । ९३ ।
निकाय—पु० राशि, समूह । वासस्थान । (उदे०'कौड़ी')।
निकार—पु० निष्कासन । निकास, मिलनेका द्वार । अपमान, पराभव ।
निकारना, निकालना—सक्रि० बाहर लाना, पृथक् करना, दूर करना, प्रकट करना, उत्पन्न करना, जारी करना, बचाना, काढ़ना ।
निकाला—पु० बाहर करनेका काम, निर्वासन ।
निकास—पु० निकालनेकी क्रिया या भाव । द्वार, मैदान, उद्गम स्थान । बचावका मार्ग । निर्वाहका ढंग, आमदनी । वि० तुल्य, सदृश 'सनीर जीमूत निकास सोभहीं ।' राम० ४३५
निकासना—सक्रि० देखो 'निकालना' । [ आय ।
निकासी—स्त्री० निकालनेकी क्रिया या भाव,प्रस्थान,खपत,
निकाह—पु० मुसलमानी ढंगसे किया गया विवाह ।
निकिष्ट—वि० अधम, तुच्छ ।
निकुंज—पु० लतामंडप ।
निकुंभिला—स्त्री०एक गुफा जहाँ मेघनाद यज्ञ करता था ।
निकृत—वि० अपमानित, वहिष्कृत । वंचित । दुष्ट ।
निकृष्ट—वि० क्षुद्र, तुच्छ, अधम ।
निकेत, निकेतन—पु० घर, वासस्थान ।
निकोसना—सक्रि० दाँत पीसना, दाँत निकालना ।
निकौनी—स्त्री० निरानेका कार्य या मजदूरी ।
निक्षिप्त—वि० फेंका हुआ, धरोहर रखा हुआ, त्यक्त ।
निक्षेप—पु० फेंकने, चलाने अथवा छोड़नेकी क्रिया या भाव, धरोहर ।
निखंग—पु० निषंग, तरकश, तूणीर ( सू० २१ )।
निखंड—वि० मध्य, ठीक ।
निखट्टर—वि० निष्ठुर हृदयवाला, निर्दय ।
निखट्टू—वि० सब जगह झगड़ा-फसाद करनेवाला, अवारा, निकम्मा, निठल्ला ।
निखरना—अक्रि० मैल छँट जाना, साफ होना ।
निखरी - स्त्री० पक्की रसोई, 'सखरी' का उलटा ।
निखर्व—वि० दस सहस्र कोटि ।
निखवख—वि० सब, बिलकुल ।
निखाद- पु० निषाद ।
निखार—पु० स्वच्छता, सजावट ।
निखारना—सक्रि० मैल दूर करना, साफ करना, पवित्र करना ।
निखालिस—वि० बिना मिलावटका, शुद्ध ।
निखिल—वि० सम्पूर्ण, अखिल ।
निखुटना, निखूटना—अक्रि० घट जाना, समाप्त होना 'बाती सूखी तेल निखूटा....' कबीर ३०९, (२६६)
निखेध—पु० निषेध, मनाही, रुकावट ।
निखेधना—सक्रि० निषेध करना, मना करना ।
निखोट, निखोटि—वि० दोषरहित (कविता० २०६), स्वच्छ, स्पष्ट । क्रिवि० साफ साफ, खुल्लमखुल्ला 'चढ़ी अटारी बाम वह कियो प्रणाम निखोट ।' रस० १३, ( मति० २२९ )
निखोरना—सक्रि० नखसे नोचना ।
निगंध—वि० निर्गन्ध, वासरहित ।
निगड़—स्त्री० हाथी बाँधनेकी जंजीर, बेड़ी ।
निगदन—पु० कथन, प्रकटीकरण (रत्ना० ३५४) ।
निगदित—वि० कथित ।
निगम—पु० वेद । मार्ग । बाज़ार ।
निगर—वि० सब । पु० समूह, झुण्ड । भोजन ।
निगरानी—स्त्री० देखरेख ।
निगरु—वि० गुरुका उलटा, हलका, भारी नहीं ।
निगलना—सक्रि० खा जाना, हड़प जाना, पचा जाना ।
निगहबानी—स्त्री० रक्षा, चौकसी, देखरेख ।
निगाली—स्त्री० हुक्का पीनेकी बाँसकी नली ।
निगाह—स्त्री० दृष्टि, नज़र, कृपादृष्टि । परख । समझ ।
निगिभ—वि० परम गोपनीय, परम प्रिय ।

**निगुण, निगुन**—वि० सत्व, रज, तमसे परे । बुरा ।
**निगुनी**—वि० गुणरहित ।
**निगुरा**—वि० विना गुरुका 'जो निगुरा सुमिरन करै दिनमें सौ सौ बार ।' साखी १६, (उदे० 'ऊभट') । अदीक्षित, बिना धर्मकर्मका ।
**निगूढ़**—वि० बहुत गुप्त, रहस्यमय ।
**निगूहन**—पु० छिपाव ।
**निगोड़ा,-रा**—वि० अभागा, अनाथ, असहाय, दुष्ट, नीच 'चाप निगोड़ो अबै जरि जाउ चढ़ै तो कहा न चढ़ै तो कहा है ।' 'मरद निगोरनकी गरमी निवारि हौं ।' कलस २९९ [ दंड, डाँट ।
**निग्रह**—पु० दमन, रोक, चिकित्सा, बन्धन, पीड़न, शासन,
**निग्रहना**—सक्रि० पकड़ना, सजा देना, रोकना ।
**निघंटु**—पु० वैदिक कोश, शब्दोंका संग्रह ।
**निघटना**—अक्रि० घटना, कम होना, बीतना 'नगर नारि नर व्याकुल कैसे । निघटत नीर मीनगन जैसे ।'रामा० २९६,(उदे०'उघरना', सू० ६२)। सक्रि० नष्ट करना ।
**निघरघट**—वि० जिसका कहीं ठौर ठिकाना न हो, निर्लज्ज ।—**देना** = निर्लज्ज होकर बहाना बनाना ।
**निघरा**—वि० घरबारसे हीन । निगोड़ा, दुष्ट ।
**निचय**—पु० समूह, राशि । निश्चय ।
**निचल**—वि० निश्चल, अटल ।
**निचला**—वि० नीचेवाला, नीचेका । स्थिर, अचल ।
**निचाई**—स्त्री० नीचापन, ओछापन ।
**निचान**—पु० निचाई, ढालुआँपन ।
**निचिंत**—वि० बेफिक्र ( उदे० 'गंजन', सुन्द० ४६ ) ।
**निचुड़ना, निचुरना**—अक्रि० पानी आदिका टपककर निकल जाना ( उदे० 'छलकाना' ) । सारहीन होना ।
**निचुल**—पु० एक वृक्ष । बेंत ।
**निचै**—पु० समूह, राशि 'ज्यों चकोर बल चन्दके चाभत निचै अँगार ।' दीन० ८७ । निश्चय ।
**निचोड़, निचोर**—पु० निचोड़नेसे निकला रस इत्यादि । सार वस्तु, सारांश ।
**निचोड़ना, निचोरना**—सक्रि० दबाकर रस आदि निकालना । रस टपकाना, सार भाग निकाल लेना 'बरनहुँ रघुवर विशद जस स्तुति सिद्धान्त निचोरि ।' रामा० ६६
**निचोना**—सक्रि० देखो 'निचोड़ना' । 'कोइ मुख अमृत आनि निचोवा ।' प० ११५; (सूबे० २१५)
**निचोल**—पु० ऊपर ओढ़नेका वस्त्र, ओढ़नी । घाघरा ।*
**निचोलक**—पु०चोल,अंगा । सनाह । *[कपड़ा (के०६१)।
**निचोवना**—सक्रि० देखो 'निचोड़ना' ।
**निचौंहा**—वि० नीचेकी ओर किया हुआ ।
**निचौंहैं**—क्रिवि० नीचेकी ओर ।
**निछक्का**—वि० एकान्त, निराला ।
**निछत्र**—वि० छत्ररहित, राज्यरहित, क्षत्रियरहित ।
**निछनियाँ**—क्रिवि० पूर्णतः, बिलकुल 'आजु गयो मेरो गाय चरावन हौं बलि गई निछनियाँ ।' सूबे० ८७ । वि० शुद्ध, खालिस, एक मात्र ।
**निछल**—वि० निश्छल, कपटहीन ।
**निछान**—वि० जिसमें मिलावट न हो, शुद्ध । बिलकुल, एक मात्र । क्रिवि० बिलकुल, पूर्णतः ।
**निछावर,-रि**—स्त्री० शरीरपर घुमाकर दिया हुआ द्रव्य आदि, उतारा । इनाम । उत्सर्ग, बलि (-करना,-होना) ।
**निछोह,-ही**—वि० प्रेमरहित, निर्मोही, क्रूर 'का पूछहु तुम धातु निछोही ।' प० १४०
**निज**—वि० अपना । यथार्थ, सच्चा । खास ( भ्र० ४४ )। अ० यथार्थमें, निश्चयपूर्वक, विशेष करके 'निज शूद्रन की तपसा शिशु घालक ।' के० २७५,(राम० ३३७)। बिलकुल 'आई उघरि कनक कलई ज्यों दै निज गये दगाई ।' भ्र० ६४, (४४)
**निजकाना**—अक्रि० नजदीक आना ।
**निजता**—स्त्री० निजत्व पु० अपनापन ।
**निजन**—वि० जनरहित, सूनसान ।
**निजस्व**—पु० अपना भाग ।
**निजात**—देखो 'नजात' ।
**निजी**—वि० अपना, खास ।
**निजु**—वि०, क्रिवि० देखो 'निज' (विन० ४६३), 'निजु ये अविकारी, सब सुखकारी...' राम० १७४
**निजू**—दे० 'निजी' ।
**निजोर**—वि० शक्तिहीन ।
**निझरना**—अक्रि० भली भाँति झड़ जाना, समाप्त होना, सार वस्तुसे रहित होना 'भुवपर एक बूँद नहिं पहुँची निझरि गये सब मेह ।' सूबे० १२५ । सफाई देना ।
**निटोल**—पु० टोला, मुहल्ला, बस्ती 'किंकिरिनिकी लाज धरि व्रज सुवस करहु निटोल ।' सूबे० ४१२

निट्ठि—क्रिवि० नीठि, ज्यों त्यों करके, कठिनतासे ।
निठल्ला—वि० बेकार, निकम्मा ।
निठाला—पु० बेकारीका समय, खाली समय ।
निठुर—वि० निर्दय, कठोर ।
निठुरई, निठुरता, निठुराई—स्त्री० कठोरता ।
निठौर—पु० बुरा स्थान, बुरी दशा 'जिनको पिय परदेस सिधारो सो तिय परी निठौर ।' सूबे० ३३०
निडर—वि० निर्भय, ढीठ, साहसी ।
निडरपन,-पना—पु० निर्भयता । [कुकुरमुत्ता ३७
निड़ाना—सक्रि० निराना, 'निड़ाई जा चुकी है खरीफ'
निड़े—क्रिवि० निकट 'कबीर चदनके निड़े नींब भि चन्दन होइ ।' कबीर ८४
नितंत—क्रिवि० निपट, बहुत ज्यादा ।
नितंब—पु० कमरके पीछेका भाग, चूतड़ ।
नितंबिनी—स्त्री० सुन्दर नितम्बोंवाली स्त्री ।
नित—क्रिवि० नित्य, हमेशा, प्रतिदिन ।
नितराम्—अ० सर्वदा ।
नितल—पु० एक पाताल लोकका नाम ।
नितांत—वि० अतिशय । बिलकुल, निपट ।
नित्य—क्रिवि० सर्वदा, प्रति दिन । वि० जो सर्वदा रहे, अविनाशी, प्रति दिनका ।
नित्यकर्म—पु०-क्रिया—स्त्री० प्रति दिन किया जाने वाला स्नान, पूजादिका काम ।
नित्यता—स्त्री०,-त्व-पु० नित्य या अविनाशी होनेका भाव ।
नित्यप्रति—क्रिवि० प्रति दिन ।
नित्यशः—क्रिवि० प्रति दिन, सर्वदा ।
निथंभ—पु० खम्भा ( राम० १२७ ) । [छन जाना ।
निथरना—अक्रि० मैल नीचे बैठ जानेसे साफ़ होना,
निथारना, निथालना—सक्रि० पानी आदिको स्थिर कर साफ करना, पानी छानकर अलग करना ।
निदई—वि० निर्दयी, निष्ठुर ।
निदरना—अक्रि० निरादर करना, तिरस्कार करना, मात करना ( उदे० 'खेत' ), 'निदरै कोटि कुलिस एहि छाती ।' रामा० २९४, ( सू० १०५ ) ।
निदर्शन—पु० दिखानेका काम, प्रदर्शन, दृष्टान्त ।
निदर्शना—स्त्री० एक काव्यालंकार ।
निदलन—पु० नाश, खण्डन ।
निदहना—सक्रि० दग्ध करना, जलाना ।
निदाघ—पु० ग्रीष्म-काल, गरमी ।
निदाघकर—पु० सूर्य ।
निदान—पु० कारण,आदि कारण, रोगका निश्चय (रामा० २२५) । अन्त । वि० निकृष्ट,निम्न श्रेणीका । क्रिवि० [अन्तमें ।
निदारुण—वि० कठिन, निर्दय । असहनीय ।
निदाह—पु० निदाघ, गरमी ( दास १०२ ) ।
निदिध्यासन—पु० बार बार ध्यानमें लानेकी क्रिया ।
निदेश, निदेस—पु०आज्ञा,शासन,कथन (विन० २४९) ।
निदोष—वि० दोषरहित ।
निद्र—पु० अस्त्र-विशेष ।
निद्रा—स्त्री० नींद ।
निद्रायमान—वि० जो सो रहा हो ।
निद्रालु—वि० सोनेवाला, निद्राग्रस्त ।
निद्रित—वि० सोया हुआ, सुप्त ।
निधड़क—क्रिवि० बेखटके, निस्संकोच रूपसे ।
निधन—वि० धनहीन । पु० मृत्यु, नाश ।
निधनी—वि० धनहीन, दरिद्र ।
निधरक—क्रिवि० देखो 'निधड़क' ।
निधान—पु० आश्रय, घर, खजाना ।
निधि—स्त्री० खजाना, सम्पत्ति । घर । समुद्र ।
निधिप,-पति,-पाल, निधीश—पु० कुबेर, धनपति ।
निनरा—वि० न्यारा, दूर ।
निनरुई—स्त्री० अकेली कन्या ( ग्राम० ३१ ) ।
निनाद—पु० ध्वनि, आवाज़ ।
निनादना—अक्रि० आवाज करना ( प्रिय० १३५ ) ।
निनादित—वि० ध्वनित, शब्दित ।
निनादी—वि० ध्वनि या आवाज़ करनेवाला ।
निनान—पु० निदान, अन्त । क्रिवि० अन्तमें वि० निकृष्ट । घोर, बिलकुल ।
निनार,निनारा—वि० न्यारा, जुदा, दूर (उदे०'अंदेस'), 'वे हरिजल हम मीन बापुरी कैसे जिवहिं निनारे ।' सू० २७२ । निराला, अनोखा, चोखा 'ऐसेमें कोऊ खाज ज्यों केशव मारत कामहु बाण निनारे ।' के० ६१
निनावाँ—पु० जीभपर छोटे छोटे लाल दानोंका पड़ जाना ।
निनौना—सक्रि० नवाना, झुकाना ।
निनौरा—पु० ननिहाल ।
निन्यानवे—वि० एक कम सौ । पु० ९९ की संख्या ।
निन्यारा—वि० न्यारा, जुदा ।

निपंग—वि० हाथ पाँवसे हीन, निकम्मा (साखी १२८)।
निपजना—अक्रि० उत्पन्न होना 'ऊसरमें बोये कहा निपजत अन है।' सुन्द० १३। बढ़ना, बनना।
निपजी—स्त्री० उत्पत्ति, उपज। लाभ।
निपट—अ० बिलकुल, निरा (उदे० 'कौढ़ी')।
निपटना—दे० 'निबटना'।
निपटाना—सक्रि० पूरा करना, चुकाना, निर्णीत करना।
निपटारा, निपटेरा—पु० समाप्ति, निर्णय, छुट्टी।
निपत्र—वि० पत्रविहीन।
निपाँगुर—वि० अपाहिज।
निपात—पु० पतन, नाश, मृत्यु। वि० पत्रहीन।
निपातना—सक्रि० गिराना 'करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता।' रामा० २१५। मारना (उदे० 'खेत')। काटकर गिराना 'केहि तव नासा कान निपाता।' रामा ३७५, (३६३ भी)।
निपाती—वि० गिरानेवाला। पत्रहीन।
निपीड़क—पु० पीड़ित करनेवाला, पेरनेवाला।
निपीड़ना—सक्रि० पीड़ित करना, दबाना, मलना।
निपीड़ित—वि० जिसे कष्ट दिया गया हो, आक्रान्त, [निचोड़ा हुआ।
निपुण—वि० चतुर, प्रवीण।
निपुणाई—स्त्री० चतुरता, कुशलता।
निपुत्री—वि० निस्सन्तान।
निपुन—वि० देखो 'निपुण'।
निपुनई,-नता,-नाई—स्त्री० चतुरता, दक्षता।
निपूत, निपूता—वि० निस्सन्तान।
निपोड़ना—सक्रि० (दाँत) निकालना, खोलना।
निफन—वि० पूर्ण। क्रिवि० पूर्ण रूपसे, अच्छी तरह।
निफरना—अक्रि० धँसकर आरपार निकलना। स्पष्ट [होना, प्रकट होना।
निफल—वि० निष्फल, व्यर्थ।
निफारना—सक्रि० छेदना, आरपार करना।
निफोट—वि० साफ साफ।
निबंध—पु० बन्धन। लेख। शर्त।
निबंधन—पु० बन्धन, कर्त्तव्य। कारण।
निबकौरी—स्त्री० देखो 'निंबकौरी'।
निबटना—अक्रि० छुट्टी पाना, समाप्त होना, निवृत्त होना, निर्णीत होना।
निबटाना—सक्रि० देखो 'निबटाना'।
निबटाव, निबटेरा—पु० निर्णय, छुट्टी, समाप्ति।
निबड़—वि० देखो 'निबिड़'।
निबड़ना—अक्रि० देखो 'निबटना'।
निबद्ध—वि० बँधा या रुका हुआ।
निबर—वि० देखो 'निबल', (कबीर २१३)।
निबरना—अक्रि० छूटना, फन्देसे निकलना, मुक्त होना। फुरसत पाना (उदे० 'गुदरना')। अलग होना, सुलझना। चुकना, न रह जाना 'जूझि कुँवर सब निबरे, गोरा रहा अकेल।' प० ३२०। सपरना, पूरा होना। [निर्णय होना।
निबल—वि० निर्बल, अशक्त।
निबलाई—स्त्री० निर्बलता, क्षीणता, 'निबलाई नित शीत की शिशिर मोंहि बरनत'—ग्वाल १९।
निबह—पु० समूह।
निबहना—अक्रि० निर्वाह होना (उदे० 'अंधधुध')। 'तौ कलि कठिन करम-मारग जड़ हम केहि भाँति निबहते।' विन २५३। पालन होना, सपरना, पूरा होना 'सखा धर्म निबहइ केहि भाँती।' रामा० ४३८। समाप्त होना 'सब निबहै तहँ आपनि साँठी।' प० ५८, (अ० १३१), निपटना, छुट्टी पाना।
निबहुर—वि० जहाँसे कोई न लौटे (बहुरना=लौटना), 'सो दिल्ली अस निबहुर देसू। कोइ न बहुरा कहै संदेसू।' प० २९१
निबाह—पु० निर्वाह (उदे० 'अंत')। पालन, गुजारा, बचनेका रास्ता। परम्परा या सम्बन्धकी रक्षा।
निबाहना—सक्रि० निर्वाह करना, बनाये रखना (उदे० 'ओर' पालन करना, पूरा करना, मुक्त करना, निकालना 'आजु बयरु सब लेउँ निबाही। जौं रन भूप भाजि नहिं जाही।' रामा० ५०५, (मति० १८९)
निबिड़—वि० घोर, घना, गहरा।
निबुआ—पु० नीबू।
निबुकना—अक्रि० बन्धनसे मुक्त होना, बन्धनका खुल जाना 'सुग्रीवहुँ कै मुरछा बीती। निबुक गयेउ तेहि मृतक प्रतीती।' रामा० ४८७
निबेड़ना, निबेरना—सक्रि० निबटाना, पूरा करना, वसूल करना 'सूर मूर अक्रूर गये लै ब्याज निबेरत ऊधो।' भ्र० २६। निर्णय करना। मुक्त करना, बचाना (उदे० 'दाँड़ा'), सुलझाना, अलग करना '...नाम मिट्यो सलिलै भई तब कौन निबेरै वारी।' सू० १०८। दूर करना 'लखन राम सिय आनहु फेरी। संसय

सकल सँकोच निबेरी।' रामा० २४४। त्यागना ( उदे० 'जीरना' )। चुनना, छाँटना।
निबेड़ा, निबेरा—पु० निबटारा, फैसला। मुक्ति, विलगाव।
निबेड़ना—सक्रि० देखो 'निबेड़ना'।
निबौरी, निबौली—स्त्री० नीमका फल 'जीभ निबौरी क्यों लगे बौरी चाखि अँगूर।' बि० ८४
निभ—पु० चमक-दमक। वि० समान।
निभना—अक्रि० निबहना, गुजारा होना, पार पाना, पूरा होना, पालन होना 'कहु रहीम कैसे निभै केर बेरको संग।' रहीम १४
निभरम—वि० भ्रमरहित। क्रिवि० बेखटके (विन० ५६५)।
निभरना—वि० जिसकी पोल खुल गयी हो, जिसकी थाप या प्रतीति न रह गयी हो।
निभरोस, निभरोसी—वि० निराश, निराधार 'कीन्हेसि कोइ निभरोसी कीन्हेसि कोइ बरियार। प० २
निभागा—वि० हतभाग्य, बदक़िस्मत।
निभाना—सक्रि० देखो 'निबाहना'।
निभाव—पु० देखो 'निबाह'। [ अचल।
निभृत—वि० धरा हुआ, गुप्त, एकान्त। शान्त, नम्र।
निभ्रांत—वि० भ्रान्तिरहित, यथार्थ ज्ञानी, सन्देह रहित।
निमंत्रण—पु० किसी कार्यमें सम्मिलित होनेका अनुरोध, [ बुलावा, न्योता।
निमंत्रना—सक्रि० निमन्त्रण देना।
निमंत्रित—वि० जिसे निमन्त्रण दिया गया हो, जो बुलाया [ गया हो।
निमक—पु० नमक, लवण।
निमकी—स्त्री० नीबूका अचार। नमकीन टिकिया।
निमग्न—वि० डूबा हुआ, तल्लीन।
निमज्जन—पु० जलप्रवेश, अवगाहन, स्नान।
निमज्जना—सक्रि० डुबकी लगाना, स्नान करना।
निमज्जित—वि० डूबा हुआ।
निमटना ; निमटेरा—दे० 'निबटना', 'निबटेरा'।
निमता—वि० जो मतवाला न हो।
निमाज—स्त्री० देखो 'निवाज' स्त्री०।
निमान—पु० नीची जगह, सरोवर। देखो 'निवान'।
निमाना—वि० नीचा, नीचेकी ओर प्रवृत्त, विनीत।
निमि—पु० राजा जनकके वंशके प्रवर्त्तक। निमेष, आँखकी पलक। [ समय लगता है उतना।
निमिख—पु० पलकोंका गिरना, पलकोंके गिरनेमें जितना
निमित्त—पु० कारण। शकुन, चिह्न।
निमित्तकारण—पु० वह कारण जिसकी सहायतासे किसी वस्तुका निर्माण हो।
निमिराज—पु० निमि वंशके राजा जनक।
निमिष—पु० देखो 'निमिख'।
निमीलन—पु० पलक मारनेकी क्रिया। निमेष, क्षण।
निमीलित—वि० बन्द। मृत।
निमूँद—वि० बन्द।
निमेख, निमेष—पु० पलकका गिरना, पलक गिरने भरका समय। स्त्री० पलक 'देखे राम-लषन, निमेषैं बिथकित भईं।' कविता० ३०४
निमेट—वि० न मिटनेवाला, स्थायी ( प० ८४ )।
निमोना—पु० हरे चने या हरी मटरके दानोंकी तरकारी।
निम्न—वि० नीचा।
निम्नग—वि० नीचे जानेवाला।
निम्नगा—स्त्री० ( नीचे जानेवाली ) नदी।
नियंता—पु० नियन्त्रण या शासन करनेवाला, शिक्षक, [ विधायक।
नियंत्रित—वि० नियमबद्ध, प्रतिबद्ध।
निय—वि० निज ( उदे० 'खत' )। [ नीयत, इच्छा।
नियत—वि० निश्चित, मुकर्रर, परिमित, स्थापित। स्त्री०
नियति—स्त्री० नियत होनेकी क्रिया, स्थिरता। भाग्य।
नियम—पु० विधि, कानून। व्रत। शासन, नियन्त्रण। परम्परा।
नियमन—पु० नियन्त्रण, शासन, व्यवस्था।
नियमबद्ध—वि० नियमोंके अनुकूल।
नियमित—वि० व्यवस्थित, क्रमानुसार, नियमानुसार।
नियर—क्रिवि० पास, निकट।
नियराई—स्त्री० निकटता।
नियराना—अक्रि० पास पहुँचना 'बरसहिं जलद भूमि नियराये।' रामा० ४०२, ( ४१० भी, उदे० 'दुराना')
नियरे—क्रिवि० समीप, पास (उदे० 'ठैयाँ', भू०, १५७)
नियाई—वि० न्यायी 'जो जस करिहै सो तस पइहै, राजा राम नियाई।' कबीर १५६
नियाउ—देखो 'न्याव'।
नियाज—स्त्री० आरजू, तमन्ना। पु० मिन्नत, चढ़ावा। मुलाक़ात ( कर्म० ३२१ ), भेंट।
नियान—पु० निदान, परिणाम। क्रिवि० अन्तमें।
नियामक—पु० नियम बाँधनेवाला, प्रबन्ध करनेवाला। माँझी
नियामत—स्त्री० रुचिकर भोजन। दुर्लभ वस्तु। धन।

नियारना—सक्रि० अलग करना, हटाना 'गुप्त प्रीति परगट करौं कुलकी कान नियारि री।' सूबे० ११७

नियारा—वि० न्यारा, अलग ( सूबे० ३४४, अ० १ )।

नियाव—पु० नीति, न्याय, इन्साफ 'जाइ सरग पर होइहि एहि कर मोर नियाव।' प० २०१

नियुक्त—वि० लगाया हुआ, मुकर्रर।

नियुक्ति—स्त्री० नियुक्त किये जानेकी क्रिया या भाव, [ तैनाती।

नियुत—वि० एक लाख। दस लाख।

नियोक्ता—पु० नियोजित करनेवाला, तैनात करनेवाला।

नियोग—पु० नियुक्ति, प्रेरणा। आज्ञा। सन्तान उत्पन्न करानेकी एक प्रथा।

नियोजक—पु० तैनात करनेवाला, काममें लगानेवाला।

नियोजन—पु० काममें लगाना। आदेश।

नियोजित—वि० नियुक्त किया हुआ, मुकर्रर।

नियोद्धा—पु० मल्ल, पहलवान।

निरंकार—वि० निराकार 'अक्षर अच्युत निर्विकार है निरंकार है जोई।' सूबे० २२४

निरंकुश—वि० प्रतिबन्धरहित, मनमानी करनेवाला।

निरंग—वि० बेरंग, फीका, धूमिल, उदास। अङ्गहीन, ख़ाली।

निरंजन—वि० अञ्जनविहीन, मायारहित। पु० ईश्वर। निर्मल 'कैसा निरंजन यह अंजन आ लग गया।' अनामिका ५

निरंतर—क्रिवि० हमेशा, बराबर। वि० अविच्छिन्न, लगातार, घना। स्थायी। जिसमें फ़र्क न हो।

निरंतरता—स्त्री० स्थायित्व। [ निबिड़ अन्धकारयुक्त।

निरंध—वि० बिलकुल अन्धा ( साखी १३ ), महामूर्ख

निरंभ—वि० निर्जल। जो पानी बिना रह जाय।

निरकार—वि० निराकार ( कबीर १९२ )।

निरक्षन—पु० निरीक्षण, देखरेख, अवलोकन।

निरक्षर—वि० जो अक्षर भी पढ़ा न हो, अपढ।

निरखना—सक्रि० ताकना, देखना।

निरगुन—वि० निर्गुण; सत्व, रज, तमसे परे। गुणहीन, [ बुरा।

निरगुनिया, निरगुनी—वि० गुणरहित।

निरच्छ—वि० चक्षुविहीन, अन्धा।

निरजर—वि० जो कभी जीर्ण न हो 'बरनै दीनदयाल चलो निरजर सर पाहीं। जहाँ जलजकी खानि सदा सुख है दुख नाहीं।' दीन० २०९। पु० देवता।

निरजल—दे० 'निर्जल'।

निरजोस—पु० निचोड़। निश्चय, निर्णय 'राम तुम्हहिं प्रिय तुम प्रिय रामहिं। एह निरजोस दोसु बिधि बामहिं। रामा० २९५

निरजोसी—पु० निर्णयकर्त्ता ( रवि० ४२ )

निरझर—पु० झरना, पानीका सोता।

निरझरनी—स्त्री० नदी, पहाड़ी नदी।

निरत—पु० नृत्य 'पंगू करै निरत अहलाद।' सुन्द० ८७। वि० लीन, लगा हुआ। क्रिवि० निरन्तर ( उत्तर० २३, ६७, ८२ )।

निरतना—अक्रि० नृत्य करना 'चलत कुण्डल गण्ड-मण्डल, मनो निरतत मैन।' सू० २०, ( कबीर १४० )

निरति—स्त्री० लीन होनेका भाव ( कबीर १४ )। अधिक प्रीति।

निरतिशय—वि० परमोत्कृष्ट। पु० ईश्वर।

निरदई, निरदय—वि० कठोर, निष्ठुर ( उद्दे० 'कजाक' )।

निरधन—वि० धनहीन, दरिद्र।

निरधातु—वि० वीर्यहीन, अशक्त।

निरधार—पु० ठहरानेका काम, ठहराव, निश्चय। वि० आधाररहित 'निस्प्रेही निरधारका, गाहक दीनानाथ।' साखी १४०। क्रिवि० निश्चयपूर्वक 'ये रक्षा करिहैं सदा, यह जानौ निरधार।' छत्र० ७९, ( वि० ७८ )

निरधारना—सक्रि० ठहराना। समझना 'नीति निरधारौ नहिं मारौ नाथ दूतै'—रघु० २२४

निरनउ, निरनय, निरनै—पु० निर्णय, निश्चय, फैसला

निरन्न—वि० अन्नरहित, निराहार। [ ( रामा० २८७ )।

निरपना—वि० अपना नहीं, बिराना ( कविता० २२१ )।

निरपराध, -राधी—वि० निर्दोष।

निरपवाद—वि० अपवादरहित, निर्दोष।

निरपेक्ष—वि० जिसे किसी बातकी अपेक्षा न हो, उदासीन, जो किसीपर निर्भर न हो।

निरपेक्षी—वि० अपेक्षा न रखनेवाला, इच्छा न रखनेवाला, सम्बन्ध न रखनेवाला।

निरफल—वि० निष्फल, व्यर्थ 'निरफल जैहैं सकल कला पैहै कछु नाहीं।' दीन० २२३

निरबंध—वि० बन्धनहीन। पु० परमात्मा 'कर सेवा निरबंधकी पलमें लेत छुड़ाय।' साखी १४

निरबंसी—वि० निस्सन्तान।

निरबर्त्ती—वि० त्यागी, वैरागी।

निरबल—वि० बलहीन, अशक्त ।
निरबहना—अक्रि० निबहना, निर्वाह होना 'तुलसी प्रभु जवतव जेहि तेहि विधि राम निवाहे निरबहौं ।' विन० ५१० [ 'ठयना' ) । गमन, समाप्ति ।
निरवान—पु० शान्ति, मोक्ष (विन० ४४८, उदे०'आंक',
निरवाह—पु० देखो 'निर्वाह', ( उदे० 'झार' ) ।
निरवाहना—सक्रि० निर्वाह करना, बनाये रखना, पूरा करना 'मज्जन हेत गये नद तटपर प्रात कृत्य निरवाही ।' रघु० ७४
निरवेद—पु० वैराग्य (मति० २१३) । ताप, अनुताप ।
निरभय—वि० निडर, निःशङ्क ।
निरभिमान—वि० अभिमानरहित ।
निरभै—देखो 'निरभय' ( भू० ६७ ) ।
निरभ्र—वि० मेघरहित ।
निरमना—सक्रि० निर्माण करना 'बंदउँ मुनि पद कंजु रामायन जेहि निरमयेउ ।' रामा० १४
निरमर, निरमल—वि० शुद्ध,स्वच्छ, पापरहित, उज्ज्वल 'कीन्हेंसि बहुतै नग निरमरे ।' प० १
निरमाना—सक्रि० देखो 'निरमना' ।
निरमायल—पु० देवार्पित वस्तु, 'निर्माल्य' ।
निरमूलना—सक्रि० उखाड़ना, नष्ट करना ।
निरमोल, निरमोलिक, निरमोलिका—वि० जिसका मूल्य न लग सके, अनमोल 'राम नाम हिरदै धरि निरमोलिक हीरा ।' कबीर १९७, 'यह हीरा निरमोलिका कौड़ी पर बीका ।' कबीर १४८
निरमोही—वि० स्नेहहीन, ममतारहित, निर्दय ।
निरय—पु० नरक ( सू० २८२ ) ।
निरर्थ—वि० व्यर्थ ।
निरर्थक—वि० अर्थहीन, व्यर्थ, निष्फल ।
निरलंकार—वि० अलङ्कारहीन ।
निरलस—वि० आलस्यहीन ।
निरवच्छिन्न—वि० निरन्तर, जिसका सिलसिला न टूटे ।
निरवद्य—वि० दोषरहित, अनिन्द्य ।
निरवधि—वि० असीम । लगातार, सतत ।
निरवयव—वि० अङ्गरहित, आकारविहीन ।
निरवलम्ब—वि० अवलम्बरहित, आश्रयहीन ।
निरवसाद—वि० अवसादहीन ।
निरवार—पु० निबटारा, छुटकारा । सुलझानेका काम ।
निरवारना—सक्रि० निवारण करना, दूर करना, त्यागना 'तरिवँन स्रवन फाँसि गर डारति, कैसेहुँ नहीं सकत निरवारि ।' सू० १०५ । बन्धन खोलना, सुलझाना 'बड़े बार श्रीवंत शीशके प्रेम सहित लै लै निरवारति ।' सूवे० ८२, ( १५८, १८२ भी ) निबटाना ।
निरवाह—पु० देखो 'निबाह' ।
निरवाहना—सक्रि० देखो 'निरबाहना', प्रात कृत्य निरवाहिकै करि मज्जन तत्काल ।' रघु० १३०
निरशन—पु० अनशन, लङ्घन ।
निरसंक—वि० निःशङ्क,भयरहित, निर्भीक (रामा० २७), 'तेरी मुख समता करी, साहस करि निरसंक ।' मति० १७४, ( १८९ )
निरस—वि० रसहीन, फीका,रूखा, निस्तत्व । विरक्त ।
निरसन—पु० हटाना, निराकरण, नाश । अनशन ।
निरस्त—वि० फेंका हुआ, निकाला हुआ, वर्जित ।
निरस्त्र—वि० जिसके पास कोई अस्त्र न हो ।
निरहंकार—वि० जिसे अहङ्कार न हो ।
निरहेतु—वि० कारणरहित ।
निरा—वि० बिलकुल, नितान्त, विशुद्ध ।
निराई—स्त्री० खेतसे घासपात दूर करनेका काम या उसकी मज़दूरी ।
निराकरण—पु० दूरीकरण, निवारण, शमन ।
निराकांक्षी—वि० जिसे किसी बातकी कांक्षा न हो,निस्पृह ।
निराकार—वि० जिसका कोई आकार न हो । पु० ईश्वर ।
निराकुल—वि० अक्षुब्ध, व्याकुल नहीं । अत्यन्त व्याकुल, परेशान 'व्याकुल बाहु निराकुल बुद्धि थक्यो बल बिक्रम लङ्कपतीको ।' राम० ७७
निराकृति—वि० आकारहीन ।
निराखर—वि० बिना अक्षरका । अशिक्षित, अपढ़ । मौन ।
निराट—वि० अकेला,निपट,बिलकुल 'कोउक अङ्ग विभूति लगावत, कोउक होत निराट दिगम्बर ।' सुन्द० ६७
निरादर—पु० अपमान, तिरस्कार । [ जलके बिना ।
निराधार—वि० आश्रयहीन । मिथ्या, बेबुनियाद । अ०
निराना—सक्रि० खेतसे घासपात दूर करना, नींदना ।
निरापद—वि० सुरक्षित, जहाँ किसी तरहकी विपत्ति आशङ्का न हो ।
निरापन,-पुन—वि० पराया 'बिनु जिय सवइ निरापुन होई ।' प० ९१ ( पाठ० )

निरामय—वि० नीरोग, स्वस्थ । निर्मल 'जाति जीवन हो निरामय' अणिमा १६ । [ न हो ।

निरामिष,-मिख—वि० मांसरहित । जो मांसाहारी

निरार, निरारा—वि० न्यारा, अलग ( उदे० 'गज-पति' ), 'सारस पंखि न जियै निरारे । हौं तुम बिन का जियौं पियारे ।' प० ३३० ( पाठ० )

निरालंब—वि० अवलम्बरहित, आश्रयहीन ।

निरालस,-लस्य—पु० आलस्यका अभाव । वि० जिसमें आलस्य न हो । [ बढ़िया । पु० एकान्त स्थान ।

निराला—वि० निर्जन । अनोखा, न्यारा । अद्भुत,

निरावना—सक्रि० देखो 'निराना', कृषी निरावहिं चतुर किसाना ।' रामा० ४०३

निरावरण—वि० आवरणहीन, खुला हुआ ।

निरावृत्त—वि० जो ढँका न हो, खुला हुआ (ज्यो० १६) ।

निराश—वि० जिसे आशा न हो, आशाहीन ।

निराशा,-सा—स्त्री० नाउम्मेदी ।

निराशी,-सी—वि० नाउम्मेद । उदास, विरक्त ।

निराश्रय—वि० निराधार, असहाय ।

निराहार—वि० आहाररहित, जिसने भोजन न किया हो ।

निराह्लाद—वि० आह्लादरहित ।

निरिच्छना—सक्रि० निरीक्षण करना, देखना ।

निरीक्षक—पु० देखरेख करनेवाला, देखनेवाला ।

निरीक्षण—पु० देखनेका काम, निगरानी, जाँच ।

निरीक्षित—वि० जो देखा गया हो, जिसकी जाँच की [गयी हो ।

निरीश,-स—वि० स्वामिविहीन, नास्तिक ।

निरीश्वरवादी—पु० ईश्वरका अस्तित्व न माननेवाला ।

निरीह—वि० इच्छारहित, चेष्टारहित, उदासीन ।

निरीहता—स्त्री० गरीबी, अकिंचनता ।

निरुआरना—सक्रि० देखो 'निरुवारना' ।

निरुक्त—वि० जो कहा गया हो, जिसकी व्याख्या की गयी हो । निश्चित किया हुआ । पु० वेदका चतुर्थ अङ्ग ।

निरुक्ति—स्त्री० एक अर्थालङ्कार 'जहँ नामनको अर्थ कछु कल्पित कीन्हो जाय ।'

निरुज—वि० नीरुज, निरोग, विकाररहित ।

निरुत्तर—वि० जिसका कोई उत्तर न हो । उत्तर न दे [सकनेवाला ।

निरुत्साह—वि० उत्साह-रहित ।

निरुद्देश—वि० उद्देश्यहीन ।

निरुद्ध—वि० रोका हुआ, दबाया हुआ, बन्द किया हुआ ।

निरुद्यम—वि० उद्यमहीन, बेकार ।

निरुद्यमी—वि० जो उद्यमहीन हो, बेकार ।

निरुद्योग, निरुद्योगी—वि० जो उद्योगहीन हो, बेकार ।

निरुपद्रव—वि० उपद्रवरहित, जो उपद्रव न करता हो ।

निरुपधि—वि० उपाधिरहित, मायारहित । जो उपद्रव न करे ( रामा० १४, २४ ) ।

निरुपम—वि० अनुपम, अद्वितीय ।

निरुपमा—स्त्री० अनुपम होनेका भाव, अनुपम ।

निरुपमित—वि० अनुपम ।

निरुपयोगी—वि० व्यर्थ, निकम्मा ।

निरुपाधि—वि० देखो 'निरुपधि' ।

निरुपाय—वि० जो कोई उपाय न कर सके, लाचार । जिसका कोई उपाय न हो ।

निरुवरना—अक्रि० सुलझना, छुटकारा पाना ।

निरुवार—पु० सुलझाने या छुड़ानेका काम, निर्णय ।

निरुवारना—सक्रि० छुड़ाना ( गीता० २९६ ), निबटाना । सुलझाना 'निज कर जटा राम निरुवारे ।' रामा० ५४२

निरूढ—वि० उत्पन्न । प्रसिद्ध । अविवाहित ।

निरूप—वि० रूपरहित । कुरूप ।

निरूपण—पु० विवेचनापूर्ण निश्चय, विचार, निदर्शन ।

निरूपना—सक्रि० निश्चित करना, ठहराना ।

निरूपित—वि० ठहराया गया, रचित ।

निरेखना—सक्रि० देखना ।

निरै—पु० निरय, नरक 'जग कोउ न भूलिहु जाय निरै मग । मिटिगे सब पापन पुन्यनके नग ।' के० २७२

निरोग—वि० नीरोग, स्वस्थ ।

निरोध—पु० रुकावट । नाश । घेरा, अवरोध 'यहि भाँति भयो लंका निरोधु ।' राम० ४२३.

निरोधक, निरोधी—वि० निरोध करनेवाला, रोकनेवाला ।

निर्ख—पु० भाव, दर ।

निर्खबंदी—स्त्री० निर्ख निश्चय करनेका काम ।

निर्गंध—वि० गन्धहीन ।

निर्गत—वि० बाहर आया हुआ, निकला हुआ । पु० निर्यात ।

निर्गमना—अक्रि० बाहर निकलना 'इक प्रविसहिं इक निर्गमहिं भीर भूप दरबार ।' रामा० २१०

निर्गुण—वि० गुणहीन, गुणोंसे परे । पु० ईश्वर ।

निर्गुन—वि० देखो 'निर्गुण' या 'निरगुन' ।

निर्घात—पु० हवाका शब्द, बिजलीकी कड़कड़ाहट (रामा० २९९) तूफ़ान।
निर्घृण—वि० जिसे घृणा न हो, निर्लज्ज, नीच, निर्दय।
निर्घोष—वि० शब्दरहित। पु० आवाज़।
निर्छल—वि० निष्कपट।
निर्जन—वि० जनशून्य, एकान्त।
निर्जर—वि० देखो 'निरजर' पु० देवता।
निर्जल—वि० बिना जलका, जलरहित।
निर्जित—वि० जो जीत लिया गया हो, वशीकृत।
निर्जीव—वि० जीवरहित,प्राणहीन, बेदम, उत्साहरहित।
निर्जीवन—वि० जीवनहीन।
निर्जीवित—वि० जीवनहीन, सारहीन, निरर्थक।
निर्झर—पु० देखो 'निरझर'।
निर्झरिणी—स्त्री० नदी।
निर्झरी—पु० पहाड़। स्त्री० पहाड़ी नदी।
निर्णय—पु० फैसला, निश्चय।
निर्णायक—पु० निर्णयकर्ता, न्यायकर्ता।
निर्णीत—वि० निर्णय किया हुआ, जिसका निर्णय हो चुका हो।
निर्त—पु० नृत्य, नाच (सू० ८०)।
निर्तक—पु० नाचनेवाला। भाँड़।
निर्तना—अक्रि० नाचना 'सूर स्याम काली पर निर्तत आवत ब्रजकी वोर। सू० ७९
निर्दंभ—वि० जिसमें दम्भ न हो, गर्वहीन।
निर्दई, निर्दय—वि० कठोर, निष्ठुर।
निर्दहना—सक्रि० दग्ध करना, जला देना।
निर्दिष्ट—वि० जिसका निर्देश या निश्चय हो चुका हो, ठहराया हुआ।
निर्दूषण—वि० दोषरहित।
निर्देश—पु० किसी चीजको बतलाना, निश्चय, उल्लेख, वर्णन, आज्ञा, नाम।
निर्दोष—वि० निरपराध, दोषरहित, बेऐब।
निर्दोषी,-सी—वि० जिसका कोई अपराध न हो।
निर्द्वंद्व—वि० जिसका कोई विरोधी न हो, स्वतन्त्र, राग-द्वेषादिसे परे।
निर्धन—वि० ग़रीब, दरिद्र।
निर्धार—पु० देखो 'निरधार'।
निर्धारक—पु० निर्धारित करनेवाला, निर्धारण-कर्ता।
निर्धारना—सक्रि० देखो 'निरधारना'।
निर्धारित—वि० ठहराया हुआ, निश्चित किया हुआ।
निर्धूत—वि० धोया हुआ। टूटा हुआ, परित्यक्त।

निर्धूम—वि० धूमसे रहित।
निर्निमेष—वि० जिसमें पलक न गिरे। क्रिवि० एकटक।
निर्निमेषी—वि० एक टक देखनेवाला।
निर्पक्ष—वि० निष्पक्ष, पक्षपातरहित।
निर्फल—वि० व्यर्थ 'जबलगि भगति सकामना तबलगि निर्फल सेव।' कबीर १९
निर्बंध—पु० बाधा, रुकावट, आग्रह। वि० बन्धनहीन, मुक्त 'बाँधतीनिर्बन्धको मैं बन्दिनी निज बेड़ियाँगिन' साध्यगीत ७४
निर्बल—वि० अशक्त, असहाय, कमज़ोर।
निर्बहना—अक्रि० निभना, पार होना, दूर होना।
निर्बाध—वि० बाधारहित।
निर्बाधित—वि० निर्बन्ध, जो बाधा रहित हो गया हो।
निर्बुद्धि—वि० बुद्धिहीन, नासमझ, मूर्ख।
निर्भय—वि० निडर, भयरहित।
निर्भार—वि० भारहीन हलका।
निर्बोध—वि० अज्ञान, नासमझ।
निर्भयता—स्त्री० निर्भय होनेका भाव, बेख़ौफ़ी।
निर्भर—वि० अवलम्बित। भरा हुआ, युक्त, पूर्ण, खूब (रामा० १६२)।
निर्भीक—वि० निडर, निश्शंक।
निर्भ्रम—वि० शकारहित। क्रिवि० बेखटके, आनन्दपूर्वक 'स्यामा स्याम सुभग यमुना जल निर्भ्रम करत विहार।' सू० १५४
निर्भ्रांत—वि० जिसको कोई भ्रम न हो, जिसमें कोई भ्रम न हो, निश्चित।
निर्मना—सक्रि० बनाना, उत्पन्न करना 'जिन यह बेदन निर्मई भला करेगा सोय।' साखी ४७
निरमम निर्मम—वि० ममतारहित, वासनाहीन।
निर्मल—वि० स्वच्छ, शुद्ध, पापरहित।
निर्मली—स्त्री० वृक्ष विशेष।
निर्माण—पु० बनानेकी क्रिया। बनावट, रचना, सृष्टि।
निर्माता—पु० रचयिता, बनानेवाला।
निर्मान—वि० मानरहित, अगणित, अपार।
निर्माना—सक्रि० देखो निर्मना'।
निर्मालय, निर्माल्य—पु० देवार्पित वस्तु 'ये दससीस ईस निर्मालय कैसे चरन छुआऊँ।' सू० ३८
निर्मित—वि० रचित, कृत, बनाया हुआ।
निर्मूल—वि० बिना जड़का, बेबुनियाद। जड़से उखाड़ा
निर्मेघ—वि० मेघहीन।

निर्मोक—पु० केंचुल 'पुरातनताका यह निर्मोक सहन करती न प्रकृति पल एक।' कामायनी २५
निर्मोल—वि० बहुमूल्य, अमूल्य ( उदे० 'घरी' )।
निर्मोह, निर्मोही—वि० निर्दय, निष्ठुर।
निर्यात—पु० रफ्तनी, विदेश भेजा गया माल।
निर्यातन—पु० वैरशुद्धि। प्रतिदान।
निर्यास—पु० बहकर बाहर निकलना, क्षरण। रस। काढ़ा।
निर्लज्ज—वि० लज्जारहित, बेशर्म।
निर्लिप्त—वि० जो लिप्त न हो, विषय-भोगादिसे मुक्त।
निर्लोभ, निर्लोभी—वि० लोभरहित, जो लालच न करे।
निर्वचन—पु० उच्चारण। पद या वाक्यकी ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदिका पूरा कथन हो।
निर्वसन—वि० वस्त्रहीन।
निर्वहण—पु० निर्वाह। नाटककी एक सन्धि। कथाका [अन्त।
निर्वहना—सक्रि० देखो 'निर्बहना'।
निर्वाक्—वि० जिसके मुँहसे शब्द न निकले, जो मौन हो।
निर्वाचक—पु० मत देनेवाला, चुननेवाला।
निर्वाचन—पु० चुनाव।
निर्वाचित—वि० चुना हुआ।
निर्वाण—पु० शान्ति, समाप्ति। ठंढा होना। मोक्ष। वि० बुझा हुआ, डूबा हुआ, शान्त। मृत। वाणरहित।
निर्वात—वि० वायुहीन।
निर्वासन—पु० बाहर निकलनेकी क्रिया, देश निकाला।
निर्वासित—वि० देशसे निकाला हुआ, स्थानान्तरित, परिवर्तित 'हो गया उदधि जीवनका सिकता कणमें निर्वासित' रश्मि ३३
निर्वाह—पु० पालन, निबाह, जारी रह सकना।
निर्वाहना—सक्रि० निर्वाह करना, पालन करना।
निर्विकल्प—वि० विकल्परहित, परिवर्त्तनरहित, स्थिर। —समाधि = वह समाधि जिसमें ज्ञाता और ज्ञेयका भेद नहीं रह जाता ( पभू० १७२ )।
निर्विकार—वि० जिसमें किसी प्रकारका विकार न हो, विकाररहित। [रुकावटके बिना।
निर्विघ्न—वि० बाधारहित। क्रिवि० किसी बाधा या
निर्विरोध—वि० विरोधहीन बिना रुकावटके।
निर्विवाद—वि० विवादरहित, जिसमें झगड़ा न हो।
निर्विशेष—वि० विशेषताहीन।
निर्वीज—वि० बीजरहित, कारणरहित।

निर्वीर्य—वि० वीर्यरहित, अशक्त, क्षीण, निस्तेज।
निर्वेद—पु० खेद, अपमान, अनुताप, विरति।
निर्वेदन—वि० वेदनाहीन, दयाहीन, कठोर।
निर्वैर—वि० वैररहित, द्वेषहीन।
निर्व्यलीक—वि० छलहीन।
निर्व्याज—वि० निश्छल, कपटरहित, बाधारहित।
निलज—वि० बेशर्म, बेहया (के० १४५, उदे० 'झहराना')।
निलजई, निलजता—स्त्री० बेहयाई, निर्लज्जता।
निलय, निलै—पु० भवन, ान 'पाइकै सूनौ निलै मिलि दूनौ बढ़ै सुख दूनो दुहूँ उर लावै।' दास १२७
निलहा—वि० नीलसम्बन्धी, नीलवाला।
निवछावर—स्त्री० देखो 'निछावर'।
निवना—अक्रि० नवना, झुकना 'जेहि जेहि डारी पग धरे, सो सो निव निव जाय।' साखी ८६
निवसना—अक्रि० निवास करना 'दम्पति उर धरि भगति कृपाला। तेहि आस्रम निवसे कछु काला।' रामा० ८६
निवह—पु० समूह, वृन्द।
निवाई—वि० नया, नूतन, निराला, विलक्षण।
निवाज—पु० दया दिखानेवाला, अनुग्रह करनेवाला। स्त्री० नमाज ( उदे० 'गुदारना' )।
निवाजना—सक्रि० कृपा करना, परवरिश करना 'सत गुरु मोहि निवाजिया, दीन्हा अम्मर बोल।' साखी १०, 'कौन गरीब निवाजिबो कितु तूठ्यो रतिराजु।' बि० ३०
निवाजिश—स्त्री० दया, अनुग्रह, मेहरबानी।
निवाड़—देखो 'निवार'।
निवान—पु० पानीयुक्त नीची जगह, सरोवर 'रूप रति आननतें चातुरी सुजाननतें नीर लै निवाननतें कौतुक निवेरो है।' ठाकुर
निवार—स्त्री० मोटे सूतकी बुनी हुई पट्टी, निवाड़। पु० एक तरहका धान, पसही। एक तरहकी मूली।
निवारक—पु० निवारण करनेवाला, दूर करनेवाला, बचानेवाला। [(उदे० 'जनमसंगाती')।
निवारण, रन—पु० रोक। बचाव। दूर करनेवाला
निवारना—सक्रि० दूर करना 'नीर की पीर निवारवे कारन, छीर घरी हीं घरी उफनातु है।' दास १०९, ( उदे० 'ओढ़ना' )। रोकना, मना करना ( उदे० 'प्राव' )। 'सैनहिं लखनहिं राम निवारे।' रामा० १५०। बचाना 'घोर जमालय जात निवार्यो सुतहित

सुमिरत नाम।' विन० ३५२। चुकाना 'पिछलो देहु निवारि आज सब, पुनि दीजो जब जानो कालि।'*

निवारी—स्त्री० चमेलीकी जातिका एक पौधा।

निवाला—पु० कौर, ग्रास।

निवास—पु० रहनेकी क्रिया। रहनेकी जगह, घर।

निवासी—पु० बसनेवाला, वासी।

निविड़—वि० घोर, घना, गहरा। चपटी नाकवाला।

निविष्ट—वि० घुसा हुआ। एकाग्र।

निवृत्त—वि० छूटा हुआ, मुक्त, विरक्त, फारिग।

निवृत्ति—स्त्री० पीछे हटना, विरक्ति, मुक्ति, छुटकारा।

निवेद—पु० नैवेद्य, देव-प्रसाद।

निवेदक—पु० निवेदन करनेवाला, प्रार्थी।

निवेदन—पु० प्रार्थना, विनय।

निवेदना—सक्रि० निवेदन करना, अर्पित करना।

निवेदित—वि० निवेदन किया हुआ। अर्पित।

निवेरना—सक्रि० देखो 'निबेरना'। हिसाब करना, वसूल करना।

निवेरा—वि० चुना हुआ। नया।

निवेश—पु० डेरा, शिविर, घर। विवाह। प्रवेश।

नव्वावज़ादी—स्त्री० नवाबकी पुत्री।

निशंक—वि० निडर।

निश, निशा—स्त्री० रात्रि।

निशांत—वि० बहुत शान्त। पु० रातका अन्त। घर।

निशाकर—पु० चन्द्रमा।

निशाखातिर—स्त्री० दिलजमई, तसल्ली।

निशाचर—पु० राक्षस। उल्लू। भूत। सियार। चोर।

निशाचरी—स्त्री० राक्षसी, कुलटा, अभिसारिका।

निशान—पु० चिह्न, लक्षण। देखो, 'निसान'।

निशाना—पु० लक्ष्य। लक्ष्यकी ओर अस्त्र साधना।

निशानाथ, निशापति—पु० रजनीपति, चन्द्रमा।

निशानी—स्त्री० स्मृतिचिह्न, निशान, लक्षण।

निशामुख—पु० सन्ध्याका समय। गोधूलिवेला।

निशास्ता—पु० गेहूँका सत, 'स्टार्च', माँड़ी।

निशि—स्त्री० रात्रि।

निशिकर, निशिनाथ, निशिपति—पु० चन्द्रमा।

निशिचर—पु० राक्षस, उल्लू, चोर, भूत।

निशित—वि० तेज़, पैना, धारदार। पु० लोहा।

निशिदिन,—वासर—क्रिवि० रात दिन, सर्वदा।

निशीथ—पु० रात्रि, मध्यरात्रि।

निशीथिनी—स्त्री० रात्रि।

निशुंभ—पु० हनन, वध। एक असुर।

निशेश—पु० चन्द्रमा।

निशोत्सर्ग—पु० प्रभात, प्रातःकाल।

निश्चय—पु० निर्णय, दृढ़ संकल्प, विश्वास।

निश्चल—वि० अटल, स्थिर।

निश्चलता—स्त्री० स्थिरता।

निश्चलत्—वि० स्थिर निस्पंद।

निश्चिंत—वि० बेफिक्र।

निश्चिंतई—स्त्री० बेफिक्री, चिन्ताका अभाव।

निश्चित—वि० तय किया हुआ, पक्का।

निश्चेतन—वि० चेतनाहीन, बेहोश। जड़।

निश्चेष्ट—वि० चेष्टारहित, बेसुध। स्थिर।

निश्चै—पु० देखो 'निश्चय'।

निश्छल—वि० निष्कपट, सीधा।

निश्वास—पु० बाहर निकलनेवाला श्वास।

निश्शंक—वि० शंकारहित, निडर।

निश्शरण—वि० शरणहीन, निरवलम्ब।

निश्शेष—वि० जिसका कुछ भी न बचा हो। समाप्त।

निषंग—पु० तूणीर, तरकश।

निषध—पु० एक देश जहाँके शासक राजा नल थे।

निषाद—पु० एक प्राचीन देश या प्राचीन जाति।

निषादी—पु० महावत (साकेत ३७६)।

निषिद्ध—वि० मना किया हुआ। अकरणीय, दूषित।

निषेध—पु० निवारण, मनाही, रुकावट।

निषेधक—पु० निषेध करनेवाला, मना करनेवाला।

निष्कंटक—वि० कण्टकहीन, बाधाहीन।

निष्कंप—वि० कम्पनरहित।

निष्क—पु० एक प्राचीन सुवर्ण मुद्रा। हीरा। सुवर्ण या† सुवर्णपात्र।

निष्कपट—वि० छलरहित, सरल स्वभाववाला।

निष्करुण—वि० करुणारहित, बेरहम, निष्ठुर।

निष्कर्म—वि० कर्महीन, जो कर्मोंमें लीन न हो।

निष्कर्ष—पु० सार, निचोड़, तत्त्व, निश्चय।

निष्कलंक—वि० कलङ्कहीन।

निष्कलंकता—स्त्री० कलंक हीनता।

निष्काम—वि० कामनाहीन, निस्स्वार्थ।

निष्कामी—पु० वह जो निष्काम हो (प्रिय० १८४)

निष्कारण—वि० कारणरहित, व्यर्थ।

[* सूबे० १६०

निष्काशन—पु० बाहर करना, निकाल देना। [*निन्दित।
निष्काशित,-सित—वि० बाहर निकाला हुआ, बहिष्कृत,*
निष्किंचन—वि० जिसके पास कुछ भी न हो, दरिद्र।
निष्कृति—स्त्री० छुटकारा, प्रायश्चित्त।
निष्क्रमण—पु० बाहर निकलना। [१०)। सामर्थ्य।
निष्क्रय—पु० दाम। विनिमय। वेतन, पुरस्कार (रघु०
निष्क्रांति—स्त्री० बाहर जाना, गमन।
निष्क्रिय—वि० क्रियाहीन, चेष्टाहीन। [तत्परता।
निष्ठा—स्त्री० स्थिति। विश्वास, श्रद्धा-भक्ति। समाप्ति।
निष्ठावान्—वि० जिसमें निष्ठा हो, श्रद्धावान्।
निष्ठीवन—पु० थूक। कफ निकालनेवाली एक दवा।
निष्ठुर—वि० निठुर, निर्दय, कठोर।
निष्ण, निष्णात—वि० निपुण, दक्ष।
निष्पंद—वि० स्पन्दनरहित, कम्पविहीन।
निष्पक्ष—वि० पक्षपातरहित। उदासीन।
निष्पत्ति—स्त्री० अन्त, सिद्धि, निश्चय, मीमांसा।
निष्पन्न—वि० जो पूरा हो चुका हो, सम्पादित।
निष्पलक—वि० अपलक, एकटक।
निष्पात—वि० न गिरा हुआ, खुला हुआ, निष्पात नयन-नीरज-पलकें' तुलसीदास ४४।
निष्पाप—वि० जो पापी न हो, पापरहित।
निष्पीड़न—पु० निचोड़ना। उत्पीड़न (ध्रुव० ६८)।
निष्प्रभ—वि० प्रभाशून्य, निस्तेज। [व्यर्थ ही।
निष्प्रयोजन—वि० प्रयोजनरहित, निरर्थक। क्रिवि०
निष्प्रश्रय—वि० निराधार।
निष्प्राण—वि० प्राणहीन, जड़।
निष्प्रेही—वि० जिसे किसी बातकी इच्छा न हो।
निष्फल—वि० असफल, व्यर्थ। अंडकोशहीन।
निष्फलता—स्त्री० असफलता।
निसंक—वि० निःशंक, शंकारहित; निर्भय (उदे० 'ऐंड़ा')।
निसंग—वि० अकेला।
निसँठ—वि० धनहीन 'साँठिहि जागि नींद निसि जाई। निसँठहि काह होइ औंघाई।' प० २०४
निसंस—वि० नृशंस, दुष्ट। साँस-रहित, मृतप्राय।
निसंसना—अक्रि० जोरसे साँस लेना, हाँफना।
निस—स्त्री० निशि, रात्रि।
निसक—वि० निःशक्त, दुर्बल 'तीन दबावत निसक हीं पातक राजा रोग।' बि० १७६
निसकर—पु० चन्द्रमा।
निसचय, निसचै—पु० दृढ़ संकल्प। निर्णय। विश्वास, सन्देहरहित ज्ञान (उदे० 'गोईं')।
निसत—वि० असत्य।
निसतरना—अक्रि० उद्धार या छुटकारा पाना।
निसतारना—सक्रि० उद्धार करना, छुड़ाना।
निसद्योस—क्रिवि० रातदिन, हमेशा।
निसबत—स्त्री० सम्बन्ध। क्रिवि० सम्बन्धमें, बारेमें।
निसरना—अक्रि० बाहर आना, निकलना 'मुख नासा स्रवनन्हिकी बाटा। निसरि पराहिं भालु कपि ठाटा।' रामा० ४८८
निसराना—सक्रि० निसारना, निकालना (रत्ना०३६३)।
निसर्ग—पु० स्वभाव, रूप। सृष्टि। प्रकृति।
निसवादला—वि० निस्वाद, स्वादरहित।
निसवासर—क्रिवि० रात दिन, हमेशा।
निसस—वि० निःश्वास, बेसुध।
निसहाय—वि० देखो 'निस्सहाय'।
निसाँक—वि० निर्भय, निश्चिन्त। क्रिवि० बेखटके 'मनो अली चम्पक कली बसि रस लेत निसाँक।' बि० ६४
निसाँस,-निसाँसा—पु० लम्बी साँस, दुःखकी साँस। वि० मृतप्राय।
निसा—स्त्री० रात्रि। तृप्ति। मनका विचार, इच्छा 'निसा ज्यों होइ त्योंही तोप कीजै।'सुजा० १३०]। पु०
निसाकर—पु० चन्द्रमा। [नशा, मादकता।
निसाचर—पु० राक्षस।
निसाद—पु० एक नीच जाति। भंगी।
निसान—पु० चिह्न, लक्षण (उदे० 'अकनना', 'तड़पना')। झण्डा। नगाड़ा (रामा०६२), 'बाजत निसाने फहराने हैं निसाने कैधों...'—सुजा० १४, (उदे०
निसानन—पु० सन्ध्याकाल। ['अटकना')
निसाना—पु० लक्ष्य। देखो 'निसान'।
निसानाथ,-पति—पु० चन्द्रमा।
निसानी—स्त्री० स्मृतिचिह्न, पहचान।
निसाफ—पु० इन्साफ, निर्णय। [न्योछावर।
निसार—वि० निस्सार, सारहीन। पु० एक सिक्का।
निसारना—सक्रि० निकालना (ललित ३०), 'मोरहु नाहिं, निसारहु देसू।' प० २२१
निसास—पु० देखो निसाँस'।

निसासी—वि० श्वासहीन, मृतप्राय ।
निसि—स्त्री० रात्रि ।
निसिअर—पु० चन्द्रमा ।
निसिकंत,—कर—पु० चन्द्रमा ( कलस २२ ) ।
निसिखा—वि० न सीखा हुआ ( उदे० 'कसना' ) ।
निसिचर,—चारी—पु० राक्षस ।
निसित—वि० तीव्र, तेज ( रामा० ४१९ ) ।
निसिदिन—क्रिवि० रातदिन, हमेशा ।
निसिनाथ,—नाह—पु० चन्द्रमा ।
निसिनिसि—स्त्री० आधी रात ।
निसिपति,—पाल,—मनि—पु० चन्द्रमा ।
निसिमुख—पु० संध्याकाल । [ माहीं ।' प० १४६
निसियर—पु० चन्द्रमा 'अनु धनि तू निसियर निसि
निसिवासर—क्रिवि० रात दिन, बराबर ।
निसीठी—वि० तत्वहीन, नीरस ( गुलाब २२८ ) ।
निसीथ—पु० रात्रि, मध्य रात्रि ।
निसु—स्त्री० रात्रि ।
निसूदन—पु० वध, नाश ।
निसृत—वि० निकला हुआ ।
निसेनी, निसैनी—स्त्री० सोपान, सीढ़ी (मति० २२४) ।
निसेस—पु० चन्द्रमा ।
निसोग, निसोच—वि० शोकरहित, निश्चिन्त 'सब विधि सानुकूल लखि सीता । भे निसोच उर अपडर बीता ।' रामा० ३१५ [सनेह निसोते ।' रामा० २१
निसोत—वि० खालिस, बेमिलावट, शुद्ध 'रीझत राम
निसोधु—स्त्री० सुध, समाचार, सँदेशा ।
निस्केवल—वि० निर्मल, विशुद्ध ।
निस्तत्त्व—वि० सारहीन, तत्वहीन ।
निस्तब्ध—वि० भौंचक, निश्चेष्ट ।
निस्तंद्र—वि० सजग, जमा हुआ । तन्द्राहीन, आलस्य-रहित, दृढ़, पुष्ट ( साकेत २७१ ) ।
निस्तरंग—वि० तरंगहीन ।
निस्तर—पु० निस्तार, उद्धार 'निस्तर पाइ जाउँ एक
निस्तरण—पु० पार जाना । [ बारा ।' प० ९७
निस्तरना—अक्रि० देखो 'निसतरना ।' 'हौं तो पतित सात पीढ़िन को, पतितै ह्वै निस्तरि हौं ।' सू० ९
निस्तल—वि० गहरा ।
निस्तलता—स्त्री० गहराई, गम्भीरता ।

निस्तार, निस्तारा—पु० उद्धार, छुटकारा, बचत । सुविधा, काम 'यज्ञशालाएँ कुटीरें साधुजन निस्तारकी ।' पूर्ण १५५
निस्तारना—सक्रि० देखो निसतारना, 'जय अनन्त जय जगदाधारा । तुम प्रभु सब देवन्ह निस्तारा ।' रामा० ४९५, ( सू० २६७ )
निस्तेज—वि० मलिन, प्रभाहीन !
निस्पंद, निस्पंदन—वि० कम्पहीन, स्थिर । पु० कम्पन, हिलना, नीचे ऊपर उठना, चलना ( यशो० ८६ ) ।
निस्पंदता—स्त्री० स्थिरता ।
निस्पृह—वि० जिसे लालच इ० न हो । वासनारहित ।
निस्प्रेही—वि० देखो 'निष्प्रेही', ( उदे० 'निरधार' ) ।
निस्फ—वि० आधा ।
निस्बत—क्रिवि० देखो 'निसबत' ।
निस्ब—वि० गरीब । निर्धन ।
निस्वन—पु० आवाज, शब्द ( साकेत ३९२ ) ।
निस्वास—पु० ठंढी साँस, लम्बी साँस ।
निस्संकोच—वि० जिसमें संकोच न हो, संकोचरहित । क्रिवि० संकोचरहित होकर ।
निस्संग—वि० अकेला ।
निस्संतान—वि० सन्तानहीन ।
निस्संदेह—क्रिवि० बेशक, अवश्य, सचमुच ।
निस्संबल—वि० आश्रयहीन ।
निस्सत्व—वि० अस्तिविहीन, सारहीन, कमज़ोर ।
निस्सरण—पु० निकलनेकी क्रिया या भाव ।
निस्सहाय—वि० असहाय, आश्रयहीन ।
निस्सार—वि० सारहीन ।
निस्सीम—वि० सीमारहित, असीम, अत्यधिक ।
निस्वार्थ—वि० स्वार्थरहित, जो खुदगरज न हो ।
निहंग, निहंगम—वि० अकेला । निर्लज्ज । नंगा ।
निहंता—वि० मारनेवाला, विनाशक । [ १०८)
निहकर्मा,—कर्मी—वि० जो कर्मोंमें लीन न हो (सुन्द
निहकलंक—वि० निर्दोष, कालिमारहित ।
निहकाम—वि० कामनाहीन, निःस्वार्थ 'वचन कर मन मोरि गति भजन करहिं निहकाम ।' रामा० ३७
निहचय, निहचै—पु० देखो 'निसचय' । 'मो मन निहचै सजनी यह तातहु ते पन मोर महा है क्रिवि० अवश्य ही '...इनकूँ ले सुमिरन कै निहचै पावै मोख ।' चरनदास

निहचल—वि० 'निश्चल, अचल, स्थिर ।'
निहचिंत—वि० निश्चिन्त, बेफिक्र 'कहा रहे निहचिंत है, लखौ लाल चलि आप ।' मति० २२७
निहत—वि० मारा हुआ, विनष्ट । फेंका हुआ ।
निहत्था—वि० खाली हाथ, शस्त्ररहित, निर्धन ।
निहनन—पु० वध ।
निहनना—सक्रि० मारना, बध करना ।
निहपाप—वि० पापरहित ।
निहफल—वि० फलरहित, व्यर्थ ।
निहाई—स्त्री०लोहेकी गद्दी जिसपर हथौड़ा मारा जाता है।
निहाउ, निहाय—दे० 'निहाई' ।
निहायत—अ० बहुत ज़्यादा ।
निहार—पु० पाला, ओस, हिम 'मोह-निहार दिवाकर संकर सरन सोक-भय हारी ।' विन० ७५। वि० निहाल, लट्टू 'पीत कमल इन्दीवर पर मनु भोरहिं भये निहार ।' सू० १५४
निहारना—सक्रि० देखना, ताकना 'मन मोहो ऋषिराजको अद्भुत नगर निहारि ।' राम० ३२
निहारिका—स्त्री० देखो 'नीहारिका' ।
निहाल—वि० पूर्णकाम, सन्तुष्ट ( उदे० 'घना' ) । प्रसन्न ( उदे० 'उलहना' ) ।
निहाली—स्त्री० तोशक, रजाई 'जैसे नर सीतकाल सोवत निहाली ओढ़... ।' सुन्द० १८ । निहाई ।
निहिचय—देखो 'निसचय' ।
निहिंचित—वि० चिन्तारहित, बेफिक्र ।
निहित—वि० रखा हुआ, स्थापित ।
निहुकना, निहुरना—अक्रि०नवना,झुकना (अ० १२५)।
निहुराई—स्त्री० निठुराई, निष्ठुरता 'निपटे निहुराई धरे बनमाली'—सुधानिधि ५२ ।
निहुराना—सक्रि० झुकाना ।
निहोर,निहोरा—पु० अनुरोध 'राम काज अरु मोर निहोरा । बानर जूथ जाहु चहुँओरा ।' रामा० ४०७ कृतज्ञता, एहसान 'पिता बधे पर मारत मोही। राखा राम निहोर न ओही । रामा० ४०९ । भरोसा । क्रिवि० के निमित्त, के कारण, 'तुम सारिखे सन्त प्रिय मोरे । धरउँ देह नहिं आन निहोरे ।' रामा० ४३९ । द्वारा ।
निहोरना—सक्रि० विनती करना, खुशामद करना (उदे० 'कुलाहल'), 'देखहु बेगि सो जतन करु सखा निहोरहुँ तोहि ।' रामा० ५२७ मनाना, कृतज्ञ होना ।
निह्नुति—स्त्री० गोपन, छिपाव ।
नींद, नींदड़ी—स्त्री० निद्रा ।
नींदना—सक्रि० खेतसे घास आदि दूर करना । निन्दा करना 'तबही टरि कितहूँ गई, नींदौ नींदन जोग [बि० ५३
नींदर—सक्रि० निद्रा ( उदे० 'आरस' ) ।
नींदरी, नींदु—देखो 'नींद' ।
नींब—स्त्री० एक पेड़, 'नीम', ( उदे० 'डसना' ) ।
नीअर—देखो 'नीयर' (ग्राम० ४१८ ) ।
नीक—वि० अच्छा, मनोहर । पु० उत्तमता ।
नीका—वि० अच्छा, सुहावना, भला ।
नीके—क्रिवि० अच्छी तरह, कुशल पूर्वक 'अक्षकुमारहि मारिकै लंकहिं जारिकै नीकेहि जात भयो जू ।' राम० ४०४ ।
नीगने—वि० अगणित, बेशुमार 'मृगराज ज्यों बनराजमें गजराज मारत नीगने ।' के० १९
नीच—वि० अधम, क्षुद्र, छोटा, बुरा । पु० क्षुद्र व्यक्ति '... डाँटहिं पै नव नीच ।' रामा० ४४५
नीचगा—स्त्री० नदी । नीचके साथ जानेवाली स्त्री ।
नीचट—वि० पक्का, मजबूत ।
नीचा—वि० निम्न, गहरा, कम ऊँचा, धीमा,क्षुद्र, झुका हुआ, ज़मीनकी तरफ़ लटका हुआ ।
नीचे—क्रिवि० नीचेकी तरफ । अधीनतामें । घटकर ।
नीजन—वि० निर्जन, सुनसान 'घोर तरु नीजन विपिन तरुनीजन है, निकसी निसंक अति आतुर अतंकमें ।' देव । पु० निर्जन स्थान ।
नीझर—पु० निर्झर,झरना 'नींझर झरै अमीरस निकसे...'
नीठ—क्रिवि० कठिनाईसे । कबीर० १३९
नीठा—वि० अनिष्ट, अच्छा न लगनेवाला ।
नीठि—स्त्री० अनिच्छा । क्रिवि० कठिनाईसे, ज्यों त्यों करके ( उदे० 'चकना' ), 'लागे नीर चुवान ये नीठि सुखाये बार ।' बि० १९८ । नीठि नीठि,नीठि नीठि करके=मुश्किलसे ज्यों त्यों करके '...'नीठि नीठि भीतर गई दीठि दीठि सों जोरि ।' बि० १०१
नीड नीड़—पु० घोंसला,ठहरनेकी जगह (उदे०'छुहना')।
नीड़क,नीड़ज—पु० पक्षी ।
नीत—वि० लाया हुआ, स्थापित, गृहीत ।

नीति—स्त्री० उचित आचार, नय, न्याय, व्यवहारका ढङ्ग, युक्ति ।

नीतिज्ञ—वि० नीति जाननेवाला, नीति-विशारद ।

नीतिमान्—वि० नीतिका पालन करनेवाला ।

नीतिविज्ञान,-शास्त्र—पु० आचार व्यवहारादिकी मीमांसा करनेवाला शास्त्र ।

नीदना—सक्रि० निन्दा करना ।

नीधना—वि० निर्धन, दरिद्र ।

नीप—पु० कदम्ब ( सू० ११३ ) । दुपहरिया ( पुष्प ) ।

नीपना—सक्रि० लीपना ( ग्राम ४८९ ) ।

नीपजना—अक्रि० उत्पन्न होना 'प्रेम न खेतौ नीपजै प्रेम न हाट विकाय ।' कबीर ७० । बढ़ना, उन्नति करना ‡

नीब—दे० 'नीम', स्त्री० । [ ‡ उदे० 'कालर' ) ।

नीबर—दे० 'निर्बल' ।

नीबी—स्त्री० नारा, इज़ारबन्द ।

नीबू—पु० एक फल ।

नीम—स्त्री० एक वृक्ष । वि० आधा ।

नीमन—वि० अच्छा, स्वस्थ, दुरुस्त, ठीक ।

नीमस्तीन—स्त्री० आधी आस्तीनवाली सदरी, अधबहियाँ ।

नीमा—पु० एक तरहका पहरावा, दूल्हेका जामा ।

नीयत—स्त्री० भाव, मंशा ।

नीयर—क्रिवि० निकट 'काहू पाई नीयरे, कोउ गये किछु दूरि ।' प० ८८

नीर—पु० जल । रस ।

नीरज—पु० कमल । मोती ।

नीरद—पु० बादल । बाहर निकला हुआ दाँत 'नीरद निकसे दाँत सों अरु जु नीरको दानि ।' कविप्रि० ७८ । वि० दन्तहीन ( रद = दाँत ) ।

नीरधर—पु० बादल ।

नीरधि, नीरनिधि—पु० समुद्र ।

नीरस—वि० रसहीन, स्वादहीन, शुष्क, बेमज़ा ;

नीरांजन—पु० आरती, दीपदान । हथियारोंको चमकदार बनाना । [ कबीर ३०४

नीरा—क्रिवि० पास, निकट 'दूरि बतावत पाया नीरा ।'

नीराजना—अक्रि० आरती करना । शस्त्र साफ़ करना ।

नीरुज, नीरोग—वि० स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।

नील—पु० एक पौधा । नीला रंग । चोटका नीले रगका निशान, विष । कलंक । सौ खरबकी संख्या । वि० नीले रगका । सौ खरब ।

नीलकंठ—पु० चाषु पक्षी । महादेव । मयूर ।

नीलगाय—स्त्री० एक हिरन जो कुछ कुछ नीले रंगका और गायके जैसा होता है ।

नीलनिलय—पु० आकाश 'नक्षत्र लोक फैला है । जैसे इस नील निलयमें' आँसू ५

नीलम—पु० रत्नविशेष । [

नीलमणि—पु० नीलम ।

नीलांजन—पु० नीला अंजन या सुरमा । नीला थोथा ।

नीलांबर—पु० नीला कपड़ा, बलदेवजी । शनि ।

नीला—वि० गहरे आसमानी रंगका ।

नीलाम—पु० बोली बोलकर बेचना ।

नीलिमा—स्त्री० नीलापन ।

नीवँ, नीव—स्त्री० जड़, आधार, मूल भित्ति, दीवार उठानेके लिए खोदी गयी जगह ।

नीवार—पु० एक तरहका धान, पसही ।

नीवि, नीवी—स्त्री० देखो 'नीबी' । पूँजी, मूलधन ।

नीवीं—स्त्री० नींव 'नीवी नीवीं मदनकी परी नाहके हाथ । [ मति० २२२

नीसक्—वि० निःशक्त, कमज़ोर ।

नीसान—पु० देखो 'निसान' ।

नीहार—पु० पाला, कुहरा ( सुजा० ९४ ) ।

नीहारिका—स्त्री० एक तरहका मन्द प्रकाश जो आकाशमें धुएँके सदृश देख पड़ता है ।

नुकता—पु० विन्दु । दोष ।

नुकताचीनी—स्त्री० ऐबजोई । दोष ढूँढ़ना ।

नुकती—स्त्री० छोटी बुँदिया, एक मिठाई ।

नुकना—अक्रि० छिपना ।

नुकसान—पु० घाटा, हानि, कमी ।

नुकाना—अक्रि० छिपना 'कतए नुकाएब चाँदक चोर ।' विद्या० १३७ । सक्रि० छिपाना ।

नुकीला—वि० नोकदार, सुन्दर, तीखा (उदे०'छबीला')।

नुक्कड़—पु० छोर, अन्त, नोक ।

नुक्स—पु० ख़राबी, दोष ।

नुचना—अक्रि० उखड़ना, झटकेसे अलग हो जाना, नोंचा जाना ।

नुचवाना—सक्रि० खरोंचवाना ।

नुति—स्त्री० प्रणाम, स्तुति ।

नुत्फा—पु० वीर्य । औलाद, सन्तान ।

नुनना—सक्रि० लुनना ।

नुनाई—स्त्री० लुनाई । लावण्य, सुन्दरता ।

नुनेरा—पु० लोनिया ।

नुमाइंदा—पु० प्रतिनिधि ।
नुमाइश—स्त्री० प्रदर्शनी, दिखावा । सजधज ।
नुमाइशी—वि० दिखाऊ, तड़क भड़कवाला ।
नुसखा—पु० वह पुर्जा जिसपर रोगीके लिए दवा इ० लिखी रहती है । [ * १८०, राम० ४१२ ) ।
नूत, नूतन—वि० नया, ताज़ा, अद्भुत, अपूर्व ( मति०*
नून—पु० नमक । लताविशेष । वि० न्यून, कम ।
नूनताई—स्त्री० न्यूनता, कमी ।
नूनेरी—स्त्री० लोनिया जातिकी स्त्री (रवि० २७, २९) ।
नूपुर—पु० घुँघरू, पैजनी ।
नूर—पु० कान्ति, शोभा, प्रकाश ( उदे० 'उपनाना' ) ।
नूरा—वि० प्रकाशमय, तेजस्वी ।
नृतक—पु० नर्तक, नाचनेवाला ।
नृतना, नृत्तना—अक्रि० नाचना 'नृतत काली नाग फन
नृत्य—पु० नाच । [प्रति सुहथ ताल बजाइ । सू० ७७
नृत्यकी—स्त्री० नाचनेवाली स्त्री ।
नृत्यपर—वि० नाचनेमें लगा हुआ, नृत्य लीन ।
नृत्यशाला—स्त्री० नाचघर ।
नृदेव—पु० नृपति, राजा । ब्राह्मण ।
नृप, नृपति—पु० राजा ।
नृशंश—वि० क्रूर, निर्दय, अपकारी ।
नृशंसता—स्त्री० दुष्टता, क्रूरता ।
नृसिंह, नृहरि—पु० भगवान्‌का एक अवतार ।
नेइँ, नेई—स्त्री० नीव 'अवध उजारि कीन्हि कैकेई । दीन्हेसि अचल विपति कै नेई ।' रामा० २१३
नेउछावरि—स्त्री० देखो 'निछावर' ।
नेउतना—सक्रि० निमंत्रित करना ।
नेउतहरि—पु० निमंत्रित व्यक्ति ( रघु २०५ ) ।
नेउला—पु० देखो 'नेवला' ।
नेक, नेकु—वि० थोड़ा, कुछ । भला, अच्छा । क्रिवि० तनिक, जरा 'सुधेहू पियके कहे नेक न मानत वाम ।'
नेकचलन—वि० सदाचारी । [ भाषाभू०
नेकनाम—वि० जिसका अच्छा नाम हो, विख्यात ।
नेकनीयत—वि० अच्छी नीयतवाला । ऊँचे विचारवाला ।
नेकी—स्त्री० भलाई, उपकार ।
नेग—पु० विवाहादिके समय ब्राह्मणादिको मिलनेवाला द्रव्य । दस्तूर 'नेग माँग मुनिनायक लीन्हा ।' रामा०
नेगटी—पु० नेग पालनेवाला । [ १९२ । पुरस्कार ।
नेगी—पु० नेग पानेका अधिकारी 'लछिमीन्त हौहु घरमके नेगी ।' रामा० ५२१, (उदे० 'अरकान') । सम्पत्तिका प्रबन्धकर्त्ता 'विप्र न नेगी कीजिए ...।' कविप्रि० २६
नेछावर—स्त्री० देखो 'निछावर' ।
नेजा, नेजाल—पु० भाला ( उदे० 'खुभी' ) ।
नेटा—पु० नाकका मैल 'कीचर भरे हैं नैन नेटाभरीनासि-
नेठना—अक्रि० देखो 'नाठना' । [ का है—कलस ३६०
नेड़े—क्रिवि० निकट, समीप ।
नेत—पु० निश्चय, ठहराव । आयोजन । एक गहना (सूबे० ४०६ ) । स्त्री० रेशमी चद्दर 'पुनि गजमंत चढ़ावा, नेत बिछाई खाट ।' प० ३२५ । मथानीकी रस्सी (उदे० 'क्वान', सू० १९७) । नीयत, इरादा ।
नेतक (वसन)—पु० चुनरी ( विद्या० ६० ) ।
नेता—पु० नायक, अगुआ, स्वामी ।
नेति—अ० ईश्वरका अनन्ततासूचक शब्द । स्त्री० इरादा, नीयत '...जैसी होति नेति तैसी होति बरकति है ।'*
नेती—स्त्री० मथानीकी रस्सी । [ * ककौ० ५०६
नेतीधोती—स्त्री० आँतें साफ करनेकी प्रक्रिया ।
नेत्र—पु० आँख । नेती । रथ । नाड़ी । दोकी संख्या ।
नेत्रज, नेत्रजल—पु० आँसू ।
नेत्रयोनि—पु० नेत्रसे उत्पन्न चन्द्रमा । इन्द्र ।
नेत्री—स्त्री० अग्रगामिनी, मार्ग बतानेवाली ।
नेनुआ, नेनुवा—पु० एक तरकारी, घिवरा ।
नेपथ्य—पु० रंगभूमिके पीछेकी भूमि जहाँ वेश-रचना की जाती है । वेश, सजावट ।
नेपुर—पु० नूपुर, घुँघरू, पैजनी 'महामोहको नेपूर वाजत निन्दा शब्द रसाल । सू० ५१
नेपेनेपे—अ० धीरे धीरे ( ग्राम० २२८ ) ।
नेफा—पु० इज़ारबन्द डालनेकी जगह ।
नेब—पु० सहायक, मन्त्री (अ० १३५), 'भरत बन्दि ग्रह सेइहैं लखनु रामके नेब ।' रामा० २०८
नेबुआ, नेबू—पु० नीबू ।
नेम—पु० नियम, योग ( अ० ९), बराबर होनेवाली बात, रीति । प्रतिज्ञा (राम० ७९) । समय । टुकड़ा, आधा टुकड़ा । प्राकार । गड्ढा । मूल ।
नेमत—स्त्री० दौलत, वैभव, आराम, सुस्वादु भोजन ।
नेमि—स्त्री० पहिये का घेरा । किनारेका हिस्सा । कुएँकी जगत ।

नेमी—स्त्री० देखो 'नेमि' । वि० नियमानुयायी, नियमपूर्वक धर्मानुष्ठान करनेवाला ।
नेरा, नेरे, नेरी, नेरै—क्रिवि० पास, नजदीक 'पुनि कहु खबर विभीषण केरी। जाहि मृत्यु आई अति नेरी ।' रामा० ४४१, 'कबहुँक हौं संगति प्रभाव तें जाउँ सुमारग नेरो ।' विन० ३५०, ( उदे० 'खरिका' [ रघु० ७७ )
नेराना—अक्रि० पास पहुँचना ।
नेव—पु० देखो 'नेत्र'। स्त्री० देखो 'नींव', (उदे० 'अवरेव') ।
नेवग—पु० नेग, दस्तूर ।
नेवछावर—स्त्री० देखो 'निछावर' ।
नेवज—पु० देवार्पित वस्तु, नैवेद्य, प्रसाद ।
नेवत, नेवता—पु० न्योता, निमन्त्रण ।
नेवतना—सक्रि० न्योता देना, निमन्त्रित करना 'नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग ।' रामा० ३९
नेवतहरी—पु० निमन्त्रणमें आया हुआ व्यक्ति ।
नेवर, नेवल—पु० नूपुर ( उदे० 'झमकना' ) ।
नेवरना—अक्रि० छूटना, दूर होना 'सुनि जोगी कै अमर जो करनी । नेवरी बिथा बिरह कै मरनी ।' प० ११९
नेवला—पु० गिलहरीके सदृश एक जन्तु ।
नेवाजना—सक्रि० देखो 'निवाजना'। 'रामकृपाल निषाद नेवाजा। परिजन प्रजउ चहिय जस राजा।'रामा०३१९
नेवाड़ी—स्त्री० नेवारी ।
नेवारना—सक्रि० निवारण करना, दूर करना ।
नेवारी—स्त्री० फूलवाला पौधा विशेष ।
नेसुक—वि० तनिक । क्रिवि० तनिक, थोड़ा 'नाइ सीस नेसुक विहँसि राम कही मृदु बानि ।' रघु० ६३ ( उदे० 'खभार' ) । [ जड़-मूलसे नष्ट ।
नेस्त-नाबूद—वि० जिसका पूर्णतः लोप हो गया हो,
नेह—पु० स्नेह, प्रेम । तेल या घी ।
नेही—वि० प्रेम करनेवाला, हितैषी (उदे० 'कनकना') ।
नै—स्त्री० नीति 'नैनन मैं नै नाहियै याते नैना नाम ।' रतन० ८६ । नदी 'डगर डगर नै ह्वै रही बगर बगर कै बार ।' वि० १२३
नैऋत,—त्य—पु० मूलनक्षत्र । निशाचर 'नैऋत्यनको कपि लोगनको । राखौ निज धामन भोगनको ।' के० ३८ । पश्चिम दक्षिणका कोना ।
नैकट्य—पु० निकटता, समीपता ।
नैकु—दे० 'नेक' ।

नैचा—पु० हुक्केके ऊपरवाली दोहरी नली ।
नैचाबन्द—पु० नैचा बनानेवाला ।
नैतिक—वि० नीति सम्बन्धी ।
नैतिकता—स्त्री० नीतिसे सम्बद्ध होनेका भाव, [नीति पालन ।
नैन—पु० नेत्र, लोचन ।
नैनसुख—पु० मलमल जैसा एक कपड़ा । [ २७०
नैनू—पु० मक्खन 'नैनू चाहि अधिक वै कोंवरी ।' प०
नैपुण्य—पु० निपुणता, चतुरता, दक्षता ।
नैमित्तिक—वि० जो किसी निमित्तसे किया जाय ।
नैया—स्त्री० नाव ( उदे० 'डोबना' ) ।
नैयायिक—पु० न्याय शास्त्रज्ञ ।
नैर—पु० नगर 'सिवाजी सों बैर करि गैर करि नैर नित्र नाहक उजारे तैं । भू० १११ । जनपद, ग्राम ।
नैराश्य—पु० निराश होनेका भाव ।
नैर्मल्य—पु० मलहीनता, स्वच्छता ।
नैवेद्य—पु० देवताका प्रसाद, भोग ।
नैश—वि० निशाका, रात्रि सम्बन्धी ।
नैसर्गिक—वि० स्वाभाविक, प्राकृतिक ।
नैसर्गिकता—स्त्री० स्वाभाविकता ।
नैसा—वि० बुरा, अनैसा, कुरूप ( सूबे० १७८ )।
नैसिक, नैसुक—वि० तनिक, थोड़ा 'नैन जोरि मुख मोरि हँसि नैसिक नेह जनाइ ।' रस० ४७, 'नैसुक नाहके नेह बिना चकचूर ह्वै जैहै सबै चिकनाई ।' रवि० १५ । क्रिवि० किञ्चित्, थोड़ा ( उदे० 'अबार' )।
नैहर—पु० मायका, स्त्रीके पिताका घर ( उदे० 'गोईं' )।
नोइनी, नोई—स्त्री० दूध दुहते समय गायके पिछले पाँव बाँधनेकी रस्सी ( सूसु० १२६ ), 'काँसेकी दोहनी श्याम पाटकी ललित नोई, घटनसों पूजि पूजि पाँयन परतु हैं ।' के० २०२
नोक—स्त्री० अनी, छोर, पतला अग्रभाग ।
नोकझोंक—स्त्री० चढ़ा-उपरी, छेड़छाड़ । सजावट, ठाट-बाट । दबदबा, दर्प । ताना, व्यंग्य ।
नोकदार—वि० नुकीला, चुभनेवाला । शानदार ।
नोकना—अक्रि० ललचना, आकृष्ट होना । (सूसु० १९१)।
नोखा—वि० देखो 'अनोखा' । 'कैसी बुद्धि रची है नोखी देखी सुनी न होई ।' सू० (हि० नव०), (पूर्ण २७)।
नोच-खसोट—स्त्री० छीना झपटी ।
नोचना—सक्रि० उखाड़ना । नख, दाँत आदि गड़ा

खींच लेना, खरोंचना 'ताही समै फैल गये कोटि कोटि कपिन ये नीचैं तन खैंचैं चीर भयो यों बिहाल हो।'

**नोचानाची**—स्त्री० छीना-झपटी। [ प्रियादास

**नोचू**—पु० नोच-खसोट करनेवाला। बार बार तकाजा करनेवाला। [ सूचना।

**नोट**—पु० लिखनेकी क्रिया। टिप्पणी। कागजी सिक्का।

**नोटिस**—स्त्री० इत्तिला, विज्ञापन, सूचना।

**नोदन**—पु० प्रेरणा। बैलोंको चलनेके निमित्त प्रेरित

**नोन**—पु० नमक। [ करनेवाली छड़ी या कोड़ा।

**नोनचा**—पु० नमकमें डाली गयी आमकी फाँकें।

**नोनहरामी**—वि० कृतघ्न ( सू० २७९ )।

**नोना**—वि० लोना, नमक मिला हुआ। अच्छा, सुन्दर। सक्रि० देखो 'नोवना', 'कपट हेतुकी प्रीति निरन्तर नोइ चोखाई गाय।' भ्र० १४७। पु० दीवार इ० के ऊपर लगनेवाला नमकका अंश।

**नोनाचमारी**—स्त्री० एक विख्यात जादूगरनी।

**नोनिया**—स्त्री० एक साग। पु० लोनी मिट्टीसे नमक बनानेवाली एक जाति। [ अच्छी, सुन्दर।

**नोनी**—स्त्री० नोनिया भाजी। लोनी मिट्टी। वि० स्त्री०

**नोर**—पु० आँसू ( विद्या० ६७, ७८, १०६ )।

**नोर, नोल**—वि० नवल, नया।

**नोवना**—सक्रि० दूध दुहते समय गायके पाँव रस्सीसे

**नोहर**—वि० अद्भुत, विलक्षण। दुर्लभ। बाँधना।

**नौ**—वि० आठ और एक। पु० जहाज। नौकी संख्या।

**नौकर**—पु० सेवक, भृत्य।

**नौकरशाही**—स्त्री० कर्मचारियोंका अनुत्तरदायी शासन।

**नौकराना**—पु० दस्तूरी। वेतनके अलावा नौकरको मिलनेवाली रकम।

**नौकरानी**—स्त्री० टहलुई, मजूरनी, सेविका, दासी।

**नौकरी**—स्त्री० चाकरी, टहल, सेवा।

**नौका**—स्त्री० नाव।

**नौगरें, नौगिरिही**—स्त्री० हाथमें पहननेका एक गहना 'नौगिरिही तोड़र पहिराऊँ।' प० १९१

**नौचर**—पु० मल्लाह।

**नौछावर**—स्त्री० देखो 'निछावर'।

**नौज**—अ० न सही। ईश्वर न करे 'नौज होय घर पुरुष बिहूना।' प० १७८। देखो 'नौजा' (कर्को० ५२९)।

**नौजवान**—वि० नवयुवक।

**नौजा**—पु० बादाम। चिलगोजा।

**नौजी**—स्त्री० लीची। देखो 'न्योजी'।

**नौतन**—वि० नूतन, नया 'मनहु नौतन घन घटामें तड़ित तरल अकार।' सू० १७७

**नौतम**—वि० बिलकुल नया 'तुम्ह सतगुर मैं नौतम चेला'' ।' कबीर १२६। पु० नम्रता।

**नौता**—वि० नया।

**नौधा**—वि० नवधा, नौ तरहकी ( भक्ति )।

**नौन**—पु० नमक ( रवि० २९ )।

**नौनगा**—पु० बाँहपर पहननेका एक गहना।

**नौना**—अक्रि० नवना, झुकना। वि० अच्छा, सुन्दर।

**नौबढ़**—वि० हालमें ही बढ़ा हुआ।

**नौबत**—स्त्री० पारी। दशा, संयोग। उत्सव या मंगल-सूचक बाजा 'नौबत बजे पै फेर भेर बजनो कहा।' ग्वाल, ( सू० १० )

**नौबतखाना**—स्त्री० वह स्थान जहाँ नौबत बजती है।

**नौबती**—पु० नक्कारची। सन्तरी। कोतल घोड़ा।

**नौबतीदार**—पु० द्वारपाल, पहरेदार।

**नौमि**—सक्रि० 'मैं प्रणाम करता हूँ', 'नौमि राम भंजन महि भारं।' रामा० ३६६

**नौमी**—स्त्री० किसी पाखकी नवीं तिथि।

**नौरंग**—पु० औरंगजेब। एक पक्षी।

**नौरतन**—पु० नौनगा नामक आभूषण। दे० 'नवरत्न'। स्त्री० एक तरहकी चटनी। [ त्योहारका दिन।

**नौरोज**—पु० ( पारसियोंका ) वर्षका पहला दिन।

**नौल**—वि० नवल 'सिव सरजाकी जगतमें राजत कीरति नौल।' भू० ११७, ( मति० १९१ )।

**नौलखा**—वि० नौ लाखका, बहुमूल्य।

**नौशा**—पु० दुलहा।

**नौसत**—पु० सोलहो श्रृंगार 'नौसत साजे चली गोपिका गिरिवर पूजा हेतु।' सू०। वि० सोलह।

**नौसरा**—पु० नौ लड़ोंका हार।

**नौसिखिया, नौसिखुवा**—वि० जिसने हालमें ही कोई बात सीखी हो, अनाड़ी।

**नौसेना**—स्त्री० जलसेना।

**न्यग्रोध**—पु० बरगदका पेड़। शमी वृक्ष।

**न्यस्त**—वि० रखा हुआ, डाला या फेंका हुआ। त्यक्त।

**न्याइ, न्याउ**—पु० न्याय, इन्साफ, नीति। निर्णय।

न्याति—स्त्री० जाति 'मधुकर कहा कारेकी न्याति।'
न्याना—वि० अबोध। सूबे० ३७१
न्याय—पु० इन्साफ, नीति, यथार्थ बात। युक्ति। तर्क। तर्कशास्त्र। वि० ठीक, उचित 'उपमा न्याय कही अंगनकी।' भ्र० १२६, (४३ भी)। के समान 'इत देखौं तौ आगे मधुकर मत्त न्याय सतरात।' भ्र० १३८
न्यायकर्त्ता—पु० इन्साफ करनेवाला अफसर।
न्यायत—क्रिवि० न्यायानुसार, न्यायसे। ठीक ठीक।
न्यायपरता—स्त्री० न्यायी होनेका भाव, नीति-परायणता।
न्यायसभा—स्त्री० न्यायालय, अदालत।
न्यायाधीश—पु० न्याय करनेवाला, मुकदमेका निर्णय करनेवाला। [होनेकी जगह, कचहरी।
न्यायालय—पु० झगड़ेका निपटारा या मुकदमेका फैसला
न्यायी—वि० न्यायानुसार चलनेवाला, नीति-परायण।
न्याय्य—वि० न्यायानुमोदित, न्यायसंगत।
न्यार, न्यारा—वि० पृथक्। विलक्षण, निराला। दूर।
न्यारे—क्रिवि० दूर, अलग। ['।' बात, नीति।
न्याव—पु० न्याय 'राजा करे सो न्याव।' फैसला उचित
न्यास—पु० रखनेकी क्रिया, स्थापना। अमानत। संन्यास
न्यून—वि० कम। नीच।
न्यूनता—स्त्री० कमी, दोष, क्षुद्रता, हीनता।
न्योछावर—स्त्री० देखो 'निछावर'।
न्योजी—स्त्री० लीची, नौजी 'फरे तूत कमरख औ न्योजी। राय करौंदा बेर चिरौंजी।' प० १५, (८७)
न्योतना—सक्रि० निमन्त्रित करना 'द्विजराजनि जुत न्योतिए, लाल बदन दुजराज।' मति० २२२।
न्योतहरी—पु० नेवतेमें आया हुआ व्यक्ति। 'नेउतहरि'।
न्योता—पु० निमन्त्रण, बुलावा, नेवता।
न्योला—पु० नेवला नामक जन्तुविशेष।
न्यौरा—पु० नेवला (कवि प्रि० १०२)।
न्यौनी—स्त्री० दूध दुहते समय गायके पाँयमें बाँधनेकी रस्सी (कवि प्रि० १६४)। ['चुगाना')।
न्हवाना—सक्रि० नहलाना, स्नान कराना (उदे०
न्हान—पु० स्नान (के० १४२)।
न्हाना—अक्रि० नहाना, स्नान करना (उदे० 'छीलर')

# प

पंक—पु० कीचड़। लेप (के० १६३)।
पंकज़—पु० कमल।
पंकजयोनि—पु० ब्रह्मा।
पंकजराग—पु० पद्मराग नामक मणि।
पंकजात—पु० कमल।
पंकजासन—पु० ब्रह्मा।
पंकरुह—पु० कमल।
पंकिल—वि० कीचड़वाला, कीचड़युक्त।
पंकिलता—स्त्री० कालुष्य, कालिमा, गन्दगी, इन छोटी बूँदोंसे भी हर लेता सब पंकिलता। आँसू ६८।
पंक्ति—स्त्री० कतार, पाँत, श्रेणी। दसकी संख्या।
पंख—पु० पक्ष, पर।
पँखड़ी—स्त्री० देखो 'पँखुड़ी'।
पंखा—पु० बेना, बिजना।
पँखिया—स्त्री० भूसीके सूक्ष्म टुकड़े। पँखड़ी। छोटे पर 'वेगिही वृद्धि गई पँखियाँ अँखियाँ मधुकी मखियाँ भईं मेरी।' देव [स्त्री० छोटा बिजना।
पंखी—पु० पक्षी (उदे० 'ककनू', प० ४१)। पँखड़ी।
पँखुड़ी, पँखुरी—स्त्री० फूलकी पत्ती, पँखड़ी 'पँखुरी लगे गुलाबकी परिहै गात खरौट।' बि० १०७
पँखेरू—पु० पक्षी।
पंग, पंगला—वि० पंगु, लँगड़ा (रतन० ४६), बेकाम, कुण्ठित, शक्तिहीन '···भई पवनगति पंग'—सू० ४१, '···भई गिरागति पंग'—सू० ९०
पंगत, पंगति—स्त्री० पंक्ति, श्रेणी, भोजन करनेवालोंकी कतार। मण्डली 'मनो हंस बिसाल पंगति नारि बालक संग।' सू० ८७
पंगा—वि० देखो 'पंग'।
पंगु, पंगुल, पँगुला—वि० लँगड़ा 'पायनसे पँगुला हुआ सतगुरु मारा बान।' साखी ९
पंगुता—स्त्री० लँगड़ापन।
पंच—पु० पाँच या अधिक मनुष्योंका समूह, सर्वसाधारण 'पंच कहै शिव सती बिवाही।' रामा० ४८

न्याय करनेवाली सभा, पंचायत। पंचायतका सदस्य। मध्यस्थ। पाँचकी संख्या। वि० पाँच। [ नक्षत्र।
पंचक—पु० पाँचका समूह। धनिष्ठा आदि पाँच अशुभ
पंचकन्या—स्त्री० कुन्ती, तारा, अहल्या, द्रौपदी, मन्दोदरी—ये पाँच पौराणिक स्त्रियाँ।
पंचकल्याण—पु० वह घोड़ा जिसके पाँच अंग ( सिर तथा चारो पाँव ) सफेद हों।
पंचकवल—पु० भोजनके पाँच ग्रास जो शुरूमें अलग निकाल दिये जाते हैं। [ जिनसे शरीर बना है।
पंचकोश,-ष—पु० वेदान्तके अनुसार वे पाँच कोष
पंचकोस—पु० पाँच कोस लम्बी चौड़ी नगरी, काशी।
पंचकोसी—स्त्री० पाँच कोसके घेरेमें बसी हुई काशीकी परिक्रमा। [ से बना हुआ पदार्थ।
पंचगव्य—पु० पाँच गव्यों ( दही, दूध आदि ) के मेल-
पंचजन्य—पु० श्रीकृष्णका शंख।
पंचतत्त्व—पु० पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश—ये
पंचत्व—पु० मृत्यु। [ पाँच पदार्थ।
पंचतोरिया,-लिया—पु० एक महीन वस्त्र।
पंचनद—पु० पाँच नदियोंका देश, पंजाब।
पंचनामा—पु० वह कागज़ जिसपर पंचोंका निर्णय लिखा हो। पाँच वस्तुओंका समूह। [ का बना होता है।
पंचपात्र—पु० पूजाका एक पात्र जो प्रायः पाँच धातुओं-
पंचभूतात्मक—वि० क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर इन पाँच भूतों या तत्वोंसे युक्त।
पंचम—वि० पाँचवाँ। पु० एक राग या एक स्वरका नाम। एक जाति। [ * रागिनी।
पंचमी—स्त्री० पाँचवीं तिथि। अपादान कारक। एक*
पंचमुख—पु० शिवजी। [ † मिली हों।
पँचमेल—वि० जिसमें पाँच या कई प्रकारकी वस्तुएँ†
पँचरँग, पँचरंगा—वि० पाँच या अनेक रंगोंका।
पंचरत्न—पु० सोना, हीरा, मोती, लाल और नीलम।
पँचलड़ी,-लरी—स्त्री० पाँच लड़ोंकी माला। [ हों।
पंचवक्त्र—पु० पंचमुख, शिवजी। वि० जिसके पाँच मुख
पंचवाण,-शर—पु० कामदेव। कामदेवके पाँच बाण ( द्रवण, शोषण, तापन, मोहन तथा उन्माद )।
पंचसरा—पु० कामदेव ( अ० १३६ )।
पंचहजारी—पु० पाँच हजार सेनाका अधिपति।
पंचांग—पु० वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण बतलानेवाला तिथिपत्र। पाँच अंगोंसे युक्त वस्तु। वह पुस्तक जिसमें किसी विश्व-विद्यालयके परीक्षोत्तीर्ण छात्रोंकी नामावली तथा परीक्षा सम्बन्धी नियमों आदिका ब्यौरा हो।
पंचाग्नि—स्त्री० चारों ओर कृत्रिम अग्नि और ऊपर सूर्यकी अग्नि या धूपको पंचाग्नि कहते हैं जिसके मध्य बैठकर तपस्वी तपस्या करता है।
पंचानन—वि० जिसके पाँच मुख हों। पु० शंकरजी। सिंह। [ कर बनाया हुआ द्रव्य विशेष।
पंचामृत—पु० घी, चीनी, दूध, दही तथा मधुको मिला-
पंचायत—स्त्री० पंचोंकी सभा।
पंचायतन—पु० पाँच देवताओंका मण्डल।
पंचायती—वि० पंचायत सम्बन्धी, पंचायतका, कई लोगोंका। [ राजा।
पंचाल—पु० देश विशेष; वहाँके रहनेवाले या वहाँका
पंचालिका—स्त्री० गुड़िया, नर्त्तकी 'नचति मंच पंचालिका कर संकलित अपार।' राम० ५८
पंचाशिका—स्त्री० पचास पद्योंका समूह।
पंचाली—स्त्री० गुड़िया। द्रौपदी। [ सिंह।
पंचास्य—वि० जिसके पाँच मुँह हों। पु० शिवजी।
पंछा—पु० छाले इ० भीतरसे निकला हुआ पानी।
पंछाला—पु० छाला, फफोला।
पंछी—पु० पक्षी 'अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम।' मलूकदास।
पंजर—पु० कंकाल, ठठरी। देह ( ब्रज० ३५५ )। पिंजड़ा 'चटपटात छूटत न ज्यों पंजर पर्यो पतंग। मति०
पजरना—अक्रि० जलना। [ २०१
पँजरी—स्त्री० अर्थी।
पंजा—पु० हथेली या तलवे सहित पाँचो अँगुलियाँ। चंगुल। छक्कापंजा = चालबाजी।
पंजारा—पु० सूत कातनेवाला, धुनिया।
पंजीरी—स्त्री० चीनी मिश्रित धनिया आदिका भूना
पंडल—वि० पीला। पु० पिण्ड, देह। [ हुआ चूर्ण।
पँड़वा—पु० भैंसका बच्चा ( नर )।
पंडा—स्त्री० बुद्धि, विवेक। पु० पुजारी, गंगापुत्र।
पंडाल—पु० बड़ा मण्डप।
पंडित—वि० जिसमें पंडा हो, प्रवीण। पु० पुजारी।
पंडिताई—स्त्री० विद्वत्ता।

पंडिताऊ—वि० पण्डितोंके ढंगका, पंडितों जैसा ।
पंडु—वि० पीलाभा । फीका, सफेद ।
पंडुक—पु० कबूतरकी तरहकी एक चिड़िया ।
पंडुर—पु० जलमें रहनेवाला साँप 'पंडुर कतहूँ गरुड़ धरतु [है' बीजक १६८
पँतीजना—सक्रि० रुई ओटना ।
पँतीजी—स्त्री० धुनकी ।
पँत्यारी—स्त्री० पंक्ति, कतार ( रत्ना० १२८ ) ।
पंथ—पु० मार्ग 'हरित भूमि तृन संकुल समुझि परहि नहिं पंथ ।' रामा० ४०३ । रीति । धर्म, सम्प्रदाय ।
पंथा—स्त्री० मार्ग 'उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिककी पंथा की ।' लहर ६
पंथकी—पु० पथिक, यात्री, राह चलनेवाला ।
पंथान—पु० रास्ता, मार्ग ।
पंथिक, पंथी—पु० पथिक । किसी मतका माननेवाला ।
पंद—स्त्री० उपदेश ।
पंदरह—वि० बारह और तीन । पु० १५ की संख्या ।
पंपाल—वि० पापी० 'बुरो पेट पपाल है बुरो युद्धसे भागनो । गंग कहे अकबर सुनो सबसे बुरो है माँगनो ।' गंग
पँवर—स्त्री० 'पँवरि', ड्योढ़ी । सामान ।
पँवरना—अक्रि० तैरना, पता लगाना, थाह लेना ।
पँवरि—स्त्री० ड्योढ़ी ( उदे० 'अरकान', 'कटाऊ' ), प्रवेशद्वार 'आतुर जाइ पँवरि भयो ठाढ़ो कहो पँवरिआ जाइ ।' सूवे० २४८ [ ( उदे० 'पँवरि' ) ।
पँवरिआ,—रिया—पु० ड्योढ़ीदार, द्वाररक्षक
पँवरी—स्त्री० ड्योढ़ी । खड़ाऊँ 'पाँव न पँवरी, भूभुर जरई ।' प० ३०३
पँवाड़ा, पँवारा—पु० विस्तृत आख्यान, वीरगाथा, कीर्त्ति कथा '.. अजहूँ जग जागत जासु पँवारो ।' कविता० १९६ [ राजपूतोंका एक भेद ।
पँवार—पु० प्रवाल, मूँगा ( विद्या० १२३, १२८ ) ।
पँवारना—सक्रि० हटाना, फेंकना ।
पंशाखा—देखो 'पनसाखा' ( सत्य ह० ६१ ) ।
पंसारी—पु० मसाले तथा दवा इ० की चीजें बेचनेवाला ।
पंसासार—पु० पाँसेका खेल, चौपड़ ।
पँसुरी, पँसुली—स्त्री० पसली ।
पंसेरी—स्त्री० पाँच सेरकी तौल ।
पइग—पु० देखो 'पैग' ।
पइठना—अक्रि० पैठना ।
पइसार—पु० प्रवेश 'अति लघु रूप धरौं निसि नगर करउँ पइसार ।' रामा० ४१६
पउँरि—स्त्री० पौरि, ड्योढ़ी ।
पउनार—स्त्री० पद्मनाल, कमलका डंठल ।
पउनी—दे० 'पौनी', 'चलीं पउनि सब गोहने फूल डार लेइ हाथ ।' प० ८७
पउला—पु० एक तरहकी खड़ाऊँ ।
पकड़—स्त्री० पकड़नेकी क्रिया या भाव, रोक, ग्रहण ।
पकड़ना—सक्रि० गहना, थामना, रोकना, ठहराना, धारण करना, कब्ज़ेमें करना, पता लगाना ।
पकड़ाना—सक्रि० थमाना, हाथमें देना, गिरफ्तार कराना ।
पकना—अक्रि० पक्व होना, सीझना, गलना, मवादसे भरना । गोटियोंका पुनः अपने घरमें आ जाना ।
पकरना—सक्रि० देखो 'पकड़ना' ।
पकरिया—पु० पाकर वृक्ष ।
पकवान—पु० कचौरी आदि तली हुई वस्तुएँ ।
पका—वि० देखो 'पक्का' ।
पकाना—सक्रि० आँचमें तैयार करना, सिझाना । फल आदिको रसयुक्त करना । फोड़ेमें मवाद पैदा कराना ।
पकावन—पु० पकवान 'दूती बहुत पकावन साधे ।' प० २९५ [ हुई बेसनकी बड़ी ।
पकौड़ा—पु०, पकौड़ी—स्त्री० घी या तेलमें पकायी
पक्का—वि० आँच दिखाया हुआ या गलाया हुआ । पक्वावस्थाको प्राप्त । सिद्ध किया हुआ, जो कच्चा न हो । दृढ़, टिकाऊ । प्रौढ़ । चतुर । प्रामाणिक, स्थिर ।
पक्खर—त्रि० पक्का, दृढ़ । स्त्री० पाखर, लोहेकी झूल ।
पक्व—वि० पक्का, पका हुआ । प्रौढ़, दृढ़ ।
पक्वान्न—पु० पूरी इ० की तरह घी या तेलमें छानकर बनायी हुई चीज़, पका हुआ अन्न ।
पक्वाशय—पु० भोजन पचनेका स्थान ।
पक्ष—पु० पार्श्व, दल, मण्डली । पहलू । अनुकूल मत । सहायक । सेना । पंख, पर । पाख । घर । पक्षी ।
पक्षपात—पु० तरफदारी । पक्षपाती—वि० तरफदार ।
पक्षाघात—पु० अर्द्धांग या लकवेकी बीमारी ।
पक्षिणी—स्त्री० चिड़िया । पूर्णमासी ।
पक्षिराज—पु० गरुड़ ।
पक्षी—पु० पखेरू, चिड़िया । सहायक ।

पक्ष्म—पु० आँखकी बरौनी।
पक्ष्मल, पक्ष्मिल—वि० बरौनी-युक्त (ज्यो० १९)। 'फिर लिए मूँद वे पल पक्ष्मल' तुलसीदास २२
पखंड—पु० वेदनिन्दा। ढोंग, छल।
पखंडी—वि० वेद निन्दक। छली, मक्कार। कठपुतली नचानेवाला (उदे० 'काठ')।
पख—स्त्री० अड़ंगा, शर्त्त। नुक्स। झगड़ा। पक्ष। पाख।
पखड़ी—स्त्री० फूलकी पत्ती, पुष्पदल।
पखरना—सक्रि० पखारना 'करिहौं सेव, पखरिहौं पाया।' प० ५६, (के० १९३)
पखराना—सक्रि० धुलवाना 'पद पङ्कज पखराय कै कह केशव सुखपाय।' के० १९३
पखरी—स्त्री० फूलकी पत्ती। लोहेकी झूल।
पखरैत—पु० लोहेकी झूलयुक्त हाथी, घोड़ा या बैल, (भू० १२१)।
पखवाड़ा,-वारा—पु० दो सप्ताह, अर्द्धमास।
पखा—पु० देखो 'पषा', (उदे० 'तरराना')।
पखाउज—पु० एक बाजा।
पखान—पु० पाषान, पत्थर (मति० २२७)।
पखाना—पु० कहावत, कथा। शौचस्थान। मैला।
पखारना—सक्रि० प्रक्षालित करना, धोना (उदे० 'डाढ़ना',), 'मम पूजन हित भूमि पखारी।' रघु० १११
पखाल—पु० मशक (मति० २२८)। मुख धोनेका बर्तन 'त्रिय चरित्र मयमत्त न समुझत उठि पखाल मुख धोवत।' सूरा० ९। धौंकनी।
पखाली—पु० मशकमें पानी भरनेवाला, भिश्ती।
पखावज—पु० एक बाजा (सू० १५३)।
पखिया—वि० झगड़ा करनेवाला। बखेड़िया।
पखी, पखीरी—पु० पक्षी।
पखुड़ी, पखुरी—स्त्री० पुष्पदल।
पखुवा—पु० पार्श्व, बगल।
पखेरू—पु० पक्षी।
पखेव—पु० बच्चा देनेपर गाय इ० को दिया जानेवाला [खाना।
पखौआ—पु० पङ्ख 'क्रीट मुकुट सिर छाँड़ि पखौआ मोरन को क्यों धास्यो।' हरि०
पखौटा—पु० पर, डैना।
पखौरा—पु० कन्धेकी हड्डी।
पग—पु० डग। पाँव (उदे० 'पगतरी')।
पगडंडी—स्त्री० लोगोंके चलनेसे बना छोटा मार्ग।
पगड़ी—स्त्री० पगिया, साफा, पाग।
पगतरी—स्त्री० जूता 'तुलसी जाके बदन ते धोखेहु निकसत राम। ताके पगकी पगतरी मेरे तनुको चाम।' बैराग्य संदीपनी।
पगदासी—स्त्री० जूता या खड़ाऊँ।
पगना—अक्रि० रसमें डूबना, सनना, लिप्त होना 'पगी प्रेम नँदलालके हमैं न भावत जोग।' ललित० ८३
पगनियाँ—स्त्री० जूता।
पगरा—पु० सफर शुरू करनेका समय, सबेरा (उदे० 'जीवाजून')। पग, डग।
पगरी—स्त्री० पगड़ी, पगिया।
पगला—वि० बावला, नासमझ।
पगहा—पु० बैल आदि बाँधनेकी रस्सी 'आगे नाथ न पाछे पगहा। किस कारण वह नाचै गदहा।'
पगा—पु० दुपट्टा 'तृण दशनन लै मिल दशकन्धर कण्ठहिं मेलि पगा।' सूरा० ५४। पगड़ी 'सीस पगा न झँगा तनमें···'सुदामा० ७। देखो 'पगरा'। देखो 'पगहा'।
पगाना—सक्रि० रसलीन करना, अनुरक्त करना।
पगार—स्त्री० चहारदीवारी 'अति उच्च अगारनि बनी पगारनि जनु चिन्तामणि नारि।' राम० २८। पु० वेतन। पाँवसे कुचली हुई मिटी। पैदल पार करने योग्य [नदी या जलाशय।
पगारना—सक्रि० फैलाना।
पगाह—स्त्री० देखो 'पगरा'।
पगिआना,-याना—सक्रि० देखो 'पगाना'।
पगिया—स्त्री० पाग, पगड़ी, साफा।
पगुराना—अक्रि० जुगाली करना। हड़प कर जाना।
पगोड़ा—पु० बौद्धोंका मन्दिर।
पघा—पु० गिरावँ। बैलों इ० के गलेकी रस्सी, पगहा।
पचकना—अक्रि० दबना, पटकना, बैठ जाना, सूखना।
पचकल्यान—पु० वह घोड़ा जिसका सिर और चारों पाँव सफेद हों।
पचखना—अक्रि० दे० 'पचकना'। वि० पाँच खण्डोंवाला।
पचखा—पु० धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र, पञ्चक।
पचगुना—वि० पाँचगुना।
पचड़ा,-रा—पु० बखेड़ा, झञ्झट।
पचतोरिया,-लिया—पु० एक तरहका कपड़ा।
पचना—अक्रि० हजम होना। अधिक मेहनतसे गलना

या क्षीण होना, थकना 'पचि रही मन ज्ञान करि करि लहति नाहिंन तीर ।' सू० १२५ । प्रयत्न करना 'चलइ कि जल बिन नाव कोटि जतन पचि पचि मरिय ।' रामा० ५८५

पचपन—वि० पाँच कम साठ । पु० ५५ की संख्या ।

पचमेल—वि० देखो 'पँचमेल' । [ वि० पाँच रंगोंका ।

पचरंग—पु० चौक पूरनेकी पाँच चीजें-अबीर, बुक्का, इ०।

पचरंगा—वि० पाँच रंगोंवाला । जिसमें कई रंग हों ।

पचलड़ी—स्त्री० पाँच लड़ियोंवाली एक तरहकी माला ।

पचवई, पचवाई—स्त्री० एक तरहकी देशी शराब ।

पचवना, पचाना—सक्रि० हजम करना, हड़प जाना, पकाना, अधिक परिश्रमसे क्षीण करना ।

पचहत्तर—वि० पाँच कम अस्सी । पु० ८० की संख्या ।

पचहरा—वि० पाँच तहोंवाला, पाँच आवृत्तियोंवाला ।

पचाना—सक्रि० हजम करना, हड़प जाना, खपाना, शरीरादिका क्षय करना, गलाना, पकाना ।

पचारना—सक्रि० प्रचारना, ललकारना ।

पचास—वि० दस कम साठ । पु० ५० की संख्या ।

पचासा—पु० पचास पद्यों इ० का समूह ।

पचासी—वि० पाँच कम नब्बे । पु० ८५ की संख्या ।

पचित—वि० बैठाया हुआ, जड़ा हुआ । पचाया हुआ ।

पचीस—वि० पाँच कम तीस । पु० २५ की संख्या ।

पचीसी—स्त्री० पचीस पद्यों इ० का समूह ।

पचोतरसो—पु० पाँच ऊपर सौकी संख्या ।

पचौनी—स्त्री० पेटके भीतरकी वह थैली जिसमें भोजन रहता है । पाचन ।

पचौर, पचौली—पु० गाँवका मुखिया । सरदार 'चले पचौर बिदा ह्वै ज्योंही ।' छत्र० १२३

पचौवर—वि० पाँच तह किया हुआ ।

पच्चड़,-र—स्त्री० लकड़ी इ० के ढीले जोड़में कसनेके लिए लगायी गयी फट्टी इ० ।

पच्ची—स्त्री० जुड़ाई, खुदाई, जड़ाव ।

पच्चीकारी—स्त्री० पच्ची करनेकी कला या क्रिया ।

पच्छ—पु० देखो 'पक्ष' ।

पच्छघात—पु० देखो 'पक्षाघात' ।

पच्छताई—स्त्री० पक्षपात ( रत्ना० ४०४ ) ।

पच्छि—पु० देखो 'पच्छी' ।

पच्छिउँ, पच्छिम, पच्छिवँ—पु० पश्चिम दिशा ।

पच्छिनी—स्त्री० चिड़िया ( उदे० 'गच्छना' ) ।

पच्छी—पु० पक्षी । सहायक । [ हटना ।

पछड़ना—अक्रि० गिर पड़ना । पीछे रह जाना, पीछे

पछताना, पछतावना—अक्रि० पश्चात्ताप करना, पीछे

पछतानि—स्त्री० देखो 'पछतावा' । [ खेद प्रकट करना ।

पछताव, पछतावा—पु० पश्चात्ताप, अनुताप ।

पछमन—क्रिवि० पीछे, 'अगमन' का उलटा 'धरि न सकत पग पछमनो सर सनमुख उर लाग ।' सू० २०

पछरना—अक्रि० पीछे पाँव रखना, लौटना 'दमदम कदम परे आगेको, पीछे नाहिं पछरना है ।' कबी० ५३४ [ मुरि मुरि पछरा खात ।' हरि०

पछरा—पु० पछाड़ 'कछु न उपाय चलत अति व्याकुल,

पछलगा,-लागा—पु० अनुयायी 'हौं पंडितन केर पछलगा ।' प० १०, 'अगुआ केर होहु पछलागू ।' प० ६१

पछलत्त—पु० पिछली टाँगोंद्वारा प्रहार (उदे० 'गाड़ना')।

पछवाँ—वि० पश्चिमकी ( हवा ) । स्त्री० पश्चिमी हवा ।

पछाँह—पु० पश्चिमका प्रदेश । पश्चिमी देस 'तेज़ हवासे पछाँहको झुके ज्वारके पौधे सिपाहियोंसे दिखें 'कुकुर

पछाँहिया, पछाँही—वि० पछाँहका । [ मुत्ता ४० ।

पछाड़—स्त्री० अचेत होकर खड़े खड़े गिरना ।

पछाड़ना—सक्रि० लड़ाईमें पटकना, गिराना । पटककर

पछाड़ी—दे० 'पिछाड़ी' । [ धोना ।

पछानना—सक्रि० पहचानना ।

पछाया—पु० पीछेका भाग ।

पछारना—सक्रि० देखो 'पछाड़ना' ।

पछावरि—स्त्री० एक पकवान, देखो 'पछयावर', 'या बिधि सुदामाजीको अच्छकै जिमाय फिरि पाछेकै पछावरि परोसी आनि कंदकी ।' सुदामा० ११, (उदे०

पछिआना,-याना—सक्रि० पीछे लगना । [ 'झारी')।

पछिउँ—दे० 'पश्चिम' ( प० १८५ ) ।

पछिताना—अक्रि० पश्चात्ताप करना 'सुनि सुर बिनय ठाढ़ि पछिताती ।' रामा० २०४, ( उदे० 'चुकना')

पछितानि; पछितावा—दे० 'पछतानि', 'पछताव' ।

पछियाउर—स्त्री० देखो 'पछयावर' ।

पछिलना—दे० 'पिछड़ना' ।

पछिवाँ, पछुवाँ—वि० पश्चिमी ( हवा ) । स्त्री० पश्चिमी

पछीत—स्त्री० मकानका पिछवाड़ा । [ हवा ।

पछुवा—पु० पैरका एक गहना ।
पछेलना—अक्रि० पीछे छोड़ना, पीछे हटाना ।
पछेला—पु० हाथमें पहननेका एक तरहका कड़ा ।
पछेवड़ा—पु० पिछौरा, चद्दर 'दिल मंदिरमें पैसि करि ताणि पछेवड़ा सोइ ।' कबीर ५८
पछोड़ना, पछोरना—सक्रि० सूपसे साफ करना, फटकना, 'रहिमन यह तनु सूप है, लीजे जगत् पछोर।' रहीम, ( अ० ४७ ) [जाता है ( राम० १६१ ) ।
पछ्यावर—स्त्री० एक पेय पदार्थ जो भोजनान्तमें परसा
पजरना—अक्रि० जलना 'पजरै नीर गुलाबकैं, पियकी बात बुझाइ ।' बि० २६ [पजारी ।' रामा० ४२७
पजारना—सक्रि० जलाना 'नगर फेरि पुनि पूँछि
पजावा—पु० ईंट पकानेका भट्ठा ( उदे० 'जलाक' ) ।
पजोखा—पु० मातमपुरसी ।
पज्झटिका—स्त्री० सोलह मात्राओंका एक छन्द ।
पटंबर—पु० रेशमी वस्त्र ।
पट—पु० वस्त्र । लकड़ी, धातु, कागज आदिका टुकड़ा जिसपर चित्रादि अंकित हों । परदा, किवाड़, पट्ट, सिंहासन । पल्ला 'धरती सरग जाँत पट दोऊ ।' प० ६८ । वि० पेटके बल, औंधा ।
पटइन, पटइनि—स्त्री० पटवा जातिकी स्त्री ।
पटकन—स्त्री० पटकनेकी क्रिया, पछाड़ । चपत ।
पटकना—सक्रि० गिराना, उठाकर दे मारना 'भागत भट पटकहिं धरि धरनी ।' रामा० ४७६ । अक्रि० पचकना, आवाजके साथ फटना '···पटकत बाँस काँस कुसताल ।' सू० ८१ ( * जानेकी क्रिया ।
पटकनिया, पटकनी—स्त्री० पछाड़। पटकने या पटके *
पटका—पु० कमर बाँधनेका रूमाल या दुपट्टा । पचका।
पटकान—स्त्री० देखो 'पटकनिया' ।
पटकार—पु० वस्त्र बुननेवाला,कोरी, जुलाहा। चित्रकार ।
पटझोल—पु० अचल, 'तनक चरन पोंछत पटझोल' सू०
पटड़ा—दे० 'पटरा' । [ ( पं० बाल० १६ ) ।
पटतर—पु० समता, उपमा 'वैदेही मुख-पटतर दीन्हें । होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे ।' रामा० १३० । वि० चौरस, समतल ।
पटतरना—सक्रि० तुल्य ठहराना, उपमा देना 'केहि पट तरउँ विदेहकुमारी ।' रामा० १२६ ( उदे० 'जुबती' ) ।
पटतारना—सक्रि० शस्त्र सँभालना. 'धरि धरि मुच्छनु हथ्थ सेलु साँगन पटतारत ।' सुजा० ३३ । चौरस करना ।
पटधारी—पु० तोशाखानेका कर्मचारी । वि० जो वस्त्र धारण किये हो ।
पटन—पु० देखो 'पट्टन', ( साखी ९१ ) ।
पटना—अक्रि० भर जाना, परिपूर्ण होना । ढँक जाना । मेल खाना, मन मिलना । सींचा जाना । तय हो जाना । पु० धन 'कौशल्या रानी पटना लुटावइँ' ( ग्राम० १८ ( १०२ ) ।
पटनी—स्त्री० कोठेके नीचेका कमरा, पटौहाँ । स्थायी पट्टेपर मिली ज़मीन । खेतके स्थायी प्रबन्धकी पद्धति ।
पटपटाना—सक्रि० 'पटपट' शब्द करना । अक्रि०भूख, वर्षा, आतप इ० से तकलीफ उठाना ।
पटपर—पु० उजाड़ जगह, मैदान 'कत पटपर गोला मारत हौ निरे भूँडके खेत ।' अ० ८२
पटबंधक—पु० एक तरहका रेहन ।
पटवास—पु० कपड़े सुवासित करनेकी सुगन्धित वस्तु 'जल थल फल फूल भूरि अंबर पटवास धूरि, स्वच्छ यक्षकर्दम हिय, देवन अभिलाषे ।' के० १६६ । तम्बू।
पटबीजना—पु० खद्योत, जुगनू ।
पटरा—पु० तख्ता । पाटा, हैंगा ।
पटरानी—स्त्री० वह रानी जो राजाके साथ सिंहासनपर बैठ सकती हो, प्रधान रानी ।
पटरी—स्त्री० पटिया, तख्ती । तावीज । फीता । सड़कके किनारेका ऊँचा भाग । लोहेका लम्बा चिपटा डंडा जिसपर रेल चलती है ।—बैठना = मेल होना ।
पटल—पु० आवरण । तख्ता । समूह । तिलक । तह । छप्पर । आँखका परदा ।
पटलक—पु० पर्दा, आड़ । राशि । छोटा झौवा ।
पटलता—स्त्री० आधिक्य ।
पटली—स्त्री० पंक्ति 'नवपल्लव कुसुमित तरु नाना । चंचरीक पटली कर गाना ।' रामा० ३८८ । तख्त । पट्ठुली ( सू० १७४ ) । छप्पर ।
पटवा—पु० गहना गुहनेवाला ।
पटवाद्य—पु० पुराने समयका एक बाजा ।
पटवाना—सक्रि० ढँकवाना । भरवा देना । चुकता कराना । सिंचवाना । शान्त कराना ।
पटवारी—स्त्री० वस्त्र पहिरानेवाली दासी । पु० जमीन इत्यादिका लेखा रखनेवाला कर्मचारी ।
पटवास—पु० देखो 'पटवास' । [बनते हैं । पाट, जूट ।
पटसन—पु० एक पौधा जिसके रेशोंसे टाट, बोरे इ०

पटह—पु० नगाड़ा, डंका ( सुजा० १३ )।
पटहार—पु० पटवा।
पटा—पु० पीढ़ा, चौकी। पट्टा, सनद (उदे० 'खजीना')। सौदा। किर्चके आकारका लोहेका एक हथियार। —बाँधना = पटरानी बनाना ( सूसु० ४८ )।
पटाई—स्त्री० पाटनेकी क्रिया या मजदूरी।
पटाका, पटाखा—पु० 'पटाक' शब्द। एक तरहकी आतशबाजी। तमाचा।
पटाना—सक्रि० ढँकवाना। भरकर या पीटकर बराबर कराना। सौदा तय करना। सींचना (विद्या० १९२, २५६) अदा करना। अक्रि० शांत होना, चुपचाप बैठना।
पटापटी—स्त्री० कपड़ा, जिसपर फूलपत्ते बने हों, ( रत्ना० ११, १३ )।
पटार—स्त्री० पेटी, पिटारी। गोजर ( बुंदेल० )।
पटाव—पु० पाटनेकी क्रिया। पाटन। द्वारके ऊपरका तख्ता।
पटिआ, पटिया—स्त्री० छोटा तख्ता। लिखनेकी पट्टी। सिरके सँवारे हुए बाल 'वै मारे सिर पटिया पारे, कंथा काहि उढ़ाऊँ।' सू० २६१। हेंगा।
पटी—स्त्री० कपड़ेकी पट्टी ( लम्बा टुकड़ा ) ( सू० ५ )। परदा। चित्र खींचनेका परदा। कमरबन्द।
पटीर—पु० मेघ। चन्दन 'सीर समीर उसीर गुलाबके नीर पटीरहूँ ते सरसाती।' दास १३७। पपीहा। कत्था। वटवृक्ष। कामदेव। चलनी।
पटीलना—सक्रि० मारना पीटना। उलटी सीधी बातें कहकर समझाना। परास्त करना। पूरा करना।
पटु—वि० निपुण, चालाक। तीक्ष्ण, निष्ठुर। कठोर। सुन्दर। पु० परवल। नमक। एक तरहका कपूर।
पटुका—पु० कपड़ेका लम्बा टुकड़ा, चादर।
पटुता—स्त्री०, पटुत्व—पु० निपुणता, कौशल, चातुर्य।
पटुली—स्त्री० झूलेकी काठकी तख्ती, चौकी 'कनक खम्भ जराय पटुली, लागे रतन अमोल।' सू० १८७
पटुवा—पु० देखो 'पटवा'। एक तरहका सन।
पटूका—पु० पटका, कमरबन्द।
पटेबाज—पु० पटा खेलनेवाला, पटैत।
पटेर—स्त्री० पानीमें होनेवाली एक घास।
पटेरा—पु० देखो 'पटेला'।
पटेल—पु० गाँवका मुखिया 'सूखी सुता पटेलकी सूखी ऊखनि पेलि।' मति० १७८
पटेलना—दे० 'पटीलना'।
पटेला—पु० वह नाव जिसका बिचला हिस्सा पटा हो। एक घास। कुश्तीका एक पेंच। सिल। हेंगा। एक तरहके चिपटे कड़े ( बुंदेल० )।
पटेली—स्त्री० छोटा पटेला।
पटैत—पु० पटेबाज। [ 'पटेला'।
पटैला—पु० द्वार बन्द करनेका डंडा, ब्योंड़ा। देखो
पटोर—पु० रेशमी वस्त्र 'कंबल बसन विचित्र पटोरे। भाँति भाँति बहुमोल न थोरे।' रामा० १७७, (उदे० 'टाट')
पटोरी—स्त्री० रेशमी चादर या साड़ी 'नखसिख सुंदर चिह्न सुरतके अरु मरगजी पटोरी।' सू० १६५
पटोल—पु० रेशमी वस्त्र 'जाके मीत नन्द-नन्दनसे ढकि लइ पीत पटोलै।' सू० १३। परवल।
पटोली—स्त्री० एक तरहकी तरोई। चादर, 'पटोरी', [ ( उदे० 'कामलरी' )।
पटौनी—पु० मल्लाह।
पटौहाँ—पु० पटी हुई जगह, कोठेके नीचेका कमरा, पटावके नीचेकी जगह।
पट्ट—पु० तख्ती, पटिया। पट्टा। दुपट्टा। सिंहासन। नगर। रेशम। एक तरहका सन। चौराहा। वि० मुख्य। औंधा।
पट्टक—पु० तख्ती, पटिया, ताम्रपट। पटका, पट्टी।
पट्टदेवी—स्त्री० पटरानी।
पट्टन—पु० बड़ा नगर ( साखी ३७ )।
पट्टमहिषी,-राज्ञी—स्त्री० पटरानी, मुख्य रानी।
पट्टा—पु० भूमि आदिके उपयोगका अधिकारपत्र, सनद।
पट्टिका—स्त्री० पट्टी। [ पीढ़ा, पट्टी। सिरके बाल।
पट्टिश, पट्टिस—पु० एक तरहका खाँड़ा या पटा 'सूरज मुसल' नील पट्टिश, परिघ नल, जामवन्त असि, हनू तोमर संहारे है।' राम० ४९३
पट्टी—स्त्री० पाटी, तख्ती। पाठ, शिक्षा। भुलावा। कपड़ेका लम्बा पतला टुकड़ा। जमींदारी आदिका भाग। सँवारे हुए बाल। एक तरहका अतिरिक्त कर। बाँह या कलाईपर पहननेका एक गहना।
पट्टीदार—पु० हिस्सेदार, बराबरका अधिकारी।
पट्टू—पु० एक ऊनी वस्त्र।
पट्टेपछाड़—पु० कुश्तीका एक पेच।
पट्टे बैठक—पु० कुश्तीका एक पेच।

पट्ठमान—वि० पढ़ने योग्य ( राम० ५० )।

पट्ठा—पु० मोटा तगड़ा आदमी, तरुण पुरुष। आदमी या पशुका यौवनोन्मुख बच्चा। चौड़ा गोटा। खूब मोटा पत्ता।

पट्ठापछाड़—वि० स्त्री० जवान आदमीको भी पछाड़ देनेवाली, अत्यन्त बलवती ( स्त्री )।

पट्ठी—स्त्री० तरुण स्त्री। यौवनप्राप्त हृष्ट-पुष्ट स्त्री।

पठन—पु० पढ़नेकी क्रिया।

पठनीय—वि० पढ़ने योग्य।

पठनेटा—पु० पठान जातिमें उत्पन्न व्यक्ति 'परे रुधिर लपेटे पटनेटे फरकत हैं—भू० १६२, (उदे० 'खखेटना')

पठवना—सक्रि० भेजना।

पठवाना, पठाना—सक्रि० भिजवाना।

पठान—पु० एक मुसलमान जाति।

पठानी—वि० पठानोंका, पठानोंसे सम्बन्ध रखनेवाला, पठानों जैसा। स्त्री० पठान स्त्री। पठानपन।

पठावन—पु० भेजा हुआ या भेजा जानेवाला मनुष्य, दूत।

पठावनि, पठावनी—स्त्री० किसीको कहीं भेजना। भेजनेकी मजदूरी 'तेई पायँ पाइकै चढ़ाइ नाव धोए बिनु ख्वैहौं न पठावनी कै ह्वैहौं न हँसाइकै।' कविता० १६६

पठावर—पु० एक तरहकी घास।

पठित—वि० पढ़ा हुआ।

पठिया—दे० 'पट्ठी'।

पठौना—सक्रि० भेजना ( उदे० 'ठेलना' )।

पठौनी—स्त्री० देखो 'पठावनी'।

पठ्यमान—वि० पाठके योग्य, पठनीय।

पड़त, पड़ता—पु० सर्फा, लागत। औसत।

पड़ताल—स्त्री० छानबीन, अनुसन्धान। खेतों इत्यादिकी

पड़तालना—सक्रि० छानबीन करना, जाँचना। [ जाँच।

पड़ती—स्त्री० भूमि जो कुछ समयसे जोती न गयी हो।

पड़ना—अक्रि० अनिष्ट होना, घटित होना। बीचमें आना। लेटना, आराम करना। गिरना। ठहरना, डेरा डालना। उत्पन्न होना। चिन्ता या इच्छा होना। मार्गमें मिलना, मिलना, पड़ता खाना, औसत होना। हो जाना।

पड़पड़ाना—अक्रि० जीभपर जलन मालूम होना। सक्रि० 'पड़पड़' शब्दके साथ मारना।

पड़वा—स्त्री० पाखकी पहली तिथि। पु० दे० 'पड़ा'।

पड़ा—पु० भैंसका बच्चा 'कह रहीम कैसे बने पड़ो बैल कर साथ।' रहि० वि० ३२

पड़ाव—पु० डेरा डालनेकी क्रिया। ठहरनेकी जगह।

पड़िया—स्त्री० भैंसका मादा बच्चा।

पड़िवा—स्त्री० प्रतिपदा, प्रथमा।

पड़ोरा—पु० परवल नामक तरकारी। खेखसा।

पड़ोसी, पड़ौसी—पु० घरके समीप रहनेवाला, पास रहनेवाला, प्रतिवेशी।

पढ़ंता—वि० पढ़नेवाला।

पढ़ना—सक्रि० बाँचना, पाठ करना, जपना, रटना†।

पढ़वाना—सक्रि० बँचवाना। [ † मंत्र फूँकना।

पढ़ाई—स्त्री० अध्ययन, अध्यापन। पढ़ानेका तरीका। पढ़ानेका पारिश्रमिक।

पढ़ाना—सक्रि० सिखाना, शिक्षा देना। तोते आदिको बोलना सिखाना 'कनक पींजरा राखि पढ़ाये।' रामा० १८४

पढ़ैया—पु० पढ़नेवाला।

पण—पु० प्रतिज्ञा। मूल्य, शुल्क। धन। जूआ। व्यापार। सौदा। एक प्राचीन नाप। प्रशंसा।

पणव—पु० छोटा नगाड़ा। ढोल।

पणवानक—पु० नगाड़ा।

पणाशी—वि० नाश करनेवाला, विनाशक 'हौं जबहीं जब पूजन जात पितापद पावन पाप पणासी। राम० ६९

पण्य—पु० बाज़ार, दूकान। बेचनेकी वस्तु। वि० बेचने या खरीदने योग्य। स्त्री० वेश्या।

पण्यवीथी—स्त्री० दूकान, बाज़ार।

पण्यशाला—स्त्री० दूकान।

पतंग—पु० सूर्य 'कौतुक देखि पतंग भुलाना।' रामा० १०८। पक्षी (उदे० 'पंजर'), 'सुत्रहिंको पूछ पतंग-मँडारे।' प० ३४। फतिंगा 'दीप सिखासम युवतितन मन जनि होसि पतंग।' रामा० ३९२, (४४३ भी), चिनगारी। पु०...गेंद 'बहु विधि क्रीड़हिं पानि पतंगा।' स्त्री० चंग, गुड्डी।

पतंगछुरी—स्त्री० वह जो दो प्रश्नोंमें कलह करावे, चुगुलखोर।

पतंगबाज—पु० पतंगका शौकीन, वह जिसे पतंग उड़ाना†

पतंगम—पु० पक्षी। फतिंगा। [ †बहुत प्रिय हो।

पतंगा—पु० फतिंगा, कोई उड़नेवाला कीड़ा। चिनगारी।
पतंजलि—पु० योगशास्त्रके रचयिता एक ऋषि। पाणिनीय सूत्रों तथा कात्यायन रचित वार्तिक या 'महाभाष्य' लिखनेवाले एक ऋषि।
पत—स्त्री० प्रतिष्ठा। आबरू, लज्जा 'जनकी और कौन पत राखे।' सूवि० १२,(कर्क्री० ५२५)। पु० पति,स्वामी।
पतग—पु० पक्षी।
पतझड़, पतझर, पतझाड़, पतझार—स्त्री० वह ऋतु जिसमें पेड़ोंके पत्ते झड़ते हैं, शिशिर ऋतु।
पतत्र—पु० पंख, पर। पतत्री—पु० पक्षी।
पतन—पु० गिरना, अधोगति, नाश। उड़ान।
पतनशील—वि० गिरनेवाला,जिसका गिरना निश्चित हो।
पतनोन्मुख—वि० जो गिरने ही वाला हो, जो पतनकी ओर अग्रसर हो, जिसका पतन समीप हो।
पतपानी—पु० इज़्ज़त, प्रतिष्ठा।
पतर—पु० पत्ता। पनवारा। वि० पतला।
पतरा—वि० पतला, महीन, झीना। कृश, निर्बल।
पतराई—स्त्री० पतलापन।
पतरिंग,-रंगा—पु० एक छोटी चिड़िया।
पतरी—स्त्री० पत्तल।
पतला—वि० महीन, झीना, निर्बल, गाढ़ा नहीं।
पतलून—पु० अंग्रेजी ढगका पाजामा।
पतलो—स्त्री० सरकंडा।
पतवर—क्रिवि०पंक्तिके सिलसिलेसे। बराबर-बराबर।
पतवार,पतवाल—स्त्री० नावके पीछेकी ओरका वह अंग जिसके घुमानेसे वह घूम जाती है।
पतवारी—स्त्री० पतवार। ऊखका खेत।
पतस—पु० चिड़िया, फनगा।
पता—पु० ठिकाना, टोह, चिह्न, खोज, खबर, भेद।
पताई—स्त्री० सूखी हुई पत्तियाँ या पत्तियोंकी राशि।
पताका—स्त्री० झण्डा, ध्वजा, जयन्ती। पताका-दण्ड। प्रासंगिक कथावस्तुका एक भेद ( नाटक )।
पताकिनी—स्त्री० ध्वजिनी, सेना, फौज।
पताकी—पु० पताका धारण करनेवाला। रथ।
पतार—पु० पाताल ( उदे० 'चाँपना' )। जंगल।
पताल—पु० पाताल।
पतावर—पु० सूखे पत्ते।
पतिंग—पु० फतिंगा।
पतिंवरा—वि० स्त्री० स्वयं अपना वर चुननेवाली, स्वयं-[वरा।
पति—पु० स्वामी,कान्त। स्त्री०साख। लज्जा,प्रतिष्ठा,'सूर सबै तुम कत भई बौरी याकी पति जो राखत।'भ्र०२८
पतिआना—सक्रि० एतबार करना, मानना।
पतिआर,-आरा—पु०विश्वास, प्रतीति 'कहा परदेसीको पतिआरो।' सूबे० ३१९
पतिकामा—वि० स्त्री० पति प्राप्तिकी इच्छा रखनेवाली।
पतित—वि० गिरा हुआ। नीतिभ्रष्ट, पापी। नीच।
पतितपावन—वि० पापियोंको तारनेवाला। पु० ईश्वर।
पतिदेवता—वि०स्त्री०पति ही जिसका देवता हो,पतिव्रता।
पतिनी—स्त्री० पत्नी, स्त्री।
पतिया—स्त्री० चिट्ठी ( सू० १९८ )।
पतियाना—सक्रि० देखो 'पतिआना', ( साखी ११७ )।
पतियार—वि० विश्वसनीय। पु० विश्वास।
पतियारा—पु० विश्वास, प्रतीति ( कबीर ३२४ )।
पतिवर्त्त, पतिव्रत—पु० पतिके प्रति स्त्रीका अविचल प्रेम तथा भक्ति 'कह कबीर पतिवर्त्त बिन क्यों रीझै भरतार।' साखी ३४
पतिवर्त्ता, पतिव्रता—वि० स्त्री० सती, सच्चरित्रा।
पतीजना—सक्रि० पतियाना, विश्वास करना तिनहिं न पतीजै री जे कृत ही न माने।' सूबे० ३०८
पतीनना—सक्रि० सच मानना, विश्वास करना 'मन कठोर अजहूँ न पतीना।' कबीर २१०
पतीर—स्त्री० पंक्ति ( पूर्ण० ९६, ९७ )।
पतीरी—स्त्री० एक तरहकी चटाई।
पतीली—स्त्री० बटलोईके आकारका पीतल इ०का पा
पतुकी—स्त्री० पतीली, हाँड़ी।
पतुरिया—स्त्री० गणिका, वेश्या।
पतूख, पतूखी—स्त्री० छोटा दोना 'बारक वह ... आनि दिखावहु दुहि पै पिवत पतूखी।' सूबे० ३
पतोखद—स्त्री० फूल-पत्तीकी बनी दवा।
पतोखा—पु० दोना।
पतोखी—स्त्री० छोटा दोना 'छीरसमुद्र सयन सं जेहि माँगत दूध पतोखी दै भरि।' सू० ७१
पतोह, पतोहू—स्त्री० पुत्रवधू।
पतौआ,-वा—पु० पत्ता 'जाने, बिनु जाने, कै रिस केलि कबहुँक, सिवहिं चढ़ाय ह्वै हैं बेलके पतौवा द्वै [कविता० ३
पत्त—पु० पत्र, पत्ता।
पत्तन—पु० शहर। मृदंग।

पत्तर, पत्तल—पु० धातुका चिपटा लम्बा टुकड़ा। स्त्री० थालीका काम देनेवाला पत्तोंका पात्र।

पत्ता—पु० पत्र, पर्ण, धातुकी चादर, कागजका मोटा टुकड़ा।

पत्ति—पु० पैदल सैनिक, योद्धा। सेनाका सबसे छोटा भाग।

पत्ती—स्त्री० छोटा पत्ता। फूलकी पँखड़ी। भाँग। हिस्सा।

पत्तीदार—दे० 'पट्टीदार'।

पत्थ—पु० रोगीके उपयुक्त हलका आहार।

पत्थर—पु० पाषाण, उपल। ओला। रत्न। खाक (तुम क्या पत्थर लाओगे?)।—का हृदय = दयार्द्र न होनेवाला हृदय।—की लकीर = अमिट या स्थायी वस्तु।—से सिर मारना = व्यर्थ श्रम करना।

पत्थरकला—पु० पुराने ढङ्गकी बन्दूक।

पत्थरचटा—पु० एक तरहका साँप। एक मछली। एक घास। कृपण।

पत्थरफोड़—पु० हुदहुद पक्षी। एक बरसाती पौधा।

पत्थरबाज—पु० वह जिसे पत्थर फेंकनेकी आदत या अभ्यास हो।

पत्नी—स्त्री० भार्या, गृहिणी।

पत्याना—सक्रि० विश्वास करना 'जो न पत्याहि पूछ बलदाउहिं अपनी सौंह दिवाइ।' सू० ७९, (उदे० 'जैं')

पत्यारा—पु० विश्वास, भरोसा।

पत्यारी—स्त्री० पंक्ति, कतार।

पत्र—पु० चिट्ठी। पत्ता। पंख। पृष्ठ। लेखाधार।

पत्रकार—पु० समाचार-पत्रका सम्पादक, लेखक, सम्वाद-दाता आदि।

पत्र-पुष्प—पु० मामूली भेंट। सत्कारकी सामान्य वस्तुएँ।

पत्रभंग—पु० श्रृङ्गारके लिए की गयी ललाट और कपोलों-परकी चित्रकारी।

पत्रभंगि, -भंगी—स्त्री० देखो 'पत्रभंग'।

पत्ररचना, रेखा, -लेखा—स्त्री० देखो 'पत्रभंग'।

पत्रवाह—पु० हरकारा। पक्षी। बाण।

पत्रवाहक—पु० हरकारा।

पत्रव्यवहार—पु० खत-किताबत, लिखा-पढ़ी।

पत्रा—पु० पंचांग 'पत्रा ही तिथि पाइये वा घरके चहुँ पास।' बि० ३६

पत्रावली—स्त्री० पत्रभंग, साटी। पत्रोंकी पंक्ति।

पत्रिका—स्त्री० चिट्ठी। सम्वादपत्र, रिसाला। कोई छोटा लेख। पत्ती 'पत्रिका तरुकी अतुल' गीतिका ६५

पत्री—पु० बाण। पक्षी। पर्वत। पेड़। श्येन। स्त्री० चिट्ठी, छोटा लेख। वि० पत्रयुक्त।

पथ—पु० मार्ग। विधान। देखो 'पत्थ'।

पथदर्शक, -प्रदर्शक—पु० रास्ता दिखलानेवाला।

पथरकला—पु० एक तरहकी बन्दूक।

पथरचटा—पु० देखो 'पत्थरचटा'

पथरना—सक्रि० (औज़ार इ०) पत्थरपर घिसकर तेज़ करना। [ हो जाना। शिथिल पड़ना।

पथराना—अक्रि० पत्थरकी तरह सख़्त हो जाना। स्तब्ध

पथरी—स्त्री० चकमक पत्थर। पत्थरका बर्तन, कुण्डी। सिल्ली। एक रोग। एक मछली (प० २६९)।

पथरीला—वि० पत्थरोंसे युक्त, जिसमें खूब पत्थर हों।

पथरौटा—पु० पथरौटी—स्त्री० पथरी, कुण्डी।

पथिक, पथी—पु० यात्री, मुसाफिर।

पथेय—देखो 'पाथेय' (रत्ना० ३८४)।

पथेरा—पु० ईंटें पाथनेवाला, कुम्हार।

पथौरा—पु० पथ्य, आहार। सेंधा नमक। मंगल, शुभ। गोबर पाथनेका स्थान।

पथ्य—पु० उपयुक्त हलका भोजन, रोगीके लिए हितकर वस्तु। हित। वि० लाभकारी, श्रेयस्कर 'पूत पथ्य गुरु आयसु अहई।' रामा० २८३

पद—पु० पाँव, चरण। स्थान। चिह्न। प्रदेश। शब्द। दर्जा। उपाधि। भजन। रक्षा। व्यवसाय।

पदक—पु० तमगा। गलेका एक गहना, चौकी 'उर बनमाल पदक अति सोभित विप्र चरन चितकहँ करषै।' विन० १९८

पदग—पु० पैदल जानेवाला, पदाति।

पदचर—पु० प्यादा।

पदच्छेद—पु० पदोंको अलग अलग करनेकी क्रिया।

पदज—वि० पाँवसे उत्पन्न। पु० शूद्र, पाँवकी उँगलियाँ।

पदत्याग—पु० पद छोड़नेकी क्रिया, इस्तीफा।

पदत्राण, -त्रान—पु० जूता (उदे० 'ए')।

पदन्यास—पु० पैर रखना, चलना। पद रचनेकी क्रिया।

पदम—पु० पद्म, कमल। गलेका एक गहना।

पदमिनी—दे० 'पदुमिनी', (उदे० 'उछंग')।

पदमैत्री—स्त्री० वर्णसाम्य, अनुप्रास।

पदरिपु—पु० काँटा।

पदवी—स्त्री० उपाधि, प्रतिष्ठा। रास्ता, परिपाटी। पद।

पदात,पदाति—पु० पैदल सिपाही, प्यादा । सेवक ।
पदातिक—पु० जो पैदल चलता हो, पदाति ।
पदाधिकारी—पु० कर्मचारी, अफसर, ओहदेदार ।
पदाना—सक्रि० हैरान करना, छकाना, दौड़ाना ।
पदार—पु० चरण रज ।
पदारथ,पदार्थ—पु० वस्तु, शब्दका विषय ।
पदार्थ-विज्ञान—पु० भौतिक विज्ञान, विज्ञान-शास्त्र ।
पदार्पण—पु० पैर रखनेकी क्रिया, पधारना, प्रवेश ।
पदावली—स्त्री० पदोंका समूह । भजन-संग्रह ।
पदिक—पु० गलेसे वक्षःस्थलपर लटकनेवाला एक गहना 'कण्ठशिरी उर पदिक विराजत गजमोतिनको हार ।' सूवे० २३४ । जुगनू नामक गहना । तमगा । पैदल
पदी—पु० प्यादा । [ सेना । हीरा ।
पदु—पु० देखो 'पद' । उचित अधिकार । बदला 'आठहु आठ दिसा बलि दै, अपनो पदु लै, पितु जालगि मारे ।' राम० ४११
पदुम—पु० पद्म, कमल ( उदे० 'कोमलाई' ) । घोड़ोंका एक चिह्न । सौ नीलकी संख्या । एक गहना । वि० पद्म ।
पदुमिनी—स्त्री० स्त्रियोंका एक भेद । कमलिनी । कमलयुक्त जलाशय ।
पद्धति—स्त्री० रीति, विधि, प्रणाली । मार्ग ।
पद्म—पु० कमल । सौ नीलकी संख्या । एक गहना । पाँवका एक चिह्न । वि० सौ नील ।
पद्मकंद—पु० कमलकी जड़, मुरार ।
पद्मक—पु० पद्मव्यूह । एक वृक्ष, एक ओषधि । सफेद कोढ़ ।
पद्मज—पु० ब्रह्मा ।
पद्मनाभ,-नाभि—पु० विष्णु ।
पद्मभू, पद्मयोनि—पु० ब्रह्मा ।
पद्मराग—पु० लाल रङ्गका एक रत्न, माणिक्य ।
पद्मलांछन—पु० सूर्य, ब्रह्मा, कुबेर, राजा ।
पद्मा—स्त्री० लक्ष्मी ।
पद्माकर—पु० कमलोंसे युक्त तालाव, तड़ाग ।
पद्मालया—स्त्री० लक्ष्मी ।
पद्मावती—स्त्री० उज्जयिनी, पटना या पद्माका प्राचीन नाम । मनसा देवीका नाम । चित्तौरकी एक रानीका नाम । एक अप्सरा । एक छन्द । युधिष्ठिरकी एक रानी ।
पद्मासन—पु० एक आसन । ब्रह्मा । शिव ।
पद्मिनी—स्त्री० स्त्रियोंका एक भेद । कमलिनी । लक्ष्मी ।
पद्मेशय—पु० विष्णु । [ कमलोंसे युक्त तालाव ।
पद्मोद्भव—पु० ब्रह्मा ।
पद्य—पु० छन्दोबद्ध रचना । चार चरणोंवाला छन्द । वि० जिसमें छन्द हों । पैर सम्बन्धी ।
पद्यात्मक—वि० पद्यमय, छन्दोंके रूपमें ।
पधरना—अक्रि० पधारना, आना । [ * बैठाना ।
पधराना—सक्रि० प्रतिष्ठित करना,आदरसे ले जाना या*
पधारना—अक्रि० पग धारना, गमन करना । आना । सक्रि० स्थापित करना, प्रतिष्ठित करना ।
पन—पु० प्रण, पण, प्रतिज्ञा 'निसिचरहीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह ।' रामा० ३६४ । जीवनकी कोई अवस्था 'पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई । चौथे पन जेहि अजसु न होई ।' रामा० २१९ । मोल 'बड़वा बड़े पनकी ।' कविप्रि० २९८
पनकपड़ा—पु० गीला कपड़ा जिसे चोट इत्यादिपर बाँधते हैं ।
पनकाल—पु० अति वर्षाके कारण पड़ा हुआ दुर्भिक्ष ।
पनकौवा—पु० जलकौवा नामक पक्षी ।
पनगनि—स्त्री० पन्नगी, सर्पिणी ( सू० ११० ) ।
पनघट—पु० पानी भरनेका स्थान ।
पनच—पु० धनुषकी डोरी, चिल्ला । 'काजर पनच, बरुनि विष बाना ।' प० २३४, 'नदीं पनच सर सम दम दाना ।' रामा० २६२
पनचक्की—स्त्री० पानीके ज़ोरसे चलनेवाली चक्की ।
पनडब्बा—पु० पान और उसका सामान रखनेका डब्बा ।
पनडुब्बा—पु० पानीमें गोता लगानेवाला एक पक्षी । गोताखोर ।
पनडुब्बी—स्त्री० पानीमें डुबकी लगानेवाला एक जलपक्षी, जल-कुक्कुट । जलके भीतर चलनेवाली नाव ।
पनपना—अक्रि० पुष्ट होना, हराभरा होना,पल्लवित होना ।
पनबट्टा—पु० पानके बीड़े रखनेका डब्बा ।
पनभरा—पु० पानी भरनेवाला ।
पनव—पु० प्रणव, ओंकार । एक बाजा, ढोल 'संख निसान पनव बहु बाजे ।' रामा० १६८
पनवाड़ी—स्त्री० पानकी बाड़ी, बरेजा । पु० तमोली ।
पनवार, पनवारा—पु० पत्तल, पत्तलभर भोजन । 'कोइ आगे पनवार बिछावहिं ।' प० २८०, 'सादर लगे परन पनवारे ।' रामा० १८०
पनस—पु० कटहलका वृक्ष या फल (रामा० ३६५,५०१) ।

पनसाखा—पु० पाँच बत्तियोंवाली मशाल।
पनसारी—पु० मसाले तथा जड़ी-बूटी बेचनेवाला बनिया।
पनसाल—पु० पौसरा।
पनसुइया, पनसोई—स्त्री० छोटी नाव।
पनह—स्त्री० पनाह, शरण ( कबीर १६७ )।
पनहरा—पु० पानी भरनेवाला।
पनहा—पु० चोरी पकड़नेवाला। वह दण्ड या पुरस्कार जो चोरीकी वस्तु लौटा देनेके बदले दिया जाय। कपड़े आदिकी चौड़ाई।
पनहारा—पु० पानी भरनेवाला, पनभरा।
पनहारिन,-हारी—स्त्री० पानी भरनेवाली स्त्री।
पनहियाँ, पनही—स्त्री० पदत्राण, जूता ( सू० ३० ), 'जिन पाँवन पनहीं नहीं तिनहिं देत गजराज।'
पनहिया, पनही—स्त्री० जूता।
पना—पु० एक तरहका शरबत, 'पन्ना' ( के० २०४ )।
पनाती—पु० नातीका लड़का।
पनार, पनारा, पनाला—पु० नाला 'जैसे अँधरे टेकत डोलत गनत न खाइ पनार।' व्यास जी। प्रवाह 'कंचुकि नहिं सूखत सुनु सजनी! उर बिच बहत पनारे।' भ्र० १२७
पनारी, पनाली—स्त्री० प्रणाली, नाली, मोरी 'सुन्दर उदर उदार रोमावलि राजति भारी। हिय सरवर रसभरी चली मनों उमँगि पनारी।' नन्द०। धारा, बहाव ( भ्र० ११३ )। एक भोज्य वस्तु 'पन्नी पूप पटऋरी पापर पाक पिराक पनारी जी।' रघुनाथ
पनासना—सक्रि० पोसना, रक्षा करना।
पनाह—स्त्री० बचाव, रक्षा, शरण।
पनिघट—पु० पानी भरनेका घाट।
पनिया—वि० पानीका, पानीमें उत्पन्न। पु० पानी।
पनियाना—सक्रि० पानी देना, सींचना।
पनिहा—वि० देखो 'पनिया'। पु० जासूस।
पनिहार—पु० पानी भरनेवाला।
पनिहारी—स्त्री० पानी भरनेवाली ( प० १४ )।
पनी—वि० प्रण करनेवाला। स्त्री० पन्नी, सुनहला या रुपहला कागज।
पनीर—पु० छेना। पानी निचोड़ा हुआ दही।
पनीला—वि० पानी मिला हुआ, फीका।
पनुआँ—वि० जिसमें आवश्यकतासे अधिक पानी पड़ गया हो, फीका।
पनेरी—पु० तमोली।
पनेवा—पु० एक पक्षी।
पनौटी—स्त्री० पान रखनेके लिए बाँसका बना हुआ डब्बा।
पन्नग—पु० साँप। पन्ना नामक रत्न।
पन्नगारि, पन्नगासन—पु० गरुड़।
पन्नगिनि, पन्नगी—स्त्री० सर्पिणी, एक बूटी। (सू०१२२)
पन्ना—पु० हरे रङ्गका एक रत्न, मरकत। वरक़।
पन्नी—स्त्री० सुनहला या रुपहला कागज। चाँदी आदिका पतला पत्तर। एक भोज्य वस्तु ( उदे० 'पनारी' )। एक तौल।
पन्नीसाज—पु० पन्नी बनानेवाला।
पन्हाना—सक्रि० पहनाना। अक्रि० थनमें दूध उतरना।
पपड़ा—पु० ऊपरका हिस्सा, छिलका। रोटीका छिलका।
पपड़िया कत्था—पु० सफेद कत्था।
पपड़ियाना—अक्रि० सूखना, सूखकर पपड़ी पड़ना।
पपड़ी, पपरी—स्त्री० ऊपरका छिलका, देवली, खुरण्ड। सोहन पपड़ी आदि मिठाई।
पपड़ीला—वि० पपड़ीदार।
पपनी—स्त्री० आँखकी बरौनी।
पपिहा, पपीहरा, पपीहा—पु० चातक।
पपीता—पु० एक पेड़ या उसका फल।
पपीलि—स्त्री० चींटी ( साखी ५९ )।
पपैया—पु० सीटी। आमकी अंकुरित गुठलीका बना बाजा।
पपोटा—पु० दृगंचल, पलक।
पपोरना—सक्रि० भुजाएँ ऐंठना और उनकी ओर निहारना 'कंस लाज भय गर्वयुत चल्यो पपोरत बाँह।' व्यास
पबना—सक्रि० पाना ( कविता० १५८ )।
पबलिक—स्त्री० जनता, सर्वसाधारण। वि० सार्वजनिक।
पबारना—सक्रि० गुस्सेमें फेंकना 'तीस तीर रघुबीर पबारे।' रामा० ५०७
पबि, पब्बि—पु० वज्र 'पब्बि जिमि शृंगपर, भानु तमतोम पर...' छत्रप्रं० ९३
पब्वय—पु० पर्वत ( भू० ८७ )।
पमावना—अक्रि० डींग मारना ( उदे० 'बड़क' )।
पय—पु० दूध। पानी।
पयद—पु० बादल।
पयधि, पयनिधि—पु० समुद्र।
पयना—वि० पैना, तेज़, नुकीला।

पयस्य—पु० दूधसे निकली वस्तु—दही, घी इ० । वि० दूधसे बना हुआ ।
पयस्वती—स्त्री० जिसमें जल हो, नदी, सरिता ।
पयस्विनी—स्त्री० दूध देनेवाली गाय, बकरी । नदी । चित्रकूटकी एक नदी ।
पयहारी—पु० दूध पीकर रहनेवाला ।
पयादा—पु० पैदल चलनेवाला सैनिक । वि० पैदल ( रामा० ५२० ) ।
पयान—पु० प्रयाण, कूच, प्रस्थान ।
पयार, पयाल—पु० सूखी घास धान आदिके सूखे डण्ठल ( उदे० 'गाहना' ) ।
पयोगड़,-गल—पु० ओला ।
पयोद—पु० बादल ।
पयोधर—पु० स्तन । मेघ । पर्वत । जलाशय । वि० दूध धारण करनेवाला 'पयोधर बने उरोज उदार ।' पल्लव १२४
पयोधि, पयोनिधि—पु० जलधि, समुद्र ।
पयोमुख—वि० दुधमुहा ।
परंच—अ० परन्तु, और, भी ।
परंतप—वि० शत्रुको कष्ट देनेवाला ।
परंतु—अ० लेकिन, तो भी, किन्तु ।
परंदा—पु० पक्षी ।
परंपरा—स्त्री० अनुक्रम, पूर्वागत सिलसिला । परिपाटी, प्राचीन समयकी रीति । सन्तति ।
परंपरागत—वि० परम्परासे होते आनेवाला ।
पर—अ० किन्तु, तो भी । पु० शत्रु, पंख । शिव या ब्रह्मा । वि० दूसरा । पराया । श्रेष्ठ । दूर । क्रिवि० पास 'आए हनुमद्वारा द्रुततर, झरता झरना वीर वर प्रखर' तुलसीदास २५
परई—स्त्री० एक तरहका बड़ा दीया या दीया जैसा ढक्कन।
परकना—अक्रि० परच जाना, अभ्यासी होना, हिलमिल जाना ।
परकसना—अक्रि० प्रकाशित होना, प्रकट होना ।
परकाजी—वि० परोपकारी 'भरत कहेउ तुम साँचि कहति हौ हम साधू परकाजी ।' रामकलेवा ।
परकाना—सक्रि० चसका लगाना, अभ्यस्त कराना ।
परकार—पु० भाँति, प्रकार ( उदे० 'करुआना' ) । परकाल, वृत्त खींचनेका औज़ार ।
परकाल—पु० एक औज़ार जिससे वृत्त खींचते हैं ।
परकाला—पु० चौखट । सीढ़ी । टुकड़ा, चिनगारी । आफतका— = बेढब या विकट आदमी ।
परकास—पु० प्रकाश, उजाला, दीप्ति ( सू० ८९ ) ।
परकासना—सक्रि० प्रकाशित करना ।
परक्रिति, परकीति, परकीती—स्त्री० देखो 'प्रकृति' । 'हम बालक अज्ञान अहैं प्रभु अति चञ्चल परकीती ।' प्र० ना० मिश्र, ( उदे० 'चञ्चलाई', अ० ९७ ) ।
परकीय—वि० दूसरेका, पराया ।
परकीया—स्त्री० अन्य पुरुषसे प्रीति करनेवाली नायिका ।
परकीरति, परकृति—स्त्री० देखो 'प्रकृति' (भू० २९)।
परकोटा—पु० किले इ० के चारोंओर की दीवार । बाँध।
परख—स्त्री० जाँच, परीक्षा, पहचान ।
परखना—सक्रि० जाँच करना, भला बुरा पहचानना 'धीरज धरम मित्र अरु नारी । आपद काल परखि-यहि चारी ।' रामा० ३६१ । देखो 'परिखना' ।
परखवाना, परखाना—सक्रि० जाँच कराना ।
परखवैया, परखैया—पु० परखनेवाला ।
परखाई—स्त्री० परखनेकी क्रिया या उसकी मज़दूरी ।
परग—पु० पग, क़दम 'परग परगपर बहु अरति खटके पास सकाति ।' कलस १५१
परगट—वि० प्रकट, स्पष्ट, जाहिर ( प० २ ) ।
परगटना—सक्रि० प्रकट करना । अक्रि० प्रकट होना ( प० २२, ९९ ) ।
परगन, परगना—पु० वह भूभाग जिसमें कई गाँव हों।
परगसना—अक्रि० प्रकाशित होना,प्रकट होना (प०४४)।
परगाछी—स्त्री० अमरबेल ।
परगाढ़—वि० प्रगाढ़, कठिन, गहरा ।
परगास—पु० प्रकाश, विकास ( प० २२ ) ।
परगासना—सक्रि० प्रकाशित करना । अक्रि० प्रकाशित [ होना ।
परघट—वि० प्रकट, स्पष्ट ।
परचंड—वि० प्रचण्ड, तीव्र ।
परचइ—पु० परिचय, जानकारी ।
परचत—स्त्री० पहिचान, परिचय ।
परचना—अक्रि० हिलना मिलना, अभ्यस्त होना, चसका लगना, गीधना । परच पड़ना = पहिचाना जा परचि परै नहिं अरुण रँग, अमल अधर दल माँझ ललित० ५१
परचा—पु० पुर्जा, कागज़का टुकड़ा । प्रश्नपत्र । परि

'कह कबीर परचा भया गुरु दिखाई बाट ।' कबीर १३, ( २९ फुट० )। परीक्षा 'अबके जो परचो करि पाऊँ अरु देखौं भरि आँखैं । सूरदास सोनेके पानी मढ़िहौं चोंचरु पाँखैं । सू० ४३

परचाना—सक्रि० हिलाना मिलाना, चसका लगाना । प्रदीप्त करना 'विरही दहन काम क्वैला परचाये हैं ।' सेनापति ।

परचारना—सक्रि० प्रचार करना । ललकारना 'उठा आपु कपिके परचारे ।' रामा० ४६९

परचूँनी, परचूनी—पु० आटा चावल इ० बेचनेवाला ( उदे० 'चूँनी' ) स्त्री० परचूँनीका काम ।

परचून—पु० आटा, चावल आदि भोजनकी वस्तुएँ ।

परचै—पु० परिचय, जानकारी । [ ※ छप्पर ।

परछत्ती—स्त्री० सामान रखनेकी पाटन, टाँड़ । हलका※

परछन—स्त्री० वरकी आरती उतारने आदिकी रीति ।

परछना—सक्रि० वरकी आरती आदि करना ।

परछाईं—स्त्री० प्रतिछाया, प्रतिबिम्ब ।

परछालना—सक्रि० प्रक्षालन करना, साफ करना ।

परजंक—पु० पलंग, शय्या ।

परजन—पु० आश्रित जनसमूह । अनुचरवर्ग ।

परजन्य—पु० पर्जन्य, मेघ, इन्द्र ।

परजरना—अक्रि० जलना 'अस परजरा विरह कर गठा । मेघ साम भये धूम जो उठा ।' प० १७९ । कुढ़ना, ईर्ष्या करना ।

परजा—स्त्री० प्रजा, असामी, आश्रित जन ।

परजात—वि० दूसरी जाति का । दूसरेसे उत्पन्न ।

परजाता—पु० हरसिंगार नामक फूल या उसका पौधा ।

परजाय—पु० समानार्थक शब्द । परम्परा । प्रकार ।

परजारना—सक्रि० जलाना (कविता०२५९,छत्र०१२८)।

परजौट—पु० वार्षिक किरायेपर जमीन लेनेदेनेकी रीति । मकान बनानेको ली गयी जमीनका सालाना किराया ।

परज्वलना—सक्रि० प्रज्वलित करना । अक्रि० प्रज्वलित होना 'देखतही तें परज्वलै, परसि करै पैमाल ।'साखी※

परणना—सक्रि० परिणय करना, विवाह करना । [※१७३

परतंचा, परतिंचा—स्त्री० प्रत्यञ्चा, चिल्ला ।

परतंत्र—वि० पराधीन ।

परत—स्त्री० तह, पुट ।

परतच्छ,-तछ—वि० प्रत्यक्ष ( उदे० 'छोही', साखी० १२६ ) ।

परता—पु० देखो 'पड़ता' ।

परताप—पु० प्रताप, वीरता, प्रभाव, गर्मी, तेज, ऐश्वर्य ।

परताल—दे० 'पड़ताल' । [ (※ उदे० 'कन' ) ।

परतिग्या, परतिज्ञा—स्त्री० प्रतिज्ञा, वचन, वादा※

परती—स्त्री०वह भूमि जो कुछ समयसे जोती न गयी हो ।

परतीत, -तीति—स्त्री०विश्वास,भरोसा(सू०१४६,१८९)।

परतेजना—सक्रि० परित्यक्त करना, त्यागना ।

परत्र—क्रिवि० अन्यत्र, परलोकमें । आगे फिर किसी समय।

परथन—पु० देखो 'पलेथन' ।

परद—पु० परदा ( भ्र० ८८ ) ।

परदच्छिना—स्त्री० देवता आदिकी परिक्रमा करना ।

परदनिया—स्त्री० धोती ( ग्राम० ३८८ ) ।

परदनी—स्त्री० धोती, बख्शीश ( ? ) 'गुरुआ ले घर घर फिरै, दीच्छा हमरी लेहु । कै बूड़ो कै ऊछलौ टका परदनी देहु ।' साखी १५

परदा—पु० आड़ करनेवाला कपड़ा इत्यादि, आड़, व्यवधान, छिपाव । परत, तह ।—डालना = छिपाना । —फटना = इज्जत आबरू न बचना 'सेवकको परदा फटे तू समरथ सीले ।' विन० ११९ । —रखना = लाज रखना, आबरू बचाना, छिपाव रखना ।

परदादा—पु० प्रपितामह ।

परदानशीन—वि० जो परदेमें रहे ।

परदार—स्त्री० परायी स्त्री । लक्ष्मी, पृथिवी (राम० ९८) ।

परदुम्य—पु० प्रद्युम्न ।

परदेश—पु० विदेश, अपने गाँव या नगरसे दूरका स्थान ।

परदेशी—वि० विदेशी, दूसरे देशमें रहनेवाला ।

परदोस—पु० सन्ध्या काल । भारी दोष ।

परधान—पु० परिधान,आच्छादन,कपड़ा । मन्त्री,नायक । माया, बुद्धि । वि० मुख्य, श्रेष्ठ ।

परधाम—पु० वैकुण्ठ । परमात्मा । [※स्त्री० टेव, बान ।

परन—पु० प्रण, प्रतिज्ञा ( कविप्रि० २३७ ) । पत्ता ।※

परनगृह—पु० झोपड़ी ( रामा० ३६८ ) ।

परना—अक्रि० देखो 'पड़ना', ( उदे० 'डासना' ) ।

परनाना—पु० नानाका पिता ।

परनाम—पु० प्रणाम, अभिवादन (सू० ३६) । [illegible]

परनाला—पु०, परनाली—स्त्री० [illegible]

परनि—स्त्री० आदत, बान ।

परनी—दे० 'पर्णी' ।

परनौत—पु० प्रणाम, दण्डवत ।

परपंच—पु० प्रपंच, बखेड़ा, चाल ।
परपंचक,-पंची—वि० चालबाज, बखेड़िया ।
परपट—पु० चौरस मैदान ।
परपटी—स्त्री० पपड़ी ।
परपरा—वि० 'परपर' आवाजसे टूटनेवाला (रत्ना० १२७)।
परपराना—अक्रि० तीक्ष्ण लगना, जलना ।
परपराहट—स्त्री० जलन, चुनचुनाहट ।
परपाजा—पु० पितामहका पिता ।
परपीड़क—पु० दूसरेको दुख देनेवाला । शत्रुको दण्ड देनेवाला, परन्तप । [ पुरुष । विष्णु ।
परपुरुष—पु० दूसरेका पति, पतिको छोड़ और कोई
परपूठा—वि० परिपुष्ट, पक्का, दृढ़ ।
परपोता,-पौत्र—पु० पोतेका लड़का ।
परफुल्ल,-फुल्लित—वि० प्रफुल्ल, प्रसन्न, विकसित ।
परबंध—पु० व्यवस्था, आयोजन । सम्बद्ध वाक्यरचना । प्रकृष्ट बन्धन ।
परब—पु० पुण्यकाल । उत्सव । पूर्णिमा । दिन । अंश, भाग । ग्रहण ।
परबत—पु० पर्वत, पहाड़ ।
परबल—वि० प्रबल, शक्तिवान्, उग्र ( सूरा० ७० ) । पु० एक तरकारी ।
परबस—वि० दूसरेके अधीन । परतंत्र ।
परबसताई—स्त्री० परतंत्रता ।
परवाल—पु० प्रवाल, मूँगा । कोंपल ।
परबीन—वि० प्रवीण, चतुर ।
परबेस—पु० पैठ, गति, विषयकी जानकारी ।
परबोधना—सक्रि० समझाना, दिलासा देना । सजग करना 'पिता मात गुरुजन परबोधत नीके वचन बाण सम लागत ।' सूबे० १६८, (उदे० 'अपद', सू० १८८)
परब्रह्म—पु० परमब्रह्म, निर्गुण ब्रह्म ।
परभा—स्त्री० प्रकाश, दीप्ति ।
परभाइ—पु० प्रभाव, शक्ति, महिमा । असर ।
परभाग्योपजीवी—वि० दूसरोंकी कमाईपर जीनेवाला ।
परभात—पु० प्रभात, सबेरा ।
परभाती—स्त्री० एक तरहका गीत जो सबेरे गाया जाता है ।
परभृत—स्त्री० कोयल(राम० २९४)।पु० पडानन(कविप्रि०
परम—वि० उत्कृष्ट । मुख्य, भारी । [ १२९ ) ।

परमगति—स्त्री०, परमपद—पु० मुक्ति ।
परमतत्त्व—पु० मूलतत्व, ब्रह्म ।
परमधाम—पु० वैकुण्ठ ।
परमपुरुष—पु० परमात्मा, ईश्वर, विष्णु ।
परमभट्टारक—पु० राजाओंकी एक प्राचीन उपाधि ।
परमल—पु० परिमल, सुगन्धि । एक तरहका चबेना ।
परमहंस—पु० एक तरहके संन्यासी । परमेश्वर ।
परमा—स्त्री० छबि; सौन्दर्य 'होत पंकते पदुम है पावन परमागेह ।' दीन० ७५ । एक रोग (जीव० २५४) ।
परमाटा—पु० एक तरहका चिकना मजबूत कपड़ा ।
परमाणु—पु० अति सूक्ष्म कण, पल ।
परमाणुवाद—पु० परमाणुओंसे जगत्‌की उत्पत्ति माननेवाला सिद्धान्त ।
परमात्मा—पु० ईश्वर, परब्रह्म ।
परमान—पु० सबूत । सीमा । सच बात । विश्वास । 'भौंरा रे, रसके लोभी, तेरोका परमान ।' हरि०
परमानना—सक्रि० प्रमाण मानना । विश्वास करना । स्वीकार करना ।
परमायु—स्त्री० जीवन-कालकी सीमा, बड़ीसे बड़ी आयु।
परमार—पु० राजपूतोंका एक भेद ।
परमारथ, परमार्थ—पु० श्रेष्ठ वस्तु, मुक्ति । उत्तमकार्य।
परमार्थवादी—पु० तत्वज्ञ, वेदान्ती ।
परमार्थी—वि० मुमुक्षु, तत्व-जिज्ञासु ।
परमिति—स्त्री० चरम सीमा, मर्यादा (सूबे० २४६) ।
परमुख—वि० पराङ्मुख, प्रतिकूल ।
परमेश्वर, परमेसर-सुर—पु० परमात्मा, ईश्वर, विष्णु।
परमेश्वरी, परमेसरी—स्त्री० दुर्गा या देवीका नाम*
परमोद—पु० प्रमोद, पर्व, प्रसन्नता । [*(प० ८९)।
परमोधना—सक्रि० देखो 'परबोधना' । 'बात बनाई जग ठगा, मन परमोधा नाहिं ।' साखी १४, ( उदे० 'तालाबेली', राम० ४२३ )
परयंक—पु० पलंग ।
परलउ, परलय, परलै—पु० प्रलय, कल्पान्त ( २६० ) ।
परला—वि० दूसरी तरफका । परले दर्जेका = अव्वल नम्बरका, चुना हुआ, भारी ।
परलोक—पु० दूसरा लोक, स्वर्ग ।
परवर, परवल—पु० एक तरकारी ।

परवरदिगार—पु० पालनकर्त्ता, ईश्वर ।
परवरिश, परवस्ती—स्त्री० पालन-पोषण ।
परवश,-वश्य—वि० पराधीन ।
परवशता,-वश्यता—स्त्री० परवश होनेका भाव ।
परवा—स्त्री० परिवा, पक्षकी प्रथम तिथि । परवाह, [चिन्ता, ध्यान ।
परवाई—स्त्री० परवाह, चिन्ता ।
परवान—पु० देखो 'परमान', (प० ५, कबीर ९७ ) ।
परवानगी—स्त्री० अनुमति, इजाज़त ।
परवानना—सक्रि० प्रमाण मानना ।
परवाना—पु० आज्ञापत्र फतिंगा ।
परवाल—पु० प्रवाल, मूँगा ।
परवास—पु० आच्छादन । प्रवास ।
परवाह—स्त्री० प्रवाह ( भू० १४५ ) । परवा, फिक्र ।
परवी—स्त्री० पर्वकाल ।
परवीन—वि० प्रवीण, चतुर ।
परवेख—पु० परिवेष, चन्द्रमाके चारों तरफ़का घेरा ।
परवेश—पु० प्रवेश, पैठ, गति ।
परशु—पु० फरसा, अस्त्र-विशेष ।
परशुधर,-राम—पु० जमदग्नि ऋषिके पुत्र ।
परसंग—पु० देखो 'प्रसंग', (साखी ३, विद्या० १११) ।
परसंसा—स्त्री० बड़ाई, स्तुति ।
परस—पु० स्पर्श, छूना ( उदे० 'कुधातु' ) ।
परसन—वि० प्रसन्न 'हसत हरि मनहिं मन तकत गिरिराज तन, देव परसन भये करो काजा ।' सूबे० ११९, ( सू० २७१ ) । पु० स्पर्श ।
परसना—सक्रि० भोजन प्रस्तुत करना, परोसना । छूना ( उदे० 'जई' ), 'परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुञ्ज सही ।' रामा० ११६
परसन्न—वि० आनन्दित, सन्तुष्ट ।
परस पखान—पु० पारस पत्थर ।
परसा—पु० देखो 'परोसा' । फरसा, कुल्हाड़ा ।
परसाद—पु० देखो 'प्रसाद' ।
परसाना—सक्रि० स्पर्श कराना ( सू० ११८ ) । भोजन सामने रखवाना । फैलाना 'मनहु पन्नगिनि उतरि गगनते दलपर फन परसावति ।' सू० १२२
पर साल—अ० गत वर्ष । अगले साल ।
परसिद्ध—दे० 'प्रसिद्ध' ।
परसूत—दे० प्रसूत' ।

परसेद—पु० प्रस्वेद, पसीना ।
परसों—अ० अतीत कलसे एक दिन पूर्व या आगामी कलसे एक दिन बाद ।
परसोत्तम—पु० पुरुषश्रेष्ठ । ईश्वर, विष्णु ।
परसौंहाँ—वि० छूनेवाला ।
परस्पर—क्रिवि० आपसमें ।
परस्परोपमा—स्त्री० एक काव्यालंकार । उपमेयोपमा ।
परहरना—सक्रि० देखो 'परिहरना' ।
परहेज—पु० रोगमें नुकसान पहुँचानेवाली चीज़ोंका त्याग । बुरी बातोंसे बचना । संयम ।
परहेजगार—पु० परहेज करनेवाला, कुपथ्य या बुराइयोंसे बचनेवाला ।
परहेलना—सक्रि० उपेक्षा करना, तुच्छ समझना 'कै करु ममता राम सों कै ममता परहेलु ।' दोहा० १११
परहोंक—पु० ( ? ) बोहनी ( विद्या० ९० ) ।
पराँठा—पु० घी लगाकर सेंकी हुई रोटी । पोतला ।
परा—स्त्री० ब्रह्मविद्या । एक तरहकी वाणी । स्त्री० पंक्ति । वि० स्त्री० श्रेष्ठ । सबसे परे 'परा प्रकृतिसे परे नहीं जो हिला-मिला है' कानन कु० ६७ ।
पराइ,-ई – वि० स्त्री० दूसरेकी 'देखि न सकहिं पराइ विभूती । रामा० २०४
पराकाष्ठा—स्त्री० चरम सीमा ।
पराकोटि—स्त्री० पराकाष्ठा, ब्रह्माकी आधी आयु ।
पराक्रम—पु० शक्ति, साहस, पुरुषार्थ ।
पराक्रमी—वि० पुरुषार्थी, साहसी, शक्ति-सम्पन्न । वीर ।
पराग—पु० पुष्प-धूलि । रज । चन्दन ।
परागकेसर—पु० फूलोंके भीतरके वे लम्बे डोरे जिनपर पराग लगा रहता है ।
परागना—अक्रि० स्नेहयुक्त होना ।
पराङ्मुख—वि० विमुख, प्रतिकूल ।
पराजय—स्त्री० हार, तिरस्कार ।
पराजित—वि० हारा हुआ, परास्त ।
परात—स्त्री० थाल, कोपर 'पानी परातको हाथ छुयो नहिं नैननके जलसों पग धोये ।' सुदामा० ८
पराधीन—वि० दूसरेके वशमें ।
परान—पु० प्राण ( प० ३९,७७ ) ।
पराना—अक्रि० पलायन करना, भागना 'बालक सब लइ जीव पराने ।' रामा० ५७, ( उदे० निसरना' )

पराभव—पु० हार, तिरस्कार।
पराभूत—वि० परास्त, हारा हुआ, नष्ट।
परामर्श—पु० विचार। अनुमान। फैसला। मंत्रणा।✻
परायण—वि० गत। तत्पर, प्रवृत्त। [✻खींचना।
पराया, परार—वि० दूसरेका, विराना, विदेशी (उदे० 'असहन', 'घटना')।
परार—पु० पयाल 'धानको खेत परार तें जानौ।' सुन्द० [१४५
पराब्ध, परालब्ध—पु० भाग्य।
परावन—पु० पलावन, भगदड़। पर्वकाल 'पूरे पूरब पुन्यतें पर्यो परावन आज।' मति० १७६
परावर्त्तन—पु० लौटना, पलटना। उद्धरणी।
परावर—वि० पहलेका और बादका, निकट और दूरका। सर्वव्यापक, सर्वश्रेष्ठ (रामा० ६९)।
परावा—वि० दूसरेका 'धन पराव विषतें विष भारी।' रामा० २६१, (प० २६३)
परावृत्त—वि० लौटा या लौटाया हुआ, बदला हुआ।
परास—पु० पलाश, टेसू (रामा० ३८८, प० ६२)।
परास्त—वि० हारा हुआ।
पराह्न—पु० दोपहरके बादका समय, तृतीय प्रहर।
परिंदा—पु० पक्षी।
परिकर—पु० समूह, परिवार। पलग। समारम्भ। नौकर-चाकर। पटुका 'मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा।' रामा० ३७८। एक काव्यालकार 'अभिप्रायसे युक्त जहँ कह्यो विशेषण जाय।'
परिकर अंकुर—पु० एक अर्थालङ्कार 'साभिप्राय विशेष्य जहँ परिकर अंकुर सोय।'
परिकरमा,-क्रमा—स्त्री० चक्कर, प्रदक्षिणा।
परिक्रमण—पु० परिक्रमा।
परिक्रमित—वि० जिसकी परिक्रमा की गयी हो।
परिक्षा—देखो 'परीक्षा'।
परिखन—वि० रक्षक, देखभाल करनेवाला।
परिखना—सक्रि० प्रतीक्षा करना 'तव लगि मोहि परीखेहु भाई।' रामा० ४१४। परीक्षा करना, जाँचना।
परिखा—स्त्री० खाई। [गणना करना।
परिगणन—पु०,-गणना—स्त्री० भली भाँति गिनना।
परिगत—वि० जाना हुआ। विस्तृत। गया हुआ।
परिगह—पु० आश्रित व्यक्ति, कुटुम्बी (प० ५८)।
परिगहना—सक्रि० ग्रहण करना, अङ्गीकार करना 'तेरे मुँह फेरे मोसे कायर कपूत कूर लटे लटपटेनिको कौन परिगहैगो।' विन० ५८७
परिग्रह—पु० अंगीकार। पाणिग्रहण, विवाह। भार्या। शाप। सौगन्ध। परिवार। अनुग्रह। सूर्यग्रहण। सेनाका पश्चाद् भाग।
परिघ—पु० लोहेका डंडा, गँड़ासा, गदा। घर। फाटक।
परिघोष—पु० मेघगर्जन, कटु शब्द।
परिचना—अक्रि० देखो 'परचना'। सक्रि० परीक्षा लेना 'डहँकि डहँकि परिचेहु सब काहू।' रामा० ७९
परिचय—पु० जानकारी, पहचान। प्रमाण।
परिचर—पु० सेवा करनेवाला (रघु० १३)। सेनापति।
परिचरजा,-चर्या—स्त्री० सेवा (राम० ५५१)।
परिचायक—पु० परिचय करनेवाला, सूचक।
परिचारक—पु० सेवा करनेवाला, नौकर।
परिचारना—सक्रि० सेवा करना।
परिचारिका—स्त्री० दासी।
परिचारी—वि० सेवक, टहल करनेवाला। टहलनेवाला।
परिचालक—पु० चलानेवाला, गति देनेवाला।
परिचालित—वि० चलाया हुआ। निर्वाह किया हुआ, हिलाया हुआ।
परिचित—वि० जाना हुआ, मुलाकाती।
परिचिति—स्त्री० परिचय, पहचान, अभिज्ञता।
परिचो—पु० परिचय, जानकारी।
परिच्छद—पु० भूषण। आच्छादन। उपकरण। परिजन।
परिच्छन्न—वि० ढका हुआ, वस्त्रयुक्त।
परिच्छा—स्त्री० परीक्षा (रामा० ३५)।
परिच्छिन्न—वि० मर्यादित, सीमायुक्त, विभक्त।
परिच्छेद—पु० सीमा, विभाजन। अध्याय।
परिछन—पु० देखो 'परछन'।
परिछाहीं—स्त्री० प्रतिबिम्ब, छाया।
परिजंक—पु० पलङ्ग।
परिजटन—पु० पर्यटन, भ्रमण।
परिजन—पु० आश्रित जन, अनुचर-समूह।
परिज्ञात—वि० पूर्ण रूपसे जाना हुआ।
परिज्ञान—पु० सम्यग् ज्ञान, पूरी जानकारी (पभू० ८०
परिणत—वि० परिपक्व। रूपान्तरित। प्रौढ़। झुका हुआ
परिणति—स्त्री० परिपाक, रूपान्तर, अन्त।
परिणय—पु० विवाह।

परिणयन—पु० विवाह करनेकी क्रिया ।
परिणाम—पु० नतीजा । विकार । अवसान । वृद्ध होना । एक काव्यालङ्कार 'काज करै उपमेयको कछुक जहाँ उपमान ।'
परिणाय—पु० विवाह । गोट इ० को चलाना ।
परिणीत—वि० विवाहित । समाप्त ।
परित—वि० आवृत । [आँखोंके सामने ।
परितच्छ—वि० प्रत्यक्ष, जो देखा जा सके । क्रिवि०
परिताप—पु० दुःख, शोक, जलन, उद्वेग, भय ।
परितुष्ट—वि० सन्तुष्ट, प्रसन्न ।
परितृप्त—वि० पूर्णरूपसे सन्तुष्ट ।
परितोष,-तोस—पु० सन्तोष, हर्ष ।
परित्यक्त—वि० त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, निकाला हुआ ।
परित्यक्ता—वि० स्त्री० त्यागी हुई । पु० छोड़ने या त्यागनेवाला ।
परित्याग—पु० छोड़ने, अलग करने या निकालनेकी क्रिया ।
परित्यागना—सक्रि० त्यागना, छोड़ना 'पाप पुण्य दोऊ परित्यागे अब जो होइ सु होई ।' सूबे० २०५
परित्याज्य—वि० त्यागने योग्य ।
परित्राण—पु० रक्षा, बचानेकी क्रिया ।
परित्राता—पु० रक्षक ।
परिदाह—पु० शोक । भारी मानसिक कष्ट ।
परिदेवन—पु० विलाप, अनुताप ( राम० ४४३ ) ।
परिध—पु० परिधि ।
परिधन—पु० परिधान, पहननेका वस्त्र ।
परिधान—पु० कपड़ा पहननेकी क्रिया । पहनावा, कपड़ा ।
परिधि—स्त्री० मण्डल, घेरा । वस्त्र । कक्षा ।
परिधेय—पु० पहनने योग्य कपड़ा । वि० पहनने योग्य ।
परिनय—पु० विवाह ।
परिपंच—पु० देखो 'परपंच', ( साखी १०६ ) ।
परिपंथक,-पंथी—पु० शत्रु ।
परिपक्व—वि० खूब पका हुआ । प्रवीण । प्रौढ़ ।
परिपाक—पु० प्रौढ़ता, प्रवीणता, पकनेकी क्रिया या भाव ।
परिपाटि, परिपाटी—स्त्री० रीति, प्रणाली । अनुक्रम ।
परिपालन—पु० रक्षण, पोषण ।
परिपुष्ट—वि० जिसका पोषण अच्छी तरह हुआ हो ।
परिपूरक—पु० परिपूर्ण करनेवाला ।
परिपूरन, परिपूरित, परिपूर्ण, परिप्रोत—वि० सम्पूर्ण, खूब भरा हुआ ।
परिप्लुत—वि० डूबा हुआ, तराबोर । काँपता हुआ ।
परिफुल्ल—वि० प्रफुल्ल, पूर्णतः खिला हुआ, रोमाञ्चयुक्त ।
परिबृंहण—पु० उन्नति, तरक्की, कुशल । परिशिष्ट, पूरक ग्रन्थ ।
परिभव, परिभाव—पु० तिरस्कार, अप्रतिष्ठा ।
परिभाषा—स्त्री० व्याख्या, लक्षण । स्पष्ट कथन । निन्दा ।
परिभूत—वि० तिरस्कृत, पराजित ।
परिभोक्ता—पु० वह जो दूसरेके धनका उपभोग करे ।
परिभ्रमण—पु० पर्यटन, घूमना ।
परिमर—पु० हवा ।
परिमल—पु० कुमकुम आदिकी गन्ध । सुवास । मलनेका कार्य । सुगन्धित द्रव्य ( उदे० 'गोफा' ) ।
परिमाण, परिमान—पु० विस्तार, नाप, तौल । घेरा ।
परिमार्जन—पु० माँजनेका काम, संशोधन ।
परिमार्जनीय—वि० धोने या साफ करने योग्य, संशोध्य ।
परिमार्जित—वि० मँजा हुआ, शोधा हुआ, परिष्कृत ।
परिमित—वि० जिसकी सीमा, संख्या, इ० निश्चित हो, नपा तुला हुआ । थोड़ा । अ० पर्यन्त 'मनुज मृग पशु पच्छि परिमित औ अमित जे नाम ।' अ० १२५
परिमिति—स्त्री० सीमा, नाप, अवधि, मर्यादा ।
परिमिलित—वि० मिला हुआ ।
परिमेय—वि० जो नापा जा सके या जो नापा जानेको हो ।
परियंक—पु० पर्यङ्क, पलङ्ग ।
परियंत—अ० पर्यन्त, तक ।
परिया—पु० दक्षिण भारतकी एक जाति ।
परिरंभ, परिरंभण—पु० आलिङ्गन ( सूबे० ३३ ) ।
परिरंभना—सक्रि० आलिङ्गन करना ।
परिलेख—पु० ढाँचा, चित्र । चित्र खींचनेकी कलम या पेन्सिल, उल्लेख ।
परिलेखना—सक्रि० ख़्याल करना, समझना ।
परिवर्जनीय—वि० परित्याज्य, छोडने योग्य ।
परिवर्त्तक—पु० चक्कर देनेवाला । बदलनेवाला ।
परिवर्त्तन—पु० फेरफार, रूपान्तर । विनिमय । चक्कर ।
परिवर्त्तनीय—वि० घूमने या बदलने योग्य, परिवर्त्तनके योग्य ।
परिवर्त्तित—वि० जिसमें परिवर्त्तन हुआ हो, बदला हुआ ।
परिवर्द्धन—पु० बढ़ानेकी क्रिया या भाव ।
परिवर्द्धित—वि० बढ़ाया हुआ ।

परिवा—स्त्री० पक्षकी प्रथम तिथि।
परिवाद—पु० आधारहीन, निन्दा, दोषकथन।
परिवादिनी—स्त्री० वीणा (विद्या० २१५)। निन्दा करनेवाली स्त्री।
परिवादी—वि० निन्दा करनेवाला। [आवरण।
परिवार—पु० कुटुम्ब। आश्रित जन। परिजन। समूह
परिवारी—पु० परिवारमें रहनेवाला कुटुम्बी।
परिवाह—पु० अँट न सकनेके कारण बाहर निकलकर बहना। फालतू पानीका निकास।
परिवृत—वि० घिरा हुआ, आवृत।
परिवृत्त—वि० बदला हुआ, घेरा हुआ।
परिवृत्ति—स्त्री० घेरा। अन्त। विनिमय। एक काव्यालङ्कार 'न्यून अधिक सम देइ जहँ अधिक न्यून सम लेत।'
परिवेदन—पु० महद्दुःख। पूर्ण ज्ञान। विद्यमानता। विवाद। प्राप्ति।
परिवेश,-ष—पु० घेरा, मण्डल, परकोटा। परोसना।
परिवेषण—पु० घेरा। परोसना। [* आच्छादन।
परिवेष्टन—पु० चारों तरफसे घेरनेकी क्रिया, घेरा।*
परिव्रज्या—स्त्री० इधर उधर भ्रमण, भिक्षुककी तरह
परिव्राजक—पु० संन्यासी, यती। [जीवनयापन।
परिशिष्ट—वि० बचा हुआ। पु० किसी पुस्तक आदिका वह भाग जो बादमें जोड़ा गया हो।
परिशीलन—वि० भलीभाँति मनन करते हुए पढ़ना।
परिशोध,-शोधन—पु० ऋणशुद्धि, पूरी सफाई।
परिष्कृत—वि० माँजा हुआ, साफ किया हुआ।
परिश्रम—पु० मेहनत, थकावट।
परिश्रमी—वि० परिश्रम करनेवाला, मेहनती।
परिश्रांत—वि० थका हुआ।
परिषद्—स्त्री० सभा, समाज।
परिष्कार—पु० संस्कार, सफाई। शोभा, सजावट।
परिष्क्रिया—स्त्री० देखो 'परिष्कार'।
परिसंख्या—स्त्री० एक काव्यालंकार 'वस्तु बरजि जहँ और थल कही इके थल जाय।'
परिसर—वि० फैला हुआ, विस्तृत 'वर्ण-गन्धधर, मधु मरन्दभर, तरु-उरकी अरुणिमा तरुणतर खुली रूप-कलियोंमें पर भर स्तर-स्तर सुपरिसरा' गीतिका ४९। पु० आसपासकी भूमि, मैदान, सीमा, पड़ोस, स्थिति, मृत्यु।
परिसेवना—स्त्री० विशेष सेवा (प्रिय० १४)।
परिस्तान—पु० परियोंके रहनेका स्थान।
परिस्फुट—वि० पूर्ण विकासको प्राप्त,सुव्यक्त (पभू०३५)। खूब खिला हुआ, प्रकट, भली भाँति खुला हुआ।
परिहँस—पु० ईर्ष्या, डाह 'परिहँस पियर भये तेहि बसा।' प० ५१
परिहत—वि० मरा हुआ। नष्ट।
परिहरण—पु० छीन लेना, छुड़ा लेना। छोड़ देना, परित्याग, निवारण।
परिहरना—सक्रि०त्याग करना, छोड़ना 'जनक सुता परिहरेउ अकेली।' रामा० ३१८,(उदे०'आपन','कैंचुरि')।
परिहस—पु० परिहास, हँसी। दुःख [ (अ० ६७)।
परिहार—पु० त्याग। निराकरण 'केतक कमल गुलाबके कंटकमय परिहार।' मति० २३७। खंडन। लगानकी माफी। विजित द्रव्य। तिरस्कार। एक राजपूतवंश।
परिहारना—सक्रि० प्रहार करना, मारना'अभिमनु शाह खड्ग परिहारे।'सबलसिंह।...दूर करना(साकेत१९२)।
परिहार्य—वि० जिसका परिहार किया जा सके, जो छोड़ा या दूर किया जा सके। जिसका त्याग या निवारण उचित हो।
परिहास—पु० हँसी, ठट्ठा,खेल (रामा० ३७५)।
परी—स्त्री० अप्सरा, देवांगना। परम रूपवती स्त्री। घी आदि निकालनेकी कलछी।
परीक्षक—पु० परीक्षा लेनेवाला, जाँच करनेवाला।
परीक्षण-पु०'-क्षा—स्त्री०समीक्षा, परख, आजमाइश
परक्षित—वि०जाँचा हुआ,आजमाया हुआ।पु०एक राज
परीखना—सक्रि० परीक्षा लेना, जाँचना 'रतन छपा ना छपै, पारिख होइ सो परीख।' प० १२७
परीच्छित—वि० परीक्षित। पु० राजा परीक्षित क्रिवि० अवश्य ही (कविता० २४८)।
परीछना—सक्रि० परीक्षा लेना (मुद्रा० १०४)।
परीछा—स्त्री० परीक्षा, जाँच।
परीजाद—वि०बहुत ही सुन्दर।पु०अत्यन्त सुन्दर पुरुष
परीत—पु० प्रेत 'कीन्हेसि राकस भूत परीता।' प० २
परीताप—पु० परिताप, दुःख, शोक।
परीदाह—पु० देखो 'परिदाह'।
परीबंद—पु० कलाईपर पहना जानेवाला एक गहना।
परीरंभ—पु० आलिंगन।

परीवाद—देखो 'परिवाद'।
परीशान—वि० हैरान।
परीहार—पु० देखो 'परिहार'।
परीहास—पु० दिल्लगी, मज़ाक।
परुख, परुष—वि० कठोर, तीक्ष्ण, रूक्ष, अप्रिय। पु० तीक्ष्ण वचन, कोई अप्रिय बात। तीर। सरकंडा।
परुखाई, परुषता—स्त्री० कठोरता, निष्ठुरता।
परुसना—सक्रि० देखो 'परसना'। 'मट्टुकिनतै लै लै परुसति हैं हर्ष भरी ब्रज नारि।' सूबे० १६१
परे—अ० उस पार, बाहर, ऊपर, बाद।
परेई—स्त्री० कबूतरी। पंडुकी, डौकी।
परेखना—सक्रि० देखो 'परीखना'। बाट देखना।
परेखा—पु० परीक्षा। पश्चात्ताप। विश्वास 'परेखो कौन बोलको कीजे।' सूबे० ३१८
परेत—पु० प्रेत, भूत। वि० मुर्दा।
परेता—पु० बाँसका बना हुआ बेलनके आकारका सूत लपेटनेका औज़ार।
परेर—पु० आकाश।
परेवा—पु० कबूतर या अन्य तेज उड़नेवाला पक्षी (उदे० 'कंठा', 'हरकारा')।
परेश, परेस—पु० परमेश्वर।
परेशान—वि० उद्विग्न, व्याकुल।
परेशानी—स्त्री० हैरानी, व्याकुलता, तरद्दुद, मुसीबत।
परेह—पु० बेसनकी पतली कढ़ी।
परों—क्रिवि० परसों, कलके बादवाले दिन, गत दिवसके पहलेवाले दिन।
परोक्ष—पु० अनुपस्थिति। वि० अप्रत्यक्ष, गुप्त।
परोजन—पु० प्रयोजन, मतलब।
परोना—सक्रि० पिरोना (प० ३६)।
परोपकार—पु० दूसरोंकी भलाईका काम, वह काम जिससे दूसरोंका भला हो।
परोपकारी—वि० दूसरेका हित करनेवाला।
परोरना—सक्रि० मन्त्रद्वारा पवित्र बनाना।
परोस—पु० पड़ोस, सान्निध्य, प्रतिवेश।
परोसना—सक्रि० परसना, थाली या पत्तलमें भोजन रखना।
परोसा—पु० थाली या पत्तलमें सजाया हुआ भोजन जो कहीं भेजा जाय।
परोसी—पु० प्रतिवेशी, अपने घरके समीप रहनेवाला।
परोहन—पु० वह पशु जिसपर कोई सवार हो या कोई वस्तु लादी जाय।
परोहा—पु० चरस, मोट।
पर्रों—देखो 'परों'।
पर्चा—दे० 'परचा'।
पर्चाना—सक्रि० परिचित करना, हिलाना मिलाना। प्रदीप्त करना।
पर्चून—पु० देखो 'परचून'।
पर्जंक—पु० पर्यंक, पलंग।
पर्जन्य—पु० मेघ, इन्द्र, विष्णु।
पर्ण—पु० पत्र, पत्ता।
पर्णकुटी—स्त्री० पत्तोंकी बनी झोपड़ी।
पर्णशाला—स्त्री० पर्णकुटी।
पर्णी—पु० वृक्ष। पलाश वृक्ष। तेजपत्ता।
पर्त—स्त्री० परत, तह।
पर्दनी—दे० 'परदनी' (पर्दनिया=धोती, बुंदे०)।
पर्दा—पु० देखो 'परदा'।
पर्पटी—स्त्री० पपड़ी, गोपीचंदन। एक औषध।
पर्परी—स्त्री० पपड़ी।
पर्ब—पु० देखो 'परब'।
पर्बत—पु० पहाड़।
पर्यंक—पु० पलंग। एक योगासन।
पर्यंत—अ० तक। पु० समीप, अन्तिम सीमा।
पर्यटक—पु० घूमनेवाला, टहलनेवाला।
पर्यटन—पु० भ्रमण।
पर्यवसान—पु० समाप्ति, अन्तर्भाव। क्रोध।
पर्यस्त—वि० फेंका हुआ।
पर्यस्तापह्नुति—स्त्री० एक काव्यालंकार।
पर्याप्त—वि० यथेष्ट, पूरा। समर्थ। प्राप्त।
पर्याय—पु० समानार्थक शब्द। प्रकार। अनुक्रम, सिलसिला। अवसर। निर्माण। एक अर्थालंकार 'क्रमसों कोऊ वस्तु जहँ आश्रय लेत अनेक। कै बहु बातनको जहाँ क्रमसों आश्रय एक।'
पर्यायोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार 'कहिये ढँग सों बात कै करिये मिस करि काज।'
पर्यालोचन—पु०,-लोचना—स्त्री० समीक्षा, पूरी जाँच।
पर्व—पु० देखो 'परब'।
पर्वणी—स्त्री० पूर्णमासी। आँखका एक रोग।
पर्वत—पु० पहाड़ पर्वतप्रभा=दैत्य (राम० १०१)।
पर्वतारि—पु० इन्द्र।
पर्वती, पर्वतीय—वि० पहाड़ी, पहाड़पर पैदा होनेवाला।
पर्वरिश—स्त्री० पालनपोषण।

पर्वा—स्त्री० देखो 'परवा'।
पर्वाना—दे० 'परवाना'।
पर्वाह—स्त्री० परवाह, फिक्र। पु० पर्वका दिन।
पर्हेज—देखो 'परहेज'। [ परा।' प० ९६।
पलंका—स्त्री० बहुत दूरकी जगह 'लंका छाँडि पलंका
पलग—पु० पर्यंक, बड़ी चारपाई ( उदे० 'उपबरहन' )।
पलँगड़ी—स्त्री० चारपाई।
पलंगपोश—पु० पलंगपर बिछानेकी चद्दर।
पलंगियो—स्त्री० छोटा पलंग।
पल—पु० घड़ीका साठवाँ भाग। दगवल। निमेष,क्षण। एक तौल। मांस ( कवि प्रि० ७३ )।
पलक—स्त्री० नेत्रच्छद। पल, क्षण। क्रिवि० क्षणभर, 'पलक वसनशाला महँ लसे।' राम० १७२
पलका—पु० पलंग, शय्या।
पलचर—पु० एक छोटा देवता।
पलटन—स्त्री० सेनाका एक भाग, सेना, दल।
पलटना—अक्रि० लौटना 'कहो सुमंत कहाँते पलटे...' सूरा० १२,(उदे०'ढजियाना'), फिरना, उलट जाना। सक्रि०कई वार उलटना,फेरना। उलटना। बदलना। बदलेमें लेना। मुकर जाना। वापस करना।
पलटनिय—वि०पलटनका।पु०पलटनमें काम करनेवाला।
पलटा—पु० बदला, परिवर्त्तन। कुश्तीका एक पेंच। पीतल इ० की बड़ी खुरचनी।
पलटाना—सक्रि० फिराना, फेरना, लौटाना। बदलना।
पलटावना—सक्रि० पलटाना। दबवाना 'आपुन पौढ़ि अधर सेज्यापर कर पल्लव सन पद पलटावति।'सू० ९३
पलड़ा, पलरा—पु० तराजूका पल्ला।
पलथी—स्त्री० दोनों पाँवोंको मोड़कर और एकको दूसरे पर रखकर बैठनेकी स्थिति। [ खटोला।
पलना—अक्रि० पोषित होना, पाला जाना। पु० बच्चोंका
पलनाना—सक्रि० कसकर या जोतकर तैयार करना, 'तुरतहि रथ पलनाइके अक्रूरहि दीन्हों।' सूबे० २५२
पलप्रिय—वि० मांसाहारी। पु० डोम कौआ।
पलल—पु० मांस। शव। राक्षस। पत्थर। शैवाल। मैल। कीचड़। तिलका चूर्ण। वि० नरम,गिलगिला।
पलवल—पु० परवल ( रतन० ३८ )। पला।
पलवा—पु० एक घास। ऊखके ऊपरका भाग। अंजलि
पलवार—पु० एक तरहकी बड़ी नाव।
पलवारी—पु० माँझी, मल्लाह।
पलवैया—पु० पालनेवाला, पालनकर्त्ता।
पलस्तर—पु० दीवारपरकी चूने आदिकी पर्त्त।
पलहना—अक्रि० देखो 'पलुहना'।
पलहा—पु० पल्लव, कोंपल। जन्म- मृत्युकीसूचना।
पलांडु—पु० प्याज।
पला—पु० तराजूका पल्ला 'बरुनी जोती पल पला डाँडी भौंह अनूप। मन पसंग तौले सुदग हरुवो गरुवो रूप।' रतन० २०। अंचल 'साईंके दरबारमें पला न पकड़े कोय।' साखी १५६। किनारा (अख० ३४०)। पल। बड़ी परी। डिबियाके दोनों भाग 'कंचन संपुट द्वै पला मानहुँ भरे सिन्दूर।' सू० १६३
पलान—पु० जीन या चारजामा।
पलानना—सक्रि० जीन कसना। आक्रमणके लिए तैयार होना, सजना ( प० २४५ )।
पलाना—अक्रि० भागना ( सू० २०१ )। जल्दीसे जाना 'मन क्रम बच मैं तुम्हें पठावत ब्रजको तुरत पलानो।' भ्र० ३। पिन्हाना (गाय इ० का)। सक्रि० भगाना।
पलानि, पलानी—स्त्री० छप्पर। एक गहना। जीन, पलान 'बरषा गये, अगस्त जौ दीठिहि। परिहि पलानि तुरंगम पीठिहि।' प० ३०८
पलान्न—पु० चावल और मांसके मेलसे बना भोजन,ꣳ
पलायन—पु० भागना। [ ꣳ पुलाव।
पलायमान—वि० भागता हुआ।
पलायित—वि० जो भाग गया हो।
पलाल—पु० अन्न निकाला हुआ धान इ० का डंठल।
पलाश, पलास—पु० किंशुक, टेसू। वि० मांसभक्षी।
पलिका—पु० पलका, पलंग ( उदे० 'तनना' ), 'बैठे जराय जरे पलिका पर राम सिया सबको मन मोहैं।' राम० १३१, ( भ्र० ११३ ), 'नवल बाल पलिका परी पलक न लागत नैन।' मति० १९८
पलित—वि० वृद्ध। सफेद ( बाल ) (सूसु० ११)। पु० बालोंका पकना। गरमी। कीचड़।
पली—स्त्री० परी, लोहेकी चमची।
पलीत—वि० दुष्ट। मैला। धूर्त्त। पु० भूत, प्रेत।
पलीता—पु०, पलीती—स्त्री० वह बत्ती जिससे तोप आदिके रंजकमें आग लगायी जाती है ( प० २१, छत्र० १४४ )। बत्ती। वि० शीघ्रगामी। अति क्रुद्ध।

पलीद—वि० गंदा, अपवित्र, नीच ।
पलुआ,-वाँ—वि० पोसा हुआ, पालतू ।
पलुहना—अक्रि० पल्लवित होना, पनपना, लहलहाना 'तपनि मृगासरा जे सहैं, ते अद्रा पलुहंत ।' प० १६६
पलुहाना—सक्रि० पल्लवित करना 'जरी जो बेलि सींचि पलुहाई ।' प० २१०
पलेट—स्त्री० नीचेकी ओर लगायी गयी कपड़ेकी पट्टी ।*
पलेड़ना—सक्रि० धक्का देना । [* पट्टी ।
पलेथन—पु० सूखा आटा जो रोटी बेलते समय लगता है।
पलोटना—सक्रि० ( पैर ) दबाना ( उदे० 'कोट' ) । अक्रि० लोटना पोटना, छटपटाना ।
पलोवना—सक्रि० ( पावँ ) दाबना । सेवा करना ।
पलोसना—सक्रि० प्रक्षालित करना, धोना । फुसलाना ।
पल्टा—पु० बदला, परिवर्तन ।
पल्लव—पु० नया पत्ता, कोंपल । पत्तोंका समूह । विस्तार । कंकण । चंचलता । [ या अधूरा ज्ञान हो ।
पल्लवग्राही—पु० वह जिसे किसी विषयका केवल ऊपरी
पल्लवना—अक्रि० पल्लवित या अंकुरित होना ।
पल्लवित—वि० पल्लवयुक्त । रोमांचयुक्त ।
पल्ला—पु० पटल, किवाड़ । कपड़ेका छोर, अंचल । पलड़ा । दूरी । पास । अन्न बाँधनेका टाट या बोरा ।
पल्ली—स्त्री० छिपकिली, बिस्तुइया । छोटा गाँव । झोपड़ी ।
पल्लेदार—पु० गल्ला ले जानेवाला मजदूर । अनाज तौलनेवाला व्यक्ति । [ बाँधनेकी गोन या टाट ।
पल्लौ—पु० पल्लव, कोमल पत्ता ( प० ४ ) । पल्ला, अन्न
पल्वल—पु० पोखरा, छोटा तालाब ।
पवँरि—स्त्री० ड्योढ़ी ।
पवँरिया—पु० ड्योढ़ीदार, चौकीदार 'लाखन बैठ पवँरिया जिन्हतें नवहिं करोर । प० २७५
पवन—पु०, स्त्री० वायु । प्राणवायु, श्वास । वि०पावन, शुद्ध करनेवाला 'परम कृपालु प्रनत-प्रतिपालक पतित-पवन ।' विन० ४८९ [ वीर, मारुतसुत । भीमसेन ।
पवनकुमार, पवनज,-तनय, पवनात्मज—पु० महा-
पवनपुत्र,-सुत—पु० देखो 'पवनकुमार' ।
पवनाशन,-नाशी—पु० साँप ।
पवनी—स्त्री० नाऊ, धोबी, चमार इ० जातियोंकी प्रजा ।
पवमान—पु० पवन । चन्द्रमा ।
पवर—वि० प्रवर ( मति० २२३ ) ।
पवरिया—पु० पौरिया ।
पवाँरना, पवारना—सक्रि० देखो 'पवारना' । 'कँकन एक कर काटि पवारा ।' प० २२२
पवाई—स्त्री० एक पाँवका जूता ( गुलाब ५८६ ) ।
पवाना—सक्रि० भोजन कराना ।
पवि—पु० वज्र, बिजली । वाक्य ।
पविताई—स्त्री० पवित्रता ।
पवित्र—वि० शुद्ध, पुनीत, स्वच्छ । पु० कुशा, वर्षा, इ० ।
पवित्रता—स्त्री० शुद्धता, स्वच्छता ।
पवित्री—स्त्री० कुशका एक तरहका छल्ला ।
पशम, पश्म, पसम—पु० एक तरहका मुलायम ऊन । तुच्छ वस्तु 'ग्वाल कवि कहैं देखो नारीको खसम जानैं धर्मको पसम जानैं पातक शरीर के ।' ग्वाल
पशमीना, पश्मीना—पु० एक तरहका ऊन या ऊनी
पशु—पु० चौपाया, प्राणी । [ कपड़ा ।
पशुजीवी—वि० पशुका मांस खाकर जीनेवाला ।
पशुता—स्त्री०-त्व—पु० पशुभाव, जड़ता, मूर्खता ।
पशुपति—पु० शिवजी । चरवाहा ( सूरा० ८३ ) ।
पशुराज—पु० सिंह ।
पश्चात्—अ० बाद, पीछेसे ।
पश्चात्ताप—पु० पछतावा, अनुताप ।
पश्चिम—पु० पूर्वके सामनेकी दिशा । प्रतीची । योरप वि० अन्तका, बादमें उत्पन्न ।
पश्तो—स्त्री० भारतकी पश्चिमोत्तर सीमाकी एक भाषा ।
पश्यतोहर—पु० आँखोंके सामने चुरा लेनेवाला व्यक्ति (सुनार आदि) 'वह शब्द वंचक जानि । अलि पश्य-तोहर मानि ।' के० १५१, 'देखत ही सुबरन हीरा हरि-बेको पश्यतोहर मनोहर ये लोचन तिहारे हैं ।' दास ९३
पष—पु० पंख, पक्ष, अर्द्धमास ।
पषा—पु० पखा, डाढ़ी ।
पषाण, पषान—पु० पत्थर ।
पषारना, पषालना—सक्रि०पखारना, धोना(कबीर १८३)।
पसंग, पसंघ, पसँगा—दे० 'पासंग' (उदे० 'पला') ।
पसंद—वि० इच्छानुकूल, अच्छा लगनेवाला । स्त्री०
पस—अ० इस कारण, इसलिए । [ अभिरुचि ।
पसनी—स्त्री० अन्नप्राशन, चटावन ।
पसमीना—पु० देखो 'पशमीना' । 'फेर पसमीननके चौहरे गलीचन पै सेज मखमली सौरि सोऊ सरदी सी जाइ ।' ग्वाल

पसर—पु० अर्द्धांजलि । स्त्री० फैलाव । पैठ, आक्रमण पहिली पसर स्नेही टूट्यो ।' छत्र० १०४

पसरना—अक्रि० पैर फैलाकर बैठना या सोना । फैलना ( उदे० 'किधौं' ) । [दूकानें हों ।

पसरहट्टा—पु० वह बाज़ार जहाँ पंसारियों इत्यादिकी

पसराना—सक्रि० फैलवाना । विस्तार कराना ।

पसरौंहा—वि० फैलनेवाला ।

पसली—स्त्री० पञ्जरकी हड्डी ।

पसही—पु० एक तरहका चावल ।

पसा—पु० अञ्जलि ।

पसाउ—पु० प्रसाद, अनुग्रह, प्रसन्नता 'सपनेहु साँचहुँ मोहि पर जो हरगौरि पसाउ ।' रामा० १५

पसाना—सक्रि० माँड़ निकालना, पसेव गिराना । अक्रि० प्रसन्न होना ।

पसार,-रा—पु० फैलाव । मायाका विस्तार, प्रपञ्च 'छाँड़ पसार राम भजु बौरे, भौसागर कठिनाई ।' बीजक १२८, ( गुलाब ३१८ ) ।

पसारना—सक्रि० फैलाना, बढ़ाना 'जोजन भर तेहि वदन पसारा ।' रामा० ४१५ (उदे०'कल', 'जेता' ) ।

पसारी—पु० पंसारी, बनिया, पसवन ।

पसाव—दे० 'पसावन' । प्रसाद, अनुग्रह (कबीर १०५) ।

पसावन—पु० वह पदार्थ जो पसानेपर निकले, माँड़ इ० ।

पसाहनि—स्त्री० अङ्गराग ( विद्या० ५५ ) ।

पसिंजर—पु० रेलगाड़ी या जहाजका यात्री । वह मुसाफिर गाडी जो प्रत्येक स्टेशनपर ठहरती है और डाक या एक्सप्रेससे कुछ धीमी चलती है ।

पसित—वि० बँधा हुआ ।

पसीजना—अक्रि० प्रस्वेद निकलना, दयार्द्र होना । 'नैननके मग जल वहै हियो पसीजि पसीजि ।' वि० १५५, 'गोरा बादल ढोउ पसीजे ।' प० ३०८

पसीना—पु० श्रमादिके समय शरीरसे निकलनेवाला द्रव पदार्थ, प्रस्वेद ( उदे० 'चितौना' ) ।

पसु—पु० पशु, चौपाया ।

पसुरी, पसुली—स्त्री० देखो 'पसली' ।

पसूजना—सक्रि० सीना ।

पसूता—स्त्री० प्रसूता, ज़च्चा ।

०, पसेव—पु० प्रस्वेद, पसीना 'कहे देत यह प्रगटही प्रगट्यो पूस पसेउ ।' वि० २०९, (उदे० 'गारना') ।

पसेरी—स्त्री० देखो 'पंसेरी' ।

पसोपेश—पु० दुविधा, हिचक । हानिलाभ, हिताहित ।

पस्त—वि० थका हुआ, हारा हुआ । [हीन, भीरु ।

पस्तहिम्मत—वि० जो हिम्मत हार गया हो, साहस

पहँ—अ० पास, से । [ * औजार ।

पहँसुल—स्त्री० तरकारी काटनेका हँसियाकी तरहका *

पहोटना—सक्रि० तेज करना (ग्राम० ५३ ) ।

पह—स्त्री० पौ, किरण । [ विवेक ।

पहचान—स्त्री० परिचय, निशानी, भेद करनेकी क्रिया,

पहचानना—सक्रि० चीन्हना, विवेक करना, भेद करना, भेद समझना, गुण दोषादि जानना ।

पहटना—सक्रि० धार तेज़ करना । पीछा करना ।

पहन—पु० पाहन, पत्थर 'जरहिं पहाड़ पहन सब फूटे' ।

पहनना—सक्रि० शरीरपर धारण करना । [ प० ९५

पहनाई—स्त्री० पहननेकी क्रिया, ढँग, या भाव । पहनानेकी मजदूरी ।

पहनाना—सक्रि० वस्त्रादि धारण कराना ।

पहनाव, पहनावा—पु० पोशाक, वेशभूषा ।

पहपट—पु० निन्दा । शोरगुल । धोखा । एक गीत ।

पहपटबाज—वि० शोरगुल करनेवाला, झगड़ालू, शरारती, धोखेबाज़ ।

पहर—पु० तीन घण्टेका समय, याम ।

पहरना—सक्रि० धारण करना ।

पहरा—पु०चौकी,रक्षाका प्रबन्ध,रखवाली ।ज़माना,युग ।

पहराइत—पु० पहरा देनेवाला 'पहराइत घर मुसो साहको रच्छा करने लागो चोर' । सुन्द० ९१

पहराना—सक्रि० दूसरेके शरीरपर धारण कराना । वस्त्र धारण कराना 'अपने कर बीरा मोहिं दीन्हों तुरत मोहि पहरायो ।' सू०

पहरावनी—स्त्री० वह पोशाक जो दानमें या खिलअतके तौरपर दी जाय ।

पहरावा—पु० पोशाक । वेशभूषा ।

पहरी—पु० पहरेदार ।

पहरुआ, पहरू—पु० पहरेदार, चौकीदार, रक्षक 'मो ताला पहरु पौढ़े, खुले वज्र केवार ।' सू० ४६

पहरेदार—पु० पहरादेनेवाला ।

पहरेवाला—पु० पहरेदार, रखवाला ।

पहल—पु० परत, तह । पहला, पुरानी रुई । बाजू, बगल । दल, पटल ( उदे० 'चहल' )

पहलदार—वि० जिसमें पहल हों ।

पहलवान—पु० मल्ल, कुश्ती लड़नेवाला ।
पहला—वि० प्रथम, आरम्भका । पु० पुरानी रुई ।
पहलू—पु० पार्श्व । बाजू । करवट, दिशा । किसी विषय-का कोई अंग, पक्ष ।
पहले—अ० आरंभमें । प्राचीन समयमें । आगे ।
पहले पहल—अ० सबसे पहले, सर्वप्रथम, पहली बार ।
पहलौंठा, पहलौठा—वि० प्रथम गर्भसे उत्पन्न, ज्येष्ठ ।
पहलौठी—स्त्री० प्रथम प्रसव ।
पहाड़, पहार—पु० पर्वत । बड़ी राशि या समूह । कठिन कार्य ।—टूटना=भारी संकट आ पड़ना(पभू० ८४)।
पहाड़ा—पु० गुणनसूची ।
पहाड़ी—स्त्री० छोटा पहाड़ । एक रागिनी । वि० पहाड़ सम्बन्धी । पहाड़पर होने या रहनेवाला ।
पहारू—दे० 'पाहरू' ।
पहिचानना—सक्रि० देखो 'पहचानना', (उदे० 'आपन') ।
पहित, पहिती—स्त्री० पकायी हुई दाल ।
पहिनना; पहिनावा—दे० 'पहनना'; 'पहनावा' ।
पहियाँ—अ० पहँ, पास ये सुख तीन लोकमें नाहीं जो पाये प्रभु पहियाँ ।' सू० ३०
पहिया—पु० चक्का, चक्कर ।
पहिरना; पहिराना; पहिरावनी—दे० 'पहरना'; 'पहराना' ( राम० १०९); 'पहरावनी' ( पासं० ४२ ) ।
पहिला; पहिले—दे० 'पहला'-वि०; 'पहले' ।
पहिलौंठा; पहिलौठी—दे० 'पहलौंठा'; 'पहलौठी' ।
पहीति—स्त्री० पकी हुई दाल ।
पहुँच—स्त्री० समझनेका सामर्थ्य । शक्ति । पैठ । प्राप्ति । जानकारी, प्रवेश ।
पहुँचना—अक्रि० चलकर उपस्थित होना । कहींतक बढ़ना या विस्तृत होना । प्रविष्ट होना, समझना । बराबरी-का होना । प्राप्त होना । पहुँचा हुआ = जो ईश्वरके समीप पहुँच चुका हो, सिद्ध ( पभू० १० ) ।
पहुँचा—पु० मणिबन्ध, कलाई ।
पहुँचाना—सक्रि० ले जाना । साथमें जाना । भेजना । बराबरीका कर देना । प्रविष्ट कराना ।
पहुँची—स्त्री० पहुँचेमें पहननेका भूषण, कंगना । कलाई बचानेका आवरण ( उदे० 'टोपा' ) ।
पहु—स्त्री० देखो 'पह' । आजु सखी हम इमि सुन्यो पहु फाटत पिय गौन ।' कबौ० ५३० [ २०४ ) ।
पहुनई, पहुनाई—स्त्री० आतिथ्य, अतिथिसत्कार ( प०

पहुना—पु० पाहुना, अतिथि ।
पहुप—पु० पुहुप, पुष्प, फूल ।
पहुम, पहुमि—स्त्री० पुहुमी, पृथिवी ( उदे० 'झला' ) ।
पहुला—पु० कोई ( बि० १०३ ) ।
पहेरी, पहेली—स्त्री० बुझौवल, गूढ़ प्रश्न ।
पाँ, पाँइ—पु० पाँव, चरण ( उदे० 'पिराना' ) ।
पाँइता—पु० पाँयता, खटियाका वह भाग जिधर पैर किये जाते हैं ।
पाँईबाग—पु० राजमहलके पासका जनाना बागीचा ।
पाँउ—पु० पाँव, चरण ।
पाँक—पु० पंक, कीचड़ ।
पाँख, पाँखड़ा—पु० पंख ( उदे० 'परचा' )
पाँखड़ी, पाँखुरी—स्त्री० पखुरी, पुष्पदल ।
पाँखी—पु० पक्षी । पतिंगा ।
पाँग—पु० नदीके पीछे हट जानेसे निकली हुई भूमि, खादर, कछार ।
पाँगुर—वि० लँगड़ा । पु० लँगड़ा मनुष्य 'पाँगुरको हाथ पाँय, आँधरेको आँखि है ।' विन० २०९ । पैरकी अँगुली ( विद्या० १०८ ) ।
पाँच—वि० चार और एक । पु० पाँचकी संख्या, सर्व-साधारण 'जो पाँचहि मन लागहि नीका ।' रामा०२०१
पांचजन्य—पु० श्रीकृष्णके बजानेका शंख ।
पांचाल—पु० एक देश । बढ़ई, नाई, धोबी, जुलाहा चमार—इन पाँचोंका समूह ।
पांचालिका पांचाली—स्त्री० द्रौपदी । गुड़िया ।
पाँची—स्त्री० एक तरहकी घास । पच्ची 'जाग्रत सयन रहत ऊपर मनि,ज्यों कंचन सँग पाँची ।' हित हरिवंश
पाँचैं—स्त्री० पंचमी ।
पाँजर—पु० पञ्जर, ठठरी ( उदे० 'टट्टी' ) । मांसु गिरा पाँजर होइ परी ।' प० १७९ । पार्श्व । पसली ।
पाँजी—स्त्री० नदीका सूख जाना जिससे पार करनेमें सुविधा हो ( बीजक ३७५ ) ।
पाँझ—वि० पानीके बहुत कुछ सूख जानेपर बिना नावके पार किये जाने योग्य, पायाब ।
पांडक—पु० पण्डुक ।
पाँडर—पु० कुन्द 'पाँडर पिञ्जर मन भँवर अरथ अनूपम बास । एक नाम सींचा अमी फल लागा बिस्वास ।' साखी ८१ । सफेद रङ्ग । कोई सफेद वस्तु ।
पांडव—पु० पाण्डुके पाँचों पुत्र ।

पांडित्य—पु० पण्डिताई । विद्वत्ता ।
पांडु—पु० लाली लिये पीला रंग । पाण्डु वर्णवाला व्यक्ति। सफेद रंग । धृतराष्ट्रके भाईका नाम ।
पांडुक—पु० पण्डुक । [ सफेद हो ।
पाँडुर—वि० पीला या सफेद । पु० वह जो पीला या
पांडुलिपि—स्त्री० लेखादिका पहला रूप, हस्तलिपि ।
पांडुलेख—पु० देखो 'पाण्डुलिपि' ।
पांडे—पु० ब्राह्मणोंकी एक शाखा । रसोइया । अध्यापक 'जब पांड़े इत उत कहिं गये । बालक सब इकठौरे
पाँत—स्त्री० पंक्ति, समूह । [ भये ।' सूबे० ३१
पाँति—स्त्री० पंक्ति, कतार 'कीन्हेसि नखत तराइन पाँती ।' प० १ । स्वजनसमूह ।
पांथ—पु० विरही । पथिक ।
पांथनिवास-पु०-शाला—स्त्री० यात्रियोंके ठहरनेकी
पाँयँता—पु० देखो 'पाँइता' । [ जगह, चट्टी ।
पाँय—पु० पाँव ।—लगना = चरण छूना, प्रणाम करना ।
पाँव—पु० पैर, चरण ।
पाँवड़ा—पु० पाँव रखनेके लिए प्रस्तारित वस्त्र 'पट पाँवड़े परहिं विधि नाना ।' रामा० १७१
पाँवड़ी—स्त्री० खड़ाऊँ, जूता ।
पाँवर—वि० पामर, नीच, पापी 'छत्रिय तनु धरि समर सकाना । कुल कलङ्क तेहि पावँर जाना ।'रामा० १५३
पाँवरि, पाँवरी—स्त्री० खड़ाऊँ, जूता ( सू० ३२, प० ३०४ ) । सीढ़ी । पौरी, ड्योढ़ी 'साजी बैठक और पाँवरी ।' प० १३
पांशु—स्त्री० धूलि, रेणु । गोबरकी खाद ।
पांशुल—वि० धूलियुक्त, धूलि धूसरित, कलंकित ।
पांशुला—स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री । रजस्वला ।
पाँस—स्त्री० खाद । [टुकड़े ( उदे० 'दाँवँ' ) ।
पाँसा—पु० चौपड़ खेलनेके हड्डी आदिके बने चौपहल
पाँसी—स्त्री० भूसा बाँधनेकी डोरी इ० का बना जाल ।
पांसु, पांसुरी—स्त्री० पसुरी, पसली । '· मसककी पाँसुरी पयोधि पाटियतु है ।' कविता० २२६
पांसुला—स्त्री० देखो 'पांशुला' ।
पाँहीं—क्रिवि० पास, निकट ।
पा, पाइ—पु० पाँव, चरण 'भारतहू पा परिय तुम्हारे ।' रामा० १४८, ( उदे० 'अटपटा' ), '·· वार वार बदौं तेहि पाई ।' सू० १
पाइक—पु० पायक, दूत । अनुचर । पैदल सैनिक(सुजा० ६० ) । मल्ल, पटेबाज ( सू० १० ) ।
पाइतरी—स्त्री० देखो 'पाँइता' ।
पाइमाल—वि० 'पायमाल', विनष्ट 'पानीको ललात, बिललात, जरे गात जात, परे पाइमाल जात, भ्रात
पाइरा—पु० रकाब । [ तू निबाहिहै ।' कविता० १७८
पाइल—स्त्री० पायल, पायजेब ( बि० १८१ ) । नूपुर ।
पाई—स्त्री० घेरेमें नाचना, पूर्ण विराम या चतुर्थांश सूचक छोटी खड़ी रेखा । पैसेका तीसरा भाग । एक कीड़ा ।
पाउँ—पु० पाँव । [ पुराना घिसा हुआ टाइप ।
पाउ—पु० चौथाई '···राम, रावरे बनाये बने पल
पाउडर—पु० बुकनी, चूर्ण । [ पाउमें ।' विन० १७८
पाक—पु० पकानेकी क्रिया । पचना । पिंडदानकी खीर। एक दैत्य । पकवान । वि० पका हुआ 'जनु छुइ गयो पाक बरतोरा ।' रामा० २१२ । पवित्र,साफ, निष्पाप।
पाकदामन—वि० पतिव्रता ।
पाकना—अक्रि० पकना ( प० २७० ) ।
पाकयज्ञ—पु० एक सामान्य या घरेलू यज्ञ ।
पाकर, पाकरी—पु० वृक्ष-विशेष 'तिन्ह पर एक एक बिटप बिसाला । बट पीपर पाकरी रसाला ।' रामा०
पाकरिपु,-शासन,-सासन—पु० इन्द्र । [५६७
पाकशाला—स्त्री० रसोईघर ।
पाकस्थली—स्त्री० पेटका वह भाग जहाँ जाकर भोजन
पाकहंता, पाकारि—पु० इन्द्र । [पचता है, पक्वाशय ।
पाका—पु० फोड़ा । जखम । वि० पक्क ।
पाकिट—पु० जेब ।
पाकीजा—वि० पवित्र, पुनीत । [ तरफदार ।
पाक्षिक—वि० पक्ष-सम्बन्धी । पक्षमें एक बार होनेवाला
पाखंड—पु० छल 'जग्य कीन्ह तेहि पाखण्ड, भये प्रगट जन्तु प्रचण्ड ।' रामा० ५१४ । दिखाऊ भक्ति, मिथ्या
पाखंडी—वि० छली, कपटाचारी, ठग । [ धर्म । पामर ।
पाख—पु० पक्ष, पखवाड़ा । चौड़ाईकी दीवारका ऊपर निकला हुआ हिस्सा । [ सोहैं ।' रामा० २२३
पाखर—स्त्री० लोहेकी झूल 'गजराजन ऊपर पाखर
पाखरी—स्त्री० वह टाट जिसे गाड़ीमें बिछाकर अनाज भरते हैं ।
पाखा—पु० कोना । पक्ष, पाख । पंख । चौड़ाईवाली दीवारोंका ऊपर उठा हुआ त्रिकोणाकार भाग ।

पाखान—पु० पाषाण, पत्थर।

पाखाना—पु० मल। मलत्यागका स्थान।

पाग—स्त्री० चाशनीमें मिलाकर बनी औषधि। चाशनी। पगड़ी ( उदे० 'उदरना', 'गंगाजल' )।

पागना—सक्रि० चाशनीमें डुबाना। तन्मय करना, डुबाना 'भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे। राम सनेह सुधा जनु पागे।' रामा० २८७। अक्रि० तन्मय होना, डूबना '..... ता सुखमें दोउ पागे।' सू० ७५

पागल—वि० बावला, उन्मत्त, मूर्ख।

पागलखाना—पु० वह स्थान जहाँ पागल रखे जाते हैं और उनकी चिकित्सा की जाती है।

पागलपन—पु० विक्षिप्तता, उन्माद, नासमझी।

पागलिनी—स्त्री० पगली, विक्षिप्त स्त्री ( प्रिय० २११)।

पागुर—पु० जुगाली।

पाचक—पु० पचानेवाला, अग्नि। हाजमेकी दवा। रसोइया।

पाचन—पु० पचाने या पकानेकी क्रिया।

पाचना—सक्रि० परिपक्व करना। पकाना। अक्रि० मरना 'और सुमन सों बँधि पाचत हौ, फाटि न जात हिये।' [ सू० २५६

पाचिका—स्त्री० रसोई करनेवाली।

पाच्य—वि० पचाने ( या पकाने ) योग्य।

पाछ—क्रिवि० पीछे। पु० पिछला भाग।

पाछना—सक्रि० टीका लगाना, चीरना।

पाछल, पाछिल—वि० पिछला 'तेहि खल पाछिल बयरु सँभारा।' रामा० ९५

पाछी, पाछू, पाछे—क्रिवि० पीछे।

पाछु—पु० पीछा 'आशा लुबधल न तेजए रे कृपनक पाछु भिखारि।' विद्या० ४६

पाज—पु० पाँजर, पार्श्व।

पाजामा—पु० सुथना।

पाजी—वि० दुष्ट, बदमाश। पु० प्यादा। रक्षक 'सहस सहस तहँ बइठे पाजी।' प० १७

पाजेब—स्त्री० पैरका एक गहना।

पाटंबर—पु० रेशमी कपड़ा।

पाट—पु० रेशम। वस्त्र। पत्थर। चक्कीका पत्थर। पीढ़ा, तख्ता ( प० १९३ )। चौड़ाई। सिंहासन ( प० ६ )। बालोंकी पटियाँ 'भोरहि सोभा सिर सिन्दूर। जुगल पाट घन घटा बीच मन उदय कियो नव सूर।' सू० १६८

पाटन—पु० पटाव, छत। एक सर्प-मंत्र।

पाटना—सक्रि० ढँकना, छाना, गड्ढे आदिको भर देना ( उदे० 'चीना' )। ढेर लगा देना।

पाट महादेई—स्त्री० पट्ट महादेवी, पटरानी (प० १६६)।

पाटमहिषी, पाटरानी—स्त्री० पटरानी, प्रधान रानी।

पाटल—पु० एक प्रकारका फूलवाला पौधा। पाढ़र।

पाटला—पु० पटल, पल्ला 'सगुन अगुन दुइ पाटला, तामें जीव पिसात।' साखी ७२। एक तरहका सोना।

पाटलि, पाटली—स्त्री० पाटल।

पाटलिपुत्र—पु० आधुनिक पटना।

पाटव—पु० पटुता, निपुणता, दृढ़ता। आरोग्य।

पाटवी—वि० रेशमी। पटरानीसे पैदा हुआ।

पाटा—पु० पीढ़ा। पट्टा 'जैसो अजामेलको दीनो सो पाटो लिख पाऊँ।' सूवि० ४८। ओटके लिए बनी हुई रसोई घरकी छोटी दीवार।

पाटी—स्त्री० पंक्ति। श्रेणी (पर्वत-पाटी) रीति। तख्ती। पाठ।—पढ़ना = शिक्षा पाना, सीखना 'मन हरिबेकी ज्यों पढ़े पाटी स्याम सुजान।' रतन० ९६। खाटकी लकड़ी। बालोंकी पटियाँ 'कै पत्रावलि पाटी पारी।' प० २३४, ( अ० १७ )

पाटीर—पु० चन्दन-विशेष ( राम० ३०७ )।

पाठ—पु० सबक, अध्ययन, अध्याय, विशेष शब्दयोजना।

पाठक—पु० शिक्षक, वाचक।

पाठन—पु० पढ़ानेकी क्रिया या भाव, अध्यापन।

पाठना—सक्रि० पढ़ाना।

पाठशाला—स्त्री० मदरसा, स्कूल।

पाठांतर—पु० पाठभेद, अन्य पाठ।

पाठा—पु० मोटा ताज़ा आदमी। वि० पंडित। हृष्टपुष्ट।

पाठिका—स्त्री० अध्यापिका। पढ़नेवाली।

पाठी—पु० पाठ करनेवाला।

पाठीन—पु० गूगल वृक्ष। एक मछली 'मीन पीन पाठीन पुराने।' रामा० २९१

पाठ्य—वि० पढ़ने योग्य। जो पढ़ाया जाय।

पाड़—पु० कोर, किनारा। बाँध। मचान।

पाड़इ—स्त्री० पाटल नामका पेड़।

पाड़ा—पु० एक मछली। मुहल्ला। भैंसका बच्चा।

पाढ़—पु० पीढ़ा। खेतकी मचान। स्त्री० किनारा (रत्ना० १२३)।

पाढ़त—पु० जो कुछ पढ़ा जाय। मंत्र।

पाढ़र—पु० एक वृक्ष। वि० किनारदार (रत्ना० १२१)।

पाढ़ा—पु० चित्रमृग ( मू० १४३ )।
पाण—पु० हाथ। व्यापार। बाजी।
पाणि, पाणी—पु० हाथ।
पाणिग्रहण—पु० विवाहकी एक रस्म, विवाह।
पाणिज—पु० अंगुली। नख।
पाणिनि—पु० संस्कृत व्याकरणके रचयिता एक मुनि।
पाणिमूल—पु० कलाई।
पाणिरुह—पु० नाखून, उँगली।
पात—पु० पतन। पत्ता। कानका एक गहना।
पातक—पु० पाप।
पातकी—वि० पापी ( उदे० 'तरसना' )।
पातन—पु० गिरानेवाला (सू० १००)। गिरानेकी क्रिया।
पातर,-ल—स्त्री० पातुर, वेश्या। पत्तल। वि० पतला, 'खरी पातरी हू तऊ लगै भरी सी देह।' बि० २८६। नीच, क्षुद्र 'जतिया क पातरि' ग्राम० १७
पातरि,-री—स्त्री० पत्तल।
पातशाह—पु० सम्राट्।
पाता—पु० पत्ता। पीनेवाला। रक्षक।
पाताखत—पु० पत्र और अक्षत, छोटी मोटी भेंट।
पातावा—पु० मोजा।
पातार, पाताल—पु० पृथिवीके नीचे सातवाँ लोक। गुफा।
पाति, पाती—स्त्री० पत्ती। चिट्ठी 'रावन कर दीजहु यह पाती।' रामा० ४४१। पत, आबरू।
पातिग—पु० पातक ( कबीर २४३ )।
पातिव्रत,-व्रत्य—पु० पतिव्रता होनेका भाव।
पातुर, पातुरनी, पातुरि—स्त्री० वेश्या।
पात्र—पु० बर्त्तन। अधिकारी, भाजन। नट, नाटकमें भाग लेनेवाले व्यक्ति। पत्ता।
पात्रता—स्त्री०, पात्रत्व—पु० पात्र होनेका भाव, योग्यता। [ जा सके।
पात्रिय—वि० जिसके साथ एक ही पात्रमें भोजन किया
पाथ—पु० मार्ग, जल 'छइवे एक छतरिया बरसत पाथ।' रहीम ४३। आकाश, सूर्य, वायु।
पाथना—सक्रि० थोपना, बनाना, ठोकना।
पाथर—पु० पत्थर ( उदे० 'चुनना', साखी १३ )।
पाथेय—पु० रास्तेका कलेवा, सम्बल।
पाथोज—पु० कमल।
पाथोद, पाथोधर—पु० मेघ।
पाथोधि—पु० समुद्र।
पाद—पु० चरण, नीचेका हिस्सा। चौथा भाग। किरण।
पादग्रंथि—स्त्री० गुल्फ।
पादज—वि० पैरसे उत्पन्न। पु० शूद्र।
पादटीका—स्त्री० पादटिप्पणी, फुटनोट।
पादत्र, पादत्राण—पु० जो पैरकी रक्षा करे, जूता या
पादप—पु० पेड़। [ खड़ाऊँ।
पादपीठ—पु० पाँव रखनेका आसन, चौकी, पीढ़ा।
पादपूरण—पु० किसी पद्यके किसी चरणको पूरा करना, चरण-पूर्त्तिके लिए रखा गया अक्षर या शब्द।
पादप्रक्षालन—पु० पाँव धोना।
पादप्रहार—पु० लात मारना, चरणाघात।
पादरी—पु० ईसाई धर्मका पुरोहित।
पादशाह—पु० बादशाह, सम्राट्।
पादाति, पादातिक—पु० पैदल सिपाही।
पादारघ—पु० पाँव धुलानेका पानी। भेंट।
पादुका—स्त्री० खड़ाऊँ।
पादोदक—पु० वह जल जिसमें पाँव धोया गया हो,
पाद्य—पु० पाँव धोनेका जल। [ चरणोदक।
पाद्यार्घ्य—पु० देखो 'पादारघ'।
पाधा—पु० पुरोहित, पण्डित।
पान—पु० ताम्बूल। पत्ता ( उदे० 'दौ' )। पानकी तरहका ताबीज। प्राण। पीनेकी क्रिया। पीनेकी वस्तु, मद्य, इ०। पानी 'तरुवर फल नहिं खात हैं सरवर पियहिं न पान।' रहीम। पौसरा। कटोरा। रक्षण। हाथ 'रहत पसारे लोभिया निसवासर पल पान।' रतन ३०। **पान देना** = प्रतिज्ञाबद्ध करना। **पान लेना** = प्रतिज्ञा करना।
पानगोष्ठी—स्त्री० शराबियोंका समूह।
पानदान—पु० पनडब्बा, गिलौरीदान।
पानरा—पु० पनारा। [ न तिनके सीस।' व्यासजी
पानही—स्त्री० पनही, जूता 'स्वपचभक्तकी पानही, तुलै
पाना—सक्रि० प्राप्त करना, भोगना। उपलब्ध करना। समझना, निकट पहुँचना, भोजन करना, खाना। वि० पावना, प्राप्य।
पानात्यय—पु०अधिक शराब पीनेसे होनेवाला एक रोग।
पानि—पु० पाणि, हाथ। पानी 'दूध पानि सब करै निरारा।' प० ७। चमक, आब 'मोतिहिं मलिन जो

होइ गइ कला । पुनि सो पानि कहाँ निरमला ।' प० २५

**पानिप**—पु० आब, कान्ति, तेज 'सकल जगत पानिप रह्यो बूँदीमें ठहराय ।' ललित० १६ । जल 'अब तेरी बसिबो यहाँ नाहिंन उचित मराल । सकल सूखि पानिप गयो, भयो पङ्कमय ताल ।' मति० १८७ । शोभा ( भू० ५७ ) ।

**पानिय**—पु० पानी 'प्यासी तजौं तनु रूप-सुधा बिनु पानिय पीको पपीहै पिआओ ।' हरि० । वि० रक्षणीय, रक्षा करनेका ( उद्दे० 'झाँका' ) ।

**पानी**—पु०पाणि, हाथ 'सौंपेसि मोहि तुम्हहिं गहि पानी ।' रामा० ४८५ । जल अम्बु । वर्षा । रस । आब, चमक प्रतिष्ठा, लज्जा । स्वाभिमान, हिम्मत । जलवायु । —**उतारना** = बेइज्जत करना ।—**करना** = शान्त करना ।—**का बुलबुला** = क्षणभरमें नष्ट होनेवाली वस्तु ।—**की तरह बहाना** = मनमाना खर्च करना ।—**के मोल** = बहुत सस्ता ।—**देना** = तर्पण करना, क्यारीमें पानी डालना ।—**होना** = अत्यन्त लज्जित होना ।—**पी पीकर कोसना** = लगातार कोसना ।—**फेर देना** = व्यर्थ या चौपट कर देना । —**लगना** = जलवायुसे स्वास्थ्य बिगड़ना 'लागत अति पहार कर पानी ।' रामा० २२९; पानीके स्पर्श-से दाँतोंमें पीड़ा होना; नयी स्थितिका असर होना ।

**पानीदार**—वि० जिसमें चमक हो,आनवाला,आबरूदार ।

**पानीदेवा**—पु० तर्पण करनेवाला, पुत्र, स्ववंशीय व्यक्ति ।

**पानीफल**—पु० सिंघाडा ।

**पानीय**—दे० 'पानिय' ।

**पानूस**—पु० फानूस ।

**पानौरा**—पु० पानके पत्तेकी बनी पकौड़ी ।

**पान्यो**—पु० पानी 'सूर ऊधो सों मिलत भयो सुख ज्यों झख पायो पान्यो ।' भ्र० ७

**पाप**—पु० पातक, अपराध, दोष, बुराई, छल, कष्ट, सङ्कट । अशुभ ग्रह । वि० पापी, नीच ।

**पापकर्मा,-कर्मी**—वि० पापी ।

**पापग्रह**—पु० अनिष्ट फल देनेवाले ग्रह ( सूर्य, मङ्गल, शनि, राहु, केतु ) । कृष्ण पक्षकी अष्टमीसे शुक्ल पक्ष-की अष्टमीतकका चन्द्रमा ।

**पापड़, पापर**—पु० मूँग आदिके आटेकी बनी पतली रोटीके सदृश वस्तु ( के०१५८ ) । [ जी । भगवान ।

**पापनाशन,-नाशक**—पु० पाप नष्ट करनेवाला । शिव

**पापहर, हा**—वि० पापोंको दूर करनेवाला ।

**पापाचार**—पु० दुराचार, बुरा आचरण ।

**पापात्मा**—वि० दुष्टात्मा, पापी ।

**पापिष्ठ**—वि० महापातकी ।

**पापी**—वि० पातकी, दुष्ट । पु० दुराचारी ।

**पापीयसी**—स्त्री० पापिनी ( प्रिय० ७४ )

**पापोश**—पु० जूता ।

**पाबंद**—वि० बाध्य, विवश, बँधा हुआ ।

**पाबंदी**—स्त्री० लाचारी, मजबूरी, बाध्यता । पालन ।

**पामड़ा, पामरा**—पु० देखो 'पाँवडा' । 'पामरनि पामरे परे हैं पुर पौरि लग ।' देव

**पामर**—वि० नीच ; दुष्ट, मूर्ख ।

**पामरी**—स्त्री० पाँवड़ी । उपरना ( कविप्रि० ९० ) ।

**पामाल**—वि० तबाह, बरबाद । पददलित ।

**पायँ, पाय**—पु० पाँव चरण ( उद्दे० 'कौंवरा' ) ।

**पायँजेहरि**—स्त्री० पायजेब ।

**पायँता**—पु०, **पायँती**—स्त्री० देखो 'पाँइता' ।

**पायंदाज**—पु० पाँव पोंछनेकी चटाई या बिछावन ।

**पायक**—पु० दूत । पैदल सैनिक । मल्ल, पटेबाज । 'लरत कहूँ पायक सुभट कहूँ नर्तत नटराज । राम० ३५ । नौकर ,'' पायक मलेच्छनके काहेको कहा-इये'—सेनापति, ( सू० ९८ ) । पताका ( ? ) घण्ट घण्टि धुनि बरनि न जाहीं सरव करहिं पायक फहराहीं । रामा० १६२

**पायखाना**—दे० 'पाखाना' । [

**पायजामा**—दे० 'पाजामा' ।

**पायजेब**—स्त्री० पाँवका एक गहना ।

**पायड़ा**—पु० रकाब 'हर घोड़ा ब्रह्मा कड़ी बिस्नू पीठ पलान । चन्द सूर दोय पायड़ा चढ़सी सन्त सुजान ।' [ साखी २४

**पायतख्त**—पु० राजधानी ।

**पायतन**—पु० पैताना ( साखी ४२ ) ।

**पायताबा**—दे० 'पाताबा' ।

**पायदार**—वि० सुदृढ, टिकाऊ ।

**पायमाल**—वि० पद-दलित, विनष्ट ( दे० 'पाइमाल' ) ।

**पायमाली**—स्त्री० दुर्गति, नाश, खराबी ।

**पायरा**—पु० रकाब । एक तरहका कबूतर ।

**पायल**—स्त्री० पाँवका एक गहना, पायजेब 'किय घायल

चित चाय लगि, बजि पायल तुव पाँय।' वि० ८९

पायस—स्त्री० खीर ( उदे० 'डाँपना' ) [ ( वंग० )

पायसा—पु० पड़ोस, प्रतिवेश।

पाया—पु० पावा, गोड़ा, खम्भा।

पायाव—वि० कम गहरा, थाह।

पायिक—पु० देखो 'पायक'।

पायु—पु० मलोत्सर्गका मार्ग ( जीव० ७० )।

पारंगत—वि० सुनिष्णात, पूर्ण पण्डित।

पारंपर्य—पु० क्रमपरम्पराका भाव।

पार—पु० तट, दूसरा किनारा ( उदे० 'उतारना' ), ओर, छोर, अन्त। अ० परे, दूर 'निज इच्छा निर्मित तनु माया-गुन गो-पार।'—उतारना -करना=दूसरे किनारे पहुँचाना, उद्धार करना।—पाना=अन्त पाना, जीतना।—बसाना=पार पड़ना, वश चलना 'झूठ बात नहिं बोलिए जब लगि पार बसाय।' साखी

पारई—स्त्री० बड़ा कसोरा ( दोहा० १३४ )। [ १५६

पारख—स्त्री० परख, जाँच। पु० परखैया।

पारखद—पु० पार्षद, अनुचर। [पारखी 'वैराग्य सं०

पारखी—वि० जाँचनेवाला, परीक्षक 'सोइ पण्डित सोइ

पारग—वि० पार जानेवाला, पूर्ण पण्डित, समर्थ।

पारगत—वि० जिसने पार किया हो, समर्थ, सुचतुर।

पारचा—पु० धज्जी, टुकड़ा। वस्त्र।

पारजात—पु० पारिजात नामक देवतरु।

पारण—पु० व्रतके दूसरे दिनका भोजन। समाप्ति।

पारतंत्र्य—पु० पराधीनता।

पारत्रिक—वि० पारलौकिक। जिससे परलोक सुधरे।

पारथ—पु० देखो 'पार्थ'। पारथी ( बीजक० ३४ )।

पारथिव—पु० राजा। मिट्टीका शिवलिङ्ग 'तव मज्जन करि रघुकुलनाथा। पूजि पारथिव नायउ माथा।' रामा० २४८ वि० पृथिवी सम्बन्धी। मिट्टीका बना।

पारद—पु० पारा 'क्यों धौं चञ्चल प्रान ए पारद लौं न उड़ात।' मति० २३२

पारदर्शक—वि० जिससे आरपार दिखायी दे।

पारदर्शी—वि० उस पारतक देखनेवाला, दूरदर्शी, अनुभवी।

पारधि, पारधी—पु० धनुष चलानेवाला, शिकारी 'हम अनाथ बैठे द्रुमडरिया पारधि साधे बान।' सूवि० २२

पारधिपति—पु० धनुष चलानेवालोंमें श्रेष्ठ, कामदेव।

पारन—पु० देखो 'पारण'।

पारना—सक्रि० लेटाना, गिराना 'एकहिं एक मरदि महि पारहि।' रामा० ४९८। साँचेमें डालकर बनाना। पहनना। पोषण करना, पालन करना 'सौ न होउँ चरननको चेरो जो न प्रतिज्ञा पारौं। सू०३८। अक्रि० सकना 'नासा तिलकको बरनइ पारे।' रामा० ११०

पारमार्थिक—वि० परमार्थसम्बन्धी। परमार्थकी सिद्धि देनेवाला। वास्तविक। [वाला।

पारलौकिक—वि० परलोक-सम्बन्धी। परलोक सुधारने-

पारषद—पु० समीप रहनेवाला अनुचर।

पारशव,-सव—पु० दूसरेकी स्त्रीसे उत्पन्न पुत्र। लोहा। वि० लौहनिर्मित। परशु सम्बन्धी।

पारस—पु० लोहेको सोना बनानेवाला पत्थर। स्पर्श मणि। पत्तलपर लगाया हुआ भोजन। देश विशेष। क्रिवि० समीप, पास।

पारसा—वि० नेक, साधु, परहेजगार।

पारसाई—स्त्री० नेकी, साधुता पवित्रता (सेवा० ८९)।

पारसी—पु० पारस-निवासी। एक अग्निपूजक जाति। वि० पारस देश-सम्बन्धी, पारसका।

पारस्परिक—वि० आपसका, परस्परमें होनेवाला।

पारा—पु० धातुविशेष। टुकड़ा। मुहल्ला ( छत्तीस० )।

पारायण—पु० निश्चित समयमें पूरा करना, समाप्ति।

पारावत—पु० कबूतर। पण्डुक। पर्वत। बन्दर।

पारावार—पु० सीमा। अन्त। दोनों किनारे। सागर।

पारि—स्त्री० दिशा, तरफ, तट, मेंड, सीमा।

पारिख—स्त्री० परख, जाँच। पु० परीक्षा करनेवाला

पारिजात—पु० एक देवतरु। [ ( उदे० 'परीखना' )।

पारितोषिक—पु० भेंट, पुरस्कार।

पारिपार्श्विक—पु० पास रहनेवाला नौकर, अरदली।

पारिभाषिक—वि० जिसका अर्थ परिभाषाद्वारा निश्चित कर दिया गया हो, जो कोई विशेष अर्थ सूचित करनेके लिये सङ्केत रूपमें प्रयुक्त किया जाय।

पारिषद—पु० सभासद, पञ्च। गण।

पारी—स्त्री० बारी, अवसर, प्याला।

पारीछत—पु० राजा परीक्षित। परीक्षितका पुत्र जनमेजय।

पारुष्य—पु० परुषता, कठोरता, कडुवापन।

पार्थ—पु० पृथा पुत्र अर्जुन आदि। राजा।

पार्थक्य—पु० पृथक् होनेका भाव, फर्क, जुदाई।

पार्थव—पु० स्थूलता, भारीपन।

पार्थिव—पु० राजा। मिट्टीका पात्र। मिट्टीका शिवलिङ्ग। वि० पृथिवी सम्बन्धी, मिट्टीसे उत्पन्न।
पार्थी—पु० मिट्टीका शिवलिङ्ग ( ग़बन ८२ )।
पार्वण—पु० पर्वमें किया जानेवाला श्राद्ध।
पार्वत—वि० पर्वत-सम्बन्धी, पर्वतपर होनेवाला। पु० ईंगुर, शिलाजीत, बकायन।
पार्वती—स्त्री० हिमालयकी पुत्री, गिरिजा, भवानी।
पार्वतीय—वि० पहाड़ सम्बन्धी, पहाड़ी।
पार्वतेय—वि० पहाड़पर होनेवाला।
पार्श्व—पु० बगल, बाजू। पसली। पास, समीपता।
पार्श्वकर—पु० पिछले सालकी बाकी मालगुजारी।
पार्श्वच्छवि—स्त्री० बगली शोभा, अप्रधान शोभा 'ईर्ष्या कुछ नहीं मुझे, यद्यपि मैं ही वसन्तका अग्रदूत। ब्राह्मण-समाजमें ज्यों अछूत, मैं रहा आज यदि पार्श्वच्छवि।' अनामिका ११४।
पार्श्ववर्त्ती—वि० पास रहनेवाला।
पार्षद—पु० समीपी अनुचर, गण। मन्त्री।
पाल—पु० पार, मेंड़, ऊँचा किनारा 'टूट पाल सरवर बहि लागे।' प० २९, ( १३, २६ भी )। तम्बू, नावके मस्तूलसे टाँगा गया कपड़ा। फल पकानेकी रीति। (रतन० ४१)। पालक, रक्षक। पीकदान। एक वंश।
पालउ—पु० पल्लव 'पेड़ काटि तैं पालउ सींचा।' रामा० २७६
पालक—पु० रक्षक। साईस। पलङ्ग 'जा दिन केशव कोउ न आवै। ता दिन पालक ते न उठावै।' राम० ३०१, ( प० १३९ )। एक साग।
पालकी—स्त्री० शिविका, डोली।
पालतू—वि० पाला हुआ। जो पाला जाय।
पालथी—स्त्री० देखो 'पलथी'।
पालन—पु० भरण पोषण, उल्लंघन न करना, वचनादि-की रक्षा या निर्वाह। हिंडोला ( उद्दे० 'झगूला' )।
पालना—पु० बच्चोंका खटोला, झूला। " एक तरहका गीत जो बच्चोंको पालनेमें झुलाते समय गाया जाता है 'सो पालना सूरदासजीने" ता समय गाये।' अष्टछाप १२। सक्रि० पोषण करना, रक्षा करना ( उद्दे० 'छलछाया'.)। निबाहना। [ रामा० २२१
पालव—पु० पल्लव, पत्ता 'पालव बैठि पेड़ एहि काटा।'
पाला—पु० तुषार, हिम। मेंड़। केन्द्र, अखाड़ा। —पड़ना = काम पड़ना ( साखी १६० )।
पालागन—स्त्री० प्रणाम।
पालि—स्त्री० पंक्ति, सेना (छत्र० ११०)। मेंड़। ( कबीर १७०), किनारा, करारा, सीमा। गोद। कानकी लौ।
पालित—वि० जिसका पालन किया गया हो।
पाली—स्त्री० एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्ध साहित्य लिपिबद्ध है।
पालू—वि० पालतू।
पाले—क्रिवि० वशमें चंगुलमें 'परेहु कठिन रावनके पाले।' रामा० ५०६
पावँ—पु० पैर, चरण।—धरना = पधारना, किसी मार्ग-पर चलना।—पकड़ना,—पड़ना = प्रणाम करना, दीनतापूर्वक विनती करना।—पलोटना = चरण दाबना।—पसारना = आरामसे सोना, आडम्बरमें खर्च करना।—फूँक फूँककर रखना = बड़ी साव-धानीसे काम करना।—बढ़ाना = सीमासे आगे बढ़ना, जल्दी जल्दी चलना।—भारी होना = गर्भ रहना।
पावँड़ा; पावँड़ी; पावँर; पावँरी—दे० 'पाँवड़ा', पाँवड़ी; पाँवर, पाँवरी।'
पाव—पु० चौथाई। चार छटाक।
पावक—वि० पवित्र करनेवाला। पु० अग्नि।
पावदान—पु० पावँ रखनेके लिए बनी हुई चीज़ या स्थान।
पावन—वि० पवित्र। शुद्ध करनेवाला। पु० अग्नि, शुद्धि।
पावनता—स्त्री० पवित्रता।
पावना—सक्रि०, वि० दे० 'पाना'। पु० प्राप्य रकम।
पावली—स्त्री० चौथाई सिक्का, चवन्नी।
पावस—पु० वर्षा ऋतु।
पावा—पु० गोड़ा, खम्भा।
पाश—पु० फाँस, जाल, बन्धन।
पाशव—वि० पशु सम्बन्धी, बर्बर।
पाशुपत—वि० शिव सम्बन्धी। शैव।
पाश्चात्य—वि० पश्चिमका, पश्चिममें रहनेवाला। पीछेका।
पाषंड, पाषंडी—दे० 'पाखंड', 'पाखंडी'।
पाषाण, पाषान—पु० पत्थर।
पाषाणी—स्त्री० पत्थरका छोटा बटखरा। वि० पत्थरका बना हुआ, दुर्गम, दुर्लंघ्य।
पासंग—पु० तराजूके पलड़ोंकी कसर या उसे दूर करनेको रखे गये पत्थरके रोड़े आदि।
पास—पु० समीपता। अधिकार। पार्श्व, तरफ 'नगर सँवारहु चारहुँ पासा।' रामा० १५५। पाँसा। फाँस,

बन्धन 'देन लगत है पास जग विरह अहेरी आय। प्रीतम रूप मवास बिच बचत नैन मृग जाय।' रतन० ३३। क्रिवि० समीप, अधिकारमें।

पासनी—स्त्री० अन्नप्राशन, चटावन ( छत्र० २४ )।

पासमान, पासवान—पु० साथ रहनेवाला सेवक ( सुजा० ६४ ), 'जिनके धनद समान पेखियतु पासवान'—भू० ६३।

पासा—पु० चौपड़ खेलनेके हड्डी आदिके चौपहल टुकड़े।

पासासार—पु० पासेका खेल ( प० २७६ )।

पासि, पासिक—पु० फन्दा, बन्धन ( उदे० 'चूँच' )।

पासिका—स्त्री० देखो 'पासिक'।

पासी—स्त्री० फाँसी, फन्दा 'लोक वेद कुलकी मरजादा इहै गलेमें पासी।' कबीर १२९, (१३४)। पिछाड़ी। पु० जाल बिछाकर पक्षी पकड़नेवाला।

पासुरी—स्त्री० देखो 'पसुरी'।

पाहँ—दे० 'पाहिं'।

पाहन—पु० पत्थर 'पाहनतें न काठ कठिनाई।'रामा० २४६

पाहरू—पु० पहरेदार,रक्षक ( रामा० ४३० )।

पाहिं, पाहीं—अ० पास, के प्रति ( रामा० ३५८ )।

पाही खेती—स्त्री० जिस गाँवमें बसे हों उससे दूर अन्य गाँवमें होनेवाली खेती ( कविता० १४५ )।

पाहुँच—स्त्री० पहुँच, पैठ, जानकारी, शक्ति।

पाहुन—पु० पाहुना, अतिथि।

पाहुना—पु० अतिथि। दामाद।

पाहुनी—स्त्री० पहुनाई, आतिथ्य। स्त्री अतिथि।

पिंग—वि० पीला या भूरासा। पु० पीला रंग। मूषक। हरताल।

पिंगल—वि० पीला, भूरापन लिए हुए लाल या पीला। पु० बन्दर। अग्नि। एक मुनि। एक पक्षी पिंगल है पिउ पिउ करे ताको काल न खाय।' साखी १६०

पिंगला—स्त्री० नाड़ी-विशेष। पक्षी-विशेष ( उदे० 'आरन' )। एक वेश्या।

पिंगाक्ष, पिंगेक्षण—पु० शिव।

पिंजड़ा, पिंजरा—प० लोहे आदिकी तीलियोंका बना घर जिसमें पक्षी रखे जाते हैं।

पिंजन—पु० धुनकी, रुई धुननेकी कमान।

पिंजर—पु० अस्थिपञ्जर। पिंजड़ा। हरताल। वि०पीला। भूरापन लिए हुए लाल-सा।

पिंजरापोल—पु० गोशाला, पशुशाला।

पिंजल—वि० म्लानमुख, व्याकुल। पु० हरताल, कुशपत्र।

पिंड—पु० गोला, लौंदा, ढेर। खीर आदिका लौंदा। शरीर। भोजन।

पिंडकर—पु० नियत या स्थिर कर।

पिंडखजूर—पु० एक मीठा फल।

पिंडज—पु० वह जीव जो पिंडके रूपमें उत्पन्न हो (अण्डे के रूपमें नहीं)।

पिंडदान—पु० श्राद्धमें पितरोंको पिंड देनेकी क्रिया।

पिंडरी, पिंडली—स्त्री० घुटनेके नीचेका टाँगका पिछला भाग।

पिंडवाही—स्त्री० वस्त्र विशेष।

पिंडा—पु० गोला, खीर आदिका लोंदा।

पिंडिका—स्त्री० लघु पिंड। वेदी। पिंडली।

पिंडित—वि० पिंडके रूपमें बँधा हुआ, पिंडीके रूपमें लपेटा हुआ।

पिंडी—स्त्री० गीली वस्तुका छोटा टुकड़ा, लौंदा। लौकी। बलिदानकी वेदी। सूत या सुतरी आदिका गोला।

पिंडीशूर—वि० घरपर बैठे बैठे बहादुरी दिखलानेवाला। खाऊ, पेटू।

पिंडुरी, पिंडुली—स्त्री० देखो 'पिंडली' ( सू० १८० )।

पिंडुक—पु० कपोतकी तरहका पक्षी (मुद्रा ९९)। उल्लू।

पिंडोल—पु० पोतनी मिटी।

पिअ—वि० प्यारा, सुन्दर। पु० स्वामी, पति।

पिअर—वि० पीला।

पिअरवा—पु० पति, स्वामी। वि० प्यारा।

पिअराई—स्त्री० पीलापन।

पिअरी—स्त्री० पीली रँगी हुई धोती।

पिआज—पु० प्याज, मूलविशेष।

पिआना—सक्रि० पिलाना।

पिआर—पु० प्यार, स्नेह।

पिआस—स्त्री० प्यास, तृषा ( रामा० ३० )।

पिउ—पु० प्रिय, पति।

पिउनी—स्त्री० देखो 'प्यूनी'।

पिक—स्त्री० कोयल, पिकांग, पपीहा 'कोकिल चाष चकोर पिक पारावत नख नैन।' कविप्रि० ७३

पिकांग—पु० चातक पक्षी।

पिकी—स्त्री० कोयल।

पिघरना, पिघलना—अक्रि० द्रवीभूत होना, गलना, दयार्द्र होना।

पिच—देखो 'पीच'।

पिचक—स्त्री० पानी आदि खींचकर फेंकनेका यन्त्र।

पिचकना—अक्रि० दबना, बैठ जाना, सिकुड़ना ।
पिचकाना—सक्रि० उभरे हुए भागको भीतरकी ओर [ दबाना ।
पिचकारी—स्त्री० देखो 'पिचक' ।
पिचकी—स्त्री० पिचकारी 'छिरके नाह नबोढ़ दृग कर पिचकी जल जोर ।' बि० ६८
पिचपिचा—वि० चिपकता हुआसा, चिपचिपा ।
पिचपिचाना—अक्रि० चिपचिपा होना, पानीसा [ निकलना ।
पिचलना—सक्रि० कुचलना, दबाना ।
पिचास—पु० पिशाच 'हरि बिच डारै अंतरा माया बड़ी पिचास ।' साखी १६ [ † एक पकवान, गोलगप्पा ।
पिचुक्का, पिचूका - पु० पिचकारी ( कलस २२६ ) । †
पिच्चित, पिच्ची—वि० पिचला हुआ, कुचला हुआ ।
पिच्छ—पु० लांगूल, पूँछ । मयूर-पुच्छ ।
पिच्छल, पिच्छिल—वि० पैर फिसलानेवाला, चिकना । पिछला 'खड़ी हुई जीवनकी पिच्छिलसी भूमिपर' लहर ८१ पु० आकाशवल्ली । शीशम ।
पिछड़ना—अक्रि० पीछे रह जाना ।
पिछलगा,-लगू—पु० अनुयायी, सेवक, आश्रित ।
पिछलना—अक्रि० पीछेकी ओर या उलटा चलना ।
पिछला—वि० पीछेका, बादका, विगत, अन्तकी तरफका ।
पिछवाड़ा,-वारा—पु० घरके पीछेका भाग ।
पिछाड़ी, पिछारी—स्त्री० पृष्ठ भाग । घोड़ेके पिछले पाँव बाँधनेकी रस्सी ।
पिछानना—सक्रि० देखो 'पहचानना', (उदे० 'देहरा') ।
पिछुआर—पु० पीछेका हिस्सा ( ग्राम० ४८९ ) ।
पिछोरना—दे० 'पछोरना', ( साखी १६० ) ।
पिछौंहें—क्रिवि० पीछेकी ओर ।
पिछौड़ी—देखो 'पिछौरी' ( गुलाब ४७२ ) ।
पिछौरा—पु० चादर 'दिल मन्दिरमें पैठि करि तानि पिछौरा सोय ।' साखी १८८
पिछौरी—स्त्री० ओढ़नी, चादर 'मन्मथ कोटि कोटि गहि वारौं ओढ़े पीत पिछौरी ।' सूबे० ११७
पिटंत—स्त्री० पिटाई, मारपीट ।
पिटक—पु० पिटारा, ग्रन्थखण्ड । फुंसी ।
पिटना—अक्रि० ठोंका या बजाया जाना, मार खाना ।
पिटपिटाना—अक्रि० लाचार होकर रह जाना ।
पिटवाना—सक्रि० पिटानेका काम दूसरेसे कराना ।
पिटाई—स्त्री० मार, प्रहार । पीटनेकी क्रिया या मज़दूरी ।

पिटारा—पु० बाँस आदिकी पेटी ।
पिटारी—स्त्री० छोटा पिटारा ( उदे० 'झारी' ) ।
पिट्टस—स्त्री० शोक इ० से छाती पीटने और हाय हाय मचानेकी क्रिया ।
पिट्ठी, पिठी—स्त्री० भिगोकर पीसी हुई दाल ।
पिट्ठू—पु० पृष्ठपोषक, समर्थक । पिछलगा ।
पिठमिल्ला—पु०अँगरखे आदिका पीठकी तरफका भाग ।
पिठौरी—स्त्री० पीठीकी बनी बरी आदि ।
पिड़क—पु०,पिड़की—स्त्री० फुड़िया, फुंसी ।
पिड़किया—स्त्री० गुझिया नामक पकवान । फुंसी ।
पिड़की—स्त्री० एक पक्षी विशेष ।
पिड़िया—स्त्री० चावलके आटेसे बना हुआ एक खाद्य [ पदार्थ ।
पितर—पु० पूर्वपुरुष, पुरखे ।
पितराई,पितरायँध—स्त्री० पीतलका कसाव ।
पिता—पु० बाप, वालिद ।
पितामह—पु० दादा । ब्रह्मा, शिव ।
पितिया—पु० चाचा ( पितिया ससुर, पितिया सास ) ।
पितु, पितृ—पु०पिता, बाप ।
पितृकर्म—पु०, पितृक्रिया—स्त्री० श्राद्धादि कर्म ।
पितृतिथि—स्त्री० अमावस्या ।
पितृदान—पु० पितरोंके उद्देश्यसे किया जानेवाला दान ।
पितृपक्ष—पु० आश्विन कृष्णपक्ष ।
पितृयज्ञ—पु० पितृतर्पण ।
पितृवन—पु० श्मशान ( साकेत २०० ) ।
पितृव्य—पु० काका, चाचा ।
पित्त—पु० यकृतमें बननेवाला एक तरल पदार्थ ।
पित्तज्वर—पु० पित्तकी प्रबलतासे उत्पन्न ज्वर ।
पित्तल—पु० पीतल । हरताल । वि० पित्त बढ़ानेवाला ।
पित्ता—पु० पित्ताशय ।
पित्ती—स्त्री० वह रोग जिसमें देहपर लाल ददोरे पड़ जाते हैं । 'सीत निकलना ( बुंदेल० ) ।
पित्र्य—वि० पितृ-सम्बन्धी ।
पिदारा,पिद्दा—पु०,पिद्दी—स्त्री०एक पक्षी(प० २६९) ।
पिधान—पु० ढकना ( कविता ३०५ ), पर्दा, आवरण, [ किवाड़ ।
पिधानक—पु० कोष, घर, स्थान ।
पिनकना—अक्रि० अफीमके नशेमें झूमना, ऊँघना ।
पिनच—दे० 'पनच' ( कबीर १६० ) ।
पिनपिनाना—अक्रि०पिनपिन करना, रुक रुककर रोना ।

पिनाक—पु० शिवजीका धनुष । धनुष ।
पिनाकी—पु० शिवजी ।
पिन्हाना—सक्रि० पहराना । अक्रि० देखो 'पेन्हाना' ।
पिपरमेंट—पु० एक पौधा ।
पिपरामूल—पु० पिप्पलीकी जड़ ।
पिपास, पिपासा—स्त्री० प्यास, तृषा, लालच ।
पिपासित—वि० जिसे प्यास लगी हो, तृषित ।
पिपासु—वि० प्यासा, लालची ।
पिपियाना—अक्रि० मवाद पैदा होना । सक्रि० मवाद पैदा करना ।
पिपीलिका—स्त्री० चींटी ।
पिप्पल—पु० पीपलका वृक्ष । एक पक्षी ।
पिय—पु० स्वामी, पति । वि० प्यारा ।
पियर—वि० पीला ( उदे० 'काँखासोती', 'डमकना') ।
पियरई, पियराई—स्त्री० पीलापन ( ललित १०८ ) ।
पियरवा—पु० प्यारा । पति ।
पियराना—अक्रि० पीला पड़ना ( गुलाब १०९ ) ।
पियरी—स्त्री० पीलापन । पीली रँगी हुई धोती ।
पियल्ला—पु० दूध पीता बच्चा ।
पिया—पु० प्रिय, स्वामी ।
पियाज—पु० मूल विशेष ।
पियादा—पु० पैदल सिपाही ।
पियावाँसा—पु० कटसरैया । [वि० प्रिय, प्यारा ।
पियार—पु० स्नेह, प्रेम । कोदों आदिका सूखा डण्ठल ।
पियारा—वि० प्रिय ( उदे० 'कुँआरा', 'चिचावना' ) ।
पियाल—पु० चिरौंजीका पेड़ ।
पियाला—पु० प्याला, कटोरा ।
पियाव बड़ा—पु० एक तरहकी मिठाई ।
पियास—स्त्री० प्यास, तृषा (प० १३ उदे० 'टेकना') ।
पियासी—स्त्री० एक मछली ( प० २६९ ) ।
पियूख, पियूष—पु० पीयूष, अमृत ।
पिरकी—स्त्री० फुंसी, फुड़िया ।
पिरथी—स्त्री० पृथिवी, धरती ।
पिराई—स्त्री० पीलापन ।
पिराक—स्त्री० गोझियाकी तरहका एक पकवान 'माठ पिराकैं और डुँदौरी ।' प० २७४
पिराना—अक्रि० दुखना ( उदे० 'घिरावना' 'दोहनी' ) । दुःख समझना । दुखी होना ( सू० ७७ ) ।
पिरीतम—पु० प्रियतम ( प० ७४ ) ।
पिरीता—वि० प्यारा 'मिले आज मोहि गम पिरीते ।' [रामा० ५३५
पिरीति—स्त्री० प्रीति ( प० ५४ ) ।
पिरोजन—पु० कर्णवेध संस्कार ।
पिरोजा—पु० एक नीला पत्थर, 'फीरोजा' ।
पिरोना, पिरोहना—सक्रि० पोहना, सूत डालना, गूथना ।
पिलकना—सक्रि० गिराना 'पहली दसा पलटि लीनी है, त्वचा त्वचकि-तनु पिलकी ।' सू० २०१
पिलकिया—स्त्री० एक पीलीसी चिड़िया ।
पिलचना—अक्रि० भिड़ पड़ना, लिपट जाना, लीन होना ।
पिलना—अक्रि० सहसा प्रवृत्त होना, झुक पड़ना, जोरसे झपटना ( उदे० 'घोप', छत्र० २१ ) । पेरा जाना ।
पिलपिला—वि० बहुत नरम, पिचपिचा ।
पिलपिलाना—सक्रि० रस निकालनेके लिए दबाना ।
पिलवाना—सक्रि० पेरने या पेलनेका काम कराना, दूसरेसे पिलानेका काम कराना ।
पिलाना—सक्रि० पान कराना । भीतर भरना ।
पिलौंधा होना—अक्रि० दबकर पिस जाना 'चाँटेके पड़ते ही पिलौंधा हुआ' कुकुरमुत्ता ४३ ।
पिल्ला—पु० कुत्तेका छोटा बच्चा ।
पिल्लू—पु० एक सफेद छोटा कीड़ा, ढोला ।
पिव—पु० पिय, पति ।
पिवाना—सक्रि० पिलाना ।
पिशंगी—वि० पिंगल, भूरा या पीलासा ।
पिशाच—पु० भूत, दुष्ट मनुष्य ।
पिशाची—स्त्री० जटामासी । पिशाच स्त्री ।
पिशित—पु० मांस, आमिष ।
पिशुन—पु० चुगुलखोर, निन्दक, दुर्जन, नीच ।
पिष्ट—वि० पिसा हुआ । पु० पीठी, कचौड़ी ।
पिष्टपेषण—पु० पिसी हुई वस्तुको पुनः पीसना । वही बात फिर फिर कहना ।
पिसनहारी—स्त्री० आटा पीसनेवाली स्त्री । [उठाना ।
पिसना—अक्रि० चूर्ण होना, दब जाना । थक जाना, कष्ट
पिसवाज—देखो पेशवाज'(षड ऋतु० १२)। [मिहनत ।
पिसाई—स्त्री० पीसनेका कार्य या उसकी मजदूरी । सख्त
पिसाच—पु० भूत ( उदे० 'अंतावरी' ) । क्रूर मनुष्य ।
पिसान—पु० आटा, चूर्ण ।
पिसाना—अक्रि० पिसना ( उदे० 'पाटला' ) । सक्रि०
पिसी—स्त्री० सफेद गेहूँ । [पिसवाना ।

**पिसुन**—पु० देखो 'पिशुन' (रामा० १७९ मति० २०५)
**पिसौनी**—दे० 'पिसाई'।
**पिस्तई**—वि० पिस्तेके रंग जैसा, पीला-हरासा।
**पिस्ता**—पु० एक मेवा।
**पिस्तौल**—स्त्री० तमंचेकी तरहकी छोटी बन्दूक।
**पिस्सू**—पु० एक छोटा कीड़ा।
**पिहकना**—अक्रि० कोयल इ० का बोलना, कुहकना।
**पिहानी**—स्त्री० ढकन, छिपानेवाली बात (दोहा १३२)।
**पिहित**—वि० छिपा हुआ। पु० एक काव्यालंकार 'परके मनकी बात कछु लखि जहँ देत जनाय।'
**पींजना**—सक्रि० रुई धुनना।
**पींजर, पींजरा**—पु० अस्थिपंजर, ठठरी। पिंजड़ा।
**पींड**—पु० किसी गीली वस्तुका गोला। पिंड, देह। पेड़ का धड़। पिंडखजूर। एक आभूषण।
**पींडुरी**—स्त्री० देखो 'पिंडरी', (रवि० १५)।
**पी**—पु० पिय, पति। पपीहेका बोल।
**पीक**—स्त्री० पानके रससे युक्त थूक। थूक (सू० ७५)।
**पीकदान**—पु० देखो 'पीकदानी'।
**पीकदानी**—स्त्री० थूकनेका पात्र, उगालदान।
**पीकना**—अक्रि० कोयल या पपीहेका बोलना, कुहकना।
**पीठा**—पु० पीढ़ा, चौकी। एक पकवान।
**पीठिका**—स्त्री० पीढ़ा, मूर्तिका आधार। परिच्छेद।
**पीठी**—स्त्री० भिगोकर पीसी हुई दाल।
**पीड़**—स्त्री० सिरका एक आभूषण ( सू० १३५ )। देखो 'पीर', ( उदे० 'उछंग' )।
**पीड़क**—पु० पीड़ा पहुँचानेवाला।
**पीड़न**—पु० दबाने, दुख देने, पेरने इ० की क्रिया। तिरोभाव, नाश।
**पीड़ा**—स्त्री० दुःख, रोग। सिरमें लपेटी हुई माला।
**पीड़ाकर**—वि० पीड़ा देनेवाला, दुःखदायक।
**पीड़ित**—वि० दुःखित, सताया हुआ, व्याधि-ग्रस्त, रोगी, दबाया हुआ।
**पीड़ुरी**—स्त्री० देखो 'पिंडरी'।
**पीढ़ा**—पु० लकड़ी आदिका आसन, पाटा 'जथा जोग पीढ़न बैठारे।' रामा० १७९
**पीढ़ी**—स्त्री० किसी वंश-परम्परामें किसी व्यक्तिका, गणना-क्रमसे, निर्धारित स्थान।
**पीत**—वि० पिया हुआ। पीले रंगका। पु० पीला रंग। हरताल। एक पेड़।
**पीतधातु**—पु० गोपी चन्दन।
**पीतम**—पु० प्रियतम, स्वामी ( उदे० 'अर' )। वि० अत्यन्त पीला।
**पीतमणि,-रत्न**—पु० पुखराज।

पीयूख, पीयूप—पु० अमृत, सुधा।
पीयूपभानु—पु० चन्द्रमा।
पीर—स्त्री० पीड़ा, व्यथा 'ऐसेउ पीर विहँसि तेइ गोई।' रामा० २१२। प्रसव-वेदना, करुणा। पु० धर्मगुरु, पूज्य व्यक्ति, सिद्ध (भू० ५०)।
पीरना—सक्रि० पेरना 'तेली ह्वै तन कोल्हू करिहौं पाप पुन्नि दोउ पीरौं।' कबीर २१७
पीरा—दे० 'पीड़ा' तथा 'पीला' (उदे० 'कछोटी')।
पील—पु० हाथी '·· उतै पाखर समेत पील खुलैं पील-खानेतें' सुखदेव मिश्र, (भू० ६२, ८७)।
पीलखाना—पु० हथिसार (उदे० 'पील')।
पीलपाँव—पु० पाँव फूल जानेका रोग।
पीलपाल, पीलवान—पु० महावत, हाथीवान।
पीलसोज—पु० चिराग़दान, दीयट।
पीला—वि० पीत वर्णका। फीका, कान्तिहीन। पु० एक पक्षी।
पीलापन—पु०, पीलिमा—स्त्री० पीतता, ज़र्दी 'लसै परस्पर प्रीति पीलिमा अमलतासकी।' पूर्ण २२५
पीलिया—पु० आँखें, मुख इ० पीला पड़नेका रोग।
पीलु—पु० एक पेड़। हाथी। बाण। फूल। परमाणु। अस्थिखण्ड। चनेका साग। हथेली।
पीव—पु० पिउ, पिया, स्वामी 'चरनदास लख आपको तो मैं तेरा पीव।' चरनदास। वि० मोटा, पीन।
पीवना—सक्रि० देखो 'पीना'।
पीवर—वि० भारी, मोटा 'तनु विसाल पीवर अधिकाई।'† [† रामा० ८८
पीसना—सक्रि० चूर चूर करना (उदे० 'ओदरना'), बारीक करना, कुचलना। (दाँत) कटकटाना।
पीसू—पु० पंखोंवाला एक छोटा कीड़ा।
पीहर—पु० नैहर, मायका।
पीहू—पु० एक कीड़ा, पिस्सू।
पुंख—पु० तीरका वह अंश जिसमें पर खोंसे जाते हैं।
पुंखित—वि० पक्षयुक्त (बाण)।
पुंगव—पु० बैल। श्रेष्ठार्थवाची शब्द ('नरपुंगव')।
पुंगीफल—पु० सुपारी।
पुँछार—पु० मोर।
पुँछाला—पु० पुछल्ला, बराबर साथमें लगी रहनेवाली वस्तु।
पुंज—पु० ढेर, राशि, समूह।
पुंजि, पुंजी—स्त्री० पूँजी, धन।
पुंजित—वि० एकत्र राशिके रूप।
पुंजीकृत—वि० एकत्र, इकट्ठा किया हुआ।
पुंजीभूत—वि० ढेरके रूपमें एकत्र, राशीभूत।
पुंड—पु० टीका, तिलक।
पुंडरीक—पु० सफेद कमल। रेशमका कीड़ा। तिलक। कमंडलु। एक दिग्गज। चीनी। ऊख (पुण्ड्र)।
पुंडरीकाक्ष—पु० विष्णु भगवान्।
पुंड्र—पु० पौंड़ा। तिलक, टीका, श्वेत कमल इ०।
पुंश्चली—वि० स्त्री० व्यभिचारिणी। स्त्री० कुलटा स्त्री।
पुंस—पु० पुरुष।
पुंसवन—पु० गर्भके तीसरे मासका एक संस्कार। दूध।
पुंस्त्व—पु० पुरुषत्व, वीर्य।
पुआ—पु० मीठी पुड़ी।
पुआल—पु० पयाल। एक पेड़।
पुकार—स्त्री० उच्च स्वरसे सम्बोधन करनेकी क्रिया, टेर, गुहार, दुहाई।
पुकारना—सक्रि० टेरना, ज़ोरसे बुलाना, चिल्लाना, रटना।
पुख—पु० एक नक्षत्र। पुष्टि। पौष मास।
पुखर, पुखरा—पु० पोखरा।
पुखराज—पु० एक रत्न, पद्मराग।
पुखता—वि० पक्का, सुदृढ़, मजबूत।
पुगाना—सक्रि० पुजाना। पूरा करना।
पुचकारना—सक्रि० प्रेम जानने या सान्त्वना देनेके लिए चूमने जैसा शब्द करना 'लात खाय पुचकारिये होय दुधारू धेन।' गिरधर राय
पुचकारी—स्त्री० पुचकारनेका शब्द, चुमकार।
पुचारना—सक्रि० पोतना, पुचारा देना।
पुचारा—पु० पोंछनेकी क्रिया, हलका लेप। चापलूसी। बढ़ावा।
पुच्छ—स्त्री० पूँछ, दुम।
पुच्छल, पुच्छी—वि० पूँछवाला, दुमदार।
पुछल्ला—पु० लम्बी पूँछ। साथमें जुड़ी हुई वस्तु। पछलगा।
पुछार—पु० पूछनेवाला। मोर 'जान पुछार जो भा वनवासी।' प० ४१
पुछैया—पु० पूछनेवाला, फिकर करनेवाला।
पुजना—अक्रि० पूजा जाना। पूरा होना (मुद्रा० ११९)।
पुजवना—सक्रि० पूरा करना। सफल करना 'पुजवै परमेश्वर मो मन इच्छा।' के० ९५
पुजवाना—सक्रि० पूजा कराना, सेवा कराना।
पुजाई—स्त्री० पूजनेकी क्रिया। पूजा '···कौन ५

करत पुजाई' सूबे० ११८ । पूरा करनेकी क्रिया ।
पुजाना—सक्रि० देखो 'पुजवाना' । पूरा करना ।
पुजापा—पु० पूजाकी सामग्री ।
पुजारी, पुजेरी—पु० पूजा करनेवाला । [ वाला ।
पुजैया—स्त्री० पूजा । पु० पूजा करनेवाला । पूरा करने-
पुट—पु० मिलाव, बोर, हलका छिड़काव । दोना, दोनेके आकारकी वस्तु । आच्छादन ( ओंठ, पलक इ० ) ।
पुटकी, पुटरिया—स्त्री० पोटली, गठरी । [अँतरौटा ।
पुटपाक—पु० मुँहबन्द पात्रमें रखकर या मिट्टी लपेटकर ओषधि पकानेकी क्रिया ( उदे० 'तताई' ) ।
पुटियाना—सक्रि० फुसलाना, समझा-बुझाकर राजी करना ( बसन्तमञ्जरी ३१ ) । [ लँगोटी ।
पुटी—स्त्री०छोटा दोना,रिक्त स्थान,गड्ढा (उदे०'चुवना') ।
पुट्ठा—पु० चूतड़का ऊपरवाला कड़ा भाग, पुस्तककी जिल्दका पिछला भाग, दफ्ती ।
पुठवार—क्रिवि० पीछे, पीछेकी ओर (सुजा० ३३,५०) ।
पुठवाल—पु० भले बुरे काममें साथ देनेवाला, पृष्ठपाल ।
पुड़ा—पु० बड़ी पुड़िया । ढोल मढ़नेका चमड़ा ।
पुड़िया—स्त्री० लपेटा हुआ पत्ता या कागज जिसमें दवा आदि रखी जाय । खान, घर ('आफतकी पुड़िया') ।
पुड़ी—स्त्री० पुड़िया 'कबीर धूल सकेलिके पुड़ी जो बाँधी येह ।' साखी ६४ । पूरी, सुहारी । [ शुभ, पवित्र ।
पुण्य—पु०धर्मकार्य, शुभ कर्म, शुभ कर्मका फल । वि०
पुण्यकाल—पु० दान पुण्य इ० का शुभ समय ।
पुण्यक्षेत्र—पु० पवित्र स्थान, तीर्थ ।
पुण्यवान् ,पुण्यात्मा—वि० धर्मात्मा ।
पुण्यश्लोक—वि० जिसका चरित्र पवित्र हो ।
पुण्याई—स्त्री० सुकृतका फल, धार्मिकता ।
पुतना—अक्रि० पोता जाना, चुपड़ा जाना ।
पुतरा—पु० पुतला । लकड़ी आदिकी प्रतिमा ।
पुतरिका, पुतरिया, पुतरी—स्त्री० गुड़िया, पुतली ( उदे० काढ़ना' ) । आँखका तारा (रामा० २२७) ।
पुतला; पुतली—दे० 'पुतरा'; 'पुतरी' ।
पुताई—स्त्री० पोतनेका काम या उसकी मज़दूरी ।
पुतारा—पु० गीले कपड़ेसे पोंछनेका कार्य ।
पुत्त, पुत्र—पु० सुत, बेटा, लड़का ।
पुत्तलिका—स्त्री० गुड़िया, पुतली ।
पुत्रवती—वि० स्त्री० पुत्रवाली ।
पुत्रवधू—स्त्री० पतोहू, बहू ।
पुत्रिका—स्त्री० बेटी, लड़की । पुतली । स्त्रीकी तसवीर ।
पुत्री—स्त्री० बेटी ।
पुत्रेष्टि—स्त्री० पुत्रप्राप्त्यर्थ किया जानेवाला यज्ञ ।
पुदीना—पु० एक सुगन्धित पौधा ।
पुनः—क्रिवि० फिरसे, बादमें, फिर । पुनः पुनः = बार
पुनरपि—क्रिवि० फिर भी । [ बार ।
पुनरवसु—पु० 'पुनर्वसु' नामक एक नक्षत्र ।
पुनरागमन—पु० फिरसे आना, पुनः जन्म लेना ।
पुनरावृत्ति—स्त्री० फिर करना या फिर पढ़ना ।
पुनरुक्तवदाभास—पु० एक काव्यालङ्कार ।
पुनरुक्ति—स्त्री० फिर कहना ।
पुनर्जन्म—पु० मृत्युके बाद पुनः जन्म लेना, नवजीवन ।
पुनर्नवा—पु० 'गदहपूरना' नामक पौधा ।
पुनर्वार—स्त्री० दूसरी बार ।
पुनर्भू—स्त्री० पतिके मरनेपर अन्यसे विवाहित स्त्री ।
पुनर्वसु—पु० आर्द्राके बाद आनेवाला नक्षत्र ।
पुनि—क्रिवि०फिरसे 'पुनि आउब एहि बिरियाँ काली ।' ।
पुनिम—स्त्री० पूर्णिमा (कबीर २३७) । [ 'रामा० १२८
पुनी—स्त्री० पूर्णिमा । वि० पुण्यात्मा । क्रिवि० पुनः ।
पुनीत—वि०पवित्र । [ नहीं नावँ बिनु ठावँ ।' साखी ९४
पुन्न—पु० पुण्य, धर्मकृत्य 'जुग अनेक जो पुन्न करि,
पुन्नाग—पु० एक पेड़ । पुरुष श्रेष्ठ । सफेद कमल
पुन्य—दे० 'पुण्य' । [ ( मति २२३ ) ।
पुण्यताई—स्त्री० पवित्रता, धर्म-शीलता (रत्ना० ४१८) ।
पुमान्—पु० पुरुष, नर ।
पुरंदर—पु० पुर तोड़नेवाला, इन्द्र, चोर ।
पुरंध्री—स्त्री० पति पुत्रादिसे सुखी स्त्री । स्त्री ।
पुरः—अ० आगे, सामने, पहले । [ आगे चलता हो ।
पुरःसर—पु० आगे जाना । अगुआ, साथी । वि० जो
पुर—पु० नगर, ग्राम । घर । शरीर । दुर्ग । मोट ।
पुरइन—स्त्री० कमल-पत्र । नलिनी, कमल ।
पुरइया—पु०तकुआ।(कबीर १६५) । ताना (बीजक१८८) ।
पुरखा—पु० पूर्व पुरुष । अनुभवी वृद्ध मनुष्य ।
पुरचक—स्त्री० पुचकार, समर्थन, प्रोत्साहन, प्रेरणा ।
पुरजन—पु० नागरिक ।
पुरजा—पु० टुकड़ा, रुक्का, अंश, भाग, कतरन ।
पुरट—पु० सोना, सुवर्ण ( उदे० 'छुहना' ) ।

परतः—अ० आगे, सामने ।
पुरत्राण—पु० परकोटा, प्राकार ।
पुरपाल—पु० कोतवाल, नगर-रक्षक । जीव ।
पुरबला, पुरबिला—वि० पहलेका, पूर्वजन्मका 'मेटि न जाइ लिखा पुरबिला ।' प० ९२
पुरवा—स्त्री० पूरबकी हवा । एक रोग ।
परविया—पु० पूरबी प्रान्तमें रहनेवाला ।
पुरवट—पु० मोट, चरसा ।
पुरवना—सक्रि०पूरा करना'सतगुरु पुरवै आस जो निरास आसा करै ।' साखी९६ । भरना । अक्रि०पूरा होना ।
पुरवा—स्त्री०पूर्वी हवा । पु० पुरा, छोटा गाँव । कुल्हड़ ।
पुरवाई,-वैया—स्त्री० पूरबकी हवा ।
पुरश्चरण—पु० कार्य सिद्धिके लिए नियत कालतक मन्त्रादिका पाठ, प्रयोग ।
पुरपा—पु० पूर्व पुरुष ।
पुरसा—पु० हाथ ऊपर किये पुरुषकी ऊँचाईके बराबर माप ।
पुरस्कार—पु० इनाम, पूजा, भेंट ।
पुरस्कृत—वि० जिसे इनाम दिया गया हो । आगे किया हुआ, पूजित ।
पुरस्तात्—अ० आगे, पूर्वकालमें, पूर्व दिशामें ।
पुरस्सर—वि० सामने जानेवाला । पु० अनुयायी, सेवक ।क्रिवि०सहित(प्रणय पुरस्सर—साकेत२५६) ।
पुरहूत—पु० पुरुहूत, इन्द्र '···पुरहूत कैसो पुहुमीमें प्रगट प्रभाव है'—ललित ३०, ( भू० ७९ ) ।
पुरा—पु०गाँव,मुहल्ला । स्त्री०पूर्व दिशा । अ०पूर्व कालमें ।
पुराचीन—वि० प्राचीन ।
पुराण,पुरान—पु० प्राचीन आख्यान, हिन्दुओंके धर्मतत्व विषयक अठारह ऐतिहासिक ग्रन्थ ।वि०पुराना,पुरातन।
पुरातत्त्व—पु० प्राचीन बातोंके सम्बन्धकी विद्या ।
पुरातन—वि० पुराना ।
पुरातनता—स्त्री० प्राचीनता ।
पुराना—वि० बहुत दिनोंका जीर्ण । अतीत,पूर्व कालका । परिपक्व । सक्रि० पूरा कराना, पालन कराना । पूरा करना 'तौ सखि कह्यो होइ कछु तेरो, अपनी साध पुराऊँ ।' सू० १३२, भरना ।
पुरारि—पु० शङ्करजी ।
पुराल—पु० देखो 'पयाल' ।
पुरावृत्त—पु० पुराना हाल, इतिहास ।
पुरिखा, पुरिषा—पु० पूर्व पुरुष 'जिनके पुरिषा भुव गङ्गहि लाये । राम० ११६ । पति 'तू मेरो पुरिषा हौं तेरी नारी ।' कबीर २१९, ( २०० )
पुरिया—स्त्री० देखो 'पुड़िया' । जुलाहोंकी 'नरी' । ताना ( बीजक ) १२८ ) । [छाँड़ि भजै संसार' ध्रुवदास
पुरिष, पुरीष—पु० विष्ठा 'पुरुष सोइ जो पुरीष सम
पुरी—स्त्री० नगरी । उड़ीसाका एक प्रसिद्ध नगर ।
पुरु—पु० पुष्परज, सुरलोक, एक दैत्य, एक चन्द्रवंशी राजा । [ पूर्वज । जीव । सूर्य । पारा ।
पुरुख,पुरुष—पु० मनुष्य, नर । पति । आत्मा ।
पुरुषकार—पु० पुरुषार्थ, पौरुष 'पुरुषकार उपहारमें हो संयोगसे जिन्हें मिला ।' परिमल १९६
पुरुखा, पुरुषा—पु० पूर्व पुरुष ।
पुरुषत्व—पु० मनुषत्व, मर्दानगी ।
पुरुषारथ, पुरुषार्थ—पु० पौरुष,पराक्रम, वीरता,शक्ति ।
पुरुषोत्तम—पु० पुरुषोंमें श्रेष्ठ, कृष्ण, विष्णु ।
पुरुहूत—पु० इन्द्र ।
पुरैन,पुरैनि—स्त्री०कमलका पत्ता । कमल । [सामग्री ।
पुरोडाश,पुरोडास—पु०हवि, खीर । सोमरस । होमकी
पुरोध, पुरोधा—पु० पुरोहित ( रामा० ३३२ ) ।
पुरोहित—पु० कुलगुरु, कर्मकाण्ड करानेवाला ।
पुरोहिताई—स्त्री० पुरोहितका कर्म ।
पुरौ—पु० पुरवट 'पलक पुरौ नहिं होइ दृग निसि नारीके साथ । रूपकूप तैं कौन विधि रस लागत है हाथ ।'
पुरौती—स्त्री०कमी पूरी करनेका कार्य,पूर्ति ।[रतन० १९
पुर्जा—पु० देखो 'पुरजा' । [पुर्तगाल सम्बन्धी
पुर्तगीज़—पु०पुर्तगाल देशका निवासी । वि०पुर्तगालके
पुल—पु० सेतु, बाँध । रोमांच । वि० प्रचुर, विपुल ।
पुलक—पु० रोमांच । प्रेमादिकी अधिकतासे रोमावलीका खड़ा होना ।
पुलकना—अक्रि० प्रेमादिसे रोमांच होना, गद्गद्होना
पुलकाई—स्त्री० पुलकित होना ।
पुलकालि,पुलकावलि—स्त्री०प्रेम या हर्षजनित रोमांच
पुलकित पुलुकित—वि० रोमांचयुक्त, गद्गद्,कम्पित 'हम पुलुकित कर देतीं गात' पल्लव ६२ ।
पुलटिस—स्त्री० तीसी इ० का मोटा लेप ।
पुलपुला—वि० पिलपिला, भीतरसे नरम और ढीला ।
पुलपुलाना—सक्रि० दबाना, दबाकर चूसना ।
पुल सरात—पु० मुसलमानोंके अनुसार एक कल्पित पुल जो पापियोंके लिए बहुत तंग और पुण्यात्माओंके लिए चौड़ा हो जाता है ।

पुलाक—पु० चावल, माँड़, खराब अन्न।
पुलाव—पु० मांस मिलाकर पकाया हुआ चावल।
पुलिंदा—पु० लम्बासा गट्ठा, वण्डल।
पुलिन—पु० किनारा। पानीसे निकली हुई हालकी भूमि।
पुलिस—स्त्री० जानमालकी रक्षाके लिए नियुक्त कर्मचारियोंका दल।
पुलिहोरा—पु० पकवान विशेष।
पुली—स्त्री० एक चिड़िया।
पुलोमजा—स्त्री० पुलोमकी कन्या, शची, इन्द्राणी।
पुवा—पु० मीठी पुड़ी।
पुवार—पु० पयाल, सूखी घास। धान आदिके सूखे डंठल।
पुश्त—स्त्री० पीढ़ी। पीठ।
पुश्तनामा—पु० पीढ़ीनामा, वंश-वृक्ष।
पुश्ता—पु० ऊँची मेंड़, बाँध। किताबका पुट्ठा।
पुश्तैनी—वि० जो कई पुश्तोंसे चला आता हो।
पुषित—वि० पाला हुआ।
पुष्कर—पु० तालाब। जल। पद्म। म्यान, आकाश। गज-शुण्डाग्र। बाण। युद्ध, नशा।
पुष्करिणी—स्त्री० पोखरी। हथिनी।
पुष्करी—पु० हाथी।
पुष्कल—पु० चार ग्रासकी भिक्षा। एक ढोल। एक नाप। शिव। वि० उत्तम। पवित्र। प्रचुर।
पुष्ट—वि० पोसा हुआ। मोटा-ताज़ा, दृढ़।
पुष्टई—स्त्री० पुष्टता, ताक़त। पुष्टिकारक ओषधि।
पुष्टि—स्त्री० पोषण, दृढता, समर्थन।
पष्टिकर,-कारक—वि० पोषण करनेवाला, ताक़त देनेवाला, बलवीर्य-वर्द्धक।
पुष्टिमार्ग—पु० वल्लभ सम्प्रदाय।
पुष्प—पु० फूल। विकाश। रज। पुष्पक विमान।
पुष्पक—पु० कुबेरका विमान। फूल। कंगन। एक सर्प।
पुष्पचाप,-धन्वा,-ध्वज—पु० कामदेव।
पुष्पपुर—पु० पटनेका प्राचीन नाम, कुसुमपुर।
पुष्परज—पु० पराग।
पुष्पराग,-राज—पु० पुखराज नामक मणि।
पुष्परेणु—पु० पुष्परज, पराग।
पुष्पलावी—स्त्री० फूल चुननेवाली मालिन।
पुष्पवती—वि० स्त्री० फूलोंसे युक्त। रजस्वला 'जग यदपि दिगंबर पुष्पवती नर निरखि निरखि मन मोहै।' रामा० १९
पुष्पवाटिका—स्त्री० फुलवारी, उद्यान।
पुष्पवाण,-शर—पु० कामदेव।
पुष्पसार—पु० फूलोंका रस, इत्र।
पुष्पहीना—वि० स्त्री० जो रजस्वला न होती हो, वन्ध्या।
पुष्पागम—पु० वसन्त ऋतु।
पुष्पित—वि० फूला हुआ, कुसुमित।
पुष्पोद्यान—पु० फूलोंका बगीचा, पुष्पवाटिका।
पुष्य—पु० एक नक्षत्र। पौष मास।
पुसकर—देखो 'पुष्कर'।
पुसाना—अक्रि० पूरा पड़ना। अच्छा या उचित मालूम होना।
पुस्त—स्त्री० पीढ़ी। पीठ। सामान। कारीगरी।
पुस्तक—स्त्री० पोथी, ग्रन्थ।
पुस्तकालय—पु० वह मकान जिसमें पुस्तकोंका संग्रह हो।
पुस्तिका—स्त्री० छोटी किताब।
पुहकर, पुहुकर—पु० तालाब इ० ( देखो 'पुष्कर' )—'पुहुकर पुंडरीक पूरन मनु खंजन केलि खगे।' सू० १५३
पुहना—अक्रि० पोहा जाना, गुथा जाना 'वह मोती मत जानियो, पुहै पोतके साथ।' साखी १०४
पुहमी—दे० 'पुहुमी', ( छत्र० ५ )।
पुहाना—सक्रि० गुथवाना, पिरोनेका काम कराना।
पुहुप—पु० पुष्प, फूल ( उदे० 'अवरेखना', प० २७१)।
पुहुपराग—पु० पुखराज ( भू० ७ )।
पुहुपरेनु—पु० पुष्परेणु, पराग।
पुहुमि, पुहुमी—स्त्री० पृथिवी 'सुखी परेवा पुहुमिमें एकै तुही विहंग।' बि० २५६, ( उदे० 'जोयना' )
पुहुमीपति—पु० राजा ( प० २४२ )।
पुहुवी—स्त्री० पृथिवी।
पूँगफल—पु० सुपारी।
पूँगी—स्त्री० एक तरहकी बाँसुरी।
पूँछ—स्त्री० दुम, पुच्छ। पछलगा।
पूँछताछ—स्त्री० देखो 'पूछताछ'।
पूँछना—सक्रि० पूछना, जिज्ञासा करना। पोंछना, झाड़ना।
पूँछलतारा—पु० वह तारा जिससे लगी हुई कुहरे जैसी वस्तु झाड़ूके समान देख पड़ती है।
पूँजी—स्त्री० मूलधन। सम्पत्ति। पुंज, राशि, समूह।
पूँजीपति—पु० वह जिसके पास पूँजी हो, धनी व्यक्ति, कारखानेदार।
पूँजीदार—पु० पूँजीवाला, पूँजीपति।
पूँजीवाद—वह व्यवस्था जिसके द्वारा धनपति समाजमें उत्पादनके साधनोंपर अधिकार कर श्रमिकोंका शोषण करता है।
पूँठ—स्त्री० पीठ।

पूआ—पु० देखो 'पुआ'।
पूखन—पु० पोषण। सूर्य।
पूग—पु० सुपारीका वृक्ष या फल। कटहल। समूह।
पूगना—अक्रि० पूजना, पूरा होना 'साँई संगि साध नहिं पूगी'—कबीर १६४, ( २३३ भी )।
पूगीफल—पु० सुपारी।
पूछ—स्त्री० खोज। जिज्ञासा। आदर।
पूछताछ,पूछपाछ—स्त्री०जिज्ञासा,प्रश्न, जाँच-पड़ताल।
पूछना—सक्रि० जिज्ञासा करना, मालूम करनेके लिए प्रश्न करना। खबर लेना। सम्मान करना।
पूछरी—स्त्री० पूँछ, दुम। गोवर्द्धन गिरिका अन्तिम भाग ( अष्ट० ४१,८६,८९ )।
पूछाताछी, पूछापाछी—स्त्री० पूछनेकी क्रिया या भाव, [ पूछताछ।
पूजक—पु० पूजा करनेवाला, उपासक।
पूजन—पु० अर्चन, उपासना, सम्मान।
पूजना—सक्रि० पूजा करना, सेवा करना। सम्मान करना। अक्रि० पूरा होना 'सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहि मनकामना तुम्हारी।' रामा० १२९। भर जाना,बराबर होना 'सेरसाहि सरि पूज न कोऊ।' प० ७, 'सुर असुर न पूँजैं राम रूप।' राम०३३४, ( उदे० 'उलथना', अ० ४६ )।
पूजनीय, पूजमान—वि० पूजने योग्य, सम्मान योग्य।
पूजा—स्त्री० आराधना, अर्चा।
पूजार्ह—वि० पूजने योग्य, पूज्य।
पूजित—वि० अर्चित, आराधित, सम्मानित।
पूजेला—पु० पुजेरी 'आपै पूजै आप पूजेला।' कबीर२४३
पूज्य—वि० पूजने योग्य, आदरणीय।
पूज्यपाद—वि० जिसके चरण पूज्य हों, परम पूज्य।
पूठि—स्त्री० पीठ।
पूत—पु० पुत्र। वि० पवित्र।
पूतड़ा—पु० छोटे बच्चेका बिछावन।
पूतना—स्त्री० शिशु कृष्णको मारनेके लिए कंसद्वारा भेजी गयी एक राक्षसी। हरीतकी।
पूतनारि, पूतनासूदन—पु० श्रीकृष्ण।
पूतरा, पूतला—पु० पुत्र। पुतला 'कागज कोसो पूतरा, सहजहिमें घुलजाय। रहीम १८,(उदे० 'गेवी')
पूतरी—स्त्री० पुतली 'सूर आजलौं सुनी न देखी, पोत पूतरी पोहत। सू० २३६, ( उदे० 'कोरना' )
पूतात्मा—वि० वह जिसकी आत्मा पवित्र हो, शुद्धअन्तः- [ करणवाला।
पूनव—स्त्री० पूनो, पूर्णमासी।
पूनिउँ, पूनो, पून्यो—स्त्री० पूर्णिमा ( उदे० ई' )।
पूर्नी—स्त्री० देखो 'प्यूनी', ( कबीर ९८ )
पूप—पु० पुआ, मीठी पुड़ी।
पूय—स्त्री० मवाद।
पूर—पु० बाढ़, जल राशि, धारा 'गिरापूरमें है पयोदेवतासी राम० ५०२। घाव भरना। पूला। पकवानके भीतर भरनेकी वस्तु। वि० पूरा 'सज्जन सुकृत सिंधु-सम कोई। देखि पूर विधु बाढ़इ जोई।' रामा० ९
पूरक—पु० पूर्ति करनेवाला, पूरा करनेवाला। एक प्रकारका प्राणायाम।
पूरण, पूरन—वि० सम्पूर्ण, परिपूर्ण 'पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण परिपूरण बतावैं न बतावैं और उक्तिको।' राम० ४, 'एकै कहैं पूरण अनादि जो अनन्त कोऊ....' राम० ५१४, ( उदे० 'ऊना' )। पु० भरनेकी क्रिया। वृष्टि। समुद्र। सेतु।
पूरनकाम—वि० जिसकी इच्छा पूरी हो गयी हो।
पूरनपरब—पु०, पूरनमासी—स्त्री० पूर्णमासी।
पूरनपूरी—स्त्री०चनेकी दाल इ०भरकर बनायी गयी पूरी।
पूरना—सक्रि० ( चौक ) बनाना 'चौकै चारु सुमित्रा पूरी।' रामा० २०२। पूरा करना, भरना 'सीस सबन्हके सेंदुर पूरा।' प० १६०, ( सू० १८५ )। सफल करना। पुजाना 'बसन पूरि, अरिदर्प दूर करि, भूरि कृपा दनुजारी।' विन० २४६। ढाँकना। बजाना 'निकसा राजा सिंगी पूरी।' प० ६०। बटना (सेंवई इ०)। अक्रि० व्याप्त होना, भर जाना 'पूरति है भूरि धूरि रोदसीके आस पास,–राम० ३६९। पूरा होना 'पूरनी कछूक रूपराशि लखिवोकी आस' रत्ना ४६८।
पूरनिमा—स्त्री० पूर्णिमा 'कामना सिन्धु लहराता छवि दूर निभाथी पाई' आँसू २९
पूरब—पु० पूर्व दिशा। वि पहिलेका, प्राचीन। अतीत।
पूरबल—पु० पूर्वकाल, पूर्वजन्म।
पूरबला—वि० पूर्व कालका, पूर्वजन्मका। –
पूरबली—स्त्री० पूर्वजन्मकृत कृत्य ( सूसु० १४ )।
पूरबी—वि० पूरबका।
पूरा—वि० परिपूर्ण, सब, समूचा, काफी, समाप्त, पक्का, सफल, सत्य ('बान पूरी उतरना')। तुष्ट पड़ना = काम चलता ( कविता० १९३ )।

पूरित—वि० भरा हुआ, पूरा किया हुआ। सन्तुष्ट, तृप्त।
पूरी—स्त्री० पुड़ी,सुहारी। घासका गट्ठा,छोटा पूला (बीजक
पूरुख,पूरुष—पु० पुरुष,मनुष्य। आत्मा। [२६६)।
पूर्ण—वि० पूरा। तुष्ट। सिद्ध। समूचा। पर्याप्त।
पूर्णकाम—वि०जिसकी वान्छाएँ पूरी हो गयी हों। निष्काम।
पूर्णतया—क्रिवि० पूरी तरह।
पूर्णमा,-मासी,पूर्णिमा—स्त्री०शुक्लपक्षकी अन्तिम तिथि।
पूर्णविराम—पु० वाक्यकी समाप्ति सूचित करनेवाला एक चिह्न।
[ वर्षकी आयु।
पूर्णायु—वि० पूरी आयुवाला। स्त्री० पूरी आयु, सौ
पूर्णाहुति—स्त्री० अन्तिम आहुति। समाप्ति।
पूर्तविभाग—पु० वह मुहकमा जिसके जिम्मे सड़क, नहर इ० बनानेका काम रहता है। तामीर-विभाग।
पूर्त्ति—स्त्री० पूरापन, समाप्ति, पालन। गुणन।
पूर्व—वि० प्राचीन, पहलेका, अतीत। पु० प्राची दिशा। क्रिवि० पहले।
पूर्वकालिक—वि० पूर्वकाल सम्बन्धी। जो पूर्वकालमें
पूर्वगंगा—स्त्री० नर्मदा नदी। (हुआ हो।
पूर्वग—वि० पूर्वकी तरफ जानेवाला।
पूर्वज—पु० पुरखा, ज्येष्ठ भ्राता।
पूर्वजन्म—पु० गत जन्म।
पूर्वपक्ष—पु० शास्त्रीय मीमांसाके लिए किया गया प्रश्न या शंका। वादीद्वारा पेश की गयी बात। कृष्णपक्ष।
पूर्वरंग—पु० नाटकके आदिमें विघ्नशान्तिके निमित्त
पूर्वराग—पु० देखो 'पूर्वानुराग'। [ होनेवाला कृत्य।
पूर्वरूप—पु० पहलेका रूप, पूर्वचिह्न। एक अर्थालंकार।
पूर्ववत्—क्रिवि० पहलेकी तरह।
पूर्ववर्त्ती—वि० जो पहले हो चुका हो, पहलेका।
पूर्ववृत्त—पु० पुरावृत्त, इतिहास।
पूर्वानुराग—पु० मिलनके पूर्वका प्रेम।
पूर्वापर—वि० आगे पीछेका। क्रिवि० आगे पीछे।
पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा,-षाढ़ा-स्त्री० नक्षत्र
पूर्वाह्न—पु० दिनका पूर्वार्द्ध। [ विशेष।
पूर्वोक्त—वि० पहले कहा हुआ।
पूलक, पूला—पु० घासका बँधा हुआ छोटा गट्ठा।
पूष—पु० पौषका महीना। शहतूत।
पूषण, पूषन—पु० सूर्य।
पूषा—पु० सूर्य।

पूस—पु० माघके पहलेका महीना।
पृच्छक—पु० पूछनेवाला। जिज्ञासु।
पृतना—स्त्री० सेना, सेनाका एक भाग जिसमें २४३ हाथी, इतने ही रथ, तिगुने घुड़सवार और पँचगुने
पृथक—वि० अलग, भिन्न। [ पैदल सैनिक होते हैं।
पृथक्करण—पु० पृथक् करनेकी क्रिया। विच्छेद।
पृथक्ता—स्त्री, पृथक्त्व—पु० पृथक् होनेका भाव,
पृथवी, पृथिवी—स्त्री० भूमि। [ बिलगाव, पार्थक्य।
पृथा—स्त्री० कुन्तीका एक नाम।
पृथिवीपति, -भुज्, पृथिवीश—पु० राजा।
पृथी—स्त्री० पृथ्वी ( रत्ना० ३८६ )।
पृथु—वि० बड़ा, विस्तृत, अगणित। पु० एक सूर्यवंशी
पृथुल—वि० बड़ा, मोटा। अधिक। ( नरेश।
पृथ्वी—स्त्री० देखो 'पृथवी'।
पृथ्वीतनया—स्त्री० सीताजी।
पृष्ठ—पु० पीठ, ऊपरी तल, पीछेका हिस्सा।
पृष्ठपोषक—पु० सहायक, समर्थक।
पृष्ठभाग—पु० पीछेका हिस्सा, पीठ।
पृष्ठवंश—पु० पीठके बीचकी हड्डी, रीढ़। [ एक पक्षी।
पेंग—स्त्री०झूला हिलाना, झूलेका आगे पीछे जाना। पु०
पेंच—पु० घुमाव, चक्कर, मरोड़। चालाकी। फन्दा, उलझन। यन्त्र या यन्त्रकी कोई कील, गड़ारीदार कील। युक्ति, घात। पगड़ीकी लपेट 'मोर मुकुट सिर-पाग पेंच कसि राखहु अलक सँवारी।' हरि०
पेंचकश—पु० देखो 'पेचकश'।
पेंठ—स्त्री० बाजार, दूकान। बाज़ारका दिन।
पेंडकी—स्त्री० कपोत जैसी चिड़िया। पिडकिया,गुझिया।
पेंडुली—स्त्री० देखो 'पिंडली'।
पेंदा—पु० किसी वस्तुका नीचेका हिस्सा, तली।
पेंदी—स्त्री० तली, निचला हिस्सा।
पेंशन—स्त्री० वह मासिक या वार्षिक वृत्ति जो किसी व्यक्ति या उसके आश्रित कुटुम्बियोंको उसकी पूर्व सेवा इ० के कारण दी जाय।
पेंसिल—स्त्री० कलमके आकारकी लकड़ी ( या पीतल इ० की वस्तु ) जिसके भीतर सीसे इ० का ऐसा टुकड़ा लगा रहता है जिससे विना स्याहीके लिखनेका काम लिया जा सकता है।
पेउरा, पेउस—पु० व्याई हुई गाय या भैंसका प्रथम

सात दिनका दूध । ('तेली'—बुन्देल०) ।

पेउसरी, पेउसी—स्त्री० देखो 'पेउस' ।

पेखक—पु० प्रेक्षक, देखनेवाला ।

पेखना—सक्रि० देखना 'जलहू थलहू रघुनायक पेखों ।' राम० ३९०, ( सू० ९० )

पेच—पु०उलझन,चक्कर,पगड़ीकी लपेट 'रहे पेच करमें परे परे पेचमे स्याम ।' वि०(कलस १७८) । देखो'पेंच' ।

पेचक—पु० उल्लू पक्षी । चारपाई । मेघ । स्त्री० सूत-
पेचकश—पु० पेच कसनेका औजार । [की गुच्छी ।

पेचदार—वि० पेचवाला, पेचीदा, उलझनवाला ।

पेचवान—पु० हुक्केकी लम्बी सटक । बड़े आकारका
पेचिश—स्त्री० पेटकी ऐंठन, मरोड़ । [ हुक्का ।

पेचीदा, पेचीला—वि० पेचदार, उलझनवाला ।

पेट—पु०उदर,जठर,गर्भ,हृदय,अन्तःकरण । जीविका ।-की आग=क्षुधा ।—खलाना = दीनता प्रकट करना ।—चलना=दस्त लगना ।-देना=अपना भेद बताना ।-में चूहे दौड़ना = खूब भूख मालूम होना ।—में डाढ़ी होना=कम उम्रका होते हुए भी काफी चालाक होना ।

पेटक—पु० पेटिका, टोकरा, मंजूषा ( जा० म० ५५ ) ।

पेटा—पु० घेरा । मध्यांश । नदीकी चौड़ाई । ब्योरा ।

पेटागि—स्त्री० पेटकी ज्वाला, क्षुधा, भूख ।

पेटार, पेटारा—पु० बाँसकी पेटी, टोकरा ।

पेटारी—स्त्री० छोटी पेटी, मंजूषा ।

पेटार्थी, पेटार्थू—वि० पेटू । खाऊ ।

पेटिका, पेटी—स्त्री० मजूषा, सन्दूकची । कमरपट्टा ।

पेटू—वि० खाऊ, भुक्खड़ ।

पेठा—पु० सफेद कुम्हड़ा 'छेरीके मुँहमें दियौ ज्यों पेठा
पेड़—पु० वृक्ष, तरु । [ न समात ।' वृन्द

पेड़ा—पु० एक मिठाई ।

पेड़ी—स्त्री० पेड़का या मनुष्यका धड़ 'विरिछ उचारि पेड़ि सों लेहीं । प० २४९ । पानका पुराना पौधा, या उसका पान ( प० १४७ ) ।

पेडू—पु० नाभिके नीचेका भाग, तरेट ।

पेनशनिया—पु० पेंशन पानेवाला ।[पेन्हाना—सक्रि०पहिराना ।

पेन्हाना—अक्रि० थनमें दूध उतरना (दोहा० १४८) ।'

पेपर—पु० कागज, संवादपत्र, दस्तावेज इ० ।

पेम—पु० प्रेम, स्नेह 'परम पेम तजि जाइ नाह, किये पेम यद पाप ।' रामा० ३७

पेमचा—पु० एक तरहका कपड़ा ( प० १५८ ) ।

पेय—वि० पीने योग्य । पु० पीनेकी वस्तु ।

पेया—स्त्री० शराब ।

पेयूप—दे० 'पेउस' ।

पेरना—अक्रि० दबाकर रस या तेल निकालना, दुःख देना ( उदे० 'गाहना', के० ३३३ ) । प्रेरित करना ।

पेरवा, पेरवाह—पु० पेरनेवाला ।

पेलना—सक्रि० धक्का देना, बलप्रयोग करना, हटाना । सामने बढ़ाना । ठेलना । '......पक ज्यों पताल पेलि पठवै कलुषको ।' राम० १, 'हौं आवत नाहीं हुतौ वामहि पठयो पेलि ।' सुदामा० । टालना 'आयउ तात बचन मम पेली ।' रामा० ३८१

पेला—पु० उपद्रव, झगड़ा, अपराध । धावा छत्र०१०४ ।

पेवँ—पु० प्रम ( पा० मं० ४१ ) ।

पेवस—पु० देखो 'पेउस' ( सुसु० ७८ ) ।

पेश—क्रिवि० सामने, आगे ।

पेशकश—पु० भेंट, सौगात । [ कर्मचारी ।

पेशकार—पु० अफसरके सामने कागज़ात पेश करनेवाला

पेशगी—वि० अग्रिम, अगाऊ । स्त्री० पहलेसे दी हुई ※

पेशतर—क्रिवि० पहले । [ ※ रकम ।

पेशबंदी—स्त्री०पहलेसे किया गया उपाय या प्रबन्ध(गुलाब

पेशराज—पु० पत्थर इ० ढोनेवाला मज़दूर । [१८० ) ।

पेशल—वि० कोमल, सुन्दर, चतुर, पतला ।

पेशलता—स्त्री०कोमलता,सुन्दरता(प्रिय०६२) । चतुरता ।

पेशवा—पु० नेता, मुखिया । मराठा साम्राज्यके प्रधान मंत्रीकी उपाधि ।

पेशवाई—स्त्री० पेशवाका पद या शासन । अगवानी ।

पेशवाज—स्त्री० नाचते वक्त पहना जानेवाला घाघरा ।

पेशा—पु० व्यवसाय, उद्यम ।

पेशानी—स्त्री० माथा, ललाट । भाग्य ।

पेशाव—पु० प्रस्राव, मूत्र ।

पेशावर—पु०पेशेवाला,व्यवसायी । भारतका एक शहर ।

पेशी—स्त्री० मांसकी गाँठ । जटामासी । वज्र । म्यान ।

पेश्तर—क्रिवि० पहले । [ मुक़दमेकी सुनवाई ।

पेषना—सक्रि० पेखना, देखना । पीसना 'तातें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस'''-कविता० २६४

पेस—वि० देखो 'पेश' ।

पेसकस—पु० देखो 'पेशकश', (स्त्री० भू० ९५,१०३) ।

पैंग—स्त्री० देखो 'पेंग'।
पैंचना—सक्रि० पछोरना, फेरना, उलटना।
पैंजना—पु० पैंजनी—स्त्री० एक तरहका पैरका कड़ा।
पैंठ—स्त्री० देखो 'पेंठ' ( साखी ६७, अ० ४५ )।
पैंठौर—पु० दूकान।
पैंड़—पु० रास्ता। डग, कदम 'पैंड पैंडपर ठठकिके ऐंड़-भरी ऐंड़ाति।' वि० ११०,'तीन पैंड वसुधा हौं चाहौं परनकुटीको छावन।' सू० २८, ( उदे० 'नातर' )।
पैंड़ा—पु० मार्ग,रीति 'न्यारो पैंड़ो प्रेमको सहसा धरौ न पाँव।' रसनिधि। घुड़सार। पैंड़े परना=पाछे पड़ना 'अब नृप पर्‍यो तुम्हारे पैंड़े।' छत्र० ३७
पैंत—स्त्री० पाँसा, दाँव, घात। 'काँचै बारह परा जो पाँसा। पाके पैंत परी तनु रासा।' प० १४८
पैंतरा—पु०कुश्ती लड़ने या तलवार, लाठी आदि चलानेमें घूम फिर कर पैर रखनेकी मुद्रा या ढंग। आक्रमण करनेका ठाट।
पैंतरी—स्त्री०जूती 'ताके पगकी पैंतरी मेरे तनको चाम।'
पैंती—स्त्री० कुशकी बनी अँगूठी, पवित्री। [ साखी ९४
पैंयाँ—स्त्री० पाँव ( देखो 'पैयाँ' )।
पैंसठ—वि० पाँच कम सत्तर। पु० ६५ की संख्या।
पै—अ०परन्तु। पीछे। अवश्य। पास। तरफ। जो पै = यदि। प्रत्य० पर, से 'सूर प्रभु नँदसुअनकी छबि बरनि का पै जाइ। सू० १२८
पैकरमा—स्त्री० परिक्रमा, चक्कर।
पैकरी—स्त्री० पैरी, बेड़ी।
पैका—पु०पैसा 'पैका पैका जोडताँ जुड़िसी लाष करोड़ि। कबीर ५७। एक तरहका टाइप।
पैकार—पु० घूमकर बेचनेवाला। छोटा रोजगारी।
पैखाना—पु० देखो 'पाखाना'।
पैग़ंबर—पु० ईश्वरका दूत, नबी, धर्मप्रवर्त्तक।
पैग—पु० पग, क़दम 'तीन पैग़ बसुधा करी तऊ बावने नाम।' रहीम।
पैग़ाम—पु० सँदेसा।
पैज—स्त्री० होड़। प्रतिज्ञा 'रही पैज कीनी जु मैं दीनी तुमहिं मिलाय।' वि० २२५, ( भू० २९ )।
पैजनी—स्त्री० देखो 'पैंजनी', ( उदे० 'कछोटा' )।
पैजामा—पु० देखो 'पायजामा'।
पैजार—पु० जूता ( उदे० 'खोभरा' साखी १५४ )।
पैठ—स्त्री० प्रवेश, गति, दख़ल।
पैठना—अक्रि० प्रवेश करना 'पैठा नगर सुमिरि भगवाना।' रामा० ४१७, ( उदे० 'उद्दोत' )। चुभना।
पैठाना—सक्रि० घुसाना, प्रवेश कराना।
पैठार—पु० प्रवेशस्थान। प्रवेश 'असगुन होहिं नगर-पैठारा।' रामा० २७४
पैड़ी—स्त्री० सीढ़ी। चरखा खींचनेवाले बैलोंका रास्ता।
पैतरा—पु० वार करनेकी रीति, लड़नेका ढंग। पदचिह्न।
पैतला, पैथला—वि० छिछला।
पैताना—पु० देखो 'पाँइता'।
पैतृक—वि० पितृ सम्बन्धी, पितासे प्राप्त। पुश्तैनी।
पैदर, पैदल—वि० पाँव पाँव चलनेवाला। पु० पैदल यात्रा। पैदल सैनिक ( उदे० 'गरट्ट' )। क्रिवि० पाँव पाँव।
पैदा—वि० उत्पन्न, प्रकट, अर्जित।
पैदाइश—स्त्री० जन्म, उत्पत्ति।
पैदाइशी—वि० जन्मका, स्वाभाविक, नैसर्गिक।
पैदावार,-वारी—स्त्री० उपज।
पैना—वि०धारदार, तेज 'खाँड़ै चाहि पैनि बहुताई। बार चाहि ताकर पतराई।' प० ७१। पु० अंकुश। बैल हाँकनेकी छड़ी।
पैनाना—सक्रि० धार करना, टेना।
पैमाइश—स्त्री० मापनेका कार्य।
पैमाल—वि० 'पामाल', ( उदे० 'परज्वलना' )। पाँवसे कुचला हुआ, बरबाद।
पैयाँ—स्त्री० पाँव 'दोउ परैं पैयाँ दोउ लेत हैं बलैयाँ...' रसखानि
पैया—पु० खोखला दाना। पहिया।
पैर—पु० पाँव।
पैरगाड़ी—स्त्री० पाँवके धक्केसे चलनेवाली गाड़ी।
पैरना—अक्रि० तैरना, 'लरिकाईको पैरिबो तुलसी बिसरि न जाइ। दोहा० ११६, ( उदे० 'घई', 'तारना' )
पैरवी—स्त्री० खुशामद, पक्ष-समर्थन,कोशिश,अनुसरण।
पैरवीकार—पु० पैरवी करनेवाला, समर्थक।
पैरा—पु०एक तरहका कड़ा। चढ़नेका मार्ग (रतन० ३८)। देखो 'पौरा'। लेखांश, प्रस्तर।
पैराउ, पैराव—पु० इतना पानी जो तैरकर पार किया जा सके 'ग्रीषम हूँ ऋतुमें भरी दुहूँ कूल पैराउ।' मति० १७७
पैराक—पु० तैरनेवाला।
पैरी—स्त्री० पैरका एक गहना। दायँनेकी क्रिया। सीढ़ी। पीढ़ी, पुश्त ( हिम्मत० २१ )।
पैरेखना—सक्रि० देखो 'परेखना'।

पैरोकार—पु० पैरवी करनेवाला।
पैला—पु० अन्न नापनेका पात्र। दूध-दही ढाँकनेका पात्र। वि० परला, दूसरा ( कबीर १६० )।
पैली—स्त्री० छोटा पैला।
पैवंद—पु० जोड़, चकती। इष्ट मित्र।
पैवस्त—वि० भली भाँति फैला हुआ या समाया हुआ। जो अच्छी तरह भिद गया हो।
पैशाचिक—वि० पिशाच सम्बन्धी,पिशाच जैसा,राक्षसी,
पैशाची—स्त्री० प्राकृत भाषाका एक भेद। [ घोर, नृशंस।
पैशुन, पैशुन्य—पु० पिशुनता।
पैसना—अक्रि० प्रवेश करना।
पैसरा—पु० झगड़ा। व्यापार।
पैसा—पु० ताँबेका छोटा सिक्का। धन, दौलत।
पैसार—पु० प्रवेश 'भीतर मँडप कीन्ह पैसारा।' प० ८९
पैहारी—पु० केवल दूधके आधारपर रहनेवाला।
पों—स्त्री० भोंपा, भोंपेकी आवाज़।
पोंकना—अक्रि० पतला दस्त होना। डरना।
पोंगरा—पु० बालक, बच्चा ( बीजक २६४ )।
पोंगा—पु० चोंगा, बाँसकी नली। वि० मूर्ख।
पोंगी—स्त्री० छोटी नली, तुमड़ी 'जैसे पोंगी बाजत अखड स्वर होत पुनि'—सुन्द ३०
पोंछ—स्त्री० पूँछ, दुम ( धनंजय० १९ )।
पोंछन—पु० पोंछनेसे निकला हुआ अंश।
पोंछना—सक्रि० झाड़ना, रगड़कर साफ करना।
पोआ—पु० सँपोला, साँपका बच्चा।
पोआना—सक्रि० रोटी बेल बेलकर देना।
पोइया—स्त्री० घोड़ेकी सरपट चाल।
पोइस—स्त्री० दौड़, दौड़धूप 'पोइस धक्का धूलितें आयो प्राण बचाइ। पद्माभ० ३७
पोई—स्त्री० अंकुर। गेहूँ, ज्वार इ० का नरम पौधा। ईखका कल्ला। एक लता।
पोख—पु० पोसनेका सम्बन्ध (प० १६६, साखी ८०)।
पोखना—सक्रि० पोसना, पालना ( उदे० 'निशान' )।
पोखर, पोखरा—पु० तालाव।
पोगंड—पु० वह बालक जो पाँचसे सोलह वर्ष तकका हो।
पोच—वि० अशक्त। नीच, क्षुद्र 'मास दिवस बीते मोहिं मारिहि निसिचर पोच।' रामा० ४२०। स्त्री० बुरी बात ( 'पोच भई महा' कविता० १८७ )।
पोची—स्त्री० नीचता, बुराई।
पोट—स्त्री० पोटली, गठरी (उदे०'चामर'), 'सब प्रपंचकी पोट बाँधि करि, अपने सीस धरी।' सू० २८१। ढेर।
पोटना—सक्रि० समेटना, पंजेमें करना।
पोटरी, पोटली—स्त्री० गठरी।
पोटा—पु० आँखकी पलक। कलेजा। पेटकी थैली। अँगुलीका छोर। चिड़ियाका छोटा बच्चा। स्त्री० दाढ़ी†
पोटी—स्त्री०कलेजा (कलस३०७)। [ †मूँछवाली स्त्री।
पोढ़, पोढ़ा—वि० दृढ़, पुष्ट, कठिन 'मान न करसि,पोढ़ करु लाडू।' प० १४४, ( प० २१० )।
पोढ़ाना—सक्रि० दृढ़ करना। अक्रि० दृढ़ होना।
पोत—पु० नाव। पशु-पक्षीका छोटा बच्चा (विन० ३८४)। बुनावट। ढंग। पारी। मालगुजारी 'लैहै हाकिम पोत कहा तब ताको दैहै।' दीन० २३६। स्त्री० काँचकी गुरिया ( उदे० 'पूतरी', 'पुहना' )।
पोतड़ा—पु० बच्चेका बिछौना।
पोतदार—पु० लगानका रुपया रखनेवाला। पारखी।
पोतना—सक्रि० लीपना, लेप करना, चुपड़ना ( उदे०‡
पोतला—पु० पराठा। [ ‡गौरा')। पु०पोतनेका कपड़ा।
पोता—पु० बेटेका बेटा। पोतनेका कपड़ा, मिट्टीका लेप, 'नैन नीर सों पोता किया।' प० ७०। मालगुजारी, ( सू० ११ )। कलेजा।
पोती—स्त्री० पौत्री। मिट्टीका लेप। गुरिया (प०२९२)।
पोथा—पु० कागजोंका बंडल, बड़ी पोथी।
पोथी—स्त्री० पुस्तक।
पोदना—पु० एक चिड़िया। नाटा मनुष्य, बौना।
पोना—सक्रि० रोटी बनाना, पकाना, ( उदे० 'झालर' ) पोहना, पिरोना '… सखि अनुराग-ताग पोऊ।'—
पोप—पु० ईसाई धर्मका अध्यक्ष। [कविता० ३३६
पोपला—वि० पचका हुआ, बिना दाँतका।
पोपलाना—अक्रि० पोपला होना।
पोया—पु० साँपका बच्चा। नरम पौधा। छोटा बच्चा।
पोयावोई—स्त्री० छल-कपटकी बातें ( सुन्द० २० )।
पोर—स्त्री० गाँठ, जोड़। दो गाँठोंके बीचकी जगह (उदे० 'ढोर')। पीठ।
पोरिया—पु० हाथकी अँगुलियोंपर पहननेका एक गहना।
पोल—स्त्री० खोखलापन, भंडा। खाली जगह। फाटक।
पोला—वि० खोखला, निस्सार। पु० एक त्योहार।

पोलो—पु० घोड़ेपर चढ़कर खेला जानेवाला गेंदका एक [खेल, चौगान।
पोवना—सक्रि० पोहना।
पोशाक—स्त्री० पहनावा, वस्त्र।
पोशीदा—वि० छिपा हुआ। गुप्त।
पोष—पु० पोषण, वृद्धि, सन्तोष।
पोषक—पु० पोषण करनेवाला, पालक।
पोषण—पु० पालन, संवर्द्धन ( पभू० ५६ )।
पोषना, पोसना—सक्रि० पालना ( उदे० 'अंक' )। रक्षा करना, शान्त करना 'जागि उठो तबहीं सुरदोषी। छुद्र छुधा बहु भक्षण पोषी।' राम० ४५१
पोषित—वि० पाला हुआ।
पोष्य—वि० पालने योग्य। पु० नौकर।
पोष्यपुत्र—पु० पुत्रवत् पालित बालक।
पोसती—पु० अफीमची ( सुन्द० ९७ )।
पोसना—सक्रि०" ढाँकना, छिपाना 'मोरि मुखै करसों कुच पौसे।' सुधानिधि १३२।
पोस्ट आफिस—पु० डाकखाना।
पोस्टमैन—पु० चिट्ठीरसाँ, डाकिया।
पोस्त—पु० छिलका। पोस्ता।
पोस्ता—पु० अफीमका पौधा। पोस्ती = अफीमची।
पोस्तीन—पु० खालका बना हुआ पहरावा।
पोहना—सक्रि० पिरोना, छेदना, धँसाना (उदे०'पूतरी'), [पीसना।
पोहमी—स्त्री० पुहुमी, पृथिवी।
पौंड़ा—पु० मोटा, गन्ना, ईख।
पौंड़ी, पौंरी—स्त्री० देखो 'पौरि'। पाँवड़ी पायन पहिरि लेहु सब पौंरी। काँट धसैं न गड़ै अँकरौरी।' प० ६१
पौंड्र—पु० पौंढ़ा। भीमसेनके शङ्खका नाम। एक राजा या एक देशका नाम।
पौंनार—स्त्री० देखो 'पौनार'। 'भुज उपमा पौंनार नहिं खीन भयेउ तेहि चिन्त।' प० ४९
पौंर—स्त्री० देखो 'पौरि' ( गुलाब ४२५, ५०० )।
पौंरना—दे० 'पैरना' (प० १४)।
पौ—स्त्री० प्रकाशकी रेखा, किरण ( उदे० 'जीवाजून' )। पाँसेका एक दाँव ( प० १४९ )। पौसला। पाँव।
पौआ—पु० सेरका चतुर्थांश।
पौगंड—पु० ५ से १६ वर्षतककी अवस्था। वि० कम उम्रका, कुछ कुछ तीव्र ( विद्या० २३४ )।
पौड़ना—अक्रि० देखो 'पौढ़ना', ( कबीर २६६ )।
पौढ़ना—अक्रि० सोना (उदे०'गोफा')। लेटना 'भूतलके इन्द्र भूमि पौढ़े हुते रामचन्द्र'''राम०४७६। झूलना।
पौढ़ाना—सक्रि० लेटाना, सुलाना 'करि सिंगार पलना पौढ़ाये।' रामा० १११। झुलाना।
पौणी—स्त्री० पतिकी बड़ी बहिन (ग्राम० परिचय ४२)।
पौत्र—पु० पोता, बेटेका बेटा।
पौद—स्त्री० छोटा पौधा। पाँवड़ा।
पौदर—स्त्री० पदचिह्न, पतला रास्ता, पुरवट खींचनेवाले या कोल्हूके बैलका रास्ता (ग्राम० ४५७)।
पौदा, पौधा—पु० छोटा पेड़।
पौध—स्त्री० उपज, पैदाइश 'पौध इनकी ऐसी भ्रमकारी' [रत्ना० १२५।
पौधि—स्त्री० देखो 'पौद'।
पौनःपुनिक—वि० फिर फिर होनेवाला।
पौन—स्त्री० वायु। प्राण, जीव। प्रेत। वि० तीन चौथाई।
पौना—पु० लोहे या काठकी करछी। पौनका पहाड़ा।
पौनार, पौनारि—स्त्री० कमलकी नाल।
पौनी—स्त्री० नाई, धोबी आदि जिन्हें विवाहादिके समय इनाम दिया जाता है ( उदे० 'पउनी' )।
पौमान—पु० पवन। चन्द्रमा। सरोवर।
पौर—स्त्री० पौरि, ड्योढ़ी, फाटक ( रतन० ४९ )। वि० नगर सम्बन्धी। पु० नगरवासी।
पौरना—अक्रि० तैरना।
पौरव—पु० पुरु-वंशज। एक देश।
पौरस्त्य—वि० पूर्व दिशाका, पहलेका।
पौरा—पु० पड़ा हुआ चरण, आया हुआ चरण।
पौराणिक—वि० पुराण सम्बन्धी। प्राचीन समयका।
पौरि—स्त्री० ड्योढ़ी ( उदे० 'कोटवार' ), 'फेरि कछू करि पौरितें फिर चितई मुसकाय।' बि० १८२। फाटक।
पौरिया—पु० ड्योढ़ीवान, द्वारपाल 'द्वार द्वार छरी लिये द्वार पौरिया हैं खड़े, बोलत मरोर बरजोर त्यों झिलन-[को।' सुदामा० १४
पौरी—देखो 'पौरि'। खड़ाऊँ।
पौरुख, पौरुष—पु० पुरुषत्व, उद्योग, पराक्रम। साहस, [शक्ति।
पौरुषेय—वि० पुरुष सम्बन्धी। मनुष्यकृत।
पौरुष्य—पु० पुरुषार्थ, पुरुषत्व, साहस।
पौरोहित्य—पु० पुरोहिताई।
पौर्वापर्य—पु० आगे और पीछेका सम्बन्ध, सिलसिला।
पौल—स्त्री० रास्ता 'बाँका गढ़, बाँका मता बाँकी गढ़की [पौल।' साखी२६
पौलना—सक्रि०काटना (वु०वै०८२)।

पौलस्त्य—पु० पुलस्त्यका पुत्र या उनका वंशज, कुवेर
पौला—पु० बिना खूँटीकी खड़ाऊँ। [ रावण आदि ।
पौली—स्त्री० ड्योढ़ी '...धरमराइ पौली प्रतिहार ।
कबीर २०३ । पैरका वह भाग जिसमें खड़ाऊँ आदि
पौलोमी—स्त्री० इन्द्रपत्नी । [ पहनते हैं ।
पौवा—पु० देखो 'पौआ' ।
पौष—पु० माघके पहलेका महीना ।
पौष्टिक—वि० पुष्टि करनेवाला । [ ( दीन० १५४ ) ।
पौसर, पौसरा, पौसला—पु० पानी पिलानेकी जगह
पौहारी—पु० केवल दूध पीकर रहनेवाला ।
प्याऊ—पु० पानी पिलानेकी जगह, पौसरा ।
प्याज—पु० मूल विशेष ।
प्याजी—वि० हलका गुलाबी ।
प्यादा—पु० पैदल सिपाही । दूत ।
प्याना—सक्रि० पिलाना ।
प्यार—पु० स्नेह, प्रेम ।
प्यारा—पु० प्रेमपात्र । वि० प्रिय । सुहावना, जो छोड़ा न जा सके । महँगा 'इतनी दूरि जाहु चलि काशी जहाँ बिकति है प्यारी ।' भ्र० २८
प्याला—पु० कटोरा । खप्पर ।
प्यावना—सक्रि० पिलाना ( सू० ९२ ) ।
प्यास—स्त्री० पिपासा, तृषा । प्रबल इच्छा ।
प्यूनी—स्त्री० सूत कातनेके लिए बनायी गयी रुईकी बत्ती ( सुन्द० ९० ) ।
प्यो—पु० प्रिय, पति (उदे० 'झुठकाना', 'प्रतिबिंबना') ।
प्योसर—पु० देखो, 'पेउसर' ।
प्योसार—पु० नैहर, मायका 'पिय बिछुरनको दुसह दुख हरष जात प्योसार ।' वि० ११
प्यौर—पु० प्रियतम, पति ।
प्रकंपन—वि० कँपानेवाला । पु० कँपकँपी । वायु । एक
प्रकंपित—वि० अधिक काँपता हुआ । [ राक्षस ।
प्रकट—वि० जाहिर, स्पष्ट, व्यक्त ।
प्रकटित—वि० प्रकट किया हुआ ।
प्रकरण—पु० प्रस्तावना, वृत्तान्त, अध्याय ।
प्रकरी—स्त्री० प्रासंगिक कथावस्तुका एक भेद ।
प्रकर्ष—पु० उत्कर्ष । प्रचुरता, आधिक्य ।
प्रकांड—वि० विशाल, बहुत बड़ा । पु० वृक्षका तना,
प्रकाम—वि० अत्यधिक । [ शाखा । पेड़ ।

प्रकार—पु० भेद, भाँति, रीति । स्त्री० प्राकार, परकोटा ।
प्रकाश, प्रकास—पु० उजाला, दीप्ति, तेज (उदे० 'टरना') । विकास, विस्तार । प्रसिद्धि, प्रकट होना, स्पष्ट होना । हँसी । वि० दीप्त, विकसित, प्रकट, स्पष्ट ।
प्रकाशक—पु० प्रकाश करनेवाला, प्रकाशित या प्रसिद्ध
प्रकाशवान—वि० प्रकाशयुक्त । [ करनेवाला ।
प्रकाशित—वि० दीप्त, उदित, प्रकटित, व्यक्त ।
प्रकाश्य—वि० प्रकट करने योग्य । क्रिवि० प्रकट रूपसे ।
प्रकासना—अक्रि० प्रकाशित होना ( उदे० 'आभोग') ।
प्रकीर्ण—वि० बिखरा हुआ । मिश्रित । विस्तृत ।
प्रकीर्णक—पु० अध्याय, चँवर, विस्तार । वि० फुटकर ।
प्रकुपित—वि० बहुत क्रुद्ध, जिसकी तेज़ी बढ़ गयी हो ( कफ, वात इ० ) ।
प्रकृत—वि० सच्चा, यथार्थ । रचा हुआ । अपरिवर्तित ।
प्रकृति—स्त्री० स्वभाव, चरित्र, तासीर । वह मूल शक्ति जिससे सृष्टिकी उत्पत्ति हुई हो, माया, क़ुदरत ।
प्रकृतिसिद्ध—वि० जो प्रकृतिके अनुरूप हो, स्वाभाविक ।
प्रकृष्ट—वि० उत्तम, प्रमुख । आकृष्ट ।
प्रकोप—पु० अधिक क्रोध । रोगादिकी प्रबलता ।
प्रकोष्ठ—पु० फाटकके पासकी कोठरी, चारों तरफ मकान-से घिरा हुआ आँगन । कोहनीके नीचेका भाग ।
प्रक्रम—पु० अनुक्रम, सिलसिला । अवसर । उल्लंघन ।
प्रक्रिया—स्त्री० युक्ति । क्रिया । प्रकरण । [आरम्भिक उपाय ।
प्रक्षालन—पु० धोना, साफ करना ।
प्रक्षालित—वि० धोया हुआ ।
प्रक्षिप्त—वि० फेंका हुआ, बादमें मिलाया हुआ ।
प्रक्षेप—पु० फेंकना, बढ़ाना । [ धारदार ।
प्रखर—पु० घोड़ेकी पाखर या जीन । वि० तीक्ष्ण, पैना,
प्रखरता-प्रखराई—स्त्री० तीक्ष्णता, तेज़ी (रत्ना० ४७०) ।
प्रख्यात—वि० प्रसिद्ध ।
प्रगट—वि० देखो 'प्रकट' ।
प्रगटना—अक्रि० प्रकट होना ( उदे० 'किलकना'), प्रकाशित होना, जन्म लेना (उदे० 'टीका') । सक्रि० प्रकट करना 'प्रगटत जड़ता अपनियै सु मुकुट पहिरत
प्रगटाना—सक्रि० प्रकट करना । [ पाइ ।' बि० १७०
प्रगति—स्त्री० चाल, ढंग, रवैया, अग्रगति, बढ़ाव, तीव्रगति ।
प्रगतिशील—वि० आगे बढ़नेवाला, गतियुक्त ।
प्रगर्भ, प्रगल्भ—वि० चतुर । तीक्ष्णबुद्धि । निर्भ

'बोल्यो प्रगर्भ बानी कठोर।' रघु० ६९। हाजिरजवाब, उत्साही। धृष्ट। घमण्डी।
प्रगल्भता—स्त्री० चातुर्य, बुद्धिमानी, प्रतिभा। निर्भयता, धृष्टता, वाक्पटुता ( पभू० ६४ )।
प्रगल्भा—स्त्री० प्रौढ़ा नायिका।
प्रगसना—अक्रि० प्रकाशित होना, व्यक्त होना।
प्रगाढ़—वि० बहुत गाढ़ा, घना। बहुत ज़्यादा।
प्रघटना—अक्रि देखो 'प्रगटना'। [सिद्धान्त।
प्रघट्टक—पु० प्रकट करनेवाला, प्रकाश करनेवाला।
प्रचंड—वि० तीव्र, प्रबल, प्रखर, कठिन, भयंकर, बड़ा, [धुरंधर।
प्रचरना—अक्रि० प्रचारित होना, चलना।
प्रचरित, प्रचलित—वि० चलता हुआ, जारी।
प्रचलन—पु० चलन, प्रचार।
प्रचार—पु० चलन, प्रसिद्धि, व्यापकता।
प्रचारक—पु० प्रचार करनेवाला, फैलानेवाला।
प्रचारना—सक्रि० प्रचार करना, फैलाना। ललकारना, चुनौती देना 'जो रन हमहिं प्रचारइ कोऊ। लरहिं सुखेन काल किन होऊ।' रामा० १५३
प्रचारित—वि० जिसका प्रचार किया गया हो।-करना= प्रचार करना, ललकारना ( गुलाब ४८० )
प्रचुर—वि० बहुत, यथेष्ट। पु० चोर।
प्रच्छन्न—वि० छिपा हुआ, गुप्त।
प्रच्छादन—पु० छिपाने, ढाँकने आदिकी क्रिया या भाव। ऊपरसे ओढ़नेकी चादर।
प्रच्छाम—पु० गहरी छायावाला स्थान।
प्रच्छालना, प्रछालना—सक्रि० धोना 'साध नदी, जल प्रेमरस, तहाँ प्रछालो अंग।' साखी १२०
प्रजंक—पु० पलंग ( दास ३६ )।
प्रजंत—अ० पर्यन्त, तक ( रामा० ६०२ )।
प्रजनन—पु० जननेका कार्य, जन्म। जनक।
प्रजरना—अक्रि० जलना।
प्रजांतक—पु० यमराज।
प्रजा—स्त्री० रैयत, सन्तान।
प्रजाकार—पु० प्रजापति, ब्रह्मा।
प्रजागर—पु० जागना। निद्राका अभाव। विष्णु।
प्रजातंत्र—पु० वह शासनप्रणाली जिसमें शासनसूत्र प्रजाके हाथमें हो और कोई राजा न हो।
प्रजापति—पु० सृष्टिका रचयिता। राजा। अग्नि। पिता।
प्रजारना—सक्रि० भली भाँति जलाना 'बिनु आज्ञा मैं भवन प्रजारे...'-सूरा० ४६। उद्दीपित करना 'मानहु बुझी मदनकी ज्वाला, बहुर प्रजारन लागे।' सू० ७५
प्रजावती—स्त्री० बड़े भाईकी स्त्री। सगर्भा स्त्री। कई सन्तानोंवाली स्त्री।
प्रजुरना—अक्रि० प्रज्वलित होना, प्रकाशित होना 'प्राची दिसिते प्रजुरति आवति अगनि उठी जनु।' नागरी०
प्रजुरित, प्रजुलित—वि० प्रज्वलित।
प्रज्झटिका—स्त्री० देखो 'पज्झटिका'।
प्रज्ञ—वि० विद्वान्, दक्ष।
प्रज्ञप्ति—स्त्री० जतानेकी क्रिया, संकेत, सूचना।
प्रज्ञा—स्त्री० बुद्धि, एकाग्रता।
प्रज्ञाचक्षु—पु० ज्ञानी, धृतराष्ट्र। अन्धा ( व्यंग्य )।
प्रज्ञान—पु० बुद्धि, चैतन्य, चिह्न।
प्रज्ञापरिमिता—स्त्री० चरम सीमाकी प्रज्ञा, बौद्धोंकी महायान शाखाकी बुद्धिकी अधिष्ठात्री देवी, 'तपकी तारुण्यमयी प्रतिमा,प्रज्ञा पारिमिताकी गरिमा'लहर३४।
प्रज्वलित—वि० धधकता हुआ, सुस्पष्ट।
प्रण—पु० प्रतिज्ञा, दृढ़ संकल्प। वि० पुरातन।
प्रणत—पु०प्रणाम करनेवाला,भक्त,सेवक।वि०अधिक झुका [हुआ,विनम्र।
प्रणतपाल—पु० भक्त-रक्षक, दीनबन्धु।
प्रणति—स्त्री० प्रणाम, विनती, नम्रता।
प्रणमन—पु० प्रणाम करनेकी क्रिया, झुकना।
प्रणय—पु० प्रणाम, दंडवत। प्रेम। मोक्ष। प्रसव।
प्रणयन—पु० निर्माण, रचना।
प्रणयिनी—स्त्री० प्रेमिका, प्रेमपात्री।
प्रणयी—पु० प्रेमी, पति।
प्रणव—पु० ओंकार, परमात्मा, त्रिदेव।
प्रणयना—सक्रि० प्रणाम करना।
प्रणाम—पु० नमस्कार, दंडवत।
प्रणाली—स्त्री० रीति, पद्धति। जलमार्ग, नाली।
प्रणाशी—वि० नाश करनेवाला।
प्रणिधान—पु० समाधि। रखा जाना। अर्पण। भक्ति। [ध्यान। प्रयत्न।
प्रणिधि—पु० दूत, चर। याचना।
प्रणिपात—पु० प्रणाम। झुकना।
प्रणिहित—वि० समाधिस्थ, स्थापित, प्राप्त।
प्रणीत—वि० रचित, प्रस्तुत, संशोधित। जिसका मंत्र-द्वारा संस्कार किया गया हो। पु० मंत्रपूत जल।

प्रणेता—पु० कर्त्ता, रचयिता ।
प्रतंचा—स्त्री० रोदा, धनुषकी डोरी, ज्या ।
प्रतक्ष,-प्रतच्छ—वि० जो नेत्र के सम्मुख हो, जो गोचर हो ।
प्रतति—स्त्री० प्रतान, बँवर ।
प्रतनु—वि० अति सूक्ष्म, क्षीण ।
प्रतप्त—वि० बहुत तपाया हुआ ।
प्रताप—वि० वीरता, प्रभाव । तेज । यश ।
प्रतापवान्, प्रतापी—वि० तेजस्वी, यशस्वी ।
प्रतारक—पु० धोखा देनेवाला, धूर्त, ठग ।
प्रतारणा—स्त्री० वंचना, ठगी ।
प्रतारित—वि० जो ठगा गया हो ।
प्रतिंचा—स्त्री० देखो 'प्रत्यंचा' (पूर्ण २४६) ।
प्रति—अ० विरुद्ध । जोड़का । एक एक । समान । सामने । बदलेमें । ओर । स्त्री० नक़ल । अदद ।
प्रतिकार—पु० बदला, उपाय, इलाज ।
प्रतिकूल—वि० उलटा, विपरीत ।
प्रतिकृत—वि० जिसका उपाय हो चुका हो, जिसके बदलेमें कोई बात की जा चुकी हो ।
प्रतिकृति—स्त्री० चित्र, प्रतिमा, प्रतिबिम्ब, प्रतिकार ।
प्रतिक्रिया—स्त्री० बदला । परिणामभूत क्रिया ।
प्रतिगृहीत—वि० जो ग्रहण कर लिया गया हो ।
प्रतिग्या—स्त्री० प्रतिज्ञा, प्रण ।
प्रतिग्रह—पु० पकड़ना, ग्रहण, विवाह, दान लेना । स्वागत ।
प्रतिग्रही,-ग्रहीता,-ग्राही—पु० दान लेनेवाला ।
प्रतिघात—पु० आघातके बदले आघात । बाधा ।
प्रतिघाती—पु० प्रतिद्वंद्वी, शत्रु । वि० विरोध करनेवाला, टक्कर मारनेवाला ।
प्रतिच्छा—स्त्री० प्रतीक्षा, आसरा ।
प्रतिच्छायित—वि० प्रतिबिम्बित ।
प्रतिछाँई,-छाँह,-छाया—स्त्री० चित्र, मूर्ति, प्रतिबिम्ब ।
प्रतिज्ञा—स्त्री० प्रण, शपथ ।
प्रतिज्ञात—वि० जिसके लिए प्रतिज्ञा की जा चुकी हो, हो सकने योग्य ।
प्रतिदत्त—वि० बदलेमें दिया हुआ, लौटाया हुआ ।
प्रतिदान—पु० बदला, विनिमय । लौटाना ।
प्रतिद्वंद्व—पु० बराबरवालोंका विरोध
प्रतिद्वंद्वी—वि० प्रतिस्पर्धी, शत्रु ।
प्रतिध्वनि-स्त्री०, प्रतिध्वान—पु० प्रतिशब्द, गूँज, झाँई ।
प्रतिध्वनित—वि० गूँजित ।
प्रतिनायक—पु० वह पात्र जो नायकका प्रतिद्वन्द्वी हो ।
प्रतिनिधि—पु० एवज़दार, स्थानापन्न व्यक्ति, प्रतिभू । प्रतिमा ।
प्रतिपक्ष—पु० विरोधीदल, दूसरे पक्षकी बात, प्रतिवादी, शत्रु ।
प्रतिपच्छी,-पच्छी—पु० विरोधी, शत्रु (रामा० २४१) ।
प्रतिपत्ति—स्त्री० प्रतिपादन, निरूपण । अनुमान, ज्ञान । प्राप्ति । मानना । दृढ़ विचार । प्रतिष्ठा । गौरव ।
प्रतिपदा—स्त्री० परिवा ।
प्रतिपन्न—वि० प्रतिपादित, प्रमाणित, ज्ञात, स्वीकृत, प्राप्त ।
प्रतिपादक—पु० प्रतिपादन करनेवाला ।
प्रतिपादन—पु० निरूपण, सम्पादन । प्रमाण । पुरस्कार ।
प्रतिपादित—वि० जिसका प्रतिपादन हो चुका हो । निरूपित ।
प्रतिपाद्य—वि० जिसका निरूपण किया जा सके या करना हो, समझाने योग्य ।
प्रतिपार,-पाल—पु० पालन करनेवाला, रक्षक । रक्षा, पालन 'तीन लोक जाके हहि भार । सो काहे न करै प्रतिपार ।' कबीर २८९
प्रतिपारना -पालना—सक्रि० पालन करना, रक्षा करना 'श्रीनृसिंह वपु धर्यो असुरहित भक्त वचन प्रतिपार्यो ।' सूवि० १३ (उदे० 'ऐंड़दार') ।
प्रतिपोषक—पु० समर्थक, सहायक ।
प्रतिफल—पु० परिणाम, प्रतिबिम्ब ।
प्रतिफलित—वि० प्रतिबिम्बित ।
प्रतिबंध—पु० रुकावट, बन्धन । प्रबन्ध ।
प्रतिबंधक—पु० रोकनेवाला, विघ्न डालनेवाला ।
प्रतिबद्ध—वि० बँधा हुआ (पभू० २४३) । जिसमें कोई रोक या बाधा हो ।
प्रतिबिंब—पु० परछाईं । चित्र । प्रतिमा । मूर्ति । दर्पण ।
प्रतिबिंबवाद—पु० वह मत जिसके अनुसार ब्रह्म बिंब है और जगत् उसका प्रतिबिंब ।
प्रतिबिंबना—अक्रि० प्रतिबिम्बित होना, झलकना, 'का मूँदरकी आरसी प्रतिबिंब्यो प्यो आय ।' बि० २५ (उदे० 'अनरसना') ।
प्रतिभट—पु० विपक्षी, बराबरका योद्धा ।
प्रतिभा—स्त्री० बुद्धि । विलक्षण बुद्धि-बल ।
प्रतिभात—वि० चमकता हुआ ज्ञात, समझा हुआ, प्रतीत (होता)
प्रतिभावान्,-शाली—वि० प्रतिभावाला ।
प्रतिभू—पु० जामिन, जमानतदार ।
प्रतिमा—स्त्री० प्रतिमूर्त्ति, मूर्ति, प्रतिबिम्ब ।
प्रतिमान—पु० प्रतिबिम्ब । समानता, उदाहरण ।

प्रतिमूर्त्ति—स्त्री० प्रतिमा, वह मूर्त्ति जो किसीकी आकृतिकी [नकल हो ।
प्रतियोगिता—स्त्री० चढ़ा-ऊपरी, विरोधी ।
प्रतियोगी—वि० प्रतिद्वन्द्वी, बराबरीका । पु० शत्रु, हिस्से-[दार । सहायक ।
प्रतियोद्धा—पु० बराबरका योद्धा, शत्रु ।
प्रतिरूप—पु० प्रतिमा, चित्र, प्रतिनिधि ।
प्रतिरोध—पु० विरोध, रुकावट, दमन ।
प्रतिरोधक—पु० बाधा डालनेवाला । चोर, डाकू ।
प्रतिलिपि—स्त्री० नक़ल ।
प्रतिलोम—वि० उलटा, प्रतिकूल । नीच । पु० नीच व्यक्ति । -विवाह = नीची जातिके पुरुषके साथ ऊँची जातिकी स्त्रीका विवाह ।
प्रतिवचन—पु० उत्तर, विरुद्ध वाक्य, प्रतिध्वनि ।
प्रतिवर्त्तन—पु० लौट आना । घुमाव, फेरा ।
प्रतिवस्तूपमा—स्त्री० एक काव्यालंकार 'पृथक् पृथक् पद धर्म पै युगवाक्यन कर एक ।'
प्रतिवाद—पु० खण्डन, विरोध । जवाब । बहस ।
प्रतिवादी—पु० खण्डन करनेवाला, प्रतिपक्षी । मुद्दालेह ।
प्रतिवासी—पु० पड़ोसी ।
प्रतिविधान—पु० उपाय, प्रतिकार (साकेत ३१४) ।
प्रतिवेश—पु० पड़ोस ।
प्रतिवेशी—पु० पड़ोसी ।
प्रतिशब्द—पु० प्रतिध्वनि ।
प्रतिशोध—पु० बदला, बदला लेनेका कार्य ।
प्रतिश्रुत—वि० स्वीकृत किया हुआ ।
प्रतिषिद्ध—वि० जिसके लिए मनाही की गयी हो, निषिद्ध ।
प्रतिषेध—पु० मनाही, खण्डन । एक अर्थालङ्कार 'सुप्रसिद्ध कछु वस्तुको कीजत जहाँ निषेध ।'
प्रतिष्ठा—स्त्री० स्थापना । मर्यादा, यज्ञ । स्थान, स्थिति । व्रतका उद्यापन । [(व्रतोद्यापन । संस्था ।)
प्रतिष्ठान—पु० स्थापना, रखनेकी क्रिया । मूल । स्थान ।
प्रतिष्ठित—वि० स्थापित, आदरणीय, मान्य, इज़्ज़तवाला ।
प्रतिसंध—वि० बँधा हुआ ।
प्रतिस्पर्द्धा—स्त्री० चढ़ा-ऊपरी, ईर्ष्या, झगड़ा ।
प्रतिस्पर्द्धी—पु० जो प्रतिस्पर्द्धा करे, प्रतिद्वन्द्वी ।
प्रतिहत—वि० रुका हुआ, गिरा हुआ, हटाया हुआ ।
प्रतिहार—पु० ड्योढ़ी, ड्योढ़ीवान । मायावी, जादूगर ।[द्वार । द्वाररक्षक । चोबदार ।
प्रतिहारी—पु० द्वारपाल ।
प्रतिहिंसा—स्त्री० बदलेमें की गयी हिंसा ।

प्रतीक—पु० चिह्न, बाह्यरूप, मुखड़ा, मूर्त्ति, प्रतिरूप, स्थानापन्न वस्तु । वि० विलोम, उलटा ।
प्रतीकार—पु० प्रतिकार, बदला । इलाज ।
प्रतीक्षा—स्त्री० इन्तज़ार, आसरा । प्रतिपालन ।
प्रतीक्ष्य—वि० प्रतीक्षा करने योग्य ।
प्रतीघात—पु० आघातके उत्तरमें होनेवाला आघात [† टक्कर । बाधा ।
प्रतीची—स्त्री० पश्चिम दिशा ।
प्रतीचीन, प्रतीच्य—वि० 'प्राच्य' का उलटा, पश्चिमका ।
प्रतीत—वि० विदित, ज्ञात । विख्यात ।
प्रतीति—स्त्री० विश्वास । ज्ञान । प्रसिद्धि ।
प्रतीप—वि० उलटा, प्रतिकूल । पु० एक काव्यालंकार, जहाँ उपमेयको उपमानके सदृश कहनेके बजाय उलटे उपमानको ही उपमेयके सदृश कहा जाय या जहाँ उपमानकी हीनता आदि दिखायी जाय । प्रतिकूल घटना ।
प्रतीयमान—वि० भासमान । जो ध्वनि या व्यंगसे [निकले (अर्थ) ।
प्रतीवेशी—पु० देखो 'प्रतिवेशी' ।
प्रतीहारी—पु० प्रतिहारी । द्वाररक्षक । [(कलस २७८)
प्रतोद—पु० अंकुश, बैलोंको हाँकनेकी छड़ी या चाबुक
प्रतोषना—सक्रि० सन्तुष्ट करना, समझाना 'राम प्रतोषी मातु सब कहि विनीत बर बैन ।' रामा० १९४
प्रत्न—वि० पुरातन ।
प्रत्नतत्त्वविद्—पु० पुरातत्त्वज्ञ ।
प्रत्यंचा—स्त्री० रोदा, धनुषकी डोरी ।
प्रत्यक्ष—क्रिवि० नेत्रोंके सामने । वि० जो सामने हो, इन्द्रियग्राह्य । पु० साक्षात् या सीधा अनुभव ( जीव० २१ ) । एक तरहका प्रमाण ।
प्रत्यक्षदर्शी—पु० वह जिसने स्वयं अपनी आँखोंसे कोई घटना देखी हो, गवाह । [दिखला देना ।
प्रत्यक्षीकरण—पु० प्रत्यक्ष करा देनेकी क्रिया; आँखोंसे
प्रत्यनीक—पु० एक काव्यालंकार 'करत बैर अरि पक्षसों मित्र पक्षसों हेत ।' जिसकी सेना विरुद्ध हो । विघ्न ।
प्रत्यपकार—पु० अपकारके बदले किया गया अपकार ।
प्रत्यभिज्ञान—पु० कोई वस्तु देखनेपर पहले देखी हुई वैसी ही वस्तुका स्मरण हो आना ।
प्रत्यय—पु० विश्वास । कारण, प्रमाण, ज्ञान । प्रसिद्धि । सम्मति, व्याख्या । वे शब्दांश जिनकी सहायतासे तद्धित, कृदन्त आदि शब्द बनते हैं ।

प्रत्यर्पण—पु० दानमें मिली वस्तुको पुनः दे डालना ।
प्रत्यवाय—पु० शास्त्रोक्त नित्यकर्म न करनेका पातक । बड़ा परिवर्तन ।
प्रत्याख्यान—पु० निराकरण, दूर करना, खंडन ।
प्रत्यागत—वि० जो वापस आया हो । पु०लड़ाईका एक ढंग, एक पेंच ।
प्रत्यागमन—पु० वापस आना, लौटना ।
प्रत्यावर्त्तन—पु० प्रत्यागमन, वापसी ।
प्रत्याशी—वि० अभिलाषी ।
प्रत्यासन्न—वि० समीप आया हुआ, सन्निकट ।
प्रत्याहार—पु० पीछेकी ओर खींचना । इन्द्रिय निग्रह ।
प्रत्युत—अ० इसके विरुद्ध, बल्कि । पु० विपरीतता ।
प्रत्युत्तर—पु० उत्तरका उत्तर ।
प्रत्युत्पन्न—वि०जो तुरन्त या ठीक समयपर उत्पन्न हुआ हो।
प्रत्युपकार—पु० उपकारके बदले किया गया उपकार ।
प्रत्यूष—पु० सवेरा, प्रभात । सूर्य ।
प्रत्यूह—पु० विघ्न ।
प्रत्येक—वि० हर एक, एक एक ।
प्रथम—वि० पहला, प्रधान, श्रेष्ठ ।—पुरुष=उत्तमपुरुष ।
प्रथमत—क्रिवि० पहलेसे, प्रथम बार, सबसे पहले ।
प्रथमा—स्त्री० कर्त्ता कारक । शराब ।
प्रथमी—स्त्री० पृथिवी ।
प्रथा—स्त्री० रीति, रस्म । प्रसिद्धि ।
प्रथित—वि० विदित, प्रसिद्ध, फैला हुआ ।
प्रथु—वि० बड़ा, मोटा, पीन ( उदे० 'अराल' ) ।
प्रदक्षिण, प्रदच्छिन—स्त्री० परिक्रमा'कुस साथरी निहारि सुहाई । कीन्ह प्रनाम प्रदच्छिन जाई ।' रामा० २९४
प्रदच्छिणा—स्त्री० देखो 'परदच्छिना' ।
प्रदत्त—वि० दिया हुआ ।
प्रदर—पु० स्त्रियोंकी एक व्याधि ।
प्रदर्शक—पु० दिखलानेवाला । देखनेवाला ।
प्रदर्शन—पु० दिखलानेका कार्य ।
प्रदर्शनी—स्त्री० नुमाइश ।
प्रदाता—पु० बहुत बड़ा दानी, इन्द्र ।
प्रदान—पु० दान । विवाह ।
प्रदायक, प्रदायी—पु० देनेवाला ।
प्रदाह—पु० जलन, दाह ।
प्रदिशा—स्त्री० विदिशा, कोना ।
प्रदीप—पु० दीपक, चिराग । प्रकाश ।
प्रदीपक—पु० प्रकाशित करनेवाला । एक भयंकर विष ।
प्रदीपति, प्रदीप्ति—स्त्री० प्रकाश, चमक ।
प्रदीप्त—वि० जलता हुआ, चमकता हुआ, प्रकाशित ।
प्रदेय—वि० दान करने योग्य, विवाह योग्य ( कन्या ) ।
प्रदेश—पु० प्रान्त, स्थान । एक नाप । [पु० नज़र, भेंट ।
प्रदोष—पु०सन्ध्याकाल । बड़ा अपराध । त्रयोदशीका व्रत।
प्रद्युम्न—पु० कृष्णके पुत्रका नाम । कामदेव ।
प्रद्योत—पु० दीप्ति, किरण, कान्ति, चमक ।
प्रधर्षण—पु० तिरस्कार, आक्रमण, बलात्कार ।
प्रधान—वि० मुख्य, श्रेष्ठ । पु० नायक, मंत्री । माया । ईश्वर । सेनापति ।
प्रधानी—स्त्री० प्रधान या मंत्रीका पद ।
प्रध्वंस—पु० विनाश । वस्तुकी अतीत अवस्था ।
प्रन; प्रनति—दे० 'प्रण', 'प्रणति' ।
प्रनमना, प्रनवना—दे० 'प्रणवना' ।
प्रनय, प्रनव—दे० 'प्रणय', 'प्रणव' ।
प्रनामी—पु० प्रणाम करनेवाला । स्त्री० प्रणाम करते समयकी दक्षिणा ।
प्रनाली—दे० 'प्रणाली' ।
प्रनाशन—पु० नाश करनेकी क्रिया या भाव ।
प्रनिपात—पु० प्रणाम ।
प्रपंच—पु० धोखा, ढोंग । झंझट । भवजाल । सृष्टि 'तप बल रचइ प्रपञ्च विधाता ।' रामा० ४५
प्रपंची—वि० छलिया, ढोंगी । झगड़ालू ।
प्रपत्ति—स्त्री० अनन्य भक्ति ।
प्रपन्न—वि० शरणागत । पहुँचा हुआ ।
प्रपात—पु० ऊँचाईसे गिरनेवाली जलराशि, झरना । पर्वतका खड़ा किनारा ।
प्रपितामह—पु० परदादा ।
प्रपीड़ित—वि० जिसे बहुत कष्ट दिया गया हो ।
प्रपुंज—पु० बड़ा झुण्ड ।
प्रपूर्ण—वि० भलीभाँति पूर्ण ।
प्रपौत्र—पु० पोतेका पुत्र ।
प्रफुलना—अक्रि० खिलना, फूलना ।
प्रफुला—स्त्री० कुमुदिनी, कमलिनी ।
प्रफुलित, प्रफुल्ल—वि० प्रस्फुटित, खिला हुआ ।
प्रफुल्लित—दे० 'प्रफुल्ल' ।
प्रबंध—पु० बन्धन । निबन्ध । योजना, व्यवस्था ।
प्रबल—वि० प्रचण्ड, उग्र । महान् ।
प्रवाल—पु० प्रवाल, मूँगा ।

प्रवास, प्रवाह—दे० 'प्रवास'; 'प्रवाह'।
प्रबिसना—दे० प्रविसना'।
प्रबीन—वि० प्रवीण, चतुर। स्त्री० देखो 'प्रवीन'।
प्रबुद्ध—वि० जागा हुआ, सज्ञान। पण्डित। प्रफुल्ल।
प्रबोध—पु० ज्ञान, चेतना, जागना, सान्त्वना।
प्रबोधक—पु०समझानेवाला,जगानेवाला,तसल्ली देनेवाला।
प्रबोधना—सक्रि० जगाना, तसल्ली देना, सचेत करना। सिखाना 'चाहो जितनी बात प्रबोधौ, ह्याँ को जो पतियावै।' हरि०
प्रबोधनी—स्त्री० देवोत्थान एकादशी।
प्रभंजन—पु० वायु, आँधी। नाश।
प्रभव—पु० उत्पत्ति, उत्पत्तिहेतु। पराक्रम। संसार।
प्रभविष्णु—वि० प्रभावशील।
प्रभविष्णुता—स्त्री० प्रभावोत्पादकता (पभू० ९३)।
प्रभा—स्त्री० प्रकाश, चमक। रवि-बिम्ब।
प्रभाउ—पु० प्रभाव, असर। शक्ति। उद्भव।
प्रभाकर—पु० सूर्य, चन्द्र, अग्नि, समुद्र।
प्रभात—पु० सबेरा।
प्रभाती—स्त्री० सबेरेका गीत विशेष।
प्रभापूर्ण—वि० प्रकाश करनेवाला 'भारतके नभका प्रभापूर्ण। शीतलच्छाम सांस्कृतिक सूर्य।' अस्तमित आजके तमस्तूर्यदिङ्मण्डल' तुलसीदास ३।
प्रभाव—पु० असर, प्रताप, उद्भव।
प्रभावक—वि० प्रभाव डालनेवाला।
प्रभास—पु० प्रकाश, दीप्ति (पूर्ण ९२)। एक तीर्थ।
प्रभासना—अक्रि० भासित होना, प्रकाशित होना।
प्रभु—पु० स्वामी, अधिपति, ईश्वर। शब्द।
प्रभुता, प्रभुताई—स्त्री० आधिपत्य, ऐश्वर्य, बड़ाई।
प्रभू—दे० 'प्रभु'।
प्रभूत—वि० प्रचुर, उन्नत। उत्पन्न। पु० तत्त्व।
प्रभूति—स्त्री० प्रभव, उत्पत्ति। उन्नति, प्रचुरता। शक्ति।
प्रभृति—अ० इत्यादि।
प्रभेद, प्रभेव—पु० भेद, रूपान्तर (के० ९७)।
प्रमत्त—वि० मतवाला, विक्षिप्त।
प्रमथ—पु० देखो 'प्रमथन'। शिवगण।
प्रमथन—पु० मथने या क्लेश देनेकी क्रिया। वध।
प्रमथनाथ, प्रमथेश्वर—पु० शिवजी (गुलाब ४३५)।
प्रमदा—स्त्री० युवती स्त्री।
प्रमन—वि० प्रसन्न 'हैं वही सुमित्रानन्दन मेघनाद जितरण, हैं वही मल्लपति, वानरेन्द्र सुग्रीव प्रमन' अनामिका १५६।
प्रमाण—पु० सबूत, उदाहरण। मान, सीमा (गुलाब ५८०), मर्यादा। सचाई, सत्य बात। धारणा, विश्वास। प्रमाणपत्र। वि० प्रमाणित, सत्य, मानने योग्य। तुल्य। [राना (के० २)।
प्रमाणना—सक्रि० प्रमाणित करना, सत्य मानना, ठह-
प्रमाणपत्र—पु० वह पत्र जो किसी बातका प्रमाण हो, [सार्टीफिकेट।
प्रमाणित—वि० निश्चित, साबित।
प्रमाता—पु० वह जिसे यथार्थ या शुद्ध ज्ञान हो, चेतन पुरुष, ब्रह्म, द्रष्टा, साक्षी।
प्रमातामह—पु० परनाना।
प्रमाथी—वि० मथनेवाला, क्षुब्ध करनेवाला। पीड़क।
प्रमाद—पु० भ्रम, भूल। अनवधानता।
प्रमादी—वि० ग़लती करनेवाला, असावधान रहनेवाला।
प्रमान, प्रमानना—दे० 'प्रमाण'; 'प्रमाणना'।
प्रमानी—वि० मानने योग्य।
प्रमार्जन—पु० पोंछने,साफ करने, दूर करने इ०की क्रिया।
प्रमुक्त—वि० पूर्णतः मुक्त।
प्रमुख—पु० आदि। समूह। मुखिया। अ० इत्यादि। वि० प्रधान, मान्य। क्रिवि० सम्मुख। तत्क्षण।
प्रमुद—वि० प्रसन्न, खिला हुआ।
प्रमुदित—वि० हर्षित।
प्रमेय—वि० जो प्रमाणसे सिद्ध हो सके। जिसका मान बताया जा सके।
प्रमेह—पु० एक रोग।
प्रमोद—पु० आनन्द, हर्ष।
प्रमोद-वन—पु० चित्रकूटका एक वन-विशेष।
प्रयंक—पु० पर्यङ्क, पलङ्ग।
प्रयंत—अ० पर्यन्त, तक (उदे० 'खात', सू० १०६)।
प्रयत—वि० पवित्र 'पल पल अपनी प्रमत है, प्रकटाती इस जीवन में' वीणा ४८
प्रयत्न—पु० उद्योग, चेष्टा।
प्रयत्नवान्—वि० प्रयत्नमें लगा हुआ, उद्योगरत।
प्रयागवाल—पु० प्रयागका पण्डा।
प्रयाण, प्रयान—पु० प्रस्थान, यात्रा, चढ़ाई।
प्रयास—पु० प्रयत्न, परिश्रम।
प्रयुक्त—वि० जिसका प्रयोग किया गया हो। सम्मिलित।
प्रयोक्ता—पु० प्रयोग करनेवाला, काममें लगानेवाला, प्रेरक। महाजन। सूत्रधार।

प्रत्यर्पण—पु० दानमें मिली वस्तुको पुनः दे डालना ।
प्रत्यवाय—पु० शास्त्रोक्त नित्यकर्म न करनेका पातक । बड़ा परिवर्तन ।
प्रत्याख्यान—पु० निराकरण, दूर करना, खंडन ।
प्रत्यागत—वि० जो वापस आया हो । पु० लड़ाईका एक ढंग, एक पेंच ।
प्रत्यागमन—पु० वापस आना, लौटना ।
प्रत्यावर्त्तन—पु० प्रत्यागमन, वापसी ।
प्रत्याशी—वि० अभिलाषी ।
प्रत्यासन्न—वि० समीप आया हुआ, सन्निकट ।
प्रत्याहार—पु० पीछेकी ओर खींचना । इन्द्रिय निग्रह ।
प्रत्युत—अ० इसके विरुद्ध, बल्कि । पु० विपरीतता ।
प्रत्युत्तर—पु० उत्तरका उत्तर ।
प्रत्युत्पन्न—वि० जो तुरन्त या ठीक समयपर उत्पन्न हुआ हो।
प्रत्युपकार—पु० उपकारके बदले किया गया उपकार ।
प्रत्यूष—पु० सवेरा, प्रभात । सूर्य ।
प्रत्यूह—पु० विघ्न ।
प्रत्येक—वि० हर एक, एक एक ।
प्रथम—वि० पहला, प्रधान, श्रेष्ठ ।—पुरुष=उत्तमपुरुष ।
प्रथमतः—क्रिवि० पहलेसे, प्रथम बार, सबसे पहले ।
प्रथमा—स्त्री० कर्त्ता कारक । शराब ।
प्रथमी—स्त्री० पृथिवी ।
प्रथा—स्त्री० रीति, रस्म । प्रसिद्धि ।
प्रथित—वि० विदित, प्रसिद्ध, फैला हुआ ।
प्रथु—वि० बड़ा, मोटा, पीन ( उदे० 'अराल' ) ।
प्रदक्षिण, प्रदच्छिन—स्त्री० परिक्रमा 'कुस साथरी निहारि सुहाई । कीन्ह प्रनाम प्रदच्छिन जाई ।' रामा० २९४
प्रदक्षिणा—स्त्री० देखो 'परदच्छिना' ।
प्रदत्त—वि० दिया हुआ ।
प्रदर—पु० स्त्रियोंकी एक व्याधि ।
प्रदर्शक—पु० दिखलानेवाला । देखनेवाला ।
प्रदर्शन—पु० दिखलानेका कार्य ।
प्रदर्शनी—स्त्री० नुमाइश ।
प्रदाता—पु० बहुत बड़ा दानी, इन्द्र ।
प्रदान—पु० दान । विवाह ।
प्रदायक, प्रदायी—पु० देनेवाला ।
प्रदाह—पु० जलन, दाह ।
प्रदिशा—स्त्री० विदिशा, कोना ।
प्रदीप—पु० दीपक, चिराग । प्रकाश ।
प्रदीपक—पु० प्रकाशित करनेवाला । एक भयंकर विष ।
प्रदीपति, प्रदीप्ति—स्त्री० प्रकाश, चमक ।
प्रदीप्त—वि० जलता हुआ, चमकता हुआ, प्रकाशित ।
प्रदेय—वि० दान करने योग्य, विवाह योग्य ( कन्या ) ।
प्रदेश—पु० प्रान्त, स्थान । एक नाप । [पु० नज़र, भेंट ।
प्रदोष—पु० सन्ध्याकाल । बड़ा अपराध । त्रयोदशीका व्रत।
प्रद्युम्न—पु० कृष्णके पुत्रका नाम । कामदेव ।
प्रद्योत—पु० दीप्ति, किरण, कान्ति, चमक ।
प्रधर्षण—पु० तिरस्कार, आक्रमण, बलात्कार ।
प्रधान—वि० मुख्य, श्रेष्ठ । पु० नायक, मंत्री । माया । ईश्वर । सेनापति ।
प्रधानी—स्त्री० प्रधान या मंत्रीका पद ।
प्रध्वंस—पु० विनाश । वस्तुकी अतीत अवस्था ।
प्रन; प्रनति—दे० 'प्रण', 'प्रणति' ।
प्रनमना, प्रनवना—दे० 'प्रणवना' ।
प्रनय, प्रनव—दे० 'प्रणय', 'प्रणव' ।
प्रनामी—पु० प्रणाम करनेवाला । स्त्री० प्रणाम करते समयकी दक्षिणा ।
प्रनाली—दे० 'प्रणाली' ।
प्रनाशन—पु० नाश करनेकी क्रिया या भाव ।
प्रनिपात—पु० प्रणाम ।
प्रपंच—पु० धोखा, ढोंग । झंझट । भवजाल । सृष्टि 'तप बल रचइ प्रपञ्च विधाता ।' रामा० ४५
प्रपंची—वि० छलिया, ढोंगी । झगड़ालू ।
प्रपत्ति—स्त्री० अनन्य भक्ति ।
प्रपन्न—वि० शरणागत । पहुँचा हुआ ।
प्रपात—पु० ऊँचाईसे गिरनेवाली जलराशि, झरना । पर्वतका खड़ा किनारा ।
प्रपितामह—पु० परदादा ।
प्रपीड़ित—वि० जिसे बहुत कष्ट दिया गया हो ।
प्रपुंज—पु० बड़ा झुण्ड ।
प्रपूर्ण—वि० भलीभाँति पूर्ण ।
प्रपौत्र—पु० पोतेका पुत्र ।
प्रफुलना—अक्रि० खिलना, फूलना ।
प्रफुला—स्त्री० कुमुदिनी, कमलिनी ।
प्रफुलित, प्रफुल्ल—वि० प्रस्फुटित, खिला हुआ ।
प्रफुल्लित—दे० 'प्रफुल्ल' ।
प्रबंध—पु० बन्धन । निबन्ध । योजना, व्यवस्था ।
प्रबल—वि० प्रचण्ड, उग्र । महान् ।
प्रवाल—पु० प्रवाल, मूँगा ।

प्रवास, प्रवाह—दे० 'प्रवास'; 'प्रवाह'।
प्रविसना—दे० प्रविसना'।
प्रवीन—वि० प्रवीण, चतुर। स्त्री० देखो 'प्रवीन'।
प्रबुद्ध—वि० जागा हुआ, सज्ञान। पण्डित। प्रफुल्ल।
प्रबोध—पु० ज्ञान, चेतना, जागना, सान्त्वना।
प्रबोधक—पु०समझानेवाला,जगानेवाला,तसल्ली देनेवाला।
प्रबोधना—सक्रि० जगाना, तसल्ली देना, सचेत करना। सिखाना 'चाहो जितनी बात प्रबोधौ, ह्याँ को जो पतियावै।' हरि०
प्रबोधनी—स्त्री० देवोत्थान एकादशी।
प्रभंजन—पु० वायु, आँधी। नाश।
प्रभव—पु० उत्पत्ति, उत्पत्तिहेतु। पराक्रम। संसार।
प्रभविष्णु—वि० प्रभावशील।
प्रभविष्णुता—स्त्री० प्रभावोत्पादकता ( पभू० ९३ )।
प्रभा—स्त्री० प्रकाश, चमक। रवि-बिम्ब।
प्रभाउ—पु० प्रभाव, असर। शक्ति। उद्भव।
प्रभाकर—पु० सूर्य, चन्द्र, अग्नि, समुद्र।
प्रभात—पु० सबेरा।
प्रभाती—स्त्री० सबेरेका गीत विशेष।
प्रभापूर्ण—वि० प्रकाश करनेवाला 'भारतके नभका प्रभापूर्ण। शीतलच्छाम सांस्कृतिक सूर्य।' अस्तमित आजके-तमस्तूर्मदिङ्मण्डल' तुलसीदास ३।
प्रभाव—पु० असर, प्रताप, उद्भव।
प्रभावक—वि० प्रभाव डालनेवाला।
प्रभास—पु० प्रकाश, दीप्ति ( पूर्ण ९२ )। एक तीर्थ।
प्रभासना—अक्रि० भासित होना, प्रकाशित होना।
प्रभु—पु० स्वामी, अधिपति, ईश्वर। शब्द।
प्रभुता, प्रभुताई—स्त्री० आधिपत्य, ऐश्वर्य, बड़ाई।
प्रभू—दे० 'प्रभु'।
प्रभूत—वि० प्रचुर, उन्नत। उत्पन्न। पु० तत्त्व।
प्रभूति—स्त्री० प्रभव, उत्पत्ति। उन्नति, प्रचुरता। शक्ति।
प्रभृति—अ० इत्यादि।
प्रभेद, प्रभेव—पु० भेद, रूपान्तर ( के० ९७ )।
प्रमत्त—वि० मतवाला, विक्षिप्त।
प्रमथ—पु० देखो 'प्रमथन'। शिवगण।
प्रमथन—पु० मथने या क्लेश देनेकी क्रिया। वध।
प्रमथनाथ, प्रमथेश्वर—पु० शिवजी ( गुलाब ४३५ )।
प्रमदा—स्त्री० युवती स्त्री।
प्रमन—वि० प्रसन्न 'हैं वही सुमित्रानन्दन मेघनाद जित-रण, हैं वही मल्लपति, वानरेन्द्र सुग्रीव प्रमन' अनामिका १५६।
प्रमाण—पु० सबूत, उदाहरण। मान, सीमा ( गुलाब ५८० ), मर्यादा। सचाई, सत्य बात। धारणा, विश्वास। प्रमाणपत्र। वि० प्रमाणित, सत्य, मानने योग्य। तुल्य।
प्रमाणना—सक्रि० प्रमाणित करना, सत्य मानना, ठहराना ( के० २ )।
प्रमाणपत्र—पु० वह पत्र जो किसी बातका प्रमाण हो, सार्टीफिकेट।
प्रमाणित—वि० निश्चित, साबित।
प्रमाता—पु० वह जिसे यथार्थ या शुद्ध ज्ञान हो, चेतन पुरुष, ब्रह्म, द्रष्टा, साक्षी।
प्रमातामह—पु० परनाना।
प्रमाथी—वि० मथनेवाला, क्षुब्ध करनेवाला। पीड़क।
प्रमाद—पु० भ्रम, भूल। अनवधानता।
प्रमादी—वि० ग़लती करनेवाला, असावधान रहनेवाला।
प्रमान, प्रमानना—दे० 'प्रमाण'; 'प्रमाणना'।
प्रमानी—वि० मानने योग्य।
प्रमार्जन—पु० पोंछने,साफ करने, दूर करने इ०की क्रिया।
प्रमुक्त—वि० पूर्णतः मुक्त।
प्रमुख—पु० आदि। समूह। मुखिया। अ० इत्यादि। वि० प्रधान, मान्य। क्रिवि० सम्मुख। तत्क्षण।
प्रमुद—वि० प्रसन्न, खिला हुआ।
प्रमुदित—वि० हर्षित।
प्रमेय—वि० जो प्रमाणसे सिद्ध हो सके। जिसका मान बताया जा सके।
प्रमेह—पु० एक रोग।
प्रमोद—पु० आनन्द, हर्ष।
प्रमोद-वन—पु० चित्रकूटका एक वन-विशेष।
प्रयंक—पु० पर्यङ्क, पलङ्ग।
प्रयंत—अ० पर्यन्त, तक ( उदे० 'खात', सू० १०६ )।
प्रयत—वि० पवित्र 'पल पल अपनी प्रमत है, प्रकटाती इस जीवन में' वीणा ४८
प्रयत्न—पु० उद्योग, चेष्टा।
प्रयत्नवान्—वि० प्रयत्नमें लगा हुआ, उद्योगरत।
प्रयागवाल—पु० प्रयागका पण्डा।
प्रयाण, प्रयान—पु० प्रस्थान, यात्रा, चढ़ाई।
प्रयास—पु० प्रयत्न, परिश्रम।
प्रयुक्त—वि० जिसका प्रयोग किया गया हो। सम्मिलित।
प्रयोक्ता—पु० प्रयोग करनेवाला, काममें लगानेवाला, प्रेरक। महाजन। सूत्रधार।

प्रयोग—पु० काममें लगाना, अनुष्ठान, व्यवहार। दृष्टान्त। अभिनय।

प्रयोजक—पु० काममें लगानेवाला, नियन्त्रण करनेवाला, प्रयोगकर्त्ता।

प्रयोजन—पु० मतलब, अर्थ, हेतु।

प्रयोजनीय—वि० मतलबका, प्रयोज्य।

प्रयोज्य—वि० काममें लाने योग्य, नियुक्त करने योग्य।

प्ररोचना—स्त्री० बढ़ावा देने या फुसलानेकी क्रिया। प्रस्तावनामें नाट्यकारकी तारीफ कर नाटकके प्रति रुचि उत्पन्न कराना।

प्ररोह—पु० उगनेका कार्य, अङ्कुर, उत्पत्ति। चढ़ाव।

प्रलंब—वि० बहुत लटका हुआ। लम्बा। पु० एक दैत्य।

प्रलंबित—वि० अधिक नीचेतक लटकाया हुआ।

प्रलंबी—वि० खूब नीचेतक लटकनेवाला। सहारा लेनेवाला।

प्रलयंकर, प्रलयकर, प्रलयकारी—वि० प्रलय करनेवाला, सर्वनाशकारी।

प्रलय—पु० विलीन होना, तिरोभाव, कल्पान्त। मूर्च्छा।

प्रलाप—पु० अण्डबण्ड बकना।

प्रलेप—पु० गीली दवा, लेप।

प्रलेपन—पु० लेप करनेकी क्रिया।

प्रलेहन—पु० चाटनेकी क्रिया।

प्रलोभन—पु० लोभ दिखानेका काम। लुभानेवाली वस्तु।

प्रवंचना—स्त्री० धूर्त्तता, ठगपना।

प्रवचन—पु० व्याख्या, अर्थका स्पष्टीकरण।

प्रवण—वि० लीन।

प्रवत्स्यत्पतिका—स्त्री० वह नायिका जिसका पति परदेश जानेवाला हो।

प्रवर—वि० श्रेष्ठ, मुख्य। पु० सन्तति। गोत्र-प्रवर्त्तक मुनि।

प्रवर्त्तक—पु० सञ्चालक, प्रेरक, पञ्च।

प्रवर्त्तन—पु० चलानेकी क्रिया।

प्रवर्त्तित—वि० चलाया हुआ, जारी किया हुआ, निकाला हुआ। उत्तेजित।

प्रवर्षण—पु० वर्षा। एक पर्वतका नाम।

प्रवहण—पु० ले जानेका कार्य। पालकी, डोली। नौका।

प्रवहमान—वि० प्रवाहशील।

प्रवाद—पु० कथोपकथन, किंवदन्ती, झूठा कलङ्क।

प्रवान—पु० देखो 'प्रमाण', ( रामा० ७२, ८५ )।

प्रवाल—पु० मूँगा। कोमल पत्ता। सितारकी लकड़ी।

प्रवास—पु० परदेशमें रहना, परदेश।

प्रवासित—वि० निर्वासित, जो देशके बाहर भेज दिया गया हो।

प्रवासी—वि० विदेशमें रहनेवाला।

प्रवाह—पु० बहाव, धार, झुकाव, क्रम।

प्रवाहिका—स्त्री० बहनेवाली, नदी 'मधुर लालसाकी लहरोंसे यह प्रवाहिका स्पन्दित होती' कामायनी २६३

प्रवाहिनी—स्त्री० नदी 'कूल भी हूँ कूलहीन प्रवाहिनी भी हूँ' नीरजा २०

प्रवाही—वि० बहनेवाला, तरल। बहानेवाला।

प्रविष्ट—वि० घुसा हुआ, भीतर पैठा हुआ।

प्रविसना—अक्रि० प्रवेश करना, पैठना (उदे० 'निर्गमना')।

प्रवीण, प्रवीन—वि० चतुर। कुशल। स्त्री० प्रकृष्ट वीणा ( कविप्रि० ११, १६ )।

प्रवृत्त—वि० झुका हुआ, लगा हुआ, नियुक्त, सन्नद्ध।

प्रवृत्ति—स्त्री० झुकाव, रुचि, बहाव। वृत्तान्त।

प्रवृद्ध—वि० प्रौढ़, बहुत बढ़ा हुआ।

प्रवेश—पु० पैठ, पैसार।

प्रवेशक—पु० प्रवेश करानेवाला, नाटकका वह अंश जिसमें किसी पात्रके वार्त्तालापद्वारा बीचकी घटनाओंका परिचय कराया गया हो।

प्रवेशना—अक्रि० प्रवेश करना। सक्रि० प्रवेश कराना।

प्रवेशिका—स्त्री० वह पत्र या चिह्न जिसे दिखानेसे प्रवेश करना सम्भव हो।

प्रवेष—पु० परिवेष ( कवि० प्रि० १७८ )।

प्रव्रज्या—स्त्री० संन्यास।

प्रशंस, प्रशंसा—स्त्री० बड़ाई, स्तुति।

प्रशंसक—पु० प्रशंसा करनेवाला।

प्रशसना—सक्रि० बड़ाई करना, सराहना '' मुनि रघुवरहिं प्रशस।' रामा० १५३

प्रशंसनीय—वि० बड़ाई करने योग्य, श्लाघनीय।

प्रशमन—पु० शान्त करना। दमन। वध। वि० शान्त करनेवाला।

प्रशमित—वि० प्रशान्त।

प्रशस्त—वि० प्रशस्य, श्लाघ्य, सुन्दर, बेहतर, अच्छा, भव्य, चौड़ा ( मार्ग, ललाट इ० )।

प्रशस्ति—स्त्री० प्रशसा, पत्रारम्भका प्रशंसासूचक वाक्य। प्राचीन राजाओंके आज्ञापत्र।

प्रशस्य—वि० प्रशंसनीय, श्लाघ्य। उत्तम।

प्रशांत—वि० शान्त, स्थिर।

प्रशांति—स्त्री० स्वस्थता, अत्यधिक शान्ति।

प्रशाखा—स्त्री० शाखाकी शाखा, छोटी डाली, टहनी।

प्रश्न—पु० सवाल, जिज्ञासा, समस्या।

प्रश्रय—पु० सहारा, आश्रयस्थान । विनय ।
प्रष्टव्य—वि० पूछने योग्य, जिसे पूछना हो ( बात ) ।
प्रष्टा—पु० पूछनेवाला ।
प्रसंग—पु० विषयका सम्बन्ध, मेल, वार्ता 'जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा ।' रामा० ५६७ । विस्तार । अवसर 'भूप सोच कर कवन प्रसंगू ।' रामा० ३०० । संयोग ।
प्रसंसना—सक्रि० बड़ाई करना 'कहउँ सुभाव न कुलहिं प्रसंसी ।' रामा० १५३
प्रसन्न, प्रसन्नित—वि० हर्षित, सन्तुष्ट । निर्मल ।
प्रसन्नता—स्त्री० खुशी, प्रसाद । निर्मलता ।
प्रसर—वि० फैला हुआ 'वे हैं समृद्धिकी दूर-प्रसर' तुलसीदास ८ । पु० प्रसार, फैलाव, शून्य, आकाश ।
प्रसरण—पु० सरकना, आगे जाना, फैल जाना ।
प्रसर्पण—पु० प्रसरण, प्रवेश, हट जाना, गति । सेनाका इधर उधर फैल जाना ।
प्रसव—पु० उत्पन्न करना । फल या फूल ।
प्रसवना—अक्रि० उत्पन्न होना ( प्रिय० ९१ ) ।
प्रसविनी—वि० स्त्री० जननेवाली, पैदा करनेवाली ।
प्रसाद—पु० अनुग्रह, प्रसन्नता । स्वच्छता । देवार्पित वस्तु । प्रासाद, महल ।
प्रसादना—सक्रि० प्रसन्न करना ।
प्रसादी—स्त्री० प्रसाद, नैवेद्य । वि० प्रसन्न करनेवाला, कृपालु ।
प्रसाधन—पु० शृंगार सामग्री ।
प्रसार—पु० विस्तार, गमन, संचार ।
प्रसारक—वि० फैलानेवाला ।
प्रसारण—पु० फैलाने या बढ़ानेकी क्रिया ।
प्रसारना—सक्रि० पसारना, फैलाना ।
प्रसारित—वि० पसारा हुआ ।
प्रसिद्ध—वि० विख्यात, प्रचलित । भूषित ।
प्रसिद्धता, प्रसिद्धि—स्त्री० ख्याति ।
प्रसुप्त—वि० सोया हुआ ।
प्रसू—स्त्री० माता, उत्पन्न करनेवाली ( साकेत ४०४ ) । घोड़ी, लता, नरम घास । एक रोग ।
प्रसूत—वि० उत्पन्न । पु० फूल । प्रसवके बादका
प्रसूता, प्रसूतिका—स्त्री० बच्चा जननेवाली स्त्री, जच्चा ।
प्रसूति—स्त्री० बच्चा जननेकी क्रिया, प्रसव । जन्म, कारण, सन्तति ।
प्रसून—पु० फूल । फल ।
प्रसृति—स्त्री० विस्तार । अर्द्धांजलि । सन्तति ।
प्रसेद—पु० प्रस्वेद, पसीना 'रहि रहि लेत उससवा, बहत प्रसेद ।' रहीम ३७, ( मति० २०४ ) ।
प्रस्तर—पु० पत्थर । समतल । बिछावन । 'पैरा' ।
प्रस्तार—पु० विस्तार, अधिकता, तह । सीढ़ी ।
प्रस्ताव—पु० प्रसंग, चर्चा, मन्तव्य ।
प्रस्तावक—पु० प्रस्ताव पेश करनेवाला ।
प्रस्तावना—स्त्री० भूमिका, उपोद्घात, आरम्भ ।
प्रस्तावित—वि० जिसके लिए प्रस्ताव किया गया हो ।
प्रस्तुत—वि० कथित, तैयार, उद्यत, सम्पादित । उपस्थित ।
प्रस्थान—पु० प्रयाण, यात्रा, यात्राके मुहूर्तोंपर वस्त्रादिका घरके बाहर रखा जाना ।
प्रस्थानत्रयी—स्त्री० ब्रह्मसूत्र, उपनिषद और गीता, ये तीन पुस्तकें प्रस्थानत्रयी कही जाती हैं ।
प्रस्थापन—पु० स्थापना । भेजनेकी क्रिया, प्रेरणा ।
प्रस्थापित—वि० भली भाँति स्थापित । भेजा हुआ ।
प्रस्थित—वि० जिसने प्रस्थान किया हो । गत । टिका हुआ ।
प्रस्न—पु० सवाल, जिज्ञासा ।
प्रस्फुट—वि० अच्छी तरह खिला हुआ ।
प्रस्फुरण—पु० विकसित होने या फैलनेकी क्रिया, निकलना, प्रकाशित होना । खिलना । फटना ।
प्रस्फोटन—पु० भड़कने या फूट पड़नेकी क्रिया ।
प्रस्रवण—पु० टपक टपककर बहना, झरना, सोता । पसीना ।
प्रस्राव—पु० क्षरण, बहाव । पेशाब ।
प्रस्वेद—पु० पसीना ।
प्रहत—वि० अच्छी तरहसे घायल ।
प्रहर—पु० पहर, याम ।
प्रहरखना—अक्रि० हर्षित होना 'परखि प्रहरखे मुनि समुदाई ।' रामा० ५४२
प्रहरण—पु० अस्त्र 'बड़े समरके प्रहरण, नए नए हैं प्रकरण, छाया उन्माद मरण कोलाहलका, अनामिका १७२
प्रहरी—पु० चौकीदार, पहरुआ ।
प्रहर्षण—पु० आनन्द । एक काव्यालंकार 'इच्छा हूँ ते अधिक कै बिन ही स्रम सिधि होय । करत जतन जेहि वस्तु हित मिलै आप ही सोय ।'
प्रहसन—पु० हँसी । एक तरहका हास्य काव्य ।
प्रहाण, प्रहान—पु० परित्याग । ध्यान ।
प्रहाणि, प्रहानि—स्त्री० हानि । परित्याग ।
प्रहार—पु० चोट, आघात, मार, धक्का ।
प्रहारक—पु० प्रहार करनेवाला ।

प्रहारना—सक्रि० फेंकना 'दुस्सासन सुत गदा प्रहारे। अभिमनुके शिर ऊपर मारे।' सबलसिंह। मारना।
प्रहारी—वि०प्रहार करनेवाला, नष्ट करनेवाला। लेनेवाला 'दानिनके शील, पर दानके प्रहारी'' '—राम० ९८
प्रहृष्ट—वि० अति प्रसन्न।
प्रहेलिका—स्त्री० पहेली।
प्रह्लाद—पु० हिरण्यकशिपुका पुत्र।
प्रांगण, प्रांगन—पु० आँगन, सहन।
प्रांजल—वि० सीधा, सच्चा, खरा, एकसा, बराबर।
प्रांत—पु० प्रदेश। सीमा। किनारा। तरफ।
प्रांतर—पु० छायाशून्य पथ। वन। कोटर। दो प्रदेशोंके बीचकी खाली जगह।
प्रांतिक, प्रांतीय—वि० प्रान्त सम्बन्धी।
प्रांशु—वि० उन्नत, ऊँचा।
प्राकार—पु० चहारदीवारी, परकोटा।
प्राकृत—वि० स्वाभाविक, लौकिक, मामूली जिसमें काट-छाँट न हुई हो असस्कृत स्त्री० बोलचालकी भाषा। एक प्राचीन भाषा।
प्राकृतिक—वि० प्रकृति सम्बन्धी। प्रकृतिसे उत्पन्न। नैसर्गिक, स्वाभाविक। लौकिक।
प्राक्तन—वि० पहलेका, पुराना। पु० पहले किया गया काम जिसका फल भविष्यमें भोगना पड़े। भाग्य, नसीब।
प्राखर्य—पु० प्रखरता, प्रचंडता, तेज़ी।
प्रागल्भ्य—पु० प्रगल्भता, साहस, प्रवक्ता, चातुर्य।
प्राङ्मुख—वि० पूर्वाभिमुख।
प्राची—स्त्री० पूर्व दिशा।
प्राचीन—वि० पुराना, पूर्वका, वृद्ध।
प्राचीर—पु० चहारदीवारी, परकोटा। गति रोकनेवाला
प्राचुर्य—पु०प्रचुरता, आधिक्य, बाहुल्य। [स्थान, बन्धन।
प्राच्य—वि० पूर्वीय, पूर्वमें उत्पन्न। प्राचीन।
प्राच्छित—पु० प्रायश्चित (रत्ना० ३७८)। [प्रकार।
प्राजापत्य—वि० प्रजापति सम्बन्धी। पु० विवाहका एक
प्राज्ञ—वि० विद्वान्। मूर्ख। पु०जीवात्मा (प्रभु०१८५)।
प्राज्ञत्व—पु० विद्वत्ता, बुद्धिमानी। मूर्खता।
प्राड्विवाक—पु० न्यायाधीश।
प्राण—पु० जीव, साँस, वायु, शक्ति, परम प्रिय व्यक्ति। प्राणोंपर आ पड़ना = प्राण संकटमें पड़ना। प्राणोंपर खेलना = जान जोखिममें डालना।
प्राण-आधार, -जीवन, -धन—पु० अत्यन्त प्रिय व्यक्ति।
प्राणदंड—पु० फाँसीकी सज़ा, मृत्यु-दंड। [*जल, रुधिर।
प्राणद—वि० प्राण देनेवाला, जान बचानेवाला। पु० *
प्राणदान—पु० प्राण देना। किसीको मृत्युसे बचाना। प्राण रक्षा।
प्राणनाथ, -पति, -प्यारा—पु० पति, अत्यन्त प्रिय व्यक्ति
प्राणप्रतिष्ठा—स्त्री० प्राण धारण कराना, मूर्तिमें मन्त्र द्वारा प्राण संस्थापन।
प्राणप्रद—वि० प्राण देनेवाला, जीवनदाता।
प्राणरंध्र—पु० नाक या मुँह।
प्राणवल्लभ—पु० प्राणसे भी प्रिय व्यक्ति, प्राणनाथ, पति।
प्राणांत—पु० मरण, देहावसान।
प्राणांतक—वि० प्राणान्त करनेवाला, घातक।
प्राणायाम—पु० श्वासको रोकना, योगका एक अंग।
प्राणिशास्त्र—पु० वह शास्त्र जिसमें प्राणियोंकी उत्पत्ति उनके विकास आदिकी मीमांसा हो।
प्राणी—पु० जीव, मनुष्य।
प्राणेश, प्राणेश्वर—पु० स्वामी, पति, परमप्रिय व्यक्ति।
प्रातः, प्रात—पु० सबेरा। क्रिवि० सबेरे।
प्रातःकर्म—पु० शौच, स्नानादि कृत्य।
प्रातःकाल—पु० प्रभातका समय।
प्रातःस्मरणीय—वि० सबेरे स्मरण करनेके योग्य। श्रेष्ठ।
प्रातनाथ—पु० सूर्य।
प्रातिलोमिक—वि० प्रतिलोमसे उत्पन्न। अप्रिय, विरुद्ध।
प्रातिवेशिक—पु० पड़ोसी, प्रतिवेशी।
प्राथमिक—वि० प्रारम्भिक, पहलेका।
प्रादुर्भाव—पु० आविर्भाव, उत्पत्ति।
प्रादुर्भूत—वि० प्रकटित। विकसित।
प्रादेशिक—वि० प्रदेशका, प्रदेश सम्बन्धी। पु० प्रदेशा-
प्राधान्य—पु० प्रधानता, मुख्यता। [धिपति, सामन्त।
प्रान—पु० 'प्राण'।
प्रापति—स्त्री०देखो 'प्राप्ति'। एक सिद्धि 'अणिमा महिमा गरियमा, लघिमा प्रापति काम। वशीकरण अरु ईशता अष्ट सिद्धिके नाम।'
प्रापना—सक्रि० प्राप्त होना, पाना, मिलना।
प्राप्त—वि० जो मिला हो, हस्तगत।
प्राप्ति—स्त्री० लाभ, वृद्धि। अर्जन, आमदनी। प्रवेश, मेल।
प्राप्य—वि० पाने योग्य। जो पाना हो, जो मिल सके।

प्रावल्य—पु० प्रबलता, ज़ोर, प्रधानता।
प्रामाणिक—वि० प्रमाणसिद्ध, टीका, सत्य, मानने योग्य।
प्रायः—क्रिवि० लगभग, बहुधा।
प्रायद्वीप—पु० तीन तरफ पानीसे घिरा हुआ स्थल-भाग।
प्रायशः—क्रिवि० प्रायः, बहुधा।
प्रायश्चित्त—पु० पाप-निवृत्तिके हेतु किया गया काम।
प्रायिक—वि० प्रायः होनेवाला।
प्रायोपवेश—पु० मरणके लिए अनशन करना।
प्रारंभ—पु० आरम्भ, आदि।
प्रारंभिक—वि० शुरूका, प्राथमिक।
प्रारब्ध—पु० भाग्य, संयोग। वि० प्रारम्भ किया हुआ।
प्रार्थना—स्त्री० निवेदन, वाञ्छा, याचना। सक्रि० प्रार्थना करना।
प्रार्थनापत्र—पु० आवेदनपत्र, दरखास्त, अर्ज़ी।
प्रार्थना समाज—पु० ब्राह्मसमाजसे मिलता-जुलता एक [सम्प्रदाय।
प्रार्थनीय—वि० प्रार्थना करने योग्य।
प्रार्थित—वि० जिसके लिए प्रार्थना की गयी हो, याचित।
प्रार्थी—वि० निवेदक, याचक, इच्छुक।
प्रालब्ध—पु० प्रारब्ध, भाग्य।
प्रालेय—पु० तुषार, हिम। वह समय जब अधिक हिमके कारण उत्तर ध्रुवके सब पदार्थोंका नाश हो गया हो। 'ध्वस्त बरसने लगा अश्रुमय यह प्रालेय हलाहल नीर' कामायनी १३। [२८७)। वि० प्रलय सम्बन्धी।
प्रावरण—पु० आवरण, आच्छादन, ऊपरी वस्त्र (साकेत
प्राविट,प्रावृट-पु०,-वृष,-वृषा—स्त्री०वर्षाऋतु,बरसात।
प्रासंगिक—वि० प्रसंग सम्बन्धी, प्रसंगसे प्राप्त। पु० कथावस्तुका एक भेद।
प्रास—पु० अनुप्रास, तुकान्त (युगवाणी १५)।
प्रासाद—पु० राजभवन, बड़ा मकान, मन्दिर।
प्रिंटर—पु० पुस्तकें इ० छापनेवाला, मुद्रक।
प्रिंटिंग—स्त्री० छापनेकी क्रिया, मुद्रण।
प्रिंस—पु० राजकुमार। राजा।—आफ वेल्स = इंगलैण्डका युवराज। [अध्यक्ष। मूलधन।
प्रिंसिपल—पु० महाविद्यालयका प्रधान अध्यापक या
प्रिथिमी—स्त्री० पृथिवी (प० ४३, ८४)।
प्रियंगु—स्त्री० पीपल, राई, कुटकी। एक लता, कहा जाता है कि यह स्त्रीके स्पर्शसे फूलती है। (प्रिय०९७)।
प्रियंवद—वि० प्रियभाषी। पु० एक गन्धर्व। पक्षी।
प्रिय—वि० प्यारा, चित्ताकर्षक, मधुर। पु० स्वामी। भलाई। चितकबरा मृग। दामाद।
प्रियकांक्षी—वि० हितेच्छु, मंगलाभिलाषी।
प्रियतम—वि० सबसे प्यारा। पु० स्वामी, पति।
प्रियतमता—स्त्री० प्रियका भाव, स्वामित्व, पतित्व, उ० दे० 'प्रियता'।
प्रियता—स्त्री० प्रियका भाव, प्रिय लगनेका भाव, 'नूतन प्रियताकी प्रियतमता समता नूतन' अणिमा३७।
प्रियदर्शन—वि० जो देखनेमें अच्छा लगे, सुन्दर।
प्रियदर्शी—वि० सबको प्रिय समझनेवाला। मनोहर।
प्रियभाषी, प्रियवादी—वि० प्रिय वचन कहनेवाला।
प्रिया—स्त्री० स्त्री, पत्नी, प्रियतमा।
प्रियाल—पु० चिरौंजी, चिरौंजीका पेड़ (प्रिय० २२७)।
प्रियाला—स्त्री० दाख (निबन्ध० १४४)।
प्रीत—स्त्री प्रीति। वि० प्रसन्न।
प्रीतम—पु० स्वामी, प्रेमी (उदे० 'आवा') वि०
प्रीति—स्त्री० प्रसन्नता, सन्तुष्टि। प्रेम। [अत्यन्त प्रिय।
प्रीतिकर—वि० प्रसन्नता या प्रेम उत्पन्न करनेवाला।
प्रीतिकारक,-कारी—दे० 'प्रीतिकर'।
प्रीतिपात्र—पु० प्रेम-भाजन, वह जिसे प्यार किया जाय।
प्रीतिभोज—पु० मित्रवर्ग तथा नातेदार इ० को सप्रेम दिया गया भोज। [गलतियाँ सुधारी जाती हैं।
प्रूफ—पु०प्रमाण,सबूत। छपनेवाली चीजका पूर्वरूप जिसमें
प्रेक्षक—पु० देखनेवाला, दर्शक।
प्रेक्षण—पु० देखनेका काम। नेत्र।
प्रेक्षणीय—वि० दर्शनीय।
प्रेक्षागार—गृह—पु० नाटकघर, मंत्रणाभवन।
प्रेत—पु० मृत व्यक्ति, भूत, मृतदेह। 'जरत प्रेतके संग' सू० २०। वि० मृत।
प्रेतकर्म,—कृत्य—पु० अन्त्येष्टि क्रिया।
प्रेतगृह, प्रेतगेह—पु० श्मशान, मरघट।
प्रेतनदी—स्त्री० वैतरणी नदी।
प्रेतनाह,—पति—पु० यमराज।
प्रेतपुर—पु० यमपुरी।
प्रेतराज—पु० यमराज, शिवजी।
प्रेतलोक—पु० मृतात्माओंका लोक, यमपुरी।
प्रेती—पु० प्रेतोपासक।
प्रेम—पु० प्यार, स्नेह, अनुराग।

प्रेमगर्विता—स्त्री० वह नायिका जिसे पतिप्रेमका गर्व हो।
प्रेमजल,-वारि—पु० प्रेमाश्रु ।
प्रेमवंत—वि० प्रेमयुक्त ।
प्रेमालाप—पु० प्रेमपूर्ण बातचीत ।
प्रेमिक, प्रेमी—पु० प्यार करनेवाला, स्नेही, प्रियतम ।
प्रेमिका—स्त्री० प्रियतमा, प्रेयसी ।
प्रेय—वि० प्रिय पु० प्रेमी 'तहँ प्रतीप उपमा कहत, भूषन कविता प्रेय ।' भू० १५ ।
प्रेयसी—स्त्री० प्रियतमा, प्रेमिका ।
प्रेरक—पु० प्रेरणा करनेवाला, प्रवृत्त करनेवाला ।
प्रेरण—पु० किसीको किसी कार्यमें प्रवृत्त करना ।
प्रेरणा—स्त्री० कार्यमें प्रवृत्त करनेकी क्रिया, दबाव ।
प्रेरणार्थक क्रिया—स्त्री० क्रियाका वह रूप जिससे क्रियाके व्यापारमें कर्तापर किसीकी प्रेरणा समझी जाय ।
प्रेरना—सक्रि० प्रवृत्त करना, उत्साहित करना, भेजना 'ए किरीट दसकंधर केरे । आवत बालितनयके प्रेरे ।' रामा० ४६७ ।
प्रेरित—वि० जिसको प्रेरणा की गयी हो । प्रचालित ।
प्रेषक—पु० भेजनेवाला । प्रवृत्त करानेवाला । प्रेषित ।
प्रेषण—पु० भेजनेकी क्रिया । प्रेरणा करना ।
प्रेषना—सक्रि० भेजना 'लोचन पियत पियूष है प्रेषि प्रान प्रिय पौरि ।' मति० १८६ ।
प्रेषित—वि० भेजा हुआ । प्रेरित ।
प्रेस—पु० छापने या दबानेकी कल । मुद्रण-यंत्र । छापाखाना, यंत्रालय ।
प्रेसिडेंट—पु० सभापति, अध्यक्ष ।
प्रोक्त—वि० कहा हुआ ।
प्रोग्राम—पु० कार्य-क्रम ।
प्रोत—वि० किसीके साथ सीया हुआ या भली भाँति मिला हुआ ।
प्रोत्फुल्ल—वि० खूब खिला हुआ, विकसित ।
प्रोत्साहन—पु० उत्तेजित करना, उत्साह बढ़ाना ।
प्रोफेसर—पु० किसी विषयका भारी विद्वान्, महाविद्यालय इ० का अध्यापक ।
प्रोषित—वि० जो विदेशमें हो, प्रवासी ।
प्रोषितपतिका,-प्रेयसी,-भर्तृका—स्त्री० पतिके परदेसमें रहनेके कारण दुःखित स्त्री ।
प्रोहित—पु० पुरोहित, कुलगुरु 'पुनि प्रोहित द्विजवृन्द समेता । वंदन किए सुबुद्धि निकेता ।' राम रसायन ।
प्रौढ़—वि० पूर्ण युवा । दृढ़ । निपुण । गम्भीर ।
प्रौढ़ता—स्त्री०, प्रौढ़त्व—पु० प्रौढ़ होनेका भाव ।
प्रौढ़ा—स्त्री० पूर्ण युवती, अधिक वयवाली स्त्री ।
प्रौढ़ोक्ति—स्त्री० किसी बातको बहुत बढ़ाकर कहना । एक काव्यालंकार 'जो न हेतु उत्कर्षको तेहि मानत जहँ हेतु ।'
प्लवंग, प्लवंगम—पु० बन्दर । मृग ।
प्लांचेट—पु० पानकी शकलवाली लकड़ी इ० की तख्ती जिसपर हाथ रखकर मेस्मेरिज्मपर विश्वास रखनेवाले लोग अपने प्रश्नोंका उत्तर निकाला करते हैं ।
प्लाट—पु० कथाभाग, कथावस्तु । साजिश । मकान इ० के लिए जमीनका टुकड़ा ।
प्लावन—पु० बाढ़, अच्छी तरह धोना । तैरना ।
प्लावित—वि० जलमें डूबा हुआ । छाया हुआ ।
प्लीहा—स्त्री० बरवट, तिल्ली ।
प्लुत—पु० तीन मात्राओंका स्वर । घोड़ेकी चाल-विशेष । वि० जलमग्न । तराबोर ।
प्लुष्ट—वि० जला हुआ ।
प्लेग—पु० एक संक्रामक रोग, ताऊन ।
प्लेटफार्म—पु० चबूतरा, मंच । रेलपर चढ़ने और रेलसे उतरने इ० के लिए बनाया गया स्टेशनपरका लम्बा चबूतरा ।

# फ

फंक—स्त्री० फाँक, चीरा हुआ टुकड़ा (कबीर ३१२) ।
फँकनी—स्त्री० फंकी ।
फंका-पु०, फंकी—स्त्री० उतनी चीज जितनी एक बारमें फाँकी जा सके (सुदामा०) । फाँक, टुकड़ा ।
फंग—पु० बन्धन, जाल 'मति कोई प्रीतिके फंग परै ।' सू० २०३ । अधीनता, अनुराग ।
फंड—पु० किसी विशेष कार्यमें व्यय करनेके निमित्त एकत्र किया गया धन ।

**फंद**—पु० बन्धन, जाल, फन्दा। कष्ट। धोखा '...हरीचंद तेरे फन्द न भूलूँ बात परी पहिचानि।' हरि०(रघु०५०)।
**फँदना**—अक्रि० फँसना, मुग्ध होना (उदे० 'उकसना') 'खंजन नैन फँदे पिंजरा छवि, नाहिं रहैं थिर कैसेहु माई।' रसखानि। सक्रि० फाँदना, लाँघना।
**फंदवार**—वि० फन्दा लगानेवाला 'अस फँदवार केस वै परा सीस गिउ फाँद।' प० ४४।
**फंदा**—पु० देखो 'फन्द', (राम० ८५)।
**फँदाना, फँदावना**—सक्रि० फँसाना। कुदाना।
**फँफाना**—अक्रि० बोलनेमें हकलाना।
**फँसना**—अक्रि० उलझना, बन्धन या जालमें पड़ना।
**फँसाना**—सक्रि० जालमें लाना, वशमें करना, उलझाना।
**फँसिहारा**—पु० फँसानेवाला, ठग 'ब्रजवनिता फँसिहारी जो सब महतारी काहे न गनायो।' सूबे० १५७।
**फँसौरि**—स्त्री० जाल, फन्दा।
**फक**—वि० सफेद, साफ।
**फकड़ी**—स्त्री० दुर्दशा।
**फकत**—वि० केवल, पर्याप्त।
**फका**—पु० फाँक, टुकड़ा (छत्रप्र० ६९)।
**फकीर**—पु० साधु, भिक्षुक, निर्धन व्यक्ति।
**फखर**—पु० गर्व, घमंड।
**फग**—पु० जाल, बन्धन।
**फगुआ**—पु० होली, होलीके अवसरका आमोद-प्रमोद। फागके उपलक्षमें दी गयी वस्तु 'त्यों त्यों निपट उदार ह्वै फगुआ देत बनै न।' वि० १४६। होलीका गीत।
**फगुहरा, फगुहारा**—पु० फाग खेलनेवाला।
**फजर, फजिर**—स्त्री० सबेरा 'डङ्का दै असवार होहुँगा बड़ी फजर समसेर बहै।' सुजा० १६
**फज़ल**—पु० दया, अनुग्रह, अनुकम्पा।
**फजिहतिताई**—स्त्री० फजीहत करानेवाली बात 'अब कविताई रही फजिहतिताई है।' (ककौ० ५०९)।
**फजीहत, फजीहती**—स्त्री० दुर्गति (रहीम १९)।
**फजूल**—वि० व्यर्थ।
**फजूलखर्च**—वि० व्यर्थ खर्च करनेवाला, उड़ाऊ, अपव्ययी।
**फजूलखर्ची**—स्त्री० व्यर्थ खर्च करना, अपव्यय।
**फट**—स्त्री० गिरनेकी आवाज़, फटफट। चटाई।
**फटक**—पु० स्फटिक पत्थर (कबीर ९७)। क्रिवि० तुरन्त गयो फटक ही टूटि चोंच दामिड़के धोखे।' गिरिधर

**फटकन**—पु० वह भूसी इ० जो चावल इ० फटकनेसे निकले।
**फटकना**—सक्रि० फटफटाना, सूपपर हिलाकर साफ करना (उदे० 'पिछोरना')। पटकना, फेंकना 'कण्ठ चापि बहु बार फिरायो गहि फटक्यो नृप पास पर्यो।' सूबे० ५०। अक्रि० पहुँचना। हाथ पाँव हिलाना। दूर होना। पृथक् होना। ['फटकरै।' प० २२१
**फटकरना**—सक्रि० फटकना, फेंकना, 'खोट रतन सोई
**फटकाना**—सक्रि० फेंकना, पृथक् करना। फटकवाना। फटफटाना (उदे० 'ग्रामसिंह')।
**फटकार**—स्त्री० दुत्कार, झिड़की।
**फटकारना**—सक्रि० झटका मारना (उदे० 'गेंडुरी')। चलाना, फेंकना, अलग करना। प्राप्त करना। खरीखरी
**फटकी**—स्त्री० एक तरहका पिंजड़ा या जाल। [सुनाना।
**फटना**—अक्रि० विदीर्ण होना, तड़कना, खण्डित होना, छिन्न भिन्न होना 'जिमि रवि उये जाहि तम फाटी।' रामा० ५१०। **फट पड़ना** = अकस्मात् आ पड़ना। मन— = मन उचट जाना, तबीयत हट जाना।
**फटफटाना**—सक्रि० फड़फड़ाना, छटपटाना, प्रयास करना। बक बक करना।
**फटहा**—वि० फटा हुआ (रत्ना० ४४१)।
**फटा**—स्त्री० फण, गर्व, छल। पु० छिद्र। वि० गयागुजरा, खराब 'बड़ी फटी हालतमें दिन बिताते थे।' (पभू० १६८)
**फटिक**—पु० स्फटिक या बिल्लौर नामक पत्थर 'बैठे फटिक सिलापर सुन्दर।' रामा० ३५८, (उदे० 'जुरना')।
**फट्टा**—पु० टाट। चीरी हुई बाँसकी छड।
**फटेहाल**—वि० खुशहाल नहीं, गरीब, कङ्गाल, गयी-गुजरी अवस्थावाला (गबन २८)।
**फड़**—स्त्री० जुआ-घर, दाँव। दल, पंक्ति (भू० १५७)।
**फड़कन**—स्त्री० फड़कनेकी क्रिया या भाव, उत्सुकता, आकांक्षा।
**फड़कना**—अक्रि० फड़फड़ाना, धड़कना, उछलना, हिलना, चञ्चल होना, स्फुरण होना।
**फड़नवीस**—पु० मराठोंके शासनकालका एक राजपद।
**फड़फड़ाना**—सक्रि० फटफटाना, हिलाना। अक्रि० छटपटाना।
**फड़िया**—पु० फुटकर अन्न बेचनेवाला बनिया, जुएके अड्डे-
**फड़ुआ, फड़ुहा**—पु० फावड़ा। [का मालिक।
**फण**—पु० साँपका फैलाया हुआ मस्तक।

फणधर, फणिक, फणिधर—पु० सर्प।
फणा—स्त्री० फन।
फणींद्र—पु० शेषनाग, सर्पराज। वासुकि।
फणी—पु० सर्प। केतु। सीसा।
फणीश,-श्वर—पु० देखो 'फणींद्र'।
फतवा—पु० मुसलमानी धर्मग्रन्थके अनुसार व्यवस्था।
फतह—स्त्री० विजय, सफलता।
फतहमंद—वि० जिसकी फतह हुई हो, विजयी।
फतहयाव—वि० विजयी।
फतिंगा—पु० पतिंगा।
फतूर—पु० विकार। विघ्न, हानि। उत्पात।
फतूरिया—वि० खुराफाती, झगड़ालू। उपद्रवी।
फतूह—स्त्री० विजय। लूटका धन।
फतूही—स्त्री० विना आस्तीनकी कुरती। लूटका धन।
फते, फतेह—स्त्री० फतह, विजय 'बाहुबली जयशाह जू फते तिहारे हाथ।' बि० २९४, ( भू० ७९ )।
फदकना—अक्रि०खदबद करना,चुरना। खुशीसे उछलना।
फदफदाना—अक्रि० देहमें अत्यधिक फुन्सियाँ निकलना। वृक्षमें बहुतसी शाखाएँ निकलना।
फन—पु० साँपका सिर। विद्या, गुण, चालाकी।
फनकना—अक्रि० फनफन आवाज़ करना।
फनगना—अक्रि० पनपना, नये अङ्कुरका निकलना।
फनगा—पु० फतिंगा।
फनफनाना—अक्रि० 'फनफन' शब्द करना।
फनस—पु० पनस, कटहल।
फना—स्त्री०बरबादी। मौत,नाश,लय (देखो 'फिना')।
फनाना—सक्रि० तैयार करना।
फनिंग—पु० सर्प, नाग।
फनिंद—पु० फणीन्द्र, सर्पराज, शेषनाग।
फनि—पु० देखो 'फणी'।
फनिक,फनिग—पु० सर्प। फतिङ्गा 'अब करि फनिग
फनिधर,फनिप—पु० सर्प। [भङ्ग कै करा।' प० ५६
फनी—पु० सर्प। स्त्री० सर्पका मस्तक।
फनूस—पु० पिञ्जड़ेकी सूरतका चिरागदान।
फफकना—अक्रि०रुक रुककर रोना। [बढ़ना।
फफदना, फयदना—अक्रि० (फुड़ियों आदिका) फैलना,
फफूँदी—स्त्री० बरसातमें फलादिपर जमनेवाली सफेद
फफोला—पु० झलका, छाला। [सी तह। नीवी।

फबती—स्त्री० शोभा। देशकालानुकूल बात। व्यंग्य।
फबना—अक्रि० भला मालूम होना, शोभा देना 'राव शत्रुशालको सपूत पूत भावसिंह मतिराम कहै जाहि साहिबी फबति है।' ललित० २५
फबाना—सक्रि० ठीक स्थानपर लगाना।
फबि—स्त्री० शोभा, छवि।
फबीला—वि० छवियुक्त, सुन्दर।
फर—पु० फल, बाण आदिका अगला भाग 'बिनु फर सर रघुपति मोहिं मारा।' रामा० ३७७। सामना। बिछावन। दाँव, पक्ष। मैदान (भू० ८९), युद्धक्षेत्र 'फर में फतै बुन्देलनि पाई।' छत्र० १४२
फरक—स्त्री० फड़कनेकी क्रिया, स्फुरण, चञ्चलता। फरक़ पु० अन्तर, पार्थक्य। दुराव।
फरकन—स्त्री० फड़कनेकी क्रिया, स्फुरण।
फरकना—अक्रि० फड़कना, काँपना (उदे० 'पठनेटा')। स्फुरित होना 'फरकत अधर कोप मन माहीं।' रामा० ७८। उड़ना।
फरका—पु० एक तरहकी छाजन, टट्टर 'ताके पूत कहावत हौ जी चोरी करत उघारत फरको।' सूबे० ६६
फरकाना—सक्रि० फड़फड़ाना, हिलाना।
फरचा—वि० जो जूठा न हो। साफ।
फरचाना—सक्रि० साफ करना, शुद्ध करना। आदेश
फरजंद,-जिंद—पु० बेटा, लड़का। [देना।
फरजी—वि० जाली, नकली। पु० शतरञ्जका एक मोहरा ( उदे० 'तासीर' )।
फरद—स्त्री० एक पल्ला। सूची। वि० बेजोड़।
फरना—अक्रि० फलना ( उदे० 'उकठा', 'तराहीं'), 'नरियर फरे फरी फरहरी।' प० १२
फरफंद—पु० दाँवपेंच, छल, नखरा।
फरफंदी—वि० चालबाज़।
फरफराना—अक्रि० फड़फड़ाना।
फरफुंदा—पु० फतिंगा।
फरमाबरदार—वि० हुक्म बजानेवाला, आज्ञाकारी।
फरमाइश—स्त्री० कोई वस्तु तैयार करने या कहींसे लाने इ० की आज्ञा।
फरमाइशी—वि०जिसकी फरमाइश की गयी हो,जो खास तौरसे आज्ञा देकर बनवाया या मँगवाया गया हो।
फरमान—पु० राजकीय आज्ञापत्र, शाही घोषणा।

फरमाना—सक्रि० आज्ञा देना।
फरलांग—पु० दो सौ बीस गजकी दूरी।
फरश, फरस—पु० समतल भूमि, गच। बिछावन।
फरशबंद—पु०वह ऊँची जगह जहाँ गच बना हो(रवि०४३)।
फरशी—स्त्री० फूल इ० का वह पात्र जिसमें नैचा लगाकर हुक्केका काम लेते हैं। उक्त पात्रवाला हुक्का।
फरसा—पु० फावड़ा, कुल्हाड़ी, परशु।
फरहद—पु० एक वृक्ष।
फरहरना, फरहराना—अक्रि० फड़फड़ाना, हिलना, फहराना, फड़क उठना 'छप्पन कोटि बसन्दर बरा। सवा लाख परवत फरहरा।' प० १२३
फरहरा—पु० झण्टा। वि० छिटका हुआ, खिला हुआ, अलग अलग। शुद्ध।
फरहरी—स्त्री० जङ्गली फल ( उदे० 'फरना' )।
फरा—पु० पानीकी भापमें पकायी हुई आटेकी वत्तियाँ।
फराक—पु० लम्बी चौड़ी खुली जगह। एक पहनावा। वि०विस्तृत 'दूरि फराक रुचिर सो घाटा।'राम० ५५३
फराकत—वि०विस्तृत। स्त्री०छुट्टी,शौचादिसे निवृत्तहोना।
फरागत—स्त्री० शौचादिसे या अन्य कार्यसे निवृत्त होना; निश्चिन्तता।
फराना—सक्रि० फलनेमें प्रवृत्त करना ( रत्ना० ३८४ )।
फरामोश—वि० विस्मृत, भूला हुआ। पु० भूलचूक।
फरार—वि० भागा हुआ, चम्पत। पु० देखो 'फलार'।
फरास—पु० देखो 'फर्राश', 'रूप चाँदनीकी गद्दी स्वच्छ राखिवे हेत।।दग फरास हाजिर खड़े बरुनि बढ़ारू देत।' रतन० १७, ( सातीं १४७ )
फरासीसी—पु० फ्रांस देशका निवासी। वि० फ्रांसका।
फरिया—स्त्री० ओढ़नी, एक तरहका लहँगा 'सारी चीर नई फरिया लै अपने हाथ बनाइ।' सूबे० ८२, ( सूसु० १५१ )। पु० मिट्टीकी नाँद।
फरियाद—स्त्री०नालिश,प्रार्थना। [।प्रार्थना करनेवाला।
फरियादी—वि० नालिश करनेवाला, क्लेश-निवारणकी
फरियाना—सक्रि० साफ करना, अलग करना, तय करना। अक्रि० साफ होना, छँटना, तय होना।
फरिश्ता—पु० दिव्य दूत।
फरी—स्त्री० ढाल 'लैके खड्ग फरी गहि हाथा। काट्यो बहु छत्रिन को माथा।' सबलसिंह, (फ़ौ० ५२७)। गाड़ीका हरसा। फाल।
फ़रीक़—पु० फिरका, जमायत, वर्ग। विपक्षी,प्रतिद्वन्द्वी।
फरुई, फरुही—स्त्री० छोटा फावड़ा, मथानी। भूना हुआ चावल, मुरमुरा।
फरुहरी—स्त्री० फड़कनेकी क्रिया, कँपकँपी, फुरेरी।
फरेब—पु० जाल, धोखा।
फरेबिया, फरेबी—वि० कपटी, धोखेबाज।
फरेरा—पु० झंडा (कलस ३१८)।
फरेरी—स्त्री० जंगली मेवा।
फरोख्त—स्त्री० बेचनेकी क्रिया, बिक्री।
फरोश—पु० बेचनेवाला (मेवाफरोश, कुतुबफरोश)।
फर्क, फर्जंद—दे० 'फरक'; 'फरजंद'।
फर्ज़—पु० कर्तव्य। धार्मिक कृत्य। कल्पना।
फर्ज़ी—वि० कल्पित, बनावटी।
फर्द—देखो 'फरद'।
फर्माना, फर्याद—दे० 'फरमाना'; 'फरियाद'।
फर्माबरदार—पु० सेवक, आज्ञापालन करनेवाला।
फर्राटा—पु० क्षिप्रता, तेज़ी।
फर्राश—पु० सफाई इ० करनेवाला नौकर, सेवक।
फर्श—पु० देखो 'फरश'।
फर्शी—वि० फर्शका। स्त्री० एक तरहका बड़ा हुक्का।
फलंक—पु० फलांग, उछाह 'कूदि गयो कपि एक फलंका लंकाके दरवाजा।' रघु० २३०। आकाश।
फल—पु० मेवा। परिणाम, लाभ, प्रभाव। बदला। ढाल, बाणादिका अग्रभाग। प्रयोजन। लब्धि।
फलक—पु०तख्ता। पृष्ठ,पत्र। हथेली। ढाल। आकाश, [स्वर्ग।
फलकना—अक्रि० छलकना। फरकना।
फलका—पु० छाला, झलका।
फलतः—क्रिवि० परिणाम स्वरूप, इसलिए।
फलद—वि० फल देनेवाला।
फलदान—पु० विवाह पक्का करनेकी एक रस्म 'बरच्छा'।
फलदार—वि० जिसमें फल लगे हों या लगते हों।
फलना—अक्रि० फल लगना, परिणाम निकलना, सफल [होना।
फलफंद—देखो 'फरफंद' (रत्ना० ५२६)।
फलवान्—वि० फलयुक्त, सफल।
फलश्रेष्ठ—पु० आम।
फलहरी—स्त्री० देखो 'फरहरी'।
फलहरी,-हारी—वि० जिसमें अन्न न पड़ा हो।
फलाँ—वि० अमुक, फलाना।

फलाँग—स्त्री० छलाँग, उछाल, चौकड़ी। कलाबाजी।
फलाँगना—अक्रि० छलाँग मारना, कूदना।
फलाकना—सक्रि० छलाँग मारकर पार करना (रत्ना०
फलागम—पु० फल लगनेकी ऋतु, शरद्‌ऋतु। [५४६)।
फलातूँ—पु० यूनानका एक प्रसिद्ध दार्शनिक 'फलातूँ सा दूसरा सुनता बात' कुकुरमुत्ता ४०। [प्रवृत्त करना।
फलाना—वि० अमुक (सुन्द० १६५)। सक्रि० फलनेमें
फलार, फलाहार—पु० फल-भोजन, वह भोजन जिसमें
फलालैन—पु०एक तरहका ऊनी कपड़ा। [अन्न न पड़ा हो।
फलाशन, फलाशी—पु०फल खानेवाला। [खानेवाला।
फलाहारी—वि० जिसमें अन्न न मिला हो। पु० फल
फलित—वि० फला हुआ। पूर्ण।—ज्योतिष = ग्रहोंके शुभाशुभ फलका विचार करनेवाला ज्योतिष।
फली—स्त्री० लम्बे चिपटे फल जिनमें दाने भरे रहते हैं, छीमी इ०। पु० फलयुक्त वृक्ष।
फलीता—पु० पलीता, बत्ती।
फलोदय—पु० लाभ, आनन्द।
फल्गु—वि० क्षुद्र, निस्सार। स्त्री० एक नदी।
फसकड़ा—पु० पलथी। [शीघ्र दब जाय या फट जाय।
फसकना—अक्रि० दरकना, दब जाना, बैठना। वि० जो
फसल—स्त्री० उपज। ऋतु, समय।
फसली—वि० मौसमी। पु० एक सम्वत्। स्त्री०हैजा।
फसाद—पु० झगड़ा, उपद्रव, विद्रोह।
फसादी—वि० झगड़ा करनेवाला, उपद्रवी।
फसड्डी—वि०पिछड़ा हुआ, पिछड़ जानेवाला (पूर्ण२२२)
फहम—स्त्री० ज्ञान, विवेक, खयाल (कविता १८७)।
फहरना—अक्रि० उड़ना, फड़फड़ाना (उदे० अटकना)।
फहरान,-नि—स्त्री० फहरानेकी क्रिया।
फहराना—अक्रि० हवामें उड़ना ( उदे० 'उद्योतिताई' 'निसान')। सक्रि० हवामें उड़ाना।
फाँक—स्त्री० गोल वस्तुका चीरा हुआ टुकड़ा, टुकड़ा।
फाँकना—सक्रि० चूर्णादिको दूरसे मुखमें डालना।
फाँका—पु० फाँक, टुकड़ा (उदे० 'उघेरना')। फका।
फाँकी—स्त्री० फाँक, टुकड़ा। चूर्णादि जो एक बार मुखमें डाला जाय।
फाँग, फाँगी—स्त्री० एक तरहका साग। [बनाना।
फाँटना—सक्रि० कई टुकड़ोंमें विभक्त करना। काढ़ा
फाँड़—स्त्री० कमर 'फाँड़े सोहे गुजराती फेटा' ग्राम० २२४
फाँड़ा—पु०कमरमें लपटा हुआ दुपट्टे आदिका हिस्सा।फेंटा।
फाँद—स्त्री० फन्दा, जाल (प० ४३)। छलांग, उछाल।
फाँदना—अक्रि० उछलना। सक्रि० कूदकर पार करना, डाँकना। फँसाना (दास० ९३, सू० १२८)।
फाँदा—पु० फन्दा, जाल।
फाँफी—स्त्री० पतली झिल्ली, मलाईकी हलकी तह।
फाँस—स्त्री० फन्दा, बन्धन। बाँस आदिका कड़ा तन्तु (प० २४०)। पतली तीली या फट्टी 'फूस नहीं फाँस नहीं, छप्पर पै घास नहीं'-गुलाब ४९९। [करना।
फाँसना—सक्रि० फँसाना, बाँधना, धोखा देकर वशमें
फाँसी—स्त्री० फंदा (उदे० 'निरवारना')। गलेमें रस्सी डालकर प्राण लेनेकी सजा।
फाइल—स्त्री० नत्थी किये हुए या सिलसिलेसे रखे हुए कागजपत्रों, चिट्ठियों इ० का समूह, मिसिल।
फाक़ा—पु० उपवास।
फाकामस्त—वि० तंगीमें भी खुश रहनेवाला।
फाग—पु० रंग या अबीर डालनेका उत्सव, होली। होली-
फागुन—पु० माघके बादका महीना। [का गीत।
फाज़िल—वि० ज्यादा, फजूल, हिसाबसे या आवश्यकतासे अधिक। विद्वान, पंडित।
फाटक—पु० दरवाजा। फटकन 'फाटक दै कर हाटक माँगत भोरै निपट सु धारी।' श्र०१२। कानीहाउस।
फाटकदार—पु० कानी हाउसका प्रबन्धक।
फाटना—अक्रि० फटका 'वे रस ढोलत आपने इनके फाटत अंग।' रहीम १४ (बि० ११०, मति० १७८)
फाड़खाऊ—वि० कटहा, क्रोधी।
फाड़ना—सक्रि० विदीर्ण करना, खंड खंड करना, जुड़ी या मिली वस्तुओंको अलग करना।
फातिहा—पु० विनती, प्रार्थना।
फानूस—पु० एक तरहका चिरागदान 'रूप दीप जेतौ धरौ मन फानूस दुराइ।' रतन० १७।
फाब—स्त्री० फबि, छबि, शोभा।
फावना—अक्रि० फबना, शोभा देना 'कुमतिहि कसि कुवेसता फावी।' रामा० २११।
फायदा—पु० लाभ, अच्छा प्रभाव।
फायदेमंद—वि० लाभकारी, मुफीद, गुणकारी।
फाया—पु० देखो 'फाहा'।
फार—पु० फाल, टुकड़ा (प० २०४)।

फारना—सक्रि० देखो 'फाड़ना', (उदे० 'थौंद')।
फारम—पु० प्रार्थनापत्र, रसीद इ० का बँधा हुआ रूप जिसमें यह बताया गया हो कि कौन बात कहाँ लिखनी चाहिये। एक बारमें एक तख्ता छापनेके लिए बैठाये हुए अक्षर। एक पूरा तख्ता जो एक बार एक साथ† छापा गया हो।
फारसी—स्त्री०फारस देशकी भाषा।
फारा—पु० देखो 'फार' (प० २५६)।
फारिग़—वि० मुक्त। बेफिक्र, निश्चिन्त, फुरसत पाया हुआ।
फारिस—पु० फारस नामक एक देश।
फाल—स्त्री० लोहेकी कील जिससे हल चलानेपर जमीन खुदती है। तीरका फल 'तुलसी पीठि कढ़ावौं फालू।' प० ३१२। टुकड़ा। पु० फावड़ा। शिवजी। एक दैवी परीक्षा। फलांग, डग (दास ३२)।
फालतू—वि० जरूरतसे ज्यादा; बचती, निकम्मा।
फालसा—पु० एक फल।
फालिज़—पु० लकवेकी बीमारी, पक्षाघात।
फाल्गुन—पु० माघके बादका महीना।
फावड़ा—पु० मिट्टी खोदनेका औजार, फरसा।
फाश—वि० प्रकट, खुला हुआ। पर्दा—करना = गुप्त बात प्रकट कर देना।
फासला—पु० अन्तर, दूरी।
फाहा—पु० इत्र, तेल आदिमें डुबाया हुआ रुई या‡ कपड़ेका टुकड़ा।
फाहिशा—वि०स्त्री०व्यभिचारिणी, कुलटा।
फिंकवाना—सक्रि०फेंकनेमें प्रवृत्त करना,फेंकनेका काम* कराना।
फिकर, फिकिर, फिक्र—स्त्री० चिन्ता, खटका, सोच।
फ़िकरा—पु० वाक्य। दम-बुत्ता।
फिकैत—पु० बनेठी आदि चलानेवाला।
फिटकरी—स्त्री० सेंधा नमक जैसा एक खनिज पदार्थ।
फिटकार—स्त्री० फटकार, धिक्कार। शाप। वास।
फिटकिरी—स्त्री० देखो 'फिटकरी'।
फिटकी—स्त्री० देखो 'फिटकिरी'। छींटा।
फिटन—स्त्री० एक तरहकी खुली घोड़ा-गाड़ी।
फिटाना—सक्रि० हटा देना, भगाना ( सुन्द० १३४ )।
फिट्ट, फिट्टा—वि० लज्जित, अपमानित।
फ़ितूर—पु० देखो 'फितूर'। कमी, घाटा।
फिदवी—पु० दास। वि० आज्ञानुवर्त्ती।
फिना—स्त्री० मृत्यु, नाश।—हो जाना = मिट जाना। तबाह हो जाना। अनुरक्त हो जाना।
फिनिया—स्त्री० कानका एक आभूषण।
फिफरी—स्त्री० पपड़ी 'उड़िगै बदनकी लालिमा परी अधरानि।' रघु० १२२
फिरंग—पु० यूरोप, बाबरका देश ( भू० ४७ )। स्त्री विलायती तलवार 'चमकती चपला न, फेरत फिरंग भट……'-भू० ३२
फिरंगी—वि० फिरंग देश (यूरोप) में उत्पन्न। पु० फिरंग देशवासी। स्त्री० देखो 'फिरंग' स्त्री०।
फिरंट—वि० फिरा हुआ, घुमा हुआ, विरुद्ध, ना०। बिगड़ा हुआ।
फिर—क्रिवि० किसी दूसरे समय, बादमें। पुनः। अ० † इसके सिवाय
फिरकना—अक्रि० थिरकना, नाचना, चक्कर खाना।
फ़िरक़ा—पु० सम्प्रदाय, जाति।
फिरकी—स्त्री० 'चकई' नामक खिलौना '…खिरकी खिरकीनि फिरै फिरकीसी।' रवि० ८९। एक कसरत।
फिरकैयाँ—स्त्री० चक्कर 'फिरकैयाँ लै नित अलापन, बिच तान रसीली।' ललित कि०
फिरगाना—पु० यूरोपका निवासी, अंग्रेज (रत्ना० ५३१)।
फिरता—वि० वापस। पु० लौटाने या अस्वीकार करनेकी क्रिया।
फिरदौस—पु० वाटिका। स्वर्ग।
फिरना—अक्रि० घूमना, भ्रमण करना, चक्कर लगाना 'अगनित भवन फिरेउँ प्रभु राम न देखेउँ आन।' रामा० ५८१। बदल जाना। वापस होना। हटना 'बन्धु बचन सुनि फिरा विभीषन।' रामा० ४८७। घोषित होना 'जब प्रताप रबि भयउ नृप फिरी दोहाई देस।' रामा० ८७
फिरनी—दे० 'फीरनी'।
फिराऊ—वि० जाकड़। फिरता हुआ।
फिराक—पु०चिन्ता,खोज,वियोग।
फिराद, फिरादि—दे० 'फिरियादि', कूकर एक फिरादहिं आयो।' के० २९४
फिराना—सक्रि० घुमाना, सैर कराना, लौटाना, मरोड़ना, बदल देना, फेरना 'वृषभ गंजन मथन केसी, हने पूँछ फिराइ।' सू० ७७, (उदे० आगमन')। अक्रि० देखो 'फिरना', 'पदुम गंध तिन अंग बसाहीं। भँवर लागि तिन्ह संग फिराहीं।' प० १४, (प० १८५)
फिरार—पु० भाग जाने या चम्पत होनेकी क्रिया।
फिरारी—वि० भागनेवाला।
फिरि; फिरिकी—दे० 'फिर'; 'फिरकी'।
फिरियादि—स्त्री० पुकार, नालिश।

फिलहाल—अव्य० सम्प्रति, इस समय।
फिस—वि० सारहीन,कुछ नहीं।—हो जाना = निस्सार निकल जाना, न रह जाना 'खिसि गई सेखी फिसि गई सूरताई...' भू० १७२ [पीछे रहे।
फिसड्डी—वि० जिससे कुछ काम न हो, जो काममें
फिसफिसाना—अक्रि० शिथिल पड़ जाना, ज़ोर न रह [जाना।
फिसलना—अक्रि० खिसलना, रपटना, गिरना।
फिहरिस्त—दे० 'फेहरिस्त'।
फींचना—सक्रि० कचारना, धोना, पछारना।
फी—अ० प्रत्येक। स्त्री० फीस।
फीका—वि० स्वादहीन, अरुचिकर। कान्तिहीन, व्यर्थ 'नीकी पै फीकी लगै बिन अवसरकी बात।' वृन्द
फीता—पु० कपड़े आदिकी पट्टी, पतला किनारा।
फीफरी—स्त्री० पपड़ी। फिफरी, फेफरी।
फीरनी—स्त्री० चावलके आटेकी खीर।
फीरोज़ा—पु० एक बहुमूल्य पत्थर।
फीरोज़ी—वि० हरापन लिये नीला।
फील—पु० पील, हाथी ( सुजा० ४७ )।
फीलखाना—पु० हस्तिशाला, हथिसार।
फीलपा—पु० हाथीपाँव नामक रोग।
फीलपाया—पु० 'हाथीपाँव' का रोग। छत इ० को थाँभे रहनेवाला ईंटोंका खम्भा।
फीलवान—पु० महावत।
फीली—स्त्री० पिंडली 'रोवाँ बहुत जाँघ अरु फीली।'
फुँकना—अक्रि० जलना, नष्ट होना। [प० २२९
फुँकनी—स्त्री० आग प्रज्वलित करनेकी नली, भाथी।
फुँकरना—अक्रि० फुफकार मारना। फूँ फूँ शब्द करना 'तब चले बान कराल। फुंकरत जनु बहु व्याल।' रामा० २७३
फुँकाना—सक्रि० फूँकनेका काम कराना। जलवाना।
फुंकार—पु० फूत्कार, फुफकार, नाक या मुँहसे वेगपूर्वक वायुके निकलनेका शब्द।
फुँकैया—पु० फूँकनेवाला ( अ० १३६ )।
फुँदना—पु० झब्बा, फुलरा, गुच्छा। [ 'कसनी' )।
फुँदिया—स्त्री० गाँठ, फुलरा, (नीवीका) झब्बा ( उदे०
फुँदी—स्त्री० गाँठ। बिन्दी 'सारी लटकति पाटकी बिलसति फुँदी लिलार।' मति० १८०
फुंसी—स्त्री० छोटी फुड़िया।
फुआ—स्त्री० फूफाकी पत्नी।
फुआरा—दे० 'फुहारा'। [ विद्या० २२१
फुगना—सक्रि० खोलना 'कंचुकि फुगइत पहु भेल भोर।'
फुचड़ा—पु० बाहर निकला हुआ सूत या रेशा।
फुटकर, फुटकल—वि० अलग अलग, कई तरहका,
फुटका—पु० लावा। छाला। [ थोड़ा थोड़ा, एकाकी।
फुटकी—स्त्री० छोटा लच्छा,दूधादिके जमे हुए कण। धब्बा।
फुटेहरा—पु० अच्छा भूना हुआ चना या मटर।
फुटैल, फुट्टैल—वि० हतभाग्य। अकेला।
फुतकार—पु० फूत्कार, फुफकार, फुसकार 'जिन फन फुतकार उड़त पहार'-भू० १७३
फुदकना—अक्रि० उछलना, कूदना।
फुनँग, फुनगी—स्त्री० कोमल पत्ती, शाखाका अग्रभाग।
फुनकार—देखो 'फुंकार'। [ ॐदुख फुनफुनी।' कबीर१७
फुन फुनी—अ० पुनः पुनः, बारम्बार 'हरि भगति बिनाॐ
फुप्फुस—पु० फुसफुस, फेफड़ा।
फुफँदी—स्त्री० इजारबन्दका झब्बा, नीवी।
फुफकाना—देखो 'फुफकारना'।
फुफकार—देखो 'फुतकार'।
फुफकारना—अक्रि० मुँहसे वेगपूर्वक हवा निकालना।
फुफी, फुफू—स्त्री० बुआ।
फुफेरा—वि० फूफासे उत्पन्न।
फुर—वि० सच्चा। तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ।' रामा० १५
फुरक़त—स्त्री० वियोग।
फुरकना—सक्रि० मुखद्वारा कढ़ी इ० ज़ोरसे सुरकना।†
फुरती—स्त्री० शीघ्रता। [ †ज़ोरसे थूकना।
फुरतीला—वि० जो सुस्त न हो, शीघ्रतासे करनेवाला।
फुरना—अक्रि० स्फुटित होना, निकलना 'फुरत न बचन कछू कहिबेको रहे प्रीति सों हारि।' भ्र० ८६, ( सू० ६६ )। प्रकाशित होना। ठीक निकलना, सच्चा प्रमाणित होना 'जासों सब नातो फुरै तासों न करी पहिचानि।' विन० ४४२। सफल होना 'फुरै समर में सदा कृपानी।' छत्र० ७। असर करना 'एक न फुरत बिरह ज्वर तें कछु, लागति नाहिं भली।' सू० १९८। फरकना। [ पंख फड़फड़ाना।
फुरफुराना—अक्रि० 'फुरफुर' शब्द करना। सक्रि०
फुरफुरी—स्त्री० पंख फड़फड़ानेकी क्रिया या भाव।

फुरमान—पु० राजाज्ञा, आज्ञा ।
फुरमाना—सक्रि० हुक्म देना ( सुजा० १७ ) ।
फुरसत—स्त्री० अवकाश, समय ।
फुरहरना—अक्रि० स्फुरित होना, प्रकट होना । हिलना. फड़क उठना । देखो 'फरहरना' ।
फुरहरी—स्त्री० फड़फड़ाहट, फरफराहट, रोमांचयुक्त होकर काँपना ( रवि० ९२ ), कँपकँपी 'परसि फुरहरी लै फिरति विहँसति धँसति न नीर ।' बि० २६५
फुराना—सक्रि० सत्य ठहराना, साबित करना । अक्रि० देखो 'फुरना' ।
फुरेरी—स्त्री० रोमांच सहित कँपकँपी । हलकी रूईयुक्त
फुर्ती; फुर्सत—दे० 'फुरती'; 'फुरसत' । ( सींक ।
फुलका—पु० पतली, हलकी रोटी । झलका, छाला ।
फुलचुही—स्त्री० फूलोंका रस चूसनेवाली एक चिड़िया ( प० १५६ ) ।
फुलझड़ी, फुलझरी—स्त्री० एक आतशबाज़ी । विवाद
फुलरा—पु० गुच्छा, फुँदना । [ खड़ा करनेवाली बात ।
फुलवर—पु० एक तरहका कपड़ा जिसपर फूल बने हों ।
फुलवाई, फुलवारी—स्त्री० पुष्पवाटिका, बाग़ीचा 'पूजन गौरि सखी लेइ आई । करत प्रकास फिरइ फुलवाई ।' रासा० १२७, (कर्को० ५०६) [ ❊भरा ।' प० १२७
फुलवार—वि०प्रसन्न, प्रफुल्ल 'होइ फुलवार रहस हिय❊
फुलसुँघी,-सुँही—स्त्री० देखो 'फुलचुही' (ज्यो०११) ।
फुलहारा—पु० माली ।
फुलाना—सक्रि० बाहरकी ओर फैलाना, आनन्दित या गर्वित करना । फूलयुक्त करना ।
फुलायल—पु० फुलेल 'छोरहु जटा, फुलायल लेहू ।'
फुलिंग—पु० स्फुलिंग, चिनगारी । [ प० १२१
फुलिया—स्त्री० नाकका एक आभूषण, लौंग ।
फुलेरा—पु० फूलोंका छत्र ।
फुलेल—पु०फूलोंका सुगंधियुक्त तेल ( उदे० 'ग्रंथना') ।
फुलेहरा—पु० फूलोंका छत्र । गुच्छेदार बन्दनवार ।
फुलौरी—स्त्री० बेसनकी पकौड़ी ( प० २७३ ) ।
फुल्ल—वि० खिला हुआ, प्रसन्न ।
फुल्लता—स्त्री० खिलने अथवा प्रसन्न होनेकी क्रिया या
फुसकारना—अक्रि० फुफकारना । [ भाव ।
फुसफुस—पु० फेफड़ा, फुप्फुस । [ अशक्त ।
फुसफुसा—वि० जो छूने या दबानेसे चूर चूर हो जाय ।
फुसफुसाना—सक्रि०कानमें धीरे धीरे कहना ।
फुसलाना—सक्रि० बहलाना, बहकाना, भुलावा देना,
फुहर—देखो 'फूहर', (उदे० 'धैना' ) । [मनाना ।
फुहार, फुहारा—पु० जलका महीन छींटा । जलका छींटा
फुही—स्त्री० जलकण; झींसी । [ देनेवाला यंत्र ।
फुहुकना—अक्रि० फुफकारना । [ हुई हवा ।
फूँक—स्त्री० फुफकार, साँस । मंत्र पढ़कर मुखसे निकाली
फूँकना—सक्रि०मुखसे वेगपूर्वक हवा निकालना । मुखसे हवा निकालकर बजाना या दहकाना । भस्म करना, जलाना, नष्ट करना, उड़ाना ।
फूँका—पु० औषधि भरकर बाँसकी नली गायके स्तनमें लगानेकी क्रिया । फूँका मारनेकी नली । फोड़ा ।
फूँद, फूँदा—स्त्री०झब्बा,फुँदना । [फुँदारी ।' रवि० ३२
फूँदफुँदारा—वि० झब्बेदार '...जूती चढी पग फूँद-
फूट—स्त्री० वैमनस्य, अनबन, कलह । एक फल ।
फूटन—स्त्री० फूटकर अलग हुआ अंश । वह पीड़ा जो शरीरके जोड़ोंमें हो ।
फूटना—अक्रि० टूटना, दरकना ( उदे० 'टपका') । नष्ट होना । प्रस्फुटित होना,निकलना । पृथक् होना । व्यक्त
फूटा—वि० टूटा हुआ । [ होना । बिखरना ।
फूत्कार—पु० फुफकार, फुसकार ( प्रिय० १६७ ) ।
फूफा—पु० पिताका बहनोई ।
फूफी—स्त्री० फुआ, बुआ ।
फूर,फूल—पु० पुष्प, सुमन, कुसुम, प्रसून । सार । एक धातु । फूलके ढंगका गहना ( सू० १४१ ) । स्त्री० आनन्द 'फूलि फूलि तरु फूल बढ़ावत ।' राम० १८ । उमंग ( छत्र० ४३ ) ।
फूरना, फूलना—अक्रि० कुसुमित होना 'पान अधार फूल अस फूरी ।' प० २२९ । खिलना ( उदे० 'गुल्लाला' ) । सूजना । गर्व या आनन्दमें मग्न होना ( कबीर १९४ ),'राख्यो भले शरणागत लक्ष्मण फूलि कै फूल सी ओढ़ि लई है ।' राम० ४४०,'निरखि छवि फूलत हैं व्रजराज ।'सू०५१। सुनहले प्रकाशयुक्त होना 'कैधौं फूली दुपहरी कैधौं फूली साँझ । ललित० ५१
फूल—पु० शव-दाहके अनन्तर बची हुई अस्थि । रज ।
फूलकारी—स्त्री० बेल बूटे इ० काढ़नेका काम ।
फूलगोभी—स्त्री० फूलकी शकलवाली गोभी ।
फूलझरी—स्त्री० एक आतशबाजी ( सू० २०२ ) ।

फूलदान—पु० गुलदस्ता इ० रखनेका बरतन ।
फूलदार—वि० जिसपर फूल पत्ते बने हों ।
फूलमती—स्त्री० एक देवी ( रत्ना० ८८ ) ।
फूला—पु० लावा । नेत्ररोग ।
फूली—स्त्री० आँखकी पुतली परका सफेद दाग ।
फूवा—स्त्री० फुआ, बुआ ।
फूँस, फूस—पु० सूखी लम्बी घास, सूखा तृण ।
फूहड़, फूहर—वि० बेढंगा, जिसे कुछ करनेका शऊर न हो, भद्दा । स्त्री० बेसऊर स्त्री ।
फूही—स्त्री० देखो 'फुही' । [ व्यय करना । उछालना ।
फेंकना—सक्रि० दूर गिराना, त्यागना, खोजना, अप-
फेंकरना—अक्रि० गीदड़का बोलना, चिल्लाकर रोना 'कटु कुठायँ करटा रटहिं फेंकरहिं फेरु कुभाँति ।' रामाज्ञा० । ( सिर ) नंगा होना 'फेंकरे मूँड चँवर जनु लाए ।' प० १९०
फेंट—स्त्री० कमरका घेरा,कमरबन्द, पटुका (दास १४) । लपेट । टेंट 'चेटक लाइ हरहिं मन जब लहि होइ गथ फेंट ।' प० १६ ।—कसना = तैयार होना । —गहना,-धरना,-पकड़ना = रोकना 'चलत न फेंट गही मोहनकी अब ठाढ़ी पछितात ।' सूबे० २७२।
फेंटना—सक्रि० हाथसे मथना, खूब मिलाना ।
फेंटा—पु० देखो 'फेंट' । छोटी पगड़ी ।
फेंटी—स्त्री० अटेरनपर लपेटा हुआ सूत ।
फेकरना—अक्रि० देखो 'फेंकरना' ।
फेकारना—सक्रि० ( सिर ) खोलना, (सिर) उघारना ।
फेकैत—पु० फेंकनेवाला, पहलवान ।
फेट—स्त्री० देखो 'फेंट', ( उदे० 'ढीठो' ) ।
फेद—पु० फेंटा '…जऊबन बाँधल फेद ।' विद्या० १२२
फेद,फेन—पु० बुद्‌बुद-राशि । झाग । मक्खन 'सूर स्याम जिनके सँग डोलत, हँसि बोलत मथि पियत हैं फेनु ।' सू० ७५
फेनल,फेनिल—वि० फेनयुक्त । फेनसे सम्बद्ध, फेनका ।
फेना—देखो 'फेन' ( साकेत ३९० ) ।
फेनी—स्त्री० एक तरहकी मिठाई 'माठ पिराकैं फेनी । [ पापर ।' प० २९५
फेफड़ा—पु० साँस लेनेकी थैली ।
फेफड़ी,फेफरी—स्त्री० देखो 'फिफरी', (सूबे० २७९) ।
फेर—पु०चक्कर । परिवर्तन । उलझन । धोखा । धूर्तता । अन्तर । उपाय । हानि । तरफ,दिशा । क्रिवि० फिर,पुनः ।
फेरना—सक्रि० घुमाना ( उदे० 'कुन्द' ) । लौटाना 'नतरु फेरियहिं बन्धु दोउ नाथ चलउँ मैं साथ ।' रामा० ३२७ । वापस लेना । पोतना । बदलना । घोषित करना । यहाँसे वहाँतक स्पर्श कराना या ले जाना 'आना काटर एक तुखारू । कहा सो फेरौ, भा असवारू ।' प० १२९
फेरफार—पु० परिवर्तन । चक्कर । अन्तर ।
फेरा—स्त्री०घेरा,मडल,लपेट 'तुलसीके अवलम्ब नामको, एक गाँठि कई फेरे ।' विन० ५१९ । परिक्रमण, इधर उधरसे आना । लौटकर आना ( कबीर १६९ ), 'पिय जो गये पुनि कीन्ह न फेरा ।' प० १६५
फेराफेरी—स्त्री० क्रम-परिवर्तन, उलटपलट ।
फेरि—क्रिवि० पुनः, फिर ।
फेरी—स्त्री० परिकमा, चक्कर ।
फेरीवाला—पु० फेरी लगाकर चीजें बेचनेवाला ।
फेरु—पु० गीदड़ ( उदे० 'फेंकरना' ) ।
फेल—वि० अनुत्तीर्ण, जो पास न हुआ हो । पु० कार्य ।
फेलो—पु० सभ्य, सदस्य ।
फेल्ट—पु० जमाया हुआ ऊन ।
फेहरिस्त—स्त्री० सूची, तालिका ।
फैंसी—वि० अच्छी काट छाँटवाला, देखनेमें सुन्दर ।
फैज—पु० उदारता, कृपा ( सेवा० ८८ ) ।
फैयाज़—वि० उदार ।
फैयाज़ी—स्त्री० उदारता ।
फैल—पु० खेल, मकर, ढोंग । कार्य ( दास ६५ ) । विस्तार, राशि 'जेते हैं पहार भुव पारावार माहिं तिन सुनके अपार कृपा गहे सुख फैल है ।' भू० २५, 'सक्र जिमि सैलपर अर्क तम फैलपर ''।' भू० १६७
फैलना—सक्रि० छितराना । विस्तृत होना, एक जगहसे दूसरी जगहतक बना रहना । व्याप्त होना, भरना । बढ़ जाना, दूरतक पहुँचना ।
फैलाना—सक्रि० छितराना । विस्तृत करना, पसारना । व्यापक करना । बढ़ाना, दूरतक पहुँचाना ।
फैलाव—पु० विस्तार, प्रचार, प्रसार ।
फैशन—पु० चाल, प्रथा, ढंग ।
फैसला—पु० निबटेरा, निर्णय ।
फौंक—पु० वाणका नुकीला भाग ( प० २५१ ) ।
फौंदा—पु० झब्बा, फुँदना ( सूबे० २३६ ) ।

फोंफर—वि० खोखला, निस्सार ।
फोंफी—स्त्री० पोली नली, छूँछी ।
फोक—पु० सारहीन अंश, भूसी ।
फोकट—वि० निस्सार, तुच्छ, जिसका कोई मूल्य न हो 'अलि चलि औरै ठौर दिखावहु अपनो फोकट ज्ञान ।' [ सूबे० ३६८
फोकला—पु० ऊपरी छिलका ।
फोकली—स्त्री० ऊपरी छिलका ।
फोका—पु० बुद्बुद ( विद्या० ४ ) ।
फोट—पु० स्फोट ( अ० १०८ ) ।
फोटक—दे० 'फोकट' ( कविता० २१२ पाठ० ) ।
फोटा—पु० बूँद, बिन्दी, टीका 'ललाट पावक नहिं, सिन्दुरक फोटा ।' विद्या० ६०
फोटो,-ग्राफ—पु०छाया-चित्र, फोटोसे लिया हुआ चित्र।
फोटोग्राफर—पु० फोटोका काम करनेवाला ।
फोड़ना—सक्रि०तोड़ना, भेदन करना, नष्ट भ्रष्ट करना । साथ छुड़ाना, फूट डालना ।
फोड़ा—पु० घाव, व्रण ।
फोड़िया—स्त्री० छोटा व्रण, फुन्सी । [ अंडकोश ।
फोता—पु० पगड़ी । पटुका । कोष, थैली । लगान ।
फोतेदार—पु० पोतदार, कोषाध्यक्ष ।
फोनोग्राफ—पु० एक बाजा ।
फोया—पु० किसी चीजमें तर किया हुआ रुईका टुकड़ा, [ फाहा ।
फोरना—सक्रि० देखो 'फोड़ना' ।
फोहा—पु० देखो 'फाहा' ।
फोहारा, फौआरा—दे० 'फुहारा' ।
फौज—स्त्री० सेना । झुण्ड ।
फ़ौजदार—पु० सेनापति, टुकड़ीका नायक ।
फ़ौजदारी—स्त्री० मारपीट, झगड़ा ।
फ़ौजी—वि० सेना सम्बन्धी, सैनिक ।
फौत—वि० मृत, नष्ट । [ सम्बन्धी ।
फौती—स्त्री० मृत्यु या मृत्युकी खबर । वि० मृत्यु
फ़ौरन—क्रिवि० उसी क्षण, तुरन्त ।
फौलाद—पु० पक्का लोहा ।
फौवारा—पु० देखो 'फुहारा' ।
फ्रॉक—पु० एक तरहका लम्बा कुरता ।
फ्रायड—पु० ईसाकी बीसवीं शतीका प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक
फ्रेंच—वि० फ्रांस देशीय, फ्रांस देशका ।
फ्रांसीसी—देखो 'फरासीसी' ।

---

# ब

बंक—वि० वक्र, टेढ़ा, कुटिल 'बंक हिये न प्रभा सँरसीसी । कर्दम काम कछू परसीसी ।' के० ६२ । क्रिवि० वक्र रूपसे, तिरछी नज़रसे 'जब तू इत उत बंक विलोकति होत निसापति फीको ।' सू० ११०
बंकट—वि० देखो 'बंक' । 'बंकट भौंह चपल अति लोचन बेसरि रस मुकुताहल छायो ।' सू० १६१, (अ० ५१)
बंका—वि० बाँका, टेढ़ा, वीर, बढ़िया 'तिन्हतें अधिक रम्य अति बंका । जग विख्यात नाम तेहि लंका ।' रामा० ९९ [*छई है ।' दास ११, ( बि० १३३ ) ।
बंकाई,बंकुरता—स्त्री०टेढ़ापन '...बंकुरता अँखियानि*
बंकिम—वि० टेढ़ा ।
बँकैअन—क्रिवि० घुटनोंके बल ( दास ३० ) ।
बंग—पु० बंगदेश, बंगाल । एक पौष्टिक ओषधि 'साधव वैरागी जड़ बंग ।' सू० (व्रज० १५६) । देखो 'बाँग', ( कबीर १०७ ) ।
बँगला—वि० बंगाल सम्बन्धी, बंगालका । पु० छोटा हवादार चारों ओर खुला मकान ( उदे० 'कमनी') । बंगालका पान । स्त्री० बंगालकी भाषा ।
बंगली—स्त्री० देखो 'बंगुरी' ।
बंगा—वि० वक्र, उद्दण्ड, अज्ञानी 'राम मनुज कस रे सठ बंगा । धन्वी कामु नदी पुनि गंगा ।' रामा०*
बंगालिन—स्त्री० बंगालमें रहनेवाली स्त्री । [ *४६३
बंगाली—पु० बंगालका रहनेवाला । स्त्री० बंगालियोंकी [ भाषा, बँगला ।
बंगुरी—स्त्री० हाथका एक गहना ।
बंचक—पु० छलिया, पाखण्डी 'बंचक भगत कहाइ रामके ।' रामा० ११
वंचकता, वंचकताई, वंचनता—स्त्री० ठगी, धूर्त्तता ।
वंचना—स्त्री० छल, धूर्त्तता । सक्रि० ठगना ।

वँचवाना—सक्रि० पढ़वाना ।
वंचित—दे० 'वंचित' ।
वंछना—अक्रि० वाञ्छा करना, चाहना 'सुन्दर तोहि विषय सुख वंछत घोड़े गये पै वगै न गई जू ।' सुन्द० १६
वंछनीय—वि० वांछनीय, अभिलषणीय ।
वंजर—पु० अनुपजाऊ भूमि, ऊसर । वि० अनुपजाऊ ।
वंजारा—पु० व्यापारी 'सूरश्याम अंचल गहि झरकी जैहो कहाँ वँजारिन ।' सूवे० १४५
वंजुल, वंजुलक—पु० अशोक वृक्ष (राम० ४९) । बेंत ।
वंझा—वि० स्त्री० बाँझ ( स्त्री ) सन्तानहीन । स्त्री० बाँझ स्त्री ।
वँटना—अक्रि० विभक्त होना, अलग अलग दिया जाना ।
वँटवाना—सक्रि० वितरण कराना । पिसवाना ।
वँटवारा—पु० बाँटनेका काम, विभाग ।
वंटा—वि० बौना, छोटे आकारका । पु० डबिया ।
वँटाई—स्त्री० बाँटनेकी क्रिया, बाँटनेकी मजदूरी ।
वँटाना—सक्रि० हिस्सा कराना । ( दुःखादिमें) सम्मिलित होना ।
वँटावन—पु० भाग करानेवाला । साथमें भोगनेवाला ।
वंडल—पु० पुलिन्दा । [ पूँछ कट गयी हो ।
वंडा—पु० एक कंद । अनाज भरनेकी जगह । वि० जिसकी
वंडी—स्त्री० कुरती, फतुही ।
वँडेरी—स्त्री० मँगरे परकी लकड़ी ।
वंद—पु० बन्धन, तनी, बाँध, कैद 'फँसी फ़ौजमें बन्द बिच हँसी सवन तनु हेरि ।' वि० ९१ । देहके अंगोंका जोड़ । वि० विरा हुआ, गतिहीन, स्थगित, जो खुला न हो, जो क़ैदमें हो ।
वंदगी—स्त्री० सेवा, पूजा ( उदे० 'तसवीह' ), सलाम ।
वंदन—पु० प्रणाम । ईंगुर, सिंदूर 'मुंडन भुरके देखिय वदन ।' राम० १६ । रोली । वंदनवार 'घर घर वंदन रचे, दुवारा ।' प० १३१ [ ४की योग्यता ।
वंदनता—स्त्री० वंदनीयता, पूजित या आदृत किये जाने-
वंदनवार—पु० पत्तों आदिकी झालर जो किसी उत्सव या शुभ कृत्यके समय द्वारपर लगायी जाती है, तोरण ।
वंदना—सक्रि० प्रणाम करना 'वंदउँ गुरु पद पदुम-परागा ।' रामा० ४ । स्त्री० प्रणाम, स्तुति ।
वंदनी—स्त्री० सिरवन्दी नामक गहना । वि० वन्दनीय ।
वंदनीमाल—स्त्री० पैरोंतक लटकनेवाली माला ।
वंदर—पु० कपि, मर्कट । बन्दरगाह ।
वंदरगाह—पु० जहाज़के ठहरनेकी जगह ।
बंदवान—पु० बन्दीगृहका रक्षक, दारोगा 'हब्सी बँदवाना जिउ-बधा । तेहि सौंपा राजा अगिदधा ।' प० २८९
वंदसाल—पु० बन्दीशाला, क़ैदखाना ।
वंदा—पु० सेवक । 'मैं'-सूचक शब्द । क़ैदी ।
वंदारु—वि० आदरणीय, वन्दनीय ।
वंदि—स्त्री० क़ैद (सूसु० २), बन्धन । पु० बन्दी, क़ैदी । चारण ( उदे० 'टेरना' ) । वंदिगृह=क़ैदखाना ।
वंदिछोर—दे० 'वंदीछोर' ( प० ३०९ ) ।
वँदिया—स्त्री० सिरपर पहननेका एक गहना ( ब्रज० ५८३ ) । [ * युक्ति, प्रबन्ध ।
वंदिश—स्त्री० बाँधनेकी क्रिया, बन्धन, रुकावट, योजना,*
वंदी—पु० कैदी । चारण, भाट । स्त्री० बाँदी, दासी । देखो 'वँदिया' ।
वंदीखाना, -गृह, -घर—पु० कारागार, कैदखाना ।
वंदीछोर—पु० बन्धनसे छुड़ानेवाला ( साखी १२ ) ।
वंदीवान—पु० कैदी ।
वंदूक, वंदूख—स्त्री० अस्त्र-विशेष ( उदे० 'तरभर' ) ।
वंदूकची—पु० वह जो बन्दूक चलाता हो ।
वंदेरी—स्त्री० दासी ( प० ३१५ ) ।
वंदोबस्त—पु० व्यवस्था, प्रबन्ध ।
वंध—पु० बन्धन, बाँध, कैद ( दीन० ८१ ) । गाँठ । लगाव । निबन्ध, रचना, बनाव 'एक बार ही जहँ भयो बहु काजनको बन्ध ।' भू० १००
वंधक—पु० बाँधनेवाला । गिरवी, रेहन । विनिमय ।
वंधन—पु० बाँधनेकी क्रिया । कैद, रुकावट । हिंसा, वध । रस्सी ।
वँधना—अक्रि० बद्ध होना, कैद होना, फँसना । क्रम निश्चित होना । पु० एक तरहका टोंटीदार लोटा जिसे मुसलमान काममें लाते हैं, 'वधना', 'सदनाके बँधनाके पानीमें न मान्यो दोष'—छत्र प्रं० ३८ । पु० बन्धन ।
वंधनि—स्त्री० बन्धन, रोकने या उलझानेवाली वस्तु ।
वंधव—पु० देखो 'बांधव' ।
वँधवाना—सक्रि० देखो 'वँधाना' । [ ®'उघटना' ) ।
वंधान—पु० नियत परिपाटी । बाँध । तालका सम (उदे०®
वँधाना—सक्रि० बाँधनेमें प्रवृत्त करना, धारण कराना, कैद कराना 'प्रभु कारज लगि कपिहि बँधावा ।'

वंधिय—पु० सम्बन्धी (कबीर २७१)। [रामा० ४२५
वंधी—स्त्री० निश्चित प्रबन्ध, बँधा हुआ क्रम।
बंधु—पु० भाई, मित्र, आत्मीय। गुलदुपहरिया।
बँधुआ—पु० बन्दी, कैदी।
बंधुक, बंधुजीव—पु० दुपहरियाका फूल।
बंधुता—स्त्री०,-त्व—पु० भ्रातृभाव, मित्रता।
बंधुर—पु० मुकुट। दुपहरियाका फूल। हंस। बगला। बहरा मनुष्य। वि० सुन्दर। टेढ़ा-मेढ़ा, दुर्गम 'अन्यथा यहाँ क्या? अन्धकार वंधुरपथ, बंकिलसरि,* *कुमार।' तुलसीदास १३
बँधुवा—दे० 'बँधुआ'।
वंधूक, वंधूप—पु० दुपहरियाका फूल। 'किधौं सुभग बंधूप कुसुम पर, झलकत जलकन कांति।' सू० १२९ ( १११ भी, बधूक–सू० १३० )।
बंधेज—पु० नियत समयपर देनेकी क्रिया, रोकनेकी युक्ति। रुकावट।
बंध्या—वि० स्त्री० बाँझ।
वंध्यापुत्र—पु० कोई असम्भव बात।
बंपुलिस—स्त्री० म्युनिसिपलटीका आम पाखाना।
वंब—पु० बं बं शब्द। डंका, जुझाऊ ढोल (बीजक८४), रणनाद।
बंबा—पु० पानीका नल। पम्पा।
बँभनाई—स्त्री० ब्राह्मणत्व। हठ।
वंस—पु० वंश,कुल। बाँस। बाँसुरी (कविप्रि० १०३)।
बंसकार—पु० बाँसुरी।
बंसरी,बँसरी, बंसी—स्त्री० नलीका बना एक बाजा, मुरली। मछली पकड़नेका औज़ार।
बंसलोचन—पु० ओषधि-विशेष, बंसकपूर।
बँसवाड़ी—स्त्री० बाँसोंका बाग़ीचा।
वंसीधर—पु० मुरलीधर, श्रीकृष्ण।
बँहगी—स्त्री० भार ढोनेका एक साधन। काँवर।
बँहोलनी—स्त्री० अस्तीन ( रत्ना० १८८ )।
बइठना—दे० 'बैठना'।
बइर—पु० बैर, शत्रुता, द्वेष। वि० बहिरा, बधिर 'स्वामि धरम स्वारथहिं विरोधू। बइर-अंध प्रेमहिं न प्रबोधू।' रामा० ३३९
बउर—पु० बौर, आमकी मंजरी।
बउरा—वि० बाउर, बावला, पागल।
बउराना—अक्रि० बौराना, पागल होना।
बक—स्त्री० बकवाद ( उदे० 'ठक' )। पु० बगला। एक राक्षस। वि० बगला जैसा सफेद।
बकझक—स्त्री० बकबक, बकवास।
बकतर—पु० एक तरहका कवच।
बकता—पु० वक्ता, बोलनेवाला।
बकतार—पु० वक्ता ( दीन० १६२ )।
बकध्यानी—वि० देखनेमें सीधा, किन्तु वस्तुतः कपटी।
बकना—अक्रि० अनाप शनाप बात कहना, बड़बड़ाना ( उदे० 'आउबाउ' )।
बकबक—स्त्री० व्यर्थकी बात, बड़बड़।
बकमौन—वि० चुपचाप काम पूरा करनेवाला।
बकर-कसाब—पु० बकरोंके मांसका विक्रेता।
बकरना—अक्रि० अपने आप बकना, स्वीकार करना।
बकरा—पु० छाग, अज।
बकलस—पु० बकसुआ, बकिल।
बकला—पु० छिलका, छाल, वल्कल 'पहिरे बकला सुजटा धरि कै। निज पायन पंथ चले अरि कै।' राम०२२२
बकवाद—स्त्री० निरर्थक बात, बकबक।
बकवादी—वि० बकवाद करनेवाला, बक्की। [आदत।
बकवास—स्त्री० निरर्थक बातचीत। बकबक करनेकी
बकवृत्ति—पु० बगुले जैसा ध्यान लगानेवाला, स्वार्थी और चालाक आदमी। वि० चालाक, कपटी।
बकशीश, बकसीस—स्त्री० दान, इनाम (सूबे०२४९)।
बकस—पु० सन्दूक, पेटी, डिब्बा।
बकसना—सक्रि० देना 'भाऊ दिवान उदार अपार सजीव पहार करी बकसे हैं।' ललित० ४४। क्षमा करना 'ढीठो बहुत कियो हम तुमसों सो बकसो हरि चूक हमारी।' सूबे० १६५, ( भ्र० ५५, सूसु० १०८ )।
बकसाना—सक्रि० क्षमा कराना।
बकसुआ, सुवा—पु० किसी बन्धनके दो टुकड़ोंको कसनेका पीतल इ० का चौकोर टुकड़ा।
बकाइन—दे० 'बकायन'।
बकाउ—स्त्री० बकावली 'बकुचन बिनवौं रोस न मोही। सुनु, बकाउ तजि चाहु न जूही।' प० १८२
बकाउर—दे० 'बकावली'।
बकाना—सक्रि० बकबक कराना, रटाना (दीन० १७)।
बकायन—पु० नीमकी तरहका एक पेड़ (दीन० २०७)।
बक़ाया—वि० बाक़ी, शेष, बचत। पु० बाक़ी रक़म।
बकारि—पु० बकासुरका संहार करनेवाले श्रीकृष्ण।
बकावरी,-वली—स्त्री० एक पेड़ या उसका फूल ( उदे० 'बकुचा' )।

बकिनव—पु० बकायन, वृक्ष विशेष ( मति० २३८ ) ।
बकी—स्त्री० बकासुरकी बहिन, पूतना ।
बकुचन—स्त्री० हाथ जोड़ना । हाथसे पकड़ना ।
बकुचना—अक्रि० सङ्कुचित होना ।
बकुचा—पु० छोटीसी गठरी ( ककौ० ५४५ ), ढेर, गुच्छा 'कोइ सो बकावरि बकुचन भाँती ।' प० २६ । जुड़ा हुआ हाथ ( उदे० 'बकाउ' ) ।
बकुची—स्त्री० छोटी गठरी । एक छोटा पेड़ ।
बकुचौंहा—वि० बकुचेकी तरह ।
बकुरना—दे० 'बकरना' ( सूसु० १२१ ) ।
बकुराना—सक्रि० मुँहसे कहलाना, कबूल कराना ।
बकुल—पु० मौलसिरी । शिवजी ।
बकेन, बकेना—स्त्री०वह गाय या भैंस जिसका बच्चा एक वर्षसे ज्यादाका हो गया हो और जो बरदाई न हो, किन्तु दूध देती जाती हो ।
बकैयाँ—स्त्री० घुटनोंके बल चलना 'धावत बकैयाँ है चिरैया गहिवेको कबौं'–रामरसायन
बकोटना—सक्रि० खसोटना, नोंचना ।
बकोरी, बकौरी—स्त्री० बकावली 'सुरँग गुलाल कदम औ कूजा । सुगँध बकौरी गन्ध्रव पूजा ।' प० १५, ( उदे० 'गौरी' )
बकौंड़ा—पु० पलाशकी कूटी हुई जड़ ।
बक्कल—पु० छाल, बकला ।
बक्काल—पु० आटा, दाल, चावल इ०वेचनेवाला,बनिया ।
बक्की—वि० बकबक करनेवाला ।
बक्कुर—पु० वाक्य, वचन, बोल ।
बक्षोज—पु० वक्षोज, उरज, कुच 'हके ओढनी लंक वक्षोज जानो ।' राम० २५१
बखत—पु० समय ( उदे० 'अटोक' ) । भाग्य 'वंश सम बखत, बखत सम ऊँचो मन ···' ललित० ३४
बखतर—पु० कवच ( उदे०'कूँड' ) ।
बखरा—पु० भाग, हिस्सा ।
बखरी—स्त्री० पक्का सुडौल मकान ।
बखरैत—पु० हिस्सेदार ।
बखसीस—स्त्री० देखो 'बकसीस' ।
बखसीसना—सक्रि० देना ।
बखान—पु० वर्णन, बड़ाई ( दीन० १९६ ) । [ देना ।
बखानना—सक्रि० वर्णन करना, बड़ाई करना । गाली

बखार—पु० अन्न रखनेका घिरा हुआ स्थान ।
बखिया—स्त्री० एक तरहकी सिलाई ।
बखियाना—सक्रि० बखिया करना ।
बखीर—स्त्री० चीनी या ईखके रसमें पकाया हुआ चावल ।
बखूबी—क्रिवि० पूर्णतया, भलीभाँति ।
बखेड़ा—पु० झगड़ा, झञ्झट । आडम्बर ।
बखेड़िया—पु० बखेडा करनेवाला, झगड़ालू ।
बखेरना—सक्रि० छितराना, बिखराना ।
बखोरना—सक्रि० छेड़छाड़ करना, टोकना ।
बख्त—पु० समय । भाग्य ।
बख्तर—पु० कवच ।
बख्शना—सक्रि० देना । क्षमा करना, छोड़ना ।
बख्शिश, बख्शीश—स्त्री० दान । उदारता । क्षमा ।
बग—पु० बगुला 'जदपि पुराने बग तऊ सरवर निपट कुचाल ।' बि० ( उपस्क० ४० )
बगई—स्त्री० कुकुरमाछी ।
बगछुट,·टुट—क्रिवि० बड़े जोरसे बेतहाशा ।
बगदना—अक्रि० गिर पड़ना । बिगड़ना, बहकना ।
बगदर—पु० मच्छड़ ( बुन्देल० ) ।
बगदहा—वि० बहकनेवाला, बिगड़ैल ।
बगदाना—सक्रि० गिराना, च्युत कराना, ढकेलना, [ बिगाड़ना ।
बगना—अक्रि० टहलना, घूमना फिरना ।
बगनी—स्त्री० एक घास ।
बगमेल—पु० बाग मिलाकर चलना, पंक्तिबद्ध सवारोंका धावा ( उदे० 'बिरञ्चना' ), "भइ बगमेल, सेल घन घोरा ।' प० ३२० । बराबरी । क्रिवि० बाग मिलाये हुए, साथ साथ 'आइ गये बगमेल धरहु धरहु धावत सुभट ।' रामा० ३७२
बगर—पु० महल, बड़ा घर 'नन्द महरके बगर तन अब मेरै को जाइ ।' रतन० २४ । कोठरी ( उदे० 'अगर मगर' ) । आँगन । गायें बाँधनेकी जगह, गोशाला ( उदे० 'गोधन' । स्त्री० बगल, बाजू ।
बगरना—अक्रि० बिखरना, फैलना ( उदे० 'कलोर' ), '··· बननमें, बागनमें, बगरो बसन्त है ।' पद्माकर
बगराना—सक्रि० फैलाना, छिटकाना ( सू० ५२ ), 'उपमागन उपजाय हरि बगराये ससार ।' के० २४१। अक्रि० फैलना, बिखरना 'बेनी छूटि लटैं बगरानी मुकुट लटकि लटकानो ।' सूबे० २०७

बगरी—स्त्री० बखरी, मकान । पु० एक तरहका धान ।
बगरूरा—पु० बवण्डर ( राम० २६८ ) ।
बगल—स्त्री० काँख, बाजू, पासकी जगह ।
बगलबंदी—स्त्री० एक तरहकी मिरजई ।
बगला—पु० एक पक्षी, बक ।
बगलियाना—अक्रि० बगलसे निकल जाना, अलग हट-* कर जाना । [ *नीचेका टुकड़ा ।
बगली—स्त्री० दर्जीकी थैली । कुरते आदिमें कन्धेके
बगलैंदी—स्त्री० एक चिड़िया ( प० १४ ) ।
बगसना—दे० 'बकसना', ( छत्र० १६३ ) ।
बगा—पु० बागा, जामा । बगुला 'बगा ढँढोरै माछरी हंसा मोती खाहिं ।' साखी ९०
बगाना—सक्रि० घुमाना, सैर कराना 'कोमल कमल हू ते चरन बगायो बन' ' रघु० ८४ । अक्रि० भागना 'कुत्ता कोतवालको, बगानो बगमेलामें ।' ककौ०५१०
बगार—पु० गायोंको बाँधनेकी जगह ।
बगारना—सक्रि० बिखराना, फैलाना 'कुम्भकर्ण उठि बैठि सेजपर मुख बगारि जमुहाना । रघु० २३९,
बग़ावत—स्त्री० विद्रोह, बलवा । [ ❀(छत्र० ४)
बगिया—स्त्री०फुलवाड़ी, बाग़ीचा (रहि०विनो०६६)। ❀
बगीचा—पु० बाग़, उपवन ।
बगीची—स्त्री० छोटा बाग़ ( रत्ना० ३८४ ) ।
बगुदा—पु० एक शस्त्र ( छत्र० ३६ ) ।
बगुला—पु० बक पक्षी । [ *पाखण्डी, कपटी ।
बगुलाभगत—पु० धर्मका आडम्बर रचनेवाला । .वि०
बगूरा—दे० 'बगूला', ( उदे० 'छहराना' ) ।
बगूला—पु० बवण्डर, तूफान 'आया बगूला प्रेमका तिनका उड़ा अकास ।' साखी ४८
बगेदना—सक्रि० धक्का देकर गिरा देना, विचलित करना 'बहि बासमयी यह सीरी बयार बिनोदन हूँ को बगेदत है ।' कलस २१६
बगेरी—स्त्री० एक चिड़िया ( प० २६९ ) ।
बग़ैर—अ० बिना ।
बग्गी, बग्घी—स्त्री० एक तरहकी घोड़ागाड़ी ।
बघंबर—पु० व्याघ्रका चमड़ा ।
बघछाला—स्त्री० बाघका चमड़ा ( उदे० 'उदपान' )
बघनहाँ—पु० व्याघ्रके पंजेकी तरहका एक हथियार । एक गहना ( उदे० 'कठुला' ) ।

बघनहियाँ—स्त्री०,बघना—पु०एक गहना, बघनहाँ,❀
बघबार—पु० बाघकी मूँछके बाल ( भ्र० ८४ ) ।
बघरूरा—पु० देखो 'बगूला' । [ ❀(सू० ५३) ।
बघार—पु० छौंक, तड़का 'करुए तेल कीन्ह बसवारू । मेथी कर तब दीन्ह बघारू ।' प० २७२
बघारना—सक्रि० छौंकना ( उदे० 'भरदावा' ) । अपनी योग्यता आदिकी ज्यादा चर्चा करना ।
बघूरा—पु० बवण्डर 'ठौर ठौर जनु उठे बघूरे ।' छत्र० ११८, ( सुन्द० ४७ ) ।
बच—पु० वचन, बात । स्त्री० एक औषध ।
बचका—पु० एक पकवान ( उदे० 'खंडरा' ) ।
बचकाना—वि० बच्चोंके योग्य । छोटी उम्रका ।
बचत—स्त्री० बचा हुआ अंश, लाभ । रक्षा ।
बचन—पु० बात, वाक्य, प्रतिज्ञा ।
बचना—अक्रि० शेष रहना । अलग रहना । रक्षित❀
बचपन—पु० लड़कपन । [❀रहना । सक्रि० कहना ।
बचवैया—पु० रक्षक, त्राता ।
बचा—पु० बच्चा, बालक ।
बचाना—सक्रि०शेष रहने देना । छिपाना । अलग रखना ।❀
बचाव—पु० रक्षा, छुटकारा । [ ❀रक्षा करना ।
बच्चा—पु० बालक, शिशु । वि० अज्ञान ।
बच्चादान—पु०, बच्चादानी—स्त्री० गर्भाशय ।
बच्ची—स्त्री० बालिका । पायजेब इ० का घुँघरू । (ग्राम० ४२६ ) ।
बच्छ—पु० वत्स, बच्चा, बछड़ा 'निरखि बच्छ जिमि धेनु लवाई ।' रामा० ५३९ । ढाल, वक्ष, छाती । 'सनमुख घाउ बच्छपर ओड़ौ ।' छत्र० १३३, ( ९८ भी ) ।
बच्छल—वि० वत्सल, स्नेह या अनुग्रह करनेवाला ।
बच्छस—पु० वक्षःस्थल ।
बच्छा, बछ—पु० बछड़ा ( उदे० 'कमरिया' ) ।
बछड़ा—पु० गायका बच्चा ।
बछरा, बछरुआ,बछरू—पु०बछड़ा 'माखन खाइ जगाइ बालकन्ह बनचर सहित बछरुवा छोरी ।' सूबे० ६५, 'बछरा न पीवैं छीर...'—सू० ८४ ।
बछल—वि० देखो 'बच्छल' ।
बछवा, बछा—पु० बछड़ा 'जमुनाजल थकित भयो बछा न पीवें छीर । सूर० मदन०
बछेड़ा—पु० घोड़ीका बच्चा ।

बछेरू—पु० बछड़ा, बच्चा 'केशोदास मृगज-बछेरू चोषैं बाघिनीन चाटत सुरभि बाघ बालक बदन है। राम० ५१८ [ *कहा बजावै बीन।' दीन० २३९

बजंत्री—पु० बाजा बजानेवाला 'अहे बजंत्री हरिन-भ्रम *

बजकना—अक्रि० सड़कर पिलपिला हो जाना और बुलबुले फेंकना, बजबजाना।

बजका—पु० एक तरहकी बड़ी पकौड़ी।

बजट—पु० आय व्ययका अनुमानपत्र।

बजड़ा—पु० एक तरहकी पटी हुई नाव। बाजरा।

बजना—अक्रि० शब्द निकलना। आघात पड़ना। हठ करना। जाहिर होना, प्रसिद्ध होना, 'नाहीं कछु फलफूल तो बज्यो नाम मंदार।' दीन० ९९

बजनियाँ, बजनिहाँ—पु० बाजा बजानेवाला।

बजबजाना—अक्रि० सड़ने इ० के कारण झागका उठना।

बजमारा—वि० बज्राहत जिसपर वज्र पड़ा हो। दुष्ट 'नास होइ अक्रूर क्रूर तेरो बजमारे।' सत्यना०

बजरंग—वि० वज्रके समान शरीरवाला। पु० महावीर [ जी।

बजर—पु० वज्र।

बजरबट्टू—पु० एक फल या बीज जो नजर लगनेसे बचानेके लिए बच्चोंके गलेमें पहना दिया जाता है।

बजरा—पु० देखो 'बजड़ा'।

बजरी—स्त्री० छोटा कँगूरा। ककड़ी। ओला।

बजरागि—स्त्री० वज्राग्नि, बिजली।

बज्री—पु० इन्द्र।

बजवाई—स्त्री० बजानेकी मजदूरी।

बजवाना—सक्रि० बजानेमें प्रवृत्त करना।

बजवैया—पु० बजानेवाला।

बजा—वि० उचित। बजा लाना=पालन करना।

बजाइ—अ० डंका पीटकर।

बजागि, बजागिन—स्त्री० वज्राग्नि, बिजली 'तेहिके जरत जो उठै बजागी। तीनिउँ लोक जरैं तेहि लागी।' प० ९५, ( प० १७०, कविप्रि० ९९ )।

बज़ाज़—पु० कपड़ेका व्यापारी।

बज़ाज़ा—पु० वह जगह जहाँ बजाजोंकी दूकानें हों।

बज़ाज़ी—स्त्री० कपड़ा बेचनेका व्यापार। बज़ाज़ा।

बजाना—सक्रि० चोट पहुँचाकर शब्द उत्पन्न करना, चोट पहुचाना। पूरा करना। बजाकर = डंका पीटकर, प्रकट रूपसे।

बजाय—अ०बदलेमें,स्थानपर। देखो 'बजाइ'(सूसु०१७)।

बज़ार—पु० हाट।

बजारी—पु० बकवादी, सचको झूठ और झूठको सच बनानेवाला (कविता० १८६)। वि० देखो 'बजारू'।

बजारू—वि० हाट सम्बन्धी। मामूली।

बज्जर, बज्र—पु० वज्र।

बज़ात—वि० पाजी, दुष्ट, नीच।

बझना—अक्रि० फँसना, बँधना, टेक करना।

बझाउ—पु० अटकाव, उलझन ( विन० ४३८ )।

बझाना, बझावना—सक्रि० फँसाना।

बझाव—पु० बझावट—स्त्री० देखो 'बझाउ'।

बट—पु० वट वृक्ष। बटा, गोल वस्तु। रस्सीकी ऐंठन। बड़ा नामका पकवान। बटखरा। बाट, मार्ग। बाँट, हिस्सा' ' मृदु मुसकनि मेरे बट आई।' नारायण स्वामी

बटई—स्त्री० बटेर।

बटखरा—पु० लोहे इ० का बना तौलनेका टुकड़ा, बाँट।

बटन—पु० सीप इ० की बनी घुंडी। स्त्री० ऐंठन।

बटना—सक्रि० ऐंठना, ऐंठन देकर मिलाना। अक्रि० पिसना 'बटै कुटै न तजै तऊ केसर रंग सुबास।' रतन० ११। पु० उबटन।

बटपरा, बटपार, बटमार—पु० लुटेरा, डाकू 'तौ श्रम लोक सबै जग जातो जु काम बड़ो बटपार न होतो। के० ६५, (बटपार, प० २२३),'मन धन लूटत सहज मैं लाल बटपरा नैन।' रतन० ३०

बटपारी—स्त्री० लूट, डकैती (प० २२३, सुन्द० १९)।

बटला—पु० बटलोई, देगची।

बटली, बटलोई—स्त्री० बटुई, पतीली, देगची।

बटवार—पु० रास्तेपर चौकसी करनेवाला, रास्तेका कर लेनेवाला।

बटा—पु० गेंद, गोला 'सोहत है अध ऊरध ऐसे। होत बटा नटको नभ जैसे।' के० ३७०, ( दास १६६ )। ढेला। बटाऊ, पथिक।

बटाई—स्त्री० बटनेका काम या बटनेकी मजदूरी।

बटाऊ—पु० बटोही, पथिक 'सहज बटाऊ बाटके मिलि मिलि बिछुड़त जाइ।' सहजोबाई

बटाक—वि० बड़ा।

बटाना—अक्रि० रुक जाना, पटा जाना 'सात दिवस जल बरसि बटान्यो…'—सू०

वटिया—स्त्री० छोटा गोला, लोढ़िया। रास्ता 'जाकी जिभ्या बन्द नहिं हिरदे नाहीं साँच। ताके सँग ना लागिए, घालै वटिया काच।' साखी ११२
बटी—स्त्री० गोली। बाटिका। एक पकवान, 'बरी'।
बटुआ—पु० गोल थैली। बटलोई।
बटुई—स्त्री० बटली, देगची।
बटुक—पु० ब्रह्मचारी, विद्यार्थी। लवंग।
बटुरना—अक्रि० संचित होना, इकट्ठा होना, सिमटना।
बटुरी—स्त्री० एक कदन्न, मोट।
बटुला—पु० बड़ी बटुई।
बटुवा—दे० 'बटुआ'। एक तरहका मांस (प० २७१)।
बटेर—स्त्री० लवाकी तरहकी एक चिड़िया।
बटेरबाज़—पु० बटेर पालनेवाला।
बटोर—पु० जमाव, समूह।
बटोरन—पु० बटोरकर इकट्ठा किया हुआ कूड़ा इ०।
बटोरना—सक्रि० एकत्र करना, समेटना (उदे०'ताग')।
बटोहिया, बटोही—पु० पथिक (सू० ३२)।
बट्ट—पु० गेंद, बटा। ऐंठन, शिकन। बटखरा।
बट्टा—पु० दस्तूरी (सू० ११)। घाटा, कमी। पत्थरका टुकड़ा, लोढ़ा।
बट्टा खाता—पु० डूबी हुई रक़मकी मद।
बट्टाढाल—वि० खूब चौरस और चिकना।
बट्टी—स्त्री० कूटने इ० का छोटा पत्थर। गोल या चौकोर टुकड़ा, टिकिया।
बट्टू—पु० धारीदार चारखाना। बजरबट्टू। बटा, गोला 'नागरिया जगमें वे उछरत, जेहि बिधि नटके बट्टू।' [नागरी०
बट्टेबाज—वि० जादूगर। चालाक।
बड़ंगा—पु० छाजनके बीचकी लम्बी लकड़ी।
बड़—पु० वट वृक्ष। स्त्री० बकवाद। वि० बड़ा।
बड़क—क्रिवि० बढ़कर 'कायर बहुत पमावही, बड़क न बोलै सूर।' साखी २४
बड़का—वि० बड़ा।
बड़कुइयाँ—स्त्री० कच्चा कुआँ।
बड़प्पन—पु० महत्ता, श्रेष्ठत्व, बड़ाई।
बड़ बड़—स्त्री० प्रलाप, बकबक।
बड़बड़ाना—अक्रि० बकबक करना।
बड़बड़िया—पु० बड़बड़ करनेवाला, बकवादी।
बड़बेरी—स्त्री० जङ्गली बेर। [*वाला (उदे० 'कूट')।
बड़बोल—वि० ज़्यादा बातें करनेवाला, डींग हाँकने-*
बड़भागी—वि० भाग्यवान्।
बड़रा—वि० बड़ा 'ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि आँखिन को सुख होत।' रहीम १५
बड़वा—स्त्री० घोड़ी (कविप्रि० २९८)।
बड़वागि,-ग्नि,स्त्री०-नल—पु०समुद्रके भीतरकी अग्नि।
बड़वार—वि० बड़ा।
बड़वारी—स्त्री० बड़प्पन, बड़ाई 'भनत परस्पर वचन सकल ऋषि नृप विदेह बड़वारी।' रघु० ८२
बड़हन—पु० धानका एक भेद (प० २७१)
बड़हर, बड़हल—पु० एक फल।
बड़हार—पु० पाणिग्रहणके दूसरे दिनका भोज।
बड़ा—पु० उर्दकी पीठीका बना एक पकवान। वि० विशाल, दीर्घ। वय, गुण, परिमाण, पद आदिमें अधिक या श्रेष्ठ। महत्त्वका, बढ़कर।
बड़ाई—स्त्री० बड़प्पन, उच्चता, प्रशंसा।
बड़ी—स्त्री० बरी, कुम्हड़ौरी।
बड़ेरर—पु० बवण्डर, अन्धड़। [*बीचकी लकड़ी।
बड़ेरा—वि०बड़ा (उदे०'अनेरा'), प्रधान। पु०छाजनमें*
बड़ेरी—स्त्री० देखो 'बड़ेरा-पु०' (गुलाब ४९९)।
बड़ौना—पु० प्रशंसा, बड़ाई (प० १४७)।
बढ़—स्त्री० बढ़ती। वि० बढ़ा हुआ।
बढ़ई—पु० लकड़ीका काम करनेवाला।
बढ़ती—स्त्री० वृद्धि, अधिकता।
बढ़ना—अक्रि० परिमाण आदिमें अधिक होना, उन्नति करना, अग्रसर होना। दूकान आदिका बन्द किया जाना। (दीपक) बुझना 'बारे उजियारो लगै, बढ़े अँधेरो होय।' रहीम १६ [*या रुपया।
बढ़नी—स्त्री० झाड़ू (उदे०'कतवार')। पेशगी अन्न*
बढ़वारि—स्त्री० बढ़ती, वृद्धि।
बढ़ाना—सक्रि० वृद्धि करना, फैलाना, आगे ले जाना, परिमाण आदिमें अधिक करना। बन्द करना, बुझाना अक्रि० चुक जाना, खतम हो जाना 'सात दिवस जल बरषि बढ़ान्यो।' सूसु० १८४
बढ़ाव—पु० बढ़नेकी क्रिया या भाव, आधिक्य, वृद्धि, [विस्तार।
बढ़ावा—पु० प्रोत्साहन, उत्तेजना।
बढ़िया—वि० उत्तम, सुन्दर, बहुमूल्य। पु० बाढ़ 'जिनहिं छाँड़ि बढ़िया महँ आये, ते बिकल भये जदुराय।' [भ्र० १४५
बढ़ेला—पु० जङ्गली सुअर।

वढ़ैया—पु० बढ़ई। बढ़ानेवाला।
वढ़ोतरी—स्त्री० उन्नति, बढ़ती।
वणिक, वणिज्—पु० वनिया, व्यापारी। वणिज = [व्यापार।
वतक, वतख—स्त्री० एक जलपक्षी।
वतकहाव—पु० कहा-सुनी, बातचीत।
वतकही—स्त्री० बातचीत, चर्चा 'एहि विधि होत बत-कही, आये वानर यूथ।' रामा० ४०६ [(अ०५०)।
वतचल—वि० बड़ी बड़ी बातें कहनेवाला, बकवादी।
वतबढ़ाव—पु० बात बढ़ाना, झगड़ा बढ़ाना।
वतर—वि० बदतर, खराब '.. एक नर ऊसर काँकरतें वतर हैं।' दीन० १५६
वतरस—पु० बात कहने सुननेका शौक 'बतरस लालच लालकी मुरली धरी लुकाय।' बि० १९५
वतरान—स्त्री० बातचीत, बोली '···कोऊ कहै सिसुकी सरस बतरानमें।' कलस ८५
वतराना—अक्रि० बातचीत करना 'हम जानी अब बात तुम्हारी सूधे नहिं बतराति।' सूबे० १३२, (उदे० 'काहीं')। सक्रि० बतलाना 'सो बतराय देहु ऊधो हमें, तुम हू तौ अति निपट सयाने।' भ्र० १२९
वतरौंहा—वि० बातचीतके लिए इच्छुक।
वतलाना, वताना—सक्रि० समझाना, दिखाना, जताना। अक्रि० देखो, 'बतराना'।
वतास—स्त्री० वात रोग। वायु 'ग्रथि न छूटि मिटा सो प्रकासा। बुद्धि विकल भई विषय बतासा।' रामा० ६०८
वतासा—पु० एक मिठाई (उदे० 'चाँवरी')। बुलबुला 'कछु दिन भोजन वारि बतासा।' रामा० ४६
वतिया—पु० छोटा नरम फल (उदे० 'कुम्हड़ा')।
वतिआना—अक्रि० बतराना, बात करना।
वतियार—स्त्री० वार्त्तालाप।
वतीसी—स्त्री० बत्तीसो दाँत 'जस भादौं-निसि दामिनि दीसी। चमकि उठै तस बनी बतीसी।' प० ४७
वतू—पु० कलाबत्तू।
वतौर—क्रिवि० समान। तरहपर।
वतौरी—स्त्री० सूजन, ददौरा 'उर पर कुच नीके लगैं अनत बतौरी आहि।' रहीम १५ [दो की संख्या।
वत्तिस, वत्तीस—वि० तीस और दो। पु० तीस और
वत्ती—स्त्री० रुई, कपड़े आदिका पतला लम्बा टुकड़ा, वर्त्ति। चिराग।
वत्तीसा—पु० बत्तीस चीज़ोंके मेलसे बना हुआ लड्डू।
वत्तीसी—स्त्री० देखो 'बतीसी'।
वथुआ—पु० एक साग।
वद—वि० बुरा। स्त्री० गिल्टी। बदला।
वदइंतज़ामी—स्त्री० बुरी व्यवस्था, कुप्रबन्ध।
वदकार—वि० कुकर्मी, परस्त्री-गामी, लम्पट।
वदक़िस्मत—वि० अभागा, बदनसीब।
वदख़त—वि० बुरा लिखनेवाला। पु० बुरी लिपि।
वदख्वाह—वि० बुरा चाहनेवाला।
वदगुमान—वि० शककी नज़रसे देखनेवाला, अनुचित सन्देह करनेवाला।
वदगुमानी—स्त्री० व्यर्थका सन्देह।
वदगोई—स्त्री० बदनामी, निन्दा। चुगली।
वदचलन—वि० दुराचारी, कुमार्गगामी।
वदज़वान—वि० कटुभाषी, अशिष्ट भाषाका प्रयोग करने-[वाला।
वदज़ात—वि० नीच, खोटा, पाजी।
वदतमीज़—वि० अशिष्ट, बेहूदा, गँवार।
वदतर—वि० ज्यादा खराब, और भी गया-गुजरा।
वद-दयानती—स्त्री०···धोखेबाजी, विश्वासघात 'मुझसे इतनी बददयानी न होती' प्रेमचंद।
वददुआ—स्त्री० अमंगल-कामना, अभिशाप।
वदन—पु० मुख। कथन। शरीर।
वदनसीब—वि० भाग्यहीन, बदक़िस्मत।
वदना—सक्रि० कहना 'विप्र वदत बहु बदि बदि बाता।' रघु० १९४। मान लेना, ठहराना, प्रेम बदौं प्रह्लाद-हिको जिन पाहनतें परमेश्वर काढ़े।'कविता०२३४,महत्व देना, समझना, गिनना, 'माई री मुरली अति गर्व काहू वदति नाहिं आजु।' सू० ७२, होड़ लगाना' नैनन होड़ वदी वरषा सों।' सू० २५९। निश्चित करना 'जो मधु पुरी गमन तुम पहिलेहि, बदि राखी मममाहीं।' हरि०
वदनाम—वि० कलंकित, निन्दित, कुख्यात।
वदनामी—स्त्री० अपयश, कलंक (उदे० 'तोव')।
वदनीयत—वि० जिसकी नीयत ख़राब हो। धोखेबाज़।
वदपरहेज—वि० जो कुपथ्य करे।
वदपरहेजी—स्त्री० कुपथ्य।
वदवू—स्त्री० दुर्गन्ध, खराब बास।
वदवूदार, वदवोयदार—वि० दुर्गन्धयुक्त।
वदमज़ा—वि० बुरे स्वादवाला, फीका, आनन्द-रहित।

बदमस्त—वि० मतवाला, कामुक ।
बदमाश—वि० दुराचारी, नीच, दुष्ट ।
बदमिज़ाज—वि० बुरे स्वभाववाला, चिड़चिड़ा ।
बदरंग—वि० बुरे रंगवाला, विवर्ण, भद्दा । पु० जिस रंगका (ताशका) पत्ता चलना चाहिये उससे भिन्न ।
बदर—पु० कपास । बेरका वृक्ष या फल 'विस्व बदर जिमि तुम्हरे हाथा ।' रामा०२५९ । क्रिवि० बाहर ।
बदराई—स्त्री० बदली ( उदे० 'गेरुई' ) ।
बदरा—पु० बादल, मेघ ( उदे० 'बदराह', सू० ४ ) ।
बदराह—वि० कुमार्गी, दुष्ट 'बदाबदी जिय लेत हैं ये बदरा बदराह ।' बि० ३२
बदरी—स्त्री० बेरका वृक्ष या फल । बदली, बादल 'ससि मनु बदरी ओटते दुरि दरसत यहि भाँति ।' चाचा
बदरीवन—पु० बदरिकाश्रम । बेरका जङ्गल । [ हित०
बदरोबी—स्त्री० गुस्ताखी, धृष्टता, उद्दण्डता ।
बदलाव—पु० परिवर्त्तन ( ज्यो० ७३ ) ।
बदरौंह—वि० कुमार्गगामी ।
बदलना—सक्रि० परिवर्त्तन करना उलटा करना, विनिमय करना । अक्रि० परिवर्त्तित होना ।
बदला—पु० पलटा, प्रतिकार, प्रतिफल, विनिमय ।
बदली—स्त्री० मेघमाला । तबदीली ( नव० ६ ) ।
बदलौवल—स्त्री० बदनेकी क्रिया, अदल-बदल ।
बदशकल,-सूरत—वि० बेडौल, कुरूप, बेढङ्गा ।
बदस्तूर—क्रिवि० ज्योंका त्यों, मामूली तौरपर ।
बदहजमी—स्त्री० अजीर्ण, कुपच ।
बदहवास—वि० बेहोश, लस्त, व्याकुल ।
बदा—पु० वह जो भाग्यमें हो ।
बदाबदी—स्त्री० होड़ाहोड़ी (उदे०'बदराह',दास ११९) ।
बदि—स्त्री० बदला । अ० बदलेमें, वास्ते ।
बदी—स्त्री० बुराई । कृष्ण पक्ष ।
बदूख—स्त्री० बन्दूक ।
बदौलत—क्रिवि० कारणसे, कृपासे ।
बद्दर, बद्दल—पु० बादल, मेघ ।
बद्ध—वि० बँधा हुआ, निर्दिष्ट ।
बद्धकोष्ठ—पु० कब्जियत, पेट साफ न होना ।
बद्धपरिकर—वि० कमर बाँधे हुए, तैयार ।
बद्धी—स्त्री० एक गहना । रस्सी ।
बध—पु० हत्या, हिंसा ।
बधना—सक्रि० मार डालना 'उतरु देत मोहि बधब अभागे ।'रामा०२७७,(सूरा०३८)।पु०टोंटीदार लोटा ।
बधाई—स्त्री० हर्ष सूचक वचन या सन्देशा । मंगलाचार, पुत्र-जन्मादिके समयका उत्सव । शुभ अवसरका उपहार । आनन्दोत्सव ।
बधाना—सक्रि० वध कराना ( सू० २२९ ) ।
बधाया—पु० देखो 'बधावा' ।
बधावना,-वरा—पु० देखो 'बधावा', 'कैसे एक घरमें बधावरो बजत नित'—कलस १७४
बधावा—पु० पुत्र-जन्मादिके समय आनेवाला उपहार । मङ्गलाचार । बधाई । मङ्गलवाद्य (छत्र० ५४, पार्म३६)
बधिक—पु० व्याधा, हत्यारा ।
बधिया—वि० नपुंसक किया हुआ ( पशु ) ।
बधिया-बैठ जाना—ज्यादा नुकसान होना(कर्म०५२७) ।
बधियाना—सक्रि० बधिया बनाना ।
बधिर—वि० बहरा, श्रवणशक्तिहीन ।
बधू—स्त्री० बहू, पतोहू । पत्नी ।
बधूक—पु० बन्धूक, गुलदुपहरिया ।
बधूटी—स्त्री० पतोहू । सुहागिन स्त्री ।
बधूरा—पु० बवण्डर, अन्धड़ ( सुन्द० ५९ ) ।
बधैया—स्त्री० देखो 'बधाई' । मङ्गल वाद्य 'कौशलपुर ¦बाजै बधैया ।' रघु०२७
बध्य—वि०वध करने योग्य ।
बन—पु० जङ्गल, बाग । पानी । कपासका पेड़ । घर
बनउर—पु० बिनौला । ओला । [ ( कविप्रि० २६४ ) ।
बनकंडा—पु० जङ्गलमें गोबरके आपसे आप सूख जानेसे बना हुआ कण्डा ।
बनक—स्त्री० बाना, वेष । बनावट 'कासों जाय बरनी बनक नाक-बेसरिकी ललित विलोकनि पै विविध विलास है।' ललित १५५
बनकट—पु०, कटी—स्त्री० एक तरहका बाँस (कर्म०) ।
बनखंड—पु० बनका कोई भाग, जङ्गली स्थान ।
बनखंडी—पु० वनवासी, वनमें रहनेवाला । स्त्री०वनका कोई भाग ।
बनगरी—स्त्री० एक मछली (प० २६९) ।
बनगाव—पु० 'रोझ' नामक हिरन । एक वृक्ष ।
बनचर—पु० बनमें रहनेवाला पशु या आदमी । जलचर ।
बनचारी—पु० वनमें विचरण करनेवाला ।
बनज—पु० वाणिज्य । कमल । [सुपारी···' कबीर१८७
बनजना—सक्रि० व्यापार करना 'जब हम बनजी लौंग

वनजात—पु० कमल। [(अ० १३)।
वनजारा—पु० बैलोंपर अन्न लादकर बेचनेवाला व्यापारी
वनजी—पु० व्यापारी। व्यापार 'कोइ खेती कोइ बनजी लागै, कोई आस हथ्यारकी।' सुन्द० (ककौ० ३२१)
वनत–स्त्री० बनावट। मेल, सामञ्जस्य। एक तरहकी बेल।
वनताई—स्त्री० वनकी भयङ्करता।
वनतुलसी—स्त्री० बर्बरी या बबई नामका पौधा।
वनद—पु० जलद, बादल।
वनदेवी—देखो 'वनदेवी'।
वनधातु—स्त्री० गेरू, रङ्गीन मिट्टी (सूबे० २४३)।
वनना—अक्रि० निर्मित होना, रचा जाना, दुरुस्त होना, मालामाल होना, हो सकना 'वह सोभा सु समाज सुख कहत न बनइ खगेस।' रामा० ५४३। निभना, पटना। स्वांग रचना, ढोंग करना, सजना 'प्रात भये सब भूप, बनि बनि मण्डपमें गये।' राम० १२७
वननि—स्त्री० बनावट, सिंगार।
वननिधि—पु० जलधि, समुद्र।
वनपट—पु० छालका बना कपड़ा।
वनपाती—स्त्री० वनस्पति।
वनप्रिय—पु० कोयल।
वनफ्शा—पु० वनस्पति-विशेष।
वनवारी—स्त्री० वनकन्या, पुष्पवाटिका (राम० १९)।
वनवास—पु० जङ्गलमें रहना।
वनवासी—पु० वनमें रहनेवाला।
वनवाहन—पु० नौका। [वन्य पशु।
वनविलार, वनविलाव—पु० बिल्लीकी तरहका एक
वनमानुस—पु० मनुष्य जैसी आकृतिवाला एक प्राणी।
वनमाला—स्त्री० तुलसी, मदार, पारिजात, कुन्द तथा कमलकी बनी हुई माला। [† युक्त प्रदेश।
वनमाली—पु० कृष्ण, विष्णु। बादल। वनोंकी मालासे†
वनर—पु० एक हथियार। [जाति।
वनरखा—पु० वनकी रखवाली करनेवाला। एक जङ्गली
वनरॉव—पु० बड़ा जङ्गल, बड़ा वृक्ष (उदे० 'कुटका')।
वनरा—पु० दूल्हा। विवाह-समयका गीत। बन्दर 'सिंधु तख्यो उनको वनरा तुम पै धनुरेख गई न तरी।'
वनराज,—राय—पु० सिंह। बड़ा वृक्ष। [राम० ४०८
वनरी—स्त्री० दुलहिन, नववधू। बँदरिया।
वनरुह—पु० कमल। जङ्गली वृक्ष।
वनवना—सक्रि० देखो 'बनाना'।
वनवसन—पु० छालका बना कपड़ा।
वनवाना—सक्रि० बनानेका काम दूसरोंसे कराना।
वनवारी—पु० श्रीकृष्ण।
वनवासी—पु० बनमें रहनेवाला।
वनशाली—वि० वनयुक्त। ['चारा', रामा० ५०४)।
वनसी—स्त्री० मुरली। मछली फँसानेका काँटा (उदे०
वनस्पति—स्त्री० देखो 'वनस्पति'।
वना—पु० दूल्हा।
वनाइ—क्रिवि०—भलीभाँति 'गिद्ध ताको देखि धायो लख्यो सूर बनाइ।' सूरा० २३। बिलकुल।
वनाउ—पु० बनाव, सजावट (उदे० 'अछवाई')। उपाय।
वनाउरि—स्त्री० बाणावली, तीरोंकी पंक्ति या निरन्तर ‡
वनात—स्त्री० एक ऊनी कपड़ा। [‡वर्षा।
वनाना—सक्रि० रचना, तैयार करना, पूरा करना, सुधारना, अच्छी दशाको पहुँचाना, सजाना, व्यङ्ग करना।
वनाफर—पु० क्षत्रियोंका एक भेद।
वनावंत, वनावनत—पु० जन्मपत्रियोंका मिलान।
वनाम—अ० नामसे, नामपर।
वनाय—क्रिवि० भलीभाँति, पूर्णतया।
वनाव—पु० युक्ति। बनावट, सजावट, तैयारी 'देखि बनाव सहित अगवाना। मुदित बरातिन्ह हने निसाना।' रामा० १६४, 'कहा चलै कर करहु बनावा।' रामा० ४३२
वनावट—स्त्री० रचना, आडम्बर (पभू० २५१)।
वनावटी—वि० नक़ली, मिथ्या।
वनावनहारा—पु० बनानेवाला, कर्त्ता, निर्माता, सुधारने-
वनावरि—स्त्री० देखो 'बनाउरि', (प० ४६)। [वाला।
वनासपाती—स्त्री० वनस्पति, फलफूलपत्रादि '...नासपाती खाती ते बनासपाती खाती हैं।' भू० १५५
वनि—स्त्री० पारिश्रमिक, मजूरी 'आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी।' रामा० २४८
वनिक—पु० वणिक्, बनिया, व्यापारी।
वनिज—पु० व्यापार 'बनिज करति हम सौं झगरति हौ कहा कहैं हम बहुत सही।' सूबे० ३४२। सौदा (उदे० 'झूरै')।
वनिजति—स्त्री० व्यापारकी चीज़ें, माल 'सायक चाप तुरय बनिजति हौ लिये सबै तुम जाहू।' सूबे० १४७
वनिजना—सक्रि० व्यापार करना, मोल लेना 'गातन ही

दिखराइ बटोहिनि बातनिही बनिजै बनिजारी।' रवि० ३३
**बनिजारा**—पु० देखो 'बनजारा', ( प० ३३ )।
**बनिजारिन,-जारी**—स्त्री० बनजारेकी स्त्री, बैलोंपर माल लादकर बनिज करनेवाली स्त्री।
**बनित**—स्त्री० वेश, सजावट।
**बनिता**—स्त्री० स्त्री। पत्नी।
**बनिया**—पु० वणिक्, व्यापारी।
**बनियाइन**—स्त्री० जालीकी तरह बुनी हुई गञ्जी। बनियाकी स्त्री।
**बनिस्बत**—अ० अपेक्षा, की तुलनामें।
**बनिहार**—पु० खेत जोतने, फसल रखाने इ० के लिए नियुक्त मजूर।
**बनी**—स्त्री० वनस्थली, वाटिका 'अति चञ्चल जहँ चलदलै विधवा बनी न नारि।' राम० ३२। मजूरी। दुलहिन, नायिका (छत्र० ७१) पु० बनिया।
**बनीनी**—स्त्री० बनियाकी स्त्री।
**बनीर**—पु० बेंत।
**बनूक**—स्त्री० बन्दूक ( विद्या० २६१ )।
**बनेठी**—स्त्री० एक तरहकी लाठी जिसके दोनों सिरोंपर गोल लट्टू हो।
**बनैला**—वि० जङ्गली।
**बनोवास**—पु० बनवास ( प० ८२ )।
**बनौटी**—वि० कपासी 'दुति लपटनि पट सेतहू करति बनौटी रंग।' वि० १३८
**बनौरी**—स्त्री० ओला।
**बनौवा**—वि० बनावटी, झूठा।
**बन्नी**—स्त्री० अन्नके रूपमें दी जानेवाली मजूरी। अन्न* लेकर काम करना।
**बप**—पु० बाप ( भू० १५६ )।
**बपतिस्मा**—पु० ईसाई बनाये जानेके समयका एक मुख्य संस्कार।
**बपना**—सक्रि० वपन करना, बोना।
**बपमार, बपुमार**—वि० बापको मारनेवाला 'अङ्गद संग ले मेरो सबै दल आजुहिं क्यों न हतै बपुमारे।' राम० ४११
**बपु, बपुख**—पु० अवतार। शरीर ( राम० १ )।
**बपुरा**—वि० बेचारा ( उदे० 'उनमेद', 'अनाथ' ), 'मनसा करि सुमिरेउ गज बपुरो ग्राह परम गति पावै।' सूवे० १३, कहा कीट बपुरे नरनारी।' रामा०
**बपौती**—स्त्री० बापसे मिली हुई सम्पत्ति।
**बप्पा**—पु० बाप।
**बफारा**—पु० भाफ 'न्यारो न होत बफारो ज्यों धूमतें···' दास १६३। भाफसे शरीर सेकनेकी क्रिया।
**बफौरी**—स्त्री० भाफसे पकी हुई बरी या पकौड़ी।

**बबकना**—अक्रि० उत्तेजित होकर बोलना, 'जानि रिपु हानि तजि कानि यदुराजकी, बबकि उठि फूलि बसुदेव रैया।' सू० १९४
**बबर**—पु० सिंह, बड़ी जातिका शेर।
**बबा**—पु० बाबा, पिता, दादा।
**बबुआ**—पु० बेटे या दामाद आदिका सम्बोधन।
**बबुई**—स्त्री० बेटी, बच्ची, छोटी ननँद, 'बीबी'।
**बबुर, बबूल**—पु० एक काँटेदार पेड़।
**बबूला**—पु० तूफान। बुलबुला।
**बभनी**—स्त्री० छिपकली जैसा एक चमकीला जन्तु।
**बभूत**—स्त्री० देखो 'विभूति'।
**बम**—पु० शैवोंका 'बम' शब्द। छोटा नगाड़ा। इक्के इ०के सामनेकी वे दो लकड़ियाँ जिनके बीचमें रखकर घोड़ा जोता जाता है। आघात इ०से फटनेवाला घातक गोला।
**बमकना**—अक्रि० कूदना-फाँदना, शेखी मारना। फूटना 'गोला मेरा ही बमकता' कुकुरमुत्ता ७।
**बमना**—सक्रि० वमन करना ( उदे० 'ढनमनना' )।
**बमलाना**—सक्रि० बढ़ बढ़कर बातें कहनेके लिए किसीको बढ़ावा देना।
**बमीठा**—पु० बाँबी।
**बमूजिब**—क्रिवि० मुताबिक, अनुसार।
**बम्हन**—पु० ब्राह्मण 'तेरे लिए छोड़ी बम्हनकी पकाई मैंने घीकी कचौड़ी-ऐ गर्म पकौड़ी' कुकुरमुत्ता ३०
**बम्हनी**—स्त्री० देखो 'बभनी'। बिलनी।
**बय**—पु०, स्त्री० वय, उम्र।
**बयन**—पु० बैन, वचन, वाणी।
**बयना**—सक्रि० बोना 'ऊसर बीज बये फल जथा।' रामा० ४४४। बहना, चलना 'विषय विकार दवानल उपजी, मोह बयार बई।' सू० १७। वर्णन करना 'गावत चलीं भीर भइ बीथिन्ह बन्दिन्ह बाँकुरे बिरद बये।' गीता० २७२। अक्रि० आरोपित होना, लगना, 'ऊधो, जोग की गति सुनत मेरे अंग आगि बई।' भ्र० ८६। पु० वह पकवान आदि जो सम्बन्धियों तथा मित्रोंके यहाँ भेजा जाय।
**बयर**—पु० वैर, शत्रुता 'हमरे बयर तुम्हउ बिसराई।' रामा० ४०, ( उदे० 'निबाहना', 'पाछिल' )।
**बयस**—स्त्री० उम्र। वयसवाला = युवक।
**बयस सिरोमनि**—पु० यौवन।
**बया**—पु० एक पक्षी। अनाज तौलनेवाला 'प्रेम नगर मैं

इग बया नीखे प्रगटे आइ । दो मनकौं कर एक मन
भाव दियौ ठहराय ।' रतन० ५१, ( प० १७३ )
बयाई—स्त्री० अन्न इ० तौलनेकी मज़दूरी ।
बयान—पु० वर्णन,हाल,कथन । मुख,वदन (विद्या० ३६)
बयाना—पु० सौदा आदि पक्का करनेके लिए दी हुई
रक़म । अक्रि० ( स्वप्नमें ) बड़बड़ाना 'जोई मुँह
आवत सो विवस बयात हौ ।' रत्न० १६५
बयाबान—देखो 'बियाबान' ( पभू० १०१ ) ।
बयार, बयारि—स्त्री० हवा, बतास ( उदे० 'डाढ़ना' )।
बयारी—स्त्री० हवा । रात्रिका भोजन ।
बयाला—पु० दीवारमेंका छेद, ताखा ।
बयालीस—वि० चालीस और दो । पु० ४२ की संख्या।
बयासी—वि० अस्सी और दो । पु० ८२ की संख्या ।
बरंगा—पु० छत पाटनेकी पटिया ( के० १७४ ) ।
बर—पु० बल, शक्ति 'देख्यौ मैं राजकुमारनको बर ।'
राम०६३,(उदे०'आँटना') । बड़, वटवृक्ष (उदे०'तर'),
'तन तौ तियाको बर भाँवरे भरत मन साँवरे बदन पर
भाँवरे भरत है ।' ललित० ८० । वर, दूल्हा । वरदान
आशीर्वाद । वि० श्रेष्ठ । पूर्ण । अ०बल्कि,चाहे 'फीको
परै न बर फटै रँग्यो लोह रँग चीर ।' वि० २७४(बंग०)
बरई—पु० तमोली । *[ चौकीदार, रक्षक ।
बरकदाज—पु० लम्बा लट्ठ धारण करनेवाला सिपाही,*
बरकत—स्त्री० बहुतायत, लाभ, वृद्धि ( भू० १४४ ),
बरकना—अक्रि० बचना, हटना । [ कृपा, अन्त ।
बरक़रार—वि० स्थिर, क़ायम, मौजूद ।
बरकाज—पु० विवाह ।
बरकाना,-वना—सक्रि०बचाना, रोकना। पिण्ड छुड़ाना ।
बरख—पु० वर्ष, साल ।
बरखना—अक्रि० वृष्टि होना, बरसना । सक्रि० वर्षा
करना 'कुसुमाञ्जलि बरखत सुर ऊपर सूरदास बलि
बरखा—स्त्री० वृष्टि, वर्षाऋतु । [ जाई ।' सू० ८५
बरखाना—सक्रि० वर्षा करना, ऊपरसे गिराना ।
बरखास, बरखास्त—वि० मौकूफ, विसर्जित 'करि
भूपति दूतन विदा सभा कियो बरखास ।' रघु० १३२
बरखिलाफ—वि० विरुद्ध, प्रतिकूल ।
बरग—पु० वर्ग, वर्ण ( रासिबरग = राशि, वर्ण इ०,
बरगद—पु० वटवृक्ष । [ प० २१९ ) । वर्क, पत्ता ।
बरच्छा—स्त्री० देखो 'बरेच्छा' ।
बरछा—पु०, बरछी—स्त्री० भाला ।
बरछैत—पु० बरछा चलानेवाला ।
बरजनहार—पु० रोकनेवाला ( प० ३ ) ।
बरजना—सक्रि० रोकना ( उदे० 'जुरना', 'झहरना' ) ।
बरज़बान—वि० मुखाग्र । [हटकना ( उदे० 'करौंट' ) ।
बरजोर—वि० प्रबल,जबरदस्त 'ये बरजोर तुरङ्ग कौं ऐंचत
हू चल जाहिं ।' बि० २५२,पाठ० । क्रिवि० बलपूर्वक।
बरजोरी—स्त्री० जबरदस्ती । क्रिवि० बलपूर्वक ।
बरत—पु० उपवास । रस्सी ( रतन० २९ ) ।
बरतन—पु० पात्र, भाँड़ा । [ सक्रि० व्यवहारमें लाना ।
बरतना—अक्रि० व्यवहार करना ( साखी १४१ ) ।
बरतरफ—वि०अलग,किनारे, अलग किया हुआ, मौकूफ ।
बरताव—पु० बरतनेका ढंग या भाव, व्यवहार ।
बरती—स्त्री० बत्ती । वि० जिसने व्रत किया हो ।
बरतोर—पु० बालतोड़, बाल टूटनेके कारण हुआ फोड़ा ।
( उदे० 'पाक' ) ।
बरद, बरदा—पु० बरधा, बैल 'बर बौराह बरद अस
वारा ।' रामा० ५७, ( कर्कौ० २६३ )
बरदाना—दे० 'बरधाना' ।
बरदाफरोश—पु० गुलाम बेचनेवाला ।
बरदार—वि० धारण करनेवाला, वहन करनेवाला, मानने
बरदाश्त—स्त्री० सहनेकी क्रिया या भाव । [ वाला ।
बरदिया, बरधिया—पु० चरवाहा ।
बरधा—पु० देखो 'बरद' ।
बरधाना—सक्रि० गाय आदिको गर्भ धारण कराना ।
अक्रि० गाय इ० का सगर्भ होना ।
बरन—पु०रङ्ग (उदे०'अवरेखना') । दे०'वर्ण'। अ०बल्कि।
बरनना—सक्रि० वर्णन करना 'बनै न बरनत नगर
निकाई ।' रामा० ११८
बरना—सक्रि० वरण करना, पति या पत्नी रूपमें स्वीकार
करना 'लछिमन कहा तोहि सो बरई ।' रामा० ३७१ ।
नियुक्त करना, निमन्त्रित करना 'बरे तुरत सत सहस
बर विप्र कुटुम्ब समेत ।' रामा० ९६ । अक्रि० जलना
( उदे० 'झाँखर', 'बुताना' ) । अ० नहीं तो ।
बरनेत—स्त्री० विवाहकी एक रीति ।
बरफ—स्त्री० देखो 'बर्फ' ।
बरफानी, बरफीला—दे० 'बर्फानी', 'बर्फीला' ।
बरफी—देखो 'बर्फी' ।

बरबंड—वि० प्रबल, प्रचण्ड, उद्धत ।

बरबट—देखो 'बरबस'। नैन मीन ये नागरनि बरबट बाँधत आइ ।' मति० १७८

बरबर—स्त्री० बड़बड़, बकबक । पु० अशिष्ट मनुष्य ।

बरबस—क्रिवि० हठात्, बलपूर्वक 'बरबस बेधत मो हियो तो नासाको बेध ।' बि० १७ (वंग०) । व्यर्थ ।

बरबाद—वि० नष्ट, चौपट ।

बरबादी—स्त्री० खराबी, तबाही ।

बरम—पु० कवच ।

बरमा—पु० छेद करनेका औज़ार (प० १५२) । ब्रह्मदेश ।

बरमी—वि० बरमा (ब्रह्मदेश) का या बरमा सम्बन्धी । स्त्री० बरमाकी भाषा । पु० बरमाका रहनेवाला ।

बरम्हा—पु० ब्रह्मा । बरमा ।

बरम्हाउ—दे० 'बरम्हाव', ( उदे० 'अभाऊ' ) ।

बरम्हाना, बरम्हावना—सक्रि० दुवा देना 'दाहिन हाथ उठाएउँ ताही । औरको अस बरम्हावौं जाही ।' प० १२३

बरम्हाव—पु० आशीर्वाद । ब्राह्मणत्व ।

बरराना—देखो 'बर्राना' (रत्ना० १६५) । [ रामा० १५१

बररै—पु० एक कीड़ा,तितैया 'बररै बालक एक सुभाऊ ।'

बरवट—स्त्री० पिलही, तिल्ली । [ होती हैं ।

बरवा, बरवै—पु० एक छन्द जिसमें १२ + ७ मात्राएँ

बरषना—अक्रि० वृष्टि होना । सक्रि० वृष्टि करना 'कहि सुपन्थ सुर बरषहिं फूला ।' रामा० ३१३

बरषा—स्त्री० वृष्टि । वर्षा ऋतु ।

बरषासन—पु० एक वर्षके खाने योग्य भोजन-सामग्री

बरस—पु० वर्ष । [ ( रामा० २३७ ) ।

बरसगाँठ—स्त्री० जयन्ती, सालगिरह ।

बरसना—अक्रि० वृष्टि होना, जलकी तरह ऊपरसे गिरना, टपकना । स्पष्टतः झलकना । सक्रि० बरसाना ।

बरसाइत—स्त्री० वर्षा ऋतु ( नव० ५ )

बरसाइन—स्त्री० हर साल बच्चा देनेवाली गाय ।

बरसात—स्त्री० वर्षा ऋतु ।

बरसाती—वि० बरसात सम्बन्धी या बरसातका । पु० वर्षासे बचानेवाला एक तरहका ढीला कोट । घोड़ोंका एक रोग । मकानके सामनेका वह छतदार फाटक जहाँ घोड़ागाड़ी आदि जाकर रुकती हैं ।

बरसाना—सक्रि० वर्षा करना, ऊपरसे टपकाना ।

बरसायन—स्त्री० जेठ बदी अमावास्या । शुभ मुहूर्त ।

बरसी—स्त्री०मृत्युके प्रायः एक वर्ष बाद होनेवाला श्राद्ध

बरसीला—वि० बरसानेवाला 'दाखलों रसीले बरसीले बैन बोलि' कलस १९२

बरहा—पु० मोटा रस्सा । सिंचाईकी नाली ।

बरही—स्त्री० सन्तानोत्पत्तिके बाद बारहवें दिनकी रस्म । लकड़ीका भार । पु० मोर 'बरही मुकुट २ धनु मानहुँ तड़ित दसन छवि लाजत ।' सू० ८९ बरगदका पेड़ ( ग्राम० १०७ ) ।

बरहीपीड़—पु० मोरमुकुट ।

बरहीमुख—पु० देवता ।

बरहौं—पु० बच्चा होनेके बादका बारहवाँ दिन ।

बरांडी—स्त्री० एक विदेशी शराब ।

बरा—पु० उड़दकी पीठीका बना एक पकवान ( उदे० 'अनगनियाँ' ) वट वृक्ष ( गुलाब ३९३ ) ।

बराई—स्त्री० देखो 'बड़ाई' ।

बराक—वि० शोचनीय, बेचारा, अधम, तुच्छ 'महावीर बाँकुरे बराकी बाहुपीर क्यों न लङ्किनी ज्यों लात घात ही मरोरि मारिये ।' कविता० २५८

बराट—स्त्री० कौड़ी ( दीन० २५२ ) ।

बराटिका—देखो 'वराटिका' ।

बरात—स्त्री० विवाहका जुलूस ।

बराती—पु० वर-पक्षवाला । उदे० 'धुकधुकी' ।

बराना—अक्रि० अलग करना । बचाना ( उदे० 'डब-कौंहा' ), 'सीयराम पद अङ्क बराये । लषन चलहिं मग दाहिन बाँये ।' रामा० २५८ । सक्रि० चुनना, छाँटना 'कौने देव बराइ विरदहित हठि हठि अधम उधारे ।' बिन० २६१ । जलाना । अक्रि० जलना 'नैन दीठ नहिं दिया बराहीं ।' प० १७५

बराबर—वि० समान, तुल्य, एकसा, ठीक, समतल । क्रिवि० लगातार, हमेशा । अ० तक, पर्यन्त 'ज्वाला देखि अकास बराबरि दसहुँ दिसा कहु पार न पाइ ।'

बराबरी—स्त्री०समानता । प्रतिद्वन्द्विता । [ सू० ८१

बरामद—वि० निकाला हुआ, पाया हुआ । स्त्री० आम-

बरामदा—पु० दालान, छज्जा । [ दनी, निकासी ।

बराय—अ० वास्ते, लिए ।—नाम = नाममात्रके लिए ।

बराग्न—पु० विवाह-समयका कङ्कन, विवाहके समयका जलपूर्ण घड़ा (माधुरी, ज्येष्ठ १९८७, रामल० न० ) ।

बरार—पु० प्रत्येक घरसे लिया जानेवाला चन्दा । एक*

वराव—पु० निवारण, बचाव। [ वन्य पशु।
वरास—पु० एक तरहका कपूर ( रत्ना० २१ )।
वराह—पु० सुअर।
वरिआई—स्त्री०जबरदस्ती '··· ता पाछे करिये वरिआई।' सूवे० १४८। क्रिवि० हठात्, बलपूर्वक 'तब हम जाइ सिवहिं सिर नाई। करवाउब विवाह वरिआई।' रामा० ५० [ रामा० ५७
वरिआत—स्त्री० बरात, 'जमकर धार किधौं वरिआता।'
वरिआर—वि० प्रबल, बलवान्, 'तपबल विप्र सदा वरिआरा।' रामा० ९२, ( उदे० 'निभरोसी' )।
वरिच्छा—स्त्री० बरच्छा, फलदान।
वरिवंड—वि० देखो 'वरवंड', ( रामा० ३७७ )।
वरिया—वि० बली, बलवान्।
वरियाई—देखो 'वरिआई'।
वरियार—देखो 'वरिआर'।
वरिल—पु० एक पकवान।
वरिपना—सक्रि० देखो 'बरसना'। [ रामा० २०१।
वरिस—पु० वर्ष 'जियहु जगतपति बरिस करोरी।'
वरी—स्त्री० मूँग आदिकी पीठीकी बनी खाद्य-वस्तु-विशेष ( उदे० 'अनगनियाँ' )। वि० बली, बलवान् (सूवे० २८८ )। बचा हुआ, मुक्त।
वरीस—पु० वर्ष ( प० २१९ )।
वरीसना—अक्रि० वर्षा होना। [ दुलहा।
वरु—अ० चाहे, भले ही ( उदे० 'कुँआरा' )। पु० वर,
वरुआ,-वा—पु० उपनयन संस्कार। ब्रह्मचारी।
वरुक—देखो 'वरु'।
वरुण, वरुन—पु० जल देवता।
वरुणालय—पु० समुद्र ( कविप्रि० )।
वरुनी—स्त्री० बरौनी, पलकके बाल ( रवि० ११ )।
वरूथ—पु० समूह, झुण्ड।
वरेंड़ा—पु०, वरेंड़ी—स्त्री० छाजनके बीचकी लकड़ी, खपरैलके बीचका ऊँचा हिस्सा। [ बदलेमें।
वरे—क्रिवि० बलपूर्वक। उच्च स्वरसे। अ० के लिए,
वरेखी, वरेच्छा—स्त्री० वर या कन्याको देखना, ठहराना 'तैसी वरेखी कीन्हि पुनि मुनि सात स्वारथ सारथी।*
वरेज, वरेजा—पु० पानकी बाड़ी। [ *(पा० मं०)
वरेठ, वरेठा—पु० धोबी।
वरेत—स्त्री० मथानीकी रस्सी ( रत्ना० ३९५ )।
वरेता—पु० सनका रस्सा।
वरेदी—पु० चरवाहा ( बुंदेल० )।
वरेपी—स्त्री० देखो 'बरेखी', ( रामा० ४९ )।
वरोक—पु० फलदान, वर रोकनेके लिए दिया गया द्रव्य 'मिला सो वंस अंस उजियारा। भा वरोक, तब तिलक सँवारा।' प० १२९। सेना। क्रिवि० बलपूर्वक 'होइ सो वेलि जेहि बारी, आनहिं सबै वरोक।' प० ५३
वरोठा—पु० ड्योढ़ी, बैठक 'पूछि लीन्ह रनिवास वरोठा।'
वरोरु—वि० सुन्दर जङ्घावाली। [ प० २९५
वरोह—स्त्री० बरगदकी जटा ( रहीम २३,बीजक१८४)।
वरौंछी—स्त्री० बालोंकी कूँची।
वरौनी—स्त्री० देखो 'बरुनी', (उदे० 'कीचर')। पानी भरने इ० का काम करनेवाली स्त्री,कहारिन (बुंदेल०)।
वरौरी—स्त्री० देखो 'वरी', ( प० २७३ )।
वर्कत, वर्खास्त, वर्छा—दे०'बरकत';'बरखास्त'; 'बरछा'।
वर्जना—देखो 'बरजना'।
वर्णना—सक्रि० वर्णन करना (राम० ३४४ )।
वर्त्तन—दे० 'बरतन'।
वर्त्तना—सक्रि० देखो 'बरतना'।
वर्त्ताव—पु० बरतनेका ढङ्ग, व्यवहार।
वर्त्तुल—देखो 'वर्त्तुल'।
वर्न—पु० वर्ण, जाति, रङ्ग।
वर्फ—स्त्री० हिम, ठोस जमा हुआ पानी।
वर्फानी—वि० जहाँ बहुत वर्फ गिरती हो, अत्यन्त ठण्ढा ( वर्फानी देश—निबन्धमाला-भाग २, ना० प्र० )।
वर्फिस्तान—पु० वर्फसे ढँका हुआ मैदान या पहाड़।
वर्फी—स्त्री० एक मिठाई।
वर्फीला—वि० बर्फसे ढँका हुआ, जहाँ बर्फ ही बर्फ हो।
वर्वर—पु० देखो 'बरबर'।
वर्वरता—स्त्री० पशुता, असभ्यता, अत्याचार।
वर्र—पु० बर्रै।
वर्राना—अक्रि० सोते समय बकना 'सपनेहुँमें बर्राइके धोखेहु निकरै राम।' साखी ९४। प्रलाप करना।
वर्रै—पु० तितैया नामका कीड़ा।
वलंद—वि० ऊँचा ( भू० ३,४४ )।
वल—पु० शक्ति। सहारा, आसरा। सेना। ऐंठन, टेढ़ापन। लचक, सिकुड़न। कमी। बलदेव 'बल बक हीरा केवरो कौडी करका काँस।' कविमि० ६१।'''

घाटा ( बल खाना = हानि उठाना ) ।
बलकना—अक्रि० उबलना, जोशमें आना 'बलकि बलकि बोलत वचन...'-वि० १९३, ( सू० १०७ ) ।
बलकर—वि० बलकारी ।
बलकल—पु० वृक्षकी छाल ।
बलकाना—सक्रि० खौलाना, उत्तेजित करना ।
बलखाना—अक्रि० इठलाना ।
बलगना—दे० 'बलकना', ( छत्र० १४४ ) ।
बलगम—पु० कफ़, श्लेष्मा ।
बलद—पु० बरधा, बैल । शरीरको पुष्ट करनेवाला काम ।
बलदाऊ—पु० श्रीकृष्णके बड़े भाई बलदेव ।
बलदिया—पु० चरवाहा ।
बलदेव—पु० श्रीकृष्णके ज्येष्ठ भ्राता बलराम ।
बलना—अक्रि० जलना, धधकना ।
बलबलाना—अक्रि० बकना, ऊँटका बोलना ।
बलबीर—पु० बलरामके भाई कृष्ण ।
बलभद्र—पु० बलरामका एक नाम ।
बलभी—स्त्री० सबसे ऊपरकी छतवाली कोठरी ।
बलम—पु० पति, प्यारा ।
बलमीकि—पु० बाँबी ।
बलय—पु०, बलया—स्त्री० कङ्कन,चूड़ी 'छूटी बटभुज फूटी बलया टूटी लर फटी कन्चुकी झीनी ।' सूबे ४०३
बलराम—पु० श्री कृष्णके बड़े भाईका नाम ।
बलवंड, बलवंत—वि० प्रबल, बली ।
बलवा—पु० विद्रोह, विप्लव, दङ्गा ।
बलवाई—पु० बाग़ी, विद्रोही, उपद्रवी ।
बलवान्, बलवार—वि० शक्तिमान्, बली 'सहित वीर बानर बलवारे ।' रघु० २६४
बलशाली,-शील—वि० बलवान् , शक्तिशाली ।
बलसूदन—पु० बल नामक दैत्यको मारनेवाला, इन्द्र ।
बला—स्त्री० दुःख, आपत्ति, रोग, प्रेतबाधा । एक विद्या जो विश्वामित्रने रामचन्द्रको दी थी ।
बलाइ—स्त्री० देखो 'बलाय', 'बारबार मुख निरखि जसोदा पुनिपुनि लेत बलाइ ।' सूबे० ५४
बलाक—पु० बगला( सू० ९४ ) ।
बलाका—स्त्री० बगली, बकपंक्ति, प्रणयिनी ।
बलाढ्य—वि० बली बलवान् ।
बलात्—क्रिवि० जबरदस्तीसे, हठात् ।
बलात्कार—पु० जबरदस्ती, अन्याय । जबरन किसी स्त्री-का सतीत्व भंग करना ।
बलानुज—पु० श्री कृष्णचन्द्र ।
बलाय—स्त्री० दुःख, विपत्ति ( उदे०'तर' ) । प्रेतबाधा, पीछा न छोड़नेवाला रोग या शत्रु ।—ऐसा करे = नहीं करेगा ।—लेना = किसीकी बलाएँ अपने ऊपर लेना, मङ्गल चाहना ।
बलाहक—पु० बादल ( भ्र० ११८ ) । विष्णुका एक घोड़ा । एक पर्वत । एक साँप ।
बलि—स्त्री० देवताको उत्सर्ग किया गया पदार्थ, चढ़ावा । भक्ष्य । देवार्पित पशु । पूजाकी सामग्री । राजकर । रेखा ( कविप्रि० २२९ ) । सखी ।—जाना=निछावर होना 'तात जाउँ बलि बेगि नहाहू ।' रामा० २२४
बलित—वि० बलिदान किया हुआ । देखो 'वलित' ।
बलिदान—पु० यज्ञादिके लिए पशुवध ।
बलिप्रिय,-भुक,-भुज,-भोजी—पु० कौआ ।
बलिवर्द—पु० बरधा, बैल ।
बलिष्ठ—वि० बहुत बलवान् ।
बलिहारना—सक्रि० बलि चढ़ाना, निछावर करना ।
बलिहारी—स्त्री० निछावर, आत्मोत्सर्ग ।
बली—वि० शक्तिमान्, पराक्रमी । स्त्री० सिकुड़न । लता 'रोमावली त्रिवली उर परसत, बंस चढ़े नट काम बली री ।' सू० ११०
बलीमुख—पु० मर्कट, बन्दर ( राम० ३६६ ) ।
बलीवर्द—पु० बैल ।
बलुआ—वि० रेतीला ।
बलूची—पु० बलूचिस्तानका रहनेवाला ।
बलूला—पु० पानीका बुलबुला 'बैरिनके बैभव बलूले लौं बिलाने हैं ।' कलस ३५०, ( २७७, ३४२ भी ) ।
बलैया—स्त्री० बलाय ( उदे० 'पैयाँ', सूबे० ६१ ) ।
बल्कि—अ० किन्तु, प्रत्युत, बेहतर है । [ अति प्रिय ।
बल्लभ—पु० प्रिय व्यक्ति, पति । एक सम्प्रदाय । वि०
बल्लभी—स्त्री० प्रिया, वह स्त्री जो प्यारी हो, गोपी 'सुरति सँदेस सुनाय मेटो बल्लभिनको दाहु ।' भ्र० ३
बल्लम—पु० सोंटा, डण्डा, बरछा ।
बल्लमटेर—पु० वह व्यक्ति जो सेनामें अवैतनिक कार्य करता है । स्वयंसेवक, 'वालण्टियर' ।
बल्लरी—स्त्री० लता ( सम० २१० ) ।
बल्लव—पु० चरवाहा ।

वल्लवी—स्त्री० देखो वल्लभी' ( मति० २२६ )।
वल्ला—पु० डण्डा, छड, नाव खेनेका डाँड़ा।
वल्ली—स्त्री० देखो 'वल्ला'। लता।
ववंडना—अक्रि० व्यर्थ घूमना फिरना।
ववंडर—पु० वगूला, अन्धड़।
ववंडा—पु० ववण्डर ( पूर्ण १०१ )।
ववघूरा—पु० वगूला, बवण्डर।
ववन—पु० वमन, क़ै 'जौन ववन करि डारिया स्वान स्वाद करि खाय।' साखी १३९
ववना—पु० छोटे कदका मनुष्य। सक्रि० बोना ( उदे० 'काँटा' )। विखराना 'तेरे राज राय दशरथके लयो बयो विनु जोतो।' विन० ३८४। अक्रि० विखरना।
ववरना—अक्रि० बौरना, मौर लगना।
ववासीर—पु० मलद्वारका एक रोग, अर्श।
वसंत—पु० ऋतु-विशेष।
वसंती—वि० वसन्त ऋतु सम्वन्धी, बसन्तका, बसन्ती रङ्गका। पु० एक तरहका पीला रङ्ग।
वसंदर—पु० वैश्वानर, अग्नि ( उदे० 'फरहरना' ), 'राई समान वसन्दरा, केता काठ जराय।' साखी ९५
वस—पु० वश, अधीनता, ज़ोर। वि० काफी, बहुत। क्रिवि० काफी केवल, इतना ही।
वसा—देखो 'वसा' ( सत्यह० ५७ )
वसति—स्त्री० वस्ती ( मति० २२५, भू० ६२ )।
वसन—पु० वस्त्र 'यह हमारि अति बड़ि सेवकाई। लेहिं न वासन वसन चोराई।' रामा०३१९,(उदे०'अम्व')।
वसना—अक्रि० निवास करना ( उदे० 'झारि' ), रहना, ठहरना ( उदे० 'अम्ब' ), आवाद होना ( उदे०'उजारना' )। वैठना 'प्यार पगी पगरी पियकी पसि भीतर आपने सीस सँवारी।' रस० ६१। पु० पान इ० रखनेका कपड़ा, थैली। वरतन।
वसनि—स्त्री० निवास, वास।
वसर—पु० निर्वाह, गुजर। [ वि० सोंधा।
वसवार—पु० तड़का, बघार, छौंक ( उदे० 'वधार' )।
वसवास—पु० निवास, रहना, स्थिति, रहनेका सुभीता।
वसह—पु० वैल 'भरि भरि वसह अपार कहारा। पठये जनक अनेक सुआरा।' रामा० १८२
वसाँधा—वि० सुवासित ( उदे० 'सन्धाना' )।
वसा—स्त्री० तितैया, बर्रे ( उदे०'खीन', 'परिहस' )।
वसात—दे० 'विसात'।
वसाना—सक्रि० वसने देना, टिकाना, आवाद करना। बैठालना। अक्रि० वसना, रहना। वश चलना 'तन मन हारेहू हँसैं तिनसौ कहा बसाय।' वि० ७०। गन्ध देना 'अगरु प्रसङ्ग सुगन्ध वसाई।' रामा० १०
वसिऔरा—पु० वासी भोजन। बासी भोजन करनेका दिन।
वसिआना—अक्रि० वासी हो जाना।
वसीकत—स्त्री० वसनेकी क्रिया। वस्ती।
वसीकर—वि० वशमें करनेवाला। [ रामा० ४६४
वसीठ—पु० दूत 'तौ बसीठ पठवत केहि काजा।'
वसीठी—स्त्री० दूतका काम 'दसमुख मैं न बसीठी आयउँ। रामा० ४६५, ( सू० १२४ )
वसीत्यो—पु० वसीकत, वस्ती, निवासस्थान 'युद्ध जुरे दुरयोधन सों कहि को न करै यमलोक वसीत्यो।'
वसीना—पु० रहन। [ कविप्रि० १६०
वसीली—वि०स्त्री० दुर्गन्धवाली 'हर तरहकी बसीली ई पड़ रहीं।' कुकुरमुत्ता १५
वसु—पु० धन, सुवर्ण। आठ देवताओंका समूह, आठकी संख्या। जल। अग्नि। रवि। किरण।
वसुधा, वसुमती—स्त्री० पृथिवी।
वसुरी—स्त्री० वंशी।
वसूला—पु० वढ़ईका एक औज़ार।
वसेंड़ा—पु० लम्बा पतला बाँस।
वसेरा—पु० ठहरनेका स्थान, वह जगह जहाँ चिड़िया रात विताती है, घोंसला 'ना घर मेरा ना घर तेरा चिड़िया रैन बसेरा है।' वास, रहना ( सू०११४ )।छ
वसेरी, वसैया—वि० बसनेवाला। [छवि०रहनेवाला।
वसोवास—पु० घर, निवास ( कविप्रि० २८२ )।
वसौंधी—स्त्री० लच्छेदार रबड़ी।
वस्ता—पु० कपड़ेमें बँधी कागज, पुस्तकों आदिकी गठरी।
वस्ती—स्त्री० आवादी, घरोंका समूह, ग्राम।
वस्तु—स्त्री० चीज़, पदार्थ। सत्य।
वस्त्र—पु० कपड़ा।
वस्य—वि० वशमें आनेवाला, अधीन। पु०अनुचर,सेवक।
वहँगी—स्त्री०बोझ ढोनेके लिए सिकहर-युक्त पाटी, काँवर।
वहकना—अक्रि० भूलना, भटकना, आवेशमें होना, उछलना ( उदे 'बाहना' )।
वहकाना—सक्रि० भुलावा देना, भटकाना।

**बहकावट**—स्त्री० बहकानेकी क्रिया।

**बहतोल**—पु० पानी बहनेकी नाली।

**बहत्तर**—वि० सत्तर और दो। पु० ७२ की संख्या।

**बहन**—स्त्री० बहिन, भगिनी। पु० बहना, झोंका 'वायु-को बहन, दिन दावाको दहन, बडी बाडवा अनल ज्वाल जालमें रह्यो परै।' राम० २०२

**बहना**—अक्रि० प्रवाहित होना, प्रभावित होकर भ्रष्ट होना। (हवाका) चलना। प्रवृत्त होना, चलना (उदे० 'छाती', 'फजर')। सक्रि० वहन करना, धारण करना 'एक अण्डको भार बहत है गर्व धर्‌यो जिय शेष।' सू० ८०, (उदे 'बहनी', सू० २७८)

**बहनापा**—पु० बहिनका रिश्ता।

**बहनी**—स्त्री० एक तरहकी ठिलिया। वह्नि, अग्नि 'वै कहियत उडुराज अमृत मय,तजि स्वभाव मोहिं बहनि [बहत।' सू० २०९

**बहनु**—पु० वाहन, सवारी।

**बहनोई**—पु० बहनका पति।

**बहनौता**—पु० बहिनका पुत्र।

**बहम**—पु० भ्रम, शङ्का 'सेवक भाव सदा रहै बहम न आनै चित्त।' साखी १४१

**बहर**—दे० 'बाहर', 'गावत बधाई सूर भीतर बहरके।' सू० ४९। पु० समुद्र। 'वज़न', लय।

**बहरा**—वि० जिसमें सुननेकी शक्ति न हो।

**बहराना**—सक्रि० ध्यान हटाकर मन प्रसन्न करना (सू० ७९)। भुलावा देना, फुसलाना, 'सुनि कपि बचन बिहँसि बहरावा।' रामा० ४२६, अति विचित्र लरिकाकी नाई गुर दिखाय बहरावहु।' भ्र० ११०। बाहर करना। अक्रि० बाहर होना। बह जाना, उड़ जाना (भू० १८)। [छोटा कर्मचारी।

**बहरिया**—वि० बाहरका। पु०बाहर रहनेवाला मन्दिरका

**बहरियाना**—सक्रि० बाहर करना, निकालना, हटाना।

**बहरी**—स्त्री० बाजकी तरहकी एक चिड़िया 'गगन चढ़ै फिर क्यों तिरै रहिमन बहरी बाज।' रहीम १६,❃

**बहरो**—वि० बहरा, जो कम सुने। [❃(उदे०'तोम')।

**बहल**—स्त्री० बैलगाडी 'बहल, घोड़, हस्ती सिंवली। औ सँग कुँवरि लाख दुइ चली।' प० २०, (उदे० 'द्वार', ब्रज० ३२९, रतन० ३५)।

**बहलना**—अक्रि० (मन) लगना, मनोरञ्जन होना।

**बहलाना**—सक्रि० देखो 'बहराना'।

**बहलाव**—पु० बहलानेकी क्रिया या भाव, मनोरञ्जन।

**बहली**—स्त्री० एक तरहकी परदेदार गाड़ी।

**बहल्ला**—पु० आनन्द।

**बहस**—स्त्री० विवाद, तर्क। होड़।

**बहसना**—अक्रि० विवाद करना, होड लगाना।

**बहादर, बहादुर**—वि० वीर, उत्साही।

**बहाना**—सक्रि०प्रवाहित करना, ढालना, फेंकना, उड़ाना, दूर करना 'उर लै लगाइ बहाइ रिस जिय...'सू० ६९। पु० व्याज, मिस, निमित्त।

**बहार**—स्त्री० आनन्द, शोभा, तमाशा। वसन्त ऋतु। एक राग 'मिले तार उनके औरोंसे नहीं, नहीं बजती बहार' अणिमा २१ क्रिवि० बाहर (विद्या०१५४)।

**बहारना**—सक्रि० झाड़ना।

**बहारी, बहारू**—स्त्री० झाड़ू (उदे० 'फरास')।

**बहाल**—वि० जैसेका तैसा, पुनर्नियुक्त। प्रसन्न, स्वस्थ।

**बहाली**—स्त्री० पुनर्नियुक्ति। ज्योंका त्यों होना। प्रसन्नता, 'भई है बहाली हरियाली बाग बनमें'—पूर्ण १०९। अच्छी हालत 'देशकी करो बहाली।' पूर्ण २३६। धोखेकी बात, बहानेबाजी। चन्द्रावली (६३), धोखा, चकमा (विद्यासुन्दर ४४)।

**बहाव**—पु० बहनेकी क्रिया, प्रवाह, धारा।

**बहिक्रम**—पु० 'वयः क्रम', वय, उम्र (छत्र० ६७)।

**बहित्र**—पु० जहाज, नौका।

**बहिन, हिनी**—स्त्री० भगिनी।

**बहिनापा**—दे० 'बहनापा'।

**बहियाँ**—स्त्री० भुजा, हाथ (उदे०'छीका',कबीर २१५)।

**बहिया**—स्त्री० बाढ़ 'बहियाने कोई गाँव बहाया नहीं।' [आँधी १३

**बहिरंग**—वि० बाहरवाला, बाहरका।

**बहिरन्तर**—क्रिवि० बाहर-भीतर।

**बहिर, बहिरा**—वि० जिसे सुन न पड़े।

**बहिरत**—क्रिवि० बाहर।

**बहिराना**—सक्रि० बाहर निकाल देना। अक्रि० बाहर हो जाना। बहिरा हो जाना।

**बहिर्गत**—वि०बाहर निकला हुआ,जो बाहर या अलग हो।

**बहिर्भूमि**—स्त्री० (बस्तीसे) बाहरकी भूमि।

**बहिर्मुख**—वि० विरुद्ध, विमुख।

**बहिर्लापिका**—स्त्री० एक तरहकी पहेली।

**बहिष्कार**—पु० निकालने या हटानेकी क्रिया, त्याग।

बहिष्कृत—वि० बाहर किया हुआ, दूर किया हुआ ।

बही—स्त्री० हिसाब लिखनेकी पुस्तक, खाता, पोथी ।

बहीर—स्त्री० भीड़, जनता 'जेहि मारग गये पंडिता, तेई गई बहीर ।' बीजक ३७० । फौजी सामान 'अब बहीर चलती करौ कालिह पहुँचनो कोल ।' सुजा० ६१ । क्रिवि० बाहर ।

बहुँटा—पु० बाँहका गहना 'बाँहन्ह बहुँटा टाँड सलोनी ।'

बहु—वि० बहुत, अधिक, अनेक । [प० १४३

बहुगुना—पु० एक तरहका चौड़े मुँहका बरतन ।

बहुज्ञ—वि० बहुत बातें जाननेवाला ।

बहुटनी—स्त्री० छोटा 'बहुँटा' । [ कई तरहसे ।

बहुत—वि० अधिक, अनेक । क्रिवि० अधिक मात्रामें,

बहुतक—वि० बहुतसे ।

बहुताइत,-ताई,-यत—स्त्री० अधिकता ।

बहुतेरा—वि० अधिक । क्रिवि० बहुत प्रकारसे ।

बहुतेरे—वि० बहुतसे, बहुसंख्यक, अनेक ।

बहुत्व—पु० प्रचुरता, बाहुल्य, अधिकता ।

बहुदर्शी—वि० जिसने बहुत देखा सुना हो, बहुज्ञ ।

बहुधा—क्रिवि० प्रायः, बहुत तरहसे ।

बहुभाषी—वि० बहुत बोलनेवाला ।

बहुमत—पु० बहुतसे लोगोंकी एक राय । अनेक लोगोंके

बहुमूत्र—पु० एक बीमारी । [अनेक मत ।

बहुमूल्य—वि० अधिक दामका ।

बहुरंगा—वि० कई रङ्गोंका । मनमौजी । बहुरुपिया ।

बहुरंगी—वि० कई रङ्ग दिखलानेवाला, बहुरुपिया ।

बहुरना—अक्रि० लौटना 'गा जुग बीत न बहुरा कोई ।' प० ४२, ( उदे० 'निबहुर' ) । फिर प्राप्त होना ( रामा० २२० ) । [ देखहुँगी ।' सूबे० २७५

बहुरि, बहुरौ—क्रिवि० फिर, पीछे 'कब वह मुख बहुरौ

बहुरिया—स्त्री० बहू, नववधू, दुलहिन 'हरि मेरा पीव मैं हरिकी बहुरिया...' कबीर १२५

बहुरुपिया—पु० वह जो अनेक रूप धारण करे ।

बहुल—वि० अधिक, प्रचुर, विपुल ।

बहुलता—स्त्री० प्रचुरता, बहुतायत ।

बहुली—स्त्री० इलायची ।

बहुवचन—पु० संज्ञा या सर्वनामका वह रूप जिससे अनेक वस्तुओंका बोध होता है ।

बहुविद—वि० बहुतसी बातें जाननेवाला ।।

बहुव्रीहि—पु० वह समास जिसमें कोई पद प्रधान नहीं होता और जो अपने पदोंसे भिन्न किसी संज्ञाका विशेषण होता है ।

बहुश्रुत—वि० जिसने अनेक बातें सुनी हों, बहुज्ञ, चतुर ।

बहुसंख्यक—वि० संख्यामें बहुत ।

बहूँटा—पु० देखो 'बहुँटा' ।

बहू—स्त्री० पतोहू । दुलहिन ।

बहेड़ा, बहेरा—पु० एक फल ।

बहेरी—स्त्री० मिस. बहाना ।

बहेलिया—पु० व्याधा, चिड़ीमार ।

बहोरना—सक्रि० फेरना, लौटाना ( राम० २३ ] ।

बहोरि—क्रिवि० फिर, पुनः ( उदे० 'नयना' ) ।

बाँ—पु० बार बेर 'मैं तोसौं कै बाँ कह्यो तू जिन इन्हे पत्याय ।' बि० ३३

बाँक—वि० तिरछा, टेढ़ा (प० ११) । पु० एक गहना ।*

बाँकड़ा—वि० वीर । [ *टेढ़ापन । धनुष ।

बाँकड़ी—स्त्री० एक तरहका सुनहला या रुपहला फीता ।

बाँकडोरी—स्त्री० एक शस्त्र ।

बाँकना—सक्रि० टेढ़ा करना ( प० ८० ) ।

बाँकपना—पु० वक्रता 'स्मित बन जाती है तरल हँसी नयनोंमें भरकर बाँकपना' कामायनी । ९८

बाँका—वि० बहादुर । बना ठना । तिरछा, टेढ़ा । पु०

बाँकिया—पु० एक बाजा, नरसिंहा । [ एक औज़ार ।

बाँकुड़ी—स्त्री० एक तरहका सुनहला या रुपहला फीता ।

बाँकुरा—वि० टेढ़ा, बाँका (उदे० 'तरकना'), पैना, चतुर ।

बाँग—स्त्री० आवाज, सबेरेके वक्त मुरगेके बोलनेका शब्द । पुकार, अजान ।

बाँगर—पु० वह ऊँची जमीन जो नदी इ० के बढ़नेपर भी पानीमें न डूबे । एक तरहके बैल ।

बाँगुर—पु० फन्दा, जाल 'तुलसिदास यह विपत्ति बाँगुरो तुमहिं सों बनै निबेरे ।' विन० ४३५

बाँचना—सक्रि० पढ़ना 'पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची ।' रामा० १५७, (उदे० 'आँक') । बचाना 'बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा ।' रामा० १४९ । अक्रि० बचना, शेष रहना 'सत्यकेतु कुल कोउ न बाँचा ।' रामा० ९७ । रक्षा पाना 'जल बरषत गिरिवर तर बाँचे ।' सू० ८१ । ( फूल इ० ) चुनना 'बाँचत कुसुम कुसुम्भके, रहे लागि अभिराम ।' मति० १८७

बाँछना—सक्रि० इच्छा करना । छाँटना । स्त्री० वान्छा,
बाँछा—स्त्री इच्छा । [ इच्छा ।
बांछित—वि० इच्छित, अभिलषित।
बांछी—वि० वांछा करनेवाला, चाहनेवाला ।
बाँझ—स्त्री० वन्ध्या स्त्री ( उदे० 'नतरु' ) ।
बाँझपन,-पना—पु० वन्ध्यात्व ।
बाँट—पु०बाँटनेकी क्रिया। भाग 'याहूमें कछु बाँट तुम्हारो।' सूवे० १४४ । बटवारा । बटखरा। गाय भैंसका चारा।
बाँटना—सक्रि० भाग करना, तकसीम करना । पीसना, घोंटना ( सू० २१० ) ।
बाँड—स्त्री० दो नदियोंके सङ्गमके बीचकी वह ज़मीन जो बाढ आनेपर डूब जाती है लेकिन बादमें निकल आती है।
बाँड़ा—वि० कटी पूँछवाला, असहाय ।
बाँद—पु० बन्दा, सेवक । बन्धन ( उदे० 'कुरी' ) ।
बाँदर—पु० बन्दर, कीश ।
बाँदी—स्त्री० दासी ।
बाँदू—पु० क़ैदी ।
बाँध—पु० मेंड, आड़ ।
बाँधना—सक्रि० जकड़ना, गाँठ देना । रोकना, बद्ध करना, क़ैद करना। बाँध आदि बनाना। नियत करना।
बाँधनी पौरि—स्त्री० पशु बाँधनेकी जगह ।
बाँधनू—पु० मंसूबा । कलंक। बाँधकर रँगा हुआ कपड़ा।
बांधव—पु०भाई,मित्र,सम्बन्धी । 'रीवाँ'का प्राचीन नाम।
बाँबी, बाँमी—स्त्री० साँपका बिल ( साखी १३९ ) ।*
बाँभन—पु० ब्राह्मण, विप्र (उदे० 'कन') । [*वमीठा ।
बाँवना—सक्रि० रखना ।
बाँवला—पु० पागल 'भयसे पीले तरुके पात, भगा बाँवले-से बे-आप' पल्लव ६३ ।
बाँस—पु० एक लम्बा पतला पेड़ या उसकी लकड़ी। रीढ़ । बाँसों उछलना=बहुत खुश होना ।
बाँसपूर—पु० एक पतला कपड़ा 'बाँसपूर झिलमिलकी
बाँसली—स्त्री० बाँसुरी, वंशी । [ सारी'।' प० १५८
बाँसा—पु० रीढ़ । नाकके बीचकी हड्डी ।
बाँसी—स्त्री० एक मुलायम बाँस । एक तरहका धान या गेहूँ । एक पत्थर । बाँसुरी ।
बाँसुरी—स्त्री० वंशी, मुरली ।
बाँह—स्त्री० बाहु, भुजा ( उदे० 'दोहनी' ) । शक्ति, भरोसा, शरण, अधीनता 'जिन्ह भूपनि जग जीति बाँधि जम, अपनी बाँह बसायो ।' विन० ४६२ ।—गहना=शरणमें लेना, अपनाना ।—देना = सहारा [ देना ।
बाँहतोड़—पु० कुश्तीका एक पेच ।
बाँहमरोड़—पु० ,, ,,
बा—पु० 'वा', जल । बार 'कैबा लख्यो सखी लखे लगै थरहरी देह ।' बि० २१३
बाइ, बाई—स्त्री० वातदोष, अपच । बहिन, बेटी आदिका सम्बोधन ( बुन्देल० ) ।
बाइनि—स्त्री० बयना ( मति० २१० ) ।
बाइबिल—पु० ईसाइयोंका धर्म-ग्रंथ, 'इन्जील' ।
बाइसिकिल—स्त्री० दो पहियोंकी एक गाड़ी, पैर गाड़ी।
बाईस—वि०बीस और दो । पु०बीस और दोकी संख्या ।
बाउ—पु० वायु, हवा (मति० २०९) । अपान वायु ।
बाउर—वि० बावला 'कर्म लिखा जो बाउर नाहू ।' रामा० ५९, (उदे० 'तुरास') । मूर्ख, गूँगा ।
बाऊ—पु० वायु०, हवा (रामा० ३८८) ।
बाएँ—क्रिवि० बाईं तरफ़ ।
बाक—पु० वाक्य, वाणी, वचन, शब्द (उदे० 'ऐंड़ा') ।
बाकचाल—वि० बकबकिया, वाचाल ।
बाकना—अक्रि० बकना, प्रलाप करना ।
बाकल—पु० बकला, छाल (राम० २१६) ।
बाकला—पु० मटर जैसी एक तरकारी ।
बाकस—पु० सन्दूक, पेटी ।
बाका—स्त्री० वाणी, शब्द ।
बाक़ी—वि० शेष, बचा हुआ ।
बाकी—स्त्री० एक तरहका धान । अ० लेकिन ।
बाकुल—पु० बल्कल (कबीर ११६) ।
बाखरि—स्त्री० बखरि, बड़ा मकान 'एकै बाखरिके बिरह लागे बरस बिहान ।' वि० १०८ (वंग०) ।
बाग—पु० उद्यान, फुलवाड़ी । स्त्री० लगाम ( प० ४५ )
बागडोर—स्त्री० लगाम ।
बागना—अक्रि० कहना 'एक कहहिं कहहिं करहि अपर एक करहिं कहत न बागहीं ।' रामा० ५०६ । घूमना फिरना 'जागत बागत सपने न सुख सोइहै ।'विन० २०७
बागबाग होना—बहुत प्रसन्न होना ।
बागबान—पु० माली ।
बागर—पु० नदी-तटकी ऊँची भूमि । जाल, रस्सी 'घूँघट पट बागर ज्यों बिडवत ।' सू० १७० ।···सूखी मरु-

मय भूमि 'बागर देश लुअनका घर है' कबीर, 'बागर लौं वेगि भवसागर सुखाये देति।' रत्ना० ३८४
बागल—पु० बगुला।
बागवान, बागवान—दे० 'बागबान'।
बागा—पु० एक पुराना पहनावा,जामा ( उदे० 'छिपी')।
बागी—पु० बलवाई, विद्रोही।
बागीचा—पु० बाग, उद्यान।
बागुर—पु० जाल, फन्दा 'बागुर विषम तोराइ मनहु भाग मृग भाग बस।' रामा० २३५
बाघंबर—पु० व्याघ्र-चर्म।
बाघ—पु० व्याघ्र।
बाघेलखंड—पु० मध्य भारतका एक प्रदेश।
बाच—वि० वाच्य, वर्णनीय ( सुन्द० १५६ )।
बाचना—देखो 'बाँचना', ( उदे० 'तेजना' )।
बाचा—स्त्री० वचन, प्रतिज्ञा ( प० २६६ )। बोलनेकी
बाचाबंध—वि० वचनबद्ध। [ शक्ति।
बाछ, बाछा—पु० बछड़ा, बच्चा।
बाज—पु० एक पक्षी। बाजा। बाजि,घोड़ा। वि० रहित। कोई, कुछ। क्रिवि० छोड़कर, विना 'को उठाइ बैठारै बाज पियारे जीउ।'प०९१।—आना=वञ्चित या अलग होना।—करना,—रखना = मना करना, रोकना।
बाजदावा—पु० दावेसे बाज़ आनेकी प्रतिज्ञा 'लेत दावा-सौं छिनाये बाजदावा धूप भानकी।' पूर्ण १०१
बाजड़ा—दे० 'बाजरा'।
बाजन—पु० बाजा ( उदे० 'अँदोर' )।
बाजना—अक्रि० बजना ( उदे० 'क्षुद्रावलि' )। भिड़ना, लड़ना 'तिन्हहिं निपाति ताहि सन बाजा।' रामा० ४२४, 'अछरी जनहुँ अखारे बाजैं।' प० २१७। गिरना, लगना, पड़ना 'लहरि अकास लागि भुइँ बाजी।' प० ६६, ( २६० भी )। प्रसिद्ध होना। पहुँचना 'साह आइ चितउर गढ़ बाजा।' प० २५५
बाजरा—पु० एक अन्न।
बाजा—पु० वाद्य, बजानेकी वस्तु। [नियमानुसार हो।
बाजाप्ता, बाज़ाप्ता—क्रिवि० नियमानुसार। वि० जो
बाज़ार—पु० खरीद फरोख्तकी जगह, हाट।
बाज़ारी,-रू—वि० बाज़ारमें मिलनेवाला, बाज़ारका,
बाजि—पु० घोड़ा। पक्षी। बाण। [ अशिष्ट।
जी—स्त्री० दाँव, शर्त्त ( रहीम ४७ ), 'बाजी जात बुँदेलकी राखो बाजी लाज।' —छत्रसाल। जादूका तमाशा, माया, खेल 'बाजी झूँठि बाजिगर साँचा।' बीजक २३७। पु० घोड़ा। बजनिया।
बाजीगर—पु० जादूगर।
बाजु—क्रिवि० देखो 'बाज'। [ एक दल।
बाजू—पु० बाहु। बाहुपर पहननेका एक गहना। सेनाका
बाजूबँद, बाजूबंद, बाजूबी—पु० बाहुपर पहननेका एक गहना ( उदे० 'तौक' )। [ तुझ।' कबीर १९
बाझ—वि० रहित 'भिस्त न मेरे चाहिए बाझ पियारे
बाझन—स्त्री० उलझन, बखेड़ा, झगड़ा।
बाझना—अक्रि० फँसना, उलझना 'तैं सुअटा पण्डित होइ कैसे बाझा आइ।' प० ३१
बाट—स्त्री० ऐंठन, बल। पु० रास्ता ( उदे० 'ठाट' )। बटखरा। —जोहना=आसरा देखना। —पड़ना = डाका पड़ना, छिन जाना 'बाट परै मोरि नाव उड़ाई।' रामा० २४६। —पारना = डाका डालना 'बाटपर ठाढ़ी बाट पारत बटोहिन की…' रवि० २६
बाटना—सक्रि० कुचलना, चूर्ण करना, पीसना 'सुनु री सखी! श्यामसुन्दर बिन बाटि विषम विष पीजै।' भ्र० ६५। बटना, ऐंठना।
बाटकी—स्त्री० बटुली ( सुदामा० १५ )।
बाटिका—स्त्री० फुलवारी।
बाटी—स्त्री० वाटिका, बाग ( प्रिय० १२१ )। गोली। बहुत मोटी रोटी,लिट्टी। एक तरहका छिछला कटोरा।
बाड़—स्त्री० बाढ़। धार, तेज़ी। एक गहना। टट्टी, रक्षा 'खेत बिचारा का करै जो धनी करै नहिं बाड़।' साखी ६७
बाड़व—पु० बड़वानल। ब्राह्मण।
बाड़ा—पु० हाता, पशुशाला।
बाड़ि—स्त्री० बाड़ी, टट्टर, मेंड़ ( कबीर १७० )
बाड़ी—स्त्री० फुलवारी, घिरी जगह, घर।
बाड़ौ—पु० देखो 'बाढ़व', ( दास १०३ )।
बाढ़—स्त्री० जलप्लावन, वृद्धि, अधिकता। छुरी आदिकी धार, सान। तोप इ० का लगातार चलना। '…' किनारा (रत्ना० २६९)। [,उमड़ना (उदे० 'पूर')।
बाढ़ना—अक्रि० बढ़ना ( उदे० 'जुआर',रामा० १४९)।
बाढ़वार—वि० तेज़ धारवाला ( भू० १७५ )।
बाढ़ि,बाढ़ी—स्त्री० वृद्धि 'दसमुख देखि सिरन्हकै बाढ़ी।' रामा० ५०८। लाभ 'मकु तहँ गये होइ किछु बाढ़ी।'

**वाढ़ीवान**—पु० धार तेज़ करनेवाला ।
**वाण**—पु० शर । आग । पाँचकी संख्या ।
**वाणविद्या**—स्त्री० वाण चलानेकी विद्या, तीरन्दाज़ी ।
**वाणासुर**—पु० वलिके ज्येष्ठ पुत्रका नाम ।
**वाणिज्य**—दे० 'वाणिज्य' ।
**वात**—स्त्री० वचन, चर्चा, प्रवाद, कथन, आदेश, वार्त्तालाप, सन्देशा । प्रतिष्ठा । सलाह । आशय, इच्छा, मौज ('मनकी बात') । रहस्य या गुप्त बात ('बात खुलना') । चाल, बहाना । सवाल, प्रश्न । झगड़ा ('बात बढ़ना') । वस्तु । घटना, मामला । काम । वायु । वात रोग । **वात उठना या चलना**=चर्चा छिड़ना '..... अली चली क्यों बात ।' बि० ९२ । **वातका वतंगड़ करना**=मामूलीसी वातको खूब बढ़ाकर कहना । **वात काटना**=बोलनेमें दखल देना, किसीके वचनका खण्डन करना । **बातका धनी (या पक्का)**=प्रतिज्ञापर दृढ़ रहनेवाला, वादेका सच्चा । **बातकी बातमें**=क्षणभरमें, शीघ्र, तुरन्त । **बात गढ़ना या बनाना**=झूठे प्रसङ्गकी रचना करना 'कदम तीरतें मोहिं बुलायो गढ़ि गढ़ि वातैं बानति ।' सूबे० ११२, ( उदे० 'आसन' ) । **बात जाना**=प्रतिष्ठा नष्ट होना । **वात न पूछना**=आदर न करना, परवा न करना, ध्यान न देना । **वात पी जाना**=जाने देना, सुनकर अनसुनी कर देना । **बात वढ़ाना**=झगड़ा करना, घटना या प्रसङ्गको और उग्र रूप देना । **वात बनना**=काम बनना, सफलता होना 'आन उपाय बनहि नहिं बाता ।' रामा० २३९ । **वात वनाना या सँवारना**=मतलब गाँठना, कार्य पूरा करना । **वात वहना या उड़ना**=सर्वत्र चर्चा फैलना । **वात बिगड़ना**=काम नष्ट करना 'मिलहि माँझ विधि बात बिगारी ।' रामा० २२१ । **वात मारना**=बात दबाना, ताना मारना । **वात रखना**=कहा मानना, इज़्ज़त रखना, इच्छा पूरी करना । **वात हारना**=वचन देना । **वातें बनाना**=व्यर्थ बकवाद करना, डींग मारना ( राम० ७४ ), चापलूसी करना । **वातें सुनाना**=खरीखोटी सुनाना, भला बुरा कहना । **वातोंका धनी**=लम्बी चौड़ी बात करनेवाला, बातूनी । **वातोंमें उड़ाना**=हँसीमें टाल देना, वातें बनाकर धोखा देना ।
**बातचीत**—स्त्री० कथोपकथन ।

**वाती**—स्त्री० वटी हुई रुई या कपड़ेका टुकड़ा, बत्ती 'भक्ति को दीप प्रेमकी बाती ।' हितहरि०, ( उदे० 'अघट' )
**वातुल**—वि० पागल, बकवादी 'मद्यपान रत तियजिव होई । सन्निपात युत वातुल जोई ।' राम० २२९वायुका
**वातूनी**—वि० वाचाल, बकवादी ।
**वाद्**—क्रिवि० पश्चात् । व्यर्थ ( देखो 'वादि' ) । वि० छोड़ा हुआ, अतिरिक्त । पु० तर्क, विवाद, झगड़ा, प्रतिज्ञा, होड़ाहोड़ी ।
**वादना**—सक्रि० तर्क करना, झगड़ना । ललकारना । ( उदे० 'घाट' ), 'जहाँ मारु ही मारु यौं वीर बादे ।' सुजा० २३
**वादनुमा**—पु० वायु-दिशा-सूचक यन्त्र, पवन-प्रकाश ।
**वादवान**—पु० मस्तूलके सहारे तना हुआ कपड़ा हवाकश, पाल ( भू० २३ ) ।
**वादर, वादल**—पु० मेघ, जलद 'आये वीर बादर बहादर मदनके ।' भू० १८२
**वादरायण**—पु० भगवान् वेद व्यास ।
**वादरिया, वादरी**—स्त्री० बदली, मेघमाला ।
**वादला**—पु० कामदानीका तार ( रवि० ४५ ) ।
**वादशाह**—पु० सम्राट्, शासक, राजा, ताशका एक पत्ता । ईश्वर ( बीजक ६३ ) ।
**वादशाही**—वि० वादशाहका, बादशाहोंके योग्य स्त्री० राज्य, शासन । मनमाना बर्त्ताव ।
**वादाम**—पु० एक वृक्ष या उसका फल ।
**वादामी**—वि० वादामके रङ्गका । पु० एक धान । एक चिड़िया ( किलकिला ) । बादामी रङ्गका घोड़ा ।
**वादि**—क्रिवि० व्यर्थ 'विविध भाँति भूषन वसन वादि किये करतार ।' रामा० २५६, ( उदे० 'नतरु' ) ।
**वादित**—वि० वजाया गया ( प्रिय० ११ ) ।
**वादी**—पु० मुद्दई, शत्रु 'पहुँचे आइ तुरुक सब वादी ।' प० ३१९ । स्त्री० वायु-दोष । वि० वात सम्बन्धी, वायु कुपित करनेवाला ।
**वादीगर**—पु० वाजीगर, जादूगर ( बु० वै० २३० ) ।
**वादुर**—पु० चमगीदड़ 'ते विधना वादुर रचे रहे उरध मुख झूल ।' साखी ६५, ( कलस २ ) ।
**वाध**—पु० एक तरहकी रस्सी । स्त्री० वाधा, कठिनाई ।
**वाधक**—पु० विघ्न करनेवाला, दुःखदायी । रुकावट ।
**वाधना**—सक्रि० बाधा डालना 'भुव भूप जे चारि पदा-

रय साधत । तिनको कबहूँ नहिं बाधक बाधत ।' राम०
बाधा—स्त्री० विघ्न, अड़चन, कष्ट, भय । [ ४५३
बाधाहर—वि० बाधा दूर करनेवाला ।
बाधित—वि० रोका हुआ, असङ्गत । आभारी ।
बाध्य—वि० जो रोका जानेवाला हो, लाचार, विवश ।
बान—पु० बाण । चमक, आब 'कञ्चन जरे अधिक होइ बानू ।' प० ८४ । स्त्री० आदत । बनावट, वेश-भूषा, रूप 'कर धरि चक्र चरनकी धावनि, नहिं बिसरति वह बान ।' सू० १६
बानइत—पु० देखो 'बानैत' ।
बानक—स्त्री० सजधज, वेष 'इहि बानक मो मन सदा बसौ बिहारीलाल । वि० १२७ ( सू० १६५, सूबे० ५५ ) । एक तरहका रेशम ।
बानगी—स्त्री० मालका नमूना ।
बानना—सक्रि० बनाना ( उदे० 'बात' ) ।
बानर—पु० बन्दर ।
बानवे—वि० नव्वे और दो । पु० नव्वे और दोकी संख्या ।
बाना—पु० वेश, सजावट 'का बरनौं जस उन्हकर बाने ।' प० २४६ । रीति, स्वभाव, चिह्न ( सू० २७ ) । एक हथियार जिसके सिरेपर कभी कभी झण्डा बाँधते हैं । बुनावट, बुनावटका आड़ा तागा । निशान 'बाने फहराने घहराने घण्टा गजनके ।' भू० १५० । सक्रि० पसारना, खोलना 'मुख बाइ धावहिं खान ।' रामा० ५१४, ( सू० ६४ ) ।
बानावरी—स्त्री० बाणावली । बाण विद्या । बाण चलाने* की रीति ।
बानि—स्त्री० आदत, स्वभाव 'एक बानि करुना निधान की । सो प्रिय जाके गति न आनकी ।' रामा० ३६४ । वेष, बनावट । बाणी । चमक, आब 'सीसते मणि हरी जिनके कौन तिनमें बानि ।' भ्र० ५६, 'सुवा, बानि तोरी जस सोना ।' प० ३७
बानिक—स्त्री० बनावट, ( पु० भी ) वेश 'देखे बानिक आजुको वारौं कोटि अनङ्ग ।' ललित० ९३
बानिया—पु० वैश्य, वणिक् ।
बानी—स्त्री० वाणी, शब्द, सरस्वती ( रामा० ३ ) । प्रतिज्ञा । चमक, आभा, रङ्ग ( प० १७७ ) । पु० आरम्भ करनेवाला । बनिया 'बानी बैठो हाट ।' दास ५ । व्यापार ।
बानैत—पु० तीरन्दाज । सैनिक, योद्धा । बाना फेरने या धारण करनेवाला ( रामा० २८७, सू० १० ) ।
बाप—पु० पिता ।
बापिका, बापी—स्त्री० सीढ़ीयुक्त कुआँ ।
बापुरा—वि० बेचारा, गरीब, तुच्छ (रहीम ४५), 'सिय मुख समता पाव किमि चन्द बापुरो रङ्क ।' रामा० १३०
बाफ—स्त्री० वाष्प, भाफ ।
बाफता—पु० एक रेशमी कपड़ा ( उदे० 'खासा' ) ।
बाब—पु० अध्याय, पाठ, परिच्छेद । मुक़दमा । प्रकार ।
बाबत—स्त्री० सम्बन्ध ।
बावरची—पु० रसोइया, पाचक ।
बाबा—पु० पिता । दादा । वृद्ध मनुष्य ।
बाबिल—पु० एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर ।
बाबी—स्त्री० सन्यासिन ।
बाबुल—पु० बाबू, बबुआ ( बीजक ३३३ ) । पिता ।
बाबुव, बाबू—पु० एक आदरसूचक शब्द । पिता ।
बाभन—पु० ब्राह्मण ।
बाम—स्त्री० स्त्री । एक गहना । एक मछली । पु० कोठा, अटारी । वि० उलटा, प्रतिकूल ।
बामदेव—पु० शिवजी ।
बामन—पु० ब्राह्मण । एक अवतार । वि० बौना, अत्यन्त छोटा 'उधर बामन-डग-स्वेच्छाचार नापता जगतीका विस्तार 'पल्लव' १२५
बामा—स्त्री० स्त्री । दुर्गादेवी ।
बामी—स्त्री० बाँबी । वि० वाममार्गी ।
बाम्हन—पु० ब्राह्मण ।
बाय—स्त्री० वायु ( उदे० 'बिजना' ) । बातका कोप 'भटा एकको पित करै करै एकको बाय ।' बापी ।
बायक—पु० कहने या पढ़नेवाला । दूत ।
बायन—पु० देखो 'बयना' । भेंट । देखो 'बयाना' ।
बायबिडंग,-बिरंग—पु० एक लता जिसके फल दवामें काम आते हैं ।
बायला—वि० वायुका प्रकोप करनेवाला, वायु उत्पन्न करनेवाला ।
बायली—वि० बाहरी, अपरिचित ( रवा० ७९ ) ।
बायस—पु० कौआ ( रामा० ३५८ ) ।
बायस्कोप—पु० चलती फिरती तसवीरें दिखलानेवाला यन्त्र ।
बायाँ—वि० 'दाहिना'का उलटा । प्रतिकूल, उलटा ।
बायु—स्त्री० हवा ।
बायें—क्रिवि० बाईं तरफ । विरुद्ध दिशा या विरुद्ध पक्षमें ( उदे० 'दाहिना' ) ।
बारंबार—क्रिवि० फिर फिर, लगातार ।
बार—पु० बाल, केश । बालक 'जाय कै यह बात क‍ि

रक्षियो मुनि बार ।' के० ३४९ । द्वार 'हस्ति सिंघली बाँधे बारा ।'प० १६ । ठिकाना । किनारा, धार । घेरा । वारि, जल 'खेवनिहार पुकार बार नहिं कोऊ साथी ।' दीन० १११ । स्त्री० मरतबा । बेला, समय, देर 'रहिमन वित्त अधर्मको जात न लागै बार ।' रहीम । ...बारी, घेरा 'कर्ममार्ग है सो काँटनकी बार है' अष्ट १२१ बार न खसना, बार बाँका न होना = कुछ भी हानि न पहुँचना 'न्हात बार न खसै इनको कुशल पहुँचै धाम ।' सूबे० २७९

**बारगह**—स्त्री० डेवढ़ी । तम्बू ।

**बारजा**—पु० कोठेके सामनेका दालान, बरामदा, कोठा ।

**बारता**—स्त्री० वार्त्ता, कथा, बात ।

**बारतिय**—स्त्री० वेश्या ।

**बारदाना**—पु० माल रखनेका बोरा इ०, रसद ।

**बारन**—पु० निवारण, विघ्न, रुकावट (उदे० 'उतारना')। हाथी ( रामा० १६ )। कवच । अंकुश ।

**बारना**—सक्रि० रोकना, बचाना ( उदे० 'ठाँव', रघु० ५१ )। जलाना, न्योछावर करना 'तो पर बारौं उरबसी सुनु राधिके सुजान ।' बि० १६

**बारनिश**—स्त्री० फेरा हुआ रोगन ।

**बारबधू, बारबधूटी**—स्त्री० वेश्या ।

**बारबरदार**—पु० बोझा ढोनेवाला ।

**बारमुखी**—स्त्री० वेश्या ।

**बारह**—वि० ग्यारह और एक ।—**बाट घालना** = नष्ट भ्रष्ट करना '...घालेसि सब जग बारह बाटा ।' रामा० ३०० ।—**बाट होना** = ध्वस्त विध्वस्त होना 'बिगड़े उनमें एक तो हो सब बारा बाट ।' पूर्ण २११

**बारहखड़ी**—स्त्री० बारह मात्राओंके मेलसे बने हुए व्यञ्जनोंके रूप ।

**बारहदरी**—स्त्री० हवादार बैठक ।

**बारहवाना**—वि० सूर्यके समान प्रकाशवान्। चोखा (अ० १४२ ) ।

**बारहबानी**—वि० सूर्यकी सी चमकवाला, चोखा (उदे० 'दिनार') । सच्चा, पूर्ण । स्त्री०तेज या असलीचमक ।

**बारहमासा**—पु० एक तरहका गीत ।

**बारहमासी**—वि० सदाबहार । वर्षभर जारी रहनेवाला ।

**बारहवफात**—पु० रबीउल-अव्वलकी वे बारह तिथियाँ जिनमें मुहम्मद सा० बीमार पड़कर मृत्युको प्राप्त हुए ।

**बारहवाँ, बारहाँ**—वि० ग्यारहवेंके बादवाला ।

**बारसिंगा**—पु० हरिणकी तरहका एक पशु ।

**बारहा**—क्रिवि० बार बार, कई बार ।

**बारहीं**—स्त्री०जन्मसे बारहवाँ दिन,बरही । [हवा दिन ।

**बारहों**—पु० मृत्युके बादका बारहवाँ दिन । जन्मसे बार-

**बारा**—वि० अल्पवयस्क, बालक, छोटा । 'मत्त अमत्त बड़े अरु बारे । कुञ्जर पुञ्ज जगावत हारे ।' रामा०४५० । पु० बालक, बच्चा अति सुकुमार जुगल मेरे बारे ।' रामा० ५३८, (उदे० 'बींधना) । **बारेतें** = बचपनसे

**बारात**—स्त्री० वरका जुलूस । [ ( अ० ५४ )।

**बाराह**—पु० वराह, सुअर ।

**बारि**—पु० जल । स्त्री० वाटिका । घेरा । कन्या । किनारा।

**बारिक**—पु० सैनिकोंके रहनेके मकानोंकी कतार, छावनी ।

**बारिगर**—पु० सान चढ़ानेवाला ( रतन० ४२ ) ।

**बारिगह**—स्त्री० तम्बू 'चितउर सौंह बारिगह तानी ।' [ प० २४५

**बारिज, बारिजात**—पु० कमल ।

**बारिद, बारिधर**—पु० बादल ।

**बारिधि**—पु० समुद्र ।

**बारिवाह**—पु० बादल ( भु० २१ ) ।

**बारिश**—स्त्री० वृष्टि, वर्षा ।

**बारी**—स्त्री० वाटिका, उद्यान ( उदे० 'उकठना' ) । क्यारी । घेरा । कन्या 'पदमावति राजा कै बारी ।' प० ४१, ( उदे० 'उजियारी' ) । नवयुवती । घर । खिड़की । किनारा, हाशिया, धार । कानकी बाली ( सू० १६१ ) । पारी, ओसरी । पु० एक जाति । वि० स्त्री० छोटी उम्रकी 'अबहि बारि तुइ पेम न खेला ।' प० ७९

**बारीक**—वि० सूक्ष्म, महीन ।

**बारीकी**—स्त्री० सूक्ष्मता, पतलापन, खूबी ।

**बारीस**—पु० समुद्र ।

**बारुणी, बारुनी**—स्त्री० मदिरा ( रामा० २८५ ) ।

**बारू**—स्त्री० बालू, धूल 'दुपहर जेठ जरत बारूमें घायन लौन लगाये ।' व्यासजी । [उठती है ।

**बारूत, बारूद**—स्त्री० एक बुकनी जो आगसे भभक

**बारूदखाना**—पु० गोला बारूद आदि रखनेकी जगह ।

**बारेमें**—अ० विषयमें, सम्बन्धमें ।

**बारोठा**—पु० द्वार । द्वारपूजा ( उदे० 'चार' ) ।

**बाल**—पु० बालक । केश । स्त्री० बालि, मञ्जरी,दानेयुक्त डण्ठल । बाला, तरुणी ( उदे० 'दुपहरी' ) ।—**बाँका न होना या खसना**—देखो 'बार' ।

वालक—पु० लड़का, बच्चा, बछेड़ा। केश। 'मोथा' नामका जल-पौधा ( के० २५९ )।
वालकता—स्त्री० बचपन,बाल्यावस्था (उदे०'घालकता')।
वालकताई—स्त्री०,-पन—पु० लड़कपन बाल्यावस्था, नादानी 'मेरे अनन्त जीवनका वह मतवाला वालकपन'। नीहार। ४८
वालखोरा—पु० सिरके वाल झड़नेका रोग।
वालगोपाल—पु० वालक कृष्ण। वालवच्चे।
वालटी—स्त्री० एक तरहका डोल।
वालतंत्र—पु० वालकोंके पालन-पोषण इ० की विद्या।
वालतोड़—पु० एक तरहका फोड़ा जो झटकेसे बाल उखड़नेके कारण हो जाता है।
वालधि, वालधी—स्त्री० पूँछ 'वालधी बढ़न लागी ठौर ठौर दीन्ही आगि '।' कविता० १३४
वालना—सक्रि० जलाना ( प्रिय० १०८ )।
वालपन, वालापन—पु० बचपन, लड़कपन ( उदे० 'तरुनापन' )।
वालवच्चे—पु० सन्तान, लड़केवाले।
वालवुद्धि-स्त्री०वालकों जैसी बुद्धि। वि०नादान,कमअक्ल।
वालब्रह्मचारी—पु० वाल्यकालसे ही ब्रह्मचर्य रखनेवाला।
वालम—पु० प्रेमी, पति ( उदे० 'जोरना' )।
वालविधवा—स्त्री० वह स्त्री जो वाल्यकालमें ही विधवा हो गयी हो।
वालविधु—पु० नव विधु, शुक्लपक्षकी प्रतिपदा या द्वितीयाका चन्द्रमा।
वालसूर्य—पु० प्रातःकालीन सूर्य।
वाला—स्त्री० कन्या, पुत्री, नवयुवती। पत्नी। एक गहना। वि० छोटी उम्रका, भोला 'देखो री एक वाला जोगी मेरे द्वारे आया हो।'—गीत
वालाई—स्त्री० मलाई। वि० ऊपरका, बँधी आमदनीके सिवा।
वालापन—पु० बचपन, वाल्यावस्था।
वालारुण—पु० प्रातःकालीन सूर्य।
वालि—स्त्री० दानेयुक्त डण्ठल, मंजरी 'वापुरी, मजुल आँचकी वालि, सुमाल सी है उरमें अरती क्यों।' देव (व्रज० २९६), ( उदे० 'कोदव' )।
वालिका—स्त्री० कन्या, पुत्री। कानकी वाली। रेत।
वालिकुमार,-तनय—पु० वालिका पुत्र अङ्गद।
वालिग—पु० वयःप्राप्त, जवान।
वालिश,वालिस—पु० वालक, मूर्ख व्यक्ति। स्त्री० तकिया। वि० नासमझ।
वालिश्त—पु० नौ इंचकी माप, बित्ता।
वाली—स्त्री० कानका एक गहना। दे० 'वालि'। बाल्य, बालपनकी कौन अकेली खेल रही मा! वह अपनी वय वाली में' पल्लव ५०
वालुका, वालू—स्त्री० रेत, रेणु।
वालूदानी—स्त्री० वालू रखनेकी डिबिया।
वालूसाही—स्त्री० एक तरहकी मिठाई।
वाल्य—पु० बचपन, बच्चोंका काम। १६ वर्षतककी उम्र। वि० वालक सम्बन्धी। वाल्यकालका।
वाल्यकाल—पु०, वाल्यावस्था—स्त्री० लड़कपन।
वाव—पु० वायु '···त्रिस्ना बाव चहूँ दिसि डोला।' कबीर ११६। अपान वायु। वातदोष।
वावड़ी—स्त्री० सीढ़ीयुक्त कुआँ, वापी।
वावन—वि० पचास और दो। पु० ५२ की संख्या।
वावना—वि० बौना, ठिंगना।
वावर, वावरा, वावला—वि० पागल, मूर्ख 'बावरो रावरो नाह भवानी। विन० ७१
वावरची—पु० रसोइया, पाचक।
वावरी, वावली—स्त्री० देखो 'बावड़ी'। वि० स्त्री० पागल ( उदे० 'क्यों', डाँवरी' )।
वावर्ची—पु० बावरची।
वावाँ—वि० बाईं ओरका, उलटा।
वाशिंदा—पु० निवासी।
वाष्प—पु० भाफ। अश्रु। लोहा।
वास—पु० रहना, निवास, निवास-स्थान। वस्त्र ( के० २९० )। वासर, दिन 'नैनन तो झरि लाइया रहट वहै निसु वास।' साखी ३९। स्त्री० महँक 'नेकौ वह न जुदी करी,हरषिजु दी तुम माल। उर ते वास छुट्यो नहीं, वास छुटे हू लाल।' वि० २५४। एक अस्त्र। आग। वासना।
वासकसज्जा—स्त्री० एक नायिका।
वासठ—वि० साठ और दो। पु० साठ और दोकी संख्या।
वासंतिक—वि० वसन्त ऋतुमें होनेवाला या वसन्त सम्बन्धी।
वासन—पु० वरतन 'लेहिं न वासन वसन चुराई।' रामा० ३१९। वस्त्र ( उदे० 'आसन' )।
वासनवारा—वि० सुगन्धित करनेवाला ( रतन० ८ )।
वासना—स्त्री० इच्छा (रामा० १९९)। महँक। सक्रि० सुगन्धित करना।

बासमती—पु० एक सुगन्धित चावल (उदे० 'कजरी')।
बासर—पु०एक दिन,सवेरा, सवेरेका राग(उदे०'खँगना')
बासव—पु० इन्द्र।
बाससी—स्त्री० वस्त्र।
बासा—पु० एक पक्षी। अड़ूसा। निवास 'बासो कियो आय हर एककी अकल पै।' ग्वाल। निवासस्थान 'बिचके बासे बसि गया काल रहा सिर पूर। साखी ७८। वि० 'बासी'।
बासिग—पु० वासुकि, शेषनाग ( कबीर २०३ )।
बासित—वि० सुगन्धित किया हुआ।
बासी—वि० देरका रखा हुआ या बना हुआ, मुरझाया हुआ। वि० रहनेवाला।
बासुकी—पु० वासुकि, नाग। स्त्री०सुगन्धित पुष्प-माला
बासौंधी—देखो 'बसौंधी'। [( कविप्रि० १८ )।
बाह—स्त्री० जोत 'जैसे करनि किसान बापुरो नौ नौ बाहैं देत।' भ्र० १४६ पु० प्रवाह, धारा 'अश्रु बाहको प्रबलपूर दोहू दिशि फूलो।' रत्ना० ८५। निकास, रास्ता, उपाय 'सिसिर निसामें निसरन कौन बाह कहू' रत्ना ४७५
बाहक—पु० सवार 'बिनहूँ बाग लगाम वह चाबुक लेत न हाथ। फेरत बाहक मैन लख नैन हरिन इक साथ।' रतन० १३। ढोनेवाला, कहार।
बाहकी—स्त्री० कहारिन, पालकी वहन करनेवाली स्त्री।
बाहन—पु० सवारी ( उदे० 'कुस्टी', 'दिच्छित' )।
बाहना—सक्रि० ढोना। फेंकना 'फरे विरिछ कोइ ढेल न बाहा।' प० २१५। चलाना 'त्यौं उहि ब्रह्मकि सैहथी बाही।' छत्र० ९८। मारना (साखी ३, उदे० 'कठैठा')। हाँकना। अक्रि० प्रवाहित होना।
बाहनी – स्त्री० सेना। नदी।
बाहर—क्रिवि० 'भीतर' का उलटा, अलग, अन्यत्र।
बाहरी—वि० बाहरका, ऊपरी, पराया।
बाहाँजोरी—क्रिवि० हाथसे हाथ मिलाये हुए।
बाहिज—क्रिवि० बाहरसे, ऊपरसे 'बाहिज नम्र देखि मोहिं साँई।' रामा० ५९५
बाहिनी— स्त्री० सेना, नदी ( राम० ६२ )। सवारी।
बाहिय—क्रिवि० बाहर ( उदे० 'छिरकना' )।
बाहिर—देखो 'बाहर'।
बाहु, बाहू—स्त्री० भुजा।

बाहुज—पु० ( बाहुसे उत्पन्न ) क्षत्रिय।
बाहुत्र, बाहुत्राण—पु० शस्त्राघातसे बचनेके लिए पर धारण किया गया लोहे आदिका दस्ताना।
बाहुबल—पु० पराक्रम, शौर्य।
बाहुमूल—पु० बाहुका जोड़, काँख।
बाहुयुद्ध—पु० मल्लयुद्ध, कुश्ती।
बाहुरना—अक्रि० लौटना, मुड़ना 'जतन किये नहि बाहुरै लगी मरमकी चोट।' साखी २३
बाहुल्य—पु० प्रचुरता, अधिकता। [( बैल इ० )।
बाह्य—वि० बाहरका, बाहरी। पु० भार ढोनेवाला पशु
बाह्लीक—पु० एक देश जो काबुलके उत्तरमें था।
बिंग—पु० व्यंग्य ( पूर्ण १०३ ), आक्षेपपूर्ण उक्ति।
बिंजन—पु० व्यञ्जन, भोज्य वस्तु।
बिंद—पु० बूँद, बिन्दी या तिलक 'नाक सरबसु लैन चाहो सुरसरीको बिन्द।' सू० २९
बिंदा—पु० बड़ी बिन्दी, गोल टीका। स्त्री० एक गोपी।
बिंदी—स्त्री० बिन्दु, छोटा टीका।
बिंदु—देखो 'बिन्दु'।
बिंदुका—पु० देखो 'बिन्दा'।
बिंदुरी, बिंदुली—स्त्री० बिन्दी, टिकुली, छोटा टीका।
बिंध—पु० विन्ध्याचल पहाड़।
बिंधना—अक्रि० फँसना। छेदा जाना। सक्रि० छेदना, नाथना 'ताल बिंधे अरु सिन्धु बध्यो यह चेटक विक्रम कौन कियो।' राम० ४०९
बिंधा—वि० छेदा हुआ, पीड़ित।
बिंब—पु० छाया। सूर्य चन्द्र इ० का मण्डल। कुँदरू। झलक। बाँबी ( साखी १४० )।
बिंबउरी—स्त्री० साँपकी बाँबी।
बिंबग्राहकता—स्त्री० बिम्बग्रहण करनेकी शक्ति।
बिंबफल—पु० कुँदरू।
बिंबा—पु० कुँदरू, बिम्ब।
बिंबित—वि० प्रतिबिम्बित।
बि, बिअ—वि० दो।
बिआज—पु० सूद। बहाना, मिस।
बिआध—पु० शिकारी।
बिआध, बिआधि—स्त्री० रोग, पीड़ा।
बिआना—अक्रि० सक्रि० जनना ( उदे० 'नतइ' )।
बिआपी—वि० देखो '[illegible]

बिआहना—सक्रि० विवाह करना ( रामा० १३४ ) ।
बिओग—पु० देखो 'वियोग' ।
बिकट—वि० कठिन, कठोर, भयङ्कर, टेढ़ा ।
बिकना—अक्रि० बेचा जाना । मुग्ध होना (कलस २५४)।
बिकरम—पु० राजा विक्रमादित्य । विक्रम ।
बिकरार—वि० विकराल, भयङ्कर । व्याकुल 'नाक कान बिनु भइ बिकरारा ।' रामा० ३७१
बिकराल—वि० भयङ्कर, कठिन, कठोर ।
बिकर्म—पु० दुष्कर्म, कुकृत्य ( सुन्द० २१ ) ।
बिकल—वि० व्याकुल, बेचैन ।
बिकलई, बिकलाई—स्त्री० व्याकुलता 'प्रभुकृत खेल सुरन्ह बिकलई ।' रामा० ५०८, 'उठहु न सुनि मम बच बिकलाई ।' रामा० ४८४
बिकलाना—अक्रि० विकल होना 'एक एक ह्वै ढूँढ़हीं तरुनी बिकलाहीं ।' सूबे० २१७ । सक्रि० व्याकुल करना ।
बिकवाना—सक्रि० बिक्री कराना, बेचनेका काम कराना ।
बिकसना—अक्रि० प्रस्फुटित होना, खिलना, प्रसन्न होना । फूटना, फटना ( भ्र० ९८ ) ।
बिकसाना—सक्रि० प्रस्फुटित करना, प्रसन्न करना । [ अक्रि० खिलाना ।
बिकाऊ—वि० बिकनेवाला ।
बिकाना—अक्रि० बिकना ( उदे० 'नीपजना' ) । वशमें होना '⋯तौ तुलसी बिन मोल बिकातो ।' विन० ४१६, (सू० ७०) सक्रि० खरीदना 'कहौ हम तुम्हें बिकैहैं' रत्ना० ८८
बिकार—पु० विकृत होनेकी क्रिया । परिवर्त्तन । दोष । रोग, दुःख । विषय-वासना 'जो निज मन परिहरै बिकारा ।' विन० २९९ । वि० विकृत ।
बिकारी—वि० हानिकारक । परिवर्त्तित । काम क्रोधादियुक्त । बिगड़े हुए रूपवाला । स्त्री० टेढ़ी पाई (उदे०'दाम')।
बिकास—पु० प्रफुल्लता, खिलना, वृद्धि । हर्ष । प्रकाश ।
बिकासना—सक्रि० विकसित करना, खोलना, प्रकट करना । अक्रि० विकसित होना, प्रकट होना ।
बिकुंठ—पु० वैकुण्ठ ।
बिक्ख—पु० विष, ज़हर 'कीन्हेसि बिक्ख मीचु जेहि खाये ।' प० २ [
बिक्रम—पु० वीरता, शक्ति । विष्णु ।
बिक्रमी—वि० विक्रम सम्बन्धी, बलवान्, पराक्रमी ।
बिक्री—स्त्री० खपत, बेचनेकी क्रिया । [भलो ।' रहीम २९
बिख—पु० विष 'पह बिख देइ पियाइ मान सहित मरिबो
बिखम—वि० असम, तीव्र, भीषण । पु० विष ।
बिखय, बिखै—अ० सम्बन्धमें, में ( साखी १३६ ) ।
बिखरना—अक्रि० फैल जाना ।
बिखराना—सक्रि० छितराना, फैलाना ।
बिखाद—पु० दुःख, खेद ।
बिखान—पु० विषाण, सींग 'तुलसी जेहि राम सों नेह नहीं सो सही पसु पूँछ बिखान न द्वै ।' कविता० २१२
बिखीला—वि० विषैला, विषाक्त 'बिखीले नैन-बानन सों बेधि डारियतु है ।' कलस १८०, ( २०५ ) ।
बिखेरना—सक्रि० चारों तरफ फैलाना, छितराना ।
बिगंध—स्त्री० दुर्गन्धि 'माखी चन्दन परहरै जहँ बिगन्ध तहँ जाइ ।' कबीर २५६
बिग—पु० भेड़िया 'बिग जम्बुक घर बाजहिं तूरा ।' प० २३६, ( उदे० 'बैहर' ) । [ अप्रसन्न होना ।
बिगड़ना, बिगरना—अक्रि० खराब होना, भ्रष्ट होना,
बिगड़ेदिल—वि० बात बातमें बिगड़नेवाला, तुनुक
बिगड़ैल—वि० क्रोधी, हठी । [मिजाज ( आदमी ) ।
बिगर—क्रिवि० बिना रहित ।
बिगराइल, बिगरैल—वि० क्रोधी, हठी ।
बिगलित—वि० देखो 'विगलित', ( भ्र० ११२ ) ।
बिगसना—अक्रि० खिलना (उदे० 'कोई'); प्रसन्न होना, 'सकुचत अरु बिगसत वा छविपर अनुदिन जनम गँवावत ।' सू० ९४ । फटना 'मधुकर, मो मन अधिक कठोर । बिगसि न गयो कुम्भ काँचे ज्यों बिछुरत नन्द किसोर ।' सू० २३९ । बकसना, देना (छत्रप्रं० ५५)।
बिगसाना—दे० 'बिकसना', 'बिकसाना', 'पाहन बीच कमल बिगसाहीं, जलमें अगिनि जरै ।' सू० ७, ( भ्र० ९० )
बिगाड़—पु० झगड़ा, खराबी, द्वेष । [
बिगाड़ना—सक्रि० खराब करना, भ्रष्ट करना, बहकाना, हानि पहुँचाना, तोड़ना ।
बिगाना—वि० पराया, जो अपना न हो, अपरिचित, ( दे० 'बेगाना' ) ।
बिगार—दे० 'बिगाड़', 'बिगारि' । [
बिगारना—दे० 'बिगाड़ना', ( उदे० 'उजारना' ) ।
बिगारि, बिगारी—स्त्री० बलपूर्वक लिया गया काम ।
बिगास—पु० देखो 'बिकास' ।
बिगासना—सक्रि० विकसित करना ।
बिगिर—क्रिवि० बिना 'पच्छनि बिगिर बिहँग हैं सुन्दर बिगिर मतङ्ग ।' ललित० ४४, ( भू० २४ ) ।

बिगुन—वि० गुणरहित ।
बिगुर—वि० बे-गुरुका ।
बिगुरचना—अक्रि० दिक्कतमें पड़ना, फँसना 'मोर तोरमें सभै बिगुरचा' बीजक १०४
बिगुरचिन, बिगुर्चन०—स्त्री० दिक्कत, अड़चन, असमञ्जस । 'खरी बिगुर्चन होयगी लेखा देती बार ।' साखी १५६, ( अ० २५ ) ।
बिगुरदा—पु० एक प्राचीन हथियार 'कपटौ जब लौं कपट नहिं साच बिगुरदा धार ।' रतन० ५
बिगुल—पु० एक तरहकी अंग्रेजी ढङ्गकी तुरही ।
बिगूँचना, बिगूचना—अक्रि० असमञ्जसमें या दिक्कतमें पड़ना, दबाया जाना । सक्रि० दबा लेना, छीनना । नष्ट करना 'करनाटक लौं सब देश बिगूँचे ।' भू० ८१
बिगूचन—स्त्री० अड़चन असमञ्जस ( कबीर १८२ ) ।
बिगूतना—दे० बिगूचना' ( कबीर १५३ ) ।
बिगोना—सक्रि० नष्ट करना ( साखी १०२, १०४ ), बिगाड़ना, दुर्दशा करना (उदे०'दाढ़ीजार')। बिताना, खोना 'बरनै दीन दयाल काल तुम बादि बिगोये ।' दीन० २४१, ( अ० १०० ) । बहकाना 'हरि तेरी माया को न बिगोयो ।' सूवि० १७ । छिपाना ।
बिग्यान—पु० विज्ञान, पूर्ण ज्ञान ।
बिग्रह—पु० शरीर । झगड़ा, युद्ध 'सन्धि करो बिग्रह करो सीता को तो देह ।' राम० ४६०
बिघटना—सक्रि० नष्ट करना, बिगाड़ना ।
बिघन—पु० विघ्न, बाधा ।
बिघनहरन—वि० विघ्न दूर करनेवाला । पु० गणेशजी ।
बिघार—पु० व्याघ्र 'बकरी बिघार खायो, हरनि खायो चीता । कबीर १४१
बिच—क्रिवि० बीचमें, भीतर 'चमचमात चञ्चल नयन बिच घूँघट पट झीन ।' बि० २३९
बिचकना—अक्रि० चौंकना, भड़कना । वि०चौंकनेवाला ।
बिचकाना—सक्रि०भड़काना । (मुँह) टेढ़ा करना, चिढ़ाना ।
बिचखोपड़—पु० बिसखापर, एक विषैला जन्तु ।
बिचच्छन—वि० निपुण, चतुर, प्रकाशमान । 'छिन छिन खरी बिचच्छनौ लहति छानि तिनु आलि ।' वि०१५०
बिचरना—अक्रि० इधर उधर घूमना ।
बिचलना—अक्रि० विचलित होना, हटना, घबड़ाना ।
बिचला—वि० बीचका, जो बीचमें हो ।
बिचलाना—सक्रि० विचलित करना, तितर बितर
बिचवान, बिचवानी—पु० मध्यस्थ ।
बिचारना—सक्रि० सोचना, ख्याल करना ।
बिचारा—वि० असहाय, दीन ।
बिचाल—पु० हटाना । अन्तर ।
बिचुकना—वि० चौंकनेवाला ( व्रज० ४९७ ) ।
बिचेत—वि० बेहोश, मूर्च्छित ।
बिचौंहा—वि० मध्यस्थ, बीचवाला ( रतन० १८ ) ।
बिच्छित्ति—स्त्री० एक हाव ।
बिच्छी—स्त्री०, बिच्छू—पु० वृश्चिक ।
बिच्छेप—पु० फेंकना, चित्तकी चञ्चलता, विघ्न ।
बिछना—अक्रि० बिछाया जाना, फैलना, छितराया जाना
बिछलन—पु० फिसलन ।
बिछलना,-लाना—अक्रि० रपटना, फिसलना, डगमगाना
बिछवाना—सक्रि० बिछानेमें लगाना, बिछानेका क० करावाना
बिछाना—सक्रि० फैलाना, पसारना ।
बिछायत—स्त्री० फर्शपरका बिछावन 'बरफ ... बिछायत बनाय करि सेज सन्दली पै कंजदल ...
बिछावन—पु० बिस्तरा, बिछौना । [ है'—ग्वाल ।
बिछिआ, बिछिया—पु० पाँवकी अँगुलियोंका एक ( उदे० 'अनवट', झमकना' ) ।
बिछिप्त—वि० विक्षिप्त, फेंका हुआ, पागल ।
बिछुआ—देखो 'बिछुवा' ।
बिछुड़न—स्त्री० जुदाई, विरह ।
बिछुड़ना—अक्रि० अलग होना, वियोग होना ।
बिछुरंता—पु० जो बिछुड़ गया हो, वियोगी, बिछुड़नेवाला ।
बिछुरना—देखो 'बिछुड़ना', ( उदे० 'उसाँस' ) ।
बिछुरनि—स्त्री० बिछुड़न, जुदाई ।
बिछुवा—पु० बिछिया (उदे० 'ठमकाना') । एक हथियार 'कोरदार बिछुवा अनियारे सुरमा सान धरे अति निपट गँसीले ।' ललित कि० (व्रज० ५०६) । कमरका एक गहना । [ मिलै बिछूना ।' प० ८२
बिछूना—वि० बिछुड़ा हुआ (व्यक्ति) 'कित रोइय जौं
बिछोई—पु० वियोगी, जो बिछुड़ गया हो 'अधिक मोह जो मिलै बिछोई ।' प० ८२
बिछोय, बिछोह—पु० जुदाई, वियोग(उदे०'दमावति') ।
बिछोवना—सक्रि० वियोग कराना 'तुही बिछोवसि करसि मेराऊ ।' प० १९८

बिछौना—पु० बिस्तर, बिछावन ।

बिजन—वि० अकेला । पु० बिजना, पङ्खा 'बिजन बयारि लागे लचकत लङ्क है ।' ललित ७० । निर्जन स्थान '... बिजन डुलाती ते वै बिजन डुलाती हैं ।' भू० १५३

बिजना—पु० पङ्खा 'हित करि तुम पठयो लगे वा बिजना की वाय ।' वि० २४०, (रघु० ४६) ।

बिजयघंट—पु० एक तरहका बड़ा घण्टा ।

बिजली—स्त्री० विद्युत्, चपला । कानका एक गहना ।

बिजहन—वि० जिसका बीज नष्ट हो गया हो ।

बिजाती—वि० दूसरी जातिका, जातिच्युत । दलाल (रतन० २९) ।

बिजान—वि० अनजान ।

बिजायठ—पु० बाजूबन्द (उदे० 'कटक') ।

बिजुरी—स्त्री० बिजली (उदे० 'कनय') ।

बिजूका, बिजूखा—पु० पक्षियों इ०को डरानेके लिए खेतमें रखा गया पुतला, 'धोखा' ।

बिजै—स्त्री० विजय, जीत ।

बिजोग—पु० वियोग, जुदाई ( साखी २६ ) ।

बिजोना—सक्रि० भलीभाँति देखना 'पिय ठाढ़े भे मान लखि तिय इत रही बिजोय ।' ललित० २१, निगरानी करना 'आछी भाँति सुधार कै खेत किसान बिजोय ।' दीन० २३६

बिजोरा, बिजौरा—पु० एक फल । तिलके मेलसे बनी

बिजौरी—स्त्री० कुम्हड़ौरी । एक तरहकी चपटी बरी ।

बिज्जु—स्त्री० बिजली (सुजा० ५४) ।

बिज्जुपात—पु० विद्युत्पात, बिजलीका गिरना ।

बिज्जुल—स्त्री० बिजली 'बिज्जुलसी लपटैं झलकैं कन कज्जलसी अँग उज्जल धोती ।' रवि० २३ । पु० त्वचा ।

बिज्जू—पु० बिल्लीके सदृश एक जन्तु ।

बिझकना, बिझुकना—अक्रि० चौंकना, डरना 'दान दया सुभ सील सखा बिझुकैं, गुणभिक्षुकको बिझुकावैं ।' के० ९१ । तनना ।

बिझुका—पु० देखो 'बिजूका', 'बुधि मेरी किरषी, गुर मेरो बिझुका, अखिर दोइ रखवारे ।' कबीर २१९

बिझुकाना—सक्रि० चौंकाना, डराना । चञ्चल कर देना (कविप्रि० १८८) ।

बिट—पु० नायकका सखा । बीट । वैश्य । वेश्यागामी

बिटप—पु० विटप, पेड़ । (दे० 'बिट') । वि० नीच ।

बिटपी—पु० विटपी, वृक्ष ( प्रिय० ११८ ) ।

बिटारना—सक्रि० गन्दा करना ( उदे० 'छीना' ) ।

बिटिनिया, बिटिया—स्त्री० बेटी, लड़की (सुबे०१७४) ।

बिटौरा—पु० उपलोंका ढेर ( सुन्द० १६० ) ।

बिठलाना, बिठाना—सक्रि० बैठाना, आसीन करना, प्रतिष्ठित करना, जमाना, दबा देना, धँसाना ।

बिडंब—पु० आडम्बर ( साखी ३३ ) ।

बिडंबना—स्त्री० नक़ल, अपकीर्त्ति, हँसी, लज्जाकी बात 'केशव कोदंड विपदंड ऐसो खंडैं अब मेरे भुजदण्डन की बड़ी है बिडम्बना ।' राम० ६७

बिड—पु० बीट, विष्ठा 'बिडकन चन चूरे भक्षि क्यों बाज जीवै । राम० ३२९ । खल, नीच 'वीर करि-केसरी कुठारपानि मानो हारि तेरी कहा चली बिड तोसो गनै घालिको ।' कविता० १८८

बिडई—स्त्री० इण्डुरी, कुण्डली ।

बिडरना—अक्रि० चौंकना, डरना, तितर बितर होना, भागना (छत्र० ७४), 'बिडरि चले घन प्रलय जानिकै, दिगपति दिगदंती न सकेलत ।' सू० ४९

बिडराना—सक्रि० चौंकाना, तितर बितर करना ।

बिडवना—सक्रि०खण्डित करना, तोड़ना 'घूँघट पट बागर ज्यों बिडवत'—सू० १७०

बिड़ा—पु०वृक्ष'कबीर चन्दनका बिड़ा बैठ्या आक पलास । आप सरीखे करि लिये जे होते उन पास ।' कबीर'५०

बिडारना—सक्रि० तितर बितर करना, भगाना । मारीच बिडार्यो जलधि उतार्यो'—राम० ५५ । डराना ( कबीर २१९ ) । नष्ट करना 'कुम्भकरन-दससीस बीस भुज दानव-दलहिं बिडारों ।' सू० ३९०

बिड़ाल—पु० बिलाव ।

बिड़ाली—स्त्री०बिल्ली । आँखका एक रोग । [का खुल्द ।

बिड़ी—स्त्री०पत्तेमें तमाखू लपेटकर बनाया हुआ एक तरह-

बिड़ौजा—पु० इन्द्र । "मघवा मूल, बिड़ौजा टीका ।"

बिढ़तो—पु० लाभ, कमाई ।

बिढ़वना, बिढ़ाना—सक्रि० जोड़ना । कमाना ।

बित—पु० शक्ति, हैसियत । धन, कद ।

बितताना—अक्रि० व्याकुल होना, दुःखी होना 'गये बितताइ व्रज नरनारि । धरत सैंतत धाम बासन माहिं सुरति सँभारि ।' सूबे० १२२, (सुसु० १७६) । सक्रि० दुःखी करना ।

बितना—पु० बालिश्त(रतन० ८७) । अक्रि०बीतना 'बिते बहुत दिन जात न जाना ।'रघु० १८३, (प० १७९) ।

बितरना—सक्रि० वितरित करना, फैलाना (प्रिय० ४९)।
बितवना, बितावना, बिताना—सक्रि० व्यतीत करना, काटना। अक्रि० बीतना 'भयो द्रौपदीको बसन बासर नहीं बिताय।' रस० ३१
बितीतना—अक्रि० बीतना, व्यतीत होना। सक्रि० † [† बिताना।
बितुंड—पु० हाथी ( भू० २१ )।
बितु, बित्त—पु० धन, शक्ति, औकात 'देहिं निछावरि बित्त बिसारी।' प० १४४
बित्ता—पु० बालिश्त।
बिथकना—अक्रि० मुग्ध होना (उदे० 'जोल')। थकना 'समुझाई समझत नहीं सिख दै बिथकेउ गाँव।' सू० १०७। चकित होना ( उदे० 'चकवारि' )।
बिथरना, बिथुरना—अक्रि० बिखरना, फैलना 'गनत न मन पथ अपथ लखि बिथरे सुथरे बार।' बि० ९५, 'कुञ्चित अलक बिथुरि रहे भुवपर, तापर तन मन वारति।' सू० १२२, (सू० ६२ )। खिलना।
बिथराना, बिथुराना—सक्रि० छितराना, फैलाना (व्रज० [५७७)।
बिथा—स्त्री०पीड़ा(उदे०'अँसुआ',भ्र० १२३)।
बिथारना, बिथोरना—सक्रि० छितराना, बिखेरना'वेनी हू बिथोरि डारि छोरि दधि खायो है।' कलस १३३
बिथुरित—वि० बिखरा या फैला हुआ (रत्ना० २६९)।
बिदकना—अक्रि० फटना, क्षत होना।
बिदकाना—सक्रि० फाड़ना, घायल करना।
बिदरना—अक्रि० विदीर्ण होना, फटना 'हृदय न बिदरेउ पङ्क जिमि बिछुरत प्रीतम नीर।' रामा० २६९, 'जे बासना न बिदरत अन्तर तेइ तेइ अधिक अनूअर दाहत।' भ्र० २५
बिदलना—सक्रि० दलित करना।
बिदा—स्त्री० गमन। गमनकी अनुमति ( राम० ३५५), 'माँगहु बिदा मातु सन जाई।' रामा० २३३
बिदाई—स्त्री०बिदा। बिदाके समय दिया गया द्रव्यादि।
बिदारना—सक्रि० फाड़ना 'जैसे सरिता सिन्धुमें मिली जु कूल बिदारि।'सू० १०८, नष्ट करना (उदे०'दरिद्र')।
बिदिसा—देखो 'विदिशा' ( राम० २५३ )।
बिदीरना—सक्रि० विदीर्ण करना, घायल करना 'मैनके बानलौं मोहिं बिदीरै।' रत्ना० ५७३।
बिदुराना—अक्रि० मुसकुराना।
बिदुरानि—स्त्री० मुसकुराहट।
बिदूख (ष) ना—सक्रि० दूषित करना 'सुनु सठ काल-ग्रसित यह देही। जनि तेहि लागि बिदूषहि केही।' विन० २०३, ( पूर्ण ८७ )।
बिदूरित—वि० दूर किया हुआ ( प्रिय० ८ )।
बिदेस—पु० परदेश।
बिदोख—पु० विद्वेष, बैर।
बिदोरना—सक्रि० ( मुसकुरानेके लिए ओंठ ) 'खायके पान बिदोरत ओंठ हैं, बैठि सभामें व अलबेला।' ककौ० ५१५
बिद्‌त—स्त्री० आफत, कष्ट, अत्याचार, खराबी, दुर्दशा।
बिद्ध करना—सक्रि० बेधना, छेदना।
बिद्रुम—पु० मूँगा ( प० २३१ )। कोंपल।
बिधंसना—सक्रि० विध्वस्त करना,(प० ९२)। [लेखा।
बिध—पु०ब्रह्मा। हाथियोंका चारा। स्त्री० भाँति,प्रकार।
बिधना—पु० ब्रह्मा, दैव ( प्रिय० ७९ )। अक्रि० छेदा जाना 'बानन साथ बिधे सब बानर।' राम० ४९०। सक्रि० फँसाना 'बिधये मैन खिलारने रूपजाल दृग मीन।' रतन० १४
बिधवपन—पु० वैधव्य।
बिधवा—वि० स्त्री० जिसके पतिकी मृत्यु हो गयी हो। धवा वृक्षसे रहित (राम० ३२)। स्त्री० विधवा स्त्री।
बिधाँसना—सक्रि० विध्वंस करना। अक्रि० विध्वस्त किया जाना, बिगाड़ना ( प० १५२ )।
बिधाई—पु० बिधान करनेवाला।
बिधान—पु० देखो 'विधान', 'होन लाग होमके जहाँ तहाँ सबै बिधान।' राम० ५२
बिधाना—सक्रि०छेदवाना 'सुन्दर क्यूँ पहिले न सँभारत जो गुड़ खाय सु कान बिधावे।' सुन्द० १७
बिधानी—पु० विधान करनेवाला, विधाता, रचयिता।
बिधि—पु० ब्रह्मा। स्त्री० भाँति,रीति, नियम, व्यवस्था। बिधि निषेध=करनेकी आज्ञा और न करनेकी आज्ञा, 'विधि निषेधमय कलिमल हरनी। कर्म कथा रवि-नन्दिनि बरनी।'रामा० ४
बिधिना—पु० ब्रह्मा।
बिधुंतुद—पु० राहु ( दास १६३ )।
बिधुंसना—सक्रि० विध्वंस करना ( भू० १३६ )।
बिधु—पु० चन्द्रमा। विष्णु ( कविप्रि० ७६ )।
बिधुर—वि० व्याकुल, भयभीत,असमर्थ, दुःखित। मृत-स्त्रीक।
बिन—अ० बिना, रहित। पु० पुत्र।
बिनई—वि० विनयी, नम्र।
बिनठना—सक्रि० विनष्ट होना, बिगड़ना (कबीर २५१)।
बिनति, बिनती—स्त्री० प्रार्थना।
बिनना—सक्रि० बुनना। छाँटना, चुनना।

विनय—स्त्री० नम्रता, अनुरोध, नीति।
विनयना, विनवना—सक्रि० अनुरोध करना, प्रार्थना करना 'तेहि मन्दिरमें नृपसों बिनयो। बर देहु हुतो हमको जु दयो।' राम० १९३, (उदे० 'चिरिहार')।
विनवट—स्त्री० बनेठी आदि भाँजनेकी क्रिया।
विनवाना—सक्रि० बीनने या बुननेका काम कराना।
विनशना, विनसना—अक्रि० नष्ट होना। सक्रि० नष्ट करना। [ *नष्ट होना।
विनसाना—सक्रि० नष्ट करना। बिगाड़ना। अक्रि०
विना—अ० बगैर, रहित। स्त्री० बुनियाद, आधार, मूल-कारण।
विनाई—स्त्री० बिनने अथवा बुननेकी क्रिया या मजदूरी।
विनाती—स्त्री० बिनती, प्रार्थना 'पै गोसाईं सन एक बिनाती।' प० ६३
विनाना—सक्रि० बिनवाना, बुनवाना। [बिनाती।' प० ६३
विनानी—वि० अनजान। नासमझ 'रोवन लागे कृष्ण बिनानी।' सूवे० ४९। स्त्री० गौर, मनन। पु० विज्ञानी, विद्वान्।
विनावट—स्त्री० बुनावट। [विज्ञानी, विद्वान्।
विनास—पु० ध्वंस, नाश; तबाही (उदे० 'अतिबल')।
विनासना—सक्रि० बिगाड़ना, नष्ट करना, (प० ३१६)।
विनासी—देखो 'विनाशी'।
विनाहु—पु० विनाश 'साकत सङ्ग न कीजिये जाते होइ बिनाहु।' कबीर २५९
विनूठा—वि० विलक्षण, सुन्दर। [विनाहु।' कबीर २५९
विनै—स्त्री० देखो 'विनय'।
विनौला—पु० कपासका बीज।
विपक्ष, विपच्छ—वि० विमुख, विरुद्ध, अप्रसन्न।
विपच्छी—पु० शत्रु, विरोधी। [पु० शत्रु। शत्रु पक्ष।
विपणि—स्त्री० 'विपणि', बाज़ार, दूकान (प्रिय० ५६), विक्रयार्थ रखी गयी वस्तु। व्यापार।
विपत, विपता, विपत्ति—स्त्री० सङ्कट, आफत।
विपथ—पु० ग़लत या ख़राब रास्ता (प्रिय० ६७)।
विपद, विपदा—स्त्री० विपत्ति।
विपन्न—देखो 'विपच्छ', (प्रिय० ६४ ख)।
विपर—पु० विप्र, ब्राह्मण।
विपरीत—वि० उलटा, प्रतिकूल।
विपाक—पु० पकना। फल। कर्मभोग, दुर्गति।
विपाशा,-सा—स्त्री० व्यास नदी (प्रिय० २३२)।
विपोहना—देखो 'विपोहना' (कविप्रि० १३८)।
विफर, विफल—वि० फलरहित, व्यर्थ। निराश, असफल।
विफरना—अक्रि० विद्रोही होना, बिगड़ पड़ना, चिढ़ना।
विबछना—अक्रि० फँसना। विरोधी होना।
विबर—पु० गड्ढा, छिद्र, गुफा 'पैठे बिबर बिलम्ब न कीन्हा।' रामा० ४०८ [पु० ब्योरा, हाल, व्याख्या।
विबरन—वि० जिसका रङ्ग उड़ गया हो, कान्तिहीन।
विबस—वि० लाचार, पराधीन। क्रिवि० लाचार होकर।
विबसाना—अक्रि० विवश होना।
विबहार—पु० बर्त्ताव, कार्य, व्यापार।
बिवाई—स्त्री० पाँवका चमड़ा फटनेका रोग 'ऐसे बिहाल बिवाइन सों भये कण्टकजाल लगे पुनि जोये।' सुदामा०
विबाकी—स्त्री० हिसाब चुकता होना। अन्त 'सहित सेन सुत कीन्ह बिबाकी।' रामा० १९
विवादना—अक्रि० विवाद करना, झगड़ना 'अतिहि निसङ्क बिबादति सन्मुख सुनि मोहिं नन्द रिसात।' सूसु० १०९।
विबाहना—सक्रि० ब्याह करना (उदे० 'पंच')।
विबि—वि० दो 'बिबि लोचन सु विसाल दुहुनके चितवत चित्त हरे।' सू० ७६। दूसरा।
विभचारी, बिभिचारी—वि० दूषित आचारवाला, परस्त्री-गामी 'सेवक सुख चह मान भिखारी। व्यसनी धन सुभगति बिभिचारी।' रामा० ३७०
विभाना—अक्रि० शोभा पाना, चमकना, देख पड़ना 'भूतलकी बेणी सी त्रिवेणी शुभ शोभिजति एक कहै सुरपुर मारग बिभात है।' राम० ५१४
विभावरी—स्त्री० रात्रि जिसमें तारे चमकते हों 'ज्यों ज्यों बढ़त बिभावरी त्यों त्यों बढ़त अनन्त।' बि० २०३। मुखरा स्त्री।
विभिनाना—सक्रि० भिन्न करना, पृथक् करना।
विभु—पु० स्वामी। ईश्वर। वि० सर्वव्यापक। महान्, शक्तिमान्।
विभौ—पु० ऐश्वर्य, सम्पत्ति, प्रचुरता। [शक्तिमान्।
विमन—वि० उदास, दुःखित। क्रिवि० बिना मन दिये।
विमर्दना—सक्रि० विमर्दन करना, मसलना, नष्ट भ्रष्ट करना (प्रिय० १३५)।
विमान—पु० रथ, वायुयान। अनादर।
विमानीकृत—वि० जिसने विमान बनाया हो, या मान-रहित किया हो 'विमानीकृत राजहंस' राम० ३७
विमूढ़—वि० अत्यन्त मोहित। महामूर्ख (रामा० ३५८)।
विमोचना—सक्रि० टपकाना (प्रिय० १८)। देखो 'विमोचना'।
विमोहना—सक्रि० मोहित करना, लुभाना। अक्रि०

मुग्ध होना 'को सोवै, को जागै, अस हौं गएउँ बिमोहि।' प० १५१
बिय—वि० दो, दूसरा। पु० बिया, बीज।
बियत—पु० आकाश। एकान्त ( व्रज० २३५ )।
बिया—पु० बीज। वि० दूसरा ( विन० १२१ )।
बियाज—पु० सूद। बहाना।
बियाध, बियाधा—पु०शिकारी(उदे० 'साधु'प० ३० )।
बियाधि—स्त्री० रोग, झञ्झट, 'रहिमन व्याह बियाधि है सकहु तो जाहु बचाय।' रहीम २६
बियाना—सक्रि०, अक्रि० जनना।
बियापना—अक्रि० देखो 'व्यापना'।
बियावान—पु० वह जङ्गल जहाँ पानी आसानीसे न मिले।
बियारी, बियारू—स्त्री० रात्रिका भोजन।
बियाल—पु० साँप, शेर।
बियाह—वि० विवाह।
बियाहना—सक्रि० विवाह करना ( प० १९९ )।
बियोग—पु० जुदाई, विरह, विच्छेद।
बिरंग—वि०—बिना रंगका, फीका। कई रंगोंका।
बिरंचि—पु० ब्रह्मा ( विनय० ५२६ )।
बिरई—स्त्री० छोटा बिरवा ( नव० ६ )।
बिरकत—वि० विरक्त 'बैरागी बिरकत भला ग्रेही चित्त उदार।' साखी १४२
बिरखभ—पु० वृषभ, बैल ( साखी १७ )।
बिरचना—सक्रि० बनाना, सजाना। अक्रि० ( मन ) उचटना 'बिरचि मन फेरि रच्यो जाइ।'सू०, (प० ४०)
बिरछ—पु० वृक्ष, पेड़ ( रहीम १७ )।
बिरछिक,-छीक—पु० बिच्छू, वृश्चिक राशि (प०१८६)
बिरज—वि० निर्दोष, निर्मल। गुण रहित 'ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।' रामा० ३४
बिरझना—अक्रि० उलझना। क्रुद्ध होना 'बिरझ्यो चम्पतिराइ बुंदेला। फौजनपर कीन्हो बगमेला।' छत्र० २९। मचलना 'वदन चन्दके लखनको सिस ज्यों बिरझत नैन।' रतन० ४८
बिरझाना—अक्रि० क्रुद्ध होना ( छत्र० १२, ७४ )।
बिरतंत, बिरतांत—पु० हाल, समाचार (सुजा० ४०)।
बिरता—पु० बूता, शक्ति।
बिरताना—सक्रि० वितरित करना।
बिरति—स्त्री० विरक्ति, निवृत्ति।
बिरथा—वि० व्यर्थ। क्रिवि० किसी कारण या अभिप्रायके बिना। [ † कबीर १६४
बिरदंग—दे० 'मृदङ्ग', '...केस गहे काल बिरदङ्ग बजावै।'†
बिरद—पु० नामवरी, बड़ा नाम, बड़ाई 'कौन भाँति रहिहै बिरद अब देखिबी मुरारि।' बि० १९, 'बड़े न हूजत गुनन बिन बिरद बड़ाई पाय।' बि० ८२
बिरदैत— वि० विख्यात। पु० प्रतिज्ञावाला, बड़े नामवाला। प्रसिद्ध योद्धा।
बिरध—वि० वृद्ध, बूढ़ा ( कबीर २४२ )।
बिरधाई—स्त्री०,बिरधापन—पु० बुढ़ापा।
बिरमना—अक्रि० देर करना 'सूरदास स्वामी सों कहियो अब बिरमियो नहीं।' सू० २५। ठहरना, विश्राम करना, मुग्ध होना 'मुनि मन मुदित मलिन्द निरन्तर बिरमत जहँ नित।' सत्यना०
बिरमाना—सक्रि० ठहराना, फँसा रखना 'सूरश्याम हमको बिरमावत खीझत बहिनी माई।'सूवे० १५१। बिताना। अक्रि०बिरमना 'सघन गुंजत बैठि उनपर भौंर हैं बिरमाहिं।' सू० १९। भुलाना ( सूसु० [१९१ )।
बिरला—वि० एकाध, कोई कोई। विरल।
बिरवा—पु० पौधा, पेड़ 'होनहार बिरवानके होत चीकने पात।'
बिरवाई,बिरवाही—स्त्री० छोटे पौधोंका कुञ्ज या झुण्ड।
बिरस—वि० रसहीन। बुरा ( विद्या० १११ )। पु० बिगाड़ ( छत्र० ५४ )।
बिरसना—अक्रि० विलास करना।
बिरह, बिरहा—पु० वियोग, दुःख(उदे०'अछेह','गाढ़े')।
बिरहा—पु० एक तरहका गीत।
बिरहाना—अक्रि० बिरहपीड़ित होना 'राधा बिरह देखि बिरहानी, यह गति बिन नँदनन्द।' सूवे० २१६
बिरही—पु० विरह-पीड़ित मनुष्य।
बिराग—पु० विरक्ति, उदासीनता।
बिरागना—अक्रि० विरक्त होना 'सुनि मुनि वचन जनक अनुरागे। लखि गति ज्ञान बिराग बिरागे।'रामा०३२८
बिराजना—अक्रि० शोभा देना, बैठना।
बिरादर—पु० भ्राता, भाई।
बिरादरी—स्त्री० एक ही जातिके लोगोंका समूह।
बिरान,बिराना—वि० दूसरेका, पराया (उदे०'चूपड़ी')।
बिराना, बिरावना—सक्रि० चिढ़ाना, मुँह बनाना।

विरास—पु० देखो 'विलास'।
विरिख—पु० वृक्ष। बैल। वृषराशि ( प० १८६ )।
विरिछ—पु० वृक्ष, पेड़ ( उदे० 'उचारना' )।
विरिध—वि० वृद्ध, बूढ़ा।
विरियाँ—स्त्री० वेला, समय ( उदे० 'आली' ), 'परयो काज जब अन्तकी विरियाँ तिनही आनि बँधायो।' सू० २६। बार ( रतन० ३ )।
विरिया—स्त्री० कानका देहाती आभूषण।
विरी—स्त्री० पानका बीड़ा, खिली 'खरे अरे प्रियके प्रिया लगी विरी मुँह दैन।' बि० २५९। बिड़ी।
विरुझना, विरुझाना—अक्रि० उलझना, लड़ना 'लागी भूख चन्द मैं खैहों देहु देहु रिस करि विरुझावत।' सूबे० ६८, ( उदे० 'विरुदैत' )। मचलना, रूठना [( सू० ५७ )।
विरुद—पु० यशःकीर्त्तन, प्रशंसा।
विरुदैत—देखो 'विरदैत', विरुझे विरुदैत जे खेत अरे, न टरे हठि बैर बढ़ावनके।' कविता० १९५ [ ३२२
विरुधाई—स्त्री०बुढ़ापा 'देखत ही आई विरुधाई। विन०
विरूप—वि० परिवर्त्तित, कुरूप, उलटा, पूर्णतया भिन्न।
विरोग—पु० दुःख, चिन्ता ( ग्राम० १७ )।
विरोधना—अक्रि०विरोध या शत्रुता करना 'तब मारीच हृदय अनुमाना। नवहिं विरोधे नहिं कल्याना।'रामा०
विरोलना—दे० 'खलोरना', ( कबीर १८२ )। [२७७
विलंद—वि० ऊँचा 'मन्द विलन्द अभेरा दलकन पाइय दुख झकझोरा रे।' विन० ४३८, ( ललित० ७९ )
विलंब—पु० देर।
विलंबना—अक्रि० देर करना, ठहरना। लटकना।
विलंवित—वि० जिसमें विलम्ब हुआ हो। लटकता हुआ
विल-पु० विवर,छिद्र। क़ानूनका मसौदा। हिसाबका पुरजा।
विलकुल—क्रिवि० पूर्ण रूपसे, सब, निपट।
विलखना—अक्रि० लख लेना, ताड़ना। विकल होना, विलाप करना, अफसोस करना।
विलखाना—अक्रि० विलखना 'कबहुँक मग मग धूरि टटोरत भोजनको विलखात।' सू० २५। सक्रि० दुःखित करना, रुलाना।
विलग—पु० पार्थक्य। बुराई, रन्ज 'आरत बस सनमुख भयउँ विलग न मानब तात।' रामा० २४५, ( उदे० 'गँवारी' )। वि० पृथक्।
विलगाना—सक्रि० पृथक् करना, छाँटना 'मथत मथत माखन रहे दही मही बिलगाय।' रहीम १८। अक्रि० पृथक् होना 'सो बिलगाउ विहाइ समाजा।' रामा०
विलच्छन—वि० आश्चर्यजनक, अपूर्व। [ १४७
विलछना—अक्रि० लक्ष करना।
विलनी—स्त्री० आँखकी पलक परकी फुंसी, गुहेरी। काले रङ्गकी भौंरी ( कबीर २३७ )।
विलपना—अक्रि० विलाप करना ( उदे० 'कुररी' )।
विलफेल—क्रिवि० इस समय।
विलविलाना—अक्रि० छटपटाना, रोना-चिल्लाना।
विलम—पु० देर ( स्त्री० भी 'एक समय पयपानकी बिलम भई बस काम।' रघु० ४० )।
विलमना—अक्रि० देर करना, रुक रहना, ठहरना 'प्रीति सहित आदर जहाँ हम बिलमैं तेहि ठौर।' चाचा हित०
विलमाना—सक्रि० अटका रखना, रोक रखना (प०९७)।
विललाना—अक्रि० रोना, व्याकुल होना, घबड़ा जाना, ( उदे० 'छरीदार', 'पाइमाल', कविता० २१९, भू० १५४ ), 'बिललात परे इक कटे गात।' सुजा० २४
विलल्ला—वि० बेशऊर।
विलवाना—सक्रि० विलुप्त करना, खो देना, नष्ट करना या नष्ट कराना। छिपाना। बोलनेका काम कराना।
विलसाना—अक्रि० शोभा देना, विराजना। आनन्द करना 'रासरस रचौ मिलि सङ्ग बिलसहु सबै...।' सूबे० २०६। सक्रि० भोगना।
विलसाना—सक्रि० भोगना। भोगवाना।
विलहरा—पु० पान रखनेका बाँसकी तीलियोंका बना [ पात्र, 'मचला'।
विला—अ० विना, गैर।
विलाई-स्त्री० बिल्ली, कद्दूकस। लोहेका काँटा। सिटकिनी।
विलाना—अक्रि० ग़ायब होना, खो जाना ( उदे० 'छिरकना', भू० ४१ ), नष्ट होना ( राम० ५२२), '... रावनसे बली तेऊ बुलासे बिलाइगे।' बेनी
विलापना—अक्रि० विलाप करना। सक्रि० पेड़ लगाना।
विलायत—दे० 'विलायत'। वि० बहुत (सुन्द० २३)।
विलार—पु० बड़ी बिल्ली।
विलारी—स्त्री० बिल्ली ( उदे० 'छरछन्दी' )।
विलाव—पु० बड़ी बिल्ली, नर बिल्ली।
विलावल—स्त्री० पत्नी, प्रिया। पु० एक राग।
विलास—पु० क्रीड़ा, आनन्द, मनोहर चेष्टा, हिलना डुलना, 'बानीको बसन कैधौं बातके विलास डोलै

कैधौं मुखचन्द्र चारु चन्द्रिका प्रकास है।' ललित० ५१

बिलासना—सक्रि० भोगना, काममें लाना।

बिलासिनी—स्त्री० वेश्या 'धनके हेत बिलासिनी रहै सँवारे बेस।' मति० १९७

बिलासी—वि० विलास करनेवाला। आरामतलब।

बिलिया—स्त्री० कटोरी।

बिलुठना—अक्रि० लोटना 'तुम बिनु माधव बिलुठए धूले।' विद्या० ६९

बिलूर—देखो 'बिल्लौर'।

बिलेशय—पु० बिलमें शयन करनेवाला, साँप।

बिलैया—स्त्री० बिल्ली। कद्दूकस। सिटकिनी।

बिलोकना—सक्रि० देखना। जाँचना।

बिलोकनि—स्त्री० देखनेका काम, नज़र, चितवन।

बिलोचन—पु० नेत्र।

बिलोड़ना—सक्रि० मथना, उलट पुलट करना, हिलाना (छत्र० १४)।

बिलोन—वि० लावण्य-रहित, कुरूप।

बिलोना—वि० देखो 'बिलोन'। सक्रि० देखो 'बिलोवना'।

बिलोरना—सक्रि० देखो 'बिलोड़ना', 'बहत नदी अति निकट सुगम तट साखा सलिल बिलोरै।' रघु ८१

बिलोल—वि० चञ्चल, चारु, सुन्दर।

बिलोलना—अक्रि० हिलना।

बिलोवना—सक्रि० मथना ( उदे० 'दह्यो' )। टपकाना 'तुलसी मदोवै रोइ रोइकै बिलोवै आँसु ..' कविता० १४६ (पाठा० )।

बिलौरा—पु० बिल्लीका बच्चा।

बिल्ला—पु० बड़ी बिल्ली। पहिचानके लिए बाँह इ० पर लगायी गयी पीतल, कपड़े इ० की पट्टी या चकती।

बिल्लाना—दे० 'बिललाना' ( साकेत १५६ )।

बिल्ली—स्त्री० बिलाई, मार्जार।

बिल्लौर—पु० एक सफेद पत्थर।

बिल्लौरी—वि० बिल्लौर पत्थरका। बिल्लौरके सदृश स्वच्छ।

बिवछना—अक्रि० उलझ जाना ( रतन० २ )।

बिवरना—सक्रि० अलग अलग करना, सुलझाना। अक्रि० सुलझना, तय होना 'नीक सगुन बिबरिहि झगर होइहि धरम नियाउ।' रामाज्ञा

बिवराना—सक्रि० सुलझाना, सुलझवाना 'पुनि निज जटा राम बिवराये' रामा० ५४२

बिवसाइ—पु० व्यवसाय, व्यापार, जीविका।

बिवाई—स्त्री० देखो 'बेवाई'।

बिवान—पु० विमान, रथ 'समदि लोग पुनि चढ़ी बिवाना।' प० १८७

बिवेचना—सक्रि० विवेचना करना ( कलस १७९ )।

बिष—देखो 'विष'।

बिषया, बिषिया—स्त्री० विषय-वासना 'जो बिषया .. तजी मूढ़ ताहि लपटात।' रहीम १४, ( कबीर ४१ ) सांसारिक विषय-भोग ( कविता० २१० )।

बिषान पु० सींग।

बिषारा—दे० 'बिसारा' ( गुलाब २९७ )।

बिसंच—पु० संचयका अभाव, अपव्यय। विघ्न, भय।

बिसंभर—वि० जो सँभाला न जा सके। असावधान। पु० विश्वपोषक, ईश्वर।

बिसँभार—वि० बेसम्हाल, बेसुध 'भा बिसँभार देखि कै नैना। सखिन्ह लाज का बोलौं बैना।' प० १०७

बिस—पु० विष, जहर। कमलकी नाल ( बिसदंड )।

बिसकरमा—पु० ब्रह्मा, ईश्वर, एक चतुर शिल्पी (उदे० 'चौपार')।

बिसखपरा,-खापर—पु०एक विषैला जन्तु।

बिसतरना—अक्रि० फैलना। सक्रि० फैलाना, बढ़ाना 'परम अलौकिक जुगल केलिरस बिसतर्‌यो।' अल-बेली अलि।

बिसतार—दे० 'बिस्तार'।

बिसद—वि० स्वच्छ, व्यक्त, सुन्दर, प्रसन्न।

बिसन—पु०व्यसन,विषयासक्ति,शौक। विपत्ति पतन,दुर्भाग्य दोष।

बिसनी—वि० जिसे कोई व्यसन हो, शौकीन।

बिसमउ,-मय,-मव—पु० आश्चर्य। गर्व। सन्देह। दुःख विषाद 'बिसमउ हरख न हृदय कछु पहिरे बलकल चीर।' रामा० २७८, 'हरख समय बिसमय करसि कारण मोहि सुनाउ।' रामा० २०६

बिसमरना—सक्रि० विस्मरण करना, भूलना 'ललित किसोरी बलि बलिहारी, सपथ करौं फिरि ना बिस-रिहौं।' ललित कि०।

बिसमिल—वि० घायल।

बिसमिल्ला—पु० आरम्भ, श्रीगणेश।

बिसयक—पु० देश, राज्य।

बिसरना—सक्रि०भूल जाना(उदे०'ताँई' रामा० २७५)।

बिसरात—पु० खच्चर ( उदे० 'ढेंक' )।

बिसराना,-वना—सक्रि० भूल जाना (उदे० 'दच्छिन') 'थोरई गुन रीझिबो बिसराई वह बानि।' बि० ३४।

बिसराम—पु० आराम, चैन ( उदे० 'उदय' )।

बिसरामी—पु० आराम देनेवाला, मनोरञ्जनकी वस्तु 'सुआ सो राजाकर बिसरामी।' प० ३०

बिसवास—दे० 'विश्वास'।

बिसवासी—वि० जिसका विश्वास किया जाय, जो विश्वास करे। अविश्वसनीय, विश्वासघाती 'पै यह पेट महा बिसवासी।' प० ३५

बिससना—सक्रि० विश्वास करना। वध करना। चीरना।

बिसहना—सक्रि० खरीदना।

बिसहर—पु० विषधर, साँप (उदे० 'करिल') '···का विसहर कौ दूध पिलाये।' कबीर १६३

बिसाइँध—वि० जिसमें मछलीकी-सी गन्ध हो, फिरहिं भँवर तोरे नयनाहाँ। नीर बिसाइँध होइ तेहि पाहाँ।' प० २१६। स्त्री० मछलीकी दुर्गन्ध 'सहस बार जो धोवै कोई। तौहु बिसाइँध जाइ न धोई।' प० २१६

बिसात—स्त्री० पूँजी, सामर्थ्य, हैसियत। चौपड़ आदि खेलनेका वस्त्र (रतन० ३३,३७,६२)।

बिसातखाना—पु० बिक्रीके लिए रखी गयी फुटकर चीजें।

बिसाती—पु० फुटकर चीजें बेचनेवाला।

बिसाना—अक्रि० बस चलना 'हिन्दुनके पतिसों न बिसात सतावत हिन्दु गरीबन पायकै।' भू० १०२। विषैला होना, विषका असर करना।

बिसायँध—देखो 'बिसाइँध' (प० २१०)। [दक्ष हो।

बिसारद—वि० दक्ष, प्रसिद्ध, श्रेष्ठ। पु० वह जो विद्वान या

बिसारना—सक्रि० भुला देना (उदे० 'बिसारा')।

बिसारा—वि० विषयुक्त 'गाढ़े ह्वै गढ़े हैं न निसारे निसरत मैन बानसे बिसारे, न बिसारे बिसरत हैं।' ललित० ३०, 'नैन बिसारे बान सों चली बदाउइ मारि।'

बिसास—पु० विश्वास, धारणा, यक़ीन। [मति० १७४

बिसासी—वि० धोखेबाज़, छली 'ऐसो फलहीन वृच्छ वसुधामें भयो यारो सेमर बिसासी बहुतेनको ठग्यो है।' गंगकवि, जैसे बधिक बिसासि बिवस करि बधत विषम सर तानि।' भ्र० १०२

बिसाहना—सक्रि० मोल लेना 'मरु कूपके बीच फँसै सुगमै बरु मीचतें बैर बिसाहनो है।' दीन० २५९। पु० मोल लेनेकी वस्तु।

बिसाहनी—स्त्री० मोल ली हुई वस्तु, सौदा, खरीद।

बिसाहा—पु० सौदा, बिसाहना।

बिसिख—पु० बाण (रामा० ३७२)।

बिसियर—वि० जहरीला। पु० सर्प 'कौआ कहा कपूर चराये। कह बिसियर का दूध पिआये।' कबीर २७५

बिसुकरमा,—कर्मा—पु० विश्वकर्मा, दिव्य शिल्पी, ईश्वर (प० १३८)।

बिसुरना, बिसूरना—अक्रि० चिन्ता करना, सोच करना 'सेज परी मतिराम बिसूरति आई अली अबहीं छबि मैं हूँ।' रस० २९। स्त्री० चिन्ता (कविता० २३९)।

बिसेख, बिसेस—वि० खास, मुख्य, बहुत अधिक। पु० विचित्रता। नियम, सार। भेद, मर्म 'प्रेम-बार सो कहै जो देखा। जो न देख का जान बिसेखा।' प० ४३

बिसेखना—अक्रि० विशेष रूपसे वर्णन करना, ठहराना या निश्चित करना।

बिसोक—पु० अशोक वृक्ष। वि० शोकरहित 'सियनिन्दक अघ ओघ नसाये। लोक बिसोक बनाइ बसाये।'

बिस्तर—पु० बिछावन। फैलाव। [रामा० १५

बिस्तरना—देखो 'बिसतरना', 'बिमल जस नाथ केहि

बिस्तरा—पु० बिछौना। [भाँति बिस्तरहुगे।' विन० ४८७

बिस्तार—पु० फैलाव।

बिस्तारना—सक्रि० फैलाना।

बिस्तुइया—स्त्री० छिपकली, पल्ली।

बिस्फारित—देखो 'विस्फारित'।

बिस्मय—पु० आश्चर्य, गर्व।

बिश्राम, बिस्राम—पु० देखो 'बिसराम' (विन० २३८)

बिस्वा—पु० बीघेका बीसवाँ अंश। बीस बिस्वा = पूर्ण रूपसे, निश्चय ही (उदे० 'बीस')।

बिस्वास—पु० विश्वास, यक़ीन, धारणा। भरोसा।

बिहंग—पु० पक्षी। बादल। तीर। सूर्य।

बिहंडना—सक्रि० नष्ट करना (छत्र० १), मार डालना। तोड़ना 'नख दंतन सों भुजदंड बिहंडत···' कविता०

बिहँसना—अक्रि० मुसकराना (रामा० ७३)।

बिहँसाना—सक्रि० हँसाना। अक्रि० मुसकराना 'सुनि सोहाग रानी बिहँसानी।' प० १५७। खिलना।

बिहसौंहा—वि० हँसता हुआ (उदे० 'नचौहाँ')।

बिहग—पु० देखो 'बिहंग'।

बिहतर—वि० ज्यादा अच्छा।

बिहतरी—स्त्री० अच्छाई, भलाई, कल्याण।

बिहद, बिहद्द—वि० बहुत अधिक 'ब्याधहूँ तें बिहद असाधु हौं अजामिलौं—पद्माकर

बिहवल—वि० विह्वल, व्याकुल।

बिहरना, बिहराना—अक्रि० विचरना, भ्रमण करना (उदे० 'कमरिया', 'अखज')। विहार करना, क्रीड़ा करना 'यमुना जल बिहरत ब्रजनारी।' सू० ११२।

टूटना, फटना 'सरवर हिया घटत नित जाई। टूक टूक होइकै बिहराई ।' प० १७१, 'हृदय मोर बड़ दारुन रे पिया बिनु बिहरि न जाए ।' विद्या० २४९

बिहान—पु० भोर, सबेरा, अन्त 'तहँ तब रहिहि सुखेन सिय जब लगि बिपति बिहान।' रामा० २४५ । क्रिवि० कल ( सू० ९९ ) ।

बिहाना—अक्रि० बीतना, अन्त होना 'एहि बिधि बिलपत रैनि बिहानी ।' रामा० २७३ । सक्रि० त्यागना 'भजिय तुम्हहिं सब देव बिहाई ।' रामा० ३६२

बिहारना—अक्रि० क्रीड़ा करना, विचरण करना †

बिहारी—वि० विहार करनेवाला । († रामा० ५०७) ।

बिहाल—वि० व्याकुल 'देखि पवन सुत कटकु बिहाला ।'

बिहि—पु० बिधि, ब्रह्मा (विद्या० ३) । [रामा० ४७९,

बिहिश्त—पु० स्वर्ग ।

बिही—स्त्री० अमरूद ।

बिहीन, बिहून—अ० बिना । वि० रहित । 'कब लगि रहै परान बिहूना ।' प० ५४, ( नव० ६० ) ।

बिहुरना—अक्रि० बिथुरना, फैलना ( सू० १७९ ) । सक्रि० छोड़ना 'मरकट मूँठि स्वाद नहिं बिहुरै, घर घर रटत फिरो ।' बीजक २३५

बिहोरना—अक्रि० अलग होना, बिछुड़ना ।

बींड़ी—स्त्री० रस्सीकी पिण्डी, गेंडुरी ।

बींदना—सक्रि० अनुमान करना, अटकलसे जानना । बीनना, चुनना, बींदि बींदि गोविंद गवासनि सँघारे है ।' रत्ना० ५१२ ।

बींधना—अक्रि० फँसना (उदे० 'चूँच')। सक्रि०छेदना।

बीख—पु० डग, कदम । विष ।

बीग—पु० भेड़िया ।

बीघा—पु० बीस बिस्वेके बराबर मान ।

बीच—पु० मध्य । अन्तर '···घन और घनश्याममें बीच बड़ो ।' अवकाश, मौक़ा 'पायो बीच इन्द्र अभिमानी, हरि बिनु गोकुल जान्यो ।' सू० २०४, 'बीच पाइ निज बात सँवारी ।' रामा० २०७ । बचाव, रक्षा 'बीच न काहू तब कियो, दूतनि काढ्यो बार ।' सू० २२ ।—करना = झगड़ा मिटाना, अलग करना 'रहा न कोउ धरहरिया करै दुहुन्ह महँ बीचु ।' प०

बीचि—स्त्री० लहर । [२१८ । स्त्री० लहर ।

बीचोबीच—क्रिवि० ठीक बीचमें ।

बीछना—सक्रि० छाँटना ( सुन्द० १२१ ) ।

बीछी—स्त्री० बिच्छू (उदे० 'डाँक') ।

बीछू—पु० बिच्छू ( भू० ३९ ) ।

बीज—पु० बीया, दाना । वीर्य । हेतु, प्रधान कारण ।

बीजक—पु० सूची । बीज । [स्त्री० बिजली ।

बीजगणित—पु० वह गणित जिसमें अक्षरोंको संख्याओं-का सूचक मानकर गणना की जाती है ।

बीजन, बीजना—पु० बिजना, पङ्खा ( उदे० 'झलना',

बीजमंत्र—पु० मूलमन्त्र, ठीक रीति । [ 'डुरावना' ) ।

बीजरी—स्त्री० बिजली 'पिकको चुरायो बैन मृगको चुरायो नैन दसन अनार हाँसी बीजरी गँभीरकी ।' बेनी

बीजा—पु० बीया । वि० दूसरा ।

बीजी—स्त्री० मींगी, गुठली । वि० बीज सम्बन्धी ।

बीजु, बीजुरी—स्त्री० बिजली 'चमकहिं दसन बीजु कै नाईं ।' प० १४, ( बि० १८ ) ।

बीजू—पु० बिज्जु नामक जन्तु । वि० बीजसे उत्पन्न, कलमी नहीं । [बन जाहाँ ।' प० ६१

बीझ, बीझा—वि० शून्य, निर्जन, सघन 'दंडाकरन बीझ

बीझना—अक्रि० फँसना 'इक मैं मेरी मैं बीझैं, इक अहंमेव मैं रीझैं ।' कबीर १८२

बीट—स्त्री० पक्षियोंकी विष्ठा ।

बीड़ा—पु० लगा हुआ पान ।—उठाना = कोई काम करनेकी प्रतिज्ञा करना ।—जोड़ना = बीड़ा उठाना

बीड़ी—स्त्री० देखो 'बीरी' [ (भ्र० ५५ ) ।

बीतना—अक्रि० गुजरना, व्यतीत होना, घटना । दूर होना ( उदे० 'निबुकना' ) ।

बीता—पु० बालिश्त 'बन बन खोजत फिरे बन्धु सँग कियो सिन्धु बीताको ।' भ्र० ३५

बीथि, बीथी—स्त्री०सड़क, रास्ता (उदे०'खरा', चौक') ।

बीथित—वि० व्यथित, पीड़ित ।

बीधना—अक्रि० फँसना 'मनहुँ कमल संपुट महँ बीधे, उड़ि न सकत चञ्चल अलिबारे ।' सू० १६९ । सक्रि० बेधना ।' [राग मलार ।' बि० ६५

बीन—स्त्री० एक बाजा 'लै कर बीन प्रवीन तिय गायो

बीनना—सक्रि० चुनना 'ब्रज वनिता मृग सावक नैनी बीनति कुसुम कली ।' सू० १६४, बराना । बुनना

बीना—स्त्री० देखो 'वीणा' । [ (उदे० 'झीना' ) ।

बीफै—पु० बृहस्पतिवार ।

बीबी—स्त्री० स्त्री, कुलवधू। ननंद, कुआँरी लड़की।
बीभत्स—वि० घृणित, दुष्ट। पु० एक रस।
बीमा—पु० किसी विशेष हानिकी पूर्त्तिका दायित्व।
बीमार—वि० अस्वस्थ, रोगी।
बीमारदारी—स्त्री० रोगियोंकी सेवा।
बीमारी—स्त्री० रोग। कुटेव, झंझट।
बीय, बीया—वि० दूसरा। पु० बीज।
बीर—वि० साहसी, बहादुर। पु० वह जो साहसी हो, योद्धा। भाई 'हम दोउ बीरै हारि परघरै मानो थाती सौंपि गये।' भ्र० १, 'बीते अवधि जाउँ जौं जियत न पावउँ बीर।' रामा० ५२७। स्त्री० सखी 'फिरत कहा है बीर बावरी भई सी, तोहि कौतुक दिखाऊँ चलि परे कुञ्ज द्वारीके।'—हठी। कानका एक गहना, बीरी।
बीरउ—पु० बिरवा, पेड़। [ चारागाह।
बीरज—पु० वीर्य, शुक्र।
बीरन—पु० भाई।
बीरबहूटी—स्त्री० लाल रङ्गका बरसाती कीड़ा, इन्द्रवधू।
बीरा—पु० लगा हुआ पान (उदे० 'काथ', 'पहराना')।
बीरी—स्त्री० बीड़ा 'निज कर बीरी नृपहिं खवायो।' रघु० १७५। मिस्सी 'कोइ बीरा, कोइ लीन्हे बीरी। कोइ परिमल अति सुगँध समीरी।' प० १३८। कानका एक गहना। पत्तेका बना चुरुट।
बीरौ—पु० बिरवा, पेड़ 'पदमावति कहँ दुख तस बीता। जस असोक बीरौ तर सीता।' प० २०१
बील—पु० मद्य ( रतन० २० )। बेल। झील इ० की
बीवी—स्त्री० देखो 'बीबी'। [ भूमि। वि० खोखला।
बीस—पु० जहर ( सू० १७२ )। २० की संख्या। वि० पन्द्रह और पाँच। बीस बिसे=बहुत करके, पूर्णतया, निश्चयपूर्वक 'बीस बिसे मत भग भयो सु कहो अब केशवको धनु ताने।' राम० ८९
बीसरना—सक्रि० भूल जाना। अक्रि० विस्मृत होना 'हँसों तो दुख ना बीसरै, रोओं बल घटि जाय।' साखी ४१
बीसी—स्त्री० कोड़ी, बीस वस्तुओंका समूह। [ ४६८
बीह०—वि० बीस 'साँचहु मै लबार भुज बीहा।' रामा०
बीहड़—वि० विकट, ऊबड़ खाबड़ (प० १६७)। जुदा।
बुंद—स्त्री०, पु० बिन्दु, बूँद 'बुन्द सुखि गो कहा महा समुद्र छीजई।' राम० ३४९
बुँदकी—स्त्री० छोटी बिन्दी या छोटा चिह्न।
बुँदकीदार—वि० बुँदकियोंवाला। [ 'उपनना')
बुंदा—पु० बड़ी टिकली। कानका गहना। बूँद ( उदे०
बुंदिया, बुँदौरी—स्त्री० एक मिठाई (उदे० 'पिराक')।
बुंदीदार—वि० जिसमें छोटी छोटी बिन्दियाँ हों।
बुंदेलखंड—पु० बुन्देलोंका देश। इसमें सागर, दमोह झाँसी, हमीरपुर, आदि जिले तथा पन्ना, छतरपुर आदि रियासतें शामिल हैं।
बुंदेला—पु० क्षत्रियोंका एक भेद।
बुआ—स्त्री० पिताकी बहिन।
बुक—पु० एक तरहका महीन किन्तु कड़ा कपड़ा।
बुकचा—पु० कपड़ोंकी गठरी, पोटली।
बुकनी—स्त्री० चूर्ण।
बुकवा—पु० उबटन।
बुकुन—पु० बुकनी। पाचक। [ बाजा ( प० ८८ )।
बुक्का—पु० अभ्रकका चूर्ण। स्त्री० रुधिर, कलेजा। एक
बुखार—पु० ज्वर, ताप, आवेग। वाष्प।
बुज़दिल—वि० कायर, डरपोक।
बुजुर्ग—वि० वयोवृद्ध। पु० पूर्वज, पुरखा।
बुझना—अक्रि० बुतना, ठण्डा होना।
बुझाना—सक्रि० ठण्डा करना ( उदे० 'झल' ), ताप दूर करना 'लपट बुझावत बिरहकी कपट भरेऊ आय।' वि० २०। समझाना ( उदे० 'चौथपन' )। अक्रि० शान्त होना (उदे० 'अँचवना'), कैसे हूँ न बुझाति है॥
बुट—स्त्री० बूटी। [॥ज्यों सपनेकी प्यास।' मति० १७९
बुटना—अक्रि० पलाना, भागना।
बुड़की—स्त्री० डुबकी। [ प० १७९
बुड़ना—अक्रि० डूबना 'जल महँ मच्छ दुखी होइ बुड़े।'
बुड़बुड़ाना—अक्रि० बड़बड़ाना, क्रोधादिके आवेशमें
बुड़ाना—सक्रि० डुबाना। [ अस्पष्ट रूपसे कुछ कहना।
बुड्डी—स्त्री० डुबकी, गोता (ग्राम २७४)।
बुड्ढा, बुढ़वा—वि० वृद्ध। पु० वृद्ध मनुष्य।
बुढ़ाई, बुढ़ौती—स्त्री० बुढ़ापा ( उदे० 'धाई' )
बुढ़ाना—अक्रि० वृद्ध होना।'
बुढ़ापा—पु० वृद्धावस्था।
बुत—पु० मूर्त्ति, पुतला। स्नेहपात्र।
बुतना—अक्रि० बुझना, ठण्डा होना।
बुतपरस्त—पु० मूर्त्तिपूजक, सौन्दर्योपासक।
बुतशिकन—पु० मूर्त्ति तोड़नेवाला।

बुताना—सक्रि० ठण्डा करना । अक्रि० शान्त होना 'मन मोदकन्हि कि भूख बुताई ।' रामा० १२४ । गुल होना, ठण्डा होना 'धराको प्रमान यहै तुलसी जो फरा

बुताम—पु० बटन । [सो झरा जो बरा सो बुताना ।'

बुत्ता—पु० झाँसापट्टी ।

बुदबुद, बुदबुदा—पु० पानीका बुल्ला (उदे० 'काँगुरा')।

बुद्ध—वि० सर्वज्ञ, बुद्धिमान् । पु० बुद्धदेव ।

बुद्धि, बुद्धी—स्त्री० समझ, विवेकशक्ति ।

बुद्धिचक्षु—पु० धृतराष्ट्र ।

बुद्धिजीवी—पु० वह जो बुद्धिद्वारा अपनी जीविका

बुद्धिपर—वि० जो बुद्धिसे परे हो । [चलाता हो।

बुद्धिमत्ता, मानी—स्त्री० अक्लमन्दी, समझदारी ।

बुद्धिमान् -वंत—वि० अक्लमन्द, समझदार ।

बुद्धिवाद—पु० वह वाद जिसमें बुद्धिका प्राधान्य हो,

बुद्धिशाली, शील—वि० बुद्धिमान् समझदार । [तर्कवाद

बुध—पु० एक ग्रह । बुद्धिमान् मनुष्य । देवता ।

बुधंगड़—पु० मूर्ख व्यक्ति, बुद्धू 'ये अधपरे बुधङ्गड़ जगमें

बुधवान्—वि० बुद्धिमान् । [भरे घनेरे ।' रत्ना० २५

बुधवार—पु० मङ्गलके बादवाला दिन ।

बुधि—स्त्री० देखो 'बुद्धि' ।

बुनना—सक्रि० बिनना, जाली आदि काढ़ना ।

बुना—स्त्री० बिना, नींव ( सेवा० १८५ ) । [बुनावट ।

बुनाई—स्त्री० बुननेकी क्रिया या भाव, बुननेकी मज़दूरी ।

बुनावट—स्त्री० बुननेका ढङ्ग, सूतोंके मिलानेका प्रकार ।

बुनिया—स्त्री० एक मिठाई । बूँद (ग्राम० भूमि० १७)।

बुनियाद, बुन्याद—स्त्री० मूल, असलियत 'आदि बुन्यादि सबै हम जानति काहेको सतरात ।' सूबे० १४५

बुबुकना—अक्रि० डाढ़ मारकर रोना, गला फाड़कर

बुबुकारी—स्त्री० डाढ़ मारकर रोना । [चिल्लाना ।

बुभुक्षा—स्त्री० खानेकी इच्छा, भूख ।

बुभुक्षित—वि० भूखा ।

बुरकना, बुरकाना—सक्रि० छिड़कना, डालना 'ललितकिसोरी जखम जिगरपर नौनपुरी बुरकाता है।' ललित०

बुरका—पु० मुसलमान स्त्रियोंका सिरसे पैर तकका एक

बुरा—वि० ख़राब, निकृष्ट । [ढीला पहनावा ।

बुराई—स्त्री० खराबी, ऐब, दुर्गुण, नीचता, निन्दा ।

बुरादा—पु० लकड़ीका चूर । चूर्ण ।

बुरुज, बुर्ज—पु० मीनारका ऊपरी हिस्सा, या उसी तरहका क़िले इ० की दीवारका ऊपर निकला गोल हिस्सा गुम्बज (उदे० 'ओदरना', प० २५९)

बुरुश—पु० दाँत इ० साफ करने, पालिश करने, रँग आदिकी अंग्रेजी तर्जकी कूँची ।

बुलंद—वि० बहुत ऊँचा, भारी ।

बुलबुल—स्त्री० गानेवाला एक छोटा पक्षी ।

बुलबुला—पु० पानीका बबूला ।

बुलाक—पु० नाकका एक गहना ।

बुलाकी—पु० घोड़ेकी एक जाति ।

बुलाना—सक्रि० टेरना, पुकारना । बोलनेमें प्रवृत्त करना।

बुलावा, बुलौआ—पु० निमन्त्रण ।

बुल्ला—पु० बुदबुदा ( उदे० 'बिलाना' ) ।

बुहारना—सक्रि० झाड़ना ( उदे० 'कतवार' ) ।

बुहारी—स्त्री० बढ़नी, झाड़ू ।

बूँद—स्त्री० छींटा, जलकण ( पु० भी, गुलाब २४४ ) ।

बूँदा—पु० बड़ी टिकली । बड़ी बूँद ।

बूँदा बाँदी—स्त्री० हलकी वर्षा ।

बूँदी—स्त्री० वर्षाके जलकी बूँद । बुँदिया नामक मिठाई ।

बू—स्त्री० गन्ध, बास । दुर्गन्ध ।

बूआ—स्त्री० पिताकी बहिन ।

बूक—पु० एक पेड़ । चङ्गुल ।

बूकना—सक्रि० पीसना, कूटना ।

बूका—पु० देखो 'बुक्का' । नदीके हटनेसे निकली हुई

बूचड़—पु० कसाई । [ज़मीन ।

बूचा—वि० कनकटा ( उदे० 'खुभी' ) । नङ्गा, खाली ।

बूजना—सक्रि० छल करना ।

बूझना—सक्रि० पूछना ( उदे० 'जोतिक', 'ठगमूरि' ) । '... रामहिं यों सब बूझैं'—राम० २०७, समझना । 'ऐसी तोहि न बूझिये हनुमान हठीले ।' विन० ११९

बूट—पु० चनेका पौधा । पेड़ 'सब सोच विमोचन चित्रकूट । कलिहरन करन कल्यान बूट ।' विन० १०० । एक तरहका जूता । [बूटे ।' सुजा० २३

बूटना—अक्रि० भागना 'कहुँ बाजि स्यौ साजके जात

बूटनि—स्त्री० बीरबहूटी, इन्द्रवधू ।'

बूटा—पु० पौधा । फूल आदि जैसा चिह्न ।

बूटी—स्त्री० जड़ी, भाँग । छोटा बूटा ।

बूड़ना—अक्रि० डूबना 'ज्यों ज्यों बूड़े स्याम रँग त्यों त्यों उज्वल होय ।' वि० ५४, ( उदे० 'तरना, डगगना')

वृढ़—वि० बुड्ढा। पु० बीरबहूटी। लाल रङ्ग।
वृढ़ा—वि० वृद्ध। स्त्री० वृद्धा स्त्री।
वूत, वूता—पु० शक्ति, सामर्थ्य ( प० ६३, ४१ )।
वूरना—अक्रि० बूड़ना, डूबना।
वूरा—पु० कच्ची चीनी, शक्कर। बारीक चूर्ण।
वृंद—देखो 'वृन्द'।
वृक—पु० भेड़िया ( कविप्रि० १०२ ), सियार।
वृच्छ—पु० पेड़।
वृष—पु० बैल। इन्द्र। एक राशि। धर्म।
वृषकेतु, वृषध्वज—पु० शिवजी।
वृषभ—पु० बैल, धर्म ( कविप्रि० १८ )।
वृषल—पु० शूद्र। दुराचारी। चन्द्रगुप्तका एक नाम।
वृहत्—वि० बड़ा, उच्च, विशाल। दृढ़।
वृहन्नला—स्त्री० अर्जुनका अज्ञातवासके समयका नाम।
वेंग—पु० दादुर, मेंढक।
वेंच—स्त्री० लकड़ी इ० की बनी कम चौड़ाईवाली लम्बी [ चौकी।
वेंचना—सक्रि० दाम लेकर देना।
वेंट—पु० मूठ, हैण्डिल।
वेंड़—स्त्री० सहारेके लिए लगी लकड़ी ( प० ३१९ )।
वेंड़ना—सक्रि० बन्द करना, घेरना। [ टेढ़ा, कठिन।
वेंड़ा—पु० ब्योंड़ा, अरगल ( सुन्द० ५८ )। वि०
वेंड़ी—स्त्री० बाँसकी डलिया। देखो 'बेड़ी', (प्रिय० १८३)।
वेंत—पु० देखो 'वेत'।
वेंदा—पु० टीका। एक गहना।
वेंदी—स्त्री० एक गहना 'तियमुख लखि हीरा-जरी बेंदी बढ़त विनोद।' वि० २९२। टिकली। शून्य, बिन्दी
वेंवड़ा—पु० देखो 'ब्योंड़ा'। [ (उदे० 'उदोत' )।
वेंवत—स्त्री० ब्योंत, व्यवस्था, उपाय। मौक़ा। काट छाँट।
वेंवताना—दे० 'ब्योंताना'।
वे—अ० बिना। अव्य० दे० 'अवे'।
वेअंत—वि० अनन्त, असीम।
वेअकल—वि० निर्बुद्धि, नासमझ, मूर्ख।
वेअदब—वि० जो बड़ोंका अदब न करे, अशिष्ट, गुस्ताख।
वेअदबी—स्त्री० अशिष्टता, गुस्ताखी।
वेआब—वि० कान्तिहीन ( उदे० 'गरकाब' )।
वेआप—वि० बेसुध।
वेइंसाफी—स्त्री० अन्याय।
वेइज्जती—स्त्री० अपमान, अप्रतिष्ठा, निरादर।
वेइलि—पु० बेला, मोगरा। स्त्री० लता (ग्राम०१४)।
वेईमान—वि० अविश्वसनीय, धोखेबाज़।
वेक़दरा—वि० जो कदर करना न जाने या जिसकी कोई
वेकदरी—स्त्री० निरादर, बेइज्जती। [ क़दर न करे।
वेकरार—वि० व्याकुल, शान्तिरहित (प० २८,११५)।
वेकरारी—स्त्री० विकलता, बेचैनी।
वेकल—वि० विकल, व्याकुल।
वेकली—स्त्री० व्याकुलता, बेचैनी।
वेक़सूर—वि० निर्दोष, निरपराध।
वेक़ाबू—वि० लाचार, विवश। स्वच्छन्द।
वेक़ाम—वि० व्यर्थ, निकम्मा। क्रिवि० व्यर्थ।
वेक़ायदा—वि० क़ायदे या नियमके विरुद्ध।
वेकार—वि० व्यर्थ। बेरोज़गार।
वेकारी—स्त्री० बेकार होनेका भाव, उद्यमहीनता।
वेकारो—पु० ज़ोरसे पुकारनेकी आवाज़।
वेख—पु० वेष ( उदे० 'जटिल' )। स्वरूप, नक़ल 'सुरपति सुत धरि बायस बेखा।' रामा० ३५८
वेखटके—क्रिवि० निश्शंक भावसे, बिना सङ्कोच या [ रुकावटके।
वेखतर—वि० निडर, निर्भय।
वेखबर—वि० अनजान, बेहोश।
वेखौफ—वि० निडर, निधड़क।
वेग—पु० शीघ्रता, तेज़ी, प्रवृत्ति।
वेगना—अक्रि० शीघ्रता करना 'बेगिय नाथ न लाइय बारा।' रामा० २०१ [ का पत्ता, रानी या मेम।
वेगम—स्त्री० राजपत्नी, रानी। स्त्रीकी शकलवाला ताश-
वेगर—वि० देखो 'बेहर', (कबीर १४३)। [ निष्प्रयोजन।
वेगरज—वि० जिसे किसीकी गरज न हो। क्रिवि०
वेगाना—वि० दूसरा, पराया, अजनबी, अपरिचित (उदे० 'मसलहत')। [ किया जानेवाला काम।
वेगार—स्त्री० जबरदस्ती कराया गया काम। बेमनसे
वेगि—क्रिवि० शीघ्र ही, तुरन्त ( प० ५३ )।
वेगुन—वि० बिना रस्सीके 'आँसूकी धार बहाकर खेचका प्रेम बेगुनकी' आँसू ३८
वेगुनाह—वि० निरपराध, निर्दोष।
वेगैरत—वि० बेहया, निर्लज्ज ( गबन १४८ )।
वेगैरती—स्त्री० बेहयाई, निर्लज्जता।
वेचना—सक्रि० दाम लेकर देना।
वेचारा—वि० दीन, असहाय।

वेचैन—वि० व्याकुल ।
वेचैनी—स्त्री० व्याकुलता, घबराहट ।
वेजड़—वि० वेबुनियाद, निर्मूल ।
वेजा—वि० अनुचित, बुरा । वेमौके ।
वेजान—वि० जिसमें जान न हो, वेदम, मुरझाया हुआ ।
वेज़ाब्ता—वि० क़ानूनके खिलाफ, नियम-विरुद्ध ।
वेज़ार—वि० तङ्ग आया हुआ, परेशान, दुःखी । बीमार ।
वेजोड़—वि० अद्वितीय, अखण्ड । उपमारहित ।
वेझ, वेझा—पु० वेध्य, निशाना 'धानुक आप वेझ जग कीन्हा ।' प० ४५ ( के० १३५ ) ।
वेझना—सक्रि० निशाना लगाना ।
वेटकी—स्त्री० वेटी, पुत्री ।
वेटला, वेटवा, वेटा—पु० पुत्र ।
वेटौना—पु० पुत्र । [ ।' रत्ना० १२१
वेटन—पु० बस्ता, 'पोथी बेठन खोलि चारु चौकेपर धारी ।'
वेठिकाने—वि० स्थानच्युत, मनमाना, निरर्थक ।
वेड़—पु० मेंड़, घिराव ।
वेड़ना—सक्रि० मेंड बनाना, घेर देना ।
वेड़ा—पु० नावोंका समूह । तख्तों आदिका ढाँचा ।
वेड़िनी—स्त्री० वेश्या, नाचने गानेवाली स्त्री 'कहूँ लोलिनी बेड़िनी गीत गावें ।' राम० ११२
वेड़ी—स्त्री० हाथ या पाँव बाँधनेकी जञ्जीर, बन्धन वि० कठिन 'अतल सिन्धुमें लगा लगाकर जीवनकी बेड़ी
वेडौल—वि० वेढङ्गा, कुरूप । [ बाजी' झरना ३७१ ।
वेढंगा—वि० बुरे ढङ्गका, भद्दा, बदशकल ।
वेढ़—पु० घेरनेका कार्य । नाश, ध्वंस । [(विद्या० १५२) ।
वेढ़ना—सक्रि० रूँधना, घेरना (कबीर १९३) । लपेटना
वेढब—क्रिवि० बुरी तरहसे । वि० बेढङ्गा, भद्दा । विकट ।
वेढ़ा—पु० हाथका एक गहना । मकानकी बारी, क्यारी ।
वेत—पु० एक लता या उसके डण्ठलकी लचीली लकड़ी । वेतपानि = जिसके हाथमें वेत या दण्ड हो 'वेतपानि । रच्छक चहुँ पासा ।' रामा० ५२१
वेतकल्लुफ—वि० ऊपरी शिष्टाचारकी परवा न करनेवाला, हृदयकी बात साफ साफ कह देनेवाला ।
वेतकल्लुफी—स्त्री० संकोच या झिझकका न होना ।
वेतना—अक्रि० मालूम होना, जान पड़ना ।[ छरणतया ।
वेतमीज—वि० जिसे तमीज न हो, उजड्ड, वेशऊर ।
वेतरह—वि० बहुत ज्यादा । क्रिवि० बुरी तरहसे, असाधा-
वेतहाशा—क्रिवि० बहुत घबड़ाकर, तेज़ीसे ।
वेताब—वि० व्याकुल, बेचैन । दुर्बल ।
वेताल—देखो 'बैताल' ।
वेतुक—वि० वेमेल, भद्दा, वेढब, विलक्षण ।
वेद—पु० हिन्दुओंके प्राचीनतम धर्मग्रन्थ । वेत । रि होइ जौ चन्दन पासा । चन्दन होइ बेद
वेदखल—वि० अधिकारच्युत । [ बासा ।' प०
वेदन, वेदना—स्त्री० पीड़ा ( सू० १३१ ), '...बढ़ी बाहु-बेदन कही न सहि जाति है ।' कविता० २६०
वेदम—वि० जिसमें जान न हो, मृतप्राय, कमज़ोर, जर्जर ।
वेदर्द—वि० बेरहम, वेपीर, निर्दय ।
वेदर्दी—स्त्री० बेरहमी, निष्ठुरता । वि० वेपीर ।
वेदाग़—वि० जिसमें कोई दाग न हो, निर्दोष, निरपराध ।
वेदाना—पु० एक तरहका उत्तम अनार । बिहीदाना ।
वेदाम—वि० बिना दामका । पु० बादाम । [वि० मूर्ख ।
वेदार—वि० जाग्रत ( सेवा० १८८ ) ।
वेध—पु० छेद ( उदे० 'वेधना' ) । नक्षत्रयुक्त योग ।
वेधक—वि० वेधनेवाला ( उदे० 'अनियारा' ) ।
वेधड़क—वि० बेरोक, निर्भय । क्रवि० बेखटके ।
वेधना—सक्रि० छेदना, घाव करना 'बरबस बेधत मो हियो तो नासाको बेध ।' बि० १७, ( उदे० 'कत' ।
वेधिया—पु० अंकुश ।
वेधीर—वि० अधीर, उतावला ।
वेन—पु० वेणु, बाँसुरी । बाँस ।
वेनज़ीर—वि० जिसकी बराबरी और कोई न कर सके,
वेनसीब—वि० अभागा । [ वेजोड़, अनुपम ।
वेना—पु० पङ्खा । बाँस । खस 'औ कपूर बेना कस्तूरी ।'*
वेनिमून—वि० निरुपम ।[*प० १६ वेंदा नामक शिरोभूषण ।
वेनिया—स्त्री० पङ्खी ( ग्राम० ४४ ) ।
वेनी—स्त्री० त्रिवेणी । स्त्रियोंकी चोटी 'बेनी गूँथि माँग मोतिनकी सीसफूल सिर धारति ।' सूवे० १२०, ( उदे० गूँदना' ) । किवाड़में लगी एक लकड़ी ।
वेनु—पु० देखो 'वेन', ( उदे० 'दिन', सू० १९ ) ।
वेनौरा—देखो 'विनौला' ।
वेनौरी—स्त्री० विनौलेके सदृश छोटे ओले, पत्थर ।
वेपरदगी—दे० 'वेपर्दगी' ।
वेपरवा, वेपरवाह—वि वेफिक्र, मनमौजी । [हुआ, नङ्गा ।
वेपर्द—वि० जिसके ऊपर कोई पर्दा या आड़ न हो; खुला

वेपर्दगी—स्त्री० पर्देका अभाव ।
वेपाइ—वि० भौचक, किंकर्त्तव्यविमूढ़ ( उदे० कौंहर' ) ।
वेपीर—वि० निर्दय, सहानुभूति न रखनेवाला ।
वेफायदा—वि०जिससे कोई लाभ न हो,व्यर्थका ।क्रिवि०
वेफिकरा, वेफिक्र—वि०बेपरवा,निश्चिन्त । [व्यर्थ ही ।
वेवस—वि० लाचार, परवश ।
वेवसी—स्त्री० परवशता, लाचारी ।
वेवहा—वि० वेशकीमत, अमूल्य ( सेवा० ८८, ३५० )।
वेवाक—वि० चुकता, माफ ।
वेवुनियाद—वि० वेजड़, निर्मूल ।
वेमजा—वि० आनन्दरहित, फीका । [ † मन लगाये ।
वेमन—वि० जिसका मन न लगता हो। क्रिवि० बिना †
वेमरम्मत—वि० जिसकी मरम्मत न हुई हो, टूटा हुआ।
वेमिलावट—वि० वेमेल, शुद्ध, खालिस ।
वेमुरव्वत—वि० जिसमें शील या सङ्कोच न हो ।
वेमोल—वि० अमूल्य ।
वेमौका—वि० जो ठीक अवसरपर न हो ।
वेमौसिम—वि० मौसिम न होनेपर भी होनेवाला ।
वेर—पु० एक कँटीला पेड़ या उसका फल, वदर । स्त्री० वार 'कुवेर वेर कै कही न यक्ष भीर मण्डिरे ।' राम० ४०० । देर, समय । शरीर ( कविता० १९१ )।
वेरवा—पु० विवरण । सोने या चाँदीका कड़ा ।
वेरहम—वि० निष्ठुर, निर्मम, वेदर्द ।
वेरहमी—स्त्री० दयाहीनता, कठोरता ।
वेरा—स्त्री० समय ( प० २९ ) । सवेरा । वार, दफा 'इक वीस वेरा दई विप्रन रुधिर जल अन्हवाइके ।' राम० १२५ । पु० पार जानेके लिए लट्ठों आदिका यना साधन, जहाजोंका समूह 'ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे । भये समर सागर कहँ वेरे ।' रामा० ५४०
वेराम—वि० बीमार, अस्वस्थ ।
वेरिआ, वेरियाँ—स्त्री० वेला, समय ।
वेरी—स्त्री० वेर । एक लता । वेड़ी 'पायन वेरी परत है ढोल वजाय वजाय ।' रहीम २६ नौका 'चरन परसि पापान उड़त है मति वेरी उड़ि जात ।' सू रा० १२
वेरुख—वि० वेमुरव्वत, नाराज ।
वेरोक—क्रिवि० वेखटके, निर्विघ्न रूपसे ।
वेरोज़गार—वि० जिसे कोई काम धन्धा न हो, वेकार ।
वेरौनक़—वि० जिसपर रौनक न हो, फीका, उदास ।
वेलंद—वि० बुलन्द, ऊँचा ।
वेलंव—पु० विलम्ब, देरी ।
वेल—पु० बिल्व वृक्ष या उसका फल । स्त्री० लता। फूल पत्ती जैसे चिह्न । बेला ।
वेलज्जत—वि० स्वादहीन ।
वेलड़ी—देखो 'वेलरी' ।
वेलदार—पु० मिट्टी खोदनेवाला ।
वेलन—पु० लकड़ी पत्थर आदिका गोल लम्बा टुकड़ा।
वेलना—सक्रि० ( रोटी ) बढ़ाना । नष्ट करना । पानीके छींटे उड़ाना । पु० रोटी बेलनेका लकड़ीका गोल लम्बा [ टुकड़ा ।
वेलपत्ती—स्त्री० देखो 'वेलपत्र' ।
वेलपत्र,-पात—पु० बेलकी पत्तियाँ जो प्रायः शङ्करजीपर [ चढ़ायी जाती हैं ।
वेलबूटेदार—वि० बेलबूटोंवाला ।
वेलरी—स्त्री० बेल, लता 'प्रीतम तुव गुन बेलरी, पसरी मो उर माहिं ।' कक्षौ० ५२९
वेलवाना—सक्रि० बेलनेका काम दूसरेसे कराना ।
वेलसना—अक्रि० मौज उड़ाना ।
वेलहरा—देखो 'बिलहरा' ।
वेला—पु० एक सुगन्धित सफेद फूल, मोंगरा । मल्लिका । समुद्रतट । कटोरा । तरङ्ग । स्त्री० समय । [ खरा ।
वेलाग—वि०जिसमें किसी प्रकारकी लगावट न हो,साफ,
वेलि, वेली—पु० साथी । स्त्री० बेल ( भ्र० ५४ ) ।
वेलौस—वि० खरा, सच्चा ।
वेवकूफ—वि० नासमझ, मूर्ख ।
वेवक्त—क्रिवि० वेमौके, कुसमयमें ।
वेवट—स्त्री० बेबसी, सङ्कट ( छत्र प्र० ३६ ) ।
वेवपारी—पु० व्यवसायी ।
वेवफा—वि० वेमुरव्वत, कृतघ्न ।
वेवरा—पु० ब्योरा, हाल ।
वेवसाउ—दे० 'व्यवसाय', (प० २९५ ) ।
वेवस्था—स्त्री० शास्त्र सम्मत विधान । प्रबन्ध । स्थिति 'कठिन मरनतें पेम-वेवस्था । प० ५२
वेवहरना—अक्रि० वरतना, व्यवहार करना ।
वेवहरिया—पु० देखो 'व्यवहरिया' ।
वेवहार—पु० देखो 'व्योहार' ।
वेवा—स्त्री० विधवा ।
वेवाई—स्त्री० पाँव फटनेका रोग । [ प० ११
वेवान—पु० विमान, रथ 'मँझ पद्मावति कर जो बेवानू।

बेश, बेष—दे० 'बेस'।
बेशऊर—वि० उजड्ड, बेतमीज, नासमझ, मूर्ख।
बेशक—क्रिवि० निस्सन्देह, अवश्य।
बेशक़ीमत,-क़ीमती—वि० बहुमूल्य।
बेशरम—वि० निर्लज्ज।
बेशी—स्त्री० अधिकता, लाभ।
बेशुमार—वि० असंख्य, अगणित।
बेश्म—पु० वेश्म, घर।
बेसंदर—पु० वैश्वानर, अग्नि।
बेसँभर, बेसँभार—वि० बेसुध।
बेस—पु० भेष। वेश स्वरूप 'माधव तेरे बिरहमें तज्यो सकल निज बेस। सत्यना०
बेसन—पु० चनेका आटा।
बेसबब—क्रिवि० बिना किसी कारणके।
बेसबर, बेसब्र—वि० जिसे सन्तोष न हो, अधीर।
बेसर—पु० बुलाक 'बेसर-मोती दुति-झलक परी अधरपर आइ।' बि० ७५। गदहा, खच्चर 'बेसर ऊँट वृषभ बहु जाती। चले वस्तु भरि अगनित भाँती।' रामा० १६१
बेसरा—वि० निराश्रय। पु० खच्चर 'हस्ति घोड़ औ दर पुरुप जावत बेसरा ऊँट।' प० २४५। एक पक्षी।
बेसवा, बेसा—स्त्री० वाराङ्गना, वेश्या (साखी १६७)।
बेसहना—सक्रि० मोल लेना 'खीजे बैर बामदेव हूते बेसहत है।' कलस १७१
बेसारा—वि० बैठाने या जमानेवाला।
बेसाहना—दे० 'बिसाहना', 'हौ बनिजार तो बनिज बेसाहौ। केर बिकाइ।' प० १०१ प० १६
बेसाहनी—स्त्री० क्रय, खरीद 'कोई करै बेसाहनी, काहू केर बिकाइ।' प० १६
बेसाहा—पु० मोल ली हुई वस्तु, सौदा।
बेसिर-पैरका—वि० असम्बद्ध, अण्डबण्ड।
बेसिलसिले—क्रिवि० बिना किसी क्रमके, अव्यवस्थित रूपसे।
बेसुध—वि० बेहोश, अचेत।
बेसुधपन—पु० बेहोशी, अचेतनावस्था।
बेसुर, बेसुरा—वि० बेमेल स्वरवाला, बेराग, बेठिकाने।
बेस्वा—स्त्री० वेश्या 'बेस्वा केरा पूत ज्यूँ कहै कौन सूँ बाप।' कबीर ६
बेस्वाद—वि० स्वादहीन, फीका, जिसका स्वाद खराब हो।
बेहंगम—वि० बेढङ्गा, विकट।
बेहँसना—अक्रि० जोरसे हँसना।
बेह—पु० छिद्र 'कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू।' रामा० ३२४ (प० २३५, कबीर ६५)।
बेहड़—वि० ऊबडखाबड। पु० जङ्गल (रामा० २६४)।
बेहतर—वि० ज्यादा अच्छा, बढ़कर।
बेहतरी—स्त्री० भलाई, कल्याण, लाभ।
बेहद—वि० अपरिमित, अत्यधिक।
बेहना—पु० धुनिया।
बेहबूद,-बूदी—स्त्री० बेहतरी, भलाई (सेवा० १८९)।
बेहया—वि० बेशर्म, निर्लज्ज।
बेहर—वि० पृथक्, भिन्न 'बेहर बेहर सबकै बोली।' प० २४७। अचल। पु० बावड़ी।
बेहरना—अक्रि० फटना, दरकना।
बेहरा—वि० पृथक्, न्यारा।
बेहराना—सक्रि० फाड़ना। अक्रि० फटना 'कंथा टूक टूक बेहराना।' प० १०९
बेहरी—स्त्री० चन्दा कर बटोरा हुआ धन, चन्दा।
बेहाल—वि० बेचैन (उदे० 'उचटना')।
बेहिसाब—वि० बेहद, बहुत अधिक।
बेहु—पु० देखो 'बेह' (अ० ११५)।
बेहुनर—वि० जिसे किसी कलाका ज्ञान न हो।
बेहूदगी—स्त्री० अशिष्टता।
बेहूदा—वि० अशिष्ट, बदतमीज़, बेशऊर।
बेहून—वि० विहीन, रहित। अ० बिना।
बेहैफ़—वि० निश्चिन्त।
बेहोश—वि० बेसुध।
बेहोशी—स्त्री० होशमें न रहना, मूर्च्छा।
बैंक—पु० रुपया जमा करने या ऋण इ० लेनेकी बड़ी कोठी।
बैंगन—पु० भण्टा।
बैंगनी—वि० बैंगनके रङ्गवाला, 'भंटैया'।
बैंजना—वि० बैंगनी 'लाले पीरे सेत बैजने सुमन सुहावन फूले।' पूर्ण १२२
बैंड़ना—सक्रि० देखो 'बेंदना'।
बैंड़ा—वि० कठिन, टेढ़ा, आड़ा। 
बैंत, बैंता—पु० पद्य, शेर, साखी 'बैंता पढ़ि पढ़ि जग भरमावहु।' बीजक ६२
बै—दे० 'वय' उम्र। बेचनेका कार्य। बैसंधि = वयःसन्धि 'नव बै संधि दुहुनि नित उलहत, जब देखो तब औरै।' चाचा हित०
बैकना—अक्रि० बहकना 'बँहकाये तैं और के ये ही तैं जनि बैकु।' रतन० ३२
बैकल—वि० व्याकुल, पागल।
बैकुंठ—पु० विष्णुका धाम। स्वर्ग। (चन्द्रावली ६४)।
बैखरी—स्त्री० ऊँची आवाज, चिल्लाहट, बोलना, वाक्यशक्ति

बैखानस—पु० एक तरहका तपस्वी (रामा० २८१)।
बैगनी—वि० बैंगनके रङ्गके समान।
बैजंती—स्त्री० श्रीकृष्णकी माला। एक पुष्प वृक्ष।
बैठक—स्त्री० बैठनेकी जगह। आसन। अधिवेशन। मेल।
बैठकबाज़—वि० धूर्त, शरारती (कर्म० ३)।
बैठका—पु० बैठकखाना।
बैठकी—स्त्री० आसन। बैठक।
बैठन, बैठनि—स्त्री० बैठनेकी क्रिया या ढङ्ग।
बैठना—अक्रि० उपविष्ट होना, आसीन होना, ठीक तरहसे स्थित होना, नीचे जम जाना। दब जाना। गिर पड़ना। खर्च होना।
बैठाना, बैठारना, बैठालना—दे० 'बिठाना' (उदे० 'अंमाल'।
बैत—पु० पद्य, कविता, साखी।
बैतरनी—स्त्री० एक पौराणिक नदी।
बैताल—पु० स्तुति पढ़नेवाला, भाट। एक भूत योनि, द्वारपाल।
बैतालिक—पु० स्तुतिपाठक।
बैद—पु० वैद्य 'बहई रोग निदान वहै बैद औषध वहै।' वि० २३०, (रतन० २२)।
बैदई,-बैदाई—स्त्री०वैद्यका काम,चिकित्सा '' बेधा सकल शरीर बैद करै बैदाई'-गिरधर
बैदेही—स्त्री० जानकी।
बैन—पु० वचन।
बैनतेय—पु० गरुड़।
बैना—पु० देखो 'बयना'। सक्रि० बोना।
बैपारी—पु० व्यापारी, व्यवसायी।
बैयर—स्त्री० स्त्री (उदे० 'चुरी')।
बैयाँ—क्रिवि० घुटनोंके बल (दीन० ७), बैयाँ बैयाँ चलत किलकि ब्रज जनके टेरे।' पूर्ण ७६
बैया—पु० बैसर, कंघी। स्त्री० छोटी ननँद (बुंदेल०)।
बैरंग—वि० जिसका महसूल पहले अदा न किया गया हो।
बैर—पु० शत्रुता, विरोध, द्वेष।—पड़ना = कष्ट देना।—लेना = बदला लेना 'लैहों बैर पिता तेरे को जैहैं कहाँ पराई।' सू०। पु० बेरका पेड़ या फल।
बैरख—पु० झण्डा '...इन्द्रको न चाप रूप बैरख समाज को।' भू० ३२, 'बैरख फिर्यो जनकतुरके दिसि तुङ्ग व्योम फहराना।' रघु० १५८, (भ्र० ११४)।
बैराखी—स्त्री० भुजापर पहननेका एक आभूषण।
बैराग, बैराग्य—पु० विरक्ति। [ '' ' कविप्रि० ५६
बैरागर—पु० खानि 'गुणमणि बैरागर, धीरजको सागर

बैरागी—देखो 'वैरागी'।
बैराना—अक्रि० उन्मत्त होना, वायुके कोपसे प्रभावित होना 'जे अखियाँ बैरा रहीं लगे विरहकी वाइ।' [रतन० २१, (९२)
बैरी—पु० शत्रु।
बैल—पु० वृष, बरधा।
बैलून—पु० गुब्बारा।
बैसंतर, बैसंदर—पु० वैश्वानर, अग्नि (कबीर ३२२)।
बैस—स्त्री० उम्र (उदे० 'तलबेली', बि० ९९)। जवानी पु० वैश्य। [राम० ३४, (उदे० 'घूम', सू० १७)।
बैसना—अक्रि० बैठना 'कृत युग कैसे। जनु जन बैसे।'
बैसर—पु० जुलाहोंका एक औजार, कबी।
बैसाख—पु० चैत्रके बादका महीना। बैशाख-पूर्णिमा।
बैसाखी—स्त्री० टेककर चलनेकी लाठी।
बैसारना—सक्रि० बैठालना 'माथे नहिं बैसारिय जौं सुठि सुआ सलोन।' प० ३९
बैसिक—पु० वह नायक जो वेश्यासे प्रेम करे। ...मंतकी।'
बैहर—स्त्री० वायु 'नाचत आवै नटी लौं बैहर ब... गुलाब ३१६। वि० डरावना 'बानर बरार बा... बैहर विलार बिग बगरे बराह जानवरनके जोम हैं।' भू० १४२ ...७१)
बोंगना—पु० पीतलका एक बर्तन, बहुगुना।
बोंड़ा—पु० बारूदमें आग लगानेकी रस्सी (बुं०वै०
बोआई—स्त्री० बोनेकी क्रिया या बोनेकी मजदूरी।
बोक, बोकरा—पु० बकरा 'कहूँ बोक बाँके कहूँ ...
बोज—पु० घोड़ोंकी एक जाति। [सूरे।' राम० १...
बोज़ा—स्त्री० चावलसे बनी शराब।
बोझ—पु० वज़न, भार। गट्ठर। श्रम। व्यय।
बोझना—सक्रि० लादना, माल चढ़ाना।
बोझल, बोझिल—वि० वजनदार।
बोझा—दे० 'बोझ'।
बोटी—स्त्री० मांसका टुकड़ा।
बोड़ना—सक्रि० डुबोना (कबीर १३४)।
बोड़ा—पु० एक लम्बी फली, 'बरबटी'। अजगर।
बोड़ी—स्त्री० दमड़ी (कविता० २०९)। बौंड़ी।
बोत—पु० घोड़ोंका एक भेद।
बोतल—स्त्री० बड़ी शीशी।
बोदर—स्त्री० मुलायम छड़ी (छत्र प्रं० ४४)।
बोदा—वि० फुसफुसा, सुस्त। मूर्ख। † २०९)
बोध—पु० ज्ञान। सन्तोष, ढाढ़स (मति० २१३, प०.

बोधक—पु० बोध करानेवाला, सूचक, ज्ञापक ।
बोधगम्य—वि० समझमें आने योग्य ।
बोधन—पु० जताने या जगानेकी क्रिया ।
बोधना—सक्रि० समझाना (उदे० 'चिरैया', सूबे०५८); 'युवति बोधि सब घरहिं पटाई ।' सूबे० ११२ ।
बोधितरु,-वृक्ष—पु० बुद्ध गयामें स्थित पीपलका वृक्ष-विशेष । [ रात्रा ।
बोना—सक्रि० खेतमें बीज डालना, वपन करना, छित-
बोबा—पु० स्तन, गठरी । घरकी चीजें ।
बोय—स्त्री० बास, गन्ध ।
बोरका—पु० दावात ।
बोरना—सक्रि० डुबाना ( उदे० 'करिया', 'घाटारोह' ), 'तासु दूत होइ हम कुल बोरा ।' रामा० ४६०
बोरसी—स्त्री० गोरसी, अँगीठी ।
बोरा—पु० चाँदी या सोनेका घुँघरू । टाटका थैला ।
बोरिया—पु० विस्तरा । स्त्री० थैली ।—बधना उठाना = कूच करनेकी तैयारी करना । [ ठीक करना ।
बोरी—स्त्री० छोटा बोरा । —बाँधना = जानेका सामान
बोल—पु० वचन । बोली (उदे० 'कहना') । प्रतिज्ञा 'सो हमहूँ तुमहूँ मिलि कीजै । बापको बोल न नेकहु छीजै ।' राम० २२९
बोलचाल—स्त्री० बातचीत । मेल-मुहब्बत ।
बोलती—स्त्री० बोलनेकी शक्ति, वाणी ।
बोलना—अक्रि० मुखसे शब्द निकालना, आवाज़ करना सक्रि० बात करना, कहना । बुलाना, ललकारना 'सुनौ राम संग्रामको तोहि बोलौं ।' राम०४६२,सँदेशा भेजकर बुलवाना 'अब बोलहु वेगि बरात सबै ।' राम० १०८, (अ० ७७) । छेड़छाड़ करना । समझना, जानना बालक बोलि बधहुँ नहिं तोहीं ।' रामा० १४७
[बो]लवाना—सक्रि० दूसरेके द्वारा बुलाना । दूसरेके
[बो]लसर—पु० मौलसिरी, बकुल । [मुखसे कहलाना ।
[बो]लाचाली—स्त्री० आपसमें बातचीतका व्यवहार ।
[बोल]ावा—दे० 'बुलावा' ।
[बोल]ी—स्त्री० वाणी, बात, शब्द, भाषा । नीलामकी वस्तुका दाम ज़ोरसे कहना । व्यंगोक्ति ।
[बोआ]ना—सक्रि० बोनेका काम कराना, वपन कराना ।
[...]—स्त्री० डुबकी, गोता ।
[...]—स्त्री० पहली बिक्री ।

बोहारना—सक्रि० झाड़ना ( प० १२३ ) ।
बोहित,बोहिथ—पु०जहाज(उदे०'डपराहीं', सू०१४८)।
बौंड़—स्त्री० दूरतक फैली हुई पतली शाखा, लता, 'बढ़त बौंड़ जनु लही सुसाखा ।' रामा० २०१
बौंड़ना—अक्रि० लिपटना, दूरतक फैलना, आगे बढ़ना ।
बौंडर—पु० बवण्डर, बगूला 'उनहींसें मन भ्रमत है ह्वै बौंडरको पान ।' रस० ४४
बौंड़ी—स्त्री० नवजात फल । कली । फली । छद्दाम ।
बौआना—अक्रि० अण्डवण्ड बकना, बर्राना ।
बौखल—पु० सनकी आदमी ( प्रतिज्ञा २० ) ।
बौखलाना—अक्रि० पागलसा हो जाना ।
बौछाड़,बौछार—स्त्री० हवाके साथ पानीका झोंका, हवाके कारण वर्षाकी बूँदोंका भीतर आ जाना । वर्षा ।
बौड़ना—अक्रि० मतवाला होना 'अंड न बौड़ रहीम कह देखि सचिक्कन पान ।' रहि० विनोद २४
बौड़हा—वि० पागल, बावला ।
बौद्ध—पु० बुद्धका अनुयायी । वि० बुद्धद्वारा प्रवर्तित ।
बौना—वि० छोटे कदका । पु० छोटे क़दका मनुष्य ।
बौर—पु० मौर, आमका फूल ।
बौरना—अक्रि० मौर निकालना । [ † रामा० ५७४
बौरहा—वि० पागल 'तृसना केहि न कीन्ह बौराहा ।' †
बौरा—वि० पागल, भोला-भाला ( उदे० 'निबौरी' ) । गूँगा 'प्रेम बात सुनि बौरा होई । तहाँ सयान रहै *
बौराई—स्त्री० पागलपन । [ *नहिं कोई ।' ध्रुवदास
बौराना—अक्रि० पागल हो जाना । सक्रि० उन्मत्त करना 'कुमति कुसंगति काम ये सब बौरावत प्रान ।' —पद्माकर । बहकाना 'साँचेहुसुत भयो नँद नायकके, हौं नाहिन बौरावति ।' सू० ४७
बौराह—वि० पागल ( उदे० 'बरद' ) ।
बौलसिरी—स्त्री० मौलसिरी ।
बौहर—स्त्री० बहू, स्त्री ।
ब्यंग—पु० ताना, चुटकी । गूढ़ अर्थ ।
ब्यंजन—दे० 'व्यञ्जन' ।
ब्यजन—पु० बिजना, पंखा ( रामा० १९० ) ।
ब्यतीतना—अक्रि० बीत जाना ।
ब्यथा—स्त्री० दुःख, पीड़ा ।
ब्यलीक—वि० अप्रिय । विलक्षण । अपरिचित । पु० डाँट-डपट । अपराध । दुःख ।

व्यवसाय—पु० रोज़गार, व्यापार।
व्यवस्था—स्त्री० देखो 'बेवस्था'।
व्यवहरिया—पु० ऋण देनेवाला, हिसाब करनेवाला।
व्यवहार—पु० देखो 'व्योहार'।
व्यसन—पु० विषयासक्ति, विशेष रुचि, लत, अभ्यास। दुःख दुर्भाग्य, दोष। पतन, विनाश।
व्याज—पु० सूद। बहाना, छल, बाधा।
व्याजू—वि० सूदपर दिया हुआ ( धन )।
व्याध,-धा—पु० बहेलिया, शिकारी।
व्याधा, व्याधि—स्त्री० रोग, दुःख।
व्याना—सक्रि० जनना। अक्रि० बच्चा देना।
व्यापक—वि० विस्तृत। स्त्री० व्यापकता 'मधुकरके पठये से तुम्हरी व्यापक न्यून परी।' भ्र० १०२
व्यापना—अक्रि० फैलना, भर जाना 'नगर व्यापि गइ बात सुतीछी।' रामा० २०१। ग्रसना।।
व्यापार—पु० व्यवसाय, रोज़गार। काम। क्रिया।
व्यार, व्यारि—स्त्री० हवा ( सुजा० ७९ )।
व्यारी, व्यालू—स्त्री० रात्रिका भोजन।
व्याल—पु० साँप, हाथी, दुष्ट, व्याघ्र।
व्याव—पु० विवाह ( उदे० 'काठ' )।
व्याह—पु० विवाह, परिणय।
व्याहना—सक्रि० विवाह करना।
व्योंत—स्त्री० काट छाँट। वृत्तान्त, हाल 'बलि वामनको व्योंत सुनि को बलि तुमहिं पत्याय।' वि० ७०। व्यवस्था, प्रबन्ध। उपाय। ढङ्ग, विधि। मौक़ा।
व्योंतना, व्योंनना—सक्रि० सीनेके लिए कपड़ेको कतरना ( उदे० 'छिपी' )।
व्योंताना—सक्रि० नापके मुताबिक कपड़ा कटवाना।
व्योपार—पु० देखो 'व्यापार'।
व्योरना—सक्रि० सुलझाना, अलग अलग करना 'मञ्जन करि खञ्जन-नयनि बैठी ब्योरति बार।' वि० ३७ (वंग)
व्योरा—पु० विवरण, तफ़सील, वृत्तान्त। अन्तर।
व्योसाय—पु० व्यापार, रोज़गार।
व्योहर—पु० व्यवहार, लेनदेन।
व्योहरिया—पु० देखो 'व्यवहरिया'।
व्योहार,-व्यौहार—पु० लेनदेन, व्यापार। वर्त्ताव। कार्य। न्याय। झगड़ा। [ राका उडुगन मन्द।' सू० ८६
व्रंद—पु० वृन्द, समूह 'मनु सडोल ;वारिधिमें बिम्बित
व्रज—पु० वृन्दावनके आस पासकी भूमि। गमन। झुण्ड।
व्रजना—अक्रि० जाना।
व्रह्मंड—दे० 'ब्रह्माण्ड'।
ब्रह्म—पु० परमात्मा, ब्रह्मा, ब्राह्मण, वेद, ब्रह्मराक्षस।
ब्रह्मचर्य—पु० जीवनका प्रथम आश्रम, अध्ययनकाल, वीर्यरक्षाका व्रत। [ रहकर विद्याभ्यास करनेवाला।
ब्रह्मचारी—पु० ब्रह्मचर्यमें रहनेवाला, प्रथम आश्रममें
ब्रह्मज्ञ—पु० जिसे ब्रह्मका ज्ञान हो, वेदान्तका जाननेवाला।
ब्रह्मज्ञान—पु० ब्रह्मका बोध, अद्वैत सिद्धान्तका ज्ञान।
ब्रह्मण्य—वि० ब्रह्ममें रत (कविप्रि० १५६)। जो ब्राह्मणों-पर श्रद्धा रखता हो। ब्रह्मसम्बन्धी।
ब्रह्मतीर्थ—पु० पुष्कर तीर्थ।
ब्रह्मत्व—पु० ब्रह्मपन, ब्रह्मभाव। ब्राह्मणत्व।
ब्रह्मदोष—पु० ब्रह्महत्याका पाप।
ब्रह्मद्वार—पु० मस्तकका मध्य भाग
ब्रह्मपुर—पु०,-पुरी—स्त्री० ब्रह्मलोक, सत्यलोक। हृदय
ब्रह्मभोज—पु० ब्राह्मण-भोजन।
ब्रह्ममुहूर्त्त—पु० सूर्योदयसे चार घड़ी पूर्वका समय।
ब्रह्मरंध्र—पु० देखो 'ब्रह्मद्वार'।
ब्रह्मराक्षस—पु० ब्राह्मण जो मरनेके बाद प्रेत हो गया हो।
ब्रह्मवादी—वि० केवल ब्रह्मकी सत्ता माननेवाला, अद्वैतवादी।
ब्रह्मविद,-वेत्ता—पु० ब्रह्मको जाननेवाला। तत्त्वज्ञ।
ब्रह्मविद्या—स्त्री० ब्रह्मका ज्ञान करानेवाली विद्या, उपनिषद्-विद्या।
ब्रह्मसमाज—पु० राजा राममोहन रायद्वारा प्रवर्तित। [सम्प्रदाय
ब्रह्मसूत्र—पु० वेदान्तके सूत्र। जनेऊ।
ब्रह्महत्या—स्त्री० ब्राह्मणका वध।
ब्रह्मांड—पु० अखिल सृष्टि। कपाल।
ब्रह्मा—पु० विधाता। रचनाकार।
ब्रह्माणी—स्त्री० ब्रह्माकी स्त्री, सरस्वती। [ प्रदेश।
ब्रह्मावर्त—पु० सरस्वती तथा दृषद्वती नदियोंके मध्यका
व्रात—पु० वृन्द, समूह 'विष्णु विरंचि आदि सुर व्राता। चढ़ि चढ़ि वाहन चले बराता।' रामा० ५५
ब्राह्म—वि० ब्रह्मका। पु० एक तरहका विवाह।
ब्राह्मण—पु० विप्र, द्विज।
ब्राह्मण्य—पु० ब्राह्मणोंका समूह। ब्राह्मणत्व।
ब्राह्ममुहूर्त्त—पु० रातके पिछले पहरकी शेष दो घड़ियाँ।

ब्राह्मसमाज—दे० 'ब्रह्मसमाज'।

ब्राह्मी—स्त्री० स्मरणशक्ति बढ़ानेवाली एक बूटी। एक प्राचीन लिपि। दुर्गा।

ब्रीड, ब्रीड़ा—स्त्री० लज्जा, सङ्कोच 'समुझत चरित मोहि ब्रीडा।' रामा० ५६८

ब्रीड़ना—अक्रि० लज्जित होना, सकुचाना (सू० ११८)

# भ

भंकार—पु० भीषण शब्द।

भंग—स्त्री० भाँग, बूटी। पु० खण्ड, हार, नाश, टूटनेका भाव, विघ्न, उपद्रव 'परगट होहुँ त होइ अस भंगू। जगत दिवाकर होइ पतंगू।' प० ९१। कुटिलता, लहर।

भंगड़—वि० भँगेड़ी। [ अक्रि० टूटना, परास्त होना।

भंगना—सक्रि० खण्डित करना, तोड़ना, नष्ट करना।

भँगार—पु० बरसातका गड्ढा। स्त्री० कतवार, कूड़ा 'बाहर भेष बनाइया, भीतर भरी भँगार।' साखी १३८, ( उदे० 'कली', कबीर २५९ )।

भंगि—स्त्री० टेढ़ापन, विन्यास, विच्छेद, लहर।

भंगिमा—स्त्री० वक्रता ( प्रिय० ९१ )।

भंगी—पु० मेहतर। भंग करनेवाला। भंग होनेवाला। स्त्री० कुटिलता, टेढ़ापन। विन्यास।

भंगुर—वि० भंग होनेवाला, अस्थायी।

भंगेरा, भंगेला—पु० भाँगकी छालका बना हुआ कपड़ा।

भँगेड़ी—वि० भाँग पीनेवाला।

भंजक—पु० तोड़नेवाला।

भंजन—पु० तोड़नेकी क्रिया, ध्वंस, भंग। वि० तोड़नेवाला।

भँजना—अक्रि० बटा जाना। भाँजा या मोड़ा जाना। टुकड़ोंमें विभक्त होना, भुनना।

भंजना—सक्रि० खण्डित करना, तोड़ना 'प्रभु प्रसाद धनु भजेउ रामा।' रामा० १५५

भंजाना—सक्रि० तुड़वाना, भुनाना (रुपया इ०)। तोड़ना।

भंटा—पु० भाँटा, बैंगन।

भंड—पु० भाँड़, मसखरा। पात्र 'चींटी अण्ड-भण्डमें समान्यो ब्रह्मण्ड सब।' देव। वि० निर्लज्ज, कपट-पूर्ण ( साकेत ४०२ )। [ क्रिया।

भँडफोड़—पु० बर्त्तनोंको तोड़ने फोड़ने या भेद खोलनेकी

भँडरिया—स्त्री० दीवारमें बना छिद्र या आलमारी जिसमें किवाड़ लगे हों। पु० एक जाति। मक्कार, पाखण्डी।

भंडा—पु० पात्र। बर्त्तन ( प० ३१५ )। गुप्त भेद।

भँडाना—सक्रि० तोड़ना फोड़ना, मथना। चुप चु.. देखना, ढूँढ़ना ( सूसु० १०९ )।

भंडाफोड़—दे० 'भँडफोड'।

भंडार—पु० वह घर जिसमें अन्नादि रखा जाय, कोष।

भंडारा—पु० कोष, राशि, अन्नगृह। साधुओंका भोज

भंडारी—पु० कोठारी, खजानची। स्त्री० दीवारमें बना किवाड़ोंवाला ताख, कोष।

भँड़ेरिया—पु० एक जाति, पण्डेका नौकर 'सन्दिर बैं भँड़ेरिया नोचे' प्रेमजो० २०।

भँड़ौआ—पु० हास्यरसके भद्दे गीत।

भँभाना—अक्रि० रँभाना।

भँभीरी—स्त्री० एक तरहका फतिंगा 'जिउ बाउर या फिरे भँभीरी।' प० १६७।

भँभेरि—स्त्री० डर।

भँवना—अक्रि० भ्रमना, घूमना, मँडराना ( उदे० 'कोहाँर', 'तुलाना'), 'तेहि भ्रमर भँवत रस रूप आस।' राम० १३४

भँवर—पु० भ्रमर (उदे० 'कँवल')। पानीका चक्कर। गड्ढा, छिद्र। 'नाभि मनोहर लेत जनु जमुन भँवर छवि छीन।' रामा०। स्वामी, पति ( ग्राम० परिचय २५,४९ )।

भँवरभीख—स्त्री० घूम फिरकर माँगी गयी भिक्षा।

भँवरा—पु० भ्रमर। एक खिलौना 'दे मैया भँवरा चक डोरी।' सूवे० ७५।

भँवरी—स्त्री० आवर्त्त, सिर या पीठादिपर बालोंका चक्र। परिक्रमा, री, चक्कर 'तब तिन्ह चढ़े फिरै नौ भँवरी।' प० २७५, ( नव० १४ )।

भँवाना—सक्रि० घुमाना। बहकाना।

भँवारा—वि० चक्कर लगानेवाला।

भ—पु० नक्षत्र, पर्वत, राशि, मधुप, भ्रम, शुक्राचार्य।

भइया—पु० भाई।

भउजाई—स्त्री० भौजाई, भ्रातृ-पत्नी।

भकभकाना—अक्रि० प्रदीप्त होना, चमकना (साकेत ४१४)
भकाऊँ—पु० हाऊ, हौआ ।
भकुआ, भकुवा—वि० मूर्ख 'घाघ कहैं ये तीनों भकुआ सिर बोझा औ गावैं ।' घाघ, (उदे० 'उढ़रना') ।
भकुआना,-वाना—अक्रि० घबरा जाना, रुष्ट हो जाना, चिढ़ना (रत्ना० ७७७) । सक्रि० चकपका देना । भकुआ बनाना ।
भकूट—पु० वर-कन्याका शुभाशुभ सूचक राशिसमूह ।
भकोसना—सक्रि० लालचवश जल्दी जल्दी खाना ।
भक्त—पु० सेवक । भात । वि० पृथक् किया हुआ अनुयायी ।
भक्तवछल,-वत्सल—वि० भक्तोंपर कृपा करनेवाला ।
भक्ताई—स्त्री० भक्ति, सेवा ।
भक्ति—स्त्री० सेवा, पूजा, श्रद्धा । भाग ।
भक्ष, भक्षण—पु० आहार, भक्षण ।
भक्षक, भक्षी—पु० भक्षण करनेवाला, खानेवाला ।
भक्षना—सक्रि० खाना ( उदे० 'जूठा' ) ।
भक्षित—वि० खाया हुआ ।
भक्ष्य—पु० खाद्य वस्तु, अन्न । वि० खाने योग्य ।
भख—पु० खानेकी वस्तु 'पट पाँखे भख काँकरे' वि० २५६, ( सूसु० ७१ ) । भख करना = भखना ।
भखना—सक्रि० खाना (उदे० 'अघयना', साखी ४२ ) ।
भगंदर—पु० एक रोग ।
भग—पु० सूर्य, कान्ति, ऐश्वर्य, योनि ।
भगण—पु० एक गण जिसमें आदिका वर्ण गुरु तथा अन्त के दोनों लघु होते हैं । खगोलका वह कल्पित कटिबन्ध जिसमें राशियाँ स्थित हैं, भचक्र ।
भगत—दे० 'भक्त' । [होकर सहसा इधर उधर भागना ।
भगदड़,-दर, भग्गी—स्त्री० बहुतसे लोगोंका बदहवास
भगना—अक्रि० भागना । पु० भानजा ।
भगनी—स्त्री० भगिनी, बहिन ।
भगर, भगल—पु० धोखा, छल । जादू ।
भगली—पु० छलिया, बाजीगर ।
भगवंत—पु० ईश्वर । वि० कान्तिमान् (कविप्रि० २६४) ।
भगवती—स्त्री० देवी, दुर्गा, सरस्वती ।
भगवदीय—पु० भगवान्का भक्त ( नप० ९ ) ।
भगवा—पु० एक प्रकारका रङ्ग ; इसी रङ्गमें रँगा वस्त्र, जिसे प्रायः संन्यासी धारण करते हैं ।

भगवान्—पु० ईश्वर, पूज्य व्यक्ति । वि० ऐश्वर्ययुक्त ।
भगाई—स्त्री० भागनेकी क्रिया 'देख न पाया उनकी भगाई' कुकुरमुत्ता ४४
भगाना—अक्रि० भागना । सक्रि० खदेड़ना, दौड़ाना,
भगिनी—स्त्री० बहिन । [ हटाना । बहकाकर ले जाना
भगीरथ—पु० गङ्गाको पृथ्वीपर लानेवाले एक सूर्यवंशी राजा । वि० अत्यन्त कठिन, बहुत बड़ा ( प्रयत्न, इ० ) ।
भगेड़ू, भगेलू, भगोड़ा—वि० भागनेवाला । भागा हुआ ।
भगोहाँ, भगौहाँ—वि० भागनेको तैयार । गेरुआ (सुजा०
भगौती—स्त्री० देवी, दुर्गा । [ २००, सूबे० ३८५ ) ।
भग्गुल—वि० भागा हुआ, कायर ।
भग्न—वि० टूटा हुआ, गिरा हुआ, निराश ।
भग्नावशेष—पु० मकान इ० का बचा हुआ टूटा फूटा अंश, खँडहर । [ रह जाना ।
भचकना—अक्रि० पाँव टेढ़ा कर चलना । भौंचक्का होकर
भचक्र—पु० नक्षत्र मण्डल । नक्षत्रोंका मार्ग ।
भच्छ—पु० आहार, आहारकी वस्तु ।
भच्छना—सक्रि० खाना ।
भजन—पु० कीर्तन, जप, पूजा । स्तुतिके गीत ।
भजना—सक्रि० भजन करना, जपना । आश्रय लेना । अक्रि० भागना 'भजन कह्यो तातें भज्यौ भज्यौ न एकौ बार ।' बि० १५३, ( उदे० 'थाति' ) पहुँचना ।
भजनानंदी—पु० दिनरात भजनमें मग्न रहनेवाला ।
भजनी—पु० भजन करनेवाला ।
भजाना—अक्रि० भागना (भू० १५१) । सक्रि० भगाना,
भजिआउर—स्त्री० एक भोज्य वस्तु । [ हटाना ।
भट—पु० वीर, योद्धा, सैनिक ।
भटकटाई, भटकटैया—स्त्री० एक कँटीला पौधा ।
भटकना—अक्रि० व्यर्थ घूमना । मार्ग भूलना ( उदे० 'छहराना', वि० ४१ ) चूक जाना ( भू० २४ ) ।
भटका—पु० व्यर्थ घूमनेकी क्रिया, चक्कर 'द्वार न पावै सबदका फिरि फिरि भटका खाय ।' साखी १०२
भटकाना—सक्रि० गलत रास्ता बतलाकर भटकनेके लिए बाध्य करना, भ्रममें डालना ।
भटकौहाँ—वि० भटकानेवाला ।
भटभेरा—पु० मुठभेड़, आकस्मिक भेंट ( दास ९६ ), 'निसिदिन निरखौं जुगल माधुरी रसिकनते भटभेरो ।'
भटा—पु० भण्टा, बैंगन । [लिखित कि० । मारपीट ।

भटियारा—दे० 'भठियारा'।

भटिहारिन, भटिहारी—स्त्री० सरायका प्रबन्ध करनेवाली स्त्री ( दीन० ११२ )।

भटू—स्त्री० सखी, आली, स्त्री 'या ब्रजमण्डलमें रसखानि सु कौन भटू जु लटू नहिं कीनी।' रसखानि, ( उदे० 'छकना )।

भटैया—स्त्री० भटकटैया नामक कँटीला पौधा।

भट्ट—पु० भाट। योद्धा, सैनिक। एक उपाधि।

भट्टार—वि० पूज्य। पु० प्रभु।

भट्टारक—वि० मान्य, पूज्य। पु० राजा, विद्वान्, महात्मा।

भट्टिनी—स्त्री० ब्राह्मणी, अनभिषिक्त राजपत्नी।

भट्ठी—स्त्री० भाड़। एक तरहका बड़ा चूल्हा। माँद, भठी।

भठियारा, भठिहारा—पु० सरायका प्रबन्धक।

भट्ठी—स्त्री० भट्ठी, माँद ( भू० २४ )।

भड़क—स्त्री० चमकदमक। भड़कनेका भाव, झिझक।

भड़कदार—वि० भड़कीला, चमकीला, रोबदार।

भड़कना—अक्रि० चमकना, बिचकना, प्रज्वलित या कुपित हो उठना।

भड़काना—सक्रि० बिचकाना, उत्तेजित करना, बहकाना। ...(किवाड़को) धक्का देना, खटखटाना (ग्राम०२९)।

भड़कीला—वि० चमकीला। भड़कनेवाला। चौंकनेवाला।

भड़भड़—स्त्री० भीड़भाड़के कारण उत्पन्न गड़बड़ी। चीज़ोंके बराबर गिरने टकराने आदिकी आवाज़।

भड़भड़िया—वि० बकबकिया, गप्पी। [ भड़भड़।

भड़भूजा—पु० भाड़में अन्न भूँजनेवाला, भुजवा।

भड़साँई—स्त्री० भड़भूँजेका भाड़।

भड़ार—पु० देखो 'भंडार'।

भड़ास—स्त्री० मनमें बैठा हुआ सोच।

भड़िहा—पु० चोर।

भड़िहाई—स्त्री० चोरी। क्रिवि० चोरोंकी तरह 'इतउत चितै चला भड़िहाई।' रामा० ३७९

भड़ुआ—पु० वेश्याका साथी।

भड़ेरिया—पु० एक जाति ( देखो 'भँड़ेरिया' )।

भड़ुर—पु० ब्राह्मणोंकी एक निम्न श्रेणी।

भणना—सक्रि० कहना, वर्णन करना।

भणित, भणिति—स्त्री० कथा, कही हुई बात, रचना।

भतवान—पु० विवाहके एक दिन पूर्वकी रीति-विशेष।

भतार—पु० भर्त्तार, पति ( भू० ९० )।

भतीजा—पु० भाईका लड़का।

भत्ता—पु० यात्रा इ० के कारण दिया गया दैनिक व्यय

भदंत—पु० बौद्ध संन्यासी। वि० पूजित।

भदेस, भदेसिल—वि० भद्दा, कुरूप 'विद्यमान ... मिथिलेसू। मोर कहब सब भाँति भदेसू।' रामा० ३४

भदौंह—वि० भाद्रपद मासमें होनेवाला।

भद्दा—वि० बदसूरत, कुरूप, भोंडा।

भद्र—वि० शिष्ट, साधु। पु० मङ्गल, हित। खञ्जन सिर, दाढ़ी आदिका मुण्डन। वह जिनका मुण्डन ... हो 'लीनो हृदय लगाय सूर प्रभु पूँछत भद्र भये . भाई।' सूरा० १८

भद्रता—स्त्री० शिष्टता, सौजन्य, भलमनसी।

भद्रा—स्त्री० गाय। दुर्गा। पक्षकी दूसरी, सातवीं बारहवीं तिथि। कृष्णभगिनी सुभद्रा। ... एक योग जिसमें शुभ कार्य वर्जित है। आकाशगंगा।

भद्रासन—पु० राजसिंहासन, योगका एक आसन [पृथ्वी।

भद्री—वि० भाग्यशाली।

भनक—स्त्री० अस्पष्ट ध्वनि, झनक 'नन्द भवन ... सुनी कंस कहि पठायो।' सूबे० २५८

भनकाना—अक्रि० आवाज़ करना, बोलना।

भनना—सक्रि० कहना 'सुरुचि लषन मनकी गति भनई।' रामा० ३१४ [ भुनभुनाना।

भनभनाना—अक्रि० 'भन भन' करना, गुञ्जार करना।

भनिति—स्त्री० कथन, कथा ( उदे० 'फुर' )। रचना।

भबका—पु० अर्क उतारने इ० का एक नलीदार घड़ा।

भबकी—स्त्री० घुड़की।

भब्भड़, भरभड़—स्त्री० भीड़भाड़, भड़भड़।

भभक—स्त्री० उबल उठने या प्रज्वलित हो उठनेकी क्रिया, उबाल।

भभकना—अक्रि० प्रज्वलित होना, भड़कना, उबलना।

भभकी—देखो 'भबकी'।

भभरना—अक्रि० डरना। दुविधामें पड़ना 'प्रमुदित गे अगवान बिलोकि बरातहिं। भभरे, बनइ न रहत, न बनइ परातहिं।' पा० मं० ३८, 'बालक भभरि भुलान फिरहिं घर हेरत।' पा० मं० ३८। हड़बड़ा जाना ( भू० २४ )।

भभूका—पु० ज्वाला, आग 'लूका भयो आसमान भूधर भभूका भयो।' गुलाब ३२१। वि० अंगारे जैसा लाल

'हस्ती घोड़ धाइ जो धूका । ताहि कीन्ह सो रुहिर भभूका ।' प० ३२१ । चिनगारी ( बीजक २०४ ) ।
भभूला—दे० 'भभूका' ( गुलाब २९० )
भभूत, भभूति—स्त्री० भस्म (साखी १२७, प० ६७) ।
भमीरी—स्त्री० झींगुर ( दे० 'भँभीरी' ), 'वरषा भयेतें जैय बोलत ममीरी स्वर . '—सुन्द० ३०
भयंकर—वि० भीषण, डरावना ।
भय—पु० डर । अक्रि० 'भया', हुआ 'अरुणगात अति प्रात पद्मिनी प्राणनाथ भय ।' राम० ८४
भयकर—वि० डरावना ।
भयद,-प्रद—वि० भय उत्पन्न करनेवाला, डरावना ।
भयभीत—वि० भयाक्रान्त, डरा हुआ ।
भयमोचन,-हारी—वि० भय दूर करनेवाला ।
भयान, भयानक—वि० डरावना ' ज्यों गृह बिना दीप भयान ।' सूबे० ४०३ 'वह भूमि भई भारी भयान ।' सुजा० २५
भयाना—अक्रि० डरना । सक्रि० डराना ।
भयारा—वि० भयानक 'दानव आयो दगाकरि जावली दीह भयारो महामद भाख्यो ।' भू० ३९
भयावन, भयावना, भयावह —वि० भयङ्कर ।
भरंत—स्त्री० भ्रान्ति, शङ्का, सन्देह ।
भर—पु० भार । पीनता । युद्ध । एक जाति । वि० सारा, पूर्ण क्रिवि०केवल 'सिर भर जाउँ उचित अस मोरा ।'
भरकना—अक्रि० देखो 'भड़क ।' । [ रामा० २९६
भरण—पु० पोषण, वेतन । भरणी नक्षत्र ।
भरणी—स्त्री० एक नक्षत्र । कड़वी तरोई ।
भरत—पु० एक मुनि । नाट्य शास्त्रका प्रमुख आचार्य । दुष्यन्त पुत्र, रामानुजका नाम ।
भरतकूप—पु० चित्रकूटका एक कूप-विशेष ।
भरतखंड,-वर्ष—पु० भारतवर्ष, हिन्दुस्थान ।
भरता—पु० आलू, भाँटा आदिको भूनकर बनायी हुई तरकारी, चोखा । पति । स्त्री० बोझयुक्त होना 'झुक जाती है मनकी डाली अपनी फल-भरताके डरसे' कामायनी ९८
भरतार—पु० पति,स्वामी (उदे० पतिवर्त',रामा० १९७)।
भरती—स्त्री० प्रविष्ट होने या भरे जानेकी क्रिया या भाव।
भरन—देखो 'भरण' ।
भरना—सक्रि० पूरा करना, चुकाना, ढालना । बिताना, सेजवाँ रोइ रोइ निसि भरसी ।' प० २३६ । काटना, सहना 'रूपव कौन अधिक सीततें जन्म वियोग भरे ।' सू० २ । पोतना । अक भरना, भेंटना अक्रि० किसी वस्तुसे पूर्ण होना, रिक्त न रहना, बराबर होना ।
भरनि—स्त्री० बाना, वेशभूषा ।
भरनी—स्त्री० एक नक्षत्र । भरण गान जिससे सर्प विष उतरता है । ढरकी । मयूरी 'गम कथा कलि-पन्नग भरनी ।' रामा० २३ । देखो 'भरनि' ।
भरपाई—क्रिवि० पूर्णतः ( सूबे० ४८ ) । स्त्री० पूरा पूरा वसूल होनेकी क्रिया । चुकता होनेकी रसीद ।
भरपूर—क्रिवि० पूर्णतः । वि० परिपूर्ण, मुँहामुँह ।
भरभराना—अक्रि० फूलना, रोमाञ्च होना, घबराना ।
भरभराहट—स्त्री० सूजन । घबराहट ।
भरभूँजा—पु० भड़भूँजा, भुजवा ।
भरभेंटा—पु० मुठभेड़ ।
भरम—पु० भ्रम, शङ्का, भेद । प्रतिष्ठा 'सम्पति भरम गँवाइकै बसे रहे कछु नाहिं । रहि० विनोद १५
भरमना—अक्रि० भटकना, घूमना, बहकना । 'तेली केर वृषभ ज्यों भरम्यो भजत न सारँगपानि ।' सू० ५२ । स्त्री० भ्रान्ति, गलती ।
भरमाना—सक्रि० भटकाना, बहकाना ( उदे० 'चतुरई')। अक्रि० चकित होना । भटकना ( उदे० 'छेमकरी' ) ।
भरमार—स्त्री० बाहुल्य । प्रचुरता । इफरात ।
भरराना—अक्रि० 'भरर' शब्द करके गिरना या टूटना ।
भरवाई—स्त्री० भरवानेकी क्रिया या भाव । भरवानेकी मजदूरी । बोझ उठानेकी टोकरी ।
भरसक—क्रिवि० यथाशक्ति, जहाँतक बन पड़े ।
भरसन, सना—स्त्री० भर्त्सना, डाँट ।
भरहरना, भरहराना—अक्रि० सहसा गिर पड़ना, टूट पड़ना ।
भरांति—स्त्री० भ्रान्ति, शङ्का ।
भराई—स्त्री० भरनेकी क्रिया या मज़दूरी ।
भराव—पु० भरनेकी क्रिया या भाव, कशीदेकी पत्तियोंके बीचकी जगहको सूत इ० से भरना ।
भरित—वि० पूर्ण भरा हुआ ।
भरी—स्त्री० रुपयेके बराबर तौल ।
भरु—पु० भार, बोझ ( भू० ५० ) ।
भरुआ—पु० भड़ुआ। वेश्याका साथी । एकतरहका कपड़ा ।
भरुआना—अक्रि० भारी होना ।

भरुहाना—सक्रि० भ्रममें डालना 'तुमको नन्दमहर भरुहाए।' सूबे० १३७। बढ़ावा देना (दोहा० १४०)। अक्रि० गर्व करना।

भरुही—स्त्री० एक पक्षी। सरकण्डेकी तरहकी एक पतली लकड़ी जिसकी कलम बनती है।

भरैत—पु० किरायेदार।

भरैया—पु० भरनेवाला। पोषक। ['जड़ता','टाँड़ा')।

भरोस, भरोसा—पु० आशा, सहारा, विश्वास (उदे०

भर्ग—पु० शङ्कर (राम० १५२) दीप्ति, ज्योति।

भर्त्ता, भर्त्तार—दे० 'भरता', 'भरतार'।

भर्त्सन,-भर्त्सना—स्त्री० झिड़की, फटकार, निन्दा।

भर्म—पु० देखो 'भरम'।

भर्रा—पु० दम-पट्टी।

भर्राना—अक्रि० 'भर्र भर्र' आवाज निकलना।

भर्सन—स्त्री० भर्त्सना, निन्दा।

भल—वि० भला, उत्तम, सुन्दर, (उदे० 'आचरना')।

भलका, भालका—स्त्री० गाँसी (साखी ८, २६)।

भलपति—पु० भाला धारण करनेवाला।

भलमनसाहत, भलमनसी—स्त्री० सुशीलता, सौजन्य।

भला—वि० देखो 'भल'। पु० हित, लाभ। अ० खैर।

भलाई—स्त्री० हित, नेकी, अच्छापन। [सही,जरा।

भलेरा—पु० भला, हित, लाभ।

भल्ल—पु० वध, दान, भाला, बरछा। भालू।

भल्लनाथ, भल्लपति—पु० जाम्बवन्त।

भल्लूक—पु० भालू।

भवंग, भवंगा—पु० सर्प, (कबीर १४१)।

भवंगम—पु० सर्प 'संसार भवंगम डसिले काया।' कबीर ११४। [सब पानी।' प० १९२।

भवँना—अक्रि० देखो 'भँवना'। 'बोहित भवँहि, भँवै

भवँर—पु० देखो 'भँवर'।

भव—पु० संसार, जन्म। शिवजी 'भवहिं समरपी जानि भवानी।' रामा० ६१। प्राप्ति, डर।

भवदीय—वि० आपका। तुम्हारा।

भवन—पु० घर। संसार। जन्म।

भवना—देखो 'भँवना'।'

भवनी—स्त्री० गृहिणी, घरनी, स्त्री (गीता० ३०३)।

भवभय—पु० संसारमें आवागमनका भय।

भवभामिनी—स्त्री० पार्वतीजी।

भवभूति—स्त्री० सृष्टि (कविप्रि० २३७)।

भवभूष, भवभूषण—पु० सृष्टिका भूषण, भूषण, राख (राम० ९४)।

भवविलास—पु० संसारके सुख। माया।

भवाँ—पु० चक्कर, फेरी।

भवाँना—सक्रि० घुमाना।

भवा, भवानी—स्त्री० पार्वती, दुर्गा।

भवितव्य—वि० जो होनेवाला हो। पु० अवश्य होनेवाली

भवितव्यता—स्त्री० होनहार, भाग्य। [बात,भावी।

भविष, भविष्य—पु० आनेवाला समय।

भविष्यत्—पु० आनेवाला समय। [बतला देनेवाला।

भविष्यद्वक्ता—पु० आगे होनेवाली बात पहले ही

भविष्यद्वाणी—स्त्री० भविष्यमें होनेवाली बातके

भवीला—वि० भावपूर्ण। [सम्बन्धमें पूर्व-कथन।

भवेश—पु० शिवजी।

भव्य—वि० शुभ, सुन्दर, श्रेष्ठ, शानदार।

भष,भषना—देखो 'भख', 'भखना'।

भसना—अक्रि० तैरना, गिरना, डूबना।

भसमंत—वि० भस्म, जला हुआ (प० ९५, १६८)।

भसान—पु०दुर्गा आदिकी मूर्त्तिको नदीमें प्रवाहित करने-

भसाना—सक्रि० बहाना, डुबाना। [की क्रिया।

भसिंड, भसींड—पु० मुरार, कमलनाल।

भसुंड—पु० हाथी।

भसुर—पु० पतिका बड़ा भाई।

भस्म—स्त्री० राख, भभूत। वि० दग्ध।

भस्मीकृत—वि० भस्म किया हुआ।

भस्मीभूत—वि० भस्मके रूपमें परिणत, बिलकुल जला*

भस्सड़—वि० मोटा, बेडौल (आदमी)। [* हुआ।

भहराना—अक्रि० देखो 'भरहराना','तब दोउ धरनि परे भहराइ।' सूबे० ७०,(उदे० 'अभिरना' 'झरझराना')।

भाँउँ—पु० भाव, मतलब।

भाँउर, भाँउरि—स्त्री० परिक्रमा, चक्कर।

भाँग—स्त्री०— विजया, बूटी।

भाँज—स्त्री० मोड़ने, घुमाने, तह करने इ० की क्रिया या भाव। भुनाई।—देना = बहकाना, रुकावट डालना 'लेतदेत भाँज देत ऐसे निबहत हैं।'गुलाब४२५

भाँजना—सक्रि० तह करना, बटना, घुमाना 'भाँजहि पूँछ चँवर जनु ढारहिं।' प० २५२। भंजन करना,

नष्ट करना 'एक साजै औ भाँजै चहै सँवारै फेर ।' प०२

भाँजी—स्त्री० बहकाने या बाधा डालनेके इरादेसे कुछ कहना, चुगली ।'—मारना = बाधा डालना ।

भाँटा—पु० भंटा, बैंगन ।

भाँड़—पु० मसखरा, नकल उतारनेवाला, निर्लज्ज व्यक्ति। वर्त्तन । गड़बड़ी । भंडाफोड़ 'इहाँ कपटकर होइहि भाँड़ू । रामा० ३०३ । हँसी ( सुन्द० ९१ ) ।

भाँड़ना—अक्रि० भटकना । सक्रि० बिगाड़ना, निन्दा करना । घूम घूमकर देखना 'सहित समाज गढ़ राँड़ के सो भाँड़िगो ।' कविता० १९२

भाँड़ा—पु० वर्त्तन । भाँड़े भरना = पछताना, फूट फूट-कर रोना ।

भांडागार—पु० भंडार, कोश ।

भांडार-पु० अन्नादि सामग्री रखनेका स्थान, कोश, खजाना।

भांडारी—पु० कोठारी ।

भाँड्यो—पु० भाँड़पन ।

भाँत, भाँति—स्त्री० प्रकार, रीति । मर्यादा ।

भाँपना—सक्रि० ताड़ना, देखना ।

भाँपू—वि० जल्द ताड़ जानेवाला ।

भाँवना—सक्रि० ( खराद आदिपर ) घुमाना ।

भाँवर, भाँवरी—स्त्री० घुमरी, परिक्रमा 'तब मण्डल भरि भाँवर दीन्ही ।' सूबे० २१० (उदे० 'कुँअर', 'गोहन') —भरना = चक्कर लगाना; परिक्रमा करना 'भौंर भाँवरे भरत हैं कोकिल कुल मँडरात ।' मति० २०१

भाँवरा—पु० परिक्रमा ( उदे० 'वर' ) ।

भाँस—स्त्री० आवाज ( बु० वै० ८० ) ।

भा—स्त्री० चमक, शोभा, विद्युत् । अ० चाहे, वा ।

भाइ—पु० भाव, प्रेम, विचार । स्त्री० प्रकार, रीति ।

भाइप—पु० भ्रातृत्व ।

भाई—पु० भ्राता, बन्धु, साथी ।

भाईचारा-पु० भाई जैसा सम्बन्ध, परम मित्र होनेका भाव ।

भाईबंद—पु० भाई तथा बन्धुवर्ग, सम्बन्धी तथा बिरादरीके लोग ।

भाउ—पु० भाव, प्रेम । विचार । जन्म अभुआनेकी क्रिया, आवेश ।

भाऊ—पु० भाव, प्रेम, स्वभाव, विचार, स्वरूप, प्रभाव, महिमा । [ प्रि० २९१

भाकसी—स्त्री० भट्ठी 'भाकसीसे भये भौन सभागे । कवि

भाकुर—स्त्री० एक मछली (प० २६९) ।

भाखना—सक्रि० बोलना, कहना ( सू० १६ ), 'सत्य कहौं कछु झूठ न भाखौं ।' राम० ४४२

भाखा—स्त्री० भाषा, बोली । हिन्दी भाषा ।

भाग—पु० अंश, हिस्सा । भाग्य, ललाट । सबेरा । पार्श्व, बगल ।

भागड़—स्त्री० भगदड़, जल्दी ( गबन १८ ) ।

भागधेय—पु० भाग्य । राजाको देय कर । सपिण्ड ।

भागना—अक्रि० पलायन करना, हट जाना ।

भागफल—पु० किसी एक संख्यामें दूसरी संख्याका भाग देनेसे जो उत्तर आवे, वह । लब्धि ।

भागवंत, भागवान—वि० अच्छी किस्मतवाला ।

भागवत—वि० भगवत् सम्बन्धी । पु० भगवान्‌का भक्त। श्रीमद्भागवत नामक ग्रन्थ ।

भागिनेय—पु० भगिनी-पुत्र, भानजा ।

भागी—पु० साझीदार, अधिकारी ।

भागीरथी—स्त्री० गङ्गा नदी ।

भाग्य—पु० प्रारब्ध, किस्मत ।

भाग्यवान्,-शाली—वि० अच्छी क़िस्मतवाला ।

भाजक—पु० भाग देनेवाला ।

भाजन—पु० पात्र, बर्त्तन, आधार ।

भाजना—अक्रि० भागना 'चला भाजि वायस भय पावा ।' रामा० ३५८

भाजी—स्त्री० साग, तरकारी ।

भाज्य—पु० वह अङ्क जिसमें भाग दिया जाय ।

भाट—पु० एक जाति । बन्दी, चारण । स्त्री० नदी-तट । उतार ।

भाटक—पु० किराया, भाड़ा ।

भाटा—पु० समुद्रके पानीका उतार ।

भाट्यौ—पु० भाटका कार्य, स्तुतिपाठ ।

भाठी—स्त्री० भाटा । भट्ठी ( कबीर २७६ ) ।

भाड़—पु० भड़भूँजेका चूल्हा ।—झोंकना = समय खोना, तुच्छ कार्य करना ( उदे० 'झोंकना' ) ।

भाड़ा—पु० महसूल, किराया ।

भाण—पु० रूपकका एक भेद ।

भात—पु० ओदन, पका हुआ चावल । प्रभात ।

भाति—स्त्री० छवि, शोभा ।

भाथा—पु० तूणीर 'जब लगि उर न बसत रघुनाथा । धरे चाप सायक कटि भाथा ।' रामा० ४३८

भाथी—स्त्री० चमड़ेकी धौंकनी ।

भादों, भाद्र, भाद्रपद—पु० श्रावणके बादका महीना।

भान—पु० भानु, सूर्य । आभास, सुधि लियो अङ्ग गुरु रह्यो न भाना ।' रघु० २६८ । दीप्ति, प्रकाश ।

भानजा—पु० बहिनका लड़का ।

भानना—सक्रि० खण्डित करना 'सरिता चलै मिलन सागरको कूल मूल द्रुम भानै ।' अ० १५,'अजहूँ सिय सौंपि नतरु बीस भुजा भाने ।' सूरा० ४५ । नष्ट करना, दूर करना 'विपति जनकी भानबेको तुम विना कहु कवन'।—भगवत रसिक, 'मोसों मिलवति चातुरी तू नहिं भानति भेउ ।' वि० २०८

भानमती—स्त्री० जादूका खेल करनेवाली नटी ।

भानवी—स्त्री० यमुना ।

भाना—अक्रि० अच्छा लगना, सोहना । भासित होना । सक्रि० खरादपर चढ़ाना (उदे० 'कुंद') ।

भानु—पु० सूर्य । अकवन । किरण । स्वामी ।

भानुज—पु० यम । शनि । कर्ण । सुग्रीव ।

भानुजा, भानुतनूजा—स्त्री० यमुना ।

भानुमती—स्त्री० विक्रमादित्यकी रानी जो इन्द्रजाल-विद्यामें निपुण थी । दुर्योधन-पत्नी । जादूगरनी ।

भानुसुता—स्त्री० यमुना ।

भाप, भाफ—स्त्री० वाष्प, सूक्ष्म जलकणयुक्त धुआँ ।

भाभरा—वि० लाल रंगका ।

भाभी—स्त्री० भौजाई, भावज ।

भाम—स्त्री० भामिनी, स्त्री 'हैरी, वैरी लाजकी, धीर भगा वन भाम ।' नागरी० । पु० क्रोध । रोशनी । बहनोई ।

भामक—पु० बहनोई ।

भामता—पु० 'भावता', प्रियतम (नव० १४) ।

भामा, भामिन, भामिनी—स्त्री० स्त्री, भार्या ।

भाय—पु० भाव, प्रेम, इच्छा । दर । भाँति । भाई ।

भायप—वि० भ्रातृभाव ।

भाया—वि० प्रिय, जो अच्छा लगे ।

भारंगी—स्त्री० एक पौधा ।

भार—पु० वजन, बोझ (उदे० 'ढोब')। दायित्व, रक्षा, आश्रय । भाड़ (रहीम २९) ।

भारत—पु० भारतवर्ष, भरतका वंशज,महाभारत, अर्जुन, तुमुल युद्ध 'घरी एक भारत भा भा असवारन्ह मेल ।' प० ३२० ।

भारतखंड,-वर्ष—पु० हिन्दुस्थान, आर्यावर्त्त ।

भारति, भारती—स्त्री० सरस्वती, वाणी । भारतकी (देवी), भारतमाता 'भारति, जय, विजय करे । कनक शस्य-कमलधरे !' गीतिका ७१ ।

भारतीय—वि० भारतका, भारत सम्बन्धी । पु० भारत निवासी, भारत सन्तान ।

भारथ—पु० देखो 'भारत' (भू० १२) ।

भारथी—पु० वीर, सैनिक ।

भारदंड—पु० देखो 'भारयष्टि' ।

भारधरण—वि० भार धारण करनेवाला ।

भारना—सक्रि० भार लादना, भारसे परिपूर्ण करना, दबाव डालना । 'भारके उतारिबेको अवतरे रामचन्द्र किधौं केशोदास भूमि भारत प्रबल दल ।' राम० ३७०

भारभारी,-भृत—वि० भार वहन करनेवाला, बोझ ढोनेवाला ।

भारयष्टि—स्त्री० भार उठानेका डण्डा, बहँगी ।

भारवाह, भारवाहक,-वाहिक—पु० मजदूर । वि० [ भार ढोनेवाला ।

भारवाही—वि० भार ढोनेवाला ।

भारा—वि० विशाल, कराल, गुरु, अधिक 'सीतहिं दैकै रिपुहिं सँहारौ । मोहति है विक्रम बल भारो ।' राम० ४७२ । असह्य । पु० भाड़ा ।

भारी—वि० वजनदार, गुरु, विशाल, विस्तृत, प्रबल, अधिक । —भरकम = बहुत बड़ा ( ज्यो० ९६ ) । बड़े डीलडौलका ।

भार्गव—पु० भृगुसन्तान, परशुराम,शुक्राचार्य,मार्कण्डेय ।

भार्गवेश—पु० परशुराम ।

भार्या—स्त्री० पत्नी, स्त्री, सहधर्मिणी ।

भाल—पु० ललाट । भालू । भाला, गाँसी । वि० अच्छा [(उदे०'झाड़ना')

भालचन्द्र—पु० शिवजी । गणेशजी ।

भालदर्शन—पु० सिन्दूर ।

भालनयन,-नेत्र,-लोचन—पु० शिवजी ।

भालांक—पु० शिवजी । एक अस्त्र । भाग्यवान व्यक्ति । [ एक साग ।

भाला—पु० बरछा ।

भालाबरदार—पु० भाला धारण करनेवाला, बरछैत ।

भालि—स्त्री० बरछी, कोई नुकीली वस्तु । [ †फाँस ।

भाली—स्त्री० बरछी या बरछी इत्यादिकी नोक । कटारी ।†

भालु, भालुक, भालू—पु० रीछ ।

भावंता—पु० भाग्य, होनहार । प्रेमी, प्रीतम, 'कैसे मन धन लूटते भावन्ताके नैन ।' रतन० २६, (७४) ।

भाव—पु० विचार, अभिप्राय, प्रवृत्ति, चेष्टा, क्रिया, मनोविकार, जन्म, संसार, स्नेह, स्वभाव, आदर, विश्वास, श्रद्धा, अस्तित्व, दर ।

भावइ—अ० चाहो तो, इच्छा हो तो, चाहे।

भावक—पु० भावना करनेवाला, प्रेमी ( रतन० ३ )। वि० भावपूर्ण। उत्पन्न करनेवाला। क्रिवि० तनिक, थोड़ासा। 'भावकु उभरौहौं भयौ कछुक पर्यौ भरु-[आइ।' बि० १०५

भाववृत्ति—स्त्री० विचार, इरादा।

भावगम्य—वि० जो भक्तिभावसे जाना जा सके।

भावज—स्त्री० भ्रातृ-पत्नी, भौजाई। वि०भावसे उत्पन्न।

भावता—पु० प्रियतम ( भावती = प्रियतमा ), 'आवत सुनो है मन भावनको भावतीने आँखिन अनंद आँसू ढरकि-ढरकि उठै।' देव। वि० जो अच्छा लगे, अभिलषित 'सुनि परम भावती भरत बात।' के० ९

भावन—वि० भानेवाला, अच्छा लगनेवाला, भाव बढ़ानेवाला।

भावना—अक्रि० अच्छा लगना 'मुरली तऊ गुपालहिं भावति।' सू० ९३, 'अति पतिके मन भावै।' राम० २१। स्त्री० इच्छा, विचार, चिन्ता। [भावुकता।

भावप्रवणता—स्त्री० भावोंकी ओर झुकनेका भाव,

भावभक्ति—स्त्री० भक्तिभाव,सम्मान,सत्कार। [आना।

भावशबलता—स्त्री० एकके बाद अन्य भावोंका क्रमश.

भावस्थ—वि० भावमें लीन।

भावात्मक—वि० भावपूर्ण।

भावार्थ—पु० आशय, तात्पर्य। वह अनुवाद इ० जिसमें मूलका केवल भाव आ जाय।

भाविक—पु० एक काव्यालंकार 'बात भूतभावी जहाँ बरनत जिमि परतच्छ।' वि० मर्मज्ञ, जाननेवाला।

भावित—वि० सोचा हुआ। शुद्ध। उत्पादित, प्राप्त। प्रदर्शित। पु० देखो 'भाविक'।

भाविनी—स्त्री० रूपवती या सदाचारिणी स्त्री।

भावी—स्त्री० आनेवाला समय। होनहार 'जो रहीम भावी कहूँ होत आपने हाथ।' रहीम। वि० होनेवाला। [भावनापूर्ण। सोचनेवाला।

भावुक—पु० कल्याण, मंगल। साधु व्यक्ति। वि०

भावुकता—स्त्री० भावनापूर्ण होनेका भाव।

भावै—अ० चाहे, इच्छा हो तो।

भाव्य—वि० भावनीय, चिन्तनीय। भवितव्य।

भाष—पु० भाषा, वाणी, बात 'जगमग जीवनका आन्त्य भाष—'तुलसीदास ५२

भाषण—पु० व्याख्यान। कथन।

भाषना—सक्रि० बात करना, कहना 'यह सब रुचिर चरित मैं भाषा।' रामा० १०५

भाषांतर—पु० तरजुमा, अनुवाद।

भाषा—स्त्री० ज़बान, बोली, हिन्दी भाषा, वाणी, कथा।

भाषित—वि० कहा हुआ।

भाषी—वि० बोलनेवाला, कहनेवाला, सूचना देनेवाला 'प्रिय आगम भाषी भलो वायस पिक केहि काम।'

भाष्य—पु० (सूत्रोंकी) व्याख्या, टीका।

भाष्यकार—पु० भाष्यकी रचना करनेवाला।

भास—पु० भासनेकी क्रिया, प्रतीति, आभास 'दूर करो भ्रम-भास' अणिमा ४३। संस्कृतके प्राचीन और प्रसिद्ध नाटककार।

भासना—अक्रि० प्रतीत होना, ज्ञात होना ( उदे० 'आभोग' )। प्रकाशित होना। फँसना, डूबना 'यह मत दै गोपिन कहँ आवहु विरह नदीमें भासति।' भ्र० ३, ( उदे० 'नरि' )। घुल जाना (विद्या० ५५) सक्रि० भाषना, कहना। [ ( भू० २७ )।

भासमान—वि० भासता हुआ, प्रकाशमान। पु० सूर्य

भासित—वि० प्रकाशित।

भासुर—वि० चमकीला।

भास्कर—पु० सूर्य, अग्नि, सोना, शिव, इ०।

भास्कर्य—पु० पत्थरपर चित्रादि बनानेकी कला।

भास्वर—वि० चमकीला। पु० सूर्य। दिन।

भिंग—पु० भृंग, भौंरा। बिलनी नामक कीड़ा (प०८५)

भिंगाना, भिंजाना—सक्रि० तर करना।

भिंडिपाल, भिंदिपाल—पु० एक अस्त्र, छोटा डण्डा 'चले निसाचर आयसु माँगी। गहि कर भिंडिपाल बर साँगी।' रामा०४७२

भिंडी—स्त्री०एक तरकारी।

भिसार—पु० भिनसार, सवेरा।

भिआ—दे० 'भिया'।

भिक्षा—स्त्री० भीख, याचना।

भिक्षु—पु० भिखारी, संन्यासी।

भिक्षुक—पु० भिखारी।

भिखमंगा, भिखारी—पु० भीख माँगनेवाला।

भिखारिणी, भिखारिन—स्त्री० भिक्षा माँगनेवाली स्त्री।

भिखिया—स्त्री० भिक्षा 'रूप नगर मे नैन, निसदिन फेरी देत है। मोहन मूरत मैन, दरसन भिखियाके लिए।' रतन० २७

भिगाना, भिगोना—सक्रि० गीला करना, तर करना ।
भिच्छा, भिच्छुक—दे० 'भिक्षा', 'भिक्षुक' ।
भिजवना—सक्रि० तर करना । [ कराना ।
भिजवाना—सक्रि० किसीसे भेजनेका काम कराना । तर
भिजाना, भिजोना—सक्रि० तर करना (उदे०'चीथरा')
भिटनी—स्त्री० स्तनका अग्रभाग ।
भिड़—स्त्री० वर्रे, ततैया ।
भिड़ना—अक्रि० झगड़ना, टक्कर खाना, लड़ना ( उदे० 'तर्जना' ) लग जाना, सटना ।
भितल्ला—पु० भीतरी पल्ला, अस्तर (उदे० 'उपल्ला') ।
भिताना—अक्रि० भयभीत होना (कविता० २२७) ।
भित्ति—स्त्री० दीवार । चित्राधार । डर ।
भिद—पु० भेद, फर्क ।
भिदना—अक्रि० मिल जाना, घुसना, विद्ध होना । 'मैन बलित नव बसन सुदेश । भिदत नहीं जल ज्यों उप- [ देश ।' के० ४८
भिदुर—पु० वज्र ।
भिनकना—अक्रि० भिनभिनाना, (मक्खियोंका) बैठना । घिनियाना ।
भिनभिनाना—अक्रि० 'भिनभिन' आवाज करना ।
भिनसार, भिनुसार—पु० प्रातःकाल (उदे०'गुदारा') ।
भिनही—क्रिवि० सवेरे ।
भिन्न—वि० पृथक् । दूसरा ।
भिन्नता—स्त्री० भेद, पार्थक्य, अन्तर ।
भिन्नाना—अक्रि० दर्द करना । 'बदबूके मारे सिर भिन्ना उठा' निबंध १-२३ ।
भिमसेनी कपूर—पु० एक तरहका कपूर ।
भियना—अक्रि० भयभीत होना, डरना ।
भिया—पु० भैया,भाई 'मो पर कीबी तोहि जो करि लेहि भियारे ।' विन० १२० [ कीट भिरंग ।' साखी ९७
भिरंग—पु० देखो 'भृंग', 'सुमिरनसे मन लाइये जैसे
भिरना—देखो 'भिड़ना', (उदे० 'अभिरना', 'चौंदना') ।
भिर्रिंग—पु० भौंरा । बिलनी नामक कीड़ा ।
भिलनी—स्त्री० एक कपड़ा । भीलनी ।
भिलवाँ—पु० एक वृक्ष या उसका फल ।
भिल्ल—पु० भील नामक जंगली जाति ।
भिश्त, भिसत, भिस्त—स्त्री० बिहिश्त, स्वर्ग ( उदे० 'बाझ', छत० ८२, कबीर १७४, ३२४ ) ।
भिश्ती—पु० मशकमें भरकर पानी ढोनेवाला मनुष्य ।
भिषक, भिषज—पु० वैद्य ।
भिष्टा, भिसटा—पु० मल, मैला, पुरीष ।
भींगना—अक्रि० गीला होना ।
भींगी—पु० देखो 'भिर्रिंग' ।
भींचना—सक्रि० खींचना ( रत्ना० ५०८ ) ।
भींजना—अक्रि० गीला होना, स्नान करना,गद्गद होना ।
भी—स्त्री० डर । अ० एक संयोजक शब्द ।
भीउँ—पु० भीमसेन ।
भीक, भीख—स्त्री० भिक्षा ( मति० २४१ ) ।
भीखन—वि० भीषण । विकराल ( उदे० 'झाँवर' ) । डरावना । [ ‡पितामह ।
भीखम—वि०भीषण, प्रचण्ड (उदे०'आस')। पु०भीष्म‡
भीगना,भीजना—अक्रि० गीला होना, आर्द्र होना, 'भीजत ग्वाल गाइ गोसुत सब ।' सू० ९८, ( उदे० 'तचना' ) ।
भीटा—पु० ऊँची उठी हुई भूमि, ढूह, टीला । खँड़हर ।
भीड़—स्त्री० जन-समूह, जमघट । संकट ।
भीड़ना—सक्रि० भिड़ाना, मिलाना । मींडना,मसलना ।
भीड़भड़क्का, पु०भीड़भाड़—स्त्री० आदमियोंका जमघट, भीड़के कारण धक्कमधक्का होना ।
भीड़ा—वि० तंग, संकीर्ण ।
भीड़ी—स्त्री० भिंडी नामक तरकारी । भीड़ ।
भीत—वि० डरा हुआ । स्त्री० दीवार, गच । डर ।
भीतर—क्रिवि० अन्दर ।
भीतरिया—पु०मन्दिरमें मूर्तिके पास रहनेवाला पुजारी ।
भीतरी—वि० अन्दरका, गुप्त ।
भीति,भीती—स्त्री० डर । भित्ति, दीवार ।
भीतिकर,-कारी—वि० भयङ्कर, डरावना (अष्ट०३३) ।
भीनना—अक्रि० आर्द्र होना, भर जाना 'यह बात कही जलसों गल भीनों ।' राम० २२९
भीनी—वि० स्त्री० मीठी, हलकी (खुशबू) (प्रिय०६०) ।
भीम—वि० भयानक, विकराल, विशाल । पु० अर्जुनके भाई । भीमके हाथी = न लौटनेवाली वस्तु ।
भीर—स्त्री० जमघट, जमाव ( उदे० 'बयना' ) । राशि ( दास २७ ) । आधिक्य 'उर न समात प्रेमकी भीर ।' गीता० ३०१ । विपत्ति 'रहिमन सोई मीत है भीर परे ठहराय ।' रहीम १८ । वि० भीरु, कायर, डरा हुआ ।

भीरना—अक्रि० डरना, भयाक्रान्त होना ।
भीरु, भीरू—वि० कायर, डरपोक ।
भीरुता, भीरुताई—स्त्री० कायरता, भय, भीति ।
भीरे—क्रिवि० पास, निकट ।
भील—पु० एक जङ्गली जाति ।
भीव—पु० अर्जुनके भाई भीम ।
भीष—स्त्री० भीख, भिक्षा ।
भीषज—पु० वैद्य ।
भीषण, भीषन—वि० भयानक, घोर ।
भीषणता—स्त्री०,-त्व—भयङ्करता, उग्रता ।
भीषम,भीष्म,भीसम—वि०भयानक । पु०शान्तनु-पुत्र ।
भीष्मप्रसू—स्त्री० गंगा ।
भुँइ—स्त्री० धरती, भूमि । [ जगह ।
भुँइहरा—पु० तहखाना । ज़मीन खोदकर बनायी हुई
भुँजना—अक्रि० भुनना, किञ्चित् जल जाना ।
भुंजन—पु० पालन, भोजनकी क्रिया 'तरुण तरुणियोंमें शतविध जीवन-व्रत भुंजन' अणिमा० २७
भुंजना—सक्रि० भूनना, जलाना 'पवन पानि घनसार सजीवनि दधिसुत किरन भानु भईं भुंजैं ।' भ्र० ३६
भुंजरियाँ—स्त्री० जरई ( बु० वै० ७९ ) ।
भुंडा—वि० बिना सींगका । दुष्ट, बदमाश 'खसम परयो जोरूके पीछे, कह्यो न माने भुंडी राँड ।' सुन्द० ९१
भुअंग, भुअंगम—पु० नाग, सर्प मानहु सरोष भुअग भामिनि विषम भाँति निहारई ।' रामा० २११, ( उदे० 'काँचुरी', 'डासना' ) ।
भुअ—स्त्री० भ्रू , भौंह 'नैन मीन भुवंगिनी भुअ, नासिका थल बीच ।' सू० १२४ । पृथ्वी 'चरन चिन्ह दंडक भुअमडन ।'सू०१००
भुअन—पु० लोक,जगत् । [
भुअना—अक्रि० भूलना, बहक जाना 'सुआ भुआ सेवँरकै आसा ।' प० ४०
भुआ—पु० देखो 'भूआ' । [
भुआर, भुआल-पु० भूपाल, राजा'अवध भुआरअगारमें, लखिकुमार अवतार ।' रघु० ३०, 'सकुचे सकल भुआल जनु विलोकि रवि कुमुदगन ।' रामा० १४४
भुई—स्त्री० धरती, भूमि ( उदे० 'उदरना' ) ।
भुईकंप,-चाल,-डोल—पु० भूकम्प (प० २५०,२४५) ।
भुक—पु० भोजन । हुताशन, अग्नि ।
भुकड़ी—स्त्री० एक तरहकी वनस्पति जो सड़े हुए पदार्थोंपर पैदा हो जाती है ।

भुकराँद,-रायँध—स्त्री० सड़नेकी दुर्गन्ध ।
भुकाना—सक्रि० बकवाद कराना 'सूरदास प्रभु अलि अनुरागी काहेको और भुकावत ।' भ्र० १०१
भुक्कड़,भुक्खड़—वि० भूखा रहनेवाला, निर्धन । पेट, लालची ।
भुक्त—वि०भोगा हुआ,जो खाया गया हो । [
भुक्तभोगी—वि० जिसे दु खादिका अनुभव हो, जो कभी किसी बलामें फँसा हो ।
भुक्ति—स्त्री० भोग, भोजन, लौकिक सुख ।
भुखमरा—वि० जो भूखों मरता हो, भुक्खड़ ।
भुखाना—अक्रि० भूखा होना ।
भुखालू—वि०भूखा, जिसे भूख लगी हो ।
भुगतना—सक्रि० भोगना, सहना । अक्रि० व्यतीत होना, समाप्त होना ।
भुगतान—पु० देन चुकानेका कार्य, निबटारा ।
भुगताना—सक्रि० भोगवाना, सहाना । पूरा करना, बिताना, समाप्त करना, चुकाना ।
भुगुत—देखो 'भुक्ति' । बसात, शक्ति 'इस जमानेमें ५०) की भुगुत ही क्या' गबन ६
भुगुति—स्त्री० विषयोपभोग । भोजन 'चला भुगुति माँगे कहँ साधि कथा तप जोग ।' प० ५७, (प० २)
भुच्च, भुच्चड़—वि० भोंदू, बेवकूफ ( रत्नावली ८२ ) ।
भुजंग—पु० सर्प ।
भुजंगप्रयात—पु० एक छन्द ।
भुजंगभुक्,-भोजी—पु० गरुड़ या मयूर ।
भुजंगम—पु० साँप । एक तारा ।
भुजंगा—पु० एक पक्षी, 'भुजैल' । साँप ।
भुजंगिनी—स्त्री० नागिन ।
भुजंगेश—पु० वासुकि, शेष ।
भुज—पु० भुजा ( उदे० 'ठठकना' ), बाहु, हाथ ।
भुजइल—पु० भुजंगा पक्षी 'तू भुजइल, हौं हंसिनि * भोरी ।' प० २१५
भुजग—पु० सर्प । [ *
भुजगेंद्र—पु० देखो 'भुजंगेश' ।
भुजदंड—पु० (डंडे जैसी) लम्बी भुजाएँ (उदे० 'अवछंग') ।
भुजपात—पु० भोजपत्र ( कविप्रि० ५४ ) ।
भुजपाश—पु० आलिङ्गन करनेके उद्देश्यसे भुजाओंको फैलाकर बनाया हुआ घेरा । गलबाहीं ।
भुजबंद, भुजबंध—पु० बाजूबन्द, केयूर ।
भुजबाथ—पु० आलिङ्गन करनेकी मुद्रा, अँकवार 'इग

मिहचत मृगलोचनी, भर्यौ उलटि भुजबाथ।' बि० ८५
भुजमूल—पु० पक्खा, काँखके ऊपरका हिस्सा।
भुजवा—पु० भड़भूँजा।
भुजांतर—पु० गोद, छाती।
भुजा—स्त्री० बाहु, हाथ।
भुजाली—स्त्री० छोटीसी बरछी, टेढ़ी छुरी, खुखरी।
भुजिया—पु० उसने हुए धानका चावल। सूखी तरकारी
भुजैना—पु० चबैना। [जो भूनकर बनायी गयी हो।
भुजैल—पु० देखो 'भुजइल'।
भुजौना—पु० चबैना। भुनाई।
भुट्टा—पु० मक्केकी बाल। गुच्छा।
भुठौर—पु० घोड़ोंका एक भेद।
भुनगा—पु० उड़नेवाला छोटा कीड़ा, फतिङ्गा।
भुनना—अक्रि० सिंक जाना, भूना जाना। छोटे सिक्कोंमें परिणत होना।
भुनभुनाना—अक्रि० 'भुनभुन' करना, बड़बड़ाना।
भुनवाई, भुनाई—स्त्री० भुनवानेकी क्रिया या मज़दूरी।
भुनाना—सक्रि० भूननेका कार्य कराना। (रुपया इ०) * [* तुड़ाना।
भुवि—स्त्री० धरती।
भुमिया—पु० जमींदार (छत्र ९०)। देखो 'भूमिया'।
भुरकना—सक्रि० बुरकना, सूखी वस्तु छिड़कना (उदे० 'बन्दन'। अक्रि० भूलना, बहक जाना। [हुई वस्तु।
भुरकस, भुरकुस—पु० चूरा, चूर्ण, बुरी तरह कुचली
भुरका—पु० बुकनी। एक तरहकी दावात, बोरका।
भुरकाना—सक्रि० बहकाना। भुरभुराना। [कुल्हड़।
भुरकुन—पु० चूरा, चूर्ण।
भुरता—पु० भरता, चोखा। कुचली हुई वस्तु।
भुरभुरा—वि० सूखा और चूर्ण रूपमें।
भुरभुराना—सक्रि० चूर्ण रूप वस्तु छिड़कना, भुरकना।
भुरवना—सक्रि० देखो 'भुराना'।
भुरसना—अक्रि० झुलसना।
भुरहरी बेर—स्त्री० प्रातःकाल (ब्रज० ३६०)।
भुराई—स्त्री० भोलापन, सादगी(उदे०'भुराना',अ०७५)।
भुराना, भुरावना—सक्रि० भुलावेमें डालना,बहकाना। भूल जाना 'सोचन लागी भुराईकी बातनि सौतिनि सोच भुरावन लागीं।' ललित० ६२। अक्रि० भुलावे में आना (रत्ना० ३८८) भूलना,विस्मृत होना (रत्ना० ५७८)
भुर्रा—वि० बहुत काला।

भुलक्कड़—पु० वह जो भूल जाता हो। भूलनेवाला।
भुलना—पु० वह जो भूल जाता हो, भुलक्कड़।
भुलसना—अक्रि० झुलसना।
भुलाना—अक्रि० भूल जाना, भटकना (उदे० 'पतङ्ग' सक्रि० भुलावा देना, छलना, भूलना।
भुलाव भुलावा—पु० धोखा, चकमा।
भुवंग, भुवंगम—पु० साँप 'गुरुमुख गुरु चितवत जैसे मनी भुवङ्ग।' साखी १५, 'बिरह भुवङ्गम तन डसा।' साखी ४०
भुव—स्त्री० भ्रू, भौंह 'कुटिल बङ्क भुव सँग कुटिल बङ्क गति नैन।' बि० १२७ (बङ्क)।' (उदे० 'उछर', निझरना')।
भुवन—पु० लोक, सृष्टि, जन, चौदहकी संख्या।
भुवपति, भुवपाल—पु० राजा (उदे० 'घना')।
भुवा—पु० देखो 'भूआ'।
भुवार, भुवाल—पु० राजा (भू० ४)।
भुवि—स्त्री० पृथिवी।
भुशुंडी, भुसुंडी—स्त्री० एक अस्त्र (सुजा० ३२)।
भुस, भुसा—पु० देखो 'भूसा', (सू० २२)।
भुसी—स्त्री० देखो 'भूसी'।
भुसुंड—स्त्री० सूँड 'कर कंजन तें पोंछत, भुसुण्ड गज राजकी।' रसवाटिका १००
भुसौरा—पु० भूसा रखनेका घर।
भूँकना—अक्रि० देखो 'भौंकना'।
भूँजना—सक्रि० भोगना (प० २), राज कि भूँ भरत पुर नृप कि जियहिं बिन राम।' रामा० २२२ पकाना, तलना, पीड़ा देना।
भूँजा—पु० धान इ० भूँजनेवाला। चबैना।
भूँड़—स्त्री० बालू मिली हुई भुरभुरी मिट्टी 'कत ... गोता मारत हौ निरे भूँड़के खेत।' अ० ८२
भूँसना—अक्रि० भूँकना 'कबीर गुरुकी भक्ति बिनु ना... कूकरी होय। गली गली भूँसत फिरै टूक न ... [कोय।'साखी१
भू—स्त्री० पृथिवी,स्थान। भ्रू, भौंह।
भूआ—पु० सेमर आदिकी रुई 'बिनु सत जस सेवर भूआ।' प० १
भूकंप—पु० भूडोल, भूचाल।
भूक, भूख—स्त्री० क्षुधा; भोजनकी इच्छा, अभिलाषा [तृष्णा, आवश्यकता
भूकना—दे० 'भूँकना'।
भूखण, भूखन—पु० भूषण, अलङ्कार।

भूखना—सक्रि० सजाना, भूषित करना।
भूखा—वि० क्षुधित, इच्छुक।
भूगर्भशास्त्र-पु० भूगर्भ सम्बन्धी विज्ञान। भूतत्त्व विद्या।
भूगोल—पु० पृथिवीका मण्डल। पृथिवीके प्राकृतिक विभागों आदिका वर्णन करनेवाला शास्त्र।
भूचर-पु०पृथिवीपर चलनेवाले मनुष्यादि जीव। शिवजी। [दीमक।
भूचरी—स्त्री० योगकी एक मुद्रा।
भूचाल, भूडोल—पु० पृथिवीका हिलना, भूकम्प।
भूचुंबी—वि० स्त्री० पृथिवीको चूमनेवाली, पृथिवीपर [लोटनेवाली।
भूजात—पु० वृक्ष (प्रिय० ११६)।
भूटानी—पु० भूटान देशका रहनेवाला। स्त्री० भूटानियोंकी भाषा। वि० भूटान सम्बन्धी।
भूड़—स्त्री० देखो 'भूँड़'। कुएँका स्रोत।
भूत—पु० प्रेत, मृत देह, प्राणी, अतीत काल, मूलद्रव्य या तत्त्व (पभू० १९१)। वि० बीता हुआ।
भूतत्त्वविद्या—स्त्री० भूगर्भशास्त्र।
भूतधात्री—स्त्री० पृथिवी।
भूतनाथ,-पति—पु० शिवजी।
भूतपूर्व—वि० इससे पहलेका।
भूतभर्त्ता,-राज—पु० शिवजी।
भूतभावन—पु० शिवजी।
भूतभाषा—स्त्री० पैशाची भाषा।
भूतल—पु० पृथिवीका पृष्ठभाग। जगत्, भूमण्डल।
भूतवाद—पु० भौतिकवाद।
भूति—स्त्री० भस्म, वैभव, सिद्धि, अधिकता।
भूतिनि, भूतिनी—स्त्री० भूतयोनि-गता स्त्री।
भूतेश्वर—पु० शिवजी।
भूदेव, भूदेवता—पु० ब्राह्मण।
भूधर—पु० पर्वत। शेषनाग। भूपति।
भून—पु० भ्रूण, गर्भस्थ शिशु।
भूनना—सक्रि० भूँजना, पकाना, तलना।
भूप, भूपति, भूपाल—पु० राजा।
भूपुत्र—पु० मङ्गल ग्रह। नरकासुरका एक नाम।
भूभल, भूभुर, भूभुरि—स्त्री० गर्म राख, गर्म धूल, 'तत्ती' (उदे० 'डाढ़ना', 'पँवरी')।
भूभुज, भूभृत्—पु० राजा।
भूमा—पु० विराट विश्व, महत्सत्ता 'यही दुख सुखविकास का सत्य यही भूमाका मधुमय दान' कामायनी ५४।
भूमि—स्त्री० धरणी, देश, जगह।
भूमिका—स्त्री० प्राक्कथन, रचना, आभास। भूमि, पृथिवी। नाटकीय पात्र। नाटकीय वेशभूषा या अभिनय।
भूमिज—देखो 'भूपुत्र'। सुवर्ण।
भूमिजा, भूमिपुत्री—स्त्री० जानकी, सीता।
भूमिया—पु० जमींदार, भूम्यधिकारी। मूल निवासी।
भूमिरुह—पु० पेड़।
भूमिसुत—पु० मङ्गल ग्रह। पेड़। केवाँच।
भूमिसुर—पु० ब्राह्मण।
भूमिसुता—स्त्री० सीताजी।
भूमिहार—पु० एक जाति।
भूमींद्र—पु० राजा।
भूयोभूयः—क्रिवि० पुनः पुनः।
भूर—पु० रेत, बालू। स्त्री० भूल (छत्र० ६४)। वि० [बहुत।
भूरजपत्र, भूर्जपत्र—पु० भोजपत्र।
भूरपूर—वि० परिपूर्ण।
भूरसी दक्षिणा-स्त्री० वह थोड़ा थोड़ा द्रव्य जो विवाह कृत्य, या किसी बड़े दान-समारोहादिके अन्तमें उपस्थित ब्राह्मणोंको दिया जाता है।
भूरा—वि० पिङ्गल, धूमिल रङ्गका।
भूरि—वि० बहुत, अधिक (उदे० 'दुरना')।
भूरिता—स्त्री० आधिक्य (प्रिय० २०५)।
भूरिदा—वि० बहुत देनेवाला।
भूरुज, भूरुह—पु० पेड़; तरु।
भूल—स्त्री० चूक, गलती, भ्रम, दोष।
भूलक—पु० भूल करनेवाला।
भूलना—सक्रि० विस्मृत करना, गलतीसे छोड़ देना, खो देना। अक्रि० विस्मृत होना, चूकना, खो जाना।
भूलभुलैयाँ—स्त्री० भ्रममें डालनेवाला, चक्करदार मार्ग या घर। कोई पेचीदा बात।
भूवा—पु० भूआ, रुई। वि०सफेद, उजला। स्त्री० बुआ।
भूशायी—वि०पृथिवीपर शयन करनेवाला, भूपतित, मृत।
भूषण, भूषन—पु० अलङ्कार, श्रेष्ठ व्यक्ति।
भूषना—सक्रि० भूषित करना, सँवारना।
भूषा—स्त्री० सजावट। आभूषण।
भूषित - वि० सजाया हुआ, अलंकृत।
भूसन—पु० भूषण। [भ्रमि भूसि मरयो।' सू०
भूसना—अक्रि० भौंकना 'जैसे श्वान काँच मन्दिरमें

भूसा—पु० गेहूँ जौ आदिके सूखे पौधे तथा बालोंका चूरा। भुस।
भूसी—स्त्री० धान आदिके ऊपरका छिलका। चोकर।
भूसुत—पु० मङ्गल ग्रह। नरकासुर। वृक्ष।
भूसुता—स्त्री० सीता, जानकी।
भूसुर—पु० भूदेव, ब्राह्मण।
भूहरा—देखो 'भुँइहरा', ( पभू० २७ )।
भृंग—पु० भ्रमर। बिलनी नामक कीड़ा, लखेड़ी।
भृंगराज—पु० भंगरा, घमरा। एक पक्षी।
भृंगी—स्त्री० भ्रमरी। बिलनी 'डरियतु भृंगी कीट लौं मत वहई ह्वै जाति।' बि० २४३। पु० एक शिव-गण।
पु०भृकुटी—स्त्री० भ्रू, भौंह।
भृगु—पु० एक मुनि। जमदग्नि। शिवजी। शुक्राचार्य। कृष्णका एक नाम। पहाड़का ऊँचा किनारा। जिसमें ढाल न हो।
भृगुनंदन,-नाथ, नायक,-पति—पु० परशुराम।
भृगुरेखा,लात—स्त्री० विष्णुकी छातीपर भृगु मुनिके लात मारनेका चिह्न।
भृत—वि० पाला हुआ। पु० भृत्य, नौकर।
भृति—स्त्री० वेतन, नौकरी। भरण-पोषण।
भृत्य—पु० नौकर।
भृत्या—स्त्री० नौकरानी। वृत्ति, वेतन।
भृश—क्रिवि० बहुत ज़्यादा।
भेंट, भेट—स्त्री० मिलाप, दर्शन। सौग़ात, उपहार।
भेंटना—सक्रि० गले लगाना, मिलना (उदे० 'छकना')।
भेंड़—स्त्री० भेड़।
भेंवना—सक्रि० तर करना।
भेइ, भेउ—पु० भेद, रहस्य ( सू० ५४ ),'...जननी जौं भेकु—पु० मेंढक। [ एहु जानउँ भेऊ।' रामा० २७९
भेख—पु० वेष, रूप, पहिनावा ( दीन० २३१ )।
भेखज—पु० दवा। सुख। जल।
भेजना—सक्रि० पठाना, रवाना करना।
भेजा—पु० सिरका भीतरी भाग। मेंढक (उदे०'गवेजा')।
भेड़, भेड़ी—स्त्री० एक पालतू पशु।
भेड़ा—पु० भेड़का नर, मेढ़ा।
भेड़िया—पु० शृङ्गालकी जातिका एक मांसाहारी पशु।
भेड़िहर—पु० गड़ेरिया ( ग्राम० ३४१ )।
भेद—पु० रहस्य। समाचार 'जबतें क्रूर गयो लै मोहन तबतें भेद न पाये।' भ्र० १०५। अन्तर। जाति। भेदनेकी क्रिया। शत्रुपक्षमें फूट पैदा करनेका उपाय।
भेदकातिशयोक्ति—स्त्री० एक काव्यालङ्कार।
भेदन—पु० छेदन, विदारण। वि०फाड़नेवाला, दस्तावर।
भेदना—सक्रि० छेदना 'भेदि दुसार कियो हियो तनदुति भेदै सार।' बि० १८२
भेदबुद्धि—स्त्री० फूट, ऐक्यका अभाव।
भेदभाव—पु० अन्तर, भेदबुद्धि।
भेदिया, भेदी—पु० भेद लेने या जाननेवाला, गुप्तचर।
भेदीसार—पु० छेद करनेका औज़ार, बरमा।
भेदू—पु० भेदिया, मर्मज्ञ 'कहहिं कबीर तब पाइये भेदू लीजे साथ।' बीजक भू० ४१
भेद्य—वि० जो छेदा जा सके।
भेना—सक्रि० देखो 'भेंवना'। 'लुचुई पोइ पोइ घिउ-मेई। पाछे छानि खाँडरस भेई।' प० २७०
भेर—स्त्री० नगाड़ा, भेरी ( उदे० 'नौबत' )।
भेरा—पु० बेड़ा (छत्र० ७९, कबीर १७३) '...भौसागर तरिबेकूँ भेरा।'-कबीर २४१
भेरि, भेरी—स्त्री० नगाड़ा ( उदे० 'घुरना', 'झांझ' )।
भेरीकार—पु० भेरी बजानेवाला।
भेला—पु० मिलावाँ। गोला या डल्ला। भेंट। पुराने ढङ्गकी नाव 'जानता हूँ,नदी-झरने जो मुझे ये पातर करने कर चुका हूँ हँस रहा यह देख, कोई नहीं भेला।' [ अनिमा २०।
भेली—स्त्री० गुड़ इ० की गोल बट्टी।
भेव—पु० भेद नहिं बेद बखानत सकल भेव।' राम० १७५, ( उदे० 'तुलना' ), पारी।
भेवना—सक्रि० भिगोना, तर करना।
भेश, भेष, भेस—पु० वेष, पहनावा, रूप।
भेषज, भेसज—पु० दवाई, औषधि।
भेषना, भेसना—सक्रि० भेष धारण करना, धारण करना।
भैंस—स्त्री० एक पशु, महिषी।
भैंसा—पु० भैंसका नर।
भै—पु० भय, डर।
भैक्ष, भैक्ष्य—पु० भीख, भिक्षा।
भैचक,भैचक्क—वि०चकित,घबराया हुआ (सुन्द०९५)।
भैजन, भैदा—वि० भयोत्पादक।
भैन, भैनी—स्त्री० बहिन। [ शब्द, तात।
भैया—पु० भाई, छोटों या बराबरीवालोंके लिए प्रयुक्त

भैयाचार,-चारा—पु० भाईचारा, भाई भाईका परस्पर-का व्यवहार । [ रस । वि० भीषण ।
भैरव—पु० शिवजी, शिव-गणोंके मुखिया । भयानक
भैरवी—स्त्री० दुर्गा, चामुण्डा । एक रागिनी ।
भैषज,-ज्य—पु० दवा ।
भैहा—वि० भयभीत । पु० वह जो हबुआता हो ।
भोंकना—अक्रि० भूँकना, भौं भौं करना । सक्रि०* [ * घुसेड़ना ।
भोंचाल—पु० भूकम्प ।
भोंडर—देखो 'भोडर', ( किविप्रि० ६१ ) ।
भोंड़ा—वि० कुवेशयुक्त, कुरूप,कुडौल । मूर्ख ' .अभागे तिय त्यागे भोंड़े भागे जात साथ सों ।' कविता०१७७
भोंतरा,भोंतला—वि० जिसकी धार तेज न हो, भोथरा ।
भोंदू—वि० बहुत सीधा, मूर्ख । गयागुजरा,खोटा,असभ्य, बुरा ( कविता० २०५-०६ )। [ सीटी ।
भोंपा—पु० एक बाजा । इंजन, मोटर, पुतलीघर इ० की
भोंह—स्त्री०भौंह 'करुण भोंहोंमें था आकाश' पल्लव२७ ।
भोकस—पु० दानव 'कीन्हेसि भोकस देव दईता ।' प० २ । वि० भूखा ।
भोक्ता—पु० भोगनेवाला, सहनेवाला, खानेवाला ।
भोग—पु० सुख-दुःख प्राप्ति, सम्भोग, विषय, सुख, सुख-सामग्री, नैवेद्य, दु:ख । सर्पफण ।
भोगना—सक्रि० भुगतना, सुख या दुःख उठाना ।
भोगबंधक—पु० एक प्रकारका रेहन जिसमें व्याज न लेकर उसके बदले जायदादकी आय लेते या उसका उपयोग करते हैं । [ तरकी । पुपली ।
भोगली—स्त्री० नाककी लौंग या उसके भीतरकी नली ।
भोगवती—स्त्री० नाग-नगरी । पाताल-गङ्गा । गङ्गा ।
भोगवना—देखो 'भोगना' ।
भोगविलास—पु० सुख और आराम, आमोद-प्रमोद ।
भोगशील—वि० भोगी ।
भोगी—वि० विलासी, विषयानुरक्त, सुखी, सहनेवाला । पु० भोगनेवाला । साँप ( दीन० ७ ) । राजा ।
भोग्य—वि० भोगने योग्य, उपभोगमें लाने योग्य ।
भोग्या—स्त्री० वेश्या ।
भोज—पु० जेवनार । भोजन 'मोहिं मातु तात दूध भात भोजको दियो ।' के० ३०२ । पाकशाला 'भोज एक चौक मध्य दूसरे रची सभा ।' के० १७०
भोजक—पु० भोगी, विलासी ।
भोजन—पु० खानेकी क्रिया, खानेकी वस्तु ।
भोजनखानी,-शाला—स्त्री० रसोईघर ।
भोजनभट्ट—पु० खूब खानेवाला, पेटू ।
भोजनालय—पु० भोजनशाला, भोजन-गृह ।
भोजपत्र—पु० एक पेड़की छाल जिसपर प्राचीनकालमें पुस्तकें तथा लेखादि लिखे जाते थे ।
भोजविद्या—स्त्री० इन्द्रजाल ।
भोज्य—वि० जो खाया जा सके, भोजनके योग्य पु० [ खाद्य वस्तु ।
भोटा—वि० भोला, सीधा-सादा ।
भोटिया—पु० देखो 'भूटानी' । स्त्री० देखो 'भूटानी'। वि० भूटान सम्बन्धी ।
भोडर, भोडल—पु० अबरक 'भोडल माहिं दुरै नहिं दीपक यद्यपि वे मुख मौन गहैंगे ।' सुन्द० १४५
भोथरा—वि० जिसकी धार तेज़ न हो, कुण्ठित 'भयो अबहुँ नहिं भोथरो, मोर उदण्ड कुठार ।' रघु० १९१
भोना—अक्रि० रँगना, अनुरक्त होना, भीनना 'इहि कलिकाल कराल व्याल विषज्वाल विषम भोये हम ।'
भोपा—देखो 'भोंपा' । [ गदाधरभट्ट ।
भोमि—स्त्री० पृथिवी ( कबीर १३९ ) ।
भोर—पु० सवेरा, प्रभात । भ्रम, भूल (उदे० 'कीदहुँ'), 'केशर बरन हिया भा तोरा । मानहुँ मनहिं भयउ किछु भोरा ।'प० ७९ । वि० भोला-मुग्ध, चकित 'सूर प्रभुकी निरखि शोभा, भई तरुनी भोर ।' सू० १२५
भोराई—स्त्री० भोलापन, सीधापन ।
भोराना—सक्रि० भुलवा देना, बहकाना 'ज्यों दूती परबधुहिं भोरि कै लै पर-पुरुष दिखावै ।' सू० ४ । अक्रि० भुलावेमें आना ।
भोरानाथ—दे० 'भोलानाथ' ।
भोलना—सक्रि० भुलावा देना, बहकाना '···(माया) अयानी पुरुष कौं भोलि भोलि खाई ।' कबीर १६६
भोला—वि० सीधा-सादा, सरल, सौम्य ।
भोलानाथ—पु० शिवजी । बहुत सीधा आदमी ।
भोलापन—पु० सीधापन, सरलता ।
भोलाभाला—वि० सीधा-सादा ।
भोहरा—पु० खोह ( सुन्द० ११६ ) ।
भौं—स्त्री० भृकुटी ।
भौंकना—अक्रि० भौं भौं करना ।
भौंड़ा—वि० कुरूप, भद्दा, मूर्ख ।

**भौंतुवा**—पु० हाथका एक रोग जिसमें सूजनके साथ कुछ खुजली व हलका दर्द भी होता है। एक कीड़ा।

**भौंर**—पु० पानीका चक्कर (उदे० 'झौंर')। भ्रमर। घोड़ोंका एक भेद।

**भौंरा**—पु० भ्रमर। एक खिलौना, लट्टू (उदे० 'कछनी')। हिंडोलेके ऊपरकी लकड़ी। गड्ढा, तहखाना।

**भौंराना**—सक्रि० भँवरी फिराना, घुमाना।

**भौंरी**—स्त्री० भ्रमरी। भँवरी, परिक्रमा, पानीका चक्कर, बालोंका चक्र।

**भौंह**—स्त्री० भृकुटी (उदे० 'जेह', 'धनुक')।

**भौंहरा**—पु० तहखाना (कविप्रि० ८९)।

**भौ**—पु० भव, संसार। भय, डर।

**भौगोलिक**—वि० भूगोल सम्बन्धी।

**भौचक**—वि० चकित (साखी १५३)। क्रिवि० अचानक।

**भौज**—स्त्री० भ्रातृपत्नी। [भौजलि आऊँगा।' कबीर९८

**भौजलि**—पु० भवजाल, भवबन्धन '... मैं बहुरि न

**भौजाई, भौजी**—स्त्री० बड़े भाईकी स्त्री, भावज।

**भौतिक**—वि० पञ्चभूत सम्बन्धी, पार्थिव, देह-सम्बन्धी।

**भौतिकवाद**—पु० पञ्चभूतों या दृश्यमान जगत्के आधार-पर बना सिद्धान्त। कार्लमार्क्सका प्रसिद्ध द्वन्द्वात्मक

**भौन**—पु० भवन, घर (उदे० 'जकना')। [भौतिकवाद।

**भौना**—अक्रि० भँवना, घूमना।

**भौम**—पु० मङ्गलग्रह। वि० भूमिसे उत्पन्न या भूमि

**भौमवार**—पु० मङ्गलवार। [सम्बन्धी।

**भौमिक**—पु० भूम्यधिकारी

**भौर**—पु० घोड़ोंकी एक जाति। भौंरा।

**भ्रंग**—पु० भृङ्ग, भौंरा 'कृष्ण दग भ्रङ्ग विश्राम हित पद्मिनी...'—गदाधर

**भ्रंश, भ्रंस**—पु० नाश, अधःपतन। 'सूर सुज्ञान सुनावत अबलनि, सुनत होत मति भ्रंस।' सू० २२९। वि०

**भ्रकुटि,-टी**—स्त्री० भौंह। [भ्रष्ट।

**भ्रम**—पु० मिथ्या ज्ञान, धोखा, भूल, सन्देह, भ्रमण। प्रतिष्ठा (प० ३०९)। एक अर्थालंकार 'आन बातको आनमें होत जहाँ भ्रम आय।' **भ्रमजार** = भ्रमजाल (उदे० 'जार')।

**भ्रमण, भ्रमन**—पु० घूमना, विचरण, चक्कर।

**भ्रमना**—अक्रि० घूमना, भटकना (उदे० 'ढेरा' सू० २०) भूल करना, भ्रममें पड़ना (उदे० 'ठगिनी'), 'सूर सुभुजा, समेत सुदर्शन देखि बिरंचि भ्रम्यो।' सू० १५

**भ्रमनि**—स्त्री० देखो 'भ्रमण'।

**भ्रममूलक**—वि० भ्रमके कारण उत्पन्न।

**भ्रमर**—पु० मधुप, भौंरा। [बवण्डर (कविता० १९५)।

**भ्रमवात**—पु० ऊपर ही ऊपर घूमती रहनेवाली वायु,

**भ्रमात्मक**—वि० जिससे भ्रम उत्पन्न हो, धोखेमें डालने-

**भ्रमाना**—सक्रि० बहकाना, घुमाना। [वाला, सन्दिग्ध।

**भ्रमित**—वि० घूमता या चक्कर काटता हुआ। भ्रान्त।

**भ्रमी**—वि० जो भ्रममें हो, चकित 'भूलीसी भ्रमीसी चौंकी, जकीसी, थकी गोपी'—हरि०। स्त्री० भ्रमण,

**भ्रमीन**—वि० भ्रमणकारी (कविप्रि० ८४)। [चक्कर।

**भ्रष्ट**—वि० पतित, दूषित।

**भ्रांत**—वि० भ्रममें पड़ा हुआ, व्याकुल।

**भ्रांतापह्नुति**—स्त्री० एक काव्यालंकार।

**भ्रांति**—स्त्री० सन्देह, भूल। भ्रमण। मोह। 'भ्रम' नामक काव्यालंकार।

**भ्राजना**—अक्रि० शोभित होना 'बहु मनि-रचित झरोखा भ्राजहिं।' रामा०५५२, (उदे० 'झंझरी', सू०८८)।

**भ्राजमान**—वि० शोभायमान।

**भ्रात, भ्राता**—पु० भाई।

**भ्रातृजाया**—स्त्री० भौजाई।

**भ्रातृत्व**—पु० भाईपन, भ्रातृभाव, भाईचारा।

**भ्रातृद्वितीया**—स्त्री० कार्तिक सुदी दूज। भैयादूज।

**भ्रातृभाव**—पु० भाईका-सा सम्बन्ध, भाईचारा।

**भ्रातृव्य**—पु० भतीजा।

**भ्राम**—पु० भ्रम, मिथ्याज्ञान (यशो० १५)।

**भ्रामक**—पु० घुमानेवाला, बहकानेवाला।

**भ्रुकुटि, भ्रुकुटी**—स्त्री० भौंह।

**भ्रुव, भ्रू**—स्त्री० भौंह (सू० १२१)।

**भ्रूण**—पु० गर्भस्थ शिशु, गर्भ।

**भ्रूणहा**—पु० गर्भस्थ शिशुकी हत्या करनेवाला।

**भ्रूभंग, भ्रूविक्षेप**—पु० भौंह चढ़ाना, त्योरी बदलना।

**भ्वहरना**—अक्रि० डर जाना।

# म

मंकुर—पु० मुकुर, आईना ।
मंखी—स्त्री० बच्चोंका एक गहना ।
मंग—स्त्री० सीमान्त देश, माँग (प० १५७, अ० २५) ।
मँगता, मंगन—पु० भिखारी, याचक 'सब जाति कुजाति भये मँगता ।' रामा० ५९३, ( उद्दे० 'घना' ) ।
मँगनी—स्त्री० माँगनेकी क्रिया । उधार । सगाई ।
मंगल—पु० भलाई, शुभ । एक ग्रह । भौमवार ।
मंगलघट—पु० मङ्गलसूचक घड़ा, जलपूर्ण कलश जो देवपूजा या शुभ अवसरोंपर देवताको अर्पित किया जाता है, नारियल, आम्रपल्लव आदिसे युक्त घड़ा जो विशिष्ट व्यक्तिके आगमनपर द्वारपर रखा जाता है ।
मंगलपाठक—पु० बन्दीजन ।
मंगलप्रदा—स्त्री० हलदी ।
मंगलवार—पु० सोमवारके बादवाला दिन । भौमवार ।
मंगला—स्त्री० हलदी । पार्वती ।
मंगलाचरण—पु० मङ्गलके निमित्त कार्यारम्भमें पढ़ा या लिखा जानेवाला पद्य ।
मंगलामुखी—स्त्री० वेश्या ( रघु० ३१ ) ।
मंगली—वि० जिसकी जन्म-कुण्डलीमें मङ्गल ४, ८ या १२ वें स्थानमें हो । स्त्री० हलदी (कविप्रि० ६८) ।
मंगल्य—पु० चन्दन, सोना । वि० कल्याणकारक । सुन्दर ।
मँगवाना, मँगाना—सक्रि० माँगनेका काम कराना । किसीको कोई वस्तु लाने या भेजनेमें प्रवृत्त करना ।
मँगेतर—वि० जिसकी मँगनी हो चुकी हो । . स्त्री० वह स्त्री जिससे किसीकी मँगनी हुई हो, भावी वधू ।
मंगोल—पु० मध्य एशियामें बसनेवाली एक जाति ।
मंच, मंचक—पु० उच्चासन, चबूतरा । मचान, खाट ।
मंछर—पु० मत्सर 'काम क्रोध माया मद मंछर ए सन्तति हम माँहीं ।' कबीर १५२
मंजन—पु० दाँत मलनेका चूर्ण । स्नान, मालिश (उद्दे० 'जूझा' ), मज्जन कै नित न्हाय कै अङ्ग अँगोछि कै बार छुरावन लागी ।' ललित० ६२
मंजना—सक्रि० माँजना, मलना 'काया मजसि कौन गुण' —कबीर १८२ । अक्रि० माँजा जाना । अभ्यास होना ।
मंजरित—वि० मञ्जरीयुक्त ।
मंजरी—स्त्री० बौर, कोंपल, लता ।
मंजरीक—पु० अशोक । मोती । तुलसी ।
मँजाई—स्त्री० माँजनेकी क्रिया या मजदूरी ।
मंजार—पु० बिलाव 'पञ्जर-गत मञ्जार ढिग सुक लौं सूकति जाति ।' बि० ४०
मंजारी—स्त्री० बिल्ली ( प० २४ ) ।
मँजावट—स्त्री० माँजने या मँजनेकी क्रिया । अभ्यास ।
मंजिका—स्त्री० वारांगना, वेश्या ।
मंजिल—स्त्री० पड़ाव । मार्गका उतना भाग जितना एक दिनमें तय हो सके । गन्तव्य स्थान । मकानका खण्ड ।
मंजिष्ठा—स्त्री० मजीठ ।
मँजीठ—दे० मजीठ । ( प० ४७ ) ।
मंजीर, मँजीर—पु० घुँघरू (सू० १५७, मति० ४०२) । नूपुर । एक प्रकारका नाच, ताल, जिसके दो पुट दोनों हाथोंसे एक एक लेकर बजाये जाते हैं ।
मंजु—वि० चारु, सुन्दर ।
मंजुघोषा—स्त्री० कोयल, एक अप्सरा (कविप्रि० १२८) ।
मंजुल—देखो 'मंजु' ।
मंजूर—वि० स्वीकृत ।—करना = मान लेना ।
मंजूरी—स्त्री० स्वीकृति ।
मंजूषा, मंजूसा—स्त्री० पिटारी, पेटी । पींजरा ।
मंझा—वि० बीचका । पु० गुड्डीके डोरेपर लगाया जानेवाला मसाला ।
मँझार, मँझारि—अ० में, बीचमें 'मानो सुर गुरु सुक्र भौम सनि चमकत चन्द्र मँझारि ।' सू० १४०
मँझियाना—देखो 'मझियाना' । सक्रि० धँसकर पार करना, 'नदीकी धार-मँझियाकर तटपर पहुँची ।' निबन्ध० १—८९
मँझुआ—पु० कलाईपर कुछ गहनोंके बीच पहननेका गहना ।
मँड़ई—स्त्री० बाँस, फूस आदिसे बना छोटा घर ।
मंड—पु० माँड़, सार । मण्डन, सजावट । वि० मण्डित ( उद्दे० 'प्रयंत' ) ।
मंडन—पु० किसी कथन या सिद्धान्तका पुष्टीकरण, सजावट मण्डनमिश्र, जो प्रसिद्ध दार्शनिक थे और जिन्होंने शङ्कराचार्यसे शास्त्रार्थ किया था ।
मंडना—सक्रि० सजाना, भूषित करना, पुष्ट करना । माँडना मर्दन करना । व्यास करना, भरना (उद्दे० 'धार') ।

मंडप—पु॰ तृणादिसे छाया हुआ स्थान (उदे॰ 'बनना'),
मंडपिका, मंडपी—स्त्री॰ छोटा मण्डप । [ चँदोवा ।
मंडर—पु॰ देखो 'मण्डल' ।
मंडरना—अक्रि॰ चारों तरफसे घेर लेना ।
मँडराना, मँडलाना—अक्रि॰ ऊपर चारों ओर घूमना, मण्डल बनाते हुए उड़ना, पास पास चलना, चक्कर लगाना ।
मंडल—पु॰ गोल स्थान, चक्कर, घेरा, बिम्ब, देश, गोला, समूह, क्षितिज, कुत्ता, बारह राज्योंका समूह ।
मंडलाकार—वि॰ गोल ।
मंडली—स्त्री॰ समूह,सभा,गोष्ठी । पु॰ वट,गुडुच, सूर्य ।
मंडलीक—पु॰ मण्डलाधिपति, करद राजा ।
मंडवा—पु॰ मण्डप ।
मंडहारक—पु॰ कलाल ।
मंडार, मँडारा—पु॰ टोकरा, झाबा ( उदे॰ 'पतंग' )। गड्ढा 'जहाँ समुद मझधार मँडारू ।' प॰ १९२
मंडित—वि॰ आभूषित, सुसज्जित । आच्छादित । पूरित ।
मंडी—स्त्री॰ बाज़ार ।
मंडील—देखो 'मंडील' ( पूर्ण २१५ ) ।
मँडुआ—पु॰ एक कदन्न ।
मंडूक—पु॰ मेंढक । [ मंत'—के॰ ९२
मंत—पु॰ मत, सलाह । मन्त्र '…सो साधै प्राणायाम
मंतव्य—पु॰ विचार । वि॰ मानने लायक ।
मंत्र—पु॰ दिव्य प्रभावयुक्त शब्द या वाक्य, युक्ति,
मंत्रकार—पु॰ मन्त्रका रचयिता । [ सलाह ।
मंत्रमूढ़—पु॰ भेदिया ।
मंत्रगृह—पु॰ सलाह-मशविरा करनेका निश्चित स्थान ।
मंत्रणा—स्त्री॰ विचार, परामर्श, सलाह ।
मंत्र विद्या—स्त्री॰मन्त्रशास्त्र, तन्त्र-विद्या। [लिया हो ।
मंत्रसिद्ध—वि॰ जिसने मन्त्रको अच्छी तरह सिद्ध कर
मंत्रित—वि॰ मन्त्रद्वारा पवित्र किया हुआ ।
मंत्रित्व—पु॰ मन्त्रीका पद या उसका कार्य ।
मंत्री—पु॰ सलाह देनेवाला, अमात्य, दीवान ।
मंत्रेला—पु॰ मन्त्र जाननेवाला 'आपै मन्त्र आपै मन्त्रेला ।' कबीर २४३
मंथ—पु॰बिलोड़न, मथानी,एक नेत्र रोग । सूर्य । अकवन ।
मंथज—पु॰ मक्खन ।
मंथन—पु॰ बिलोड़न, अवगाहन । मथानी ।
मंथर—वि॰ सुस्त, भारी, टेढ़ा, स्थूल । पु॰ कोष, बालों का गुच्छा, मथानी, दूत । रोक । मक्खन । क्रोध ।
मंथरा—स्त्री॰ कैकेयीकी एक दासी, 'कूबरी' ।
मंथान—पु॰ मथानी ।
मंथिनी—स्त्री॰ मटका ।
मंद—वि॰ सुस्त, क्षीण, कम, क्षुद्र, नीच । क्रिवि॰
मंदक—वि॰ नासमझ । [ धीरेसे ( प्रिय॰ ४३ ) ।
मंदग—वि॰ मन्दगतिसे चलनेवाला ।
मंदता—स्त्री॰ धीमापन, शिथिलता, सुस्ती ।
मंदभागी,-भाग्य—वि॰ बदक़िस्मत ।
मंदर—पु॰ एक पहाड़ । मंदार वृक्ष । शीशा । स्वर्ग ।
मंदरा, मंदला—पु॰ एक बाजा 'जैसे मंदला, तुमहिं बजावा । तैसे नाचत मैं दुख पावा ।' कबीर ११३ । वि॰ बौना, ठिगना ।
मंदा—वि॰ धीमा, सस्ता, ठण्डा, ढीला, निकृष्ट ।
मंदाकिनी—स्त्री॰ आकाशगंगा । चित्रकूटके पासकी एक
मंदाक्रांता—स्त्री॰ एक वर्णवृत्त । [ नदी ।
मंदाग्नि—स्त्री॰ अपचकी बीमारी । [कबीर २२१ ।
मंदाना—अक्रि॰ मन्द पड़ना '…काम पियास मंदानी ।'
मंदार—पु॰ एक देवतरु,मदार,धतूरा ( उदे॰ 'बजना' ),
मंदिर, मंदिल—पु॰ गृह,देवालय,नगर । [ स्वर्ग ।
मंदिरा—स्त्री॰ मजीरा, अस्तबल ।
मंदी—स्त्री॰ सस्ती ।
मंदील—पु॰ कामदार कपड़ेका मुरेठा ।
मंदोदरी, मँदोवै—स्त्री॰ रावणकी पत्नी 'तुलसी मँदोवै रोइ रोइ कै बिगोवै आपु ।' कविता॰ १७६
मंद्र—वि॰ सुन्दर । प्रसन्न । पु॰मृदङ्ग । गम्भीर आवाज़ ।
मंद्रित—वि॰ गम्भीर ध्वनिवाला ।
मंशा—पु॰, स्त्री॰ आशय, इच्छा ।
मंसब—पु॰ पद, अधिकार ।
मंसा—स्त्री॰ अभिप्राय, इच्छा, निश्चय ।
मंसूख—वि॰ रद्द, उठाया हुआ ।
मंसूबा—पु॰ ढङ्ग, उपाय । इरादा, विचार । आयोजन ।
मंसूर—पु॰ मनसूर नामक सूफी फकीर ।
मआफ—वि॰ माफ ।
मइका—पु॰ नैहर ( रामा॰ २४५ ) ।
मइमंत—वि॰ देखो 'मैमंत' ।
मउनी—स्त्री॰ छोटी डलिया, मौनी ।

मउलसिरी—स्त्री० बकुल वृक्ष, मौलसिरी।
मकई—स्त्री० बड़े दानेकी जुआर।
मकड़ा—पु० एक कीड़ा जो जाला बनाकर रहता है और मक्खियों आदिको फँसाकर खाता है।
मकड़ी—स्त्री० एक कीड़ा।
मकतब—पु० पाठशाला।
मक़दूर—पु० सामर्थ्य, हैसियत, पूँजी, बस।
मकना—देखो मकुना ( रत्ना० १४० )।
मकनातीस—पु० चुम्बक पत्थर।
मकफूल—वि० जो गिरों रक्खा गया हो।
मक़बरा—पु० समाधि-मन्दिर, इमारत जिसमें कब्र हो।
मक़बूल—वि० प्रिय। पु० प्रेमी 'दोउ मकबूल मखबूल झूला झूलि झूलि।' सुधानिधि १२७।
मकरंद—पु० मधु, पुष्परस, भ्रमर, कोकिल।
मकर—पु०एक राशि,एक जलजन्तु,मगर,मछली। धोखा।
मकरकुंडल—पु० मकरकी आकृतिका कुण्डल।
मकरकेतु, मकरध्वज, मकरपति—पु० कामदेव।
मकरतार—पु० कामदानीका तार।
मकरा—पु० देखो 'मकड़ा'। मडुवा। सेव बनानेका एक [औज़ार।
मकराकृत—वि० मछलीके आकारवाला।
मकराज—स्त्री० कतरनी, कैंची ( उदे० 'जेब' )।
मकरालय—पु० समुद्र ( साकेत ३८९ )।
मकराश्व—पु० वरुणदेव।
मकरी—स्त्री० मगरी (कविता० २५७)। मछली,मकड़ी। ...जाँतकी कीलके ऊपर लगायी जानेवाली एक लकड़ी ( ग्राम० ३२१ )।
मकसद—पु० अभिप्राय, मनोरथ, उद्देश्य।
मकसूद—वि० अभिप्रेत।
मकाँ, मकान—पु० घर।
मकु—अ० चाहे, 'बल्कि, शायद, तेहि डर राँध न बैठौं मकु साँवरि होइ जावँ।' प० २१५, (रामा० ३१०)
मकुट—पु० मुकुट, ताज। [बिना मूँछका आदमी।
मकुना—पु० बिना दाँतवाला या छोटे दाँतवाला हाथी।
मकुनी,मकूनी—स्त्री० बेसन भरकर बनायी हुई रोटी।
मकुर—पु० मुकुट। कुम्हारका डण्डा। कली।
मकूला—पु० उक्ति।
मकोइ, मकोय—स्त्री० एक बनफल ( प० २३६ )।
मकोइया—वि० मकोयके रंगका।
मकोड़ा—पु० छोटा कीड़ा।
मकोरना—सक्रि० ऐंठना, मरोड़ना।
मक्का—पु० मकई। मुसलमानोंका प्रधान तीर्थ।
मक्कार—वि० छली, कपटी, ढोंगी।
मक्खन, मखन—पु० नवनीत, माखन।
मक्खी—स्त्री० मक्षिका।
मक्खीचूस—वि० बहुत कृपण। पु० अतिकृपण व्यक्ति।
मक्खीमार—पु० घृणित मनुष्य। मक्खियोंके भगानेकी [एक छड़ी।
मक्षिका—स्त्री० मक्खी।
मख—पु० यज्ञ।
मखज़न—पु० भाण्डार, खजाना।
मखतूल—पु० एक तरहका काला रेशम(उदे०'चाँदिला'), 'अजन जुत अँसुवानिकी धार धसति जुग नैन। मनो डोर मखतूलके बाँधे खजन नैन।' मति० १८५
मखदूम—वि० सेव्य। पु० स्वामी।
मखधारी—पु० यज्ञकर्त्ता।
मखनियाँ—पु० मक्खन बेचने या बनानेवाला। वि० [मक्खनरहित।
मखमल—पु० एक मुलायम कपड़ा।
मखलूक—पु० सृष्टि, ईश्वरकी रचना।
मखशाला—स्त्री० यज्ञशाला।
मखी—स्त्री० मक्षिका।
मखोना—पु० एक कपड़ा।
मखौल—पु० परिहास, हँसी-दिल्लगी, मज़ाक।
मखौलिया—पु० मजाकिया, दिल्लगीबाज।
मग—पु० मार्ग, रास्ता ( उदे० 'बिलखाना' )। मगध।
मगज—पु० दिमाग, भेजा, मींगी।
मगजचट—पु० बहुत बकवाद करनेवाला।
मगजपच्ची—स्त्री० दिमाग लड़ाना, सिर खपाना।
मगजी—स्त्री० पतली पट्टी, गोट (उदे० 'दुलारी' )।
मगण—पु० छन्दःशास्त्रके आठ गणोंमेंसे एक।
मगद, मगदल—पु० एक मिठाई।
मगदा—पु० मार्ग-दर्शक।
मगदूर—पु० मकदूर, वश, सामर्थ्य।
मगध—पु० पटनेके आस पासका देश। मागध।
मगन,मग्न—वि० डूबा हुआ, लीन ; प्रसन्न।
मगना—अक्रि० डूबना, लीन होना। [*लेकिन।
मगर—पु० एक जल-जन्तु,मकर (उदे० 'काल')। अ० *
मगरब, मगरिब—पु० पश्चिम।

मगरमच्छ—पु० बड़ी मछली । मगर, नक्र ।
मगरूर—वि० घमण्डी ।
मगरौठी—स्त्री० एक चिड़िया ।
मगह, मगहय,मगहर—पु० मगध देश । स्थान विशेष ।
मगही—वि० मगध देशका ।
मग्ग—पु० मार्ग, रास्ता ।
मग्ज़—देखो 'मगज' ।
मघवा—पु० इन्द्र ।
मघा—स्त्री० एक नक्षत्र । [ राम० ३२७ ।
मघोनी—स्त्री०इन्द्राणी 'करैं सेव बानी मघोनी मृडानी ।'
मघौना—पु० इन्द्र, नीले रंगका वस्त्रविशेष ( उदे० 'चिकवा') ।
मचक—स्त्री० हलकी पीड़ा, दबाव ।
मचकना—अक्रि० ज़ोरसे हिलाना ( उदे० 'दचकना' ) । सक्रि० ज़ोरसे हिलना या दबाना ।
मचका—पु० धक्का, झोंका, पेंग ।
मचकाना—सक्रि० झुकाना ।
मचकी—स्त्री० देखो 'मचका' ( रत्ना० १५ ) ।
मचना—अक्रि० होना, किया जाना, व्याप्त होना ( उदे० 'खैर भैर' ) । सक्रि० ज़ोरसे हिलाना 'एक सँग लै मचत मोहत एक देत झुलाइ ।' सू० १७५
मचमचाना—सक्रि०चारपाई आदिको इस प्रकार उछलकर हिलाना कि आवाज़ निकले ।
मचलना—अक्रि० हठ करना ।
मचला—वि० हठी, मचलनेवाला ( विन० ६०५ ) । पु० बाँसकी डिबिया, बिलहरा ।
मचलाई—स्त्री० हठ ( रामा० ४४३ ) ।
मचलाना—अक्रि० मतली आना ।
मचवा—पु० खाट, मचान ।
मचान—स्त्री० ऊँची बैठक, मञ्च ।
मचाना—सक्रि०करना,बनाना । गन्दा करना (बुन्देल०) ।
मचामच—स्त्री० किसी वस्तुको दबानेका 'मचमच'शब्द ।
मचिया—स्त्री० एक आदमीके बैठने योग्य चारपाई, एक तरहकी पीढ़ी या चौकी ।
मचिलई—स्त्री० देखो 'मचलाई' । ['टीबा','ठोर' ) ।
मच्छ, मछ—पु० मत्स्य, बड़ी मछली ( उदे० 'काछू',
मच्छड़—पु० शरीरका रक्त चूसनेवाला एक छोटा फतिंगा ।
मच्छर—पु० मच्छड़, मसा । डाह ।
मच्छरता—स्त्री० डाह ।
मच्छी—स्त्री० मछली ।
मच्छीमार—पु० मछली मारनेवाला, मछुआ ।
मछरिया,मछरी,-ली—स्त्री० मीन (उदे० 'धीमर' )
मछुआ,मछुवा—पु० मल्लाह, धीवर ।
मज़कूर—वि० कहा हुआ, उल्लिखित ।
मज़दूर—पु० कुली, बनिहार, श्रमी ।
मज़दूरी—स्त्री० श्रम, मजदूरका काम । पारिश्रमिक ।
मजना—अक्रि० मज्जित होना, प्रेममें डूबना 'मानत लोक मर्यादा हरिके रंग मजी ।' सूबे० १६८
मजनूँ—पु० प्रेमी । दीवाना । दुर्बल मनुष्य ।
मज़बूत—वि० दृढ़, अचल, बलवान् ।
मजबूर—वि० विवश, लाचार ।
मजबूरन—क्रिवि० लाचार होकर, बेबसीकी हालतमें ।
मजमा—पु० भीड़, जमघट । [ जमा किया हुआ ।
मजमुआ—पु०एक ही तरहकी वस्तुओंका समूह । वि०
मजमुई—वि० सामूहिक ( सेया० १८४ ) ।
मज़मून—पु० लेख, निबन्ध, लेखका विषय ।
मजलिस—स्त्री० सभा-भवन, सभा, जलसा ।
मजलूम—वि० जिसपर ज़ुल्म किया गया हो, उत्पीड़ित ।
मज़हब—पु० धर्म ।
मज़ा—पु० स्वाद, आनन्द, लुत्फ, दिल्लगी, कुफल ।
मज़ाक़—पु० हँसी, दिल्लगी, रुचि ।
मज़ाक़न—क्रिवि० मज़ाकके तौरपर ।
मज़ाकिया—क्रिवि० मज़ाक़के तौरपर । वि० मज़ाक़ करनेवाला ।
मजाज़—पु० जोर, अधिकार ।
मज़ार—पु० क़ब्र, समाधिमन्दिर ।
मजारि, मजारी—स्त्री० बिल्ली ( प० २९ ) ।
मजाल—स्त्री० शक्ति ।
मजिल—स्त्री० देखो 'मञ्ज़िल' ।
मजीठ—स्त्री० एक लता जिससे लाल रंग बनता है ( उदे० 'आल', प० १०६ ) ।
मजीठी—वि० मजीठके रंगका ।
मजीर—स्त्री० फूलों या फलोंका गुच्छा, मञ्जरी ।
मजीरा—पु० एक बाजा, जोड़ी ( प० २६० ) ।
मजूर—पु० कुली । मयूर ।
मजेज—पु० घमण्ड, गर्व, हठ ( सुजा० ३० ) ।
मज़ेदार—वि० बढ़िया । सुस्वादु ।
मज्ज़ा—देखो 'मजा' ।

मज्जन—पु० स्नान ।
मज्जना—अक्रि० स्नान करना, डूबना ।
मज्जा—स्त्री० हड्डीके भीतरका गूदा ।
मज्जित—वि० स्नात, डूबा हुआ, लीन ।
मज्झ, मझ—वि० मध्य । क्रिवि० बीच, मध्य ।
मझधार में—क्रिवि० बीचमें ।
मझला—वि० बीचका ।
मझाना—अक्रि० प्रविष्ट होना 'नदी उतर वन सघन मझाये ।' छत्र० १२ । सक्रि० प्रवेश कराना ।
मझार—क्रिवि० बीचमें, में ।
मझियाना—अक्रि० मध्यसे निकलना । नाव चलाना ।
मझिगारा—वि० बीचका । क्रिवि० बीचमें ( उदे० 'कोट-वार') ।
मझीला—वि० बिचला, मध्यम आकारका ।
मझु—सर्व० मैं, मेरा (वि० १११, ११४ ) ।
मझोली—स्त्री० एक तरहकी बैलगाड़ी ।
मट—पु० मटका ( गुलाब ७९ ) ।
मटक—स्त्री० मटकनेकी क्रिया, चाल, लटक ।
मटकना—अक्रि० लटकके साथ चलना, इठलाना, शृङ्गार करना ( उदे० 'धन' ) । हिलना 'मटकत गिरी गागरी सिरते ।' सूवे० ११३ । लौटना ।
मटकनि—देखो 'मटक' ।
मटका—पु० बड़े मुँहका मिट्टीका घड़ा, कमोरा ।
मटकाना—सक्रि० हिलाना, चमकाना ।
मटकिया, मटकी—स्त्री० गगरी, कमोरी ।
मटकीला—वि० नखरेके साथ अङ्गोंका सञ्चालन करने-वाला ।
मटकौअल,-वल—स्त्री० मटकानेका काम ।
मटमैल—वि० मिट्टीके रङ्गका ।
मटर—पु० एक अनाज, छीमीका दाना ।
मटरगश्त,-गश्ती—स्त्री० व्यर्थ घूमना, आवारागर्दी ।
मटरी—स्त्री० देखो 'मटर' ( पूर्ण २६४ ) ।
मटियाना—अक्रि० मिट्टी लगाकर धोना । अनसुनी कर देना ।
मटियामसान—वि० बरबाद, गया गुजरा ।
मटियामेट—वि० बरबाद, चौपट ।
मटियाला, मटीला—वि० मिट्टीके रङ्गका ।
मट्टुक—पु० मुकुट ( ग्राम० १५१ ) ।
मट्टुका—पु० मिट्टीका बड़ा घड़ा ।
मट्टुकिया, मट्टुकी—स्त्री० देखो 'मटकी', ( उदे० 'परसना' ) ।
मट्टी—स्त्री० मृत्तिका, मिट्टी ।
मट्ठर—वि० आलसी ।
मट्ठा, मठा—पु० मही, छांछ ( मति० २३९ ) ।
मठ—पु० साधुओंके रहनेकी जगह । देवालय ।
मठधारी, पति, मठाधीश—पु० मठका अध्यक्ष या स्वामी ।
मठिया—स्त्री० छोटा मठ । कलाईपर पहननेका एक गहना ।
मठी—स्त्री० छोटा मठ । पु० मठधारी, मठपति ।
मठोठा—पु० कुँएकी मेंड़, जगत ( अष्ट० ४० ) ।
मठोर—स्त्री० मठा रखनेकी मटकी ।
मठौरा—पु० एक तरहका रन्दा ।
मडलाना—अक्रि० मड़राना 'अनुपम शोभापर उसकी कितनेन भँवर मडलाते !' ( परिमल ९७ ) ।
मड़क—स्त्री० किसी बातका गुप्त हेतु ।
मड़या—पु० मँड़वा, मण्डप ( उदे० 'गाँठ' ) ।
मड़राना, मड़लाना—अक्रि० चारो ओर घूमना चक्कर देते हुए उड़ना । 'मड़लाते व्याकुल अलि' अना-मिका १५ ।
मड़वा—पु० मण्डप ।
मड़हट—पु० मरघट 'मड़हट लूँ सब लोग कुटुम्बी हंस अकेलो जाइ ।' कबीर १९४
मड़ा—पु० कोठा । एक नेत्ररोग, माड़ा ' "मायाको मड़ा सो अँखियन तें उघारि दै ।' देव
मडुआ—पु० एक कदन्न ।
मड़ैया—स्त्री० झोपड़ी, कुटी ( उदे० 'तनिक' ) ।
मढ़—वि० जो जल्दी न हटे । पु० मन्दिर । साधुओंके रहनेका स्थान ।
मढ़ना—सक्रि० कपड़ा आदि चढ़ाना या लपेटना ( उदे० 'परचा' । चारों तरफसे घेर लेना 'जल जोर दिशा विदिशान मढ़ै ।' राम० ३८६, ( उदे० 'छत्री' ) । किसीके सिरपर डालना ।
मढ़ाई—स्त्री० मढ़नेकी क्रिया या मजदूरी ।
मढ़ी, मढ़ैया—स्त्री० झोपड़ी, छोटा मठ या मन्दिर [ प० ९० ।
मणि—स्त्री० रत्न, नग ।
मणिधर—पु० साँप ।
मणिबंध—पु० कलाई ।
मणिबीज—पु० अनारका वृक्ष ।
मणी—स्त्री० मणि । पु० साँप ।
मतंग—पु० हाथी, गज । मेघ ।
मतंगज—पु० हाथी ।
मतंगी—पु० गजारोही ।

मत—पु० सलाह, राय । आशय । धर्म । क्रिवि० नहीं ।
मतना—अक्रि० मतवाला होना । राय ठहराना, सलाह करना 'मतैं बैठि बादल औ गोरा । प० ३१५
मतरिया—वि० मत देनेवाला, मन्त्रित । स्त्री० महतारी ।
मतलब—पु० अभिप्राय, उद्देश्य, अर्थ, सम्बन्ध ।
मतलबी—वि० स्वार्थी ।
मतली—स्त्री० .कैकी इच्छा ।
मतवारा, मतवाला—वि० उन्मत, नशेमें चूर ( उदे० 'अछक', 'छुछकावना', प० १५४ ) ।
मतवालापन—पु० उन्मत्तता ।
मता, मतो—पु० सलाह (श्र० १७), उपदेश, सम्मति ।
मति—अ० समान ।
मति, मती—स्त्री० समझ । राय । चाह । क्रिवि० मत, नहीं ।
मतिमंत,-मान्—वि०समझदार,बुद्धिमान् ।
मतिमाँह—वि० मतिमान्, समझदार ( प० ९ ) ।
मतिविभ्रम—पु० उन्माद ।
मतीर,मतीरा—पु०तरबूज 'इत मरुभूमि मतीर जल पीव बटोही बीर ।'दीन० ११२।
मतीस—पु० एक बाजा ।
मतेई—स्त्री० सौतेली माँ ।
मत्कुण—पु० खटमल ।
मत्त—वि० मस्त, मतवाला, प्रसन्न । स्त्री० मात्रा ।
मत्तगयंद—पु० सवैया नामक छन्दका एक भेद ।
मत्तता, मत्तताई—स्त्री० मस्ती ।
मत्ता—स्त्री० मात्रा । शराब ।
मत्था—पु० माथा, मस्तक । —
मत्स, मत्स्य—पु० मछली ।
मत्सर—पु० डाह, क्रोध ।
मथन—पु० बिलोना, मथनेकी क्रिया । वि० मथनेवाला, नाश करनेवाला ( उदे० 'फिराना' ) ।
मथना—सक्रि० बिलोना, महना (उदे० 'फैन'), घिसना, नष्ट करना 'रिपुमद मथि प्रभु सुजस सुनायो । यह कहि चलेउ बालि नृप जायो ।' रामा० ४६९ । क्षुब्ध करना 'छवि देखत ही मन, मदन मथ्यो तन, सूर्पनखा तेहि काल ।' राम० २५४ । छान डालना । पु० मथानी ।
मथनियाँ, मथनी—स्त्री० मथनेका डण्डा, रई ( उदे० 'ढाँढी' ) । दही मथनेकी हांडी (उदे० 'अरगाना) ।
मथवाह—पु० महावत । सिरदर्द, 'दिस्टि तरहुँढी, हेर न आगे । जनु मथवाह रहै सिर लागे ।' प० २२
मथानी—स्त्री० मथनेका डण्डा, बिलोनी (उदे०'कर्षना')।
मथित—वि० जो मथा गया हो, आलोड़ित, पीड़ित ।
मथी—पु० मथानी । वि० जो मथनेका काम करे, मथनेवाला ।
मथूल—पु० मस्तूल ( रत्ना० ५४७ ) ।
मथौरा—पु० एक तरहका रन्दा ।
मदंध—वि० मदसे अन्धा ।
मद—पु० हर्ष, गर्व, नशा, पागलपन, प्रमाद, शराब, हाथीके मस्तकका स्राव । काम । वीर्य । स्त्री० शीर्षक, स्तम्भ, खाता । वि० मस्त ।
मदक—स्त्री० एक नशीली वस्तु ।
मदकची, मदकी—वि० मदकका सेवन करनेवाला ।
मदगल—वि० मस्त, मतवाला ( भू० ६२ ) । पु० मस्त हाथी ( भू० २४ ) ।
मदजल—पु० मस्त हाथीके मस्तकका स्राव, दान ।
मदद—स्त्री० सहायता ।
मददगार—वि० पु० सहायता करनेवाला ।
मदन—पु० कामदेव । बसन्त । भ्रमर । धतूरा । खैरका वृक्ष । प्रेम । काम, इच्छा । कामवासना 'द्रोह, मदन मदका मल मेरा धो देता है जब दृग नीर ।'(वीणा४१)
मदनकदन, मदन-दहन—पु० कामदेवका विनास करनेवाले शिवजी ।
मदनमस्त—पु० एक सुगन्धित पुष्प ।
मदनमोहन—पु० श्रीकृष्ण ।
मदमत्त—वि० मदके कारण मस्त ( हाथी ) ।
मदर—पु० धावा, आक्रमण ।
मदरसा—पु० पाठशाला ।
मदांध—वि० देखो 'मदंध' ।
मदाखिलत—स्त्री० प्रवेश । रुकावट ।
मदानि—वि० स्त्री० कल्याणदायिनी ( दोहा० १५१ ) ।
मदार—पु० आक । हाथी । सूअर । धूर्त व्यक्ति ।
मदारिया,मदारी—पु०बन्दर नचानेवाला,बाजीगर,सँपेरा ।
मदालसा—स्त्री० विश्वावसु नामक गन्धर्वकी कन्या ।
मदिर—वि० मतवाला बना देनेवाला, आह्लादजनक ( ज्यो० २५ ) पु० खदिरवृक्ष-विशेष ।
मदिरा—स्त्री० मद्य, शराब ।
मदीय—सर्व० मेरा ।
मदीला—वि० नशा लानेवाला, नशीला ।

मदोद्धत, मदोन्मत्त—वि० मदसे भरा हुआ, मतवाला।
मदोवै—स्त्री० मन्दोदरी ( दे० 'मँदोवै' )।
मद्दति—स्त्री० प्रशंसा ( वीजक ६२ )।
मद्धिम—वि० मन्दा, मध्यम।
मद्धे—अ० विषयमें, वावत। बीचमें।
मद्य—पु० शराव।
मद्यप—वि० शराब पीनेवाला।
मद्र—पु० देश-विशेष।
मध, मधि—पु० मध्य, बीच। क्रिवि० बीचमें।
मधु—पु० शहद, मदिरा, वसन्त, चैत्र, पुष्परस, 'दान-सलिल ' ये गडन मधुधार।' मुद्रा० ७२। मक्खन, दूध, अमृत, एक दैत्य, अशोक वृक्ष। महुआ। वि० [ मीठा।
मधुकंठ—पु० कोयल।
मधुक—पु० महुएका वृक्ष या फूल।
मधुकर—पु० भ्रमर, रसिक व्यक्ति। उद्धव। भँगरा। एक तरहका चावल ( उदे० 'कजरी' )।
मधुकरी—स्त्री० भ्रमरी ( मति० २३८ )। रोटी, दाल, चावल आदिकी भिक्षा (उदे० 'दर')। वाटी, लिट्टी।
मधुकोष—पु० मधुमक्खियोंका छत्ता।
मधुगृह—पु० मधुका घर, मधुशाला।
मधुप—पु० भ्रमर। उद्धव। देवता 'सेवत मधुपगण गज मुख परभृत शिवको समाज किधौं केशव बसत है।' कविप्रि० १३९। वि० शरावी ( कविप्रि० १४७ )।
मधुपर्क—पु० दही, घृत, शहद आदिका मिश्रण।
मधुपति—पु० श्रीकृष्णका एक नाम।
मधुपुरी—स्त्री० मथुरा नगरी।
मधुवन—पु०मथुराका एक कानन। सुग्रीवका एक वन।
मधुवाला—स्त्री० भ्रमरी, साक़ीकी लड़की।
मधुबीज—पु० अनारका वृक्ष। [ मक्खी।
मधुमक्खी,-मक्षिका—स्त्री० शहद एकत्र करनेवाली
मधुमाधवी—स्त्री० एक लता। एक रागिणी।
मधुमालती—स्त्री० एक तरहकी फूलदार लता।
मधुमेह—पु० प्रमेह नामक रोग।
मधुयष्टि,-यष्टिका—स्त्री० मुलहठी।
मधुर—वि० मीठा या रुचिकर, सुन्दर। शान्त, धीमा, हलका। पु० मीठा रस, गुड़, इ०। शृंगार रस।
मधुरई, मधुरता, मधुराई—स्त्री० मिठास, कोमलता, [ ( पद्माभ० ५२ )।
मधुरस—पु० ऊख।

मधुराज—पु० भ्रमर।
मधुराना—अक्रि० मीठा या रुचिकर होना।
मधुरान्न—पु० मिठाई।
मधुरिपु—पु० मधु दैत्यके मारनेवाले श्रीकृष्ण।
मधुरिमा—स्त्री० मधुरता। सुन्दरता।
मधुरी—स्त्री० मिठास, सुन्दरता। एक बाजा। वि० स्त्री०मीठी, रुचिकर 'मधुरी बोलनि बरनि न जाई।' [ सू० ८२
मधुवन—देखो 'मधुबन'।
मधुव्रत—पु० भ्रमर।
मधुशाली—स्त्री० शराबखाना।
मधुसूदन—पु० मधु दैत्यके संहारक श्रीकृष्ण।
मधूक—पु० महुएका वृक्ष या पुष्प ( मति० २३० )।
मधूकरी—स्त्री० भ्रमरी। पके अन्नकी भिक्षा।
मधूरव—पु० महुएका वृक्ष या फूल। [* बीचमें।
मध्य—पु० बीच,भीतर, अन्तर। वि० बीचका। क्रिवि०*
मध्यगत—वि० बीचका।
मध्यपथ—पु० बौद्ध दर्शनकी मध्यमा प्रतिपदा या प्रतिपदा जिसमें अति सुख और दुःखके बीचका मार्ग गृहीत किया जाता है। 'छोड़कर जीवनके अतिवाद, मध्यपथसे लो सुगति सुधार, लहर २९
मध्यम—वि० बीचका। पु० एक स्वर। एक राग।
मध्यम पुरुष—पु० वह व्यक्ति जिससे कोई बात कही [ जाय।
मध्यमा—स्त्री० बीचकी अँगुली।
मध्यमिक—वि० बीचका।
मध्यस्थ—पु० बीचबिचाव करनेवाला। तसफिया करने-वाला। उदासीन।
मध्यस्थता—स्त्री० मध्यस्थ होना, बीचबिचाव।
मध्या—स्त्री० नायिकाका एक भेद। बीचकी उँगली।
मध्यान—पु० देखो 'मध्याह्न'।
मध्याह्न—पु० दोपहर।
मध्ये—क्रिवि० विषयमें।
मध्वाचार्य—पु० १८वीं सदीके एक सुप्रसिद्ध वैष्णवाचार्य।
मन—पु० चित्त, हृदय, इच्छा। एक तौल। सर्पमणि।
—अटकना = प्रेम होना।—करना = इच्छा करना।
—के लड्डू खाना = असम्भव बातें सोच सोचकर आनन्दका अनुभव करना।—टूटना = निराश होना।
—डोलना = मनको प्रलोभन देना, मनको चलाय मान करना।—देना = जी लगाना, अनुरक्त होना।

—चढ़ना = उत्साह बढ़ना। —भरना = तृप्ति या विश्वास होना। —मानना = सन्तोष होना, अच्छा लगना, अनुरक्त होना। —मारना = मनको दबाना, उदास होना। —में आना = समझ पड़ना, अच्छा लगना, चित्तमें उदय होना। —में धरना = स्मरण रखना। —में बसना = अच्छा लगना, रुचना। —में लाना = ध्यान करना, सोचना। —मोटा होना = बिगाड़ या विरक्ति होना। —लगाना, —लाना = ध्यान देना, जी लगाना, प्रेम करना। —से उतरना = विस्मृत या तिरस्कृत होना। —हारना = उत्साहहीन होना। —ही मन = भीतर ही भीतर, चुपचाप।
मनकना—अक्रि० चलायमान होना, डिगना, हिलना
मनकरा—वि० चमकीला। [ ( उदे० 'छरीदार' )।
मनका—पु० गुरिया, दाना 'करका मनका छाँड़िकै मनका मनका फेर।' साखी ९७
मनकामना—स्त्री० इच्छा, मनोरथ ( उदे० 'पूजना' )।
मनकूला—वि० स्त्री० जंगम, अस्थायी, चर।
मनगढ़ंत—वि० कपोल-कल्पित। स्त्री० कपोल-कल्पना।
मनचला—वि० साहसी, शूर, हौसिलेवाला, मौजी, रसिक।
मनचाहा, मनचीता—वि० मनोवाञ्छित, मनको अच्छा लगनेवाला 'कहँ गये नृपकिसोर मनचीता।' रामा० १२७
मनचीतना—सक्रि० मनको अच्छा लगना (साकेत २६८)
मनजात—पु० कामदेव।
मनन—पु० चिन्तन, ध्यान, गम्भीर अध्ययन।
मननशील—वि० जो किसी विषयका अच्छी तरह मनन
मननाना—अक्रि० भनभन करना, गूँजना। [करता हो।
मनवांछित—वि० अभिलषित, मनचाहा।
मनभाया, मनभावना—वि० प्रिय, मनोनुकूल।
मनभावता—वि० मनभावना, प्रिय। पु० प्रिय व्यक्ति।
मनभावन—वि० जो मनको अच्छा लगे, प्रिय।
मनमत—वि० मदोन्मत।
मनमति—वि० स्वच्छन्द, स्वेच्छाचारी।
मनमथ—पु० कामदेव।
मनमानता—वि० मनचाहा।
मनमाना—वि० मनोनुकूल, यथेच्छ।
मनमुखी—वि० मनमौजी, मनमानी करनेवाला।
मनमुटाव—पु० वैमनस्य, रंजिश।
मनमोदक—पु० मनका लड्डू, ख़याली पुलाव।
मनमोहन—वि० मनको मुग्ध करनेवाला, प्यारा पु० श्रीकृष्ण।
मनमौजी—वि० अपनी मौजके मुताबिक चलनेवाला।
मनरंज, मनरंजन—वि० मनोरञ्जक। पु० मनोविनोद।
मनरोचन—वि० सुन्दर।
मनलाडू—पु० कल्पित बात।
मनवाँ—पु० एक तरहकी कपास। नरमा।
मनवाना—सक्रि० माननेके लिए प्रेरित करना। दूसरेसे मनानेका काम कराना।
मनशा—पु०, स्त्री० आशय, मतलब, इच्छा।
मनसना—सक्रि० मंशा या इच्छा करना, निश्चय करना।
मनसब—पु० ओहदा, अधिकार, काम।
मनसबदार—पु० ओहदेदार, पदाधिकारी।
मनसा—स्त्री० इच्छा, ( उदे० 'धापना' )। मतलब, संकल्प। बुद्धि, मन 'जो ब्रजमें आनन्द हतो सो मुनि मनसहु न गहै।' सू० १९७। क्रिवि० मनसे। वि० मन सम्बन्धी, मनसे उत्पन्न।
मनसाकर—वि० इच्छित फल देनेवाला। पु० कल्पवृक्ष।
मनसाना—अक्रि० जोशमें आना।
मनसायन—वि० मनुष्योंकी चहलपहलसे युक्त, गुलजार।
मनसिज—पु० कामदेव।
मनसूख—वि० त्यागा हुआ। अप्रामाणिक ठहराया हुआ।
मनसूबा—पु० इरादा, विचार, युक्ति।
मनस्ताप—पु० आन्तरिक पीड़ा, पछतावा, अनुताप।
मनस्वी—वि० उदाराशय, ऊँचे विचारवाला।
मनहर, मनहरण, मनहरन—वि० मनोहर, सुहावना।
मनहुँ—अ० मानो, जैसे। [ पु० एक छन्द।
मनहूस—वि० बुरा, निकम्मा, अशुभ।
मना—वि० रोका हुआ, वर्जित।
मनाई—स्त्री० निषेध।
मनाक, मनाग—वि० थोड़ा, अल्प।
मनादी—स्त्री० ढिंढोरा ( पूर्ण १५ )।
मनाना—सक्रि० रुठेको प्रसन्न करनेका यत्न करना। प्रार्थना करना 'सबके उर अभिलाष अस कहहिं मनाइ महेसु।' रामा० १९९
मनावन—पु० मनानेकी क्रिया या भाव।
मनाही—स्त्री० मुमानियत, रोक।
मनि—देखो 'मणि'।

मनिका—पु० देखो 'मनका'।
मनिधर—पु० साँप।
मनिया—स्त्री० गुरिया 'गुहि गुहि देते नन्द जसोदा तनक काँचके मनियाँ'। अ० ६१। कण्ठी।
मनियार—वि० कान्तिमान्, सोहावना 'बरनौ कहा देस मनियारा।' प० ८३, ( अ० ६१ )।
मनिहारी—स्त्री० चूड़ी बेचनेवाली स्त्री।
मनी—स्त्री० मणि। गर्व, अहंकार।
मनीषा—स्त्री० बुद्धि, प्रशंसा।
मनीषी—वि० बुद्धिमान्, पण्डित। पु० वह व्यक्ति जिसे बुद्धि हो।
मनु—अ० मानो। पु० ब्रह्माके एक पुत्रका नाम।
मनुआँ,-वाँ—पु० मन ( उदे० 'जमधर' )। मनुष्य।
मनुज—पु० मनुष्य ( उदे० 'बंगा' )।
मनुजता, मनुजत्व—स्त्री० मनुष्यता, मानवता।
मनुजाद—पु० राक्षस ( रामा० ४६७ )।
मनुष, मनुष्य—पु० आदमी। पति।
मनुष्यता-स्त्री०, मनुष्यत्व—पु० मानवता, इनसानियत, शिष्टता, दयालुता।
मनुसाई—स्त्री० मनुष्यत्व, पुरुषार्थ 'देखहु कालि मोरि मनुसाई।' रामा० ४९१
मनुहार, मनुहारि—स्त्री० विनती, आदर, खुशामद। 'चलिये विप्र जहाँ यज्ञ वेदी, बहुत करी मनुहारी।' सू० २८। 'करत लाल मनुहार पै तू न लखत इहि ओर। ललित० १२६, ( उदे० 'कोट' )। सन्तुष्टि, शान्ति 'कुरला काम फेरि मनुहारी।' प० १५२
मनुहारना—सक्रि० विनती करना, मनाना, आदर करना।
मनो—अ० मानो।
मनोकामना—स्त्री० इच्छा।
मनोगत—वि० मनमें आया हुआ।
मनोगति—[illegible]मनकी गति।
मनोज—[illegible] कामदेव[illegible]
मनोज्ञ—वि० सुन्दर।
मनोनिग्रह—पु० मनको वशमें रखना, चित्तवृत्ति-निरोध।
मनोनीत—वि० मनके योग्य, पसन्द, चुना हुआ।
मनोभव—पु० कामदेव।
मनोभावन—वि० मनको अच्छा लगनेवाला, मनमोहक।
मनोभूत—पु० चन्द्रमा, शशि।
मनोमय—वि० मानसिक, मनवाला।
मनोयोग—पु० मनको किसी एक विषयपर लगाना।
मनोरंजन—पु० दिलबहलाव।
मनोरथ—पु० इच्छा, अभिलाषा।
मनोरम—वि० मनोहर, सुन्दर।
मनोरा—पु० गोबरके बने चित्र।
मनोराज—पु० मनकी कल्पना।
मनोराझूमक—पु० एक तरहका गीत ( प० ८७ )।
मनोरिया—स्त्री० एक तरहका गहना जो स्त्रियोंकी साड़ी इ० के किनारेपर टाँक दिया जाता है।
मनोवांछा—स्त्री० इच्छा।
मनोविकार—पु० चित्तका विकार, क्रोधद्वेषादि मनोभाव।
मनोविज्ञान—पु० वह विज्ञान जिसमें मनकी वृत्तियोंका विवेचन हो।
मनोवृत्ति—स्त्री० मनका झुकाव। मनका विकार।
मनोवेग—पु० मनका आवेग, मनोविकार।
मनोसर—पु० मनोविकार।
मनोहर—वि० मनोज्ञ, सुन्दर।
मनोहरता,-ताई, मनोहराई—स्त्री० सुन्दरता (दास६८)
मनोहारी—वि० मनको मुग्ध करनेवाला, सुन्दर।
मनौती—स्त्री० मन्नत, विनती। इ० की प्रतिज्ञा।
मन्नत—स्त्री० मनौती, कार्यकी सफलताके निमित्त पूजा
मन्यु—पु० क्रोध, गर्व, शोक, स्तोत्र, इ०।
मन्वंतर—पु० ब्रह्माके एक दिनका १४वाँ हिस्सा। क़हत।
मफरूर—वि० फरार, भागा हुआ ( ग़बन २८९ )।
मम—सर्व० मेरा, मेरी।
ममकार—पु० अपनी प्राप्त की हुई सम्पत्ति।
ममता—स्त्री०, ममत्व—पु० 'मेरापन', मोह, स्नेह, गर्व।
ममरखी, ममारखी—स्त्री० बधावा, मुबारकबाद, 'हम्मीर हठ ९ )।
ममाखी—स्त्री० मधुमक्खी 'जीवन मधु एकत्र कर रहीं उन ममाखियों-सा लेखो, कामायनी २७१।
ममास—पु० देखो 'मवास', ( रतन० २७ )।
ममिया—वि० सम्बन्धमें मामाके स्थानका।
ममियाउर, ममियौरा—पु० मामाका घर।
ममीरा—पु० एक पौधेकी जड़ जो नेत्र रोगमें दवाका काम देती है।
मयंक—पु० चन्द्रमा।
मयंद—पु० मृगेन्द्र, सिंह ( उदे० 'अरिंद' )।
मय—प्रत्य० युक्त, निर्मित। पु० ऊँट। घोड़ा। सुरा।

मयगल—पु० मस्त हाथी । [ एक शिल्पज्ञ दानव ।
मयन—पु० कामदेव ।
मयमंत, मयमत्त—वि० मदोन्मत्त (उदे० 'पखाल') ।
मयस्सर—वि० प्राप्त । सुलभ ।
मया—स्त्री० दया, माया, मोह, प्रीति, जीवन, संसार, कृपा 'हौं तो धाइ तुम्हारे सुतकी मया करति तुम रहियो ।' सूबे० ३१३, ( उदे० 'चिरिहार' ) ।
मयार—वि० कृपालु ( प० ९९ ) ।
मयारी—स्त्री० धरन 'खंभ जंबूनद सुविद्रुम, रची रुचिर मयारि ।' सू० १७६
मयूख—पु० किरण, ज्वाला, शोभा, प्रकाश ।
मयूर—पु० मोर पक्षी ।
मरंद—पु० मकरन्द, पुष्परस ( उदे० कागद' ) ।
मरक—पु० मरी, मृत्यु । स्त्री० इशारा, बढ़ावा 'अरतैं टरत न बर परे दई मरक मनु मैन ।' बि० ४
मरकज़—पु० केन्द्र । मरकज़ी = केन्द्रीय ।
मरकट—पु० बन्दर ।
मरकत—पु० एक मणि, पन्ना ( उदे० 'खंजरीट' ) ।
मरकना—अक्रि० दबना, दबकर टूटना ।
मरकहा—वि० मारनेवाला ( पशु ) ।
मरकाना—सक्रि० तोड़कर चूर करना। दबाकर तोड़ना।
मरकूम—वि० लिखा हुआ ।
मरगजा—वि० मला हुआ, मर्दित किया हुआ ( उदे० 'पटोरी'), 'मरगजि माल सिथिल कटि किंकिनि अरुन नैन चहुँ जाम जगे ।' स्वा० हरिदास । मैला ।
मरघट—पु० श्मशान ।
मरचा—पु० मिरचा ।
मरज़—पु० मर्ज़, रोग ।
मरजाद, मरजादा—स्त्री०मर्यादा,प्रतिष्ठा(उदे०'पासी') । सीमा, नियम, रीति ( राम० ५०८, रामा० ४१ ) ।
मरजिया—पु० समुद्रादिमें डुबकी लगानेवाला, गोताखोर 'जो मरजिया होइ तहँ सो पावै वह सीप ।' प० १४ वि०मरनेवाला,मरकर पुनः जी उठनेवाला। अधमरा ।
मरजी—स्त्री० मंशा, इच्छा, आज्ञा, खुशी ।
मरजीया, मरजीवा—पु० देखो 'मरजिया', 'समुद न डरै पैठि मरजीया ।'प० ६७,(प० १४, साखी १२५)।
मरण, मरन—पु० मृत्यु ।
मरतबा—पु० बार, दफ़ा । पद ।
मरतबान—पु० देखो 'मर्तबान' ।
मरद—पु० पुरुष । पति । वीर पुरुष ।
मरदई—स्त्री० पुरुषत्व,वीरता, मनुष्यत्व(उदे०'कनूका')
मरदना—सक्रि० मर्दन करना, चूर करना 'जेहि मधुमद मरदि महा सुर मर्दन कीन्हो ।' राम० ४९६, ( उदे० 'पारना' ) ।
मरदनिया—पु० तैलादि मलनेवाला नौकर ।
मरदानगी—स्त्री० साहस, वीरता ।
मरदाना—वि० वीरों या पुरुषोंका-सा । पुरुष सम्बन्धी । साहसी । पु०मकानका वह भाग जहाँ मर्दोंका उठना-बैठना हो ।
मरदूद—वि० नीच, दुष्ट ।
मरन—पु० मरण, मृत्यु ।
मरना—अक्रि० पञ्चत्वको प्राप्त होना, जान देना, नष्ट होना, शान्त होना, पराजित होना, कुम्हलाना, अधिक कष्ट सहना, शक्तिहीन या कान्तिहीन होना । अतिशय प्रेम करना ।
मरनि, मरनी—स्त्री० मृत्यु, मरण ( उदे० 'नेवरना' ), दुःख, विपत्ति, अन्त्येष्टि क्रिया ।
मरभुक्खा—वि० क्षुधा-पीड़ित, दरिद्र ।
मरम—पु० भेद ( उदे० 'छीन' ) । स्वरूप । प्राणमय स्थान ( रामा० २७३ ) ।
मरमर—पु० एक तरहका सफेद चिकना पत्थर ।
मरमराना—अक्रि० चरचराना ।
मरमी—वि० मर्मज्ञ, तत्त्वज्ञ ( उदे० 'कुदारी' ) ।
मरम्मत—स्त्री० किसी बिगड़ी हुई चीज़को दुरुस्त करनेकी क्रिया या भाव । मारना, पीटना ।
मरवाना, मराना—सक्रि० मारने या बध करनेके लिए प्रेरित करना ।
मरसा—पु० एक तरहका साग ।
मरसिया—पु० शोकसूचक कविता, मृत्युशोक ।
मरहट—पु० मरघट (कबीर २८५) । मोठ नामक अन्न ।
मरहटा, मरहठा—पु० महाराष्ट्र देशका रहनेवाला ।
मरहम—पु० घाव इ० पर चढ़ानेका दवाका गाढ़ा लेप ।
मरहला—पु० यात्रियोंके ठहरनेका स्थान, पड़ाव ।
मरहूम—वि० मरा हुआ, स्वर्गवासी ।
मराठा—देखो 'मरहटा' ।
मरातिब—पु० दरजा, खण्ड, ध्वजा ।
मरायल—वि० मार खानेवाला 'सठहु सदा तुम मोर मरायल ।' रामा० ५११ । निर्बल ।

मरार—पु० खलिहान। काछी ( छत्तीस० )।
मराल—पु० हंस, घोड़ा, बादल, कज्जल।
मरिंद—पु० भ्रमर।
मरिच—स्त्री० मिर्च ( मति० २०९ )।
मरियल—वि० कमज़ोर, दुबला-पतला।
मरी—स्त्री० वह संक्रामक बीमारी जिसके कारण थोड़े समयमें बहुतसे लोग मरें, महामारी। एक तरहका भूत।
मरीच—स्त्री० मिर्च। किरण ( कलस २१७ )।
मरीचि—स्त्री० किरण (मति० २०९), ज्योति,मृगतृष्णा।
मरीचिका—स्त्री० मृगतृष्णा।
मरीचिमाली—पु० सूर्य। चन्द्र।
मरीची—पु० सूर्य, चन्द्र। वि० किरणोंवाला।
मरीज़—वि० रोगी।
मरु—पु० मरुभूमि।
मरुआ—पु० एक पौधा। छाजनके या हिंडोलेके ऊपरकी लकड़ी 'मरुवा लगे नगललित लीला, सुविधि सिल्प सँवारि।' सू० १७६
मरुत, मरुत्—पु० वायु।
मरुतवान, मरुत्वान्—पु० इन्द्र, पवनपुत्र हनुमान।
मरुथल,मरुधन्वा—पु० देखो 'मरुस्थल'।
मरुधर—पु० मारवाड़।
मरुभूमि—स्त्री०, मरुस्थल—पु० रेगिस्तान।
मरुरना—अक्रि० ऐंठ जाना।
मरू—वि० कठिन। मरूकरि = कठिनाईसे 'सँभाख्यो घरी एक दूमें मरूकै'—राम० ४६५,(ललित०१८५)।
मरूक—पु० मोर। एक तरहका हिरन।
मरूरा—पु० मरोड़, ऐंठन ( साखी १३१ )।
मरोड़, मरोर—स्त्री० ऐंठन ( उदे० 'पौरिया' ), गर्व ( उदे० 'चूहरा' ), शक्ति, क्रोध 'रह्यो मोहु मिलनौ रह्यौ यौं कहि गहे मरोर।' वि० २०३(मति० २१०)।
मरोड़ना, मरोरना—सक्रि० ऐंठना, घुमाना ( उदे० 'अटकाना' )। मसलना,मर्दन कर नष्ट करना। हाथ मरोरना = पछताना 'काहू छुवै न पाये गये मरोरत हाथ।' प० ५०, ( उदे० 'झाँखना' )।
मरोड़ा—पु० पेटका एक रोग जिसमें बहुत दर्द होता है।
मरोड़ी—स्त्री० ऐंठन, गिरह। [ ऐंठन।
मरोर—स्त्री० बेचैनी, पछतावा, अफसोस 'यों मन माहँ मरोर करै जिमि चोर भरे घर पैठ न पायो।' [सुधानिधि ५६
मर्क—पु० बन्दर। हवा। शरीर।
मर्कक—पु० मकड़ा।
मर्कट;मर्कत—देखो 'मरकट', 'मरकत'।
मर्कटक—पु० बन्दर। छोटा मकड़ा।
मर्ज़ ; मर्ज़ी—देखो 'मरज़' 'मरज़ी'।
मर्तबा—दे० 'मरतबा'।
मर्तबान—पु० घी इ० रखनेका बर्तन।
मर्त्य—पु० मनुष्य। भूलोक।
मर्त्यलोक—पु० मृत्युलोक, पृथिवी।
मर्द—पु० पुरुष। साहसी मनुष्य। पति। योद्धा।
मर्दन—पु० मलने, कुचलने आदिकी क्रिया, तेल लगाना। वि० कुचलनेवाला, नाशक।
मर्दना—सक्रि० मसलना, कुचलना ( उदे० 'ठट्ट' ), मलना, नष्ट करना 'सकल मुनिगण मुकुटमणिको मर्दियों अभिमान।' के० १३१
मर्दानगी—स्त्री० बहादुरी, साहस।
मर्दाना—दे० 'मरदाना'।
मर्दी—स्त्री० बहादुरी।
मर्दुमशुमारी—स्त्री० मनुष्यगणना।
मर्दुमी—स्त्री० वीरता, मरदानगी। पुंसत्व।
मर्दूद—वि० दुष्ट, नीच, तिरस्कृत।
मर्द्दन—दे० 'मर्दन'।
मर्दित—वि० रौंदा या मला हुआ। नष्ट किया हुआ।
मर्म—पु० देखो 'मरम'।
मर्मच्छेदक—वि० देखो 'मर्मभेदी'।
मर्मज्ञ—वि० जो भेदकी बात जानता हो।
मर्मपीड़ा—स्त्री०मर्मस्थानपर आघात पहुँचानेवाली पीड़ा।
मर्मभेदक,-भेदी—वि० आन्तरिक कष्ट पहुँचानेवाला।
मर्मर—वि० पत्तोंके खड़खड़ाने आदिकी आवाज़।
मर्मरित—वि० मर्मर शब्दसे पूर्ण।
मर्मवचन—पु० हृदयको चोट पहुँचानेवाली बात।
मर्मस्पर्शी—वि० मर्मस्थानको छूनेवाला, हृदयस्पर्शी।
मर्मांतक—वि० देखो 'मर्मभेदी'।
मर्मांतिक—वि० हृदयपर प्रभाव डालनेवाला, हृदयस्पर्शी 'फिर देता दृढ़ सन्देश देशको मर्मांतिक'अनामिका८६
मर्माहत—वि० हृदयपर चोट करनेवाला, हृदयस्पर्शी।
मर्मी—वि० भेद जाननेवाला। तत्त्वज्ञ।
मर्याद, मर्यादा—स्त्री० प्रतिष्ठा, सीमा, रीति, किनारा।
मर्यादित—वि० मर्यादापूर्ण जिसकी मर्यादा या सीमा बाँध दी गयी हो।

मर्षण—पु० रगड़। माफी। धैर्य। वि० संहारक,ध्वंसक।
मलंग—पु० एक पक्षी। एक तरहके फकीर।
मल—पु० विष्ठा, मैल, पाप, विकार, दोष।
मलकना—अक्रि० मचकना, हिलना।
मलका—स्त्री० महारानी।
मलकुलमौत—पु० मृत्युदेव, यमराज।
मलखम—पु० लकड़ीका खम्भा जिसपर कसरत करते हैं।
मलखाना—वि० मल खानेवाला।
मलगजा—पु० बैंगनकी पकौड़ी। वि० देखो 'मरगजा'।
मलट—पु० लकड़ीका हथौड़ा।
मलता—वि० घिसा हुआ ( सिक्का )।
मलन—वि० मलनेवाला ( भू० ६३ )।
मलना—सक्रि० मर्दन करना, रगड़ना, मसलना, ऐंठना।
हाथ मलना = पछताना।
मलबा—पु० गिरे हुए मकानकी ईंट आदि। कूड़ा।
मलमल—स्त्री० एक महीन सूती कपड़ा।
मलमलाना—सक्रि० कई बार छुलाना या आलिंगन करना। ( आँखका ) जल्दी जल्दी खोलना और बन्द करना।
मलमास—पु० अधिकमास जो चान्द्रमानके अनुसार तीन वर्षोंपर पड़ता है।
मलय—पु० एक पर्वत, सफेद चन्दन, नन्दनबन।
मलयज—पु० चन्दन। मलय देशकी हवा।
मलयानिल—पु० वसन्त ऋतुकी या दक्षिणी हवा।
मलयुग—पु० कलियुग।
मलराना—दे० 'मल्हराना'। 'कोऊ दुलरावैं मलरावैं हलरावैं कोऊ चुटकी बजावैं कोऊ देति करतारैं हैं।'*
मलरुचि—वि० बुरी रुचिवाला,अधम। [*रामरसायन।
मलवाना—सक्रि० मलनेका काम कराना।
मलहम—दे० 'मरहम'।
मलाई—स्त्री० दूधकी साढ़ी, रस, सार।
मलाट—पु० कागजका बण्डल इ० बाँधनेका मोटा कागज।
मलान—वि० मलिन, मैला, दुखी।
मलानि—स्त्री० मलिनता, उदासी, ग्लानि।
मलामत—स्त्री० फटकार, भर्त्सना। कूड़ा, मैला।
मलार—पु० एक राग।
मलाल—पु० ग़म, दुःख। उदासी। तबीयतका उकता [जाना।
मलाह—पु० मल्लाह, केवट।
मलिंग—दे० 'मलंग', ( बि० ९६ )।

मलिंद—पु० भ्रमर।
मलिक—पु० राजा। कथकोंकी उपाधि।
मलिका—स्त्री० रानी। एक फूलदार पौधा।
मलिच्छ—पु० देखो 'म्लेच्छ'। वि० गन्दा,घृणित, क्षुद्र।
मलिन—वि० मैला, गन्दा। खराब। उदास। पु० पाप।
मलिनता, मलिनाई—स्त्री० मैलापन, नीचता।
मलिनाना—अक्रि० मलिन होना।
मलियामेट—वि० तहस नहस, ध्वस्त-विध्वस्त।
मलीदा—पु० एक ऊनी कपड़ा। चूरमा।
मलीन—वि० गन्दा, अपवित्र, नीच, उदास।
मलूक—पु० एक पक्षी, कीट-विशेष। वि० मनोहर।
मलेच्छ—दे० 'म्लेच्छ'।
मलोल—स्त्री० देखो 'मलोला'।
मलोलना—अक्रि० दुःखित होना,पछताना (रत्ना०५५७)
मलोला—पु० मलाल, मानसिक दुःख, शोक 'राधे अहो हरि भावतेको भरिकै भुज भेंटिये मेटि मलोलें।'रवि० १३। अरमान। पछतावा।
मल्ल—पु० पहलवान। योद्धा। दीपक। एक देश।
मल्लक—पु० दीपक, दाँत, नारियलका पात्र।
मल्लयुद्ध—पु० कुश्ती।
मल्लशाला—स्त्री० अखाड़ा।
मल्लार—पु० एक राग।
मल्लाह—पु० धीवर, केवट।
मल्लिका, मल्ली—स्त्री० एक फूलका पौधा। मोतिया।
मल्हराना,मल्हाना—सक्रि० पुचकारना, प्रेम दिखाना 'मधुर झुलाइ मल्हावहीं गावैं उमँगि उमँगि अनुराग' —गीता० २८५, ( उदे० 'दुलराना', 'छैया' )।
मल्हार—पु० मलार राग।
मल्हारना—सक्रि० पुचकारना।
मवक्किल—पु० असामी। मुकदमेकी पैरवीके लिए अपनी ओरसे वकील आदि नियत करनेवाला व्यक्ति।
मवरा—पु० मरुआ नामक पौधा (?) ( कबीर २४० )।
मवाज़ी—वि० अनुमित।
मवाद—पु० पीब, रतूबत। असबाब, सामग्री। दलील।
मवास—पु० शरण, शरणकी जगह (उदे० 'पास'), 'इती संपति सहित क्यों पिय देत नाहिं मवास'—गदाधर भट्ट। दुर्ग ( भ्र० १२६ ), प्राकार परके वृक्ष।
मवासी—स्त्री० छोटा दुर्ग। पु० दुर्ग-रक्षक, नायक।

मवेशी—पु० ढोर, पशु ।
मवेशीखाना—पु० पशुओंके रखे जानेकी जगह ।
मश—पु० मच्छड़ ।
मशक—पु० मसा, मच्छड़ । पानी भरनेका चर्म-पात्र ।
मशकहरी—स्त्री० मच्छड़ आदिसे बचनेके लिए पलङ्गके चारोंओर लगानेका जालीदार कपड़ा ।
मशक्कत—स्त्री० परिश्रम ।
मशगूल—वि० ( काममें ) लगा हुआ, लीन ।
मशविरा—पु० सलाह ।
मशहूर—वि० प्रसिद्ध ।
मशान—पु० श्मशान, मरघट ।
मशाल—स्त्री० कपड़ेकी खूब मोटी बत्ती ।
मशालची—पु० मशाल दिखानेवाला ।
मश्क—पु० किसी कामको करनेका अभ्यास ।
मष—पु० मख, यज्ञ ( उदे० 'नेवतना' ) ।
मषि, मषी —स्त्री० स्याही, काजल ।
मषिकूपी,-घटी—स्त्री०, मषिधान—पु० दावात ।
मष्ट—वि० चुप, मौन ।
मस—पु० मसा, मच्छड़ । स्त्री० स्याही । निकली हुई मूछोंकी रेखा ।-भींजना=मूछोंका निकलना शुरू होना ।
मसक—पु० देखो 'मशक', 'निज पौरुष अनुसार जिमि मसक उड़ाहिं अकास ।' रामा० ५१५,(उदे०'पाँसुरी') ।
मसकत—स्त्री० परिश्रम ( सूसु० १३ ) ।
मसकना—सक्रि० दबाना, दबाकर फाड़ना । अक्रि० दबनेसे फटना, टूटना ( सूवे० १८६ ) ।
मसकरा—पु० हँसोड़ 'लालच लोभी मसकरा तिनकूँ आदर होय ।' कबीर ३६ । विदूषक ।
मसकला—पु० हथियार इ० साफ करनेका एक औज़ार ।
मसकली—स्त्री० सिकली करनेका काम । तलवार आदि साफ करनेका काम ।
मसका—पु० मक्खन । दहीका पानी । मच्छड़(उदे०'जर') ।
मसकीन—वि० बेचारा, दरिद्र, साधु ( कबीर १७४ ) ।
मसखरा—पु० ठठोली करनेवाला, मजाकिया ।
मसखरी—स्त्री० हँसी-ठट्ठा ( बांजक ६९ ) ।
मसखवा,-खावा—पु० मास खानेवाला ( प० २५६ ) ।
मसजिद—स्त्री० ( मुसल्मानोंका ) उपासना-मन्दिर ।
मसनंद, मसनद—स्त्री० गद्दी, बड़ा तकिया ।
मसनवी—स्त्री० एक छन्द, कथाकाव्य ( उर्दू-फारसी ) ।
मसमुंद—पु० ठेलमठेल, धक्कमधुक्का ।
मसयारा—पु० मशालची, मशाल ।
मसरफ—पु० उपयोग ।
मसरू, मसुरू—पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा 'घेरदार घाँघरो कलित मसुरूको ।' सुधानिधि २२
मसरूफ—वि० मसरफमें लगा हुआ । काम करता हुआ ।
मसल—स्त्री० कहावत, लोकोक्ति ।
मसलन—क्रिवि० उदाहरणके लिए, मिसालके तौरपर । स्त्री० मसलनेकी क्रिया ।
मसलति, मसलहत—स्त्री० छिपा हुआ हेतु, बुद्धिमानी, गुप्त युक्ति 'बहूको बुलाय मसलहत सिखाय कान पैठ जा रसोई कोऊ परसे बेगानी ना ।' वेनी । छिपा लाभ । सलाह 'बैठे इकले जाइ करन मसलति भली'— [सुजा० १३
मसलना—सक्रि०रगड़ना,कुचलना,दबाना ।
मसला—वि० मला हुआ, दबाया हुआ ।
मसला—पु० कहावत । प्रश्न, समस्या ।
मसवासी—पु० एक मास ठहरनेवाला । स्त्री० वेश्या ।
मसविदा—पु० खर्रा, उपाय ।
मसहरी—स्त्री० देखो 'मशकहरी' ।
मसहार—पु० मांसाहारी (शृगालादि) 'मास खाइ मसहार डकारे ।' छत्र० १३९, (सुजा० १८२) ।
मसहूर—वि० मशहूर, विख्यात ।
मसा—पु० मच्छड़ । देहपर उठा हुआ मांसका दाना ।
मसान—पु० श्मशान । युद्धक्षेत्र ।-जगाना = शव सिद्ध करना 'हम तौ जरि बरि भस्म भये तुम आनि मसान जगायो ।' सूवे० ३६३ ।—की बीमारी = बच्चोंका सूखा रोग ।
मसाना—पु० पेशाब जमा होनेकी थैली, मूत्राशय ।
मसानिया—पु० श्मशानका डोम । ओझा ।]
मसानी—स्त्री० डाकिनी इ० ।
मसाल—स्त्री० मशाल ।
मसालची—पु० मशाल दिखलानेवाला ।
मसाला—पु० कोई चीज़ तैयार करनेके लिए आवश्यक वस्तुएँ । तरकारी, अचार इ० में पड़नेवाली चीज़ें । सामग्री, साधन ।
मसाहत—स्त्री० पैमाइश ( सू० ११ ) ।
मसि—स्त्री० स्याही, कालिमा, काजल, कालिख ( राम० ९४ ) । मूछोंका आना ।

मसिअर,-आर—पु० मशाल (प० १२३, १३२,१३४)।
मसिदानी-स्त्री०,-धान,-पात्र—पु० दावात।
मसिबुंदा—पु० दिठौना।
मसिमुख—वि० जिसको कलङ्क लगा हो। दुष्कर्मा।
मसियर, मसियार—दे० 'मसिअर'।
मसियाना—अक्रि० भर जाना।
मसी—स्त्री० स्याही, कालिख।
मसीत, मसीद—स्त्री० मसजिद 'माँगिके खैवो मसीत को सोइबो...' कविता० २२८
मसीना—पु० मोटा अन्न।
मसीह, मसीहा—पु० खिष्ट धर्मके प्रवर्तक प्रभु ईसा।
मसीही—पु० ईसाका अनुयायी। वि० ईसा सम्बन्धी।
मसू—स्त्री० कठिनाई।
मसूड़ा—पु० दाँतोंके ऊपर या नीचेका मांस।
मसूर—पु० एक अन्न।
मसूरा—पु०मसूड़ा। स्त्री०वेश्या। मसूरकी दाल या बरी।
मसूरिका—स्त्री० मसूरके बराबर दानोंवाली चेचक।
मसूरी,-रिया—स्त्री० एक प्रकारकी चेचक। मसूर।
मसूस—स्त्री० मसोसनेकी क्रिया या भाव।...मनमें दबी हुई इच्छा, आन्तरिक पीड़ा (रत्ना० ३७३)।
मसूसन—स्त्री० कुढ़न, मानसिक दुःख 'बाल नवेलि न रूसिबो जानति भीतर भौन मसूसनि रोवै।' रस०२२
मसूसना, मसोसना—अक्रि० मनमें दुःख करना, मनोवेगको दबाना। निचोड़ना, ऐंठना।
मसृण—वि० चिक्कण, नरम, कोमल (प्रिय० १८)।
मसेवरा—पु० मांसके बने भोज्य पदार्थ।
मसोसा—पु० मनोव्यथा।
मसौदा—दे० 'मसविदा'
मस्करा—पु० मसखरा, हँसोड़।
मस्कला—पु० सिकली करनेका औज़ार (साखी ३९)।
मस्जिद—स्त्री० मुसलमानोंके नमाज पढ़नेका स्थान।
मस्ट—वि० चुप (प० ३१)।
मस्त—वि० उन्मत्त, अभिमानी, प्रसन्न और निश्चिन्त।
मस्तक—पु० माथा, सिर।
मस्ताना—अक्रि० मस्त होना। वि० मस्त।
मस्तिष्क—पु० दिमाग़।
मस्ती—स्त्री० उन्मत्तता, मतवालापन।
मस्तूल—पु० पाल बाँधनेका डण्डा।

मस्सा—पु० देखो 'मसा'।
महँ—अ० में।
महँई—वि० भारी।
महँक—स्त्री० गन्ध।
महँकना—अक्रि० बास देना।
महँगा—वि० उचितसे ज्यादा कीमतका,अधिक मूल्यका।
महँगाई, महँगी—स्त्री० महँगापन, दुर्भिक्ष।
महँगापन—पु०अधिक मूल्यवान होनेका भाव,मूल्याधिक्य।
महंत—पु० मठाधिपति। मुखिया।
महँदी—स्त्री० एक कँटीला पौधा।
मह—वि० बड़ा, बहुत।
महक, महकान—स्त्री० बास।
महकना—दे० 'महँकना'।
महकमा—पु० सिरिश्ता, किसी कार्यका विभाग।
महकीला—वि० सुगन्धित।
महर्घ—पु० महँगी (भारत दु० १३)।
महज़—वि० केवल, मात्र। निरा।
महजिद—स्त्री० मस्जिद (भारत दु० ९)।
महत, महत्—वि० बड़ा। पु० महत्व। स्त्री० महत्ता, प्रतिष्ठा 'बचन कठोर कहत, कहि दाहत अपनी महत गँवावत।' भ्र० २८
महता—स्त्री० बड़ा होनेका भाव, बड़प्पन। अभिमान।
महताब—स्त्री० एक आतिशबाजी। चाँदनी। पु०चन्द्र।
महताबी—स्त्री० एक तरहकी आतिशबाजी।
महतारी—स्त्री० माता (रामा० २२५)।
महती—वि०स्त्री०बड़ी।स्त्री० महिमा। नारदकी वीणा।
महतु—पु० महत्त्व, महिमा 'वृन्दावन व्रजको महतु कापै बरन्यो जाइ।' सूसु० १४७
महतो—पु० प्रमुख कृषक (कबीर १६३)।...मुखिया (बु० वै० २२९)।
महत्तत्व, महत्तत्व—पु० सांख्य दर्शनके अनुसार प्रकृतिका प्रथम विकार, बुद्धितत्व।
महत्ता-स्त्री०,महत्त्व—पु०बड़प्पन,गुरुत्व,गौरव,श्रेष्ठत्व।
महद्रथ—देखो 'महारथ' (रत्ना० ४९९)।
महदाकांक्षा—बड़ी बड़ी इच्छा।
महदूद—वि० सीमित। परिमित।
महना—सक्रि० मथना, विलोडना, पिष्टपेषण करना।
महनिया, महनु—वि० मथनेवाला, नाश करनेवाला।

महनीय—वि० पूज्य, मान्य ।
महफ़िल—स्त्री० सभा, मजलिस । वह जलसा जिसमें नाचना गाना हो ।
महफ़ूज़—वि० निरापद, सुरक्षित ।
महबूब—पु० प्रेमपात्र, प्यारा ( उदे० 'गैल' ) ।
महमंत—वि० उन्मत्त 'मन कुञ्जर महमन्त था फिरता गहिर गँभीर ।' साखी १६३
महमदी, महम्मदी—पु० मुसलमान । वि० मुहम्मद-द्वारा प्रवर्तित, मुसलमानी ।
महमह—क्रिवि० सुगन्धिके साथ ।
महमहा—वि० सुगन्धित 'मुख कसतूरी महमही वाणी फूटी वास ।' कबीर १३
महमहाना—अक्रि० सुगन्धि देना ।
महमान—पु० पाहुना ।
महर—पु० एक आदरसूचक शब्द ( उदे० 'वगर' ) । मुखिया 'बेटी कौन महर की है तू ।' सूसु० १५३ । नन्द । एक पक्षी । कहार । वि० सुगन्धित ।
महरवान—वि० दयालु, कृपालु ।
महरम—पु० भेद जाननेवाला 'कोउ जरनि न जाननि-वारी वेमरहम सब लोय'—हरि० । अँगिया । अँगियाकी कटोरी ।
महरा—वि० प्रधान । पु० कहार, नौकरोंका नायक । प० [ १९१
महराई—स्त्री० श्रेष्ठता ।
महराज—पु० आदरसूचक शब्द, राजा, स्वामी ।
महराना—पु० महरोंके रहनेकी जगह (सूबे० १५९) ।
महराव—स्त्री० द्वार, खम्भों इ० के ऊपर बना हुआ अर्द्ध वृत्ताकार भाग ।
महरि, महरी—स्त्री० भद्र-महिला-सूचक शब्द, स्वामिनी, यशोदा (सू० ६८) । ग्वालिन पक्षी (भू० ९, [ प० २११) ।
महरूम—वि० वंचित ।
महरेटा—पु० महर-पुत्र, श्रीकृष्ण । महरेटी = राधिका ।
महर्लोक—पु० पृथिवीके ऊपरके सात लोकोंमेंसे चौथा ।
महर्षि—पु० श्रेष्ठ ऋषि ।
महल—पु० प्रासाद, अन्तःपुर ।
महलसरा—स्त्री० अन्तःपुर, रनिवास, जनानखाना ।
महल्ला—पु० बस्तीका एक भाग ।
महसिल—पु० महसूल उगाहनेवाला ।
महसूल—पु० किराया, कर, लगान ।
महसूली—वि० जिसपर महसूल लगाया जा सके ।
महसूस—वि० मालूम । अनुभूत ।—करना = अनुभव करना, समझना ।—होना = अनुभव होना ।
महांबुधि—पु० महासागर ।
महा—वि० बड़ा, श्रेष्ठ, बहुत ।
महाई—स्त्री० मथनेका कार्य या उसकी मजदूरी ।
महाउत—पु० हाथीवान ( प० १९ ) ।
महाउर—पु० देखो 'महावर' ।
महाकल्प—पु० ब्रह्मकल्प, ब्रह्मायु काल ।
महाकाय—पु० हाथी । शिवजीका एक गण ।
महाकाल—पु० अनन्त और अखण्ड समय । महादेव । शिवका एक गण । यमदेव, मृत्यु उज्जयिनीका प्रसिद्ध और प्राचीन देवता । [ की पत्नी ।
महाकाली—स्त्री० दुर्गाकी एक मूर्ति । महाकाल शिव
महाकाव्य—पु० कमसे कम आठ सर्गोंवाला वह प्रबन्ध काव्य जिसमें विवाह, युद्ध, सूर्योदय, सूर्यास्त, ऋतुओं इ० का वर्णन हो । बड़ा काव्य ।
महाकुमार—पु० राजाका सबसे बड़ा लड़का ।
महाखर्व—पु० सौ खर्वकी संख्या ।
महाचिति—स्त्री० ब्रह्मतत्व, महच्चेतन (कामायनी ५३) ।
महाजन—पु० भला आदमी, बड़ा या धनी मनुष्य, साहूकार, कोठीवाल ।
महाजनी—स्त्री० सूदपर रुपया देनेका व्यवसाय, कोठीवाली । वि० महाजन सम्बन्धी, महाजनोंमें प्रचलित या महाजनोंके योग्य ।
महाजल—पु० सागर, समुद्र, वारीश ।
महातम—पु० महिमा, बड़ाई, पुण्य 'कमल नैनको छाँड़ि महातम और देवको धावै ।' सू० १२
महातल—पु० पृथिवीके नीचेका एक तल ।
महात्मा—पु० उच्च आचार-विचारवाला व्यक्ति, महापुरुष । साधु । परमात्मा ।
महादंडधारी—पु० यमराज ।
महादेव—पु० शंकरजी ।
महादेवी—स्त्री० दुर्गाजी । पटरानी, प्रधान महिषी ।
महाद्रुम—पु० पीपलका पेड़ ।
महाद्वीप—पु० अनेक देशोंमें विभक्त विस्तृत भू-भाग ।
महाधन—वि० बहुमूल्य, बहुत धनवाला ।
महानंद—पु० एक मगध-नरेश ।

महानवमी—स्त्री० आश्विन शुक्ल नवमी ।
महानस—पु० भोजन बनानेका स्थान ।
महानाद—पु० बादल । हाथी । सिंह इ० ।
महानाभ—पु० एक मंत्र ।
महानिंब—पु० बकायन ।
महानिद्रा—स्त्री० मृत्यु ।
महानिशा—स्त्री० प्रलयकी रात । आधी रात ।
महानीच—पु० धोबी ।
महानुभाव—पु०सम्भ्रान्त पुरुष,महान व्यक्ति, महाशय।
महान्—वि० बड़ा, उच्च ।
महापथ—पु० राजमार्ग । हिमालयके उत्तरमें स्थित स्वर्ग-मार्ग । मृत्यु ।
महापद्म—पु० सौ पद्मकी संख्या । एक निधि ।
महापातक—पु० ब्रह्महत्या, चोरी, मद्यपान इ० प्रमुख पाप ।
महापातर, महापात्र—पु० महाब्राह्मण ।
महापुत्र—पु० पौत्र ।
महापुरी—स्त्री० राजनगर, राजधानी ।
महाप्रलय—पु० कल्पान्तके समय होनेवाला संसारका विनाश, सृष्टि विनाश-काल ।
महाप्रसाद—पु० देवताओंका नैवेद्य, जगन्नाथजीको चढ़ाया हुआ भात ।
महाप्रस्थान—पु० देहान्त । शरीर-त्यागके विचारसे की गयी हिमालयकी यात्रा ।
महाप्राण—पु० वर्गका दूसरा तथा चौथा वर्ण ।
महाबल—वि० बहुत बलवान । पु० बुद्ध, वायु ।
महाबाहु—वि० बड़ी भुजाओंवाला, बलवान ।
महाबोधि—पु० बुद्ध भगवान ।
महाब्धि—पु० महासागर ।
महाब्राह्मण—पु० अन्त्येष्टि कर्म करानेवाला ब्राह्मण,मृतक सम्बन्धी दान लेनेवाला ब्राह्मण ।
महाभाग—वि० भाग्यशाली ।
महाभारत—पु० व्यास-रचित एक ग्रन्थ । कौरवों-पांडवों-की लड़ाई । बड़ा युद्ध ।
महाभूत—पु० क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर ये पाँच महाभूत कहे जाते हैं । ये सृष्टिके मूल कारण हैं ।
महामंत्री—पु० प्रधान सचिव ।
महामरण—पु० मृत्यु ।
महामहिम—वि० महिमावान्, प्रख्यात (जीव० २०३)।
महामहोपाध्याय—पु० संस्कृतके प्रकाण्ड ... सरकारद्वारा दी जानेवाली एक उपाधि ।
महामांस—पु० गाय या मनुष्यका मांस ।
महामाई—स्त्री० दुर्गा देवी, शीतला ।
महामात्य—पु० प्रधान मन्त्री ।
महामात्र—पु० महावत । वि० धनी । प्रधान ।
महामाया—स्त्री० प्रकृति । गंगा । गौतमबुद्धकी माता ।
महामारी—स्त्री० मरी; हैजा आदि संक्रामक रोग ।
महामृत्युंजय—पु० शिवजी । एक मन्त्र ।
महाय—वि० बहुत ज्यादा ।
महायात्रा—स्त्री० महाप्रस्थान, मृत्यु ।
महायान—पु० बौद्धोंका एक प्रमुख सम्प्रदाय ।
महारंभ—वि० जिसके आरम्भके लिए बहुत यत्न करना पड़े ।
महारथ, महारथी—पु० दस हजार वीरोंसे लड़नेवाला, अद्वितीय योद्धा ।
महाराज—पु० एक आदरसूचक शब्द, राजा, स्वामी ।
महाराजाधिराज—पु० बड़ा राजा । राजाओंकी एक उपाधि ।
महाराज्ञी—स्त्री०महारानी, मलका । दुर्गा ।
महाराणा—पु० मेवाड़के राजाओंकी उपाधि ।
महारात्रि—स्त्री० महाप्रलयकी रात ।
महाराष्ट्र—पु० नर्मदाके दक्षिणका एक प्रसिद्ध देश ।
महार्घ, महार्घ्य—वि० अधिक मूल्यका, महँगा ।
महार्णव—पु० महासागर ।
महाल—पु० मुहल्ला । जमींदारीका जाबितेसे बटा हुआ हिस्सा,पट्टी ।
महालय—पु० पितृपक्ष । एक तीर्थ ।
महालया—स्त्री० पितृविसर्जनी अमावस्या ।
महावट—स्त्री० जाड़ेकी वर्षा ।
महावत—पु० हाथी चलानेवाला ।
महावर—पु० लाख इत्यादिका बना रंग, जावक ।
महावरा—पु० अभ्यास । रोजमर्रा ।
महावरी—स्त्री० महावरकी गोली 'फिरि फिरि जानि महावरी एड़ी मीड़ति जाय ।' वि० २१
महावरेदार—वि० वह (भाषा) जिसमें मुहावरे आये हों ।
महावात—पु०,महावायु—स्त्री० आँधी ।
महाविद्या—स्त्री० तंत्रमें मानी गयी दस देवियाँ ।
महाविष—पु० एक तरहका बहुत ही विषैला साँप ।
महावीर—पु० सिंह,गरुड़, हनुमानजी, जैनियोंके अन्तिम तीर्थंकर । वि० बड़ा वीर ।

महाशंख—पु० एक बहुत ही बड़ी संख्या । एक निधि । नरकंकाल । ललाट ।
महाशय—पु० सज्जन, महानुभाव, समुद्र ।
महाशून्य—पु० बृहदाकाश ।
महाश्मशान—पु० बड़ा श्मशान, काशी ।
महिं, महीं—अ० महँ, में ( उदे० 'तानना' ) ।
महि—स्त्री० धरती । महिमा ।
महिख—दे० 'महिष' ।
महिदेव—पु० ब्राह्मण ।
महिधर—पु० शेषनाग । पहाड़ ।
महिपाल—पु० राजा ।
महिमा—स्त्री० महत्ता, बड़ाई, प्रताप, बड़ा बन जानेकी [ सिद्धि ।
महिमाधर—वि० महत्वपूर्ण ।
महिमावान्—वि० प्रतापी, शक्तिशाली ।
महिमवा—देखो 'महिमावान्', ( सू० ९२ ) ।
महियाँ—अ० में '' प्रगटे भूतल महियाँ ।' सू० ३०
महियाउर—पु० मठेमें पकाया हुआ चावल (प० २७३)।
महिला—स्त्री० स्त्री, नारी ।
महिष—पु० भैंसा । एक राक्षस ।
महिषघ्नी,-मर्दिनी—स्त्री०महिषासुरको मारनेवालीदुर्गा।
महिषध्वज,-वाहन—पु० यमराज ।
महिषी—स्त्री० भैंस । पटरानी, रानी ।
महिषेश—पु० यमराज, महिषासुर ।
महिसुर—पु० ब्राह्मण ।
मही—स्त्री० धरणी, पृथिवी । पु० छाँछ, तक्र ।
महीधर—पु० पहाड़, शेषनाग ।
महीन—वि० बारीक, सूक्ष्म, पतला ।
महीना—पु० मास । माहवारी तनखाह । मासिकधर्म ।
महीप,-पति,-पाल—पु० राजा ।
महीभुज,-भृत—पु० राजा ।
महीयान—वि० बड़ा ।
महीर—स्त्री० मट्ठेकी खीर । गर्म करनेपर मक्खनके नीचे [ बैठा हुआ मैल ।
महीरुह—पु० पेड़ ।
महीसुर—पु० ब्राह्मण ।
महुअर—पु० सँपेरोंका बाजा, तूंबड़ी ( प० ८८ ) । मदारियोंका एक खेल । स्त्री० एक तरहकी भेड़ । महुआ मिलाकर बनायी गयी रोटी ।
महुआ, महुवा—पु० एक पेड़ या उसका फूल ।
महुआरी—स्त्री० महुएका बाग ।
महुकम—वि० देखो 'मुहकम' ( रतन० २८ ) ।
महुछों—वि० महोत्सव ।
महुलिया—पु० महुवा ( ग्राम० ४४५ ) । स्त्री० महुएसे बनी शराब ।
महुवरि—स्त्री० देखो 'महुअर' ।
महूख—पु० महुआ 'ऊख महूख पियूखकी तौ लगि भूख न जाय ।' बि० २०७
महूम—स्त्री० मुहिम, चढ़ाई ( हिम्मत० ३ ) ।
महूरत—पु० दो घड़ीका समय, शुभ काल, क्षण ।
महूप—पु० महुआ । शहद ( कविप्रि० १०५ ) ।
महेंद्र—पु० परमेश्वर । पर्वत-विशेष । इन्द्र ।
महेर, महेरा—पु० मठेमें पका चावल ।
महेरि, महेरी—स्त्री० महेर । उबाली हुई ज्वार । वि० झगड़नेवाला ।
महेश, महेस—पु० महादेव ।
महेशानी—स्त्री० पार्वतीजी, भवानी ( पूर्ण १६४ ) ।
महेशी, महेसी—स्त्री० पार्वती ।
महेश्वर—पु० परमेश्वर,परमात्मा (जीव० ३६७),शिवजी।
महोक, महोख, महोखा—पु० एक पक्षी (उदे०'ढेंक')।
महोच्छव, महोछा—पु० महोत्सव ।
महोदय—पु० महाशय, स्वामी ।
महोरस्क—वि० जिसका सीना चौड़ा हो ।
महोला, महौला—पु०व्याज, बहाना, धोखा ( कबीर [७१,साखी९८ ) ।
महौघ—पु० आँधी । समुद्रकी बाढ़ ।
महौज, महौजस्क—वि० अत्यन्त तेजस्वी ।
मह्यो—पु० मही, छाँछ ।
माँ—स्त्री० माता । अ० में ।
माँखना—अक्रि० क्रोध करना, अप्रसन्न होना ।
माँखी—स्त्री० मक्षिका, मक्खी ।
माँग—स्त्री० बालोंके बीचकी सीमा 'माँग पारि बेनीहिं सँवारति गूँथी सुन्दर भाँति ।' सूबे० ८२ । माँगनेकी क्रिया, जो वस्तु माँगी जाय, मुतालबा । आवश्यकता ।
माँगटीका,-फूल—पु० सिरपरका एक आभूषण ।
माँगन—पु० याचना, भिक्षुक ।
माँगना—सक्रि० याचना करना, प्रार्थना करना, बुला मँगाना 'वहाँ आजु माँगों धरि केसा ।' प० १२१ । पु० भिक्षुक ( उदे० 'जागा' ) ।

माँचना—अक्रि० शुरू होना, प्रख्यात होना, फैलना 'कीरति जासु सकल जग माँची।' रामा० १५
माँछ—पु०, माँछर—स्त्री० मछली।
माँछी—स्त्री० मक्खी ( उदे० 'जागा' )। [*जमीन।
माँज—स्त्री० नदीके पीछे हटनेके कारण निकली हुई *
माँजना—सक्रि० मलना, साफ या पवित्र करना ( अ० ५२ )। गुड्डीके डोरेको मज़बूत बनाना।
माँजर—स्त्री० पंजर, ठठरी।
माँजा—पु० प्रथम वर्षाका फेन 'माँजा मनहु मीन कहँ व्यापा।' रामा० २७२
माँझ—अ० में, बीच, भीतर 'नैना नैनन माँझ समाने।' सू० १४८। पु० अन्तर।
माँझा—पु० एक गहना। सरेस और शीशा चढ़ाया हुआ गुड्डीका डोरा। नदीके बीचमें पड़ी हुई ज़मीन।
माँझिल—वि० मँझला, बीचका।
माँझी—पु० मल्लाह। मध्यस्थ।
माँट—पु० मटका। अटारी।
माँठ—पु० मटका, कुंडा। एक मिष्टान्न।
माँठी—स्त्री० एक पकवान। धातुकी बनी एक तरहकी चूड़ी।
माँड—पु० भातका पसावन। ब्रह्माण्ड 'सकल मांड मैं रमि रह्या साहिब कहिये सोय।' कबीर ६०
माँडना—सक्रि० सानना, लगाना, बनाना, ठानना 'सुनहु सूर हमसों हठ माँडति कौन नफा करि लैहौ।' सूबे० १४३। 'हौं तुमसे फिर युद्धहिं माडौं।' राम० १६०, ( उदे० 'छाँड़ना' )। स्थापित करना ( उदे० 'माडना' )। दायँ कराना ( सूवि० ४६ )।
माँडनी—स्त्री० मगजी, किनारा।
मांडलिक—पु० अधीन या कर देनेवाला राज।
मांडव—पु० मँडवा, मंडप 'रचि रचि मानिक माँडव छावा।' प० १३१
मांडवी—स्त्री० जनकजीके भाईकी पुत्री ( भरत-पत्नी )
माँडा—पु० एक तरहकी घीमें पकी रोटी, पराठा ( प० २८० )। मंडप। एक नेत्ररोग।
माँड़ी—स्त्री० माँड़, कपड़ेका कलफ।
माँडो, माँडौ, माँढा—देखो 'माँडव'।
माँड्यो—पु० मंडप, देवगृह, अतिथिगृह।
माँत,माँता—वि० मस्त ( रामा० ४९८ ), उन्मत्त। ※
माँतना—अक्रि० उन्मत्त होना। [※ कान्तिहीन।

मांत्रिक—पु० तंत्रमंत्रका काम करनेवाला।
माँथ—पु० माथा।
माँथबंधन—पु० साफा। स्त्रियोंके बाल बाँधनेकी डोरी
माँद—स्त्री० सिंह इ० के रहनेकी जगह। खोह, गुफा वि० मन्दा, फीका, हलका।
माँदगी—स्त्री० रोग, थकान 'अब सवार तुम होउ, माँदगी कटककी।' सुजा० १६२
माँदर—पु० एक तरहका मृदंग ( प०१२०, २६० )।
माँदा—वि० थका हुआ।
मांद्य—पु० मन्दता। कमी। रोग।
मांधाता—पु० अयोध्याका एक सूर्यवंशी राजा।
माँपना—सक्रि० नापना। अक्रि० मतवाला होना।
माँयँ—अ० माँहि, में, मध्य। स्त्री०मातृका पूजनके बनाया गया एक पक्वान्न ( बुंदेल० )।
मांस—पु० गोश्त, आमिष।
मांसपेशी—स्त्री० शरीरके भीतर रहनेवाला मांसपिण्ड
मांसभोजी, मांसाहारी—पु० मांस खानेवाला।
मांसल—वि० मांसयुक्त, हृष्ट पुष्ट, दृढ़।
मांसलता—स्त्री० मांसयुक्तता।
माँसी—पु० एक तरहका रंग। वि० उरदके रंगका।
माँह, माँहि—अ० में, भीतर।
मा—स्त्री० माता, लक्ष्मी, कान्ति।
माइँ, माईं—स्त्री० विवाहके समयका एक पकान्न, 'माँयँ'। मामी। कुल देवता।
माइ, माई—स्त्री० माँ, बूढ़ी या सम्माननीय स्त्री 'सालु तुम्हार कौसिलहिं माई।' रामा० २०७, स्त्रियोंका सम्बोधन, सखी ( उदे० 'फँदना' )। कुल-देवता '...अरु माइनमें थपिहौ।' सू० ४३।
माइका—पु० नैहर।
माकूल—वि० युक्तिसंगत। मुनासिब, ठीक। समझदार। कायल। खासा, अच्छा।
माक्षिक, माक्षीक—पु० मधु। एक खनिज पदार्थ।
माख—पु० क्रोध,अप्रसन्नता। पश्चात्ताप। गर्व 'तिन्ह महुँ रावन तैं कवन सत्य बदहि तज माख।' रामा० ४६३
माखन—पु० मक्खन ( उदे० 'बछरुवा' )।
माखना—अक्रि० क्रुद्ध या अप्रसन्न होना '... तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माखा।' रामा० ५२। 'ठावहिं ठाँव कुँवर सब माखे।' प० १०३। बुरा मानना।

माखनी—वि० मक्खन सम्बन्धी, मक्खनका 'वदन रोज बहुलाल, ताम्र, माखनी रंगके कोमल' ग्राम्या ७६
माखी—स्त्री० मक्षिका ।
मागध—पु० एक देश । जरासन्ध । एक तरहके भाट ।
मागधी—स्त्री० मगधकी प्राचीन भाषा ।
माघ—पु० पूसके बादका महीना । कुन्द-पुष्प ।
माच—पु० मंच । मार्ग ।
माचना—दे० 'माँचना', ( उदे० 'तरभर, दीन० १५९ ), 'माच्यो खैरभैर राजमन्दिरमें भारी है ।' रघु० २६
माचल—वि० हठ करनेवाला, मचलनेवाला ( सूवि० २८ ) । पु० रोग । क़ैदी । ग्रह ।
माची—स्त्री० मकानकी कुर्सी (भू० ६, सू वि० १४ ) ।
माछ—पु० मछली ( उदे० 'टांक' ) ।
माछर—पु० मछली । मच्छड़, मसा 'माछी कहै अपनो घर माछरु सूसो कहै अपनो घर ऐसो ।' के० ७७
माछरी—स्त्री० मछली ( उदे० 'वगा' ) ।
माछली—स्त्री० मछली ( उदे० 'चहोड़ना' ) ।
माछी—स्त्री० मक्खी ( उदे० माछर' ) ।
माजरा—पु० वाक़या, घटना, हाल । [ ॐबरफी इ० ।
माजून—स्त्री० एक तरहका अवलेह । भाँग मिली हुई ॐ
माजूफल—पु० एक तरहका बीज या गोटा जो ओषधिके काममें आता है । [ ( गबन ३७७ ) ।
माजूर—वि० उज्र किया गया, लाचार, बेबस
माझा—पु० कमर 'पैर, माझा, हाथ, गरदन, भौहें मटका नाच अफ्रीकन हो या योरोपीयन, सबमें मेरी ही गढ़न' कुकुरमुत्ता १०
माट—पु० दही रखनेका घड़ा 'सूरदास प्रभुके गुन ऐसे दधिके माट भूमि ढरिकाये ।' सूवे० १३५ । मटका 'मानहु नील माटते काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे ।' भ्र० १८
माटा—पु० आम इ० के पेड़ोंपर रहनेवाले लाल चींटे ।
माटी—स्त्री० मिट्टी, धूल, शरीर 'दिस्टि जो माटी सौं करै माटी होइ अमोल ।' प० ७६
माठ—पु० मिट्टीका घड़ा ( गीता० ३७६ ) । एक पकवान, बड़ी टिकिया ( प० २९५ ) (उदे० 'पिराक') ।
माठर—पु० कलाल । ब्राह्मण ।
माठा—पु० मही, तक्र ( प० १७३ ) ।
माठी—स्त्री० एक तरहकी कपास ।
माड़ना—सक्रि० देखो 'माँडना', 'सुमति सुन्दरी परसि प्रिया रस लम्पट माड़ी आरि ।' सू० १२४ । मण्डित करना, पहनना, पूजना । अक्रि० जाना, फिरना ।
माड़व—पु० मण्डप ।
माड़ी—स्त्री० चावल आदिको पकाकर निकाला हुआ रस जो वस्त्रोंपर लगाया जाता है ।
माढ़ा—पु० ऊपरकी बैठक, कोठा ।
माढ़ी—स्त्री० कुटी, छोटा मन्दिर । मञ्च, मचिया 'को पालक पौढ़ै, को माढ़ी । प० २९८
माणव—पु० बच्चा । मनुष्य ।
माणवक—पु० नीच मनुष्य । नवयुवक । बटु ।
माणिक, माणिक्य—पु० एक रत्न, पद्मराग, लाल ।
मातंग—पु० हाथी, चाण्डाल 'मदमत्त यदपि मातंग सग' —राम० १५, ( के० १२२ ) ।
मात—वि० उन्मत्त । पराजित । स्त्री० पराजय । माता ।
मातदिल—वि० न अधिक गरम, न अधिक ठण्ढा (जलवायु या ओषधि ) । [ ( दीन० १५९ ) ।
मातना—अक्रि० नशेमें चूर होना । उन्मत्त होना
मातबर—वि० जिसका इतबार किया जा सके, विश्वसनीय ।
मातम—पु० किसीके मरनेका शोक ।
मातमपुर्सी—स्त्री० मृत व्यक्तिके घर जाकर उसके सम्बन्धियोंके साथ समवेदना प्रकट करनेका कार्य ।
मातमी—वि० शोक-सूचक । [ मारनेवाला ।
मातरिपुरुष—पु० घरमें ही माता इ० के सामने डींग
मातल—वि० मतवाला, मस्त 'जस मातल हथिया हुमकति जाति ।' रहीम ३७
मातलि—पु० इन्द्रका सारथी ।
मातलिसूत—पु० इन्द्र ।
मातहत—पु० अधीनस्थ कर्मचारी ।
मातहती—स्त्री० अधीनता ।
माता—स्त्री० मा, जननी, सम्मानार्ह स्त्री । शीतला ।
मातामह—पु० नाना । [ वि० मदोन्मत्त ।
मातु—स्त्री० माँ ।
मातुल—पु० मामा । धतूरा ।
मातृका—स्त्री० दाई, माता ।
मातृभूमि—स्त्री० पूर्वजोंकी भूमि, स्वदेश ।
मातृपूजा—स्त्री० विवाहमें पितरोंकी पूजाकी एक रस्म ।
मातृभाषा—स्त्री० वह भाषा जिसे बच्चा अपने माता-पितासे प्राप्त करता है ।

मातृष्वसा—स्त्री० माताकी बहन, मौसी ।
मात्र—अ० बस, भर, केवल ।
मात्रा—स्त्री० ह्रस्व अक्षरके उच्चारणका समय, स्वर-सूचक चिह्न । दवाकी खुराक, परिमाण ।
मात्रिक—वि० मात्रा सम्बन्धी ।
मात्सर्य—पु० ईर्ष्या ।
मात्स्य—वि० मछली-सम्बन्धी ।
माथ,माथा—पु० मस्तक । माथा कूटना, धुनना, या पीटना = सिर पीटकर शोक प्रकट करना । माथा ठनकना = पहलेसे ही अमङ्गलकी आशङ्का होना । माथे चढ़ाना, या धरना, माथे मानना = आदर सहित स्वीकार करना ।
माथना—सक्रि० मन्थन करना ।
माथे, माथै—क्रिवि० मस्तकपर, भरोसे ।
माद—पु० ग़रूर । उन्मत्तता । हर्ष ।
मादक, मादिक—वि० नशीला । पु० नशा उत्पन्न करनेवाली वस्तु ।
मादकता, मादिकता—स्त्री० नशीलापन ।
मादन—वि० मादक 'जैसे असंख्य मुकुलोंका मादनविकास कर आया ।' कामायनी २९१ ।
मादर—दे० 'माँदर' ( उदे० 'तूर' ) ।
मादर, मादरिया—स्त्री० मा 'मादरिया घर बेटी आई ।'
मादरज़ात—वि० सहोदर । जन्मका । नग्न । [कबीर ।
मादा—स्त्री० स्त्री जातिका जीवधारी (जीवजन्तु) ।
माद्दा—पु० योग्यता । सृष्टिका उपादान द्रव्य । किसी वस्तुका उपादान या मूल ।
माद्री—स्त्री० नकुल-सहदेवकी जननी । [पेड़ ।
माधव—पु० श्रीकृष्ण, वसन्तऋतु, वैशाखमास, महुएका
माधविका, माधवी—स्त्री० एक लता । एक प्रकारकी चमेली । वसन्तकी, वैशाख मासकी 'एक लघु ज्वाला-मुखी अचेत माधवी रजनीमें अश्रांत' कामायनी ४७
माधुरई, माधुरता—स्त्री० मिठास ।
माधुरि, माधुरिया—स्त्री० माधुर्य, सुन्दरता 'सूर प्रभु अँग निरखि माधुरि मदन तनु पर्यो दण्ड ।' सू० ८७
माधुरी—स्त्री० माधुर्य, सौन्दर्य । शराब ।
माधुर्य—पु० मिठास, सौन्दर्य ।
माधैया, माधो—पु० माधव, श्रीकृष्ण ।
माध्यम—पु० कार्यका साधन । वि० बीचका ।
माध्यस्थ—पु० पञ्च, बीचबिचाव करनेवाला ।
माध्याकर्षण—पु० पृथिवीके मध्यभागकी ... जिससे वह सभी पदार्थोंको अपनी ओर खींचती है
माध्व—पु० एक वैष्णव सम्प्रदाय । एक तरहकी शराब
माध्वी—स्त्री० एक तरहकी शराब ।
मान—पु० सम्मान, गर्व, प्रतिष्ठा, रूठनेका भाव ( उदे 'तट') । पैमाना । परिमाण । (उदे०'झूमका') । शक्ति
मानगृह—पु० कोप-भवन ।
मानचित्र—पु० किसी देश या स्थानका नकशा ।
मानता—स्त्री० मनौती, प्रतिज्ञा ।
मानदंड—पु० नापनेका डण्डा, पैमाना ।
मानधन—पु० अभिमानी व्यक्ति ।
मानना—सक्रि० स्वीकार करना ( उदे० 'तरना' ), समझना, आदर करना ।
माननीय—वि० आदरणीय । मान लेने योग्य ।
मानपरेखा—पु० आशा, भरोसा ( भ्र० १८ ) ।
मानमंदिर—पु० वेधशाला । कोपभवन ।
मानमनौती—स्त्री० मन्नत । रूठना और मनाना ।
मानमरोर—पु० वैमनस्य, बिगाड़ ।
मानरंध्रा—स्त्री० प्राचीनकालकी जलघड़ी ।
मानव—पु० मनुष्य । वि० मनुष्योचित ।
मानवक—पु० निम्न श्रेणीका आदमी । बौना ।
मानवता, मानवपन—स्त्री० मनुष्यत्व ।
मानवी—स्त्री० स्त्री । वि० मनुष्य सम्बन्धी ।
मानस—पु० मन । मनुष्य 'मनु अनेक मानस उपजाये ।' छत्र० १ । मानसरोवर । दूत । सङ्कल्प । वि० मानसिक, मनोजात ।
मानसर,-सरोवर—पु० हिमालयके उत्तरकी एक बड़ीझील।
मानसिक—वि० मन सम्बन्धी ।
मानसी—वि० मनसे उत्पन्न । स्त्री० मन.कृत पूजा ।
मानहानि—स्त्री० अपमान ।
मानहुँ—अ० मानो, जनु ।
माना—सक्रि० नापना, जाँच करना ( गीता० ३७७ ) । अक्रि० अमाना, अटना 'इन मेरे लोभी नैननिमें सोभा-सिन्धु न मात ।' व्यासजी, ( सूरा० ७० ) ।
मानिंद—वि० तुल्य, नाईं, सदृश ।
मानिक—पु० पद्मराग, लाल ।
मानिता—स्त्री० घमण्ड, मान ।

मानिनी—स्त्री० रुष्टा नायिका। वि० स्त्री० रुष्टा, गर्भवती।
मानी—वि० अभिमानी, प्रतिष्ठित। पु० अर्थ, मतलब।
मानुख, मानुष—पु० मनुष्य (उदे० 'उच्चारना')। वि० मनुष्य-सम्बन्धी।
मानुषिक—वि० मनुष्य-सम्बन्धी, मनुष्यका।
मानुषी—वि० मनुष्य-सम्बन्धी। स्त्री० स्त्री।
मानुस—पु० मनुष्य।
माने—पु० अर्थ, मतलब।
मानौं, मानो—अ० जैसे, जानो, गोया।
मान्य—वि० पूज्य, आदरणीय।
माप—स्त्री० नाप, तौल, जाँच, मान।
मापक—पु० मापनेवाला।
मापना—सक्रि० नापना, तौलना, परिमाण देखना। अक्रि० मतवाला होना।
माफ़—वि० क्षमित।—करना = क्षमा करना।
माफ़क़त, माफ़िकत—स्त्री० मेलजोल, मैत्री, अनुकूलता।
माफ़िक़—वि० अनुसार, मुताबिक़।
माफ़ी—स्त्री० क्षमा। बे-लगान ज़मीन।
माम—पु० ममत्व; अधिकार।
मामता—स्त्री० प्रेम, ममता, अपनापन।
मामलत,-लति—स्त्री० झगड़ेका विषय। मामला।
मामला, मामिला—पु० काम, व्यवहार। मुक़दमा, विषय (उदे० 'स्वामी')।
मामा—पु० मातुल। स्त्री० माँ, पाचिका, दासी, बुढ़िया।
मामी—स्त्री० मामाकी स्त्री। अपनी त्रुटि न मानना। —पीना = अपनी त्रुटिपर ध्यान न देना (अ० १७)।
मामूल—पु० नित्यनियम, रीति, अभ्यास, बन्धेज।
मामूली—वि० साधारण, बँधा हुआ। नियमित।
माय—स्त्री० देखो 'माई', 'माया'। 'मेरे गुरुको धनुष यह सीता मेरी माय।' राम० ७८
मायक—पु० नैहर। वि० छली, मायावी।
मायका—पु० नैहर।
मायन—पु० मातृका पूजनकी तिथि।
मायनी—स्त्री० मायाविनी, ठगिनी।
मायल—वि० मिला हुआ, प्रवृत्त।
माया—स्त्री० छल, कपट, मोह, भ्रम, धन, लक्ष्मी, प्रकृति, जादू, शक्ति, प्रेरणा, ममता, दया। माता।
मायाकर—पु० माया फैलानेवाला, जादूगर।
मायापात्र—पु० धनवान् व्यक्ति। [समझता हो।
मायावादी—पु० वह जो संसारको केवल माया या भ्रम
मायाविनी—स्त्री० माया या छल करनेवाली, धूर्त स्त्री, [ठगिनी।
मायावी—वि० छली। पु० एक दानव।
मायिक—वि० मायावी, मायाका, बनावटी।
मायी—पु० जादूगर। माया करनेवाला, ईश्वर।
मायूर—वि० मोर सम्बन्धी। पु० मोर।
मायूस—वि० निराश।
मायूसी—स्त्री० नाउम्मेदी, नैराश्य।
मार—पु० कामदेव। स्त्री० प्रहार, आघात, युद्ध (भू० १२८)। माला (राम० १३०) अ० बहुत।
मारक—वि० संहारक। शमन करनेवाला (ओषधि इ०)।
मारका—पु० लड़ाई, मुक़ाबला। निशान। मारकेका = महत्वपूर्ण, बड़ा।
मारकाट—स्त्री० मारने काटनेकी क्रिया या भाव, लड़ाई।
मारकीन—पु० एक तरहका मोटा कपड़ा। 'लट्ठा'।
मारकेश—पु० ग्रहोंका घातक योग।
मारग—पु० पथ, रास्ता (उदे० 'निबहना' 'ओग')। —मारना = पथिकोंको लूटना। —लगना या लेना = रास्ता लेना, चल देना।
मारगन—पु० बाण 'राम-मारगन-गन चले लहलहात जनु व्याल।' रामा० ५०७। भिक्षुक।
मारजन—पु० परिष्कार, सफ़ाई।
मारजार—पु० बिल्ली।
मारण—पु० प्राण लेना। तान्त्रिकोंका एक प्रयोग।
मारतंड—पु० सूर्य।
मारतौल—पु० एक तरहका हथौड़ा।
मारना—सक्रि० पीटना, ज़ोरसे पटकना (उदे० 'तमकना'), दण्ड देना 'असाधु साधु बूझि के यथापराध मारिये।' राम० ३८६। गिराना, वध करना, फेंकना, चलाना, सताना, दबाना, तजिकै सुरारि रिसचित्त मारि'— राम० ७७। नष्ट करना, हड़पना, हथियाना। डसना। गाल मारना = देखो 'गाल'।
मारपीट—स्त्री० मारने पीटनेकी क्रिया।
मारपेच—पु० धोखेबाज़ी। [७ रहनेवाला।
मारफत—स्त्री० ब्रह्मज्ञान। दे० 'मार्फत'।
मारवाड़—पु० मेवाड़ या उसके आस पासका देश।
मारवाड़ी—स्त्री० मारवाड़की भाषा। पु० मारवाड़का

मारा—स्त्री० माला 'टूट आँसु जनु नखतन्ह-मारा।'†
मारात्मक—वि० घातक, प्राणसंहारक। [†प० २११
मारामार—स्त्री० मारपीट। क्रिवि० जल्दी जल्दी, [शीघ्रतापूर्वक।
मारिच,मारीच—पु० एक राक्षस।
मारी—स्त्री० साङ्घातिक संक्रामक रोग, महामारी।
मारुत—पु० वायु।
मारुति—पु० हनुमान, भीम।
मारू—पु० बड़ा नगाड़ा, युद्धके समयका एक राग। मरुदेशवासी (दीन० १११)। वि० मारने या बेधनेवाला।
मारे—अ० कारण।
मार्ग—पु० पथ, रास्ता। मार्गशीर्ष।
मार्गन—देखो 'मारगन'।
मार्गशिर,-शीर्ष—पु० अगहन।
मार्गिक—पु० मुसाफिर। व्याधा।
मार्गी—पु० मुसाफिर। वि० स्वमार्गपर जानेवाला (ग्रह)।
मार्जन-पु०,मार्जना—स्त्री० परिष्कार, सफाई। क्षमा किया जाना।
मार्जनीय—वि० शुद्धि या संस्कारके योग्य। क्षम्य [(प्रिय० १२२)।
मार्जार—पु० बिल्ली।
मार्जित—वि० साफ किया हुआ।
मार्तंड—पु० सूर्य। अकवन।
मार्दव—पु०कोमलता,दयालुता,सहृदयता।निरभिमानता।
मार्फ़त—अ० द्वारा, जरियेसे।
मार्मिक—वि० असर डालनेवाला। मर्मज्ञ।
माल—स्त्री० माला, पंक्ति। पु० मल्ल, जवान। सामान, धन। चीज़। रक़म। बढ़िया भोजन। चरखेकी डोरी। करकी आमदनी। ऊँची भूमि, पठार, सड़कके अगल-बगलकी कच्ची भूमि जिसपर बैलगाड़ियाँ चलती हैं। 'पीरबख्श एक बच्चेको दुआ दे रहा है, पीपलकी डालपर कूक रही है कोयल, मालपर एक बैलगाड़ी चली जा रही है।' अणिमा १००।
मालकोश, मालकौश—पु० एक रागका नाम। 'मालकौश ज्यों वीणापर' अनामिका १२६।
मालखाना—पु० भण्डारघर।
मालगाड़ी—स्त्री० माल ढोनेवाली रेलगाड़ी।
मालगुज़ारी—स्त्री० भूमिकर, लगान।
मालगोदाम—पु० व्यापारिक माल रखनेका स्थान।
मालति,मालती—स्त्री० एक लता।
मालदार—वि० धनी।
मालन—स्त्री० मालीकी स्त्री।
मालपुआ,-पुवा—पु० एक पकवान।
मालपूआ,-पूवा—देखो 'मालपुआ'।
मालव—पु० एक देश, एक राग।
माला—स्त्री० हार, पंक्ति, समूह, सुमरनी।
मालाकार—पु० माली।
मालादीपक—पु० एक काव्यालंकार।
मालामाल—वि० धन-सम्पन्न।
मालिक—पु० स्वामी, पति, ईश्वर, माली। धोबी।
मालिका—स्त्री० माला। एक तरहकी शराब। चमेली। एक गहना।
मालिकाना—क्रिवि० मालिककी तरह। पु० मालिकका हक़। वि० प्रभुत्व सम्बन्धी।
मालिन—स्त्री० मालीकी स्त्री।
मालिनी—स्त्री० मालीकी स्त्री। गङ्गा। गौरी। एक छन्द।
मालिन्य—पु० मैलापन, विषण्णता।
मालियत—स्त्री० धन। मूल्य।
मालिश—स्त्री० मर्दन, मलना।
माली—पु० बाग़बान, फूल बेचनेवाला। स्त्री० माला (समूह)का स्त्रीलिङ्ग रूप 'पर मुझे डूबनेका भय है, भाती तटकी चल जल-माली' गुञ्जन ६३। वि० जो माला पहने हो। आर्थिक।
मालीदा—पु० देखो 'मलीदा'।
मालूम—वि० ज्ञात, विदित।
मालोपमा—स्त्री० एक अर्थालङ्कार, 'होयँ एक उपमेयके जहँ उपमान अनेक।'
माल्य—पु० पुष्पमाल, पुष्प।
माल्यकोश—देखो 'मालकोश' (साकेत ३२८)।
माल्यवान्—पु० एक राक्षस। एक पहाड़।
मावत—पु० महावत, हाथीवान।
मावस—स्त्री० अमावस्या 'अलिसे मावस रैनसे बाला तेरे बार।' भाषाभूषण।
मावा—पु० निचोड़, माँड़, खोया, अण्डेका रस, मसाला। स्त्री० माता (ग्राम० १०५)।
माशा—पु० सोना इ० तौलनेका एक मान। आठ रत्ती।
माशी—वि० उर्दके रङ्गका। पु० उर्दके रंगकासा रंग।
माशूक़—पु० प्रेमपात्र।

माशूका—स्त्री० प्रिया, प्रियतमा ।
माप—पु० क्रोध, गर्व, 'तुम्हरे लाज न रोप न माषा ।' रामा० ४६२ । उड़द । शरीरका मसा ।
मापना—देखो 'माखना' ( रघु० १९१ ) ।
मास—पु० महीना । मांस, आमिप ।
मासना—अक्रि० मिश्रित हो जाना, मिल जाना ।
मासप्रत्र,-फल—पु०मास भरका शुभाशुभ फलसूचकपत्र।
मासभृत—पु०मासिक वेतनपर काम करनेवाला मजदूर।
मासा—दे० 'माशा' ।
मासिक—वि० मास सम्बन्धी, महीने महीने होनेवाला।
मासी—स्त्री० मौसी ।
मासीन—वि० एक महीनेकी अवस्थाका ।
मासूम—वि० बेकसूर, बेगुनाह ।
माहँ—अ० में, के भीतर ।
माह—पु० महीना । उड़द । माघ मास 'जियकी जीवनि जेठ सो माह न छाँह सुहाय ।' वि० ९५
माहत—स्त्री० महत्ता ।
माहताब—पु० चन्द्रमा ।
माहताबी—स्त्री० एक तरहकी आतिशबाजी । एक तरहका नीबू। आँगनमें खुला चबूतरा ।
माहना—अक्रि० उमड़ना, उमङ्गमें आना ।
माहर—पु० फल-विशेष, इन्द्रायन ।
माहली—पु० अन्तःपुरका सेवक,सेवक (कविता० २०८)।
माहवार—वि०हर मासका। पु० वेतन। क्रिवि० हर मास।
माहवारी—वि० महीनेका, महीने महीने होनेवाला।
माहाँ, माहिं, माही—अ० में । क्रिवि० भीतर ( उदे०
माहा—पु० कपड़ा, पट (बीजक १२८)। [ 'अतीत' ) ।
माहात्म्य—पु० महिमा, गौरव ।
माहिर—वि० निपुण, जानकार ।
माहिला—पु० मल्लाह, केवट ।
माहिष्मती—स्त्री० नर्मदा तटस्थ एक प्राचीन नगरी ।
माही—स्त्री० मछली । माहीगीर = मछुआ ।
माहुर—पु० विष ।
मिंगी—स्त्री० बीजके भीतरका भाग ।
मिंड़ाई—स्त्री० माँड़नेकी क्रिया या मज़दूरी ।
मिंत—पु० मित्र ( उदे० 'चिचावना', माखी २४ ) ।
मिआद—स्त्री० अवधि, नियत समय ।
मिआन—पु० पालकी । वि० छोटे डीलडौलका ।
मिकदार—स्त्री० मात्रा, परिमाण ।
मिकनातीस—पु० चुम्बक पत्थर ।
मिचना—अक्रि० ( नेत्र ) बन्द होना ।
मिचराना—अक्रि० भूख न रहनेपर अरुचिसे थोड़ा थोड़ा खाना ।
मिचलाना—अक्रि० वमनकी प्रवृत्ति होना ।
मिचकी—स्त्री० छलाँग ( साकेत ३२८ ) ।
मिचली—स्त्री० देखो 'मतली' ।
मिचौनी—स्त्री० बन्द करनेकी क्रिया, आँखमिचौनी, 'खेलमिचौनी-सी निशि भोर' पल्लव ।
मिछा—वि० मिथ्या, झूठ ।
मिजराब—स्त्री० सितार बजानेकी अँगूठी ।
मिज़ाज—पु० स्वभाव, तबीयत । गर्व ।
मिज़ाजदार, मिज़ाजी—वि० घमण्डसे भरा हुआ ।
मिजाज़पुरसी—स्त्री० कुशल-मङ्गल दर्याफ्त करना ।
मिटना—अक्रि० नष्ट होना, अन्यथा होना, दूर होना ।
मिटाना—सक्रि० दूर करना, नष्ट करना, बिगाड़ना ।
मिटिया—स्त्री० मिट्टीकी छोटी हाँड़ी ।
मिटियाना—सक्रि० मिट्टी लगाकर साफ करना ।
मिटिया फूस—वि० जो बहुत कमज़ोर हो ।
मिट्टी—स्त्री० मृत्तिका,धूल, भस्म, भूमि, गठन,मृतदेह,देह —हो जाना = बेकार हो जाना,नष्ट होना(जीव२०९
मिट्ठू—पु० तोता । वि० प्रिय-भाषी, चुप रहनेवाला
मिठबोलना,-बोला—पु० मीठी बातें करनेवाला ।
मिठलोना—वि० जिसमें नमक कम हो ।
मिठाई—स्त्री० मीठी वस्तु । मिष्टान्न, मिठास, 'तेरे अं अगमें मिठाई औ लुनाई भरी'—ललित ६१
मिठाना—अक्रि० मीठा होना ।
मिठास—स्त्री० मीठापन, माधुर्य (पुं० भी 'कितौ मिठास दयो दई इते सलोने रूप ।' वि० १९५ ) ।
मिठौरी—स्त्री० एक तरहकी उर्दकी बरी ।
मिड़ाई—स्त्री० मीड़नेकी क्रिया या मज़दूरी ।
मिढुलिया—स्त्री० मढ़िया, कुटी ( ग्राम० ३४८ ) ।
मितंग—पु० मतङ्ग, हाथी ।
मित—वि० परिमित, अल्प, जो हदके भीतर हो । स्त्री० मिति,सीमा 'ममकृत दोस लिखैं वसुधा भर तऊ नहीं मित नाथ ।' सू०
मितभाषी—पु० कम बोलनेवाला । [
मितमति—वि० मन्द बुद्धिवाला ।

मितव्यय—पु० किफ़ायत ।
मितव्ययी—वि० कम खर्च करनेवाला ।
मिताई—स्त्री० मित्रता ( प० ९ ) ।
मितार्थ—पु० दूतोंका एक भेद ।
मिताशी—वि० मिताहारी, कम भोजन करनेवाला ।
मिति—स्त्री० सीमा, अवधि, परिमाण ।
मिती—स्त्री० तिथि, दिन ।
मितीकाटा—पु० सूद जोड़नेका एक ढङ्ग । हुण्डीकी मुद्दत तथा ब्याज सम्बन्धी एक तरहका हिसाब ।
मित्त,मित्र—पु० सुहृद,सखा,हितू 'क्यों रहीम ढूँढ़त नहीं गाढ़े दिनको मित्त ।' रहीम । सूर्य ।
मित्रता,मित्राई—स्त्री० सौहार्द, बन्धुत्व ( अ० ६४ ) ।
मिथः—अ० आपसमें (प्रिय० ५६), एकांतमें, गुप्त रूपसे ।
मिथिला—स्त्री० तिरहुतका पुराना नाम ।
मिथुन—पु० स्त्री-पुरुषका जोड़ा, एक राशि, संयोग, दोकी संख्या ।
मिथ्या—वि० झूठ, असत्य ।
मिथ्याचार—पु० ढोंग, पाखण्ड, झूठा व्यवहार ।
मिथ्याध्यवसिति—स्त्री० एक काव्यालङ्कार 'झूठ कथनकी सिद्धि हित कहत झूठ जहँ आन ।
मिथ्यापन—पु० असत्यता, व्यर्थता ।
मिथ्यावादी—वि० झूठ बोलनेवाला ।
मिनकी—स्त्री० बिल्ली '···मूसा इत उत फिरै ताकि रही मिनकी ।' सुन्द० १४ ।
मिनती,मिन्नत—स्त्री० विनती, दीनता ।
मिनमिन—क्रिवि० मन्द या अस्पष्ट स्वरमें ।
मिनमिनाना—अक्रि०मन्द स्वरमें बोलना । नाकसे बोलना ।
मिनहा—वि० मुजरा किया हुआ । काटा हुआ ।
मिमियाना—अक्रि० बकरीका बोलना ।
मियाँ—पु० पति । उस्ताद । स्वामी । बड़ोंका सम्बोधन ।
मियाँमिट्ठू—पु० नासमझ । मिठबोला ।
मियान—वि० मध्यभाग । स्त्री० म्यान ।
मियाना—पु० पालकी । बल्ली । गाँवके बीचवाले खेत । वि० मझोले आकारका ।
मिरग—पु० मृग, हरिण ( प० १६ ) ।
मिरगिया—पु० मिरगी रोगसे ग्रस्त व्यक्ति ।
मिरगी—स्त्री० एक रोग, अपस्मार ।
मिरचा—पु० एक तिक्त फल ।
मिरचाई—स्त्री० मिर्च ।
मिरजई—स्त्री० कमरतक लम्बा पहनावा, बण्डी ।
मिरज़ा—पु० मीरजादा । राजकुमार ।
मिरजान—पु० मूँगा ।
मिरदंग—पु० एक तरहका ढोल ।
मिरदंगी—पु० मृदङ्ग बजानेवाला ।
मिरवना, मिलवाना—सक्रि० मिलाना ।
मिरिग—दे० 'मृग' ( प० १६, ९२ ) ।
मिरिच—स्त्री० तिक्त फलोंका एक वर्ग । काली मिर्च ।
मिरियासि—स्त्री० बपौती,पैतृक सम्पत्ति (उदे० 'करट')
मिर्गी—स्त्री० एक रोग ।
मिर्च—स्त्री० एक तरहका लाल लम्बा फल जो होता है । एक तरहका काला गोल तिक्त फल ।
मिलक—स्त्री० मिलकियत, जागीर ।
मिलकना—सक्रि० जलाना 'तब फिरि जरनि भई ७ सिखतें, दिया बाति जनु मिलकी ।' सू० २०१
मिलन—पु० भेंट, मिश्रण ।
मिलनसार—वि० सबसे मेल रखनेवाला ।
मिलना—अक्रि० भेंटना, भेंट होना, अन्तर न रहना, मिश्रित होना, सम्मिलित होना, कुछ कुछ समान होना, पाया जाना, सक्रि० दूध दुहना ।
मिलनी—स्त्री० विवाहकी एक रस्म जिसमें वरपक्ष और कन्यापक्षके लोग परस्पर मिलते हैं ।
मिलवाई—स्त्री० मिलवानेकी क्रिया या पारिश्रमिक ।
मिलवाना—सक्रि० किसीको मिलनेके काममें लगाना । भेंट कराना ।
मिलाई—स्त्री०मिलनी । मिलानेकी क्रिया या पारिश्रमिक ।
मिलान—पु० तुलना, मेल, जाँच । पड़ाव (कबीर १९६), 'ओहि मिलान जौ पहुँचै कोई ।' प० ६१ ।
मिलाना—सक्रि० भेंट कराना,मेल कराना;साथी बनाना, सम्मिलित या मिश्रित करना, जोड़ना, तुलना करना ।
मिलाप—पु० भेंट, मेल, मित्रता, संयोग ।
मिलाव—पु० मिलाप, मिलावट ।
मिलावट—स्त्री० मिश्रणकी क्रिया या भाव । अच्छी चीज़में बुरी चीज़ मिलाना ।
मिलिंद—पु० भौंरा, मधुप ।
मिलिक—स्त्री० देखो 'मिलक', ( अ० ११४ ) ।
मिलित—वि० मिला हुआ, संयुक्त ।
मिलौनी—स्त्री० मिलावट । विवाहकी एक रस्म ।

मिल्कियत—स्त्री० सम्पत्ति। स्वामित्व। जमींदारी इ०।
मिल्की—पु० जमींदार।
मिल्लत—स्त्री० मेलजोल। सम्प्रदाय, धर्म। फ़िरक़ा।
मिश्र—वि० संयुक्त, मिलाया हुआ, बड़ा।
मिश्रण—पु० मिलावट, मेल।
मिश्रित—वि० मिलाया हुआ।
मिश्री—स्त्री० मिसरी। पु० मिलानेवाला।
मिष—पु० बहाना। होड़। डाह। कपट।
मिष्ट—वि० मीठा।
मिष्टभाषी—वि० मीठी वाणी बोलनेवाला।
मिष्टान्न—पु० मिठाई।
मिस—पु० बहाना, छल, पाखण्ड।
मिसकीन, मिस्कीन—वि० ग़रीब, दीन, सीधा-सादा, बेचारा।
मिसकीनता—स्त्री० दरिद्रता, नम्रता।
मिसना—अक्रि० मला जाना। मिलना, मिश्रित होना।
मिसरा—पु० छन्दका चरण।
मिसरी—स्त्री० साफ करके जमायी हुई चीनी।
मिसहा—वि० बहानेवाज़, छलिया ( वि० २६४ )।
मिसाल—स्त्री० उदाहरण। नमूना। मसल। उपमा।
मिसिल—स्त्री० किसी मामले या कार्रवाईके कागजात। वि० मिस्ल, सदृश।
मिसी—स्त्री० एक तरहका मञ्जन, मिस्सी।
मिस्कला—दे० 'मस्कला'।
मिस्कोट,-कौट—स्त्री० भोजन, एक साथ भोजन करनेवालोंकी मण्डली। गुप्त सलाह ( कर्म० २५६ )।
मिस्तरी—पु० शिल्पी, कारीगर।
मिस्र—पु० आफ्रिकाके उत्तरस्थ एक देश।
मिस्ल—वि० तुल्य, सदृश, मानिन्द।
मिस्सी—स्त्री० एक तरहका दाँतका मञ्जन।
मिहचना—सक्रि० मीचना, ( नेत्र ) बन्द करना ( उदे० 'भुजवाथ' )।
मिहनत—स्त्री० परिश्रम
मिहनती—वि० परिश्रमी।
मिहनताना—पु० पारिश्रमिक, मज़दूरी।
मिहमान—पु० पाहुना।
मिहरबान—वि० दयालु।
मिहराब—स्त्री० द्वारके ऊपरका अर्द्धगोलाकार हिस्सा।
मिहरारु, मिहरी—स्त्री० औरत, स्त्री 'ठाठ बनाइ धर्यो मिहरी को है पूरुष तें आगर।' स्वामी हरिदास

मिहानी—स्त्री० मथानी।
मिहिर—पु० सूर्य, बादल, हवा, आक, चन्द्र।
मिहीं—वि० महीन।
मींगी—स्त्री० बीजका भीतरी अंश, गिरी।
मींचना, मींजना—सक्रि० मलना, मसलना 'हा राम, 'हा रघुनाथ। कहि सुभट मींजहिं हाथ।' रामा० ५१४, ( उदे० 'खोरना' )।
मींड़—स्त्री० स्वरके उतार चढ़ावका सुन्दर ढङ्ग। गमक।
मींडक—दे० 'मेंढक'। '…मींडक सोवै साँप पहिरिया।' कबीर ११३।
मींडना—सक्रि० मसलना, मींजना ( सू० २०२ ), 'मींडत हाथ सकल गोकुल जन बिरह बिकल बेहाल।' सूबे० २७०, ( अ० १०१ )।
मीआद—स्त्री० अवधि, नियत काल।
मीआदी—वि० जिसकी मियाद मुक़र्रर हो।
मीच, मीचु—स्त्री० मृत्यु 'सुधा सराहिय अमरता गरल सराहिय मीच।' रामा० ७, (उदे० 'कीच')।
मीचना—सक्रि० (नेत्र) बन्द करना।
मीज़ान—पु० ( संख्याओंका) योग, तराजू।
मीठा—वि० सुस्वादु, मधुर, प्रिय, धीमा, हलका। पु० मीठी वस्तु, गुड़, मिठाई।
मीत—पु० मित्र, सखा।
मीन—पु० मछली, एक राशि। मीन-मेष=आगा पीछा हिचकिचाहट ( प० ३१२ )।
मीनकेतन, मीनकेतु—पु० कामदेव।
मीना—पु० एक तरहका मूल्यवान् पत्थर। कई रंगोंका शीशा। सोने आदिपर किया जानेवाला कई रंगोंका काम
मीनाकार—पु० मीनाकारी करनेवाला।
मीनाकारी—स्त्री० सोने आदिपर किया जानेवाला कई रंगोंका काम।
मीनार—स्त्री० लाट, स्तम्भ, धरहरा।
मीमांसक—पु० मीमांसक शास्त्रका जाननेवाला, विवेचक
मीमांसा—स्त्री० दर्शन-शास्त्र-विशेष। विवेचन, निर्णय
मीर—पु० सरदार ( उदे० 'तासीर' ), सरदारका पुत्र समुद्र, सीमा। पानी।
मीरज़ा—पु० देखो 'मिरज़ा'।
मीरमजलिस—पु० सभापति।
मीरास—स्त्री० वरासतमें मिली हुई जायदाद। दे० 'मिरियास'

मीरासी—पु० गाने बजानेका पेशा करनेवाली ( मुसल॰ मानोंकी ) एक जाति ।
मील—पु० १७६० गजकी दूरी । जङ्गल ।
मीलन—पु० बन्द करनेकी क्रिया ।
मीलित—पु० एक काव्यालङ्कार 'मिलित जबै सादृश्य तें भेद न परै लखाय ।' वि० बन्द किया हुआ ।
मुँगरा-पु०, मुँगरी—स्त्री० खूँटा गाड़ने इ० के लिए हथौड़ेके आकारका बना काठका औज़ार ।
मुँगौछी—स्त्री० मूगका पकवान 'भई मुँगौछी मरिचैं परी । कीन्ह मुँगौरा औ बहु बरी ।' प० २७३
मुँगौरा—पु० मूँगकी पीठीकी पकौड़ी (उदे० 'मुँगौछी')।
मुँगौरी—स्त्री० देखो 'मुँगौरा' ।
मुंचना—सक्रि० मुक्त करना, खोलना, छोड़ना 'मानहुँ मदन मिले चाहति है मुंचत मरुत समेत ।' सू०४०६
मुंज—स्त्री० एक घास ( मति० १७१ ) ।
मुंड—पु० सिर, कटा हुआ सिर । एक दैत्य ।
मुंडक—पु० मुंड, सिर । नाई ।
मुंडकरी—स्त्री०घुटनोंके बीचमें सिर रखकर बैठनेकी मुद्रा।
मुंडन—पु० एक संस्कार । उस्तरेसे बाल बनवाना ।
मुंडना—अक्रि० मूँडा जाना, ठगा जाना ।
मुंडमाल-पु०माला—स्त्री० मुण्डोंकी माला ।
मुंडमालिनी—स्त्री० काली ।
मुंडमाली—पु० शिव ।
मुंडा—वि० मुंडे हुए सिरवाला । जिसके सींग न निकले हों।
मुँड़ाई—स्त्री० मूँड़ने या मुँड़ानेकी क्रिया या मज़दूरी ।
मुँड़ासा—पु० पगड़ी ।
मुँड़ासावंद—पु० पगड़ी बनानेवाला ।
मुँड़िया—पु० संन्यासी ।
मुंडी—स्त्री० एक पौधा । जिसका सिर मुँडा हो वह स्त्री। पु० हजाम, संन्यासी ।
मुँडेर-स्त्री०, मुँडेरा—पु० छतपरकी मेंड़, दीवारका ऊपरी भाग । मेंड़ ।
मुंतज़िम—पु० व्यवस्थापक । प्रबन्धक ।
मुंतज़िर—वि० राह देखनेवाला । [ ढँक जाना ।
मुँदना—अक्रि० बन्द होना, छिपना ( दास १५ ),
मुँदरा—पु० एक तरहका गहना । जोगियोंके कानका
मुँदरी—स्त्री० अँगूठी (उदे० 'कनगुरिया') । [कुण्डल ।
मुंशियाना—वि० मुंशियोंके समान ।
मुंशी—पु० लेखक ।
मुंसरिम—पु० दफ्तरका प्रधान । इन्तज़ामकार ।
मुंसिफ—पु० न्यायकर्त्ता ।
मुँह—पु० मुख, आनन, वदन, चेहरा, सिरा, [illegible] साहस, ताब ।—आना = मुँहमें छाले पड़ना ऊपर सूजनका आ जाना ।—उतरना = उदास सुस्त होना ।—का कच्चा = जिसके पेटमें बात न पचे, अविश्वसनीय, लगामका झटका सहनेवाला (घोड़ा) । (अपना)—काला करना अपनेको कलङ्कित करना, व्यभिचार करना ।—खाना=बुरी तरह पराजित होना, धोखा खाना, [illegible]नित होना ।—खुलना = मुँहसे अपशब्द [illegible] अभ्यास होना ।—खोलना = बोलना, गाली देना —चढ़ाना = उद्दण्ड बनाना ।—चिढ़ाना = मु[illegible] बनाकर नक़ल करना ।—छूना = ऊपरी [illegible] कहना ।—जूठा करना,—जुठारना = न [illegible] खाना ।—देना = खाद्य या पेय वस्तुमें मुख [illegible] ढीठ बनाना 'कबहु बालक मुँह न दीजिए मुह दीजिए नारि ।' सू० १०४ ।—पर थूकना बहुत अपमानित करना ।—पर हवाई उड़ना भय आदिके कारण चेहरेका रङ्ग फीका पड़ जाना —फाड़कर कहना = निर्लज्ज बनकर कहना —फुलाना = चेहरेसे । अप्रसन्नता प्रकट करना —भरके = लबालब, यथेष्ट ।—मारना = [illegible] कराना, मात करना, बढ़कर होना ।—में [illegible] लगना या पुतना = कलङ्क लगना ।—में [illegible] आना=कोई वस्तु पानेके लिए अत्यन्त इच्छुक होना [illegible] डाह होना ।—में लगाम न होना = बोलते [illegible] ज़बानपर काबू न होना ।—मोड़ना = [illegible] करना, हराना, उपेक्षा करना ।—लगाना = ढीठ बनाना । अपनासा—लेकर रह जाना = शर्मिन्दा होकर रह जाना ।—से दूध टपकना = कम उम्रका या नासमझ होना ।
मुँहअखरी—वि० ज़बानी ।
मुँहचंग—पु० एक तरहका बाजा (गुलाब ३५०) ।
मुँहचटौअल—स्त्री० परस्पर चुम्बन । व्यर्थकी बकवाद ।
मुँहचोर—पु० वह व्यक्ति जिसे दूसरोंके सामने जानेमें सङ्कोच मालूम हो ।

मुँहलुआई—स्त्री० पूछनेकी रस्म अदा करना ।
मुँहलुट—वि० मुँहफट ।
मुँहज़ोर—वि० बिगड़ैल, तेज़, उद्दण्ड ( मति० २१० ), 'ये मुँहजोर तुरङ्ग कों ऐंचत हूँ चलि जाहिं । बि० २५२ । बकवाकया ।
मुँहदिखाई—स्त्री० वह रकम जो मुख देखनेके अवसरपर नववधूको दी जाती है । नववधूका मुख देखनेकी रस्म ।
मुँहदेखा—वि० सामनेका, बनावटी, ऊपरी ।
मुँहनाल—स्त्री० सटकके मुँहपर लगी हुई धातुकी नली ।
मुँहपातर—वि० मुँहका हलका, बकनेवाला, मुँहफट ( रत्नावली ४५ ) ।
मुँहफट—वि० बिना विचारे अण्डबण्ड बोलनेवाला ।
मुँहबंद—वि० बन्द मुँहवाला ।
मुँहबोला—वि० मुँहसे कहकर बनाया हुआ ।
मुँहमाँगा—वि० अपनी इच्छाभर । मनोनुकूल ।
मुँहाचही—स्त्री० डींग मारना, बढ़ बढ़कर बातें करना 'मुँहाचही सेनापति कीन्ही शकटासुर मन गर्व बढ़ायो ।' सूवे० ५० । बोलचाल ।
मुँहामुँह—क्रिवि० मुँहतक ।
मुँहासा—पु० मुँहपरकी फुन्सी ।
मुअज़्ज़िन—पु० नमाज़के वक्त अजाँ देनेवाला व्यक्ति ।
मुअत्तल—वि० जो अपने कामसे दण्ड स्वरूप कुछ कालके लिए हटाया गया हो ।
मुअना—दे० 'मुवना', 'हरि दरशनकी साध मुई ।' सूवे० १८४ ( रहीम १०१ ) ।
मुअम्मा—पु० पहेली । भेद ।
मुअल्लिम—पु० शिक्षक ।
मुआफ—वि० क्षमा किया हुआ ।
मुआफ़िक़—वि० अनुकूल, मनके मुताबिक ।
मुआमला—पु० देखो 'मामला' ।
मुआयना—पु० देखभाल, निरीक्षण ।
मुआवज़ा—पु० बदला, बदलेमें दी गयी रकम या चीज़ ।
मुकट—पु० मुकुट, ताज ।
मुकतई मुकति—स्त्री० मुक्ति, मोक्ष ।
मुकता—देखो 'मुक्ता' । वि० बहुत 'मुकतो साँठि गाँठि जो करै ।' प० २०६
मुकताली—स्त्री० मुक्तावली, मुक्ताओंकी लड़ी ।
दमक ।, मुकद्दमा—पु० दावा, अभियोग, झगड़ामु ।
मुकदमेबाज़—पु० जो अक्सर मुक़दमा लड़ता रहता हो ।
मुकद्दम—वि० आवश्यक । पुराना । पु० मुखिया ।
मुकद्दर—पु० भाग्य ।
मुकद्दस—वि० पवित्र ।
मुकना—अक्रि० छूटना, समाप्त होना । पु० देखो 'मकुना' ।
मुकम्मल—वि० जिसके पूरा होनेमें कोई कोरकसर न रह गयी हो ।
मुकरना—अक्रि० नकारना, नटना, इनकार करना । मुक्त होना ।
मुकराना, मुकलाना—सक्रि० इनकार कराना । खोलना, छुड़ाना 'जमके फन्द काटि मुकराये, अभै अजात किये ।' सू० २८२, (उदे० 'एक', 'खोंपा' ) ।
मुकरी—स्त्री० एक तरहकी कविता जो पहेलीकी तरह [ होती है ।
मुकर्रर—वि० निश्चित । नियुक्त ।
मुकाबला—पु० मिलान, बराबरी, मुठभेड़, विरोध ।
मुकाबिल—क्रिवि० सामने । पु० प्रतिस्पर्द्धी ।
मुकाम—पु० पड़ाव, घर, स्थान । विराम, अवसर ।
मुकियाना—सक्रि० मुक्किया लगाना । घूँसे लगाना ।
मुकुंद—पु० मुक्तिदाता । पारा । एक रत्न ।
मुकुट—पु० एक शिरोभूषण, ताज ।
मुकुत, मुकता—पु० मोती (उदे० 'कारा', प० २९७) ।
मुकुताहल—पु० मोती 'हँसहिं हंस औ करहिं किरीरा । चुनहि रतन मुकुताहल हीरा ।' प० ७२ । कपूर ।
मुकुर—पु० दर्पण, शीशा । कुम्हारके चाकका डण्डा, बकुलवृक्ष ।
मुकुरता—स्त्री० दर्पणका गुण, जिसके कारण उसपर बिम्ब पड़नेपर बिम्बका रूप दिखाई पड़ता है, देखनेकी शक्ति, 'तुम रहो सजल आँखोंकी सित असित मुकुरता बनकर' । रश्मि १४
मुकुल—पु० कली, बौर, देह ।
मुकुलित—वि० अधखिला । कुछ कुछ बन्दसा ।
मुकेस—पु० बादला । वह कपड़ा जिसपर चाँदी सोनेका काम हो ( रत्ना० ११, १२९ ) ।
मुक्का—पु० घूँसा ।
मुक्की—स्त्री० मुक्के लगाकर की गयी मालिश । मुष्टियुद्ध ।
मुक्केबाज़ी—स्त्री० घूँसेबाजी, घूँसोंकी लड़ाई ।
मुक्त—वि० छूटा हुआ, क्षिप्त, भवबन्धनसे छूटा हुआ, स्वच्छन्द ।
मुक्तकंठ—वि० स्पष्ट कहनेवाला । ज़ोरसे बोलनेवाला ।

मुक्तक—पु० फुटकर कविता। वह कविता जिसका सम्बन्ध आगे या पीछेके छन्दोंसे न हो।
मुक्तका—स्त्री० मुक्त होनेका भाव, मुक्ति।
मुक्तव्यापार—वि० विरागी। पु० निर्बन्ध वाणिज्य।
मुक्तहस्त—वि० उदार, दानी।
मुक्ता—पु०, स्त्री० मोती, कपूर, 'लवनी' फल।
मुक्तागार,-गृह—पु० शुक्ति, सीप।
मुक्ताप्रसू—स्त्री० शुक्ति।
मुक्ताफल, मुक्ताहल—पु० मुक्ता, मोती।
मुक्ति—स्त्री० छुटकारा, मोक्ष, गति, उद्धार।
मुक्तिधन—वि० मुक्ति ही जिसका धन है,मुक्तिका प्रेमी 'अन्धकार कार यह, बन्दी हुए मुक्तिधन' अणिमा २७
मुख—पु० मुँह, वदन, द्वार, छोर, आदि, ऊपरका या आगेका भाग। [ आगर।' सू० २७
मुखआगर—दे० 'मुखागर'। 'चारो वेद पढ़त मुख
मुखज—वि० मुखजात, मुखसे उत्पन्न। पु० ब्राह्मण।
मुखड़ा—पु० चेहरा, मुख, वदन।
मुखतार,मुख्तार—पु०प्रतिनिधि रूपमें काम करनेवाला।
मुखतारनामा—पु० एक तरहका अधिकार-पत्र जिसके द्वारा किसीको किसीकी ओरसे मुकदमा लड़ने आदिका हक मिल जाता है।
मुखदूषण—पु० प्याज।
मुखन्नस—वि० नपुंसक। पु० हिजड़ा, जनखा।
मुखपाक—पु० रोग-विशेष।
मुख़्तसर—वि० संक्षिप्त।
मुखबंध—पु० भूमिका।
मुखबिर—पु० भेदिया, जासूस।
मुख़बिरी—स्त्री० दूसरेका भेद खोलनेका कार्य 'जूआ चोरी मुखबिरी ब्याज घूस परनारि।' साखी १८८।
मुखभूषण—पु० पान, ताम्बूल। [ जासूसी।
मुखभेड़—स्त्री० लड़ाई, सामना।
मुखर—वि० बकवादी, अप्रियवादी ( रामा० १३५ )। वाणीयुक्त 'मूक-मानसके मुखर-कराल'। पल्लव १२६
मुखरित—वि० शब्दायमान।
मुखस्थ—वि० कण्ठस्थ।
मुखस्राव—पु० लार। लार बहनेका रोग।
मुखागर, मुखाग्र—वि० कण्ठस्थ। क्रिवि० ज़बानी 'कहेउ मुखागर मूढ़ सन...' रामा० ४४१
मुखाग्नि—स्त्री० अग्नि संस्कारकी क्रिया। जंगलकी आग
मुख़ातिब—वि० बातचीत करनेवाला, बातचीतमें प्रवृत्त
मुखापेक्षी—वि० परावलम्बी, आश्रित।
मुख़ालिफ़—वि० दुश्मन, विरोधी।
मुख़ालिफ़त—स्त्री० विरोध, विपरीत भाव, शत्रुता।
मुखिया—पु० नायक, प्रधान।
मुखिल—वि० खलल डालनेवाला, बाधक (गबन २७२)
मुख्तलिफ़—वि० भिन्न भिन्न, विविध।
मुख्तसर—वि० संक्षिप्त।
मुख्य—वि० प्रधान, बड़ा।
मुख्यता—स्त्री० प्राधान्य, श्रेष्ठता, विशेषता।
मुगदर—पु० देखो 'मुदगर'।
मुग़ल—पु० मध्य एशियाकी रहनेवाली एक जाति।
मुगलई, मुगलाई—वि० मुगलों जैसा। स्त्री० मुगल
मुगलानी—स्त्री० मुगलकी स्त्री। [ पन
मुग़ालता—पु० धोखा। पट्टी।
मुगुध—दे० 'मुग्ध', ( उदे० 'अँगोछना' )।
मुग्ध—वि० मोहित, मस्त, मूढ़, सुन्दर।
मुग्धा—स्त्री० यौवनप्राप्त सरला नायिका।
मुचकुंद—पु० एक पेड़।
मुचना—सक्रि० देखो 'मुच्चना', 'गर्भ मुच्यो कौशल्य। माता रामचन्द्र निधि आई।' सूबे० ३४
मुचलका—पु० अदालतमें उपस्थित होने या कोई अनुचित काम न करनेका प्रतिज्ञापत्र।
मुछंदर—वि० बड़ी मूछोंवाला, मूर्ख, बदसूरत।
मुछियल—वि० बड़ी मूछोंवाला।
मुज़क्कर—वि० पुल्लिंग। [ कुल मिलाकर।
मुजम्मिल—पु० जुमला, योग ( सू० ११ )। क्रिवि०
मुजरा—पु० किसी बड़े आदमीके यहाँ जाकर प्रणाम करना। काटी हुई रकम। वेश्याका नृत्यहीन गान
मुजरिम—पु० अपराधी (अभियुक्त)।
मुज़ायका—पु० हर्ज, डर।
मुज़ाहिम—वि० बाधक।
मुज़िर—वि० हानिकर।
मुजौविज़ा—पु० औचित्य ( सेवा० २६९ )।
मुटका—पु० धोतीकी तरह पहननेका रेशमी वस्त्र।
मुटाई—स्त्री० मोटापन, घमण्ड, ग़रूर।
मुटाना—अक्रि० मोटा या घमण्डी हो जाना।

मुटिया—पु० मजदूर। मोटरी ढोनेवाला।
मुट्ठा—पु० मुट्ठीभर वस्तु, पुलिन्दा। बेंट।
मुट्ठी—स्त्री० बँधी हथेली, मुक्का। लकड़ीका एक खिलौना। मुट्ठीमें = वशमें।
मुठभेड़, मुठभेरी—स्त्री० लड़ाई, टक्कर (रामा० २६२), सामना, भिड़न्त।
मुठिका—स्त्री० मुट्ठी, घूँसा ( उदे० 'तरजना' )।
मुठिया—स्त्री० कब्जा, बेंट।
मुठी—स्त्री० मुट्ठी।
मुठकी—स्त्री० लकड़ीका एक खिलौना (उदे०'घुनघुना')।
मुड़कना— देखो 'मुरकना'।
मुड़ना—अक्रि० फिरना, लौटना, लचकना, झुक जाना।
मुड़ला—वि० मुण्डा, केशहीन सिरवाला (सू० २२५)।
मुड़वरियाँ—देखो 'मुड़वारी' ( ग्राम० ४० )।
मुड़वाना—सक्रि० किसीको मूँड़नेके काममें लगाना।
मुड़वारी—स्त्री० सिरहाना, मुँडेरा। [ मुड़ाना।
मुड़हर—पु० साड़ीका वह भाग जो सिरपर हो 'मुख पखारि मुड़हर भिजै सीस सजल कर छ्वाइ।'वि०२७४
मुड़ाना—सक्रि० मुण्डन कराना।
मुड़िया—पु० संन्यासी या सिरमुँडा व्यक्ति।
मुड़ेरा—दे० 'मुँडेरा'। [ विषयमें।
मुतअल्लिक़—वि० सम्बद्ध, शामिल। क्रिवि० बारेमें,
मुतक्का—पु० कोठेके छज्जेपर खड़ी की गयी पटिया।
मुतफन्नी—वि० धूर्त्त, चालबाज़।
मुतफ़र्रिक़—वि० भिन्न भिन्न।
मुतबन्ना—पु० पोष्य पुत्र, गोद लिया हुआ लड़का।
मुतलक—क्रिवि० बिलकुल, तनिक भी।
मुतलाशी—वि० ढूँढ़नेवाला। 'जो देखो वह हुआ नौकरीका मुतलाशी।' पूर्ण २३४
मुतवज्जह—वि० प्रवृत्त, जिसने ध्यान दिया हो।
मुतवफ्फा—वि० मृत, स्वर्गवासी।
मुतवली—पु० वली, नाबालिग और उसकी सम्पत्तिका क़ानूनी संरक्षक।
मुतसद्दी—पु० मुनीम, लेखक। पेशकार।
मुतसिरी—स्त्री० मोतियोंकी माला।
मुताबिक़—क्रिवि० अनुसार। वि० अनुकूल।
मुतालबा—पु० पावना। माँग, तकाज़ा, दावा।
मुताह—पु० अस्थायी विवाह ( मुसलमानोंमें )।
मुतिलाड्डू—पु० मोतीचूरका लड्डू।
मुतेहरा—पु० कलाईपर पहननेका एक गहना।
मुद—पु० खुशी, हर्ष।
मुदकारी—वि०प्रसन्न करनेवाला,सुखकारक (रत्नावली६१)
मुदगर—पु० लकड़ीकी मुँगरी, कसरत करनेकी मोटी वजनी लकड़ी, मुगदर।
मुदर्रिस—पु० अध्यापक।
मुदवंत—वि० हर्षयुक्त, प्रफुल्ल ( रघु० ७ )।
मुदा—स्त्री० खुशी। अ० मतलब यह कि, लेकिन।
मुदाम—क्रिवि० निरन्तर, सर्वदा।
मुदामी—वि० हमेशा रहने या होनेवाला।
मुदित— वि० प्रसन्न, खुश।
मुदिता—स्त्री० परकीया नायिकाका एक भेद।
मुदिर—पु० मेघ,प्रेमी, मेंढक। 'कहै मतिराम दीने दीरघ दुरद वृन्द मुदिरसे मेदुर मुदित मतवारे हैं।'
मुद्गर—पु० देखो 'मुदगर'। [ ललित० ६१
मुद्दई—पु० वादी, दावेदार, शत्रु।
मुद्दत—स्त्री० मीआद, चिरकाल, लम्बा अरसा।
मुद्दती—वि० लम्बे समयतक चलनेवाला, मीआदी।
मुद्दालेह—पु० प्रतिवादी।
मुद्ध—वि० मुग्ध, आसक्त, मूढ़।
मुद्धी—स्त्री० रस्सीकी वह गाँठ जो खिसक सके।
मुद्रक—पु० छापनेवाला।
मुद्रण—पु० छपाई, अङ्कित करनेकी क्रिया।
मुद्रणालय—पु० छापाखाना।
मुद्रा—स्त्री० छाप, अँगूठी, मोहर, सिक्का, अंगादिकी स्थिति, मुखाकृति, साधुओंके पहननेका एक प्रकारका कुण्डल 'मुद्रा स्रवन कण्ठ जपमाला।' प०५७, (उदे० 'आधारी')। एक अर्थालंकार, 'प्रकृत अर्थके पदनसों निकसत औरहु अर्थ।'
मुद्रिक,मुद्रिका—स्त्री० अँगूठी, कुशकी पैंती। सिक्का।
मुद्रित—वि० छपा हुआ, वन्द किया हुआ, वेष्टित 'सात समुद्रन मुद्रित राम सु विप्रन बार अनेक दई जू।' कविप्रि० ११९।
मुधा—क्रिवि० नाहक, व्यर्थ। पु० मिथ्या। वि० मिथ्या,
मुनक्का—पु० बड़ी किशमिश, दाख। [ व्यर्थका।
मुनगा—पु० सहिजनका पेड़।
मुनहसर—वि० आश्रित, निर्भर (गबन २७७ )।

मुनादी—स्त्री० ढिंढोरा, घोषणा।
मुनाफ़ा—पु० लाभ।
मुनारा—पु० लाट, मीनार 'मुल्ला मुनारे क्या चढ़हि साईं न वहरा होइ।' कबीर २५८, (रघु० ९५)।
मुनासिब—वि० ठीक, उचित।
मुनि—पु० मननशील व्यक्ति। ऋषि, तपस्वी। सातकी [संख्या।
मुनिधान्य—पु० तिन्नीका चावल।
मुनियाँ—पु० एक धान। स्त्री० एक छोटी चिड़िया।
मुनीब, मुनीम—पु० हिसाब लिखनेवाला, नायब।
मुनीश्वर—पु० मुनियोंमें श्रेष्ठ।
मुन्ना, मुन्नूँ—पु० बच्चोंके लिए प्यारका शब्द।
मुफ़लिस—वि० निर्धन।
मुफ़स्सल, मुफ़स्सिल—वि० विस्तृत, ब्योरेवार। पु० किसी केन्द्रस्थानके आस-पासके अन्य नगर आदि, प्रान्तके साधारण ज़िले।
मुफ़ीद—वि० लाभदायक, गुणकारी।
मुफ्त—वि० मुफ्तका।
मुबतिला—वि० फँसा हुआ।
मुबलिग़—वि० रुपयेकी संख्याके साथ आनेवाला एक [विशेषण-शब्द।
मुबारक—वि० कल्याणकारी, शुभ।
मुबारकबाद—पु० बधाई।
मुबारकबादी—स्त्री० बधाई, बधाई देनेकी रस्म।
मुबाहिसा—पु० बहस।
मुमकिन—वि० सम्भव।
मुमानियत—स्त्री० मनाही।
मुमुक्षु—वि० मुक्ति चाहनेवाला।
मुमूर्षा—स्त्री० मृत्युकी इच्छा।
मुमूर्षु—वि० मरणासन्न।
मुयस्सर—वि० सुलभ, प्राप्त।
मुरंडा, मुरंदा—पु० भूने गेहूं और गुड़का लड्डू। लड्डू (प० १३५, २७४)।
मुरकना—अक्रि० लौटना (उदे०'खम'), घूमना, मुड़ना, 'मुरकि मुरकि चितवनि चित चोरैं।' ललित क्रि०। मोच खाना 'करी सिया यह कह लरिकाई। मुरकी होय न मृदुल कलाई।' रामरसायन। नष्ट होना। (भू ६१)।
मुरकाना—सक्रि० घुमा देना, मोच डालना (छत्र० ५१)।
मुरकी—स्त्री० एक तरहकी बाली।
मुरखाई—स्त्री० मूर्खता।
मुरगा—पु० एक पक्षी, कुक्कुट।
मुरगाबी—स्त्री० एक जल पक्षी, जलकुक्कु
मुरचंग—पु० एक बाजा (रघु० २९)।
मुरचा—पु० जंग।
मुरचाना—अक्रि० मोरचा लगना या मोरचा खाना।
मुरछना, मुरछाना—अक्रि० मूर्छित होना (उदे 'दियारा') लस्त पड़ना (प० ५३, विद्या० ७५)
मुरछल—पु० मोरपंखका चँवर (उदे० 'जरौट')।
मुरछा—स्त्री० बेहोशी (उदे० 'निवुकना')।
मुरछाना—अक्रि० मूर्छित होना (चन्द्रावली ५८)।
मुरछावंत, मुरछित—वि० बेहोश, बेसुध (उदे०'झइँ')
मुरज—पु० मृदंग 'बाजत पनव निशान पंच विधि रुंज मुरज सहनाई।' सूबे० ४६।
मुरझना—अक्रि० कुम्हलाना, कान्तिहीन होना।
मुरझाना—अक्रि० कुम्हलाना 'ज्यों ज्यों छबि अधिकाति है, नवल बाल मुख इन्दु। त्यों त्यों मुरझत सौतिको अमल बदन अरविन्दु।' मति० १८६।
मुरदर—पु० श्रीकृष्ण।
मुरदा—पु० मृतक, शव। वि० मृत, निःशक्त।
मुरदार—वि० मृत, कमजोर। पु० मरा हुआ पशु।
मुरदासंख, मुरदासन—पु० औषध-विशेष।
मुरधर—पु० मारवाड़ देश।
मुरना—अक्रि० देखो 'मुड़ना', 'जुरि न मुरे संग्राम लोककी लीक न लोपी।' राम० ९, 'मुर्‍यो न मनु मुरवानु चभि भौ चूरनु चपि चूरु।' वि० ८८, (उदे 'पछरा')। सक्रि० मोड़ना 'इत उत अंग मुरति झक झोरति।' सू० ६७।
मुरपरैना—पु० फेरीवालेके सिरका बोझ।
मुरब्बा—पु० फलोंका पाक जो चाशनीमें तैयार करके [रखा जाता है।
मुरब्बी—पु० पालन करनेवाला।
मुरमुराना—अक्रि० चूर होना, टूटना।
मुररिपु—पु० विष्णु, श्रीकृष्ण।
मुररिया—स्त्री० मरोड़, ऐंठन।
मुरलिका, मुरलिया, मुरली—स्त्री० बाँसुरी।
मुरलीधर—पु० श्री कृष्णचन्द्र।
मुरवा—पु० पादमूल, पैरकी गाँठ (दे० 'मुरना')।
मुरव्वत—देखो 'मुरौअत'।

मुरखी—स्त्री० चिल्ला, प्रत्यंचा।
मुरशिद, मुरसिद—पु० धर्मगुरु।
मुरहा—पु० सिर ( ग्राम० परि० ४१ )।
मुरहा—पु० मुरारि, श्रीकृष्ण। वि० दुष्ट, नटखट।
मुरहारि—पु० श्रीकृष्ण।
मुराड़ा—पु० दहकती हुई लकड़ी 'हम घर जाल्यो आपना लिया मुराड़ा हाथ।' कबीर ६७।
मुराद—स्त्री० आशा, कामना। अभिप्राय।
मुराना—सक्रि० चबाना। मोड़ना।
मुरायठ—पु० पगड़ी ( ग्राम० ११६ )।
मुरार—पु० श्रीकृष्ण, विष्णु। कमलनाल (कवि० ६१)।
मुरारि—पु० श्रीकृष्ण।
मुरासा—पु० कर्णफूल 'लसै मुरासा तियस्रवन यौं मुकुतनि दुति पाइ।' बि० २७६।
मुरीद—पु० चेला, अनुसरण करनेवाला, अनुगामी।
मुरुख—वि० मूर्ख, नासमझ।
मुरुखाई—स्त्री० मूर्खता ( पा० म० ३३ )।
मुरुछना—अक्रि० मूर्छित होना 'परी मुरुछि धरनी सुकुमारी।' सूवे० २१४।
मुरुझना—अक्रि० मुरझाना, कुम्हलाना।
मुरेठा—पु० पगड़ी।
मुरेरना—सक्रि० ऐंठना, घुमाना, मसलना।
मुरेरा—पु० ऐंठन, मरोड़। मुँडेरा।
मुरौअत, मुरौवत—स्त्री० संकोच, सौजन्य।
मुर्ग—पु० पक्षी, कुक्कुट।
मुर्चा—देखो 'मुरचा' [ जानेवाला जनसमुह।
मुर्दनी—स्त्री० मृत्युसूचक चिह्न, उदासी। शवके साथ
मुर्रा—पु० मुर्री—स्त्री० ऐंठन, मरोड़।
मुर्वी—स्त्री० चिल्ला।
मुर्शिद—पु० धर्मगुरु, पथप्रदर्शक। उत्पाती, चालबाज।
मुलक—दे० 'मुल्क' ( उदे० 'गदेला' )।
मुलकना—अक्रि० पुलकित होना, मुसकराना। मलकना 'मुलकि कँपति पुलकति पलकु पलकु पसीजत जाति।' बि० ९९। [ ( रत्ना० ४६१ )।
मुलकाना—सक्रि० मलकाना, मचकाना, हिलाना
मुलकी—वि० देशी। देश सम्बन्धी।
मुलजिम—पु० अभियुक्त।
मुलतवी, मुल्तवी—वि० स्थगित, रोका या उठाया हुआ।
मुलना—पु० मौलवी 'मुलना तें मुरगा भला सहर जगावै सुत्ता।' कबीर, ( उदे० 'गुदारना' )।
मुलमची—पु० मुलम्मा करनेवाला।
मुलम्मा—पु० सोने चाँदीका पानी या पत्तर जो किसी वस्तुपर चढ़ाया जाय, पानी, कलई।—साज= [ मुलमची।
मुलहठी—स्त्री० औषधि-विशेष।
मुलहा—वि० बदमाश, शैतान। मूल नक्षत्रमें उत्पन्न।
मुलाँ—पु० मौलवी।
मुलाक़ात—स्त्री० मिलाप, भेंट। परिचय।
मुलाक़ाती—पु० जान-पहचानका व्यक्ति, मेली, संगी।
मुलाज़िम—पु० नौकर, कर्मचारी।
मुलाम, मुलायम—वि० कोमल, ढीला।
मुलायमियत—स्त्री० कोमलता, नर्मी।
मुलाहजा—पु० जाँच, निरीक्षण। लिहाज। रिआयत।
मुलेठी—स्त्री० एक लता या उसकी जड़।
मुल्क—पु० देश, जात।
मुल्की—वि० शासन या राज्य प्रबन्ध सम्बन्धी।
मुल्ला—पु० मौलवी। [ करनेवाला।
मुवक्किल—पु० मुकदमेकी पैरवीके लिए वकील नियुक्त
मुवना—अक्रि० मरना, दुःख उठाना 'जननी कत भार मुई दसमास।' कविता०।
मुवाना—सक्रि० मार डालना। [ स्याह घोड़ा।
मुशकी—वि० कस्तूरीयुक्त, हलके स्याह रंगका। पु०
मुशरव—पु० झरना, सोता, पंथ ( सेवा० १८८ )।
मुशली—पु० मूसलधारी बलराम।
मुश्क—पु० कस्तूरी। स्त्री० भुजा।
मुश्किल—वि० कठिन। स्त्री० कठिनाई, संकट।
मुश्की—वि० काला। जिसमें कस्तूरी मिली हो। पु० काले रंगका घोड़ा।
मुश्त—पु० मुट्ठी। एक मुश्त = एक ही बारमें (लेनदेन)
मुश्तबहा—वि० सन्देहयुक्त।
मुश्ताक़—वि० इच्छुक, चाहनेवाला।
मुषली—स्त्री० छिपकली।
मुषित—वि० चुराया हुआ।
मुषुर—स्त्री० भनभनाहट, गूँज।
मुष्टि—स्त्री० मुट्ठी, घूसा। बेंट। एक तौल। पु० एकमल वि० मष्ट, मौन 'सत मिलै कछु कहिबे कहिये। मिलै असंत मुष्टि करि रहिये।' कबीर १०९

मुष्टिक—पु० घूँसा। चार अंगुल। कंसके दरबारका एक मल्ल, मुष्टि। सुनार।
मुष्टिका—स्त्री० घूँसा। मुट्ठी। [ मल्ल, मुष्टि। सुनार।
मुसक—देखो 'मुश्क'।
मुसकनि,-कनिया—स्त्री० मुसकुराहट ( उदे० 'बट' )।
मुसकराना, मुसकाना, मुसकिराना—अक्रि० मन्द मन्द हँसना।
मुसकराहट,-किराहट—दे० 'मुसकुराहट'।
मुसकान,-कानि,मुसकुराहट—स्त्री० मन्द हँसी।
मुसकाना,-क्याना—अक्रि० मुसकुराना (उदे०'पौरि')।
मुसजर—पु० एक तरहका कपड़ा।
मुसटी—स्त्री० चुहिया, छोटा चूहा।
मुसना—अक्रि० छीना या लूटा जाना, चुराया जाना। सक्रि० देखो 'मूसना','…चोर मुसै घर जाई। कबीर ९६, ( उदे० 'पहराइत' )।
मुसन्ना—पु० असल कागजकी नक़ल।
मुसन्निफ—पु० ग्रन्थ-लेखक।
मुसब्बर—पु० ओषधि-विशेष।
मुसमुद, मुसमुंध—वि० नष्ट। पु० नाश।
मुसम्मात—वि० नामकी, नामधारिणी। स्त्री० औरत।
मुसल—पु० मूसल ( उदे० 'पट्टिश' ), धान कूटनेका डण्डा। मूर्ख 'चन्द्र सो जो बरनत रामचन्द्रकी दोहाई सोई मतिमंद कवि केसव मुसलसो।' राम० २१३
मुसलधार—क्रिवि० बड़े ज़ोरसे ( वर्षा )।
मुसलमान—पु० इस्लाम धर्मका अनुयायी।
मुसलमानी—स्त्री०मुसलमानोंका एक संस्कार। औरत। वि० मुसलमान सम्बन्धी।
मुसली—पु० हलधर, बलराम। स्त्री० एक वनौषधि।
मुसल्लम—वि० समूचा। पु० मुसलमान।
मुसल्ला—पु० मुसलमान। नमाजका आसन।
मुसव्विर—पु० चित्रकार।
मुसहर—पु० एक नीच जाति।
मुसाफ़िर—पु० पथिक, बटोही।
मुसाफिरखाना—पु० मुसाफिरोंके ठहरनेकी जगह,सराय।
मुसाफिरत, मुसाफिरी—स्त्री० मुसाफिर होनेकी दशा, प्रवास।
मुसाहब—पु० राजा आदिके साथ उठने बैठनेवाला, पार्श्ववर्ती ( मुद्रा० ४८ )।
मुसीबत—स्त्री० विपत्ति, दुःख।
मुश्किल—दे० 'मुश्किल'।
मुस्किराना—अक्रि० मुस्काना।
मुस्की—स्त्री० मुसकराहट। वि० जिसमें कस्तूरी मिली हो। हलका काला। पु० काले रंगका घोड़ा।
मुस्क्यान—स्त्री० मन्द हँसी।
मुस्टंडा—वि० हृष्ट-पुष्ट, उद्दण्ड।
मुस्तक़िल—वि० दृढ़, स्थिर, स्थायी।
मुस्तग़ीस—पु० अभियोग लानेवाला।
मुस्तशना—वि० अपवाद स्वरूप। अलग किया हुआ।
मुस्तहक़—वि० अधिकारी, पात्र। हक़दार।
मुस्तैद—वि० तैयार, तेज़।
मुस्तैदी—स्त्री० तत्परता।
मुहकम—वि० मज़बूत, पक्का।
मुहकमा—पु० विभाग, सरिश्ता।
मुहतमिम—पु० इन्तजामकार, प्रबन्धक।
मुहताज—वि० कङ्गाल, अनाथ, आश्रित। अपेक्षा रखनेवाला।
मुहब्बत—स्त्री० प्रेम, मैत्री। [ वाला।
मुहम्मद—पु० मुसलमान धर्मके पैगम्बर।
मुहर—स्त्री० सोनेका सिक्का, छाप।
मुहरा—पु० देखो 'मोहरा'।
मुहर्रम—पु० एक मुसलमानी महीना।
मुहर्रमी—वि० मुहर्रम सम्बन्धी। शोक-सूचक, उदास।
मुहर्रिक—पु० आन्दोलन करनेवाला, गति देनेवाला, प्रवर्त्तक ( सेवा० १८९ )।
मुहर्रिर—पु० लेखक, किरानी, क्लार्क।
मुहर्रिरी—स्त्री० मुहर्रिरका पद या काम।
मुहलत—स्त्री० अवकाश। अवधि।
मुहल्ला—पु० किसी नगर या कसबेका भाग।
मुहसिन—वि० हितैषी, उपकारी ( सेवा० १८७ )।
मुहसिल—पु० पैदल सैनिक। वि० वसूल करनेवाला।
मुहाफिज—वि० हिफाजत करनेवाला।
मुहाल—वि० असम्भव। कठिन। मुहल्ला।
मुहाला—पु० हाथीके दाँतपरकी चूड़ी।
मुहावरा—पु० रूढ़ अर्थमें प्रयुक्त शब्द-योजना। रोज़मर्रा, बोलचाल। अभ्यास।
मुहासवा,-सिबा—पु० लेखा ( उदे० 'दस्तक' )।
मुहासिरा—पु० दुर्ग वा सेनाको चारोंओरसे घेरना।
मुहिम,मुहीम—स्त्री०चढ़ाई (भू०१२५),युद्ध,कठिनकार्य

मुहुः—अ० बार बार, पुनः पुनः ।
मुहुर्मुहुर—अ० बार-बार ।
मुहूर्त्त—पु० देखो 'महूरत' ।
मुह्यता—स्त्री० मूर्छित होनेकी प्रवृत्ति, जड़ता ।
मुह्यमान—वि० जो मूर्च्छित हो रहा हो, बेसुध (प्रिय० ६२)
मूँग—स्त्री० एक अनाज । छातीपर मूँग दलना = देखो 'छाती' ।
मूँगफली—स्त्री० एक खाद्य पदार्थ और उसका पौधा, [चीनिया बादाम ।
मूँगरी—स्त्री० एक तरहकी तोप ( हिम्मत० १२ ) ।
मूँगा—पु० विद्रुम, प्रवाल ।
मूँछ—स्त्री० ऊपरी ओंठ परके बाल ।
मूँज—स्त्री० एक पवित्र घास ।
मूँड—पु० सिर ( उदे० 'फेंकरना' ) । —चढ़ाना = [ढीठ बनाना ।
मूँड़कटा—वि० दूसरेकी हानि करनेवाला ।
मूँड़ना—सक्रि० मुण्डन करना, चेला करना, ठगना ।
मूँड़ मारना—अक्रि० प्रयत्न करना, व्यर्थ परेशान होना, सिर खपाना ( रत्ना० ३९० ) ।
मूँड़ी—स्त्री० मुण्ड, सिर ।
मूँदना—सक्रि० ढाँकना, बन्द करना ( उदे० 'अटपटाना' ), मींचना । अक्रि० अस्त होना, छिपना ( उदे० 'खुमान' ) ।
मूँदर—स्त्री० मुँदरी, अँगूठी ( उदे० 'प्रतिबिंबना' ) ।
मूक—वि० गूँगा, विवश ।
मूकता—स्त्री० सूनापन, शून्यता ।
मूकना—सक्रि० मुक्त करना, अलग करना 'परेहू चूक मूकिये ना ।' (कविता० २६१)
मूकभाव—वि० मौन ।
मूका—पु० घूँसा, मुट्ठी 'मूकन मारत आवई नींद विचारी दौर ।' रहीम १६ । छोटा छेद या झरोखा (कबीर २९२) ।
मूखना—सक्रि० चुरा लेना, लूटना ।
मूचना—सक्रि० मुक्त करना, छोड़ना ।
मूजी—पु० दुष्ट, पाजी, उत्पीड़क ।
मूठ—स्त्री० बेंट, मुठिया । मुट्ठी, मुट्ठीभर वस्तु । एक प्रकारका मारण-प्रयोग ।
मूठना—अक्रि० न रह जाना, विनष्ट होना ।
मूठा—पु० मुट्ठीभर वस्तु, लम्बा पूला ।
मूठि, मूठी—स्त्री० मुट्ठी ( उदे० 'अगूठना' ), घूँसा [( रघु० २२२ ) ।
मूड़—पु० सिर ।
मूढ़—वि० मूर्ख, नासमझ, हतबुद्धि, निश्चेष्ट ।
मूढ़ता—स्त्री०, मूढत्व—पु० नासमझी, मूर्खता ।
मूढ़ात्मा—वि० नासमझ ।
मूत, मूत्र—पु० पेशाब ।
मूतना—अक्रि० लघुशंका करना, पेशाब करना ।
मूत्रकृच्छ्, मूत्राघात—पु० मूत्र सम्बन्धी रोग ।
मूत्राशय—पु० पेटके भीतर मूत्र जमा होनेकी थैली ।
मूर—पु० जड़, असल, मूलधन, ( उदे० 'निबेरना' ), मूल नक्षत्र । बूटी, औषधि 'कह रघुनाथ मूरके कारन मोको लैन पठाये ।' सूरा० ७२ ।
मूरख—वि० मूर्ख, बेवकूफ ।
मूरखताई—स्त्री० मूर्खता ।
मूरछना—अक्रि० बेसुध होना स्त्री० मूर्छा । दे० ['मूर्च्छना' ।
मूरछा—स्त्री० बेहोशी ।
मूरत, मूरति—स्त्री० प्रतिमा, आकृति, सूरत, चित्र ।
मूरतिवंत—वि० मूर्तिमान, शरीरयुक्त ।
मूरध—पु० सिर ।
मूरि, मूरी—स्त्री० जड़, बूटी ( सू० ४१ ) ।
मूरुख, मूर्ख—वि० नासमझ, मूढ़ ।
मूर्खता—स्त्री०, मूर्खत्व—पु० मूढ़ता, अज्ञता ।
मूर्च्छा, मूर्छा—स्त्री० बेहोशी ।
मूर्च्छना—स्त्री० स्वरोंका उतार-चढ़ाव ।
मूर्च्छित, मूर्छित—वि० बेहोश, बेसुध, बेखबर ।
मूर्त्त—वि० आकारवाला । ठोस ।
मूर्त्ति—स्त्री० देखो 'मूरत' ।
मूर्त्तिकार—पु० मूर्त्ति या तस्वीर बनानेवाला ।
मूर्त्तिपूजक—पु० मूर्त्तिकी पूजा करनेवाला, बुतपरस्त ।
मूर्त्तिपूजा—स्त्री० मूर्त्तिको देवता समझकर पूजना । प्रतिमा-पूजन ।
मूर्त्तिमत्—वि० मूर्त्तिमान, साकार ।
मूर्त्तिमान्, मूर्त्तिवान—वि० साक्षात् । सदेह ।
मूर्द्ध मूर्द्धा—पु० सिर ।
मूर्द्धज—वि० जो सिरसे उत्पन्न हो । पु० बाल ।
मूर्द्धन्य—वि० मूर्द्धासम्बन्धी । जिसका उच्चारण मूर्द्धासे हो ।
मूल—पु० एक नक्षत्र, जड़, नींव, असल धन या असल लेख, आदि कारण, आरम्भ । वि० मुख्य ।
मूलक—पु० मूली 'सकउँ मेरु मूलक इव तोरी ।' रामा० १३८ । एक विष । वि० अवलम्बितसे उत्पन्न होनेवाला

मूलद्वार—पु० मुख्यद्वार, सदर दरवाजा।
मूलधन—पु० पूँजी, असल धन।
मूलपुरुष—पु० आदि पुरुष, वंशप्रवर्तक।
मूलिका—स्त्री० जड़ी, बूटी।
मूली—स्त्री० एक जड़, मुरई। जड़ी।
मूल्य—पु० मोल, दाम, महत्त्व।
मूल्यवान्—वि० बहुमूल्य, बेशकीमत।
मूल्यांकन—पु० मूल्य निश्चित करनेकी क्रिया, मूल्य-निर्धारित करना।
मूष, मूषक, मूषिक—पु० चूहा, मूसा।
मूस—पु० मूषक, चूहा।
मूसदानी—स्त्री० चूहादानी, चूहा फँसानेका पिंजड़ा।
मूसना—सक्रि० चुरा लेना, लूटना, ठगना ( सू० ३३ ), 'जात कहा बलि बाँह छुड़ाये मूसे मन सम्पति सब मेरी।' सूवे० १८८ [ बलदेवजीका अस्त्र।
मूसर, मूसल—पु० चावल आदि कूटनेका डण्डा,
मूसल—...मूसलों ढोल बजाना = खूब खुशी मनाना, बहुत प्रसन्न होना।
मूसलचंद—पु० हृष्टपुष्ट बेकार मनुष्य। मूर्ख।
मूसलधार—क्रिवि० बड़े ज़ोरसे ( वर्षा )।
मूसला—पु० मूलका वह तन्तुरहित भाग जो सीधे ज़मीनमें गया हो।
मूसली—स्त्री० एक जड़ जो दवाके काम आती है।
मूसा—पु० चूहा (उदे० 'जागा')। यहूदियोंके पैगम्बर।
मृग—पु० हरिण, कुरङ्ग। पशु। मार्गशीर्ष।
मृगचर्म-,पु० छाला—पु० हिरनका चमड़ा।
मृगज—पु० मृगशिशु, कस्तूरी।
मृगजल-पु०,-तृष्णा,-मरीचिका—स्त्री० जलसी प्रतीत होनेवाली वायुकी लहरें, रेतीली भूमिपर जलकी भ्रान्ति।
मृगदाव—पु० वह वन जिसमें मृग अधिक हों। सार-
मृगधर—पु० चन्द्रमा। [ नाथका एक नाम।
मृगन—पु० खोज ( मति० १७५ )।
मृगनाथ, मृगपति, मृगराज—पु० सिंह।
मृगनाभि, मृगनाभिजा, मृगमदा—स्त्री० कस्तूरी।
मृगनैनी—स्त्री० मृगके नेत्र जैसे नेत्रवाली स्त्री।
मृगमद—पु० कस्तूरी।
मृगमित्र—पु० चन्द्रमा।
मृगमेद, मृगरोचन—पु० कस्तूरी।

मृगया—स्त्री० आखेट, शिकार।
मृगलक्षण, मृगलांछन—पु० चन्द्रमा।
मृगलोचना,-नी—स्त्री० वह स्त्री जिसके नेत्र
मृगशिरा—पु० एक नक्षत्रका नाम। [ सुन्दर
मृगांक—पु० चन्द्रमा।
मृगिनी—स्त्री० हरिणी।
मृगी—स्त्री० हरिणी। मिरगी रोग। कस्तूरी।
मृगेंद्र, मृगेश—पु० सिंह।
मृगेक्षिणी—स्त्री० मृगके समान देखनेवाली, मृगलोचन
मृड़ा, मृड़ानी—स्त्री० भवानी, दुर्गा।
मृणाल-पु०, मृणाली—स्त्री० पद्मनाल, मुरार।
मृणालिनी—स्त्री० कमलिनी।
मृत—वि० मरा हुआ।
मृतकंबल—पु० कफ़न।
मृतक—पु० मरा हुआ व्यक्ति।
मृतककर्म—पु० अग्निसंस्कार, पिण्डदान इ०।
मृतजीवनी,-संजीवनी—स्त्री० एक विद्या, एक बूटी
मृति—स्त्री० मृत्यु।
मृत्तिका—स्त्री० मिट्टी।
मृत्युंजय—पु० मृत्युपर विजय प्राप्त करनेवाला।
मृत्यु—स्त्री० मौत, यमराज। [ शिव-मन्त्र
मृत्युप्राय—वि० मरणासन्न।
मृत्युलोक—पु० पृथिवी, यमलोक।
मृत्स्ना—स्त्री० मिट्टी 'मृत्स्ना-सा वह अन्धकार' युग
मृथा—क्रिवि० नाहक, व्यर्थ। [ वाणी ९७
मृदंग—पु० ढोलकी तरह बाजा।
मृदु, मृदुल—वि० कोमल, मन्द, सुकुमार।
मृदुता, मृदुलाई—स्त्री० कोमलता, दयालुता 'सिव पूज्य चरन रघुराई। मोपर कृपा परम मृदुलाई। रामा० ६१४।
मृद्—स्त्री० मिट्टी 'वह नवजीवनकी मृद् उर्वर'
मृनाल—पु० पद्मनाल, कमलकी डण्डी। [ग्राम्या ४३
मृण्मयी—वि० स्त्री० मिट्टीसे बनी हुई जड़तत्त्वयुक्त, 'वह रहे आराध्य चिन्मय मृण्मयी अनुरागिनी मैं'
मृन्मय—वि० मिट्टीका बना हुआ। [ सान्ध्यगीत ५२
मृषा—वि० झूठ। अ० व्यर्थ।
मेंगनी—स्त्री० गोलियोंके आकारवाली ( बकरी इ० ) पशुओंकी विष्ठा, लेंड़ी।

मेंड़, मेंड—स्त्री० बाँध, घेरा ( प० ३१९ )।
मेंडराना—अक्रि० मँडराना, चक्कर लगाना 'राजपंखि तेहिपर मेंडराहीं।' प० ६७
मेंढक—पु० दादुर।
मेकलकन्या,-सुता—स्त्री० नर्मदा नदी।
मेख—स्त्री० खूँटा, कील ( उदे० 'दमरी', रहीम १६ )। पु० एक राशि, भेड़।
मेखड़ा—पु० बाँसकी फट्टी जो छावे इ० के मुँहपर चारों ओर बाँधी जाती है।
मेखल,मेखला—स्त्री० करधनी ( प० ५७ )। पहाड़का विचला हिस्सा। होमकुण्डका ऊपरी घेरा।
मेखली—स्त्री० करधनी। साधुओंका वस्त्रविशेष ( उदे० 'आधारी' )।
मेघ—पु० बादल।
मेघा—पु० मेंढक ( ग्राम० ३९३ )।
मेघजीवन—पु० चातक।
मेघडंबर—पु० बड़ा शामियाना, एक प्रकारका छत्र। मेघगर्जन।
मेघनाथ—पु० इन्द्र।
मेघनाद—पु० मेघगर्जन। मोर। बिल्ली। रावणका एक पुत्र।
मेघयोनि—पु० धूम्र।
मेघवाई—स्त्री० मेघावली,बादलोंकी पंक्ति (रघु० २१३)।
मेघवाहन—पु० इन्द्र।
मेघव्रती—पु० चातक 'जिसको मरुभूमि समुद्र हुआ, उस मेघव्रतीकी प्रतीति नहीं' रश्मि ४६।
मेघसार—पु० कपूर।
मेघागम—पु० वर्षाऋतु।
मेघानंद—पु० यक, मयूर।
मेघावरि—देखो 'मेघवाई'।
मेचक—वि० कृष्ण वर्णका, श्याम ( अ० १२२, मति० २३१ )। पु० अँधेरा, धूम्र, बादल।
मेचकता, मेचकताई—स्त्री० श्यामता 'कह प्रभु ससि महँ मेचकताई। कहहु काह निज निज मत भाई।' रामा० ४५५।
मेज़—स्त्री० सामने रखकर लिखने इ० के लिए बनी हुई ऊँची चौकी।
मेज़बान—पु० आतिथ्य करनेवाला।
मेजा—पु० मेंढक ( उदे० 'गवेजा' )।
मेट—पु० मजूरोंसे काम करानेवाला, जमादार।
मेटक, मेटनहार—पु० मेटनेवाला, तोड़नेवाला।
मेटना—सक्रि० मिटाना ( उदे० पुरविला' ), पोंछ डालना, दूर करना, ( उदे० 'कहल', 'गारी' )।
मेटा—पु० एक प्रकारकी हँड़िया ( उदे० 'गुरंब' )।

मेठ—पु० हाथीवान। कुलियोंका सरदार।
मेड़—स्त्री० देखो 'मेंड़' ( प० २४७ )।
मेड़राना—अक्रि० देखो 'मेंडराना'।
मेड़िया—स्त्री० मड़ैया, कुटिया।
मेढक—पु० दादुर।
मेढा—पु० एक पशु, भेड़ा।
मेढ़ियाँ—स्त्री० मढ़ी, घर ( उदे० 'उसारि' )।
मेढ़ी—स्त्री० तीन लड़ोंकी चोटी 'मेढ़ी लटकन मनि-कनक-रचित, बाल-भूषन बनाइ आछे अङ्ग अङ्ग ठये हैं।' गीता० २८०, ( उदे० 'अंडूला' )।
मेथी—स्त्री० एक साग ( उदे० 'बघार' )।
मथौरी—स्त्री० मेथीका साग मिलाकर बनायी हुई बरी 'भई मेथौरी सिरका परा।' प० २७३
मेद—पु० चरबी, मज्जा, मोटा होनेका रोग, कस्तूरी, ( उदे० 'गौरा', 'जवादि' )।
मेदा—पु० एक सुगन्धित जड़। आमाशय, पेट।
मेदिनी—स्त्री० पृथिवी।
मेदुर—वि०मसृण, चिकना, मोटा, गाढ़ा (उदे० 'मुदिर')।
मेध—पु० बलिदानका पशु। यज्ञ।
मेधा—स्त्री० धारणा-शक्ति। बुद्धि, ज़ेहन।
मेधावी—वि० बुद्धिमान्, चतुर। पु० तोता।
मेनका—स्त्री० एक अप्सरा जिससे शकुन्तलाका जन्म हुआ था। पार्वतीजीकी माताका नाम, मेना।
मेना—स्त्री० हिमाचलकी पत्नी, मेनका।
मेना, मेयना—सक्रि० मोयन डालना।
मेम—स्त्री० यूरोपीय महिला। ताशका पत्ता जिसे 'रानी' भी कहते हैं।
मेमना—पु० बकरी या भेड़का बच्चा। घोड़ेका एक भेद।
मेमार—पु० राज, मकान बनानेवाला।
मेर—देखो 'मेल' ( प० २१०, भू० १११ )। देखो 'मेरु'।
मेरवना—सक्रि० मिलाना ( उदे० 'टूट' )। जुड़वाना, भेंट कराना 'वर सों जोग मोहि मेरवहु कलस जाति हौं मानि।' प० ८९
मेरा—पु० मेला, भीड़।
मेराउ, मेराव—पु० मिलाप,भेंट 'गहन छूट दिनअर कर, ससिसों भएउ मेराउ।' प०३२४,(उदे० बिछोवना')।
मेरी—स्त्री० घमण्ड, अहंभाव ( क० वच० ६ ), ममत्व।
मेरु—पु० एक पर्वत। जप-मालाके बीचवाला दाना।
मेरुदंड—पु० रीढ़। प्रकार, बराबरी।
मेल—पु० मिलाप, मित्रता, सुलह, सङ्गति, अनुकूलता,

मेलक—पु० मिलन, साथ, सहवास । मिलान । समूह ।
मेलना—सक्रि० मिलाना, डालना ( उदे० नवेला' ), 'कर गहि पग अँगुठा मुख मेलत ।'सू० ४९ । छोड़ना, चलाना ( उदे० 'झेलना' ), 'जापै मेलत सूल वह सुनिये त्रिभुवनराय ।' के०३१२ । पहनाना 'मेली कंठ सुमनकी माला ।' रामा० ३९९ । दबाना, ढकेलना, 'तुरत विभीषन पाछे मेला ।' रामा० ५०८ । अक्रि० जमा होना,ठहरना'·· गढतर छाँड़ि अनत होइ मेलहिं ।' प० १०१,पहुँचना 'महादेव मढ़ मेला जाई ।' प० ८३
मेला—पु० उत्सवादिके लिए लोगोंका जमाव, भीड़ । मेल ( क० वच० ६ ) ।
मेलाठेला—पु० धक्का, भीड़ ।
मेलान—पु० ठहरना, पड़ाव, डेरा डालना 'सागर तीर मेलान पुनि करिहैं रघुकुल नाह ।' राम० ३४७
मेली—पु० साथी । वि० जो जल्दी हिलमिल जाय ।
मेव—पु० एक लुटेरी जातिके लोग ।
मेवा—पु० बादाम आदि सूखे फल । फल ।
मेवाटी—स्त्री० एक तरहका मेवायुक्त पकवान ।
मेवाफरोश—पु० मेवा बेचनेवाला ।
मेवासा—पु० मवासा । गढ़, घर ।
मेवासी—पु० गढ़में रहनेवाला, गृहस्वामी (साखी १३९)।
मेष—पु० एक राशि, भेड़ । मेष करना = आगा पीछा करना ( सूबे० २५७ ) ।
मेहँदी—स्त्री० एक झाड़ी जिसकी पत्ती पीसकर स्त्रियाँ हाथ पाँवमें लगाती हैं ।
मेह—पु० मेघ ( उदे० 'निझरना' ), वर्षा । प्रमेह रोग ।
मेहतर—पु० भङ्गी ।
मेहनत—स्त्री० परिश्रम ।
मेहनताना—पु० पारिश्रमिक, मजदूरी ।
मेहनती—वि० परिश्रमी, उद्यमशील ।
मेहमान—पु० अतिथि ।
मेहमानदारी-स्त्री०मेहमानकी खातिरदारी,अतिथि सेवा।
मेहमानी—स्त्री० पहुनाई, आतिथ्य ।-करना=सजा देना।
मेहर—स्त्री० कृपा, दया ( भू० १५६ ) ।
मेहरबान—वि० दयालु ।
मेहरबानगी,-बानी—स्त्री० देखो 'मेहर' ।
मेहरा—पु० जनखा ।
मेहराब—स्त्री० द्वार इ० के ऊपरका अर्द्धवृत्ताकार भाग।
मेहराबदार—वि० जिसमें मेहराब हो ।
मेहरारू, मेहरी—स्त्री० स्त्री, पत्नी ।
मैं—सर्व० वक्ताद्वारा अपने लिए प्रयुक्त शब्द । स्वयं । [ अ० में ।
मैंड—स्त्री० सीमा । प्रतिष्ठा (छत्र० ३४) ।
मै—प्रत्य० युक्त, निर्मित ।
मैका—पु० नैहर ।
मैगल—पु० मतवाला हाथी ( कबीर २० ), 'मेरे जान गह्यौ चाहत हौ, फेरिकै मैगल मातो ।' भ्र० ३४
मैजल—स्त्री० दिनभरकी यात्रा, यात्रा ।
मैड—स्त्री० देखो 'मैंड, प्रतिष्ठा 'मैड बुँदेलखण्डकी राखी ।'
मैत्रावरुणि—पु० अगस्त्यऋषिका नाम । [ छत्र० ३४
मैत्री—स्त्री० मित्रता ।
मैत्रेयी—स्त्री० याज्ञवल्क्यकी विदुषी पत्नीका नाम ।
मैथिल—पु० मिथिलाका निवासी । वि० मिथिलाका ।
मैथिली—स्त्री० सीता ।
मैथुन—पु० स्त्री संसर्ग, सम्भोग ।
मैदा—पु० खूब महीन आटा ।
मैदान—पु० खुली हुई विस्तृत समभूमि । युद्ध या खेल इ० की जगह (उदे०'कुहाड़ा') ।-करना=युद्ध करना ।
मैदानेजंग—पु० युद्ध क्षेत्र ।
मैन—पु० कामदेव । मोम 'मैन तुरङ्ग चढ़े पावक बिच, नाहीं पिघरि परेंगे ।' नागरी०, (वैसं० १०) । मोयन ।
मैनफल—पु० एक वृक्ष या उसका फल ।
मैनमय—वि० कामासक्त ।
मैनशिल,-सिल—पु० एक खनिज पदार्थ जो प्रायः दवामें काम आता है । [ जीकी माता ।
मैना—पु० एक जाति, 'मीना' । स्त्री० सारिका । पार्वती-
मैनाक—पु० एक पहाड़का नाम ।
मैमंत—वि० मतवाला 'देखि कटक औ मैमँत हाथी ।'
मैमत—स्त्री० ममता ( भ्र० १३५ ) । [ प० ११२
मैया—स्त्री० माता ( उदे० 'ओग' ) ।
मैर—स्त्री० साँपके ज़हरकी लहर ।
मैल—पु० धूल, कीट आदि मलिनता, दोष, बुराई ।
मैलखोरा—पु० कोट इ० के नीचे पहननेका कपड़ा । वि० गर्दखोर ।
मैला—वि० गन्दा, मलिन । पु० विष्ठा ।
मैलाकुचैला—वि० गन्दा । जो गन्दे कपड़े पहने हो ।
मों—अ० में ।

मॉंगरा—पु० वेलाका पौधा या फूल। मुद्गर, लकड़ीका [हथौड़ा।
मॉंछ—स्त्री० देखो 'मूँछ'।
मॉंडा—पु० लड़का (सूसु० १४९)।
मॉंढ़ा—पु० बाँस, वेत इ० का बना हुआ तिपाई सरीखा आसन। कन्धा।
मो—सर्व० मेरा। [* १५२, १९८)।
मोकल—वि० मुक्त,स्वच्छन्द। दूर करनेवाला (ललित०*
मोकना—सक्रि० मुक्त करना छोड़ना, फेंकना 'रोक्यो तहीं जोर नाराच मोक्यो।' के० ३२८
मोक्ष, मोख—पु० मुक्ति, उद्धार (उदे० 'निहचै') मृत्यु।
मोखा—पु० दीवारका छेद या झरोखा (गीता० ३८२),
मोगरा—पु० देखो 'मांगरा' (उदे० 'कटरा')। [ताख।
मोगल—पु० देखो 'मुगल'।
मोघ—वि० व्यर्थ।
मोच—स्त्री० नसका अपने स्थानसे हट जाना, मुरकना।
मोचन—पु० मुक्त करनेकी क्रिया, छुटकारा, मुक्ति, दूरीकरण, निराकरण।
मोचना—सक्रि० मुक्त करना, गिराना 'भये अरुन विकराल कमल दल लोचन मोचत नीर।' सू० ३९
मोची—पु० जूता बनानेवाला।
मोच्छ, मोछ—पु० मोक्ष, मुक्ति (प० २४३)।
मोज़ा—पु० पायतावा।
मोट—स्त्री० गठरी 'मीन इन्द्रिहिं अतिहि काटत, मोट अब सिर भार।' सू०६, 'जोग मोट दासी सिर दीजै।' अ० ७३। पु० चरसा। वि० मोटा, घटिया।
मोटरी—स्त्री० गठरी।
मोटा—वि०स्थूल, हृष्टपुष्ट, भद्दा, घटिया, भारी, घमण्डी।
मोटाई—स्त्री० स्थूलता, गर्व, शरारत।
मोटाना—अक्रि० मोटा होना, घमण्डी होना।
मोटापा—पु० मोटाई, मस्ती।
मोटिया—पु० कुली। एक तरहका मोटा कपड़ा, गज़ी।
मोट्टायित—पु० एक हाव।
मोठ—स्त्री० मूँगकी जातिका एक अन्न।
मोठस—वि० चुप। [मुड़नेकी क्रिया या भाव।
मोड़—स्त्री० वह स्थान जहाँ रास्ता मुड़ा हो, तुकड़।
मोड़तोड़—पु० रास्तेका घुमाव'फिराव। चक्कर।
मोड़ना—सक्रि० घुमाना, फेरना, ऐंठना।
मोड़ी—स्त्री० दक्खिनकी एक लिपि।
मोढ़ा—पु० बाँस या बेतका बना हुआ डमरूके आकारका बैठनेका आसन।
मोतदिल—दे० 'मातदिल'।
मोतबर—वि० विश्वसनीय।
मोतिया—पु० एक तरहका बेला। वि० मोती सम्बन्धी।
मोतियाविंद—पु० आँखका एक रोग।
मोती—पु० मुक्ता, मौक्तिक (उदे० 'पुहना')। स्त्री०
मोतीचूर—पु० बूँदीका लड्डू। [मोतीयुक्त बाली
मोतीझरा,-झिरा—पु० एक तरहका रोग जिसमें बुखारके साथ शरीरमें छोटे छोटे दाने निकल आते हैं।
मोतीवेल—स्त्री० मोतिया नामक बेल।
मोतीभात—पु० विशेष प्रकारसे बनाया हुआ एक तरहका भात
मोतीसिरी—स्त्री० मोतियोंकी माला। [का भात
मोथरा—वि० कुण्ठित।
मोथा—पु० एक प्रकारकी घास या उसकी जड़।
मोद—पु० हर्ष (उदे० 'ऍंचना')। सुगन्ध।
मोदक—पु० लड्डू। एक मात्रिक छन्द।
मोदकी—स्त्री० एक तरहका मुगदर।
मोदना—अक्रि० मुदित होना। सुगन्ध फैलाना 'फूलि फूलि तरु फूल बढ़ावत। मोदत महामोद उपजावत।
मोदित—वि० मोदयुक्त। [रा० १
मोदी—पु० आटा दाल इ० बेचनेवाला बनिया (सू०१०)
मोधुक—पु० मछुआ, धीवर।
मोधू—वि० भोंदू, नासमझ, 'बुद्धू', मूर्ख।
मोन—पु०, मोनिया—स्त्री० पिटारा, डब्बा 'कुन्दन बे साजि जनु कूँदे। अमृत रतन मोन दुइ मूँदे।' प०५
मोना—पु० देखो 'मोन'। सक्रि० भिगोना।
मोम—पु० एक पदार्थ जिससे मधुमक्खियोंका छत्ता बना रहता है।
मोमजामा—पु० मोमका रोगन चढ़ाया हुआ कपड़ा।
मोमदिल—वि० सहृदय, कोमल हृदयवाला।
मोमबत्ती—स्त्री० मोमकी बनी हुई बत्ती।
मोमिन—पु० जुलाहोंकी एक जाति। धर्मशील मुसलमान (निबन्ध० भा० २)।
मोमियाई—स्त्री० एक दवा। नकली शिलाजीत।
मोयन—पु० सानते समय आटेमें घीका मेल।
मोरंग—पु० नैपालका पूर्वी हिस्सा।
मोर—सर्व० मेरा पु० मयूर, बरही।

मोरचंदा—पु०,-चंद्रिका—स्त्री० मोरपङ्ख परकी चन्द्राकार बूटी ।

मोरचा, मोर्चा—पु० परिखा, सुरक्षित स्थान जहाँसे लड़ाई की जाती है । जंग, मैल 'जनम जनमका मोरचा पलमें डारै धोय ।' साखी १०

मोरछड़—पु० मोरकी पूँछका बना हुआ चँवर ।

मोरछल, मोरछाँह—पु० मोरपङ्खका चँवर 'बाँधे मोरछाँह सिर सारहि ।' प० २५२

मोरछली—स्त्री० बकुल, मौलसिरी । पु० मोरछल

मोरन—स्त्री० सिखरन । मोड़ना । [ हिलानेवाला ।

मोरना—सक्रि० मोड़ना, घुमाना, फेरना ( सू० ९६ ) । विलोवना, मक्खन निकालना ।

मोरपंख,पंखा—पु० मोरका पंख, मोरपंखकी कलगी ।

मोरपंखी—वि० मोरके पंखके रंगका । स्त्री० एक तरहकी नाव,जिसकी बनावट मोरके पंखकीसी होती है।

मोरपखौआ—पु० देखो 'मोरपंख' ( अ० ९० ) ।

मोरमुकुट—पु० मोरपंखका बना मुकुट ।

मोरवा—पु० मोर, कलापी ।

मोरसिखा—स्त्री० मयूर-शिखा नामक घास या बूटी

मोराना—सक्रि० घुमाना, फिराना । [(दोहा १२१ ) ।

मोरी—स्त्री० गन्दे पानीकी नाली । मयूरी । मोहरी । बागडोर 'आयौ चोर तुरँग मुसि ले गयौ मोरी राखत मुगध फिरै ।' कबीर १७० ।

मोल—पु० मूल्य, कीमत । दाम घटा बढ़ाकर कहना ।

मोलना—पु० मौलवी ।

मोवना—सक्रि० भिगोना ।

मोष—पु० मोक्ष 'मोहूँ दीजे मोष, ज्यों अनेक अधमन दयो ।' बि० १०९ । छुटकारा 'भये संकुचित कमल निसि मधुकर लह्यो न मोष ।' दास १२७ ।

मोषक—पु० मूसने या लूटनेवाला, चोर । [वध करना ।

मोषण—पु० चोरी करने या लूटनेकी क्रिया । मारना,

मोह—पु० ममत्व, प्रेम, भ्रम, मूर्छा, अज्ञान, दुःख ।

मोहक—वि० मुग्ध करनेवाला । जिससे मोह उत्पन्न हो।

मोहकर—वि० मोहनेवाला, मोहक ।

मोहड़ा—पु० किसी वस्तुका अगला या ऊपरका हिस्सा ।

मोहताज—वि० देखो 'मुहताज' ।

मोहन—पु० मोहनेवाला व्यक्ति, श्रीकृष्ण । एक अस्त्र । एक तान्त्रिक प्रयोग । [आम ।

मोहनभोग—पु० ज्यादा घीका बना हलुआ । एक तरहका

मोहनमाला—स्त्री० सोनेके दानोंकी माला ।

मोहना—सक्रि० लुभाना (उदे० 'पलिका'), मन हर धोखा देना, छलना 'राक्षस कपट बेल तहँ सोहा मायापति दूतहिं चह मोहा ।' रामा० ४८२ । करना 'सीतहिं दैकै रिपुहिं संहारौ । मोहति है बल भारौ । राम० ४७२ । अक्रि० मुग्ध ( उदे०' पुष्पवती', 'निहारना' ) ।

मोहनिशा,-रात्रि—स्त्री० प्रलय । कृष्णाष्टमीकी रात

मोहनी—स्त्री० रूपवती स्त्री । मोहकशक्ति, माया,जादू वि० स्त्री० मोहनेवाली ।

मोहफ़िल—स्त्री० महफिल, मजलिस, सभा ।

मोहब्बत—स्त्री० प्रेम ।

मोहर—स्त्री० देखो 'मुहर' ।

मोहरा—पु० सेना या अन्य वस्तुका अगला भाग, सेनाकी गति, तनी, छेद, शतरंजकी गोटी (प० २८२) ।†

मोहर्रिर—पु० देखो 'मुहर्रिर' । [ † जहरमोहरा ।

मोहलत—स्त्री० अवकाश, समय, अवधि ।

मोहल्ला—पु० किसी नगर या कस्बेका भाग ।

मोहार—पु० मोहरा, दरवाजा, बड़ी मधुमक्खी ।

मोहाल—पु० गाँव या गाँवका हिस्सा । गाँवोंका समूह जिसका एक साथ बन्दोबस्त हो ।

मोहिं—सर्व० मुझे ।

मोहित—वि० मुग्ध, आसक्त, मूर्छित ।

मोहिनी— देखो 'मोहनी' ।

मोही—वि० मोह करनेवाला । अज्ञानी, मुग्ध करनेवाला ।

मौंगा—वि० चुप, मौन 'सुनि खग कहत अम्ब मौंगी रहु समुझि प्रेमपथ न्यारो ।' गीता० ३६० ।

मौंज, मौंजाय—वि० मूँजका बना हुआ ।

मौंजिबन्धन—पु० उपनयन संस्कार ।

मौंजी—स्त्री० मूँजकी बनी करधनी ।

मौंडा—पु० लड़का ( व्रज० २८८ ) ।

मौक़ा—पु० अवसर, देश, घटनास्थल ।

मौकूफ़—वि० बरखास्त । रद्द, मुलतवी, निर्भर ।

मौक्तिक—पु० मोती ।

मौक्तिकदाम—पु०छन्द विशेष ।

मौक्तिकमाला—स्त्री० एक वर्णवृत्त ।

मौख—पु० एक मसाला ।

मौखर, मौखर्य—पु० मुखरता, प्रगल्भता ।

मौखिक—वि० मुख सम्बन्धी, जबानी।
मौज—स्त्री० लहर 'उमड़ी दरिया कैसी मौजैं।' छत्र० ३२। मनकी लहर, मजा, उमंगसे दिया हुआ दान, बक्सीस, (कवि प्रि० २२६) 'जाँचि निराखर हू चलै लै लाखनकी मौज।' वि० ३८। प्रसन्नता (भू० ६०)।
मौज़ा—पु० ग्राम।
मौजी—वि० मौजमें रहनेवाला, लहरी, स्वेच्छाचारी।
मौजूँ—वि० उपयुक्त।
मौजूद—वि० हाजिर, विद्यमान, वर्तमान।
मौजूदगी—स्त्री० उपस्थिति।
मौजूदा—वि० प्रस्तुत। वर्तमान समयका।
मौत—स्त्री० मृत्यु। आफत।
मौताद—स्त्री० खुराक, मात्रा।
मौन—वि० चुप। पु० चुप्पी। मौना, पिटारा, बरतन। मोयन (घी) 'नेह मौन छबि मधुरता मैदा रूप मिलाय।' रतन० १३।
मौना—पु० डब्बा, पिटारा।
मौनी—वि० चुप रहनेवाला। स्त्री० मौना।
मौर—पु० बौर, मंजरी। ग्रीवा। दुलहेका मुकुट। श्रेष्ठ व्यक्ति।
मौरना—अक्रि० मौर लगना, फूलना 'नर अंध भये दरसे तरु मौरे।' के० २४९, (उदे० 'अँबुवा')।
मौरसिरी—स्त्री० मौलसिरी, वकुल।
मौरी—स्त्री० वधूके सिरपर बाँधनेका छोटा मौर।
मौरूसी—वि० पैतृक, वंश-परम्परासे आया हुआ।
मौर्ख्य—पु० मूर्खता।
मौलूद—पु० मुसलमानोंका धार्मिक कृत्य (सेवा० २४)।
मौर्वी—स्त्री० प्रत्यंचा, चिल्ला।
मौलवी—पु० मुसलमानोंका धर्माचार्य। अरबीका विद्वान्।
मौलसिरी—स्त्री० वकुल (उदे० 'गौरी')।
मौलि—स्त्री० मस्तक, चोटी, चूड़ा, किरीट।
मौली—वि० मुकुट धारण करनेवाला।
मौसम, मौसिम—पु० ऋतु, अनुकूल समय।
मौसर—वि० सुलभ, प्राप्त 'औसरको मौसर भए मत दै कर तै खोइ।' रतन० १५।
मौसा—पु० मौसीका पति।
मौसिमी—वि० मौसिमका, मौसिमके मुताबिक़।
मौसिया—वि० सम्बन्धमें मौसाके पदका। पु० मौसा।
मौसी—स्त्री० माँकी बहन।
मौसेरा—वि० मौसीके सम्बन्धका।
म्यान—पु० तलवार आदिका कोष या खोली (उदे० 'खाँड़ा', 'जमधर')।
म्याना—पु० पालकी। सक्रि० म्यानमें रखना। वि० बीचका, मझोला। मोटा 'लाँबी है न ठेंगनी न पातरी न म्यानी है।' सुन्दर श्रृं० ५४।
म्रजाद—स्त्री० मर्यादा 'लाज म्रजाद मिली औरनको, मृदु मुसकनि मेरे बट आई।' नारायण स्वामी।
म्रदिमा—स्त्री० कोमलता।
म्रियमाण—वि० मरा हुआ सा।
म्लान—वि० मलिन, उदास, दुर्बल।
म्लानता, म्लानि—स्त्री० मुरझा जाना, मलिनता। ग्लानि।
म्लिष्ट—वि० जो साफ न बोले। अस्पष्ट।
म्लेच्छ—पु० वर्णव्यवस्था-हीन जाति। वि० अधम, नीच, पापी।
म्हाको—सर्व० मुझको।
म्हारा—सर्व० हमारा।

---

# य

यंत्र—पु० कल, औजार, बाजा, ताला, फन्दा 'लोचन मनहु मनोभव यंत्रहि।' के० २२३। तावीज, जन्तर।
यंत्रक—पु० यंत्रोंकी सहायतासे वस्तुएँ तैयार करनेवाला।
यंत्रगृह—पु०,-शाला—स्त्री० वेधशाला। यंत्रोंकी सहायतासे चीजें तैयार करनेका स्थान।
यंत्रण—० नियमके भीतर रखकर चलाना।
यंत्रणा—स्त्री० दुःख, वेदना, व्यथा, पीड़ा।
यंत्रनाल—पु० कुएँ आदिसे जल निकालनेका नल।
यंत्र-मंत्र—पु० झाड़-फूँक। टोना, जादू।
यंत्रालय—पु० वह जगह जहाँ यंत्रादि हों, छापाखाना।
यंत्रिका—स्त्री० ताला।
यंत्रित—वि० तालोंमें बन्द किया हुआ, नियंत्रित, बाँधा [या रोका हुआ।

यंत्री—पु० देखो 'जंत्री'।
याँ—क्रिवि० यहाँ ( पूर्ण० १३० )।
यक—वि० एक।
यकअंगी—वि० एकके सरोसे रहनेवाला। एक अंगवाला।
यकटक—क्रिवि० लगातार, निर्निमेष दृष्टिसे (सू० ९९)
यकता—वि० जो अपने विषयमें सबसे बढ़कर हो, अद्वितीय।
यकबयक ,यकबारगी—क्रिवि० एकाएक, अचानक।
यकसाँ—वि० एक सदृश, बराबर।
यकायक—क्रिवि० सहसा, अचानक।
यक़ीन—पु० विश्वास।
यकृत—पु० जिगर। जिगरकी खराबी।
यक्ष—पु० एक देवयोनि।
यक्षकर्दम—पु०.एक तरहका अङ्गराग 'स्वच्छ यक्षकर्दम हिय देवन अभिलाषे'–के० १६६
यक्षतरु—पु० वटवृक्ष।
यक्षपति,-राज, यक्षाधिप—पु० कुबेर।
यक्षपुर—पु० यक्षोंकी नगरी, अलकापुरी।
यक्षिणी, यच्छिनी—स्त्री० दुर्गाकी एक सेविका, यक्ष या कुबेरकी स्त्री।
यक्षी—स्त्री० यक्षिणी; कुबेर-पत्नी। पु० यक्षपूजक।
यक्ष्मा—पु० क्षय रोग।
यगण—पु० छन्दमें आनेवाले आठ गणोंमेंसे एक।
यच्छ—पु० यक्ष।
यजन—पु० यज्ञ, होमादि कार्य।
यजना—सक्रि० पूजना ( सुन्द० ८४ ), यज्ञ करना।
यजमान—पु० यज्ञ करनेवाला, दक्षिणा देकर पूजनादि करानेवाला।
यजमानी—स्त्री० किसी पुरोहितके यजमानोंके रहनेका स्थान। यजमानका धर्म। पुरोहितकी वृत्ति।
यजुर्वेद—पु० एक वेद।
यज्ञ—पु० याग, हवन-पूजन।
यज्ञपत्नी—स्त्री० दक्षिणा।
यज्ञपशु—पु० बलिका पशु।
यज्ञपुरुष—पु० विष्णु, नारायण ( राम० २८० )।
यज्ञमंडप—पु० -शाला—स्त्री० यज्ञ करनेका स्थान।
यज्ञसूत्र—पु० जनेऊ।
यज्ञोपवीत—पु० जनेऊ, एक संस्कार।
यज्वा—पु० यज्ञ करनेवाला।

यति—पु० संन्यासी। स्त्री० विश्राम, छन्दमें विराम-स्थान
यतिभंग—पु० छन्दमें नियमित स्थानपर यति पड़नेका दोष।
यतिभ्रष्ट—पु० वह छन्द जिसमें यति अपने उचित स्थान पर न हो
यती—देखो 'यति'।
यतीम—पु० अनाथ। —खाना = अनाथालय।
यत्किंचित्—वि० नाममात्रका, थोड़ासा।
यत्न—पु० उपाय, प्रयास, उद्योग।
यत्नवान—वि० यत्न करनेवाला, यत्नशील।
यत्र—क्रिवि० जहाँ।—तत्र=जहाँ तहाँ, इधर उधर।
यथा—अ० जिस तरह, जैसे, जैसा।
यथाक्रम—क्रिवि० क्रमके मुताबिक।
यथातथ्य—अ० जैसा हो वैसा ही, ज्योंका त्यों।
यथामति—क्रिवि० बुद्धिके अनुसार।
यथायथ—क्रिवि० यथोचित रूपसे, उचित क्रमसे। वि० जैसा उचित है, वैसा। ( साकेत १० )।
यथायोग्य—क्रिवि० यथोचित।
यथारथ, यथार्थ—वि० उचित, ठीक, ज्योंका त्यों।
यथावत्—अ० ज्योंका त्यों।
यथाविधि—क्रिवि० विधिवत्, यथायोग्य।
यथाशक्ति—क्रिवि० जैसी सामर्थ्य हो वैसा, भरसक।
यथासंभव—क्रिवि०जहाँतक सम्भव हो,जितना बन सके।
यथेच्छ—क्रिवि०,वि० इच्छानुरूप, मनचाहा।
यथेच्छाचार—पु० मनमानी करना।
यथेच्छित, यथेप्सित—वि० मनचाहा इच्छाके अनुरूप।
यथेष्ट—वि० जितनेकी इच्छा हो, उतना। प्रचुर, पर्याप्त।
यथेष्टाचारी—पु० अपनी इच्छाके अनुसार चलनेवाला।
यथोचित—वि० यथायोग्य।
यद्पि—अ० यद्यपि, अगरचे।
यदा—अ० जब।
यदाकदा—अ० जबतब।
यदि—अ० जो, अगर।
यदुनंदन, यदुनाथ, यदुराई—पु० श्रीकृष्णचन्द्र।
यदृच्छा—स्त्री० मनमानापन।
यद्यपि—अ० अगरचे, हालाँकि। [टालमटोल(मुद्रा०)।
यद्वातद्वा—क्रिवि०जब तब,कभी कभी। पु० 'आज कल'
यम—पु० धर्मराज, मृत्यु। जोड़ा। मन इ० का निग्रह।
यमक—पु० एक काव्यालङ्कार। यमज।

यमकात, यमकातर—स्त्री० देखो 'जमकात'।
यमघंट—पु० एक अशुभ योग।
यमज, यमजात—पु० एक साथ पैदा हुए दो बच्चे, [ अश्विनीकुमार।
यमदग्नि—पु० एक मुनि।
यमदुतिया,-द्वितीया—स्त्री० भाईदूज।
यमदेवराज—पु० मृत्युके देवता, धर्मराज।
यमधार—पु० दोनों ओर धारवाली तलवार।
यमन—पु० यवन, बन्धन, रोक।
यमनाह, यमराज—पु० धर्मराज, कृतान्त।
यमनिका—स्त्री० नाटकका परदा।
यमपुर—पु०, यँमपुरी—स्त्री० यमलोक, यमके रहनेका [ स्थान।
यमभगिनी—स्त्री० यमुना नदी।
यमयातना—स्त्री० नरककी या मृत्युके समयकी पीड़ा।
यमल—पु० यमज, जोड़ा।
यमानुजा—स्त्री० यमुना।
यमी, यमुना—स्त्री० यम-भगिनी या जमुनाजी। दुर्गा।
ययाति—पु० एक चन्द्रवंशी राजा।
यव—पु० जौ। वेग। एक तौल।
यवन—पु० यूनानी, म्लेच्छ। वेग।
यवनानी—स्त्री० ग्रीसकी भाषा या लिपि। वि० यूनान- [ सम्बन्धी।
यवनिका—स्त्री० नाटकका परदा। परदा, आवरण।
यवनी—स्त्री० यवनकी स्त्री, म्लेच्छ जातिकी स्त्री।
यवास—पु० देखो 'जवास'।
यश—पु० कीर्त्ति, प्रसिद्धि, प्रशंसा।
यशकामी—वि० कीर्तिलोलुप।
यशस्वी,यशी,यशील—वि० विख्यात, कीर्त्तिमान्।
यशुमति, यशोदा, यशोमति—स्त्री० नन्द पत्नी।
यशोधरा—स्त्री० बुद्धपत्नी-गोपा।
यष्टि—स्त्री० डण्डा, लकड़ी, शाखा, बाहु।
यष्टिका—स्त्री० छड़ी,। गलेका हार। वापी।
यष्टियंत्र—पु० एक तरहकी धूपघड़ी।
यह—सर्व० निकटवर्ती वस्तुको बतलानेवाला निश्चय- [ वाचक सर्वनाम।
यहाँ—क्रिवि० इस जगह।
यहूदी—पु० एक अनार्य जाति।
याँचना—देखो 'याचना'।
यांचा—स्त्री० याचनेकी क्रिया।
यांत्रिक—वि० मन्त्र-सम्बन्धी, व्यस्त, अनवकाशपूर्ण, 'इस यांत्रिक जीवनमें क्या ऐसी थी कोई क्षमता' आँसू३९
या—अ० वा, अथवा। सर्व० यह ( 'याकहँ, यातें' )।
याक—वि० एक।
याक़ूत—पु० एक बहुमूल्य पत्थर, लाल।
याग—पु० यज्ञ।
याचक—पु० माँगनेवाला, प्रार्थी।
याचना—सक्रि० मागना, प्रार्थना करना (उदे० 'दात')।
याचित—वि० माँगा गया। [ स्त्री० प्रार्थना।
याजक, याजी—पु० यज्ञ करनेवाला पुरोहित।
याजन—पु० यज्ञ करने या करानेका कार्य।
याज्ञसेनी—स्त्री० द्रौपदी।
याज्ञिक—पु० यज्ञ करनेवाला। यज्ञ करानेवाला।
यातन—पु० इनाम। बदला।
यातना—स्त्री० यन्त्रणा, पीड़ा।
याता—पु० जानेवाला, सारथी। स्त्री० जेठानी,देवरानी।
यातायात—पु० गमनागमन।
यातुधान—पु० राक्षस।
यात्रा—स्त्री० प्रयाण, कूच, तीर्थाटन। [ पण्डा।
यात्रावाल—पु० तीर्थयात्रियोंको देवदर्शन करानेवाला
यात्रिक—वि० यात्रा सम्बन्धी। पु० यात्री। यात्राका उद्देश्य। सफरकी चीजें।
यात्री—पु० पथिक, तीर्थाटन करनेवाला।
याथातथ्य—पु० यथार्थता, ज्योंका त्यों होनेका भाव।
याद—स्त्री० स्मरण, सुध, स्मृति।
यादगार—स्त्री० स्मारक।
यादगारी—स्त्री० स्मारक। यादगार।
याददाश्त—स्त्री० स्मृतिके निमित्त लिखित लेख। [ स्मरणशक्ति।
यादव—पु० यदुवंशज, श्रीकृष्ण।
यादृश—वि० जैसा।
यान—पु० विमान, गाड़ी। गमन। आक्रमण।
यानी, याने—अ० अर्थात्।
यापन—पु० बिताना, चलाना, परित्याग। [ द्रव्य देना।
यापना—स्त्री० समय बिताना। जीवन-निर्वाहके लिए
याम—पु० पहर। समय। स्त्री० रात्रि ( सूबे० २१३)।
यामघोष—पु० कुक्कुट, मुर्गा।
यामल—पु० यमज बच्चे।
यामाता—पु० जामाता।
यामि—स्त्री० रात। कन्या। पतोहू। कुलवधू। बहिन।
यामिक—पु० पहरुआ।

यामिका, यामिनि,-नी—स्त्री० रात्रि।
यामिनी-गंधा—स्त्री० रजनीगन्धा।
यामिनीपति—पु० चन्द्रमा।
यायावर—पु० खानाबदोश, बिना घरद्वारके वह व्यक्ति या जाति जो अपने जीवननिर्वाहकी सामग्री लिए एक स्थानसे दूसरे स्थानपर घूमा करती है।
यार—पु० मित्र, साथी। प्रेमी, जार। [काटनेवाला।
यारबाश—वि० दोस्तोंके साथ आमोद-प्रमोदमें समय
याराना—वि० मित्रकासा, दोस्ताना। पु० मित्रता।
यारी—स्त्री० मित्रता, अनुचित प्रेम।
याल—पु० अयाल।
यावक—पु० महावर। उड़द। जौ।
यावनी—वि० यवन सम्बन्धी।
याहि—सर्व० इसको।
युक्त—वि० मिला हुआ, सहित, उचित, अनुरक्त।
युक्ति—स्त्री० उपाय,उचित तर्क, न्याय, चतुरता, रीति। एक काव्यालङ्कार 'जहाँ काजकरि युक्तसों मरम छिपायो जात। कै प्रगटत जहँ युक्ति करि कछुक मरमकी बात।'
युक्तियुक्त—वि० वाजिब, उचित।
युग—वि० दो। पु० जोड़ा, गोटियोंका जोड़ा, समय, सत्ययुगादि कालमान।
युगति—स्त्री० उपाय, तर्क। हिकमत।
युगपत्—क्रिवि० एक ही समयमें।
युगम—पु० द्वन्द्व, जोड़ा।
युगल—पु० जोड़ा, दो वस्तुएँ।
युगाति—पु० युगका अन्त, प्रलय।
युगांतर—पु० दूसरा ज़माना, क्रान्ति।
युग्म, युग्मक—पु० जोड़ा, दो वस्तुएँ।
युग्मज—पु० एक साथ पैदा होनेवाले दो बच्चे। यमज।
युग्मेच्छा—स्त्री० मिथुनवृत्ति, कामेच्छा।
युत—वि० मिला हुआ, सहित।
युति—स्त्री० मेल, योग।
युद्ध—पु० लड़ाई, संग्राम।
युधाजित्—पु० भरतके मामाका नाम।
युधिष्ठिर—पु० अर्जुनके बड़े भाईका नाम, धर्मराज।
युयुत्सा—स्त्री० लड़नेकी इच्छा।
युयुत्सु—वि०लड़नेके लिए इच्छुक।[नाम सात्यकि भी था।
युयुधान—पु० योद्धा, क्षत्रिय। इन्द्र। एक यादव जिसका
युवक—पु० तरुण पुरुष।
युवति, युवती—स्त्री० युवावस्था प्राप्त स्त्री। वि० प्रा
युवनाश्व—पु० सूर्यवंशके एक राजाका नाम। [ ।.
युवराई—पु० युवराज। स्त्री० युवराजत्व।
युवराज—पु० राजाका वह पुत्र जो राज्यका उ॰
युवराजी—स्त्री० युवराजका पद। [धिकारी
युवा—वि० तरुण, जवान।
यूत—पु०, यूति—स्त्री० मिलावट, मिश्रण।
यूथ—पु० समूह, दल ( उदे० 'बतकही' )।
यूथप,-पति,-पाल—पु० दलपति, सेनापति।
यूथिका, यूथी—स्त्री० पुष्पविशेष, जूही।
यूनान—पु० यूरोपका एक देश।
यूनानी—वि० यूनान देशका। पु० यूनानका।
यूप—पु० यज्ञ-स्तम्भ। [स्त्री० यूनानकी
यूपा—पु० जूआ, द्यूत।
यूह—पु० यूथ, झुण्ड।
येतो—वि० इतना।
येन-केनप्रकारेण—क्रिवि० जैसे तैसे।
यों—अ० इस प्रकार।
यों ही—अ० इसी तरहसे, बिना किसी उद्देश्यके।
योगंधर—पु० पीतल। प्राचीन कालका एक सम्बन्धी मन्त्र।
योग—पु० मेल, प्रेम, सङ्ग। शुभ अवसर, लगन (उदे 'जोइसी')। चित्त-वृत्ति-निरोध। विशेष समय समाधि। वशीकरण। लाभ। दवा। धन। जोड़।
योगक्षेम—पु० कुशल-क्षेम। राष्ट्र-व्यवस्था। धनकी रक्ष
योगदान—पु० सहायता-प्रदान। [और प्राप्ति
योगनिद्रा—स्त्री० युगके अन्तकी विष्णुकी निद्रा। समाधि। वीरगति। [संख्या प्राप्त हो।
योगफल—पु० दो या अधिक संख्याओंके जोड़नेसे जो
योगमाया—स्त्री० विष्णुकी माया। यशोदाकी कन्या जिसे कृष्णके बदले वसुदेवजी उठा लाये थे।
योगरूढ़ि—स्त्री० विशेष अर्थमें प्रचलित यौगिक शब्द।
योगांजन—पु० सिद्धाञ्जन।
योगिनी—स्त्री० चण्डिका, तपस्विनी, रणचण्डिका, दुर्गा-सहचरी। ज्योतिषके अनुसार विशेष तिथिको विशेष दिशामें स्थित कोई देवी।
योगिया, योगी—पु० योग साधक, तपस्वी।

योगींद्र—पु० श्रेष्ठ योगी, याज्ञवल्क्य, शिवजी।
योगीनाथ—पु० शिवजी।
योगीश, योगीश्वर—पु० महादेव, याज्ञवल्क्य। योगिश्रेष्ठ।
योगेश्वर—पु० श्रीकृष्ण। देखो 'योगीश्वर'।
योग्य—वि० समर्थ, लायक, श्रेष्ठ, उचित, उपयुक्त, सुन्दर। पु० पुष्य नक्षत्र।
योग्यता—स्त्री० सामर्थ्य, क्षमता, विद्वत्ता। औचित्य।
योजक—वि० जोड़नेवाला।
योजन—पु० मेल। चार कोस।
योजनगंधा—स्त्री० राजा शान्तनुकी स्त्री सत्यवती।
योजना—स्त्री० मेल, रचना, प्रयोग, नियुक्ति, व्यवस्था, योजन (पभू० ३६)।
योजनीय, योज्य—वि० मिलाने योग्य, जिसे मिलाना हो।
योद्धा, योध, योधी—पु० वीर सैनिक।
योनि—स्त्री० जीवोंके वर्ग। उत्पत्तिस्थान, खानि, गर्भ। देह। जन्म।
योपणा—स्त्री० कुलटा स्त्री।
योषा, योषित—स्त्री० स्त्री, नारी।
यों—अ० इस प्रकार।
यौक्तिक—वि० युक्तियुक्त।
यौगिक—पु० दो शब्दोंके मेलसे बना हुआ शब्द।
यौतक, यौतुक—पु० दहेज, दाइजा।
यौधेय—पु० युद्ध करनेवाला योद्धा। एक देश।
यौवन—पु० जवानी, तरुणावस्था।
यौवराज्य—पु० युवराजका पद। युवराज होनेका भाव।

---

# र

रंक—वि० दरिद्र, कृपण। पु० दरिद्र व्यक्ति 'कहु केहि रंकहि करहुँ नरेशू।' रामा० २११
रंकिणी—स्त्री० दरिद्र स्त्री।
रंग—पु० वर्ण, वह वस्तु जिससे कोई चीज रँगी जाय। नाच गाना। अभिनय स्थल। युद्धस्थल। राँगा। शोभा। प्रभाव, गुण (रंग दिखाना)। दशा। आनन्द, मौज 'बीच प्रयन्त नीरमें ठाढ़ी छिरकत जल अपने अपने रँग।' सूवे० १७६। युद्ध। चाल 'तिनको दान लेत हैं हम सों देखहु इनको रंग।' सूवे० १४७। प्रेम 'ऐसे भये तो कहा तुलसी जु पै जानकीनाथके रंग न राते।' कविता० २१२, (रतन० ७६)। कृपा, अनुग्रह। प्रकार। —जमना = मज़ा आना, धाक बैठना। —पकड़ना, —पर आना = बहार पर आना। —बँधना = धाक जमना। —बिगड़ना = मजा किरकिरा होना, धाक नष्ट होना। —लाना प्रभाव उत्पन्न करना, अवस्था उपस्थित करना।
रंगक्षेत्र, -गृह, -मंडप—पु० नाट्यशाला।
रंगढंग—पु० आकार, लक्षण, तौर-तरीक़ा।
रंगत—स्त्री० रंग, वर्ण, हालत, मज़ा।
रंगतरा—पु० एक तरहकी बड़ी नारंगी।
रँगना—सक्रि० रंग चढ़ाना, अनुकूल या अनुरक्त बनाना। अक्रि० अनुरक्त होना, लीन होना।
रंगवाति—स्त्री० गात्रानुलेपनके निमित्त सुगन्धित द्रव्यकी बनी बत्ती (मति० २३४)।
रंगविरंग, रंगविरंगा—वि० भिन्न भिन्न रङ्गोंका, कई तरहका।
रंगभवन—पु० आमोद-प्रमोदका स्थान।
रंगभूमि—स्त्री० रङ्ग-स्थल, नाट्यशाला, क्रीडास्थल, रणभूमि।
रंगमहल—देखो 'रङ्गभवन'।
रंगमार—पु० ताशका एक खेल।
रंगरली—स्त्री० हँसी खुशी, क्रीड़ा, विहार।
रंगरस—पु० आनन्द, क्रीड़ा।
रंगरसिया—पु० विलासमें लीन पुरुष।
रँगराता—वि० शोभामय, सुन्दर (उदे० 'झंक')।
रँगरूट—पु० नया सिपाही। नया या अनुभवहीन व्यक्ति।
रँगरेज—पु० कपड़ा रँगनेवाला।
रंगरेली—स्त्री० देखो 'रँगरली'।
रँगवाई, रँगाई—स्त्री० रँगनेकी क्रिया या मजदूरी।
रँगवाना, रँगाना—सक्रि० रँगनेका कार्य दूसरेसे कराना।
रंगशाला—स्त्री०, रंगस्थल—पु० नाट्यशाला।
रंगसाज़—पु० रङ्ग बनानेवाला या मेज़ इ० पर रङ्ग चढ़ानेवाला।
रँगावट—स्त्री० रँगनेका भाव।
रंगिणी—स्त्री० क्रीड़ाशील, रसिक।
रँगिया—पु० रँगरेज़।
रंगी—वि० मौजी, रसिक।

रंगीन—वि० रँगदार, रसिक, आनन्दी।
रंगीनी—स्त्री० रङ्गीन होनेका भाव, रँगसाज़ी, शोभा।
रँगीला—वि० रसिक ( उदे० 'झमकीला' )। अनुरागी। [छबीला।
रंगोआब—स्त्री० रङ्ग और चमक।
रंगोपजीवी—पु० अभिनेता, नट।
रंच, रंचक—वि० तनिक, किञ्चित् ( उदे० 'चीकना' ), तुमहिं सबै मिलि दाँवरि दीन्हीं रञ्च दया नहिं आई।' अ० ५, 'जहाँ वारुणीकी करी रञ्चक रुचि [द्विजराज।' राम०८७
रंज—पु० अफसोस, दुःख।
रंजक—पु० रँगरेज। भिलावाँ। स्त्री० बन्दूकमें रखनेकी बारूद ( छत्र० १०५ )। वि० रँगनेवाला, आनन्दित करनेवाला।
रंजन—पु० रँगने या प्रसन्न करनेकी क्रिया। प्रसन्न करनेवाला। सोना। लाल चन्दन।
रंजनकरी—वि० आनन्द देनेवाली।
रंजना—सक्रि० रँगना। आनन्दित करना, भजना।
रंजनीय—वि० आनन्ददायक। रँगनेके लायक।
रंजित—वि० रँगा हुआ, आसक्त, प्रसन्न।
रंजिश—स्त्री० विगाड़, वैमनस्य।
रंजीदगी—स्त्री० नाराज़गी, अप्रसन्नता, रञ्जिश।
रंजीदा—वि० अप्रसन्न, दुखी।
रंडा—स्त्री० विधवा ( के० २०७ )।
रँडापा—पु० वैधव्य।
रंडी—स्त्री० वेश्या।
रंडीबाज़—पु० वेश्यागामी।
रँडुआ,-वा—पु० मृतस्त्रीक व्यक्ति।
रंता—पु० रमण करनेवाला, अनुरक्त ( के० ३१२ )।
रंति—स्त्री० क्रीड़ा!
रंतिदेव—पु० पुराणोंमें वर्णित एक दानी राजा।
रंद—पु० रोशनदान, दुर्ग-प्राचीरका छिद्र।
रँदना—सक्रि० रन्दा फेरकर लकड़ीको समतल करना।
रंदा—पु० लकड़ीकी सतह छीलनेका हथियार।
रंधक—पु० रसोईदार। नाश करनेवाला।
रंधन—पु० नाश करना। भोजन बनाना।
रँधना—सक्रि० राँधना ( सुन्द० १५२ )।
रंधित—वि० पकाया हुआ।
रंध्र—पु० छिद्र, दोष।
रंभ—पु० बाँस, घोर शब्द 'नीर होइ तर ऊपर सोई। माथे रंभ समुद जस होई।' प० ७०। केला 'रंभ मण्डित अखण्ड अति तोरन तड़प तमाशा। रघु०
रंभन—पु० आलिङ्गन।
रंभा—स्त्री० एक अप्सरा, वेश्या। केला ( सू० ६३
रंभाना—अक्रि० गायका बोलना।
रंभित—वि० बजाया हुआ। शब्द किया हुआ।
रंभोरु—वि० स्त्री० केलेके वृक्ष जैसी जङ्घावाली।
रँहचटा—पु० चसका, प्रलोभन 'रूप रँहचटे लगि माँगन सब जग आनि।' वि० १२४
रअय्यत, रइअत—स्त्री० रिआया।
रइकौ—क्रिवि० राई भर भी, ज़रा भी।
रइनि—स्त्री० रात्रि।
रई—स्त्री० मथानी ( उदे० 'जावन' )। मोटा चूर्ण, सूजी। वि० स्त्री० प्रेममें रँगी हुई, 'सरिता इक केशव शोभ रई। राम० २७६
रईस—पु० धनी मनुष्य, अमीर।
रउताई—स्त्री० स्वामित्व 'दानि कहाउब अरु कृपनाई होइ कि खेम कुसल रउताई।' रामा० २१५
रउरे—सर्व० आप ( रामा० २०७ )।
रकछ—पु० एक तरहकी पकौड़ी।
रकत—पु० रुधिर ( उदे० 'गारना' ) वि० लाल।
रकतांक—पु० कुङ्कुम, रक्त चन्दन।
रक़बा—पु० क्षेत्रफल।
रकबाहा—पु० एक तरहका घोड़ा।
रक़म—स्त्री० रुपये पैसेकी नियत संख्या। सम्पत्ति, ज़ेवर, छाप, प्रकार, लगान ( उदे० 'आमिल' )।
रकाव—स्त्री० ज़ीनका पावदान। तश्तरी।
रकाबदार—पु० साईस। खानसामाँ, हलवाई।
रकाबी, रकेबी—स्त्री० तश्तरी।
रक़ीब—पु० प्रेमिकाका अन्य प्रेमी।
रक्त—वि० लाल, रँगा हुआ। पु० रुधिर, कुङ्कुम, कुसुम्भ, सेंदुर, लाख, बन्धूक, रक्त चन्दन। वि० लाल 'रक्त पलाश! रक्त पलाश!' युगवाणी ८०।
रक्तकंठ—पु० कोयल, बैंगन।
रक्तक—पु० बन्धूक, केसर, लाल घोड़ा।
रक्तकुसुम—पु० एक वृक्ष। आक। कचनार।
रक्तचंदन—पु० लाल चन्दन।
रक्तज—वि० रक्तसे उत्पन्न होनेवाला।

रक्तजिह्व—पु० शेर।
रक्तपात—पु० खूनखराबी।
रक्तपायी—वि० रक्त पीनेवाला। पु० खटमल।
रक्तपुष्प—पु० बन्धूक, वृक्ष, दाड़िमका पेड़, कनेर, सेमल।
रक्तप्रदर—पु० स्त्रियोंका एक रोग।
रक्तप्रमेह—पु० बदबूदार लाल पेशाब होनेकी बीमारी।
रक्तफल—पु० वटवृक्ष, कुँदरू, सेमल।
रक्तबीज—पु० अनार। एक राक्षसका नाम।
रक्तसार—पु० रक्त चन्दन, कत्था, पतङ्ग।
रक्तांग—पु० केसर, मूँगा, मङ्गलग्रह, रक्त चन्दन।
रक्ताक्ष—पु० महिष, सारस, चकोर, कबूतर।
रक्तातिसार—पु० वह अतिसार जिसमें पाखानेके साथ खून भी जाता हो।
रक्ति—स्त्री० प्रेम। रत्ती नामक तौल।
रक्तिका—स्त्री० घुँघुची।
रक्तिम—वि० लाल।
रक्तिमा—स्त्री० लालिमा।
रक्तोत्पल—पु० लाल कमल। सेमल।
रक्ष—पु० राक्षस। रक्षा, रक्षक। लाख, लाह।
रक्षक—पु० पालक, रक्षा करनेवाला, चौकीदार।
रक्षण, रक्षन—पु० रक्षा, परित्राण, पालन।
रक्षणीय—वि० रक्षा करने योग्य।
रक्षना—सक्रि० परित्राण करना, बचाना 'भगे कीस सब चले पुकारत रक्षहु रघुकुलनाथा।' रघु० २३६
रक्षस—पु० राक्षस।
रक्षा—स्त्री० परित्राण, बचाव।
रक्षाइद—स्त्री० राक्षसपन।
रक्षागृह—पु० सूतिकागार, सौरी, जच्चाखाना।
रक्षाबंधन—पु० श्रावणकी पूर्णिमाको होनेवाला एक [त्यौहार।
रक्षित—वि० रक्षा किया हुआ, पाला हुआ। विशेष अवसरके लिए अलग रखा हुआ।
रक्षिता—स्त्री० रक्षा। पु० रक्षा करनेवाला।
रक्षी—वि० रक्षक। पु० चौकीदार। राक्षस-पूजक।
रक्ष्यमाण—वि० जिसकी रक्षा हो रही हो।
रख, रखा—स्त्री० गोचर-भूमि।
रखना—सक्रि० रक्षा करना, संग्रह करना, धरना, बचाना, पालन करना, स्थापित या नियुक्त करना।
रखनी—स्त्री० उपपत्नी।
रखया—वि० स्त्री० रक्षा करनेवाली।
रखला—पु० छोटी तोप। तोप लादनेकी हलकी गाड़ी।
रखवाई—स्त्री० चौकीदारी, रखवाली करनेकी क्रिया या मज़दूरी।
रखवार,-वारा,-वाला—पु० रक्षक, त्राता, चौकीदार
रखवारी,-वाली—स्त्री० चौकसी, रक्षा। [(उदे० 'ताल')।
रखाई— देखो 'रखवाई'।
रखाना—सक्रि० रखनेका कार्य कराना, धराना, धारण करना। रक्षा करना, रखवाली करना।
रखिया—पु० रखनेवाला, रक्षा करनेवाला।
रखियाना—सक्रि० राखसे रगड़ना।
रखीसर—पु० ऋषीश्वर ( कबीर २८७ )।
रखेली—स्त्री० उपपत्नी।
रखेल—स्त्री० रखी हुई स्त्री, खरीदी हुई स्त्री, '(अँखियाँ) तजिकै लाज साज गुरुजनकी, हरिकी भई रखेल।' हरि०
रखैया—पु० रक्षक।
रग—स्त्री० नाड़ी, नस।
रगड़—स्त्री० सङ्घर्ष, हलकी चोट, झगड़ा। टेक 'जनम कोटि लगि रगरि हमारी।' रामा० ४९
रगड़ना—सक्रि० घिसना, मलना, पीसना, दिक करना।
रगड़ा—पु० रगड़, कठिन परिश्रम, प्रतिदिनका झगड़ा।
रगण—पु० छन्दःशास्त्रके आठ गणोंमेंसे एक।
रगत—पु० रक्त, खून 'सो स्यावज़ जिनि मारै कंता जाके रगत मास न होई। कबीर १६०
रगदना—दे० 'रगेदना' (रघु० २५६ )।
रगदल—वि० कुबड़ा।
रग़बत—स्त्री० ख़ाहिश, चाह।
रगर, रगरा—दे० 'रगड़', 'रगड़ा'।
रगरेशा—पु० भीतरी बातें। शरीरके भीतरके सब अवयव।
रगवाना—सक्रि० शान्त कराना।
रगाना—सक्रि० शान्त कराना। अक्रि० शान्त होना।
रगीला—वि० हठी, दुष्ट।
रगेटना—सक्रि० रगड़ना, काम कराना।
रगेद—स्त्री० पीछा करने या भागनेकी क्रिया।
रगेदना—सक्रि० पीछा करना, दौड़ना।
रघुनंदन,-नाथ,-रघुनायकपति,-राइ,-रैया—पु०
रघुमणि—पु० श्रीरामचंद्र। [रामचन्द्रजी।
रचक—पु० रचयिता, निर्माता। वि० थोड़ा।

रचना—सक्रि० निर्माण करना, उत्पन्न करना, बनाना, सजाना। रँगना, प्रेम करना ( बीजक ६४ )। अक्रि० रंग चढ़ना, प्रेम-रञ्जित होना। स्त्री० निर्माण, गढ़न, बनावट, निर्मित वस्तु। कारीगरी, दिखावट 'एकस्वप्न-तम जग नयनोंमें, खिला रही सुख-द्रुम अयनोंमें रचना रहित बचन-नयनोंमें चकित सकल श्रुतिधर' [ गीतिका ४२

रचयिता—पु० निर्माता, रचनेवाला।

रचवाना—सक्रि० क्रमसे रखवाना, मेंहदी लगवाना।

रचाना—सक्रि० बनाना, आयोजन करना। (मेंहदी इ०) लगाना।

रचित—वि० बनाया हुआ, निर्मित, कृत।

रचिपचि—क्रिवि० परिश्रम करके, गढ़ गढ़कर(सू०२६)।

रचौंहा—वि० रंजित, अनुरक्त ( बि० ३५ )।

रच्छ—पु० राक्षस। रक्षा, रक्षक।

रच्छक—पु० चौकीदार,रक्षा करनेवाला (उदे०'कढ़ना')।

रच्छस—पु० राक्षस।

रच्छा—स्त्री० बचाव, परित्राण ( उदे० 'पहराइत' )।

रज—स्त्री० धूल। रजनी। राजश्री। पुष्प धूलि, पराग 'रूप, रंग, रज, सुरभि, मधुर, मधु, भरभर मुकुलित-अङ्गोंमें पल्लव ५० पु० चाँदी। धोबी। आर्तव। पानी। बादल। पाप। आकाश। रजोगुण।

रजक—पु० धोबी।

रजगुण,-गुन—पु० रजोगुण।

रजतंत—स्त्री० वीरत्व।

रजत—पु० चाँदी, हाथी दाँत, स्वर्ण, हार। वि० श्वेत।

रजताई—स्त्री० श्वेतता।

रजधानी—स्त्री० राजनगर। राज्य ( सूरा० ७६—? ), 'हमको लिखि लिखि जोग पठावत आपु करत रज-धानी।' भ्र० १०७

रजन—स्त्री० राल।

रजना—अक्रि० रञ्जित होना, रंगा जाना (भावि० ५२) 'चूने हरदी ज्यों रंग रजी' सूबे० १६८।

रजनी—स्त्री० रात्रि। हलदी।

रजनीकर—पु० चन्द्रमा।

रजनीगंधा—स्त्री० एक वृक्ष या उसका फूल (ज्यो०३२)

रजनीचर—पु० राक्षस, निशिचर।

रजनीपति,—श—पु० चन्द्रमा।

रजनीमुख—पु० संध्या।

रजपूत—पु० राजपूत, क्षत्रिय, वीर।

रजपूती—स्त्री० राजपूत होनेका भाव, वीरत्व।

रजबार—पु० देखो 'रजवार'।

रजवती—वि० स्त्री० रजस्वला, ऋतुमती।

रजवाड़ा—पु० राज्य। राजा।

रजवार—पु० राजद्वार 'पुनि बांधे रजवार तुरंगा।' [ प० १

रजस्वला—वि० स्त्री० ऋतुमति।

रजा—स्त्री० स्वीकृति, इच्छा, अनुमति। 'और कीजे व आपकी जो रजा।' सुजा० १६।

रजाइ—स्त्री० आदेश, आज्ञा।

रजाइस—स्त्री० राजाका आदेश, आज्ञा।

रजाई—स्त्री० राजापन। रूईदार ओढ़ना। देखो '

रजाना—सक्रि० राज्य कराना, सुख देना।

रजामंद—वि० सहमत।

रजामंदी—स्त्री० सहमति, स्वीकृति।

रजाय, रजायसु—पु० राजाका आदेश। रामहिं दे रजायसु पाई। निज निज भवन चले सिर नाई। [रामा० १९

रजील—वि० नीच।

रजु, रज्जु—स्त्री० रस्सी ( उदे० 'करषना' )।

रजोकुल—पु० राजकुल।

रजोगुण—पु० प्रकृतिके तीन गुणोंमेंसे एक।

रजोदर्शन—पु० महीनेसे होना, ऋतुमती होना।

रजोधर्म—पु० स्त्रियोंका मासिक धर्म।

रटंत—स्त्री० रटनेकी क्रिया या भाव, रटना।

रट, रटन—स्त्री० पुकार, बार-बार कहना, कहना।

रटना—सक्रि० बार बार कहना या पढ़ना (विन० ३०७) बजना। बोलना (उदे० 'कुखेत')। स्त्री० रटन, रट।

रठ—वि० रूखा, सूखा।

रढ़ना—सक्रि० रटना, बार-बार कहना 'पुनि पीवत ही कच टकटोवै झूठे जननि रढ़ै।' सूत्रे० ५८, (सू०३१)

रण—पु० संग्राम, युद्ध।

रणक्षेत्र—पु० लड़ाईका मैदान।

रणखेत—पु०, भूमि—स्त्री० लड़ाईका मैदान।

रणन—पु० बजना।

रणन-रणन—पु० नूपुरका स्वर, (उदे० 'कण-कण')।

रणमत्त—पु० हाथी।

रणरंग—पु० युद्धका उत्साह, युद्ध।

रणसिंघा, सिंहा—पु० देखो 'नरसिंघा'।

रणस्तम्भ—पु० विजय-सूचक स्तम्भ।

रणस्थल, रणांगण—पु० देखो 'रणक्षेत्र'।

रणित—वि० बजता हुआ ।
रत—वि० तत्पर, अनुरक्त । पु० प्रेम, रति, संयोग ।
रतगिरी—स्त्री० गुंजा।
रतजगा—पु० देखो 'रतिजगा' ।
रतताली—स्त्री० कुटनी ।
रतन—पु० रत्न, मणि, नग, श्रेष्ठ वस्तु ।
रतनजोत—स्त्री० मणिविशेष।
रतनाकर, रतनागर—पु० समुद्र ।
रतनार, रा—वि० ललाई लिये हुए (उदे० अमी० ) ।
रतनारी—स्त्री० लालिमा । पु० धानका एक भेद
रतनालिया—वि० रतनार । [ (उदे० 'कजरी') ।
रतमुहाँ—वि० लाल मुखवाला ।
रताना—सक्रि० अनुरक्त करना । अक्रि० रत होना ।
रतालू—पु० एक कद जिसकी तरकारी बनती है ।
रति—स्त्री० कामदेवकी स्त्री, प्रेम, भक्ति 'स्याम कृपा बिनु, साधुसंग बिनु कहि कौने रति पाई ।' व्यासजी । संभोग । शोभा । रात । एक तौल, घुंघची । कांति । रंगीले रतिजगे जगी पगी सुख चैन ।' वि० ११५ ।
रतिक—क्रिवि० रत्तीभर, किञ्चिन्मात्र ।
रतिजगा—पु० रातभर होनेवाला उत्सव, जागरण 'संगी
रतिनाथ, नाह—पु० कामदेव ।
रतिनायक—पु० कामदेव ।
रतिपति, प्रिय, रमण—पु० कामदेव ।
रतिभवन, भौन, मन्दिर—पु० रति-क्रीडा करनेका घर ।
रतियाना—अक्रि० रत होना ।
रतिरस—पु० श्रमकण, पसीना 'रजत-रेतबन, कर झलमल तेरे जलसे हो निर्मल, माया सागरमें डूबोंका सोख-सोख रति रस हर दूं, ओपभरी दीप-
रतिराइ, राज—पु० कामदेव । [हरीमें ।' वीणा ३ ।
रतिवंत—वि० शोभावान, सुन्दर ।
रती—स्त्री० देखो 'रति' । क्रिवि० रत्तीभर ।
रतोक—क्रिवि० देखो 'रतिक' 'कोटि उपाय किये कहि केशव केहूँ न छांड़त भूमि रतीको ।' राम० ७८ (कलस१२९)
रतोपल—पु० रक्तोत्पल, लाल कमल । लाल खड़िया ।
रतौंधी—स्त्री० रातको न दिखाई देनेका रोग ।
रत्त—पु० रक्त, रुधिर ( मतिराम २१२ ) ।
रत्ती—स्त्री० एक तौल, घुंघची, शोभा । रत्तीभर—ज़रासा
रत्थी—स्त्री० अरथी, विमान ।
रत्न—पु० नग, मणि, मानिक, श्रेष्ठ वस्तु या व्यक्ति ।
रत्नकंदल, द्रुम—पु० मूंगा ।
रत्नगर्भा—स्त्री० पृथ्वी ।
रत्ननिधि—पु० समुद्र । खंजन ।
रत्नपारखी—पु० जौहरी ।
रत्नमाला—स्त्री० रत्नोंकी माला । बलिकी पुत्री ।
रत्नवती, रत्नसू—स्त्री० पृथ्वी ।
रत्नाकर—पु० रत्नोंका पुंज । समुद्र ।
रत्नावली—स्त्री० रत्नोंकी माला । एक काव्यालंकार ।
रथ—पु० एक तरहकी गाड़ी या विमान, देह ।
रथकार—पु० बढ़ई । एक जाति ।
रथचरण—पु० चकवा ।
रथपति, वान—पु० सारथी । [ उत्सव ।
रथयात्रा—स्त्री० आषाढ़ सुदी २ को होनेवाला एक
रथवाह—पु० घोड़ा, सारथी ( उदे० 'तुखार' ) ।
रथांग—पु० रथका पहिया । चकवा पक्षी (रामा०२३९)
रथांगपाणि—पु० विष्णु भगवान् ।
रथिक—पु० रथी । रथारोही ।
रथी—स्त्री० अरथी टिकटी । पु० रथपर चढ़नेवाला, हजार वीरोंसे अकेले लड़नेवाला योद्धा । वि० रथारूढ़ 'रावन रथी बिरथ रघुबीरा ।' रामा० ४९७ ।
रथोद्धता—स्त्री० एक वर्णवृत्त ।
रथ्य—पु० रथका चक्र, सारथी । रथका घोड़ा ।
रथ्या—स्त्री० रथमार्ग, रथसमूह, नाली ।
रद—पु० दाँत । वि० रद्दी, तुच्छ, फीका ।
रदच्छद—पु० ओंठ ।
रदछद—पु० ओंठ । दाँत लगनेका निशान । 'हद रदछद छबि देति यह सद रदछदकी रेख ।' वि० ९०, (देखो
रददान—पु० दाँत गड़ाना । [ 'दन्तछद' ) ।
रदन—पु० दाँत ।
रदनच्छद—पु० ओंठ ।
रदनी—वि० दाँतवाला ( सू० १४२ ) ।
रदपट—पु० ओंठ ।
रदी—पु० हाथी ।
रद्द—वि० बेकार, निकम्मा, काटा हुआ, मसूख ।
रद्दबदल —पु० हेर फेर ।
रद्दा—पु० पूरी लम्बाईमें एक ईंटकी जोड़ाई । एकके ऊपर एक रखी हुई वस्तुओंका खण्ड ।

रद्दी—वि० जो कामका न हो, बेकार।
रन—पु० युद्ध।
रनकना—अक्रि० घुँघुरू आदिका बजना।
रनछोर—पु० श्रीकृष्ण।
रनना—अक्रि० ध्वनित होना, बजना।
रनबंका,-बाँकुरा—वि० वीर।
रनवादी—पु० वीर, योद्धा।
रनवास, रनिवास—पु० अन्तःपुर ( उदे० 'अछरा' )।
रनसाजी—स्त्री० लड़ाई छेड़ना ( रत्ना० ५०७ )।
रनित—वि० आवाज़ करता हुआ, बजता हुआ (बि०१५९)
रनी—पु० रण करनेवाला, योद्धा।
रपटना—अक्रि० फिसलना। शीघ्रतासे चलना या कोई काम करना।
रपटाना—सक्रि० सरकाना, जल्दी पूरा करना।
रपट्टा—पु० फिसलना। अधिक श्रम, चपेट।
रफ़—वि० जो साफ़ या चिकना न हो। खुरदरा।
रफते रफते—क्रिवि० धीरे धीरे।
रफल—स्त्री० ऊनी चादर। एक तरहकी बन्दूक, राइफिल।
रफ़ा—वि० निवारित, मिटाया या दूर किया हुआ।
रफा दफा—वि० निवृत्त। निबटाया हुआ।
रफीक—पु० दोस्त, साथी।
रफ़ू—पु० तागेसे फटे कपड़ेका छेद भरना।
रफूगर—पु० रफ़ू करनेवाला।
रफ़ूचक्कर—वि० ग़ायब।
रफ्तनी—स्त्री० गमन, निर्यात।
रफ्तार—स्त्री० चाल, गति।
रफ़्ता-रफ़्ता—क्रिवि० क्रमशः, धीरे धीरे।
रब, रब्ब—पु० पालनकर्त्ता, परमेश्वर। मुसलमानी मत 'कीन्ही कत्ल मथुरा दोहाई फेरी रबकी।' भू० १६०
रबड़, रबर—पु० एक तरहकी गोंदसे बना लचीला पदार्थ।
रबड़ी,रबरी—स्त्री०चीनी मिश्रित लच्छेदार दूध,बसौंधी।
रबदा—पु० कीचड़। बार बार चलनेका श्रम।
रबाना—पु० एक प्रकारका झाँझदार डफ।
रबाब—पु० एक बाजा 'सुर मादर रबाब भल साजा।' प० २६०, ( दे० 'रबाब' )।
रबाबिया—पु० रबाब बजानेवाला।
रबी—स्त्री० वसन्त ऋतु, बसन्तकी फसल।
रब्त—पु० अभ्यास, मेल। रब्त-जब्त = हेल-मेल।
रभस—पु० वेग, आनन्द ( विद्या० २४८, २९४ ), दुःख, औत्सुक्य।
रम—वि० सुन्दर। पु० पति। कामदेव। मद्यविशेष
रमक—पु० प्रेमी। स्त्री० झकोरा। हलका नशा।
रमकना—अक्रि० हिंडोलेपर झूलना 'झोटा बढ़ै दोऊ दिसि, डार परसत जाय।'—हरि० (१७, ३४४)। थिरकते हुए चलना।
रमजान—पु० मुसलमानोंका एक महीना, जिसमें रोजा रखते हैं
रमण—पु० वह जो रमण करे, पति, कामदेव, क्रीड़ा वि० आनन्द देनेवाला, प्रिय, सुन्दर।
रमणी—स्त्री० स्त्री, सुन्दरी।
रमणीक, रमणीय—वि० मनोहर, सुहावना।
रमता—वि० जो बराबर घूमता फिरता रहे, कहीं ९ रूपसे न रहे।
रमन,रमनी,रमनीक,रमनीय—देखो 'रमण' इत्यादि
रमना—अक्रि० रमण करना, आनन्द करना (उदे 'छेह')। प्रेममुग्ध होना, टिकना, विचरना, देना। पु० घेरा, चरागाह, उद्यान।
रमल—पु० पासेके द्वारा शुभाशुभ फल [illegible] विद्या
रमसरा—पु० ऊखके खेतमें होनेवाला एक पौधा '[illegible] उखारी रमसरा रस काहे ना होय।' रहि० वि० ३१।
रमा—स्त्री० लक्ष्मी।
रमाकांत,-नरेश—पु० विष्णु।
रमाना—सक्रि० बिलमाना, रोकना, लगाना, अनुरक्त या अनुकूल बनाना।
रमानिकेत,-निवास—पु० विष्णु।
रमापति,-रमण—पु० विष्णु।
रमित—वि० मुग्ध।
रमूज—स्त्री० रहस्य, संकेत, कटाक्ष।
रमैती—स्त्री० खेतीके काममें किसानोंकी पारस्परिक सहायता।
रमैनी—स्त्री० कथा, वर्णन ( बीजक ६५ )।
रमैया—पु० राम' भगवान।
रम्माल—पु० रमल विद्या जाननेवाला।
रम्य—वि० रमणीक, सुन्दर।
रम्यता—स्त्री० रमणीयता।
रम्यसानु—पु० पहाड़के सिरेपरकी चौरस भूमि।
रम्या—स्त्री० गंगा, रात्रि, एक रागिनी।
रम्हाना—अक्रि० देखो 'रम्भाना'।
रय—पु० वेग, प्रवाह। धूल, रज।
रयत, रैयत—स्त्री० रैयत, प्रजा 'सुनि शत्रु-मित्रकी, नृपचरित्रकी, रयत रावत बात।' के० २०१।

रयन, रयनि—स्त्री० रात्रि।

रयना—अक्रि० रंग जाना ( राम० ८३ ), अनुरक्त होना (उदे० 'उरहन'), मस्त होना 'जोबन वन ते निकसि चले ये मुरली नाद रये।' सू० १४७। बोलना, उच्चारण करना।

रयासत—स्त्री० रईसी। राज्य।

ररंकार—पु० रकारकी आवाज।

रर—स्त्री० रट, रटना।

ररकना—अक्रि० पीड़ा देना, कसकना।

ररना—सक्रि० रटना, फिर फिर कहना 'सदा राम नामै ररै दीन बानी।' राम० ३२१, अ० ( ४२ )। (कह कर ) पुकारना 'कब जननी कहि मोहि ररै।' सूवे ५२।

ररिहा—पु० रट लगाने वाला, बार बार मांगने वाला। देखो 'रुरुआ'।

ररुआ—पु० देखो 'रुरुआ' ( गुलाब १८९ )।

ररी—पु० ररिहा। वि० फसादी। कंगाला।

रलना—अक्रि० एक हो जाना, मिलना, 'तैसिय पियकी मुरली जुरली अधर सुधारस'—नन्द, ( सुजा० १२ दास १६३, १७३, कबीर २ )।

रलाना—सक्रि० मिलाना।

रली—स्त्री० विलास, क्रीड़ा, खुशी।

रल्ल—पु० रेला, धक्कमधक्का।

रव—पु० आवाज, ध्वनि। रवि, सूर्य।

रवकना—अक्रि० झपटना, लपकना, उछलना 'नैन मीन तरवर आनन भे चंचल करत विहार। मानो कर्नफूल चाराको, रवकत बारम्बार।' सू० १६०; 'रवकि रवकि हरि बैठत गोद।' सूवे० ६८। [भांड़। शब्द।

रवण—वि० चंचल। शब्दायमान। पु० कोयल। ऊंट।

रवताई—स्त्री० राजा या स्वामी होनेका भाव, स्वामित्व।

रवन—पु० वि० देखो 'रमण', 'जय जय रसिक रवनी-रवन।' भगवतरसिक।

रवना—पु० रावण। अक्रि० रमण करना 'सो पद रवहु जि बहुरि न रवना।' कबीर ३०६। बोलना। चलना, बढ़ना ( बीजक ५६ )।

रवनि, रवनी—स्त्री० रमणी, स्त्री (उदे० 'रवन' 'धीरक')

रवन्ना—पु० महसूलकी रसीद।

रवाँ—वि० चलता हुआ। प्रवाहमय। तेज। अभ्यस्त।

रवा—पु० दाना, कण, सूजी। वि० उचित 'रामको किंकर सो तुलसी समुझेहि भलो कहिबो न रवा है।' [कविता० २११

रवाज—पु० प्रथा, रीति, चलन।

रवादक—पु० बंधक रखी हुई चीजको हजम करनेवाला।

रवादार—वि० दानेदार। सहिष्णु, सम्बन्धी, कबूल करनेवाला (गबन ६ ) चाहनेवाला, हितेच्छु मनुष्य।

रवानगी—स्त्री० प्रस्थान।

रवाना—वि० प्रस्थान। प्रेषित।

रवानी—स्त्री० प्रवाह।

रवाब—पु० एक बाजा (उदे० 'गवैया' 'किन्नरी')।

रवारवी—स्त्री० शीघ्रता, जल्दी।

रवि—पु० सूर्य, अग्नि, आक।

रविज—पु० देखो 'रवितनय'।

रविजा, रवितनया—स्त्री० यमुना।

रवितनय, नन्द, पुत्र—पु० यमराज, शनि, सुग्रीव, कर्ण† [† अश्विनीकुमार

रविप्रिय—पु० कमल अकवन।

रविबाण—पु० सूर्यके समान प्रकाश करनेवाला बाण।

रविवार, वासर—पु० इतवार।

रविश—स्त्री० क्यारियोंके बीचका मार्ग। चाल, तरीका।

रविसुअन, सूनु—पु० देखो 'रवितनय'।

रवींद्र—पु० विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

रवला—वि० जिसमें रवा हो, रवादार।

रवैया—पु० तौर-तरीका, रंग-ढंग। चाल-ढाल।

रशना—स्त्री० करधनी, रस्सी। रसना। जीभ।

रशनोपमा—स्त्री० एक काव्यालंकार 'होत जात उपमान जहँ पूर्व कथित उपमेय।'

रश्क—पु० ईर्ष्या।

रश्मि—स्त्री० किरण, लगाम।

रस—पु० सार, स्वाद, सुखानुभूति, वह अनुभव जो शोक, हास्यादि स्थायी भावोंके प्रकट होनेसे होता है, उमंग, इच्छा, प्रेम, पानी, जूस, धातुभस्म, छः का [नौकी संख्या।

रसकोरा—पु० एक मिष्टान्न, रसगुल्ला।

रसखीर—स्त्री० मीठा चावल।

रसगुनी—पु० रसज्ञ, काव्यमर्मज्ञ।

रसगुल्ला—पु० एक मिठाई।

रसग्रह—पु० रसना, जीभ।

रसज्ञ—वि० काव्य या संगीतका मर्मज्ञ, जानकार।

रसज्ञा—स्त्री० जीभ।

रसद—स्त्री० बाँट, हिस्सा, भोजन-सामग्री। वि० स्वादिष्ट, सुखद।

रसदार—वि० रसवाला।
रसधातु—पु० पारा।
रसन—पु० जीभ। ध्वनि। स्वाद लेना।
रसना—स्त्री० करधनी। जीभ। घोड़ेकी बाग। अक्रि० रसका अनुभव करना, तन्मय होना, अनुरक्त होना, 'सारस हैं सारस न हैं तातें रसैं न हंस।'दीन० २०३। 'निहचय भौंर कँवल-रस रसा।' प० १४९। टपकना [स्रवना।
रसनीय—वि० स्वाद लेने लायक। स्वादिष्ट।
रसनेन्द्रिय—स्त्री० जीभ।
रसनोपमा—स्त्री० देखो 'रशनोपमा'।
रसपति—पु० चन्द्रमा, पारा, शृंगार रस। राजा।
रसप्रबन्ध—पु० नाटक। एक तरहकी कविता जिसमें एक ही विषयका वर्णन सम्बद्ध पद्योंमें हो।
रसबधावा—पु० देखो 'रहसबधावा'।
रसबरी, रसभरी—स्त्री० एक मीठा फल।
रसभस्म—स्त्री० पारेकी भस्म।
रसभीना—वि० रस या आनन्दमें मग्न। गीला।
रसम—स्त्री० प्रथा। मवाद।
रसमसा—वि० रसमग्न, अनुरक्त, भीगा हुआ, पसीनेसे तर, रस (आनन्द) मय 'गोपी औ गोपालको अति रसमसो समाज।' हरि० (ब्रज० ५७३)।
रसमि—स्त्री० रश्मि, किरण, चमक।
रसरा—पु०, रसरी—स्त्री० रस्सा, रस्सी 'रसरी आवत जाततें सिलपर परत निसान।' (उदे० 'चरस')।
रसराज, राय—पु० शृंगार रस, रसौत, पारा।
रसल—वि० रसीला। रसयुक्त।
रसवंत—पु० रसिक, काव्यमर्मज्ञ' प्रेमी। वि० रसयुक्त।
रसवन्ती, रसवत—स्त्री० अंजन विशेष, एक ओषधि।
रसवट—पु० पानी रोकनेके लिए नावके छेदोंमें भरनेका [मसाला।
रसवत्—पु०एक काव्यालंकार। वि०रसमय।
रसवाद—पु०रस या प्रेमकी बात। बकवाद।(सूबे०२०१)
रसांजन—पु० रसौत।
रसा—स्त्री० पृथिवी, द्राक्षा, जिह्वा, पाढ़ा। पु० शोरबा।
रसाइनी—पु० रसायनज्ञ, कीमियागर।
रसाई—स्त्री० पहुँच।
रसातल—पु० सातवाँ पाताल।
रसात्मक—वि० रसयुक्त (पभू० ११५)।
रसादार—वि० शोरबेदार (तरकारी)।
रसाना—अक्रि० आनन्द लूटना 'राधा ब्रजाम...' रसनि रसाइये'—नागरी०।
रसापायी—पु० जीभसे पानी पीनेवाला जीवधारी।
रसाभास—पु० अनुचित या अनुपयुक्त स्थानमें रसका वर्णन।
रसायन—पु० सोना बनानेकी विद्या, कीमिया। व्याधि-नाशक ओषधि। विष। तक्र। कमर।
रसायनशास्त्र—पु० वह शास्त्र जिसमें पदार्थोंके और उनके रूप आदिका विवेचन हो। [पु० 'रसाइनी'
रसायनी—स्त्री० बुढ़ापा दूर करनेवाली दवा।
रसार, रसाल—वि० रसमय। मीठा (उदे० 'दुलभ' सुन्दर 'महामोहके नूपुर बाजत निन्द सब्द रसाल सू० १२, 'मनि लाल मानिक जटित भँवरा,सुरँग रं रसार।' सू० १७६। पु० आम, ऊख, गेहूँ, कटहल
रसालय—पु० रसशाला। आमोद-प्रमोदकी जगह।
रसाला—स्त्री० एक चटनी, सिखरन, दाख, जीभ।
रसालिका—स्त्री० छोटा आम। वि० स्त्री० [मधुर
रसावर, रसावल—पु० रसौर, रसखीर।
रसिआउर, रसिआवर—पु० रसखीर, एक गीत।
रसिक—पु० रसज्ञ, सहृदय, प्रेमी। सारस।
रसिकता,रसिकाई—स्त्री० सहृदयता, परिहास।
रसिका—स्त्री० जीभ। सिखरन। सारिका।
रसित—वि० ध्वनि करता हुआ, रसयुक्त। पु० ध्वनि
रसिया—पु० रसिक,फागुनमें गाया जानेवाला एक गीत
रसियाव—पु० देखो 'रसिआउर'।
रसी—पु० रसिक।
रसीद—स्त्री० प्राप्ति-पत्र, प्राप्ति।
रसील, रसीला—वि० रसमय (उदे० 'छमकीला') मीठा, विलास-प्रेमी।
रसूम—पु० नेग। नियम, दस्तूर, किसी कार्यके निमित्त सरकारको दिया जानेवाला धन।
रसूल—पु० पैग़म्बर, दूत।
रसेंद्र—पु० पारा।
रसेश, रसेस—पु० श्रीकृष्ण। पारा। लवण।
रसोइया—पु० रोटी बनानेवाला।
रसोई—स्त्री० तैयार भोजन, भोजन (उदे० 'जगरमगर', 'तपना')। भोजनगृह।
रसोईदार—पु० रसोई बनानेवाला।

रसोन—पु० लहसुन ।
रसोपल—पु० मुक्ता ।
रसोय—स्त्री० भोजन ।
रसौत—स्त्री० औषध विशेष, रसवत ।
रसौर—पु० रसखीर ।
रस्तोगी—पु० वैश्योंकी एक जाति ।
रस्म—स्त्री० प्रथा, रीति, व्यवहार ।
रस्मि—स्त्री० किरण, घोड़ेकी बाग
रस्सा—पु० मोटी रस्सी ।
रस्सी—स्त्री० रज्जु, डोरी ।
रहँकला, रहकला—पु० छकड़ा, गाड़ीपर रखी हुई छोटी तोप (छत्र० ११९, उद्दे० 'दवान' ) ।
रहँचटा, रहचटा—पु० देखो 'रँहचटा' (मति० १७९)।
रहँट,रहट—पु० पानी खींचनेकी चर्खी 'सवन कूपकी रहटि घण्टिका, राजत सुभग समाज ।' सू० १५५, ( उद्दे० 'घरी' ) । देखो 'रेंट' ( उद्दे० 'बास' ) ।
रहँटा, रहटा—पु० चर्खा ( कबीर० १६५ ) ।
रहचह—स्त्री० चहचहाहट ।
रहज़नी—देखो 'राहज़नी' ( सेवा० १८४ ) ।
रहठा—पु० अरहरका सूखा डण्ठल ।
रहन—स्त्री० रहनेका ढँग, रीति, व्यवहार, निवास, प्रीति 'जो पै रहनि राम सों नाहीं ।' विन० ४१३
रहनसहन—पु० स्त्री० चाल-ढाल । रहनेका ढँग ।
रहना—अक्रि० निवास करना, ठहरना, मौजूद या जीवित
रहनि—देखो 'रहन' । [ रहना, रुकना (उद्दे० 'गरना') ।
रहम—पु० दया, अनुग्रह ।
रहमत—स्त्री० दया ।
रहमान—वि० दयावान् । पु० ईश्वर ( उद्दे० 'थाहना' ) ।
रहर—स्त्री० एक दाल, अरहर ।
रहरू, रहलू—स्त्री० एक देहाती गाड़ी ।
रहल—स्त्री० पुस्तक रखनेकी चौकी ।
रहस—पु० रहस्य, भेद । सुख,आनन्द (उद्दे०'फुलवार') । एकान्तता, 'वृन्दा विपिन रस अति अगोचर रहस सब प्रगटहिं कह्यो ।' अलबेली अलि
रहसना—अक्रि० हर्षित होना । 'बोलेउ राउ रहसि मृदुबानी' रामा० २०० ।' ( उद्दे० 'तारा' )
रहसबधावा—पु० विवाहके समयकी एक रस ।
रहसि—स्त्री० निराला स्थान ।
रहसू—स्त्री० कुलटा स्त्री
रहस्य—पु० भेद, मर्म, गोप्य बात, मज़ाक । पहेली 'कहा मनुजे, नभधरणी बीच बना जीवन रहस्य निरुपाय' कामायनी ४८ ।
रहस्यवाद—पु० वह ( कविता ) जिसमें अज्ञातके प्रति जिज्ञासा हो।
रहाई—स्त्री० रहनेकी क्रिया । चैन,कल ।
रहाना—अक्रि० रहना, होना ।
रहावन—स्त्री० पशुओंके जुटनेकी जगह ।
रहासहा—वि० बचाखुचा, अवशिष्ट ।
रहित—क्रिवि० हीन, वञ्चित ।
रहिला—पु० चना ( रहीम १९ ) ।
रहीम—पु० ईश्वर । वि० दया करनेवाला ।
रहुवा—पु० दूसरेके मत्थे रहनेवाला व्यक्ति, टुकड़खोर ।
राँक, राँकव—वि० गरीब, निर्धन 'राँकव कौन सुदामा-हुतें आप समान करे ।' सूवि० १५
राँग, राँगा—पु० एक धातु ।
राँच—अ० ज़रा भी, किञ्चित् ।
राँचना—अक्रि० रञ्जित होना, प्रेममें डूबना, लिप्त होना 'जो बिलोकि मुनिवर मन राँचा ।' रामा० ५५२,'करि अभिमान विषयरस राँच्या ।' सू० २८० । सक्रि० रगना, रचना, बनाना 'कोटि इन्द्र छिनहींमें राँचै, छिनमें करै विनास ।' सू० १००
राँटा—पु० रहँटा । टिट्टिभ पक्षी ( कवि प्रि० १०२ ) ।
राँड़—स्त्री० विधवा ।
राँड़ना—अक्रि० रुदन करना ।
राँध—पु० पड़ोस, पास ( उद्दे० 'मकु' ), राँध न तहवाँ दूसर कोई ।' प० ३२६ । वि० परिपक्व बुद्धिवाला 'राँध जो मन्त्री बोले सोई ।' प० १११
राँधना—सक्रि० सिझाना, पकाना ।
राँपी—स्त्री० मोचियोंका एक औज़ार ।
राँभना—अक्रि० रँभाना ( उद्दे० 'खिरका' ) ।
राआ, राइ—पु० राजा ( सूसु० १४५ ) ।
राइता—पु० उबाला हुआ कौआ इ० मसालेके साथ दहीमें डालकर तैयार किया हुआ एक खाद्य पदार्थ ।
राई—स्त्री० छोटी सरसों । राधा ( विद्या० २५१ ) । पु० राजा, श्रेष्ठ व्यक्ति । राई लोन उतारना = नज़रका कुप्रभाव दूर करनेके लिए राई नमक बच्चेके चारों ओर घुमाकर आगमें डालना ( उद्दे० 'उतराना','चील' )

राउ—पु० राजा 'बिलपत राउ बिकल बहु भाँती।' रामा० २७३

राउत—पु० सरदार, क्षत्रिय, बीर, 'गुह राउतहिं जुहारे [जाई।' रामा० २९०।

राउर—सर्व० आपका 'भरत कि राउर पूत न होंही।' रामा० २१३, ( उदे० 'उदबेग' )। पु० अन्तःपुर 'गे सुमन्त तब राउर माहीं।' रामा० २१७

राउल—पु० राजा, राजकुलका व्यक्ति।

राकस—पु० राक्षस (उदे० 'दैयत','वालकता','तुलाना')।

राकसिनि, राकसी—स्त्री० राक्षसी 'चहूँ ओर हैं राकसी दुःखदानी।' राम० ३२१

राका—स्त्री० पूर्णिमा, पूर्णिमाकी रात।

राकापति, राकेश—पु० चन्द्रमा।

राक्षस—पु० दैत्य, निशिचर।

राख—स्त्री० भस्म, भभूत।

राखना—सक्रि० रक्षा करना,रोक रखना, ठहराना। 'जेहि पावा, राखा नहिं ताहू।' रामा० १०८; 'है ब्रजमें कोउ हितू हमारो, चलत गोपालहिं राखै। सू० १८८

राखी—स्त्री०रक्षाबन्धनका डोरा,श्रावणी पूर्णिमाका पर्व।

राग—पु० प्रेम, क्रोध, द्वेष, लेप, गानेकी ध्वनि, लालरँग लाली 'कुवलय मुकलित होत ज्यों परसि प्रात-रविराग।' मति० २३३।

रागना—सक्रि० अलापना,गाना। अक्रि० रञ्जित होना, ( मति० १९३ ) अनुरक्त होना। क्रुद्ध होना।

रागात्मक—वि० रागयुक्त।

रागान्वित—वि० प्रेमयुक्त।

रागिणी, रागिनी—स्त्री० रागकी भार्या। विदग्धा स्त्री।

रागी—पु० प्रेमी। वि० लाल, अनुरक्त,रञ्जित। विषय-संलिप्त। स्त्री० रानी।

राघव—पु० रघु-वंशज, श्रीराम। एक बड़ी मछली।

राघवेंद्र—पु० श्रीरामचन्द्र।

राचना—अक्रि० अनुरक्त होना, तन्मय होना। 'सो बर मिलहिं जाहि मन राचा।' रामा० १२९। रञ्जित होना। अच्छा जान पड़ना। सक्रि० बनाना 'एक जीव देही द्वै राचो,यह कहि कहि जु सुनावै।'सू०१२६

राछ—पु० अस्त्र-विशेष। जुलूस। लकड़ीका हीर।

राछस—पु० राक्षस।

राज—पु० राज्य, देश, शासन, शासनकाल। घर बनाने-वाला कारीगर। राजा। भेद, रहस्य, गुप्त बात ( कर्म० १३३, ४३४ )।।

राजकीय—वि० राज्य या राजाके सम्बन्धका।

राजकुँअर राजकुमार—पु० राजपुत्र।

राजगद्दी—स्त्री० राजाका सिंहासन,राज्याधिकार। ।ज्य

राजगीर—पु० थवई, राज। [रोहण, राजतिलक

राजत—पु० चाँदी। वि० चाँदीका।

राजतिलक—पु० राज्याभिषेक।

राजदंड—पु० विधानानुमोदित दण्ड। राजशासन।

राजदंत—पु० सामनेके ऊपर और नीचेके दो दो बड़े दाँत

राजदूत—पु० वह व्यक्ति जो एक राज्यकी ओरसे दूसरे राज्यके साथ राजनीतिक कार्य-सम्पादनार्थ [जाय

राजद्रोह—पु० बग़ावत।

राजद्वार—पु० न्यायालय। राजाकी पौरी।

राजधानी—स्त्री० राजाके रहनेका नगर, प्रधान नगर।

राजना—अक्रि० शोभा देना ( उदे० 'जनेत' 'जेहरि' रामा० १३३ )।

राजनीति—स्त्री० राज्यसंचालन सम्बन्धी नीति।

राजनीतिवद्—पु० राजनीतिज्ञ।

राजन्य—पु० क्षत्रिय, राजा। अग्नि। खिरनी।

राजपंखि—पु० बहुत बड़ा पक्षी ( उदे० 'मँडराना' )।

राजपंथ, राजपथ—पु० राजमार्ग, चौड़ा रास्ता।

राजपुरुप—पु० राज्यका कर्मचारी।

राजपूत—पु० क्षत्रिय। राजकुमार।

राजबाड़ी—स्त्री० राजप्रासाद। राजबाटिका।

राजबाहा—पु० वह नहर जिससे छोटी छोटी नहरें निकाली गयी हों। [राज्यका समर्थक हो।

राजभक्त—वि० जो राजाका भक्त हो, जो राजा या

राजभोग—पु० एक तरहका पतला चावल।

राजमंडल—पु० किसी राज्यके आसपासके राज्य।

राजमहल,-हर्म्य—पु० राजप्रासाद।

राजमान—वि० विराजमान, बैठा हुआ 'राजमान जल-जान उपरि दोउ कान्ह भानुकी नन्दिनी।' श्री भट्ट

राजमार्ग,-वर्त्म—पु० देखो 'राजपथ'।

राजयक्ष्मा, राजरोग—पु० क्षय रोग।

राजयष्टि—स्त्री० राजदण्ड।

राजराज—पु० सम्राट्, श्रेष्ठराजा, कुबेर, चन्द्रमा।

राजराजेश्वर—पु० शाहन्शाह, सम्राट्।

राजर्षि—पु० क्षत्रियऋषि। ऋषियोंमें श्रेष्ठ।

राजलोक—पु० राजमहल '...केशव बहु राय राज,

राजलोक देखो।' के० १६८। [ फल।

राजवल्लभ—पु० बड़ा आम या बड़ा बेर। खिरनी नामक

राजविद्रोह—पु० बग़ावत।

राजसंसद्—पु० राजसभा।

राजस—वि० रजोगुणप्रधान, रजोगुणी। पु० क्रोध, गर्व

राजसत्ता—स्त्री० राजशक्ति। [ (वि० १६२)।

राजसारस—पु० मोर।

राजसिक—वि० देखो 'राजस'।

राजसिरी—स्त्री० राजलक्ष्मी 'विन्दु किधौं मुख फेननके किधौं राजसिरी स्रव मगल लाजनि।' के० ३२३

राजसी—वि० राजाओंका सा, रजोगुणी।

राजसूय—पु० एक यज्ञ।

राजस्थान—पु० राजपूताना।

राजस्व—पु० राजकर।

राजहंस—पु० वह हंस जिसकी चोंच और पाँव लाल

राजा—पु० नरपति, शासक, स्वामी। [ होते हैं।

राजाधिकारी—पु० न्यायाधीश।

राजाधिराज—पु० राजराजेश्वर, सम्राट्।

राजानक—पु० अधीन राजा। [काम कराना।

राजाभियोग—पु० प्रजाकी इच्छाके विरुद्ध राजाका उससे

राजि, राजिका—स्त्री० श्रेणी, कतार, रेखा। राई।

राजित—वि० शोभित। उपस्थित।

राजिव—पु० कमल।

राजी—स्त्री० देखो 'राजि' 'मनहु सुभग सावन घन राजी।' रामा० १६१। वि० सम्मत, प्रसन्न, स्वस्थ।

राज़ीनामा—पु० वादी प्रतिवादीका समझौता, सुलहनामा।

राजीव—पु० कमल। एक मछली। एक तरहका हिरन।

राजेंद्र—पु० सम्राट्। राजाओंमें श्रेष्ठ।

राजोपजीवी—पु० राजकर्मचारी।

राज्ञी—स्त्री० रानी।

राज्य—पु० राजाके अधीन देश, शासन।

राजतंत्र—पु० राज्यकी शासन-व्यवस्था।

राज्य-व्यवस्था—स्त्री० शासन-प्रबन्ध। कानून।

राज्याभिषेक—पु० राज्यारोहण, राजगद्दी।

राट्टुल—पु० लकड़ी इ० तौलनेका बड़ा तराजू जो लट्ठेपर

राट्—पु० राजा, श्रेष्ठ व्यक्ति। [ लगाया जाता है।

राठ—पु० देखो 'राट्'। राज्य।

राठवर, राठौर—पु० राजपूतोंका एक भेद।

राड़—वि० तुच्छ, अधम, दुष्ट, कायर (विन० ४१५, साखी १७७)।

राढ़—देखो 'राड़', (कविता०)। स्त्री० रार, झगड़ा।

राणा—पु० उदयपुर आदिके राजाओंकी उपाधि। राजा (राजपुताना)।

रात—स्त्री० रात्रि, रजनी। वि० लाल 'जनु मेरु पर्वत शृङ्ग अद्भुत चन्द्र राजत रात जू।' राम० ३७१

रातना—अक्रि० रँग जाना, रक्त-वर्ण होना, प्रेमासक्त होना (उदे० 'रंग', विन० ३६६)।

रातरानी—स्त्री० एक प्रकारका पौधा और उसका फूल जो रातमें फूलता है।

राता—वि० रञ्जित, लाल (उदे० 'उपरना', 'दहन')।

रातिचर—पु० राक्षस 'मारे रन रातिचर, रावन सकुल दल…'—कविता० २०२।

रातिब—पु० हाथी घोड़े आदिका खाना (चना, रोट इ०)।

रातुल—वि० राता, लाल।

रात्रि, रात्री—स्त्री० रात।

राद्ध—वि० पकाया हुआ। ठीक किया हुआ।

राध—स्त्री० मवाद। पु० धन।

राधन—पु० साधन। सन्तोष। [(कविता० २५१)।

राधना—सक्रि० उपासना करना, साधना, सिद्ध करना

राधा—स्त्री० विशाखा नक्षत्र, वैशाख पूर्णिमा। प्रेम।

राधाकांत, वल्लभ—पु० श्रीकृष्ण। [वृषभानुकी पुत्री।

राधारमण—पु० श्रीकृष्ण।

राधिकारमण, -रौन—पु० श्रीकृष्ण (चन्द्रावली ३४)।

राधेय—पु० कर्ण।

रान—स्त्री० जाँघ।

राना—पु० राजा (सूसु० ३५)। अक्रि० रँगना, अनु० रक्त होना 'कौन कली जो भौंर न राई।' प० १४४

रानी—स्त्री० राज्ञी, राजपत्नी, स्वामिनी।

रानीकाजर—पु० धानका एक भेद।

रापी—स्त्री० चमड़ा काटनेका औज़ार।

राब—पु० पकाकर गाढ़ा किया हुआ गन्नेका रस।

राबड़ी—स्त्री० रबड़ी, बसौंधी।

राम—पु० रामचन्द्र, बलराम, परशुराम। तीनकी संख्या। राम राम करके = कठिनाईसे। राम राम हो जाना = मृत होना।

रामकेला—पु० एकतरहका आम। बड़ी जातिका केला।

रामचंगी—स्त्री० एक तरहकी तोप ( हिम्मत० १२ ) ।
रामजना—पु० एक संकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्याका काम करती हैं ।
रामजनी—स्त्री० वेश्या, अज्ञात पिताकी पुत्री ।
रामतरोई—स्त्री० भिण्डी नामक तरकारी ।
रामता—स्त्री० रामत्व, रामका गुण ।
रामतारक, राममंत्र—पु० रामका मन्त्र जिसे रामोपासक
रामति—स्त्री० भिक्षार्थ भ्रमण । [ जपते हैं ।
रामदाना—पु० एक पौधा या उसका दाना ।
रामदूत—पु० हनुमानजी ।
रामधनुष—पु० इन्द्र-धनुष ।
रामधे—अ० वक्ताका निश्चयबोधक एक देहाती टेक ।
रामना—अक्रि० रमना, विचरना ।
रामनामी—पु० 'रामनाम' छपा हुआ दुपट्टा इ० ।
रामफल—पु० शरीफा ।
रामबाँस—पु० केतकीसे मिलता जुलता एक पौधा ।
रामबाण,-बान—वि० तत्क्षण प्रभाव दिखानेवाला ।
रामभोग—पु० आमका एक भेद । एक तरहका चावल ।
रामरज—स्त्री० एक तरहकी पीली मिट्टी ।
रामरस—पु० नमक ।
रामराज्य—पु०रामका (या वैसा ही) सुखदायक शासन ।
रामराम—पु० नमस्कार । [ २,१८६ ) ।
रामरौला—पु० निरर्थक शोरगुल ( निबन्ध० भाग
रामलीला—स्त्री० रामकृत कार्योंका अभिनय ।
रामवाण—वि० अचूक । फौरन असर करनेवाला । पु० एक आयुर्वेदीय रस ।
रामशर—पु० एक तरहका सरकण्डा ।
रामानुज—पु०विशिष्टाद्वैतके प्रतिपादक प्रसिद्ध दार्शनिक ।
रामा—स्त्री० सुन्दरी, नदी, लक्ष्मी, सीता, राधा ।
रामानंदी—वि० वैष्णवाचार्य रामानन्दके सम्प्रदायका ।
रामायण, रामायन—स्त्री० रामकथा, वह पुस्तक जिसमें राम-कथाका वर्णन हो ।
रामायणी—पु० रामायणका विशेषज्ञ । वि० रामायण
रामायुध—पु० धनुष । [ सम्बन्धी ।
रामशिला—स्त्री० एक पहाड़ी जो गयाके पास है ।
रामिल—पु० प्रेमपात्र । पति । कामदेव ।
राम्या—स्त्री० रात ।
राय—स्त्री० सलाह, सम्मति । पु० राजा, सरदार ।
रायकरौंदा—पु० एक फल ।
रायज—वि० व्यवहारमें आनेवाला ।
रायता—पु० दहीमें डाला हुआ कुम्हड़ा आदि ।
रायभोग—पु० एक धान, राजभोग ।
रायमुनी—स्त्री० 'लाल' पक्षी ( रामा० ५१७ ) ।
रायरासि—स्त्री० राजकोष ।
रायसा—पु० 'रासो' नामक काव्य ।
रार, रारि—स्त्री० लड़ाई, झगड़ा ( उदे० '७ः 'थँभना' ), 'स्वामि काज करिहउँ रन रारी ।' २९० । राल 'लै अपार रार ऊन दून सूत सों कसी राम० ३४९
राल—स्त्री० एक तरहकी धूप । लसदार थूक, लार ।
राव—पु० राजा ( सू० १४६ ) । राजकुमार, भाट । रव, शब्द 'जनु मराल प्रवाल छौनो, कलराव ।' सू० १९ रवयुक्त, ( अनामिका १५३ )
रावचाव—पु० लाड़-प्यार । आमोद-प्रमोद ।
रावट—पु० राजप्रासाद, महल 'रावट कनक सो तो भयेऊ ।' प० १७५
रावटी—स्त्री० छोलदारी, छोटा तम्बू ( भावि० ६० ) बारहदरी ( भावि० ७८ ) ।
रावण—पु० विभीषणका बड़ा भाई जो लंकाका था । दशशीश, दशग्रीव, दशमुख ।
रावणि—पु० रावणका बेटा, मेघनाद ( गुलाब ४७९ ) ।
रावत—पु० छोटा राजा, सरदार, स्वामी, वीर 'गोरा बादल राजा पाहाँ । रावत दुवौ दुवौ जनु बाहाँ ।'
रावना—सक्रि० रुलाना । [ प० २७७
रावर—दे० 'राउर' ।
रावल—पु० राजा, सरदार । अन्तःपुर, महल 'चितहि उचाटि मेलि गये रावल मन हरि हरि जु लये ।'अ०१०४
राशि, राशी—स्त्री० मेष, वृष आदि तारा-पुंज । ढेर ।
राशिकृत—वि० एकत्र किया हुआ ।
राष्ट्र—पु० देश, राज्य, प्रजा । एक ही देश तथा राज्यमें बसनेवाला जनसमूह ।
राष्ट्रपति—पु० प्रजातंत्र राज्यका अधिपति,राष्ट्रका अध्यक्ष ।
राष्ट्रवाद—पु० प्रजातंत्रवाद ।
राष्ट्रिय—पु० राष्ट्रपति । वि० देखो 'राष्ट्रीय' ।
राष्ट्रीय—वि० राष्ट्रसम्बन्धी ।
रास—पु० एक तरहका नाच ( सू० ७८ ) । कोलाहल ।

वि०·· अनुकूल ( कर्म० २४४ )। नर्तक मडली। लगाम। राशि या तारापुंज, ढेर, व्याज। वि०दत्तक। ठीक ( उदे० 'पैंत' )।

रासधारी—पु० रासलीला करनेवाले।

रासनशीन—वि० दत्तक।

रासभ—पु० गदहा, खच्चर।

रासमंडल—पु० रास करनेवालोंका समूह, रास करनेकी जगह, रासधारियोंका अभिनय।

रासलीला—स्त्री० कृष्णकी रासक्रीड़ा। कृष्णलीला सम्बन्धी [ अभिनय।

रासविलास—पु० रास-क्रीड़ा।

रासायनिक—वि० रसायनज्ञ। रसायनशास्त्र सम्बन्धी।

रास, रासी—स्त्री० पुंज, तारा पुंज (उदे० 'जोन्ह')।

रासु—वि० सीधा, उचित।

रासो—पु० वह प्राचीन ( हिन्दी ) काव्य जिसमें किसी राजाके युद्धों या जीवनकी अन्य घटनाओंका वर्णन हो।

रास्ता—वि० सही। उचित। सीधा।

रास्ता—पु० पथ, मार्ग, उपाय, रीति।—देखना= इन्तज़ार करना। —बताना = उपाय सुझाना; टालना, चलता करना।—पर लाना = ठीक करना।

रास्य—पु० श्रीकृष्ण।

राह—स्त्री० रास्ता, नियम, प्रथा। रोहू मछली। पु० [ राहु ग्रह।

राहगीर—पु० मुसाफिर।

राहचलता—पु० मुसाफिर। कोई साधारण या अनजान [ आदमी।

राहज़न—पु० डाकू।

राहज़नी—स्त्री० डकैती, लूट मार।

राहत—स्त्री० सुख, आराम।

राहदारी—स्त्री० रास्तेका कर।

राहना—सक्रि० रेतने योग्य बनाना; जाँता कूटना।

राहर—स्त्री० अरहर। [ अक्रि० रहना।

राहरीति—स्त्री० व्यवहार। सम्बन्ध।

राहि—स्त्री० राधा ( विद्या० ६७,७८ )।

राहिन—पु० बन्धक रखनेवाला।

राही—पु० यात्री, पथिक। स्त्री० राधा (कबीर ११२)।

राहु—पु० एक ग्रह। रोहू मछली 'कली बेधि जनु भँवर भुलाना। हना राहु अरजुनके बाना।' प० १५२

राहुल—पु० बुद्ध-पुत्रका नाम।

रिंगण, रिंगन—स्त्री० रेंगना।

रिंगना—अक्रि० बहुत धीरे धीरे चलना ( सू० १६४ )।

रिंगाना—सक्रि० धीरे धीरे चलाना, फिराना 'सूर स्याम मेरो अति बालक मारत ताहि रिंगाइ।' सू० ७९

रिंद—वि० मस्त, निरंकुश। पु० स्वच्छन्द व्यक्ति मनसो न या जगत माहिं रिंद है।' सुन्द० ५७

रिआयत—स्त्री० नरम या दयायुक्त बर्ताव, ख़याल, कमी।

रिआया—स्त्री० प्रजा।

रिकवँच,-छ—स्त्री० एक प्रकारकी तरकारी जो अरुईके पत्तोंको बेसनमें लपेटकर बनायी जाती है (प०-२७३)।

रिकशा—स्त्री० एक छोटी सवारी जिसे आदमी खींचते हैं।

रिकाब, रिकाबी—दे० 'रकाब', 'रकाबी'।

रिक्त—वि० शून्य, धनहीन।

रिक्ता—स्त्री० चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशीकी तिथियाँ।

रिक्ति—स्त्री० शून्यता, रिक्तस्थान ( कर्म० ५४२ )।

रिक्थ—पु० वरासतमें मिली हुई जायदाद।

रिक्षपति—पु० जाम्बवन्त, चन्द्रमा।

रिक्षा—स्त्री० जूँका अंडा, लीख।

रिखभ—पु० बैल, एक बानर, संगीतमें एक स्वर।

रिखि—पु० ऋषि, मन्त्रद्रष्टा, तपस्वी, मुनि (दीन० ११९)।

रिग—पु० ऋग्वेद, ऋचा।

रिचा—स्त्री० वेदमन्त्र, स्तोत्र।

रिच्छ—पु० रीछ, भालु।

रिजक, रिज़्क़—पु० जीविका, आहार 'काहे कूँ बपुरा भयौ फिरत अज्ञानी नर, तेरो तो रिजक तेरे घर बैठे आइहै।' सुन्द० ४७

रिजाली—स्त्री० बेहयापन, निर्लज्जता।

रिझकवार, रिझवार, रिझवैया—पु० रीझनेवाला, 'रीझत नहिं रिझवार वह बिना हिएके साँच।' रतन० २. 'बजवैया पुनि आप ही रिझवैया पुनि आप।' रतन० ७। प्रसन्न होनेवाला, प्रेमी। ( बि० २४२ )।

रिझाना, रिझावना—सक्रि० प्रसन्न या मुग्ध करना ( उदे० 'जमाना', 'तरवर' )। अनुरक्त बनाना 'कहु कवन बिधि लोक रिझाये।' रामा० ९१

रिझायल—वि० रीझनेवाला।

रिझाव—पु० रीझनेका भाव।

रितवना—सक्रि० रिक्त करना ( उदे० 'दादि' )।

रितु—स्त्री० ऋतु (उदे० 'पैराउ'), मौसिम। रजोदर्शन।

रिद्धिसिद्धि—स्त्री० ऋद्धि-सिद्धि।

रिन—पु० ऋण, कर्ज़, एहसान।

रिनरिन—स्त्री० पायलकी ध्वनि 'चाहता, बनूँउन पग-पायलकी रिनरिन' गीतिका ५४

रिनिआँ, रिनियाँ, रिनी—पु० कर्ज़दार ( विन० २५९, [ ३९९ ) ।

रिपु—पु० बैरी, शत्रु ।

रिपुता—स्त्री० दुश्मनी ।

रिपोर्ट—स्त्री० घटना इ० का विस्तृत वर्णन, विवरण । सूचना, इत्तिला ।

रिमझिम—स्त्री० हलकी वर्षा । क्रिवि० छोटी छोटी [ बूँदोंके रूपमें ।

रिमझिमाना—अक्रि० हलकी वर्षा करना, 'आजकजल आँसुओंसे रिमझिमा ले यह घिरा घन' दीपशिखा २

रिया—स्त्री० कपट, छल ।

रियासत—स्त्री० राज्य, ऐश्वर्य, अमीरी ।

रिर—स्त्री० हठ ।

रिरना—अक्रि० गिड़गिड़ाना ।

रिरिहा—पु० हठी व्यक्ति, गिड़गिड़ाकर माँगनेवाला 'रटत रिरिहा आरि और न, कौर ही तें काज ।' विन० [ ५०२

रिलना—अक्रि० मिल जाना, प्रविष्ट होना ।

रिवाज—पु० रीति, प्रथा, चलन ।

रिश्ता—पु० नाता ।

रिश्तेदार,-मंद—पु० नातेदार, सम्बन्धी ।

रिश्वत—स्त्री० लाँच, घूस, उत्कोच ।

रिश्वतखोर—पु० घूस लेनेवाला ।

रिषभ—पु० बैल । एक स्वर ।

रिषि—पु० ऋषि, मुनि ।

रिष्ट—पु० शुभ, भलाई । अनिष्ट, पाप । वि० प्रसन्न ।

रिस—स्त्री० क्रोध ( उदे० 'करषना', 'छाती' ) ।

रिसना—अक्रि०रसना, बूँदबूँद टपकना, छनछनकर निकलना।

रिसवाना—सक्रि० खीझना, किसीपर क्रोध करना ।

रिसहा—वि० क्रोधी ।

रिसहाया—वि० क्रोधयुक्त, कुपित ।

रिसाना—सक्रि० खीझना, किसीपर नाराज़ होना । अक्रि० नाराज़ होना ( उदे० 'कोही', 'जुरना' ) ।

रिसानी, रिसि—स्त्री० क्रोध 'घोर धार भृगुनाथ रिसानी ।' रामा० ३०

रिसाल—पु० राजाके पास भेजा जानेवाला राज्य-कर, [ ख़िराज ।

रिसालदार—पु० अश्वदलका नायक ।

रिसाला—पु० घुड़सवार सेना ।

रिसिआना,-याना—सक्रि० खीझना । अक्रि० क्रुद्ध [ होना ।

रिसिक—स्त्री० खड्ग, तलवार ।

रिसौंहा—वि० क्रोधयुक्त, कुपित सा ( उदे० 'काऊ' )

रिहननामा—देखो 'रेहननामा' ।

रिहल—स्त्री० किताब रखकर पढ़नेकी एक तरहकी चौकी

रिहा—वि० मुक्त ।

रिहाई—स्त्री० मुक्ति, छुटकारा ।

रिहाना—सक्रि० छुड़ाना 'सूर कृपालु भये आपुन हाथ सों दूत रिहाये ।' सू० ५८

रींधना—सक्रि० उबालना, पकाना 'चूक लाइकै रीं [ भाटा ।' प० २७

री—अ० एरी, अरी ।

रीगन—पु० एक प्रकारका धान ।

रीछ—पु० भालू । रीछराज = जाम्बवान ।

रीज्या—स्त्री० भर्त्सना । घृणा ।

रीझ—स्त्री० रीझनेकी क्रिया या भाव । मुग्ध होने का भाव, प्रसन्नता ( उदे० 'खीझ', 'झलकना' ) ।

रीझना—अक्रि० मुग्ध होना, प्रसन्न होना ( उदे० 'निसोत', 'पतिवर्ता' ) ।···चुरना, पकना 'एक रीझे उर्दा भात' ग्राम० ४३७ ।

रीठा—पु०, रीठी—स्त्री० एक पेड़ या उसका फल ।

रीढ़—स्त्री० पीठके बीचकी हड्डी, मेरुदण्ड ।

रीत—देखो 'रीति' ।

रीतना—अक्रि० रिक्त होना, खाली होना ।

रीता—वि०रिक्त, खाली ( सू० २२ ), 'ज्योति देखि बपु जारत भये न प्रेम घट रीते ।' सू० (व्रज०)

रीति—स्त्री० प्रथा, रस्म, नियम, गति, स्वभाव, चाल, ढाल, ढङ्ग, परम्परा । विशिष्ट पद-रचना ।

रीस—स्त्री० बराबरी 'देवन सीस चढ़ाय कौन तुव रीस करैगो ।' दीन० २१३ । ईर्ष्या । क्रोध 'सुनि मन उपजी रीसा ।' प० १०२

रीसना—अक्रि० रिसाना ।

रुंज—पु० एक बाजा ( उदे० 'मुरज' ) ।

रुंड—पु० बिना सिरका शरीर ।

रुंडिका—स्त्री० रणक्षेत्र ।

रुँदवाना, रुँदाना—सक्रि० खुँदवाना, कुचलवाना ।

रुंधती—स्त्री० वशिष्ठ-पत्नी अरुन्धती ।

रुँधना—अक्रि० रुकना, उलझ जाना, रूँधा जाना ।

रु—अ० और, 'अरु' ।

रुआँ, रुआ—पु० रोआँ, रोम ।

रुआँली—स्त्री० ( रुईकी ) प्यूनी ।
रुआना—सक्रि० रुलाना ।
रुआव—पु० रोब, दबदबा, डर । [ बनते हैं ।
रुई—स्त्री० कपासके फलके भीतरका घूआ जिससे कपड़े
रुईदार—वि० जिसमें रुई भरी गयी हो ।
रुकना—अक्रि० आगे न बढ़ना, थमना, ठहरना, बन्द
रुकमनी—देखो 'रुक्मिणी' । [ होना ।
रुकवाना—सक्रि० दूसरेसे रोकनेका कार्य कराना ।
रुकाव—पु० रोक, अवरोध ।
रुकावट—स्त्री० अड़चन, बाधा, रोक, मनाही ।
रुकुम, रुक्म—पु० सोना, धतूरा, लोहा । विदर्भराजका
रुक्का—पु० पुरजा, पत्र । [ एक पुत्र ।
रुक्ख—पु० रूख, वृक्ष । [ श्री कृष्णसे हुआ था ।
रुक्मिणी—स्त्री० विदर्भराजकी पुत्री, जिनका विवाह
रुक्ष—पु० पेड़ । वि० रूखा, नीरस ।
रुख—पु० मुख, कपोल, प्रवृत्ति, मनका भाव ( उदे० 'चिकनाना' ), संकेत, कृपादृष्टि, शतरञ्जका एक मोहरा ( हाथी ), सामना 'रुख माँगत रुख ता सहुँ भयेऊ ।' प० २८४ । क्रिवि० तरफ, सम्मुख ।
रुखसत—स्त्री० छुट्टी, बिदाई । [ जाती है ।
रुखसताना—पु० वह रकम जो बिदा होते समय दी
रुखसती—स्त्री० देखो 'रुखसताना' । बिदाई । वि० जिसे छुट्टी मिल गयी हो ।
रुखसार—पु० कपोल । [ या कठोर वर्त्ताव ।
रुखाई, रुखावट, रुखाहट—स्त्री० रूखापन, अशिष्ट
रुखाना—अक्रि० रूखा या स्नेहहीन होना । सक्रि० की तरफ रुख करना, लगाना ' विभीषण बैन तन कानन रुखाये जू ।' राम० ४७६
रुखानी—स्त्री० बढ़इयों या सङ्गतराशोंका एक औज़ार ।
रुखौंहाँ—वि० रूखा-सा ।
रुग्ण, रुग्न—वि० रोगग्रस्त, बिगड़ा हुआ । टेढ़ा ।
रुच, रुचि—स्त्री० इच्छा, प्रवृत्ति, स्वाद ( भू० ५९ ), चाव, अनुराग, दिलचस्पी, किरण, सौन्दर्य, शोभा 'शोभत दण्डककी रुचि बनी ।' राम० २४४, ( के० १५५ ), प्रकाश, कान्ति 'सहज सुचिक्कन श्याम रुचि सुचि सुगन्ध सुकुमार ।'बि०४४,(कविप्रि०१८,२२१)।
रुचक—वि० सुस्वादु । पु० कबूतर । माला । एक तरह-का नीबू । दाँत । चौकोर-खम्भा । रोचना ।

रुचना—अक्रि० अच्छा लगना ( उदे० 'चितना' ), 'तप तीरथ उपवास दान मख जेहि जो रुचै करो सो ।'
रुचा—स्त्री० ख्वाहिश । चमक । सारिका । विन० ४०७
रुचिकर—वि० अच्छा लगनेवाला ।
रुचिकारक, कारी—वि० रुचिकर (अ० ६), स्वादिष्ट।
रुचित—वि० अभिलषित ।
रुचिता—स्त्री० सौन्दर्य । प्रेम ।
रुचिमान—वि० शोभापूर्ण, लालिमायुक्त 'रुधिरसे फूट पड़ी रुचिमान पल्लवोंकी यह सजल-प्रभात' पल्लव २
रुचिर—वि० सुन्दर, मनोहर, स्वादिष्ट ।
रुचिरा—स्त्री० केसर । एक छन्द ।
रुचिराई—स्त्री० मनोहरता, शोभा ।
रुच्छ—वि० रूखा, स्नेहहीन, कठोर, क्रुद्ध ।
रुज—पु० रोग, कष्ट, घाव ।
रुजा—स्त्री० रोग, पीड़ा ।
रुजाकर—वि० रोग उत्पन्न करनेवाला ।
रुजाली—स्त्री० रोगोंका समूह ।
रुजी—वि० रुग्ण, बीमार ।
रुजू—वि० प्रवृत्त 'रुजू होव नँदलाल सैं चित बित ल्याइ सुजान ।' रतन० १५, (७१, १०१) । आकृष्ट ।
रुझना—अक्रि० उलझना । घाव भरना ।
रुठ—पु० रिस, क्रोध ।
रुठाना—सक्रि० क्रुद्ध करना ।
रुणित—वि० बजता हुआ ।
रुत—पु० ध्वनि, कल-रव । स्त्री० ऋतु ।
रुतबा—पु० ओहदा, दरजा । प्रतिष्ठा ।
रुदन—पु० रोना ।
रुदराछ—दे० 'रुद्राक्ष' ( प० ५७ ) ।
रुदवा—पु० एक तरहका चावल ( प० २७० ) ।
रुदित—वि० रोता हुआ । पु० क्रन्दन ।
रुद्ध—वि० रुका हुआ, घेरा हुआ, बन्द ।
रुद्र—वि० शिवजीका एक रूप, ग्यारहकी संख्या । वि
रुद्रपति—पु० शिवजी । [ भयानक
रुद्राक्ष, रुद्राछ—पु० एक पेड़ या उसका बीज ।
रुद्राणी—स्त्री० पार्वतीजी ।
रुद्रावास—पु० काशीपुरी । कैलास । श्मशान ।
रुद्रिय—वि० आनन्द देनेवाला । रुद्र सम्बन्धी ।
रुधिर—पु० खून, रक्त । मङ्गलग्रह, केसर ।

रुधिराशन, रुधिराशी—वि० रक्त पीनेवाला।
रुनझुन—स्त्री० झनकार, मन्दध्वनि।
रुनाई—स्त्री० अरुणाई, लालिमा 'नील स्वेतपर पीत लाल मनि लटकनि भाल रुनाई।' सू० ५२
रुनित—वि० बजता हुआ शब्दायमान 'चरन रुनित नूपुर कटि किङ्किन, करतल ताल रसाल।' सू० १५४
रुनी—पु० घोड़ोंका एक भेद।
रुनुक-झुनुक, रुनुझुन—स्त्री० देखो 'रुनझुन'।
रुपना—अक्रि० जमना, अड़ना 'वह बाजि लै अरु वीर। रणमें रह्यो रुपि धीर।' के० ३३९। ठहरना (छत्र० ८८)।
रुपमनी—वि० स्त्री० रूपवती, सुन्दर 'एक सों एक चाहि रुपमनी।' प० २००
रुपया, रुपैया—पु० चाँदीका एक सिक्का। धन।
रुपहरा,-ला—वि० चाँदीके रङ्गका। चाँदीके योगसे बना हुआ।
रुबाई—स्त्री० एक तरहका गाना। एक तरहकी कविता।
रुमंच—पु० रोमाञ्च।
रुमांचित—वि० रोमाञ्चित, पुलकित।
रुमा—स्त्री० सुग्रीवकी स्त्री।
रुमाल—पु० रूमाल। एक तरहका लँगोट।
रुमाली—स्त्री० मुगदर हिलानेका एक ढङ्ग।
रुमावली—स्त्री० रोमराजि, रोमोंकी पंक्ति या रेखा।
रुराई—स्त्री० चारुता, सुन्दरता।
रुरु—पु० एक तरहका मृग।
रुरुआ—पु० एक तरहका उल्लू (कलस ३५९)।
रुरुक्षु—वि० रूखा।
रुलना—अक्रि० दबा रह जाना 'मनकी मसूसें मन ही में रुलि जाति हैं' रत्ना० ३७३
रुलाई, रुवाई—स्त्री० रोनेकी प्रवृत्ति, रोनेकी क्रिया।
रुलाना—सक्रि० रोनेमें प्रवृत्त करना। तङ्ग करना।
रुलासा, रुवासा—वि० रोदनोन्मुख, रोता हुआ सा।
रुवा—पु० सूआ।
रुवाब—पु० देखो 'रुआब'।
रुष—पु० रुख। रोष, क्रोध।
रुषा—स्त्री० गुस्सा।
रुषित—वि० रुष्ट, क्रुद्ध। दुःखी।
रुष्ट, रुस्ट—वि० क्रुद्ध, रूठा हुआ।
रुष्टपुष्ट—वि० मोटा ताज़ा।

रुस्तम—पु० ईरानका एक प्रसिद्ध वीर। छिपा हुआ व्यक्ति जो ऊपरसे सीधा सादा देख पड़ता हो जो दर-असल बड़ा वीर या होशियार हो।
रुसना—अक्रि० रूठना।
रुसवा—वि० निन्दित, बदनाम।
रुसवाई—स्त्री० बदनामी, निन्दा।
रुसा—पु० अडूसा।
रुसित—वि० क्रुद्ध, अप्रसन्न।
रुसूम—पु० किसी कामके निमित्त राज्यको दिया धन। नेग।
रुहठि—स्त्री० रूठनेकी क्रिया (सुसु० ९२)।
रुहिर—पु० रुधिर, खून 'खाँड़ै धार रुहिर जनु भरा' [प०
रुहेला—पु० रुहेलखण्डकी एक पठान जाति।
रूँदना—सक्रि० कुचलना (प० २५३), 'माटी कुम्हारसों तूँ क्यों रूँदै मोहिं।' साखी ६५
रूँध—वि० रुका हुआ।
रूँधना—सक्रि० काँटों आदिसे घेरना, छेकना 'मधुप! निर्गुन कंटक तें राजपन्थ क्यों रूँधो।' भ्र० २९, 'रूँधहु करि उपाउ बरबारी।' रामा० २०७
रू—पु० मुख, सिरा, सामना। रूमे = अनुसार। स्त्री आत्मा, सत्त 'चाहिए तुझको सदा मेहरुञ्जिसा निकाले इत्र-रू' कुकुरमुत्ता ४
रूई, रूईदार—देखो 'रुई', 'रुईदार'।
रूक्ष—वि० रूखा।
रूख, रूखड़ा—पु० वृक्ष 'पाके फल वे देखि मनोहर कृपा करि रूख।' भ्र० ४५, (उदे० 'दाझना')। वि० रुक्ष
रूखना—अक्रि० रूठना।
रूखा—वि० स्नेहहीन, सूखा, नीरस, अरुचिकर, उदासीन, कठोर (उदे० 'चिकनाना'), 'अब कैसे .२ स्याम रँगराती, ए बातें सुनि रूखी।' सू० २२६ 'जे जन रूखे विषय रस, चिकने राम सनेह।' दोहा ११०, (सू० १८)।
रूखापन—पु० रूखा होनेका भाव, व्यवहारादिकी रुखाई।
रूचना—अक्रि० रुचना, अच्छा लगना।
रूज—पु० धातुओंपर कलई करनेकी एक तरहकी बुकनी।
रूझना—अक्रि० उलझना 'जो घर ध्यान न मन रूझै।' अखरा० २४३। रुद्ध हो जाना।
रूठ, रूठनि—स्त्री० रूठनेकी क्रिया, अप्रसन्नता, क्रोध।
रूठना—अक्रि० रुष्ट होना, अप्रसन्न होना, बिगड़ जाना (प० १९९)।

रूढ—वि० पैदा हुआ, प्रसिद्ध, आरूढ़ ( सू० १२ )।
कठोर, उजड्ड। [ भाव, चाल, प्रथा।
रूढ़ि—स्त्री० उत्पत्ति, प्रसिद्धि, वृद्धि, आरूढ़ होनेका
रूदाद—स्त्री० हालत, समाचार, ब्योरा।
रूप—पु० आकार, सुन्दरता, वेश, शरीर, लक्षण, चाँदी, ( उदे० 'दार', प० ६० ), स्वभाव। वि० रूपवान् 'समय समय सुदर सबै रूप कुरूप न कोइ।' वि० १७८। अनुरूप। तुल्य।
रूपक—पु० एक अलङ्कार, दृश्यकाव्य, रूप, प्रतिकृति, उपमान 'रूपहीके रूपक तौ वारि वारि डारिये।' कविप्रि० १०१, चाँदी।
रूपकातिशयोक्ति—स्त्री० एक काव्यालङ्कार 'जहँ केवल उपमानते ज्ञात होय उपमेय।'
रूपगर्विता—स्त्री० वह नायिका जिसे रूपका गर्व हो।
रूप-जग—पु० रूपात्मक जगत्, दृश्यमान जगत्।
रूपजीविनी—स्त्री० वेश्या।
रूपजीवी—पु० बहुरुपिया।
रूपधर—पु० सौन्दर्य धारण करनेवाला, सुन्दर व्यक्ति।
रूपमंजरी—स्त्री० धानका एक भेद, एक फूल ( उदे०
रूपमनी—वि० स्त्री० रूपवाली, सुन्दर। [ 'गौरी')।
रूपमय, रूपमान—वि० सुन्दर।
रूपमाला—स्त्री० एक छन्द।
रूपवंत, रूपव, रूपवान्—वि० अच्छे रूपवाला, सुन्दर 'रूपव कौन अधिक सीतातें जन्म वियोग भरे।' सू० २
रूपसी—स्त्री० रूपवती स्त्री 'रूपसीमें रत रूपवारे बहुतेरे
रूपस्वी—वि० रूपवान्। [ हैं।' कलस० ३०२
रूपा—स्त्री० चाँदी।
रूपी—वि० के सदृश रूपवाला, समान, सुन्दर।
रूपोपजीविनी, रूपोपजीवी—दे० 'रूपजीविनी,रूपजीवी'।
रूबरू—क्रिवि० सामने।
रूम—पु० तुर्की देश।
रूमना—अक्रि० हिलना, झूलना।
रूमाल—पु० मुँह पोछने या छोटी मोटी चीज बाँधनेका
रूमाली—देखो 'रुमाली'। [ कपड़ेका टुकड़ा।
रूर—वि० दग्ध, तप्त।
रूरना—अक्रि० शोर मचाना, चिल्लाना 'संगहिं सबै चलौ माधवके ना तौ मरिहौं रूरि।' सूवे० ४२९
रूरा—वि० अच्छा, सुन्दर 'दीन्हौं तिनको तुम ही बड़ रूरो।' के० ७।

रूल—पु० लकीर। लकीर खींचनेका डण्डा। नियम।
रूलना—सक्रि० दबा देना ( रत्ना० ३६७ )।
रूलर—पु० लकीर खींचनेका डण्डा।
रूष, रूषा—दे० 'रूख', 'रूखा'।
रूस—पु० यूरोपका एक देश।
रूसना—अक्रि० रूठना 'तेहि रिस हौं परहेली, रूसेउ नागर नाहँ।' प० ४०, ( उदे० 'कालर' )।
रूसा—पु० अडूसा ( मति० १८३ )।
रूसी—स्त्री० सिरके चमड़ेपर छिलकेके रूपमें जमा हुआ मैल। वि० रूस सम्बन्धी, रूसका।
रूह—स्त्री० आत्मा। सत्त।
रूहना—अक्रि० आरूढ़ होना, छा जाना, घेरना, साम घटा मेघन्ह अस रूहा।' प० २५२।
रूहानी—वि० आत्मा सम्बन्धी, आत्मिक।
रेंकना—अक्रि० गधेका बोलना। भद्दी आवाज़से गाना।
रेंगटा—पु० गदहेका बच्चा।
रेंगना—अक्रि० पेटके बल चलना, धीरे धीरे चलना या सरकना ( प० ७ अ० ६६ ), 'कब मेरो लाल घुटरुवन रेंगै—सूवे० ५२। [ कटैया।
रेंगनी—स्त्री० एक तरहका कँटीला छोटा पौधा, भट
रेंगाना—सक्रि० धीरे धीरे चलाना 'अस कहि सन्मुख
रेंट—पु० नाकका मैल। [ फौज रेंगाई।' रामा० ४१७
रेंड—पु० अण्डीका वृक्ष ( उदे० 'गाड़ना' )।
रेंड़मेवा—पु० पपीता।
रेंड़ी—स्त्री० रेंड़का बीज।
रे—अ० अरे, ए।
रेख—स्त्री० लकीर (उदे०'झगा'), मूँछोंकी रेखा, आकृति, गणना (उदे० 'धंधरकधोरी', 'थपना')।—भीनना= मूँछोंकी रेखाका ज़रा ज़रा दिखाई देना।
रेखता—पु० एक तरहकी ग़ज़ल। [ खरोंचना।
रेखना—सक्रि० ( रेखा ) खींचना, निशान बनाना,
रेखा—स्त्री० लकीर। देखो 'रेख'। कण, टुकड़ा 'पानी माहँ पखान कि रेखा ठोंकत उठै भभूका।' बीजक २०१
रेखित—वि० अङ्कित, खरोंचा हुआ।
रेग—स्त्री० बालू, धूल ( सुजा० ८६ )।
रेगिस्तान—पु० मरुस्थल, बालूका मैदान।
रेचक—वि० दस्त लानेवाला। पु० दस्तावर दवा, जमाल गोटा, प्राणायामकी एक क्रिया।

रेचन—पु० कोष्ठ-शुद्धि। रेचक ओषधि।
रेचना—सक्रि० वायु बाहर निकालना, कोष्ठशुद्धि करना।
रेज़ा—पु० छोटा टुकड़ा 'काँपि है तो रेजो रेजो करिहौं करेजोमें।' कलस ६३ (१५,६८ भी), थान'ज्यों कोरी रेजा बुने नियरा आवे थोर।' साखी ६६। राजगीरोंके साथ काम करनेवाला लड़का ( या स्त्री, म० प्र० )।
रेणु—स्त्री० धूल, कणिका।
रेणुका—स्त्री० देखो 'रेणु।' परशुरामकी माता।
रेत—स्त्री० बालू। पु० रेतनेका औजार। पारा, वीर्य।
रेतना—सक्रि० रगड़कर काटना, रेतीसे घिसना।
रेता—स्त्री० बालू 'उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता।' रामा० २४७ [ ज़मीन। रेतनेका औज़ार।
रेती—स्त्री० बालू, नदी या समुद्रके किनारेकी बलुई
रेतीला—वि० बालुकामय।
रेनु, रेनुका—दे० 'रेणु', 'रेणुका।'
रेफ—पु० 'र्' का यह रूप ' ' ' रकार।
रेरुआ, रेरुवा—पु० एक तरहका उल्लू।
रेल—स्त्री० बहाव; भीड़, भरमार (भू० २२, दास ६५)। रेलगाड़ी। लोहेकी पटरी जिसपर रेल चलती है।
रेलठेल, रेलपेल—स्त्री० भीड़, आधिक्य।
रेलना—सक्रि० ठेलना, धक्का देना। खूब खा जाना। अक्रि० अधिक होना।
रेला—पु० धक्का, धावा, बहाव, आधिक्य।
रेवँछा—पु० एक दाल।
रेवंद—पु० वृक्ष-विशेष।
रेवड़—पु० भेड़ इ० का झुंड।
रेवड़ी—स्त्री० चीनी और तिलसे बनी हुई एक मिठाई।
रेवतक—पु० कबूतर।
रेवती—स्त्री० एक नक्षत्र, बलदेवजीकी स्त्री।
रेवतीरमण—पु० श्रीकृष्णके बड़े भाई बलराम।
रेवा—स्त्री० नर्मदा नदी। रति, दुर्गा।
रेशम—पु० पाट।
रेशमी—वि० रेशमका।
रेशा—पु० बारीक सूत, तन्तु।
रेष—स्त्री० रेख। हानि।
रेह—स्त्री० खारी मिट्टी, राख ( प० ४ )। रेखा 'लसत कसौटीमें मनो, तनक कनककी रेह।' मति० १८८, नव जलधर तरे खन्जर रे जनु बीजुरि रेह।' विद्या० २१, ( ६९, २६९ भी )।
रेहन—पु० गिरवी। चनेका आटा, बेसन ( बुन्देल० )।
रेहननामा—पु० रेहन सम्बन्धी कागज़।
रेहल—स्त्री० पुस्तक रखनेकी मुड़ जानेवाली चौकी।
रेहू—स्त्री० एक तरहकी मछली। रोहू ( पूर्ण २१८ )।
रैंट—दे० 'रेंट' ( उदे० 'कनोई' )।
रैअति—स्त्री० रैयत, प्रजा।
रैतुवा—पु० रायता।
रैदास—पु० एक भक्त। एक जाति।
रैन, रैनि—स्त्री०रात(उदे०'बसेरा')। रेणु 'श्री बैकुंठना उरवासिनि चाहत जा पदरैन।' सू० ( व्रज० २० )
रैमुनिया—स्त्री०अरहरका एक भेद। लाल पक्षीकी मादा
रैयत—स्त्री० प्रजा।
रैयाराव—पु० छोटा राजा।
रैल—स्त्री० समूह 'विघनकी रैलपर लम्बोदर लेखिये।' [ भू० १६
रैवत—पु० बादल। शिव। एक दैत्य।
रैहर—पु० झगड़ा। टंटा।
रोंग, टा—पु० शरीरपरका बाल, रोआँ।
रोंगटी—स्त्री० बेईमानी या दाँव देनेमें टालमटूल ( खेल इ० में ) 'रोंगटि करत तुम खेलत ही में कहा यह बानि।' सूसु० १६०
रोंव, रोआँ—पु० रोम, शरीरपरके छोटे छोटे बाल।
रोआब—पु० दबदबा, प्रभाव।
रोउँ, रोवँ—पु० रोम ( उदे० 'नगवासी' )।
रोक—स्त्री० बाधा, प्रतिबन्ध, मनाही। पु० नकद रुपया। ( उदे० 'धावन' )
रोकटोक—स्त्री० बाधा, निषेध।
रोकड़—स्त्री० नकद रुपया, धन।
रोकड़िया—पु० मुनीम।
रोकना—सक्रि० ठहराना, बाधा डालना, वशमें रखना, थामना, सहना, बन्द करना।
रोख—पु० रोष, क्रोध।
रोग—पु० बीमारी, झंझट।
रोगकारक,-कारी—त्रि० रोग उत्पन्न करनेवाला।
रोगग्रस्त—वि० व्याधि-पीड़ित, रोगसे जकड़ा हुआ।
रोगदई, रोगदैया—स्त्री० रोंगटी, बेईमानी।
रोग़न—पु० तेल, पालिश।
रोग़नदार—वि० जिसपर रोगन किया गया हो।
रोगिया, रोगिहा—पु० रोगी व्यक्ति।

रोगी—वि० रोगग्रस्त। पु० बीमार आदमी।
रोचक—वि० मनोरञ्जक, अच्छा लगनेवाला, भूख बढ़ाने [वाला।
रोचकता—स्त्री० मनोरञ्जकता।
रोचन—पु० गोरोचन, रोली 'दधि दुरबा रोचन फल फूला।' रामा० ५३६। काला सेमर, प्याज, इ०। वि० रोचक, शोभावान्। लाल।
रोचना—स्त्री० श्रेष्ठ स्त्री। आकाश। गोरोचन। रक्तकमल।
रोचि, रोचिस्—स्त्री० शोभा, चमक, दीप्ति, किरण।
रोचिष्णु—वि० चमकदार, दीप्तिमय।
रोज़—पु० दिन। अ० प्रति दिन।
रोज—पु० रोना, विलाप 'बरजा पितै हँसी औ रोजू'। प० ११४, (१२६), (मति० २४९)।
रोज़गार—पु० उद्यम, धन्धा, व्यापार।
रोजगारी—पु० व्यवसायी, व्यापारी।
रोज़नामचा—पु० वह पुस्तक जिसमें दैनिक कार्योंका विवरण लिखा जाता है। दैनिक आय-व्ययकी बही।
रोज़मर्रा—पु० बोलचाल। अ० हर रोज़।
रोज़ा—पु० व्रत। मुसलमानोंका व्रत-विशेष।
रोज़ाना—क्रिवि० हमेशा, हर रोज़।
रोज़ी—स्त्री० जीविका, जीवन निर्वाहका साधन, नित्यका [भोजन।
रोज़ीना—पु० दैनिक मज़दूरी।
रोझ—पु० स्त्री० नीलगाय (उदे० 'अँबकारा'), 'हरिन रोझ कोइ भागि न बाँचा।' प० २४१, 'हम भी पाहन पूजते होते बनके रोझ।' साखी १८०
रोट—पु० मोटी रोटी, साना हुआ आटा, चूर्ण, 'बिसरिहि भुगुति, होइ सब रोटा।' प० १०२
रोटिहा—पु० रोटीके बदले काम करनेवाला नौकर।
रोटी—स्त्री० चपाती, भोजन। जीविका। (किसीके यहाँ) रोटियाँ तोड़ना = मुफ्तका खाना, घर पड़े पड़े खाना (जीव० २५१)।
रोठा—पु० एक तरहका बाजरा, रोड़ा, टुकड़ा। 'कवँल सो कौन सोपारी रोठा।' प० २१५
रोड़ा—पु० पत्थर आदिका टुकड़ा, कंकड़ (साखी १२८), [बाधा।
रोदन—पु० रोना।
रोदसी—स्त्री० पृथिवी, स्वर्ग (उदे० 'पूरना')।
रोदा—पु० चिल्ला, प्रत्यञ्चा।
रोध—पु० रुकावट। किनारा।
रोध —पु० रुकावट डालनेवाला, दबानेवाला।
रोधन—पु० दमन, रुकावट।
रोधना—सक्रि० रोकना, दबाना।
रोधित—वि० रोका या दबाया हुआ (रत्ना० ४८८)।
रोना—अक्रि० रोदन करना, पछताना। कोसना। पु० दु:ख। वि० रोनेवाला, चिड़चिड़ा, रोता सा।
रोनी धोनी—स्त्री० शोकवृत्ति। वि० स्त्री० शोक वृत्ति-[वाली।
रोपक—पु० जमानेवाला, स्थापित करनेवाला।
रोपण—पु० रोपनेकी क्रिया।
रोपना—सक्रि० लगाना 'रोपै पेड़ बबूरको…।' बोना। जमाना, स्थापित करना 'सभा माँझ पन करि पद रोपा।' रामा० ४६८, (उदे० 'अराबा'), रोकना।
रोपनी—स्त्री० रोपाई, धान आदिके पौधे रोपनेका काम।
रोपित—वि० जमाया या स्थापित किया हुआ। भ्रान्त।
रोब—पु० दबदबा, आतंक, धाक।
रोबदार—वि० जिसका खूब दबदबा हो, प्रभावोत्पादक, [भड़कीला।
रोमंथ—पु० पागुर, जुगाली।
रोम—पु० रोवाँ (उदे० 'कमरी'), छिद्र।
रोमकूप,-द्वार—पु० चमड़ेका वह छिद्र जहाँसे रोआँ [निकलता है।
रोमपाट—पु० ऊनी वस्त्र।
रोमराजी,-लता—स्त्री० रोमावली।
रोमहर्ष, रोमांच—पु० रोओंका खड़ा हो जाना।
रोमहर्षण—पु० रोमांच। वि० रोमांचकारी।
रोमांचक—वि० रोमांचकारी।
रोमांचित—वि० पुलकित।
रोमाली, रोमावली—स्त्री० रोओंकी रेखा जो नाभिसे ऊपरको जाती है (उदे० 'बली')।
रोमिल—वि० रोमयुक्त (गुलाव ३२८)।
रोयाँ—पु० रोम।
रोर—स्त्री० कोलाहल शब्द, हलचल (उदे० 'जोर, भ्र० १३७), विपत्ति, दरिद्रता 'रोरके जोरते सोर घरनी कियो चल्यो द्विज द्वारका जाय ठाढ्यो।' सुवि० (कविप्रि० ६९)। वि० प्रबल, दुर्दम्य, 'ते रन-रोर कपीसकिसोर बड़े बरजोर परे फँग पावै।' कविता० १९५। उद्धत, अन्यायी, दुष्ट।
रोरी—स्त्री० रोली 'औचक ही देखी तहँ राधा नयन विशाल भाल दिय रोरी।' सूबे० ७६७। दौड़ धूप, चहलपहल, कोलाहल 'रोरि परी गोकुलमें जहँ तहँ गाइ फिरत पय दोहनको।' सूबे० २६१। वि० रूरा, अच्छा, सुन्दर।

रोल—स्त्री० रोर, कोलाहल । पु० प्रवाह ।
रोला—पु० एक छन्द । कोलाहल । तुमुल युद्ध ।
रोली—स्त्री० रोरी, लाल बुकनी ।
रोवनहार,रोवनिहार—पु०रोनेवाला,शोक मनानेवाला।
रोवना—अक्रि० रुदन करना ( उदे० 'अंधर' )। वि० शीघ्र रो देनेवाला, चिढ़नेवाला ।
रोवनी-धोवनी—स्त्री० शोक मनानेकी क्रिया। वि० शोक प्रकट करनेवाला ।
रोवाँ—पु० रोम, शरीरपरका बाल ( उदे० 'फीली' )।
रोवासा—वि० रोनेको उद्यत ।
रोशन—वि० प्रकाशमान, प्रदीप्त । ज़ाहिर ।
रोशन चौकी—स्त्री० एक तरहका बाजा, शहनाईका बाजा ।
रोशनदान—पु० गवाक्ष ।
रोशनाई—स्त्री० स्याही, रोशनी ।
रोशनी—स्त्री० प्रकाश, उजेला । चिराग़। दीपक-समूहका प्रकाश ।
रोष—पु० क्रोध, द्वेष, चिढ़ ।
रोषित—वि० कुपित, क्रुद्ध ।
रोषी—वि० क्रोधी ।
रोस, रोसनाई, रोसनी—दे० 'रोष' (उदे० 'बकाउ'), 'रोशनाई', 'रोशनी' ।
रोह—पु० अंकुर, चढ़ाई । नील गाय ।
रोहना—अक्रि० सवारी करना, चढ़ना 'चित्त चकोरके चन्द किधौ मृगलोचन चारु बिमानन रोहौ ।' राम० २५५ । धारण किया जाना 'नखकी सी रेखा चन्द्र, चन्दन सी चारु रज, अंजन सिंगारहू गरल रुचि रोहिये ।' के० ९५ । सक्रि० चढ़ाना, धारण करना ।
रोहिणी, रोहिनी—स्त्री० एक नक्षत्र, बलदेवकी माता, बिजली, एक मछली, चन्द्र-पत्नी ।
रोहिणीपति,-वल्लभ —पु० वसुदेवजी । चन्द्रमा ।
रोहित—वि० लोहित, लाल । पु० लाल रंग, रोहू मछली, बरैंका फूल । रुधिर । कुंकुम ।
रोहिताश्व—पु० अग्नि। सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्रका पुत्र ।
रोही—पु० एक हथियार । पीपल वृक्ष । रोहू मछली । वि० चढ़नेवाला ।
रोहू—स्त्री० एक मछली ( उदे० 'चाल्ह' ) ।
रौंद, रौंदन—स्त्री० रौंदने या मर्दन करनेकी क्रिया ।

रौंदना—सक्रि० पाँवसे दबाना या कुचलना ।
रौंस—पु० घट्टा, ठेला, निशान 'रामहि राम ५ . जिभ्या परिगो रौंस ।' बीजक ५०
रौ—स्त्री० प्रवाह, वेग, चाल, धुन । पु० आवाज़ ।
रौक्ष्य—पु० रूखापन ।
रौग़न—पु० देखो 'रोग़न' ।
रौगनी—वि० रौग़न चढ़ाया हुआ । तेलका ।
रौज़ा—पु० समाधि, बाग़ ।
रौताइन—स्त्री० रावतकी स्त्री । ठकुराइन । कहारिन [ † ( छत्तीस० )
रौताई—स्त्री० स्वामित्व, ठकुराई, समर (दोहा० १०६)
रौद्र—वि० भयानक, क्रोधपूर्ण । पु० क्रोध, एक रस धूप ( अ० ६२ ) । अस्त्र-विशेष । यम ।
रौद्रता—स्त्री० भीषणता, उग्रता ।
रौन—पु० रमण करनेवाला, पति ।
रौनक़—स्त्री० तेज, शोभा, कान्ति, प्रफुल्लता, चहलपहल
रौना—पु० रोदन । गौना ।
रौनी—स्त्री० रमणी ।
रौप्य—वि० चाँदीका । पु० चाँदी ।
रौर—पु० रोर, कुहराम । शब्द 'तमचुर खग रौर सुनहु बोलत बनराई ।' सू० ५८
रौरव—पु० एक नरकका नाम ।
रौरा—सर्व० आपका । पु० देखो 'रोर ।'
रौराना—अक्रि० शोर करना, बकना ।
रौरि—स्त्री० शब्द, कोलाहल 'तिनके जात बहुत दुख पायो, रौरि परी यहि खेरे ।' सूबे० ३०५
रौरे—सर्व० आप ।
रौल, रौलि—स्त्री० चपत 'जम सिर घाली रौल ।' [ साखी २६
रौला—पु० शोरगुल, हलचल ।
रौशन—वि० प्रकाशमान । प्रसिद्ध ।
रौशनदान—पु० गवाक्ष ।
रौशनी—स्त्री० प्रकाश । चिराग़ । शिक्षाका प्रकाश ।
रौस—स्त्री० चालढाल, गतिविधि, क्यारियोंके बीचका रास्ता ।
रौहाल—स्त्री० घोड़ेकी एक जाति ।
रौहिणेय—पु० रोहिणी-पुत्र (बलदेव या बुध) । मरकत ।

# ल

लंक—स्त्री० लंका। कमर 'तोर्यो सरासन संकरको जेहि सोच कहा तुव लंक न तोरहि।' राम० ३७२, ( उदे० 'खीन', 'वक्षोज' )।

लंकनाथ,-नायक,-पति—पु० रावण, विभीषण।

लंकलाट—पु० एक तरहका मोटा कपड़ा।

लंका—स्त्री० भारतके दक्षिणमें स्थित एक द्वीप।

लंकापति— देखो 'लंकनाथ'।

लंकूर—देखो 'लंगूर'।

लंकेश, लंकेश्वर—पु० रावण या विभीषण।

लंग—वि० लँगड़ा। पु० लँगड़ापन। लाँग, काछ।

लंगड़—पु० लंगर। वि० पंगु।

लँगड़ा—वि० जिसका एक पाँव टूटा हो।

लँगड़ाना—अक्रि० लँगड़ा होकर चलना।

लंगर—पु० जहाज आदिको रोक रखनेके लिए लोहेका बड़ा काँटा। लोहेकी वज़नी जंजीर। लटकती हुई भारी चीज़, ठेंगुर, ब्रागडोर 'विडरत विझुकि जानि रथते मृग, जनु ससंक ससि लंगर डारे।' सू० १२०। गरीबोंको बाँटा जानेवाला भोजन। वि० वज़नी। शरारती, ढीठ 'लरिका लैबे के मिसनि लंगर मो ढिग आय।' बि० २२

लँगरई, लँगराई, लँगरी—स्त्री० शरारत, धृष्टता 'सूर-वचन मिथ्या लँगराई ये दोऊ ऊधोकी न्यारी।' भ्र० ५३, ( उदे० 'गेंडुरी' )। [ हुआ भोजन मिले।

लंगरखाना—पु० सत्र, वह स्थान जहाँ ग़रीबोंको पका

लंगरगाह—पु० लंगर डालकर जहाज़ ठहरानेका स्थान।

लँगरैया—दे० 'लँगरई' ( सूबे० ११२ )।

लंगूर—पु० दुम। बन्दर ( कबीर ३०२ )।

लंगूरफल—पु० नारियल।

लंगूल—पु० दुम, पूँछ।

लंगोट, लँगोटा—पु० एक विशेष प्रकारका सिला हुआ कपड़ा जिसे व्यायाम करते समय कमरमें कसते हैं।

लँगोटी—स्त्री० कछनी, बहुत छोटी धोती।

लंघक—पु० लाँघनेवाला, जो नियमादिका अतिक्रमण करे।

लंघन—पु० लाँघनेकी क्रिया। फ़ाका, उपवास।

लंघना—सक्रि० लाँघना, ढाँकना ( उदे० 'जोना,' 'दर-साना' )। वि० जिसने लंघन किया हो, भूखा 'सिंह बचा जो लंघना तौ भी घास न खाय।' साखी ३०

लंघनीय—वि० लाँघनेके योग्य।

लंज—पु० दुम, पैर। कुकर्म।

लंजिका—स्त्री० वेश्या।

लंठ—वि० उजड्ड। निरक्षर, मूर्ख।

लंतरानी—स्त्री० लम्बी चौड़ी बातें, डींग।

लंपट—वि० कामी, कुकर्मी, लोभी 'कहि श्रीभट नटवर रसलम्पट प्रिय तन हाथ न डार री।' श्रीभट्ट। छली ( उदे० 'भनिआई' )।

लंपटता—स्त्री० कामुकता, दुराचार।

लंपाक—पु० कुकर्मी।

लंब—वि० लम्बा। पु० समकोण बनानेवाली लम्बी रेखा।

लंबकर्ण—वि० लम्बे कानवाला। पु० बकरा, गदहा, खरगोश, हाथी, राक्षस।

लंबग्रीव—वि० लम्बी गर्दनवाला। पु० क्रमेल, ऊँट।

लंबतड़ंग—वि० बहुत लम्बा।

लंबन—पु० सहारा। नाभितक लटकनेवाला गलेका हार।

लंबमान—वि० लम्बा गया हुआ, दूरतक फैला या लटका

लंबरदार—पु० एक तरहका जमींदार। [ हुआ।

लंबा—वि० जो किसी एक ही दिशामें दूरतक गया हो, ऊँचा, दीर्घ, विस्तृत।

लंबाई—स्त्री० लम्बापन।

लंबान—पु० लम्बाई।

लंबित—वि० लम्बा। पु० मांस।

लंबोतरा—वि० लम्बापन लिये हुए।

लंबोदर—पु० गणेशजी। अधिक खानेवाला व्यक्ति।

लंबोष्ठ—पु० ऊँट।

लंभन—पु० कलङ्क। प्राप्ति।

लउ—स्त्री० लगन, लौ 'साधक नाम जपहिं लउ लाये।' [रामा० १८

लउटी—स्त्री० लकुटी (अख० ३६०)।

लकड़बग्घा—पु० एक मांसभक्षी पशु।

लकड़हारा—पु० जङ्गल आदिसे तोड़कर लकड़ी बेचने [ वाला।

लकड़ा—पु० लकड़ीका बड़ा कुन्दा।

लकड़ी—स्त्री० ईंधन, लाठी, काष्ठ।

लक़दक़—वि० वनस्पति आदिसे रहित ( मैदान )।
लक़ब—पु० उपाधि, पदवी।
लकलक—वि० बहुत दुबला पतला।
लकलकाना—अक्रि० लपलपाना, चमकना।
लक़वा—पु० वातरोग विशेष, पक्षाघात।
लकसी—स्त्री० वह लग्गी जिसके सिरेपर फल इ० तोड़नेके निमित्त तिरछी लकडी बँधी हो।
लकीर—स्त्री० रेखा, धारी। पंक्ति।
लकुच—पु० बड़हर। ❊ पु० एक वृक्ष।
लकुट—स्त्री० छड़ी, लाठी (उदे० 'उनमानना', सू० ६७)। ❊
लकुटिया, लकुटी—स्त्री० लाठी 'जेहि डर भ्रमत पवन रवि ससि जल, सो क्यों डरे लकुटियाके डर।' सू० ७१, ( उदे० 'कमरिया' )।
लक्कड़—पु० देखो 'लकड़ा'।
लक्का—पु० एक तरहका कबूतर।
लक्खी—पु० एक तरहका घोड़ा। लखपती। वि० लाखके रंगका।
लक्तक—पु० अलक्तक, महावर। लत्ता।
लक्ष—पु० सौ हजारकी संख्या। उद्देश्य। निशान।
लक्षण—पु० आसार, चिह्न, शरीर परके भाग्यसूचक चिह्न। परिभाषा।
लक्षणा—स्त्री० शब्दकी वह शक्ति जिससे विशेष अर्थ लक्षित होता है।
लक्षना—स्त्री० लक्षणा। अक्रि० दिखाई पडना 'शुभ अंगअंगद कंध लक्ष्मन लक्षिये यहि भाँति जू।' राम० ३७१। सक्रि० देखना।
लक्षपति—पु० लखपती, धनाढ्य।
लक्षि—स्त्री० लक्ष्मी।
लक्षित—वि० देखा या जाना हुआ। पु० लक्ष्यार्थ।
लक्षिता—स्त्री० एक तरहकी परकीया नायिका।
लक्ष्मी—स्त्री० विष्णुपत्नी। शोभा, सम्पत्ति, गृहिणी।
लक्ष्मीकांत-पति—पु० विष्णु।
लक्ष्मीपुत्र—वि० धनी।
लक्ष्य—पु० उद्देश्य, निशाना।
लक्ष्यभेद—पु० चलती हुई चीजपर निशाना लगाना।
लक्ष्यवेधी—पु० लक्ष्यभेद करनेवाला।
लक्ष्यार्थ—पु० लक्षणसे निकलनेवाला अर्थ।
लखन—पु० लक्ष्मण। स्त्री० लखनेकी क्रिया।
लखना—सक्रि० देखकर समझ लेना, ताड़ना ( उदे० 'छीजना' ), लखन लखेउ रघुबंसमनि, ताकेउ हरकोदंड।' रामा० १४१। देखना।
लखपती—पु० लाख रुपयोंवाला, बहुत धनी।
लखराउँ—पु० लाख आमोंके पेड़ोंका बाग़।
लखलखा—पु० बेहोशी दूर करनेवाली एक सुगन्धित
लखाउ, लखाव—पु० चिह्न, पहिचान ( रामा० ९४ निशानी ( रामा० ३२६ )।
लखाना—सक्रि० दिखलाना (उदे० 'जुन्हैया' ), सुझा ( साखी १ )। अक्रि० देख पड़ना।
लखिमी—स्त्री० लक्ष्मी, सम्पत्ति।
लखिया—पु० लखनेवाला।
लखी—पु० लाखके रंगका घोड़ा।
लखुआ—पु० गेहूँका एक रोग, लाखा।
लखेदना—सक्रि० खदेड़ना, भगाना।
लखेरा—पु० चूड़ियाँ बनानेवाला, चुड़िहार।
लखौट—स्त्री० लाखकी चूड़ी।
लखौटा—पु० लेख, लिखितपत्र ( 'क्षपणक‥जैसे तेरे हाथमें यह लखौटा है।' मुद्रा० ७५)। लिखावट सिन्दूर रखनेका डब्बा। एक सुगन्धित लेप। स्त्री लाखकी चूड़ी 'हाथनि लखौटा पाइ चूरा पचमनी। गोरीकी जुगल जानु है उन्हारि केराकी।' रसवि० २९
लखौरी—स्त्री० भ्रमरीका घर। पुराने ढंगकी ईंट।
लग—स्त्री० लगन, प्रेम। पतली छड़ी 'लहलहाति तन तरुनई लचि लगलौं लफ जाय। लगैं लाँक लोइनभरी, लोइनु लेति लगाइ।' बि० २२०। अ० लिए। तक, पास। लौं, के समान ( उदे० 'लगि' )।
लगढग—क्रिवि० क़रीब। लगभग।
लगन, लगनि—स्त्री० लगाव, दृढ़ता, लौ। प्रेम। विवाहमुहूर्त, कोई शुभ मुहूर्त। राशिका उदय (उदे० 'उदयना')।
लगनपत्री—स्त्री० विवाहकी तिथिपत्री।
लगना—अक्रि० प्रतीत होना, जान पड़ना। पीड़ा या जलन उत्पन्न करना। शुरू होना। आवश्यक होना। एक वस्तुका दूसरी वस्तुसे छू जाना। स्थापित होना। रगड़ खाना या टकरा जाना। जुड़ना, मिलना। प्रवृत्त होना। चुभना, गड़ना। छेड़ छाड़ करना। बन्द होना। व्यय होना। चढ़ाया जाना, लेप किया जाना, चिपकाया जाना। उगना, उत्पन्न होना। असर होना। चिह्नित होना। दुहा जाना। पीछे पड़ना, साथ हो लेना। ठीक बैठना, आरोपित होना। रिश्तेमें कुछ होना। सजाया जाना।
लगभग—क्रिवि० अन्दाज़न, प्रायः, क़रीब।

लगर—पु० एक शिकारी पक्षी ( बीजक २८२ ), बाज
लगलग—वि० लकलक, बहुत नाजुक । [(रतन० ४०) ।
लगव—वि० व्यर्थ । असत्य ।
लगवाना—सक्रि० किसीसे लगानेका काम कराना ।
लगवार—पु० यार, उपपति ।
लगातार—क्रिवि० निरन्तर, सिलसिलेसे । [ राजस्व ।
लगान—पु० जमींदारोंको मिलनेवाला भूमिकर, पोत,
लगाना—सक्रि० छुवाना, टकरा देना, मिलाना, जोड़ना, खर्च करना, प्रवृत्त करना, नियुक्त करना, बन्द करना, लेप करना, चढ़ाना, स्थापित करना, आरोपित करना, चिह्नित करना, दुहना, 'सजाना, प्रज्वलित करना, चुगली खाना, धारण करना ।
लगाम—स्त्री० लोहेकी काँटेदार छड़ जो घोड़ेके मुँहमें दे दी जाती है । बाग, रास ( उदे० 'ताजना' ) । नियन्त्रण, रोक ।
लगाय—स्त्री० लगन, प्रेम, प्रीति 'सूर जहाँ लौं श्याम-गात हैं तिन सों क्यों कीजिए लगाय ।' भ्र० ३८ ।
लगार—स्त्री० लगाव, लगन (साखी ३९) । सिलसिला, बन्धेज,जिससे लगाव हो,भेद लेनेको भेजा गया व्यक्ति ।
लगालगी—स्त्री० लगन, स्नेह, सम्बन्ध 'लगालगी लोइन करहिं नाहक मन बँध जाहिं ।' वि० १६९ । लगान ।
लगाव—पु०, लगावन—स्त्री० सम्बन्ध ।
लगावट—स्त्री० प्रेम, लगन । मोहक चेष्टा, सम्बन्ध ।
लगावना—देखो 'लगाना' ।
लगि—अ० देखो 'लग','मोहि लगि भे सियराम दुखारी ।' रामा० २८६, 'जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते ।'रामा० २२९ 'चौरी लगि दौरीं उठीं चोरी लौं भ्रमतिमनि ·'। भावि० २१ । स्त्री० लगन, लग्गी ( वि० २२० ) ।
लगी—स्त्री० बाँसकी लम्बी छड़ी ।
लगुड़—पु० डण्डा ।
लगूर, लगूल—स्त्री० दुम, पूँछ ।
लगौंहा—वि० लगनेवाला, रीझनेवाला ।
लग्गा—पु० लम्बा बाँस । कार्यारम्भ ( लग्गा लगाना ) ।
लग्गी, लग्घी—स्त्री० बाँसकी लम्बी छडी, लम्बा बाँस ।
लग्घड़—पु० बाज । देखो 'लकड़बग्घा' ।
लग्न—पु० मुहूर्त, राशिका उदय, विवाह । स्त्री० देखो 'लगन' । वि० लगा हुआ ।
लग्नदिन—पु० विवाहका निश्चित दिन ।
लग्नपत्र—पु०,-पत्रिका—स्त्री० देखो 'लगनपत्री' ।
लग्नेश—पु० लग्नका स्वामी ।
लघिना—पु० भैंसे आदि काटनेका एक प्राचीन अस्त्र ।
लघिमा—स्त्री० लघु होनेकी क्रिया, हलकापन, लघुता 'अपनी ही लघिमा परवार' पल्लव ३३ । एक सिद्धि ।
लघु—वि० छोटा, हलका, फुर्तीला, थोड़ा, नीच ।
लघुक्रम—पु० तेज चलनेकी क्रिया ।
लघुचेता—पु० नीचाशय ।
लघुजल,-जांगल—पु० लवा पक्षी ।
लघुत्व—पु०, लघुता—स्त्री० छोटाई, नीचता, तुच्छता, हलकापन, फुर्ती 'कोटि भाँतिन पौनते मनते महा लघुता लसै ।' राम० ४८९ ।
लघुपाक—वि० आसानीसे हजम होनेवाला ।
लघुमति—वि० बेवकूफ ।
लघुशंका—स्त्री० मूत्रत्याग । पेशाबकी हाजत ।
लघुहस्त—पु० तेज़ीसे बाण चलानेवाला ।
लच,लचक—स्त्री० लचनेकी क्रिया ।
लचकना—अक्रि० मोच खाना, झुकना ( उदे० 'चौसर', 'विजन') ।
लचकनि,लचनि—स्त्री० लचक, झुकाव । [
लचकाना—सक्रि० झुकाना, मोड़ना ।
लचकीला, लचलचा—वि० जो आसानीसे लच जाय ।
लचकौंहाँ—वि० लचनेवाला, झुका हुआ (मति०१०४) ।
लचना—दे० 'लचकना', लफना ।
लचाना—सक्रि० झुकाना, नीचा करना (भावि० १८) ।
लचार—वि० विवश, मजबूर ।
लचारी—स्त्री० विवशता । नज़र,भेंट । एक तरहका गीत ।
लचीला—वि० जो आसानीसे झुक सके, मुड़नेवाला ।
लच्छ—पु० उद्देश्य, निशाना, 'जीभ कमान बचन सर नाना । मनहुँ महिप मृदु लच्छ समाना ।' रामा० २१८ । लाख । बहाना । स्त्री० लक्ष्मी ।
लच्छण,लच्छन—पु० लक्षण, चिह्न । लक्ष्मण ।
लच्छमा—स्त्री० लक्ष्मी, विष्णु-पत्नी, सम्पत्ति, शोभा ।
लच्छा—पु० एक जेवर । लपेटा हुआ सूत इ०, अण्टी ।
लच्छि,-मी—स्त्री० लक्ष्मी(उदे०'दीठना',रामा० १५१) ।
लच्छित—वि० देखा हुआ, अङ्कित । लक्षणयुक्त ।
लच्छिनिवास—पु० लक्ष्मीपति, नारायण ।
लच्छी—स्त्री० छोटा लच्छा, अण्टी । लक्ष्मी 'लच्छी सी जहँ मालिन बोलै ।' सू०४७ । पु० घोड़ेका एक भेद ।

लच्छेदार—वि० जिसका क्रम जल्द न टूटे ( बात )। [ लच्छोंवाला।
लछन—पु० लक्षण, लक्ष्मण।
लछना—सक्रि० लखना, ताड़ना।
लछमन—पु० लक्ष्मण।
लछमना—स्त्री०एक जड़ी। कृष्णकी एक पटरानी,लक्ष्मणा।
लछमी, लछिमी—स्त्री० लक्ष्मी।
लछारा—वि० लम्बा, बड़ा ( बु० वै० ७६ )।
लज—स्त्री० लाज, शर्म।
लजना—अक्रि० लज्जित होना (रघु० २), 'तदपि अधम विचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ़ लजै। विन० २३९
लजनी—स्त्री० लजालू पौधा।
लजवाना—सक्रि० शर्मिन्दा करना।
लजाना—अक्रि० लज्जित होना ( उदे०'अकृत', 'चेराई', 'नासिक' ), सङ्कोच करना। सक्रि० लज्जित करना
लजारू,लजालू—स्त्री० एक पौधा। [ (उदे० 'छदंत्र')।
लजियाना—पु० देखो 'लजाना'।
लज़ीज़—वि० ज़ायकेदार, स्वादिष्ट।
लजीला, लजोर—वि० लज्जाशील 'विदित न सनमुख ह्वै सकैं अँखियाँ बडी लजोर। रतन० ३१
लजोहा,लजौंहा—वि० लज्जायुक्त, लजीला।
लजौना—वि० लज्जाशील। लज्जित करनेवाला 'सूर नन्द सुत मदन लजौना।' सूबे० २४७
लज़्ज़त—स्त्री० ज़ायका, स्वाद, मज़ा, सुख।
लज्जा—स्त्री० शर्म, सङ्कोच, आबरू।
लज्जालु—वि० शर्म करनेवाला, लज्जाशील। स्त्री० लजालू नामक पौधा।
लज्जाजनक,-प्रद—वि० लज्जा उत्पन्न करनेवाला।
लज्जावती—स्त्री० लाजवन्तीका पौधा।
लज्जावान्,-शील—वि० जो बार बार लजाता हो, [ लजीला।
लज्जाशून्य,-हीन—वि० निर्लज्ज, बेशर्म।
लज्जित—वि० शर्मिन्दा।
लट—स्त्री० सिरके बाल, अलक ( उदे० 'बगराना' ), उलझे हुए बाल। ज्वाला।
लटक—स्त्री० लचक, नखरा, अङ्गभङ्गी।
लटकन—पु०लटकनेवाली वस्तु। मोतियों आदिका गुच्छा 'लटकन लटकि रहे भ्रू ऊपर, पंचरंग मनि पोहैरी।' सू० ५३। एक गहना '···नासा लटकन मोतीरी।' सू० ५३। स्त्री० लटक।

लटकना—अक्रि० झूलना ( उदे० 'अलिक' ), रहना, टँगना, लचकना, झुकना (उदे० ' [illegible]
लटका—पु० टोटका। छोटा नुसख़ा। चाल। [illegible] का ढङ्ग।
लटकाना—सक्रि० लटकनेमें प्रवृत्त करना। [illegible] अक्रि० झूलना, टँगा रहना ( उदे० 'बगराना' )
लटकीला—वि० लचकदार, झूमता हुआ।
लटकौवाँ—वि० लटकनेवाला ( दास १२७ )।
लटजीरा—पु० एक पौधा, चिचड़ा, अंझाझार।
लटना—अक्रि० थक जाना, ढीला पड़ना, व्याकुल लड़खड़ाना 'रटत रटत रसना लटी तृषा [illegible] अङ्ग।' दोहा० ११८, 'अबहूँ आउ कन्त! लटा।' प० १६७। ललचाना ( विन० ३० 'चन्द करौं सुख देखि निछावरि, केहरि कोटि लटो ऊपर।' भावि० ६६, आसक्त होना (विन०३१०
लटपट, लटपटा—वि० शिथिल, अशक्त ( उदे० ' [illegible] राना' )। टूटा फूटा, लड़खड़ाता हुआ, 'नींद तन लटपटे छके दृगनिकी हेर।' नागरी०। कुछ गाढ़ा, न सूखा न बहुत गीला 'लटपट त[illegible] रता० १२७, अस्तव्यस्त, उलझा हुआ 'बार [illegible] मानो भँवर जूथ लरत परस्पर···' स्वा० हरिदास
लटपटाना—अक्रि० लड़खड़ाना ( रतन० १७ ), [illegible] लित होना। लुभाना, आसक्त होना।
लटा—वि० दुबला, नीच, तुच्छ, बुरा (उदे० 'उपानह 'ससि कै सीतल चाँदनी सुन्दर सबहिं सुहाइ। चोर चितमें लटी,घटि रहीम मन आइ।'रहि० [illegible]
लटापटी—स्त्री० गुत्थम-गुथा होनेकी क्रिया, भिड़न्त।
लटापोट—वि० आसक्त, मुग्ध।
लटिया—स्त्री० सूत आदिकी लच्छी।
लटी—स्त्री० बुराई ( छत्र ४० ), बुरी बात, कथन। भक्तिन।—मारना = गप मारना 'झूठनके बदन निहारत मारत फिरत लटी।' सू० ५
लटुआ—पु० एक खिलौना, भौंरा, लट्टू।
लटुक—पु० एक तरहका पेड़ या उसका फल।
लटुरी—स्त्री० सिरके बाल, अलक (उदे० 'छिटकना')
लटू—पु० एक खिलौना, 'भौंरा'—होना = मुग्ध [illegible]
लटूरी—स्त्री०देखो 'लटुरी' (छत्र०२३)।[(उदे०'भट्ट')।
लटोरा—पु० एक तरहका पेड़ या उसका फल।

लट्ट—पु० दुष्ट मनुष्य ।
लट्टपट्ट—वि० लथपथ ।
लट्टू—पु० कीलपर घूमनेवाला खिलौना, भौंरा । वि० [मुग्ध ।
लट्ठ, लठ—पु० मोटी लाठी, सोंटा । वि० उजड्ड ।
लट्ठबाज़—वि० लाठी चलानेवाला ।
लट्ठमार—वि० लट्ठबाज । कठोर ।
लट्ठा—पु० धरन, शहतीर, लकड़ीका मोटा लम्बा टुकड़ा । मारकीन । खेत इ० नापनेकी ५½ हाथ लम्बी लग्गी ।
लठिया—स्त्री० छोटी लाठी ।
लठैत—पु० लट्ठबाज़ ।
लड़ंत—स्त्री० मुठभेड़, मुक़ाबला ।
लड़—स्त्री० सीधमें गुथी हुई फूल, मोती आदिकी पंक्ति, लड़ी, सिलसिला । [बुलापन, नासमझी ।
लड़कई—स्त्री०, लड़कपन—पु० बाल्यावस्था, चुल-
लड़कपन—पु० बाल्यावस्था, चञ्चलता, नादानी ।
लड़कबुद्धि—स्त्री० नादानी ।
लड़का—पु० पुत्र, बच्चा, बालक ।
लड़काई—स्त्री० देखो 'लड़कई' ।
लड़कावाला—पु० बालक या सन्तान, स्त्री-पुत्र (बहुव०) ।
लड़किनी, लड़की—स्त्री० बालिका, बेटी ।
लड़कौरी—वि० स्त्री० जिसकी गोदमें बच्चा हो ( स्त्री ) ।
लड़खड़ाना—अक्रि० डगमगाना, उचितरूपसे काम न करना । इधर उधर झुक पड़ना ।
लड़खड़ी—स्त्री० लड़खड़ानेकी क्रिया । [विवाद करना ।
लड़ना—अक्रि० युद्ध करना, झगड़ा करना, भिड़ना,
लड़बावर, लड़बौरा—वि० लड़कों जैसा, नासमझ, मूर्ख, मूर्खतापूर्ण ( नव ४० ) ।
लड़ाई—स्त्री० युद्ध, झगड़ा, विवाद, वैर ।
लड़ाका—वि० बहादुर, लड़नेवाला । कलहकारी ।
लड़ाकू—वि० लड़ाका, लड़ाईके कामका ।
लड़ाना—सक्रि० युद्धके लिए प्रवृत्त करना, भिड़ाना । लगाना ( बुद्धि आदि ) । लाड़ करना, प्रेमसे देना या खिलाना 'खान पान परिधान राजसुख जो जोउ कोटि लड़ावे ।' सू० १९७
लड़ायता—वि० लाड़िला, प्यारा । [सिला, तार, पंक्ति ।
लड़ी—स्त्री० मोतियों आदिकी गुथी हुई पंक्ति, सिल-
लड़ीला—वि० लाड़ला, प्यारा ।—लड़ीली = प्यारी,
लड़आ—पु० लड्डू । [ प्रिया ( रत्ना० २३१ ) ।
लड़ैता—वि० लड़नेवाला । दुलारा 'कहा कहौं मेरे लाल लड़ैते जब तू बिदा कियो ।' सूबे० २१०, (भ्र०६३) ।
लड्डू—पु० मोदक ।
लड्याना—सक्रि० अधिक प्यार करना । अधिक लाड़-प्यारके कारण शोख या हठी बना देना ।
लढ़ा—पु०, लढ़िया—स्त्री० बैलगाड़ी 'जातहिं देहैं लदाय लढ़ा भरि ।' सुदामा० ३
लत—स्त्री० कुटेव, दुर्व्यसन, बान ।
लतखोर, लतखोरा—वि० लात खानेवाला, कमीना । पु० पायन्दाज, चौखट । दास ।
लतड़ी,-री—स्त्री० एक कदन्न, खेसारी । एक तरहकी
लतपत—वि० लथपथ । [ चट्टी ।
लतमर्दन—स्त्री० पैरोंसे रौंदना ।
लतर—स्त्री० बेल ।
लतरी—स्त्री० केसारी ।
लता—स्त्री० बेल, बौंर, माधवी ।
लताकुंज,-गृह,-भवन,-मंडप—पु० लताओंसे छाया [हुआ स्थान ।
लताड़—स्त्री० फटकार ( कर्म० ९८ ) ।
लताड़ना—सक्रि० कुचलना, थकाना ।
लताजिह्व—पु० साँप ।
लतापता—पु० पेड़-पत्ते ।
लतिका—स्त्री० छोटी लता ।
लतियर, लतियल—वि० लतखोर ।
लतियाना—सक्रि० लातोंसे कुचलना, लातोंसे प्रहार [ करना ।
लतिहर,-हल—वि० लतखोर ।
लतीफ़—वि० बढ़िया, मज़ेदार ।
लतीफ़ा—पु० चुटकुला, हँसीकी बात ।
लत्ता—पु० पुराने कपड़ेका टुकड़ा, धज्जी ।—उड़ जाना = टुकड़े टुकड़े हो जाना, नष्ट होना 'पलमें पतालहूको लत्ता उड़ि जावैगो ।' कलस ३५५
लत्ती—स्त्री० घोड़े इ० का पादप्रहार । लात मारनेकी क्रिया । धज्जी ।
लथपथ—वि० भीगा हुआ, तराबोर । सना हुआ ।
लथाड़—स्त्री० भर्त्सना, फटकार । पराजय ।
लथाड़ना, लथेड़ना—सक्रि० कीचड़ आदिसे तराबोर करना, दे मारना, हराना, डाँटना, झिड़कना, थकाना ।
लदना—अक्रि० भारयुक्त होना, वस्तुओंका भरा या रखा जाना । सवार होना ।

लदलद—क्रिवि० 'लदलद' शब्दके साथ, जो प्रायः गीली चीज़के गिरनेसे होता है।

लदाउ, लदाऊ—पु० देखो 'लदाव'।

लदाना—सक्रि० दूसरेको लादनेके काममें प्रवृत्त करना। लादनेमें सहायक होना।

लदाफँदा—वि० भारसे लदा हुआ।

लदाव—पु० लादनेकी क्रिया। पटाव, बोझ। बिना शहतीरकी जोड़ाई या पटाव। [ ( सूबे० १४७ ) ।

लदावना—सक्रि० लदवाना, माल लादकर ले जाना

लदुवा, लद्दू—वि० जिसपर बोझ लादा जाय। बोझ [ ढोनेवाला।

लद्धड़—वि० काहिल, सुस्त।

लद्धना—सक्रि० पाना, मिलना।

लप—पु० मुट्ठी, अञ्जलि। छुरी आदिकी चमक या चलाने- [का शब्द।

लपक—स्त्री० कान्ति, लपट, फुरती।

लपकना—अक्रि० झपटना, शीघ्रतासे जाना।

लपझप—स्त्री० तेज़ी, चञ्चलता, चालाकी, हाथकी चालाकी। वि० चञ्चल, फुरतीला।

लपट—स्त्री० लौ, ज्वाला ( उदे० 'बिज्जुल' )। झलक ( उदे० 'तमक' )। गन्ध, हवाकी लहर।

लपटना—अक्रि० चिपटना ( उदे० 'आँटी' ), सटना,

लपटा—पु० एक तरहकी कढ़ी, लेई। [ फँसना।

लपटाना—अक्रि० चिपटना ( सू० १३३ ), फँसना। लथपथ होना 'जे पद कमल धूरि लपटाने।' सू०८०। सक्रि० लपेटना, गले लगाना।

लपटौआँ, -टौना—वि० लिपटनेवाला या लिपटा हुआ।

लपना—अक्रि० झुकना, झटकेके साथ लचना। ललचना, लपकना ( विन० ३०८ )।

लपलपाना—सक्रि० इधर उधर हिलाना, चमकाना, वेगसे इधर उधर लचाना। अक्रि० इधर उधर लचना या हिलना, चमकना।

लपलपाहट—स्त्री० लचकने, चमकने, झोंका खाने आदिकी क्रिया या भाव।

लपसी—स्त्री० कम घीका हलुआ, लेई (कबीर १२१)।

लपाना—सक्रि० झोंका देकर लचाना।

लपेट—स्त्री० लपेटनेकी क्रिया, घेरा, फेरा, तह, बल, चक्कर, उलझन।

लपेटन—स्त्री० देखो 'लपेट'। पु० लपेटनेकी वस्तु।

लपेटना—सक्रि० परिवेष्टित करना, समेटना, घुमाकर या चक्कर देकर फँसाना, ग्रसना, पंजेमें करना, करना, छोपना, पोतना।

लपेटवाँ—वि० घुमावदार। जो लपेटकर बनाया हो, जो लपेटा जा सके। व्यंग्य।

लपेटा—पु० देखो 'लपेट'।

लफंगा—वि० आवारा, दुष्ट, लम्पट।

लफना—अक्रि० देखो 'लपना' (उदे० 'लग', 'चि.

लफलफानि—स्त्री० हिलने या झोंका खानेकी क्रिया, च

लफाना—सक्रि० झुकाना, लचाना, इधर उधर ह

लफ़्ज़—पु० शब्द, बात।

लब—पु० ओंठ।

लबझना—अक्रि० फँसना।

लबड़धोंधों—स्त्री० व्यर्थका हल्ला, अव्यवस्था, [ नी.

लबड़ना—अक्रि० झूठ बोलना।

लबदा—पु० मोटा डण्डा।

लबदी—स्त्री० पतली छड़ी।

लबरा—वि० देखो 'लबार'।

लबादा—पु० एक लम्बा चौड़ा पहनावा, चोगा।

लबार—वि० झूठ बोलनेवाला 'मिलि तपसिन्ह तैं भ. लबारा।', रामा० ४६८ [ ने .ए

लबारी—स्त्री० असत्यभाषण। वि० मिथ्याभाषी,

लबालब—क्रिवि० मुँहतक, ऊपर किनारेतक(भरा हुआ

लबेद—पु० अशास्त्रीय वचन व्यवहारादि।

लबेदा, लबेदी—देखो 'लबदा', 'लबदी'।

लबेरा—पु० लसोढ़ा।

लब्ध—वि० प्राप्त, उपार्जित।

लब्धकाम—वि० जिसकी कामना पूरी हो गयी हो।

लब्धकीर्त्ति—वि० जिसने ख्याति प्राप्त की हो, प्रसिद्ध।

लब्धप्रतिष्ठ—वि० प्रतिष्ठावाला।

लब्धि—स्त्री० लाभ, प्राप्ति, प्राप्त संख्या।

लभन—पु० पाना।

लभस—पु० धन। भिक्षुक। पिछाड़ी।

लभ्य—वि० प्राप्त करने योग्य। वाजिब।

लमक—पु० लम्पट।

लमकना—अक्रि० लपकना, उत्सुक होना।

लमघिचा—वि० जिसकी 'घींच' ( गर्दन ) लम्बी हो।

लमछड़—वि० लम्बा और पतला। पु० भाला।

लमटंगा—पु० सारस। वि० लम्बी टाँगोंवाला।

लमतड़ंग—वि० लम्बा, ऊँचा।
लमघी—पु० समधीका पिता। [ ❀ बढ़ जाना।
लमाना—सक्रि० लम्बा करना, फैलाना। अक्रि० दूर ❀
लय—स्त्री० धुन, गानेकी आवाज। पु० लीन होनेका भाव, प्रेम, एकाग्रता, विनाश, स्थिरता।
लयन—पु० विश्राम। शरणग्रहण।
लयमान—वि० लीन। लययुक्त।
लर—स्त्री० देखो 'लड़'।
लरकई—स्त्री० लड़कपन, नादानी, चंचलता।
लरकना—अक्रि० झुकना, लटकना '''भूतनके भौननमें टाँगे चंद्रायतन सुलोयें लरकतु हैं।' गुलाब ४९५
लरका—पु० लड़का, पुत्र।
लरकाना—सक्रि० झुकाना, लटकाना।
लरकिनी—स्त्री० लड़की, बेटी।
लरखरना-खराना—अक्रि० देखो 'लड़खड़ाना' गंजेउ सो गर्जेउ घोर धुनि सुनि भूमि भूधर लरखरे।' जाम० ५५
लरखरनि—स्त्री० लड़खड़ानेकी क्रिया ( सू० ५३ )।
लरजना—अक्रि० डुलना, हिलना, काँपना, डरना। झपना ( उदे० 'तुजुक' )।
लरजा—पु० कँपकपी। भूकम्प। कँपानेवाला ज्वर।
लरझना—अक्रि० शब्द करना ( दीन० ४१ )।
लरझर—वि० वरसता हुआ, विपुल, प्रचुर।
लरना—देखो 'लड़ना'।
लरनि—स्त्री० लड़नेका तरीका। युद्ध, प्रतिद्वन्द्विता'वदन विधु जित्यो लरनि।' गीता० २८८
लरम—वि० मुलायम। पु० वैभव।
लराई, लराका—देखो 'लड़ाई', 'लड़ाका'।
लरिकई—स्त्री० देखो 'लरकई'।
लरिकपन—पु० देखो 'लरकई' ( विन० ५३२ )।
लरिक-सलोरी—स्त्री० लड़कपन, शरारत 'सूरदासप्रभु करत दिनहिं दिन ऐसी लरिकसलोरी।' सूप० बाल ५०
लरिका—पु० लड़का, पुत्र ( उदे० 'लंगर', 'अखारा' )।
लरिकाई—स्त्री० देखो 'लरकई', 'सोइ लरिकाई मो सन करन लगे पुनि राम।' रामा० ५८१, ( उदे० 'अचगरी', 'औवन' )।
लरिकिनी—स्त्री० लड़की, पुत्री (सूसु० १६५ )।
लरिया—पु० दुपट्टा ( ग्राम० २२४ )।
लरी—दे० 'लड़ी', 'दाड़िम दसन लरी।' सू० ३३।
ललक—स्त्री० लालसा, तीव्र इच्छा ( दोहा० २३ )।
ललकना—अक्रि० लालसा करना, इच्छाकी उमंगसे पूरित होना, मग्न होना 'यह अरबिन्द सुधारस कारन भँवर वृन्द जुरि मानहुँ ललकैं।' ललित माधुरी।
ललकार—स्त्री० लड़नेका बढ़ावा। चुनौती।
ललकारना—सक्रि० चुनौती देना, युद्धार्थ पुकारना, बढ़ावा देना। [ ❀ होना।
ललचना—अक्रि० लालसा करना, लुभा जाना, मुग्ध ❀
ललचाना—अक्रि० देखो 'ललचना'। सक्रि० लुभाना, आकर्षित करना,लालसा पैदा करना (उदे० 'चूपड़ी')।
ललचौहाँ—वि० लालचयुक्त, लालसापूर्ण, ललचानेवाला 'को ललचाय न लालके लखि ललचौहैं नैन।'बि०२५९
ललन—पु० लाल, कुमार, प्रिय बालक, प्रियपति। क्रीड़ा।
ललना—स्त्री० रमणी, स्त्री। जीभ।
ललनी—स्त्री० बाँसकी नली, फोंफी'कहहिं कबिर ललनी के सुगना तोहि कवने पकरो।'बीजक २३५,(२३१भी)।
लला—पु० लड़के या नायकके लिए प्यारका सम्बोधन।
ललाई—स्त्री० लालिमा।
ललाट—पु० मस्तक, भाल, कपाल।
ललाट-पटल—पु० मस्तककी सतह।
ललाटिका—स्त्री० तिलक। एक शिरोभूषण।
ललाना—अक्रि० लालायित होना, पानेको अधीर होना। ( उदे० 'पाइमाल', 'खरिया' )।
ललाम—पु० रत्न, भूषण, चिह्न। ( चन्द्रमालललाम = शिवजी )। वि० लाल रंगका, सुन्दर।
ललामी—स्त्री० लालिमा।
ललित—वि० सुन्दर, सुहावना, प्रिय। पु० अंगचेष्टा
ललितई,-ताई—स्त्री० चारुता, सुन्दरता। [ विशेष।
ललिता—स्त्री० कस्तूरी। एक छन्द।
ललितोपमा—स्त्री० एक काव्यालंकार।
लली—स्त्री० लाड़ली लड़की। प्रियतमा।
ललौहाँ—वि० लालिमा लिये हुए ( कलस १७९ )।
लल्ला—पु० बच्चोंके लिए प्यारका शब्द। बुंदेलखंडमें साले, बहनोई, दामाद आदिके लिए सम्बोधन।
लल्लो—स्त्री० जीभ।
लल्लोचप्पो,-पत्तो—स्त्री० चापलूसी, ठकुरसुहाती।
लवंग—पु० लौंग। नाककी कील।
लवंगलता—स्त्री० लौंगके वृक्षकी शाखा। एक

लव—पु० क्षण, अत्यल्प मात्रा ( उदे० 'तुलना' । लौ ( उदे० 'ताजना' ) । रामके एक पुत्रका नाम ।
लवकना—अक्रि० चमकना, कौंधना ( ग्राम० ४९८ ) ।
लवका—स्त्री० चमक, बिजली (ग्राम० ४९८ ) ।
लवण—पु० नमक, नोन ।
लवणासुर—पु० कुंभीनसीका पुत्र जिसे शत्रुघ्नने मारा था।
लवन—पु० नमक । काटना, लुनाई ।
लवना—सक्रि० लुनना, ( फसल ) काटना 'बोवै बबुर लवै कित धाना ।' अखरा० ३४८
लवनाई—स्त्री० लावण्य, सौन्दर्य ।
लवनि, लवनी—स्त्री० फसल काटनेकी क्रिया । लुनाई। मजूरोंको दिया जानेवाला फसलका अंश 'सिला लवनि रतिकाम लहीरी ।' गीता० ३२९ । नवनीत 'लवनी दधि मिष्टान्न जोरिकै यशुमति मेरे हाथ पठाई ।' सू० ७३
लवर—स्त्री० ज्वाला, लपट 'लायकै लवर व्योम व्यापिनी उठावैगो ।' कलस ३५२
लवलासी—स्त्री० प्रेमकी लगन ।
लवली—स्त्री० हरफारेवड़ी ( कवि प्रि० ३३४ ) ।
लवलीन—वि० निमग्न, तल्लीन ।
लवलेश,लवलेस—पु० अल्प मात्रा, अति लघु अंश ( उदे० 'झारि' ) । थोड़ा सा लगाव ।
लवहर—पु० यमज बालक ।
लवा—पु० एक पक्षी । लावा ।
लवाई—वि० थोड़े दिनकी ब्याई हुई ( गाय ) ( उदे० 'बच्छ', रामा० २६८ ) । स्त्री० लुनाई ।
लवाज़मा—पु० साथकी भीड़भाड़ और साजसामान । ज़रूरी सामान ।
लवारा—पु० गायका बच्चा ।
लवासी—वि० लबार, झूठा, छलिया ( सूबे० २८३ ) ।
लवोपल—पु० बर्फका टुकड़ा ।
लशकर, लसकर, लसगर—पु० सेना, दल, छावनी ( छत्र० ७४ ) । जहाजमें काम करनेवालोंका समूह ।
लशकरी—पु० सिपाही । जहाज़का कर्मचारी वि० सेना सम्बन्धी । जहाजी ।
लशुन, लशून, लसुन—पु० लहसुन ।
लषन, लषना—दे० 'लखन', 'लखना' ।
लस—पु० लासा । आकर्षण । चिपचिपाहट ।

७०

लसदार—वि० लसवाला, लसीला, चिपचिपा ।
लसना—अक्रि० सुशोभित होना, बिराजना 'रा..' लसै, देवलोकको हँसै ।' राम० ३५, (उदे० '... सक्रि० चिपकाना ।
लसनि—स्त्री० शोभा ( उदे० 'द्योति' ) स्थिति ।
लसम—वि० खोटा, दोषयुक्त, निकम्मा (कविता० २०
लसलसा—वि० लसदार ।
लसलसाना—अक्रि० चिपचिपाना ।
लसलसाहट—स्त्री० चिपचिपाहट ।
लसित—वि० शोभित । [ पानीका शब्द
लसी—स्त्री० चिपचिपाहट, आकर्षण, सम्बन्ध ।
लसीला—वि० चिपचिपा । फबीला ।
लसुनिया—पु० एक बहुमूल्य पत्थर ।
लसोड़ा,-ढ़ा—पु० एक तरहका पेड़ या उसका फल
लसौटा—पु० बहेलियोंका लासा रखनेका चोंगा ।
लस्टम पस्टम—क्रिवि० ज्यों त्यों करके, किसी न कि
लस्त—वि० शिथिल, पस्त, श्रान्त, अशक्त । [ तरह
लस्सी—देखो 'लसी' । मट्ठा ।
लहँगा—पु० एक घेरदार पहनावा ( उदे० 'झोंका' ) ।
लहक—स्त्री० आगकी लपट । कान्ति । शोभा ।
लहकना—अक्रि० भभकना, हिलना, लहराना ( प २३३ ), ललकना, लपकना, झोंके देना ।
लहकाना—सक्रि० ललकाना,उत्साहित करना, भड़काना
लहकारना—सक्रि० देखो 'लहकाना' ।
लहकौर, लहकौरि—स्त्री० कोहबरकी एक रस्म 'लह कौरि गौरि सिखाव रामहिं सीयसन सारद कहहिं ।
लहजा—पु० स्वर, ध्वनि ।
लहज़ा—पु० क्षण, पल ।
लहद—स्त्री० कब्र ( सेवा० १८९ ) ।
लहनदार—पु० कर्ज़ देनेवाला, महाजन ।
लहना—सक्रि० पाना 'नारि बिरह दुख लहेउ अपारा ।' रामा० ३२ । काटना, कतरना । पु० पावना 'ऊधो लहनो अपनो पैए ।' भ्र० ७५ । ऋण । भाग्य ।
लहनी—स्त्री० फलभोग ।
लहबर—पु० चोगा । पताका ।
लहमा—पु० पल, क्षण ।
लहर, लहरि—स्त्री० तरङ्ग, उमङ्ग, मौज, झोंका, लपट, टेढ़ी रेखा या टेढ़ी चाल ( प० ५०, ५३ ) ।

लहरदार—वि० वक्र गतिसे जानेवाला।

लहरना—अक्रि० झोंका खाना, तरङ्गित होना, हिलोर मारना, उल्लसित होना, शोभित होना, टेढ़ी चालसे चलना।

लहरपटोर—पु०,-पटोरी—स्त्री० रेशमी लहरिया कपड़ा 'सारी कंचुकि लहरिपटोरी।' प० १५८

लहरा—पु० लहर, तरग, मौज (ग्राम० भूमिका २९)।

लहराना—अक्रि० देखो 'लहरना'। सक्रि० हिलकोरा देना, हिलाना डुलाना, टेढ़ा चलाना।

लहरिया—पु० टेढ़ीमेढ़ी लकीरें। एक कपड़ा। स्त्री० लहर।

लहरी—वि० मनमौजी। स्त्री० लहर 'त्रिवली तामें ललित भाँति जनु उपजत लहरी।' नन्द०

लहरीली—वि० स्त्री० लहरदार, घुँघराली 'मेरी लहरीली नीली अलकावली समान।' लहर ६६

लहलह, लहलहा—वि० डहडहा, हराभरा, विकसित, प्रफुल्ल (मति० १७२)।

लहलहाना—अक्रि० हराभरा होना, पनपना, प्रसन्न होना, लहरें मारना (उदे० 'मारगन')।

लहसुन—पु० तीक्ष्ण गन्धवाला एक पौधा।

लहसुनिया—पु० एक बेशकीमती पत्थर।

लहा—पु० देखो 'लाह'।

लहाछेह—स्त्री० एक तरहका नाच। नाचनेमें पदलाघव 'लहाछेह गतिनकी कही न परत मो पै'—गुलाब ३५१

लहालह—वि० हराभरा, प्रफुल्ल। [उल्लसित।

लहालोट—वि० खूब हँसता हुआ। मुग्ध, प्रसन्न,

लहास—स्त्री० लाश।

लहासी—स्त्री० नाव या जहाज बाँधनेकी रस्सी।

लहि—अ० लग, तक 'जो लहि जिऔं रात दिन सवँरौं ओहि कर नावँ।' प० ४१

लहु—अ० पर्यन्त। वि० लघु (रामाज्ञा १००, विद्या० ७)।

लहुरा—वि० उम्रमें या पदमें छोटा (छत्र० ४)।

लहू—पु० रुधिर, लोहू।

लहेरा—पु० रेशम रँगनेवाला, लाखका काम करनेवाला।

लाँक—स्त्री० हालकी कटी फसल, भूसी। लङ्क, कमर।

लाँग—स्त्री० कछोटा, काछ।

लांगली—पु० सर्प। नारियल। मजीठ।

लांगुल, लांगूल—पु० पूँछ।

लांगूली—पु० बन्दर।

लाँघना—सक्रि० पार करना, डाँकना (उदे०'किलकिला')।

लाँच—स्त्री० घूस, उत्कोच।

लांछन—पु०, लांछना—स्त्री० कलङ्क। दोष, चिह्न।

लांछनित—वि० लांछित, कलङ्कित।

लाँजी—पु० एक तरहका धान।

लांपट्य—पु० लम्पटता, कामुकता, व्यभिचार।

लाँबा—वि० लम्बा, फैला हुआ 'तेते पायँ पसारिये जेती लाँबी सौर।'

लाइ—स्त्री० आग (उदे० 'तावना')।

लाइक—वि० योग्य, समर्थ, उचित।

लाइची—स्त्री० इलाइची।

लाई—स्त्री० धानका लावा। चुगली।

लाऊ—पु० कद्दू।

लाकड़ी, लाकरी—स्त्री० लकड़ी (उदे० 'ओदा')।

लाक्षणिक—वि० लक्षण प्रकट करनेवाला।

लाक्षा—स्त्री० लाख। लाक्षारस = महावर।

लाक्षिक—वि० लाखका। [संख्या।

लाख—स्त्री० लाह। वि० सौ हजार। पु० सौ हजारकी

लाखना—सक्रि० लख लेना, ताड़ जाना। (प० ९९)। अक्रि० लाखसे छिद्र बन्द करना।

लाखपती—पु० देखो 'लखपती'।

लाखा—पु० गेहूँका एक रोग। लाखका बना एक तरह का रंग।

लाखिराज—वि० बे-लगान (ज़मीन)।

लाखी—वि० लाखके रंगका।

लाग—स्त्री० लगाव, सम्बन्ध, सहारा 'राम सखाकर दीन्हे लागू।' रामा० ३०२। लगन (छत्र० ९५), प्रेम (दास ९३), बैर, होड़ (कलस २१२), चोट, टोना, लगान (सूत्रे० २६१), भस्म, एक तरहका नाच। रसद 'लाग देहि सब साथको, रोज मृगनिकौं मारि।' छत्र० ७८। अ० तक।

लागडाँट—स्त्री० प्रतियोगिता। दुश्मनी।

लागत—स्त्री० तैयार या प्रस्तुत करनेका व्यय।

लागना—दे० 'लगना', 'लोल कपोल झलक कुण्डलकी यह उपमा कछु लागत।' सू० ९१। 'बार बार कहो पिय कपिलों न लागि रे।' कविता०

लागि, लागे—अ० लिए, कारण (प० १०६), तक।

लागू—वि० लगने योग्य, घटित या चरितार्थ होने योग्य।

लाघव—पु० हलकापन, कमी, फुर्ती।

लाचार—वि० विवश।

लाचारी—स्त्री० विवशता।

लाचीदाना—पु० एक तरहकी मिठाई।
लाछन—पु० लाञ्छन, दोष, कलङ्क। [ प० १८५
लाछी—स्त्री० लक्ष्मी 'अठईं अमावस ईसन लाछी।'
लाज—स्त्री० शर्म, प्रतिष्ठा, आबरू ( उदे० 'बाजी' )। पु० धानका लावा, खस।
लाजक—पु० धानका लावा।
लाजना—अक्रि० लज्जित होना ( उदे० 'जंपना' ), 'श्रुति स्यामल एक बिराजतु है। अलि ज्यों सरसीरुह लाजति है।' के० ३२२। सक्रि० लज्जित करना 'तौ लाजौं गङ्गा जननी को, सान्तनु सुत न कहाऊँ। सू० १४
लाजमय, लाजवंत—वि० हयादार, लज्जाशील।
लाजवंती,-वती—स्त्री० छुईमुई नामक पौधा 'लाजवती ललना लता लाजवती अनुरूप।' गुलाब ६३
लाजवर्द—पु० एक तरहका बहुमूल्य पत्थर।
लाजवर्दी—वि० हलके नीले रंगका।
लाजवाब—वि० निरुत्तर। बेजोड़।
लाजा—स्त्री० लावा, चावल ( रामा० १८८ )।
लाज़िम—वि० अवश्यकर्त्तव्य, उचित, मुनासिब।
लाज़िमी—वि० आवश्यक, ज़रूरी। अनिवार्य।
लाट—स्त्री० ऊँचा मोटा खम्भा। पु० एक अनुप्रास। बिकनेवाली चीजोंका समूह। एक देश। गवर्नर।
लाटानुप्रास—पु० एक काव्यालङ्कार।
लाटी—स्त्री० ओंठ और जीभका सूखना 'सूखहिं अधर लागि मुह लाटी।' रामा० २६८
लाठ—स्त्री० देखो 'लाट'।
लाठी—स्त्री० सोंटा, डण्डा, लकड़ी।
लाड़—पु० दुलार, प्यार, ( उदे० 'पोढ', अ० २४ )।
लाड़लड़ैता, लाड़ला—वि० दुलारा।
लाडू—पु० लड्डू ( उदे० 'खेरौरा' )।
लात—स्त्री० चरण, चरण-प्रहार। [ विद्या० १९८
लाथ—पु० बहाना 'ततहि जाह हरि न करह लाथ।'
लाद—स्त्री० पेट, अँतड़ी। लादनेकी क्रिया।
लादना—सक्रि० भार रखना, वोझसे भरना।
लादिया—पु० किसी चीज़पर बोझ लादकर एक जगहसे दूसरी जगह ले जानेवाला।
लादी—स्त्री० गदहेकी पीठपर लादी हुई कपड़ोंकी गठरी। किसी पशुपर लादी हुई गठरी।
लाधना—सक्रि० पाना 'जो सुख शिव सनकादि न पावत सो सुख गोपिन लाधो।' सूबे० ३२२, ( रामा० १
लानत—स्त्री० फटकार। धिक्कार।
लाना—सक्रि० ले आना, पेश करना, पैदा करना। (उदे० 'दव', सू० ७४ ), सोखि समुद्र उतारौं ... तनिक विलम्ब न लाऊँ।' सूरा० ५२, जलाना 'हनु लाई लंक सब बच्यो बिभीषण धाम।' राम० ३
लाने—अ० लिए।
लापता—वि० जिसका पता न हो। ग़ायब।
लापरवा, लापरवाह—वि० असावधान, बेखबर। बेफि
लापरवाही—स्त्री० असावधानता, बे-फ़िक्री।
लापसी—स्त्री० लपसी ( साखी ३४ )।
लाबर—वि० झूठ बोलनेवाला।
लाभ—पु० फायदा, प्राप्ति। ब्याज।
लाभकारी,-दायक—वि० फायदेमन्द, फलप्रद।
लाम—पु० बहुतसे लोगोंका झुण्ड, सेना।
लामन—पु० लम्बमान होना, लटकना, हिलना( ब्रज० ४६४ ...लहँगा ( ग्राम० परि० ४१ )।
लामा—वि० लम्बा ( सूबे० ३६५ )। पु० तिब्बत बौद्धोंका आचार्य।
लाय—स्त्री० अग्नि, ज्वाला 'निसिदिन दाझै बिर... अन्तरगतकी लाय।' साखी ४४
लायक़—वि० योग्य, समर्थ, उचित। लायक—पु० ... का लावा 'बरषा फल फूलन लायककी।' राम० १८
लायक़ियत,—लायकी—स्त्री० योग्यता।
लायची—स्त्री० इलायची।
लार—स्त्री० लसदार थूक ( उदे० 'दँतियाँ' ), लुआब पंक्ति। क्रिवि० साथ ( क० वच० ४९ )।
लारू—पु० लड्डू ( प० ५० )।
लाल—पु० पुत्र, बच्चे या नायकके लिए प्यारका सम्बोधन माणिक्य। एक छोटी चिड़िया। स्त्री० लार। ६७ 'लछिमी सतकै चेरि, लाल करै बहु मुख चहै।' अखरा० ३५०। वि० सुर्ख। ( गोटी ) जो पूरा चक्कर लगा... बीचके खानेमें पहुँच गयी हो 'परो दाव तेरो ... करि लै सारी लाल।' दीन० २३७। (खिलाड़ी) जो जीत गया हो। लाल होना = क्रुद्ध होना।
लालच—पु० लोभ, तृष्णा ( स्त्री० भी—रघु० १०५ )।
लालचहा, लालची—वि० लोभी।
लालटेन—स्त्री० एक तरहका दीपक जो हवा इत्यादिसे शीशेद्वारा सुरक्षित हो।

लालड़ी—स्त्री० नथ आदिके मोतीके दोनों ओर लगाया जानेवाला लाल नग ।
लालन—पु० दुलार, प्यार । बालक, प्रिय पुत्र ।
लालना—सक्रि० प्यार करना ( उदे० 'उपवना', रामा० २२७ ), लालसा करना ( के० १३१ ) ।
लालनीय—वि० प्यार करने योग्य ।
लालबुझक्कड़—पु० हर बातमें अटकल लगाकर बुद्धिमान् बननेवाला ।
लालमन—पु० एक तरहका तोता, श्रीकृष्ण ।
लालमी—स्त्री० खरबूजा ।
लालमुँहाँ—पु० निनावेंका एक भेद ।
लालरी—स्त्री० देखो 'लालड़ी' ।
लालस—पु०लालसा—स्त्री० उत्कट इच्छा, उत्सुकता ( उदे० 'ईखना' ) ।
लालसिखा, लालसिखी—पु० मुर्गा 'भानु आगमन जानिकै, लालसिखा धुनि कीन ।' रघु० ६२
लालसी—वि० उत्सुक,इच्छुक ।
लाला—पु० बच्चे, देवर, वैश्य, कायस्थ आदिके लिए सम्बोधन । पोस्तका फूल । स्त्री० लार ।
लालाभक्ष—पु० एक नरक ।
लालायित—वि० उत्सुक, ललचाया हुआ । लाड़ला ।
लालास्रव—पु० लार गिरना । मकड़ा ।
लालास्राव—पु०लार गिरना । मकड़ेका जाला ।
लालित—वि० पालित । दुलारा ।
लालित्य—पु० सुन्दरता, सरसता ।
लालिमा, लाली—स्त्री० सुर्खी ।
लाली—स्त्री० लली, लाड़ली लड़की (रत्ना० ४६४ ) ।
लालुका—स्त्री० एक तरहका हार ।
लाले, लालो—पु० अरमान, लालसा 'रहै यही लालो अजहुँ फादत यहि जब भोर ।' सत्य । लाले पड़ना= तमन्ना होना, अप्राप्य या दुष्प्राप्य होनेके कारण लालायित होना । निराश होना । आफतमें पड़ना 'लाला प्राननको परत लहत न कोऊ त्राण ।' कलस ३३२, ( जीव ११० ) ।
लाल्हा—पु० एक साग ।
लाव—स्त्री० आग ( सुन्द० १६० ) । रस्सी ( उदे० 'सौंर' ) । पु० लवा पक्षी ।
लावक—पु० लवा पक्षी । मोट । धानकी जाड़ेकी फसल ।
लावण—वि० नमकीन, लवण सम्बन्धी । पु० सुँघनी ।
लावणिक—पु० नमक बेचनेवाला । नमकका पात्र । त्रि० लवण सम्बन्धी ।
लावण्य—पु० लुनाई, सुन्दरता ।
लावदार—पु० तोप छोड़नेवाला । वि० चलायी जानेको प्रस्तुत ( तोप ) ।
लावनता—स्त्री० लावण्य, सुन्दरता ।
लावना—सक्रि० लगाना, जलाना, लाना ।
लावनि—स्त्री० लुनाई, सुन्दरता, नमक । 'लावनिनिधि गुननिधि सोभानिधि निरखि निरखि जीवत सब गाउँ ।' सूबे० १०२
लावनी—स्त्री० एक तरहका गाना ।
लावबाली—पु० आवारा या बेफिक्र आदमी । वि० बेख़ौफ़, बेफिक्र, निर्लज्ज स्त्री० बेपरवाही, शोख़ी ।
लावलश्कर—पु० साथके बहुतसे नौकर इ०, किसीके साथकी भीड़, हमराहियोंकी बड़ी संख्या ।
लावल्द—वि० जिसे कोई सन्तान न हो ।
लावल्दी—स्त्री० निःसन्तान होनेकी अवस्था ।
लावा—पु० भूना हुआ धान,ज्वार, आदि (उदे०'कया'), लवा पक्षी ।—मेलदेना = मन्त्रद्वारा उच्चाटन करना ( उदे० 'आखा' ) ।
लावापरछन—पु० विवाहके समयकी एक रस्म ।
लावारिस—वि० जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो । जिसका कोई दावेदार न हो ।
लाश—स्त्री० शव, मृत देह ।
लाष—स्त्री० लाख, लाह ।
लास—पु० रास, नृत्यविशेष, विलास, मटक । रसा ।
लासक—पु० नर्तक । मयूर । घड़ा ।
लासा—पु० लुआब, चेप । गोंद ।
लासानी—वि० जो अपना सानी न रखता हो, बेजोड़, [ अद्वितीय ।
लासि,लास्य—पु० नृत्यविशेष ।
लाह—पु० लाभ 'जीवन जनम लाहु किन लेहू ।' रामा० २०० ( प० १५४, भ्र० ५०, दास १२३ ) । स्त्री० लाख । कान्ति ।
लाही—वि० लाखके रङ्गका स्त्री० लाख बनानेवाला कीड़ा । सरसों ।
लिंग—पु० शिवमूर्त्ति, चिह्न, लक्षण, पुरुषचिह्न ।
लिंगदेह—पु० सूक्ष्म शरीर ।

लिंगायत—पु० शैवोंका एक सम्प्रदाय।
लिंगी—पु० आडम्बर रचनेवाला। चिह्नवाला।
लिक्खाड़—पु० भारी लेखक ( व्यंगमें )।
लिक्षा—स्त्री० लीख, जूका अण्डा।
लिखत—स्त्री० लिखित पत्र। लिखित विषय।
लिखधार, लिखवार—पु० लेखक, मुहर्रिर 'साँचो सो लिखधार कहावै।' सू० ११
लिखन—स्त्री० होनी। लिखावट।
लिखना—सक्रि० लिपिबद्ध करना, अङ्कित करना।
लिखनी—स्त्री० लेखनी 'मसि नैना, लिखनी बरुनि, रोइ रोइ लिखा अकत्थ।' प० १०४
लिखाई—स्त्री० लिखावट, लिपि, लेखन-व्यय।
लिखाना—सक्रि० लिपिबद्ध कराना।
लिखापढ़ी—स्त्री० पत्रव्यवहार। लिखनेकी कारंवाई।
लिखावट—स्त्री० लिपि। लेख। लिखनेका ढंग।
लिखित—वि० लिखा हुआ पु० लिखा हुआ विषय।
लिखेरा—पु० लिखनेवाला।
लिच्छवि—पु० एक राजवंश जो कोशल, मगध आदिपर शासन करता था।
लिटाना—सक्रि० पौढ़ाना, सुलाना।
लिट्ट—पु० लिट्टी, बाटी।
लिठोर—पु० एक पकवान।
लिडार—वि० डरपोक। पु० गीदड़।
लिपटना—अक्रि० सट जाना, चिपकना, लग जाना।
लिपटाना—सक्रि० संलग्न करना, गले लगाना।
लिपड़ा—वि० चिपचिपा। पु० कपड़ा।
लिपड़ी—स्त्री० लेईकी तरह ढीला पदार्थ।
लिपना—अक्रि० गोबर आदिसे पुता जाना।
लिपवाना, लिपाना—सक्रि० लेप कराना, पुताना।
लिपाई—स्त्री० लीपनेकी क्रिया या उसकी मजदूरी।
लिपि, लिवि—स्त्री० लिखावट, लेख।
लिपिकर,-कार—पु० लेखक।
लिपिबद्ध—वि० जो लिखा हुआ हो।
लिप्त—वि० चर्चित, लीन।
लिप्सा—स्त्री० पानेकी इच्छा, लालच, चाल।
लिप्सु—वि० पानेको इच्छुक, लोभी।
लिफ़ाफ़ा—पु० पत्र भेजनेकी कागजकी खोली। दिखावटी पोशाक, झूठी तड़कभड़क।
लिबड़ी-बरताना—पु० बोरिया-बधना, माल ..
लिबास—पु० पोशाक, पहनावा।
लियाक़त—स्त्री० योग्यता, सामर्थ्य।
लिलाट, लिलार—पु० मस्तक, भाल 'अज्ञा भई राहु, धरती धरै लिलाट।' प० २२०। जो लिखा लिलार हमरे जाब जहँ पाउब तहीं। ५९, ( उदे० 'आड़', 'चौथ', सू० १५९ )।
लिलोही—वि० लोभी।
लिव—स्त्री० लौ, लगन 'दास कबीर कहै सम केवल राम रहहु लिव लाइ।' कबीर २८७, (२
लिवाना—सक्रि० ग्रहण करना। लानेका काम दू कराना। साथमें लाना।
लिवाल—पु० लेनेवाला, खरीदार ( औद्यो० ४४ )
लिवैया—पु० लानेवाला, लेनेवाला।
लिसोड़ा—पु० लसोढ़ा।
लिहाज़—पु० संकोच, मुरव्वत। किसी बातका ध्य. अदबका ख़याल,।
लिहाड़ा—वि० पतित, नीच, क्षुद्र।
लिहाड़ी—स्त्री० निन्दा, उपहास।
लिहाफ़—पु० रज़ाई।
लिहित—वि० चाटता हुआ।
लीक—स्त्री० लकीर, पहियेका निशान, थाप 'आपन करहिं सो लीका।' प० १८१, मर्यादा ( 'लोपना', 'अलीक' )। रीति, यश, गणना 'सु व अतुल जासु जग लीका।' रामा० ४७१
लीख—स्त्री० जूँका अण्डा ( उदे० 'कीचर' )। 'विश्वभर श्रीपति त्रिभुवनपति वेद-विदित यह लीख विन० २२४। पोस्तेके दानेके बराबर मान 'रहै लाख भये ते लीखा।' प० १२६
लीचड़, लीचर—वि० निकम्मा, चिपटनेवाला।
लीची—स्त्री० एक मीठा फल।
लीझी—स्त्री० सीठी, देहका मैल। वि० निःसार। ( गुलाब ११५ )।
लीद—स्त्री० घोड़े आदिकी विष्ठा ( कबीर ४८ )।
लीन—वि० डूबा हुआ, तन्मय।
लीपना—सक्रि० गोबर आदिकी तह चढ़ाना, पोतना।
लीवर—वि० जिसमें कीचड़ लगा हो, गन्दा 'अँखियाँ लीबर बसवै नासे।' ग्राम० भू० १८।

लीमू—पु० निबुआ ( पूर्ण १३९ )।
लीर—स्त्री० धज्जी, पतला किनारा 'बागाको दावन फट गयो और लीर झाड़ पैं रहि गई'—अष्ट० १२९
लील—वि० नीला। पु० नील।
लीलकंठ—पु० नीलकण्ठ।
लीलना—सक्रि० खा जाना, निगलना 'बूढ़ न समुझ, मगर नहिं लीला।' प० ७१
लीलया, लीलहिं—क्रिवि० खेलकी तरह, 'अनायास 'अति उतङ्ग तरु सैलगन लीलहिं केहिं उठाइ।' रामा० ४४९
लीला—स्त्री० खेल, चरित्र, रहस्यमय कार्य, रामादिके चरित्रका अभिनय। वि० नीला। पु० काला घोड़ा, नील चिह्न, गोदना 'ललित श्याम लीला ललन बढ़ी चिबुक छवि दून।' वि० ११३
लीलाकमल—पु० क्रीड़ाके लिए खिलौनेके रूपमें लिया गया कमल।
लुँगाड़ा—पु० लफङ्गा, आवारा।
लुंगी—स्त्री० छोटी धोती, कपड़ेका टुकड़ा।
लुंचन—पु० काटना, नोचना। दूर करना।
लुंचित—वि० उखाड़ा या नोचा हुआ। पु० एक तरहके साधु ( कबीर ३७२ )।
लुंज—वि० लूला, टूँठ ( उदे० 'कदन', भ्र० ३६ )।
लुंठन—पु० चोरी। लुढ़कन।
लुंठित—वि० लोटता हुआ, गिरा हुआ।
लुंड—पु० रुण्ड, कबन्ध। चोर।
लुंडमुंड—वि० हस्तपादहीन। पत्रहीन ( वृक्ष )।
लुंडा—पु०, लुंडी—स्त्री० लपेटे हुए सूत इ०की पिंडी।
लुंबिनी—स्त्री० वह वन जहाँ बुद्ध भगवान्‌का जन्म हुआ था।
लुआर—स्त्री० लू 'कैधौं यह ग्रीष्मकी भीषम लुआर है।' रत्ना० २६९
लुआठ, लुआठा—पु० जलती हुई लकड़ी, अधजली लकड़ी।
लुआठी—स्त्री० जलती हुई लकड़ी।
लुआब—पु० लासा, लसदार गूदा।
लुकंजन—पु० आँजनेवालेको छिपा देनेवाला अञ्जन।
लुक—पु० चमक लानेवाला लेप, वारनिश। लौ।
लुकना—अक्रि० छिपना।
लुक़मा—पु० कौर, ग्रास।
लुका छिपी—स्त्री० लुकने-छिपनेका एक खेल।
लुकाट—पु० एक तरहका पेड़ या उसका फल।
लुकाठ—पु० देखो 'लुआठ' ( उदे० कजरौटा' )।
लुकाना—अक्रि० छिपाना ( उदे० 'झपट', रामा० ४१९ )। सक्रि० छिपाना ( उदे० 'बतरस' )।
लुकार—स्त्री० अग्नि, दाहक शक्ति 'ल्यावते लुकार कहाँ ते काम जारनको।' रत्ना० ५४३
लुकेठा—पु० देखो 'लुआठ'।
लुकोना—सक्रि० छिपाना 'रजनी अँधेरी है न सूझति हथेरी रख, चोर करै फेरि लखि मुख ना लुकोवै तू।' दीन० १३८
लुकायित—वि० लुका हुआ, अदृश्य।
लुखिया—स्त्री० कुलटा स्त्री। चालबाज स्त्री।
लुगड़ा—पु० कपड़ा।
लुगदी—स्त्री० पीसी हुई गीली वस्तुका लौंदा।
लुगरा—पु०कपड़ा,ओढ़नी(रवि०२९)। वि०चुगलखोर
लुगरी—स्त्री० फटी धोती। चुगलखोरी, चुगली।
लुगाई—स्त्री० स्त्री ( उदे० 'अथाई' ), पत्नी।
लुगी—स्त्री० लुङ्गी, लहँगेका किनारा।
लुग्गा—पु० कपड़ा।
लुचकना—सक्रि० झटकेसे छीन लेना।
लुचरी, लुचुई—स्त्री० मैदेकी पतली पूरी 'लुचुई पो पोइ घिउ-मेई।' प० २७०, ( कबीर १३१ )।
लुचवाना—सक्रि० नोचवाना।
लुच्चा—वि० बदमाश, दुराचारी, पाजी।
लुटंत—स्त्री० लूट।
लुटकना—दे० 'लटकना'।
लुटना—अक्रि० लूटा जाना ( उदे० चौंटना' ), बरबाद होना। लोटना 'छाँडिकै रज लुटत रजमें, दीन शीस अङ्ग।' नागरी०। निछावर हो जाना 'क्यों न शबाब पर लुट लुट जाऊँ।' नीला० ३६
लुटरी—वि०सक्रि० घुँघराली 'लुटरी खुली अलक, रज धूसर बाहें आकर लिपट गई।' कामायिनी० १७१
लुटाना, लुटावना—सक्रि० लूटने देना, उड़ाना, फेंकना।
लुटिया—स्त्री० छोटा लोटा।
लुटेरा—पु० लूटनेवाला, डाकू।
लुठना—अक्रि० लोटना, लुढ़कना। 'लुठत सकल धौं चरन तर युग गुम गन समये।' सू० १०२

लुठाना—सक्रि० लोटाना, लुढ़काना ।
लुड़कना, लुढ़कना, लुढ़ना—अक्रि० जमीनपर चक्कर खाते हुए जाना, गिर पड़ना ।
लुढ़काना, लुढ़ाना—सक्रि० ढुलकाना 'बरजै न माखन खात कबहूँ दह्यो देत लुढ़ाइ ।' सूबे० ३२१, ( सूसु०
लुढ़ियाना—सक्रि० गोल तुरपना । [१०४,दास३६१) ।
लुतरा—वि० चुगलखोर । शरारती, बदमाश ।
लुत्थ—स्त्री० लोथ, लाश ।
लुत्फ़—पु० आनन्द, स्वाद, अनुग्रह ।
लुनना—सक्रि०फसल काटना, हटाना । 'बवा सो लुनिय लहिय जो दीन्हा ।' रामा० २०६
लुनाई—स्त्री० सुन्दरता ( उदे० 'कोमलाई' ) ।
लुनेरा—पु० नोनिया नामक जाति । फसल काटनेवाला ।
लुपना—अक्रि० लुकना, छिपना ।
लुप्त—वि० गुप्त, नष्ट ।
लुप्तोपमा—स्त्री० उपमालङ्कारका एक भेद ।
लुबधना—अक्रि० लुब्ध होना ( साखी १२२ ) ।
लुबरी—स्त्री० तरौंछ, गोंद । [ † व्याधा ।
लुबुध, लुब्ध—वि० लुभाया हुआ, मोहित । पु०प्रेमी,†
लुबुधना,लुब्धना—अक्रि० लुब्ध होना (सू० १३४), 'स्याम रूप रस बारिज लोचन तहाँ जाइ लुब्धेरे ।' सू० ( व्रज० १९ )
लुब्धक—पु० लुभानेवाला, व्याध । एक नक्षत्र ।
लुब्बलुबाव—पु० सारांश, सार ।
लुभाना—सक्रि० लुब्ध करना, रिझाना, बहकाना । अक्रि० मोहित होना 'मन मधुकर पद कमल लुभान्यो ।' सू० १३१
लुरकना—अक्रि० आगे पीछे हिलना, झूलना, लटकना ।
लुरकी—स्त्री० कानकी बाली ।
लुरना—अक्रि० लटकना ( उदे० 'थहरना' ), झुक पड़ना, 'बिसहर लुरे लेहिं अरघानी ।' प० ४४ । हिलना डुलना 'लुरहिं मुरहिं जनु मानहिं केली ।' प० २३३ । मुग्ध होना ।
लुरियाना—अक्रि० लुरना, सहसा आ जाना, प्रवृत्त होना ( रत्ना० २३१ ), प्रेमके साथ स्पर्श करना, लपटना झपटना 'बाघनके लेहवा लरत लुरियात हैं ।' रत्ना० ४७३
लुहारी—स्त्री० देखो 'लोहारी' । लोहारकी स्त्री ।
लुरी—स्त्री० हालकी ब्याई गाय ( दास ८० ) ।
लुलना—दे० 'लुरना' ।
लुलित—वि० झूलता हुआ ।
लुवार—स्त्री०लू 'जेठ जरै जग चलै लुवारा ।' प०
लुहना—अक्रि० लुभाना, मुग्ध होना ( भादि० ७
लुहार—पु० लोहेकी चीजें बनानेवाला ।
लूँबरी—स्त्री०लोमड़ी 'ससक लूँबरी आदि सुत बनराजैं ।' दीन० १०३
लू—स्त्री० गरम हवा ।
लूक—पु० टूटा हुआ तारा 'दिन ही लूक परन लागे ।' रामा० ४६७ । जलती हुइ लकड़ी लियो ठीक विचारि । एक लूक लीन्हों बारि ।' २४६ । स्त्री० लू, लपट ( पूर्ण १०३ ) ।
लूकट—पु० लुआठि 'जिहि मुखि पाँचो अमृत तिहि मुख देखत लूकट लाये ।' कबीर २९०
लूकना—अक्रि० लुकना 'लूकत न काहे कहूँ, अँधियारीमें ।' पूर्ण २६५ । सक्रि० आग लगा
लूका—पु०, लूकी—स्त्री० जलती हुई लकड़ी, 'हम घर जारा आपना लूका लीन्हा हाथ ।' १८ । ज्वाला, चिनगारी ( गुलाब २२१ ) ।
लूखा—वि० देखो 'रूखा' ।
लूगा—पु० कपड़ा ।
लूघर—पु० लुआठ जलती हुई लकड़ी ( बुन्देल० )
लूट,लूटि—स्त्री० लूटनेकी क्रिया, लूटी हुई वस्तुएँ
लूटक—पु० लुटेरा । शोभा छीन लेनेवाला ।
लूटखसोट—स्त्री० लूटमार, छीना झपटी, शोषण ।
लूटखूँद—स्त्री० लूटमार, लूटखसोट ।
लूटना—सक्रि० ज़बरन छीन लेना, ठगना ( 'भावन्ता' ), मुग्ध करना, नष्ट करना ।
लूटमार—स्त्री० डकैती और मारपीट, डाकेज़नी ।
लूत—स्त्री० मकड़ी ( मति० १८७ ) ।
लूता—स्त्री० देखो 'लूक' । मकड़ी ।
लूती—स्त्री० चिनगारी, लुआठी ।
लून—पु० लवण । वि० कटा हुआ ।
लूनना—सक्रि० ( फसल ) काटना ।
लूम—स्त्री० पूँछ ।
लूमड़ी—स्त्री० देखो 'लूमरी' ।

लूमना—अक्रि० झूलना, लटकना।
लूरना— देखो 'लुरना'।
लूला—वि० विना हाथका। असहाय, असमर्थ।
लूलू—वि० नासमझ।
लूह—स्त्री० लू, गरम हवा, ( गुलाब ३२१ )।
लूहर—स्त्री० लू। पु० देखो 'लूवर' ( के० ६३ )।
लेंड़ी—स्त्री० बकरी आदिकी विष्ठा। बँधा हुआ मल।
लेंहड़ा—पु० ( चौपायोंका ) समूह, झुण्ड, (साखी १२९)।
लेइ—अ० लेकर, तक।
लेई—स्त्री० लपसी, पका हुआ लसदार आटा।
लेख—पु० लिखित बात, लिखावट, लिपि, लेखा। वि० लेख्य, लिखने योग्य।
लेखक—पु० लिखनेवाला, मुहर्रिर, ग्रन्थकर्ता।
लेखन—पु० लिखनेका कार्य, चित्र बनाना। हिसाब करना। लिखनेकी कला।
लेखनहार—पु० लिखनेवाला, लेखक ( अख० ३४८ )।
लेखना—सक्रि० हिसाब लगाना, मानना, समझना, 'कनक बिंदु दुइ चारिक देखे। राखे सीस सीय सम लेखे।' रामा० २९४। लिखना 'चारुचरन नख लेखति धरनी।' रामा० २२६
लेखनी—स्त्री० क़लम।
लेखा—पु० हिसाब,गणना, अनुमान। स्त्री०रेखा। लिपि।
लेखिका—स्त्री० लेखादि लिखनेवाली, ग्रन्थरचयित्री।
लेज, लेजुर, लेजुरी—स्त्री० कुएँसे पानी निकालनेकी रस्सी ( प० १९१ )।
लेज़म, लेज़िम—स्त्री० एक जंजीरदार कमान जिससे कसरत करते हैं ( प० २४६ )।
लेट—स्त्री० गच।
लेटना—अक्रि० पड़ना, पौढ़ना, आराम करना।
लेटाना—सक्रि० लेटनेका काम कराना, सुलाना।
लेदी—स्त्री० एक चिड़िया ( प० २६९ )।
लेनदार—पु० जिसे किसीसे कुछ पाना हो, महाजन।
लेनदेन—पु० व्यवहार, महाजनी, सरोकार।
लेनहार—पु० लेनेवाला, लहनेदार ( प० ५३ )।
लेना—सक्रि० ग्रहण करना, प्राप्त करना, जीतना, क्रय करना, पकड़ना, आगे बढ़कर मिलना, स्वागत करना। —एक न देना दो = कोई सरोकार नहीं। कानमें लेना = सुनना। लेनेके देने पड़ना = लाभके बजाय नुकसान उठाना।
लेप—पु० उबटन, मरहम, गाढ़ी गीली चीज़।
लेपन—पु० लेपनेकी क्रिया, लेप चढ़ाना।
लेपना—सक्रि० चुपड़ना पोतना।
लेरुआ, लेरुवा—पु० लढुआ, लड्डू। बछड़ा 'कजल छोने लेरुआ, बलि मैया।' गीता० २८३
लेव—पु० लेप। दीवारपर छोपनेका गिलावा।
लेवा—पु० लेप, गिलावा, गीली मिट्टी। वि० लेनेवाला।
लेवादेई—स्त्री० लेनदेन।
लेवार—पु० लेव। कहगिल।
लेवाल—पु० लेनेवाला, खरीदार।
लेस—पु० अल्पता, कण, अणु, चिह्न, सूक्ष्मांश,सम्बन्ध। एक काव्यालंकार 'जहाँ दोप कहँ गुन कहत, गुन कहँ दोष समान।' वि० थोड़ा।
लेष—दे० लेख' तथा 'लेश'।
लेषना, लेषनी—दे० 'लेखना' 'लेखनी'।
लेस—पु० देखो 'लेश' ( उदे० 'टकटोना' ) लघु, गाढ़ी सनी हुई मिट्टी।
लेसना—सक्रि० जलाना, प्रज्वलित करना 'लेसा हिये प्रेमकर दीया।' प० ८। चिपकाना, पोतना।
लेह—पु० अवलेह।
लेहन—पु० चाटना।
लेहना—पु० फसलका वह भाग जो मजूरों या नाई को मिलता है। पावना।
लेहसुर—पु० मिट्टी ठीक करनेका, कुम्हारोंका औज़ार।
लेहाज़ा—क्रिवि० इस कारण; इसलिए।
लेहाड़ा—देखो 'लिहाड़ा'।
लेहाफ़—पु० लिहाफ। रजाई।
लेह्य—पु० चाटने योग्य वस्तु,चटनी। वि०चाटने योग्य
लै—अ० तक।
लैटिन—स्त्री० रोम देशकी भाषा।
लैन—स्त्री० लकीर, पंक्ति। सिपाहियोंके रहनेकी जगह
लैया—स्त्री० गुड़ या चीनीमें पागकर बनायी हुई फल आदिकी रोटीके आकारकी कतरी। चुगली।—लगाना चुगली खाना ( ग्राम० ३४८ )।
लैरु—पु० बछड़ा, छोटा बच्चा।
लैस—पु०एक तरहका बाण। कपड़ेपर चढ़ानेकी किनारी वि० कटिबद्ध, तैयार, सुसज्जित। निमग्न ( उदे० 'ऐस' )
लौं—अ० समान। तक।

लोंड़ी—स्त्री० कानका नीचेका भाग ।
लोंदा—पु० गीली वस्तुका गोला, पिण्डा ( साखी २४) ।
लो—अ० आश्चर्य-बोधक एक शब्द । देखो 'डगमगा, अचानक, लो, भूधर फड़का अपार पारदकेपर पल्लव९।
लोइ—पु० लोग 'माया मोह धन जोबना, इनि बंधे सब लोइ ।' कबीर २२९, ( भावि० १८ ) स्त्री० लव, ज्वाला, दीप्ति 'इनमें होइ दरसात है हर मूरतकी लोइ ।' रतन० ३४ [ ( उदे० 'लग' ) ।
लोइन—पु० लोचन, नेत्र । सुन्दरता, लावण्य, नमक
लोई—स्त्री० एक तरहकी ऊनी चद्दर । साने हुए आटेकी गोली । पु० लोग 'सो कछु बिचारहु पंडित लोई ।' कबीर ९७, (१०० भी, छम० १८), 'माया मोह बँधे सभ लोई ।' बीजक १०४, (४१ भी) ।
लोकंजन—पु० देखो 'लुकंजन' ।
लोकंदा—पु० पहिली बिदाईपर लड़कीके साथ दासीका जाना ( बीजक २०० ) ।
लोकंदी—स्त्री० प्रथम बार ससुराल जाते समय लड़कीके साथ भेजी जानेवाली नौकरानी ।
लोक—पु० विश्व विभाग, संसार, समाज, लोग, कीर्त्ति समूह 'पल्लवित तरुण लावण्य-लोक' युगान्त ९ ।
लोककंटक—पु० समाजको क्षति पहुँचानेवाला ।
लोकचार, लोकाचार—पु० लोकका व्यवहार ।
लोकटी—स्त्री० लोमड़ी 'सिंहो, कहा लोकटीको डर'
लोकधुनि—स्त्री० किंवदन्ती, जनश्रुति । [ अष्ट० ७३
लोकना—सक्रि० झेलना, बीचमें ही पकड़ लेना ।
लोकनाथ, लोकप,-पाल—पु० ब्रह्मा, राजा, दिग्पाल ।
लोकयात्रा—स्त्री० लोक-व्यवहार ।
लोकरव—पु० अफ़वाह ।
लोकलीक—स्त्री० लोकमर्यादा ।
लोकलोचन—पु० सूर्य ।
लोकश्रुति—स्त्री० अफवाह ।
लोकसंग्रह—पु० सबका कल्याण चाहना,समाज धारण ।
लोकसत्तात्मक—वि० जिसमें शासन-शक्ति जनताके हाथमें हो ।
लोकसिद्ध—वि० लोक या समाजमें मान्य ।
लोकहार—वि० लोक-संहारक 'वियोग सीयको न, काल लोकहार जानिये ।' राम० २७६
लोकांतर—पु० परलोक ।
लोकांतरित—वि० मरा हुआ ।
लोकाचार—पु० लोक-व्यवहार ।
लोकाट—पु० एक पेड़ या उसका फल ।
लोकाना—सक्रि० आकाशमें फेंकना, ऊपर छ
लोकायत—पु० परलोक न माननेवाला व्यक्ति ।
लोकेश—पु० लोकका स्वामी, ईश्वर । [
लोकैषणा—स्त्री० यश इ० की चाह ।
लोकोक्ति—स्त्री० कहावत । एक काव्यालंकार ।
लोकोत्तर—वि० असाधारण, अलौकिक ।
लोखड़ी—स्त्री० लोमड़ी ।
लोखर—पु० हज्जामके या लोहार इ०के औजार ।
लोग—पु० मनुष्य ( बहु व० ) ।
लोगबाग—पु० प्रजा, सामान्यजनता, लोग ।
लोगाई—स्त्री० औरत ( उदे० 'घरहाई', रामा० २५
लोच—स्त्री० कोमलता, लचक ( वि० २२१ ) । रुचि, इच्छा ।
लोचन—पु० नेत्र ( उदे० 'प्रेषना' ) ।
लोचना—सक्रि० प्रकाशित करना, चाहना 'जा ब्रह्मादिक लोचैं सो माँगत ललचाय ।' सूबे० ५ अक्रि० इच्छा करना, ललचाना, बिलोचन लोचत लखि तोहि'—के० ३४६ । विराजना ।
लोचून—पु० लोहेका चूर्ण । [
लोट—स्त्री० लेटनेका भाव । त्रिवली (उदे० 'चौंटना')
लोटन—पु०एक कबूतर । एक तरहका हल । छोटे कक
लोटना—अक्रि० भूमि आदिपर लेट कर फिरना, र बदलना, लेटना, लुढ़कना, छटपटाना ।
लोटपटा—पु० विवाहमें वर वधूका पटा ( पीढ़ा बदलना । उलट-फेर ।
लोटपोट—स्त्री० लेटना । आराम करना ।—होना खुशीसे नाच उठना, हँसी इ० की अधिकतासे गिर पड़ना ।
लोटा—पु० धातुका बना एक तरहका छोटा जलपात्र
लोटिया—स्त्री० छोटा लोटा ।
लोटी—स्त्री० छोटा लोटा ।
लोढ़ना—सक्रि० जरूरत पड़ना । चाहना 'नैन बावरे छिन छिन लोढ़ैं तुझ ।' साखी ४१
लोड़ित—वि० मथित, हिलते हुए ।
लोढ़ना—सक्रि० ( फूल ) तोड़ना, ( विद्या० ३०४ )

'वह माली यह फूल किते दिन लोढ़त आयो ।' दीन० ९४ । साफ करना, ओटना । चाहना ( सुन्द० २० )। अक्रि० लोटना, जमीनपर घसीटना ( खुटिला लहँगवा भुइँआँ लोढैरे जी' ग्राम० ३४३

लोढ़ा—पु० वह पत्थर जिससे कोई चीज़ कुचलते या पीसते हैं। लोढ़ा डालना = सम करना ।

लोढ़िया—स्त्री० छोटा लोढ़ा ।

लोण—पु० नमक । [ भू० २९ ) ।

लोथ, लोथि—स्त्री० लाश, मृतदेह ( उदे० 'अरकना',

लोथड़ा, लोथरा—पु० मांसका बड़ा टुकड़ा ।

लोध, लोध्र—पु० एक पेड़ ।

लोन—पु० नमक, लुनाई, सुन्दरता ।

लोन हरामा—वि० कृतघ्न ( मति० १७५ ) ।

लोना—वि० खारा, सलोना, सुन्दर ( उदे० 'नमक' ), 'दहु हौं लोनि कि वै पदमिनी ।' प० ३७ । पु०क्षार, एक कीड़ा, एक घास, दीवारका रोग, एक जादूगरनी ( प० १७८ ) । सक्रि० लुनना 'बीज बोइये जोइ अन्त लोनिये सो हैं ।' सूबे० ४२२

लोनाई—स्त्री० सुन्दरता ।

लोनिका—स्त्री० लोनी या नोनिया साग ।

लोनिया—पु० नमक बनानेवाली एक जाति, नोनिया ।

लोनी—स्त्री० नोनिया साग, एक तरहकी मिट्टी । पु० नवनीत 'ले आई वृषभानु सुता हँसि सद लोनी है मेरो ।' सूबे० १६२ । स्त्री० ( सुन्दर ) नायिका

लोप—पु० अदर्शन, नाश । [ ( मति० १७६ ) ।

लोपना—सक्रि० छिपाना ( प० ३१७ ), लुप्त करना, तोड़ना, नष्ट करना 'जुरि न मुरे सग्राम लोककी लीक न लोपी । राम० ११ । अक्रि० लुप्त होना ।

लोपांजन—पु० वह अन्जन जिसका लगानेवाला अदृश्य

लोपामुद्रा—स्त्री० अगस्त्य मुनिकी स्त्री । [हो जाता है ।

लोबान—पु० एक सुगन्धित गोंद ।

लोबिया—पु० बोड़ेका एक भेद ।

लोभ—पु० तृष्णा, लालच ।

लोभन—वि० लुभानेवाला । [ ( सू० ४७ ) ।

लोभना—सक्रि० लुभाना । अक्रि० लुब्ध होना ।

लोभाना—सक्रि० मुग्ध करना । अक्रि० मुग्ध होना

लोभार—वि० मुग्ध करनेवाला । [ ( प० २१० )।

लोभित—वि० मुग्ध ।

लोभी—वि० लालची, कृपण, मुग्ध ।

लोम—पु० बाल, रोवाँ । लोमड़ी ( भू० १४२ ) ।

लोमकर्ण—पु० खरगोश ।

लोमकूप—पु० रोएँका छिद्र ।

लोमड़ी, लोमरी—स्त्री० गीदड़की तरहका एक जन्तु ।

लोमपाद—पु० एक राजा जो दशरथजीके मित्र थे ।

लोमश—पु० भेड़ । एक ऋषि । वि० अधिक रोएँवाला ।

लोमहर्षण—वि० भयङ्कर । पु० रोमाञ्च ।

लोय—पु० लोग 'भूपन पूरब रूप सो कहत सयाने लोय ।' भू० ११४ । नेत्र । स्त्री० लपट 'कथनी मीठी खाँडसी करनी विषकी लोय ।' साखी ८५

लोयन—पु० नेत्र ( उदे० 'लगालगी' ) । दे० 'लोइन' ।

लोर—पु० लोलक, कानकी लौ 'सुठि लवलि पल्लव लेतु जो तुव ललित कानन लोर सों ।' सत्य०, झुमका । आँसू 'चारु आनन लोरधारा बरनि कापै जाइ ।' सू० १५१ । वि० लोल, उत्कण्ठापूर्ण ।

लोरना—अक्रि० तैरना । लपकना, चञ्चल होना 'देखो री मल्ल इनहिं मारनको लोरैं ।' सूबे० २८९ । झुकना, ( गुलाब २०२ ), लोटना ।

लोरवा—पु० आँसू (ग्राम० ३३१ ) ।

लोरी—स्त्री० बच्चेको सुलानेका गीत ।

लोल—वि० चंचल, उत्सुक, क्षणस्थायी ।

लोलक—पु० झुमका, लटकन । लोलकी ।

लोलकी—स्त्री० कानकी लव, कानके नीचेका भाग ।

लोलना—अक्रि० चंचल होना, डोलना ( सू० ९६ ), 'गूढ़ जानु आजानु बाहु मद गज गति लोलैं ।' नन्द०। सक्रि० हिलाना 'दौवा तमकि तेग कर लोली ।' छत्र० १४४

लोला—स्त्री० जीभ । पु० बच्चोंका एक खिलौना ।

लोलुप—वि० लालची, अत्यन्त उत्सुक ।

लोवा—स्त्री० लोमड़ी ( उदे० 'अकासी', 'इँदुर' ), लवा

लोष्ट—पु० ढेला । पत्थर । [ पक्षी ।

लोहँड़ा—पु० लौहपात्र, तसला ( प० २७४ ) ।

लोह—पु० लोहा । रक्त ।

लोहाकार—पु० लोहार ।

लोहकिट्ट—पु० जलानेसे निकला हुआ लोहेका मैल ।

लोहवान—दे० लोबान ।

लोहसार—पु० फ़ौलाद ( प० २४५ ) ।

लोहा—पु० एक धातु। हथियार ( प० २५१ )। धाक। युद्ध 'दुवौ अनी सनमुख भई, लोहा भयेउ असूझ।' प० ३२८। लाल बैल। वि० लाल। दृढ़, सख्त। किसीका—मानना = प्रभाव स्वीकार करना।—लेना = लड़ाई ठानना, युद्धमें मुकाबला करना। लोहेके चने = दुष्कर कार्य।

लोहाना—अक्रि० सम्पर्कके कारण किसी चीज़में लोहेका स्वाद या रङ्ग आ जाना।

लोहार—पु० एक जाति।

लोहारी—स्त्री० लोहारका काम।

लोहित—वि० लाल। पु० रक्त, मङ्गल ग्रह। लाल रङ्ग।

लोहिया—पु० लोहा बेचनेवाला। लाल बैल।

लोही—स्त्री० उषःकालकी लालिमा 'होत भोर लोही लागत कुसके जनम भये।' ग्राम० ४६।—फटना = पौ फटना ( ग्राम० १८ )। चुगली 'वहिन लोहि लाइन।' ग्राम० ८४

लोहू—पु० रुधिर।

लौं—अ० समान ( उदे० 'मुँहजोर' ), 'नहिं हरि लौं हियरा धरौं नहिं हरलौं अरधंग।' बि० २०४। तक।

लौंकना—अक्रि० चमकना, दूरसे दिखाई पड़ना, सूझना।

लौंग—स्त्री० एक वृक्षकी कली। नाक या कानकी कील ( उदे० 'आँक' )।

लौंडा—पु० लड़का। वि० अबोध।

लौंड़ी—स्त्री० दासी ( उदे० 'कनौड़ा' )।

लौंद—पु० मलमास।

लौंदा—पु० देखो 'लोंदा'।

लौ—स्त्री० ज्वाला, दीपशिखा ( साखी १८ ), आशा। लगन ''प्रेमजु कोऊ वस्तु रूप देखत लौ लगै''। [नंद०।

लौआ, लौका—पु० लौकी, कद्दू।

लौकना—दे० 'लौंकना' ( उदे० 'कौंधा' )।

लौकिक—वि० लोक-सम्बन्धी, व्यवहारी।

लौकी—स्त्री० एक लम्बा फल जिसकी तरकारी बनती है।

लौजोरा—पु० पीतल आदि गलानेवाला।

लौट—स्त्री० लौटनेकी क्रिया।

लौटना—अक्रि० पलटना, वापस आना, फिरना। [७०

लौट पौट—स्त्री० उलटना पलटना। दोरुखी ७।

लौटफेर—पु० हेरफेर। [लोट

लौटाना—सक्रि० वापस करना, फेरना, उलट देना

लौटानी—क्रिवि० लौटती बार।

लौन—पु० नोन, नमक।

लौना—पु० कटाई। अगले पिछले पैरमें बँधी [छान'। वि०

लौनी—स्त्री० कटाई। नवनीत। [ 'छान'। वि०

लौरी—स्त्री० बछिया 'सो सुनि राधिका काँपि गई दौरिके लोरिहिसी लपटानी।' सुधानिधि २१

लौह—पु० लोहा। हथियार।

लौहकार—पु० लोहार।

लौहसार—पु० एक लवण।

लौहित्य—पु० लाल समुद्र। 'ब्रह्मपुत्र' नामक नदी।

ल्याना, ल्यावना—सक्रि० लाना।

ल्यौ—स्त्री० लौ '···तूँ ताहीं सों ल्यौ लाइ।' कबीर

ल्वारि—स्त्री० लू।

---

# व

वंक—वि० टेढ़ा।

वंकट—वि० विकट, टेढ़ा।

वंकनाली—स्त्री० सुषुम्ना नाड़ी।

वंकिम—वि० कुछ टेढ़ा।

वंग—पु० भंटा। कपास। रांगा। वंगदेश = आधुनिक बङ्गाल।

वंगज—पु० पीतल। सिन्दूर।

वंचक—वि० पाखण्डी, धूर्त। पु० ठग। गीदड़।

वंचकता—स्त्री० ठगी।

वंचन—पु० ठगना।

वंचना—सक्रि० छलना, ठगना। बाँचना, पढ़ना। स्त्री० छल।

वंचित—वि० रहित। छला गया।

वंजुल—पु० अशोक वृक्ष, बेंत।

वंट—पु० हिस्सा। बेंट।

वंटक—पु० हिस्सा करनेवाला। बाँटनेवाला।

वंठ—पु० भाला। बौना। विवाहित पुरुष। वि० विकलांग

वंडर—पु० खोजा। कंजूस।

वंडा—स्त्री॰ कुलटा स्त्री।
वंदन—पु॰ प्रणाम, स्तुति।
वंदनमाल,-वार—स्त्री॰ उत्सवके समय लटकायी जानेवाली पत्तों और फूलोंकी माला।
वंदना,वंदनी—स्त्री॰ स्तुति।
वंदनीय—वि॰ वंदना करने योग्य।
वंदा—पु॰ एक पौधा जो वृक्षोंकी डालियोंमें लगकर उन्हींके रससे बढ़ता है।
वंदित—वि॰ पूज्य।
वंदी—पु॰ चारण। कैदी। स्त्री॰ दासी। एक गहना।
वंदीगृह—पु॰ कैदखाना।
वंदीजन—पु॰ चारण, भाट।
वंद्य—वि॰ वंदन करने योग्य, पूज्य।
वंश—पु॰ कुल, जाति, बाँस, बाँसुरी।
वंशकपूर,-लोचन—पु॰ वह उजला सार अंश जो बाँसके जलनेपर शेष रह जाता है।
वंशज—पु॰ सन्तति, पुत्र। बाँसका चावल।
वंशधर—पु॰ कुलकी प्रतिष्ठा रखनेवाला। सन्तान।
वंशरोचना,-लोचना,-शर्करा—स्त्री॰ देखो 'वंशकपूर'।
वंशस्थ—पु॰ एक वर्णवृत्त।
वंशावली—स्त्री॰ कुर्सीनामा, किसी खानदानके लोगोंकी क्रमागत सूची।
वंशी—स्त्री॰ मुरली।
वंशीधर—पु॰ श्रीकृष्ण, मुरलीधर।
वंशीय—वि॰ वंश सम्बन्धी, वंशमें उत्पन्न।
वंशीवट—पु॰ वह वटवृक्ष जिसके नीचे खड़े होकर श्रीकृष्ण वंशी बजाया करते थे।
वंश्य—वि॰ कुलीन। पु॰ रीढ़। छाजनके बीचकी लकड़ी।
वक—पु॰ बगला।
वक़अत—स्त्री॰ सख्ती, शक्ति, इज़्ज़त, साख।
वकयंत्र—पु॰ अर्क उतारनेका यंत्र।
वकवृत्ति—स्त्री॰ घातमें रहकर धोखेसे काम निकालनेकी वृत्ति।
वक़ार—पु॰ रोब, दबदबा गौरव (सेवा॰ १८९)।
वकालत—स्त्री॰ वकीलका पेशा। दौत्य। पक्षसमर्थन।
वकील—पु॰ प्रतिनिधि, राजदूत,पक्षसमर्थन करनेवाला।
वकुल—पु॰ एक फूलवाला वृक्ष।
वकूअ—पु॰ घटित होना।
वकूफ़—पु॰ समझ, ज्ञान।
वक्त—पु॰ समय, अवकाश। नियत काल। मौका।
वक्तव्य—पु॰ कथन। वि॰ कहने योग्य।
वक्ता—पु॰ भाषण करनेवाला या कथा कहनेवाला व्यक्ति।
वक्तृता—स्त्री॰,वक्तृत्व—पु॰ व्याख्यान, कथन।
वक्त्र—पु॰ मुख।
वक़्फ़—पु॰ धर्मकार्यके लिए दान करना। धर्मार्थ दान की हुई सम्पत्ति।
वक्र—वि॰ कुटिल, टेढ़ा।
वक्रगामी—वि॰ कुटिल गतिवाला, दुष्ट, कुटिल।
वक्रतुंड—पु॰ गणेशजी।
वक्रदृष्टि—स्त्री॰ टेढ़ी नज़र। क्रोधकी दृष्टि।
वक्रधर—पु॰ शिव।
वक्री—वि॰ अपने मार्गसे पीछे लौटनेवाला। पु॰वक्राङ्ग मनुष्य। वक्रग्रह।
वक्रोक्ति—स्त्री॰ एक काव्यालङ्कार।
वक्ष,वक्षःस्थल—पु॰ छाती।
वक्षोज, वक्षोरुह—पु॰ स्तन।
वक्ष्यमाण—वि॰ वक्तव्य। जो कहा जा रहा हो।
वगलामुखी—स्त्री॰ एक महाविद्या।
वग़ैरह—अ॰ इत्यादि।
वचन—पु॰ बात। कथन।
वचनकारी—वि॰ आज्ञानुवर्ती। फरमाबरदार।
वचनविदग्धा—स्त्री॰ वचनचातुर्यसे नायकका प्रेम सम्पादन करनेवाली नायिका।
वचनीय—वि॰ कथनीय।
वचसा—क्रिवि॰ वाणीद्वारा, वचनसे।
वच्छ—पु॰ वक्ष, छाती।
वज़न—पु॰ तौल, भार। महत्त्व, गौरव।
वज़नी—वि॰ भारी। प्रभावोत्पादक।
वजह—स्त्री॰ कारण।
वज़ा—स्त्री॰ बनावट। आकृति। हालत। तौर-तरीका सूरत, रंगढंग, दस्तूर, रीति (कर्म॰ ४१४)।
वज़ादार—स्त्री॰ सुडौल। सुन्दर।
वज़ारत—स्त्री॰ मन्त्रीका पद या कार्य।
वज़ीफ़ा—पु॰ छात्रों इ॰ को दी गयी नियत आर्थिक सहायतावृत्ति
वज़ीर—पु॰मंत्री,शतरंजकी एक गोटी।
वज़ू—पु॰ नमाज़ पढ़नेके पहले हाथ मुँह धोना।
वजूद—पु॰ अस्तित्व। शरीर।
वज्र—पु॰ इन्द्रका आयुध, भाला, बिजली, हीरा। वि॰ दृढ़, कठिन, दारुण 'लङ्क गढ़ माँहि वज्र लागे किंवारा। सूरा॰ ३१। तीव्र 'फिर झंझा हो वज्र प्रगतिसे भीतर बाहर' कामायिनी १९५।

वज्रतुंड—पु० मच्छड़। गरुड़। गणेश। थूहर।
वज्रदंत—पु० चूहा। शूकर।
वज्रधर,-पाणि,-हस्त—पु० इन्द्र।
वज्रायुध—पु० इन्द्रका हथियार।
वज्रसार—पु० हीरा।
वट—पु० एक वृक्ष, बरगद।
वटिका, वटी—स्त्री० गोली।
वटु, वटुक—पु० ब्रह्मचारी। बालक।
वणिक्—पु० व्यापारी, बनिया।
वतन—पु० वासस्थान। स्वदेश।
वतीरा—पु० सिद्धान्त ( सेवा० ३५० )।
वत्स—वि० बच्चा, बछड़ा। छाती। वत्सर।
वत्सर—पु० साल, वर्ष।
वत्सल—वि० पुत्र-प्रेम-युक्त, छोटोंके प्रति कृपालु।
वदंती—स्त्री० कथा।
वदन—पु० मुख।
वदान्य—वि० उदार। मीठे वचन बोलनेवाला।
वदान्यता—स्त्री० उदारता।
वदि, वदी—स्त्री० असित पक्ष, अँधेरा पाख।
वदुसाना—सक्रि० दोष देना।
वध—पु० घात।
वधक—पु० वध करनेवाला, जल्लाद। व्याधा। मौत।
वधजीवी—पु० व्याधा। कसाई।
वधत्र—पु० हथियार।
वधभूमि—स्त्री० फाँसीघर, मकतल। कसाईखाना।
वधू—स्त्री० पतोहू। पत्नी। दुलहिन।
वधूटी—स्त्री० वधू, बहू।
वध्य—वि० मार डालने योग्य।
वन—पु० अरण्य, जल, स्थान, घर।
वनचर, वनेचर—पु० जङ्गलमें फिरने या रहनेवाला।
वनज—पु० कमल।
वनदेवी—स्त्री० वनकी अधिष्ठात्री देवी।
वनप्रिय—पु० कोयल। एक हिरन।
वनमाला—स्त्री० वनके फूलोंकी माला। दे०'बनमाला'।
वनमाली—पु० श्रीकृष्ण।
वनराज—पु० सिंह। वरुण ( सूसु० १८४ )।
वनराजि—स्त्री० वन या वृक्षोंका समूह।
वनरुह—पु० कमल।

वनवासी—पु० डोमकौआ। वि० वनमें र
वनस्थली—स्त्री० अरण्य-भूमि।
वनस्पति—स्त्री० पेड़-पौधा।
वनहास—पु० काँस।
वनिता—स्त्री० स्त्री। प्रिय पत्नी।
वनी—स्त्री० छोटा वन।
वनोत्सर्ग—पु० सर्वसाधारणके लिए कूप,
वन्य—वि० जङ्गली। पु० शङ्ख। [
वन्या—स्त्री० बाढ़।
वन्हिकी—स्त्री० अग्निसे निर्मित, 'अग्नि रूप'।
वपन—पु० बीज बोना। बाल बनवाना।
वपु—पु० देह ( उदे० 'प्रतिपारना' )।
वपुमान—वि० साकार, शरीरयुक्त, देहधारी।
वफ़ा—स्त्री० बातका निर्वाह, सुशीलता। खैर०
वफ़ात—स्त्री० मौत। मरण।
वफादार—वि० सच्चा, ईमानदारीसे काम
वबाल—पु० आफत, कठिनाई, उपद्रव। बोझ।
वमन—सक्रि० कै, उलटी।
वमना—सक्रि० कै करना ( उदे० 'ठनमनना' )।
वमि—स्त्री० कैकी बीमारी।
वमित—वि० वमन किया हुआ।
वयःक्रम—पु० अवस्था। उम्र।
वयःसन्धि—स्त्री० बाल्यकाल और यौवन कालके
वय—पु०, स्त्री० उम्र। अवस्था। [की।
वयन—पु० बुनना।
वयस—स्त्री० उम्र, अवस्था।
वयसिका—स्त्री० उम्रवाली।
वयस्क—वि० उम्रवाला, सयाना।
वयस्य—पु० समान वयवाला व्यक्ति, मित्र।
वयार—स्त्री० वायु।
वयोवृद्ध—वि० जो उम्रमें बूढ़ा हो।
वरंच—अ० बल्कि, किन्तु।
वर—पु० पति। देवता इ० से माँगा हुआ मनोरथ फल। वि० उत्तम।
वरक—पु० पन्ना, पत्रा। सोने इ० का पतला पत्तर।
वरजिश—स्त्री० कसरत।
वरटा—स्त्री० हंसिनी। भिड़।
वरण—पु० चुनना, वर-रूपमें स्वीकार करना, पूजा। रंग

'अति श्यामवरण, इक्रम, मन्दचरण, इठलाती, आती ग्राम युवति।' ग्राम्या० १७
वरणीय—वि० सुनने योग्य, ग्रहण करने योग्य।
वरद—वि० वर देनेवाला।
वरदात्री—वि० स्त्री० वर देनेवाली।
वरदान—पु० वर देना। जो वरस्वरूप दिया गया हो।
वरदी—स्त्री० किसी खास महकमेके कर्मचारियोंके लिए निश्चित पहनावा।
वरना—अ० अन्यथा, नहीं तो। पु०ऊँट। देखो 'वरना'।
वरन्—अ० बल्कि।
वरयात्रा—स्त्री० बारात। कन्याके घर बारातका जाना।
वररुचि—पु० विक्रमादित्यकी सभाका एक पण्डित।
वराक— देखो 'बराक'।
वराट, वराटक—पु० कौड़ी, कमलगट्टेका बीज, डोरी।
वराटिका—स्त्री० कौड़ी। तुच्छ वस्तु।
वरानना—स्त्री० सुन्दर मुखवाली स्त्री, सुन्दरी।
वरासत—स्त्री० बपौती, मीरास।
वरासन—पु० श्रेष्ठ आसन। द्वाररक्षक। खोजा। जपा।
वराह—पु० सुअर, विष्णु।
वराहमिहिर—पु० ज्योतिषके एक प्रमुख आचार्य।
वरिष्ठ—वि० श्रेष्ठ।
वरुण—पु० जलदेवता, जल, सूर्य।
वरुणात्मजा—स्त्री० शराब।
वरुणालय—पु० समुद्र।
वरूथ—पु० कवच। फौज। ढाल।
वरूथिनी—स्त्री० फौज।
वरेण्य—वि० पूज्य। मुख्य।
वर्ग—पु० श्रेणी, समूह। प्रकरण। जिसकी लम्बाई चौड़ाई सम हो, चौखूटा।
वर्गफल—पु० वह गुणनफल जो किसी अङ्कको उसीसे गुणा करनेसे प्राप्त हो।
वर्गलाना—सक्रि० बहकाना। किसी कार्यके लिए उभा-[ड़ना।
वर्चस्वी—वि० तेजस्वी।
वर्जन—पु० निषेध, मनाही। त्याग। हिंसा।
वर्जना—सक्रि० रोकना, मना करना, त्यागना।
वर्जित—वि० निषिद्ध, त्यक्त।
वर्ज्य—वि० त्याज्य। निषिद्ध।
वर्ण—पु० रङ्ग। जाति। अक्षर, भेद, यश, सोना।
वर्णतूलिका,-तूली—स्त्री० क़लम, कूँची।
वर्णधातु—स्त्री० रङ्गके काममें आनेवाली धातु।
वर्णन—पु० बयान, कथन। प्रशंसा।
वर्णनीय—वि० वर्णन करने योग्य, जिसका वर्णन किया जाय। पु० देखो 'वर्ण्य'।
वर्णमाला—स्त्री० किसी भाषाके अक्षरोंकी क्रमबद्ध सूची।
वर्णविचार—पु० व्याकरणका वह अंश जिसमें वर्णोंकी उत्पत्ति आदिका वर्णन हो।
वर्णवृत्त, वर्णिकवृत्त—पु० छन्दका एक भेद जिसके चरणोंमें वर्णोंकी संख्या और लघु-गुरु-क्रम समान हो।
वर्णसंकर—पु० विभिन्न जातीय माता-पिताकी सन्तान, [दोगला।
वर्णित—वि० कहा हुआ।
वर्ण्य—वि० वर्णनके योग्य। पु० वर्णनीय विषय, उपमेय, प्रस्तुत। कुंकुम। वनतुलसी।
वर्तन—पु० व्यवहार, परिवर्तन, वृत्ति, पिसाई, पात्र।
वर्त्तनी—स्त्री० मार्ग। पीसनेकी क्रिया।
वर्त्तमान—वि० मौजूद, हालका, जो चल रहा हो।
वर्त्ति—स्त्री० बत्ती, उबटन। अंजन। गोली।
वर्त्तिका—स्त्री० बत्ती, सलाई, बटेर।
वर्त्ती—वि० रहने या बरतनेवाला। स्त्री० बत्ती।
वर्त्तुल—वि० गोलाकार। पु० मटर, गाजर। सुहागा।
वर्त्म—पु० मार्ग, रास्ता, किनारा, पहियेकी लीक।
वर्द्धक—वि० बढ़ानेवाला, पूरा करनेवाला।
वर्द्धन—पु० बढ़ती।
वर्द्धमान—वि० बढ़ता हुआ, बढ़नेवाला।
वर्म—पु० कवच। आश्रयस्थान।
वर्महर—पु० कवच धारण करनेवाला।
वर्य्य—वि० श्रेष्ठ।
वर्वर—पु० नीच या असभ्य व्यक्ति। घुँघराले बाल।
वर्ष—पु० साल। वर्षा।
वर्षगाँठ—स्त्री०जन्मदिनके उपलक्ष्यमें होनेवाला उत्सव।
वर्षण - पु० बरसनेकी क्रिया, वर्षा, वृष्टि।
वर्षधर—पु० खोजा। बादल।
वर्षफल—पु० कुण्डलीके अनुसार वर्षभरका शुभाशुभ [फल
वर्षा—स्त्री० वृष्टि। चौमासा।
वर्षाभू—वि० वर्षाकालमें पैदा होनेवाला। पु० मेढक। इन्द्रवधूटी।
वर्ह—पु० मयूरपक्ष (ज्यो० १३) पत्र।
वर्ही—पु० मोर।

वलंब—पु० सहारा।
वलय—पु० घेरा, कड़ा, चूड़ी, कंकण।
वलयित—वि० घेरा हुआ, वेष्टित।
वलवला—पु० जोश, आवेश।
वलाक-पु०, वलाका—स्त्री० बगला।
वलाहक—पु० बादल। देखो 'बलाहक'।
वलि—स्त्री० लकीर, झुर्री। पंक्ति। राजकर। दे०'बलि'।
वलित—वि० घेरा हुआ, झुकाया हुआ, जिसमें झुर्रियाँ पड़ गयी हों। ढका हुआ, लगा हुआ, युक्त, सहित
वलिमुख—पु० बन्दर। [ ( कविप्रि० २७७ )।
वली—स्त्री० रेखा, झुर्री। पु० अभिभावक, मालिक।
वल्कल—पु० पेड़की छाल, बकला, छालका वस्त्र।
वल्द—पु० बेटा।
वल्दियत—स्त्री० पिताका नाम और पता।
वल्मीक,वल्मीकि—पु० बमीठा, बाँमी। वाल्मीकि मुनि।
वल्लकी—स्त्री० सलईका पेड़। वीणा।
वल्लभ—वि० प्रिय। पु० प्रिय व्यक्ति, स्वामी, मित्र।
वल्लभा—स्त्री० प्रियतमा, प्रिया, प्रिय पत्नी।
वल्लभी—स्त्री० देखो 'बलभी', 'बल्लभी'।
वल्लरी—स्त्री० लता, बेल, मञ्जरी।
वल्लाह—अ० सचमुच।
वल्लिका—स्त्री० लता, बेल।
वल्ली—स्त्री० बेल। लता।
वशंवद—वि० आज्ञानुवर्त्ती।
वश—पु० काबू, अधिकार, प्रभुत्व, इच्छा।
वशवर्ती—वि० वशमें रहनेवाला।
वशिष्ठ—पु० एक ऋषि जो रघुकुलके गुरु थे।
वशी—वि० वशीभूत। जो अपनेको वशमें रखे।
वशीकर, वशीकरण—पु० वश करनेकी रीति, वश करनेके लिए किया गया प्रयोग।
वशीभूत—वि० अधीन, आसक्त।
वश्य—वि० वशमें आनेवाला, अधीन।
वश्यता—स्त्री० अधीनता, परतन्त्रता।
वसंत—पु० छः ऋतुओंमेंसे एक। मौसिम बहार।
वसंततिलक-पु०,-तिलका—स्त्री० एक वर्ण-वृत्त।
वसंत दूत, व्रत—पु० कोयल।
वसंतपंचमी—स्त्री० माघ शुक्ल पंचमी।
वसंतसखा—पु० कामदेव।

वसंती—वि० हलके पीले रंगका पु० बसंती रंग। वासन्तीलता।
वसंतोत्सव—पु० वसन्त पञ्चमीके दूसरे दिन एक प्राचीन उत्सव। मदनोत्सव। होलिकोत्सव
वसअत—स्त्री० चौड़ाई, समाई, औकात, शक्ति।
वसति,-ती—स्त्री० वास, आबादी, घर। रात।
वसन—पु० कपड़ा, आवरण। रहनेकी क्रिया।
वसवास—पु० भुलावा। शङ्का। भ्रम।
वसवासी—वि० शङ्का करनेवाला। भुलावेमें डालने
वसह—पु० बैल ( दे० 'बसह' )।
वसा—स्त्री० चरबी।
वसीका—पु० धमार्थ दी गयी सम्पत्तिका
वसीयत—स्त्री० सम्पत्तिकी व्यवस्थाके सम्बन्धमें मरणासन्न व्यक्तिका लिखित आदेश।
वसीयतनामा—पु० मृत्युके पूर्व लिखा गया दा
वसीला—पु० जरिया, द्वार, सहायता, सिद्धिका ( कलस २९९ )। सम्बन्ध।
वसुंधरा—स्त्री० पृथिवी।
वसु—पु० धन, रत्न, किरण, पानी, अग्नि, रवि, अ
वसुदेव—पु० श्रीकृष्णके पिता। [ सं
वसुधा, वसुमती—स्त्री० पृथिवी।
वसुधाधर—पु० विष्णु। पर्वत।
वसूल—वि० प्राप्त।
वसूली—स्त्री० प्राप्ति। देन इ० चुकता करानेकी
वस्त—पु० बीच।
वस्ति—स्त्री० पिचकारी। मूत्राशय।
वस्तु—स्त्री० चीज़, पदार्थ, वृत्तान्त।
वस्तुजग—पु० दृश्यमान जगत्।
वस्तुतः—क्रिवि० दरअसल।
वस्तुवाद—पु० भूतवाद, भौतिक सिद्धान्त।
वस्फ—पु० सिफत, तारीफ़, प्रशंसा, खासियत।
वस्त्र—पु० कपड़ा।
वस्त्रभवन—पु० खीमा, रावटी।
वस्त्र—पु० वल्कल। वेतन। वस्तु। वस्त्र।
वस्ल—पु० संयोग, मिलन।
वह—सर्व० एक निश्चयवाचक सर्वनाम।
वहन—पु० ढोना, उठाकर या खींचकर ले जाना।
वहम—पु० झूठी शंका, भ्रम।

वहमी—वि० सन्देह-जनित। व्यर्थ ही संशयमें पड़ा [ रहनेवाला।
वहल—पु० नाव।
वहशत—स्त्री० असभ्यता, पशुता, मूर्खता। घबराहट। उदासी। भयानकपन, भय।
वहशी—वि० जङ्गली। असभ्य।
वहाँ—क्रिवि० उस जगह।
वहिः—अ० बाहर।
वहित्र-पु०, वहित्री—स्त्री० नाव।
वहिरंग—वि० बाहरका, अनावश्यक, ऊपरी। पु० बाहरी हिस्सा, शरीरका बाह्य भाग।
वहिर्गत—वि० बाहर गया हुआ, बाहरका।
वहिर्जगत—पु० दृश्यमान जगत् 'अन्तर जगका वहिर्जगमें होता जब परिवर्तन' युगवाणी ५२
वहिर्मुख—वि० विमुख, बाहरकी ओर जानेवाला।
वहिर्लापिका—स्त्री० एक प्रकारकी प्रहेलिका।
वहिष्करण वहिष्कार—पु० बाहर करना परित्याग।
वहीं—क्रिवि० वहाँ ही, उसी जगह।
वह्नि—पु० अग्नि। चीता। तीनकी संख्या।
वह्निमित्र—पु० पवन।
वह्निमुख—पु० देवता।
वांछनीय—वि० अभिलषणीय, इष्ट।
वांछा—स्त्री० अभिलाषा।
वांछित—वि० चाहा हुआ।
वा—अ० अथवा, या। सर्व० 'वह'का विकृत रूप ('वातें, 'वामें' इ०)।
वाइ—सर्व० उसको (वाहि)। स्त्री० वापी।
वाक—स्त्री० वाणी, सरस्वती। पु० वाक्य।
वाकई—अ० वस्तुत।
वाक़या—पु० घटना।
वाक़ा—पु० घटित होनेवाला। वि० स्थित।
वाक़िफ़—वि० जानकार।
वाक्पटु—वि० वार्तालापमें कुशल।
वाक़्फ़ियत—स्त्री० जानकारी।
वाक्य—पु० वचन, पूर्णार्थयुक्त पदसमूह।
वागना—दे० 'बागना' 'ठुमुकि ठुमुकि वागैं कौशिलाके आँगनमें।' रघु० ४३
वागीश—पु० ब्रह्मा, बृहस्पति, वक्ता, कवि।
वागीश्वरी—स्त्री० सरस्वती देवी।
वागुरा—स्त्री० देखो 'बाँगुर' या 'बागुर'।
वागुरिक—पु० शिकारी।
वाग्जाल—पु० बातोंका जाल।
वाग्दंड—पु० डाँट-डपट, फटकार।
वाग्दत्त—वि० वचनोंद्वारा प्रदत्त, जिसे दूसरेको देनेका वचन दे चुके हों।
वाग्दत्ता—स्त्री० वह कन्या जिसकी सगाई हो चुकी हो।
वाग्देवता—पु०, वाग्देवी—स्त्री० सरस्वती।
वाग्दान—पु० (कन्या) देनेकी प्रतिज्ञा।
वाग्मी—पु० अच्छा बोलनेवाला, बृहस्पति।
वाग्विलास—पु० आनन्दके साथ सम्भाषण करना।
वाङ्मय—पु० साहित्य। वि० वाणी-विषयक।
वाङ्मुख—पु० गद्यकाव्यका एक भेद।
वाचक—वि० बोलनेवाला, बोधक, सूचक।
वाचन—पु० पठन, उच्चारण करना, बताना।
वाचनालय—पु० वह स्थान जहाँ पढ़नेके निमित्त समाचार-पत्रादि रखे रहते हैं।
वाचा—स्त्री० वाणी, वचन। शब्द।
वाचाबंध,-बद्ध—वि० वचनसे बँधा हुआ।
वाचाल—वि० बहुत बोलनेवाला, अच्छा वक्ता।
वाचिक—वि० वाणी सम्बन्धी, वचनोंद्वारा प्रकट किया हुआ, संकेतद्वारा कहा हुआ।
वाच्—स्त्री० वाणी।
वाच्य—वि० वक्तव्य। अभिधाशक्तिद्वारा जिसका अर्थ-[ बोध हो।
वाच्यार्थ—पु० नियत शब्दार्थ।
वाज़—पु० धर्मोपदेश, कथा। शिक्षा।
वाजपेय—पु० एक प्रकारका यज्ञ।
वाजिब, वाजिबी—वि० ठीक, उचित।
वाजी—पु० घोड़ा।
वाजीकरण—पु० वीर्यवर्द्धक ओषधि।
वाट—पु० मार्ग, मण्डप।
वाटिका—स्त्री० फुलवाड़ी, घर।
वाड़व—पु० समुद्रकी अग्नि।
वाढम्—अ० निश्चय ही, बहुत ठीक।
वाण—पु० तीर।
वाणावली—स्त्री० वाणोंका समूह, बाणोंकी वर्षा।
वाणिज्य—पु० व्यापार। [ शोभ।
वाणी—स्त्री० शब्द, वचन, भाषा, वाक्शक्ति, सरस्वती,

वात—पु० हवा ।
वातजात,-पुत्र,वातात्मज—पु० हनुमान्, भीम ।
वातरंग—पु० पीपलका पेड़ ।
वातापि—पु० एक असुर ।
वातायन—पु० खिड़की । [ अवस्था, परिस्थिति ।
वातावरण—पु० किसी वस्तु या व्यक्तिके चारो ओरकी
वातास—स्त्री० बयार, वायु ।
वातुल—वि० उन्मत्त ।
वात्या—स्त्री० आँधी ।
वात्याचक्र—पु० बवण्डर ।
वात्सल्य—पु० सन्तान या छोटोंके प्रति स्नेह ।
वात्स्यायन—पु० एक मुनि । [ सिद्धान्त ।
वाद—पु० बहस,शास्त्रार्थ, तर्क । किसी विशेष दर्शनादिके
वादक—पु० वक्ता, वाद करनेवाला । बाजा बजानेवाला ।
वादन, वाद्य—पु० बाजा । बजानेका कार्य ।
वादरंग—पु० पीपलका वृक्ष ।
वादरायण—पु० व्यासजी ।
वादविवाद, वादानुवाद—पु० बहस । शास्त्रार्थ ।
वाद्य—पु० बाजा ।
वादा—पु० प्रतिज्ञा, निश्चित समय ।
वादित्र—पु० बाजा ।
वादी—पु० अभियोक्ता, फरियादी । वक्ता ।
वानप्रस्थ—पु० गार्हस्थ्यके बादका ( तीसरा ) आश्रम ।
वानर—पु० बन्दर ।
वानरेंद्र—पु० बानरोंके स्वामी, सुग्रीव ।
वानस्पत्य—वि० वनस्पति सम्बन्धी ।
वानीर—पु० बेत ( पूर्ण० १३७ ) ।
वाप—पु० वपन । खेत । मुण्डन ।
वापन—पु० बीज बोना, वपन ।
वापस—वि० लौटा या फिरा हुआ ।
वापसी—स्त्री० लौटानेकी क्रिया, लौटनेकी क्रिया । वि०
वापिका—स्त्री० बावली । [लौटा हुआ ।
वापी—स्त्री० बावली ।
वाम—वि० प्रतिकूल, उलटा, बायाँ, बुरा, वक्र । पु० वामदेव, वरुण, कामदेव । स्त्री० वामा, स्त्री ।
वामदेव—पु० शिवजी । एक ऋषि ।
वामन—पु० विष्णुका एक अवतार । वि० बौना ।
वायुपुत्र—पु० हनुमानजी, भीम ।

वाममार्ग—पु० तान्त्रिकमत जो वेदमार्गसे प्रति॰
वामा—स्त्री० स्त्री ( उदे० 'पेलना' ) ।
वामांगिनी—स्त्री० पत्नी ( प्रिय० १२४ ) ।
वाय—स्त्री० स्त्री देखो 'वाइ' ( उदे० 'औथरा' ) ।
वायक—पु० जुलाहा । [ बयना
वायन—पु० विवाहादिके लिए बना हुआ पक
वायव्य—पु० पश्चिमोत्तर दिशा । वि० वायु
वायस—पु० कौआ ।
वायु—पु०, स्त्री० हवा ।
वायुभक्ष—पु० साँप ।
वायुमंडल—पु० वातावरण । आकाशका वह भाग
वायुवाह—पु० धुआँ । [ वायु बहती है । हवाका
वार—पु० आक्रमण, दिन, द्वार, अवसर, आवरण, किनारा, ( प० ६४ ), 'हरि सुमिरै सो वार है सुमिरै सो पार ।' साखी ४
वारक—पु० कष्टवाली जगह । प्रतिबन्धक ।
वारकन्या,-वधू,-वाणी—स्त्री० वेश्या ।
वारण—पु० रोक । निषेध । हाथी । कवच ।
वारतिय—स्त्री० वेश्या ।
वारती—स्त्री० बत्ती 'प्रणत लौकी आरती ले धूम स्वर्ण अक्षत नील कुमकुम वारती ले' ;दीपशिखा
वारद—पु० वारिद, बादल ।
वारदात—स्त्री० दुर्घटना ।
वारन—पु० वन्दनवार । हाथी स्त्री० निछावर ।
वारना—सक्रि० बलि जाना ( उदे० 'विथुरना', 'उ बसी', 'कमरी' ) । राई नोन आदि उतारना वारि जल पियत यसोदा, ढठु मेरे प्रान अधार ।' ५ ७१ । पु० निछावर, बलि ( 'वारने जाना' ) ।
वारनारी—स्त्री० वेश्या ।
वारापार—अ० एक किनारेसे दूसरे किनारेतक, तरफसे उस तरफतक । पु० अन्त, पूर्ण विस्तार ।
वारफेर—स्त्री० निछावर, निछावरमें दी गयी वस्तु ।
वारमुखी. वारांगणा—स्त्री० वेश्या ।
वारानिधि—पु० वारिधि, समुद्र ।
वारा—वि० जो न्योछावर हुआ हो । पु० लाभ,
वाराणसी—स्त्री० काशी नगरी,बनारस । [(रतन०४)
वारान्यारा—पु० निबटेरा, फैसला ।
वाराह—पु० सूअर ।

वारि—पु० जल । स्त्री० सरस्वती । कलसी ।
वारिचर—पु० जलचर ।
वारिज, वारिजात—पु० कमल,शङ्ख, मछली इ० ।
वारित—वि० रोका हुआ ।
वारिद,-धर—पु० मेघ ( उदे० 'धौरहर' ) ।
वारिधि,-नाथ,-निधि—पु० समुद्र ।
वारियाँ—स्त्री० निछावर ।
वारिरुह—पु० कमल ।
वारिवर्त—पु० एक मेघ ।
वारिवाह—पु० मेघ ।
वारिस—पु० उत्तराधिकारी ।
वारींद्र—पु० समुद्र ।
वारीश—पु० समुद्र ।
वारुण—वि० वरुणका । पु० पानी ।
वारुणी—स्त्री० शराब, वरुणकी स्त्री, पश्चिम दिशा ।
वार्त्त—पु० नैरोग्य, स्वास्थ्य । वि० स्वस्थ ।
वार्त्ता—स्त्री० वृत्तान्त, खबर, बातचीत, मामला, गप्प ।
वार्त्तायन, वार्त्तावह—पु० दूत ।,
वार्त्तालाप—पु० बातचीत ।
वार्त्तिक—पु० दूत । व्याख्याग्रन्थ ।
वार्द्धक, वार्द्धक्य—पु० बुढ़ापा ।
वार्य्य—वि० निवार्य, जो रोका जा सके ।
वार्षिक—वि० वर्ष सम्बन्धी, सालाना । बरसातका ।
वार्ष्ण, वार्ष्णेय—पु० यादववंशोत्पन्न श्रीकृष्ण ।
वार्हद्रथ—पु० जरासन्ध, वृहद्रथका पुत्र ।
वालदैन—पु० माँ बाप ।
वालिका—स्त्री० कानका एक गहना । बालू । कन्या ।
वालिद—पु० पिता ।
वालिदा—स्त्री० माता ।
वालुका—स्त्री० बालू । कपूर । शाखा ।
वाल्मीकि—पु० रामायणके रचयिता एक मुनि ।
वावैला—पु० होहल्ला । रोना-धोना ।
वाशक—पु० अडूशा ।
वाष्प—पु० भाफ, धुआँ, आँसू, लोहा, गरमी ।
वासंत—पु०मलयानिल । कोयल । ऊँट । वि०वसन्तका ।
वासंतिक—पु० विदूषक, नर्तक । वसन्त सम्बन्धी, वसन्तकालीन 'जगे जगतके जड़ जलसे वासन्तिक उत्पल ।' अणिमा २८ ।
वासंतिकता—स्त्री० वसन्तका आनन्द ।
वासंती—स्त्री० जूही, माधवीलता । मदनोत्सव ।
वास—पु० गन्ध, रहना, घर । अडूसा । वस्त्र ।
वासक—पु० अडूसा ।
वासकसज्जा—स्त्री० एक तरहकी नायिका ।
वासका—स्त्री० अडूसा ।
वासन—पु० वस्त्र । सुगन्धित करना ।
वासना—दे० 'बासना' । स्त्री० इच्छा । संस्कार ।
वासर—पु० दिन । वासरमणि = सूर्य ।
वासव—पु० इन्द्र ।
वासस—पु० वस्त्र ।
वासा—स्त्री० अडूसा ।
वासित—वि० सुगन्ध-युक्त किया हुआ, वस्त्रसे ढका [ हुआ ।
वासिल—वि० वसूल, प्राप्त ।
वासी—पु० रहनेवाला ।
वासुकी—पु० एक नागराज ।
वासुदेव—पु० वसुदेवपुत्र ( श्रीकृष्ण ) ।
वास्तव—वि० यथार्थ ।
वास्तविक—वि० यथार्थ, सच ।
वास्तव्य—वि० रहने योग्य, रहनेवाला ।
वास्ता—पु० सम्बन्ध ।
वास्तु—पु० मकान बनानेकी जगह । मकान, भवन ।
वास्तु शास्त्र—पु० भवननिर्माण-शास्त्र ।
वास्ते—अ० लिए, हेतु ।
वास्प—दे० 'वाष्प' ।
वाह—अ० आनन्द, आश्चर्य, आदिका सूचक शब्द । पु० सवारी, बैल, घोड़ा, हवा ।
वाहक—पु० वहन करनेवाला, बोझ ढोनेवाला, सारथी ।
वाहन—पु० सवारी ।
वाहना—सक्रि० चलाना, ढोना ( व्रज० ६६ ) ।
वाहवाही—स्त्री० साधुवाद, कीर्त्ति, तारीफ़ ।
वाहिक—पु० शकट, गाड़ी ।
वाहित—वि० चलाया हुआ ।···ढोया हुआ (प्रिय०११)
वाहिनी—स्त्री० सेना ।
वाहियात—वि० व्यर्थ । खराब ।
वाही—वि० बैठाठाला, निकम्मा, निर्बुद्धि ।
वाहीतबाही—स्त्री०बेहूदा या अंड-बंड बात, गाली-गलौज ।
वाहु—स्त्री० भुजा ।

वाहुमूल—पु० देखो 'वाहुमूल' ।
वाह्य—क्रिवि० वाहर पु० रथ । वि० वाहरी ।
वाह्यांतर—क्रिवि० भीतर और वाहर । वि० भीतर और वाहरका ।
वाह्लीक—पु० एक प्रदेश (जो गान्धारके निकट था) । या वहाँका घोड़ा ।
विंदाल—स्त्री० एक नदी ।
विंद—पु० समूह, विन्दु ।
विंदक—पु० वेत्ता, जाननेवाला, पानेवाला ।
विंदु—पु० विन्दी, शून्य, वूँद, अनुस्वार, कण (उदे० 'लेखना') ।
विंदुपत्र—पु० भोजपत्र ।
विंदुर—पु० विन्दु, वेंदी ।
विंध—पु० विन्ध्याचल ।
विंध्य—पु० मध्यभारतका एक पहाड़ ।
विंबित—वि० प्रतिविम्बित 'सजल देह-द्युति चल-लहरोंमें बिम्बित सरसिजमाल' गुंजन ८७
विंश—वि० बीसवाँ ।
विकंपित—वि० चञ्चल ।
विकच—वि० खिला हुआ । केशरहित । पु० झंडा ।
विकट—वि० कठिन, भयंकर, टेढ़ा ।
विकरार—वि० व्याकुल । विकराल, भयावना ।
विकराल—वि० भयंकर, भीपण ।
विकर्म—पु० दुराचार (जीव० २१५) । वि० दुराचारी ।
विकर्पण—पु० आकर्षण (जीव० २२९) । विलग होना ।
विकल—वि० वेचैन । खंडित । कलाहीन ।
विकलांग—वि० जिसका कोई अंग खराब हो ।
विकला—स्त्री० कलाका साठवाँ हिस्सा ।
विकलाना—अक्रि० विकल होना ।
विकलित—वि० वेचैन ।
विकल्प—पु० विविध कल्पना, आगापीछा, विरुद्ध कल्पना, भ्रम ।
विकल्मष—वि० कलुपहीन, निष्पाप ।
विकश्वर, विकस्वर—पु० एक काव्यालंकार । वि० खिलनेवाला ।
विकसना—अक्रि० खिलना ।
विकार—पु० वासना । परिवर्त्तन । दोप । हानि ।
विकारी—वि० दोषयुक्त । परिवर्तित । बुरी वासनावाला ।
विकाल—पु० विलम्ब, सन्ध्याकाल ।
विकाश, विकास—पु० क्रमशः बढ़ना । फैलाव, वृद्धि । खिलना, प्रस्फुटन ।

विकासना—सक्रि० विकसित करना । प्रकट निकालना । अक्रि० विकसित होना । प्रकट
विकीर्ण—वि० छितराया हुआ ।
विकीर्णकारी—वि० फैलानेवाला (मिथ० १३२
विकुंठ—पु० वैकुंठ । वि० तेज ।
विकुक्षि—वि० बड़ी तोंदवाला, तुंदिल ।
विकृत—वि० बिगड़ा हुआ, अस्वाभाविक, कुरू
विकृति—स्त्री० खरावी, परिवर्तन । रोग ।
विक्रम—पु० वल, शक्तिकी अधिकता, पराक्रम । प्राचीन और प्रसिद्ध सम्राट् जिनके नामपर [
विक्रमण—पु० चलना ।
विक्रमी—वि० प्रतापी, पराक्रमी । विक्रम
विक्रमीय—वि० सम्राट् विक्रमसे सम्बद्ध ।
विक्रय—पु०,विक्री—स्त्री० वेचनेकी क्रिया ।
विक्रयण—पु० वेचनेकी क्रिया ।
विक्रयी, विक्रायक—पु० वेचनेवाला ।
विक्रांत—वि० प्रतापी । पु० साहस । वीर ।
विक्रांति—स्त्री० शूरता । बल । गति ।
विक्री—स्त्री० वेचनेकी क्रिया । वेचनेसे मिली हुई
विक्रीत—वि० वेचा हुआ ।
विक्रेता—पु० वेचनेवाला ।
विक्रेय—वि० विकनेवाला ।
विक्षत—वि० जिसमें चोट लगी हो, घायल ।
विक्षिप्त—वि० फेंका हुआ, पागल, व्याकुल ।
विक्षिप्तता—स्त्री० पागलपन ।
विक्षुब्ध—वि० जिसका मन चंचल हो गया हो, च
विक्षेप—पु० फेंकनेकी क्रिया, असंयम,व्याकुलता, वि रोदा चढ़ाना ।
विक्षेपण—पु० वाधा । इधर उधर फेंकना ।
विक्षोभ—पु० मनकी अस्थिरता ।
विख—पु० ज़हर । वि० नासिकाहीन ।
विखान—पु० सींग ।
विखानस—पु० वह जो वानप्रस्थ आश्रममें हो । तरहका तपस्वी
विखायँध—स्त्री० कड़वी गन्ध ।
विख्यात—वि० प्रसिद्ध, यशस्वी ।
विख्याति—स्त्री० प्रसिद्धि, नामवरी ।
विगंध—वि० दुर्गन्धयुक्त ।
विगत—वि० वीता हुआ, पिछला । रहित ।

विगति—स्त्री० बुरी गति, दुर्दशा।
विगम—पु० नाश, अन्त। प्रस्थान। समाप्ति।
विगर्हण—पु०, विगर्हणा—स्त्री० निन्दा, भर्त्सना, डाँट।
विगर्हित—वि० खराब। जो फटकारा गया हो।
विगलन—पु० नाश ( जीव० ३४५ )।
विगलित—वि० जो बह गया या गिर गया हो 'विग-लित सीस निचोल'—सू० १५३। जो बिगड़ गया हो। विदीर्ण 'याही ते दाड़िम उर विगलित तिनकी सम नहिं पावैरी।' सू० १८०
विगुण—वि० निर्गुण।
विग्रह—पु० शरीर, युद्ध, झगड़ा, रूप, मूर्त्ति।
विग्रही—वि० युद्ध या लड़ाई-झगड़ा करनेवाला।
विघटन—पु० तोड़फोड़।
विघटित—वि० जो तोड़-फोड़ डाला गया हो, बिगाड़ा [हुआ।
विघन, विघ्न—पु० बाधा, अड़चन।
विघात—पु० चोट, नाश। असफलता, बाधा।
विघातन—पु० हनन। आघात पहुँचाना।
विघाती—वि० घातक, विघ्नकारी।
विघ्नजित, विघ्नपति—पु० गणेशजी।
विघ्ननाशक,-राज—पु० गणेशजी।
विघ्नविनाशक,-विनायक—पु० गणेशजी, गजानन।
विचकित—वि० घबराया हुआ।
विचक्षण,विचच्छन—वि० सुनिपुण, चतुर, बुद्धिमान्।
विचय, विचयन—पु० जाँच पड़ताल। एकत्रीकरण।
विचरण, विचरन—पु० भ्रमण, पर्यटन।
विचरना—अक्रि० घूमना फिरना।
विचरनि—स्त्री० देखो 'विचरण'।
विचल—वि० चंचल, अस्थिर, विचलित।
विचलना—अक्रि० स्थान भ्रष्ट होना। घबराना।
विचलाना—सक्रि० विचलित करना। घबरा देना।
विचलित—वि० किसी स्थान या प्रतिज्ञासे डिगा हुआ। अस्थिर।
विचार—पु० ख्याल, समझ, ध्यान, तत्वनिर्णय। विचरण।
विचारक—पु० विचार करनेवाला, तत्व-निर्णायक।
विचारण—पु० घूमना या घुमाना। विचारना।
विचारणीय—वि० विचार करनेयोग्य, जिसपर विचार करना आवश्यक हो, चिन्त्य।
विचारना—सक्रि० गौर करना, ढूँढ़ना।
विचारपति—पु० न्यायाधीश।
विचारस्थल, विचारालय—पु० कचहरी, न्यायालय।
विचारित—वि० विचाराधीन, जिसपर विचार हो [चुका हो।
विचिंतन—पु० चिन्ता, फिक्र।
विचिकित्सा—स्त्री० सन्देह।
विचित्त—वि० किंकर्तव्यविमूढ़। बेहोश।
विचित्र—वि० अद्भुत, कौतूहल-वर्द्धक, रंग-विरंग।
विचित्रता—स्त्री० विलक्षणता, रंगविरंगा होनेका भाव।
विचित्रांग—पु० मयूर। व्याघ्र।
विचित्रित—वि० कई रंगोंसे चित्रित।
विची—स्त्री० लहर।
विचुंबित—वि० विशेष रूपसे चूमा हुआ, चूमा हुआ, स्पर्श किया हुआ।
विचेतन—वि० चेतनाहीन, विवेकरहित।
विचेता—पु० मूर्ख, नीच, घबराया हुआ मनुष्य। किसी
विचेष्ट—वि० चेष्टारहित। [विषयका विशेषज्ञ।
विच्छर्दन—पु०, विच्छर्दिका—स्त्री० क़ै। [चन्दन।
वच्छित्ति—स्त्री० एक हाव। विच्छेद। त्रुटि, कसर।
विच्छिन्न—वि० छेदकर या काटकर पृथक् किया हुआ।
विच्छेद—पु० पृथक्करण, विनाश, वियोग।
विच्छुरित—वि० छाया हुआ।
विच्युत—वि० अपने स्थान या पदसे गिरा हुआ।
विछलना—अक्रि० फिसलना, स्थान भ्रष्ट होना।
विछेद—पु० विच्छेद, वियोग।
विछोई—पु० वियोगी।
विछोह—पु० वियोग।
विजई, विजयी—वि० जीतनेवाला।
विजन—वि० निर्जन, एकान्त। पु० देखो 'बिजन'।
विजनता—स्त्री० जनशून्यता, एकान्तता, सूनापन।
विजनन—पु० जनन-क्रिया।
विजना—पु० पंखा।
विजन्मा—पु० जारज।
विजय—स्त्री० जीत।
विजयकरा—स्त्री० विजय करनेवाली उदे० 'भारति'।
विजययात्रा—स्त्री०विजय प्राप्तिके निमित्त की गयी यात्रा।
विजया—स्त्री० भाँग, दुर्गा।
विजयिनी—वि० स्त्री० विजय करनेवाली।
विजयी—वि० जीतनेवाला। पु० विजेता।

विजयोत्सव—पु० विजयके अवसरपर होनेवाला उत्सव
विजर—वि० अजर । नया । [ विजयादशमीका उत्सव ।
विजल्प—पु० बकवाद, अपवाद ।
विज्ञान— ० कुशल, दर्शनकार ।
विजाति—स्त्री० दूसरी जाति । वि० दूसरी जातिका ।
विजातीय—वि० अन्य जातिका ।
विजानना—सक्रि० विशेष रूपसे जानना ।
विजारत—स्त्री० मंत्रित्व ।
विजिगीषा—स्त्री० जीतनेकी इच्छा ।
विजिगीषु—वि० विजयका इच्छुक ।
विजित—वि० हारा हुआ । पु० जीता हुआ स्थान । हारा
विजुली—स्त्री० बिजली, विद्युत् ।  [ हुआ व्यक्ति ।
विजृंभण—पु० जँभाई लेना ।
विजेता—पु० जीतनेवाला ।
विजोग—पु० वियोग, बिछुड़न ।
विजोगी—पु० वियोगी ।
विजोर—वि० कमज़ोर । पु० बिजौरा ।
विज्जु—स्त्री० बिजली ।
विज्ञ—वि० जाननेवाला, प्रवीण, बुद्धिमान् ।
विज्ञता—स्त्री० जानकारी, पाण्डित्य ।
विज्ञप्त—वि० जताया हुआ, सूचित ।
विज्ञप्ति—स्त्री०, विज्ञापन—पु० सूचना, इश्तिहार ।
विज्ञात—वि० प्रसिद्ध, जाना हुआ ।

विडरना—अक्रि० देखो 'बिडरना' ।
विडराना, विडारना—सक्रि० भगाना, न-
ष्ट करना । तितर बितर करना ।
विडाल—पु० बिल्ली । आँखका गोला ।
विडौजा—पु० इन्द्र ।
वितंडा—स्त्री० व्यर्थका विवाद । स्वपक्ष-समर्थन
वितंत—पु० बिना तंत्र (तार) का बाजा (दे० 'व
वितंस—पु० पक्षियों आदिको फँसानेका जाल ।
वित—पु० धन, शक्ति । वि० पैना, निपुण ।
वितत—पु० एक तरहका बाजा । ढोल आदिका
वि० फैला हुआ, लम्बा, बड़ा, हत, ढँका हुआ
वितताना—अक्रि० अधीर होना ।
वितति—स्त्री० विस्तार ।
वितथ—वि० व्यर्थ । झूठ ।
वितपन्न—वि० व्युत्पन्न, निपुण (सूदे०१८०) । वि
वितरण,-रन—पु० बाँटनेकी क्रिया । बाँटनेवाला
वितरना—सक्रि० बाँटना ।
वितरिक्त—क्रिवि० व्यतिरिक्त, सिवा ।
वितरित—वि० बाँटा हुआ ।
वितरेक—क्रिवि० सिवा, अतिरिक्त ।
वितर्क—पु० अनुमान । तर्क । तर्कवितर्क ।
वितल—पु० एक पाताल ।
वितस्ति—पु० बालिश्त ।

विथराना, विथारना—सक्रि० फैलाना ।
विथा—स्त्री० पीड़ा ।
विथुर—वि० दुःखित । थोड़ा । पु० चोर । नाश ।
विदग्ध—वि० जला हुआ । चतुर, पण्डित ।
विदग्धता—स्त्री० जलनेकी क्रिया, जलना, चातुर्य ।
विदमान—अ० विद्यमान होते हुए,सामने । वि० मौजूद ।
विदरना—सक्रि० फाड़ना । अक्रि० फटना ।
विदल—वि० खिला हुआ । दलरहित । पु० सोना । चना । अनारका दाना ।।
विदलन—पु० दबाने, कुचलने आदिकी क्रिया, शमन, [फाड़ना ।
विदलना—सक्रि० नष्ट करना, दलन करना ।
विदा—स्त्री० जानेकी आज्ञा । प्रस्थान ।
विदाई—स्त्री० प्रस्थान या प्रस्थान करनेकी आज्ञा । बिदा होनेके समय दिया जानेवाला धन ।
विदारक—पु० फाड़नेवाला ।
विदारण—पु० विदीर्ण करनेकी क्रिया, हनन, वध ।
विदारना—सक्रि० विदीर्ण करना ।
विदारित—वि० फाड़ा हुआ ।
विदारी—वि० फाड़नेवाला ।
विदाह—पु० पित्त इ० के प्रकोपसे शरीरमें होनेवाली [जलन ।
विदित—वि० जाना हुआ, प्रसिद्ध ।
विदिशा,-सा—स्त्री० दो दिशाओंके बीचवाली दिशा, उपदिशा ( उदे० 'अवगाहना' ) । दिशाहीनता 'आज दिशा ही विदिशा है' सान्ध्यगीत ५४ ।
विदीर्ण—वि० फाड़ा हुआ, नष्ट किया हुआ ।
विदुर—पु० ज्ञानी, जानकार ; धृतराष्ट्रके भाई और मन्त्री जो बड़े भक्त और ज्ञानी थे ।
विदुप—पु० विद्वान् । [ * सुशिक्षिता ।
विदुपी—स्त्री० विद्वान् स्त्री । पण्डिता । वि० स्त्री०*
विदूर—पु० दूरस्थ स्थान । वि० जो बहुत दूर हो ।
विदूरित—दे० 'विदूरित' ।
विदूपक—पु० मसखरा, भाँड़, विपयी मनुष्य, दुष्ट ।
विदूपण—पु० दोपारोप ।
विदूपना—सक्रि० पीड़ित करना । अक्रि० दुःखी होना ।
विदेश—पु० पराया देश ।
विदेशी—वि० पराये देशका ।
विदेह—वि० देहरहित ( उदे० 'आगृ' ), वेसुध । पु० [ राजा जनक ।
विदेही—पु० ब्रह्म ।
विद्ध—वि० छेद किया हुआ । आबद्ध ।
विद्यमान—वि० मौजूद ।
विद्या—स्त्री० इल्म, ज्ञान, दुर्गा ।
विद्यादेवी—स्त्री० सरस्वती ।
विद्याधर—पु० एक देवयोनि । पण्डित ।
विद्याधरी—स्त्री० एक तरहकी देवांगना ।
विद्यार्थी—पु० छात्र ।
विद्यापीठ—पु० शिक्षाका केन्द्र, गुरुकुल ।
विद्यालय—पु० पाठशाला, स्कूल ।
विद्यु—स्त्री० विद्युत्, बिजली 'फूटो शतशत विद्यु शिखासे मेरी इन सजला पुलका में' सान्ध्यगीत ६९ ।
विद्युत्—स्त्री० बिजली, तड़ित । सन्ध्या ।
विद्युन्माला—स्त्री० एक छन्द, बिजलीका समूह ।
विद्युल्लेखा—स्त्री० बिजली । एक छन्द ।
विद्रावण—पु० गलना । पलायन । उड़ना ।
विद्रुम—पु० मूँगा । कोंपल ।
विद्रोह—पु० विद्वेष, बलवा ।
विद्रोही—वि० विद्रोह करनेवाला । पु० बलवाई, बागी ।
विद्वत्—वि० पण्डित ।
विद्वत्ता—स्त्री०, विद्वत्त्व—पु० पाण्डित्य ।
विद्वान्—पु० विद्यावान् , पण्डित ।
विद्वेष—पु० विद्रोह, शत्रुता ।
विधंस—वि० नष्ट। पु० नाश ।
विध—पु० विधि, दैव । स्त्री० तरीका ।
विधन—वि० धनहीन, दरिद्र । [ देखो 'बिधना' ।
विधना—पु० ब्रह्मा । सक्रि० प्राप्त करना, ऊपर लेना ।
विधर्म—पु० पराया धर्म, अन्य किसीका धर्म ।
विधर्मी—पु० दूसरे धर्मका माननेवाला । वह जो धर्म- [च्युत हो ।
विधवा—स्त्री० बेवा । पतिविहीन स्त्री ।
विधवाश्रम—पु० असहाय विधवाओंका आश्रय स्थान ।
विधाँसना—सक्रि० बरबाद करना, गड़बड़ करना ।
विधाता—पु० ब्रह्मा, रचनेवाला, कर्त्ता, प्रबन्धक ।
विधात्री—स्त्री० रचना करनेवाली । सरस्वती ।
विधान—पु० विधि, क्रिया, आचार, व्यवस्था, रचना, कथन, उपाय, अनुष्ठान, नियम ।
विधायक—वि० रचनात्मक । पु० बनानेवाला विधान या व्यवस्था करनेवाला ।
विधायी—पु० देखो 'विधायक' ( विन० १०५ ) ।

विधि—पु० ब्रह्मा, भाग्य, दैव । स्त्री० नियम, रीति, व्यवस्था, शास्त्रोक्त व्यवहार, भाँति ।
विधिरानी—स्त्री० सरस्वती ।
विधिवत्—क्रिवि० विधिके अनुसार, यथानियम ।
विधुंत, विधुंतुद—पु० चन्द्रपीड़क ( राहु ) 'मानो विधु जु विधुंत ग्रहन डर आयो तेरे सरन सखी री ।'
विधु—पु० चन्द्रमा । ब्रह्मा । वायु । विष्णु । [सू०१६६
विधुबंधु—पु० कुमुद ।
विधुबैनी—वि० स्त्री० विधुवदनी, चन्द्रमुखी ।
विधुमणि—स्त्री० चन्द्रमणि, चन्द्रकान्त मणि ।
विधुर—पु० वियोग । दुःख । मृतस्त्रीक, रँडुआ । वि० व्याकुल । कष्टमय(गुलाब५२२)। भीत । त्यक्त । अशक्त ।
विधुवदनी—स्त्री० चन्द्रमाके समान मुखवाली स्त्री ।
विधूत—वि० कम्पित, परित्यक्त ।
विधूनित—वि० कम्पित, चलायमान ( कलस ३५२ ) ।
विधूम—वि० धूमरहित ।
विधूम्र—वि० मटमैला ।
विधृत—वि० गृहीत, पकड़ा गया ।
विधेय—वि० करणीय । होनहार । अधीन । पु० किसी वस्तुके सम्बन्धमें जो कुछ कहा जाय ( व्याक० ) ।
विध्वंस—पु० विनाश, तिरस्कार, शत्रुता ।
विध्वस्त—वि० नष्ट किया हुआ ।
विन—अ० विना, बगैर ।
विनत—वि० नम्र, झुका हुआ ।
विनतड़ी, विनति—स्त्री० प्रार्थना, नम्रता, झुकाव ।
विनती—स्त्री० प्रार्थना ।
विनमन—पु० झुकाना ।
विनम्र—वि० सुशील, विनीत ।
विनय—स्त्री० नम्रता । प्रार्थना । नीति ।
विनयन—पु० विनय करनेकी क्रिया ।
विनयशील, विनयी—वि० नम्र, सुशील ।
विनशना, विनसना—अक्रि० नष्ट होना ।
विनश्य—वि० नष्ट होनेवाला, नाशवान् ।
विनश्वर—वि० नष्ट होनेवाला ।
विनष्ट—वि० विध्वस्त, भ्रष्ट, विकृत, मृत ।
विनष्टि—स्त्री० विनाश ।
विनसाना—सक्रि० नष्ट करना । अक्रि० नष्ट होना ।
विना—अ० बग़ैर, सिवा ।
विनाती—दे० 'बिनाती' ।
विनायक—पु० गणेशजी, गुरु, गरुड़ । विघ्न ।
विनाश, विनास—पु० ध्वंस, लोप, विकृति
विनासन,-सन—पु० नष्ट करना, नष्ट करनेवाला
विनाशोन्मुख—वि० नाशकी ओर बढ़ता हुआ ।
विनिंदक—पु० अधिक निन्दा करनेवाला ।
विनिद्र—वि० निद्रा रहित । खिला हुआ ।
विनिपात—पु० नाश, अपमान, वध ।
विनिमय—पु० परिवर्त्तन, बदला, बन्धक । [लगा
विनियुक्त—वि० विशेष रूपसे बँधा हुआ, विशेष
विनियोग—पु० बैठाना, प्रयोग, प्रवेश, प्रेषण ।
विनिर्गत—वि० बाहर निकला हुआ, बीता हुआ ।
विनिर्जन—वि० अत्यन्त सूनसान ।
विनिर्मित—वि० विशेष रूपसे बना हुआ । रचा
विनिर्मुक्त—वि० बन्धनमुक्त । अनावृत ।
विनिर्वाण—पु० निर्वाण ।
विनिवेश—पु० प्रवेश ।
विनिहित—वि० मृत । चोट खाया हुआ ।
विनीत—वि० विनययुक्त (उद्दे०'प्रतोषना'),शिष्ट,
विनु—अ० विना, बगैर।। [*शासित,
विनोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार, 'कञ्चुक, बिना
विनोद—पु० हँसी, कौतुक,हर्ष। [जहाँ के नीको कै
विनोदी—वि० कौतुकी, क्रीड़ाशील, मौजी, हँसी
विन्यास—पु० स्थापना, रचना, संग्रह । [ कर
विपंची—स्त्री० क्रीड़ा । एक बाजा, बीन (दीन० ५०
विपक्व—वि० अच्छी तरह पका हुआ । कच्चा ।
विपक्ष—पु० विरोधी । विरुद्ध पक्ष ।
विपणि—स्त्री० बाजार, दूकान, व्यापार, पण्य वस्तु ।
विपत्ति—स्त्री० कष्ट । संकट । आफत । बखेड़ा ।
विपथ—पु० कुमार्ग, गलत रास्ता ।
विपद्, विपदा—स्त्री० आफत ।
विपन्न—वि० विपत्तिग्रस्त, दुःखी ।
विपरीत—वि० उलटा । प्रतिकूल ।
विपरीता—स्त्री० कुलटा स्त्री ।
विपर्यय—पु०,विपरीतता, औरका और हो जानेकी स्थिति उलट-फेर । भ्रम । गड़बड़ी । अभाव, नाश, दुर्भाग्य
विपर्यस्त—वि० उलटा पुलटा, अव्यवस्थित, अस्तव्यस्त
विपर्यास—पु० उलटफेर, प्रतिकूलता, भ्रम ।

विपल—पु० पलका साठवाँ हिस्सा। समयका एक बहुत छोटा मान।

विपाक—पु० कर्मफल परिपक्वावस्था, दुर्गति, स्वाद। [परिणाम।

विपादिका—स्त्री० पहेली। बेवाईका रोग।

विपिन—पु० जंगल, उपवन।

विपिनविहारी—पु० जंगलमें विहार करनेवाला, वनविहारी श्रीकृष्ण।

विपुत्र—वि० पुत्रहीन, निपूता।

विपुल—वि० बहुत, प्रचुर, बड़ा।

विपुलता—स्त्री० अधिकता, प्रचुरता।

विपुला—स्त्री० पृथिवी।

विपुलाई—स्त्री० प्रचुरता, अधिकता।

विपोहना—सक्रि० पोहना, छेदन करना (कविप्रि०१३१) [पोतना। संहार करना।

विप्र—पु० ब्राह्मण।

विप्रतिपत्ति—स्त्री० विरोध।

विप्रयोग—पु० वियोग, विरह।

विप्रलंभ—पु० वियोग, इष्ट वस्तुका न मिलना।

विप्रलब्ध—वि० वियुक्त। वंचित।

विप्रलब्धा—वि० संकेत स्थलमें प्रियसे भेंट न होनेपर दुःखित होनेवाली नायिका।

विप्लव—पु० उथल पुथल, उत्पात, अशान्ति, बलवा, पानीकी बाढ़। विनाश।

विप्लावक, विप्लावी—पु० बागी। जलप्लावन लानेवाला।

विप्लुत—वि० व्याकुल। जिसका पतन हो चुका हो।*

विप्सा—स्त्री०द्विरुक्ति। एक काव्यालंकार।[*प्रतिज्ञाभ्रष्ट।

विफल—वि० निष्फल, निराश, फलहीन।

विबुध—पु० देवता, विद्वान्, चन्द्रमा।

विबुधतटिनी,-नदी—स्त्री० देवनदी, आकाशगङ्गा।

विबुधविलासिनी—स्त्री० अप्सरा, देवबाला।

विबोध—पु० जागरण, जाग्रत् अवस्था, प्रबोध।

विबोधक—वि० जगानेवाला, सचेत करनेवाला, समझानेवाला।

विभंग—वि० चञ्चल।

विभक्त—वि० बँटा हुआ, अलग किया हुआ।

विभक्ति—स्त्री० पार्थक्य, अंश, विभाग, कारक चिह्न।

विभव—पु० ऐश्वर्य, प्रताप, सम्पत्ति, अधिकता। मुक्ति।

विभवशाली—वि० ऐश्वर्यसम्पन्न, प्रतापी।

विभांडक—पु० ऋष्य शृङ्गके पिताका नाम।

विभाँति—वि० कई प्रकारका। अ०कई प्रकारसे। स्त्री० [प्रकार।

विभा—स्त्री० कान्ति, शोभा, किरण।

विभाकर—पु० सूर्य, अग्नि, राजा।

विभाग—पु० हिस्सा खण्ड, बँटवारा, क्षेत्र।

विभाजन—पु० बाँटनेकी क्रिया, भाजन, पात्र।

विभाजित—वि० विभक्त, बाँटा हुआ।

विभाज्य—वि०बाँटने योग्य, जिसका विभाग करना हो। पु० वह संख्या जिसमें किसी अन्य संख्याका भाग देना हो।

विभात—पु० प्रभात।

विभाति—स्त्री० कान्ति, छवि ( दीन० ६४ )

विभाना—अक्रि० चमकना, शोभा देना।

विभारना—अक्रि० कान्तियुक्त होना, चमकना।

विभाव—पु० रसका आलम्बन और उद्दीपन।

विभावना—स्त्री० एक काव्यालंकार। 'हेतु अपूरन, हेतु बिन प्रतिबधकके होत। हेतु विरुद्ध, अयुक्त सों जहँ कहुँ कारज होत। अथवा होवे काजते जहँ कारन उत्पन्न।'

विभावरी—स्त्री० वह रात्रि जिसमें तारे चमकते हों। दूती, कुटिल स्त्री।

विभावसु—पु० सूर्य, अग्नि। अकवन, मदार, चित्रक।

विभास—पु० चमक।

विभासना—अक्रि० झलकना, कान्तियुक्त होना।

विभिन्न—वि० पृथक्, कई प्रकारका, कटा हुआ।

विभीत—वि० विशेष रूपसे डरा हुआ।

विभीति—स्त्री० डर, शंका। [डरावना।

विभीषण—पु० रावणका एक भाई। वि० अधिक

विभीषिका—स्त्री० भय, भयप्रदर्शन, डरानेवाली बात।

विभु—वि० सर्वव्यापक। पु० ईश्वर। स्वामी। आत्मा।

विभुता—स्त्री० ऐश्वर्य,प्रभुत्व, सर्वव्यापकता। [† भस्म।

विभूति—स्त्री० ऐश्वर्य, सम्पत्ति, वृद्धि (उदे० 'पराइ'),†

विभूषण—पु०अलङ्कार। अलङ्कार आदिसे सजानेकी क्रिया।

विभूषना—सक्रि० मण्डित करना, सजाना।

विभूषा—स्त्री० अलङ्कार आदिकी सजावट। अलङ्कार। [छवि।

विभूषित—वि० अलङ्कृत, सुशोभित।

विभेंटन—पु० भेंटनेकी क्रिया, आलिङ्गन।

विभेद—पु० अन्तर, भेद। कटाव।

विभेदना—सक्रि० छेदना, फोड़ना, प्रवेश करना।

विभोर—वि० डूबा हुआ, तल्लीन ( 'आनन्दविभोर' )।

विभौ—पु० ऐश्वर्य, सम्पत्ति।

विभ्रम—पु० भ्रान्ति, सन्देह, भ्रमण, घबराहट।

विभ्रांत—वि० भ्रान्तिमें पड़ा हुआ। घूमता हुआ।

विभ्राट्—पु० बखेड़ा, झगड़ा, विपत्ति ।
विमंडन—पु० देखो 'विभूषण' ।
विमंडित—वि० शोभित, युक्त ।
विमत—पु० उलटा मत, असम्मति ।
विमत्सर—पु० अधिक अभिमान । वि० मत्सरहीन ।
विमद—वि० मदहीन । बेमदका ( हाथी ) ।
विमन—वि० खिन्न, अनमना ।
विमनस्क—वि० अन्यमनस्क, उदास ।
विमर्दन—पु० मसलने, मार डालने, नष्टकरने इ० की [क्रिया ।
विमर्श—पु० समीक्षा, विवेचन, विचार ।
विमर्ष—दे० 'विमर्श' । नाटककी एक सन्धि ।
विमर्षित—वि० विवेचित ।
विमल—वि० स्वच्छ, निर्मल, सुन्दर ।
विमला—स्त्री० सरस्वती ।
विमलापति—पु० ब्रह्मा ( रामा० ९७ ) ।
विमाता—स्त्री० सौतेली माँ ।
विमान—पु० वायुयान । रथ ( उदे० 'दिवान' ) । वह आसन जिसपर रामलीला इत्यादिकी सवारियाँ निकाली जाती हैं । परिमाण । अनादर ।
विमानना—स्त्री० निरादर, अपमान ।
विमार्ग—पु० बुरा मार्ग ।
विमुक्त—वि० छोड़ा हुआ, स्वतंत्र, बन्धनरहित ।
विमुक्ति—स्त्री० स्वतंत्रता ।
विमुख—वि० प्रतिकूल, अप्रसन्न, विरत, फिरा हुआ ।
विमुग्ध—वि० विशेष मोहित, उन्मत्त, भ्रान्त, बेहोश ।
विमुद—वि० अप्रसन्न, उदास ।
विमूर्छ—वि० जिसकी मूर्छा दूर हो गयी हो, सचेत ।
विमूढ—वि० मूर्ख । मुग्ध । भ्रममें पड़ा हुआ । अचेत ।
विमोघ—वि० जो खाली न जाय, अमोघ ।
विमोचन—पु० बन्धकसे मुक्त करना । गिराना, ढालना । बाहर करना ।
विमोचना—सक्रि० मुक्त करना, छोड़ना, बाहर करना,†
विमोह—पु० विषयासक्ति, भ्रान्ति, मूर्च्छा । [†टपकना ।
विमोहनशील, विमोही—वि० मोहित करनेवाला, भ्रममें डालनेवाला, बेसुध करनेवाला, निर्दय ।
विमोहना—अक्रि० मुग्ध होना ( उदे० 'कल्पसाखी' ) । सक्रि० मोहित करना, संज्ञाहीन करना, भ्रममें [डालना ।
विमौट—पु० बमीठा, बाँबी ।
वियंग—पु० शिवजी ।
वियुक्त—वि० बिछुड़ा हुआ, रहित, पृथक् ।
वियो—वि० दूसरा । [वियोग
वियोग—पु० जुदाई । पार्थक्य ।
वियोगांत—वि० दुःखपूर्ण अन्तवाला ( नाटक आ
वियोगिन,-गिनी—स्त्री० पति विरहसे व्याकुल
वियोगी—वि० विरही । पु० विरही मनुष्य ।
वियोजित—वि० अलग किया हुआ ।
विरंग—वि० कई रंगोंका । फीके रंगका ।
विरंचि—पु० ब्रह्मा ।
विरक्त—पु० उदासी । वैरागी । वि० उदासीन, अ
विरक्ति—स्त्री० वैराग्य, उदासीनता, अरुचि, ‍ र.
विरचना—सक्रि० सजाना, बनाना । अक्रि० ७ .
विरचित—वि० रचित । लिखित । [
विरज—वि० बेदाग़ । साफ़ । गुणरहित ।
विरत—वि० विशेष रूपसे रत । उदासीन, विमुख ।
विरति—स्त्री० वैराग्य ।
विरथ—वि० रथहीन ।
विरद—पु० प्रसिद्धि, नाम, कीर्त्ति, यश (उदे० ७४
विरदावली—स्त्री० प्रसिद्धिका वर्णन, कीर्तिगाथा ।
विरदैत—वि० नामवर, प्रसिद्ध ।
विरम—पु० विराम, ठहराव 'जागरणोपम यह सु विरम भ्रम भ्रमकर' तुलसीदास १२
विरमण—पु० ठहरना, निवृत्त होना । रम जाना ।
विरमना—अक्रि० रमना ( उदे० 'कमाल' ) । ९ ठहरना ( उदे० 'गैन' ) । विलम्ब करना ।
विरमाना—सक्रि० रोकना, अनुरक्त करना । फँसाना
विरल—वि० अलग-अलग, छिटफुट, ढीला, शून्य, दुर्ल
विरस—वि० रसहीन, अप्रिय ।
विरह—पु० वियोग ( उदे० 'छाम' ),
विरहिणी—वि० स्त्री० पतिके वियोगसे सन्तप्त (नायिका
विरहित—वि० शून्य, रहित ।
विरही—वि० वियोगी, जिसे प्रियाका विरह हुआ हो ।
विराग—पु० विरक्ति, उदासीनता, विषय-त्याग ।
विरागी—वि० उदासीन, विरक्त ।
विराजना—अक्रि० शोभित होना । बैठना । रहना ।
विराजमान—वि० सुशोभित, प्रकाशमान । आसीन ।
विराट्—वि० विशाल, बहुत बड़ा ।

विराध—पु०तकलीफ पहुँचानेवाला। कष्ट। एक राक्षस।
विराम—पु० आराम, फुरसत, कुछ समयके लिए रुक जाना ( पभू० ८७ ) ठहराव, यति। परिणाम 'हो बिके जहाँ तुम बिना दाम। वह नहीं और कुछ हाड़, चाम! कैसी शिक्षा, कैसे विरामपर आए!' तुलसीदास ४५।
विराल—पु० बिड़ाल।
विराव—पु० कलरव, आवाज़, शोरगुल। वि० शब्दरहित।
विरावी—वि० चिल्लाने या बोलनेवाला।
विरास—पु० विलास।
विरासी—वि० विलासी ( प० २९८ )।
विरुज—वि० निरामय, नीरोग।
विरुझना—अक्रि० उलझना।
विरुझाना—अक्रि० उलझाना, बहल जाना। देखो 'विरुझाना'।
विरुद—पु० गुणगान। यश।
विरुदावली—स्त्री० विस्तारपूर्वक यश इ० का वर्णन।
विरुद्ध—वि० विपरीत, उलटा, प्रतिकूल।
विरुद्धता—स्त्री० प्रतिकूलता, विपरीतता।
विरूढ़—वि० अङ्कुर निकला हुआ। चढ़ा हुआ।
विरूप—वि० परिवर्तित। बदसूरत। उलटा।
विरूपाक्ष—पु० शिवजी या उनका एक गण। वि० डरावनी आँखोंवाला।
विरेचक—पु० दस्तावर।
विरेचन—पु० जुलाब।
विरोचन—पु० सूर्य। अकवन। चन्द्रमा।
विरोध—पु० प्रतिकूलता, शत्रुता, अनबन, अनैक्य।
विरोधना—सक्रि० विरोध करना।
विरोधाभास—पु० एक काव्यालङ्कार 'जहँ विरोध सो जानिये, साँच विरोध न होय। भू०
विरोधी—वि० विरोध करनेवाला, शत्रु।
विरोपण—पु० पौधा रोपना। लेप चढ़ाना।
विरोहण—पु० एक जगहसे हटाकर दूसरी जगह लगाना।
विलंघन—पु० उपवास करना। किसी चीजसे परहेज करना। लाँघना।
विलंघित—वि० पराजित। विफल।
विलंब—पु० देर।
विलंबना—अक्रि० देर करना। विरमना।
विलंबित—वि० जिसमें देर हुई हो। लटकता हुआ।
विलंभ—पु० दान, भेंट। उदारता।
विलक्षण, विलच्छन—वि० अद्भुत, श्रेष्ठ, असाधारण।
विलखना—अक्रि० ताड़ जाना। दुःखित होना।
विलग, विलगाना—दे० 'विलग', 'विलगाना'।
विलपना—अक्रि० विलाप करना।
विलम—पु० देर।
विलय—पु० नाश। मृत्यु।
विलसना—अक्रि० शोभित होना, आनन्द मनाना।
विलाप—पु० रुदन।
विलायत—पु० पराया देश, विदेश। मुसलमानोंका देश ( भू० ४७ )। अंग्रेजोंका देश।
विलायती—वि० विदेशी।
विलास—पु० क्रीड़ा। सुखभोग। हाव भाव। अङ्गसञ्चालन। हिलना डुलना ( दे० 'बिलास' )।
विलासिनी—स्त्री० मनोहर चेष्टाओंवाली युवती। वेश्या।
विलासी—पु० मौजी। कामी। आरामतलब।
विलिप्त—वि० लिपा पुता हुआ।
विलीक—वि० व्यलीक, अनुचित।
विलीन—वि० निमग्न, विलुप्त, नष्ट।
विलुलित—वि० हिलता हुआ,लहराता हुआ(ब्रज०४४)।
विलेप—पु० लेप, उबटन, गारा।
विलेशय—पु० बिलमें रहनेवाले जीव, सर्प इ०।
विलोकन—पु० देखना।
विलोकना—सक्रि० देखो 'बिलोकना'।
विलोचन—पु० नेत्र।
विलोड़ना—सक्रि०मथना। हिलाना। अस्तव्यस्त करना।
विलोड़ित, विलोडित—वि० मथा गया। पु० छाछ।
विलोना—सक्रि० देखो 'विलोड़ना'।
विलोप—पु० नाश। कोई वस्तु उड़ाकर भागना। विघ्न, हानि।
विलोपना—सक्रि० लोप करना। उड़ाकर भागना। विघ्न डालना।
विलोपी—वि० नष्ट करनेवाला, लोप करनेवाला।
विलोभन—पु० प्रलोभन, लोभ दिखाना।
विलोम—वि० उलटा। पु० सर्प। स्वरका उतार।
विलोल—वि० अस्थिर, चञ्चल, सुन्दर।
विलौर—पु० एक प्रकारका बहुमूल्य पत्थर।
विल्व—पु० श्रीफलका वृक्ष।
विल्वपत्र—पु० बेलकी पत्ती।
विवंधक—पु० रुकावट डालनेवाला। कब्ज।
विव—वि० देखो 'विवि'।
विवक्षा—स्त्री० बोलने या कहनेकी इच्छा। मतलब।

विवक्षित—वि० अपेक्षित, अभिलषित ।
विवदना—अक्रि० विवाद करना ।
विवर—पु० गुफा, छिद्र, बिल ।
विवरण—पु० हाल, ब्यौरा, व्याख्या ।
विवरना—दे० 'विवरता' ।
विवर्जित—वि० वञ्चित । मना किया हुआ ।
विवर्ण—वि० जिसका रंग उतर गया हो । श्रीहत । नीच । पु० एक भाव।
विवर्त—पु० चक्र, भँवर ।
विवर्तन—पु० परिवर्तन ।
विवर्तनशील—वि० बदलनेवाला, परिवर्तनशील ।
विवर्तित—वि० बदला हुआ । उखड़ा हुआ ।
विवर्द्धित—वि० बढ़ा हुआ ।
विवस्त्र—वि० वस्त्रहीन, नङ्गा ।
विवश, विवस—वि० लाचार, परवश ।
विवसता—स्त्री० बेबसी, लाचारी ।
विवसना—वि० स्त्री० नङ्गी, वस्त्ररहित नारी ।
विवाद—पु० झगड़ा, तर्क, बहस ।
विवादास्पद—वि० विवादमय, विवादके योग्य ।
विवादीस्वर—पु० वह स्वर जिसका किसी दूसरे स्वरके साथ मेल न हो सके ।
विवाह—पु० शादी ।
विवाहना—सक्रि० शादी करना ( उदे० 'अवगाह' ) ।
विवाहित—वि० जिसकी शादी हो चुकी हो ।
विवाही—वि० स्त्री० विवाहित ।
विवाह्य—वि० विवाह करने योग्य ।
विवि—वि० देखो 'बिबि' ( व्रज० २३ ) ।
विविक्त—वि० परित्यक्त । पाक । पु० संन्यासी ।
विविध—वि० तरह तरहका, कई प्रकारका ।
विविर—पु० देखो 'विवर' ।
विवृत—वि० खुला या फैला हुआ ।
विवृतोक्ति—स्त्री० एक काव्यालङ्कार ।
विवेक—पु० भले बुरेका ज्ञान, बुद्धि ।
विवेचन—पु० व्याख्या, तत्वानुसन्धान, निर्णय ।
विव्वोक—पु० एक हाव ।
विश—स्त्री० कन्या । पु० पौनार । चाँदी ।
विशद—वि० साफ, सुन्दर । सफेद । विस्तृत, व्यापक ।
विशांपति—पु० नृपति, राजा ।
विशारद—वि० दक्ष, पण्डित । प्रसिद्ध ।
विशाल—वि० सुविस्तृत, बहुत बड़ा, विख्यात ।
विशालाक्षी—स्त्री० बड़े नेत्रोंवाली स्त्री, [
विशिख—पु० बाण ।
विशिष्ट—वि० विशेषतायुक्त, संयुक्त, विलक्षण [
विशिष्टता—स्त्री० विशेषता ।
विशीर्ण—वि० शुष्क, वृद्ध, जीर्ण ।
विशुद्ध—वि० निर्मल, खालिस, सच्चा ।
विशुद्धि—स्त्री० दोषरहित होना । पवित्रता ।
विशूचिका—स्त्री० हैजा ।
विशृंखल—वि० शृङ्खलाहीन, उच्छृङ्खल ।
विशृंखलता—स्त्री० क्रमहीनता, बन्धनहीनता,
विशेष—वि० देखो 'बिसेख' । पु० भेद, [
नियम । सार, तत्व, अधिकता ।
विशेषज्ञ—पु० विशेष ज्ञानवाला, तत्वज्ञ ।
विशेषण—पु० विशेषता बतलानेवाला गुणवाचक
विशेषता—स्त्री० खासपन, खूबी ।
विशेषोक्ति—स्त्री० एक काव्यालङ्कार 'हेतु जदपि तऊ जहाँ न कारज होय ।'
विशेष्य—पु० वे शब्द जिनके साथ विशेषण आता
विशोक—वि० शोकरहित । पु० अशोक वृक्ष ।
विशोषण—पु० भलीभाँति सोखना ।
विश्—स्त्री० कन्या । प्रजा ।
विश्रंभ—पु० विश्वास, प्रेम, कलह । वध ।
विश्रब्ध—वि० विश्वस्त । निर्भीक । शान्त ।
विश्रांत—वि० जो आराम कर चुका हो ।
विश्रांति—स्त्री० आराम ।
विश्राम—पु० आराम । थकावट दूर करना । ०८
विश्री—वि० शोभाविहीन ( ज्यो० ४५ ) । [ ९५।
विश्रुत—वि० सुना हुआ, विख्यात ।
विश्लथ—वि०जो विशेष शिथिल हो गया हो,
विश्लिष्ट—वि० अलग अलग किया हुआ, खिला
मुक्त, ढीला । [पल्लव
विश्लेष—पु० वियोग 'दैव ! जीवनभरका विश्ले
विश्लेषण—पु० अङ्गों या अंशोंको पृथक् पृथक्
विश्वंभर—पु० विश्वपोषक, परमात्मा । [ विकलन
विश्व—पु० संसार, ब्रह्माण्ड । [विषयोंका वर्णन हो
विश्वकर्मा—पु० बढ़ई, राज, ब्रह्मा ।
विश्वकामिनी—स्त्री० विश्वसत्ता, प्रकृति ।
विश्वकोश,-ष—पु० वह ग्रन्थ जिसमें सभी प्रकारके

विश्वजनीन—वि० मानव मात्रसे सम्बन्ध रखनेवाला, लोक मङ्गलकारी ।
विश्वजित—वि० विश्वविजयी ।
विश्वदेव—पु० वैदिक कालीन देवता, विश्वदैव ।
विश्वनाथ, विश्वबंधु—पु० शिवजी ।
विश्वपा, विश्वरूप—पु० परमात्मा, ईश्वर ।
विश्वलोचन—पु० चन्द्रमा या सूर्य ।
विश्ववास—पु० दुनिया ।
विश्वविद्यालय—पु० सभी प्रकारकी उच्च विद्याएँ सिखा-
विश्वसनीय—वि० विश्वासके योग्य । [ नेवाली संस्था ।
विश्वसित, विश्वस्त—वि० विश्वसनीय ।
विश्वसृज—वि० विश्वका सर्जन करनेवाला ।
विश्वात्मा—पु० ब्रह्मा, विष्णु, या शिवजी ।
विश्वाधीर,-धिप—पु० ईश्वर ।
विश्वामित्र—पु० एक ऋषि, कौशिक ।
विश्वास—पु० मनकी धारणा, यक़ीन ।
विश्वासघात—पु० धोखा । [ योग्य ।
विश्वासपात्र—पु० विश्वसनीय व्यक्ति । वि० विश्वासके
विश्वासी—वि० विश्वास करनेवाला । देखो 'विसवासी'।
विश्वेदेव—पु० अग्नि । [ विश्वस्त व्यक्ति ।
विषंड—पु० मृणाल ।
विष—पु० ज़हर, गरल । जल 'विषमय यह गोदावरी अमृतनिके फल देति ।' राम० २५१
विषकंठ—पु० शिव । [विषाक्त कर दिया गया हो ।
विषकन्या, विषांगना—स्त्री० वह स्त्री जिसका शरीर
विषघ्न—वि० विष दूर करनेवाला ।
विषण्ण—वि० दु:खित । उजड़ा हुआ ।
विषदंड—पु० पद्मनाल, मृणाल ।
विषधर—पु० साँप ।
विषमंत्र—पु० विष उतारनेका मन्त्र जाननेवाला ।
विषम—वि० भीषण, असमान, विकट, कठिन । पु० सङ्कट । एक अर्थालङ्कार—हितते काज विरूप या 'कहँ यह कहँ वह' होय । भले हेतु उद्यम करै पै अनिष्ट फल होय ।
विषमज्वर—पु० एक प्रकारका पुराना बुखार ।
विषमनयन,-नेत्र—पु० शिवजी ।
विषमबाण—पु० कामदेव ।
विषमवृत्त—पु० असमान चरणोंवाला वृत्त या छन्द ।
विषमायुध—पु० कामदेव ।
विषय—पु० वस्तु, भोग-विलास ( उदे० 'असक्त' ), वासना ( उदे० 'बतास' ) । जनपद । धन ।
विषयक—वि० सम्बन्धी ।
विषयाधिप—पु० माण्डलिक राजा ।
विषयी—वि० विलासी । धनवान् । पु० सांसारिक व्यक्ति,
विषहंता—पु० विष दूर करनेवाला । [ राजा ।
विषांतक—वि० विष दूर करनेवाला । पु० शिवजी ।
विषाक्त—वि० विषयुक्त ।
विषाण—पु० सींग । हाथी या सुअरका दाँत ।
विषाणी—पु० सींगवाला । हाथी । स्त्री० विष, एक
विषाद—पु० उदासी, शोक, दु:ख । [ ओषधि । इमली ।
विषादित—वि० दु:खी, उदास ।
विषानन—पु० सर्प ।
विषुवत्‌रेखा—स्त्री० पृथिवीके चारो ओर दोनों मेरुओंके ठीक बीचमेंसे जानेवाली कल्पित रेखा ।
विषूचिका—स्त्री० हैजा ।
विष्कंभ—पु० नाटकका एक अंश । वृक्ष । बाधा । विस्तार ।
विष्कंभक—देखो 'विष्कंभ' ।
विष्टप—पु० लोक ।
विष्टि—स्त्री० मजदूरी, वेतन । बेगार ।
विष्ठा—स्त्री० मल, बीट ।
विष्णु—पु० त्रिदेवोंमेंसे एक जो विश्वका पालन करने-
विष्णुपदी—स्त्री० गङ्गाजी । [ वाले माने गये हैं ।
विष्फार—पु० धनुषकी टङ्कार ।
विसंवाद—पु० प्रतिज्ञाभङ्ग । धोखा । विरोध । वि०
विस—पु० पौनार । [ विचित्र ।
विसदृश—वि० विरुद्ध, विलक्षण ।
विसम—दे० 'विषम' । [ रत्नावली २८
विसयना—अक्रि० अस्त होना 'सूरज विसये भई सांझ'
विसर्ग—पु० त्याग । दान । मोक्ष । प्रलय । मलत्याग । वियोग । कान्ति । एक वर्ण जो ऊपर नीचे दो बिन्दुओं-के रूपमें लिखा जाता है ।
विसर्जन—पु० विदा, त्याग, समाप्ति, भेजना ।
विसर्पी—वि० फैलनेवाला ।
विसाल—वि० देखो 'विशाल' ।
विसिंचित—वि० सींचा हुआ ।
विसूचिका, विसूची—स्त्री० हैजा ।

विसूरण—पु० चिन्ता, शोक।
विस्तर—पु० विस्तार। समूह। प्रेम। वि० अधिक।
विस्तार—पु० फैलाव।
विस्तारना—सक्रि० फैलाना ( प्रिय० २५४ )।
विस्तीर्ण, विस्तृत—वि० लम्बा-चौडा, विशाल।
विस्फार—पु० फैलाव, विकास। तेजी। चिल्लेका शब्द।*
विस्फारित—वि० विकसित, खुला हुआ, फटा हुआ।
विस्फुलिंग—पु० चिनगारी। [ * चिल्ला।
विस्फोट—पु० फूट पड़नेकी क्रिया, धड़ाका। फोड़ा, घाव।
विस्फोटक—पु० विस्फोट करनेवाला पदार्थ, बम।
विस्मय—पु० आश्चर्य।
विस्मरण—पु० भूल जाना।
विस्मित—वि० आश्चर्यान्वित, चकित।
विस्मृत—वि० भूला हुआ।
विस्मृति—स्त्री० भूल जानेकी क्रिया, विस्मरण।
विस्रंभ—पु० यकीन। वध। प्रेम-कलह।
विस्राम—पु० आराम।
विहंग, विहंगम, विहग—देखो 'बिहङ्ग' (उदे०'पुहुमि')।
विहंगराज—पु० पक्षिराज गरुड़।
विहंडना—दे० 'बिहंडना' ( उदे० 'कजरारा' )।
विहँसना—अक्रि० मुसकाना ( उदे० 'पीर' )।
विहनन—पु० मारना।
विहरण—पु० विहार करना, घूमना। जुदाई।
विहरना—अक्रि० देखो 'बिहरना'।
विहसित—पु० एक तरहका हास्य। वि० हँसता हुआ।
विहाग—पु० एक राग।
विहान—पु० प्रातःकाल।
विहाना—सक्रि० त्यागना, किसीके बिना रहना, विलग होना 'ज्यो न रहात विहात तुम्हैं।' कवि प्रि० २७४
विहायस, विहायसी—पु० आकाश। पक्षी।
विहार—पु० विचरण, क्रीड़ा। विचरनेका स्थान। सङ्घाराम
विहारना—देखो 'बिहारना' ( साकेत ३४८ )।
विहारी—पु० विहार करनेवाला, श्रीकृष्ण।
विहास—पु० विशिष्ट हास्यपूर्ण हँसी।
विहित—वि० जिसका विधान हो।
विहीन, विहून—वि० रहित ( उदे० 'नौज' )।
विह्वल—वि० व्याकुल।
वीक्षण—पु० देखना। आँख।
वीचि—स्त्री० लहर, मौज। 'किरणोंमें पलनेमें हौले हौले झूलती हुई हँसमुख लह
वीचिमाली—पु० सागर। [
वीची—देखो 'वीचि'।
वीज—पु० शुक्र। तेज। बीज। फल। तत्व।
वीजगणित—पु० गणितका एक प्रकार।
वीजन—पु० पङ्खा। पङ्खा झलना।
वीजोदक—पु० बनौरी।
वीटिका—स्त्री० पानका बीड़ा ( कविप्रि० ७४
वीण, वीणा—स्त्री० एक वाद्ययन्त्र, दो तुम्बेवाला
वीणापाणि, वीणावति, वीणावादिनि—स्त्री०
वीत—वि० छोड़ा हुआ। निवृत्त। रहित।
वीतभय—वि० जिसका भय दूर हो गया हो।
वीतराग—वि० विरक्त।
वीतशोक—वि० जिसने शोक छोड़ दिया हो।
वीथिका, वीथी—स्त्री० दृश्य काव्यका एक भेद।
वीप्सा—स्त्री० व्याप्ति, द्विरुक्ति। एक काव्यालङ्कार
वीर—पु० योद्धा। भाई। पति। लड़का। कुश। साहसी, बहादुर।
वीरकर्मा—पु० वीरतापूर्ण कार्य करनेवाला।
वीरकाम—पु० पुत्रेच्छु।
वीरगति—स्त्री० युद्धमें लड़कर मरनेपर प्राप्त
वीरता—स्त्री० शौर्य, वीरत्व। [
वीरधन्वा—पु० कामदेव।
वीरप्रसू, वीरमाता—स्त्री० वीर पुत्र उत्पन्न ने
वीरलोक—पु० स्वर्ग। [
वीरव्रत—वि० दृढ संकल्प।
वीरशय्या—स्त्री० रणक्षेत्र।
वीरसू—देखो 'वीरप्रसू'।
वीरा—स्त्री० वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हों।
वीरान—वि० उजड़ा हुआ, शोभाहीन। [
वीराना—पु० ऊजड़ स्थान।
वीरासन—पु० बैठनेकी एक मुद्रा।
वीरुध—स्त्री० लता।
वीर्य—पु० शुक्र। शौर्य, पुरुषार्थ, पराक्रम।
वुराना—अक्रि० उराना, समाप्त होना ( वि० ४२ )।
वृंत—पु० फल इ० की डण्ठी।
वृंद—पु० झुण्ड, एक मुहूर्त।

ंदा—स्त्री० राधिका, तुलसी ।
वृंदारक—पु० देवता ।
वृंदावन—पु० मथुराके पासका एक वन ।
वृंहण—पु० हाथियोंकी चिंघाड़ ।
वृक—पु० भेड़िया, सियार ।
वृकदंश, वृकारि—पु० कुत्ता ।
वृकोदर—पु० भीमसेनका एक नाम ।
वृक्ष—पु० पेड़, तरु, द्रुम ।
वृक्षक—पु० छोटा वृक्ष ।
वृक्षराज—पु० पीपल ।
वृजन—पु० संग्राम । नीचकर्म । शक्ति । आकाश । शत्रु ।
वृजन्य—पु० सीधा सादा मनुष्य ।
वृजिन—पु० दुःख, पाप, रुधिर, चर्म ।
वृत्त—पु० सम्वाद, कथा, वृत्ति, आचार, चरित्र, घेरा, मण्डल । वि० गोल वर्तुल, जीता हुआ, घटित, दृढ़, [ उत्पन्न ।
वृत्तखंड—पु० गोलाईका भाग, मेहराव ।
वृत्तगंधि—स्त्री० गद्यका एक भेद ।
वृत्तचूड़—वि० मेहराबदार ( –झरोखे, ज्यो० १ ) ।
वृत्तबंध—पु० छन्दोबद्ध वाक्य ।
वृत्तांत—पु० हाल, विवरण, प्रस्ताव, प्रकिया ।
वृत्ति—स्त्री० जीविका, पेशा, वज़ीफ़ा, हाल, व्यवहार, स्वभाव, एक संहारक अस्त्र । सूत्रकी व्याख्या ।
वृत्यनुप्रास—पु० एक काव्यालङ्कार ।
वृत्र—पु० मेघ । शत्रु । एक पहाड़ । अन्धकार । एक [ दैत्य ।
वृत्रघ्न, वृत्रहा, वृत्रारि—पु० इन्द्र ।
वृत्रघ्नी—स्त्री० सरस्वती नदी 'वृत्रघ्नीका वह जनाकीर्ण उपकूल आज कितना सूना' कामायनी १६०
वृथा—क्रिवि० व्यर्थ ही । वि० व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।
वृथामांस—पु० किसी देवी या देवताको चढ़ाया हुआ [ मांस ।
वृद्ध—वि० बूढ़ा या पुराना । पु० बूढ़ा मनुष्य ।
वृद्धता—स्त्री०, वृद्धत्व—पु० बुढ़ापा, वार्द्धक्य । [ पांडित्य ।
वृद्ध प्रपितामह—पु० पिताका परदादा ।
वृद्धांत—पु० सम्मान्य व्यक्ति ।
वृद्धि—स्त्री० बढ़ती, अभ्युदय, अधिकता ।
वृश्चिक—पु० बिच्छू, एक राशि ।
वृष—पु० शत्रु । बैल । साँड़ । चूहा । गेहूँ । पति । एक [ राशि ।
वृषकेतन—देखो 'वृषकेतु' ।
वृषण—पु० इन्द्र, बैल । अण्डकोष ।
वृषभ—पु० बैल ।
वृषभकेतु,-ध्वज,-ध्वज—पु० शिवजी ।
वृषभानु—पु० राधिकाके पिताका नाम ।
वृषल—पु० शूद्र, पापी, घोड़ा । चन्द्रगुप्त मौर्य ।
वृषलांछन—पु० महादेव । [ पुंश्चली ।
वृषली—स्त्री०—शूद्रा, अविवाहित रजस्वला, रजस्वला,
वृषलीपति—पु० रजस्वला कन्यासे विवाह करनेवाला [ व्यक्ति ।
वृषवाहन—पु० शिवजी ।
वृषादित,-दित्य—पु० वृषराशिके सूर्य (बि० १५२) ।
वृषी—पु० मयूर ।
वृषोत्सर्ग—पु० मृत व्यक्तिके नामपर साँड़ इ० दागना ।
वृष्टि—स्त्री० वर्षा, बौछार ( उ० ब्गङ्ग-बाणोंकी वृष्टि ) ।
वृष्णि—पु० मेघ, श्रीकृष्ण, इन्द्र, यदुकुल ।
वृहत्—वि० बड़ा ।
वृहन्नला—स्त्री० अज्ञातवासके समयका अर्जुनका नाम ।
वृहस्पति—पु० देवताओंके गुरु ।
वेकट—पु० जौहरी, विदूषक ।
वेक्षण—पु० गौरसे देखना या ढूँढना ।
वेग—पु० प्रवृत्ति । शीघ्रता । प्रवाह । तेज़ी । वीर्य ।
वेगधारण,-निरोध,-रोध—पु० मल इ० का वेग [ रोकना ।
वेगवान्—वि० शीघ्रगामी ।
वेगी—वि० अधिक वेगवाला, वेगवान् ।
वेणि,वेणी—स्त्री० चोटी, पानीकी धारा ।
वेणिका—स्त्री० चोटी ।
वेणु—पु० बाँस, बाँसुरी ।
वेणुका—स्त्री० बाँसुरी ।
वेत—पु० बत ।
वेतन—पु० तनख्वाह, पारिश्रमिक ।
वेतनभोगी—पु० नौकरी करनेवाला ।
वेतस—पु० बड़वानल । बेंत ।
वेतसी—स्त्री० बेंत ।
वेताल—पु० एक भूतयोनि । पौरिया । एक छन्द ।
वेत्ता—पु० ज्ञाता, जानकार ।
वेत्र—पु० बेत ।
वेत्रधर,वेत्री—पु० पहरेदार ।
वेत्रासन—पु० बेतकी बनी हुई कुरसी इ० ।
वेद—पु० श्रुति । यथार्थ ज्ञान ।
वेदन—पु० व्यथा, पीड़ा उर्दू० 'निर्मना' ) ।

वेदना—स्त्री० तकलीफ।
वेदनीय—वि० तकलीफ देनेवाला। ज्ञातव्य।
वेदवाक्य—पु० वेदका वाक्य। पूर्णतः प्रामाणिक बात। ऐसा कथन जिसकी सत्यताके सम्बन्धमें कोई सन्देह न किया जा सकता हो।
वेदव्यास—पु०महाभारत आदिके रचयिता व्यासजी।
वेदांग—पु० शिक्षा, कल्प इ० वेदोंके छः अङ्ग।
वेदांत—पु० अध्यात्मशास्त्र, उत्तरमीमांसा।
वेदांती—पु० दार्शनिक।
वेदि, वेदिका, वेदी—स्त्री० हवनादिके लिए तैयार की गयी भूमि, हवनपीठ।
वेदित—वि० बतलाया हुआ।
वेद्य—वि० स्तुत्य। प्राप्य। ज्ञातव्य।
वेध—पु० छेद। छेदनेकी क्रिया। यन्त्रादिसे नक्षत्र ग्रह इ० देखना। विष्णु। विद्वान्, सूर्य इ०।
वेधक—पु० वेधने या छेद करनेवाला।
वेधनी—स्त्री० वेधनेका औज़ार।
वेधशाला—स्त्री० वह जगह जहाँ ग्रहादिकोंका पर्यवलोकन करनेके लिए उपयुक्त साधन विद्यमान हों।
वेधा—पु० ब्रह्मा, प्रजापति, विष्णु, सूर्य।
वेधालय—पु० वह स्थान जहाँ नक्षत्रोंकी गति आदि देखनेका यन्त्र रखा हो।
वेपथ, वेपथु—पु० कम्प ( व्रज० ७६ )।
वेपन—पु० कम्पन।
वेला—स्त्री० समय,समुद्रकी लहर या किनारा। मर्यादा
वेलि, वेली—स्त्री० लता, बेल।
वेश—पु० पोशाक पहननेका तरीका। पोशाक। खेमा।
वेशधारी, वेषधारी—पु० वेश बनानेवाला, ढोंगी।
वेशवधू, वेशवनिता, वेश्या—स्त्री० गणिका, रण्डी।
वेश्म—पु० घर, गृह।
वेष—पु० नेपथ्य। देखो 'वेश'।
वेष्टन—पु० लपेटनेकी क्रिया। पगड़ी, मुकुट। बेठन।
वेष्टित—वि० चारों तरफसे घिरा हुआ, लपेटा हुआ।
वेसर—पु० गधा।
वै—अ० निश्चय सूचक शब्द। वि० दो (उर्दू० 'कनी')।
वैकट्य—पु० कठिनाई।
वैकल्पिक—वि० जो इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके, सन्देहपूर्ण।
वैकल्य—पु० घबराहट, त्रुटि, टेढ़ापन।
वैकुंठ—पु० स्वर्ग, विष्णु।
वैक्रम, वैक्रमीय—वि० विक्रम सम्बन्धी।
वैक्रिय—वि० जो विक्रीके लिए हो।
वैक्लव्य—पु० व्याकुलता ( गुलाब ३८ )।
वैखानस—पु० वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी।
वैचक्षण्य—पु० चातुर्य, दक्षता।
वैचित्र्य—पु० विलक्षणता, विचित्रता।
वैजन्य—पु० निर्जनता।
वैजयंत—पु० इन्द्रका महल ( साकेत ६ ), पताका, इन्द्र। गृह, पताका।
वैजयंती—स्त्री० पताका। देखो 'बैजंती'।
वैजात्य—पु०विजातीय होनेका भाव। कामुकता, वै...
वैज्ञानिक—वि० विज्ञान-सम्बन्धी। पु०विज्ञान-वि...
वैतनिक—वि० वेतन लेकर काम करनेवाला।
वैतरणी—स्त्री० एक कल्पित नदी।
वैताल, वैतालिक—पु० स्तुति पाठ करनेवाला।
वैद—पु० वैद्य।
वैदक, वैद्यक—पु० आयुर्वेद, चिकित्साशास्त्र।
वैदग्ध्य—पु० चातुर्य, नैपुण्य, पाण्डित्य।
वैदर्भी—स्त्री० एक काव्य-रीति।
वैदिक—वि० वेदसम्बन्धी, वेदविहित। पु० वेदोक्तकर्म करनेव...
वैदूर्य—पु० रत्नविशेष।
वैदेशिक—वि० विदेश सम्बन्धी, विदेशका।
वैदेही—स्त्री० जानकी, सीता।
वैद्य—वि० चिकित्सक, विद्वान्।
वैद्रुम—वि० मूँगेका।
वैध—वि० विधि-विहित, क़ानूनके अनुकूल।
वैधव्य—पु० रँड़ापा।
वैनतेय—पु० विनता-पुत्र गरुड़।
वैपरीत्य—पु० प्रतिकूल होनेका भाव।
वैपार—पु० वाणिज्य, व्यापार।
वैफल्य—पु० असफलता।
वैभव—पु० ऐश्वर्य, शक्ति, महत्ता।
वैभवशाली—वि० सम्पत्तिवाला, श्री-सम्पन्न, मालदार
वैमनस्य—पु० मनमुटाव, द्वेष।
वैमानिक—पु० विमानमें बैठकर आकाश-यात्रा करनेवाला, गगनविहारी।
वैमात्र, वैमात्रेय—वि० विमातासे उत्पन्न,सौतेला। पु० सौतेला भाई।
वैमुख्य—पु० विमुखता, प्रतिकूलता।

वैयाकरण—पु० व्याकरणका विद्वान् ।
वैर—पु० शत्रुता ।
वैराग,-ग्य—पु० विरक्ति ।
वैरागी—पु० विरक्त, साधु (उदे० 'वंग') ।
वैराज,-ज्य—पु० दो राजाओंका संयुक्त-शासन । संयुक्त शासनवाला देश । विदेशी शासन ।
वैराजलोक—पु० ब्रह्मलोक, सत्यलोक ( विराज ब्रह्म ) ।
वैरि, वैरी—पु० शत्रु, दुश्मन ।
वैरिता—स्त्री० दुश्मनी ।
वैरूप्य—पु० विरूपता, रूपका बदल जाना ।
वैल, वैल्व—पु० श्रीफल ।
वैलक्षण्य—पु० विचित्रता, विलक्षणता, अनोखापन ।
वैवर्ण, वैवर्ण्य—पु० विवर्णता, मलिनता ।
वैवाहिक—वि० विवाहविषयक । पु० समधी ।
वैशंपायन—पु० व्यासके एक शिष्यका नाम ।
वैशाख—पु० चैत्रके बादका महीना । मथानीका डण्डा ।
वैशिष्ट्य—पु० विशेषता ।
वैशेषिक—पु० कणादि-प्रवर्तित एक दर्शन ।
वैश्य—पु० वर्ण-विशेष, बनिया, वणिक् ।
वैश्रवण—पु० कुबेर । शिवजी ।
वैश्वानर—पु० अग्नि, चित्रकवृक्ष ।
वैषम्य—पु० असमता, विषमता ।
वैष्णव—वि० विष्णु सम्बन्धी । पु० विष्णुभक्त, एक सम्प्रदाय ।
वैसा—वि० उस तरहका ।
वैसे—क्रिवि० उस तरह । अ० यों ।
वोक—अ० तरफ, ओर ( उदे० 'निर्तना' ) ।
वोछा—वि० ओछा, नीच ( कबीर १७३ ) ।
वोट—पु० राय, मत ।
वोटर—पु० मत देनेवाला ।
वोड़ना—सक्रि० ( हाथ इ० ) फैलाना, पसारना 'दास दान तोपै चहै दग पल अँजुली वोड़ ।' रतन० २७
वोद—वि० गीला ।
वोदर—पु० उदर 'जग जाके वोदर बसै तिहि तूँ ऊपर लेय ।' दास १८
वोद्र—देखो 'वोदर' ( बीजक १०४, १२० ) ।
वोर—स्त्री० ओर, तरफ(रतन०३१)। अन्त (सूबे०३८२)।
वोहित्थ—पु० पोत ।
व्यंग, व्यंग्य—पु० गूढार्थ, उलटा या विशिष्ट अर्थ ।
व्यंजक—पु० व्यञ्जनासे अर्थको बतलानेवाला शब्द । वि० प्रकाश करनेवाला, सूचक ( पभू० ४४ ) ।
व्यंजन—पु० पका हुआ खाद्य पदार्थ । चिह्न । 'क' से 'ह' तकके वर्ण । व्यक्त होनेका भाव ।
व्यंजना—स्त्री० व्यक्त करनेकी क्रिया, प्रकटीकरण, चित्रण । एक शक्ति जिससे शब्दोंका विशिष्ट अर्थ निकलता है ।
व्यंजित—वि० प्रकट किया गया, सूचित ( पभू० ५१ ) ।
व्यक्त—वि० स्पष्ट, प्रकट, बड़ा ।
व्यक्ति—स्त्री० प्रकटीकरण, इकाई । पु० मनुष्य ।
व्यग्र—वि० उद्विग्न, परेशान, उलझा हुआ ।
व्यजन—पु० पङ्खा ( उदे० 'ताजना' ) ।
व्यतिक्रम—पु० सिलसिलेकी गड़बड़ी, विघ्न ।
व्यक्तिगत—वि० एक व्यक्तिसे सम्बद्ध, अपना ।
व्यनिचार—पु० पापाचार ।
व्यतिपात—पु० उपद्रव । ज्योतिष सम्बन्धी एक योग ।
व्यतिरिक्त—क्रिवि० अलावा । वि० विभिन्न ।
व्यतिरेक—पु० वृद्धि, अतिक्रम, भेद, अभाव । एक काव्यालङ्कार-'जहँ कछु बढ़ उपमेयमें उपमाते गुण देख ।'
व्यतीत—वि० बीता हुआ ।
व्यतीतना—अक्रि० बीतना, कटना ( सूबे० ३१ ) ।
व्यतीपात—पु० भारी उपद्रव, ज्योतिषमें एक योग ।
व्यतीहार—पु० बदला । आपसमें गालीगलौज करना ।
व्यत्यय, व्यत्यास—पु० बाधा । सिलसिलेमें हेरफेर ।
व्यथा—स्त्री० पीड़ा । डर । क्लेश ।
व्यथित—वि० पीड़ित, दुःखित ।
व्यपदेश—पु० निन्दा । कपट ।
व्यभिचार—पु० दुराचार, दुष्कृत्य, परस्त्री गमन ।
व्यभिचारी—पु० दुरुपयोग करनेवाला, दुराचारी 'अहंमन्य वे, मूढ़, अर्थबलके व्यभिचारी' युगवाणी ४३ ।
व्यभिचारी भाव—पु० वे भाव जो रसको विशेषरूपसे पुष्ट कर स्थायी भावमें लीन हो जाते हैं । इनकी संख्या ३३ है । सचारी भाव ।
व्यय—पु० खर्च, खपत, नाश, क्षय ।
व्ययी—वि० बहुत खर्च करनेवाला ।
व्यर्थ—क्रिवि० यों ही, नाहक । वि० निकम्मा, निष्फल, निरर्थक ।
व्यलीक—पु० दुःख, अपराध, छल । वि० दुःखदायी अप्रिय, विचित्र ।
व्यवकलन—पु० घटाना, बाकी निकालना ।
व्यवच्छिन्न—वि० काटा हुआ, अलग किया हुआ ।

व्यवच्छेद—पु० भेद, पार्थक्य, निवृत्ति, विभाग । [ विच्छेद ।
व्यवदान—पु० परिष्कार, सफाई ।
व्यवधान—पु० आड़, परदा, बीचमें आनेवाली चीज़,
व्यवसाय—पु० उद्यम, रोज़गार, प्रयत्न । मतलब ।
व्यवसायी—पु०जो व्यवसाय करता हो,व्यापारी,रोजगारी ।
व्यवस्था—स्त्री० प्रबन्ध, शास्त्रमत, क़ानून ।
व्यवस्थाता, व्यवस्थापक—पु० प्रबन्धक, शास्त्रीय मत बतानेवाला ।
व्यवस्थित—वि० व्यवस्थायुक्त । नियमानुकूल ।
व्यवहार—पु० बरताव । रोज़गार । महाजनी । प्रयोग ।
व्यवहारिक—वि० व्यवहारके योग्य ।
व्यवहार्य—वि० काममें लाने योग्य ।
व्यवहित—वि० छिपा हुआ,जिसके आगे कोई आड़ हो ।
व्यवहृत—वि० काममें लाया हुआ । जिसका व्यवहार शास्त्रानुमोदित हो ।
व्यवाय—पु० बाधा । फल । सम्भोग । परदा । तेज ।
व्यष्टि—स्त्री० समाजसे पृथक् व्यक्ति ।
व्यसन—पु० विषयानुराग, शौक़, प्रवृत्ति । निष्फल प्रयत्न । कष्ट । पतन ।
व्यसनी—वि० जिसे किसी बातका व्यसन हो, विषयी, शौक़ीन । [ *उलझा हुआ ।
व्यस्त—वि० फेंका हुआ, उद्विग्न, व्याकुल, व्यग्र,*
व्याकरण—पु० शब्दोंके शुद्ध रूप और प्रयोगके नियमोंका निरूपण करनेवाला शास्त्र ।
व्याकीर्ण—वि० सर्वत्र फैलाया हुआ ।
व्याकुल—वि० घबराया हुआ, व्यग्र, दुःखी ।
व्याकृति—स्त्री० रूपपरिवर्तन । व्याख्या करनेकी क्रिया ।
व्याख्या—स्त्री० स्पष्टार्थ, टीका, उपदेश ।
व्याख्यात—वि० जिसकी व्याख्या की गयी हो ।
व्याख्याता—पु० व्याख्या करनेवाला,व्याख्यान देनेवाला ।
व्याख्यान—पु० वक्तृता, भाषण,वक्तृतादिद्वारा विषयका स्पष्टीकरण ।
व्याघात—पु० विघ्न, प्रहार । 'एकै कारज साधिये करि जहँ भिन्न उपाय । या विरुद्ध कारज करत' एकै वस्तु [ लखाय ।'
व्याघ्र—पु० बाघ, शेर ।
व्याज—पु० सूद । बहाना, कपट । देर ।
व्याजनिंदा—स्त्री० एक काव्यालङ्कार—जहाँ स्तुतिके बहाने किसीकी निन्दा की जाय ।
व्याजस्तुति—स्त्री० एक काव्यालङ्कार 'दीखै [जदपि तदपि ब..
व्याजी—स्त्री० घलुआ ।
व्याजोक्ति—स्त्री० एक काव्यालङ्कार 'भेद ।छ . जहँ उक्ति व्याजमय होय ।'
व्याड़—त्रि० छली, धूर्त । पु० व्याघ्र । सर्प ।
व्यादान—पु० फैलाव, खोलना, बाना ।
व्याध—पु० शिकारी । दुष्ट ।
व्याधि,-धी—स्त्री० रोग ( उदे० 'असाध' ), .
व्याधित—वि० रोगग्रस्त ।
व्यान—पु० शरीरस्थ पाँच वायुओंमेंसे एक ।
व्यापक—वि० विस्तृत, फैला हुआ । ढँकनेवाला ।
व्यापत्ति, व्यापद्—स्त्री० मौत ।
व्यापन—पु० फैलाव ।
व्यापना—दे० 'व्यापना' ।
व्यापन्न—वि० विपत्तिमें पड़ा हुआ । मरा हुआ ।
व्यापादन—पु० हत्या, नाश, परपीड़नका उपाय ।
व्यापार—पु० तिजारत । काम, घटना, वृत्त । मदद
व्यापारी—वि० व्यापार सम्बन्धी । व्यवसायी । पु०
व्यापी—वि० व्यापक, फैला हुआ । [साथ करने
व्याप्त—वि० फैला हुआ, भरा हुआ । पूर्ण ।
व्याप्ति—स्त्री० सर्वत्र फैला हुआ होनेका भाव, वि.
व्याप्य—वि० व्याप्त करनेके लायक़ । [एक
व्यामोह—पु० अज्ञान, व्याकुलता ।
व्यायाम—पु० मेहनत, कसरत, मल्लका कार्य ।
व्यायोग—पु० रूपका एक भेद ।
व्याल—पु० सर्प (उदे० 'फुंकारना')। शेर । दुष्ट हाथी
व्यालिक—पु० सँपेरा । [ वि० दुष्ट
व्यालू—पु० रातका भोजन ।
व्याव—पु० विवाह ।
व्यावर्तन—पु० परिवर्तन, उलटफेर ।
व्यावहारिक—वि० व्यवहार विषयक । [*निषिद्ध ।
व्यावृत्त—वि० खंडित, निवृत्ति, मनोनीत, ढँका हुआ, *
व्यासंग—पु० प्रगाढ़भक्ति, मनोयोग, अटल अनुराग, तल्लीनता ।
व्यास—पु० वृत्तके केन्द्रसे होती हुई दोनों ओर परिधिपर समाप्त होनेवाली रेखा, विस्तार । कृष्णद्वैपायन ।
व्यास-समास—पु० घटाना-बढ़ाना, काट-छाँट ।
व्याहत—वि० व्यर्थ, निषिद्ध । रुका हुआ ।

व्याहत—वि० कहा हुआ।
व्युत्पत्ति—स्त्री० शब्दादिका विशेष उद्भव, मूलरूप, उत्पत्तिस्थान, शास्त्रज्ञान, पांडित्य।
व्युत्पन्न—वि० संस्कृत, विचक्षण, पढ़ित।
व्युपदेश—पु० धोखेबाजी।
व्यूढ़—वि० दृढ़। समान। पु० विवाहित व्यक्ति।
व्यूत—वि० बुना हुआ।
व्यूह—पु० वृन्द, समूह, रचना, सेना, सैन्य-विन्यास, [नतीजा।
व्यूहन—पु० व्यूह बनानेकी क्रिया।
व्योम—पु० आकाश, बादल, जल।
व्योमकेश—पु० शिवजी।
व्योमगमनी—स्त्री० आकाशमें उड़नेकी विद्या।
व्योमचर,-चारी—पु० पक्षी, देवता, ग्रहादि।
व्योमयान—पु० हवाई जहाज़।
व्योमरत्न—पु० सूर्य।
व्योमस्थली—स्त्री० पृथिवी।
व्रज—पु० समूह। गमन। एक स्थान।
व्रजन—पु० जाना।
व्रजनाथ,-पति—पु० श्रीकृष्ण।
व्रजभाषा—स्त्री० व्रजके आसपास बोली जानेवाली भाषा।
व्रजमंडल—पु० व्रज और उसके आसपासका स्थान।
व्रजमोहन,-राज, वल्लभ—पु० श्रीकृष्ण।
व्रजांगना—स्त्री० व्रजकी स्त्री, गोपी, राधा।
व्रजेश्वर—पु० श्रीकृष्ण।
व्रज्या—स्त्री० भ्रमण। रंगभूमि। आक्रमण।
व्रण—पु० फोड़ा, जख्म।
व्रत—पु० नियम, दृढ़ संकल्प, उपवास।
व्रतचारी,-धर—पु० व्रत धारण करनेवाला।
व्रतति, व्रतती—स्त्री० चँवरदार लता, फैलाव, विस्तार।
व्रतसंग्रह—पु० यज्ञोपवीतके समयकी दीक्षा।
व्रतादेश—पु० यज्ञोपवीत।
व्रतिक, व्रती, व्रत्य—पु० व्रत करनेवाला।
व्राज—पु० गमन। मण्डली। कुत्ता।
व्रात—पु० समूह, भीड़। मनुष्य।
व्रात्य—पु० वह जिसका यज्ञोपवीत न हुआ हो, वह जिसके जात-कर्मादि संस्कार न हुए हों। वर्णशंकर। वि० व्रत सम्बन्धी।
व्रीड़ा—स्त्री० लज्जा।
व्रीहि—पु० चावल, धान।

# श

शंक—स्त्री० सन्देह, भ्रम, डर।
शंकना—अक्रि० शङ्का करना, डरना।
शंकनीय—वि० जिसके सम्बन्धमें शङ्का की जा सके।
शंकर—पु० शिवजी, वर्ण मिश्रण। अद्वैतवादी दार्शनिक शङ्कराचार्य। वि० कल्याणकारक।
शंकरा,-री—स्त्री० पार्वतीजी, एक रागिनी। मजीठ।
शंका—स्त्री० संशय, डर, खटका। एक सञ्चारी भाव।
शंकित—वि० शङ्कायुक्त, भयभीत।
शंकु—पु० कील, खूँटी, बरछा या अन्य नुकीली वस्तु, गाँसी, शिवजी, पाप, ज़हर, एक नाप।
शकुला—स्त्री० सरौता।
शंख—वि० लाख करोड़ पु० लाख करोड़की संख्या, एक निधि, बड़ा घोंघा, कम्बु।
शंखक्षीर—पु० असम्भव बात।
शंखचरी,-चर्ची—स्त्री० ललाट। चन्दनका तिलक।
शंखचूड़—पु० एक दैत्य जिसे कृष्णने मारा था।
शंखधर,-भृत—पु० श्रीकृष्ण, विष्णु।
शंखनख—पु० बाघका नख। घोंघा।
शंखपाणि—पु० हाथमें शङ्ख धारण करनेवाले विष्णु।
शंखलिखित—पु० न्यायी राजा। शङ्ख और लिखित नामके दो स्मृतिकार। वि० दोषसे रहित।
शंखविष, शखिया—पु० संखिया, एक ज़हरीली धातु या उसकी भस्म।
शंखस—पु० शङ्खकी बनी हुई चूड़ी।
शंखिनी—स्त्री० स्त्रियोंका एक भेद। सीप, मुखकी नाड़ी, एक ओषधि, एक देवी। डंकिनी-स्त्री० उन्मादका एक भेद
शंठ—पु० हिजड़ा, अविवाहित व्यक्ति। वि० मूर्ख, जड़
शंड—पु० नपुंसक, साँड।

शंपा—स्त्री० विद्युत् । कटि ।
शंब—पु० इन्द्रका वज्र, बिजली ।
शंबर—पु० समर । जल । वृक्ष-विशेष । एक मृग । एक राक्षस ।
शंबरारि—पु० कामदेव, प्रद्युम्न ।
शंबल—पु० पाथेय । विद्वेष । तट ।
शंबु—पु० घोंघा, छोटा शंख ।
शंबुक,शंबूक—पु० घोंघा । एक शूद्र तपस्वी ।
शंभु—पु० शिवजी । ब्रह्मा ( कविप्रि० ७८ ) ।
शंभुतेज,-बीज—पु० पारा ।
शंभुभूषण—पु० चन्द्रमा ।
शंस—पु० तारीफ । शपथ ।
शंस्य—वि० तारीफके क़ाबिल । अभिलषित ।
शऊर—पु० बुद्धि, तमीज़ ।
शक—पु० सन्देह, भ्रम, भय । एक प्राचीन जाति । संवत् । संवत् चलानेवाला एक राजा ।
शकट—पु० गाड़ी, रथ, एक राक्षस ।
शकटव्यूह—पु० शकटके आकारकी व्यूह-रचना ।
शकटिका,शकटी—स्त्री० छोटा शकट ।
शकठ—पु० मचान ।
शकर—स्त्री० देखो 'शक्कर' ।
शकरकंद—पु० कन्द-विशेष । उसका फल ।
शकरपारा,-पाला—पु० एक मिठाई, एक वृक्ष, या
शकल—स्त्री० सूरत, बनावट, चेष्टा, आकृति । पु० चर्म, छाल । टुकड़ा, 'कैधौं धाय कितहूते शल्यकी शकल यह'-गुलाब ३६ । शक्कर ।
शकाब्द—पु० शालिवाहनका सम्वत् ।
शकुंतला—स्त्री० दुष्यन्त-पत्नी जो मेनकाकी पुत्री थी ।
शकुन—पु० शुभाशुभ-सूचक चिह्न, शुभघड़ी । पक्षी ।
शकुनद्वार—पु० यात्राके समय शुभ और अशुभ दोनो तरहके शकुन होना ।
शकुनि,शकुनी—स्त्री० पक्षी,मादा गौरैया । पु० दुर्योधनका मामा ।
शक्कर—स्त्री० चीनी । खाँड ।
शक्की—वि० ज्यादा शक करनेवाला ।
शक्त—वि० बलवान्, समर्थ, योग्य ।
शक्ति—स्त्री० ताक़त, बल, सामर्थ्य, वश । दुर्गा, माया ।
शक्तिधर,-पाणि—पु० कार्तिकेय ।
शक्तिपूजक—पु०शक्तिकी पूजा करनेवाला,शाक्त, तान्त्रिक ।
शक्तिपूजा—स्त्री० शक्तिकी उपासना ।
शक्तिमत्ता—स्त्री० शक्तिमान् होनेका भाव, प्र
शक्तिमान्,-शाली—वि० प्रबल, बलिष्ठ ।
शक्तिहीन—वि० कमजोर । नपुंसक ।
शक्तु—पु० सत्तू ।
शक्य—वि० सम्भव, होने योग्य ।
शक्र—पु० इन्द्र । कुटज या कोरैयाका पेड़ ।
शक्रचाप—पु० इन्द्र-धनुष ।
शक्रजाल—पु० इन्द्रजाल ।
शक्रजित—पु० मेघनाद ।
शक्रप्रस्थ—पु० 'इन्द्रप्रस्थ' नामक प्राचीन नगर ।
शक्रसुत—पु० जयन्त, बालि, अर्जुन ।
शख्स—पु० व्यक्ति, मनुष्य ।
शख्सियत—स्त्री० व्यक्तित्व ।
शगल—पु० काम-धन्धा ।
शगुन, शगून—पु० शकुन । तिलक ।
शगुनिया—पु० शकुन बतानेवाला ।
शगूफा—पु० फूल, कली । कोई नयी घटना ।
शचि, शची—स्त्री० इन्द्राणी । प्रज्ञा । शतावर ।
शचीपति, शचीश—पु० इन्द्र ।
शजरा—पु०किसी वंशके लोगोंकी क्रमागत सूची,वंश
शठ—वि० दुष्ट, कपटी, ठग, बदमाश । पु० केसर । लोहा, चित्रक । नायकका एक भेद ।
शठता—स्त्री०, शठत्व—पु० दुष्टता, शरारत, ठगी ।
शणसूत्र—पु० तर्पण आदिके निमित्त बनायी हुई कु
शत—वि० सौ । पु० सौकी संख्या । [ अँ
शतक—पु० शताब्द, सौका समूह ।
शतक्रतु—पु० वह व्यक्ति जिसने सौ यज्ञ किये हों, इ
शतखंड—पु० सोना । सुवर्णनिर्मित वस्तु ।
शतघ्नी—स्त्री० एक तरहकी प्राचीन तोप ।
शतदल—पु० कमल । वि० सौ पत्तोंवाला ।
शतद्रु—स्त्री० सतलज नदी ।
शतधा—क्रिवि० सैकड़ों प्रकारसे ।
शतपत्र—पु० कमल । मयूर पक्षी ।
शतपथ—वि०जिसकी बहुतसी शाखाएँ हों । पु०एक ग्रन्थ
शतपद—पु०, शतपदी—स्त्री० गोजर ।
शतपुत्री—स्त्री० सतपुतिया, तरोई ।
शतभिषा—स्त्री० एक नक्षत्र ।
शतमख—पु० इन्द्र । उल्लू ।

शतमन्यु—वि० गुस्सैल । पु० देखो 'शतमख' ।
शतमुख—वि० सौ मुखोंवाला, अनेक मुखोंवाला ।
शतरंगी—वि० स्त्री० सैकड़ों रंगवाली ।
शतरंज—पु० एक खेल ।
शतरंजी—पु० शतरञ्ज खेलनेवाला । स्त्री० बिसात, जिसपर शतरञ्ज खेलते हैं । कई रंगोंवाली दरी ।
शतरूपा—स्त्री० ब्रह्माकी पुत्री । स्वायंभुव मनुकी स्त्री ।
शतशः—क्रिवि० सैकड़ों प्रकारसे ।
शतांश—पु० सौवाँ हिस्साँ ।
शतानंद—पु० एक मुनि । ब्रह्मा । जनकजीके पुरोहित ।
शतानीक—पु० ससुर । बूढ़ा आदमी . एक मुनि ।
शताब्द—पु०, शताब्दी—स्त्री० सौ वर्ष ।
शतावधान—पु० वह व्यक्ति जो एक साथ कई बातोंपर ध्यान दे सके और उन्हें स्मरण रखते हुए क्रमशः कई कार्योंमें भाग लेता चले ।
शतावर—स्त्री० सफेद मूसली, शतमूली ।
शती—स्त्री० सौ ( पद्यों ) का समूह ।
शत्रु—पु० वैरी, रिपु ।
शत्रुघ्न,-मर्दन -हंता,-शत्रुहा—वि०वैरीका नाश करनेवाला । पु० लक्ष्मणके छोटे भाईका नाम ।
शत्रुता,-ताई—स्त्री० रिपुता, वैर ।
शत्रुदमन—पु० शत्रुका दमन करनेवाला, शत्रुघ्न ।
शत्वरी, शमनी—स्त्री० रात ।
शद्रि—स्त्री० विद्युत् । पु० हाथी । मेघ ।
शनि—पु० एक ग्रह, एक दिन ।
शनिप्रिय—पु० नीलम ।
शनैःशनैः—क्रिवि० धीरे धीरे ।
शपथ—स्त्री० सौगन्द, क़ौल, आन ।
शपन—पु० दुर्वचन, गाली । कसम ।
शफ़क़त—स्त्री० प्रेम । दया ।
शफतालू—पु० एक फल, सताल ।
शफर—देखो 'शफरी' ( साकेत १७१, ४०१ ) ।
शफरी—स्त्री० एक तरहकी छोटी मछली ।
शफा—स्त्री० नीरोगता ।
शफाखाना—पु० अस्पताल, दवाखाना ।
शब—स्त्री० रात ।
शबनम—स्त्री० ओस ।
शबनमी—स्त्री० मसहरी ।
शबर—वि० कई रंगोंका । पु० एक वृक्ष । एक नीच [ जाति ।
शबल—वि० कई रंगोंका ।
शबाब—पु० युवावस्था । सुन्दरता ।
शबीह—स्त्री०सादृश्य । सूरतसे ठीक मिलता हुआ चित्र ।
शबोरोज—अ० रात-दिन ।
शब्द—पु० आवाज़, आहट, ध्वनि । लफ्ज । किसी महा- [ त्माके वचन ।
शब्दचित्र—पु० एक शब्दालङ्कार ।
शब्दज—वि० शब्दसे उत्पन्न ।
शब्दप्रमाण—पु० आप्त वाक्य । मौखिक प्रमाण ।
शब्दवेधी,-भेदी—पु० वह जो केवल शब्द सुनकर लक्ष्यपर बाण छोड़े ।
शब्दविद्या—स्त्री०, शब्दानुशासन—पु० व्याकरण ।
शब्दसाधन—पु० शब्दोंके भेद, रूपान्तर तथा व्युत्पत्तिका निरूपण करनेवाला भाग ( व्याकरण ) ।
शब्दहीन—पु० शब्दोंका वह प्रयोग जो आचार्योंद्वारा न हुआ हो ।
शब्दाडंबर—पु० भावाभाव होते हुए भी बड़े बड़े † [ † शब्दोंका प्रयोग ।
शब्दातीत—पु० ईश्वर ।
शब्दालंकार—पु०शब्दोंमें चमत्कार लानेवाला अलंकार ।
शम—पु० शान्ति, निवृत्ति, उपचार, मुक्ति, क्षमा ।
शमन—पु० दमन, शान्त करना, शान्ति, यम । वि० शान्त करनेवाला, 'आओ जीवन-शमन बन्धु, जीवन-धन ।' अनामिका ५२
शमलोक—पु० शान्तिलोक, स्वर्ग ( उदे० 'बटपार' ) ।
शमशेर—स्त्री० खड्ग, तलवार ।
शमा—स्त्री० मोम, मोमबत्ती ।
समादान—पु० बत्ती रखनेका आधार ।
शमित—वि० शान्त किया हुआ ।
शमी—पु० वृक्ष-विशेष । वि० शान्त ।
शम्मा—स्त्री० शमा 'शम्मा है, परवाना है, चूँकि यहाँ दाना है ।' अणिमा १०
शयंडक, शयांडक—पु० गिरगिट ।
शय—स्त्री० प्रेत । वस्तु । पु० नींद । साँप । बिस्तर ।
शयन—पु० सोना, लेटना । शय्या ।
शयनगृह, शयनागार—पु० सोनेका कमरा ।
शयालु—पु० सियार । कुत्ता । निद्रित व्यक्ति ।
शयित—वि० सोया हुआ ।
शयिता—पु० सोनेवाला ।

शय्या—स्त्री० सेज, पलङ्ग, बिछौना।
शय्यादान—पु० मृतकके उद्देश्यसे दिया गया चारपाई, बिस्तरे आदिका दान।
शरंड—पु० लम्पट। चिड़िया। गिरगिट।
शर—पु० बाण, खस, सरकण्डा, सर या चिता।
शरअ—स्त्री० मुसलमानी धर्मशास्त्र। तरीका।
शरई—वि० मुसलमानी धर्मशास्त्रके अनुसार।
शरकांड—पु० सरकण्डा।
शरघा—स्त्री० मधुमक्खी ( कविप्रि० ३२३ )।
शरण—स्त्री० आश्रय, रक्षा, आश्रयस्थान।
शरणागत, शरणापन्न—वि० शरणमें आया हुआ।
शरणि—स्त्री० रास्ता।
शरणी, शरनी—वि० स्त्री० शरण देनेवाली।
शरण्य—वि० शरणागत-रक्षक। रक्षणीय।
शरता—स्त्री० तीरंदाजी ( कविप्रि० ३० )।
शरतिया—दे० 'शर्तिया'।
शरत्, शरद—स्त्री० वर्षाके बादवाली ऋतु। साल।
शरद्वत्—पु० शरद्‌ऋतु। एक ऋषिका नाम।
शरधि—पु० तरकश।
शरबत—पु० रस, मिष्ट पेय।
शरबती—वि० हलके पीले रङ्गका। रसदार। पु० हलका पीला रंग। एक नीबू, एक कपड़ा।
शरभ—पु० एक पक्षी। टिड्डी। हाथीका बच्चा। ऊँट। रामकी सेनाका एक यूथप बन्दर। एक वन्य मृग ( कविप्रि० १६८ )।
शरम—स्त्री० लज्जा, संकोच। इज्जत, आबरू।
शरमाना—सक्रि० लज्जित करना। अक्रि० लज्जित होना, [संकोच करना।
शरमाशरमी—क्रिवि० शर्मकी वजहसे।
शरमिंदगी—स्त्री० लज्जा, संकोच।
शरमिंदा—वि० लज्जित।
शरमीला—वि० लज्जालु।
शरह—स्त्री० दर, भाव, रीति, व्याख्या।
शराकत—स्त्री० हिस्सेदारी।
शराटि,-टिका,-डि—स्त्री० टिटिहरी।
शरापना—सक्रि० शाप देना 'मति माता करि क्रोध सरापै, नहिं दानव धिग मतिको। सूरा० ३८
शराफ़—पु० चाँदी इ० का व्यापारी। रुपये पैसे बदलनेकी दूकान करनेवाला।
शराफत—स्त्री० भलमनसी।
शराफा—पु० चाँदी सोनेका व्यापार। रुपये का काम। वह बाजार जहाँ सराफ अधिक
शराफी—स्त्री० एक तरहकी लिपि। रुपये का बट्टा। सराफका काम।
शराब—स्त्री० मद्य, मदिरा। [।
शराबखाना—पु० वह जगह जहाँ शराब
शराबखोर—पु० शराब पीनेवाला, मद्यप।
शराबी—वि० शराब पीनेवाला।
शराबोर—वि० भीगा हुआ।
शरारत—स्त्री० बदमाशी, शैतानी।
शरावाप—पु० धनुष।
शराश्रय—पु० तरकश।
शरासन—पु० धनुष।
शरिष्ठ, शरेष्ठ—वि० श्रेष्ठ, उत्तम।
शरीअत—स्त्री० मुसलमानोंका धर्म-शास्त्र।
शरीक—वि० मिला हुआ। वि० हिस्सेदार,
शरीफ—वि० पवित्र। पु० कुलीन या सभ्य
शरीफा—पु० सीताफल।
शरीर—पु० देह, काया, पिंड, तनु। वि० नटखट,
शरीरपात, शरीरांत—पु० देहावसान, मृत्यु।
शरीरी—पु० शरीरवाला, प्राणी, जीव।
शरु—पु० हिंसा करनेवाला। क्रोध। हथियार। पतला, नुकीला।
शर्करा—स्त्री० चीनी। बालू, बुकनी। एक बीमारी
शर्करी—स्त्री० लेखनी। नदी। मेखला।
शर्त्त—स्त्री० होड़, नियम, दाँव, अपेक्षित बात।
शर्तिया—वि० निश्चित ( दवा इ० )। क्रिवि० २ः साथ, दृढ़तापूर्वक।
शर्बत, शर्बती—दे० 'शरबत', 'शरबती'।
शर्म—स्त्री० लज्जा, संकोच। आबरू।
शर्मद—वि० आनन्ददायक।
शर्मा—पु० ब्राह्मणोंके नामके साथ लगनेवाली एक उपाधि
शर्माऊ, शर्मीला—वि० लज्जाशील, संकोची।
शर्मिंदा—वि० लज्जित।
शर्म्म—पु० सुख, घर।
शर्याति—पु० वैवस्वतमनुका एक पुत्र। एक राजा।
शर्व—पु० शिवजी। विष्णु।

शर्वर—पु० सायंकाल । अंधकार । कामदेव ।
शर्वरी—स्त्री० रात्रि । संध्या । स्त्री । हलदी ।
शर्वाणी—स्त्री० भवानी ।
शल—पु० भाला । ऊँट । ब्रह्मा । साहीका काँटा ।
शलक—पु० साहीका काँटा । मकड़ी ।
शलगम, शलजम—पु० मूल-विशेष ।
शलभ—पु० फतिंगा, टिड्डी ।
शलाका—स्त्री० सलाई, हड्डी, वाण, पाँसा ।
शली—स्त्री० साही नामक । जन्तु
शलूका—पु० स्त्रियोंकी एक तरहकी कुरती ।
शल्य—पु० एक तरहका वाण, अस्त्र विशेष, साँग, अस्त्र-चिकित्सा । शल्यक्रिया = शस्त्रक्रिया, चीड़फाड़ या [ नश्तरका काम ।
शल्यकी—स्त्री० देखो 'शली' ।
शल्लकी, शल्ली—स्त्री० एक वृक्ष । दे० 'शली' ।
शल्ल—वि० थकावटसे शिथिल पड़ा हुआ ( अंग ) । पु० [ दादुर । छाल ।
शव—पु० कोथ, लाश, मृतदेह ।
शवता—स्त्री० मुर्दापन, मृत्यु ।
शवमंदिर,-शयन—पु० मरघट ।
शवयान,-रथ—पु० अरथी, टिकठी ।
शवर—पु० एक जंगली जाति ।
शवलित—वि० बँधा हुआ, चिह्नित 'और वह पुचकारने का स्नेह शवलित चाव' कामायनी ६४
शवसान—पु० मुसाफिर ।
शवान्न—पु० खराब हुआ अन्न । मुर्देका मांस ।
शश—पु० खरहा । चन्द्रमाकी कालिमा ।
शशक—पु० खरगोश ।
शशधर, शशभृत्—पु० चन्द्रमा । कपूर ।
शशमाही—वि० षाण्मासिक, छःमाही ।
शशलक्षण, शशलांछन—पु० चन्द्रमा ।
शशशृंग—पु० अनहोनी बात ।
शशांक—पु० चन्द्रमा ।
शशांकशेखर—पु० शिव ।
शशा—पु० खरगोश ।
शशि, शशी—पु० चन्द्रमा ।
शशिकांत—पु० कोईं । चन्द्रमणि ।
शशिखंड—पु० चन्द्रकला, शिव ।
शशिज—पु० बुध ।
शशिधर—पु० शिवजी ।
शशिपुत्र,-सुत—पु० बुधग्रह ।
शशिपोषक—पु० शुक्लपक्ष ।
शशिप्रभा—स्त्री० चाँदनी ।
शशिमाल,-भूषण—पु० शंकरजी ।
शशिमुख—वि० सुन्दर ( व्यक्ति ) ।
शशिमौलि,-शेखर—पु० शिवजी ।
शशिलेखा—स्त्री० चन्द्रमाकी कला । गिलोय ।
शशिशाला—स्त्री० शीशमहल ।
शशिशोषक—पु० कृष्णपक्ष ।
शष्कुला—स्त्री० पूरी, सुहारी ।
शस्ति, शस्ता—पु० चन्द्रमा ।
शस्त—वि० जिसकी तारीफ की गयी हो । हत । पु० देह ।
शस्त्र—पु० हथियार, आयुध ।
शस्त्रकर्म-पु०,-क्रिया—स्त्री० चीरफाड़ ।
शस्त्रगृह—पु० हथियार रखनेका स्थान ।
शस्त्रधर,-भृत्—पु० शस्त्रधारण करनेवाला, सैनिक, योद्धा ।
शस्त्रशाला-स्त्री० शस्त्रागार—पु० देखो 'शस्त्रगृह' ।
शस्त्री—पु० शस्त्रवाला, वह जो शस्त्र चलाता हो । स्त्री० [ छुरी ।
शस्य—पु० धान, कोमल घास, फसल ।
शहंशाह—पु० सम्राट् ।
शह—पु० वर, नौशा, सम्राट् । उभाड़ने या झटका देनेका कार्य । शतरञ्जमें बादशाहका किसी मोहरेकी घातमें [ पड़ जाना ।
शहज़ादा—पु० राजपुत्र ।
शहज़ोर—वि० मज़बूत, शक्तिमान् ।
शहत—पु० शहद, मधु ।
शहतीर—पु० लम्बा लट्ठा, म्याल ।
शहतूत—पु० एक वृक्ष या उसका फल ।
शहद—पु० मधु ।
शहना—पु० कोतवाल, मन्त्री ।
शहनाई—स्त्री० एक बाजा ।
शहबाला—पु० वरके साथ बैठनेवाला बालक ।
शहमात—स्त्री० 'बादशाह' का शह देकर मात कि [ जाना ( शतरंज
शहर—पु० नगर ।
शहरपनाह—स्त्री० प्राचीर, परकोटा ।
शहरी—वि० शहरका ।
शहवत—स्त्री० कामोद्रेक । मैथुन ।
शहादत—स्त्री० सबूत, गवाही । शहीद होना ।
शहाना—वि० राजोचित । पु० दूल्हेका एक पहनावा

शहिजदा—पु० शाहजादा, राजपुत्र।
शहीद—पु० धर्मादिके लिए बलि होनेवाला मनुष्य।
शांकर—वि० शङ्कर विषयक। पु० साँड़।
शांडिल्य—पु० एक मुनि।
शांत—वि० चुप, ठण्डा, सौम्य, स्थिर, अचञ्चल।
शांतनु—पु० भीष्मके पिताका नाम।
शांति—स्त्री० चुप्पी, नीरवता, ठण्ढापन, सौम्यता, स्थिरता, उपशम।
शांतिदायक,-दायी,-प्रद—वि० शान्ति देनेवाला।
शांवरी—स्त्री० इन्द्रजाल। जादूगरनी। पु० लोध। [एक चन्दन।
शांवुक, शांवूक—पु० घोंघा।
शांभर—पु० एक नमक। स्त्री० एक झील।
शाइस्तगी—स्त्री० शिष्टता, भलमनसाहत।
शाइस्ता—वि० नम्र, विनयी। शिष्ट।
शाक—पु० तरकारी, भाजी। वि० शक राजाका।
शाकट—पु० गाड़ी खींचनेवाला जानवर या गाड़ीका बोझा। वि० गाड़ी सम्बन्धी।
शाकटिक—पु० गाड़ी हाँकनेवाला।
शाकल—पु० हवन-सामग्री। टुकड़ा।
शाकाहार—पु० निरामिष भोजन। [खानेवाला।
शाकाहारी—पु० केवल अन्न, फलफूल, साग इत्यादि
शाकिनी—स्त्री० एक पिशाची। चुड़ैल।
शाकुन—वि० शकुन सम्बन्धी। पक्षियोंके सम्बन्धका। देखो 'शाकुनि'। पु० शकुन-सम्बन्धी ग्रन्थ।
शाकुनि, शाकुनिक—पु० व्याधा, बहेलिया।
शाक्त—पु० शक्तिकी उपासना करनेवाला।
शाक्यमुनि—पु० बुद्धदेव।
शाख—स्त्री० विश्वास। डाल, उपधारा।
शाखा—स्त्री० डाल, विभाग, उपभेद, उपधारा।
शाखामृग—पु० बन्दर। गिलहरी।
शाखी—पु० वृक्ष। साक्षी। वि० शाखावाला।
शाखोच्चार—पु० विवाहके समय गोत्र इ० का कथन।
शागिर्द—पु० शिष्य।
शागिर्दी—स्त्री० शिष्यता।
शाठ्य—पु० क्रूरता, दुष्टता, धूर्तता।
शाण—पु० सान। कसौटी। चार माशेकी तौल।
शाणित—वि० शान चढ़ाया हुआ। [अणिमा० १०१
शात—वि० पतला, झीना 'हिल रहा है श्वेत अञ्चल शात'
शातिर—पु० शतरञ्जका खिलाड़ी। वि० च...
शातोदर—वि० क्षीण कटिवाला। दुबला।
शात्रव—पु० शत्रुता, दुश्मनी।
शाद—वि० खुश। भरा हुआ। पु० गिरना।
शादियाना—पु० खुशीका बाजा, बधैया (कर्म०
शादी—स्त्री० विवाह। खुशी।
शाद्वल—वि० हरी घाससे भरा, हरा।
शान—स्त्री० प्रताप, ऐश्वर्य, तड़क-भड़क, प्रति
शानदार—वि० तड़क भड़कवाला। ओजस्वी (
शान शौकत—स्त्री० सजधज। तैयारी।
शाप—पु० भर्त्सना, बददुआ, अनिष्ट चाहना।
शापना—सक्रि० शाप देना 'जियमें डरयो भ शापै व्याकुल वचन कहंत।' सूर० ३७
शापित—वि० जिसे शाप दिया गया हो।
शाबाश—अ० धन्य, वाह वाह।
शाब्द, शाब्दिक, शाब्दी—वि० शब्द-सम्बन्धी
शाम—स्त्री० सन्ध्या पु० श्याम, कृष्ण।
शामत—स्त्री० दुर्भाग्य, आपत्ति, दुर्दशा।
शामियाना—पु० चँदोवा, वितान, वस्त्रमण्डप।
शामिल—वि० मिला हुआ, एक साथ।
शामिलात—वि० मिला हुआ। स्त्री० हिस्सेदारी
शामी—स्त्री० लाठी इ० के नीचेके भागमें लगाने-
शायक—पु० बाण, शर, तलवार। [आदिका
शायक़—वि० इच्छुक, शौकीन।
शायद—अ० सम्भवतः, कदाचित्।
शायर—पु० कवि।
शायरी—स्त्री० काव्य-रचना। काव्य।
शाया—वि० प्रकाशित (ग्रन्थ आदि)।
शायित—वि० सोया हुआ।
शायी—वि० सोनेवाला।
शारंग, शारंगपाणि,-पानी—देखो 'सारङ्ग', '...
शारंगी—स्त्री० एक तरहका बाजा। [...
शारद—स्त्री० शारदा। पु० वर्ष, बादल। वि० ... सम्बन्धी, नया।
शारदा—स्त्री० सरस्वती, दुर्गा, एक वीणा।
शारदी, शारदीय—वि० शरद्ऋतु सम्बन्धी।
शारिका—स्त्री० मैना।
शारी—स्त्री० शतरञ्जका मोहरा। कुश। एक पक्षी।

शारीर—वि० शरीर-सम्बन्धी। पु० शारीरिक दुःख।
शारीरिक—वि० दैहिक, शरीर सम्बन्धी।
शार्ङ्ग—वि० सींगका बना हुआ। पु० धनुष।
शार्दूल—पु० व्याघ्र, शेर। श्रेष्ठ ( पिछले पदमें )।
शाल—पु० एक पेड़, एक मछली। दुशाला। स्त्री० एक तरहकी बरछी, 'सैंहथी' ( कविप्रि० ६६ )।
शालग्राम—पु० एक तरहकी पत्थरकी बटिया जिसे लोग विष्णुकी मूर्ति मानकर पूजते हैं।
शालबाफ़—पु० दुशाला बुननेवाला। एक रेशमी कपड़ा।
शालभ—वि० शलभ सम्बन्धी। पु० बिना सोचे समझे जोखिमके काममें जुट जाना।
शाला—स्त्री० गृह, स्थान।
शालि—पु० एक धान, बासमती चावल।
शालिवाहन—पु०एक राजा जिसने शक सम्वत् चलाया।
शालीन—वि० लज्जाशील, शिष्ट, विनम्र, अमीर।
शालीनता—स्त्री० विनय।
शाल्मलि—पु० सेमलका पेड़। एक द्वीप।
शावक—पु० पशु आदिका छोटा बच्चा।
शावर—पु० मन्त्र-ग्रन्थ-विशेष। अपराध, पाप।
शाश्वत—वि० निरन्तर रहनेवाला।
शासक—पु० अधिकारी, राजा, दण्डदाता।
शासन—पु० अधिकार, प्रभुत्व, आदेश, हुकूमत, दण्ड।
शासनधर—पु० शासन-करनेवाला। राजदूत।
शासनवाहक,-हर,-हारक—पु० राजदूत।
शासित—वि० दण्डित। शासन किया हुआ। पु० [ प्रजा। संयम।
शास्ता—पु० गुरु। शासनकर्त्ता।
शास्ति—स्त्री० शासन। दण्ड।
शास्त्र—पु० धर्मिक ग्रन्थ।
शास्त्रज्ञ—पु० शास्त्रका ज्ञाता, शास्त्र-वेत्ता। [ व्यक्ति।
शास्त्री—वि० शास्त्र विशारद। पु० शास्त्रका जाननेवाला
शास्त्रीय—वि० शास्त्र सम्बन्धी, शास्त्रानुमोदित।
शाहंशाह—पु० सम्राट्।
शाह—पु० राजा, बादशाह। वि० बड़ा।
शाहजहाँ—पु० मुगल वंशका एक प्रसिद्ध बादशाह, [ औरङ्गजेबका पिता।
शाहज़ादा—पु० राजकुमार।
शाहबाला—पु० दूल्हेके साथ जानेवाला छोटा बालक।
शाहराह—स्त्री० राजमार्ग।
शाहाना—वि० शाही। पु० दूल्हेका जामा।
शाहिद—वि० सुन्दर। पु० साक्षी।
शाही—वि०राजसी।
शिंजन—पु० मधुर ध्वनि।
शिंजित—वि० बजता हुआ घुँघरू आदिकी आवाज।
शिंजिनी—स्त्री० प्रत्यञ्चा। करधनी इ० के घुँघुरू।
शिंबिका, शिंबी—स्त्री० छीमी।
शिंशपा, शिंशुपा—पु० शिशमका वृक्ष। अशोक वृक्ष।
शिंशुमार—पु० सूँस।
शिकंजा—पु० दबानेका यन्त्र, कोल्हू।
शिकन—स्त्री० सिकुड़न, वलि, झुर्री।
शिकम—पु० पेट।
शिकमी—वि० अपना। उदर सम्बन्धी।
शिकरा—पु० एक तरहकी शिकारी चिड़िया।
शिकवा—पु० शिकायत।
शिकस्त—स्त्री० पराजय, दुर्गति।
शिकायत—स्त्री० उलाहाना, चुगली, निन्दा,बुराई,रोग।
शिकार—पु० भक्ष्य, लक्ष्य। आखेट।
शिकारी—पु० व्याधा, अहेरी, शिकार करनेवाला।
शिक्या—स्त्री० सिकहर।
शिक्षक—पु० शिक्षा देनेवाला, अध्यापक।
शिक्षण—पु० पढ़ानेका काम। तालीम।
शिक्षा—स्त्री० उपदेश, सीख, अध्ययन। सजा। शासन।
शिक्षाकर—पु० शिक्षक 'गरज, गरज, कुछ शिक्षा दो, शिक्षा दो, हे शिक्षाकर!' वीणा ११
शिक्षार्थी—पु० विद्यार्थी, छात्र।
शिक्षित—वि० शिक्षाप्राप्त, पण्डित।
शिखंड—पु० काकपक्ष, मयूरपुच्छ, चोटी।
शिखंडिनी—स्त्री० मोरनी, जूही।
शिखंडी—पु० मोर, मुर्गा, पीली जूही, बालोंकी चोटी। बाण। द्रुपदका पुत्र।
शिख—स्त्री० शिखा ( यथा 'नखशिख' )।
शिखर—पु० शृङ्ग, चोटी, कँगूरा, एक रत्न।
शिखरन—पु० पछावर, दहीमें चीनी डालकर बनाया हुआ एक पेय।
शिखरिणी—स्त्री० शिखरन। एक छन्द। बेला।
शिखरी—पु० पहाड़, पेड़। अपामार्ग। [ किसमिस।
शिखा—स्त्री० चोटी, शिखरके बालों या पंखोंका गुच्छा।
शिखाधर,-धार—पु० मोर। [ शिखर। लौ, ऊपर।

शिखापाश—पु० चोटी, शिखा।
शिखामणि—पु०सरपर धारण करनेका रत्न। श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिखावल—पु० मोर, कटहल।
शिखावृद्धि—स्त्री० चक्रवृद्धि ब्याज। सूद दर सूद।
शिखिध्वज—पु० धूआँ। मयूरध्वज राजा। षडानन, [ कार्तिकेय।
शिखिनी—स्त्री० मोरनी, मुर्गी।
शिखी—पु० मोर, मुर्गा, अग्नि (कविप्रि० ३४) तीनकी संख्या, पुच्छलतारा, चित्रकवृक्ष। वि० शिखावाला
शिगाफ़—पु० छेद, दरार। नश्तर।
शिगूफा—दे० 'शगूफा'।
शिताफल—पु० शरीफा।
शिताब—क्रिवि० शीघ्र।
शिताबी—स्त्री० शीघ्रता, जल्दबाजी।
शिति—वि० काला। सफेद।
शितिकंठ—पु० महादेव। चातक। मोर।
शिथिल—वि० सुस्त, लस्त, ढीला, थका हुआ।
शिथिलता, शिथिलाई—स्त्री०सुस्ती, ढिलाई, थकावट।
शिथिलाना—अक्रि० थकना, शिथिल पड़ना।
शिथिलित—वि० जो शिथिल हो गया हो।
शिद्दत—स्त्री० आधिक्य। जोर।
शिनाख़्त—स्त्री० पहचान, परख।
शिप्रा—स्त्री० उज्जयिनीकी एक नदी।
शिफर—पु० ढाल ( दे० 'सिफर' )।
शिफा—स्त्री० कोड़ा। कोड़ेकी फटकार।
शिया—पु० सहायक। मुसलमानोंका एक भेद।
शिर—पु० माथा, कपाल, चोटी।
शिरकत, शिराकत—स्त्री० साझा। योगदान।
शिरज, शिरसिज शिरसिरुह—पु० बाल।
शिरत्राण—दे० 'शिरस्त्राण'।
शिरपच—पु० पगड़ी या पगड़ीपर बाँधनेका एक आभूषण।
शिरफूल—पु० सिरका एक आभूषण।
शिरमौर—पु० मुकुट, श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिरस्त्रय—पु० त्रिशिर, रावणके भाइयोंमेंसे एक।
शिरस्त्राण—पु० लोहेकी टोपी, 'कूँड'।
शिरहन—पु० सिरहाना। तकिया।
शिरा—स्त्री० रक्त-नलिका, नस। धारा। टोपी।
शिरीष—पु० सिरिस वृक्ष।
शिरोगृह,-गेह—पु० अटारी।

शिरोदाम—पु० पगड़ी।
शिरोधरा—स्त्री०गर्दन। [*साथ स्वीकार क
शिरोधार्य—वि० सिरपर धारण करने योग्य।
शिरोपाव—पु० देखो 'सिरोपाव'। [
शिरोभूषण—पु० सरपर पहननेका एक गहना
शिरोमणि—पु० सिरका गहना, श्रेष्ठ व्यक्ति,
शिरोरुह—पु० केश।
शिलवट—स्त्री० देखो 'सिलवट'।
शिला—स्त्री० चट्टान, पत्थर।
शिलाजीत—पु० एक शक्तिवर्धक औषधि।
शिलान्यास—पु० किसी भवन इ० की नींव रखे
शिलापट—पु० सिलेट, सिल, चट्टान। [ स
शिलालेख—पु० पत्थरपर खुदा हुआ लेख।
शिलावृष्टि—स्त्री० ओलेकी वर्षा।
शिलावेश्म—पु० पत्थरका मकान। कन्दरा।
शिलासार—पु० लोहा।
शिलाहरि—पु० शालग्रामकी मूर्त्ति।
शिली—स्त्री० देहरी। भाला। भोजपत्र।
शिलीपद—पु० देखो 'श्लीपद'।
शिलीभूत—वि० मूर्तिमान।
शिलीमुख—पु० भ्रमर। बाण। मूर्ख। युद्ध।
शिलोच्चय—पु० पर्वत 'शिलोच्चयके गौरव [illegible]
शिल्प—पु० कारीगरी, वस्तु-निर्माणकला। [ [illegible]
शिल्पकला—स्त्री० कारीगरी। दस्तकारी।
शिल्पकार. शिल्पि, शिल्पी—पु० कारीगर,
शिल्पकारी—पु० शिल्पी, कारीगर। [ चि- क
शिल्पजीवी—पु० कारीगर, शिल्पद्वारा जीवन-नि
शिल्पिक—पु० शिल्पोपजीवी। [ करनेवा
शिव—पु० शंकरजी। रुद्र। देवता। पारद। कल्याण, सुख। श्रृगाल। सुहागा। पानी। [illegible] मृगविशेष। वि० शुभकारी, सुखमय।
शिवता—स्त्री० शिवमें लय होना, मोक्ष। शिवका व
शिवदत्त—पु० सुदर्शनचक्र।
शिवद्रुम—पु० बेलका वृक्ष।
शिवनंदन—पु० गणेश।
शिवनिर्माल्य—पु० शिवार्पित नैवेद्य आदि।
शिवपत्र—पु० रक्त कमल। [ पदार्थ
शिवपुरी—स्त्री० काशी।

शिवमौलिसुता—स्त्री० गङ्गा।
शिवराजी—पु० एक तरहका कबूतर।
शिवरात्र,-रात्रि—स्त्री० फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी।
शिवरानी—स्त्री० पार्वती।
शिवलोक—पु० कैलास।
शिववाहन,-वृषभ—पु० नन्दी।
शिवा—स्त्री० पार्वती, दुर्गा, श्रृगाली ( सुजा० ३४ )। मुक्ति। हर्र। दूर्वा।
शिवानी—स्त्री० पार्वती, दुर्गा, भवानी।
शिवालय, शिवाला—पु० शिव-मन्दिर।
शिवि—पु० हिंस्र पशु। भोजपत्र। एक राजा।
शिविका—स्त्री० डोली, पालकी।
शिविर—पु० पड़ाव, किला। डेरा।
शिश्न—पु० पुरुषेन्द्रिय।
शिशिर—पु० जाड़ा,जाड़ेकी ऋतु,सर्दी,हिम। वि०ठंडा।
शिशिरकर—पु० चन्द्रमा।
शिशिरगु,-मयूख, शिशिरांशु—पु० चन्द्रमा।
शिशिरांत—पु० वसन्त ऋतु।
शिशु—पु० बच्चा। कार्तिकेय
शिशुता, शिशुताई—स्त्री० लड़कपन,बचपन,अज्ञानता।
शिशुत्व—पु० बचपन।
शिशुपाल—पु० चेदिदेश ( आधुनिक बुन्देलखण्ड ) का एक प्रसिद्ध राजा जिसको श्रीकृष्णने मारा था।
शिशुमार—पु० मगर, मगर जैसा एक नक्षत्र। शिशु-मार चक्र = सूर्य तथा ग्रहादि।
शिश्न, शिष्ण—पु० पुरुषेन्द्रिय।
शिष—स्त्री० सिख, शिक्षा। शिखा, चोटी। पु० शिष्य।
शिषा—स्त्री० शिखा, चोटी, लौ।
शिषी—पु० देखो 'शिखी'।
शिष्ट—वि० सभ्य, सुशील, प्रतिष्ठित, शान्त।
शिष्टता—स्त्री० विनय, भद्रता।
शिष्टाचार—वि० सभ्य व्यवहार, सत्कार, आवभगत।
शिष्टि—स्त्री० दण्ड। आज्ञा, शासन।
शिष्य—पु० चेला, अनुयायी, विद्यार्थी।
शीकर—पु० जलकण, ओस, फूँही। वायु।
शीघ्र—क्रिवि० जल्द, झटपट।
शीघ्रकारी—वि० शीघ्र कार्य करनेवाला, फुर्तीबाज।
शीघ्रगति—वि० तीव्र गतिवाला।
शीघ्रचेतन—पु० कुत्ता। शीघ्र समझनेवाला।
शीघ्रता—स्त्री०,-त्व—पु० जल्दी। फुर्ती।
शीघ्रवेधी—पु० फुर्तीसे बाण चलानेवाला।
शीत—पु० ठंढ, जाड़ेका समय। ओस (कविप्रि० ९८), कपूर, वि० ठंढा। सुस्त। [ शीतकाल।
शीतक—पु० काहिल मनुष्य। देरसे काम करनेवाला।
शीतकर,-किरण,-गु,-दीधिति—पु० चन्द्रमा।
शीतचंपक—पु० दीपक। आईना।
शीतच्छाया—वि०जिसकी छाया ठंढी हो। पु०वटवृक्ष।
शीतज्वर—पु० जाड़ा देकर चढ़नेवाला ज्वर।
शीतपित्त—पु० जुड़पित्ती।
शीतभानु—पु० चन्द्रमा।
शीतमयूख,-मरीचि,-रश्मि—पु० चन्द्रमा, कपूर।
शीतल—वि० ठण्ढा, सर्द प्रसन्न, मन्द 'सौरभकी शीतल ज्वालासे फैला उर-उरमें मधुर दाह।' युगांत० ७ [पु० ठण्ढ।
शीतलचीनी—स्त्री० कबाबचीनी।
शीतलच्छाद—वि० शीतल छाया देनेवाला।
शीतलता, शीतलताई—स्त्री० ठण्ढापन।
शीतलप्रद—पु० चन्दन।
शीतला—स्त्री० चेचक, एक देवी।
शीता—स्त्री० ठण्ढा। हलकी फाल, 'सीता'।
शीत्कार—पु० सिसकारी।
शीरखोरा—पु० दुधमुँहा बच्चा।
शीरष—पु० सिर ( कविप्रि० ३०५ )।
शीरा—पु० चासनी, शर्बत।
शीरीं—वि० मीठा। प्रिय। पु० कुश, मूँज।
शीरीनी—स्त्री० मिठाई। मिठास।
शीर्ण—वि० टूटाफूटा, निकम्मा, पुराना, दुर्बल।
शीर्य—वि० नश्वर, भंगुर।
शीर्ष—पु० सिर, अग्रभाग, चोटी।
शीर्षक—पु०सिर,चोटी। परिचायक शब्द या शब्दसमूह।
शील—पु० अच्छा स्वभाव, चरित्र, आदत, संकोची [ स्वभाव।
शीलवान्—वि० सुशील, चरित्रवान्।
शीश—पु० सिर, माथा।
शीशफूल—पु० एक शिरोभूषण।
शीशम—पु० एक पेड़। [ जड़ दिये गये हों।
शीशमहल—पु० वह मकान जिसकी दीवारोंमें शीशे

शीशा—पु० एक पारदर्शक धातु, काँच, दर्पण ।
शीशी—स्त्री० काँचका एक तरहका लम्बा पात्र ।
शुंठि—स्त्री० सोंठ ।
शुंड—पु० सूँड़ । गज-मद ।
शुंडक—पु० रणभेरी । देखो 'शुंडिक' ।
शुंडा—स्त्री० सूँड । एक तरहकी शराब । वेश्या ।
शुंडादंड—पु० सूँड़ ।
शुंडार—पु० कलाल । साठ वर्षका हाथी । सूँड़ ।
शुंडाल—पु० हाथी ।
शुंडिक—पु० मद्य उतारनेवाली जाति विशेष ।
शुंडी—पु० हाथी । देखो 'शुंडिक' ।
शुंभ—पु० एक दैत्य ।
शुक—पु० तोता, व्यासपुत्र ।
शुकतुंड—पु० सुग्गेकी चोंच ।
शुकदेव—पु० व्यासके पुत्र ।
शुकराना—पु० नज़राना । अहसान मानना, कृतज्ञता ।
शुकवाह—पु० कामदेव । [ *सुनसान ।
शुक्त—पु०काँजी, खटाई, सिरका । वि०खट्टा । अप्रिय ।*
शुक्ति—स्त्री० सीपी, घोंघा, एक चक्षुरोग, बवासीर ।
शुक्तिका—स्त्री० सीपी, एक नेत्ररोग ।
शुक्तिज, शुक्तिबीज—पु० मोती ।
शुक्र—पु० वीर्य, पौरुष, एक ग्रह, मुनि, एक दिन, एक वृक्ष, चित्रक । धन । धन्यवाद ।
शुक्रगुज़ार—वि० कृतज्ञ, उपकृत ।
शुक्रदोष—पु० नामर्दी ।
शुक्रांग—पु० मोर ।
शुक्राचार्य—पु० असुरोंके गुरुका नाम ।
शुक्रिया—पु० धन्यवाद ।
शुक्ल—वि० श्वेत, धवल, उजला । पु० शुक्लपक्ष, धव-वृक्ष, शिवजी, चाँदी, ताज़ा मक्खन ।
शुक्लपक्ष—पु० वह पक्ष जिसमें चन्द्रमा क्रमशः बढ़ता है ।
शुक्ला—स्त्री० सरस्वती ।
शुचि—वि० स्वच्छ,पवित्र,निर्मल, सफेद । साधु । स्त्री० स्वच्छता, पवित्रता । पु० अग्नि, चन्द्र, सूर्य, ग्रीष्म ऋतु, ज्येष्ठ या आषाढ़ । शृङ्गार रस (कविप्रि० १७) । शुक्र । ब्राह्मण । सच्चा मित्र, शिव ।
शुचिकर्मा—वि० सदाचारी ।
शुचिता—स्त्री० पवित्रता ।

शुचि—वि० साफ, पवित्र ।
शुजा—वि० वीर ।
शुजाअत—स्त्री० वीरता ।
शुतुरगाव—पु० जिराफ ।
शुतुरमुर्ग—पु० ऊँट जैसी गर्दनवाला एक
शुदनी—स्त्री० होनहार, भवितव्यता ।
शुद्ध—वि० स्वच्छ, पवित्र, खालिस, निर्दोष,
शुद्धपक्ष—पु० शुक्लपक्ष ।
शुद्धांत—पु० रनिवास, अन्तःपुर ( साकेत १७
शुद्धापह्नुति—स्त्री० एक काव्यालंकार ।
शुद्धि—स्त्री० स्वच्छता, पवित्रता, सुधार, सं होनेका संस्कार ।
शुद्धिपत्र—पु० मुद्रणसम्बन्धी अशुद्धियोंका प
शुद्धोदन—पु० बुद्धके पिताका नाम ।
शुन—पु० कुत्ता । हवा ।
शुनक, शुनि—पु० कुत्ता ।
शुनी—स्त्री० कुतिया ।
शुनासीर—पु० इन्द्र, वायु ।
शुबहा—पु० सन्देह, भ्रम ।
शुभंकर—वि० कल्याणकारी ।
शुभंकरी, शुभकरी—स्त्री० पार्वती ।
शुभ—पु० कल्याण, भलाई । वि० भला, मं
शुभकर,-कारक,-कारी—वि० मंगलकारक । [
शुभचिंतक, शुभेच्छु—वि० भला चाहनेवाला,
शुभदर्शन—वि० सुन्दर । जिसका देखना शुभ हो
शुभा—स्त्री० कान्ति । ख्वाहिश । देवसभा ।
शुभ्र—वि० सफेद,उज्ज्वल, निर्मल । पु० अबरक, खस, सेंधा नमक, फिटकरी, वंसलोचन ।
शुभ्रता—स्त्री० सफेदी ।
शुभ्रभानु,-रश्मि, शुभ्रांशु—पु० चन्द्रमा ।
शुमार—पु० गिनती, गणना (सेवास० १४० ) ।
शुमाली—वि० उत्तरका (कर्म १२९) ।
शुरवा—पु० रसा ।
शुरू—पु० आदि, प्रारम्भ ।
शुल्क—पु० फीस, महसूल, कर, भाड़ा ।
शुल्कशाला—स्त्री०, शुल्कस्थान—पु० महसूलघर
शुश्रू—स्त्री० माँ ।
शुश्रूषा—स्त्री० सेवा, खुशामद । सुननेकी इच्छा ।

शुष्क—वि० सूखा, नीरस, तथ्यहीन, निरर्थक।
शूकर—पु० वाराह, सूअर।
शूक्त—पु० सिरका।
शूक्ष्म—वि० सूक्ष्म, वारीक।
शूची—स्त्री० सुई।
शूद्र—पु० चतुर्थ वर्ण। सेवक।
शूद्रा—स्त्री० शूद्र जातिकी स्त्री।
शूद्राणी, शूद्री—स्त्री० शूद्रकी स्त्री।
शून, शून्य—वि० छूछा, निर्जन, रहित, निराकार पु० खाली जगह, आकाश, स्वर्ग, बिन्दु, अभाव। निर्जन स्थान।
शून्यवाद—पु० एक बौद्ध सिद्धान्त।
शूप—पु० सूप।
शूर—वि० वीर, साहसी। पु० योद्धा, सिंह, सूर्य।
शूरण, शूरन—पु० देखो 'सूरन'।
शूरता, शूरताई—स्त्री० वीरता।
शूरमानी—पु० अपनी वीरताका गर्व करनेवाला व्यक्ति।
शूरश्लोक—पु० वीरोचित कार्योंका वर्णन।
शूरा—पु० सूर्य। योद्धा, वीर।
शूर्प—पु० सूप।
शूर्पणखा—स्त्री० रावणकी बहिन।
शूल—पु० पेटका दर्द, चुभानेवाली पीड़ा, टीस। सलाई, छड़। त्रिशूल। सूली।
शूलधर, शूलधारी—पु० शिवजी।
शूलना—अक्रि० चुभना, पीड़ा देना।
शूलपाणि,-पानि—पु० शिवजी।
शूलि—स्त्री० सूली।
शूलिक—पु० जल्लाद। कबाब। खरहा।
शूली—स्त्री० सूला। सूल। पु० शिवजी। खरगोश। ‡एक नरक।
शृखल—पु० साकल जंजीर, करधनी।
शृंखला—स्त्री० श्रेणी, पंक्ति, सिलसिला, करधनी, जंजीर।
शृंखलाबद्ध, शृंखलित—वि० जिसका सिलसिला ठीक हो।
शृंग—पु० सींग, सींगका बाजा। शिखर, कँगूरा। चिह्न, प्रभुत्व, कमल, अदरक, अगर।
शृंगार—पु० सजावट, शोभाकी वस्तु। एक मुख्य रस।
शृंगारण—पु० प्रेम प्रकट करना।
शृंगारना—सक्रि० भूषणादिसे सजाना, सँवारना।
शृंगारिक—वि० शृङ्गारविषयक।
शृंगारिया—पु० शृङ्गार करनेवाला। बहुरूपिया।
शृंगि—पु० सींगवाला पशु, एक मछली।
शृंगी—पु० सींगवाला पशु, सींगका बाजा। हाथी, शिवजी, एक ऋषि, पहाड़, एक औषध।
शृकाल—पु० सियार।
शृग, शृगाल—पु० सियार, गीदड़। वि० कायर।
शेख—वि० बाकी, समाप्त। पु० समाप्ति, बाकी। मुसलमानोंका एक वर्ग।
शेखचिल्ली—पु० मूर्ख, मसखरा, तरह तरहकी कल्पना करनेवाला।
शेखर—पु० सिरा, चोटी, माथा, मुकुट।
शेखी—स्त्री० डींग, घमण्ड, अकड़।
शेखीबाज़—वि० डींग मारनेवाला।
शेफालिका, शेफाली—स्त्री० हरसिंगारका पेड़ और उसका फूल।
शेर—पु० व्याघ्र, वीर पुरुष। पद्य।
शेरदहाँ—वि० बघमुहाँ। पु० वह मकान जिसकी आगेकी चौड़ाई अधिक हो।
शेरपंजा—पु० 'बघनहा' नामक हथियार।
शेरबबर—पु० सिंह।
शेरमर्द—वि० वीर।
शेरवानी—स्त्री० एक तरहका अंगा।
शेल—पु० शल्य, बरछी (कविप्रि० ८८)।
शेवाल—दे० 'शैवाल'।
शेष—वि० बचा हुआ, समाप्त, अन्य। पु० नागराज, लक्ष्मण। बची हुई वस्तु, परिणाम, समाप्ति, मृत्यु।
शेषधर—पु० शिवजी।
शेषर—पु० शेखर, माथा, चोटी, मुकुट।
शेषशायी—पु० शेषकी शय्यापर सोनेवाले विष्णु।
शेषांश—पु० बचा हुआ भाग।
शेषोक्त—वि० जो अन्तमें कहा गया हो।
शैक्य—पु० छीका।
शैतान—पु० विघ्नकारक देवता, शरारती या अत्याचारी मनुष्य, दुष्ट।
शैत्य—पु० शीतलता।
शैथिल्य—पु० सुस्ती। ढिलाई।
शैदा—वि० आसक्त।
शैल—पु० पहाड़। वि० पथरीला, पत्थरका।
शैलजा—स्त्री० पार्वती, गङ्गा।
शैलतटी—स्त्री० पहाड़की तराई।
शैलधर—पु० श्रीकृष्ण।
शैलपति,-राज—पु० हिमालय।

शैलपुत्री,-सुता—देखो 'शैलजा'।
शैल-बाला—स्त्री० निर्झरी, नदी ( पल्लव ८९ )।
शैली—स्त्री० रीति, प्रणाली, लिखनेका तरीका।
शैलूष, शैलूषिक—पु० नट।
शैलेय—पु० सेंधा नमक। शिलाजीत। सिंह। वि० पत्थरसे उत्पन्न, पथरीला।
शैव—पु० शिवभक्त। वि० शिव सम्बन्धी।
शैवल—पु० देखो 'शैवाल' ( साकेत १२२ )।
शैवलिनी—स्त्री० नदी, सरिता।
शैवाल—पु० सेवार, पानीकी लता।
शैवी—स्त्री० पार्वती, एक देवी।
शैशव—पु० बचपन, बाल्यावस्था। वि० शिशुसम्बन्धी।
शोक—पु० रञ्ज, अफ़सोस, दुःख।
शोकाकुल—वि० शोकसे विह्वल।
शोकातुर,शोकार्त्त—वि० शोकसे व्याकुल।
शोख़—वि० धृष्ट, दुष्ट, चटकीला।
शोच—पु० रञ्ज, दुःख, चिन्ता।
शोचनीय—वि० जिसके लिए शोक मनाया जाय, चिन्तनीय, जिससे दुःख उत्पन्न हो।
शोच्य—वि० दयनीय, चिन्तनीय।
शोठ—वि० काहिल। बेसमझ।
शोण—पु० लाल रंग, अग्नि, सिन्दूर, मानिक, रुधिर।
शोणरत्न, शोणितोपल, शोणोपल—पु० मानिक।
शोणित—पु० रुधिर, केसर। ईंगुर। वि० लाल।
शोणिमा—स्त्री० लालिमा, ललाई।
शोथ—पु० सूजन।
शोध—पु० पता, खोज। होश। अदायगी। संशोधन।
शोधक—पु० शोधनेवाला। ढूँढ़नेवाला, सुधारनेवाला।
शोधन—पु० दोष दूर करना। ( ऋण ) चुकाना।
शोधना—सक्रि० खोज करना, साफ करना, सुधारना।
शोधनी—स्त्री० झाड़ू।
शोधनीय—वि० संशोधन करने योग्य, सुधारने योग्य।
शोधवाना—सक्रि० ठीक कराना।
शोधित—वि० साफ किया हुआ।
शोधैया—पु० शोधनेका कार्य करनेवाला।
शोफ—पु० सूजन।
शोबदा—पु० नज़रबन्दी, इन्द्रजाल।
शोभ—स्त्री० शोभा।
शोभन—वि० सुन्दर, भला, शुभ। पु० कमल, ग्रह। [ 'क्षोभना
शोभना—अक्रि० शोभायुक्त होना, शोभा ...
शोभा—स्त्री० छवि, कान्ति, सुन्दरता, ...
शोभाकर—पु० शोभाका समूह। वि० ... करनेवाला।
शोभायमान—वि० शोभा पाता हुआ, सु...
शोभाशाली—वि० शोभायुक्त।
शोभित—वि० शोभायुक्त। उपस्थित।
शोर—पु० हल्ला ( उर्दू० 'दह' ), खलबली, धू...
शोरबा—पु० रसा, जूस।
शोरा—पु० एक तरहका क्षार।
शोरिश—स्त्री० बलवा, गड़बड़ी, हलचल (कर्म...
शोला—पु० ज्वाला।
शोशा—पु० चुटकीली बात, व्यंग्य। निकली हु...
शोष—पु० सूखनेका भाव, सुखण्डी रोग, क्षय।
शोषक—पु० सुखानेवाला, नाश करनेवाला।
शोषण—पु० सोखना, चूसना।
शोषित—वि० जो चूसा गया हो।
शोषी—वि० सोखनेवाला।
शोहदा—पु० गुण्डा, छैला, लम्पट।
शोहरत—स्त्री०, शोहरा—पु० कुख्याति। धूम, किंवदन्ती, जन-समूहमें फैली हुई खबर
शौक़—पु० व्यसन, रुचि, प्रवृत्ति, लालसा।
शौकत—स्त्री० सजधज।
शौक़िया—क्रिवि० शौक़से, शौक़के कारण।
शौक़ीन—पु० शौक़ करनेवाला, ऐयाश, छैला।
शौक्तिक, शौक्तिकेय—पु० मोती।
शौच—पु० प्रातःकृत्य, पवित्रता, स्नान, दिशा...
शौत—स्त्री० सौत।
शौध—वि० पवित्र, साफ। पु० सुधि ( सूसु० ४...
शौरसेनी—स्त्री०प्राकृत भाषाका एक भेद। यह शौ... ( आधुनिक व्रजमण्डल )के आसपासकी भाषा
शौन—वि० श्वान विषयक। पु० बिक्रीका मांस।
शौरि—पु० वसुदेव। श्रीकृष्ण।
शौर्य—पु० वीरता, पराक्रम, उत्साह।
शौल्क—वि० शुल्क-सम्बन्धी।
शौहर—पु० पति।

श्मशान—पु० मरघट।
श्मश्र—पु० मूँछ, दाढ़ी आदि।
श्मश्रुकर—पु० नाई।
श्याम—वि० काला, साँवला। पु० श्रीकृष्ण,कोयल,मेघ।
श्यामकंठ—पु० शिवजी, नीलकण्ठ, पक्षी, मयूर।
श्यामकर्ण—पु० काले कानवाला घोड़ा।
श्यामटीका—पु० दिठौना।
श्यामता—स्त्री० कालापन, मलिनता।
श्यामल—वि० काला,साँवला। पु० पीपल,सिरिसवृक्ष।
श्यामलता—स्त्री० श्यामता। कालापन।
श्यामसुंदर—पु० श्रीकृष्ण।
श्यामा—स्त्री० एक चिड़िया, साँवली स्त्री, कालिका,राधा, तरुणी, सुन्दर स्त्री, सोमलता, काली गाय, कस्तूरी, [रात्रि,इ०।
श्याल—पु० शृगाल, गीदड़। साला।
श्यालक—पु० साला।
श्यालकी—स्त्री० साली।
श्येत—पु० सफेद रंग। वि० सफेद रंगका।
श्येन—पु० बाज पक्षी।
श्येनजीवी—पु० बाज पकड़कर जीविका चलानेवाला।
श्रृंग—पु० सींग ( सू० २२ )।
श्रद्धा—स्त्री० विश्वास और पूज्यभाव, भक्ति, विश्वास।
श्रद्धातव्य—श्रद्धेय।
श्रद्धान—पु० श्रद्धा।
श्रद्धालु—वि० श्रद्धावान्, श्रद्धायुक्त।
श्रद्धास्पद—वि० पूज्य, श्रद्धाका पात्र।
श्रद्धेय—वि० श्रद्धास्पद, पूज्य।
श्रम—पु० मेहनत, कष्ट, दौड़-धूप, प्रयास, थकावट, पसीना, प्रस्वेद। श्रमकण = प्रस्वेदबिन्दु।
श्रमजन—पु० श्रमिक, मजदूर 'भू के अधिकारी हैं श्रमजन' युगवाणी ४७।
श्रमजल—पु० पसीना। [जल्द न थके।
श्रमजित—वि० जो अधिक परिश्रम करनेपर भी
श्रमजीवी—पु० मेहनत करके जीवन-निर्वाह करनेवाला व्यक्ति, कुली। वि० परिश्रम करके पेट पालनेवाला।
श्रमण—पु० बौद्ध संन्यासी। कुली।
श्रमवारि—देखो 'श्रमजल'।
श्रमबिंदु,-शीकर—पु० पसीना, श्रमकण।
श्रमविभाग—पु० किसी कार्यको कई हिस्सोंमें बाँटना।
श्रमसाध्य—वि० जो बिना परिश्रमके न हो सके।
श्रमसीकर—पु० पसीना।
श्रमिक—पु० मजदूर।
श्रमित—वि० थका हुआ।
श्रमी—वि० श्रम करनेवाला। पु० श्रमजीवी।
श्रवण, श्रवन—पु०सुननेकी क्रिया। कान। एक नक्षत्र।
श्रवणीय—वि० सुनने योग्य। [भक्तिका एक प्रकार।
श्रवना—दे० 'स्रवना'।
श्रवित—वि० बहा हुआ।
श्रव्य—वि० सुनने योग्य।
श्रांत—वि० थका हुआ, खिन्न, निवृत्त, शान्त।
श्रांति—स्त्री० थकावट, आराम। परिश्रम।
श्राद्ध—पु०पितरोंकी तृप्तिके लिए किया गया कृत्य-विशेष।
श्राद्धपक्ष—पु० पितृपक्ष।
श्राप—पु० बददुआ, अमङ्गल वाक्य।
श्रावक, श्रावग—पु० जैन धर्मानुयायी, बौद्ध संन्यासी। शिष्य। नास्तिक। वि० सुननेवाला।
श्रावगी—पु० जैनी।
श्रावण—पु० एक महीनेका नाम। [विशेष।
श्रावणी—स्त्री० श्रावणकी पूर्णिमा या उस दिनका कृत्य-
श्रावन—पु० गिराने या बूँद बूँद टपकानेका कार्य।
श्रावना—सक्रि० बहाना, टपकाना।
श्रावा—स्त्री० माँड़।
श्राव्य—वि० देखो 'श्रव्य'।
श्रिय—स्त्री० शोभा। शुभ, मङ्गल।
श्रिया—स्त्री० रमा।
श्री—स्त्री० लक्ष्मी, शोभा, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, सिद्धि, बेंदी, पदचिह्न-विशेष, श्वेतचन्दन।
श्रीकंठ—पु० शिवजी। [
श्रीकांत—पु० लक्ष्मीपति, विष्णु।
श्रीखंड—पु० हरिचन्दन। दही, केसर और मिश्रीसे बना एक पेय पदार्थ।
श्रीगंध,-चंदन—पु० सन्दल। [
श्रीगणेश—पु० आरम्भ 'श्रीगणेशमें मिला—"पृथ असनेह मयी श्यामा मुझे प्रेम है"।' कुकुरमुत्ता ४।
श्रीगदित—पु० उपरूपकका एक भेद।
श्रीचक्र—पु० देवीकी पूजाका चक्र।
श्रीदाम—पु० श्रीकृष्णके मित्र सुदामा।
श्रीधाम,श्रीनिकेत—पु० लक्ष्मीधाम, वैकुण्ठ, कमल।
श्रीधर, श्रीनिवास, श्रीपति—पु० विष्णु, कृष्ण, राम।

श्रीपंचमी—स्त्री० वसन्तपञ्चमी ।
श्रीफल—पु० नारियल, वेल, आँवला, खिरनी, धन ।
श्रीमंत—वि० श्रीमान्, शोभावान्, धनी । पु० सिरका एक गहना । सीमन्त, माँग ।
श्रीमान्—वि० धनी, शोभावान् । पु० धनी व्यक्ति, [आदरसूचक शब्द ।
श्रीमाल—स्त्री० गलेकी माला ।
श्रीमुख—पु० वेद । सुन्दर मुख ।
श्रीरंग, श्रीरवन—पु० लक्ष्मीपति, विष्णु ।
श्रीवंत—दे० 'श्रीमंत' ( उदे० 'निरवारना' ) ।
श्रीवत्स—पु० भृगुके चरणप्रहारका चिह्न, विष्णु ।
श्रीश—पु० विष्णु ।
श्रीहत—वि० निष्प्रभ, शोभाहीन, निस्तेज ।
श्रुत—वि० सुना हुआ, प्रसिद्ध ।
श्रुतकीर्ति—स्त्री० शत्रुघ्नकी पत्नीका नाम ।
श्रुतपूर्व—वि० पहलेका सुना या जाना हुआ ।
श्रुतान्वित—वि० शास्त्रमर्मज्ञ ।
श्रुति—स्त्री० सुननेका काम, सुनी हुई बात, वेद, शब्द, समाचार । श्रवणेन्द्रिय, चारकी संख्या ।
श्रुतिकटु—वि० जो कानोंको कठोर और कर्कश जान पड़े ।
श्रुतिधर—पु० वेदज्ञ ।
श्रुतिधरता—स्त्री० वेद सम्बन्धी पाण्डित्य । अणिमा ३९
श्रुतिपथ—पु० वेदोक्त मार्ग, कान ।
श्रुतिवेध—पु० कान छेदनेका संस्कार ।
श्रुतिहारी—वि० श्रुतिमधुर ।
श्रुत्य—वि० मशहूर । श्रवणीय ।
श्रुत्यनुप्रास—पु० एक शब्दालङ्कार ।
श्रुवा—पु० देखो 'सुवा' । [सीढ़ी, समूह ।
श्रेणि, श्रेणी—स्त्री० पंक्ति, माला, परम्परा, सिकड़ी,
श्रेणीवद्ध—वि० कतारमें स्थित । पंक्तिबद्ध ।
श्रेय—पु० कल्याण, शुभ, पुण्य, धर्म । वि० शुभ, श्रेष्ठ ।
श्रेयस्कर—वि० शुभावह ।
श्रेष्ठ—वि० सबसे अच्छा, बढ़िया, पूज्य, बड़ा, प्रधान । शुभकारी । [प्पन, उच्चता ।
श्रेष्ठता—स्त्री०, श्रेष्ठत्व—पु० उत्तमता, उत्कृष्टता, बड़-
श्रेष्ठी—पु० सेठ, महाजन ।
श्रोण—वि० लँगड़ा ।
श्रोण, श्रोणित—देखो 'शोण', 'शोणित' ।
श्रोणि, श्रोणी—स्त्री० नितम्ब, कटिप्रदेश ।
श्रोत—पु० कान ।
श्रोतव्य—वि० सुनने योग्य ।
श्रोता—पु० सुननेवाला ।
श्रोत्र—पु० कान ।
श्रोत्रिय, श्रोत्री—पु० वेदपाठी, वेदज्ञ ।
श्रोन, श्रोनित—देखो 'शोण', 'शोणित' ।
श्रौत—वि० वेदविहित ।
श्रौन—पु० श्रवण, कान ( उदे० 'तर्कसी' ) ।
श्लक्ष्ण—वि० कोमल, स्निग्ध, सुन्दर ( ज्यो०
श्लथ—वि० हीन, मन्द, शिथिल ।
श्लाघन—पु० डींग मारना । वि० डींग मारने
श्लाघनीय—वि० प्रशंसाके योग्य ।
श्लाघा—स्त्री० स्तुति, प्रशंसा, । चाह ।
श्लाघ्य—वि० सराहनीय, प्रशंसाके योग्य ।
श्लिष्ट—वि० मिला हुआ, लगा हुआ, श्लेषयुक्त ।
श्लीपद—पु० पैर फूलनेका रोग ।
श्लील—वि० जो भद्दा न हो, उत्तम, शुभ ।
श्लेष—पु० मिलान, संयोग, आलिंगन, एक का० ..
श्लेषक—पु० श्लेष । वि० योजक ।
श्लेषोपमा—स्त्री० एक काव्यालंकार ।
श्लेष्मा—पु० शरीरका एक विकार, बलगम । बन्ध
श्लोक—पु० कीर्त्ति, शब्द, संस्कृतका एक सुप्रसिद्ध
श्वन्—पु० कुत्ता ।
श्वपच, श्वपाक—पु० कुत्तेका मांस खानेवाला, च०
श्वसित—वि० श्वासयुक्त, वायुयुक्त ।
श्वसुर—पु० ससुर ।
श्वश्रू—स्त्री० सास ।
श्वसन—पु० साँस लेना, वायु ।
श्वस्तन—पु० आनेवाला दूसरा दिन । वि० कलका
श्वान—पु० कुत्ता ।
श्वाननिद्रा—स्त्री० हलकी नींद ।
श्वापद—पु० व्याघ्रादि हिंसक पशु ।
श्वास—पु० नाकसे हवा लेने व छोड़नेकी क्रिया ।
श्वासकास—पु० साँसकी बीमारी ।
श्वासरोध—पु० साँस न निकलने देना ।
श्वासा—स्त्री० प्राणवायु, साँस । [करना
श्वासोच्छ्वास—पु० वेगके साथ साँस खींचना या बाह
श्वेत—वि० सफेद, गोरा, उज्ज्वल । पु० सफेद रंग । कौड़ी, चाँदी, शुक्र ।

श्वेतता—स्त्री० सफेदी, उज्ज्वलता ।
श्वेतभानु-,मयूख—पु० चन्द्रमा ।
श्वेतवाहन—पु० चन्द्रमा ।
श्वेतांबर—पु० जैनियोंका एक सम्प्रदाय ।
श्वेतांशु—पु० चन्द्रमा । [ मिश्री,चीनी, एक तृण।
श्वेता—स्त्री० कौड़ी, वंशलोचन, भटकटैया, फिटकिरी,
श्वेतिमा—स्त्री० सफेदी ( पूर्ण १४१ )।
श्वैत्र—पु० एक तरहका कुष्ट रोग ।

---

# ष

षंजन—पु० मिलन, भेंट ।
षंड, षंढ—पु० क्लीव, साँड़, समूह ।
षंडाली—स्त्री० कुलटा स्त्री । छोटा ताल ।
षट्—वि० पाँच और एक । पु० छः की संख्या ।
षट्कर्म—पु० स्मृतियोंके अनुसार छः काम । ब्राह्मणके छ काम-यजन, याजन, इ० ।
षट्कोण—वि० छः कोनेवाला ।
षट्चक्र—पु० शरीरस्थ छः चक्र (हठयोग) । षड्यंत्र ।
षट्चरण, षट्पद—पु० भौंरा ।
षट्पदी—स्त्री० भौंरी । छप्पय ।
षट्रस—पु० छः प्रकारके रस ।
षट्राग—पु० झझट, बखेड़ा । संगीतके छः राग ।
षट्शास्त्र—पु० न्याय, वैशेषिक आदि छ. दर्शन ।
षडंग—पु० वेदके छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द ज्योतिष । देहके छ. अंग हाथ, पाँव,
षडंघ्रि—पु० भ्रमर । [ सिर, धड़ ।
षड़ानन—पु० कार्त्तिकेय ।
षडगुण—पु० राजनीतिके छ. गुण—सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय ।
षड्दर्शन—देखो 'षट्शास्त्र' ।
षट्यंत्र—पु० गुप्त आयोजन, साजिश ।
षडरस—पु० छ. रस--मीठा, खट्टा, कड़वा, तीता, कसैला, नमकीन ।
षड्रिपु—पु० छः मनोविकार—काम क्रोधादि ।
षण्डमुख—पु० षडानन, कार्त्तिकेय ।
षष्ठ—वि० छठवाँ ।
षष्ठी—स्त्री० पक्षका छठवाँ दिन । जन्मके बाद छठवें
षांड्य—पु० नामर्दी । [ दिनका उत्सव । दुर्गा ।
षाडगुण्य—पु० राजाओंके सन्धि आदि छः उपाय ।
षाण्मासिक—वि० छः माही ।
षोडश—वि० सोलह । सोलहवाँ ।
षोडशशृंगार—पु० उबटन, स्नानादि, सोलह सिङ्गार ।
षोडशसंस्कार—पु० गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तादि सोलह वैदिक कर्म ।
षोडशी—स्त्री० सोलह वर्षकी स्त्री, श्राद्ध-विशेष । वि० स्त्री० सोलह वर्षकी । सोलहवीं ।
षोडशोपचार—पु० पूजनके सोलह अङ्ग ।
ष्ठीवन—पु० थूकना ।

---

# स

सँइतना—सक्रि० सेंतना, जोड़ना, एकत्र करना । सहे-
सँउपना—सक्रि० देखो 'सौंपना' । [ जना । पोतना ।
संक—स्त्री० शंका, भ्रम, डर ।
संकट—पु० दुःख, विपत्ति, भीड़ । वि० सङ्कीर्ण,कष्टदायी ।
संकना—अक्रि० शंका करना, डरना 'पाँइ परे पलिकापै परी जिय संकति सौतिन होवि न सौंहीं ।' भावि०४८
संकर—पु० शिवजी । दो वस्तुओंका मेल । दोगला । झाड़नेसे उठी हुई धूल । [ पु० सकट, दुःख
सँकरा—वि० संकीर्ण, तंग । स्त्री० सिकड़ी, जंजीर
सँकराना—सक्रि० सकुचित करना ।
संकरी—पु० वर्णसंकर ।
संकल—स्त्री० सिकड़ी, जन्जीर । पु० सङ्कलन, योग ।

संकलन—पु० जमाव, संग्रह, योग।
संकलप—दे० 'सङ्कल्प' ( उदे० 'झिलना' )।
संकलपना, संकलपना—सक्रि० सङ्कल्प करना, दान देना, निश्चय करना। अक्रि० इच्छा करना।
संकलित—वि० एकत्रीकृत, संगृहीत ( उदे० 'पचालिका' )।
संकल्प—पु० दृढ़ निश्चय, विचार, इच्छा। हाथमें अक्षत जल इ० लेकर मन्त्रोच्चारणके साथ दानादिके सम्बन्धमें अपना निश्चय प्रकट करनेकी क्रिया।
संकष्ट—पु० सङ्कट ( पूर्ण ९२ )।
संकर्षण—पु० खींचने या जोतनेका कार्य।
संका—दे० 'शङ्का' ( उदे० 'असहन' )।
सँकाना—अक्रि० शङ्कित होना, डरना।
संकारना—सक्रि० संकेत करना।
संकाश,संकास—वि० सदृश। समीप (विन० १५७)। पु० चमक, कान्ति।
संकीर्ण—वि० तङ्ग, छोटा, सँकरा। पु० विपत्ति।
संकीर्णता—स्त्री० तङ्गी, छोटापन, क्षुद्रता।
संकीर्त्तन—पु० वर्णन, भजन, कीर्त्ति-कथन।
संकु—स्त्री० बर्छी 'जरे अंगमें संकु ज्यों होत बिथाकी [ ग्लानि।' मति० २३९
संकुचन—पु० सिकुड़ना।
सँकुचना—अक्रि० सङ्कोच करना।
सँकुचाना—देखो 'सकुचाना'।
संकुचित—वि० सिकुड़ा हुआ, सङ्कीर्ण, लज्जायुक्त, [ छोटा, क्षुद्र।
संकुल—पु० समर, जनसमूह। झुण्ड। वि० दे० 'संकुलित'। जटिल ( गुलाब ३१ )।
संकुलता—स्त्री० परिपूर्णता, घनत्व, गड़बड़, जटिलता ( निबन्धमाला १-५९ )।
संकुलित—वि० पूरा, परिपूर्ण ( उदे० 'पंथ' ), घना।
संकेत—पु० इशारा, चिह्न, पहलेसे निश्चित स्थान या बात। वि० सङ्कीर्ण ( रघु० ९२ )।
सँकेतना—सक्रि० सङ्कटमें डालना ( प० २२३ )। अक्रि० सङ्कुचित होना 'कँवल सँकेता, कुमुदिनी [फूली।' प० २५१
संकेतित—वि० संकेत किया हुआ।
सँकेलना—दे० 'सकेलना' ( रामा० ३४३ )।
संकोच—पु० लज्जा ( उदे० 'अलकलड़ैता' ), हिचक, आगा-पीछा, खिंचाव, कमी 'जलसङ्कोच बिकल भई मीना।' रामा० ४०४
सँकोचना—सक्रि० सङ्कुचित करना। अ[ज्जित] करना।
संकोचित—वि० अविकसित, लज्जित। जिसमें
संकोची—वि० सङ्कोच करनेवाला।
संकोपना—अक्रि० कुपित होना।
संक्रंदन—पु० इन्द्र। रोना, रुदन।
संक्रमण—पु० संक्रान्ति, गमन, पर्यटन।
संक्रांत—वि० मिला हुआ। गुजरा हुआ। एक राशिसे दूसरी राशिमें जाना।
संक्रांति—स्त्री० ( सूर्यका ) एक राशिसे
संक्रामक—वि० छूनसे फैलनेवाला ( रोग )।
संक्रामी—वि० सम्पर्कद्वारा रोग फैलानेवाला।
संक्रीड़—पु० हँसी मज़ाक।
संक्रोन—स्त्री० संक्रमण, संक्रान्ति ( बि० ११५
संक्षर—वि० चलनेवाला, 'तमिस्र-संक्षर छिपे।
संक्षिप्त—वि० थोड़ेमें किया गया,थोड़ा। [
संक्षेप—पु० थोडेमें कहना, घटाना, सार, संग्रह
संक्षेपण—पु० सक्षेप या कम करनेकी क्रिया।
संक्षेपतः,-तया—अ० थोड़ेमें।
सक्षोभ—पु० विप्लव, उलटपलट, कम्पन।
संख—पु० शङ्ख ( 'पनव' )।
संखिया—पु० एक तरहका विष। वि० शङ्खके आक.
संख्य—पु० लड़ाई।
सख्या—स्त्री० गिनती, तादाद।
संग—पु० पत्थर। साँग 'बिये संग सौं फोरि डरै सुजा० २३। साथ, सोहबत, मेल-मिलाप।
संगठन—देखो 'संघटन'।
संगठित—वि० जिसका सङ्गठन किया गया हो।
संगत—स्त्री० सङ्गति, संसर्ग। उदासी साधुओंका वि० संयुक्त, सम्मिलित। स्त्री० बाजा बजाकर न या गायकका साथ देनेकी क्रिया।
संगतरा—पु० फल-विशेष, सन्तरा ( प० १५ )।
संगतराश—पु० पत्थर काटकर ठीक करनेवाला।
संगति—स्त्री० सोहबत, मित्रता, मेल, सम्पर्क, सभा 'चढ़ि गढ़ ऊपर सङ्गति देखी।' प० २७६
संगतिया—पु० गाने इ० के साथ साज बजानेवाला।
संगती—पु० 'संगतिया'। साथी।
संगदिल—वि० निष्ठुर, कठोर हृदयवाला।

संगम—पु० मिलाप, संयोग, सङ्गति, नदियोंके मिलनेकी जगह।

संगमर्मर, संगमारवर—पु० एक तरहका सफेद चिकना पत्थर।

संगमूसा—पु० एक तरहका काला चिकना पत्थर।

संगयशब—पु० एक तरहका मूल्यवान् पत्थर।

संगर—पु० युद्ध, नियम, प्रण, विष, विपत्ति, स्वीकार।

सँगरा—पु० बाँसका डण्डा जिसके सहारे पत्थर उठाया जाता है। कुएँमें तख्तेका छेद जिसमें लोहेका पम्प लगा रहता है।

संगराम—पु० संग्राम युद्ध, समर।

संगसार—पु० पत्थर मार मारकर प्राण लेनेकी सजा।

संगसी—स्त्री० सँड़सी।

सँगाती—पु० साथी, मित्र 'सूरदास प्रभु ग्वाल सगाती, जानी जाति जनावत।' सू० १५९, (उदे० 'देव')।

संगी—पु० साथी, मित्र'''एक तरहका कपड़ा (रत्ना० १३३, पूर्ण २१५)। वि० पत्थरका।

संगीत—पु० गाना बजाना और नाच।

संगीति—स्त्री० संगीत। बातचीत।

संगीन—वि० विकट, पाषाण-निर्मित, टिकाऊ। पु० बन्दूकके सिरेपर लगानेका एक हथियार।

संगृहीत—वि० संग्रह किया हुआ, एकत्रीकृत।

संगृहीता—पु० संग्रह करनेवाला।

संगोतरा—पु० सन्तरा।

संगोपन—पु० छिपानेका कार्य।

संग्रसन—पु० अधिक खाना।

संग्रह—पु० जमाव, सङ्कलन, रक्षा, संयम।

संग्रहणी—स्त्री० पेटका एक रोग।

संग्रहना—सक्रि० एकत्र करना, सङ्कलन करना। (उदे० 'झूठा', 'ढौंरू')। अपनाना (विन० ५२६)।

संग्रही, संग्रहीता—पु० संग्रह करनेवाला।

संग्रहीत—वि० संगृहीत, इकट्ठा किया हुआ, सङ्कलित।

संग्राम—पु० युद्ध, लड़ाई।

संग्राहक—पु० इकट्ठा करनेवाला, सञ्चय करनेवाला।

संग्राही—वि० सग्रह करनेवाला।

संग्राह्य—वि० संग्रहणीय, इकट्ठा करने योग्य।

संघ—पु० दल, समुदाय, समाज, सभा, बौद्ध समाज।

संघचारी—पु० बहुमतके पीछे चलनेवाला।

संघट—पु० झगड़ा, संयोग (रामा० १२३)।

संघटन—पु० व्यवस्थित करनेका कार्य, निर्माण, बनावट, संयोग, संघर्षण।

संघटित—वि० सङ्घटन किया हुआ।

संघट्ट—पु० सङ्घटन बनावट।

संघती—दे० 'सँघाती'।

संघपति—पु० दलका नायक।

संघरना—दे० 'संघारना'।

संघर्ष, संघर्षण—पु० रगड़, मुठभेड़, प्रतिद्वन्द्विता।

संघर्षित—वि० जिससे सङ्घर्ष हुआ हो, रगड़ खाया हुआ।

संघर्षी—वि० सङ्घर्ष करनेवाला।

संघाट—पु० दल बाँधकर रहनेवाला।

संघात—पु० समूह, जमाव। चोट मारना। सङ्घर्ष, युद्ध। एक नरक। सङ्ग, साथ 'धुआँ उठे मुख साँस सँघाता।' प० १९० (रामा० ८)।

संघातक—पु० नाश या घात करनेवाला।

संघाती—पु० साथ देनेवाला 'सदा सँघाती श्रीयदुराई।' सूबे० ३१, साथी, मित्र (सू० २७१)। प्राणापहारी।

संघार—पु० संहार, नाश।

संघारना—सक्रि० संहारना, नष्ट करना, मार डालना।

संघाराम—पु० बौद्ध मठ।

संघोष—पु० ज़ोरकी आवाज़।

संच—पु० सञ्चय, रक्षा (रघु० ४०), शान्ति खैर।

संचकर—पु० सञ्चय करनेवाला।

सचना—सक्रि० सञ्चित करना, जोड़ना, बटोरना, रक्षा करना (सूबे० १५९, मति० १८६)।

संचय—पु० सङ्कलन, जमाव, ढेर।

संचयन—पु० इकट्ठा करना, जमा करना।

संचयी—वि० संचय करनेवाला, जोड़नेवाला।

संचरण—पु० जाना, गमन, फैलना।

संचरना—अक्रि० चलना (उदे० 'चाँढ'), फिरना, फैलना, पासतक पहुँचना 'मन बच अगम अगाध अगोचर, केहि विधि बुधि सँचरै।' सू० ६। सक्रि० चलाना 'अति आतुर चतुरंग चमू सजि, अनँग न सर सँचरै।' अ० १३२

संचलन—पु० हिलना। साथ चलनेकी क्रिया, साथ चलना।

संचान—पु० बाज़।

संचार—पु० गमन, प्रवेश, प्रसरण, पथ-प्रदर्शन, दुःख।

संचारक—पु० गति प्रदान करनेवाला, संचालक, फैलानेवाला।

संचारना—सक्रि० प्रवेश कराना, फैलाना, जन्म देना।
संचारिका—स्त्री० सञ्चार करनेवाली।
संचारित—वि० चलाया हुआ, उकसाया हुआ, प्रसारित।
संचारी—वि० चलने फिरनेवाला। पु० वायु। रसोंमें सञ्चरण करनेवाले भाव, व्यभिचारी भाव।
संचालक—पु० चलानेवाला, प्रवर्त्तक।
संचालन—पु० जारी रखना, चलाना।
संचित—वि० इकट्ठा किया हुआ, जोड़ा हुआ।
संजम—पु० संयम।
संजमी—वि० संयम करनेवाला (व्यक्ति) (उदे०'जपी')।
संजय—पु० धृतराष्ट्रके एक मन्त्रीका नाम।
संजात—वि० उत्पन्न।
संजाफ,-ब—स्त्री० झालर, मगजी। पु० एक तरहका [घोड़ा।
संजाफी—वि० मगजीदार।
संजाब—पु० एक छोटा जन्तु। एक तरहका घोड़ा।
संजीदगी—स्त्री० गाम्भीर्य (विचार आदिका)।
संजीदा—वि० गम्भीर। समझदार।
संजीव—पु० मरे हुएको जिलाना। मरे हुएको जिलाने- [वाला।
संजीवन—पु० जिलानेवाला।
संजीवनी—स्त्री० मरेको जिलानेवाली ओषधि-विशेष।
संजीवी—वि० मरे हुएको जिलानेवाला।
संजुक्त—वि० मिला हुआ।
संजुग—पु० समर, संग्राम (रामा० ४९६, ५०५)।
सँजूत—वि० तैयार, सावधान 'होहु सँजूत बहुरि नहिं [गवना।' प० ६६
सँजोइ—क्रिवि० साथमें।
सँजोइल—वि० एकत्र किया हुआ, सुसज्जित 'होहु सँजोइल रोकहु घाटा।' रामा० २८९
सँजोउ—पु० संयोग 'दहुँ का कहँ अस करै सँजोऊ।' प० ४५। तैयारी 'अबहीं बेगहिं करौ सँजोऊ।' प० १०२ [(बीजक ५६)।
सँजोग—दे० 'संयोग' (प० ९७, रामा० ११३)। संयम
संजोगिनी—स्त्री० वह स्त्री जो अपने प्रेमीके साथ हो।
सँजोगी—वि० मिलनेवाला। पु० वह पुरुष जो अपनी प्रियाके साथ हो।
सँजोना, सँजोवना—सक्रि० जुटाना, एकत्र करना, सजाना। पूरा करना (छत्र० १६३)।
सँजोवल—वि० सुसज्जित, सैन्यादिसे युक्त, सावधान (प० ११२)।
संज्ञा—स्त्री० नाम, ज्ञान, बुद्धि, चेतना, [एक
संज्ञान—पु० इशारा।
संज्ञापन—पु० जतलाना। कथन।
संज्ञाहीन—वि० बेसुध, बेखबर।
सँझला—वि० चार-पाँच भाइयोंमें छोटा। सन्ध्याका। [
सँझवाती—स्त्री० संध्याका गीत, शामको
संझा—स्त्री० सन्ध्या (भू० १३७)।
संझोखा—पु० सायंकाल।
संझौखैं—अ० संध्याकालमें (बि० ७६)।
संठ—पु० कमीना, खल। चुप्पी।
संड—पु० साँढ़।
संडमुसंड—वि० मोटा ताजा।
संड़सा—पु०, सड़सी—स्त्री० लोहेका एक
संडा—वि० मोटा ताज़ा। पु० मोटा ताज़ा
संडास—पु० एक तरहका गहरा पाखाना।
सँड़ास—स्त्री० संडसी (प० २९०)।
संत—पु० धर्मात्मा, महात्मा, सज्जन।
संतत—क्रिवि० सर्वदा, हमेशा, बराबर।
संतति—स्त्री० सन्तान, प्रजा, वंश, फैलाव।
संतप्त—वि० विदग्ध, दुःखित, थका हुआ।
संतरण—पु० अच्छी तरह तरना या पार होना
संतरा—पु० एक फल, बड़ी नारंगी।
संतरी—पु० चौकीदार, पहरेदार, द्वाररक्षक।
संतान—स्त्री० सन्तति, बाल-बच्चा, वंश।
संताप—पु० ताप, मानसिक दुःख। कष्ट।
संतापन—पु० तकलीफ देना। जलाना।
संतापना—सक्रि० सन्ताप देना, पीड़ा पहुँ [माया सब जग संतापै।' सूबे० २८
संतापित—वि० सताया गया, पीड़ित।
संतापी—वि० तकलीफ देनेवाला।
संती—अ० बदलेमें, जगहमें।
संतुष्ट—वि० तृप्त, जिसे सन्तोष हो गया हो।
संतोख, संतोष—पु० जो मिले उसीसे प्रसन्न भाव, तृप्ति, सुख, प्रसन्नता (रामा० ५२०)।
संतोखी,-तोषी—पु० सन्तुष्ट रहनेवाला (प० ३५
संतोषना—सक्रि० सन्तुष्ट करना। अक्रि० सन्तुष्ट
संतोषित—वि० सन्तुष्ट, तृप्त।

संत्रस्त—वि० भयभीत।
संत्रासन—पु० त्रास देनेकी क्रिया।
संत्री—पु० पहरेदार।
संथा—स्त्री० पाठ, सबक 'दिनके आतम सुद्ध करि,फिरि-फरि सन्था देत।' नन्द० ४३
संदंश—पु० सँड़सी।
संद—पु० छिद्र, दरार। दबाव।
संदर्भ—पु० लेख, निबन्ध रचना।
संदर्शन—पु० अच्छी तरह देखना। जाँच।
संदल—पु० उजला चन्दन।
संदली—वि० चन्दनका, हलके पीले रङ्गका।·पु० हलका पीला रंग।
संदि—स्त्री० सन्धि।
संदिग्ध—वि० संशयात्मक, सन्देहयुक्त। पु० जिसपर किसी तरहका सन्देह हो।
संदिष्ट—वि० बतलाया हुआ। कहा हुआ। पु० खबर।
संदीपक—वि० प्रदीप्त करनेवाला, उद्दीपक।
संदीपन—पु० उत्तेजन। वि० उद्दीपन करनेवाला।
संदूक—पु० पेटी, मंजूषा।
सन्दूकचा—पु०, संदूकड़ी—स्त्री० छोटा सन्दूक।
संदूख—पु० सन्दूक।
संदूर—पु० सेँदुर।
संदेश, संदेस—पु० खबर ( उदे० 'अनिभाई' ), समाचार। एक मिठाई।
संदेशवाहक—पु० दूत।
संदेशहर—पु० दूत।
संदेशा, संदेसा—पु० खबर, सम्वाद।
संदेसी—पु० सँदेशा ले जानेवाला।
संदेह—पु० शंका, संशय, शक। एक काव्यालंकार—'कै यह कै यह होत इमि जहाँ कहूँ सन्देह।'
संदोह—पु० राशि, समूह।
संद्राव—पु० पीठ दिखलाना। पलायन।
संघ—स्त्री० देखो 'सन्धि'।
संधा—स्त्री० सन्ध्या। सन्धि। वादा। खोज।
संधान—पु० खोज, पता। लक्ष्य 'एक पन्थ औ एक सन्धाना।' प० ५। सन्धि। धनुषपर वाण चढ़ाना ( सू० ३९ )। मिलावट 'बिलज न सदन होत या उपास जो सन्धान न मूलहू।' भ्र० १०१। कटाक्ष विधा० ११, १९ )।
संधानना—सक्रि० धनुषपर बाण चढ़ाना, बाण चलाना 'सुमन चाप निज सर सन्धाने।' रामा० ५२
संधाना—पु० अचार 'पुनि सन्धाने आये बसाँधे।' (प० १३५)
संधानी—स्त्री० मिश्रण। प्राप्ति। खोज।
संधि—स्त्री० जोड़, गाँठ, मिलाप, संयोग, मेल, सुलह, सेँध, दरार, खाली जगह, अवकाश। नाटकका एक अङ्ग। वर्णविकार ( व्याकरण )।
संधिरंध्रका—स्त्री० सेँध।
संधिराग—पु० सेँदुर।
संधिवेला—स्त्री० सन्ध्याकाल।
संधेय—वि० जिससे सन्धिकी जा सके।
संध्या—स्त्री० सायकाल, साँझ, सबेरे-दुपहर-शामकी उपासना।
संध्यातारा—पु० शुक्र नक्षत्र।
संध्यावधू—स्त्री० रात।
संन्निपात— देखो 'सन्निपात'।
संनिवेश—पु० रखा जाना (पभू० ९३२), रखने बैठाने इ० की क्रिया। स्थिति, घर, आसन। इकट्ठा होना।
संनिहित—देखो 'सन्निहित'।
संन्यस्त—वि० समर्पित, त्यक्त।
संन्यास—पु० जीवनकी चतुर्थ अवस्था, विषय-त्याग।
संन्यासी—पु० चतुर्थ आश्रममें रहनेवाला, त्यागी, यती।
संपति, संपत्ति—स्त्री० धन, ऐश्वर्य, पूर्णता, अधिकता।
संपद्—स्त्री० ऐश्वर्य, धन, पूर्णता, अधिकता, सौभाग्य।
संपदा—स्त्री० सम्पत्ति, वैभव।
संपन्न—वि० युक्त, पूर्ण, धनी।
संपराय—पु० मृत्यु, लड़ाई। संकटका समय।
संपर्क—पु० स्पर्श, लगाव, मिलाप, मिलावट।
संपा—स्त्री० बिजली ( दास २७ )।
संपाक—वि० थोड़ा। लम्पट। पु० खूब पकना।
संपात—पु० स्पर्श, समागम, मिलान, एक साथ गिरना, घटित होना।
संपाति—पु० एक बन्दर। जटायुका बड़ा भाई।
संपादक—पु० तैयार या पूरा करनेवाला, क्रमादि ठीक करनेवाला। पत्रकार आदि।
संपादकत्व—पु०सम्पादक होनेका भाव,सम्पादनकी क्रिया।
संपादकीय—वि० सम्पादक सम्बन्धी। पु० सम्पादक द्वारा लिखित लेख या टिप्पणी।
संपादन—पु० किसी कामको पूरा करना। पुस्तक, पत्र इ० का क्रम, पाठ इ० ठीक करना।

संपादना—सक्रि० पूरा करना, ठीक करना 'विविध अन्न सम्पति सम्पादहु।' रघु० १३
संपादित—वि० पूरा किया हुआ। ( पुस्तक इत्यादिका ) क्रम आदि ठीक किया हुआ।
संपीड़न—पु० खूब दबाना या पीड़ित करना।
संपुट—पु० दोना, अँजली, डिब्बा ( उदे० 'पला', सू० १४२ ), जुड़ाव। फूलमें पँखड़ियोंके बीचकी जगह, कोष (दे०'बीधना')। वि० बन्द 'घोष सरोज भये हैं संपुट दिन मणि ह्वै विगसाओ।' भ्र०९०। घुँघरू (?) 'नाचे तदपि घरीक लौं संपुट पगन बजाइ।' छत्र०२७
संपुटी—स्त्री० प्याली, छोटी कटोरी (उदे० 'घरियाल')।
संपूर्ण—वि० समस्त, सारा, बिलकुल, समाप्त।
संपूर्णतः, संपूर्णतया—क्रिवि० अच्छी तरह।
संपृक्त—वि० मिला हुआ।
सँपेरा—पु० साँपका खेल दिखानेवाला।
संपै—स्त्री० सम्पत्ति 'संपै देखि न हर्षिये विपति देखि न रोइ।' कबीर ३२९
सँपोला—पु० साँपका बच्चा।
सँपोलिया—पु० सर्प पकड़नेवाला।
संपोषित—वि० पोषण किया हुआ, पालित।
संप्रक्षालन—पु० भलीभाँति धोना।
संप्रज्ञात—पु० एक तरहकी समाधि।
संप्रति—अ० आजकल, इस समय।
संप्रदान—पु० देना, भेंट, दीक्षा।
संप्रदाय—पु० धार्मिक मत, धर्म, फिरका, गुरुमंत्र, मार्ग, रीति।
संप्रयोग—पु० सूदपर धन देना। मेला। भलीभाँति जोड़ना। इन्द्रजाल।
संप्रयोगी—वि०ऐन्द्रजालिक खेल दिखानेवाला। लम्पट।
संप्लुत—वि० प्लावित, जलमें डूबा हुआ।
संप्रसारण—पु० अच्छी तरह फैलाना।
संबंध—पु० नाता, सम्पर्क, लगाव, मेल।
संबंधातिशयोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार।
संबंधी—पु० रिश्तेदार। वि० सम्बन्ध रखनेवाला।
संबंधु—पु० सम्बन्धी।
संबत्—पु० संवत्, वर्ष, सन्।
संबद्ध—पु० मिला हुआ, जुड़ा हुआ।
संबर—पु० मृग-विशेष। जल। पुल। एक दैत्य।
संबरना—सक्रि० रोकना।
संबर्धना—स्त्री० बढ़ती।

संबल—पु० पाथेय, मार्गव्यय (रासा० २ सेमरका पेड़।
संबाध—पु० बाधा, रुकावट। कष्ट। वि०
संबुक—पु० घोंघा ( उदे० 'करट' )।
संबुद्ध—वि० जिसने ज्ञान प्राप्त कर लिया
संबोधन—पु० पुकारने, जगाने, समझाने इ
संबोधना—सक्रि० तसल्ली देना, समझाना
संभरण—पु० एकत्रीकरण, भरणपोषण। तै०
सँभरना,सँभलना—अक्रि० थमना, रुका होना, गिरते गिरते बच जाना। [ वि
संभव—पु० जन्म, कारण, संयोग, उपाय,
संभवतः—अ० सम्भव है कि, हो सकता है
संभवना—अक्रि० उत्पन्न होना, मुमकिन होन उत्पन्न करना।
संभवनीय—वि० जिसके होनेकी सम्भावना ०
संभार—पु० श्रृंगार, साज, तैयारी।
सँभार—पु०, स्त्री० थमाव, थाम, रोक, रक्षा, पालन 'सूरदास प्रभु अपने ब्रजकी का सँभार।' सू० २०५ ( रासा० २३७ ), तै विचारि कियो नरनायक करहु यज्ञ संभारा।' राशि, संचय, समूह, सम्पत्ति, सामग्री, तै०
सँभारना, सँभालना—सक्रि० थामना, रोक ( सू० २०४ ), सहारा देना, रक्षा करना, नष्ट होनेसे बचाना। पकड़ना 'जब जब संतन पै चक्रसुदर्शन तहाँ सँभार्यो।' सूवि सहायता देना 'गोपाल बिना और मोहिं ० सँभारे।' सू० २७२, (उदे० 'धीय')। स्मरण 'यह सुनि बोली नारि कैकयी अपनो वचन सँ सूरा० ९, ( उदे० 'पाछिल' )।
सँभाल—स्त्री० देखभाल, हिफाजत। प्रबन्ध।
सँभाला—पु० मरनेके पूर्वकी चैतन्यावस्था।
संभावन—पु० एक काव्यालंकार। अनुमान। ० प्रसिद्धि। योग्यता।
संभावना—स्त्री० मुमकिन होना, अनुमान, ०७५ आदर। एक काव्यालंकार 'जो अस होय तो अस—यों जह करत बखान।'
संभावित—स्त्री० प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध। विचारा हुआ। सकनेवाला। सम्भव।

संभाव्य—वि० कल्पना योग्य, सम्भव, पूज्य ।
संभाषण—पु० वार्तालाप ।
संभाषी—वि० वार्तालाप करनेवाला ।
संभूत—वि० उत्पन्न, उपयुक्त, सहित । हो गया हुआ ।
संभूय समुत्थान—पु० साझेका काम ।
संभृत—पु० चीखनेकी आवाज। वि० इकट्ठा किया हुआ। प्रतिष्ठित । रचित ।
संभेद—पु० अच्छी तरह भिदना । भेदनीति । वियोग । मिलाप । [ अवस्था । सुरति ।
संभोग—पु० किसी वस्तुका पूर्ण व्यवहार, मिलनकी
संभोज्य— वि० खाने लायक ।
संभ्रम—पु० घबराहट, उत्कंठा, खलबली, भूल, भ्रान्ति (सूसु० १९४), आदर, घूमना । क्रिवि० उतावलीसे ।
संभ्रांत—वि० घबराया हुआ । सम्भावित ।
संभ्रांति—स्त्री० घबराहट ।
संभ्राजना—अक्रि० भलीभाँति शोभित होना ।
संमत—वि० सहमत ।
संमति—स्त्री० राय, अनुमति, सलाह ।
संमान—पु० आदर, गौरव ।
संमानना—सक्रि० आदर करना ।
संमित—वि० समान ।
संमेलन—पु० जमाव, सभा, मिलाप ।
संमोहन—पु० मोहित करनेवाला ।
संम्राज—पु० साम्राज्य ( विन० १२९ ) ।
संयत—वि० वशमें रखा हुआ, नियमबद्ध, सन्नद्ध । निग्रह करनेवाला, संयमी ।
˚यतात्मा—वि० जिसने अपनी चित्तवृत्तिको वशमें कर लिया हो । [ निग्रह, परहेज ।
संयम—पु० मन तथा इंद्रियोंको वशमें रखना, रोक,
संयमन—पु० निग्रह, वशीकरण, दबाव, बन्धन ।
संयमनी—स्त्री० यमपुरी ।
संयमित—वि० वशमें किया हुआ ।
संयमी—वि० इंद्रियोंको वशमें रखनेवाला, परहेज करने-
संयान—वि० साथ साथ गया हुआ । [ वाला ।
संयाम—पु० संयम ।
संयुक्त—वि० मिला हुआ, सम्बन्द्ध, सहित ।
संयुग—पु० संयोग, मिलाप, लड़ाई ।
संयुत—वि० संयुक्त, सहित, सम्बद्ध, ( उदे०'तिरछ' ) ।
संयोग—पु० मिलाप, मिलावट, मिलान, जोड़, दैवयोग ।
संयोगिता—स्त्री० पृथिवीराज चौहानकी पत्नी ।
संयोगी —वि०मिला हुआ,जो प्रेयसीके साथ हो,विवाहित।
संयोजक—पु० जोड़नेवाला । समय स्थानादिकी सूचना देकर किसी सभाका आयोजन करनेवाला ।
संयोजन—पु० जोड़नेका कार्य, आयोजन, सहवास ।
सयोजना—स्त्री० मेल । प्रबन्ध ।
संयोना—सक्रि० 'सँजोना', जुटाना, सजाना ।
संरंभ—पु०आरम्भ । चाह । ग्रहण । क्षोभ, क्रोध । गर्व।
संरक्षक—पु० रक्षा करनेवाला, अभिभावक, पनाह देनेवाला ।
संरक्षण—पु० निगरानी, अधिकार, प्रभुत्व, प्रतिबन्ध ।
संरक्षणता—स्त्री० निगरानी ।
संरक्षणीय—वि० रक्षा करने योग्य ।
संरक्षित—वि० भलीभाँति बचाया हुआ या रखा हुआ। उपयुक्त अवसरके लिए अलग रखा हुआ ।
सँरसी—स्त्री० मछली फँसानेकी कँटिया(उदे० 'बंक' ) ।
संरूढ़—वि० जमा हुआ । चढ़ा हुआ ।
संरोधन—पु० बाधा डालना । रोकना । क़ैद करना ।
संलक्षित—वि० पहचाना हुआ । जाना हुआ ।
संलग्न—वि० लगा हुआ, सम्बद्ध ।
संलाप—पु० कथोपकथन, बातचीत ।
संलापक—पु० उपरूपकका एक भेद । एक तरहका नाट
संलिप्त—वि० लीन । कीय कथोपकथन ।
संवत्—पु० सन्, वर्ष । विक्रमादित्यकी चलायी वर्षगणना।
संवत्सर—पु० साल, वर्ष ।
संवर—पु० पसन्द करना । रोक, मनोनिग्रह ।
संवरण—पु० रोकना, निग्रह, छिपाना । वर चुनना ।
संवरणशील—वि० रोकनेमें समर्थ ।
सँवरना—अक्रि० सज्जित होना, ठीक होना 'विधि अब सँवरी बात बिगारी ।' रामा० १४७ । सक्रि० स्मरण करना 'जौ लहि जिऔं रातिदिन सँवरौं ओहिकर
सँवरिया—वि० साँवला । पु० कृष्ण । [नावँ ।' प० ४१
संवर्त्त—पु० एक मेघ । चक्कर । प्रलय ।
संवर्द्धन—पु० बढ़ना । बढ़ाना ।
संवर्द्धित—वि० बढ़ा ( बढ़ाया ) हुआ । पाला हुआ ।
संवल—पु० देखो 'संबल' ।
संवलित—वि० ( शत्रुसे ) भिड़ा हुआ । मिला हुआ ।

सँवाँ—वि० सदृश 'ह्वैसी आटा लूँण ज्यूँ सोना सँवाँ सरीर।' कबीर २५
संवाद—पु० समाचार,विवाद, प्रश्नोत्तर,बातचीत, प्रसंग।
संवादक—पु० बोलनेवाला। बजानेवाला। एकमत होनेवाला।
संवाददाता—पु० खबर देनेवाला, समाचार भेजनेवाला।
संवादिता—स्त्री० समानता।
सँवार—पु० रचना ( दास १६२ )। समाचार। आच्छादन, बाधा ( प० १०४ )।
संवारण—पु० निवारण करना, रोकना, मना करना।
सँवारना—सक्रि० सुसज्जित करना (उदे० 'पास' 'पेंच') यथास्थान रखना, सँभालना, बनाना (उदे० 'भाँजना' 'अनियारा'), ठीक करना ( उदे० 'टूट' )।
संवारित—वि० वारण किया हुआ।
संवास—पु० सार्वजनिक स्थान। साथ रहना। मकान। [ समाज।
संवाहन—पु० ले जाना।
संविग्न—वि० आतुर। उद्विग्न।
संविद्—स्त्री० ज्ञान, चेतना, समझौता। संकेत, युद्ध।
संविधा—स्त्री० इन्तजाम। आचरण।
संविधान—पु० प्रबन्ध। रीति। रचना।
संविष्ट—वि० बैठा हुआ। आया हुआ।
संवीक्षण—पु० ध्यानपूर्वक देखना। खोज।
संवीत—वि० ढँका हुआ। वस्त्राच्छादित। रुका हुआ।
संवृक्त—वि० खर्च किया हुआ। [ ग़ायब। पु० वस्त्र।
संवृत—वि० ढँका हुआ। घिरा हुआ। रक्षित। दबाया हुआ।
संवेग—पु० उद्विग्नता। शीघ्रता। व्यथा।
संवेद—पु० वेदना, सुखं दुखादिका अनुभव। बोध।
संवेदन—पु०, संवेदना—स्त्री० ज्ञान, भाव, आन्तरिक अनुभूति। किसी भावकी प्रथम अनुभूति 'मनुकामन या विकल हो उठा संवेदनसे खाकर चोट' कामायनी ३६
संवेदित—वि० मालूम किया हुआ। बतलाया हुआ।
संवेश—पु० प्रवेश। सोना। आराम करना। पीढ़ा। स्वप्न।
संवेष्ट—पु० पोथी इ० बाँधनेका कपड़ा, बेठन।
संशय—पु० दुविधा, सन्देह।
संशयात्मक—वि० सन्दिग्ध, अनिश्चित।
संशयात्मा—पु० अधिक सन्देह करनेवाला।
संशयालु—वि० हर बातमें शक करनेवाला।
संशयी—वि० संशय करनेवाला। शक्की।
संशयोपमा—स्त्री० एक काव्यालंकार।
संशित—वि० तेज़ किया हुआ, उतारू।
संशिष्ट—वि० अवशिष्ट।
संशुद्ध—वि० अच्छी तरह साफ किया हुआ चुकता किया हुआ (ऋण आदि)। बरी
संशोधक—पु० संशोधन या परिष्कार करनेवा... करनेवाला। [ तरमीम
संशोधन—पु० त्रुटि दूर करना, शुद्ध ...
संशोषण—पु० सोखने या चूसनेकी क्रिया।
संश्रय—पु० शरण, अभिसन्धि, मेल।
संश्राव—पु० ध्यानपूर्वक सुनना। स्वीकार
संश्रित—वि० लगा हुआ। शरणमें आया हु... हुआ। परावलम्बी। [ युक्त। पु० रा...
संश्लिष्ट—वि० मिला हुआ, परस्पर सम्बद्ध (
संश्लेष—पु० आलिंगन, मिलाप। [
संश्लेषित—वि० आलिङ्गन किया हुआ, ...
संस, संसइ—पु० संशय, सन्देह ( सूबे० १४
संसक्त—वि० संयुक्त, सम्बद्ध, आसक्त, लिप्त,
संसद्—स्त्री० सभा, दरबार। न्यायालय।
संसनाना—अक्रि० हवा बहने या पानी ...
संसय—पु० संशय, सन्देह (उदे० 'जहँडना')।
संसरण—पु० गमन। जगत्। मार्ग। धर्मशाला
संसर्ग—पु० सम्पर्क, सम्बन्ध, सोहबत, संगति।
संसर्गी—वि० सम्पर्क रखनेवाला। पु० मित्र।
संसर्प—पु० रेंगकर चलना।
संसा—पु० देखो 'संस' ( साखी ८२ )।
संसाध्य—वि० करणीय। जेय, दमनीय।
संसार—पु० दुनिया, सृष्टि, आवागमन। ... समूह 'मलयानिल मुख-वासु, जलधिमन लहरोंका संसार' वीणा १५
संसारचक्र—पु० मायाजाल। संसृति। विश्वप्रपञ्च।
संसारी—वि० लौकिक। दुनियादार। व्यवहार-कुश... मोहजालमें फँसा हुआ।
संसिक्त—वि० भलीभाँति सींचा हुआ। [ ...
संसिद्ध—वि० भलीभाँति किया हुआ, मुक्त, निपुण
संसृति—स्त्री० संसार, आवागमन (उदे० ' ...
संसृष्टि—स्त्री० सम्बन्ध, घनिष्ठता, मिलावट, ...

संसेवित—वि० जिसकी सेवा की गयी हो।
संसौ—पु० श्वासा, प्राण ( वि० ५५ )।
संस्करण—पु० संस्कार करना, शुद्ध करना। ठीक करना ग्रन्थकी प्रत्येक बारकी छपाई।
संस्कार—पु० मनपर पड़नेवाला प्रभाव, वर्णधर्मानुकूल कृत्य, सफाई, शुद्धि, सुधार। प्रतिभार, परिहार है अदेह सन्देह, नहीं है इसका कुछ संस्कार' पल्लव१२
संस्कारवर्जित,-हीन—वि०जिसका संस्कार न हुआ हो।
संस्कृत—वि० ठीक किया हुआ, शुद्ध किया हुआ परिष्कृत। स्त्री० देव-भाषा।
संस्कृति—स्त्री० सफाई, परिष्कार, सभ्यता।
संस्खलन—पु० गिरना। चूक जाना।
संस्खलित—वि० गिरा या खसका हुआ, चूका हुआ।
संस्तंभ—पु० निरोध। निश्चेष्ट होनेका भाव। लकवा। हठ।
संस्तब्ध—वि० चपकाया हुआ, एकाएक रुका हुआ।
संस्तर—पु० तह। तृणकी शय्या।
संस्तरण—पु० फैलाने या छितरानेकी क्रिया। बिछावन।
संस्तवन—पु० गुणगान।
संस्तुत—वि० प्रशंसित 'शत सहस्र-नक्षत्र चंद्र-रवि-संस्तुत नयन-मनोरंजन' परिमल १५९।
संस्था—स्त्री० स्थिति, मर्यादा, आकार, समाप्ति, सभा। किसी विशेष उद्देशसे स्थापित मण्डल या समाज, प्रतिष्ठान।
संस्थान—पु० रहनेका स्थान, नाश। आयोजन। ढाँचा।
संस्थापक—पु० स्थापना करनेवाला, प्रवर्त्तक।
संस्थापित—वि० जिसकी स्थापना की गयी हो, चलाया या जारी किया हुआ, जमाया हुआ।
संस्थित—वि०स्थित,ठहरा हुआ। भरा हुआ। बटोरा हुआ।
संस्पर्श—पु० प्रगाढ़ सम्बन्ध। मिश्रण। मेल।
संस्फेट, संस्फोट—पु० लड़ाई।
संस्मरण—पु० याद। याद करना। स्मृतिके आधारपर लिखी गयी किसीके जीवनके सम्बन्धकी बातें।
संस्मारक—वि० स्मरण दिलानेवाला।
संस्राव—पु० बहना। बहता हुआ जल।
संहत—वि० परस्पर मिला हुआ। घायल। दृढ़। एकत्र।
संहति—स्त्री० समूह, सन्धि, मेल।
संहनन—पु० संहार,वध,एकमें मिलाना, मेल, मालिश।
संहरण—पु० संहार, एकत्र करना।
संहरना—अक्रि० नष्ट होना। सक्रि० देखो 'संहारना'।
संहर्षण—पु० होड़। प्रफुल्ल होना। वि० प्रमुदित करनेवाला।
संहात—पु० दल, समूह।
संहार—पु० विनाश, वध, परिहार, लौटा लेना, सार, एकत्रीकरण, संग्रह।
संहारक—पु० संहार करनेवाला, विनाश कर्त्ता। संग्राहक।
संहारना—सक्रि० नष्ट करना, मारना ( उदे०'पट्टिश' ), हनन करना।
संहित—वि० इकट्ठा किया हुआ। संयुक्त।
संहिता—स्त्री० प्राचीन मुनियोंद्वारा संगृहीत ग्रन्थ, वेदोंका मन्त्रभाग। सन्धि, मेल।
सइ—विभक्ति से, साथ।
सइना—स्त्री० सेना, फौज।
सइयो—स्त्री० सखी।
सई—स्त्री० सखी।
सईस—पु० साईस।
सउँ—विभक्ति सों, से।
सउत—स्त्री० सौत।
सऊर—पु० देखो 'शऊर'।
सक—स्त्री० शक्ति। पु० शक, शङ्का, सन्देह।
सकट—पु० शकट, छकड़ा।
सकत, सकति—दे० 'शक्ति' 'सबकै सकति सम्भु-धनु भानी।' रामा १७७, ( उदे० 'आन' ), सूर सकत जैसे लछिमन तन बिह्वल होइ मुरझान।' सूबे० ३२५। सम्पत्ति।
सकता—स्त्री० शक्ति। ठहराव। एक तरहकी बीमारी।
सकना—अक्रि० योग्य या समर्थ होना।
सकपक—स्त्री० हिचक, घबराहट ( कविप्रि० १६९ )।
सकपकाना—अक्रि० आश्चर्य या लज्जासे प्रभावित होना। हिचकना। हिलना ( प० २३३ )।
सकरण—वि० साधनयुक्त।
सकरना—अक्रि० स्वीकृत होना।
सकरपाला—पु० एक तरहकी मिठाई। एक तरहकी चौकोर सिलाई।
[ जूठा। पु० जूठन।
सकरा—वि० संकीर्ण, संकुचित ( उदे० 'उढरना' )।
सकरुण—वि० करुणायुक्त, दयावान्।
सकर्मक—वि० कर्मयुक्त, क्रियाशील 'अर्धप्रस्फुटित उत्तर मिलते प्रकृति सकर्मक रही समस्त' कामायनी३३

सकल—वि० सब, सारा । दे० 'शकल' ।
सकलात—पु० उपहार ( छत्र० १०७ ) । रजाई ।
सकलाती—वि०मखमलका ('सकलाती जूता',ग्राम२२४)
सकसकाना, सकसाना—अक्रि० भयभीत होना ( उदे० 'धकधकाना' ) ।
सकसना—देखो 'सकसाना' (रत्ना० २३१ ) ।
सकाना—अक्रि० शंका करना; आगापीछा करना, डरना 'बदन देखि बिधुबिधि सकात मन नैन कुंज कुंडल उजियारी ।' सू० ५७, ( उदे० 'पाँव', प० २४४, रामा० १४५ ।
सकाम—वि० कामना सहित । पु० वह जिसे कोई कामना हो या जो किसी इच्छासे कोई कार्य करे ।
सकारना—सक्रि० स्वीकार करना ( पभू० ३९ ), मान लेना । हुण्डीपर हस्ताक्षर कर उसे स्वीकार करना ।
सकारा—पु० सबेरा 'कबकौ भयौ सकारौ ।'—वंशीधर, ( गुलाब ५६४ ) ।
सकारे, सकारैं—क्रिवि० सबेरे बाँग देहि नित साँझ सकारै ।' छत्र० ८२, ( कविता० १५८, सू० ३२ ) ।
सकाल—पु० प्रातःकाल 'कनक छायामें, जब किसकाल. खोलती कलिका उरके द्वार' पल्लव ४
सकाश—पु० पास ।
सकिलना—अक्रि० सिमटना, बटुरना ( रामा० २७ ) । सङ्कुचित होना । सरकना ।
सकुच—स्त्री० सङ्कोच, लज्जा ( राम० १७६ ) ।
सकुचना—अक्रि० शरमाना, सङ्कुचित होना, 'सकुचत अरु बिगसत वा छविपर, अनुदिन जनम गँवावत ।' सू० ९४, ( उदे० 'सुआर' ) ।
सकुचाई—स्त्री० सङ्कोच ।
सकुचाना—अक्रि० देखो 'सकुचना' ( उदे० 'ज़मी' ) । सक्रि० सङ्कुचित करना, लज्जित करना ।
सकुची—स्त्री० एक तरहकी मछली ।
सकुचीला—वि० सङ्कोच करनेवाला ।
सकुचौहाँ—वि० लजीला ( वि० २४५ ) ।
सकुड़ना—अक्रि० सिकुड़ना ।
सकुन—पु० शकुन, शुभाशुभ चिह्न । पक्षी ।
सकुनी—स्त्री० पक्षी ।
सकुपना—अक्रि० क्रोध करना ।
सकुल—पु० उत्तम कुल ।
सकुली—स्त्री० एक मछली, सकुची ।
सकूनत—स्त्री० निवास स्थान ।
सकृत—अ० एकबार ( उदे० 'तारन त
सकेत—वि० सङ्कीर्ण, सकरा । पु० संकेत, सहेट ।
सकेतना—अक्रि० सङ्कुचित होना, सम्
सकेरना—सक्रि० एकत्र करना ( बन्द सब गये समाय असुर तब चौंच सकेर
सकेलना—सक्रि० इकट्ठा करना, बटोरना ( 'पुड़ी', ग्राम० ४८, रामा० ३४१ ) ।
सकेला—स्त्री० एक तरहकी तलवार ।
सकोच—पु० संकोच ( उदे० 'दह' ) ।
सकोतरा—पु० एक नीबू, चकोतरा ।
सकोपना—अक्रि० क्रोध करना ।
सकोरना—दे० 'सिकोड़ना' 'कामकी नाक....' माधि० २८, ( सूसु० १६५ )
सकोरा—पु० कसोरा मिट्टीका प्याला ।
सक्का—पु० भिश्ती ।
सक्ति—स्त्री० शक्ति, सामर्थ्य, बल ।
सक्तु, सक्तुक—पु० सत्तू ।
सक्थी—स्त्री० जाँघ । हड्डी ।
सक्र—पु० शक्र, इन्द्र । सक्रधनु=इन्द्रधनुष(
सक्रारि—पु० मेघनाद ।
सक्रिय—वि० क्रियायुक्त, फुर्तीला ।
सक्षम—वि० समर्थ, क्षमतायुक्त ।
सखरस—पु० नवनीत ।
सखरा—पु० निखराका विपरीत, दाल भात
सखरी—स्त्री० भात इ० कच्ची रसोई । [
सखा—पु० मित्र, बन्धु, साथी ।
सखावत—स्त्री० उदारता । दानशीलता ।
सखी—स्त्री० सहेली' सङ्गिनी, आली । सखी =
सखीभाव—पु० वैष्णव सम्प्रदायका एक भेद भक्त अपनेको उपास्य देवकी पत्नी मानता है ।
सखुआ—पु० साखू । शाल तरु ।
सखुन—पु० कविता । कथन, बातचीत ।
सखुनतकिया—पु० तकिया कलाम ।
सख्त—वि० कठोर, दृढ़ । स्त्री० संकट 'सुझपै प सख्त ।' सुजा० ६०

सख्य—पु०, सख्यता—स्त्री० मैत्री, बन्धुत्व।

सग—पु० कुत्ता। त्रि० सगा, अपना 'रवि ससि काको सग कहँ काको समुझहिं ग्यान'। कलस १७५

सगण—पु० छन्दशास्त्रके आठ गणोंमेंसे एक।

सगनौती—स्त्री० शकुन विचारनेकी क्रिया।

सगपन, सगापन—पु०, सगारत—स्त्री० सगा होनेका भाव।

सगपहता—पु० साग मिलाकर बनायी हुई दाल।

सगबग—वि० द्रवित, सराबोर। भयभीत (भू० १५४)।

सगबगाना—अक्रि० सकपकाना, घबड़ा जाना, सराबोर होना। 'पूछैं क्यों रूखी परति सगिबगि गई सनेह।' वि० २८४ [पु० तालाब।

सगरा—वि० सारा, समस्त, कुल ( उदे० 'अटकाना' )।

सगर्भा—स्त्री० गर्भवती स्त्री। सगी बहिन।

सगल—वि० सकल, सब।

सगा—वि० सहोदर, निकट सम्बन्धवाला।

सगाई—स्त्री० विवाहका निश्चय, मँगनी, नाता ( सू० २१९ ), विवाह तुल्य सम्बन्ध।

सगावी—स्त्री० ऊदबिलाव।

सगुण—पु० ब्रह्मका साकार रूप।

सगुन—पु० शुभाशुभ लक्षण, शुभ-सूचक वस्तु ( उदे० 'दहेंड़ी' ) दे० 'सगुण' ( उदे० 'तरकना' )।

सगुनाना—सक्रि० शकुन देखना, शकुन बतलाना ( सू० २१५ )।

सगुनिया—पु० सगुन विचारनेवाला।

सगुनौती—स्त्री० देखो 'सगनौती', 'बैठी जननि करत सगुनौती।' सू० ४३

सगोत, सगोती, सगोत्र—वि० एक ही गोत्र या कुलके लोग ( उदे० 'गपकना' )।

सगौती—स्त्री० गोश्त, मांस।

सघन—वि० गझिन, घना, सटा हुआ।

सच—पु० सत्य। वि० सत्य, ठीक।

सचन—पु० सेवा,टहल।

सचना—सक्रि० सञ्चित करना, जमा करना। सजाना, पूरा करना 'बहु कुंड शोनित सों भरे पितु तर्पणादि क्रिया सची।' राम० १६७। अक्रि० प्रसन्न होना 'पुलन बेदी विराजैं दम्पति देखि देखिकै मन सच्चौ।' श्री भट्ट

सचमुच—क्रिवि० वास्तवमें, निस्सन्देह, यथार्थमें।

सचरना—दे० 'सँचरना'।

सचराचर—पु० स्थावर जङ्गम वस्तुएँ।

सचल—वि० गतिमान, चञ्चल। पु० जङ्गम पदार्थ।

सचलता—स्त्री० चलनेका स्वभाव, गतिशीलता (प्रिय०

सचाई—स्त्री०सत्यता,वास्तविकता,ईमानदारी। [२१)।

सचान—पु० बाज़ पक्षी ( उदे० 'दुकना' )।

सचारना—सक्रि० सञ्चारित करना।

सचिंत—वि०चिन्तायुक्त, चिन्तित।

सचिक्कण—वि० बहुत चिकना।

सचिव—पु० मन्त्री, सहायक।

सची—स्त्री० शची, इन्द्राणी। अगुरु।

सचु—पु० सुख, प्रसन्नता। 'जल बिनु मीन कवन सचु पावा।' बीजक ७८, 'कब वह मुख बहुरों देखौंगी, कब वैसो सचु पैहों।' सू० १९०

सचेत—वि० सावधान, चेतनायुक्त, चालाक, समझदार।

सचेतन—वि० चेतनायुक्त, सावधान। पु० चेतनायुक्त

सचेष्ट—वि० चेष्टावान्। [जीव।

सच्चरित,-त्र—वि० अच्छे चरित्रवाला।

सच्चा—वि० चोखा, विशुद्ध, यथार्थ, सत्यभाषी।

सच्चाई—स्त्री० देखो 'सचाई'।

सच्चिदानंद—पु० सत्-चित्-आनन्द-स्वरूप परमात्मा।

सच्छन्द—वि० स्वच्छन्द।

सच्छी—पु० साक्षी।

सज—स्त्री० सजावट, बनाव।

सजग—वि० सतर्क, सावधान ( उदे० 'गथ' )।

सजदार—वि० सुन्दर, सुडौल।

सजधज—स्त्री० सजावट, तैयारी, बनाव।

सजन—पु०स्वजन, प्रियतम, पति, सज्जन।

सजना—अक्रि० शृङ्गार करना, भूषणादि या शस्त्रादि धारण करना, शोभित होना। सक्रि० सजाना। धारण करना 'पायन परि ऋषिके सजि मौनहिं। केशव उठि गये भीतर भौनहिं।' राम० ४६, ( उदे० ['टोपा' )।

सजनी—स्त्री० सखी ( सू० ८८ )।

सजबज—स्त्री० सजधज, ठाटबाट।

सजल—वि० जलयुक्त, अश्रुपूर्ण। चमकीला, पानीदार, 'सजल आँसुओंकी अञ्चल' पल्लव ९०।

सजला—वि० सँझला। वि० स्त्री० जलयुक्त।

सजवाई—स्त्री० सजवानेकी क्रिया या मज़दूरी ।
सज़ा, सजाइ—स्त्री० अपराधका दण्ड (उदे० 'करुआ')।
सजागर—वि० जाग्रत । सचेत ।
सजात—वि० एक साथ उत्पन्न ।
सजाति, सजातीय—वि० एक ही जातिका ।
सजान—पु० सुजान, जानकार ।
सजाना—सक्रि० भूषणादिसे सँवारना, सिलसिलेसे रखना ।
सजाय—दे० 'सज़ा' ।
सज़ायाफ्ता—पु० वह जो सजा पा चुका हो ।
सजाव—पु० एक तरहका बढ़िया दही । दे० 'सजावट' ।
सजावट—स्त्री० सजानेकी क्रिया, तैयारी, शोभा ।
सजावन—पु० सजाना या तैयारी करना ।
सजावल—पु० तहसीलदार । राजकर्मचारी ।
सज़ावार—वि० जो दण्ड पानेके योग्य हो ।
सजीला—वि० सजा हुआ, सुन्दर, छबीला ।
सजीव—वि० जीव-युक्त ( उदे० 'बकसना' ), ओज-पूर्ण । पु० प्राणी ।
सजीवन—पु०, सजीवनी—स्त्री० सञ्जीवनी बूटी ।
सजुग—वि० सजग, सावधान । सयान, समझदार
सजूरी—स्त्री० एक मिष्टान्न । [ (ग्राम० १३९) ।
सजोना—सक्रि० देखो 'सँजोना' तथा 'सजाना' ।
सजोयल—दे० 'सँजोइल' ( सूबे० ३२९ ) ।
सज्जन—पु० साधु पुरुष, कुलीन व्यक्ति । प्रियतम ।
सज्जनता,-ताई—स्त्री० साधुता, भलमनसाहत ।
सज्जा—स्त्री० शय्या । सजावट । तैयारी (साकेत ४०२)।
सज्जित—वि० सजाया हुआ । तैयार ।
सज्जी—स्त्री० खारी मिट्टी जिससे कपड़े धोते हैं ।
सज्ञान—वि० समझदार, बुद्धिमान् । [ छत्र० २२
सज्या—स्त्री० शय्या 'सुन्यो कुँवर रन सज्या सोयो ।'
सटक—स्त्री० लचीली छड़ी ( उदे० 'चिलक' ), लम्बा नैचा । सटकनेकी क्रिया ।
सटकना—अक्रि० चुपकेसे चल देना । सक्रि० कूटना ।
सटकाना—सक्रि० छड़ी आदिसे मारना ।
सटकार—स्त्री० सटकानेकी क्रिया । झटकारना, हाँकना ।
सटकारना—सक्रि० सटकाना । फटकारना ।
सटकारा—वि० लम्बा और चिकना ( रवि० १९ ) ।
सटकारी—स्त्री० पतली लचीली छड़ी ।
[illegible]—पु० दौड़ । छड़ी ।
सटना—अक्रि० चिपकना, एक दूसरेसे
सटपट—स्त्री० घबड़ाहट, सकपकाहट, किचाहट, संकोच, भय ( कविप्रि० १
सटपटाना—अक्रि० संकुचित होना, [illegible] जाना । भौचक्का होना, संशयमें पड़ना 'सटपट' शब्द करना ।
सटरपटर—वि० छोटा मोटा, मामूली, व्यर्थका काम, बखेड़ा । छोटी मोटी [illegible]
सटसट—क्रिवि० सटासट । फौरन ।
सटा—स्त्री० अयाल, जटा । वि० मिला [illegible]
सटाकी—स्त्री० पैनेके सिरेपर बाँधी जाने
सटाना—सक्रि० मिलाना, चिपकाना, [illegible]
सटिया—स्त्री० साँटी, छड़ी 'सटिया लिये थरथरात रिसगात । सूबे० ६६
सटीक—वि० टीकाके साथ । बिलकुल ठीक
सट्टा—पु० बाज़ार । इक़रारनामा ।
सट्टाबट्टा—पु० चालबाज़ी । मेलजोल ।
सट्टी—स्त्री० बाज़ार ।
सठ—पु० शठ, दुष्ट ( उदे० 'बंगा' ) ।
सठई,-ता—स्त्री० दुष्टता, मूर्खता ।
सठियाना—अक्रि० साठ वर्षका होना, बुढ़[illegible] विकृत हो जाना, बुद्धिका ह्रास होना ।
सठेरा—पु० सन निकाला हुआ डण्ठल ।
सठोरा—पु० सोंठका लड्डू ।
सड़क—स्त्री० मार्ग, चौड़ा रास्ता ।
सड़न—स्त्री० सड़नेकी क्रिया या उसकी दुर्गन्ध
सड़ना—अक्रि० गलना, बिगड़ जाना, बुरी [illegible]
सड़सठ—वि० सात और साठ । पु० ६७ की [illegible]
सड़सी—स्त्री० सँड़सी ।
सड़ाईंद, सड़ायँध—स्त्री० सड़ी हुई चीज़की [illegible]
सड़ान—स्त्री० सड़नेकी क्रिया ।
सड़ाना—सक्रि० गलाना, बुरी दशामें रखना ।
सड़ाव—पु० सड़नेकी क्रिया ।
सड़ासड़—क्रिवि० 'सड़ासड़' शब्दके साथ ।
सड़ियल—वि० सड़ा हुआ, रद्दी, बेकाम ।
सतंत—क्रिवि० हमेशा, बराबर (कलश २१७ ) ।
सत—पु० सचाई, सत्य, सार ( उदे० 'भूआ' ), तत्त्व । वि० सौ ।

सतकारना—सक्रि० सत्कार करना ( रघु० ११ ) ।
सतजुग—पु० सत्ययुग ।
सतत—अ० हमेशा, लगातार ।
सततगति—पु० वायु ।
सतदल—पु० कमल ( उदे० 'कल्हार' ) ।
सतनजा—पु० सात विभिन्न अन्नोंका मिश्रण ।
सतपतिया,-पुतिया—स्त्री० एक तरहकी तरोई ।
सतपत्र—पु० शतपत्र, कमल ( मति० २१८ ) ।
सतपदी—स्त्री,-फेरा—पु० विवाह परिक्रमा, भाँवर, सप्तपदी । -[ ५९४, ६१८ ) ।
सतभाय, सतिभाय—पु० सद्भाव, सच्चा भाव ( विन०
सतभाव—पु० अच्छा भाव, सौहार्द, सचाई ।
सतभौंरी—स्त्री० विवाहकी एक रस्म, सप्तपदी ।
सतमासा—पु० गर्भाधानके सातवें महीनेका उत्सव,सातवें
सतयुग—पु० सत्ययुग,कृतयुग । [महीनेमें उत्पन्न बच्चा ।
सतरंगा—वि० सात रङ्गोंका ।
सतरंज—स्त्री० शतरञ्ज नामक खेल ।
सतरंजी—स्त्री० देखो शतरञ्जी' ।
सतर—स्त्री० लकीर,कतार । वि०क्रुद्ध,टेढ़ा (बि०२४४) ।
सतराना—अक्रि० क्रोध करना, ( उदे० 'झाँपना' 'न्याय' ), चिढ़ना 'बोली न बोल कछू सतरायकै भौंहैं चढ़ाय तकी तिरछोहीं ।' रस० १०, ( भ्र० ४० ) ।
सतरौंहा—वि० क्रोधसूचक, क्रोधपूर्ण 'सतरौंही भौंहनि नहीं, दुरै दुराये नेह ।' मति० १७८, ( बि० ३५ ) ।
सतर्क—वि० सावधान । तर्कसे पुष्ट, तर्कयुक्त ।
सतलज—स्त्री० पञ्जाबकी एक नदी ।
सतलड़ी,-लरी—स्त्री० सात लड़ियोंकी माला ।
सतवंती—वि० स्त्री० सती ।
सतसंग—पु० अच्छी संगति ।
सतसई—स्त्री० सात सौ पद्योंकी पुस्तक ।
सतह—स्त्री० तल, पृष्ठ भाग ।
सतहत्तर—वि० सात और सत्तर । पु० ७७ की संख्या ।
सतांग—पु० रथ 'कोउ तुरङ्ग चढ़ि कोउ मतङ्ग चढ़ि कोउ सतांग चढ़ि धाये ।' रघु० २९
सतानंद—पु० जनकजीके पुरोहित ।
सताना, सतावना—सक्रि० सन्ताप देना, दुःख देना, परेशान करना ।
सतालू—पु० एक पेड़ या उसका फल ।
सतावर—स्त्री० शतमूली नामक ओषधि ।
सतासी—वि० अस्सी और सात । पु० ८७ की संख्या ।
सती—स्त्री० साध्वी स्त्री, पतिके साथ जलानेवाली स्त्री ।
सतीत्व—पु० पातिव्रत्य ।
सतुआ—पु० भुने हुए चने इत्यादिका चूर्ण ।
सतुआन—स्त्री० मेष संक्रान्ति ।
सतून—पु० खम्भा ।
सतूना—पु० बाजके झपटनेका एक ढँग ।
सतोखना—सक्रि० सन्तोष देना, समझना ।
सतोगुणी—वि० सद्गुणी, सात्विक ।
सत्—पु० सत्य, सार,ब्रह्म । वि०सत्य,ठीक,भला,प्रशस्त
सत्कार—पु० सम्मान, आवभगत, अतिथि-सेवा ।
सत्कृत—वि० सत्कार किया हुआ, जिसका सत्कार [
सत्क्रिया—स्त्री० सत्कार । सत्कर्म । [ गया हो
सत्त—पु० सतीत्व, सत्य । मूलतत्व, सार ।
सत्तर—वि० अस्सीसे दस कम । पु० ७० की संख्या ।
सत्तरह—वि० सोलह और एक । पु० सत्तरहकी संख्या दो छक्के एक पञ्जेका दाँव ।
सत्ता—स्त्री० अस्तित्व, प्रभुत्व, अधिकार, शक्ति। पु सात बूटियोंवाला ताशका पत्ता ।
सत्ताईस—वि० बीस और सात । पु० २७ की संख्या
सत्तावन—वि० पचास और सात । पु० ५७ की संख्या
सत्तू—पु० देखो 'सतुआ' ।
सत्पथ—पु० सन्मार्ग । अच्छा मार्ग ।
सत्पात्र—पु० योग्य व्यक्ति, उपयुक्त वर ।
सत्पुरुष—पु० सज्जन, भला आदमी ।
सत्य—वि० ठीक, यथार्थ । पु० ठीक बात, सचाई,
सत्यतः—अ० सचमुच । [ सङ्गत बात
सत्यनिष्ठ—वि० सत्यपर जिसकी निष्ठा हो, सत्यपरायण
सत्यपर—वि० ईमानदार । [ '|' करनेवाला
सत्यप्रतिज्ञ—वि० सत्यसन्ध । अपने वचनका पालन
सत्यभामा—स्त्री० श्रीकृष्णकी स्त्री ।
सत्ययुग—पु० त्रेताके पहलेका युग, कृतयुग ।
सत्यलोक—पु० सबसे ऊपरका लोक ।
सत्यवती—स्त्री० व्यासकी माता ।
सत्यवादी—वि० सच बोलनेवाला, वचन पूरा करनेवाला
सत्यसंकल्प—वि० अपने सकल्पपर अटल रहनेवाला ।
सत्यसंध—वि० प्रतिज्ञा पूरी करनेवाला, सच्चा ।

सत्या—स्त्री० सचाई। सीता या दुर्गाका एक नाम। सत्यभामा ( कविप्रि० १२ )।

सत्यानास—पु० विनाश, बरबादी। [ पौधा।

सत्यानासी—वि० चौपट करनेवाला। स्त्री० एक कँटीला

सत्र—पु० यज्ञ, घर, सदावर्त्त, छेत्र। शिक्षण संस्थाओं आदिकी दो लम्बी छुट्टियोंके बीच पड़नेवाला कार्यकाल।

सत्रि—पु० मेघ। हाथी। यज्ञकर्त्ता।

सत्री—पु० यज्ञकर्ता। राजदूत।

सत्रु—पु० शत्रु, दुश्मन।

सत्व—पु० सार, तत्व, अस्तित्व, तीन गुणोंमेंसे पहिला, सचाई, सद्गुण, विशेषता, शक्ति, साहस, भूत।

सत्वर—क्रिवि० तुरन्त, शीघ्र।

सत्वशाली—वि० बलवान्, साहसी, धीरवीर।

सत्संग—पु० अच्छी सङ्गति।

सत्संगति—स्त्री० देखो 'सत्सङ्ग।

सत्संगी—वि० अच्छी सङ्गतिमें रहनेवाला। मिलनसार।

सथर—पु० स्थल, पृथिवी।

सथिया—पु० स्वस्तिक चिह्न। ( सू० ४८ )।

सद—वि० ताजा 'सद माखन साजो दधि मीठो मधुमेवा पकवान।' सूबे०७२। क्रिवि० सद्यः, तुरन्त 'सूरदास सुर जाचत ते पद करहु कृपा अपने जनपर सद।'

सदई—दे० 'सदा'। [ सू० १०१

सदक—पु० वह अनाज जिसकी भूसी नहीं निकाली

सदका—पु० उतारा। दान। खैरात। [ गयी हो।

सदन—पु० धाम, गृह।

सदबरग,-बर्ग—पु० एक फूल, गेंदा ( प० ८८,२६ )।

सदमा—पु० धक्का, मानसिक आघात, बड़ी हानि।

सदय—वि० दयावान्, कृपालु।

सदर—वि० प्रधान। पु० अध्यक्ष, केन्द्रस्थान।

सदरी—स्त्री० एक तरहकी बण्डी।

सदर्थ—पु० धनी पुरुष। मुख्य बात।

सदर्थना—सक्रि० समर्थन करना।

सदसि, सदस्—पु० गृह। सभा।

सदस्य—पु० सभासद, पञ्च।

सदहा—वि० सैकड़ों। पु० याजक। सदस्य।

सदा—क्रिवि० हमेशा, निरन्तर। स्त्री० आवाज़, पुकार, रट ( कर्म० ४८७ )।

सदागति—पु० वायु ( कविप्रि० ९२ ) सूर्य।

सदाचरण—पु० अच्छा व्यवहार, शुभ

सदाचार—पु० अच्छा चाल-चलन, सद्

सदाचारी—वि० शुभ आचरणवाला, सु

सदानंद—पु० निरन्तर आनन्दमें रहने।

सदाफर, सदाफल—वि० सदा [illegible] नारियल, गूलर, एक नीबू ( उदे० [illegible]

सदावरत, सदावर्त—पु० नित्यका अन्न

सदाबहार—वि० जो सदा हरा रहे

सदाशय—वि०महानुभाव। सज्जन।

सदाशयता—स्त्री० सज्जनता।

सदी—स्त्री० सैकड़ा, शताब्द।

सदूर—पु० शार्दूल (सिंह) 'लंक देखि कै

सदृश—वि० तुल्य, समान, अनुरूप।

सदेह—क्रिवि० देह-सहित, बिना शरीर

सदैव—क्रिवि० हमेशा, सर्वदा।

सद्—वि० सत्य।

सद्गति—स्त्री० अच्छी गति, मोक्ष।

सद्गुण—पु० अच्छा गुण।

सद्द—क्रिवि० तुरन्त, शीघ्र। पु० शब्द करि हूह सद्द।' सुजा० ९५, ( उदे० '

सद्भाव—पु० उत्तम भाव, सौहार्द,

सद्म—पु० घर। युद्ध।

सद्मिनी—स्त्री० विशाल भवन।

सद्यःप्रसूता—वि० स्त्री० जिसने अभी

सद्य—क्रिवि० अभी, आज ही, शीघ्र,

सधना—अक्रि० अभ्यस्त होना, सिद्ध है

सधर—पु० ऊपरका ओंठ 'नीकी छवि अ

सधर्म—वि० गुण या धर्ममें समान। [ रहि

सधवा—स्त्री० सौभाग्यवती, सुहागिन।

सधावर—पु०गर्भवती स्त्रीके निमित्त भेजा

सन—पु० एक पौधा। देखो 'सन्'। [illegible] ( उदे० 'बाजना' )। वि० सन्न, स्तब्ध।

सनई—स्त्री० एक तरहका सन।

सनक—स्त्री० धुन, खब्त, झक। पु० एक

सनकना—अक्रि० झक्की या पागल हो जाना

सनकाना—सक्रि० पागल बननेमें किसीको

सनकारना—सक्रि० इशारा करना ( कविता इशारेसे बुलाना 'सनकारे सेवक सकल चले पाइ।' रामा० २९३

सनकियाना—अक्रि० पागल होना । सक्रि० संकेत करना । पागल बनाना ।
सनद—स्त्री० प्रमाण, प्रमाण पत्र ।
सनदयाफ्ता—वि० जिसे सनद या प्रमाणपत्र मिला हो ।
सनदी—स्त्री० वृत्तान्त, हाल (?) ( नव० ११ ) ।
सनना—अक्रि० गूँधा जाना, लिप्त होना, पगना ।
सनम—पु० प्रियतम ।
सनमान—दे० 'सम्मान' ।
सनमानना—सक्रि० सम्मान करना ( रामा० ४० ) ।
सनमुख—क्रिवि० सामने ( उदे० 'धोप', 'पछमन' ) ।
सनसनाना—अक्रि० हवा बहने या पानी खौलनेका शब्द होना, सन सन करना ।
सनसनाहट—स्त्री० हवाके तेज़ीसे चलने या पानी उबलने का शब्द ।
सनसनी—स्त्री० झनझनाहट । खलबली, सन्नाटा ।
सनहकी—स्त्री० मुसलमानोंके प्रयोगमें आनेवाला एक मिट्टीका पात्र ।
सनाढ्य—पु० ब्राह्मणोंका एक भेद ।
सनातन—वि० सदा रहनेवाला, अति प्राचीन, परम्परागत । पु० अनादिकाल ।
सनातनता—स्त्री० नित्यता, सदैव विद्यमान रहनेका भाव, रूढ़ि ।
सनातन पुरुष—पु० विष्णु भगवान् ।
सनातनी—पु० सनातनधर्मी । वि० चिरकालागत ।
सनाथ—वि० जिसका कोई रक्षक हो, सफल 'भये सखि नैन सनाथ हमारे ।' सू० १९२, ( उदे० 'कदाचि' ) ।
सनाय—स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दवाके काममें आती हैं ।
सनाह—पु० कवच (उदे० 'गजगाह', 'टोपा', रघु० २३६)
सनि, सनीचर—पु० शनि, एक ग्रह, एक दिन ।
सनित—वि० सना हुआ, पगा हुआ ( प्रिय० ६३ ) ।
सनीचरी—स्त्री० शनिकी दशा ।
सनीड़—वि० पासका । क्रिवि० पासमें ।
सनेस—पु० सन्देश, समाचार ( कलस २७१ ) ।
सनेह—पु० प्रेम, तेल ( उदे० 'यह', वि० २७० ) ।
सनेहिया, सनेही—पु० प्रेम करनेवाला ।
सनै सनै—क्रिवि० धीरे धीरे, क्रमशः ।
सन्—पु० वर्ष, संवत् ।
सन्न—वि० स्तब्ध, डर इ० से एकदम चुप, संज्ञाहीन ।
सन्नद्ध—वि० प्रस्तुत, तैयार, जुड़ा हुआ, जकड़ा हुआ ।
सन्नाटा—पु० निस्तब्धता, निर्जनता, नीरवता । हवा चलनेका शब्द । वि० निर्जन, नीरव ।—खींचना = बिलकुल चुप हो जाना । सन्नाटेके साथ = तेज़ीसे ।
सन्नाह—पु० देखो 'सनाह' ।
सन्निकट—क्रिवि० बहुत पास, निकट ।
सन्निकर्ष—पु० निकटता । सम्बन्ध । आश्रय ।
सन्निकाश—वि० सदृश, एक रूपरङ्गका ।
सन्निधान—पु० सामीप्य । साम्मुख्य । भण्डारघर ।
सन्निधि—स्त्री० निकटता, सामीप्य, पड़ोस ।
सन्निपात—पु० एक साथ गिरना, संयोग, समाहार । एक रोग ( उदे० 'नासना' ) ।
सन्निरुद्ध—वि० रोका या दबाया हुआ ।
सन्निविष्ट—वि० एक साथ रखा हुआ, एकत्रीभूत, समीपस्थ, जड़ा हुआ, प्रतिष्ठित ।
सन्निवेश—पु० रखने, बैठने, बैठाने आदिकी क्रिया स्थिति, घर, आसन । इकट्ठा होना ।
सन्निवेशित—वि० रखा या जमाया हुआ, स्थापित ।
सन्निहित—वि० पास रखा हुआ, समीपस्थ, सन्नद्ध ।
सन्मान—पु० सम्मान, आदर ।
सन्मुख—अ० सामने ।
सन्यास, सन्यासी—पु० देखो 'संन्यास' 'संन्यासी' ।
सपक्ष—वि० पक्षयुक्त, सहायक, समर्थक । पु० मित्र
सपच्छ—देखो 'सपक्ष' ।
सपत—दे० 'सपदि', 'सपत ऋषिन्ह विधि कहेउ न लाइय ।' पार्सं० ४०, ( प० १७ ) ।
सपत्न—पु० दुश्मन, विरोधी ।
सपत्नी—स्त्री० सौत ।
सपत्नीक—वि० पत्नीके साथ, स्त्री-सहित ।
सपथ—स्त्री० शपथ, सौगन्ध ।
सपदि—क्रिवि० तत्क्षण, शीघ्र ( रामा० ७८ ) ।
सपन, सपना—पु० स्वप्न, ख्वाब ( उदे० 'कुचैन' काना', सू० १२२ ) ।
सपरदाई, सफरदाई—पु० नर्तकी इ० के साथ साज बजानेवाला ।
सपरना—अक्रि० हो सकना, पार लगना, पूरा ( रघु० १२७ ) । स्नान करना ( बुन्देल० ) ।
सपराना—सक्रि० पूरा करना । स्नान कराना ।
सपर्या—स्त्री० पूजा, आदर ।
सपाट—वि० एकसा, समथर ।
सपाटा—पु० तेज़ी, झोंका, दौड़ ।

सपिंड—पु० सगोत्र, एक ही कुलका व्यक्ति ।
सपिंडीकरण—पु० श्राद्ध-विशेष ।
सपूत—पु० कुलका नाम बढ़ानेवाला लड़का, सुपुत्र ।
सपेत, सपेद—वि० सफेद, श्वेत, उजला ( उदे० 'डासना', 'तनाय' ) ।
सपेला, सपोला—पु० साँपका बच्चा ( रामा० ४७९ ) ।
सप्त—वि० सात ।
सप्तऋषि—पु० कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, वशिष्ठ, गौतम, जमदग्नि । सात तारोंका समूह ।
सप्तक—पु० सात चीजोंका समूह ।
सप्तज्वाल—पु० अग्नि ।
सप्तजिह्व—पु० ( सात जिह्वाओंवाला ) अग्नि ।
सप्तद्वीपा—स्त्री० पृथिवी ।
सप्तपदी—स्त्री० विवाहके समय अग्नि-परिक्रमाकी एक विधि । भाँवर ।
सप्तम—वि० सातवाँ ।
सप्तमी—स्त्री० पाखकी सातवीं तिथि । अधिकरणकारककी विभक्ति ।
सप्तर्षि—देखो 'सप्तऋषि' ।
सप्तशती—स्त्री० सतसई ।
सप्तस्वर—पु० गानके सात स्वर—'सऋगमपधनि' ।
सप्तालू—पु० सतालू ।
सप्ताह—पु० सात दिनोंका समूह । हफ्ता ।
सप्रमाण—वि० प्रमाणयुक्त, प्रामाणिक ।
सफ़—स्त्री० कतार, पंक्ति ( कर्म २७० ) ।
सफतालू—पु० एक फल, आड़ू ।
सफर—पु० यात्रा । एक तरहकी मछली ।
सफरदाई—पु० साज बजानेवाला ।
सफरी—स्त्री० एक तरहकी मछली 'सफरिन भरे रहीम सर'-रहीम १६ । वि० सफरका, यात्रा सम्बन्धी । पु० अमरूद 'सफरी, सेव, छुहारे पिस्ता जे तरबूजा नाम ।' सूसु० ८७ । यात्राकी आवश्यक वस्तुएँ ।
सफल—वि० फलयुक्त, कृतार्थ, सार्थक ।
सफलक—वि० जिसके पास ढाल हो ।
सफलता—स्त्री० कामयाबी, पूर्णता ।
सफलीभूत—वि० जो कामयाब हो चुका हो ।
सफहा—पु० पृष्ठ, तल ।
सफ़ा—वि० पाक । साफ, चिकना । पु० पृष्ठ ।
सफाई—स्त्री० स्वच्छता, निबटेरा, खातमा, निर्दोषिता ।
सफाचट—वि० बिलकुल साफ ।
सफूफ—पु० बुकनी, चूर्ण ।
सफेद—वि० श्वेत, उजला, धौला ।
सफेदपोश—पु० सफेद कपड़े ...
सफेदा—पु० जस्तेके चूर्णसे बनाया हुआ ...
सफेदी—स्त्री० धवलता । चूनेकी ...
सफ्तालू—पु० एक पेड़ या उसका ...
सब—वि० कुल, समग्र, समस्त, ...
सबक—पु० पाठ, सीख, शिक्षा ।
सबद—पु० देखो 'शब्द', ( उदे० 'टाँकी' ४३५ ( उदे० ...
सबब—पु० कारण ।
सबर—वि० सबल । पु० सब्र, धैर्य, ...
सबरा—वि० सब, सारा 'दूध दही ...
सबल—वि० बलयुक्त, सेनायुक्त । [ ...
सबार, सबारै—क्रिवि० शीघ्र (दे० '...
सबील—स्त्री० मार्ग । यत्न, उपाय ( उदे० प्रबन्ध ( कविता० २०० ) ।
सबेरा—पु० प्रातः काल ।
सबेरे—क्रिवि० शीघ्र 'ताहीते आयो सरन ...
सब्ज—वि० हरा, ताजा ।
सब्ज़क़दम—वि० जिसका आगमन अशुभ
सब्ज़ा—पु० एक तरहका घोड़ा । एक रत्न ।
सब्ज़ी—स्त्री० हरियाली । भंग । [ ...
सब्र—पु० सन्तोष, धैर्य ।
सभर्तृका—स्त्री० सधवा ।
सभा—स्त्री० मजलिस, समूह ।
सभागा—वि० भाग्यवान् ( प० १८ ) ।
सभाजन—पु० मित्रोंके आनेपर आलिंगन [ प्रि...
सभापति—पु० सभाका अध्यक्ष या मुखिया ।
सभासद—पु० सदस्य, सभ्य ।
सभीत—वि० डरयुक्त ।
सभ्य—वि० शिष्ट, सुशिक्षित, भद्र, भला, ...
सभ्यता—स्त्री० सदस्यता । शिष्टता । ...जिक जीवनकी अवस्था । संस्कृति ।
समंत—वि० सारा, कुल । पु० सीमा ।
समंद—पु० बादामी रंगका घोड़ा ( प० १९ )
समंदर—पु० समुद्र ।
सम—वि० सदृश, तुल्य, एकसा, पूरा ( दोसे ... योग्य ) । स्त्री० समता ( उदे० 'विगलित' )

साम ( उदे० 'पनच' )। विष। एक काव्यालंकार 'जहँ कारण सम काज या यथायोग्यको साथ। जेहि हित या सम कीजिए, सो आवे निज हाथ।' सङ्गीतमें एक प्रकारका ठहराव।

समकक्ष—वि० बराबर, बराबरीका।

समकक्षी—पु० समान पदवाला। स्त्री० समकक्षिणी।

समकालीन—वि० एक ही कालमें होनेवाला।

समक्ष—क्रिवि० सम्मुख, सामने।

समग्र—वि० समूचा, कुल।

समचर—वि० समान आचरण करनेवाला, एकसा व्यवहार करनेवाला ( विन० १४४ )।

समचित्त,समचेता—पु० वह मनुष्य जिसकी चित्तवृत्ति हर हालतमें समान रहे। तत्त्वज्ञानी।

समझ—स्त्री० बुद्धि, विचार, राय।

समझना—अक्रि० हृदयंगम करना, विचारना, बूझना।

समझाना—सक्रि० मनमें बैठाना। बोध कराना।

समझौता—पु० मेल, राजीनामा। [ तसल्ली देना।

समतल—वि० जिसकी सतह ऊबड़खाबड़ न हो। पु० सतह 'सरसीके जल कसमतल' वीणा ५६।

समता, समताई—स्त्री० सादृश्य, बराबरी।

समतूल—वि० समान 'सुजनक प्रेम हेम समतूला' विद्या० ७२, ( ६९, १२९ )।

समतोल—वि० समान 'तोल तू उच्च-नीच समतोल, एक तरुकेसे सुमन अमोल, सकल लहरोंमें एक उठान, उठा माँ, तन्त्रीकेसे गान, गीतिका ३३।

समत्थ—वि० समर्थ, शक्तिशाली ( उदे० 'चुरी' )।

समदन—पु० लड़ाई। भेंट। उपहार।

समदना—सक्रि० भेंटना, मिलना (उदे० 'विवान')। भेंट करना, सौंपना, विवाहमें देना 'दुहिता समदौ सुख पाइ अबै।' राम० १०८। आनन्दसे मनाना (प० २६५), 'समदि फाग मेलिय सिर धूरी।' प० २६३

समदर्शन,-दर्शी—पु० वह जो सब जीवोंको समान दृष्टिसे देखता हो। [ ( उदे० 'छीका' )।

समदाना—सक्रि० समर्पित करना, हवाले करना, धरना

समदृष्टि—स्त्री० समान दृष्टि। वि० समदर्शी।

समधिक—वि० बहुत ज्यादा।

समधियाना—पु० समधीका घर।

समधी—पु० बेटे या बेटीका ससुर।

समधीत—वि० चढ़ा हुआ।

समधौरा—दे० 'सामध'। [ रामा० ३५

समन—दे० 'शमन'। 'मातमृत्यु पितु समन समाना।'

समन्वय—पु० मेल, मिलाप, संयोग।

समन्वित—वि० संयुक्त। [ शपथ

समय—पु० काल, ज़माना, फ़ुरसत, अवसर। आचार

समर—पु० लड़ाई, युद्ध। मनोज (सुबे० ९९,भ्र० ४०

समरत्थ, समरथ, समर्थ—वि० क्षमताशाली, बलवान् ( उदे० 'जितवना', 'परदा' )।

समरभूमि—स्त्री०, समरांगण—पु० रणक्षेत्र,

समरस—वि० समान। [ का

समरसता—स्त्री० सुख और दुःख दोनोंमें समान आनन्दका अनुभव करना, साम्य, बराबरी।

समराना—सक्रि० सजाना, पहराना, 'आभूखन जड़ावके समराये।' अष्ट० २२

समर्थक—पु० समर्थन करनेवाला, हिमायती।

समर्थन—पु० पुष्टीकरण, दृढ़ीकरण, सहमत होना, चन। उत्साह।

समर्पण—पु० भेंट, उपहार देना, सौंपना, दान, उत्सर्ग

समर्पना—सक्रि० सौंपना, देना ( रामा० १७५ )।

समर्पित—वि० जो सौंपा गया हो। स्थापित।

समल—वि० मलयुक्त, गन्दा। पु० विष्ठा।

समवकार—पु० नाटकका एक भेद।

समवाय—पु० भीड़, समूह, मेल, नित्य सम्बन्ध।

समवेत—वि० जमा किया हुआ, एकत्रीकृत।

समवेदना—स्त्री० किसीके दुःखमें शामिल होनेका हमदर्दी।

समशीतोष्ण—वि० न बहुत ठंढा न बहुत गरम।

समष्टि—स्त्री० सामूहिक रूपसे कुल, सबका समूह।

समसर—स्त्री० बराबरी 'प्रीतम रूप कजाकके कोई नाहिं।' रतन० १७ 'दमक दसनि ईषद हँ उपमा समसर है न।' नागरी०

समसेर—वि० तलवार ( उदे० 'फजर' )।

समस्त—वि० सारा, कुल, सब। समासयुक्त।

समस्या—स्त्री० मिलानेकी क्रिया, टेढ़ा प्रश्न, कठिन प्रसंग, पद्यका अन्तिमांश जिसके आ पूरा पद्य रचा जाता है।

समांतर—वि० समान दूरीपर रहनेवाले। समानान्तर।

समा—पु० समय, अवस्था, लय ।"'एक तरहका चावल ( उत्तर० ७९ )। स्त्री० साल। ध्वय, छटा 'तेरौ सो आनन चन्द लसै, तुअ आननमें सखि चन्द समासी ।' भावि० १०४

समाई—स्त्री० औकात, हैसियत, शक्ति ( रावन ७ )।

समाउ—पु०गुंजाइश,प्रवेश (विन० २५९, कवि० २०१)।

समागत—वि० साथ आया हुआ ।

समागम—पु० भेंट, साथ, मिलन, जमाव, सम्भोग ।

समाचरित—वि०व्यवहृत,जिसका आचरण किया गया हो।

समाचार—पु० सम्वाद, खबर, सन्देसा ।

समाचारपत्र—पु० अखबार, सम्वादपत्र ।

समाज—पु० समुदाय, समूह, जातीयसंघ, मंडली। ( कभी कभी स्त्री० भी 'लखि खिली सरोजनकी समाज' गुलाब ३२३, ५८८ भी )।

समाजवाद—पु० साम्यवाद ।

समादर—पु० सम्मान ।

समादित—वि० देखो 'समादृत' ( प्रिय० ९३ )।

समादृत—वि० सम्मानित ।

समादेय—वि० आदरणीय, ग्राह्य ।

समाधान—पु० निराकरण, तसल्ली ।

समाधानना—सक्रि० निराकरण करना, सान्त्वना देना 'इतेपर बिनु समाधाने क्यों धरै तिय धीर ।' भ्र० ४

समाधि—स्त्री० योगकी अन्तिम क्रिया, चित्तकी एकाग्रता, ध्यान। शान्ति ( रामा० ४१२ )। नींद। समाधान। कब्र। एक काव्यालंकार 'औरै कारन मिलि जहाँ काज सुगम हो जाय ।'

समाधित—वि० जिसने समाधि लगायी हो, जिसने [समाधि ली हो।

समान—वि० सदृश, बराबर, तुल्य ।

समानता—स्त्री० बराबरी, सादृश्य ।

समाना—अक्रि० अटना, भीतर आ सकना। ( उदे० 'आंदा' ), प्रवेश करना (सू० ११४, रामा० ३७६)। सक्रि० अटाना, भरना ।

समापक—पु० समाप्त करनेवाला, पूरक ।

समापन—पु० समाधान। समाप्त करना। वध ।

समापन्न—वि० समाप्त,विपन्न, प्राप्त। पु० समाप्ति,वध।

समाप्त—वि० जो पूरा हो गया हो, पूर्ण ।

समाप्ति—स्त्री० किसी कार्यका अन्त। प्राप्ति ।

समाम्नायिक—वि० शास्त्रविषयक। पु०शास्त्रका ज्ञाता।

समारब्ध—वि० भलीभाँति आरम्भ

समाभ्यस्त—वि० पटु, कुशल ।

समारंभ—पु० पूरी तैयारीके साथ शुरू

समारंभण—पु० आलिंगन ।

समारोह—पु० बड़ा उत्सव, धूमधाम

समालंभ—पु०पकड़ना। हत्या। देहपर के

समालोचक—पु० समालोचना ... ७

समालोचना—स्त्री० सम्यक् प्रकारसे दे

समावर्तन—पु० वापस आना। समयका एक संस्कार ।

समाविष्ट—वि० जो शामिल किया गया

समावेश—पु० मिलाया जाना, संग्रह ।

समास—पु० संक्षेप 'कपि सब चरित ... रामा० ३८३;दो या अधिक पदोंका

समासीन—वि० प्रतिष्ठित, आसीन, बैठा हु

समासोक्ति—स्त्री० एक काव्यालङ्कार ' कछु जहँ प्रस्तुतमें होय ।' [वसूल

समाहर्ता—पु० एकत्र करनेवाला,

समाहार—पु० समूह, एकत्रीकरण।

समाहित—वि० एकत्र।

समाह्वान—पु०बुलाना,मुकाबला करनेके लिए

समाहित—वि० एकत्रीभूत, इकट्ठा, शान्त समाप्त, स्वीकृत ।

समितिंजय—पु० वह जो विजयी हुआ हो ।

समिति—स्त्री० सभा। युद्ध। समानता। छ

समित्, समीक—पु० लड़ाई ।

समिथ—पु० लड़ाई। अग्नि ।

समिद्ध—वि० जलाया हुआ, उदे० 'अर्थि'।

समिध—पु० अग्नि। होमकी लकड़ी ।

समिधा, समिधि—स्त्री० होमकी लकड़ी ।

समिध्—स्त्री० देखो 'समिधा' ।

समीकरण—पु० समान करनेकी क्रिया। जाननेकी क्रिया ( गणित )। [

समीक्षा—स्त्री० अच्छी प्रकार की गयी विवेचना,

समीचीन—वि० योग्य, ठीक, उपयुक्त ।

समीचीनता—स्त्री० उपयुक्तता, औचित्य, ...

समीति—स्त्री० समिति ( विन० ५३२ )।

समीप—वि० निकट, पास। [ ( सूबे० ३६

समीपता—स्त्री० निकटता ।
समीपवर्त्ती—वि० निकटका, पासका ।
समीर—पु० हवा, वायु ।
समीरण—पु० हवा । श्वास । मुसाफिर ।
समीहा—स्त्री० इच्छा, चेष्टा, प्रयत्न । खोज ।
समुंद, समुंदर—पु० समुद्र, सागर । ( उदे० 'उपनना' ['ढाँक' ) ।
समुचित—वि० उपयुक्त, यथोचित, ठीक ।
समुच्च—वि० विशेष ऊँचा ।
समुच्चय—पु० समूह, संग्रह । एक अर्थालंकार 'एक समय ही भाव बहु जहँ कहुँ वरने जायँ । अथवा एकै काजके जहँ बहु हेतु लखायँ ।'।
समुच्छेद—पु० विध्वंस । समुन्मूलन ।
समुच्छ्वास—पु० साँस ।
समुज्ज्वल—वि० अति उज्ज्वल ।
समुझ—स्त्री० समझ ।
समुझना—दे० 'समझना' । [ ॐ (विन० ५४१) ।
समुझनि—स्त्री० समझनेकी क्रिया या भाव, विचार ॐ
समुत्थान—पु० भली भाँति उठना, उदय, उन्नति । आरम्भ । रोगनिदान ।
समुत्सन्न—वि० नष्ट 'तार-तार समुत्सन्न देश-महादेश'
समुत्सुक—वि० अत्युत्सुक । [ अनामिका १७१
समुद—पु० समुद्र ( उदे० 'हँलोरना', 'उलथना',प०४) वि० आनन्दके साथ प्रसन्नतापूर्वक ।
समुदलहर—पु० एक कपड़ा ( प० ५२ ) ।
समुदय—पु० समुदाय, विकाश, उदय । बौद्ध दर्शनमें माने जानेवाले चार तत्वों ( दुःख, समुदय, मार्ग और निरोध ) मेंसे एक, अपनेपन और परायेपनके कारण उत्पन्न राग-द्वेषका बन्धन 'दुःखका समुदय उसका नाश, तुम्हारे कर्मोंका व्यापार' लहर १९
समुदायि, समुदाय, समुदाव—पु० झुण्ड, समूह । ( उदे० 'चापना' ) ।
समुदित—वि० उठा हुआ । समुद्भूत, उत्पन्न ।
समुद्धत—वि० उद्धत 'देख वैभव न हो नतसिर, समुद्धत सम सदा हो स्थिर' अणिमा १४
समुद्भव—पु० पैदाइश, उत्पत्ति ।
समुद्भास, भान—वि० प्रकाशवान् ।
समुद्यत—वि० तैयार ।
समुद्र—पु० उदधि, सागर ।
समुद्रगा—स्त्री० नदी ।
समुद्रचुलुक—पु० अगस्त्य मुनि ।
समुद्रमेखला—स्त्री० पृथिवी ।
समुद्रयात्रा—स्त्री० समुद्र-मार्गसे की गयी यात्रा ।
समुद्रांबरा—स्त्री० पृथिवी ।
समुद्रिय, समुद्रीय—वि० समुद्र सम्बन्धी ।
समुद्वाह—पु० विवाह ।
समुन्नत—वि० सम्यग् रूपसे उन्नत, बहुत ऊँचा ।
समुपकरण—पु० सामान, सामग्री ।
समुपस्थित—क्रिवि० विद्यमान ।
समुल्लास—पु० आनन्द । परिच्छेद ।
समुहाना—अक्रि० सामने होना, बराबर होना ( उ० ), 'चली वलीमुख सेन पराई । अति भय न कोउ समुहाई ।' रामा ४८७
समुहैं—अ० सामनेकी ओर ( रवि० ३० ) ।
समूढ़—वि० इकट्ठा किया हुआ । विवाहित । जो पैदा हुआ हो ।
समूर, समूल—क्रिवि० जड़से, जड़सहित । वि० सहित, पूरा ( उदे० 'असोक' ) ।
समूह—पु० समुदाय, भीड़, ढेर ।
समृद्ध—वि० धनसम्पन्न । उत्पन्न ।
समृद्धि—स्त्री० उन्नति, ऐश्वर्य ।
समेटना—सक्रि० सकेलना, बटोरना ।
समेत—अ० सहित । वि० समागत, संयुक्त ।
समै, समैया—पु० समय (उदे०'कमना', कलस २२१
समो, समौ—पु० समय, वक्त ( सुबे० ३८६ ) ।
समोखना—सक्रि० सहेजकर कहना (उदे० 'ठानना'
समोना—सक्रि० मिलाना ( उदे० 'गरद' ) ।
समोह—पु० युद्ध ।
समौरिया—वि० समान उम्रवाला, समवयस्क ।
सम्मत—वि० सहमत । पु० राय ।
सम्मति—स्त्री० राय ।
सम्मद—पु० खुशी, आनन्द । वि० प्रसन्न, हृष्ट ।
सम्मर्द—पु० युद्ध, झगड़ा । भीड़ ।
सम्मान—पु० आदर ।
सम्मानना—सक्रि० आदर करना । स्त्री० आदर ।
सम्मानित—वि० समादृत, प्रतिष्ठित ।
सम्मार्ग—पु० सत्पथ । उत्तम मार्ग ।

सम्मार्जनी—स्त्री० झाड़ू ।
सम्मिलन—पु० मिलाप ।
सम्मिलित—वि० मिला हुआ, एकत्र, संयुक्त ।
सम्मिश्रण—पु० मिलाना ।
सम्मुख—अ० सामने ।
सम्मूढ़—वि० अबोध, अज्ञान । स्तब्ध, मग्न ।
सम्मेलन—पु० सभा । मिलाप । जमघट ।
सम्मोह—पु० मोह, जड़ता ( पभू० ६२ ), मूर्च्छा ।
सम्मोहन—पु०प्राचीन कालका एक अस्त्र । वशीकरण ।†
सम्यक्—क्रिवि० भलीभाँति । वि० पूर्ण । [† मोहक ।
सम्याना—पु० शामियाना 'अरबाफके सम्याने तामे'—
सम्रथ—वि० समर्थ ( कबीर ९९ ) । [ भू० ११९
सम्राज्ञी—स्त्री० महारानी, मलका ।
सम्राट्—पु० बादशाह, राजराजेश्वर ।
सयन—पु० लेटनेकी क्रिया । ( उदे० 'अलसाना' ) । नींद । बिस्तर । बन्धन ।
सयान, सयानप—पु० समझदारी, चतुरता, बुद्धिमानी ( मति० १९८, २०२, भ्र० १४१, रामा० १३९ ) ।
सयाना—वि० चतुर, समझदार 'सुनु ऊधो ह्याँ कौन सयानी ।' भ्र० ७२, ( उदे० 'बतराना' । वयःप्राप्त ।
सर—स्त्री० माला । पु० शर, बाण ( उदे० 'फर' ) । तालाब । सिर । चिता (रामा० ३६३), 'ककनू पंखि जैस सर साजा ।' प० ९५ । सरकण्डा 'मसि खूटी सागर जल भीजे, सर दौ लागि जरे ।' भ्र० ३७ ।—करना = जीतना ( सू० १०७ ) ।
सरंजाम, सरअंजाम—पु० सामान, तैयारी ।
सरकंडा—पु० एक पौधा, नरकट ।
सरक—स्त्री० मद्यका पात्र 'बारम्बार सरक मदिराकी अपरस कहा उघारे ।' भ्र० २६ । खुमार, प्रबलता (नीता० २९७) । सरकनेकी क्रिया, गति (भ्र० ११६) ।
सरकना—अक्रि० हिलना, टलना, हट जाना, खिसकना ।
सरकश—वि०उद्दंड । दुष्ट,नटखट । सर उठानेवाला,बागी ।
सरकशी—स्त्री० नटखटी । उद्दंडता । बग़ावत ।
सरकस—पु० वह तमाशा जिसमें जानवरों द्वा० का खेल दिखाया जाता है । वि०उद्धत,प्रबल(कविता०२२२) ।
सरकार—स्त्री० राज्य-संस्था, गवर्नमेण्ट । पु० मालिक ।
सरकारी—वि० सरकारका, राजकीय ।
सरखत—पु० किराये आदिका शर्तनामा । आज्ञापत्र, परवाना ( कविता० २०१ ) ।

सरग—पु० स्वर्ग (उदे० 'झार', '...
सरगतिय—स्त्री० अप्सरा ( कदस १
सरगना—पु० मुखिया, सरदार, नेता
सरगम—पु० स्वरोंके आरोह और अ...
सरगर्दानी—स्त्री० हैरानी, परेशानी ।
सरगर्म—वि० जोशीला ।
सरगर्मी—स्त्री० उमङ्ग, उत्साह, जोश ।
सरघर—पु० तरकश, तूणीर ।
सरघा—स्त्री० मधुमक्खी । [ (
सरजा—पु० सिंह । सरदार । ...
सरजीव—वि० सजीव 'सरजीव काठहि अन्तकाल की मारी ।' कबीर २११ ।
सरज़ोर—वि० ज़बर्दस्त ( माधि० ११ )
सरट—पु० गिरगिट या छिपकली ।
सरण—पु० जाना ।
सरण-द्वार—पु० जानेका मार्ग 'का किये ... हरके सौरभके सरण-द्वार' गी० ।
सरणी—स्त्री० रास्ता, लकीर ।
सरताज—पु० सिरताज, श्रेष्ठ व्यक्ति ।
सरताबरता—पु० हिस्सा-बाँट ।
सरतारा—वि० जिसे कुछ काम न रह फुर्सत, निश्चिन्त 'वैद भये हरगोविन्द यमदूत फिरैं सरतारे' गुलाब ४१०
सरद—स्त्री० शरद् ऋतु ( उदे० 'जुन्हाई' )
सर दर—क्रिवि० औसतन, एक सङ्ग ...
सरदार—पु० अमीर, मुखिया ।
सरधन—वि० सधन, धनी 'जो निर्धन सरधन आगे बैठा पीठ फिराई ।' कबीर ५०२
सरधा—स्त्री० श्रद्धा । शक्ति ( क० मच० १२
सरन—स्त्री० देखो 'शरण' (उदे० 'उभरना' '...
सरनदीप—पु० सुवर्ण द्वीप, लङ्का ।
सरना—अक्रि० निकलना, चलना, पूरा होना 'काज','छापा' ) । सड़ना । जाना ( उदे० भ्र० १० ), जीतना 'सुनहु कंस तेरो आयु सूसु० ६१, कटना ( नव० ५६ ) ।
सरनाम—वि० ख्यातनामा, प्रसिद्ध ।
सरनामा—पु० पता, शीर्षक ।
सरनी—स्त्री० रास्ता ( सू० १३१ ) ।

सरपंत्र—पु० प्रधान पत्र, श्रेष्ठ व्यक्ति, प्रधान।
सरपंजर—पु० बाणोंका पिंजड़ा ( उदे० 'भवघट' )।
सरपट—स्त्री० तेज़ दौड़नेकी चाल। क्रिवि० तेज़ चालसे।
सरपत—पु० एक तृण।
सरपरस्त—पु० संरक्षक।
सरपि—पु० घी ( रामा० १८० )।
सरपेंच, सरपेच—पु० पगड़ीके ऊपरका आभूषण।
सरपोश—पु० तश्तरी इ० ढाँकनेका कपड़ा या पात्र।
सरफ़राज़—वि० ऊँचे पदपर पहुँचा हुआ। गौरवान्वित।
सरफराना—अक्रि० व्याकुल होना ( रवि० ७० )।
सरब—वि० सर्व, सब।
सरबबियापी—वि० जो सर्वत्र व्याप्त हो ( प० ३ )।
सरबदा—दे० 'सर्वदा'।
सरबत्तरि—अ० सर्वत्र 'आपुन मैं जे करै निवाजा सो मुलना सरबत्तरि गाजा।' कबीर २२३
सरबराह—पु० मजदूरोंका सरदार। कारिन्दा।
सरबस—पु० सर्वस्व, सब कुछ।
सरबोर—वि० देखो 'सराबोर' 'टूटे हरा छरा छूटै सबै सरबोर भई अँगिया रंग राती।' पद्माकर।
सरम—स्त्री० शर्म, लज्जा, ( विन० ३०९ )।
सरमा—स्त्री० दक्षपुत्री। कुतिया।
सरराना—अक्रि० हवा आदिके ज़ोरसे चलनेकी आवाज़ होना ( उदे० 'दरराना' )।
सरल—वि० सीधा, साधु, सहल।
सरलता—स्त्री० सादगी, सिधाई, निश्छलता, आसानी।
सरलपन—पु० सरलता।
सरव—दे० 'सराव', 'सबके उर-सरवनि सनेह भरि सुमन तिलीको बास्यो।' भ्र० ११६
सरवनी—स्त्री० सुमरनी ( क० वच० २९ )।
सरवर—पु० सरोवर ( उदे०'पनारी' )। वि० बराबर। ( उदे० 'जर' )।
सरवरि—स्त्री० होड़, बराबरी ( भू० ११ )।
सरवाक्—पु० कटोरा, कसोरा।
सरवान—पु० तम्बू।
सरस—वि० रसयुक्त, मीठा, जलयुक्त। श्रेष्ठ, बढ़कर ( मव० २, कविप्रि० १७२ )।
सरसई—स्त्री० सरसता (उदे०'सत')। सरस्वती नदी।
सरसना—अक्रि० रसयुक्त होना (उदे० 'झर'), पनपना, जलयुक्त होना (भू० ५५), विरासना।
सरसब्ज़—वि० हरियालीसे पूर्ण।
सरसर—पु० हवा बहने या सर्प इ० रेंगनेका शब्द।
सरसराना—अक्रि० 'सरसर' आवाज़ होना। साँप का चलना। हवाका वेगसे बहना।
सरसराहट—स्त्री० साँप आदिके चलनेकी आवाज़।
सरसरी—वि० जल्दबाज़ीका —तौरसे = मोटे
सरसाई—स्त्री० सारस्य। सौन्दर्य। अधिकता।
सरसाना—अक्रि० रसयुक्त होना, शोभायुक्त न (उदे० 'पटीर') सक्रि० सरस करना (भू०५७)।
सरसाम—पु० त्रिदोष ( सन्निपात )।
सरसिज—पु० कमल, पद्म।
सरसिह, सरसी—स्त्री० छोटा तालाब (राम० १३४)
सरसी—स्त्री० छोटा तालाब।
सरसीरुह—पु० कमल, सरसिज।
सरसुति—दे० 'सरस्वती' ( मति० २१८ )।
सरसेटना—सक्रि० डाँटना, डपटना, फटकारना।
सरसों—स्त्री० एक तिल-बीज।
सरसौंहा—वि० जो सरस बनाया गया हो, सरस।
सरस्वती—स्त्री० शारदा, विद्या, ब्रह्माणी, एक नदी।
सरहंग—पु० सेनापति। कोतवाल। सैनिक। मल्ल।
सरह—पु० शलभ, टिड्डी ( प० २४५ )।
सरहज—स्त्री० सालेकी स्त्री।
सरहद—स्त्री० सीमा।
सरहद्दी—वि० सीमा सम्बन्धी।
सरहरा—वि० जो सीधे ऊपरको गया हो।
सरहिंद—पु० पञ्जाबमें एक जगह।
सरा—स्त्री० चिता 'सतकहँ सती सँवारै सरा।' प०
सराई—स्त्री० सलाई। पाजामा। ठण्ढक (कबीर १६४)
सराग—पु० शलाका, सींक 'विरह सरागन्हि मासू।' प० ७०
सराजाम—पु० सामग्री, आवश्यक वस्तुएँ।
सराध—पु० श्राद्ध ( उदे० 'नंदीमुख' )।
सराना—सक्रि० पूरा कराना, सम्पादित कराना। ( अष्ट० ३१, ३२ )।
सराप—पु० देखो 'शाप' ( उदे० 'गाढ़ा', 'दराप' )।
सरापना—सक्रि० शाप देना।
सराफ़—पु० सोना चाँदी बेचनेवाला।
सराफ़ा—पु० सर्राफ़ोंका बाज़ार। सराफ़ीका काम।

सराफी—स्त्री० सोने चाँदीका व्यापार, रुपये पैसेका लेन-देन। महाजनी लिपि।
सराब—स्त्री० शराब, मदिरा।
सराबोर—वि० अच्छी तरह भींगा हुआ।
सराय—स्त्री० धरमशाला, घर।
सराव—पु० मद्यपात्र, कटोरा, पात्र, दीया। वि० शब्दायमान।
सरावग, सरावगी—पु० जैन।
सरावन—पु० हेंगा जिससे मिट्टी बराबर करते हैं।
सरास—पु० खुसी 'कहो कौन पै कढ़ो जाइ कन बहुत सरास पछोरी।'
सरासन—पु० शरासन, धनुष ( उदे० 'छिगना' )।
सरासर—अ० बिलकुल। स्पष्टतः, प्रत्यक्ष।
सरासरी—स्त्री० जल्दी। आसानी। स्थूल अनुमान। क्रिवि० जल्दीमें। मोटे तौरपर।
सराह—स्त्री० प्रशंसा।
सराहना—सक्रि० प्रशंसा करना ( उदे० 'अनुरागना', 'निन्दना' )। स्त्री० बड़ाई।
सराहनीय—वि० प्रशंसनीय।
सरि—स्त्री० बराबरी ( उदे० 'खड्ग' )। नदी ( उदे० 'दई', 'नावरी' )। लर, माला ( कविप्रि० ५३ )। अ० पर्यन्त 'आऊ सरि राजा पहँ रहा।' प० २२०
सरिगम—पु० सरगम 'निरक्षरके अर-क्षर-स्वरमें तू सरि गम मुझे सुना माँ।' परिमल १२५।
सरित, सरिता—स्त्री० नदी।
सरित्पति—पु० समुद्र।
सरिवर, सरिवरि—दे० 'सरवरि' (उदे० 'गाजी')।
सरियाना—सक्रि० बटोरकर रखना, तरतीबसे लगाना।
सरिल—पु० जल।
सरिश्ता—पु० दफ्तर। कचहरी।
सरिस—वि० सदृश, समान ( रामा० ४२२ )।
सरी—स्त्री० नदी।
सरीकता—स्त्री० शामिल रहनेका भाव, साझा 'रावरे बिनाकमें सरीकता कहा रही।' कविता० १६२
सरीखा—वि० समान, सदृश।
सरीफा—पु० देखो 'शरीफा'।
सरीर—पु० शरीर, देह ( उदे० छिरकना' )।
सरीसृप—पु० पेटके बल चलनेवाले जन्तु, सर्प आदि।
सरुज—वि० रोगयुक्त, अस्वस्थ।
सरुष,सरोष—वि० क्रुद्ध।
सरुहना—अक्रि० अच्छा होना 'अजौं तुम भये और ही भाइ।' मति० २
सरुहाना—सक्रि० अच्छा करना।
सरूप—वि० सुन्दर, समान रूपका।
सरूर—पु० नशा 'यौवन गरूरके नव २६७। आनन्द।
सरेख, सरेखा—वि० सज्ञान, सयाना, पूछहिं सखी सरेखी।' प० १५५
सरेखना—सक्रि० सहेजना। सँभालना 'कै सुरति सरेखै ना' कलस १५५
सरेदस्त—क्रिवि० फिलहाल, इस वक्त।
सरेबाज़ार—क्रिवि० सबके सामने।
सरेस—पु० एक लसीला पदार्थ।
सरोंट—स्त्री० सिकुड़न, शिकन।
सरो—पु० झाऊके सदृश एक वृक्ष।
सरोकार—पु० सम्बन्ध। प्रयोजन, वास्ता।
सरोज—पु० कमल, पद्म।
सरोजना—सक्रि० प्राप्त करना।
सरोजिनी—स्त्री० कमल। कमलवन। ५।
सरोता—पु० श्रोता ( बीजक १२१ ) देखो '
सरोद—पु० एक बाजा।
सरोधा—पु० श्वासके आधारपर भविष्यकथन।
सरोरुह—पु० कमल।
सरोवर—पु० तालाब।
सरोसामान—पु० असबाब, सामग्री।
सरौता—पु० सुपारी कतरनेका औज़ार।
सर्कार—दे० 'सरकार'।
सर्ग—पु० अध्याय, परिच्छेद। सृष्टि, उत्पत्ति।
सर्गना—देखो 'सरगना'।
सर्गपताली—पु० ऐंचाताना। वह बैल जि[स]का एक सींग नीचे और दूसरा ऊपरकी ओर गया हो।
सर्गबंध—वि० अध्यायोंमें विभक्त। पु० ।
सर्ज—पु० धूना, राल। स्त्री० एक तरहका ऊनी
सर्द—वि० ठण्ढा, उत्साहहीन, सुस्त, धीमा।
सर्द मिजाज़—वि० उत्साहहीन। सहानुभूतिहीन
सर्दार—पु० सरदार।
सर्दी—स्त्री० ठण्ढक, जुकाम।

सर्प—पु० साँप।
सर्पण—पु० रेंगना।
सर्पफेण—पु० अहिफेन, अफीम।
सर्पभुक्,-भुज्—पु० मयूर।
सर्पराज—पु० शेषनाग। वासुकि।
सर्पलता,-वल्ली—स्त्री० नागवल्ली या अहिवल्ली नामकी [† लता।
सर्पहा—पु० नेवला।
सर्पारि—पु० गरुड़, मयूर, नेवला।
सर्पावास—पु० चन्दन। सर्पोंके रहनेकी जगह।
सर्पाशन—पु० मोर, गरुड़।
सर्पिस्—पु० घृत।
सर्पी—पु० घी। वि० पेटके बल चलनेवाला।
सर्फ़—वि० खर्च किया हुआ।
सर्फा—पु० खर्च।
सर्वस—पु० सर्वस्व।
सर्म—स्त्री० शर्म।
सर्राफ, सर्राफा—दे० 'सराफ', 'सराफा'।
सर्व—वि० सब, कुछ। पु० शिवजी।
सर्वगत—वि० सबमें व्याप्त रहनेवाला।
सर्वग्रास—पु० पूर्ण ग्रहण।
सर्वजनीन—वि० सार्वजनिक।
सर्वजित्—वि० सबको जीतनेवाला।
सर्वज्ञ—वि० सब कुछ जाननेवाला। पु० परमेश्वर।
सर्वतंत्र—वि० जो सब शास्त्रोंको मान्य हो।
सर्वतः—अ० चारों ओर। अच्छी तरहसे।
सर्वतोभावेन—अ० सब प्रकारसे।
सर्वतोभद्र—वि० सब प्रकारसे शुभ ( जीव० २१० ), जिसके सिर तथा मूँछ इ० के बाल मुँडे हों।
सर्वतोमुख—वि० चारों ओर मुँहवाला, व्यापक।
सर्वत्र—अ० सब जगह।
सर्वथा—क्रिवि० सब प्रकारसे, पूर्णतः।
सर्वदा—क्रिवि० हमेशा। वि० स्त्री० सब कुछ देनेवाली।
सर्वनाम—पु० संज्ञाके स्थानमें आनेवाला शब्द।
सर्वनाश—पु० विध्वंस।
सर्वभक्षी—वि० सब कुछ खानेवाला। पु० अग्नि।
सर्वमंगला—स्त्री० भगवती, दुर्गा। लक्ष्मी।
सर्वरी—स्त्री० रात्रि।
सर्वव्यापी—पु० ईश्वर। वि० सबमें रहनेवाला।

सर्वशक्तिमान्—वि० जिसमें सब कुछ करनेकी शक्ति हो। [पु० ईश्वर।
सर्वश्रेष्ठ—वि० सबसे अच्छा।
सर्वसंहार—पु० काल।
सर्वस—पु० सर्वस्व, सब कुछ।
सर्वसाधारण—पु० जनता। वि० सामान्य।
सर्वस्व—पु० सब कुछ। सारी सम्पत्ति।
सर्वांगीन—वि० सर्वाङ्ग व्यापक (जीव० ३१४)
सर्वात्मा—पु० सर्व विश्वकी आत्मा, ब्रह्म। शिवजी।
सर्वार्थसिद्ध—पु० बुद्धदेव।
सर्वाधिकार—पु० संपूर्ण अधिकार।
सर्वाशय—पु० सबका आश्रयस्थान।
सर्वेश सर्वेश्वर—पु० सबका मालिक, ईश्वर, ब्रह्म।
सर्षप—पु० सरसों।
ससों—स्त्री० देखो 'सरसों'।
सलई—स्त्री० चीड़। [जात है।'
सलग—वि० समूचा, पूरा 'सलग रुपैया मैया कापै दयो
सलजम—पु० एक मूल जो तरकारीके काममें आता है।
सलज्ज—वि० लज्जावान्, शर्मीला।
सलतनत—स्त्री० राज्य। सुभीता। प्रबन्ध।
सलना—अक्रि० गड़ना, छिदना (उदे० 'असलेट')। †
सलब—वि० बरबाद। [† पु० मोती। बरमा।
सलभ—पु० पतंग ( रामा० ६०७)। टिड्डी 'जैसे उपजे खेतको करत सलभ निर्मूल।' वृन्दस०
सलमा—पु० सोने या चाँदीका तार।
सलवात—स्त्री० मेहरबानियाँ,बरकतें। दुर्वचन।
सलसलाना—सक्रि० खुजलाना। अक्रि० रेंगना।
सलहज—स्त्री० सालेकी पत्नी। [खुजली होना।
सलाई—स्त्री० शलाका, सींक, पतली छड़।
सलाक—स्त्री० शलाका, सलाई ( अ० १२३ ), तीर।
सलाम—पु० नमस्कार,प्रणाम(उदे० 'दूलाम', 'जुहार')।
सलामत—वि० स्वस्थ, जीवित, सकुशल।
सलामी—स्त्री० सलाम करनेकी क्रिया। किसी शासक इ० के आगमनपर दागी गयी तोपों आदिकी बाढ़।
सलाह—स्त्री० राय,परामर्श (उदे०'कहर')। सुलह, मेल 'सिवासों सलाह राखिये तौ बात भली है।' भू० १०४
सलाहकार, सलाही—पु० सलाह देनेवाला।
सलि—स्त्री० चिता ( कबीर ७१ )।
सलिता—स्त्री० सरिता ( कबीर १२, २८० )।

सलिल—पु० पानी ।
सलिलपति,-राज—पु० समुद्र, वरुण ।
सलिलाशय—पु० तालाब ।
सलिलौदन—पु० पकाया हुआ अन्न ।
सलीका—पु० तमीज़, तौर-तरीका । योग्यता ।
सलीकामंद—वि० शऊरदार, सुघड़, शिष्ट ।
सलील—वि० लीला पूर्वक ।
सलूक—पु० व्यवहार, बर्त्ताव, उपकार ।'
सलूना—वि० नमकीन, लावण्यमय, छविमान् ।
सलैना—सक्रि० लकड़ी इ० काट कूटकर ठीक करना, सालना 'कटबूँ मैं बिरिछ जन्हिरिया त पलँगा सलैवूँ' ग्राम० ७७ [ सैल' कबीर २१
सलैला—वि० जिसपर पाँव फिसले '...बाट सलैली
सलोक—पु० नागरिक । नगर ।
सलोट—स्त्री० सिलवट,सिकुड़न, शिकन (उदे० 'वारी')।
सलोन,-ना,सलौना—दे० 'सलूना' ( उदे० 'अगौनी')।
सलोनो—पु० रक्षाबन्धन, श्रावणी ।
सल्लकी—स्त्री० शल्लकी या सलईका पेड़ ।
सल्लाह—स्त्री० देखो 'सलाह' ।
सव—पु० शव, लाश । रस, जल ।
सवगात—स्त्री० भेंट, तुहफ़ा ।
सवत, सवति—स्त्री० सौत, सपत्नी ( उदे० 'जड़' ) ।
सवया—स्त्री० सहेली, सखी ।
सवर्ण—वि० सजातीय, समान वर्णका, समान ।
सवाँग—पु० स्वांग ।
सवा—वि० चौथाई सहित । पु० एक और चौथाई ।
सवाई—वि० एक और चौथाई । बढ़कर 'सुन्दरता काम-हूते सौगुनी सवाई है ।' कलस १७७ । स्त्री० चतु-र्थांश ब्याजपर ऋण देनेका प्रकार ।
सवाद—पु० स्वाद, ज़ायका ( रतन० १८ ) ।
सवादिक—वि० सुस्वादु ।
सवाब—पु० पुण्य ।
सवाया—वि० एक और चौथाई ।
सवार—पु० अश्वारोही । वि० सवारीपर चढ़ा हुआ । क्रिवि० सबेरे, शीघ्र 'ऊधो आहु सवार यहाँते वेगि गहरु जनि लावो । भ्र० १२
सवारना—सक्रि० सजाना । ठीक करना । सुधारना ।
सवारा—पु० तड़का, प्रातःकाल 'ऐसे करते सवारो होय गयो । अष्ट० ९६

सवारी—स्त्री० वाहन । सवार होनेकी
सवारे, सवारैं—क्रिवि० शीघ्र, 'दिन अबही फिरि आवैं, गोरस बेचि
सवाल—पु० प्रश्न, निवेदन ।
सवाल जवाब—पु० तकरार ।
सविकल—वि० विकलता युक्त 'पर, अन्धकार देखा,—सविकल स्वर्ण-दि सजल दृग, तुम्हें पुकारा हे उज्ज्वल ।'
सविकल्प—वि० जो विकल्पयुक्त हो, स
सविता—पु० सूर्य, बारहकी संख्या ।
सवित्री—स्त्री० धात्री । गौ । माता ।
सविध, सवेश—वि० नज़दीक ।
सवेरा—पु० प्रातःकाल ।
सवैया—पु० एक छन्द । सवा सेरका बाँट ।
सव्य—वि० बायाँ उलटा ।
सव्यसाची—पु० अर्जुन ।
सशंक, सशंकित—वि० शंकायुक्त,
सशंकना—अक्रि० सशंक होना ।
सशक्तिक—वि० शक्तियुक्त, बलशाली । [(
सस—पु० शशि, चन्द्र । शशक (रामा० १
ससक—पु० शशक, खरगोश ( उदे० 'टीबा'
ससकना, ससना—अक्रि० जी धड़कना, 'काँपी ससी सस्की थहराइ बिसूरि हियहूली ।' नव० १६ (४४)
ससधर, ससहर—पु० चन्द्र ( प० ३०८ )
ससर्ग—क्रिवि०भीड़के रूपमें, मेलेके रूपमें ' जी, प्रजावर्ग, आमन्त्रित साहित्यिक, विवाह आमूल नवल' अनामिका १३१
ससा—देखो 'ससक' ।
ससाना—अक्रि० काँपना, घबड़ासा जाना ' चितै मुख सूख ससानी'—बसंत मंजरी ।
ससि—पु० शशि, चन्द्र । धान 'जिसि ससि उपल बिलाहीं ।' रामा० ६११, ( ४०३ ) ।
ससिधर, ससिहर—पु० चन्द्रमा 'उदय न नहीं ससिहर ।' कबीर १२९, ( २०० )
ससुर—पु० पत्नी या पतिका पिता ।
ससुरा—पु०देखो'ससुर' । स्त्री० ससुराल 'कित नैह आउब कित ससुरे यह खेल ।' प० २७ (रामा०२

सर्प—पु० साँप ।
सर्पण—पु० रेंगना ।
सर्पफेण—पु० अहिफेन, अफीम ।
सर्पभुक्,-भुज्—पु० मयूर ।
सर्पराज—पु० शेषनाग । वासुकि ।
सर्पलता,-वल्ली—स्त्री० नागवल्ली या अहिवल्ली नामकी [† लता ।
सर्पहा—पु० नेवला ।
सर्पारि—पु० गरुड़, मयूर, नेवला ।
सर्पावास—पु० चन्दन । सर्पोंके रहनेकी जगह ।
सर्पाशन—पु० मोर, गरुड़ ।
सर्पिस्—पु० घृत ।
सर्पी—पु० घी । वि० पेटके बल चलनेवाला ।
सर्फ़—वि० खर्च किया हुआ ।
सर्फा—पु० खर्च ।
सर्बस—पु० सर्वस्व ।
सर्म—स्त्री० शर्म ।
सर्राफ, सर्राफा—दे० 'सराफ', 'सराफा' ।
सर्व—वि० सब, कुछ । पु० शिवजी ।
सर्वगत—वि० सबमें व्याप्त रहनेवाला ।
सर्वग्रास—पु० पूर्ण ग्रहण ।
सर्वजनीन—वि० सार्वजनिक ।
सर्वजित्—वि० सबको जीतनेवाला ।
सर्वज्ञ—वि० सब कुछ जाननेवाला । पु० परमेश्वर ।
सर्वतंत्र—वि० जो सब शास्त्रोंको मान्य हो ।
सर्वतः—अ० चारो ओर । अच्छी तरहसे ।
सर्वतोभावेन—अ० सब प्रकारसे ।
सर्वतोभद्र—वि० सब प्रकारसे शुभ ( जीव० २१० ), जिसके सिर तथा मूँछ इ० के बाल मुँड़े हो ।
सर्वतोमुख—वि० चारो ओर मुँहवाला, व्यापक ।
सर्वत्र—अ० सब जगह ।
सर्वथा—क्रिवि० सब प्रकारसे, पूर्णतः ।
सर्वदा—क्रिवि० हमेशा । वि० स्त्री० सब कुछ देनेवाली ।
सर्वनाम—पु० संज्ञाके स्थानमें आनेवाला शब्द ।
सर्वनाश—पु० विध्वंस ।
सर्वभक्षी—वि० सब कुछ खानेवाला । पु० अग्नि ।
सर्वमंगला—स्त्री० भगवती, दुर्गा । लक्ष्मी ।
सर्वरी—स्त्री० रात्रि ।
सर्वव्यापी—पु० ईश्वर । वि० सबमें रहनेवाला ।
सर्वशक्तिमान्—वि० जिसमें सब कुछ करनेकी शक्ति हो ।
सर्वश्रेष्ठ—वि० सबसे अच्छा । [ पु० ईश्वर ।
सर्वसंहार—पु० काल ।
सर्वस—पु० सर्वस्व, सब कुछ ।
सर्वसाधारण—पु० जनता । वि० सामान्य ।
सर्वस्व—पु० सब कुछ । सारी सम्पत्ति ।
सर्वांगीन—वि० सर्वाङ्ग व्यापक (जीव० ३१४)
सर्वात्मा—पु० सर्व विश्वकी आत्मा, ब्रह्म । शिवजी ।
सर्वार्थसिद्ध—पु० बुद्धदेव ।
सर्वाधिकार—पु० संपूर्ण अधिकार ।
सर्वाशय—पु० सबका आश्रयस्थान ।
सर्वेश सर्वेश्वर—पु० सबका मालिक, ईश्वर, ब्रह्म ।
सर्षप—पु० सरसों ।
सर्सों—स्त्री० देखो 'सरसों' ।
सलई—स्त्री० बीद । [ जात है ।'
सलग—वि० समूचा, पूरा 'सलग रुपैया मैया कापै दयो
सलजम—पु० एक मूल जो तरकारीके काममें आता है ।
सलज्ज—वि० लज्जावान्, शर्मीला ।
सलतनत—स्त्री० राज्य । सुभीता । प्रबन्ध ।
सलना—अक्रि० गड़ना, छिदना (उदे० 'असलेठ') । †
सलब—वि० बरबाद । [ † पु० मोती । बरमा ।
सलभ—पु० पतंग ( शमा० ६०७ ) । टिड्डी 'जैसे उपजे खेतको करत सलभ निर्मूल ।' वृन्दस०
सलमा—पु० सोने या चाँदीका तार ।
सलवात—स्त्री० मेहरबानियाँ,बरकतें । दुर्वचन ।
सलसलाना—सक्रि० खुजलाना । अक्रि० रेंगना ।
सलहज—स्त्री० सालेकी पत्नी । [ खुजली होना ।
सलाई—स्त्री० शलाका, सींक, पतली छड़ ।
सलाक—स्त्री० शलाका, सलाई ( अ० १२३ ), तीर ।
सलाम—पु० नमस्कार,प्रणाम(उदे० 'इलाम', 'जुहार') ।
सलामत—वि० स्वस्थ, जीवित, सकुशल ।
सलामी—स्त्री० सलाम करनेकी क्रिया । किसी शासक इ० के आगमनपर दागी गयी तोपों आदिकी बाढ़ ।
सलाह—स्त्री० राय,परामर्श (उदे०'कहर') । सुलह, मेल 'सिवासों सलाह राखिये तौ बात भली है ।' भू० १०४
सलाहकार, सलाही—पु० सलाह देनेवाला ।
सलि—स्त्री० चिता ( कबीर ७१ ) ।
सलिता—स्त्री० सरिता ( कबीर १२, २८० ) ।

सलिल—पु० पानी ।
सलिलपति,-राज—पु० समुद्र, वरुण ।
सलिलाशय—पु० तालाब ।
सलिलौदन—पु० पकाया हुआ अन्न ।
सलीका—पु० तमीज़, तौर-तरीका । योग्यता ।
सलीकामंद—वि० शऊरदार, सुघड़, शिष्ट ।
सलील—वि० लीला पूर्वक ।
सलूक—पु० व्यवहार, बर्त्ताव, उपकार ।
सलूना—वि० नमकीन, लावण्यमय, छविमान् ।
सलैना—सक्रि० कक्षी हू० काट कूटकर ठीक करना, सालना 'कटलूँ मैं बिरिछ जम्हिरिया त पलँगा सलैबूँ' ग्राम० ७७ [ सैक' कबीर ३१
सलैला—वि० जिसपर पाँव फिसले '...घाट सलैली
सलोक—पु० नागरिक । नगर ।
सलोट—स्त्री० सिलवट,सिकुड़न, शिकन (उदे० 'वारी')।
सलोन,-ना,सलोना—दे० 'सलूना' ( उदे० 'अगौनी')।
सलोनो—पु० रक्षाबन्धन, श्रावणी ।
सल्लकी—स्त्री० शल्लकी या सलईका पेड़ ।
सल्लाह—स्त्री० देखो 'सलाह' ।
सव—पु० शव, लाश । रस, जल ।
सवगात—स्त्री० भेंट, तुहफ़ा ।
सवत, सवति—स्त्री० सौत, सपत्नी ( उदे० 'जड़' ) ।
सवया—स्त्री० सहेली, सखी ।
सवर्ण—वि० सजातीय, समान वर्णका, समान ।
सवाँग—पु० स्वांग ।
सवा—वि० चौथाई सहित । पु० एक और चौथाई ।
सवाई—वि० एक और चौथाई । बढ़कर 'सुन्दरता काम-हुते सौगुनी सवाई है ।' कलस १७७ । स्त्री० चतुर्थांश व्याजपर ऋण देनेका प्रकार ।
सवाद—पु० स्वाद, ज़ायका ( रतन० १८ ) ।
सवादिक—वि० सुस्वादु ।
सवाब—पु० पुण्य ।
सवाया—वि० एक और चौथाई ।
सवार—पु० अश्वारोही । वि० सवारीपर चढ़ा हुआ । क्रिवि० सबेरे, शीघ्र 'ऊधो आइ सवार यहाँते वेगि गहरु जनि लावो । भ्र० १२
सवारना—सक्रि० सजाना । ठीक करना । सुधारना ।
सवारा—पु० तड़का, प्रातःकाल 'ऐसे करते सवारो होय गयो । अष्ट० ९१
सवारी—स्त्री० वाहन । सवार होनेकी क्रिया ।
सवारे, सवारैं—क्रिवि० शीघ्र, दिन रहते 'गुरस चको अबही फिरि आवैं, गोरस बेचि सवारैं ।' सूबे० १६०
सवाल—पु० प्रश्न, निवेदन ।
सवाल जवाब—पु० तकरार । वादविवाद ।
सविकल—वि० विकलता युक्त 'पर, आँखें खुलते ही मैंने अन्धकार देखा,—सविकल स्वर्ण-दिशा को देख, सजल दृग, तुम्हें पुकारा है उज्ज्वल।' वीणा १२
सविकल्प—वि० जो विकल्पयुक्त हो, सन्दिग्ध ।
सविता—पु० सूर्य, बारहकी संख्या । नारायण (कविप्रि०
सवित्री—स्त्री० धात्री । गौ । माता । [ १९ )
सविध, सवेश —वि० नज़दीक ।
सवेरा—पु० प्रातःकाल । [ † पहाड़ा ।
सवैया—पु० एक छन्द । सवा सेरका बाँट। एक तरहका
सव्य—वि० बायाँ उलटा ।
सव्यसाची—पु० अर्जुन ।
सशंक, सशंकित—वि० शंकायुक्त, भयभीत ।
सशंकना—अक्रि० सशंक होना ।
सशक्तिक—वि० शक्तियुक्त, बलशाली । [(रामा०५५०)।
सस—पु० शशि, चन्द्र । शशक (रामा० १२५) । शस्य
ससक—पु० शशक, खरगोश ( उदे० 'दीवा' ) ।
ससकना, ससना—अक्रि० जी धड़कना, हिचकना 'काँपी ससी ससकी थहराइ बिसूरि बिसूरि बिथा हियहूली ।' नव० १६ (४४)
ससधर, ससहर—पु० चन्द्र ( प० ३०८ ) ।
ससर्ग—क्रिवि०भीड़के रूपमें, मेलेके रूपमें 'आ पण्डित-जी, प्रजावर्ग, आमन्त्रित साहित्यिक, ससर्ग देखा विवाह आमूल नवल' अनामिका १३१
ससा—देखो 'ससक' ।
ससाना—अक्रि० काँपना, घबड़ाना आना '...चौंक चितै मुख सूख ससानी'—बसंत मंजरी ।
ससि—पु० शशि, चन्द्र । धान 'जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं ।' रामा० ६११, ( ४०३ ) ।
ससिधर, ससिहर—पु० चन्द्रमा 'उदय न अस्त सूर नहीं ससिहर ।' कबीर १३९, ( २०० )
ससुर—पु० पत्नी या पतिका पिता ।
ससुरा—पु०देखो'ससुर' । स्त्री० ससुराल 'कित नैहर पुनि आउब कित

ससुरार, ससुरारि, ससुराल—स्त्री० ससुरका घर ।
सस्ता—वि० कम दामका, मन्दा । [छ (उदे०'हाँड़') ।
सस्तापन—पु० तुच्छता 'अनुभव करता लालाका मन, छोटी हस्तीका सस्तापन' ग्राम्या ६९
सस्ती—स्त्री० मन्दी ।
सस्त्रीक—वि० जो अपनी स्त्रीके साथ हो । पत्नी सहित।
सस्मित—वि० मुसक्यान युक्त, मुसकराता हुआ ।
सस्य—पु० धान्य ।
सहँगा—वि० सस्ता ( दोहा० १५४ ) ।
सह—अ० सहित, साथ ।
सहकार—पु० आम्र वृक्ष । सहायक । सहयोग ।
सहकारी—वि० साथ काम करनेवाला । पु०सहायक,साथी।
सहगमन—पु० सती होना । साथ जाना ।
सहगामिनी—स्त्री० स्त्री । पतिके शवके साथ सती होने- [वाली स्त्री ।
सहगामी—पु० साथी, अनुगामी ।
सहगौन—पु० साथ जाना, सहगमन ।
सहचर—पु० साथ चलनेवाला, मित्र, नौकर ।
सहचारी,-चारिणी—स्त्री०साथ रहनेवाली,सखी,पत्नी।
सहचारी—दे० 'सहचर' ।
सहज—वि० जो साथ पैदा हो, स्वाभाविक । सरल ।
सहजन—पु० देखो 'सहिंजन' ।
सहजन्मा—वि० सहोदर ( भाई ) । पु० यमज, जोड़ा ।
सहजात—वि० सगा ।
सहजानि—स्त्री० स्त्री, पत्नी ।
सहजै—अ० सहज ही, अनायास ।
सहत—पु० शहद, मधु ।
सहताना—अक्रि० सुसताना, आराम करना ।
सहतूत—पु० एक पेड़ या उसका फल ।
सहदानी—स्त्री०पहचानकी वस्तु,निशानी(कविता०१८१)
सहदूल—पु० शार्दूल, व्याघ्र ( बीजक १९९ ) ।
सहधर्मिणी—स्त्री० पत्नी, स्त्री ।
सहन—पु० सहिष्णुता, क्षमा । चौक ।
सहनभंडार—पु० खजाना ( गीता० २७२ ) ।
सहनशील—वि० सहनेवाला, जिसका स्वभाव सह लेनेका हो, सन्तोषी ।
सहना—सक्रि०भोगना,पाना,उठाना ( उदे० 'ओखिउँ') ।
सहनाई—स्त्री० एक बाजा( उदे० 'पुकार' 'गड़गड़ी' ) ।
सहनायन—स्त्री० सहनाई बजानेवाली ।
सहपाठी—पु० साथ पढ़नेवाला ।
सहभोज,-भोजन—पु० एक साथ खाना ।
सहभोजी—वि० एक साथ बैठकर भोजन करनेवाले।
सहम—पु० लिहाज, भय ।
सहमत—वि० एकमत ।
सहमना—अक्रि० सहम खाना,डरना( उदे०'जवास' )।
सहमरण—पु० सती होना ।
सहमाना—सक्रि० डराना ।
सहमृता—स्त्री० साथमें मरनेवाली स्त्री, सती ।
सहयोग—पु० साथ देनेका भाव, सहायता, साथ ।
सहयोगी—पु० मदद करनेवाला । साथ काम करनेवाला। समसामयिक । [स्याहगोश (कविप्रि० १६८) ।
सहर—पु० शहर, नगर ( सू० ४८) । टोना । सबेरा ।
सहरगही—स्त्री० व्रतके दिनका वह भोजन जो कुछ रात रहते किया जाता है ।
सहरा—पु० वन । स्याहगोश नामक वन्य जन्तु जो बहुत वेगवान होता है ।
सहराना—सक्रि० सोहराना, धीरे धीरे मलना या हाथ फेरना । अक्रि० सिहरना, काँपना ।
सहरी—स्त्री० शफरी, मछली 'पातभरी सहरी सकल सुत बारे बारे...।' कविता० १६१ । दे०'सहरगही' ।
सहलंगी—पु० 'सँगलगा', साथी ( प० ६२ )।
सहल—वि० सरल, आसान ।
सहलाना—सक्रि० देखो 'सहराना' ।
सहवास—पु० साथ रहना, साथ, सम्भोग ।
सहव्रता—स्त्री० पत्नी ।
सहस—पु० सहस्र, हजार ।
सहसकिरन,-गो—पु० सूर्य ।
सहसदल,-पत्र—पु० कमल 'लसत बदन सतपत्र सो सहसपत्रसे नैन ।' मति० २१८
सहसनयन,सहसाक्षि, सहसाखी—पु० इन्द्र ।
सहसवदन,-मुख—पु० शेषनाग ।
सहसा—क्रिवि० अचानक, झटपट ( उदे० 'पैड़ा' ) ।
सहसाच्छि—पु० इन्द्र ।
सहसानन—पु० शेषनाग ।
सहस्र—वि० हजार । पु० हजारकी संख्या ।
सहस्रदल, सहस्रनयन—दे० 'सहसदल','सहसनयन'।
सहस्रधारा—स्त्री०बहुतसे छेदोंवाला पात्र जिससे देवता [इ० को स्नान कराते हैं।
सहस्रपत्र—पु० कमल ।

सहस्रबाहु—पु० कार्तवीर्यार्जुन, हैहयराज।
सहस्ररश्मि—पु० सूर्य।
सहस्रलोचन—पु० इन्द्र।
सहस्रांशु—पु० सूर्य, अकवन।
सहस्राब्दि—स्त्री० एक हजार वर्षोंकी समाप्तिपर होनेवाला कार्य, उत्सव आदि।
सहस्रार—पु० हठयोगियोंकी धारणाके अनुसार मस्तकमें स्थित हजार दलोंवाला कमल, सहस्रार चक्र।
सहाइ, सहाई—स्त्री० सहायता। पु० सहायक।
सहाध्यायी—वि० साथ पढ़नेवाला। पु० सहपाठी।
सहानी—वि० पीलापन लिए हुए लाल रंगका।
सहानुगमन—पु० देखो 'सहगमन'।
सहानुभूति—स्त्री० हमदर्दी।
सहाय—स्त्री० सहायता, भरोसा, सहायक।
सहायक—वि० मददगार, बड़ी नदीमें मिलनेवाली (छोटी नदी)।
सहायता—स्त्री० मदद, प्रोत्साहन। [
सहायी—पु० सहायता करनेवाला। सहायता।
सहार—पु० बर्दाश्त करनेकी क्रिया। महाप्रलय।
सहारना—सक्रि० सहना 'भूख और प्यास सहारी।' रत्ना० १०२, उठाना, सँभारना।
सहारा—पु० भरोसा, आश्रय, सहायता।
सहालग—पु० ब्याह शादीका मौसिम।
सहावल—पु० लोहे इ० का लटकन जिससे दीवारकी सीध नापी जाती है। साहुल।
सहिजन—पु० एक वृक्ष, 'मुनगा'—'सहिजन अति फूलै तऊ डार पातकी हानि।' रहीम २१।
सहिजानी—स्त्री० देखो 'सहिदानी'।
सहित—अ० साथ। वि० हितकारी।
सहिथी—स्त्री० बरछी ( छत्र ९८ )।
सहिदान—पु०, सहिदानी—स्त्री० पहचानकी वस्तु, निशानी 'दीन्हि राम तुम कहँ सहिदानी।' रामा० ४२१, ( सू० ३३ )।
सहिष्णु—वि० सहनशील। [
सहिष्णुता—स्त्री० सहनशीलता, क्षमा।
सही—स्त्री० हस्ताक्षर ( विन० ६२८ )। वि० ठीक, सच। क्रिवि० निश्चय, अवश्य ही (उदे० विख्यात')। स्त्री० सखी ( पार्म० ३५ )।
सही सलामत—वि० नीरोग, तन्दुरुस्त। जिसमें कोई न्यूनता न आयी हो।
सहुँ—अ० सामने, तरफ 'जासहुँ हेर मार विषबाना।'
सहूलियत—स्त्री० सुगमता। अदब, तमीज। [प० ४५।
सहृदय—वि० रसिक। दयालु।
सहृदयता—स्त्री० रसिकता, सुजनता, दयालुता।
सहेजना—सक्रि० समझाकर सौंपना, देख भालकर रखना।
सहेजवाना—सक्रि० किसीसे सहेजनेका काम कराना।
सहेट, सहेत—पु० मिलन-स्थान ( मति० १९८ )।
सहेतुक—वि० जो हेतुके साथ हो।
सहेलरी—स्त्री० सखी ( गुलाब० ५६ )।
सहेली—स्त्री० सखी, सहचरी।
सहैया—वि० सहनेवाला। पु० सहायक ( सू० १८९ )।
सहोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार। [में हुआ हो।
सहोढ़—पु० वह पुत्र जिसकी माताका विवाह गर्भावस्था-
सहोदर—वि० सगा। पु० सगा भाई।
सह्य—वि० सहने योग्य। पु० एक पहाड़।
साँई—पु० स्वामी, पति, ईश्वर।
साँकड़ा—पु० पैरका एक गहना।
साँकर—स्त्री० सिकड़ी, जंजीर। कष्ट, दुःख साँकरेकी साँकरन सनमुख होत तोरै '' राम० १, ( छत्र० ९० )। वि० वक्र ( उदे० 'खोरी' ), 'अस साँकर चलि सकै न चाँटा।' प० ७०। दुःखपूर्ण।
सांख्य—पु० हिन्दुओंके छः दर्शनोंमेंसे एक दर्शन।
सांग—वि० अङ्गसहित।
साँग, साँगी—स्त्री० एक तरहकी बरछी ( उदे० 'पटतारना', 'भिंडिपाल', प० ३२२ )।
सांगोपांग—क्रिवि० अङ्गों उपांगों सहित, पूर्णरूपसे।
सांघाटिका—स्त्री० दूती।
सांघात—पु० दल।
सांघातिक—वि० इकट्ठा करनेवाला।
साँच—वि० सच। पु० सच बात, सत्य (उदे० 'बटिया')।
साँचला—देखो 'साँच'।
साँचा—पु० मिट्टी आदिका उपकरण जिसमें ढालकर कोई वस्तु बनायी जाय। शरीर, ( प० २६२ )। वि० सच्चा ( उदे० 'ठाना' )।
साँचिया—पु० साँचा बनानेवाला।
साँचिला—वि० सच्चा 'एक सनेही साँचिलो केवल कोसल पालु।' विन० ४४४।
साँची—पु० एक तरहका पान।

साँझ—स्त्री० सन्ध्या ( उदे० 'फूलना' ) ।
साँझा—पु० देखो 'साझा' ।
साँट—स्त्री० साँटी, छड़ी । कोड़ा ( उदे० 'जेवरी' ) ।
साँटा—पु० कोड़ा । गन्ना ।
साँटिया—पु० डुग्गी पीटनेवाला ( प० ५८ ) ।
साँटी—स्त्री० छड़ी ( सू० ६४ ) । बदला 'निर्गुन साँटि गोविन्दहिं माँगत,क्यों दुख जात सह्यो ।' भ्र० १२२ ।
साँठ—पु० साँटा, गन्ना ( उदे० 'गाँठ' ) संयोग । अन्न पीटनेका डण्डा । सरकण्डा ।
साँठ गाँठ—स्त्री० मेल-जोल । साजिश । गुप्त सम्बन्ध ।
साँठना—सक्रि० पकड़े रहना ( कविता० १९३ ) ।
साँठि,साँठी—स्त्री० पूँजी 'बाम्हन तहवाँ लेइ का गाँठि साँठि सुठि थोर ।' प० ३३, (उदे०'नाठना',प०५८)।
साँड़—पु० दागकर छोड़ा हुआ बैल , मस्त बैल ।
साँड़नी—स्त्री० ऊँटनी ।
साँड़ा—पु० गिरगिटके आकारका एक जानवर ।
साँड़िया—पु० ऊँटनीका सवार । शीघ्रगामी ऊँट ।
सांत—वि० शान्त । अन्त सहित ।
सांतानिक—वि० सन्तानविषयक ।
सांतापिक—वि० सन्तापदायक ।
सांति—देखो 'शान्ति' ( प० १२७ ) ।
सांत्वन—पु०, सात्वना—स्त्री०तसल्ली, आश्वासन ।
साँथरी—स्त्री० देखो 'साथरी' ।
सांदीपनि—पु० श्रीकृष्णके आचार्य ।
सांद्र—पु०अरण्य । वि०सुन्दर । मुलायम । चिकना । घना ।
साँध—पु० लक्ष्य ।
साँधना—सक्रि० सानना, मिलाना, गूँधना 'तेहिमहँ बिप्रमांस खल साँधा ।' रामा० ९६, ( प० ४८ ) । साधना, सिद्ध करना, सँभालना, सन्धान करना 'मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा । करतल चाप रुचिर सर साँधा ।' रामा० ३७८, 'राम धनुष अरु सायक साँधे ।' सूरा० २२ [ करनेवाला ।
सांधिक—पु० सन्धि करनेवाला । शराबका कारबार
सांधिविग्रहिक—पु० एक तरहके राजकर्मचारी जिन्हें सन्धि या विग्रह करनेका अधिकार होता था ।
सांध्य—वि० सन्ध्याका, सन्ध्याकालीन ।
साँप—पु० सर्प, व्याल ।—छछूँदरकी गति = असमञ्जसकी अवस्था ( रामा० २२५ ) ।
सांपत्तिक, साँपद—वि० आर्थिक, सम्पत्ति सम्बन्धी ।
साँपद—वि० धन सम्बन्धी ।
साँपधरन—पु० शङ्करजी ।
साँपिन—स्त्री० सर्पिणी ।
साँपिया—पु० साँपके रङ्गसे मिलता-जुलता एक रङ्ग ।
सांप्रत—अ० अभी, इस समय ।
सांप्रदायिक—वि० सम्प्रदायका ।
सांबर—पु० एक नमक । सम्बल । एक हरिन ।
सांबरी—स्त्री० जादूगरी ।
साँभर—पु० एक नमक । एक तरहका हरिन । पाथेय, राह खर्च 'साँभर सोइ गाँठि जो होई ।' प० २०१
साँवत—पु० सामन्त, वीर ।
साँवर,-रा, साँवला, साँवलिया—वि० श्याम रङ्गका (उदे० 'घर') ।'बैल दो, साँवलिया और धौला' कुकुर मुत्ता ६५१ । पु० श्रीकृष्ण ( उदे० 'उपरैना' ) ।
साँवा—पु० एक कदन्न ।
साँस—स्त्री० श्वास, फुरसत, अवकाश ।—लेना = सुस्ता लेना, ठहर जाना ।—डकार न लेना = बिलकुल भूल जाना ।
साँसत,-ति—स्त्री० साँस रुकने जैसा कष्ट; तङ्गी, यातना
साँसतघर—पु० काल-कोठरी । [ ( विन० ३१२ ) ।
साँसना—सक्रि० शासन करना, पीड़ा देना ।
साँसा—पु० शङ्का, चिन्ता । श्वास, पीड़ा ।
सांसारिक—वि० संसार सम्बन्धी, दुनियावी ।
सांस्कृतिक—वि० संस्कृति सम्बन्धी ।
सा—अ० समान ।
साइक—पु० शायक, बाण । सायंकाल ।
साइत—स्त्री० शुभ लग्न ।
साइयाँ—पु० स्वामी, पति ।
साई—पु० मालिक । स्वामी ।
साईस—पु०घोड़ेकी देखभाल तथा सेवा करनेवाला नौकर
साउ—पु० शाह, महाजन ।
साउज—पु० वे जीव जिनका शिकार किया जाता । 'कीन्हेसि साउज आरन रहई ।' प० १
साक—पु० शाक, तरकारी । स्त्री० साख, प्रतिष्ठा ।
साकट, साकत—पु० गुरुरहित व्यक्ति, मद्यमांस खाने वाला ( उदे० 'जीरना', कबीर १०२, २६० ) ।
साकल—स्त्री० जजीर ।

साकल्य—पु० समुदाय। होमकी चीज।
साकांक्ष—वि० इच्छा सहित।
साका—पु० शाका, संवत्। समय। इच्छा, शौक (बुन्देल० 'साको'), आजु आइ पूजी वह साका। प० ११२। कीर्त्ति (विन० ३६८), दबदबा, नामवरी 'तस फल उन्हहिं देउँ करि साका।' रामा० २१५
साकार—वि० आकारयुक्त, मूर्त्तिमान्, रूप-रंगवाला।
साकिन—वि० बाशिन्दा, निवासी।
साकी—पु० मद्य पिलानेवाला। माशूक।
साकेत, साकेतन—पु० अयोध्या।
साक्षर—वि० पढ़ा लिखा।
साक्षात्—अ० प्रत्यक्ष, प्रकट, सामने।
साक्षात्कार—पु० देखादेखी, भेंट।
साक्षी—स्त्री० गवाही। पु० गवाह।
साक्ष्य—पु० गवाही।
साख—स्त्री० कीर्त्ति, धाक, मर्यादा। पु० गवाही, गवाह। स्त्री० शाखा, पुश्त, पीढ़ी।
साखर—वि० साक्षर, पढ़ा-लिखा।
साखा—स्त्री० शाखा, डाली (उदे० 'ओनंत')।
साखी—स्त्री० साक्षी, गवाही (उदे० 'जोरना', रामा० १६८), ज्ञान विषयक पद्य। पु० गवाह, पक्ष 'तुम सखि होहु तराइन साखी।' प० २७। वृक्ष।
साखू—पु० सखुआ वृक्ष।
साखोच्चार—पु० गोत्र वर्णन।
साग—पु० शाक, तरकारी, सब्जी।
सागर—पु० समुद्र, सरोवर, समूह 'लघुरजकण आभा या सागर' नीरजा ४०
सागूदाना—पु० एक पेड़का गूदा।
सागौन—पु० एक पेड़।
साज—पु० सजावटकी चीजें; सजावट, तैयारी। वि० सदृश (कविता० १९५)।
साजन—पु० स्वामी, प्रेमी, स्वजन।
साजना—अक्रि० सँवारना, तैयार करना (उदे०'जीन')।
साजबाज—पु० तैयारी। [ अक्रि० शोभा देना।
साजसामान—पु० सामग्री, असबाब।
साजा—वि० अच्छा, साफ (बुन्देल०) (उदे० 'सद')। सुन्दर 'ये सुत कौनके शोभहिं साजे।' राम० ९७
साजिंदा—पु० साज बजानेवाला।
साजिश—स्त्री० षड्यन्त्र, मेल।
साझा—पु० मेल, हिस्सा। पत्ती।
साझी, साझेदार—पु० हिस्सेदार।
साझेदारी—स्त्री० हिस्सेदारी।
साट—स्त्री० छड़ी। छड़ी मारनेका चिह्न।
साटक—पु० भूसा, तुच्छ वस्तु (कविता० २१२)।
साटन—पु० एक तरहका बढ़िया कपड़ा।
साटना—सक्रि० चिपकाना, जोड़ना।
साटमार—पु० हाथियोंको लड़ानेवाला।
साटा—पु० बदला (रतन० ६८, ७९, ८२)।
साटी—स्त्री० देखो 'साँटी', 'पत्रभङ्ग'।
साठ—वि० तीस और तीस पु० ६० की संख्या।
साठनाठ—वि० नष्ट हुई पूँजीवाला, निर्धन, खुक्ख (प० १६)। नीरस, शुष्क। तितर बितर।
साठसाती, साढ़ेसाती—देखो 'साढ़साती'।
साठा—वि० साठ वर्षकी अवस्थाका। पु० ऊख।
साठी—स्त्री० एक तरहका धान।
साड़ी—स्त्री० स्त्रियोंकी धोती।
साढ़साती—स्त्री० शनिदशा-विशेष (उदे० 'गड़ना')।
साढ़ा—वि० आधा।
साढ़ी—स्त्री० दूधके ऊपरकी मलाई (सूबे० २७०)।
साढ़ू—पु० स्त्रीका बहनोई।
साढ़े—वि० सार्द्ध, आधा सहित।
सात—वि० चार और तीन। **सातराजा साखी होना** = बिलकुल सत्य होना। पु० ७ की संख्या।
सातफेरी—स्त्री० विवाहकी एक रस्म।
साति—स्त्री० शास्ति, दण्ड 'बुझि करह साति जो होय उचीता।' विद्या० १८२
सातिक, सातिग—दे० 'सात्विक' (मति० २४०), 'राजस तामस सातिग तीन्यूँ ये सब तेरी माया।' [ कबीर १५०
सात्म्य—पु० सारूप्य।
सात्व—वि० सत्वगुणका।
सात्वतीवृत्ति—स्त्री० साहित्यमें वर्णित एक वृत्ति।
सात्विक—वि० सत्वगुण-प्रधान, सत्वगुण सम्बन्धी। स्तम्भ, रोमाञ्च आदि मनोविकार।
साथ—पु० संगति। साथी। अ० सहित, द्वारा, प्रति।
साथरी—स्त्री० बिस्तर, पत्तों या तृणादिका बिछौना।
साथी—पु० संगी, साथ रहनेवाला या साथ देनेवाला। मित्र, सहायक। [ † (उदे० 'तुराई')।

सादगी—स्त्री० सादापन, छलहीनता।
सादा—वि० मामूली, छलहीन, शुद्ध, जो रंगीन न हो।
सादिर—वि० निकलनेवाला, जारी होनेवाला (सेवा०)।
सादी—स्त्री० शादी, विवाह। मामूली पूड़ी (कचौड़ी नहीं)। पु० शिकारी। एक पक्षी। ..अश्वारोही (साकेत ११८, ४१३)। रथी।
सादूर—पु० सिंह (प० २०५)।
सादृश्य—पु० समानता, तुलना।
साध—स्त्री० इच्छा (उदे० 'पुराना', कबीर १६४)। पु० सत्पुरुष, साधु (उदे० 'भ्रठालना')।
साधक—पु० साधनेवाला, तपस्वी, योगी।
साधकता—स्त्री० साधकका भाव, साधकपन।
साधन—पु० उपाय, उपकरण, कारण, सिद्धि, अभ्यास।
साधन द्वार—पु० साधक। साध्य।
साधना—सक्रि० सिद्ध करना (उदे०'खाड़ा', सू० ४३)। ठीक करना, वशमें करना 'अब लगि तुम्हहिं न काहु साधा।' रामा०७९। अभ्यास करना, साबित करना। सन्धान करना (उदे० 'पारधि')। सहना 'साधे भूखन पियासन हैं नाहनको निन्दते।'भू०४०। स्त्री०सिद्धि।
साधयिता—पु० साधना करनेवाला, साधक।
साधर्म्य—पु० गुणसाम्य।
साधस—पु० भय 'साधस नहिं कर चल प्रिय पासा' [विद्या० ९४
साधारण—वि० सामान्य, सादा, सरल।
साधारणतः—क्रिवि० साधारणतया, सामान्यतः, प्रायः।
साधिका—स्त्री० साधना करनेवाली, साधनेवाली।
साधित—वि० सिद्ध या शुद्ध किया हुआ। दण्डित।
साधु, साधू—वि० अच्छा, भला, सच्चा। पु० सज्जन, सन्त। साधु साधु=धन्य धन्य।
साधुवाद—पु० "साधु साधु" कहना, वाहवाही।
साध्य—वि० जो प्रमाणित करना हो। सिद्ध करने योग्य, आसान। अच्छा होने योग्य (रोग)। पु० वह वस्तु जिसका अनुमान किया जाय या जिसे सिद्ध करना हो।
साध्वी—वि० स्त्री० पतिव्रता। अच्छे आचरणवाली।
सानंद—क्रिवि० आनन्दपूर्वक। सहर्ष।
सान—स्त्री० सिल्ली। प्रतिष्ठा।—धरना = हथियार इ० तेज करना (उदे० 'बिज्जुला', विन० ४२९)।
सानना—सक्रि० मिलाना, गूँधना। [हुआ भोजन।
सानी—वि० बराबरीका, दूसरा। स्त्री० पशुओंका सना
सानु—पु० पहाड़की चोटी। जंगल। पण्डित। सूर्य। [पत्ता।
सानुज—पु० छोटे भाईके साथ।
सानुप्रास—वि० अनुप्रास युक्त, तुकदार।
सान्निध्य—पु० समीपता। मोक्ष।
सान्निपातिक—वि० सन्निपात सम्बन्धी।
साप—पु० शाप, बददुआ (विन० ३३५)।
सापत्न्य—पु० सौतका भाव। सौतेला लड़का।
सापना—सक्रि० शाप देना, कोसना।
सापेक्ष—वि० आपेक्षिक, आवश्यकता रखनेवाला, परस्पर निर्भर रहनेवाला।
साफ—वि० स्पष्ट, स्वच्छ, पवित्र। क्रिवि० बिलकुल।
साफल्य—पु० सिद्धि, सफलता, कामयाबी।
साफा—पु० पगड़ी।
साफी—स्त्री० चिलमके नीचे लपेटनेका कपड़ेका छोटा टुकड़ा, छोटी अँगौछी, छनना।
साबत—वि० साबूत।
साबर—पु० एक तरहका मंत्र। हरिनकी एक जाति।
साबल—पु० भाला।
साबिक—वि० पहलेका।
साबिका—पु० भेंट, सम्बन्ध।
साबित—वि० प्रमाणित। पूरा, ठीक।
साबुत, साबूत—वि० अखंडित, सम्पूर्ण। दृढ़।
साबुन—पु० कपड़े इत्यादि साफ करनेके निमित्त सज्जी इत्यादिसे तैयार किया गया एक पदार्थ।
साबूदाना—पु० देखो 'सागूदाना'।
साभार—वि० कृतज्ञता पूर्वक।
सामंजस्य—पु० वैषम्यका अभाव, औचित्य।
सामंत—पु० राजा, सरदार। योद्धा। निकटता।
सामंतेश्वर—पु० सरदारोंका सरदार। बादशाह,सम्राट्।
साम—पु० एक वेद (उदे०'छठी')। मीठे वचन कहकर मिला लेना 'कियो मंत्र अंगद पठवनको साम करन रघुराई।' रघु० २२९। वि० श्याम रंगका 'जमुना साम भई तेहि झारा।' प० २५०, (उदे० 'डढ़ैनी')
सामग्री—स्त्री० आवश्यक वस्तुएँ, सामान, उपकरण।
सामत—स्त्री०विपत्ति, बदकिस्मती। पु० सामन्त।
सामध—पु० समधियोंके परस्पर मिलनेकी रीति, सम धौरा 'सामध देखि देव अनुरागे।' रामा० १७२
सामना—पु० मुकाबला, भेंट, मुठभेड़। आगेका हिस्सा

सामने—क्रिवि० आगे, सम्मुख, किसीके रहते हुए।
सामयिक—वि० समय सम्बन्धी, समयानुकूल।
सामर—दे० 'साँवर' (भावि० ३०)। समर।
सामरथ, सामर्थ, सामर्थ्य—स्त्री० शक्ति, पराक्रम, योग्यता।
सामरिक—वि० युद्ध-विषयक।
सामवायिक—वि० समवाय या समूह सम्बन्धी।
सामवेद—पु० चार वेदोंमेंसे तीसरा।
सामहि—क्रिवि० सामने।
सामाँ, सामा—पु० एक कदन्न, सावाँ, सामान (विन० ५२१)। स्त्री० लक्षण, डौल (उदे० 'उपानह')।
सामाजिक—वि० समाज सम्बन्धी। पु० सदस्य।
सामाजिकता—स्त्री० समाजकी सदस्यता।
सामान—पु० असबाब, सामग्री।
सामान्य—वि० साधारण। पु० सादृश्य, बराबरी। एक काव्यालंकार 'भिन्न वस्तु सम वेष पै भेद न जानो जाय।'
सामान्यतः—क्रिवि० आमतौरसे, मामूली तौरसे।
सामान्या—स्त्री० वेश्या।
सामियाना—पु० तम्बू।
सामिष—वि० मांस मिला हुआ, मांस सहित।
सामी—पु० स्वामी, प्रभु (विद्या० १९९, प० १०९)।
सामीप्य—पु० समीपता, निकटता। मोक्ष।
सामुहि—स्त्री० समक्ष (रामा० ९)।
सामुदायिक—वि० समुदायका।
सामुद्रिक—वि० समुद्र सम्बधी। पु० हस्तरेखाविद्या, हस्तरेखा-विज्ञ। एक पक्षी, कौड़िया।
सामुहाँ, सामुहैं—क्रिवि० सामने, 'धरै पौनके सामुहैं, दिया भौनको बारि।' मति० १९९, (भू० ११३)।
सामूहिक—वि० समूहसे सम्बद्ध।
सामूहिकता—स्त्री० समूहका भाव।
सामृद्ध्य—पु० सम्पन्नता, बढ़ती। समृद्धिका भाव।
साम्मुख्य—पु० सामना।
साम्य—पु० सादृश्य, समानता।
साम्यतंत्र—पु० साम्यवादी ढङ्गकी शासन प्रणाली।
साम्यवाद—पु० एक सामाजिक सिद्धान्त जिसका लक्ष्य समाजसे वैषम्य दूरकर साम्य स्थापित करना है।
साम्यवादी—वि० साम्यवादके सिद्धान्तको माननेवाला।
साम्राज्य—पु० सार्वभौम राज्य। आधिपत्य, बोलबाला (जीव० २०६)।
साम्राज्यवाद—पु० एक नीति या व्यवस्था जिसमें पूँजीपति राजशक्तिकी सहायतासे दूसरे देशोंके आर्थिक जीवनपर नियन्त्रण करते हैं।
साम्हना, साम्हने—देखो 'सामना', 'सामने'।
सायंकाल—पु० सन्ध्याका समय।
सायक—पु० बाण (उदे० 'धर')। खड्ग। सायंकाल (वि० २९)।
सायत—स्त्री० शुभ लग्न, मुहूर्त।
सायवान—पु० छाया आदिके लिए डाला गया छप्पर। ओसारा।
सायर—पु० सागर 'नैन नीर सब सायर भरे।' प० १०४ (उदे० 'उजरना', 'काँठा', 'ढंढोलना')। मिट्टी बराबर करनेका हेंगा।
सायल—पु० प्रश्नकर्त्ता, प्रार्थी (कर्म० ४१०), याचक।
साया—पु० एक तरहका लहँगा। छाया, प्रभाव।
सायास—वि० सप्रयत्न, सपरिश्रम।
सायुज्य—पु० एक हो जाना, मुक्तिका एक भेद।
सारंग—पु० सिंह, कमल, मोर, चातक, भ्रमर, चन्द्रमा, मृग 'सारँग प्रीति करी जो नाद सौं, सनमुख बान सह्यो।' सू० २०३। स्त्री, एक राग, मेघ, सर्प,कोयल हाथी, कपूर, हंस, खंजन, शिवजी, धनुष, 'घन तन, दिव्य कवच सजि करि अरु कर धार्‍यो सारंग।' सू० ४१, बाण, वस्त्र, शंख, सूर्य। सुवर्ण, सरोवर, समुद्र, केश, चन्दन, दिन, रात्रि, मेंढक, आभरण, कामदेव, काजल, दीप्ति, शोभा। 'सारँग नयन बयन पुनि सारँग तसु समधाने। सारँग उपर उगल दस सारँग केलि करथि मधुपाने।' विद्या० १९, 'सारँग दुखी होत सारँग बिनु तोहि दया नहिं आवत। सारँगरिपुको नैकु ओट कहि, ज्यों सारँग सुख पावत। सूरदास सारँग केहि कारन, सारँग कुलहिं लजावत।' सू० १११,(सूसु० २१२)। वि० सरस, मधुर, रञ्जित।
सारंगपाणि,-पानि—पु० विष्णु।
सारंगलोचना—स्त्री० मृगनयनी।
सारंगिक—पु० बहेलिया। एक छन्द।
सारंगिया—पु० सारङ्गी बजानेवाला।
सारंगी—स्त्री० एक बाजा।
सार—पु० मुख्य भाग, तत्त्व, रस, हीर, गूदा (विन० ४३६), बल, बड़ाई (भू० ९७)। गोशाला, नतीजा। सँभाल, सेवा, रक्षा, 'वनदेवी वनदेव

उतारा। करिहहिं सासु ससुर सम सारा।' रामा० २३०, पाँसा, जुआ 'सब रसको रस प्रेम है, विषयी खेलै सार।' सू० २१। स्त्री० सन्देश, खबर, 'तलफत छाँड़ि चले मधुवनको फिरिकै लई न सार।' भ्र०३१, होश 'मैं मन्ता घूमत रहै नाहीं तनकी सार।' कबीर १६१ पु० हथियार 'सिवसिंह सार सम्हारिकै। मिलि गयौ फौजहि फारिकै।' सुजा०५३,(छत्र० २१), शल्य ( उदे० 'भेदना' ), धैर्य ( विद्या० २४८ ), 'बलख बुखारै मुलतान लौं हहर पारै कपि लौं पुकारै कोऊ धरत न सार है।'भू० १८३,लोहा (प० २४६), 'मुए चामकी साँस ते सार भसम हो जाय।' साला ( कबीर २४३ )। शय्या, एक छन्द, एक काव्यालंकार 'इकते इक बढ़ि घटि जहाँ कहत होत तहँ सार।'
सारखा—वि० सरीखा, समान। [ वि० उत्तम।
सारगंध,-गंधि—पु० चन्दन।
सारगर्भित—वि० तत्वसे भरा हुआ।
सारण—पु० मक्खन। गन्ध। अतीसार।
सारणी—स्त्री० छोटी नदी। तालिका। ग्रहोंकी गति
सारथि—पु० रथ हाँकनेवाला। [ बतानेवाला ग्रन्थ।
सारथ्य—पु० रथ हाँकना। सवारी।
सारद—स्त्री० शारदा। वि० शरद सम्बन्धी 'सारद नारद बीजुरी, भा रद कीजत लाल।' वि० १९७
सारदा—स्त्री० सरस्वती।
सारदूल—पु० सिंह।
सारना—सक्रि० निकालना, दूर करना 'सिख आसिष बहु भाँति पाइ सब संसय सार्यो।' रत्ना० २३९, काढ़ना, लगाना 'जातहिं राम तिलक तेहि सारा।' रामा० ४४, 'साजि माँग सिर सेंदुर सारै।' प० १४२। चलाना, निबाहना, रक्षा करना, पूरा करना ( उदे० 'छेव', कबीर ४९ )।
सारभाटा—पु० ज्वारभाटेका उलटा।
सारभुक्—पु० आग।
सारमेय—पु० कुत्ता।
सारलोह—पु० इस्पात।
सारल्य—पु० सरलता, सादगी।
सारवत्ता—स्त्री० तत्व ग्रहण करनेका भाव।
सारस—पु० एक पक्षी, एक गहना, चन्द्रमा,कमल,हंस।
सारसन—पु० एक गहना, कमरबन्द।
सारसुनी—स्त्री० सरस्वती।
सारस्य—पु० सरसता,रसीलापन। वि० विशेष रसदार।
सारस्वत—वि० सरस्वतीविषयक।
सारांश—पु० तात्पर्य। निचोड़। सार।
सारा—वि० सम्पूर्ण। कुल। पु० साला (कबीर २४३)।
सारि—पु० जुआड़ी। स्त्री० गोटी 'आसा फिरि फिरि मारसी ज्यों चौपड़िकी सारि।' कबीर १९, ( प० १४८ )। पाँसा 'बैठि कुँअरि सब खेलहिं सारी।' प० १८। सारङ्गीकी खूँटी 'तत करि ताँति धर्म करि डाँडी, सतकी सारि लगाइ।' कबीर १५९। मैना।
सारिउँ—स्त्री० मैना 'सारिउँ सुवा महरिकोकिला।' प० २११, ( उदे० 'ज्याना' )।
सारिका—स्त्री० मैना। एक अप्सरा। वीणाकी घोरिया ( कविप्रि० ११ )। प्रसार करनेवाली, फैलानेवाली 'वनोवासंती मृदुल पत्रिका तरुकी मसुल, फिर सुर सञ्चारिका सुखसारिका उसकी मुकुल।' गीतिका ६५
सारिखा—वि० सरीखा, सदृश ( उदे० 'निहोरा' )।
सारी—स्त्री० साड़ी ( उदे०'तनसुख' )। मैना ( रामा० ८ )। मलाई। साली। गोटी, चौपड़ (प० १५२)। पु० अनुसरण करनेवाला।
सारूप्य—पु० एकरूपता, मुक्ति-विशेष ( जीव ३५० )।
सारो—स्त्री० सारिका, मैना (उदे० 'किरराना'), 'गहवर हिय सुक सों कह सारो।' गीता०३६०, (प० १२)। पु० साला। धानका एक भेद।
सारोपा—स्त्री० लक्षणाका एक भेद।
सारौं—स्त्री० मैना।
सार्थ—वि० सार्थक, सफल ( प्रिय० २०९ )।
सार्थक—वि० अर्थयुक्त, सफल।
सार्थकता—स्त्री० साफल्य, सिद्धि।
सार्थवाह, सार्थवाही—वि० पथ-प्रदर्शक।
सार्दूल—पु० सिंह।
सार्द्ध—क्रिवि० साथ। वि० अर्द्ध सहित।
सार्द्र—वि० गीला। [ वाला।
सार्वकालिक—वि० सब समयोंका, सब कालोंमें होने-
सार्वजनिक, सार्वजनीन—वि० सब लोगोंसे सम्बन्ध
सार्वजनिकता—स्त्री० सामाजिकता। [ रखनेवाला।
सार्वदेशिक—वि० समस्त देशसे सम्बन्ध रखनेवाला, सब देशोंका।

सार्वत्रिक—वि० सर्वत्र होनेवाला ।

सार्वभौतिक—वि० सर्वभूत व्यापी ।

सार्वभौम—वि० सर्वभूमि सम्बन्धी पु० समस्त भू-

सार्षप—पु० सरसों । सरसोंका तेल । [मण्डलका राजा ।

साल—पु० घाव, छेद, काँटा, दुःख ( उदे० 'असलेड', 'उलहना', 'माँई' ) । वर्ष । दुःख देनेवाला ( विन० १२७ ), धान । स्त्री० शाला ।

सालगिरह—स्त्री० देखो 'वर्षगाँठ' ।

सालग्राम, सालिग्राम—पु० देखो 'शालिग्राम' ।

सालन—पु० मांस, मसालेदार तरकारी ।

सालना—सक्रि० चुभाना, दुखाना, कष्ट देना ( भू० १७५) । चारपाईकी लकड़ी इ०ठीक करना । अक्रि० चुभना, कष्ट देना ( साखी ९ ) ।

सालसा—पु० खून साफ करनेकी दवा ।

साला—पु० स्त्रीका भाई । मैना । स्त्री० शाला ।

सालाना, सालियाना—वि० वार्षिक ।

सालि—पु० धान ( रामा० १७, विन० ५०८ ) ।

साली—स्त्री० स्त्रीकी बहिन । बढ़ई आदिको पारिश्रमिक स्वरूप दी गयी जमीन या रकम ।

सालोक्य—पु० मुक्ति-विशेष, भगवान्‌के साथ भक्तका एक ही लोकमें रहना ( जीव० ३५० ) ।

साल्मली—पु० सेमल । [प० १०४

साँवँ—वि० श्याम 'रकत लिये आखर भये साँवाँ ।'

साँवँकरन—पु० श्यामकर्ण, एक तरहका घोड़ा ।

सावंत—पु० कर देनेवाला राजा या सरदार, योद्धा

साव—पु० साहु । [ ( मति० १९५ ) ।

सावक—दे० 'शावक' ( सू० १६१ ) ।

सावकाश—पु० मौका, फुरसत । गुन्जाइश ।

सावचेत—वि० सतर्क, सावधान ।

सावज—दे० 'साउज' । 'काल अहेड़ी संझ सकारा । सावज ससा सकल संसारा ।' कबीर २३१

सावत—पु० सौतिया डाह, ईर्ष्या ( विन० ४३१ ) ।

सावद्य—पु० एक योगशक्ति । वि० दूषणावह ।

सावध—वि० सावधान ( साखी ६३ ) ।

सावधान—वि० सजग, सतर्क ।

सावन—पु० एक महीनेका नाम, श्रावण । श्रावणमें गाया जानेवाला गीत ( रत्ना० १८ ) समूह, अधिकता 'ऐ असीम-छबिके सावन ।' पल्लव ८४

सावर—पु० एक मृग ।

साँवाँ—पु० एक कदन्न । [ शिव ।

सावित्र—वि० सूर्य सम्बन्धी । पु० सूर्य । यज्ञोपवीत ।

सावित्री—स्त्री० सत्यवानकी पत्नी । कश्यप-पत्नी । सरस्वती ( कविप्रि० १५४ ) ।

साशंक—वि० आशङ्कायुक्त ।

साष्टांग—वि० आठ अङ्गों सहित ( सिर, हाथ, पाँव, आँख, जाँघ, हृदय, वचन तथा मनसे ) ।

सास, सासु—स्त्री० पति या पत्नीकी माता ।

सासत—स्त्री० साँसत, कष्ट ।

सासति—स्त्री० शासन, दण्ड 'सासति करि पुनि करहिं

सासन—पु० शासन । [ पसाऊ ।' रामा० ५३

सासनलेट—पु० एक तरहका जालीदार कपड़ा ।

सासना—स्त्री० दे० 'शासन' ( उदे० 'दरगह' ) ।

सासरा—पु० ससुराल 'जेठी धीय सासरै पठवौं'—

सासा—स्त्री० श्वास । सन्देह । [ कबीर ९६

सासुर—पु० ससुर । ससुराल ।

साह—पु० सेठ, सज्जन । शाह, राजा ( उदे०'दिवान' ) ।

साहचर्य—पु० साथ, सङ्गति ।

साहनी—स्त्री० सेना 'आये निसाचर साहनी साजि ।' रघु० ८६ । साथी ( रघु० १८२ ) । प्रधान ( रामा०

साहब—पु० स्वामी, ईश्वर, महाशय । [ १६० ) ।

साहबज़ादा—पु० पुत्र, भले मानसका लड़का ।

साहबी—स्त्री० बड़ाई । प्रभुता ।

साहस—पु० हिम्मत, बल, बलात्कार ।

साहसिक—वि० निर्भीक । लम्पट । मिथ्यावादी ।

साहसी—वि० हिम्मती ।

साहाय्य—पु० मदद ।

साहि—पु० शाह, राजा (उदे०'छेंकना'), भला आदमी ।

साहित्य—पु० मिलन । किसी भाषाके गद्य पद्य ग्रन्थोंका समूह, वाङ्मय ।

साहित्यिक—वि० साहित्य सम्बन्धी । पु० साहित्य-प्रेमी, साहित्य-सेवी ।

साहिनी—स्त्री० सेना । साथी ।

साहिब—पु० साहब, मालिक ।

साहिबी—स्त्री० देखो 'साहबी' ( उदे० 'फबना' ), 'लै त्रिलोककी साहिबी दै धतूरको फूल ।' मति० २१५

साही—स्त्री० काँटेदार शरीरवाला एक जन्तु ।

साहु,साहुकार—पु० महाजन, भला आदमी।
साहुकारी—स्त्री० लेनदेन, महाजनी, व्यवहार।
साहुल—पु० पत्थर इ० का बना राजगीरोंका एक यंत्र जिससे दीवारकी सीध नापते हैं।
साहूकारा—पु० रुपयोंका लेनदेन। वह बाजार जिसमें [ साहूकारेका प्राधान्य हो।
साहेब—पु० साहब।
साहें—स्त्री० भुजाएँ। अ० सम्मुख।
सिंकना—अक्रि० पकना, गरम होना।
सिंगा—पु० एक तरहका बाजा।
सिंगार—पु० श्रृङ्गार, सजावट (उदे० 'पौढ़ाना'), शोभा, सजधज। [ सन्दूक।
सिंगारदान—पु० श्रृङ्गारकी सामग्री रखनेका पात्र या
सिंगारना—सक्रि० श्रृङ्गार करना,सँवारना (रवि० १४)।
सिंगारहार—पु० 'हरसिंगार' नामक पेड़ (प० १५)।
सिंगारिया,-री—पु० श्रृङ्गार करनेवाला। पुजारी।
सिंगाला—वि० सींगवाला।
सिंगासन—दे० 'सिंहासन'।
सिंगिया—पु० एक विष।
सिंगी—स्त्री० रक्त खींचनेकी नली। एक मछली। पु० सींगका बाजा (उदे० 'पूरना', अ० २३)। संगी, एक प्रकारका कपड़ा।
सिंघ—पु० सिंह (उदे० 'आर्दी', 'उरेहना')।
सिंघल—पु० सिंहल, लंका।
सिंघाड़ा—पु० एक फल।
सिंघासन—पु० सिंहासन,गद्दी,तख्त (उदे०'झमकना')।
सिंघिनी—स्त्री० सिंहकी मादा। नाक।
सिंघी—स्त्री० एक छोटी मछली।
सिंघेला—पु० सिंहका बच्चा (प० ३११)।
सिंचन—पु० सींचना।
सिंचना—अक्रि० सींचा जाना।
सिंचाई—स्त्री० सींचनेकी क्रिया या मजदूरी।
सिंचाना—सक्रि० पानी छिड़काना, तर कराना।
सिंचित—वि० सींचा हुआ, जल छिड़ककर तर किया हुआ।
सिंजित—स्त्री० झंकार, आवाज़, ध्वनि (छत्र० २४)।
सिंदन—पु० स्यन्दन, रथ।
सिंदुआर,-वार—पु० एक पेड़, निगुंडी।
सिंदूर—पु० एक लाल बुकनी, सेंदुर (उदे०'तरकूली')।
सिंदूरतिलक—पु० हाथी। सिन्दूरका तिलक।
सिंदूरदान,-बंदन—पु० विवाहके समय माँगमें सिन्दूर डालनेकी रीति।
सिंदूरिया,सिंदूरी—वि० सिन्दूरके रंगका।
सिंदोरा—पु० सिन्दूर रखनेकी डिबिया।
सिंधव—वि० सैंधव। सिन्ध देशका। पु० एक नमक। एक तरहका घोड़ा।
सिंधु—पु० समुद्र, नदी। चारकी संख्या। गजमद। एक [ नदी।
सिंधुज—पु० शंख। सेंधा नमक।
सिंधुजा—स्त्री० लक्ष्मी। सीप।
सिंधुर—पु० हाथी।
सिंधुरमणि—पु० गजमौक्तिक।
सिंधुरागामिनी—वि० स्त्री० गजगामिनी।
सिंधुरवदन—पु० गणेश।
सिंधुसुत—पु० जलन्धर नामका राक्षस।
सिंधुसुतासुत—पु० मोती।
सिंधोरा—देखो 'सिंदोरा' (साखी ३२)।
सिंधोरी—स्त्री० छोटा सिंदोरा (प० १२८)।
सिंबी—स्त्री० छीमी।
सिंसप, सिंसिपा—पु० शीशमका वृक्ष।
सिंह—पु० मृगेन्द्र। एक राशिका नाम।
सिंहद्वार—पु० सिंहकी मूर्तिवाला द्वार।
सिंहनाद—पु०सिंहके गर्जनेकी आवाज।वीरोंकी ललकार।
सिंहनी, सिंहिनी—स्त्री० सिंहकी मादा।
सिंहपौर—दे० 'सिंहद्वार'।
सिंहल—पु० स्वर्णद्वीप, लङ्का। राँगा, पीतल।
सिंहली—स्त्री०सिंहलकी भाषा। पु० सिंहलका निवासी। वि० सिंहल द्वीपका।
सिंहवाहना,-वाहिनी—स्त्री० दुर्गा।
सिंहाण,-न—पु० नाकका मैल, रेंट। जंग।
सिंहारहार—पु० एक पेड़। (भू० ८)।
सिंहावलोकन—पु० सिंहकी तरह सिर उठाकर पीछे देखनेकी क्रिया। संक्षिप्त दिग्दर्शन। पद्यरचना-विशेष।
सिंहासन—पु० सिंहकी आकृतिवाला आसन, गद्दी।
सिंहिका—स्त्री० राहुकी माता।
सिंहिकसूनु, सिंहिकेय—पु० राहु।
सिंही—स्त्री० सिंहनी, एक बाजा। [ पतली हो।
सिंहोदरी—वि०स्त्री० जिसकी कमर सिंहकी कमरकी तरह
सिअनि—स्त्री० सिलाई (उदे० 'टाट')।

सिअरा—पु० छाया। वि० सिराया हुआ, शीतल 'सिअरे बदन सूखि गये कैसे।' रामा० २३२
सिआर—पु० शृगाल।
सिकंजबीन—स्त्री० एक तरहका शरबत जो सिरकेको पकाकर तैयार किया जाता है।
सिकंजा—पु० देखो 'शिकंजा'।
सिकंदरा—पु० रेलका सिगनल।
सिकटा—पु० खपड़े या मिट्टीके पात्रका छोटा टुकड़ा।
सिकड़ी—स्त्री० जंजीर। करधनी।
सिकत—स्त्री० बालू 'सूर सिकत हठि नाव चलाओ ये सरिता हैं सूखी।' भ्र० १९।
सिकता—स्त्री० रेत या रेतीली भूमि। चीनी। एक रोग।
सिकतिल—वि० बालुकामय।
सिकत्तर—पु० 'सेक्रेटरी', मन्त्री।
सिकर—स्त्री० जंजीर ( विद्या० १४१ )। शृगाल, सियार 'काग गीध दुइ मरन विचारैं। सिकर स्वान दुइ पन्थ निहारैं।' बीजक ९८
सिकरी—स्त्री० जंजीर। गलेमें पहननेका एक गहना, [करधनी।
सिकली—स्त्री० सान धरनेका काम।
सिकलीगढ़,-गर—पु० सान चढ़ानेवाला (रतन० ५३)। चमक उत्पन्न करनेवाला ( कबीर २६३ )।
सिकहर,-हरा—पु० छींका ( सुबे० ६५ )।
सिकहुली—स्त्री० मूँज आदिकी बनी हुई डलिया।
सिकार—पु० शिकार।
सिकुड़न—स्त्री० शिकन। आकुञ्चन।
सिकुड़ना, सिकुरना—अक्रि० आकुञ्चित होना।
सिकोड़—स्त्री० सिकुड़न।
सिकोड़ना,सिकोरना—सक्रि० बटोरना,सङ्कुचित करना, शिकन डालना ( दास २७, गुलाब ४९५ )।
सिकोरा—पु० कसोरा।
सिकोली—स्त्री०बेत,बाँस आदिकी बनी हुई छोटी टोकरी।
सिकोही—वि० अभिमानी, पराक्रमी, वीर।
सिक्कर—पु० सिकड़ी।
सिक्का—पु० मुद्रा, छाप। पदक। आतङ्क।
सिक्की—स्त्री० अठन्नी।
सिक्ख—पु० गुरु नानक प्रवर्तित एक सम्प्रदाय। गुरु [नानक आदिका अनुयायी।
सिक्त—वि०सींचा हुआ।
सिक्थ—पु० भातका एक दाना। भातका पिण्ड।

सिखंड—पु० मोरकी पूँछ ( सू० २० )।
सिखंडी—पु० मोर। मोरपङ्ख ( सू० ७२ )।
सिख—स्त्री० शिक्षा, नसीहत। शिखा। पु० शिष्य। देखो 'सिक्ख'।
सिखना—सक्रि० सीखना ( प० ५ )। [* छींका।
सिखर—पु० चोटी (उदे०'ढहाना'), मुकुट (सू०७२)।*
सिखरन—स्त्री० दही चीनीसे बनी एक खाद्य वस्तु।
सिखलाना, सिखाना—सक्रि० शिक्षा देना, पढ़ाना।
सिखापन, सिखावन—पु० नसीहत, शिक्षा ( उदे० 'अनुहरत' )।
सिखी—पु० शिखी, मुर्गा, मोर ( उदे० 'जूमना' )।
सिगरा,-रो—वि० सारा, सम्पूर्ण, सब (उदे०'काहीं')।
सिचान—पु० देखो 'सचान'।
सिचाना—दे० 'सिंचाना' (रामा० ४२)।
सिच्छक—पु० शिक्षक, दण्ड देनेवाला,शासन करनेवाला 'साहिनके सिच्छक सिपाहिनके पातसाह—' भू० ३७
सिच्छा—स्त्री० शिक्षा, उपदेश, सीख।
सिजदा—पु० दंडवत, मस्तक झुकाना।
सिझना—अक्रि० आँचपर पकाना।
सिझाना—सक्रि० पकाना, उबालना, सन्तप्त करना, [तैयार करना।
सिटकिनी—स्त्री० चटखनी।
सिटपिटाना—अक्रि० भय खाना, स्तब्ध होना।
सिट्टी—स्त्री० वाक्चातुर्य, प्रगल्भता, बोलनेकी शक्ति।
सिट्ठी—स्त्री० किसी चीजका रस निकालनेपर बचा हुआ अंश। साररहित पदार्थ।
सिठाई—स्त्री० फीकापन।
सिड़—स्त्री० पागलपन, झक, धुन।
सिड़पन, सिड़पना—पु० पागलपन, धुन।
सिड़बिल्ला—वि० पागल सा, मूर्ख, जड़बुद्धि।
सिड़ी—वि० सनकी, विक्षिप्त।
सित—वि० सफेद, साफ, उजला। पु० शुक्र, उजेला [पाख, चन्दन।
सितकंठ, सितिकंठ—पु० शिव।
सितकर—पु० चन्द्रमा, कपूर।
सितदीधिति—पु० चन्द्रमा।
सितपक्ष,-पच्छ—पु० हँस। शुक्लपक्ष
सितभानु—पु० चन्द्रमा ( गुलाब २८९ )
सितम—पु० जुल्म, अनर्थ।
सितमगर—पु० जुल्म करनेवाला।

सितरश्मि—पु० चन्द्रमा ।
सितसागर—स्त्री० क्षीरसागर ।
सितह—स्त्री० सतह 'भरा हुआ है तालाब, खेलती हैं मछलियाँ, पानीकी सितह पर पूँछ पलटती हुई' अणिमा ६४ ।
सितांबर—वि० जो श्वेत वस्त्र धारण करे ।
सितांशु—पु० कपूर । चन्द्रमा ।
सिता—स्त्री० शक्कर (दास ७७), उजेला पाख, चाँदी, चन्द्रिका 'सरद सिता सी जाकी साधना है विकसी ।' कलस १६१ । सफेद दूर्वा, । सुन्दरी । चमेली ।
सिताखंड—पु० मिश्री ।
सिताब, सिताबी—क्रिवि० तुरन्त, शीघ्रतासे (उदे० 'कूब' रतन० ३५) । स्त्री० शीघ्रता 'तातैं ढील न छोड़ काम यह है सिताब कौ ।' सुजा० ६९ ।
सिताबी(महताबी)—स्त्री० चाँदनी 'सिताबी छिड़क रहा विधुकांत बिछा है सेज कमलिनी जाल' झरना ५६ ।
सितार—पु० एक बाजा ।
सितारा—पु० सितार । तारा, भाग्य ।
सितारिया—पु० सितार बजानेवाला ।
सितारी—स्त्री० छोटा सितार ।
सितासित—पु० सफेद और काला । गंगा-जमुना ।
सितिकंठ—देखो 'सितकंठ', शंकरजी ।
सितुई,-ही—स्त्री० सीपी ।
सितून—पु० खम्भा । मीनार ।
सितोपल—पु० स्फटिक, बिल्लौर ।
सिथिल—वि० सुस्त, थका हुआ । ढीला(उदे०'मरगजा') ।
सिदका—पु० उतारा, दान, खैरात ।
सिदना—सक्रि० 'सीदना', कष्ट देना 'दिलीपतिको सिदति है ।' भू० १४४
सिदरी—स्त्री० ऐसा दालान जिसमें तीन द्वार हों ।
सिदिक—वि० सच्चा ।
सिदौसी—क्रिवि० शीघ्र 'लैयो काम बनाय कै, दैवो यह सन्देस । सिदौसी लौटियो । सत्यना०
सिद्ध—पु० तपस्वी, योगी, महात्मा, देवता-विशेष । वि० प्रमाणित, प्राप्त, समाप्त, सम्पादित, पका हुआ । अनुकूल किया हुआ । पहुँचा हुआ ।···तैयार 'मंदिर सिद्ध करवायो' अष्ट० ७१
सिद्धकाम—वि० जिसका मनोरथ पूरा हो गया हो ।
सिद्धगुटिका—स्त्री० अदृश्य बना देनेवाली अभिमंत्रित गोली ।
सिद्धपीठ—पु०तांत्रिक सिद्धि शीघ्र प्राप्त करनेवाला स्थान ।
सिद्धहस्त—वि० निपुण, कुशल ।
सिद्धांजन—पु० एक कल्पित अंजन जिसके लगानेसे ज़मीनके भीतरकी चीज़ें देख पड़ती हैं ।
सिद्धांत—पु० निश्चित मत, उसूल ।
सिद्धांतवाद—पु० मतवाद ।
सिद्धांती—पु० वह जो शास्त्रके सिद्धान्तोंको जानता हो ।
सिद्धाई—स्त्री० सिद्ध होनेकी दशा ।
सिद्धार्थ—पु० महावीरके पिताका नाम । भगवान बुद्ध ।
सिद्धासन—पु० हठयोगका एक आसन ।
सिद्धि—स्त्री० सफलता, पूर्णता, निश्चय, युक्ति, योगसे प्राप्त शक्ति । देखो 'प्रापति' ।
सिद्धेश्वर—पु० बड़ा भारी सिद्ध पुरुष ।
सिधरी—स्त्री० एक तरहकी मछली ।
सिधाई—स्त्री० सरलता ।
सिधाना—अक्रि० सिधारना, चला जाना (उदे०'कुटुम', 'जोहार') । पधारना, आना 'तब कर जोरि कह्यो कौशलपति हे प्रभु भले सिधायो ।' रघु० १९
सिधारना—अक्रि० चला जाना, जाना (उदे० 'ताय' 'निठौर'), स्वर्गवासी होना । सक्रि० सुधारना ।
सिधि—स्त्री० देखो 'सिद्धि' ।
सिन—पु० उम्र । बदन । कपड़ा । वि० करना ।
सिनक—पु० नाकका मैल, रेंट ।
सिनकना—सक्रि० छिनकना, नाकसे रेंट निकालना ।
सिनेमा—पु० किसी दृश्य या नाटकादिका चलता फिरता छाया-चित्र ।
सिन्नी—स्त्री० मिठाई । खुशीमें या देवताके प्रसादमें [बाँटी गयी मिठाई ।
सिपर—स्त्री० ढाल ।
सिपहगरी—स्त्री० सिपाहीका काम ।
सिपहसालार—पु० सेनापति ।
सिपाई—पु० सिपाही, सैनिक ।
सिपास—स्त्री० कृतज्ञता-प्रदर्शन, धन्यवाद । बड़ाई ।
सिपाह—स्त्री० सेना 'मंद मंद आवत मलिंदकी सिपाह लै ।' रत्ना० ४५३
सिपाहगिरी—देखो 'सिपहगरी' ।
सिपाहियाना—वि० सिपाहीका सा ।

सिपाही—पु० सैनिक। चपरासी।
सिपुर्द करना—सक्रि० सौंपना, हवाले करना।—होना अक्रि० हवाले होना, सौंपा जाना।
सिप्पर—स्त्री० ढाल (सुजा० १०, १०१)।
सिप्पा—पु० युक्ति, लक्ष्य वेध, रोब।'''एक तरहकी छोटी तोप (हिम्मत० १३)।
सिप्र—पु० प्रस्वेद। चन्द्रमा।
सिप्रा—स्त्री० एक भैंस। एक झील। एक नदी।
सिफत—स्त्री० गुण, खूबी, स्वभाव, तासीर, शक्ल।
सिफर—पु० शून्य, बिन्दी।
सिफात—स्त्री० गुण, पाकजातकी रसिक निध जगत सिफात दिखाइ।' रतन० १०
सिफारिश—स्त्री० नौकरी आदि दिलानेकी दृष्टिसे की गयी तारीफ; समर्थन।
सिफारिशी—वि० जिसकी सिफारिश की गयी हो या जिसमें किसीकी सिफारिश हो।
सिबिका—स्त्री० पालकी।
सिमंत—पु० सीमन्त, माँग। [लज्जित होना।
सिमटना—अक्रि० बटुरना, एकत्र होना, सिकुड़ना,
सिमर—पु० सेमर 'चन्दन भरम सिमर आलिंगन सालि रहल हिय काँट।' विद्या० १८८
सिमरन—पु० स्मरण, याद (कबीर २९०)।
सिमरना—सक्रि० स्मरण करना।
सिमाना—सक्रि० सिलाई कराना। पु० सीमान्त,
सिमिटना—दे० 'सिमटना' (रामा० १५७)। [सिवाना।
सिमृति—स्त्री० स्मृति।
सिमेटना—सक्रि० बटोरना।
सिय—स्त्री० सीता।
सियना—सक्रि० सीना। सृजना, रचना।
सियरा—वि० ठंढा। पु० छाया (गीता० २९७)।
सियराई—स्त्री० ठंढक।
सियराना—अक्रि० ठंढा होना (वि० ७४, १४७)।
सिया—स्त्री० सीता, जानकी।
सियापा—पु० कई स्त्रियोंका एक साथ मिलकर मृत व्यक्तिके लिए शोक मनाना।
सियार, सियाल—पु० श्रृगाल।
सियासत—स्त्री० शासन-व्यवस्था।
सियासी—वि० राजनीतिक।
सियाह—वि० काला। पु० एक तरहका घोड़ा।
सियाहनवीस—पु० मालगुजारी इ० का ब्यौरा लिखने-वाला कर्मचारी। [दर्ज करनेका कागज।
सियाहा—पु० जमाखर्च वही। मालगुजारी या लगान
सियाही—स्त्री० रोशनाई। कालिख। कालापन। स्याही।
सिर—पु० माथा, चोटी।—उठाना = विद्रोह करना। गर्व या प्रतिष्ठाके साथ खड़ा होना।—उतारना = सिर काटना।—करना = चोटी गुहाना।—खाना = व्यर्थकी बातोंसे तंग करना।—चढ़ाना = मुँह लगाना, सम्मान प्रकट करना।—धुनना = पछताना।—पर पड़ना = गुजरना, अपनेपर बीतना।—पर जूँ न रेंगना = ख्याल न होना।—मारना = बहुत श्रम करना; व्यर्थ हैरान होना।—से पैरतक = पूर्णतः, शुरूसे आखीरतक। [आदिका रस।
सिरका—पु० धूपमें रखकर खट्टा किया हुआ गन्ने
सिरकी—स्त्री० सरकंडा, सरकंडेकी बनी टट्टी 'विदित न सनसुख ह्वै सकैं अखियाँ मुड़ी लजोर। बढनी सिरकिन वोट ह्वै हेरत मोहन ओर।' रतन० ३१, (ग्राम०२१)।
सिरखपी—स्त्री० मेहनत, हैरानी, जोखिम।
सिरगा—पु० एक तरहका घोड़ा।
सिरचंद—पु० हाथीके मस्तकपर पहनानेका एक गहना।
सिरजक, सिरजनहार—पु० सृष्टि रचनेवाला, परमात्मा। [(प० ३)।
सिरजना—सक्रि० उत्पन्न करना, बनाना। स्त्री० रचना
सिरजित—वि० सिरजा हुआ, रचित, बनाया हुआ।
सिरताज—पु० मुकुट, श्रेष्ठ, व्यक्ति।
सिरत्राण—पु० युद्धके समय सिरपर पहननेकी लोहेकी
सिरदार—पु० सरदार (उदे० 'गोल')। [टोपी।
सिरनामा—पु० पत्रके ऊपरका पता। शीर्षक।
सिरनेत—पु० कलगी, निशान, पगड़ी 'रे नेही मत डगमगै बाँध प्रीति सिरनेत।' रतन० ७७, (११३)।
सिरपाँव, सिरपाव—दे० 'सिरोपाव' (उदे० 'खवास')।
सिरपेच—पु० पगड़ी; एक आभूषण जो पगड़ीपर बाँधा
सिरपोश—पु० सरपर पहननेका टोप। [जाता है।
सिरफूल—पु० एक शिरोभूषण।
सिरफेंटा,-बंद—पु० पगड़ी।
सिरबंदी—स्त्री० सिरपर पहननेका एक आभूषण।
सिर-मगजन—पु० माथापच्ची (सेवा० १९९)।

सिरमनि, सिरमौर—पु० सिरका मुकुट। श्रेष्ठ व्यक्ति।
सिररुह—पु० बाल, केश,।
सिरस, सिरिस—पु० एक वृक्ष इसका फूल बहुत मुलायम होता है (उदे० 'कत'), 'सिरिस कुसुम सम बालके कुम्हिलाने सब गात।' मति० २१९
सिरहाना—पु० चारपाईका सिरा। [(छ रक्तनलिका।
सिरा—पु० शुरूका या अन्तका भाग, छोर। स्त्री० छ
सिराजी—पु० एक तरहका घोड़ा।
सिराना, सिरावना—सक्रि० ठण्डा करना (उदे०'अव०-टना', 'झला', 'दवा')। पानीमें डुबाना, 'तुलसी भाँवरके परत नदी सिरावत मौर।' तु०। बिताना। अक्रि० ठण्डा या उत्साहहीन होना (विन० ३०६, भ्र० ७३), बीतना, खतम होना, दूर होना 'सब सुख सुकृति सिरान हमारा।' रामा० २३२, (सू० १६, ७७), चरचहि सिगरी रैनि सिरानी।' भ्रागनि। 'इतनी वयसि सिरानि हमारी।' रघु० ९९
सिरावन—पु० हेंगा।
सिरिश्ता—पु० मुहकमा। कर्मचारी।
सिरिश्तेदार—पु० मुकदमे सम्बन्धी कागज रखनेवाला
सिरी—स्त्री० लक्ष्मी, ऐश्वर्य, शोभा, रोली। 'श्री' नामका आभूषण (प० २३४, २५३)।
सिरोना—पु० घड़ा रखनेकी विड़ई, इँडुरी।
सिरोपाउ, सिरोपाव—पु० सिरसे पाँवतककी पोशाक
सिरोमनि—दे० 'शिरोमणि'। [(सुजा० ५९)।
सिरोरुह—दे० 'शिरोरुह' (उदे० 'तनोरुह')।
सिरोही—स्त्री० तलवार। एक पक्षी।
सिर्का—पु० देखो 'सिरका'।
सिर्फ—क्रिवि० केवल।
सिल—स्त्री० शिला, मसाला आदि पीसनेका पत्थर।
सिलक—स्त्री० कतार, पंक्ति, लड़ी। पु० धागा।
सिलकी—पु० श्रीफल, बेल। [मिट्टी।
सिलखड़ी,-खरी—स्त्री० एक चिकना पत्थर, खरिया-
सिलगना—अक्रि० सुलगना, प्रज्वलित होना (उदे० सिलप—पु० शिल्प, कारीगरी। ['ओदा', रतन०९४)
सिलपची,-फ़ची—स्त्री० चिलमची।
सिलपट—वि० चौरस, बराबर। चौपट पु० चट्टी।
सिलपोहनी—स्त्री० विवाहके समयकी एक रस्म।
सिलवट—स्त्री० सिकुड़न। शिकन। शिलापट, सिल।
सिलवाना—सक्रि०किसीको सीनेके कार्यमें प्रवृत्त करना।
सिलसिला—पु० शृंखला, क्रम। वि० आर्द्र, चिकना (वि० २८०)। सिलसिलेवार=तरतीबवार।
सिलसिलेवार—वि० क्रमानुसार।
सिलह—पु० देखो 'सिलाह' (सुजा० १३४)।
सिलहखाना—पु० अस्त्रशस्त्र रखनेका स्थान।
सिलहार,-रा—पु० उंछ वृत्तिवाला, खेतमें गिरा हुआ अनाज चुननेवाला। [(साखी ५९)।
सिलहिला—वि० चिकना, पंक-पिच्छल, फिसलानेवाला
सिला—स्त्री० शिला, पत्थर (उदे० 'फटिक')। फसल कट जानेपर खेतमें गिरा हुआ दाना (उदे०'लवनि')। पु०… बदला, इनाम, पारिश्रमिक।
सिलाई—स्त्री० सीनेकी क्रिया या मजदूरी।
सिलाजीत—पु० देखो 'शिलाजीत'।
सिलाना—सक्रि० सीनेका काम कराना। सिराना, ठण्ढा
सिलावट—पु० संगतराश। [करना।
सिलाह—पु० हथियार। कवच (साखी २८)।
सिलाहबंद—वि० हथियारबन्द।
सिलाहसाज़—पु० शस्त्र बनानेवाला।
सिलाही—पु० सैनिक।
सिलिप—पु० देखो 'सिलप'।
सिलीमुख—पु० भ्रमर। बाण।
सिलौट, सिलौटा—पु० सिलबट्टा। सिल।
सिलौटी—स्त्री० मसाला आदि पीसनेकी सिल।
सिल्की—स्त्री० सलईका वृक्ष।
सिल्ला—पु० खेत या खलियानमें गिरा अनाजका दाना।
सिल्ली—स्त्री० धार तेज़ करनेका पत्थर।
सिव—पु० शिव, महादेव। कल्याण।
सिवईं—स्त्री०आटे या मैदेकी एक खाद्यवस्तु जो लच्छोंके रूपमें होती है।
सिवता—स्त्री० शिवत्व (विन० ३१६)।
सिवा—क्रिवि० छोड़कर, अतिरिक्त। वि० अधिक। स्त्री० शृगाली (सुजा० ४९)। पार्वती, दुर्गा।
सिवान—पु० सीमान्त, सरहद।
सिवाय—क्रिवि० छोड़कर, अलावा।
सिवार, सिवाल—स्त्री० शैवाल, पानीमें फैलनेवाला
सिवाला—पु० शिवमन्दिर। [पौधा।
सिविका—स्त्री० पालकी (उदे० 'उद्दार' रामा० ५२१)।

सिथिर—पु० शिविर, तम्बू, डेरा।
सिवैयाँ—स्त्री० सेवई।
सिष, सिष्य—पु० शिष्य, चेला।
सिष्ट—वि० शिष्ट, भद्र। स्त्री० बंसीका डोरा।
सिस—पु० शिशु, बच्चा 'बदन चंदके लखन कौ सिस ज्यों विरक्षत नैन।' रतन० ४८
सिसकना—अक्रि० भीतर ही भीतर धीरे धीरे रोना, सिसकी भरना, व्याकुल होना।
सिसकारना—अक्रि० सीटीकी तरह आवाज़ करना, 'सी सी' शब्द करना, शीत्कार करना।
सिसकारी—स्त्री० सिसकारनेका शब्द। शीत्कार।
सिसकी—स्त्री० सिसकनेका शब्द। सिसकारी।
सिसियाँद—स्त्री० मछलीकी सी गन्ध।
सिसिर—पु० शिशिर ऋतु।
सिसु—पु० शिशु, बालक।
सिसुता—स्त्री० शैशवावस्था।
सिसुमार—पु० सूँस नामक जलजन्तु। मगरकी आकृति से मिलता जुलता नक्षत्र पुंज ( रघु० ४१ )।
सिसोदिया—पु० गुहलौत राजपूतोंका एक भेद।
सिस्टि—स्त्री० सृष्टि ( प० १४६ )।
सिस्न—पु० देखो 'शिश्न'।
सिस्य—पु० शिष्य, चेला।
सिहद्दा—पु० तीन सीमाओंके मिलनेका स्थान।
सिहरना—अक्रि० काँपना, भयाक्रान्त होना।
सिहरा—पु० मौर। मौरमें लटकानेकी पुष्पमाला। विवाह सम्बन्धी मंगलगान।
सिहरी—स्त्री० कँपकँपी, रोमांच होना।
सिहाना—अक्रि० ललचना, ईर्ष्या करना, देखकर प्रसन्न होना, 'सुहृद नैन नैना बडे देखत हियौ सिहाइ।' रतन० १२। सक्रि० प्रशंसा करना 'लोग सिहाहिं प्रमकै रीती।' रामा० २९१। ईर्ष्या या अभिलाषासे देखना 'देव सकल सुरपतिहिं सिहाहीं।' रामा० १७०, 'जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं। तिन्हहिं नाग सुर नगर सिहाहीं।' रामा० २५३
सिहारना—सक्रि० ढूँढना, ढूँढकर लाना।
सिहिटि—स्त्री०सृष्टि'औ तेहि प्रीति सिहिटि उपराजी।' प० ५, ( ६, ८, ४१ भी )।
सिहुंड, सिहोड़, सिहोर—पु० सेंहुड़, थूहर।
सींक—स्त्री० पतला डंठल, सलाई, तीली (रामा० ३५८)। नाककी लौंग ( उदे० 'उतारना' )।
सींका—पु०सिकहर (सुबे० ६५)। छोटी पतली शाखा।
सींकिया—पु०सींककी तरह बारीक धारियोंवाला कपड़ा।
सींग—पु० विषाण। एक बाजा।
सींगड़ा—पु० 'सिंगी' बाजा। बारूदका चोंगा।
सींगरी—स्त्री० एक फली।
सींगी—दे० 'सिंगी' ( सुबे० ३७५ )।
सींच—स्त्री० सींचनेकी क्रिया।
सींचना—सक्रि० पानी देना, छिड़कना, तर करना।
सींव—स्त्री० सीमा।
सी—वि० स्त्री० सदृश, समान। स्त्री० शीत्कार।
सीउ—पु० शीत 'जहँ धनि पुरुष सीउ नहिं लागा।' प० १६४, ( ११९ )।
सीकचा सीखचा—पु० शलाका, छड़।
सीकर—स्त्री० सिकड़ी। पु० शृगाल, गीदड़ 'सीकर स्वान कागका भोजन तनकी इहै बड़ाई।' बीजक २२९, जलकण ( उदे० 'तमयी' ), प्रस्वेदबिन्दु।
सीकल—स्त्री० हथियार साफ करनेकी क्रिया। वह आम जो पेड़पर ही पक गया हो।
सीकस—पु० अनुपजाऊ भूमि ( बीजक १९९ )।
सीका—पु० छीका। एक शिरोभूषण।
सीकुर—पु० जौ आदिकी बालमें दानोंके ऊपर निकला हुआ सूत।
सीख—स्त्री० शिक्षा, नसीहत।
सीख—स्त्री०, सीखचा—पु० लोहेकी छड़। मांस भूननेकी छड़।
सीखना—सक्रि० ज्ञान प्राप्त करना, अभ्यास करना।
सीगा—पु० मुहकमा। पेशा। ढाँचा।
सीजना, सीझना—अक्रि० पकना ( उदे० 'करसी' ), पागा जाना 'आनँद भीजी सनेहमें सीझी चितै कछु पाछे उसासन लेती।' रघु० १००, कष्ट सहना, ठढसे गलना 'रहिमन नीर पखान, भीजै पै सीजै नहीं।' रहीम २९
सीटना—सक्रि० डींग मारना।
सीटी—स्त्री० एक तरहका शब्द। एक बाजा।
सीठ—स्त्री० सार अंश निकालनेपर बचा हुआ पदार्थ।
सीठा—वि० सारहीन, फीका, नीरस ( विन० ३९९ )।
सीठी—स्त्री० सारहीन अंश। फीकी वस्तु।
सीड़—स्त्री० आर्द्रता, नमी।

सीढ़ी—स्त्री० निसेनी, जीना, परम्परा।
सीत—पु० शीत, ठंड, जाड़ा। स्त्री० ओस ( ग्राम०
सीतकर—पु० चन्द्रमा ( वि० ९५ )। [ २६४ )।
सीतल—वि० ठंटा ( उदे० 'जवास' )।
सीतलपाटी—स्त्री० एक तरहकी चटाई। एक कपड़ा।
सीतलबुकनी—स्त्री० सत्तू।
सीतला—स्त्री० चेचक।
सीता—स्त्री० हलकी जुताईका गड्ढा। हलकी फाल। जानकी। सीर, राजाकी अपनी भूमि। जिराअत।
सीताजानि—पु० रामचन्द्रजी। [ मदिरा।
सीतानाथ,-पति—पु० रामचन्द्रजी।
सीताफल—पु० शरीफा।
सीतारमण,-रवण—पु० रामचन्द्रजी।
सीत्कार—पु० अत्यन्त हर्ष या दुःखकेसमयका 'सी सी' शब्द, सिसकारी।
सीथ—पु० भातका दाना, भोजनका अवशिष्ट 'बचे सीथ संतनके पाऊँ।' ललित कि० ( गुलाब ५२८ )।
सीथि—देखो 'सीथ' ( व्रज० १५३ )।
सीद—पु० सूदपर रुपया चलाना।
सीदना—अक्रि० कष्ट उठाना, दुःख पाना।
सीध—स्त्री० सामनेकी लम्बाई। लक्ष्य।
सीधा—पु० बिना पका चावल, दाल इ०। वि० सरल, नेक,शुद्ध, शान्त, दाहिना।
सीधे—क्रिवि०शान्ति या शिष्टताके साथ। ठीक सामने।
सीना—सक्रि० टाँकना, सिलाई करना। पु० छाती।
सीनाबंद—पु०अँगिया, कुरती। सामनेके पैरोंसे लँगड़ानेवाला घोड़ा।
सीप—पु० एक जलजन्तु या उसका सम्पुट,शुक्ति,घोंघा।
सीपज—पु० मोती ( सू० ५१, १३५ )।
सीपर—स्त्री० ढाल।
सीपसुत,सीपिज—पु० मोती ( सू० ५१ )।
सीपी—स्त्री० देखो 'सीप' ( उदे० 'कचपचिया' )।
सीबी—स्त्री० 'सीसी' शब्द, शीत्कार ( वि० २५० )।
सीमंत—पु० एक संस्कार(मति० १७२), बालोंकी माँग।
सीमंतिनी—स्त्री० स्त्री।
सीम, सीमा—स्त्री० सरहद (विधा, १०८), मर्यादा, †
सीमांत—पु० सीमाका अन्त, सिवाना। [ †माँग।
सीमाबद्ध—वि०परिमित। जिसकी हद बाँध दी गयी हो।

सीय—स्त्री० सीता, वैदेही।
सीयरा—दे० 'सियरा, वैदेही।
सीर—स्त्री० वह भूमि जो भूमिपति हो जोतता हो। पु० हल। सूर्य। रक्त नलिका। वि० सीरा, शीतल ( उदे० 'झकोल', 'पटीर' )।
सीरक—पु० सूर्य, हल। ठंढक ( भ० ९६ )।
सीरख, सीरष—पु० देखो 'शीर्ष'।
सीरनी—स्त्री० मिठाई।
सीरध्वज—पु० कुशध्वजके बड़े भाई—राजा जनक।
सीरपाणि,-भृत—पु० हल धारण करनेवाले बलराम।
सीरवाह—पु० हल चलानेवाला। जमींदारका कारिन्दा।
सीरा—वि० शीतल ( रघु० ९९ ), ठंढा, शान्त। पु०
सील—पु० शील। स्त्री० तरी, सीड़। [ चाशनी।
सीला—वि० तर। पु० खेतमें गिरे हुए दाने।
सीव—स्त्री० सीमा ( उदे० 'चरना' )।
सीवन—पु० सिलाई दरार।
सीस—पु० मस्तक (उदे० 'मुड़हर'), सीसा।
सीसताज—पु० शिकारी पशुओंकी टोपी।
सीसत्रान—पु० शिरस्त्राण।
सीसपत्र,-पत्रक—पु० सीसा नामक धातु।
सीसफूल—पु० सिरपर पहननेका एक आभूषण।
सीसम—पु० एक पेड़, शीशम।
सीसमहल—पु० वह मकान जिसमें दीवारोंमें शीशा
सीसा—पु० एक धातु। [ जड़ा हुआ हो।
सीसी—स्त्री शीशी। शीत्कार।
सीह—पु० सिंह 'जिहि बन सीह न संचरै पंषि उड़े नहीं
सीहगोस—पु० एक जन्तु। [ जाइ।' कबीर १८
सीहुँड—पु० सेहुँड़, थूहर।
सुँघनी—स्त्री० नास।
सुँघाना—सक्रि० सूँघनेमें प्रवृत्त करना।
सुंठि—स्त्री० सोंठ।
सुंड, सुंडा—स्त्री० हाथीकी सूँड़।
सुंड-भुसुंड, सुंडाल—पु० हाथी 'सुंडाल चलत सुंडनि उठाइ।' सुजा० ४२
सुंद—पु० एक बन्दर। एक दैत्य।
सुंदर—वि० रूपवान्, सुडौल, मनोहर।
सुंदरता,-ताई—स्त्री० सौन्दर्य, शोभा, छवि।
सुंदराई—स्त्री० सुन्दरता '… विश्व मन हारे धारे विश्व

सुंदराई री।' रघु० १०१; 'सहज सुन्दराई पर राई लोन वारती।' दास० १५२

सुंदरापा—पु० सौन्दर्य।

सुंदरी—स्त्री० रूपवती स्त्री।

सुंदरौदन—पु० अच्छा भात।

सुँधावट—स्त्री० सौंधापन।

सु—वि० अच्छा। सव० वह, सो। उपसर्ग-श्रेष्ठता इ० का द्योतक एक उपसर्ग।

सुअ, सुअन—पु० पुत्र ( दास १७५ )।

सुअटा—पु० सुआ, तोता।

सुअना—पु० तोता। अक्रि० उदय होना।

सुअर—पु० सूअर।

सुआ—पु० तोता, सुग्गा(उदे०'ओपनिवारी','बिसरामी')

सुआद—पु० स्वाद।

सुआन—पु० श्वान, कुत्ता।

सुआमी—पु० स्वामी, प्रभु, पति।

सुआर—पु० सूपकार, रसोइया ( उदे० 'बसह' ),'लागे परसन निपुन सुआरा।' रामा० ६०, (रघु० २९ )।

सुआरव—वि० कणमधुर स्वरसे बोलने या बजनेवाला।

सुआसिन,-नी—स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री 'सुभग सुआसिन गावहिं गीता।' रामा० १६८। पड़ोसिन।

सुआहित—पु० तलवारका एक हाथ।

सुई—स्त्री० कपड़ा सीनेकी पिन, सूची, 'सूजी'।

सुकंठ—पु० सुग्रीव। वि० अच्छे कण्ठवाला।

सुक—पु० शुक, तोता ( उदे० 'ज्याना' )।

सुकड़ना—अक्रि० सङ्कुचित होना, सिमटना।

सुकनासा—वि० सुग्गे जैसी सुन्दर नाकवाला।

सुकर—वि० आसान। सरल।

सुकरता—स्त्री० सुसाध्यता। मनोहरता।

सुकरा—स्त्री० सीधी गाय।

सुकरात—पु० यूनानका एक प्रसिद्ध दार्शनिक।

सुकराना—पु० शुक्रिया, एहसान। वह रुपया जो मुकदमा जीतनेपर धन्यवाद स्वरूप दिया जाय।

सुकरित—वि० सुकृत, अच्छा।

सुकर्मी—वि० सुकृती, पुण्यात्मा, सदाचारी।

सुकवाना—अक्रि० अचम्भित होना, चकित होना।

सुकाना, सुकावना—सक्रि० सुखाना, नमी दूर करना।

सुकाल—पु०अच्छा समय,वहसमय जबअन्नादिसस्ता हो।

सुकावना—सक्रि० देखो 'सुखाना'।

सुकाशन—वि० बहुत चमकनेवाला।

सुकिज—पु० सुकार्य, अच्छा काम।

सुकिया—स्त्री० स्वकीया नायिका।

सुकी—स्त्री० सुग्गी, सारिका।

सुकीउ—स्त्री० देखो 'सुकिया'।

सुकुआर—वि० सुकुमार, कोमलाङ्ग।

सुकुति—स्त्री० शुक्ति, सीप।

सुकुमार—वि० कोमलाङ्ग।

सुकुमारी—वि० स्त्री० कोमलाङ्गी। स्त्री० चमेली। [कन्या।

सुकुरना—अक्रि० सिकुड़ना, सिमटना।

सुकुवाँर,-वार—वि० सुकुमार।

सुकृत—वि० पुण्यात्मा, भाग्यवान्। पु० शुभ कर्म।

सुकृती—वि० देखो 'सुकृत' वि०।

सुकृत्य—पु० पुण्यका कार्य।

सुकेशी—स्त्री० सुन्दर बालोंवाली स्त्री। एक अप्सरा।

सुकेसर—पु० सिंह।

सुक्ख—दे० 'सुख'।

सुक्ति—स्त्री० सीप।

सुक्र, सुक्र, सुक्षम—दे० 'शुक्र', 'शुक्र', 'सूक्ष्म'।

सुखंडी—स्त्री० बालकोंका एक रोग जिसमें वे दिन दिन सूखकर दुबले होते जाते हैं।

सुखंद—वि० सुखद, आनन्दप्रद।

सुख—पु० आनन्द, आराम, शान्ति। क्रिवि० सुखपूर्वक सहज ही ( उदे० 'अवगाहना' )।

सुखआसन—पु० पालकी।

सुखकंद, सुखकंदन—वि० सुखमूल, सुखप्रद।

सुखकंदर—वि० सुखका स्थान।

सुखक—वि० शुष्क, सूखा हुआ।

सुखकर,-करन,-कारी—वि० सुख देनेवाला।

सुखजननी—वि० स्त्री० सुख देनेवाली।

सुखद,-दनिया,-दाई—वि० सुख देनेवाला।

सुखदात,-दान,-दानी—वि० सुख देनेवाला।

सुखदायक,-दाया,-दायी,-दाव,-दैन—वि० सुखद।

सुखधाम—पु० सुखका घर,वह जो सुखद हो। वैकुण्ठ।

सुखना—अक्रि० सूखना।

सुखपाल—पु० डोली, पालकी (दीन०१७५), 'दस सुखपाल लिये खड़े हाजिर लगन कहार।' रतन० ६७।

सुखपूर्वक—क्रिवि० आनन्द पूर्वक, आरामके साथ ।
सुखप्रद—वि० सुखदायक ।
सुखप्रसवा—स्त्री० विना क्लेशके प्रसव करनेवाली ।
सुखमन—स्त्री० सुषुम्ना नाड़ी ( प० १०८ ) ।
सुखमा—स्त्री० सुषमा, शोभा, छटा ।
सुखमानी—वि० जो हर हालतमें सुख मानता हो ।
सुखरास,-रासी—वि० सुखपूर्ण ।
सुखलाना—सक्रि० सुखाना ।
सुखवंत—वि० सुखी, सुखप्रद । [ गयी फसल ।
सुखवन—पु० लिखावट सुखानेकी रेत । सूखनेको डाली
सुखवना—सक्रि० सुखाना ।
सुखवाद—पु०सुखको ही जीवनका प्रधान लक्ष्य माननेका
सुखवार—वि० खुश । [ सिद्धान्त ।
सुखवास—पु० सुख देनेवाला स्थान ।
सुखसलिल, सुखांबु, सुखोदक—पु० गरम पानी ।
सुखसाध्य—वि० आसानीसे होनेवाला, सुकर ।
सुखसार—पु० मुक्ति ( राम० ७ ) ।
सुखांत—वि० जिसका अन्त सुखमय हो । ( नाटक ) जिसका अन्त सुखमय घटनाके साथ हो ।
सुखाना—सक्रि० धूपमें रखकर नमी दूर करना, शुष्क बनाना । अक्रि० सूख जाना (उदे० 'झलना' प० ६) ।
सुखारा,-री—वि० सुखी, प्रसन्न । 'सुफल मनोरथ होंहि तुम्हारे । राम लषन सुनि भये सुखारे ।' रामा०१२०, ( उदे० 'उहार' ) । सुखद ।
सुखाला—वि० सुख देनेवाला ।
सुखावह—वि० सुख देनेवाला, सुखद ।
सुखासन—पु० आराम देनेवाला आसन, पालकी 'कहेउ सजावन पालकी सजन सुखासन जान ।'रामा० २८८,
सुखिआ—वि० सुखी, आनन्दित । [ ( १६१ ) ।
सुखित—वि० सुखी,प्रसन्न (कलस १८७) । सूखा हुआ ।
सुखिता,-स्त्री०,-त्व—पु० सुखी होनेका भाव, सुख ।
सुखिया—वि० देखो 'सुखिआ' ।
सुखिर—पु० साँपकी बाँबी ।
सुखी—वि० जो सुखमें हो, प्रसन्न ।
सुखेन—क्रिवि० सुखपूर्वक ( उदे० 'विहान' ) । दे०
सुखेना - वि० सुखप्रद । [ 'सुषेण' ।
सुख्यात—वि० सुप्रसिद्ध ।
सुगंध, सुगंधि—स्त्री०खुशबू ,सौरभ । वि०सुगन्धित ।
सुगंधवाला—स्त्री० वनौषधि विशेष ।
सुगंधित—वि० जिसमें खुशबू हो ।
सुगंधिता—स्त्री० खुशबू ।
सुगंधी—स्त्री० खुशबू । वि० देखो 'सुगंधित' ।
सुगत—वि० सुगम, आसान 'मेरे जान ब्रह्मको विचारिबो सुगत है ।' वेनी ।
सुगति—स्त्री० मोक्ष । एक छन्द ।
सुगना—पु० तोता ( रहीम ३५ ) ।
सुगम—वि० आसान, सहज, सीधा (सू० ६८)। जिसमें प्रवेश करना या जाना आसान हो ।
सुगमता—स्त्री० आसानी, सरलता ।
सुगम्य—वि० सुगमतापूर्वक जाने योग्य ।
सुगर—वि० सुघर, चतुर ( पु० वैभव ९१ ) ।
सुगल—पु० सुग्रीव, सुकंठ ( रघु० २२७ ) ।
सुगाध—वि० आसानीसे पार करने या सुखपूर्वक स्नान करने योग्य ( नदी ) ।
सुगाना—अक्रि० अप्रसन्न होना, क्रोध करना । सक्रि० किसीपर शंका करना ।
सुगृही—वि० सुन्दर गृहवाला, सुन्दर पत्नीवाला ।
सुगैया—स्त्री० चोली ।
सुग्गा—पु० तोता ।
सुग्रीव—वि० अच्छी ग्रीवावाला । पु० बालिका छोटा
सुघट—वि० सुडौल । [भाई । शिवजी । इन्द्र । शङ्ख ।
सुघटित—वि० सुन्दर बना हुआ ।
सुघड़, सुघर—वि० चतुर, होशियार (उदे० 'कढ़ना') । सुन्दर, सुडौल ( उदे० 'तमोर' ) ।
सुघड़ई सुघड़ता, सुघड़ाई, सुघरई, सुघराई—स्त्री० चतुरता, सुन्दरता ।
सुघड़पन, सुघड़ापा, सुघरपन—पु० देखो 'सुघड़ई' ।
सुघरी—वि० स्त्री० सुघड़, सुन्दर । स्त्री० शुभ घड़ी ।
सुच—वि० शुचि, पवित्र, निर्मल ।
सुचक्षु—वि० सुन्दर नेत्रोंवाला । पु० पण्डित ।
सुचना—सक्रि० संचना, संचय करना, जोड़ना 'कहि रहीम पर काज हित संपति सुचहिं सुजान ।' रहीम २
सुचरित,-त्र—वि० अच्छे कामवाला, सुशील ।
सुचा—वि० शुद्ध । साफ । वेदाग ।
सुचाना—सक्रि० ध्यान आकृष्ट करना, सोचनेमें प्रवृत्त
सुचार—वि० 'सुचारु' । स्त्री० सुचाल । [ करना ।

सुचारु—वि० अति सुन्दर ।
सुचाली—वि० जिसका चालचलन अच्छा हो ।
सुचि—वि० पवित्र निर्मल । सफेद ( कविप्रि० १७ ) । स्त्री० सुई ।
सुचित—वि० शान्त, स्थिर, निश्चिन्त ।
सुचितई—स्त्री० स्थिरता निश्चिन्तता ( दास ४४ ), शान्ति, फ़ुर्सत ।
सुचिती, सुचित्त—दे० 'सुचित' ।
सुचिमत—वि० पवित्र ।
सुचिर—वि० पुराना । पु० अत्यधिक समय ।
सुची—स्त्री० शची, इन्द्र-पत्नी ।
सुचेत, सुचेता—वि० सचेत, सावधान ।
सुचेलक—पु० महीन कपड़ा । वि० महीन कपडेवाला ।
सुच्छंद—वि० स्वच्छन्द, स्वतन्त्र ।
सुछंद—देखो 'सुच्छंद' ( पूर्ण १८ ) ।
सुच्छ—वि० स्वच्छ, साफ ।
सुच्छम—वि० सूक्ष्म ।
सुजन—पु० भला आदमी । स्वजन, नातेदार ।
सुजनता—स्त्री० सौजन्य, भलमनसाहत ।
सुजनी—स्त्री० एक तरहकी बड़ी चादर ।
सुजन्मा—वि० उत्तम कुलमें उत्पन्न ।
सुजल—पु० कमल ।
सुजस—पु० सुयश, सत्कीर्त्ति ।
सुजागर—वि० मनोहर, सुशोभित ।
सुजात—वि० जो उत्तम कुलमें उत्पन्न हुआ हो ।
सुजाति—वि० उत्तम जातिका । स्त्री० उत्तम जाति ।
सुजातिया—वि०अच्छे कुलका । स्वजातीय, स्वकुलका ।
सुजान—वि० बुद्धिमान्, प्रवीण ( उदे० 'जितवना' ) । पु० प्रियतम, पति । प्रभु, ईश्वर ।
सुजानी—वि० सुजान, ज्ञानवान् ।
सुजिह्व—वि० सुन्दर जिह्वावाला, मिष्ट भाषी ।
सुजोग—पु० सुयोग, अच्छा मौका ।
सुजोधन—पु० दुर्योधनका एक नाम ।
सुजोर—वि० सुदृढ ।
सुज्ञ—वि० सुचारु रूपसे जाननेवाला, पण्डित ।
सुझाना—सक्रि० किसीके ध्यानमें लाना, बताना ।
सुटकना—अक्रि०निगलना, सिकुड़ना, निकल भागना ।
सुठ, सुठि—वि० सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर 'सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि ।' रामा० २२८ । क्रिवि० बिलकुल, बहुत 'कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके ।' रामा० १७; 'ना सुठि लांबी, ना सुठि छोटी ।'
सुठार—वि० सुढार, सुन्दर । [ प० २३०
सुठोना—वि० अच्छा, सुन्दर ।
सुड़सुड़ाना—सक्रि० हुक्के इ० से 'सुड़ सुड़' शब्द उत्पन्न करना ।
सुड़ुकना—दे० 'सुटुकना' ।
सुडौल—वि० अच्छी आकृतिवाला, जिसका आकार या रचना अच्छी हो, सुन्दर ।
सुढंग—पु० अच्छा ढङ्ग । वि०अच्छे स्वभावका । सुडौल ।
सुढर—वि० सुडौल । अनुकूल, प्रसन्न ।
सुढार—वि० सुडौल, सुन्दर 'तेहि पीछे मिथिलेश गृह, कन्या भई सुढार ।' राम रसायन, (उदे०'उरमना') ।
सुतंत, सुतंतर, सुतंत्र—वि० स्वतन्त्र, स्वाधीन ।
सुतंत्रि—पु० वह व्यक्ति जो सितार आदि बाजे बजानेमें कुशल हो ।
सुत—पु० पुत्र, लड़का ।
सुतधार—पु० सूत्रधार, नियन्ता ( कबीर २४० ) ।
सुतना—अक्रि० सुतना, सोना । पु० सुथना ।
सुतनु—वि० जिसका शरीर सुन्दर हो, कृशाङ्गी ।
सुतर—पु० शुतुर ।
सुतरनाल—स्त्री० एक तोप ( छत्र० १११ ) ।
सुतराँ—अ० इसलिए । लाचार होकर, अपितु ।
सुतरी—स्त्री० डोरी, रस्सी । तुरही । पु० एक तरहका [ बैल ।
सुतल—पु० एक लोक ।
सुतली—स्त्री० रस्सी ।
सुतवाना—सक्रि० सुलाना ।
सुतहर, सुतहार—पु० कारीगर, बढ़ई ।
सुतहा—पु० सीपी । सूतका व्यापारी । वि० सूत सम्बन्धी ।
सुतही—स्त्री० सीपी ।
सुता—स्त्री० पुत्री, कन्या ।
सुताना—सक्रि० सुलाना, लिटाना ।
सुतार—वि० अच्छा । पु० शिल्पी, बढ़ई ।
सुतारी,-ली—पु० कारीगर । स्त्री० मोचियोंका सूआ ।
सुतिन—स्त्री० सुन्दर शरीरवाली स्त्री ।
सुतिनी—स्त्री० पुत्रवती स्त्री ।
सुतिया—स्त्री० हँसली ।

सुतिहार—दे० 'सुतार'।
सुती—पु० पुत्रवाला।
सुतीक्ष्ण—वि० बहुत तेज़। पु० रामभक्त एक ऋषि।
सुतुरनाल—दे० 'सुतरनाल' ( उदे० 'घरनाल' )।
सुतुही—स्त्री० सीपी या सीपीके आकारका पीतल इ० का पात्र।
सुतून—पु० खम्भा।
सुतेजन—वि० तेजधार या नोकवाला।
सुतोष—वि० सन्तुष्ट। पु० सत्र।
सुत्ता—वि० सोया हुआ ( उदे० 'मुलना' )।
सुथना—पु० पायजामा।
सुथनिया,-नी—स्त्री० एक तरहका ढीला पायजामा।
सुथरा—वि० साफ, स्वच्छ।
सुदंत—वि० जिसके दाँत सुन्दर हों। पु० नट।
सुदक्षिणा—स्त्री० राजा दिलीपकी पत्नी।
सुदती—स्त्री० अच्छे दाँतोंवाली स्त्री।
सुदरसन, सुदर्शन—पु० विष्णुका चक्र। शिवजी। गिद्ध। सुमेरु। जामुन। मछली। वि० सुन्दर।
सुदर्शना—वि० स्त्री० सुन्दर (स्त्री)। स्त्री० अमरावती। एक तरहकी मदिरा। हुक्म।
सुदल—वि० अच्छे पत्तोंवाला पु० सेना।
सुदामा—पु० कृष्णके एक मित्र। वि० अच्छी तरह देनेवाला।
सुदाय—पु० दहेज। उपनयन संस्कारके समय ब्रह्मचारीको मिली हुई भिक्षा।
सुदिन—पु० अच्छा दिन, शुभ समय।
सुदी—स्त्री० उजाला पाख।
सुदीप्ति—वि० कान्तिमय। स्त्री० कान्ति।
सुदीपति, सुदीप्ति—स्त्री० तेज चमक, अधिक प्रकाश।
सुदूर—वि० बहुत दूर।
सुदूरता—स्त्री० अधिक दूरी, अन्तर।
सुदृढ़—वि० खूब मजबूत।
सुदृष्टि—स्त्री० अच्छी नज़र। पु० गिद्ध। वि० दूरदर्शी।
सुदेश, सुदेस—वि० अच्छा, सुन्दर। पु० अच्छा देश या स्थान। स्वदेश ( मति० १९० )।
सुदेह—वि० सुन्दर बदन।
सुदैव—पु० अच्छा भाग्य। अच्छा अवसर।
सुद्दी—स्त्री० पेटके अन्दरका वह मल जो सूख गया हो।
सुद्धि—स्त्री० शुद्धि। सुध, ख्याल, होश।
सुधंग—पु० बढ़िया ढंग।
सुध—वि० शुद्ध। स्त्री० सुधि, स्मरण, होश।
सुधन्वा—वि० धनुर्विद्याविशारद। पु० विष्णु।
सुधबुध—स्त्री० चेत, होश हवास।
सुधमना—वि० जो होशमें हो।
सुधरना—अक्रि० ठीक हो जाना, बन जाना, संशोधन होना, सँभलना।
सुधराई—स्त्री० सुधरने या सुधारनेकी क्रिया, सुधारनेकी मजदूरी।
सुधर्मा—स्त्री० देवसभा। पु० गृहस्थ। वि० जो अपने धर्मके मार्गपर डटा रहे।
सुधर्मी—वि० देखो 'सुधर्मा'।
सुधवाना—सक्रि० ठीक कराना। निश्चित कराना।
सुधांग—पु० चन्द्रमा।
सुधांशु—पु० चन्द्रमा।
सुधा—स्त्री० अमृत। जल। चूना ( राम० ९६ ), मधु, दूध, रस, विष, पृथ्वी इ०।
सुधाई—स्त्री० सीधापन ( रामा० १५२ )।
सुधाकर,-धर,-धाम—पु० चन्द्रमा।
सुधाधवल,-लित—वि० सफेद। चूना पुता हुआ।
सुधाधी—वि० अमृतके समान।
सुधाधौत, सुधासित—वि० चूना पुता हुआ।
सुधाना—सक्रि० ठीक कराना, निश्चित कराना। स्मरण दिलाना। पूछना ( विद्या० ११४ )।
सुधानिधि—पु० चन्द्रमा।
सुधामय—पु० राजप्रासाद। वि० अमृतसे भरा हुआ।
सुधामयूख,-योनि—पु० चन्द्रमा।
सुधार—पु० दोषोंका निकाला जाना, संस्कार।
सुधारक—पु० सुधारनेवाला, सुधारके लिए आन्दोलन करनेवाला।
सुधारना—सक्रि० ठीक करना, अच्छा करना, बना देना।
सुधारा—वि० भोला भाला, सरल।
सुधाश्रवा—पु० अमृतकी वर्षा करनेवाला।
सुधास्रवा—स्त्री० गलेके भीतरकी घण्टी।
सुधि—स्त्री० चेत, सरण, होश ( उदे० 'ठगोरी' )।
सुधी—स्त्री० अच्छी बुद्धि। वि० अच्छी बुद्धिवाला ( उदे० 'जपी' ), बुद्धिमान्।
सुनकिरवा—पु० एक तरहका कीड़ा।
सुनगुन—स्त्री० टोह।

सुनति—स्त्री० खतना 'सिवाजी न होतो तो सुनति होति सबकी ।' भू० १५९
सुनना—सक्रि० श्रवण करना, कान देना ।
सुनबहरी—स्त्री० एक रोग, श्लीपद ।
सुनयन—वि० सुन्दर नेत्रवाला । पु० हरिन ।
सुनरिया, सुनरी—स्त्री० सुन्दरी ( ग्राम० ४० ) ।
सुनवाई, सुनाई—स्त्री० किसी प्रार्थना इ० का सुना जाना ।
सुनवैया—पु० सुननेवाला । सुनानेवाला ।
सुनसान—पु० सन्नाटा । वि० शून्य, निर्जन, एकान्त ।
सुनहरा, सुनहला—वि० सोनेका, सोनेके रंगका ।
सुनहलापन—पु० सोनेके रंगका भाव ।
सुनहा—पु० कुत्ता 'अचिरज एक देखहु संसारा, सुनहा खेदै कुंजर असवारा ।' कबीर १३४ । दे० 'सोनहा' ।
सुनाना—सक्रि० किसीको सुननेमें प्रवृत्त करना । भला बुरा कहना ।
सुनाभ—पु० सुदर्शन चक्र ( विन० ४९०, ५४१ ) ।
सुनार—पु० सोने आदिका जेवर बनानेवाला ।
सुनारी—स्त्री० सुनारका काम । सुनारिन ।
सुनावनी—स्त्री० किसी सम्बन्धीकी मृत्युका समाचार आना । मृत्यु समाचार पानेपर किया गया स्नानादि कृत्य ।
सुनासीर—पु० इन्द्र । देवता ।
सुनिद्र—वि० सुपुप्त, सोया हुआ ।
सुनैया—पु० सुननेवाला ।
सुनोची—पु० घोडेका एक भेद ।
सुन्न—वि० संज्ञाहीन, निश्चेष्ट । पु० शून्य ।
सुन्नत—स्त्री० खतना ।
सुन्नसान—वि० निर्जन ।
सुन्ना—पु० शून्य ।
सुन्नी—पु० मुसलमानोंका एक भेद ।
सुपक,-क्व—वि० खूब पका हुआ ।
सुपच—पु० श्वपच, डोम ।
सुपत—वि० प्रतिष्ठित ।
सुपत्थ, सुपथ—पु० सुमार्ग । वि० समथल ।
सुपन, सुपना—पु० स्वप्न ।
सुपनाना—सक्रि० स्वप्न दिखाना ।
सुपर्ण—पु० सुन्दर पत्ता । पक्षी । घोड़ा । गरुड़ ।
सुपर्व—पु० बाँस । देवता । धूआँ । तीर । वि० सुन्दर जोड़ों या गाँठोंवाला ।
सुपात्र—पु० वह व्यक्ति जो किसी कार्यके लिए योग्य हो।
सुपार—वि० जिसे पार करना आसान हो ।
सुपारी—स्त्री० पूँगीफल ।
सुपास—पु० सुभीता, आराम ( रामा० ३७०,३०४ ) ।
सुपासी—वि० सुखप्रद । सुखी 'तुलसी बसि हर पुरी राम जपु जो भयो चहै सुपासी ।' विन० ९७
सुपुंसी—स्त्री० अच्छे पुरुषकी स्त्री ।
सुपुत्र,सुपूत—पु० अच्छा पुत्र ।
सुपुर्द—दे० 'सपुर्द' ।
सुपूती—स्त्री० वह स्त्री जिसका पुत्र अच्छा हो । सुपुत्र होनेका भाव ।
सुपेत, सुपेद, सुफेद—वि० श्वेत, सफेद ।
सुपेती—स्त्री० सफेदी ।
सुपेली—स्त्री० छोटा सूप ।
सुप्त—वि० सोया हुआ । अकर्मण्य ।
सुप्ति—स्त्री० नींद । विश्वास ।
सुप्रतिज्ञ—वि० अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहनेवाला ।
सुप्रतिष्ठ—वि० सम्मान्य । प्रसिद्ध ।
सुफल—वि० सफल, सिद्ध ।
सुफलकसुत—पु० सुफलकके पुत्र-अक्रूर ।
सुबरन—दे० 'सुवर्ण' (उदे० 'पश्यतोहर', विन०५८३)।
सुबस—अ० स्वेच्छासे, के कारण ( उदे०'ढोल' ) । वि० भलीभाँति बसा हुआ ( उदे० 'निटोल' ) ।
सुबह—स्त्री० सवेरा ।
सुबहान, सुभान—अ० वाहवाह । साधुवाद ।
सुबाल—वि० अबोध । पु० अच्छा बालक ।
सुबास—स्त्री० सुगंध । पु० अच्छा कपड़ा, अच्छा घर ।
सुबासना—सक्रि० सुगन्धित करना ।
सुबासिक, सुबासित—वि० सुगन्धित ।
सुबाहु—स्त्री० फौज ( दोहा० १४९ ) पु० एक राक्षस, इन्द्रने अपने वज्रके आघातसे जिसके सिरको पेटमें घुसेड़ दिया था और कृपाकर उसकी बाहुओंको दो-दो कोस लम्बी कर दिया था । श्रीरामचन्द्रने इस राक्षसको दण्डकारण्यमें मारा था । वि०सुन्दर भुजाओं वाला ।
सुबिस्ता—पु० सुभीता, सुविधा ।
सुबीता—पु० सुभीता ।
सुबुक—वि० सुन्दर । हलका । पु० दौड़ाक घोड़ा ।
सुबू—स्त्री० सवेरा ।

सुवृत—दे० 'सवृत'।
सुवोध—वि० अच्छी समझवाला। जो आसानीसे समझमें आजाय। पु० अच्छी समझ।
सुवह—स्त्री० सुबह, प्रातःकाल 'सुबहका सूरज हूँ मैं ही' कुकुरमुत्ता ६
सुभ—वि० मङ्गलकारी, सुन्दर। पु० मङ्गल।
सुभग—वि० सुन्दर ( उदे०'वासना' ), प्रिय (सू०८९)।
सुभगा—स्त्री० सुन्दरी, सुहागिन स्त्री, पतिकी प्यारी स्त्री।
सुभट—पु० अच्छा योद्धा।
सुभटवंत—वि० वीर, बहादुर।
सुभट्ट—पु० बड़ा भारी पण्डित। बड़ा योद्धा ( उदे० 'ठट्ट' )।
सुभद्रा—स्त्री० श्रीकृष्णकी बहिन और अर्जुनकी पत्नी।
सुभर—वि० शुभ्र, सफेद, उज्ज्वल 'मान सरोवर सुभर जल हंसा केलि कराहिं।' कबीर १५। खूब भरा हुआ ( प०४६ ), हृष्टपुष्ट 'सिर औ पायँ सुभर गिउ छोटी।' प० २२९
सुभा—स्त्री० हद। शोभा। छवि। सुधा।
सुभाइ, सुभाउ—पु० स्वभाव ( उदे० 'जानि', 'वर' )। क्रिवि० स्वभावत।
सुभागी—वि० भाग्यवान्।
सुभाना—अक्रि० शोभा पाना।
सुभाय,सुभाव—पु० स्वभाव ( उदे० 'प्रसंसना' )।
सुभायक, सुभाविक—वि० स्वाभाविक (रत्ना०२१९)।
सुभाषित—वि० अच्छी तरह कहा हुआ। पु० अच्छे ढगसे कही हुई बात।
सुभाषी—वि० मधुर वाणी बोलनेवाला, मिष्टभाषी।
सुभिक्ष—पु० सुकाल।
सुभी—वि० स्त्री० शुभ कल्याणकारिणी।
सुभीता—पु० आराम, अवकाश।
सुभौटी—स्त्री० शोभा।
सुभ्र—वि० शुभ्र, उज्ज्वल।
सुभ्रू—वि० सुन्दर भौंहोंवाला। स्त्री० स्त्री।
सुमंगली—स्त्री० विवाह सम्बन्धी एक नेग।
सुमंत्र—पु० दसरथजीके एक मन्त्रीका नाम। अर्थमन्त्री।
सुमंथन—पु० मन्दराचल।
सुम—पु० खुर। पु० सुमन 'गुरु समीप सुम दोन दोउ, धरि पद कियो प्रनाम।' रघु० १०५, ( १६ भी )।
सुमति—स्त्री० सुन्दर बुद्धि। सारिका। मेल। सगर पत्नीका नाम। वि० अच्छी बुद्धिवाला।
सुमदुम—वि० तुंदिल। मोटा।
सुमधुर—वि० बहुत सुहावना, खूब मीठा।
सुमन, सुमनस—पु० फूल, देवता। वि० उत्तम मनवाला।
सुमनचाप—पु० कामदेव।
सुमनराज—पु० इन्द्र ( रत्ना० ६८ )।
सुमना—स्त्री० चमेली, मालती ( मति० २३० )।
सुमनित—वि० सुमणिजटित।
सुमरना, सुमिरना—सक्रि० स्मरण करना ( उदे० 'दिच्छित', 'बपुरा' ), जपना।
सुमरनी—स्त्री० नाम जपनेकी माला।
सुमानस—वि० अच्छे मनवाला, उदार, सहृदय।
सुमार—वि० चुना हुआ ( कविता० १९४ )।
सुमार्ग—पु० अच्छा रास्ता, सत्पथ।
सुमालिनी—स्त्री० एक वर्णवृत्त।
सुमाली—पु० रावणके नानाका नाम।
सुमित्रा—स्त्री० लक्ष्मणजननी।—नंदन—पु० लक्ष्मण, शत्रुघ्न।
सुमिरन—पु० स्मरण ( उदे० 'मिरंत' )।
सुमिरनी—दे० 'सुमरनी'।
सुमुख—वि० प्रसन्न, अनुकूल, सुन्दर। पु० शिव। गणेशजी ( कविप्रि० १ )। एक राजा। एक बन्दर। एक असुर।
सुमुखी—स्त्री० सुन्दर मुखवाली स्त्री।
सुमृति—दे० 'स्मृति'।
सुमेध, सुमेधा—वि० मेधावी, प्रतिभावान्।
सुमेर, सुमेरु—पु० एक पर्वत।
सुयं—दे० 'स्वयम्' ( कबीर १३० )।
सुयश—पु० नामवरी, सुख्याति। वि० नामवर।
सुयोग—पु० अच्छा अवसर।
सुयोग्य—वि० क़ाबिल।
सुयोधन—पु० दुर्योधनका एक नाम।
सुरंग—स्त्री० ज़मीनके भीतरका मार्ग। पु० अच्छा रंग, ईंगुर, घोड़ेका एक भेद। वि० अच्छे रंगवाला, लाल ( उदे० 'ताम' 'बकौरी' ), सुन्दर, स्वच्छ।
सुर—पु० देवता, विबुध। ध्वनि, राग।
सुरकंत,सुरकेतु—पु० इन्द्र।
सुरकना—सक्रि० नाकसे या नलीसे खींचकर पीना,

फुरकना 'दूरहि सों सुरकन चहत किरननि नली बनाइ।' [गुलाब ११३

सुरक्षित—वि० अच्छी तरह रक्षित।

सुरख—वि० सुर्ख, लाल।

सुरखाब—पु० चकवा पक्षी।

सुरखाबका पर लगाना—विशेषता या अनोखापन होना।

सुरखी—स्त्री० ललाई। ईंटका चूरा।

सुरग—पु० स्वर्ग।

सुरगाय,-गैया—स्त्री० कामधेनु।

सुरगिरि—पु० सुमेरु पर्वत।

सुरगुरु—पु० बृहस्पति।

सुरचाप—पु० इन्द्र-धनुष।

सुरजन—वि० चतुर, भला। पु० सुर-समूह।

सुरझना—अक्रि० गुत्थी इ० का खुलना, हल होना। ( उदे० 'ऊभाबाई' )।

सुरझाना, सुरझावना—सक्रि० खोलना, हल करना

सुरटीप—स्त्री० स्वरालाप। [ उदे० 'चुटिया' )।

सुरत—स्त्री० स्मरण, सुधि, ध्यान। रति, केलि ( उदे० 'पटोरी' ) चित्तवृत्ति-प्रवाह ( सन्तमत )।

सुरतरंगिणी,-नी—स्त्री० गङ्गा।

सुरतरु,-द्रुम -पादप—पु० कल्पद्रुम।

सुरता—पु० ध्यानी, समाधि लगानेवाला। श्रोता 'कथता बकता सुरता सोई, आप विचारै सो ज्ञानी होई।' कबीर १०२। स्त्री० देवत्व, देववर्ग। ध्यान, होश।

सुरतान—पु० सुलतान।

सुरति—स्त्री० याद, ख्याल ( उदे० 'चोवा' )। ध्यान चित्तवृत्ति प्रवाह, रति, 'संभोग'।

सुरतिवंत—वि० कामेच्छासे उद्विग्न।

सुरती—स्त्री० खानेकी तम्बाकू।

सुरत्न—वि० सर्वश्रेष्ठ। पु० सोना, लाल इ०।

सुरत्व—पु० देवत्व।

सुरत्राण,-त्राता—पु० विष्णु। इन्द्र।

सुरदार—वि० सुरीले स्वरवाला।

सुरदोषी—पु० सुरद्वेषी, देवशत्रु ( उदे० 'पोषणा' )।

सुरद्विप—पु० असुर। राहु।

सुरधनु—पु० इन्द्र-धनुष।

सुरधाम—पु० स्वर्ग।

सुरधुनी—स्त्री० आकाशगङ्गा, देव-सरित्।

सुरधेनु—स्त्री० कामधेनु।

सुरनाथ,-नायक—पु० इन्द्र।

सुरनाह,-प,-पति,-पाल,-पालक—पु० इन्द्र।

सुरपादप—पु० कल्पवृक्ष।

सुरपुर,-भवन—पु० अमरावती।

सुरवधू—स्त्री० देवाङ्गना, देवताकी स्त्री।

सुरबहार—पु० एक तरहका बाजा।

सुरभंग—पु० प्रेम, भय आदिके कारण स्वरमें विकार आना।

सुरभान—पु० इन्द्र। सूर्य।

सुरभि—स्त्री० गाय ( उदे० 'बछेरू' ), सुगन्ध, पृथ्वी। पु० वसन्त, चैत्रमास, कदम्ब, सुवर्ण, बकुल। वि० [ सुगन्धित, सुन्दर।

सुरभित—वि० सुगन्धयुक्त।

सुरभिता—स्त्री० सुगन्धि।

सुरभिषक—पु० अश्विनीकुमार ( कविप्रि० १०० )।

सुरभी—स्त्री० गाय। चमरी गाय ( कविप्रि० १२५ )। [ सुगन्धि। चन्दन।

सुरभीपुर—पु० गो-लोक।

सुरभूप,-मौर—पु० इन्द्र। विष्णु।

सुरभोग—पु० सुधा, अमृत।

सुरमई, सुरमै—वि० सुरमेके रङ्गका। पु० एक रङ्ग।

सुरमणि—पु० चिन्तामणि।

सुरमा—पु० नेत्रोंमें लगानेका एक चूर्ण।

सुरमादानी—स्त्री० सुरमा रखनेका पात्र।

सुरम्य—वि० मनोहर, सुन्दर।

सुरराइ,-राज,-राय,-राव,—पु० इन्द्र। विष्णु।

सुररिपु—पु० असुर, राक्षस।

सुरली—स्त्री० सुन्दर क्रीड़ा।

सुरलोक,-वेश्म—पु० स्वर्ग।

सुरवा—पु० हवनमें घी डालनेका पात्र।

सुरविटप,-वृक्ष—पु० कल्पद्रुम।

सुरवैद्य—पु० अश्विनीकुमार।

सुरस—वि० सुस्वादु, सुन्दर, सरस।

सुरसती—स्त्री० सरस्वती।

सुरसर—पु० मान सरोवर।

सुरसर-सुता—स्त्री० सरयू नदी।

सुरसरि, सुरसरित्—स्त्री० गङ्गा।

सुरसा—स्त्री० साँपोंकी माता। एक राक्षसी। एक अप्सरा। जूही, तुलसी, सतावर, सलई, भटकटैया।

सुरसाल—वि० देवताओंका पीड़क।

सुरसाश्व—पु० सुरनाथ, इन्द्र, विष्णु।

सुरसिंधु—पु० गङ्गानदी ।
सुरसुंदरी—स्त्री० देवकन्या । अप्सरा । दुर्गा ।
सुरसुरभी—स्त्री० कामधेनु ।
सुरसुराना—अक्रि० भीतर ही भीतर रेंगना । खुजलाना ।
सुरसुराहट, सुरसुरी—स्त्री० कीड़ों आदिका रेंगना, [ खुजलाहट, गुदगुदी ।
सुरसैयाँ—पु० इन्द्र ।
सुरहना—अक्रि० भर आना 'सुरह्यौ घाइ देहबल आयौ ।'
सुरहरा—वि० 'सुरसुर' शब्दवाला । [छत्र० ५३ ।
सुरहिन, सुरही—स्त्री० सुरभि, गाय ( कबीर १५६ ) । चमरी गाय, सुरागाय, पियहु सुरही गाइके दूध ।' ग्राम० १९४, ( बुन्दे० ८१ ) ।
सुरांगना—स्त्री० देव स्त्री, देवाङ्गना, अप्सरा ।
सुरा—स्त्री० शराब ( उर्दे० 'गिजा' ) ।
सुराई—स्त्री० सूरता ( रामा० १४८ ) ।
सुराकार—पु० शराब बनानेवाला ।
सुराख—पु० छिद्र । टोह ।
सुराग—पु० पता, टोह । अच्छा राग, दृढ़ प्रेम ।
सुरागाय—स्त्री० एक गाय जिसकी पूँछके बालोंसे चँवर बनता है ।
सुरागार—पु० देवमन्दिर । शराब बिकनेकी जगह ।
सुरागृह—पु० मद्य बिकनेका स्थान, कलवरिया ।
सुराज, सुराज्य—पु० अच्छा राज्य । स्वराज्य ।
सुराजीवी—पु० कलाल ।
सुराप, सुरापी—वि० शराब पीनेवाला ।
सुरापान—पु० मदिरा पीना ।
सुरारि—पु० दैत्य राक्षस । रावण ।
सुरालय—पु० सुमेरु पर्वत, मन्दिर, स्वर्ग । मद्यशाला ।
सुराही—स्त्री० एक तरहका लम्बे मुँहका पात्र ।
सुराहीदार—वि० सुराहीकी शकलका ।
सुरी—स्त्री० देवाङ्गना, सुरपत्नी 'नरी किन्नरी आसुरी सुरीरहत सिर नाय । कविप्रि० १२
सुरीला—वि० मीठे स्वरवाला ।
सुरुख—वि० सुर्ख, लाल । प्रसन्न ।
सुरुखुरू—वि० तेजस्वी । नामवर ।
सुरुचि—स्त्री० अच्छी रुचि । वि० अच्छी रुचिवाला ।
सुरुज—पु० सूर्य ( उर्दे० 'दिपाना' ) । वि० बीमार ।
सुरुवा—पु० शोरवा, रसा ।
सुरूप—पु० स्वरूप । वि० अच्छे रूपवाला ।
सुरेंद्र—पु० सुरपति, इन्द्र ।
सुरेथ—पु० सूँस नामक जलजन्तु ।
सुरेश, सुरेस, सुरेश्वर—पु० सुरपति, इन्द्र ।
सुरैत, सुरैतिन—स्त्री० रखनी, रखैल ।
सुरोचि—वि० सुन्दर, कान्तिमान् ।
सुर्ख—वि० लाल ।
सुर्खरू—वि० जिसकी शकलपर तेज हो । आदरणीय ।
सुर्खरूई—स्त्री० इज्जत । ख्याति । शकलपर तेजका होना ।
सुर्खाब—पु० चक्रवाक । देखो 'सुरख़ाब' ।
सुर्खी—स्त्री० देखो 'सुरखी' ।
सुर्ता—वि० बुद्धिमान्, समझदार ।
सुर्ती—स्त्री० तम्बाकूका पत्ता ।
सुर्मा—पु० एक खनिज धातु जिसका चूर्ण आँखमें लगाया [ जाता है ।
सुलक्षण—दे० 'सुलच्छन' ।
सुलग—अ० नज़दीक ।
सुलगना—अक्रि० परचना, प्रदीप्त होना ( रहीम २८) ।
सुलगाना—सक्रि० प्रज्वलित करना ।
सुलच्छन—पु० शुभ लक्षण । वि० अच्छे लक्षणोंवाला ।
सुलछ—वि० देखनेमें सुन्दर । [ सुलझनेकी क्रिया ।
सुलझन—स्त्री०, सुलझाव—पु० उलझनका दूर होना, सुलझनेकी क्रिया ।
सुलझना—अक्रि० खुलना, निवरना, हल होना ।
सुलझाना—सक्रि० निबेरना, हल करना ।
सुलटा—वि० सीधा ।
सुलतान—पु० बादशाह ।
सुलप—वि० स्वल्प, छोटा, किञ्चित् ।
सुलफ—वि० लफनेवाला, कोमल ।
सुलफा—पु० सूखी तम्बाकू, चरस ।
सुलफेबाज—वि० गाँजा इ० पीनेवाला ।
सुलभ—वि० सहज-प्राप्य, सुगम, सरल ।
सुलभ्य—वि० सहजमें मिलनेवाला, सुलभ, सुगम ।
सुललित—वि० बहुत ही सुन्दर ।
सुलह—स्त्री० मेल, मैत्री, सन्धि ।
सुलहनामा—पु० वह पत्र जिसपर दो लड़नेवा[ले] परस्पर समझौतेकी शर्तें लिखी गयी हों ।
सुलाखना—सक्रि० सूराख करना ( कविता० २०९ ) ।
सुलागना—अक्रि० प्रज्वलित होना ।
सुलाना—सक्रि० शयन कराना ।
सुलाह—पु० सुलह, मेल ( सू० १६४ ) ।

सुलुगना—दे० 'सुलगना' ( उदे० 'दगधना' )।
सुलूक—पु० व्यवहार।
सुलेखक—पु० बढ़िया लेख लिखनेवाला।
सुलेमानी—पु० एक पत्थर। एक तरहका घोड़ा।...एक रङ्ग ( पूर्ण० १०८ )।
सुलोचन—पु० हरिन। चकोर। वि० सुन्दर नेत्रोंवाला।
सुलोचना—स्त्री० मेघनादकी स्त्री। एक अप्सरा।
सुलोचनी—वि० स्त्री० सुन्दर नेत्रोंवाली।
सुव—पु० पुत्र ( भू० २३, २७ )।
सुवक्त—वि० जिसका मुख सुंदर हो। पु० शिव।
सुवटा—पु० सुआ, तोता।
सुवदना—स्त्री० सुंदरी स्त्री।
सुवन—पु० बेटा। देवता। पंडित। पुष्प। सूर्य। चन्द्रमा। वि० अच्छे मनवाला।
सुवना—पु० तोता, सुग्गा ( उदे० 'टेंट' )।
सुवनारा—पु० पुत्र।
सुवरण, सुवर्ण—पु० सोना, धन, अच्छी जाति या अच्छा रंग।
सुवर्णकार—पु० सुनार।
सुवस—वि० जो अपने अधिकारमें हो।
सुवा—पु० तोता।
सुवादी—पु० स्वाद लेनेवाला, चखनेवाला (सू० १३४)।
सुवाना—सक्रि० शयन कराना।
सुवार—पु० सूपकार, रसोइया ( पामं० ४२ )।
सुवास—देखो 'सुबास' ( उदे० 'बटना' )।
सुवासित—वि० सुगन्धमय।
सुविचारित—वि० अच्छी तरह विचार किया हुआ।
सुवासिन—देखो 'सुआसिन' ( पामं० ४१ )।
सुविधा—स्त्री० आराम, सुभीता, सुपास।
सुवीर्य—वि० शक्तिसम्पन्न। बहुत बड़ा वीर। पु० बेर।
सुवेश,-स—पु० अच्छा वेश। वि० सुन्दर वेशवाला, सुन्दर।
सुवैया—पु० सोनेवाला।
सुव्यवस्थित—वि० जिसका प्रबन्ध उत्तमरूपसे किया गया हो।
सुशिक्षित—वि० जिसने अच्छी शिक्षा पायी हो।
सुशिखा—स्त्री० मोर या मुर्गेकी शिखा।
सुशील—वि० अच्छे शीलवाला, विनम्र।
सुशोभित—वि० बहुत अधिक शोभायमान।
सुश्रुत—वि० अच्छी तरह सुना हुआ। विख्यात। पु० चिकित्साशास्त्रके एक आचार्य। चिकित्सा शास्त्र।
सुश्री—वि० शोभावान्, कान्तिमान्, धनवान्।
सुश्रूखा, सुश्रूषा—स्त्री० शुश्रूषा, सेवा।
सुश्लोक—वि० प्रसिद्ध, धर्मात्मा।
सुष—पु० सुख।
सुषम—वि० अति सुन्दर।
सुषमना, सुषमनि—स्त्री० सुषुम्ना नाड़ी।
सुषमा—स्त्री० निराली छटा, अपूर्व शोभा।
सुषमाशाली—वि० सौंदर्यपूर्ण।
सुषमित—वि० शोभा युक्त।
सुषुप्त—वि० प्रगाढ़ निद्रामें सोया हुआ। स्त्री० प्रगाढ़ निद्रा, सुषुप्ति।
सुषुप्ति—स्त्री० प्रगाढ़ निद्रा, चित्तकी एक अवस्था।
सुषुम्ना, सुष्मना—स्त्री० एक नाड़ी।
सुषेण—पु० लङ्काका एक वैद्य। एक यक्ष। एक गन्धर्व।
सुषोपति, सुषोप्ति—स्त्री० सुषुप्ति।
सुष्ट—वि० भला, नेक।
सुष्ठु—अ० अच्छी तरह, ठीक ठीक।
सुष्ठुता—स्त्री०,-त्व—पु० सुन्दरता, भलाई, अच्छाई।
सुसंग—पु०,-ति—स्त्री० सत्संग, अच्छी सोहबत।
सुस—स्त्री० स्वसा, बहन।
सुसकना—अक्रि० सिसकी लेना।
सुसज्जित—वि० अच्छी तरह सजाया हुआ।
सुसताना, सुस्ताना—अक्रि० श्रम दूर करना, आराम करना।
सुसती—स्त्री० आलस्य, ढिलाई।
सुसमय—पु० सुकाल।
सुसमुझि—वि० अच्छी समझवाला।
सुसर, सुसरा—पु० ससुर।
सुसरार,-रारि,-राल—स्त्री० ससुरका घर।
सुसा—स्त्री० स्वसा, बहिन।
सुसाध्य—वि० जो आसानीसे किया जा सके।
सुसाना—अक्रि० सिसकी लेना।
सुसुकना—अक्रि० सिसकना।
सुसुपि—स्त्री० सुषुप्ति।
सुस्त—वि० आलसी, मन्द गतिवाला, निष्प्रभ।
सुस्ती—स्त्री० आलस्य, ढिलाई।
सुस्तैन—पु० आरम्भमें होनेवाला स्वस्ति-पाठ या मङ्गल कार्य ( 'स्वस्त्ययन' )।

सुस्थ—वि० स्वस्थ, प्रसन्न ।
सुस्मित—वि० हँसमुख ।
सुस्वादु—वि० अति स्वादिष्ट, मधुर ।
सुहंग, सुहँगा—वि० सस्ता ।
सुहंगम—वि० सरल सुगम ।
सुहटा—वि० मनोहर, सुन्दर ।
सुहबत—स्त्री० सोहबत, साथ ।
सुहराना सुहलाना—सक्रि० देखो 'सोहराना' ।
सुहल—पु० सुहेल नामक तारा जो दूजके चन्द्रमाके साथ देख पड़ता है ( प० १४२ ) ।
सुहव—पु०, सुहवी—स्त्री० 'सूहा' राग ।
सुहाग—पु० सौभाग्य, अहिवात ।
सुहागन—देखो 'सुहागिन' ।
सुहागा—पु० एक क्षार ।
सुहागिन,-गिनि, सुहागिनी,-गिल—स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री ।
सुहाता—वि० सहने योग्य ।
सुहाना—अक्रि० अच्छा लगना, रुचना ( उदे० 'क्षर' ), फबना ( उदे० 'जूमना' ) । वि० सुहावना ।
सुहाया—वि० भला, सुन्दर, प्रिय 'जामवन्तके वचन सुहाये ।' रामा० ४१४
सुहारी, सुहाली—स्त्री० पुड़ी, लुचुई ।
सुहाल—पु० एक नमकीन पकवान ।
सुहावता,-वन,-वना—वि० जो अच्छा लगे, रुचिकर, [ मनोहर, सुन्दर ।
सुहावा—वि० सुन्दर, अच्छा, प्रिय ।
सुहासी सुहासी—वि० मधुर हास्ययुक्त । मधुर मुसकानवाला ।
सुहृत्, सुहृद्—पु० मित्र ।
सुहृदता—स्त्री० मित्रता ।
सुहेल—पु० एक शुभ तारा ( प० ८२ ) ।
सुहेलरा—वि० सुन्दर, प्रिय, सुखद ।
सुहेला—पु० मङ्गल गान । पु० प्रियजन, मित्र ( बीजक २२० ) । वि० सुन्दर ।
सूँ—अ० से ।
सूँघना—सक्रि० बास लेना ।
सूँघा—पु० सूँघकर जमीनके भीतरका खजाना बतलानेवाला । भेदिया ।
सूँड, सूँडि—स्त्री० हाथीकी शुंड ( उदे० 'तरनी' ) ।
सूँडी—स्त्री० एक कीड़ा ।
सूँस—पु० एक जलजन्तु ।

सूँह—क्रिवि० सामने ।
सूअर—पु० शूकर ।
सूआ—पु० खूब मोटी सुई । तोता, कीर (उदे० 'थोथरा') ।
सूई—स्त्री० कपड़ा सीनेकी पिन, सूची, घड़ी इ० का काँटा ।
सूक—पु० शुक्र 'उआ सूक जस नखतन माहाँ ।' प० ९ । तीर, बाण, हवा, पक्ष ।
सूकना—अक्रि० सूखना, शुष्क होना ( उदे० 'मंजार') ।
सूकर—पु० सूअर ।
सूका—वि० सूखा । पु० चवन्नी ।
सूक्त—स्त्री० ऋचाओंका समूह । वि० अच्छी तरह कहा हुआ ।
सूक्ति—स्त्री० अच्छी उक्ति, श्रेष्ठ कथन ।
सूक्षम, सूक्ष्म—वि० थोड़ा, छोटा, महीन ( उदे० 'दाझना' ) । पु० एक अलंकार, सूक्ष्म कृत्य परको जहाँ देखि करै कछु काज ।' परमाणु
सूक्ष्मदर्शकयंत्र—पु० खुर्दबीन, अणुवीक्षण यंत्र ।
सूक्ष्मदर्शी—वि० गूढ़ विषयोंको सोचनेवाला । प्रखर बुद्धिवाला ।
सूक्ष्मा—स्त्री० यूथिका, मूसली, छोटी इलायची, बालू ।
सूख—वि० शुष्क ।
सूखना—अक्रि० शुष्क या जलहीन होना, दुबला होना, कड़ा होना ।
सूखा—पु० अवर्षण 'ज्यों सरितन सूखा परे कुवाँ खनावत लोग ।' रहीम १५ । सूखी जगह । वि० शुष्क, नीरस, निस्तेज, कोरा ।
सूघर—वि० सुघड़, चतुर ( स्त्री ) ।
सूचक—वि० बतानेवाला, बोधक, ज्ञापक ।
सूचन—पु० सूचना—स्त्री० इत्तिला, विज्ञप्ति । सक्रि० सूचित करना 'सूचत कटि केसरी, गति मराल ।' विन० ८५
सूचनापत्र—पु० इश्तिहार, विज्ञप्ति ।
सूचा—वि० शुद्ध, स्वच्छ, पवित्र (कबीर १७३) । स्त्री० सूचना ।
सूचि—वि० शुचि, पवित्र । स्त्री० सूची, सूई ।
सूचित—वि० ज्ञापित ।
सूची—स्त्री० तालिका । सूई ।
सूचीपत्र—पु० तालिका, कैटलाग ।
सूच्छम, सूछम, सूछिम—वि० सूक्ष्म, थोड़ा, छोटा, बारीक ( उदे० 'चिलकना' ) ।
सूच्य—वि० सूचित करने योग्य ।
सूज—स्त्री० सूई ( कविप्रि० ५० ) ।

सूजन—स्त्री० शोथ ।
सूजना—अक्रि० फूल जाना, शोथ होना,मोटा हो जाना।
सूजनी—स्त्री० कई परतोंको एकमें सीकर बनायी गयी बिछावनकी चादर ।
सूजा—पु० सूआ, मोटी सूई ।
सूजाक—पु० एक मूत्रेन्द्रिय रोग ।
सूजी—स्त्री० सूई । मोटा आटा । पु० दरजी ।
सूझ—स्त्री० सूझनेका भाव । अनोखी कल्पना ।
सूझना—अक्रि० देख पड़ना, दृष्टिमें या ध्यानमें आना
सूझबूझ—स्त्री० समझ । [ (उदे०'छाकना','दाउँ') ।
सूत—पु० तागा, डोरी, उपाय (क० वच० ५२) । भार, सारथी, पौराणिक, बढ़ई ।
सूतक—पु० बच्चेके जन्मके बादका अशौच । मृत्युके
सूतकगेह—पु० प्रसवगृह । [ बादका अशौच ।
सूतका—स्त्री० जच्चा ।
सूतकी—वि० सन्तानोत्पत्ति या मृत्युके कारण जिसे
सूतता—स्त्री० सारथ्य । [ अशौच हो ।
सूतधार—पु० बढ़ई ।
सूतना—अक्रि० सोना, नींद लेना (रामा० ४८१) ।
सूतपुत्र—पु० कर्ण, कीचक ।
सूतरी—स्त्री० पतली रस्सी (अ० २३) ।
सूता—पु० सूत । स्त्री० जच्चा ।
सूति—स्त्री० पैदाइश । पैदावार ।
सूतिका—स्त्री० जच्चा ।
सूतिकागार, सूतिकागृह—पु० प्रसवगृह, सौरी ।
सूतिग—दे० सूतक (कविता० २४३) ।
सूती—स्त्री० शुक्ति, सीपी । वि० सूतका बना ।
सूत्कार—पु० सिसकारी ।
सूत्र—पु० सूत, तागा, पता, संक्षिप्त वचन ।
सूत्रक—पु० सूत, सेंवई ।
सूत्रकर्म—पु० बढ़ई या राजका काम । [ प्रणेता ।
सूत्रकार—पु० बढ़ई, राज । मकड़ी । जुलाहा । सूत्र-
सूत्रघर—पु० बढ़ई । सूत्रधार । जुलाहा (ग्राम्या० ८८)
सूत्रधार—पु० नाटकका मुखिया । बढ़ई ।
सूत्रपात—पु० प्रारम्भ ।
सूत्रयी—वि० सूत्र रचयिता ।
सूत्रात्मा—पु० जीवात्मा ।
सूत्राधार—पु० सूत्रधार ।

सूथन, सूथना—पु० पायजामा ।
सूद—पु० ब्याज,लाभ । रसोइया । शूद्र (उदे० 'दूँद') ।
सूदक—पु० नष्ट करनेवाला ।
सूदखोर—पु० अधिक ब्याज लेनेवाला मनुष्य ।
सूदन—पु० हनन । वि० हन्ता, विनाशक ।
सूदना—सक्रि० नष्ट करना, हनन करना ।
सूदशास्त्र—पु० पाकविद्या ।
सूदित—वि० नष्ट किया हुआ । घायल । निहत ।
सूद्र—पु० शूद्र ।
सूध—स्त्री० सीध । वि० शुद्ध, सीधा, साधु, निष्कपट ।
सूधना—अक्रि० सफल होना, ठीक या सत्य होना ।
सूधरा, सूधा—वि० सीधा, छलहीन,उलटा नहीं-चित । भोला, सीधा (विन० ५७४, ३७३) ।
सूधे—क्रिवि०सिधाईके साथ (उदे०'उपटाना','बतराना')
सूत—पु० शून्य, निर्जन स्थान । वि० सूना,खाली,हीन ।
सूनापन—पु० एकान्त, अकेलापन ।
सूनसान—वि० निर्जन ।
सूना—वि० शून्य, निर्जन (उदे० 'ढँढोरना') चेतना-हीन । पु० एकान्त (उदे० 'आँक') ।
सूनिक, सूनी—पु० व्याध, मांस-विक्रेता ।
सूनु—पु० पुत्र ।
सूनू—स्त्री० पुत्री । [ शिष्ट, दयालु ।
सूनृत—वि० सत्य और मधुर (वाणी), प्रिय, शुभ,
सूनृता—वि० स्त्री० सच्ची और मीठी वाणी ।
सूप—पु० पछोरनेका पात्र, छाज (उदे० 'पछोरना') । पकायी हुई दाल । रसा । रसोइया ।
सूपक, सूपकर्त्ता,-कार,-सूपकारी—पु० रसोइया ।
सूपच—पु० श्वपच ।
सूपशास्त्र—पु० पाकविद्या ।
सूपा—पु० अनाज पछोरनेका पात्र । [ कपड़ा ।
सूफ़—पु० ऊन । देशी रोशनाईवाली दावातमें डालनेका
सूफी—वि० पाक । निर्दोष । पु० मुसलमानोंका एक धार्मिक सम्प्रदाय ।
सूबा—पु० प्रान्त । प्रान्ताधिकारी (छत्र० ५४, भू० १२४) ।
सूबेदार—पु० प्रान्तका शासक।
सूबेदारी—स्त्री० सूबेदारका काम या पद ।
सूभर—वि० शुभ्र, उज्ज्वल । सफेद ।
सूम—वि० कृपण । सूमति = कृपणता (उदे० 'तेता') ।

सूर—पु० अन्धा मनुष्य, सूरदास, वीर ( उदे० 'बताइ' ), सूर्य ( 'सूर सूर तुलसी ससी' ) । शूल ।
सूरज—पु० सूर्य ( उदे० 'हुँगना' )। सूर्यपुत्र सुग्रीव, ( कविप्रि० २७७ ), शनि । वीर-पुत्र । सूरदास ।
सूरज-तनी—स्त्री० यमुनाजी ।
सूरजमुखी—पु० एक फूल या उसका पेड़ ।
सूरजसुत—पु० सुग्रीव ।
सूरण—पु० ओल ।
सूरत—स्त्री० आकृति, शोभा । सुरति । हालत, उपाय ।
सूरता, सूरताई—स्त्री० वीरता । [ वि० दयालु ।
सूरति—स्त्री० सुरति, स्मरण । शङ्क ।
सूरन—पु० जमींकन्द, ओल ।
सूरपनखा—स्त्री० रावणकी बहिन शूर्पणखा ।
सूर-पुत्र—पु० सुग्रीव ।
सूरवीर—पु० वीर पुरुष ।
सूरमा—पु० योद्धा ।
सूरमुखी-मनि—पु० सूर्यकान्त मणि ।
सूरवाँ—पु० सूरमा । योद्धा ।
सूरसावंत—पु० सरदार । युद्धसचिव ।
सूरसुत—स्त्री० सुग्रीव । यम । शनि ।
सूरसुता—स्त्री० यमुना ।
सूरसेनपुर—पु० मथुराका एक नाम ।
सूरा—पु० अन्धा मनुष्य । एक कीड़ा ।
सूराख—पु० छिद्र ।
सूरी—स्त्री० शूली ( प० १२० ) काँटा, बरछा ।
सूरुज, सूर्य—पु० रवि । बारहकी संख्या ।
सूर्यकांत—पु० एक मणि ।
सूर्यपत्नी—स्त्री० छाया ।
सूर्य-पुत्र—पु० सुग्रीव, कर्ण, शनि, यम, अश्विनीकुमार ।
सूर्यसुत—दे० 'सूर्यपुत्र' ।
सूर्या—स्त्री० सूर्यपत्नी । [ सन्ध्याकाल ।
सूर्यास्त—पु० सूर्यका डूबना, सूर्यके डूबनेका समय,
सूर्योदय—पु० सूर्यका उदय होना, सवेरा ।
सूर्योपासक—पु० सूर्यपूजक ।
सूल—पु० काँटा, पीड़ा ( उदे० 'ताई' ), भाला ।
सूलधर, सूलपानि—पु० शिवजी ।
सूलना—सक्रि० छेदना, दुःख देना, सालना 'मधुकर कहत सँदेशो सूलहु । भ्र० १०१ । अक्रि० व्यथा पाना, दुःखित होना ।
सूली—स्त्री० प्राणदण्ड विधि-विशेष, फाँसी । पु० शङ्कर ।
सूवना—पु० सुग्गा, तोता । अक्रि० स्रवित होना, बहना ।
सूवा—पु० सुआ, तोता । सूआ, सूजा ।
सूस, सूसि—पु० मगरके सदृश एक जलचर ।
सूसमार—पु० सूँस नामक जलजन्तु ।
सूहा—वि० लाल रंगका 'सावनी तीज सुहावनीको तजि सूहैं दुकूल सबै सुख साधा ।' पद्माकर(गुलाब १४४)। पु० एक तरहका लाल रंग ।
सूही—स्त्री० लालिमा ( पूर्ण ९९ ) ।
सृंखला—स्त्री० देखो 'शृङ्खला' ।
सृंग—पु० सींग ।
सृकंडू—स्त्री० खुजली ।
सृक, सृग—पु० माला । बाण, शूल, बरछा ।
सृकाल, सृगाल—पु० शृगाल, सिआर ।
सृजक, सृजनहार—पु० रचनेवाला, बनानेवाला ।
सृजनशीलता—स्त्री० रचनाकी शक्ति ।
सृजना—सक्रि० रचना, उत्पन्न करना (उदे० 'डासना') ।
सृत—वि० खिसका हुआ । गया हुआ ।
सृति—स्त्री० आवागमन, रास्ता, जन्म ।
सृष्ट—वि० निर्मित, उत्पन्न, निश्चित, अलंकृत ।
सृष्टि—स्त्री० रचना, दुनिया, संसार, प्रकृति । समूह 'कुम्हलाई पकजकली सृष्टि' युगांत ४१ ।
सृष्टिकर्त्ता—पु० सृष्टि बनानेवाला, ब्रह्मा, परमेश्वर ।
सृष्टिविज्ञान—पु० सृष्टिकी रचना आदिपर विचार करने [ वाला शास्त्र ।
सेंक—स्त्री० सेंकनेकी क्रिया ।
सेंकना—सक्रि० आँच दिखाना, गरम करना, भूँजना ।
सेंट—स्त्री० दूधकी धार ( बु० वैभव ७४ ) ।
सेंत—स्त्री० मूल्य न लगना, खर्च न होना । सेंतका = बिना दामोंका, प्रचुर । सेंतमें = मुफ्तमें ।
सेंतना—सक्रि० हिफाजतसे रखना, इकट्ठा करना, बटोरना ।
सेंतमेंत—क्रिवि० मुफ्तमें, व्यर्थ ही ।
सेंती—दे० 'सेंत' । प्रत्यय-से (उदे० 'अहा' 'डासना') ।
सेंथी—स्त्री० शक्ति, बरछी ।
सेंदुर—पु० सिन्दूर ( उदे० 'पूरना', 'आल' ) ।
सेंदुरिया—वि० सिन्दूरके रंगका । पु० एक पौधा ।
सेंदुरी—स्त्री० लाल रंगकी गाय । वि० सिन्दूरके रंगका ।
सेंद्रिय—वि० इन्द्रिययुक्त । सजीव । जिसमें पुंसत्व हो ।
सेंध—स्त्री० छिद्र, सुरङ्ग ।

सेंधना—सक्रि० सेंध लगाना।
सेंधा—पु० एक तरहका नमक।
सेंधिया—वि० सेंध डालनेवाला। पु० कूट या कचरी [नामक फल।
सेंमल—पु० सेमर (उदे० 'थोथरा')।
सेंवई—स्त्री० देखो 'सिवई'।
सेंवर—पु० सेमर।
सेंहुड़—पु० थूहर।
से—प्रत्यय—करण और अपादानकी विभक्ति। सर्व०वे। वि० समान ( सा-का बहु० )।
सेउ—पु० सेव नामक फल।
सेकंड—पु० मिनटका साठवाँ हिस्सा।
सेक—पु० छिड़काव। अभिषेक।
सेकड़ा—पु० पैना, चाबुक।
सेकुचा—पु० एक तरहका डौआ।
सेख—पु० शेष नाग। बचा हुआ अंश। समाप्ति।
सेखर—पु० देखो शेखर'।
सेग़ा—पु० विभाग। विषय।
सेचक—पु० सींचनेवाला, बादल।
सेचन—पु० सिंचन, छिड़काव, अभिषेक।
सेचित—वि० जो सींचा गया हो, अभिषिक्त।
सेज, सेजरिया, सेज्या—स्त्री० शय्या, बिछौना (उदे० 'नाउ', 'पलटाव' )।
सेजपाल—पु० राजाके शयनागारपर पहरा देनेवाला।
सेझना—अक्रि० हटना, अलग होना।
सेटना—अक्रि० ख्याल करना, मानना, समझना।
सेठ—पु० महाजन, व्यापारी, धनी व्यक्ति।
सेढ़ा—पु० सिंहाण, नाकका मैल (उदे० 'गीदर' )।
सेत—वि० सफेद (उदे० 'छतुरी 'बनौटी') पु० पुल।
सेतकुली—पु० नागोंका एक कुल।
सेती—अ० से'तप सेती पुतवा जनमि हैं।' ग्राम० १६०
सेतु—पु० पुल, मेंड, मर्यादा ( उदे० 'थापना' )।
सेतुक—क्रिवि० सौतुक,सामने (मति० २३६)।पु० पुल।
सेतुपथ—पु० वह सड़क जो पहाड़ी आदि दुर्गम स्थानोंमें [गयी हो।
सेतुबंध—पु० पुलकी बँधाई। नहर।
सेतुशैल—पु० दो देशोंके बीचका पहाड़।
सेथिया—पु० नेत्र-रोगोंका चिकित्सक।
सेद—पु० पसीना 'हरिऔध सारे अंग सेदमें रहे हैं डूबि।' कलस १२२
सेदरा—पु० तीन तरफसे खुला हुआ मकान।
सेध—पु० रोक, मनाही।
सेन—स्त्री० सेना ( उदे० 'चौपट' )। सेंध। पु० श्येन पक्षी ( उदे० 'गच' )। शरीर।
सेनप, सेनपति—पु० सेनापति।
सेना—स्त्री० फौज, चमू। सक्रि० सेवा या भक्ति करना, सेवन करना ( उदे० 'ढेंढ़ी', रामा० ४०७)। लगातार निवास करना, पोषण करना।
सेनाजीव,-जीवी—पु० सैनिक।
सेनादार—पु० सेनापति।
सेनाधिप,-धीश,-ध्यक्ष,सेनानी—पु०सेनाका अगुआ।
सेनापति—पु० फौजका बड़ा अफसर, सिपहसालार। सेवोंका स्वामी 'उत सेनापति बरखि मुसल सम इत प्रभु अमिय दृष्टि चितये।' सू० १०२, (सूसु० १८१)।
सेनापत्य—पु० सेनापतिका कार्य या अधिकार, सेना- [पतित्व।
सेनामुख—पु० सेनाका अगला हिस्सा।
सेनावास—पु० शिविर, छावनी।
सेनावाह—पु० सेनापति।
सेनुर—देखो 'सेंदुर'।
सेनि, सेनी—स्त्री० श्रेणी, पंक्ति 'मनौ अलिसेनी विराजत, बनै एकहिं भेप।' सू० ८८। मादा बाज।
सेब—पु० एक तरहका पेड़ या उसका फल।
सेम—स्त्री० एक तरकारी।
सेमई—स्त्री० 'सेंवई'। वि० हलके हरे रंगका।
सेमर, सेमल—पु० शाल्मली वृक्ष ( उदे० 'ढेंढ़ी' )।
सेमा—पु० एक तरहकी बड़ी सेम।
सेर—पु० शेर, व्याल। एक तौल। वि० तृप्त।
सेरबच्चा—पु० एक तरहकी बन्दूक ( हिम्मत० १३ )।
सेरा—पु० सिरहनेकी ओरकी पाटी। वह ज़मीन जो सींची जा चुकी हो।
सेराना—पु० सिरहाना। सक्रि० ठंढा करना, डुबाना, बहाना 'रहिमन भाँवरके परे नदी सेरावत मौर।' रहीम १९। अक्रि० ठंढा होना, जुड़ाना, तृप्त होना, चुकना, पूरा होना।
सेराव—वि० तर किया हुआ। सींचा हुआ।
सेरी—स्त्री० तृप्ति। रास्ता 'जा सेरी साधू गया सो तो राखी मूँदि।' साखी १३०, (१९, ११७)।
सेल—पु० भाला, वर्छी (उदे० 'खखेटना', 'पटतारना')। माला। लकड़ीका पात्र-विशेष।

सेला—पु० ( वर इ० का ) दुपट्टा ( उदे० 'नवेला' ) ।
सेलिया—पु० घोड़ेका एक भेद । स्त्री० बिल्ली ।
सेली—स्त्री० दुपट्टा, योगियोंकी माला । बर्छी । एक आभूषण । एक वृक्ष । एक मछली ।
सेल्ह—पु० भाला ।
सेल्हर—पु० नस ।
सेल्ही—स्त्री० छोटा दुपट्टा । माला ( कविता० १९९) ।
सेवँई—स्त्री० मैदेकी बनी खाद्य वस्तु-विशेष ।
सेवॅर—पु० सेमलका पेड़ ।
सेव—पु० एक फल ( उदे० 'उपासना', 'दात' ) ।
सेवक—पु० नौकर, किंकर, भक्त ।
सेवकाई—स्त्री० सेवा (उदे० 'वसन' ), भक्ति ।
सेवकी—स्त्री० दासी, किंकरी ( पामं० ४१ ) ।
सेवग—पु० देखो 'सेवक' ( कबीर १९ ) ।
सेवड़ा—पु० मैदेका एक पकवान ।
सेवति—स्त्री० स्वाति नक्षत्र ।
सेवती—स्त्री० एक फूल, सफेद गुलाब (उदे० 'करना')।
सेवन—पु०सेवा-टहल, उपासना । प्रयोग । सीना । रहना ।
सेवना—सक्रि० सेवा या भक्ति करना ( उदे० 'जुगम') । स्त्री० शुश्रुषा, सेवा ।
सेवनी—स्त्री० नौकरानी, दासी । सुई । टाँका, सीवन ।
सेवर—पु० सेमर ( उदे० 'भूआ' ) । देखो 'शबर' ।
सेवरा—पु० 'सेवड़ा' नामक पकवान ( प० १३ ) ।
सेवरी—स्त्री० शबरी ।
सेवा—स्त्री० टहल, नौकरी, भक्ति, पूजा, रक्षा ।
सेवाटहल—स्त्री० खिदमत ।
सेवाती—स्त्री० स्वाति नक्षत्र ।
सेवाबंदगी—स्त्री० पूजा, उपासना ।
सेवार, सेवाल—पु० शैवाल, जलमें पैदा होनेवाली घास ( उदे० 'दरकना' ) ।
सेविका—स्त्री० दासी ।
सेवित—वि० पूजित । जिसकी सेवा की गयी हो ।
सेविता—पु० सेवा करनेवाला । स्त्री० सेवा ।
सेवी—पु० सेवक, भक्ति या पूजा करनेवाला ।
सेव्य—वि०जो सेवाके योग्य हो । रक्षाके लायक । प्रयोग-में लाने योग्य ।
सेष, सेस—पु० नागपति, नाग । बचा हुआ अंश । वि० [ बचा हुआ ।
सेसर—पु० जाल । ताशका एक खेल ।
सेसरिया—वि० जालिया ।
सेहत—स्त्री० तन्दुरुस्ती, रोगमुक्ति । आराम ।
सेहतखाना—पु० वह कोठरी जो पाखाने पेशाब आदिके [ लिए हो ।
सेहरा—पु० मौर, दुलहेका मुकुट ।
सेहरी—स्त्री० शफरी, छोटी मछली ।
सेही—स्त्री० साही पशु ( अ० ५४ ) ।
सेहुँआँ—पु० एक तरहका सफेद दाग जो देहपर पड़ [ जाता है ।
सेहुँड़—पु० एक कँटीला पौधा, थूहर ।
सैंतना—दे० 'सेंतना' ( उदे० 'बितताना' ) ।
सैंतालीस—वि०सात और चालीस । पु० ४७की संख्या ।
सैंतीस—वि० सात और तीस । पु० ३७की संख्या ।
सैंथी—स्त्री० भाला ( छत्र० १०७ ) । शक्ति 'इन्द्रजीत लीन्हीं जब सैंथी देवन हहा कर्‌यो ।' सूरा० ६९
सैंधव—वि०सिन्धुका । पु०सेंधा नमक । सिन्धु निवासी ।
सैंबल—पु० सेमर 'सैंबलके फूलनिपर फूल्यो गरब्यों कहा गँवार ।' कबीर १९४
सैंहथी—स्त्री० बर्छी ( छत्र० ६४ ) ।
सैंहिकेय—पु० सिंहिका-पुत्र राहु ।
सै—पु० सौकी संख्या । वि० सौ ।
सैकड़ा—पु० सौ ।
सैकड़े—क्रिवि० प्रतिशत । सौ पीछे ।
सैकत—पु० बालुकामय स्थान । वि० बालुकामय ।
सैकतिक—वि० बालुका सम्बन्धी । पु० संन्यासी । [ मंगल सूत्र ।
सैकल—पु० देखो 'सिकली' ।
सैजन—पु० सहिंजन ।
सैथी—स्त्री० भाला ।
सैद्धांतिक—वि० सिद्धान्त सम्बन्धी । पु० सिद्धान्त जाननेवाला ।
सैन—स्त्री० सेना ( उदे० 'जितवना' ), दल । इशारा ( उदे० 'तिरीछा' ), चिह्न । पु० बाज पक्षी । शयन, लेटना, पौढ़ना ।
सैनपति—पु० सेनाध्यक्ष, सेनापति ।
सैनभोग—पु० शयनकालका नैवेद्य ।
सैना—स्त्री० फौज, सेना । पु० इशारा ( रहीम १५ ) ।
सैनिक—पु० सिपाही, योद्धा ।
सैनी—स्त्री० फौज । पु० नाई ।
सैनेय—वि० लड़नेके योग्य ।
सैनेश, सैनेस—पु० सेनापति ।

सैन्य—पु० सेना, कटक ।
सैन्यपति, सैन्याध्यक्ष—पु० सेनापति ।
सैफ—स्त्री० खड्ग, तलवार ।
सैफी—वि० तिरछा ।
सैयाँ—पु० स्वामी, प्रभु, पति ।
सैया—स्त्री० शय्या, बिछौना, पलंग ।
सैरंध्र—पु० घरका नौकर । जाति-विशेष ।
सैरंध्री—स्त्री० अन्तःपुरकी सेविका । द्रौपदीका अज्ञातवासके समयका नाम ।
सैर—स्त्री० दिल बहलावकी यात्रा, मनोरंजनार्थ टहलना-फिरना ।
सैरगाह—पु० सैर करनेका स्थान ।
सैल—पु० शैल, पहाड़ । स्त्री० सैर 'करिये सङ्ग सखीन के कहो कौन विधि सैल ।' मति० २२६ । साँग 'जबहिं समर महँ सैल उछालै ।' छत्र० १८
सैलजा,-तनया,-सुता—स्त्री० गिरिजा ।
सैला—पु० चीरकर निकाला हुआ टुकड़ा । छेद इ० में ठोंकनेके लिए बनी हुई लकड़ीकी मेख ।
सैलानी—वि० घुमक्कड़, मनमौजी ।
सैलानीपन—पु० व्यर्थ इधर उधर घूमते रहनेकी आदत ।
सैलाब—पु० जलप्लावन, बाढ़ ।
सैलाबा—पु० पानीमें डूबी हुई फसल ।
सैलाबी—स्त्री० सीड़, तरी । वि० बाढ़वाला ।
सैवल—दे० 'सेवार' ।
सैवलिनी—स्त्री० नदी ।
सैवाल—पु० देखो 'सेवार' ।
सैसव-पु०,सैसवता—स्त्री० शिशुता, लड़कपन ।
सैहथी—स्त्री० सैंथी, भाला, शक्ति ( उदे० 'बाहना' कविप्रि० ८९ ) ।
सों—अ० से, साथ । स्त्री० शपथ ।
सोंचर-नमक—पु० एक नमक, काला नमक ।
सोंटा—पु० छोटी लाठी या डण्डा ( कबीर ३२९ ) ।
सोंटाबरदार—पु० बल्लमदार, आशाबरदार ।
सोंठ—स्त्री० सूखा हुआ अदरक ।
सोंध, सोंधा—पु० महँक, भुँजनेकी सुगन्ध । सुगन्धित वस्तु, एक सुगन्धित मसाला ( उदे० 'उपटाना' ) । वि० सुवासित ।
सोंपना—सक्रि० सौंपना ।
सोंवनिया—पु० नाकमें पहननेका एक गहना ।
सोंह—स्त्री० शपथ ।
सोंह, सोंही, सोंहैं—अ० सामने ( रवि० ३७ ) ।
सो—सर्व० वह । अ० इसलिए । वि० समान ।
सोअना—अक्रि० सोना, शयन करना ।
सोआ—पु० एक साग ।
सोक—पु० शोक, दुःख ( उदे० 'तिरना' ) ।
सोकना—अक्रि० शोक करना । सक्रि० सोख लेना ।
सोकित—वि० शोकयुक्त, दुःखित ।
सोखक—पु० सोखनेवाला ।
सोखता, सोख्ता—पु० स्याही सोखनेवाला एक कागज ।
सोखना—सक्रि० सुखा डालना, पी जाना ।
सोखाई—स्त्री० सोखनेकी क्रिया या मज़दूरी । टोना ।
सोगंद—स्त्री० सौगन्द, क़सम ।
सोग—पु० शोक, विलाप, दुःख ( कबीर ३१३ ) ।
सोगिनी—वि० स्त्री० शोकयुक्त, दुःखित ।
सोच—पु० अफसोस, चिन्ता, दुःख, ख्याल ।
सोचना—अक्रि० ख्याल करना, चिन्ता या अफसोस करना ।
सोचविचार—पु० गौर ।
सोचाना—सक्रि० दिखलाना । किसीको सोचनेमें प्रवृत्त करना ।
सोज—स्त्री० सामग्री । सूजन ।
सोजन, सौजन—पु० सूई ( रतन० ९९ ), 'अरे निरदई मालिया कहुँ जताय यह बात । केहि हित सुमनन तोरि तैं छेदत सोजन जात ।' रतन० १०९
सोजनकारी—स्त्री० सूईका काम ।
सोजनी—स्त्री० सुजनी ( रतन० १६१ ) ।
सोजिश—स्त्री० सूजन ।
सोझा—वि० सीधा, अनुकूल, खड़ा ।
सोटा—पु० तोता । डण्डा ।
सोढ—वि० जो बर्दाश्त किया गया हो । सहनशील ।
सोढर—वि० भोंदू ।
सोढव्य—वि० सहन करने योग्य, सह्य ।
सोत, सोता—पु० पानीका झरना । नदीकी शाखा ।
सोतिया—पु० सोता ।
सोती—स्त्री० स्वाती नक्षत्र । सोता, झरना ।
सोथ—पु० सूजन ।
सोदय—पु० सूद समेत ।
सोदर—पु० सगा भाई ( उदे० 'देव' ) ।
सोदरा, सोदरी—स्त्री० सगी बहिन ।

सोध—पु० खोज, खबर 'सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी, बहुरो सोध न लीनो।' सू० २१६, सुधि, होश 'आनँद मगन भये सब डोलत कछू न सोध सरीर। सुरा० ३, सुधार। अदायगी ( उदे० 'उपराग' )।
सोधक—पु० खोज करनेवाला, चुकता करनेवाला।
सोधना—सक्रि० शुद्ध करना, सुधारना। ढूँढ़ना 'खग मृग मीन पतग लौं मैं सोधे सब ठौर।' सू० २, ( उदे० 'तालाबेली' )।
सोधाना—सक्रि० खोज कराना, ठीक कराना।
सोन—पु० पानीका एक पक्षी। सुवर्ण (उदे०'उछारना')।
सोनकेला—पु० पीला केला। [ वि० लाल।
सोनचिरी—स्त्री० नटी ( रवि० ३२ )।
सोनजरद,-जर्द,-जिरद—स्त्री० एक फूलका पौधा।
सोनजुही—स्त्री० पीले फूलोंवाली जूही।
सोनरास—पु० पका हुआ ( पीला या सफेद ) पान
सोनहला—वि० सोनेके रङ्गका। [ ( प० १४७ )।
सोनहा—पु० एक हिंसक जीव। श्वान (क०वच०५१)।
सोनहार—पु० एक समुद्री पक्षी ( उदे० डाँड़ी )।
सोना—अक्रि० शयन करना, नींद लेना। पु० सुवर्ण।
सोनामक्खी,-माखी—स्त्री० एक खनिज द्रव्य। एक रेशमी कीड़ा।
सोनित—पु० रुधिर (उदे०'खोरना','छिछ')। वि०लाल।
सोनी—पु० सुनार।
सोपकार—पु० व्याज सहित मूलधन।
सोपत—पु० सुभीता।
सोपान—पु० सीढ़ी।
सोफता—पु० एकान्त स्थान।
सोफियाना—वि० सादा पर अच्छा दिखानेवाला।
सोभ, सोभा—स्त्री० 'शोभा' ( उदे० 'छोभना' )।
सोभन—दे० 'शोभन' ( उदे० 'चौंर' )।
सोभना—अक्रि० शोभा पाना ( उदे० 'छोभना' )।
सोभनीक—वि० सुन्दर, सुहावना ( सुन्द० ७४ )।
सोभर—पु० सूतिकागृह, सौरी।
सोभाकारी—वि० सुन्दर।
सोभार—वि० उभाड़के साथ, उमड़ा हुआ।
सोम—पु० चन्द्रमा, यम, कुवेर, एक लता। जल। सुवर्ण ( कविप्रि० ७९ )।
सोमजाजी—पु० सोमयाग करनेवाला।
सोमदिन—पु० चन्द्रवार।
सोमन—पु० अस्त्रविशेष।
सोमप,-पायी,-पीती—वि० सोमरस पीनेवाला।
सोमयाजी—वि० सोमयज्ञ करानेवाला।
सोमवार—पु० रविवारके बाद आनेवाला दिन।
सोमसुत—पु० चन्द्रमाका पुत्र, बुध।
सोमास्त्र—पु० एक तरहका अस्त्र।
सोय—सर्व० वही।
सोयम—वि० तीसरा।
सोर—पु० शोर, कोलाहल (उदे० 'जोर')। स्त्री० सौरी।
सोरठ—पु० एक रागिनी। एक नगर या प्रान्त।
सोरठा—पु० दोहेकी तरहका एक छन्द।
सोरन—पु० सूरन, ओल।
सोरवा—पु० झोल, रसा।
सोरह,सोलह—वि० बारह और चार। पु०१६की संख्या।
सोरही—स्त्री० सोलह कौड़ियोंसे खेला जानेवाला जुआ।
सोरा—पु० क्षार-विशेष, शोरा।
सोलपोल—वि० निरर्थक, बेमतलबका।
सोलह सिंगार—पु० सारा शृङ्गार।
सोलाना—सक्रि० किसीको सोनेमें प्रवृत्त करना।
सोल्लास—वि० उल्लासयुक्त।
सोवज—पु० सावज, शिकार।
सोवना—अक्रि० सोना, नींद लेना।
सोवनार—स्त्री० सोनेका घर, शयनागार (प० १६२)।
सोवरी—स्त्री० सौरी ( सूसु० ६१ )।
सोवा—पु० एक तरहका साग।
सोवैया—पु० सोनेवाला।
सोषक—पु० सुखा डालनेवाला, चूसनेवाला।
सोषन—दे० 'शोषण'।
सोषना—सक्रि० सोखना' सुखा डालना।
सोषु, सोस—वि० सुखा डालनेवाला ( विन० ३८१ )।
सोसनी—वि० लालिमा लिये हुए कुछ कुछ नीले रंगका।
सोहगी—स्त्री० तिलकके बादकी रीति विशेष। सिन्दूर इ० सुहागकी चीज़ें।
सोहदा—पु० गुण्डा, लम्पट।
सोहन—पु० रूपवान् व्यक्ति। वि० रूपवान्, सुन्दर।
सोहना—अक्रि० शोभा देना, सुहावना लगना ( उदे० 'छतुरी' )। वि० मनोहर। सक्रि० निराना।

सोहनी—स्त्री० झाड़ू। निरानेकी क्रिया।
सोहवत—स्त्री० संगति।
सोहर—पु० 'शिशुजन्म आदिके समयका मंगलगीत ( रघु० २८ )।
सोहरत—दे० 'शोहरत' ( उदे० 'उपल्ला' )।
सोहराना—सक्रि० धीरे धीरे मलना या हाथ फेरना।
सोहला—पु० देखो 'सोहर'।
सोहाई—स्त्री० निरानेकी क्रिया या मजदूरी।
सोहाग—पु० सुहागा। सौभाग्य, अहिवात। सौभाग्य या विवाहका गीत 'औ गावहिं, सब नखत सोहागू।' प० १३१
सोहागा—पु० सुहागा। मिट्टी बराबर करनेका हेंगा।
सोहागिन गिनी,-गिल—स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री।
सोहाता—वि० सुन्दर, मधुर, सुहावना।
सोहाना—अक्रि० अच्छा लगना, शोभित होना। वि० सोहावना ( भू० ३९ )।
सोहाया—वि० सुन्दर, मनोहर।
सोहारी—स्त्री० पुड़ी।
सोहावना—वि० सुन्दर, प्रिय, मनोहर (उदे० 'टाट')। अक्रि० अच्छा लगना।
सोहासित—वि० सुहावना, भला लगनेवाला।
सोहिल—पु० एक तारा ( प० २३५ )।
सोहिला—दे० 'सोहर'। उत्सव, खुशी (गीता० २७२)।
सोहीं, सोहैं—क्रिवि० सामने 'अध निकरे अखरानि सों सौहैं कीजै सौंह।' मति० २०२
सौं—अ० सदृश, सा, से। स्त्री० शपथ।
सौंकेरे—क्रिवि० तड़के, बहुत सबेरे।
सौंघाई—स्त्री० प्रचुरता, बाहुल्य, अधिकता ( रामा० [ ५०४ )।
सौंचना—अक्रि० आबदस्त लेना।
सौंचर—पु० एक तरहका नमक।
सौंचाना—सक्रि० आबदस्त दिलाना, मल धोना ( उदे० 'कुचकुचा' )।
सौंज—स्त्री० सामग्री ( उदे० 'धौज', कबीर १८३, १९४ ), 'मातु बचन सुनि मैथिली, सकल सौंज लै साथ। जाय अलिन युत पूजिकै गिरजहिं नायो माथ।' रामरसायन।
सौंतुख—क्रिवि० सामने, सम्मुख (पामं ३५), 'सोवत जागत सपने सौंतुख रहि हैं सो पति माने।' भ्र० ५८। प्र० प्रत्यक्ष ज्ञान।
सौंदना—सक्रि० सानना।
सौंदर्ज, सौंदर्य—पु०, सौन्दर्यता—स्त्री० सुन्दरता, छवि ( दास १३५ )।
सौंध—पु० सुवास। महल।
सौंधा—पु० सुवासित, रुचिकर। पु० देखो 'सोंधा'। ( उदे० 'चौक' )।
सौंनी—दे० 'सोनी' ( रवि० १८ )।
सौंपना—सक्रि० समर्पित करना, सहेजना, किसीके ऊपर छोड़ना ( उदे० 'थुरहथा' )।
सौंफ—स्त्री० एक पौधा या उसके बीज।
सौंर—स्त्री० चादर 'सेज बिछावन सौंर सुपेती।' प० १६२, ( उदे० 'डासना', 'लाँबा' )।
सौंरई—स्त्री० श्यामता, साँवलापन।
सौंरना—सक्रि० सुमिरना, स्मरण करना 'लरिकाईके सौंरियत चोरमिहचनी खेल।' मति० १९३
सौंरा—वि० साँवला।
सौंह—स्त्री० शपथ ( उदे० 'पत्याना' 'अटक', 'सौंहैं' )। क्रिवि० सामने ( उदे० 'बारिगह' )।
सौंही—क्रिवि० सामने ( उदे० 'संकना', प० ५ )। स्त्री० अस्त्रविशेष। [ सो, सा।
सौ—वि० अस्सी और बीस। पु० सौकी संख्या। वि०
सौक—वि० एक सौ। स्त्री० सपत्नी। पु० शौक।
सौकर्य—पु० सुकरता, सुकरता।
सौकुमार्य—पु० कोमलता, सुकुमारता।
सौख—पु० शौक। सुख।
सौख्य—पु० सुख।
सौगंद, सौगंध—स्त्री० शपथ।
सौगत, सौगतिक—पु० 'सुगत' का अनुयायी, बौद्ध, [अनीश्वरवादी।
सौगरिया—पु० क्षत्रियोंका एक भेद।
सौगात—स्त्री० नज़र, भेंट।
सौगाती—वि० सौगातमें देने योग्य। बढ़िया।
सौघा—वि० सस्ता ( दोहा० ११७ )।
सौच—दे० 'शौच'।
सौज—स्त्री० देखो 'सौंज' ( भ्र० ५२ )।
सौजन्य—पु०, सौजन्यता—स्त्री० सज्जनता, भद्रता।
सौत, सौतन, सौति, सौतिन—स्त्री० सपत्नी ( उदे० 'हुरावना' )।
सौतुक, सौतुख, सौतुप—दे० 'सौंतुख'। 'सौतुक तो

सपनो भयो सपनो सौतुक रूप ।' मति० २०२ ।

सौतेला--वि० सौतके जरिये जिसका सम्बन्ध हो, विमातासे उत्पन्न ।

सौदर्य--वि० सगे भाईका सा । पु० भाईपन ।

सौदा--पु० क्रय-विक्रय, व्यापार, व्यापारकी वस्तु । पागलपन, खब्त, प्रेम, ख़याल, धुन (कर्म० २१८)।

सौदाई--वि० पागल ।

सौदागर--पु० व्यापारी ।

सौदागरी--स्त्री० तिजारत, व्यापार ।

सौदामनी, सौदामिनी--स्त्री० विद्युत्, बिजली ।

सौध--पु० राजभवन, बड़ा मकान 'सुन्दरि दिया बुझाइके सोअति सौध मझार ।' दास ८, ( भू० १६ ) ।

सौधकार--पु० मेमार, राज ।

सौधर्म्य--पु० साधुत्व, धर्मपरायणता ।

सौन--क्रिवि० सम्मुख । पु० कसाई ।

सौनन--स्त्री० कपड़ोंमें रेह मिलाना, सानना ।

सौना--पु० सुवर्ण ।

सौनिक--पु० कसाई । व्याध ।

सौपना--सक्रि० देखो 'सौंपना' ।

सौप्तिक--पु० सोते समयका हमला ।

सौबल--पु० सुबलका पुत्र ( शकुनि ) ।

सौभग--पु० अच्छा भाग्य । सुन्दरता ।

सौभद्र--पु० सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु ।

सौभाग्य--पु० अच्छा भाग्य, अहिवात, सुख ।

सौभाग्यवती--वि० स्त्री० सधवा, भाग्यशालिनी ।

सौभाग्यवान्--वि० अच्छे भाग्यवाला, खुशनसीब ।

सौभिक्ष्य--पु० सुकाल, सुभिक्ष । [ दया ।

सौमनस--वि०सुमन या पुष्प-सम्बन्धी । पु० प्रसन्नता।

सौमनस्य--पु० सुमनता, मनके अच्छा होनेका भाव ।

सौमित्र,सौमित्रि--पु० सुमित्रा-पुत्र लक्ष्मण(या शत्रुघ्न)।

सौम्य--वि० शान्त, विनम्र, शीतल, सुन्दर, प्रफुल्ल । पु० बुध । नम्रता । सोमयज्ञ ।

सौम्यता--स्त्री०,नम्रता, सुन्दरता, ठण्ढक, सरलता ।

सौम्यदर्शन--वि० सुन्दर ।

सौर--वि० सूर्य सम्बन्धी । सूर्यसे उत्पन्न । स्त्री० चादर ( उदे० 'जेता' ) । पु० सूर्यवंशी ( साकेत ) ।

सौरज--पु० शौर्य, वीरता ( रामा० ४९७ ) ।

सौरत--वि० सुरत-सम्बन्धी । पु० सुरत, केलि ।

सौरभ--पु० सुगन्ध ( उदे० 'चौतरा' ) । आम, केशर ।

सौरभवाह--पु० पवन ।

सौरभित--वि० सुगन्धित ।

सौरस्य--पु० सुरसता ।

सौराष्ट्र--पु० सूरतके इधर उधरका देश ।

सौरास्त्र--पु० एक दिव्य अस्त्र ।

सौरि--पु० विष्णु, कृष्ण, वसुदेव । शनि ।

सौरी--स्त्री० प्रसूतिगृह ।

सौरीय, सौर्य--वि० सूर्य सम्बन्धी ।

सौवर्चल--पु० एक नमक । सज्जी मिट्टी ।

सौवर्ण--वि० सोनेका । पु० सोना ।

सौवस्तिक--पु० पुरोहित । वि० मङ्गलाकाङ्क्षी ।

सौविद्--पु० अन्तःपुरकी रक्षा करनेवाला ।

सौवीर--पु० सिन्धु नदीके पासका एक देश ।

सौष्ठव--पु० सुन्दरता, अच्छी गढ़न । क्षिप्रता ।

सौसनी--वि० देखो 'सोसनी' ।

सौहँ--क्रिवि० सामने । स्त्री० शपथ 'काहेको सौहैं हजार करो तुम''' रस० ७, ( उदे० 'नटना' ) ।

सौहर--पु० पति ।

सौहार्द, सौहार्द्य, सौहृद--पु० मित्रता ।

सौहार्द्यपूर्ण--वि०सुहृदता पूर्ण ।

सौंही--देखो 'सौंहा' ।

स्कंदन--पु० रेचन । गमन, पतन ।

स्कंदित--वि० च्युत, पतित ।

स्कंध--पु०कन्धा, पेड़के तनेका वह भाग जहाँसे शाखाएँ फूटती हैं, व्यूह, शाखा, पुस्तकका खंड या भाग,राजा, विद्वान् पुरुष, मार्ग, युद्ध ।

स्कंधपथ--पु० पगडंडी ।

स्कंधरुह--पु० बटका पेड़ ।

स्कंधवाह--पु० कंधेके बल बोझ खींचनेवाला पशु ।

स्कंधावार--पु० फौज । राजधानी । शिविर ।

स्खलन--पु० गिरना, पतन ।

स्खलित--वि० च्युत, गिरा हुआ, टपका हुआ ।

स्तंब--पु०पूला, गुच्छा, समूह,झाड़ी,खम्भा, जड़ता,पर्वत ।

स्तंबक--पु० गुच्छा, समूह । नकछिकनी ।

स्तभ--पु० खम्भा । रुकाव, जड़ता ।

स्तंभक--वि० कब्ज करनेवाला, ( वीर्य ) रोकनेवाला ।

स्तंभन--पु० रुकावट, थमाव । वीर्यावरोधक ओषधि

स्तंभित--वि० रुका हुआ, निश्चेष्ट ।
स्तन--पु० उरोज, कुच, थन ।
स्तनन--पु० मेघ-गर्जन । आर्त्तनाद । ध्वनि ।
स्तनप--पु० दुधमुहाँ बच्चा । वि० स्तनपायी ।
स्तनपायी--वि० माताके स्तनसे दूध पीनेवाला ।
स्तनित--वि० ध्वनित । पु० मेघगर्जन । ताली बजानेकी आवाज । ध्वनि ।
स्तन्य--पु० दूध ।
स्तब्ध--वि० निश्चल, जड़ीभूत, सुस्त ।
स्तब्धता--स्त्री० निश्चेष्टता, जड़ता, स्थिरता ।
स्तब्धमति--वि० जिसकी बुद्धि कुंठित हो ।
स्तर--पु० तह । शय्या ।
स्तरण--पु० छितराने या फैलानेका कार्य, बिस्तर, पलस्तर, तह ।
स्तरिमा,-रीमा--पु० शय्या ।
स्तव--पु० स्तोत्र, स्तुति, बड़ाई ।
स्तवक, स्तावक--पु० स्तोत्र । अध्याय । गुच्छा । स्तुति करनेवाला ।
स्तवन--पु० स्तुति, गुणगान ।
स्तविता--पु० स्तुति करनेवाला ।
स्तिमित--वि० भीगा हुआ, शान्त, स्थिर,एकटक ।
स्तीर्ण--वि० छितराया हुआ ।
स्तुत--पु० स्तुति । वि० जिसकी स्तुति की गयी हो ।
स्तुति--स्त्री० प्रशंसा ।
स्तुतिपाठक--पु० भाट, चारण ।
स्तुतिवाद--पु० यशोवर्णन, कीर्त्तिगान ।
स्तुत्य--वि० प्रशंसाके योग्य, श्लाघ्य ।
स्तूप--पु० मिट्टी, पत्थर आदिका बना टीला ।
स्तेन--पु० चोर ।
स्तेय--पु० चोरी । वि० जो चुराया जा सके ।
स्तेयी--पु० चोर ।
स्तैन्य--पु० चोरी । चोर ।
स्तोक--पु० चातक । बूँद । वि० थोड़ा ।
स्तोता--पु० स्तुति करनेवाला ।
स्तोत्र--पु० स्तुति, स्तव ।
स्तोम--पु० स्तुति, ढेर, राशि ।
स्त्येन--पु० चोर । अमृत ।
स्त्री--स्त्री० औरत, नारी, पत्नी, अर्द्धाङ्गिनी ।
स्त्रीजित्--वि० स्त्रीके दबावमें रहनेवाला ।
स्त्रीत्व--पु० नारीत्व ।
स्त्रीधन--पु० वह धन जिसपर स्त्रीका अधिकार हो ।
स्त्रीधर्म--पु० रजोधर्म । स्त्रीका कर्त्तव्य ।
स्त्रीव्रत--पु० पत्नीव्रत । अपनी स्त्रीको छोड़कर और किसी स्त्रीसे प्रेम न करनेका सङ्कल्प ।
स्त्रैण--वि० स्त्री सम्बन्धी । स्त्रीके अधीन । स्त्रियों जैसा ।
स्थंडिल--पु० यज्ञार्थ साफ किया गया स्थान । सीमा ।
स्थकित--वि० क्लान्त ।
स्थगित--वि० टाला हुआ, आच्छादित ।
स्थपति--पु० वास्तुशिल्पी । शासक । बढ़ई । सारथी ।
स्थल--पु० स्थान, भूमि, अवसर । वि० श्रेष्ठ ।
स्थलचर--वि० स्थलपर रहनेवाला ।
स्थली--स्त्री० स्थान, भूमि ।
स्थलीय--वि० स्थल सम्बन्धी ।
स्थविर--पु० बुड्ढा । वि० वयोवृद्ध, सम्मानार्ह ।
स्थविरता--स्त्री० वृद्धापन, वृद्धावस्था ।
स्थाई--वि० देखो 'स्थायी' ।
स्थाणु--वि० स्थिर । पु० ठूँठ, स्तम्भ ।
स्थान--पु० जगह, ठाँव, घर ।
स्थानांतर--पु० अन्य स्थान ।
स्थानांतरित--वि० एक जगहसे दूसरी जगह हटाया हुआ ।
स्थानच्युत,-भ्रष्ट--वि० अपनी जगहसे गिरा या हटा हुआ ।
स्थानापन्न--वि० एवजमें काम करनेवाला ।
स्थानिक, स्थानीय--वि० उल्लिखित स्थान सम्बन्धी, 'लोकल' ।
स्थापक--पु० कायम करनेवाला । प्रतिष्ठाता । सूत्रधारका सहायक ।
स्थापत्य--पु० भवन-निर्माण विद्या ।
स्थापन--पु० आरोपण, प्रतिपादन ।
स्थापना--स्त्री० थापने, जमाने आदिकी क्रिया, प्रतिष्ठा, प्रतिपादन ।
स्थापयिता--पु० स्थापित करनेवाला ।
स्थापित--वि० कायम किया हुआ ।
स्थायिता-स्त्री०,स्थायित्व--पु० स्थिरता, ठहराव ।
स्थायी--वि० टिकाऊ, ठहरनेवाला ।
स्थाल--पु० थाली, आधार, देगची ।
स्थाली--स्त्री० मिट्टीकी थाली, हण्डी ।
स्थालीपुलाक--पु० एक न्याय ( हाँड़ीका एक चावल छूकर सबके पक जानेका अन्दाज लगाना ) ।
स्थावर--वि० ठहरा हुआ, अचल । पु० अचल सम्पत्ति । पर्वत ।
स्थाविर--पु० बुढ़ापा ।
स्थित--वि० ठहरा हुआ, खड़ा हुआ, वर्त्तमान ।

स्थितप्रज्ञ—वि० स्थिर बुद्धिवाला।
स्थिति—स्त्री० अस्तित्व, ठहराव, दशा, पद।
स्थितिस्थापक—पु० पूर्व अवस्थामें लानेवाला गुण।
स्थिर—वि० अचल, ठहरा हुआ, निश्चित, दृढ़, शान्त, स्वस्थ, टिकनेवाला।
स्थिरचित्त,-चेता,-धी,-बुद्धि—वि० जिसकी बुद्धि या चित्त स्थिर रहता हो।
स्थिरता—स्त्री०, स्थिरत्व—पु० दृढ़ता, ठहराव।
स्थिरमति—देखो 'स्थिरबुद्धि'।
स्थिरायु—वि० दीर्घायु। पु० सेमल।
स्थिरीकरण—पु० स्थिर या दृढ़ करना। पुष्ट करना।
स्थूल—वि० मोटा, भारी, जड़।
स्थूलहस्त—पु० हाथीकी सूँड़।
स्थैर्य—पु० दृढ़ता, स्थिरता।
स्थौल्य—पु० स्थूलता, मोटापन, भारी होना।
स्नपित,स्नात—वि० नहाया हुआ।
स्ना—स्त्री० गाय बैलके गलेके नीचे लटकनेवाला चमड़ा।
स्नातक—पु० ब्रह्मचारी, वह जो गुरुकुल आदिमें रहकर निर्धारित विद्या प्राप्त कर चुका हो।
स्नान—पु० नहान।
स्नानागार—पु० स्नान करनेकी कोठरी।
स्नायन—पु० स्नान।
स्नायविक—वि० स्नायु-सम्बन्धी।
स्नायु—पु० नस, नाड़ी।
स्निग्ध—वि० स्नेहयुक्त, चिकना। पु० एक वृक्ष। रेंड़की एक जाति। मोम। मलाई।
स्निग्धता—स्त्री०,-त्व—पु० चिकनापन। प्रियत्व।
स्नुषा—स्त्री० पतोहू।
स्नेह—पु० प्यार, मित्रता, वह वस्तु जिसमें चिकनाई हो, [ तेल।
स्नेहन—पु० चिकनाना। मक्खन। बलगम।
स्नेहित—वि० चिकनाया हुआ, तेलवाला। जिसके साथ स्नेह किया जाय।
स्नेही—पु० प्रेमी, मित्र। वि० चिकना। तेलवाला।
स्पंद,स्पंदन—पु० फरकना, हिलना, स्फुरण।
स्पर्द्धा—स्त्री० बराबरी, द्वेष, डाह, मद्दर्प।
स्पर्धी—वि० स्पर्धा करनेवाला।
स्पर्श—पु० छूनेका भाव। 'क' से 'म' तकके अक्षर।
स्पर्शजन्य—वि० जो छूनेसे उत्पन्न हो। छूतका।
स्पर्शन—पु० छूनेकी क्रिया।
स्पर्शमणि—पु० पारस।
स्पर्शास्पर्श-पु०, स्पृष्टास्पृष्टि—स्त्री० छुआछूत।
स्पर्शी—वि० छूनेवाला।
स्पर्शेन्द्रिय—स्त्री०स्पर्शका ज्ञान करानेवाली इन्द्रिय,त्वचा।
स्पष्ट—वि० साफ, प्रकट।
स्पष्टता—स्त्री० सफाई।
स्पष्टवक्ता—पु० साफ साफ कहनेवाला मनुष्य।
स्पष्टवादी—वि० स्पष्ट कहनेवाला।
स्पष्टीकरण—पु० किसी विषय या बातको स्पष्ट करनेकी [ क्रिया।
स्पृश्य—वि० छूनेके लायक।
स्पृष्ट—वि० छुआ हुआ।
स्पृहणीय—वि० जिसके लिए स्पृहा या कामना की जा [ सके।
स्पृहा—स्त्री० वाञ्छा, इच्छा।
स्पृही—वि० अभिलाषा करनेवाला, इच्छुक।
स्पृह्य—वि० वाञ्छनीय।
स्फटिक—पु० बिल्लौर पत्थर।
स्फटिकशिला—स्त्री० चित्रकूटका एक स्थल विशेष।
स्फटिका,-कारी, स्फटी—स्त्री० फिटकिरी।
स्फार—वि० विस्तृत।
स्फारित—वि० खुला हुआ।
स्फाल—पु० फुरती। स्फुरण।
स्फीत—वि० बढ़ा हुआ।
स्फीति—स्त्री० फैलाव, बढ़ाव।
स्फुट—वि० फुटकर, विकसित, प्रकट।
स्फुटन—पु० खिलना, फूटना।
स्फुटित—वि० प्रकट किया हुआ। खिला हुआ।
स्फुरण—पु० फड़कना, धीरे धीरे हिलना। आविर्भाव, उदय ( पभू० ३१ )।
स्फुरना—अक्रि० हिलना, फड़कना, प्रकाशित हो उठना, प्रकट होना ( अष्ट० ५ )।
स्फुरित—वि० स्फुरणयुक्त, फड़कनेवाला।
स्फुलिंग—पु० चिनगारी।
स्फुर्तना, स्फुर्दना—स्त्री० स्फूर्ति, साफ देख पड़ना, प्रकाशित हो उठना, सहसा किसी बातका स्पष्ट ज्ञान हो जाना ( अष्ट० ५, ६ )।
स्फूर्ति—स्त्री० फुरती, उत्साह, 'जान'। अभिव्यक्ति।
स्फोट—पु० फोड़कर बाहर निकलना। फोड़ा।

स्फोटक—पु० फोड़ा।
स्फोरन—पु० फोड़ने फाड़ने आदिकी क्रिया, विदारण।
स्मय—पु० अभिमान, घमण्ड। वि० विचित्र।
स्मर—पु० कामदेव।
स्मरण—पु० याद, सुधि, ख्याल, चिन्तन। एक अर्थालङ्कार 'कछु सुनि लखि या सोचिकै सदृश वस्तु सुधि होय।'
स्मरणशक्ति—स्त्री० याद रखनेकी शक्ति, याददाश्त।
स्मरणीय—वि० स्मरण रखने योग्य।
स्मरदहन, स्मरारि—पु० शिवजी।
स्मरना—सक्रि० स्मरण करना।
स्मरप्रिया,-वधू—स्त्री० रति।
स्मरशत्रु,-हर—पु० शङ्करजी।
स्मर्त्ता—पु० स्मरण रखनेवाला।
स्मशान—पु० श्मशान, मरघट।
स्मारक—वि० स्मरण करानेवाला। पु० किसीकी स्मृति-रक्षाके लिए किया गया कार्य।
स्मार्त—वि० स्मृति सम्बन्धी। पु० स्मृतिका अनुयायी।
स्मिति, स्मित—पु० मुसक्यान, हलकी हँसी। वि० [मुसक्याता हुआ।
स्मृत—वि० स्मरण किया हुआ।
स्मृति—स्त्री० स्मरण, स्मरण-शक्ति, धर्मशास्त्र।
स्मृतिकार—पु० धर्मशास्त्र बनानेवाला।
स्यंदन—पु० रथ। टपकना, क्षरण। गलना।
स्यात्—अ० शायद। [न्तवाद, सप्तभङ्गी।
स्याद्वाद—पु० जैनदर्शन (न्याय) का एक अङ्ग। अनेका-
स्यान, स्याना—वि० बुद्धिमान्, अनुभवी, वयोवृद्ध, चालाक। पु० वयोवृद्ध मनुष्य।
स्यानप,-पन, स्यानापन—पु० बुद्धिमानी, चतुराई।
स्यापा—पु० देखो 'सियापा'।
स्याबास—अ० शाबाश, धन्य धन्य।
स्याम—वि० काला,साँवला। पु० श्रीकृष्ण, मेघ, कोयल।
स्यामकरन,-कर्न—पु० एक तरहका घोड़ा जिसका एक कान काला हो ( उदे० 'तुखार' )।
स्यामता, स्यामताई—स्त्री० कालिमा, कालापन
स्यामल—वि० साँवला। [( उदे० 'उज्यारी' )।
स्यामलिया—पु० श्रीकृष्ण।
स्यामा—स्त्री० देखो 'श्यामा'।
स्यार—पु० श्रृगाल, गीदड़।
स्यारजन—पु० कायर व्यक्ति ( कविप्रि० ९३ )।

स्याल—पु० श्रृगाल। साला।
स्यालिया—पु० सियार, श्रृगाल।
स्याली—स्त्री० पत्नीकी बहिन।
स्यावज—पु० सावज, शिकार ( कबीर १६० )।
स्याह—वि० काला। पु० घोड़ोंका एक भेद।
स्याहगोश—पु० एक वन्य जन्तु।
स्याहदिल—वि० काले दिलका, कुटिल।
स्याहा—पु० सियाहा, मालगुजारी दर्ज करनेकी बही।
स्याही—स्त्री० रोशनाई, कालिमा (भू० ७८)।
स्यूत—वि० सीया या बुना हुआ।
स्यों, स्यो—अ० सहित। समीप ( उदे० 'अछेह' )।
स्रंग—पु० शिखर, कँगूरा, सींग।
स्रक, स्रग, स्रज—स्त्री० पुष्पमाला, माला 'की स्रग सीपजकी बग पंगतिकी मयूरकी पीक पखीरी।'
स्रगाल—पु० सियार। [सू० १३५
स्रग्धरा—स्त्री० वृत्त-विशेष।
स्रग्विणी—स्त्री० एक वर्णवृत्त।
स्रजन—पु०बनानेकी क्रिया, सर्जन।
स्रजना—दे० 'सृजना'।
स्रद्धा—स्त्री० देखो 'श्रद्धा'।
स्रम—पु० परिश्रम, मेहनत ( उदे० 'एक' )।
स्रमित—वि० थका हुआ ( उदे० 'उनींद' )।
स्रव—पु० बहना, चूना। मूत्र। झरना। श्रवण।
स्रवन—पु० देखो 'श्रवण' ( उदे० 'ताना' )।
स्रवना—अक्रि० चूना, बहना, छूटकर गिरना। सक्रि० चुवाना, गिराना।
स्रष्टा—पु० सृष्टि रचनेवाला, ब्रह्मा। वि० निर्माता।
स्रस्त—वि० धँसा हुआ। ढीला पड़ा हुआ, गिरा हुआ। पृथक् किया हुआ।
स्राध—दे० 'श्राद्ध' ( विन० ४२० )।
स्राप—पु० शाप, बददुवा। [ पै या बहकर निकले।
स्राव—पु० बहना, क्षरण, गिरना। रस द्र० जो चूकर
स्रावक—पु० बहाने या टपकानेवाला, क्षरण करनेवाला।
स्रावित—वि० जिसका स्राव या क्षरण हुआ हो।
स्रावी—वि० बहाने या चुवानेवाला, गिरानेवाला।
स्रिंग—दे० 'श्रृंग'।
स्रुक्—स्त्री० स्रुवा।
स्रुत—वि० सुना हुआ। बहा हुआ।

स्रुति—दे० 'श्रुति'। क्षरण। स्रुतिमाथ = विष्णु।
स्रुवा—पु० आहुति डालनेका पात्र ( कविता० १७५ )।
स्रेणी—स्त्री० पंक्ति, वर्ग, सिढ़ी, सीढ़ी।
स्रोत—पु० झरना, सोता, धारा।
स्रोतस्वती,-स्विनी—स्त्री० नदी।
स्रोता—पु० सुननेवाला।
स्रोन—पु० श्रवण, कान।
स्रोनित—पु० शोणित, रक्त।
स्व—वि० अपना। पु० धन।
स्वकीय—वि० अपना।
स्वकीया—स्त्री० अपने ही पतिसे प्रेम करनेवाली स्त्री।
स्वगत—वि० आप ही आप ( कहना )। मनोगत।
स्वच्छंद—वि० स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारी। क्रिवि० बे रोक टोक, मनमाने।
स्वच्छंदता—स्त्री० स्वेच्छाचारिता, स्वतन्त्रता।
स्वच्छ—वि० साफ, स्पष्ट, शुभ्र, निर्मल।
स्वच्छता—स्त्री० सफाई, निर्मलता।
स्वच्छना—सक्रि० साफ करना, पवित्र करना।
स्वजन—पु० सम्बन्धी, अपने परिवारका।
स्वजन्मा—वि० स्वयम्भू ( ईश्वर )।
स्वतंत्र—वि० स्वाधीन, पृथक्, निर्बन्ध, स्वच्छन्द।
स्वतंत्रता—स्त्री० स्वाधीनता।
स्वतः—अ० आप ही, अपनेसे, स्वयं ही।
स्वत्व—पु० अधिकार।
स्वत्वाधिकारी—पु० जिसे किसी वस्तुका पूर्ण स्वत्व प्राप्त हो, स्वामी।
स्वदेशी—वि० अपने देशका। अपने देशका बना हुआ।
स्वधा—अ० देवों, पितरों आदिको जल, हवि इत्यादि देते समय प्रयुक्त शब्दविशेष। स्त्री० पितरोंका भोजन।
स्वधीत—वि० भली भाँति पढ़ा हुआ।
स्वन—पु० आवाज़, ध्वनि।
स्वनामधन्य—वि० जो अपने नामके कारण धन्य हो।
स्वनामा—वि० जो अपने नामसे विख्यात हो।
स्वनित—वि० ध्वनित। पु० ध्वनि, आवाज़, गर्जन।
स्वपच—पु० श्वपच, चाण्डाल।
स्वपन, स्वपना, स्वप्न—पु० सपना, ख्वाब।
स्वप्नगृह,-निकेतन,-स्थान—पु० शयनागार।
स्वप्नचर—वि० स्वप्नमें विचरण करनेवाला, छायालोकमें विचरण करनेवाला।
स्वप्नदोष—पु० निद्रावस्थामें शुक्रपात होनेका रोग।
स्वप्नसात्—वि० स्वप्नमें लीन।
स्वप्नाना—सक्रि० स्वप्न देना।
स्वप्निल—वि० स्वप्न सम्बन्धी।
स्वबीज—पु० आत्मा।
स्वभाउ, स्वभाव—पु० प्रकृति, तासीर, बान।
स्वभावज—वि० प्राकृतिक, नैसर्गिक।
स्वभावत:—क्रिवि० स्वभावसे, सहज ही।
स्वभावोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार 'जैसो रूप स्वभाव गुन तैसइ बरनो जाय।'
स्वयं—अ० स्वतः, आप, आपसे।
स्वयंदूत—पु० अपना दूतत्व स्वयं करनेवाला नायक।
स्वयंदूती—स्त्री० अपना दूतत्व आप करनेवाली नायिका।
स्वयंप्रकाश—पु० स्वयं प्रकाशित होनेवाला, परमेश्वर।
स्वयंभू—पु० ब्रह्मा, शिव, विष्णु, कामदेव, स्वायम्भुव मनु। वि० जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो।
स्वयंभूत—वि० जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो।
स्वयंवर—पु० अपना वर आप चुननेकी प्रथा या तत्सम्बन्धी समारोह।
स्वयंवरा—स्त्री० अपना पति स्वयं चुननेवाली स्त्री।
स्वयंसिद्ध—वि० जो अपने आप सिद्ध हो।
स्वयंसेवक—पु० बिना कोई पुरस्कार लिये स्वेच्छासे सार्वजनिक सेवा इ० का काम करनेवाला।
स्वयमेव—क्रिवि० आप ही आप।
स्वर—पु० आवाज़, ध्वनि, शब्द। वे अक्षर जिनका उच्चारण अन्य अक्षरोंकी सहायताके बिना हो सके।
स्वरग—पु० स्वर्ग, वैकुण्ठ।
स्वरभङ्ग—पु० आवाज़ बैठनेका रोग।
स्वरवेधी—पु० देखो 'शब्दवेधी'।
स्वरस—पु० पत्तों आदिको कूट पीसकर निकाला हुआ रस।
स्वराज्य—पु० वह राज्य जहाँका शासनसूत्र वहाँवालोंके ही हाथमें हो।
स्वराट्—पु० ईश्वर, ब्रह्मा। ऐसे देशका राजा जिसमें स्वराज्य हो।
स्वरित—वि० स्वरयुक्त। पु० स्वरके उच्चारणका एक भेद।
स्वरूप—पु० आकार, रूप, शोभा। अ० की तरह, तौर पर। वि० समान रूपवाला, समान।
स्वरूपवान्—वि० अच्छे स्वरूपवाला, सुन्दर।

स्वरूपी—वि० स्वरूपवाला, दूसरेका स्वरूप धारण करनेवाला।
स्वरोद—पु० एक बाजा।
स्वरोदय—पु० श्वासके अनुसार शुभाशुभ फल जाननेकी विद्या।
स्वर्गगंगा—स्त्री० स्वर्गकी नदी। मन्दाकिनी।
स्वर्ग—पु० वैकुण्ठ, ऐश्वर्य और सुखकी जगह, आकाश।
स्वर्गगामी—वि० मृत।
स्वर्गत, स्वर्गस्थ—वि० स्वर्गवासी।
स्वर्गतरु—पु० कल्पवृक्ष।
स्वर्गनदी—स्त्री० आकाश-गंगा।
स्वर्गपुरी—स्त्री० देवनगरी अमरावती।
स्वर्गबधू—स्त्री० देवांगना, अप्सरा।
स्वर्गवास—पुं० मृत्यु।
स्वर्गवासी—वि० स्वर्गमें रहनेवाला, मृत।
स्वर्गारोहण—पु० स्वर्ग जाना, मृत्युको प्राप्त होना।
स्वर्गिक—वि० स्वर्गीय,अलौकिक, सुखपूर्ण।
स्वर्गीय—वि० मृत। स्वर्गका।
स्वर्ण—पु० सुवर्ण, सोना। धतूरा। वि० सुनहला 'इन्द्रजाल सा गूथ रहा नव, किन पुष्पोंका स्वर्ण-पराग ?' पल्लव ५३
स्वर्णकमल—पु० रक्त कमल।
स्वर्णकार—पु० सुनार।
स्वर्णचूड़,-चूल—पु० नीलकंठ पक्षी।
स्वर्णमुद्रा—स्त्री० सोनेकी मुद्रा, अशरफी।
स्वर्णिम—वि० सोनेका, सुनहला।
स्वर्धुनी, स्वर्नदी—स्त्री० देखो 'सुरधुनी'।
स्वर्नगरी—देखो 'स्वर्गपुरी'।
स्वर्वैद्य—पु० अश्विनीकुमार।
स्वल्प—वि० किञ्चित्, नाममात्र।
स्ववरन—पु० सुवर्ण, सोना।
स्ववश,-श्य—वि० इन्द्रियजित, अपने ऊपर अधिकार रखनेवाला।
स्वशुर, स्वसुर—पु० ससुर, पति या पत्नीका पिता।
स्वसंविद्—वि० गोतीत।
स्वसा—स्त्री० बहिन।
स्वसुराल—स्त्री० पति या पत्नीके पिताका घर।
स्वस्ति—अ० आशीर्वाद-सूचक शब्द, "भला हो"। स्त्री० मंगल।
स्वस्तिक-पु०, स्वस्तिका—स्त्री० एक शुभ चिन्ह '卐', एक मंगल पदार्थ, एक यंत्र।
स्वस्तेन, स्वस्त्ययन—पु० मंगल-पाठ।
स्वस्थ—वि० नीरोग, शान्त, सावधान।
स्वहाना—अक्रि० शोभित होना।
स्वाँग—पु० ढोंग, बहाना, बनावटी वेश नकल।
स्वाँगना—अक्रि० छद्म वेश धारण करना।
स्वाँगी—पु० स्वाँग करनेवाला, भाँड़, बहुरूपिया।
स्वांत—पु०मन। गुफा। अपना राज्य। अपना अन्त।
स्वाँस-स्त्री०, स्वाँसा—पु० साँस।
स्वाक्षर—पु० दस्तखत।
स्वागत—पु० आदर-सत्कार, अभ्यर्थना।
स्वागतकारी—वि० स्वागत करनेवाला।
स्वागत पतिका—प्रवाससे पतिके लौट आनेपर प्रसन्न होनेवाली नायिका।
स्वाच्छंद्य—पु० स्वच्छन्दता।
स्वातंत्र्य—पु० आज़ादी, स्वाधीनता।
स्वात, स्वाति, स्वाती—स्त्री० एक नक्षत्र।
स्वातिसुत, स्वातिसुवन—पु० मोती।
स्वाद—पु० चखनेका अनुभव, जायका, मिठास, चाह (उदे० 'बवन')।
स्वादक—पु० चखकर स्वाद लेनेवाला।
स्वादन—पु० स्वाद लेना।
स्वादित—वि० चखा हुआ, जिसका आस्वादन किया गया हो। स्वादमय।
स्वादिष्ट,-दीला—वि० ज़ायकेदार, अच्छे स्वादवाला।
स्वादी—वि० आस्वादन करनेवाला, रसिक।
स्वादु—वि० स्वादिष्ट, मधुर। सुन्दर। पु० मधुरता। गुड़। महुआ।
स्वाद्य—वि० स्वाद लेने योग्य।
स्वाधीन—वि० स्वतन्त्र।
स्वाधीनता—स्त्री० आज़ादी, स्वातन्त्र्य।
स्वाधीनपतिका-भर्तृका—स्त्री० वह नायिका जिसका पति उसके अधीन हो।
स्वाध्याय—पु० नियमपूर्वक अध्ययन। अनुशीलन। वेदाध्ययन।
स्वान—पु० कुत्ता। आवाज।
स्वाना—सक्रि० सुवाना, सुलाना (सू० १६१)।
स्वाप—पु० निद्रा। अज्ञान। स्वप्न।
स्वापन—पु० एक अस्त्र।
स्वाभाविक—वि० नैसर्गिक, प्राकृतिक, बनावटी नहीं।
स्वामि—देखो 'स्वामी'।

स्वामिकार्त्तिक,-कुमार—पु० शिवपुत्र कार्त्तिकेय।
स्वामित-पु०, स्वामिता—स्त्री० प्रभुता (अ० १०६)।
स्वामित्व, स्वाम्य—पु० प्रभुत्व, मालिकपन।
स्वामिनी—स्त्री० मालिकिन, प्रभु-पत्नी। राधा।
स्वामी—पु० प्रभु, धनी, पति, राजा, ईश्वर।
स्वायंभुव—पु० प्रथम मनु जो ब्रह्माके पुत्र माने जाते हैं।
स्वायत्त—वि० अपने अधिकारका, जो अपने अधीन हो।
स्वारथ, स्वार्थ—पु० अपना लाभ, अपना काम। वि० [कृतार्थ, सफल।
स्वारस्य—पु० सरसता।
स्वाराज्य—पु० स्वर्ग। स्वाधीन राज्य।
स्वार्थता, स्वार्थपरता—स्त्री० खुदगरजी, अपना ही लाभ सोचनेकी प्रवृत्ति।
स्वार्थत्याग—पु० दूसरेके हितार्थ अपने लाभका विचार [न करना।
स्वार्थपंडित,-साधक—वि० खुदगरज।
स्वार्थपर,-परायण, स्वार्थी—वि० खुदगरज।
स्वार्थ संपादन,-साधन—पु० अपना मतलब पूरा करनेका कार्य, स्वप्रयोजनकी सिद्धि।
स्वाल—पु० सवाल, प्रश्न।
स्वाश्रित—वि० स्वावलम्बी।
स्वास, स्वासा—दे० 'स्वाँस'।
स्वास्थ्य—पु० तन्दुरुस्ती। शान्ति, सन्तोष।
स्वास्थ्यकर—वि० स्वास्थ्यवर्द्धक।
स्वाहा—अ० हवनके समय प्रयुक्त एक शब्द। वि० नष्ट (स्वाहा करना इ०)। स्त्री० अग्निदेवकी स्त्री।
स्विन्न—वि० प्रस्वेदयुक्त। सीझा हुआ।
स्वीकार—पु० ग्रहण, अंगीकार।
स्वीकारना—सक्रि० ग्रहण करना।
स्वीकारोक्ति—स्त्री० अपराध स्वीकार करना।
स्वीकृत—वि० स्वीकार किया हुआ, माना हुआ।
स्वीकृति—स्त्री० मंजूरी, सम्मति।
स्वीय—वि० अपना। पु० सम्बन्धी, स्वजन।
स्वीया—स्त्री० स्वकीया नायिका।
स्वेच्छाचारी—वि० मनमानी करनेवाला, निरंकुश।
स्वेच्छाचारिता—स्त्री० निरंकुशता, मनमानी।
स्वेच्छासेवक—पु० बिना पुरस्कार लिये स्वेच्छासे सेवा करनेवाला। स्वयंसेवक।
स्वेत—वि० श्वेत, सफेद, उज्ज्वल।
स्वेद—पु० पसीना, ताप।
स्वेदक—वि० जिससे पसीना आवे।
स्वेदज—वि० पसीनेसे उत्पन्न होनेवाला (जूँ इत्यादि)।
स्वेदित—वि० प्रस्वेदयुक्त। उबला हुआ।
स्वैर—वि० स्वेच्छाचारी, स्वच्छन्द।
स्वैरवृत्त—वि० अपनी इच्छाके अनुसार चलनेवाला।
स्वैराचार—पु० स्वेच्छाचार।
स्वैरिणी—स्त्री० कुलटा स्त्री।
स्वैरिता—स्त्री० स्वेच्छाचारिता।
स्वोपार्ति—वि० खुद कमाया हुआ, जिसका उपार्जन स्वयं किया हो।

# ह

हंक—स्त्री० हाँक, पुकार।
हँकड़ना—अक्रि० झगड़ते समय जोरसे चिल्लाना।
हँकरना—दे० 'हँकड़ना'। सक्रि० बुलवाना 'हँकरो न वनके नउअवा'—ग्राम० ८५
हँकराना—सक्रि० बुलाना, टेरना। बुलवाना (रामा० [१००।
हँकरावा—पु० पुकार। बुलावा।
हँकवाना—सक्रि० बुलवाना, आवाज़ देकर भगाना, [हटाना या चलाना।
हँकवैया—पु० हाँकनेवाला।
हँका—स्त्री० हाँकने या ललकारनेकी आवाज। हुंकार।
हँकाई—स्त्री० हाँकनेकी क्रिया या मज़दूरी।
हँकाना—सक्रि० हाँकना, चलाना, बुलाना।
हंकार—स्त्री० पुकार, ललकार (रामा० १०७)। पु० घमण्ड (साखी १४५)।
हँकारना—सक्रि० पुकारना, बुलाना (रामा० ४५), 'मल्ल युद्ध प्रति कंस कुटिल मति चल करि दूत हँकारे।' सू० १९२। ललकारना।
हंकारना—अक्रि० हुंकार करना। सक्रि० ललकारना।
हँकारा—पु० पुकार, बुलावा।

हँकारी—वि० अहंकारी, अभिमानी ( भू० १५१ )।
हंगामा—पु० हल्ला। दंगा-फसाद। बलवा।
हंडना—अक्रि० इधर उधर मारे मारे फिरना, घूमना।
हंडा—पु० पीतलका बड़ा पात्र।
हँड़िया, हंडी—स्त्री० चावल आदि बनानेका या कोई चीज रखनेका मिट्टीका चौड़े मुँहका पात्र।
हंत—अ० शोकसूचक शब्द।
हंता—पु० हनन करनेवाला, मारनेवाला।
हँथौरा,-ड़ा—पु० चोट पहुँचाकर कोई कड़ी चीज तोड़ने आदिका औजार।
हँफनि—स्त्री० हाँफनेकी क्रिया।
हँस—पु० एक पक्षी, परमात्मा, जीव 'लट छिटकाये तिरिया रोवै हस इकेला जाई।' कबीर २८७, ( उदे० 'मड़हट' ), आत्मा, सूर्य, ( हससुता, हंसजा; सुजा० ४ )। एक तरहके सन्यासी।
हंसक—पु० हंस ( या हंस + क = हंस + जल ), बिछुआ 'तिन नगरी तिन नागरी प्रतिपद हंसक हीन।'राम०८८
हंसगति—स्त्री०मुक्ति। हंसकी सी सुन्दर गति। एक छन्द।
हंसगामिनी—स्त्री० हंसके समान मन्थर गतिसे चलने-[वाली।
हंसजा—स्त्री० यमुना।
हँसतामुखी—वि० हँसते चेहरेवाला, प्रफुल्लवदन(प०१५)।
हँसना—अक्रि० ठट्टा मारना, हँसी करना, उपहास करना, प्रसन्न होना।
हँसमुख—वि० प्रसन्नमुख, हास्य प्रिय।
हँसली—स्त्री० एक गहना, गलेके नीचेकी एक हड्डी।
हंसवाहन—पु० ब्रह्मा। हंसवाहिनी = सरस्वती।
हंस-सुता—स्त्री० सूर्यपुत्री यमुना ( उदे० 'कजरी' )।
हँसाई—स्त्री० हँसी, उपहास 'सूरदास प्रभु विरद लाज धरि मेटहु ह्याँकी नेक हँसाई।' भ्र० १३८
हँसाना—सक्रि० किसीको हँसनेमें प्रवृत्त करना।
हंसिका, हंसी—स्त्री० हंसकी मादा, हंसिनी।
हँसिया, हँसुआ—पु० लोहेका गोल-सा झुका हुआ एक औज़ार।
हँसी—स्त्री० मजाक, हास्य, विनोद, उपहास, भद्द।
हँसोड़, हँसोर—वि० हास्यप्रिय, विनोदशील।
हँसोहा—वि० हास्योन्मुख, हास्ययुक्त ( बि० ९५ )। जो हँसता रहता हो।
ह—एक व्यंजन। आकाश, स्वर्ग, शिव, जल, इ०।

हई—स्त्री० अचम्भा, आश्चर्य। पु० हयी अश्वारोही।
हक—पु० अधिकार, दस्तूरी, कर्तव्य। सत्य या न्यायकी बात। वि० वाजिब, सच, ठीक।
हकतलफी—स्त्री० किसीका हक मारना।
हकदक—वि० चकित।
हक़दार—पु० वह जिसका हक़ हो। स्वत्वाधिकारी।
हकनाहक—अ० व्यर्थ ही, जबरदस्ती।
हकबक—वि० हक्काबक्का।
हकबकाना—अक्रि० भौचक्का हो जाना, घबरा जाना।
हकला—वि० हकलानेवाला।
हकलाना—अक्रि० अटक अटककर बोलना।
हकलापन—पु० हकलाने या हकला होनेका भाव।
हक सफा—पु० वह विशेषाधिकार जो पड़ोसियोंको उस जमीनको खरीदनेके सम्बन्धमें प्राप्त होता है जिसकी मेंड़ या सीमा उनकी जमीनसे लगी हुई हो।
हक़ीक़त—स्त्री० सच्ची बात, सचाई।
हक़ीक़ी—वि० सगा। सच्चा। ईश्वरकी तरफ जानेवाला।
हकीम—पु० वैद्य, पण्डित।
हकीमी—स्त्री० यूनानी चिकित्सा। हकीमका पेशा।
हक़ीयत—स्त्री० अधिकार। वह वस्तु जिसपर हक हो।
हकीर—वि० तुच्छ, नगण्य।
हक्काबक्का—वि० घबराया हुआ सा।
हगना—अक्रि० मल त्याग करना।
हचकाना—सक्रि० धक्का देकर हिलाना।
हचकोला—पु० गाड़ी आदिके हिलनेसे लगा हुआ धक्का।
हचना—अक्रि० हिचकना।
हज—पु० मुसलमानोंकी मक्केकी यात्रा।
हजम—वि० पचा हुआ। पु० पचनेकी क्रिया।
हजम होना—अक्रि० पचना। हजम करना = पचा जाना, उड़ा लेना।
हज़रत—पु० महाशय, महात्मा।
हजाम—पु० नाई।
हजामत—स्त्री० क्षौर, मुण्डन।
हजार—वि० दस सौ। क्रिवि० चाहे जितना।
हजारा—पु० हजार पद्योंका ग्रन्थ, फौवारा।
हजूम—पु० भीड़, मजमा ( कर्म० ४३४ )।
हज़ारी—पु० एक हजार सैनिकोंका नायक।
हजूरी—पु० हमेशा पासमें रहनेवाला नौकर।

हजो—स्त्री० निन्दा ।
हज्जाम—पु० नाई ।
हटक—स्त्री० मना करनेका काम, निषेध 'दुख आवत मन, हटक न मानत, सूनी देखि अगारा ।' भ्र०१२८
हटकन—स्त्री० हटकने या मना करनेकी क्रिया, वर्जन । पशुओंको हँकानेका डण्डा ।
हटकना—सक्रि० रोकना, मना करना (भ्र०१२८,सू०४)।
हटताल—स्त्री० देखो 'हड़ताल' ।
हटना—अक्रि० दूर होना, अलग होना, सरकना, टलना। सक्रि० हटकना, रोकना ( दीन० ६८ ) ।
हटवई—स्त्री० हाटमें बैठकर सौदा बेचनेवाली (रवि०११)।
हटवया—पु० हाटमें बैठकर सौदा बेचनेवाला ।
हटवाई—स्त्री० बाजारका लेन-देन, क्रयविक्रय ।
हटवार—पु० सौदागर, व्यापारी ।
हटाना—सक्रि० दूर करना, टालना, डिगाना ।
हटौती—स्त्री० शरीरकी गढ़न ।
हट्ट—पु० बाज़ार, दूकान ।
हट्टा-कट्टा—वि० मोटा-ताज़ा ।
हठ—पु० जिद, अड़, प्रण ।
हठधर्मी—स्त्री० कट्टरपन ।
हठना—अक्रि० हठ करना 'करिहौं न तुमसों मान हठ, हठिहौं न माँगत दान ।' भ्र० ६९, (विन० ४३१) ।
हठयोग-पु०, हठविद्या—स्त्री० योगका एक प्रकार जिसमें चित्तवृत्तिको बलात् भीतरकी तरफ ले जाते हैं।
हठशील—वि० हठी, दुराग्रही ।
हठात—अ० हठपूर्वक, जबरन ।
हठात्कार—पु० बलात्कार ।
हठाहठ—क्रिवि० हठात्, जबरन ( रत्ना० ५४४ )
हठी, हठीला—वि० जिद्दी, दृढ़ संकल्पवाला ।
हड़—स्त्री० एक पेड़ या उसका फल ।
हड़कंप—पु० हलचल, तहलका ।
हड़क—स्त्री० गहरी चाह । पानीके लिए विकल होना ।
हड़काया—वि० जो किसी चीजको प्राप्त करनेके लिए व्याकुल हो । पागल ( कुत्ता ) ।
हड़गिल, हड़गीला—पु० बगले जैसा एक पक्षी ( गुलाब ४८० हरि० ) ।
हड़ताल—स्त्री० किसी बातके प्रति असन्तोष । जनताके उद्देश्यसे काम काज बन्द कर देना ।
हड़प—वि० पचाया हुआ । गायब किया हुआ ।
हड़पना—सक्रि० खा जाना, उड़ा देना, मार देना ।
हड़फूटन—स्त्री० हड्डियोंमें दर्द होना ।
हड़बड़, हड़बड़ी—स्त्री० उतावलापन, शीघ्रता ।
हड़बड़ाना—अक्रि० जल्दी करना। सक्रि० जल्दी करनेके लिए प्रेरित करना ।
हड़बड़िया—वि० जल्दबाजी करनेवाला ।
हड़ावरि, हड़ावल—स्त्री० हड्डियोंका ढेर या माला ( प० ९७ ), अस्थिपञ्जर ( कविता० २००) ।
हड़ीला—वि० हड्डीवाला । अत्यन्त दुर्बल ।
हड्डा—पु० बर्रेकी एक जाति ।
हड्डी—स्त्री० अस्थि ।
हत—वि० मारा हुआ, नष्ट किया हुआ, रहित ( हतप्रभ, हतबुद्धि, हतोत्साह इ० ) ।
हतक—वि० पापी 'अब सजनी दूनो चढ्यो हतक मनोजहिं दाप ।' मति० २०७ । स्त्री० अप्रतिष्ठा ।
हतक इज़्ज़ती—स्त्री० मानहानि, अप्रतिष्ठा ।
हतज्ञान—वि० संज्ञारहित, बेसुध ।
हतना—सक्रि० मारना ( उदे० 'अपूठा', 'चौपट', रामा० ७२ ), नष्ट करना, प्रहार करना ।
हतप्रभ—वि० जिसकी कान्ति नष्ट हो गयी हो ।
हतबुद्धि—वि० जिसकी बुद्धि मारी गयी हो । बेवकूफ ।
हतभागी, हतभाग्य—वि० भाग्यहीन ।
हताश—वि० जिसकी आशा नष्ट हो गयी हो, निराश ।
हताहत—वि० मारे गये और घायल ।
हतोत्साह—वि० जिसका उत्साह ठण्डा पड़ गया हो ।
हत्थ—पु० हाथ ।
हत्था—पु० केलेका घौद । खेतोंमें पानी पटानेका एक औज़ार । मूठ । पंजेकी छाप ।
हत्थि—पु० हाथी ( भ्र० ५५ ) ।
हत्या—स्त्री० हिंसा, वध । व्यर्थकी झंझट ।
हत्यार, हत्यारा—वि० हत्या करनेवाला, पापी ।
हथउधार—पु० थोड़े दिनोंके लिए बिना किसी लिखा-पढ़ीके लिया हुआ ऋण ।
हथकंडा—पु० हाथका करतब, चालाकी, गुप्त प्रयत्न ।
हथकड़ी—स्त्री० कैदियोंके हाथ बाँधनेका लोहेका कड़ा ।
हथछुट—वि० जल्द मार बैठनेकी जिसकी आदत हो ।
हथनाल—स्त्री० हाथीपर चलनेवाली तोप (छत्र० ११९)।

हथनी, हथिनी—स्त्री० हाथीकी मादा।
हथफूल—पु० हाथकी पीठपर पहननेका गहना।
हथफेर—पु० हाथकी सफाई,क्षणिक ऋण,अदला-बदला।
हथलेवा,-लेवा—पु० पाणिग्रहणकी रीति ( बि० १०८)।
हथवाँस—पु० पतवार, डाँड़ा इ०।
हथवाँसना—सक्रि० हाथमें लेना, प्रयोग करना, मिल-कर पकड़ना ( उदे० 'बाटारोह' )।
हथसंकर,-साँकला—पु०हथेलीपर पहननेका एक गहना।
हथसार—स्त्री०हस्तिशाला, पीलखाना। [ †पंजेका चिह्न।
हथा—पु० पूजन आदिके समय दीवारपर बनाया हुआ
हथाहथी—क्रिवि० हाथों हाथ, देखते देखते।
हथिया—पु० हस्तनक्षत्र।
हथियाना—सक्रि० हाथसे झपटकर छीन लेना, हाथमें करना, गायब करना।
हथियार—पु० औज़ार, शस्त्र, उपकरण।
हथियारबंद—वि० शस्त्रयुक्त।
हथेरा—पु० पानी सींचनेका एक औजार।
हथेरी, हथेली, हथोरी—स्त्री० हाथके भीतरकी ओरका हिस्सा, करतल।
हथौटी—स्त्री० किसी काममें हाथ लगाना या हाथ लगानेका तरीका।
हथौड़ा—पु० हाथसे ठोकने पीटनेका औजार।
हथौड़ी—स्त्री० छोटा हथौड़ा।
हथ्यार—पु० औजार ( उदे० 'अनरथ', बनजी' )।
हथ्याना—दे० 'हथियाना' ( भू० १०५ )।
हद—स्त्री० सीमा, चरम संख्या या परिमाण।
हदका—पु० धक्का, दचका 'अति खाय मग हदका पताका, फरफराति अपार ।' सत्य० ( उत्तर० १०२ )
हदीस—स्त्री० मुसलमानोंका एक धर्मग्रन्थ।
हनन—पु० हत्या, वध, मारना, पीटना।
हनना—सक्रि० मार डालना ( उदे० 'जेते', 'फिराना'), मारना 'बाँक नैन जनु हनहिं कटारी।' प० १४। पीटना ( उदे० छवा' ), बजाना ( उदे० 'बनाव' )।
हनु—स्त्री० चिबुक, ठुड्डी।
हनुमंत, हनुमत्, 'हनुमान, हनुवँ, हनूमान्—पु० पवनपुत्र, महावीर।
हनुमद्धारा—स्त्री० चित्रकूटमें एक स्थान।
हनोज़—अ० अभी, आजतक ( रत्ना० ३७१ )।
हफ़्ता—पु० सप्ताह।
हबकना—सक्रि० (दाँतोंसे) काट खाना।
हबर-दबर,-हबर—क्रिवि० जल्दबाज़ीमें, उतावलीसे।
हबशी, हबसी—पु० हबश देशका रहनेवाला।
हबीब—पु० मित्र, प्रिय व्यक्ति।
हबूब—पु० बुलबुला, तुच्छ बात।
हबूड़ा—पु० एक खानाबदोश जाति ( कर्म० ४५८ )।
हबेली—स्त्री० देखो 'हवेली'।
हब्बा डब्बा—पु० बच्चोंकी एक बीमारी।
हम—सर्व० 'मैं' का बहुवचन। पु० घमण्ड, अहङ्कार।
हमउम्र—वि० बराबर अवस्थाका, समवयस्क।
हमजिंस—वि० एक ही तरहके ( व्यक्ति )।
हमजोली—पु० साथी।
हमता—स्त्री० अहङ्कार।
हमदर्दी—स्त्री० सहानुभूति।
हमरकाब—पु० रकाबपर साथ पैर रखनेवाला, सह-सैनिक, साथी।
हमराह—अ० साथ। वि० साथ जानेवाले।
हमल—पु० गर्भ।
हमला—पु० आक्रमण, धावा।
हमवतन—पु० एक ही देशके रहनेवाले।
हमवार—वि० समतल, जो ऊँचा नीचा न हो।
हमाम—पु० स्नानागार।
हमाल—पु० बोझ उठानेवाला, मजदूर, रक्षक (भू०२९)।
हमाहमी—स्त्री० अपना अपना लाभ देखना। बहुतसे लोगोंमें प्रत्येकका अपने लाभके लिए प्रयत्न। अहङ्कार।
हमेल—स्त्री० एक तरहकी माला ( उदे० 'चौकी' )।
हमेव—पु० अहमेव, घमण्ड।
हमेशा, हमेसा—क्रिवि० सर्वदा।
हमेस—क्रिवि० हमेशा, सदा ( उदे० 'कमाल' )।
हम्माम—पु० नहानेका कमरा जहाँ गरम पानी रहता है।
हयंद—पु० श्रेष्ठ घोड़ा 'हिंसत हयंद गज्जत करी'— [ सुजा० २९
हय—पु० घोड़ा।
हयग्रीव—पु० एक दैत्य। विष्णुका एक अवतार।
हयन—पु० साल।
हयना—सक्रि० हनना, मारना ( सू० २३०, नष्ट करना, काटना 'प्रभु बहु बार बाहुसिर हये।' रामा० ५०७। बजाना।

हयनाल—स्त्री० घोड़ोंद्वारा खींची जानेवाली तोप ।
हयमेव—पु० अश्वमेध ।
हयशाला—स्त्री० अस्तबल, घुड़सार ।
हया—स्त्री० लाज, शरम ।
हयात—स्त्री० ज़िन्दगी ।
हयादार—पु० वह जिसे शर्म हो ।
हयी—पु० अश्वारोही । स्त्री० घोड़ी ।
हर—पु० शिवजी । हल ( उदे० 'ढोर' ) । गधा, हरण । विभाजक । वि० हरण करनेवाला, मारनेवाला । एक, [ प्रत्येक ।
हरउद—पु० पलनेका गीत (विद्या० २३३) ।
हरएँ—क्रिवि० धीरेसे 'दिनकर तनया स्याम जल द्वैघट भरे बनाइ । ताके भर गरुए भए हरएँ धारति पाइ ।' [ मति० १९०
हरकत—स्त्री० चेष्टा, छेड़छाड़ ।
हरकना—सक्रि० रोकना, मना करना ( कविता० २४५,
हरकारा—पु० दूत, डाकिया । [ भू० ९५ ) ।
हरकाला—दे० 'हरकारा' ।
हरखना—अक्रि० हर्षित होना ।
हरखाना—अक्रि० हर्षित होना (रामा० ४६) । सक्रि० प्रसन्न करना ( उदे० 'जूमना' ) ।
हरगिज़—अ० कदापि ।
हरचद—क्रिवि० बहुत ।
हरजा—पु० नुकसान । क्षातपूर्त्ति ।
हरजाई—स्त्री० वेश्या, कुलटा । पु० लम्पट, आवारा ।
हरजाना—पु० क्षतिपूर्त्ति ।
हरट्ट—वि० हट्टा-कट्टा ( उदे० 'गरट्ट' ) ।
हरण—पु० दूरीकरण, चोरी, विनाश ।
हरता धरता—पु० सबकुछका अधिकारी, सर्वेसर्वा ।
हरतार, हरताल—स्त्री० एक खनिज पदार्थ ।
हरताली—पु० एक रंग । वि० हरतालके रंगका ।
हरतेज—पु० पारा ।
हरद,हरदी—स्त्री० हल्दी 'दधि हरद इव फल फूल पान'—सू० ४५
हरना—सक्रि० हरण करना, ले लेना (उदे० 'जड़ताई'), छीन लेना, आकर्षित करना (उदे०'फेंट'), दूर करना । अक्रि० थकना, हारना । पु० मृग ।
हरनौटा—पु० हिरनका बच्चा ।
हरपरेवरी—स्त्री० पानी बरसानेका एक टोटका ।
हरपा—पु० सिन्धोरा ( ग्राम० ४४६ ) ।

हरफ—पु० अक्षर ।
हरफारेवड़ी, हरफाखोरी—स्त्री० एक पेड़ या उसका फल ( उदे० 'कसौंदा', प० १५, ८८ ) ।
हरबर—क्रिवि० शीघ्र, घबड़ाहटके साथ 'राम काजको काज जानि तहँ मुनिवर हरबर आयो ।' रघु० १३२
हरबराना—अक्रि० शीघ्रताके कारण घबरा जाना, शीघ्रता [ करना ।
हरबा—पु० हथियार ।
हरबोंग—वि० उजड्ड । पु० अन्धेर । गँवार, मूर्ख । अँधेर कुशासन ।-पुर = अँधेर नगरी ( निबन्ध० १-३२ ) ।
हरम—पु० अन्तःपुर ( भू० ५९, ६७ ) । स्त्री० रखैल, [ बीबी ।
हरमज़दगी—स्त्री० बदमाशी ।
हरयाल—स्त्री० हरियाली ( बु० वै० ७९ ) ।
हरवल—दे० 'हरावल' ( सुजा० ५८ ) ।
हरवली—स्त्री० सेनाका नेतृत्व ।
हरवा—पु० हार । वि० हलका ( सुन्द० १६८ ) ।
हरवाना—अक्रि० हलका होना । जल्दबाजी करना । हरवाइ = शीघ्रतासे 'काहू हरौ हियको हरवा, हरवाइ कोई कटिको पटु छोरै ।' भावि० ३०
हरवाह, हरवाहा—पु० हल चलानेवाला ।
हरवाही—स्त्री०हल चलानेका कार्य या उसकी मजदूरी ।
हरशंकरी—स्त्री० पीपल और पाकरके साथ साथ लगाये [ हुए पेड़ ।
हरशृंगार—पु० हरसिंगार, शेफाली ।
हरशेखरी—स्त्री० गङ्गाजी ।
हरष—पु० हर्ष, प्रसन्नता ( उदे० 'छज्जा', प्योसार ) ।
हरष(स)ना, हरषा(सा)ना—दे०'हरखना', 'हरखाना' ।
हरस, हरसा—दे० 'हरिस' ।
हरसिंगार—पु० एक फूलवाला पेड़, परजाता ।
हरहा—पु० भेड़िया । वि० हैरान करनेवाला (पशु) ।
हरहाई—वि० स्त्री० तङ्ग करनेवाली (गाय)(सूवि० १९) ।
हरहार—पु० शिवका हार, साँप, शेषनाग ।
हराँस—स्त्री० हरारत । भय, दुःख ( रत्ना० ४०८ ) ।
हरा—वि० सब्ज़, ताज़ा, कच्चा, प्रसन्न । पु० हार । स्त्री० पार्वतीजी ( कविप्रि० ६२, ६८ ) ।
हराना—सक्रि० परास्त करना, विफल करना । थकाना ।
हराम—वि० अनुचित, निषिद्ध । पु० निषिद्ध वस्तु, [ अधर्म ।
हरामकार—पु० नीच कर्म करनेवाला । लम्पट ।
हरामखोर—पु० मुफ्त या बेईमानीका धन खानेवाला ।
हरामजादा—पु० जारज । दुष्ट । [ काहिल ।

हरामी—वि० व्यभिचारसे पैदा हुआ, दुष्ट।
हरारत—स्त्री० हलका बुखार, गर्मी।
हरावरि—स्त्री० अस्थि-पुञ्ज, अस्थिपञ्जर।
हरावल—पु० सेनाका अग्रभाग, अगुआ।
हरास—पु० ह्रास, क्षति, दुःख उदासी (रामा० २२५), निराशा 'धनुष तोरि हरि सबकर हरेउ हरास।' बरवै [२०
हराहर—पु० देखो 'हलाहल'।
हराहरि—स्त्री० थकावट 'सुदि अंग हराहरि खोइ गई।' उत्तर०।
हरि—पु० विष्णु, सूर्य, इन्द्र, अग्नि, सिंह, बन्दर, यम, चन्द्र (कविप्रि० ७९, कोयल, घोड़ा (कविप्रि० ८५), मोर इ०। स्वामी, पति (प्रास० ७०)।
हरिअर, हरियर—वि० हरा (उदे० 'चोला') ताजा।
हरिअराना,-आना—अक्रि० हरा होना।
हरिअरी, हरिआली—स्त्री० हरापन, हरे हरे पेड़-पौधोंका विस्तार।
हरिकीर्तन—पु० हरिका गुणगान।
हरिगीतिका—स्त्री० २८ मात्राओंका एक छन्द।
हरिचंदन—पु० चाँदनी। पद्मराग। एक तरहका चन्दन। स्वर्गका एक वृक्ष।
हरिजाई—स्त्री० देखो 'हरजाई' (रतन० १०२)।
हरिजान—पु० गरुड़।
हरिण—पु० मृग।
हरिणकलंक,-लक्षण,-लांछन—पु० चन्द्रमा।
हरिणहृदय—वि० भीरु, डरपोक।
हरिक्षीणा—वि० स्त्री० मृगनयनी।
हरिणी,-नी—स्त्री० हरिनकी मादा।
हरित—वि० हरा, बादामी रङ्ग का। पु० सिंह। सब्ज़ी।
हरितमणि—पु० पन्ना या मरकत नामक रत्न।
हरिद्रा—स्त्री० हलदी। आरण्य।
हरिधाम, हरिपद, हरिपुर—पु० वैकुण्ठ।
हरिन—देखो 'हरिण'। [† बघनहाँ।
हरिनख—पु० तावीज जिसमें शेरके नाखून लगे हों, †
हरिप्रिया—स्त्री० लक्ष्मी, पृथिवी, तुलसी, द्वादशी।
हरिबोधिनी—स्त्री० कार्त्तिक शुक्ल एकादशी।
हरियाइ—देखो 'हरहाई' (उदे० 'ढोलना')।
हरियराना—देखो 'हरिअराना'।
हरियावा—अक्रि० हरा होना।
हरियारी, हरियाली—स्त्री० देखो 'हरिआली'।
हरिसौरभ—पु० कस्तूरी 'हरिसौरभ मृग नाभि बसत हैं' सूसु० ३८
हरिवाहन पु० गरुड़।
हरिश्चंद्र—पु० सूर्यवंशका एक परम सत्यवादी राजा।
हरिस, हरीस—स्त्री० हलकी वह लकड़ी जिसमें जूवा बाँधते हैं।
हरिवर्ष—पु० जम्बू द्वीपका एक खण्ड।
हरिसयनी—स्त्री० आषाढ़ शुक्ल एकादशी।
हरिहाई—स्त्री० पशुओंकी तंग करनेकी प्रवृत्ति (कबीर [१३१)
हरिहित—पु० इन्द्रबधू।
हरीतकी—स्त्री० हर्रे।
हरितिमा—स्त्री० हरियाली, हरा रङ्ग।
हरीफ—पु० शत्रु (सुजा० ४८)।
हरीरा—वि० हरा, ताज़ा, आनन्दित। पु० मसालेदार [पेय-विशेष।
हरील—पु० हरावल।
हरीश—पु० कपिपति सुग्रीव, हनुमान्।
हरुअ, हरुआ, हरुवा—वि० हलका 'उड़ौ फिरत जो तूल सम जहाँ तहाँ बेकाम। ऐसे हरुएको धर्यो कहा जान मन नाम।' रतन० ५७, उदे० 'पला')।
हरुआई,-वाई—स्त्री० हलकापन (सुबे० २५७)।
हरुआना—अक्रि० हलका होना, शीघ्रता करना।
हरुए—क्रिवि० धीरे धीरे।
हरू—वि० हलका '·· हरू गरू कछू जाइ न तोला।' [कबीर २४०
हरूफ—पु० हरफ़, अक्षर।
हरें, हरें-हरें, हरैं—क्रिवि० धीरे धीरे 'बातें बनाइ मनाइकै लाल हँसाइके बाल हरें मुख चूम्यो।' भावि० ६० 'हरें हरें चलति' कविप्रि० ९७, (उदे० 'जेठी')।
हरेरी—स्त्री० हरियाली, सब्जी (पूर्ण ९२)।
हरेव—पु० मंगोल लोगोंकी जाति या देश।
हरेहरये—क्रिवि० धीरे धीरे (कविप्रि० २६७)।
हरैं हरैं—क्रिवि० धीरे धीरे 'सापनेमें बिछुरे हरि हेरि हरैंई हरैं हरिनीदृग रोवै।' भावि० १९, (दीन० १५)।
हरैया—पु० हरनेवाला।
हर्ज—पु० नुकसान, अड़चन।
हर्त्ता—पु० हरण करनेवाला।
हर्फ़—पु० अक्षर।

हर्म्य—पु० बड़ा मकान, हवेली, अटारी ।
हर्रा—पु० हड़ ।
हर्रे—स्त्री० एक तरहका पेड़ जिसका फल दवामें काम आता है ।
हर्रैया—स्त्री० मालाके छोरपर लगानेवाला चिपटा दाना । [ एक जेवर ।
हर्ष—पु० खुशी, आनन्द ।
हर्षण—पु० प्रसन्न होनेकी क्रिया । खिलनेकी क्रिया, 'उरके उत्पलके हर्षणक्षण ।' अणिमा ५६
हर्षना—दे० 'हरखना' ।
हर्षवर्द्धन—पु० भारतका एक बौद्ध सम्राट् ।
हर्षाना—सक्रि० प्रसन्न करना । अक्रि० प्रसन्न होना ।
हर्षित—वि० प्रसन्न, खुश ।
हलंत—पु० स्वर रहित व्यञ्जन ।
हल—पु० खेत जोतनेका यन्त्र, हर ।
हलकंप—पु० व्याकुलता, हलचल ' लंक हलकम्प मच्यो'-रघु० २२५
हलक—पु० कण्ठ ।
हलकई—स्त्री० हलकापन, क्षुद्रता, तुच्छता, मानहानि ।
हलकन—स्त्री० हिलनेकी क्रिया ( कलस १७७ ) ।
हलकना—अक्रि० हिलना ( उदे० 'थलकना' ), हिलोरा देना, लहराना ( उदे० 'घुँघुवारा' ) ।
हलकान—वि० देखो 'हलाकान' ।
हलका—वि० कम वज़नका, छोटा, ओछा, मन्द, उग्र या कठोरका उलटा, फीका, सरल, घटिया, कम, उथला, पतला, जिसके दु:ख या चिन्ताका भार कम हो गया हो 'दुःख सुनानेसे जो हलका होगा ।' (पभू० ४८) । पु० मण्डल, झुण्ड ।
हलकारा—पु० पत्रादि ले जानेवाला, दूत ( उदे०'तरल' सुजा० १८ ) ।
हलचल—स्त्री० खलबली, उथल-पुथल, घबराहट ।
हलजुता—पु० तुच्छ किसान । गँवार, उजड्ड ।
हलद, हलदी—स्त्री० हरदी, हरिद्रा ।
हलधर—पु० हल धारण करनेवाला, बलदेवजी, किसान ।
हलना—अक्रि० हिलना ( उदे० 'कनौती' ) । घुसना ।
हलपाणि—पु० बलदेवजी ।
हलफ—पु० सौगन्ध ।
हलफनामा—पु० शपथके साथ लिखा हुआ कोई काग़ज़ ।
हलफा—पु० लहर ।
हलबल—स्त्री० हलचल । [ हटमें डालना ।
हलबलाना—अक्रि० घबराना । सक्रि० दूसरेको घबरा-
हलभल,-भली—स्त्री० हलचल, घबराहट (सुसु०१६९)।
हलबी,-ब्बी—वि० बढ़िया, मोटा ( शीशा ) ।
हलराना—सक्रि० हिलाना डुलाना ( उदे० 'मलराना' 'दुलराना', 'उछङ्ग', रघु० ३७ ) ।
हलवत—स्त्री० वर्षमें प्रथम बार खेतमें हल ले जानेकी [ रस्म ।
हलवा—पु० हलुवा ।
हलवाई—पु० मिठाई बेचनेवाला ।
हलवाह,-वाहा—देखो 'हरवाहा' ।
हलाक—वि० वध किया हुआ ।
हलाकत—स्त्री० वध, विनाश ।
हलाकान—वि० हैरान, परेशान ।
हलाकानी—स्त्री० परेशानी ।
हलाकी—वि० घातक, नाशक ।
हलाभला—पु० नतीजा, निश्चय, फैसला ।
हलायुध—पु० हलधर, बलदेव ।
हलाल—वि० धर्मसङ्गत, विधि-विहित । पु० वह पशु जिसका मांस निषिद्ध न हो ।—करना = खानेके लिए पशुका वध करना ।
हलालखोर—पु० मेहनतकी कमाई खानेवाला, भङ्गी ।
हलाहल—पु० समुद्रोत्पन्न महाविष, तेज़ ज़हर ।
हली—पु० बलराम ( कविप्रि० १०७ ) ।
हलुआ,-वा—पु० मोहनभोग ।
हलुका—वि० हलका, जो भारी न हो (उदे० 'झींठ' ) ।
हलोर—स्त्री०, हलोरा—पु० हिलोर, लहर ।
हलोरना—सक्रि० हलोरा देना ( सूबे० ११० ), अनाज [साफ करना ।
हल्ला—पु० हुलड़, शोरगुल, हमला ।
हल्लीश—पु० उपरूपकका एक भेद ।
हवन—पु० होम, आहुति ।
हवनीय—वि० हवन करने योग्य ( वस्तु ) ।
हवलदार—पु० एक फौजी या मुल्की अफसर ।
हवस—स्त्री० कामना, तृष्णा ।
हवा—स्त्री० वायु ।—खाना = टहलना । विफल होना, अकृतकार्य होकर अलग खड़े रह जाना ।—बिगड़ना = संक्रामक रोग फैलना ।—हो जाना = भाग जाना या गायब होना ।
हवाई—वि० हवामें उड़नेवाला, बेबुनियाद । स्त्री० एक

आतशबाजी, अग्निबान, आसमानी ( गबन १३ )।
**मुँहपर हवाइयाँ उड़ना** = मुँहपर लज्जा, घबराहट आदिके चिह्न देख पड़ना, चेहरा फीका पड़ जाना।
**हवाई जहाज**—पु० वायुयान।
**हवादार**—वि० जिसमें हवा आनेके लिए बहुतसी खिड़कियाँ इ० हों।
**हवाल**—पु० वृत्तान्त, घटना, नतीजा, दशा।
**हवालदार**—पु० एक छोटा फौजी अफसर।
**हवाला**—पु० सङ्केत, नज़ीर। अधिकार, चंगुल 'आजु करउँ खलु काल हवाले।' रामा० ५०६
**हवालात**—स्त्री० हिरासत, हाजत, पहरेके भीतर रखना। अभियुक्तके रखे जानेका स्थान।
**हवास**—पु० होश, सुध, चेतना
**हवि**—पु० होममें छोड़नेकी वस्तु।
**हविभुज**—पु० हुताशन, अग्नि।
**हविष्य**—पु० हवनकी वस्तु,हवि। वि० हवन करने योग्य।
**हविष्यान्न**—पु० यज्ञके समय या व्रतादिमें खाने योग्य पदार्थ।
**हविस**—देखो 'हवस'।
**हवेली**—स्त्री० बड़ा मकान। भार्या, पत्नी।
**हव्य**—पु० हवनकी वस्तु, हवि।
**हशमत**—स्त्री० बड़ाई। ऐश्वर्य, विभूति।
**हसद**—पु० डाह।
**हसन**—पु० दिल्लगी, विनोद।
**हसब**—अ० मुताबिक।
**हसरत**—स्त्री० अफसोस, दुःख।
**हसित**—पु० हास्य। हँसी। वि० जो हँसा हो या हँसा गया हो।
**हसीन**—वि० सुन्दर, मनोहर।
**हसील**—वि० सीधा।
**हस्त**—पु० हाथ, कर, सूँड़।
**हस्तक**—पु० हाथ। ताल। करतल ध्वनि। एक बाजा।
**हस्तकौशल**—पु० हाथसे काम करनेकी निपुणता, कारीगरी।
**हस्तक्रिया**—स्त्री० हस्तमैथुन, दस्तकारी, हाथसे सिर पीटना।
**हस्तक्षेप**—वि० किसी काममें दख़ल देना।
**हस्तगत**—वि० प्राप्त, हाथमें आया हुआ।
**हस्तलाघव**—पु० हाथ चलानेकी फुरती।
**हस्तलिपि**—स्त्री० हाथकी लिखावट।
**हस्तत्राण**—पु० एक तरहका दस्ताना जो अस्त्राघातसे हाथका बचाव करनेके लिए धारण किया जाता है।
**हस्ताक्षर**—पु० दस्तखत।
**हस्तामलक**—पु० हाथका आँवला,खूब जाना हुआ विषय।
**हस्ताहस्ति**—स्त्री० हाथापाई, मुठभेड़।
**हस्तिनापुर**—पु० दिल्ली समीपस्थ प्राचीन नगर।
**हस्तिनी**—स्त्री० हथिनी। स्त्रियोंका एक भेद।
**हस्ती**—पु० हाथी। स्त्री० अस्तित्व।
**हस्ते**—अ० मारफत।
**हहर, हहल**—स्त्री० कँपकँपी, भय, दहशत।
**हहरना, हहलना**—अक्रि० चकपका उठना, चौंकना ( भावि० १० ), थर्राना, परेशान होना 'बरसि बरसि हहरे सब बादर' सूसु० १८४। ईर्ष्या करना।
**हहराना, हहलाना**—अक्रि० चौंकना, डरना, काँपना, ( उदे० 'झूक' )। [ हँसनेका शब्द।
**हहा**—स्त्री० विनयसूचक शब्द, विनती (गीता० ३५०)।
**हाँ**—अ० स्वीकृति प्रकट करनेका शब्द।
**हाँक**—स्त्री० टेर, गर्जन, दुहाई ( उदे० 'अड़दार' )।
**हाँकना**—सक्रि० हटाना, खदेड़ना, चलाना ( उदे० 'अचाक', 'काल', 'चाँड़' )। गर्जन करना, टेरना,ललकारना 'हाँक्यो बाघ उड्यो बिरझान्यो।' छत्र० १२
**हाँका**—पु० टेर, ललकार, गर्जन ( भू० १२१,१२९ )।
**हाँगी**—स्त्री० स्वीकृति।
**हाँडी**—स्त्री० देखो हंडी', 'हँड़िया'।
**हाँता**—वि० परित्यक्त, दूरीकृत ( ललित० १९४ )।
**हाँपना, हाँफना**—अक्रि० जल्द जल्द साँस लेना।
**हाँफा**—पु०, **हाँफी**—स्त्री० जल्दी जल्दी साँस निकलना।
**हाँसल**—पु० एक तरहका घोड़ा ( प० १९ )।
**हाँसी**—स्त्री० हँसी ( उदे० 'जोवबंद' ), मजाक, बदनामी, निन्दा, उपहास ( उदे० 'ऍड़ा' )।
**हाँसु**—स्त्री० हँसी, हँसुली ( प० १८७ )।
**हाँ हाँ**—अ० निषेधसूचक शब्द। [ क्रन्दन।
**हा, हाइ**—अ० दुःख सूचक शब्द। स्त्री०पीड़ायुक्त ध्वनि,
**हाई**—स्त्री० हालत, तरीका, ढङ्ग ( अ० ८४ )।
**हाऊ**—पु० हौवा ( सू० ६० )।
**हाकिम**—पु० शासक ( उदे० 'पोत' ) अफसर।
**हाकिमी**—वि० हाकिम या शासक सम्बन्धी। स्त्री० शासन, हुकूमत।
**हाजत**—स्त्री० हवालात। आवश्यकता ( साखी ९८ ),

खबर 'एकटक रहीं विलोकि सूर प्रभु तनुकी है कछु हाजत।' सू० ८९।
हाज़मा—पु० पाचनशक्ति, पाचनकार्य।
हाज़िम—वि० पचानेवाला, हजम करनेवाला।
हाज़िर—वि० उपस्थित, तैयार। [ प्रत्युत्पन्नमति।
हाज़िरजवाब—वि० चतुराईसे तुरन्त उत्तर देनेवाला,
हाज़िरबाश—वि० मिलनसार। सेवामें बराबर प्रस्तुत
हाजी—पु० हज करनेवाला। [ रहनेवाला।
हाट—स्त्री० बाज़ार या दूकान ( उदे० 'गथ' )।
हाटक—पु० सुवर्ण ( उदे० 'फाटक' )। क़िराया।
हाटकपुर—पु० लङ्कापुरी।
हाटकलोचन—पु० हिरण्याक्ष।
हाड़—पु० हड्डी।
हाड़ा—स्त्री० देखो 'हड्डा।'
हातव्य—वि० त्याज्य।
हाता—पु० घिरी हुई जगह, घेरा, मण्डल। वि० त्यागा हुआ, हटाया हुआ 'छीरोदक घूँघट हातो करि, सम्मुख दियो उघारि।' सू० १३९, (भावि० १७, ३५), दूर (भ्र० ३४, विन० ३८९)। नाशक (विन० १०८)।
हातिम—पु० कुशल व्यक्ति। अति उदार मनुष्य।
हाथ—पु० कर, पाणि, १८ इञ्च लम्बाई, अधिकार।—आना,—पड़ना = अधिकारमें आना, मिलना।—उठाना = मारना, अभिवादन करना।—का सच्चा = व्यवहारका सच्चा, बढ़िया निशानेबाज़।—का मैल = नगण्य वस्तु। —खाली जाना = वार या दाँव चूक जाना।—खाली होना = खर्चके लिए तङ्ग होना।—खींचना = देना-बन्द कर देना, कार्यसे सम्बन्ध न रखना।—चढ़ना = हाथमें आना, प्राप्त होना 'पदमिनि हाथ चढ़ै नहिं सोई।' प० २६३।—चलाना = प्रहार करना, परिश्रम करना।—जमना = अभ्यास होना।—जोड़ना = विनती करना।—झाड़ना = प्रहार करना, हथियार चलाना।—धोना = दे देना, खो देना।—धोकर पीछे पड़ना = जी-जानसे लग जाना।—पर हाथ धरे बैठना = निठल्ले बैठना।—पसारना = माँगनेके लिए हाथ बढ़ाना, याचना करना। ( उदे० 'कन' )।—पाँव चलाना = परिश्रम करना।—पाँव पटकना = बेचैन होना।—पाँव मारना या हिलाना = खूब मेहनत करना, विकल होना।—फेरना = हड़पलेना, प्यार करना।—बैठना = अभ्यास होना।—मलना या मींजना = पछताना, दुःखित होना।—मारना,—साफ करना = डटकर भोजन करना, लूटना, उड़ा लेना। हाथों हाथ = देखते देखते। लगे हाथ, लगे हाथों = इसी सिलसिलेमें, साथ ही साथ।
हाथकंडा—पु० हस्तलाघव, हाथकी सफाई।
हाथपान,-फूल—पु० हथेलीकी पीठपर पहननेके गहने।
हाथा—पु० खेत पटानेका एक औजार, मूठ। पंजेकी छाप।
हाथापाई, हाथाबाँही—स्त्री० मुठभेड़।
हाथी—पु० गज। स्त्री० हाथका अवलम्बन।
हाथीखाना—पु० वह स्थान जहाँ हाथी रखा जाय, हस्तिशाला।
हाथीनाल—स्त्री० एक तरहकी तोप।
हाथीपाँव—पु० 'फीलपाँव' नामक रोग।
हाथीवान—पु० महावत।
हादसा—स्त्री० दुर्घटना।
हान, हानि—स्त्री० क्षति, घटी, बुराई।
हाफिज—पु० वह मुसलमान जिसे कुरान कण्ठस्थ हो।
हामी—स्त्री० स्वीकृति। पु० सहायक।
हाय—अ० दुःखसूचक शब्द। स्त्री० पीड़ा, कसक।
हायतोबा—स्त्री० हाय हाय, रोना-चिल्लाना।
हायन—पु० वर्ष 'एकादस हायनके अन्तर लहहिं जनेउ
हायल—वि० घायल, बेकाम। [ कुमारा।' रघु० ५२
हाय हाय—स्त्री० पीड़ा, दुःख, बेचैनी।
हार—पु० मोतियों इ० की माला। जङ्गल ( कविप्रि० १७४ ), खेत। स्त्री० पराजय, थकावट। हाल हारिल बिनवै आपन हारा।' प० १३
हारक—पु० हरण करनेवाला, लुटेरा। धूर्त। हार। वि० सुन्दर।
हारना—अक्रि० परास्त होना। थकना, मुग्ध होना ( गीता० ३०४ )। खोना 'झूठे बनिज कियो झूठासों पूँजि सबनि मिलि हारी।' बीजक २०३। नष्ट करना ( उदे० 'गपना' ), छोड़ना।
हारल—दे० 'हारिल'।
हारसिंगार—पु० देखो 'हरसिंगार'।
हारि—स्त्री० पराजय, थकावट 'मोहिं मग चलत न होइहि हारी।' रामा० २३०

हारित—पु० हरा रंग, एक तरहका कबूतर। वि० हारा हुआ, वञ्चित, छीना हुआ।
हारुक—पु० हरण करनेवाला।
हारिल—पु० एक पक्षी ( उदे० 'हार', अ० २२ )।
हारी—वि० हरण करनेवाला। वसूल करनेवाला। सुन्दर।
हारीत—पु० एक तरहका कबूतर। चोर।
हारौल—पु० सेनाका अग्रभाग।
हार्दिक—वि० हृदयका, सच्चा।
हाफिज़ा—स्त्री० स्मरण शक्ति।
हाल—पु० वृत्तान्त, वर्णन, अवस्था। बलराम। स्त्री० पहियेपरका लोहेका पट्टा। हिलनेकी क्रिया, धक्का, हलचल ( प० ३१८ )। वि० वर्तमान। अ० अभी, तुरन्त 'दीन्हेसि खोलि खिरकिया, उठिकै हाल।' रहि० विनोद ६३
हालगोला—पु० गेंद।
हाल डोल—पु० हिलना-डोलना, गति। हलचल।
हालत—स्त्री० दशा।
हालना—अक्रि० हिलना 'केरा पास ज्यों बेर निरन्तर हालत दुख दै जाय' भ्र० १४७, ( उदे० 'जीरना' ), झूलना, काँपना।
हालमें—क्रिवि० अभी, शीघ्र।
हालरा—पु० बच्चेको लेकर हिलाना। हिलोरा।
हाल हूल—स्त्री० शोरगुल। हलचल।
हालाँकि—अ० यद्यपि।
हाला—स्त्री० शराब ( कविप्रि० २६ )।
हालाडोला—पु० हलचल 'शुभागमन नव वर्ष कर रहा, हालाडोलापर चढ़ दुर्धर' ग्रास्या ८७
हालाहल—पु० विष।
हालाहाली—स्त्री० जल्दी। क्रिवि० जल्दीमें ( ग्राम० २७६ )।
हाली—क्रिवि० जल्दी।
हाव—पु० संयोग समयकी विविध चेष्टाएँ, विलास।
हावभाव—पु० नाज़ नखरा, चोचला।
हावला बावला—वि० पागल।
हाशिया—पु० मगजी, किनारा।
हास, हास्य—पु० हँसी, उपहास। काव्यके नवरसोंमें- [से एक।
हासक—पु० हँसनेवाला।
हासिद—वि० डाही, ईर्ष्यालु।
हासिल—पु० उपज। लाभ, राज्यकर, लगान, खिराज ( भू० १६७ )। वि० प्राप्त।
हास्यकर—वि० हँसी पैदा करनेवाला।
हास्यास्पद—पु० उपहास्य विषय। वह जिसे देखकर हँसी आवे।
हास्योत्पादक—वि० हास्यजनक हास्यकर।
हाहंत—अ० शोकसूचक शब्द।
हा हा—अ० हाय हाय। हँसी या अनुनय सूचक शब्द। पु० विनती ( विन० ६२३ )।
हाहाकार, हाहाहूत—पु० दुःख, भय इ० की चिल्लाहट कोलाहल 'हाहाकार कीन्ह गुरु'-रामा० ५९७
हाहाठीठी—स्त्री० हँसी दिल्लगी।
हाही—स्त्री० किसी चीजको पानेके लिए विकल होना।
हाहूबेर—पु० जङ्गली बेर।
हिंकरना—अक्रि० हींसनो, हिनहिनाना।
हिंकार—पु० शेरकी आवाज़। बछड़ेके लिए गायके [रँभानेका शब्द।
हिंगु—पु० हींग।
हिंगुपत्र—पु० इंगुदी।
हिंगुल—पु० सिंगरफ, ईंगुर।
हिंगोट—पु० एक वृक्ष जिसमें काँटे होते हैं, इंगुदी।
हिंछा—स्त्री० इच्छा।
हिंडन—पु० घूमना-फिरना।
हिंडोर, हिंडोरना, हिंडोरा—पु० एक तरहका झूला 'हिंडोरनो माई झूलत गोकुल चन्द।' सू० १७४, 'यमुना पुलिन रच्यो हिंडोर' सू० १७५, ( उदे० 'कुसुंभी' 'झोटा', प० ३१ )।
हिंडोरी—स्त्री० छोटा झूला।
हिंडोला—पु० देखो 'हिंडोरा'।
हिंताल—पु० छोटी जातिका खजूर ( भू० ८ )।
हिंद—पु० हिन्दुस्थान, भारत। संयुक्तप्रान्त।
हिंदवी—स्त्री० हिन्दी भाषा।
हिंदी—वि० हिन्दका। स्त्री० हिन्द ( संयुक्तप्रान्त, बिहार इ० ) की भाषा।
हिंदुस्तान, स्थान—पु० भारतवर्ष।
हिंदुस्तानी, हिंदुस्थानी—वि० भारतीय। स्त्री० हिन्दुस्थानकी बोलचालकी भाषा। पु० भारतवासी।
हिंदू—पु० आर्यधर्मानुयायी।
हिंदोरना—सक्रि० फेंटना, घघोलना।

हिंदोल—पु० देखो 'हिंडोर'। हिंडोला।
हिंस—स्त्री० घोड़ेके हिनहिनानेकी आवाज़।
हिंसक—वि० घातक, प्राणापहारी, खूँवार।
हिंसन—पु० हिंसा, जीव वध। कष्ट पहुँचाना।
हिंसना—अक्रि० हिनहिनाना ( उदे० 'हयंद' )। सक्रि० मारना, पीड़ा पहुँचाना, सताना ( रता० २०६ )।
हिंसनीय—वि० हिंसा करने योग्य, वध्य।
हिंसा—स्त्री० जीववध, घात, उत्पीड़न।
हिंसालु—वि० हिंसा करनेवाला।
हिंस्र—वि० खूँखार।
हिंस्रक—देखो 'हिंसक' ( प्रिय० १६५ )।
हिअ, हिआ—पु० हृदय, उर, छाती।
हिआउ, हिआव—पु० हिम्मत, साहस (विन०४३५)।
हिकमत—स्त्री० उपाय, विद्या, चाल।
हिकमती—वि० हिकमत सोचनेवाला, कार्यदक्ष।
हिकलाना—अक्रि० अटक अटककर बोलना। [चालाक।
हिकायत—स्त्री० कहानी, प्रसङ्ग।
हिक्का—स्त्री० हिचकी।
हिचक, हिचकिचाहट—स्त्री० आगापीछा।
हिचकना, हिचकिचाना—अक्रि० रुकना, आगापीछा करना, सशंक होना। [निकलना।
हिचकी—स्त्री० पेटकी वायुका धक्का देकर बाहर
हिचरमिचर—पु० किसी कामके करनेमें आगापीछा
हिजड़ा, हिजरा—पु० नपुंसक। [करना।
हिजरी—पु० मुसलमानी सम्वत्।
हिज्जे—पु० किसी शब्दके वर्णोंका पृथक्कथन।
हिज्र—पु० जुदाई।
हिडिंब—पु० हिडिंबाका भाई। [भगिनी थी।
हिडिंबा—स्त्री० घटोत्कचकी माता जो हिडिंब राक्षसकी
हित—पु० कल्याण, भलाई, लाभ ( उदे० "ठयना" ), प्रेम ( उदे० 'विजना' )। वि० हितू, लाभकारी, अनुकूल। अ० लिए, कारण। [कारक।
हितकर,हितकारी—वि० लाभदायक, उपयोगी, उप-
हितकारक—पु० हितू, खैरखाह। वि० लाभदायक।
हितचिंतक—पु० हितू, हितैषी।
हितचिंतन—पु० किसीकी मङ्गल कामना करना, भलाई
हितता—स्त्री० भलाई। [चाहना।
हितवना, हिताना—अक्रि० प्रेमाविष्ट होना। प्रिय लगना 'नवल बधूके संगमें अहितौ बात हितानि।'
हितवादी—वि०भलाईकी बात कहनेवाला। [मति०१७४
हितवार—पु० प्रेम 'चुंबत अंग परस्पर जनु युग चन्द करत हितवार।' सूबे० ८०
हिताई—स्त्री० सम्बन्ध।
हिताहित—पु० भलाई-बुराई, नफा-नुकसान।
हिती, हितु, हितू—पु० शुभाकांक्षी, मित्र ( उदे० 'ठेलना' ), सम्बन्धी।
हितेच्छु—वि० हित चाहनेवाला, शुभाकांक्षी।
हितैषी—पु० हितू, मित्र। वि० भलाई चाहनेवाला।
हितौना—देखो 'हितवना'।
हिदायत—स्त्री० आदेश।
हिनवाना—पु० तरबूज।
हिनहिनाना—अक्रि० घोड़ेका बोलना, हींसना।
हिना—स्त्री० मेंहदी।
हिफाजत—स्त्री० रक्षा, सावधानी।
हिब्बा—पु० दान। दाना। —भर=ज़रासा।
हिब्बानामा—पु० दानपत्र।
हिमंचल—पु० हिमाचल, हिमालय पर्वत।
हिमंत—पु० हेमन्त ऋतु।
हिम—पु० बर्फ, जाड़ा, तुषार, चन्द्रमा। वि० ठंढा।
हिम उपल—पु० बनौरी, ओला।
हिमकर,-किरण—पु० चन्द्रमा।
हिमगु,-दीधिति—पु० चन्द्रमा।
हिमभानु,-वान—पु० चन्द्रमा।
हिमरश्मि, हिमरुचि, हिमांशु—पु० चन्द्रमा।
हिमवंत—पु० हिमालय, पार्वतीके पिताका नाम ( उदे० 'अनंदमा')।
हिमवंती—वि०स्त्री०बर्फवाली, बर्फयुक्त।
हिमवान—पु० हिमालय। वि० बर्फीला।
हिमाक़त—स्त्री० मूर्खता।
हिमाचल, हिमाद्रि—पु० हिमालय पर्वत।
हिमानी—स्त्री० ओस, 'मृत्यु, अरीचिर-निद्र! तेरा अङ्क हिमानी सा शीतल' कामायिनी १८।
हिमायत—स्त्री० समर्थन, संरक्षण।
हिमायती—वि० समर्थक, सहायक।
हिमालय—पु० एक प्रसिद्ध पर्वत।
हिम्मत—स्त्री० साहस, विक्रम।
हिय—पु० हृदय।

हियरा, हिया—पु० हृदय, छाती 'नहिं हरिलौं हियरा धरौं, नहिं हरलौं अरधंग । बि० २०४ ( उदे० 'कैसिक' ) ।

हियाव—पु० साहस ।

हिरकना—अक्रि० नजदीक जाना, सट जाना 'फिरैं फिरकीसी मौन फिरकी रहैं न नेक, कोउ खिरकीमें कोऊ हिरकी किवारमें ।' रामरसा०

हिरकाना—सक्रि० पास ले जाना, सटा देना (प० ४६)।

हिरण—पु० हरिण । सोना । हिरण्य । वीर्य ।

हिरणमय—वि० सोनेका बना हुआ । पु० नशा । ब्रह्मा ।

हिरण्य—पु० सोना, धतूरा, वीर्य, तत्व, कौड़ी, द्रव्य ।

हिरण्यगर्भ—पु० ज्योतिर्मय अण्ड, ब्रह्मा ।

हिरण्यरेता—पु० अग्नि, सूर्य, शिवजी ।

हिरदय, हिरदा—पु० हृदय ( उदे० 'बटिया' ) ।

हिरन—पु० हरिण । —होजाना=भाग जाना, दूर हो जाना 'सारा नशा हिरन हुआ'—गबन ९ ।

हिरनौटा—पु० हिरनका बच्चा ।

हिरफत—स्त्री० हुनर, हाथकी कारीगरी, चतुराई, चालबाजी।

हिरमर्ज़ी, -मिज़ी—स्त्री० एक तरहकी लाल मिट्टी ।

हिराना—अक्रि० गुम हो जाना, गायब हो जाना (कबीर १७ ), 'भूख न दिन निसि नींद हिरानी, एकौ पल नहिं सोवत । सू० २१२ । भूल जाना, चकित हो जाना । सक्रि० भूल जाना । ढुँढ़वाना ।

हिरावल—पु० सेनाका अगला हिस्सा ।

हिरास—स्त्री० भय, निराशा । वि० निराश, दुःखी 'यों कहि सुमन्त हिय ह्वै हिरास ।' रामरसा०

हिरासत—स्त्री० नजरबन्दी, पहरा ।

हिरौल—पु० देखो 'हरावल' ।

हिर्स—स्त्री० लालच । स्पर्द्धा । [ सक्रि० सिकोड़ना ।

हिलकना—अक्रि० हिचकी या सिसकी लेना । सट जाना।

हिलकी—स्त्री० हिचकी 'सपनेमें लालन चलत लखि रोई अकुलाइ । जागत हू पिय हिय लगी हिलकी तऊ न जाइ ।' मति० १२७, 'नाथके हाथके हेरि हरा हिय लागि गई हिलकी गलही में ।' भावि० ६२ । हिलोर, उमङ्ग 'जो जागों तो कोऊ नाहीं, रोके रहति न हिलकी ।' सू० २०१

हिलकोरना—सक्रि० तरङ्गित करना, लहराना ।

हिलकोर, हिलकोरा—पु० तरङ्ग । [ अष्ट० ११०

हिलग—पु० अगाध प्रेम 'हिलगके पद गायो करते ।'

हिलगना—अक्रि० उरझना ( प० ६१ ), अटकना, हिल जाना, परचना । सट जाना ।

हिलगाना—सक्रि० फँसाना, अटकाना, परचाना ।

हिलना—अक्रि० डोलना, सरकना, विचलित होना, काँपना ।

हिल जाना—अक्रि० परच जाना(साकेत१०२)। [परचना।

हिलसा—स्त्री० एक तरहकी मछली ।

हिलाना—सक्रि० कँपाना, डुलाना, किसी स्थानसे हटाना ।

हिलाल—पु० दूजका चाँद, 'सुहेल तारेका नाम प्रायः हिलालके साथ आता है'—पभू० २२०

हिलोर-स्त्री०,-रा, हिलोल—पु० लहर, झोंका, मौज ।

हिलोरना—सक्रि० देखो 'हिलकोरना' (उदे० 'गागरी') ।

हिल्लोल—पु० जलकी लहर । [ उठी हो ]

हिल्लोलित—वि० कम्पायमान, उमङ्गपूर्ण, जिसमें उमङ्ग

हिवंचल—पु० हिमाचल ( प० ५१ ) । हिम ।

हिसका—स्त्री० बराबर होनेकी इच्छा, ईर्ष्या ।

हिसखा—स्त्री० ईर्ष्या, स्पर्द्धा ( कविप्रि० ३१० ) ।

हिसाब—पु० लेखा, गणित, दर, रीति, विचार, किफायत ।

हिसाब किताब—पु० आयव्ययका ब्योरा । रंगढंग ।

हिसिषा—स्त्री० समकक्ष होनेकी इच्छा, बराबरी 'जो ऐसहि हिसिषा करहिं नर विवेक अभिमान।' रामा०४३

हिस्सा—पु० भाग, टुकड़ा, अङ्ग ।

हिस्सेदार—पु० साझेदार ।

हिहिनाना—अक्रि० हिनहिनाना ।

हींग—स्त्री० मसालेकी एक वस्तु जो छौंकने इ० में काम आती है । एक वृक्ष विशेष । अणिमा ८९ ।

हींछना—देखो 'हीछना' ।

हींछा—स्त्री० इच्छा ( प० ७६, ८३, ८९ ) ।

हींडना—अक्रि० प्रियजनके बिना व्याकुल रहना, पछताना ( बीजक ३७३ ) ।

हींस—स्त्री० देखो 'हिंस' ।

हींसना—अक्रि० हिनहिनाना ( भू० १३२ ) ।

हींसा—पु० हिस्सा ( छत्र० ५ ) ।

ही—अ० निश्चय, अवधारण, परमिति इत्यादिका सूचक शब्द । पु० हृदय ( भू० १८ ) । अक्रि० थी ।

हीअ—पु० हृदय ।

हीक—स्त्री० दुर्गन्धि, मतलाई, हिचकी ।

हीचना—अक्रि० कचियाना, पीछे हटना (उदे० 'उलीचना')

हीछना—अक्रि० इच्छा करना ।

हीठना—अक्रि० पहुँचना, निकट जाना।
हीन—वि० रहित, जघन्य, घटिया, क्षुद्र, कम, दीन।
हीनकुल—वि० तुच्छ कुलका, छोटे कुलमें उत्पन्न।
हीनत्व—पु० हीनता, तुच्छता, कमी।
हीनता—स्त्री० तुच्छता। कमी।
हीनबुद्धि—वि० तुच्छ बुद्धिवाला, मूर्ख।
हीनयोनि—वि० नीच कुल या जातिका।
हीनवाद—पु० मिथ्या तर्क। मिथ्या साक्षी।
हीनवीर्य—वि० कमज़ोर।
हीनहयात—पु० आयु। जीवन-काल।
हीनांग—वि० विकलाङ्ग।
हीनार्थ—वि० असफल, नाकामयाब।
हीय, हीयरा, हीया—पु० हृदय ( प० ८ )।
हीर—पु० सार भाग, शक्ति, तत्व गूदा। हीरा, वज्र।
हीरक, हीरा—पु० एक बहुमूल्य पत्थर, वज्रमणि। कोई अमूल्य या प्यारी वस्तु।
हीराकसीस—पु० लोहेका एक तरहका विकृत रूप जो औषधिके काम आता है।
हीरामन—पु० एक तरहका तोता।
हीला—पु० मिस, बहाना। वसीला, द्वार कीचड़।
हीसका—स्त्री० बराबरीकी इच्छा, होड़ ( वज्र० १६४)।
हुँ—अ० 'हाँ'।
हुकरना, हुँकारना—अक्रि० हुँकारी भरना, गर्जना दपटना।
हुँकार—पु० गर्जन, ललकार।
हुँकारी—स्त्री० 'हुँ' कहना, स्वीकृति।
हुँडार—पु० भेड़िया।
हुंडावन—स्त्री० हुँडीकी दर। हुण्डीकी दस्तूरी।
हुँडी—स्त्री० एक तरहका चेक, निधिपत्र।
हुँत—प्रत्य० से, द्वारा, लिए 'तुम्ह हुँत मंडप गयेउँ परदेसी।' प० १४९
हुंभी—स्त्री० गायके राँभनेकी आवाज़।
हु—अ० भी।
हुआँ—पु० सियारके बोलनेका शब्द। अ० वहाँ।
हुआना—अक्रि० सियारका बोलना ( रामा० ५०४ )।
हुक—पु० टेढ़ी कँटिया।
हुकना—अक्रि० वार खाली जाना, निशाना खाली जाना।
हुकरना, हुकारना—दे० 'हुँकरना', 'हुँकारना'।
हुकुर हुकुर—स्त्री० कमजोरी इ० के कारण जल्दी-जल्दी सासका चलना।
हुकूमत—स्त्री० अधिकार, प्रभुत्व, शासन।
हुक्का—पु० नारियल या धातु इ० का बना हुआ दो नलियोंवाला पात्र जिसपर चिलम बैठाकर तम्बाकू पीते हैं।
हुक्कापानी—पु० खान-पान, बिरादरीमें चलन।
हुक्काम—पु० अफसर ( बहुव० )।
हुक्म—पु० आज्ञा, शासन, अनुमति।
हुक्मनामा—पु० आज्ञापत्र।
हुक्मबरदार—पु० आज्ञाका पालन करनेवाला। नौकर।
हुक्मी—वि० आज्ञाकारी। अचूक।
हुचकी—स्त्री० हिचकी।
हुजूम—पु० भीड़।
हुजूर—पु० 'स्वामी, प्रभु'। दरबार। सामना ( हुजूरमें =सामने )।
हुजूरी—वि० सरकारी। पु० दरबारी। स्त्री० बड़ोंका सामीप्य।
हुज्जत—स्त्री० झगड़ा, व्यर्थकी बकवाद।
हुज्जती—वि० हुज्जत करनेवाला।
हुड़कना—अक्रि० हींडना, व्याकुल होकर रोते रहना।
हुड़का—पु० वियोगजन्य व्यथा।
हुड़काना—सक्रि० तरसाना, तलफाना, दुःखी करना।
हुड़दंग, हुड़दंगा—पु० हुल्लड़।
हुड़ुक, हुडुक—पु० एक तरहका छोटा ढोल।
हुत—दे० 'हुँत' ( प० १२ )। वि० होम किया हुआ।
हुतभुक्,-भुज—पु० अग्नि।
हुता, हुतो—अक्रि० था ( उदे० 'अँजोर' )।
हुताशन—पु० आग।
हुति—स्त्री० हवन। अ० अपादान और करणकी विभक्ति।
हुदकाना—सक्रि० उभारना, उसकाना।
हुदना—अक्रि० भौंचक होना, ठहर जाना, रुकना।
हुदहुद—पु० एक चिड़िया।
हुन—पु० सुवर्ण मुद्रा, मोहर। सुवर्ण।—बरसना= धनका आधिक्य हो जाना ( कर्म० १५९ )।
हुनना—सक्रि० आहुति देना ( रवि० )।
हुनर—पु० कला, विद्या, चतुराई।
हुनरमंद—वि० कलादक्ष।
हुन्न, हुन्ना—स्त्री० मोहर 'पीरी पीरी हुन्नैं तुम देत हौ मँगाय हमै, सुबरन हमसों परखि करि लेत हौ।' [ भू० ६८
हुब्ब—पु० प्रेम। उत्साह।
हुमकना, हुमगना—अक्रि० कूदना, ज़ोरसे पैर उठाना, मस्तीके साथ चलना (उदे० 'मातल', रामा० २७७)।

हुमसाना,-सावना—सक्रि० उठाना 'विपिन-विहारनि-की हौंस हुमसावती।' रत्ना० १४७
हुमा—स्त्री० एक कल्पित पक्षी।
हुमेल—स्त्री० देखो 'हमेल'।
हुरदंग—देखो 'हुड़दंग'।
हुरमत, हुरमति—स्त्री० इज़्ज़त, प्रतिष्ठा 'कहै कबीर बाप राम राया हुरमति राखहु मेरी।' कबीर १७७
हुरहुर, हुलहुल—पु० एक पौधा।
हुरिहार—पु० होली खेलनेवाला।
हुरुमयी—स्त्री० एक तरहका नाच।
हुल—पु० एक तरहका छुरा।
हुलकी—स्त्री० वमन।
हुलसना—अक्रि० प्रसन्न होना ( रघु० ३५ ), आनन्द-मय होना, उत्पन्न होना, उमड़ना ( उदे० 'फाल' )। शोभित होना '·· हिये हुलसै बनमाल सुहाई।'रसवि०१
हुलसाना—सक्रि० आनन्दमय करना। अक्रि० आन-न्दित होकर उमड़ना ( उदे० 'कौरवा', रघु० ३५ )।
हुलसी—स्त्री० उल्लास, आनन्द-तरंग।
हुलाना—सक्रि० घुभाना, ठेलना, गड़ाना।
हुलास—स्त्री० उल्लास, हर्ष, उत्साह ( उदे० 'आगम' 'उमहना' प० १२ )।
हुलिया—पु० रूपरंग, सूरत-शकल।
हुल्लड़—पु० कोलाहल, गड़बड़।
हुश्—अ० एक निषेध सूचक शब्द।
हुसियार, हुस्यार—वि० चतुर, चालाक।
हुस्न—पु० सुन्दरता, रूप, लावण्य, उत्कर्ष।
हुस्नपरस्त—पु० सौन्दर्य-प्रेमी, सौन्दर्योपासक।
हुस्नपरस्ती—पु० सौन्दर्य-प्रेम।
हुस्न शिनास—वि० सौन्दर्योपासक ( सेवा० ८८ )।
हूँ—अ० स्वीकृति या समर्थन-सूचक शब्द।
हूँकना—अक्रि० हुंकार करना, गर्जना। गायका बछड़ेके लिए राँभना ( अ० ७५ )।
हूँठ—वि० साढे तीन 'हूँठ पैंड दे वसुधा हमको, तहाँ रचौं धर्मसारी।' सू० २८
हूँठा—पु० साढ़े तीनका पहाड़ा।
हूँस—स्त्री० डाह, हसद। लोलुपता। बुरी नज़र।
हूँसना—सक्रि० ललचाना, डाह उत्पन्न करना, कोसना। नज़र लगा देना।
हू—अ० भी।
हूक—स्त्री० वेदना, साल, कसक।
हूकना—अक्रि० पीड़ा देना, सालना।
हूटना—अक्रि० अलग होना, मुड़ना, हटना 'काल बस जंगतें नाहिं हूट्यो।' सुजा० १७, 'जे हरौल तिनके मन हूटे।' छत्र० ७३
हूठा—पु० अँगूठा, ठेंगा।
हूड़—वि० उजड्ड, लापरवाह।
हूत—वि० बुलाया गया।
हूतो—अ०से, तरफसे ( अ० १ )।
हूदा—पु० धक्का, शूल, पीड़ा
हूनना—सक्रि० आगमें डालना, झोंकना 'अपनेको भी आगमें हून दूँ।' रत्नावली ८६
हूबहू—वि० वैसा ही, ज्योंका त्यों।
हूर—स्त्री० स्वर्गकी अप्सरा। दे० 'हूल'।
हूरना, हूलना—सक्रि० घुभाना, गड़ाना 'किह्व दूर ही ते दये हूरि नेजा।' सुजा० २३, नहिं या उक्ति मृदुल श्रीमुखकी जे तुम उरमें हूलहु।' अ० १०१
हूल—स्त्री० कसक, पीड़ा, शूल। हर्षतरंग, कोलाहल 'परी हूल, जोगिन्ह गढ़ छेंका।' प० १०१
हूला—पु० शस्त्र आदि हूलनेकी क्रिया।
हूश—वि० जङ्गली, अशिष्ट ( कर्म० ३७८ )।
हूह—स्त्री० गर्जन, हुंकार ( रामा० ४९९ )।
हृत—वि० हरण किया हुआ।
हृत्—पु० हृदय।
हृत्कंप—पु० दिलकी धड़कन।
हृत्कमल—पु० हृदयके पासका कमलवत् मांस-पिंड [ पभू० ९
हृत्पिंड—पु० कलेजा।
हृदयंगम—वि० समझमें आया हुआ।
हृदय, हृदै—पु० दिल ( उदे० 'ढेरा' ), उर, वक्षःस्थल।
हृदयग्राही—वि० मनको मुग्ध करनेवाला।
हृदयनिकेतन—पु० मनोज, कामदेव।
हृदयहारी—वि० चित्ताकर्षक, मनोमोहक।
हृदयविदारक—वि० हृदय विदीर्ण करनेवाला, अत्यन्त करुणाजनक।
हृदयेश, हृदयेश्वर—पु० प्रियतम, पति।
हृषीक—पु० इन्द्रिय।
हृषीकेश—पु० विष्णु, कृष्ण।
—वि० प्रसन्न।

हृष्टपुष्ट—वि० मोटा ताजा, प्रसन्न और स्वस्थ ।
हेंगा—पु० खेत बराबर करनेकी लकड़ी ।
हे—अ० सम्बोधनका एक शब्द । अक्रि० थे ।
हेकड़—वि० जबर्दस्त, न दबनेवाला, अक्खड़ ।
हेकड़ी—स्त्री० उद्दण्डता, जबर्दस्ती ।
हेकलाना— देखो 'हिकलाना' ।
हेच—वि० तुच्छ ।
हेठ—क्रिवि० नीचे 'हेठ दाबि कपि भालु निसाचर ।' रामा० ४९० । वि० नीचा, क्षुद्र, कम ।
हेठा—वि० क्षुद्र, कम, नीचा ।
हेठी—स्त्री० मानहानि, अप्रतिष्ठा ।
हेत, हेतु—पु० कारण, तर्क, उद्देश्य । प्रेम 'यहि विधि रहसति विलसति दम्पति, हेतु हिये नहिं थोरे ।' सू० ९४, ( उदे० 'कालर' ) । एक काव्यालङ्कार 'कारन कारज साथ ही जहँ कहुँ धरने जायँ । या कारन ही को जहाँ कारज कहत बनाय ।'
हेत्वाभास—पु० तर्कमें ऐसा कारण उपस्थित करना जो देखनेमें कारणसा तो लगे पर वास्तवमें ठीक कारण न हो ।
हेति, हेती—स्त्री० अग्निकी लपट । भाला । चोट । सूर्यकी किरण । पु० सम्बन्धी 'हेती बगमाल स्याम बादर सु भूमिकारी···' हरि०
हेतुवाद—पु० तर्कशास्त्र, नास्तिकवाद ।
हेमत—पु० शीत ऋतु ।
हेम—पु० सुवर्ण । पाला, हिम ( अ० ४४, ४५ ) ।
हेमकार—पु० सुनार ।
हेमवती—वि०स्त्री० सोनेकी, सुनहली । [ पहनेवाला ।
हेमांगद—पु० सोनेका विजायठ । सोनेका बिजायठ
हेमाद्रि—पु० सुमेरु । [ बाँधते हैं ।
हेमियानी—स्त्री० वह थैली जिसमें रुपये रखकर कमरमें
हेय—वि० त्याज्य, निकृष्ट । पु० हृदय ( उदे० 'अँसुआ' )
हेरंब—पु० गणेश ।
हेर—स्त्री० तलाश ।
हेरना—सक्रि० खोजना ( उदे० 'भभरना' ) । देखना, निहारना 'अब हौं कौनको मुख हेरौं ।' सू० ४०, ( उदे० 'बंद' ) । जाँचना, समझना ।
हेरना फेरना—सक्रि० अदल-बदल करना ।
हेरफेर—पु० उलट-पलट, अन्तर, लेन-देन, चक्कर ।
हेरवाना—सक्रि० खोज कराना । खो देना ।
हेराना—अक्रि० गायब हो जाना, न रह जाना ( रामा० ६७ ), आपेमें न रहना । सक्रि० ढुँढ़वाना ।
हेराफेरी—स्त्री० उलट-पलट ।
हेरिक—पु० भेदिया ।
हेरी—स्त्री० पुकार, आवाज़ ।
हेलना—अक्रि० खेलना, क्रीड़ा करना, डालना ( अ० १०८ ) । तैरना, पैठना । सक्रि० उपेक्षा करना, तुच्छ समझना । [ परिचय ।
हेलमेल—पु० घनिष्टता, मेलजोल, जान-पहिचान,
हेलया—क्रिवि० खेल ही खेलमें, आसानीसे ।
हेलवा,हेला—पु० मेहतरोंका एक भेद ( ग्राम० १९४ )।
हेला—स्त्री० अवहेलना, अवज्ञा । खेल ( रामा०४५३ )। खेलवाड़ । पु० हमला, धावा, धक्का । पाँव पाँव नदी पार करना,उतारा 'और घाट ह्वै कीजै हेला ।'छत्र०४५
हेलाल—पु० दूजका चन्द्रमा ।
हेलिन, हेलिनी—स्त्री० मेहतरानी ( ग्राम० १६,१७ )।
हेली—स्त्री० सखी 'ताछिन इक आली कही सुन हेली मम बैन ।' रामरसा० ( भावि०१२,३७ ) । अ० 'हे अली, एरी 'कारे कजरारे नैन कीनी कतलाम घनी, हेली हम जानी कारे कारे सब एकसे ।' रामरसा०
हेवंत—पु० हेमंत, शीत ऋतु ।
हैं—अ० आश्चर्य, निषेध या असम्मति-सूचक शब्द ।
है—पु० हय, घोड़ा ।
हैकल—स्त्री० गलेमें पहननेका एक गहना (रत्ना० १३९)।
हैजा—पु० विसूचिका ।
हैतुक—वि० जिसका कोई हेतु हो । पु० तर्क करनेवाला
हैना—सक्रि० हनन करना, मारना 'सुन सुग्रीव प्रतिज्ञा मेरी एकहिं बान असुर सब हैहौं ।' सूरा० ७४
हैफ—अ० अफसोस, हा ।
हैबत—स्त्री० दहशत, भय ।
हैबतनाक—वि० खौफनाक ।
हैबर—पु० 'हयबर', अच्छा घोड़ा ।
हैम—वि० सुवर्णका । हिम सम्बन्धी । पु० पाला ।
हैमवत—वि० हिमालयसे उत्पन्न । हिमालय सम्बन्धी । पु० हिमालयपर बसनेवाला ।
हैमवती—स्त्री० पार्वती । गंगा ।
हैरत—स्त्री० तअज्जुब, आश्चर्य ।

हैरान—वि० परेशान, चकित ।

हैवान—पु० पशु, महामूर्ख मनुष्य ।

हैवानी—वि० पाशविक ।

हैसियत—स्त्री० औक़ात, सामर्थ्य, प्रतिष्ठा ।

हैहय—पु० एक राजवंश ।—राज = सहस्रार्जुन ।

है है—अ० शोकसूचक शब्द ।

होंठ—पु० ओंठ, दन्तच्छद ।

होंठी—स्त्री० किनारा ।

हो—अक्रि० था । अ० हे ।

होड़—स्त्री० प्रतिस्पर्धा ( उदे० 'बदना' ), शर्त ।

होड़ाबादी,-होड़ी—स्त्री० प्रतिस्पर्द्धा ।

होतव, होतव्य—पु०, होतव्यता—स्त्री० भवितव्यता, भावी, होनहार ।

होता—पु० हवन करनेवाला ।

होनहार—स्त्री० भवितव्यता । वि० होनेवाला, भावी उत्कर्षकी सूचना देनेवाला ।

होना—अक्रि० मौजूद रहना, अस्तित्व रखना, बनना, तैयार होना, अन्य रूप लेना, घटित होना, बीतना, उत्पन्न होना ।

होनी—स्त्री० हुई या होनेवाली बात, भवितव्यता ( प० २२) घटना ।

होम—पु० हवन ।

होमना—सक्रि० आहुति देना, अग्निमें झोंक देना, 'सूरदास उपमा जुगई सब ज्यों होमत हवि ।' भ्र० ६९, 'होमति सुखु करि कामना तुमहिं मिलनकी लाल ।' वि० २९ । त्याग देना ।

होरसा—पु० चकला, पीढ़ा ।

होरहा—पु० चनेका पेड़ ( बुँदेल० ) देखो 'होरा' ।

होरा—पु० आगमें सेंके हुए हरे चने ।

होरिल,-ला—पु० शिशु, नवजात बच्चा (उदे०'कोरवा')।

होरिहार—पु० फाग खेलनेवाला ।

होरी, होलाका, होलिका, होली—स्त्री० फागका त्योहार, रङ्ग आदि डालकर उत्सव मनानेका कार्य । धधकती हुई अग्निराशि ( प० ९५ ) ।

होला—दे० 'होरा' ।

होश, होस—पु० सुधबुध, चेत, बुद्धि ।

होशमंद—वि० समझदार ।

होशियार—वि० चतुर, चालाक, बुद्धिमान् ।

होशियारी—स्त्री० चातुर्य, कुशलता ।

हौं—सर्व० मैं ( उदे० 'ठाँव' ) । अक्रि० हूँ ।

हौंकना—अक्रि० हुङ्कार करना ।

हौंस—स्त्री० उमङ्ग, इच्छा (उदे० 'ऐक', सूबे० ३९०) ।

हौंसला—पु० लालसा उमंग ।

हौआ—पु० भयकी वस्तु, 'बाबा', हाऊ ।

हौका—पु० खानेका लोभ, तृष्णा 'हौकेमें आकर ज्यादा खा गये ।' कर्म० १६७

हौज—पु० पत्थर आदिका जलाधार, कुण्ड, नाँद ।

हौड़—देखो 'होड़' ( रत्ना० २९६ ) ।

हौद—देखो 'हौज' ।

हौदा—पु० हाथीकी पीठपरका आसन ।

हौरे हौरे—क्रिवि० धीरे धीरे, धीरेसे (ब्रजमा० ४७९) ।

हौल—पु० हैबत, दहशत ।

हौलखौल,-जौल—स्त्री० शीघ्रता, शीघ्रताके कारण होनेवाली घबराहट ( रघु० ४० ) ।

हौलदिल—स्त्री० दिलका धड़कना । वि० भयभीत, व्याकुल ।

हौलदिला—वि० डरपोक ।

हौलनाक—वि० खौफनाक ।

हौली—स्त्री० शराबकी दूकान ।

हौलेसे, हौले हौले—दे० 'हौरे हौरे' ।

हौवा—देखो 'हौआ' ।

हौस—स्त्री० हवस ( उदे० 'डोंड़ा' ), उमंग ।

हौसला—दे० 'हौंसला' ।

हौसलामंद—वि०हौसला रखनेवाला, उत्साही, हिम्मती ।

ह्याँ—क्रिवि० यहाँ ( उदे० 'जौहरी' ) ।

ह्यो—पु० हिया, हृदय ।

ह्रद—पु० तड़ाग, सरोवर ।

ह्रदिनी—स्त्री० नदी ।

ह्रसित—वि० घटाया हुआ ।

ह्रस्व—वि० लघु, छोटा ।

ह्रास—पु० अवनति, घटती, पतन ।

ह्री—स्त्री० संकोच, लज्जा ।

ह्रेषा—स्त्री० हिनहिना ।

ह्लाद—पु० आनन्द ।

ह्लादन—पु० खुश करना ।

ह्वाँ—क्रिवि० वहाँ ।

# संकेतोंकी सूची

अ०—अव्यय
अक्रि०—अकर्मक क्रिया
अख०—अखरावट (जायसी ग्रन्थावली, ना० प्र० स०, प्र० संस्क०)
अष्ट०—अष्टछाप (धीरेन्द्र वर्मा, प्र० सं०)
इन्द्रा०—इन्द्रावती (ना० प्र० स०, प्र० संस्क०)
उत्तर०—उत्तर रामचरित, सत्यनारायण
उदा०—उदाहरणार्थ देखो
ककौ०—कविताकौमुदी, प्र० भाग (च० संस्क०, हिन्दी मन्दिर, प्रयाग)
कबीर—कबीर ग्रन्थावली (ना० प्र० स०, प्र० सं०)
कर्म०—कर्मभूमि (प्रेमचन्द प्र० सं०)
कलस—रस-कलस (हरिऔध, प्र० सं०)
कविता०—कवितावली (तुलसी ग्रन्थावली, दूसरा खण्ड प्र० संस्क०)
कविप्रि०—कविप्रिया (भगवानदीन)
के०—केशवदासकी रामचन्द्रिका—द्वि० भाग (लाला भगवानदीनकी टीका, प्र० सं०)
क्रिवि०—क्रिया-विशेषण
गिरिधर—गिरिधरराय
गीता०—गीतावली (तुलसी ग्रन्थावली, दूसरा खण्ड, प्र० संस्क०, ना० प्र० स०)
गुलाब—गुलाबरायकृत 'नवरस' (द्वि० सं०)
ग्राम०—ग्रामगीत (रा० त्रि०, प्र० सं०)
चाचा हित०—चाचा हितवृन्दावनदास
छत्तीस०—छत्तीसगढ़ी बोली
छत्र०—छत्रप्रकाश (प्र० सं०)
छत्रग्र०—छत्रसाल ग्रन्थावली (वियोगी हरि० सम्पादित प्र० संस्क०)
जा० मं०—जानकीमंगल (तुलसी ग्र०, दू० खण्ड प्र० सं०, ना० प्र० स०)
जीव०—जीवविज्ञान (बलदेवप्रसाद मिश्र, प्र० सं०)
ज्यो०—ज्योत्स्ना (सुमित्रानन्दन पन्त)
दास—काव्यनिर्णय (भा० जी० प्रेस, प्र० सं०)
दीन०—दीनदयाल ग्रन्थावली (प्र० संस्क० ना० प्र० स०)
दे०—देखो
दोहा०—दोहावली (तुलसी ग्रन्था०, दू० खण्ड, प्र० सं०, ना० प्र० स०)
नन्द०—नन्ददास
नव०—नवरसतरंग
नागरी०—नागरीदास
निबंध माला—(ना० प्र० स०, नूतन संस्क०)
प०—पद्मावत (जायसी ग्रन्थावली, प्र० सं०, ना० प्र० स०)
पद्मा०—पद्माकर
पद्मा०—पद्माभरण
पाठ०—पाठभेद
पा० मं०—पार्वतीमङ्गल (तुलसी ग्र०, दू० खण्ड, प्र० स०)
पूर्ण—पूर्ण संग्रह
पु०—पुलिंग (संज्ञा)
प्रिय०—प्रियप्रवास (प्र० सं०)
वि०—विहारीरत्नाकर (प्र० स०, गङ्गा पु० मा०)
बुंदेल०—बुंदेलखण्डी बोली
बु० वै०—बुन्देल वैभव (प्र० सं०)
भावि०—भावविलास, देवकृत (प्र० स०, भारतजीवन प्रेस)
भू०—भूषणग्रन्थावली (प्र० स०, सा० स०)
भ्र०—भ्रमरगीत सार (प्र० सं०, पण्डित रामचन्द्र शुक्ल सम्पादित)
मति०—मतिराम ग्रन्थावली (प्र० सं०, गङ्गा पु० मा०, लखनऊ)
मुद्रा०—मुद्राराक्षस (श्री ब्रजरत्नदास सम्पादित, प्र० सं०)
यशो०—यशोधरा (प्र० सं०)
रघु०—रघुराजसिंहकृत रामस्वयम्बर प्र० सं०, ना० प्र० स०)
रतन०—रतनहजारा (भा० जी० प्रे० प्र० सं०)
रत्ना०—रत्नाकर ग्रन्थावली (ना० प्र० स०, प्र० स०)
रवि०, रस वि०—रसविलास, देवकृत (प्र० सं०, भारतजीवन प्रेस)
रस०—रसराज, मतिराम कृत (दू० सं०, भारतजीवन प्रेस)
रहीम—रहीम कवि (श्रीरामनरेश त्रिपाठी सम्पादित, प्र० सं०)
राम०—केशवदासकी रामचन्द्रिका, प्र० भाग (लाला भगवानदीनकी टीका, प्र० सं०)
रामभू०—रामचन्द्र भूषण, लछिराम कृत (प्र० संस्क०, वेङ्कटेश्वर प्रेस)
रामरसा०—रामरसायन (प्र० सं०, वेंक० प्रेस)
रामा०—रामायण (प्र० सं०, हिन्दी पु० ए०)
रामाज्ञा०—(तुलसी ग्रन्थावली, दू० खण्ड, ना० प्र० स०)
रा० ल० न०—रामलला नहछू (तुलसी ग्रन्थावली, दू० खण्ड, ना० प्र० स०)
ललित०—ललित ललाम, मतिराम कृत (प्र० सं०, भारतजीवनप्रेस)
ललित कि०—ललित किशोरी
वि०—विशेषण
विद्या०—विद्यापति-पदावली (श्री रामवृक्ष शर्मा सम्पादित, प्र० सं०)
विन०—विनयपत्रिका, तुलसी कृत (वियोगी हरिकी टीका, प्र० स०)
वृन्द स०—वृन्द सतसई
व्रज०—व्रजमाधुरी सार (प्र० सं०, सा० स०)
सक्रि०—सकर्मक क्रिया
सत्यना०—सत्यनारायण कवि
सर्व०—सर्वनाम
साखी—कबीरसाखी संग्रह (बेलवेडियर प्रेस, द्वि० सं०)
सुजान—सुजानचरित्र, सूदनकृत (प्र० सं०, ना० प्र० स०)
सुदामा०—सुदामाचरित्र (प्र० सं०, लाला भगवानदीन सम्पादित)
सुन्द०—सुन्दरविलास (बेलवे० प्रेस, प्र० सं०)
सू०—सूरसागर संक्षिप्त (प्र० सं०, साहित्य सम्मेलन)
सू० मदन—सूरदास मदनमोहन
सूबे०—सूरसागर संक्षिप्त (श्रीबेनी प्रसाद सम्पादित, प्र० सं०)
सूवि०—सूरकृत विनयपत्रिका (प्र० सं०, साहित्य सम्मेलन)
सूरा०—सूर-रामायण (प्र० सं०, लहरी बुकडिपो, काशी)
सूसु०—सूरसुधा (ना० प्र० स०, प्र० स०)
सेवा०—सेवासदन (प्रेमचंद)
स्त्री—स्त्रीलिंग (संज्ञा)
हरि—हरिश्चन्द्र (भारतेन्दु)
हिम्मत—हिम्मत, बहादुर विरदावली